महाभारतोंकीफेहरिस्त ॥

इस यन्त्रालय में जितने प्रकार की महाभारतें छपी हैं उनकी सूची नीचे लिखी है ॥

महाभारतदर्पण काशीनरेशकृत १२)पु०

जो काशीनरेशकी आज्ञानुसार गोकुलनाथादिक कवीश्वरोंने अनेकप्रका के ललित छन्दों में अठारहपर्व्व और उन्नीसवें हरिवंश को निर्माण किया य पुस्तक सर्वपुराण और वेदका सारहै वरन बहुधालोग इस विचित्र मनोहर पुस्त कको पंचमवेद बताते हैं क्योंकि पुराणान्तर्गत कोई कथा व इतिहास और वे कथित धर्माचार की कोई बात इससे छूट नहीं गई मानों यह पुस्तक वेदशा का पूर्णरूपहै अनुमान ७० वर्षके बीते कि कलकत्ते में यह पुस्तक छपीथी उ समय यह पोथी ऐसी अलभ्य होगई थी कि अन्त में मनुष्य ५०) रु० देने राज़ी थे पर नहीं मिलतीथी पहले सन् १८७३ ई० में इस छापेखाने में छपी और क़ीमत बहुत सस्ती याने वाजिबी १२) थे जैसा कारख़ानेका दस्तूरहै ।

अब दूसरीवार डबलपैका बड़े हरफ़ों में छापी गई जिसको अवलोकन रनेवालों ने बहुतही पसन्द कियाहै और सौदागरी के वास्ते इससे भी क़ीमत किफ़ायत होसक्ती है ॥

इस महाभारत के पर्व्व अलग २ भी मिलते हैं ॥

१ आदिपर्व्व	१	१) पु०	५ उद्योगपर्व्व	५	॥) पु०
२ सभापर्व्व	२	।≈) पु०	६ भीष्मपर्व्व	६	॥≈) पु०
३ वनपर्व्व	३	१।≈) पु०	७ द्रोणपर्व्व	७	॥≡) पु०
४ विराटपर्व्व	४	।) पु०	८ कर्णपर्व्व	८	॥) पु०

९ शल्य व गदा ९ सौप्तिक १० ऐषिक व विशोक ११ स्त्रीपर्व्व १२ ।≈)

१० शान्तिपर्व्व १३ राजधर्म्म, आपद्धर्म्म, मोक्षधर्म्म, दानधर्म्म २)

११ अश्वमेध १४ आश्रमवासिक १५ मुशलपर्व्व १६ महाप्रस्थान १७ स्वर्गारोहण १८ ।) पु०

१२ हरिवंशपर्व्व १९ १≈) पु०

महाभारत द्रोणपर्व भाषा का सूचीपत्र ।

इतिद्रोणपर्व्वसूचीपत्रंसमाप्तम् ॥

अथभाषामहाभारतेद्रोणपर्वणि

मङ्गलाचरणम्

श्लोक

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनं सान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकं स्वाराणमस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववादयन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयःप्रभानः प्रतिभांव्यनक्तु २ पाण्डवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्म्मलम् ॥ व्यधायिभारतंयेन तंवन्देवादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं वन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्रपुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगंमंजुलद्रोणपर्व भाषानुवादंविदधातिसम्यक् ५ ॥

अथ द्रोणपर्वणिभाषावार्त्तिकप्रारम्भः ॥

श्रीनारायणजी को और नरोत्तम नररूप को और श्रीसरस्वती देवी को नमस्कार करके जयनाम इतिहास को वर्णन करताहूं जनमेजय बोले कि हे ब्रह्मऋषि उस बुद्धि बल तेजके निधान अतुल पराक्रमी देवव्रत भीष्मजी को पांचालदेशी शिखण्डीके हाथसे मराहुआ सुनकर १ महाशोकाकुल नेत्रवाले बड़े पराक्रमी राजाधृतराष्ट्र ने उक्त प्रभाववाले अपने पिताके मरनेपर क्याकिया २ और हे तपोधन भगवन् उसका पुत्र दुर्योधन जोकि भीष्म द्रोणाचार्य्य आदिक रथियों की सहायता से बड़े धनुर्द्धर पाण्डवों को विजय करके राज्यको चाहता था ३ उसने सब धनुषधारियोंमें विजयरूप भीष्मजीके मरनेपर सब कौरव लोगों समेत जो कुछ मतकिया वह सब आप मुझसे वर्णन कीजिये ४ वैशम्पायनजी

बोले कि पितामहको मृतक सुनकर चिन्ता और शोकसे व्याकुल कौरवोंके राजा धृतराष्ट्रने शान्तिको नहीं पाया ५ तदनन्तर उस राजाके दुःख और शोच को वारम्बार शोचतेहुये अत्यन्त शुद्ध अन्तःकरणवाले संजय युद्धभूमि से लौटकर आये ६ हे महाराज अम्बिकाके पुत्र धृतराष्ट्रने उस युद्धभूमिके डेरोंमेंसे हस्तिनापुरमें आये हुये संजयसे भी पूछा ७ जब संजयने भी उनके मरनेका सब वृत्तान्त कहा उसको सुनकर अत्यंत अप्रसन्न और व्याकुल चित्त धृतराष्ट्र अपने पुत्रोंकी विजयको चाहता हुआ महावेदना युक्त रोगीके समान रुदन करनेलगा ८ और रोदन करनेकीही दशामें संजयसे यह वचन बोला कि हे तात महाभयानक कर्म करनेवाले मेरेपिता महात्मा भीष्मजीके बड़े २ शोक विचारों को करके कालसे प्रेरित कौरव लोगोंने फिर क्या कामकिया ९ अर्थात् उस दुर्ज्जय शूरवीर महात्मा भीष्मके मरनेपर शोक समुद्रमें डूबेहुये कौरवोंने कौनसा काम किया १० और हे संजय महात्मा पाण्डवोंकी उस तीनोंलोकों को भयभीत करनेवाली ११ असंख्य सेनाके बड़े २ राजालोगों ने भी उस देवव्रत भीष्मजीके मरनेपर जो जो कामकिया उस सबकोभी मुझसे वर्णनकरो १२ संजय बोले कि हे राजा देवव्रत भीष्मजीके इसरीति से मरनेपर आपके पुत्रोंने जो २ कामकिये उस सब वृत्तान्तको तुम अपने चित्तको सावधान करके मुझसे सुनो १३ हे राजा तब सत्यपराक्रमी भीष्मजी के मरनेपर आपके पुत्रोंने और पाण्डवोंने पृथक् २ बड़ा शोच किया १४ वह सब लोग क्षत्रीधर्म्म को देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर आश्चर्य्य युक्तहुये हे नरोत्तम फिर उन अपने धर्म्म की निन्दा करनेवाले लोगों ने महात्मा भीष्मजी को दण्डवत् करके १५ गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से उस अमितकर्म्मी भीष्मजीके अर्थ उपधान समेत शयनकल्पित किया अर्थात् उक्त असंख्य वाणोंसेही शरीरको आच्छादित करके तकिये समेत शयन के लिये शरशय्याको बनाया १६ फिर उनगांगेय भीष्मजीकी रक्षाकरके परस्परमें वार्तालाप करते हुये उनकी प्रतिष्ठा पूर्वक परिक्रमा करके १७ क्रोधसे अत्यन्त रक्तनेत्र कालसे प्रेरित क्षत्रीलोग परस्परमें मिलकर फिर युद्ध करनेके निमित्त उपस्थितहुये १८ तदनन्तर आपके पुत्रोंकी और पांडवोंकी सेना तूरी और भेरी आदि बाजों समेत चली १९ हे राजेन्द्र दिनके अन्त में गंगापुत्रके गिरनेपर क्रोधके आधीन कालसे व्यथित चित्त २० भरत वंशियोंमें श्रेष्ठ आपके पुत्र

लोग महात्मा भीष्मजीके बड़े शुभ और हितकारी बचनों को तिरस्कार करके शस्त्रोंको उठा २ कर बड़ी शीघ्रतासे चले २१ आपके पुत्रके मोहसे और भीष्मजीके मरणसे सब राजाओं समेत बहुत कौरवलोग कालसे प्रेरणा कियेगये २२ जैसे कि हिंस्रजीवों से व्याप्त बनमें ग्वालिये से रहित बकरी और भेड़ें व्याकुल होतीहैं उसीप्रकार भीष्मजीके बिना अरक्षित और निराशायुक्त वह सबलोगभी अत्यन्त व्याकुल चित्त हुये २३ उस भरतर्षभ के गिरजाने पर कौरव लोगोंकी सेना ऐसी होगई जैसे कि नक्षत्रोंसे रहित और बायुसे खाली आकाश होताहै २४ उस शरशय्याके ऊपर राजा भीष्मके शयनकरने पर सेना ऐसे प्रकारकी दिखाई पड़ी जैसे कि असुरोंकी सेना व खेती आदिसे रहित पृथ्वी अथवा असंस्कृतबाणी होती है २५ जैसे कि सुन्दररूपवाली स्त्री विधवा होय व जलसे रहित नदीहोय अथवा जैसे कि बनमें व पर्वतकी कन्दरामें सिंहसे मरेहुये शरभनाम यूथपके बिना भेड़ियों से घिराहुआ पृषपतीनाम मृगोंका यूथ व्याकुल होताहै २६ इसी प्रकार भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ गांगेय भीष्मजीके गिरनेपर भरतवंशियों की सेना महाभयभीत होगई २७ महाबली लक्षभेदी वीर पांडवोंसे अत्यन्त पीड़ामान सेना ऐसे स्वरूपवाली होगई जैसे कि संसार की वायुसे ताड़ित टेढ़ीहुई नौका महासमुद्रमें होतीहै २८ अर्थात् वह रेला जिसके घोड़े हाथी रथ व्याकुल थे और असंख्य मनुष्यों का नाश होगयाथा वह महादुःखी और मनसे उदास होरहीथी २९ आशय यह है कि देवव्रत भीष्मजी से रहित होकर उस सेना में राजालोग और भिन्न २ प्रकारके सेनाके पुरुष भयभीत होकर पातालमें डूबेहुये के समान होगये ३० उससमय कौरव लोगोंने सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठपराक्रम और युद्धमें भीष्मजीके समान राजाकर्णको ऐसे स्मरण किया जैसे कि चित्त से चाहेहुये अतिथिको ३१ स्मरण करते हैं और उसीमें सबका चित्त गया गया जैसे कि आपत्तियों में फँसेहुये पुरुषका मन बन्धु में जाताहै और हे भरतवंशी वहां उनराजाओंने हे कर्ण हे कर्ण ३२ हे राधाके और सूतकेपुत्र कहकर पुकारा और कहा कि इस शरीर त्यागनेवाले भीष्मको हमारा प्रियकर्त्ता और रक्षक समझकर वह कर्ण अपने भाइयों समेत दश दिनतक निश्चय करके नहीं लड़ा उस कर्णको शीघ्रलाओ बिलम्ब न करो वह महाबाहु कर्ण अतिरथोंके देखते बल और पराक्रमसे स्तुतिमान रथियोंकी गणनाओंके भीष्मसे अर्द्धरथी गिनागया

परन्तु वह नरोत्तम अर्द्धरथी नहीं है किन्तु भीष्मजीसे द्विगुणित है ३३।३५ जो शूरोंका मानाहुआ रथी और अतिरथियोंमें श्रेष्ठहै और जो असुरों समेत देवताओं के साथ युद्ध में युद्धाभिलाषी होकर साहसकरे हे राजा उसने उसी क्रोध से गांगेय भीष्मजीसे कहाथा कि हे कौरव्य मैं तेरेजीतेजी कभीनहीं लडूंगा ३६।३७ और हे कौरवोत्तम इस महायुद्धमें आपके हाथसे पांडवोंके मरनेपर दुर्य्योधन को पूंछकर वनकोजाऊंगा ३८ अथवा पांडवोंके हाथसे आपके स्वर्गाभिलाषी होने पर आप जिनको रथीमानलेहो उन सबरथियोंको एकही रथसे मारनेवालाहूंगा ३९ वह महाबाहु यशस्वी कर्ण इसप्रकारसे कहकर आपके पुत्रके मतसे नहीं लड़ा ४० हे भरतवंशी अतुल बल युद्धमें शूरवीर भीष्मने पांडवोंके बड़े २ युद्ध कर्ताओंको युद्धमें मारा ४१ फिर उस सत्यसंकल्प बड़े तेजस्वी शूर भीष्मके मरनेपर आपके पुत्रोंने कर्णको ऐसे स्मरणकिया जैसे नदीके पार उतरनेके अभिलाषीलोग नौकाको स्मरण करते हैं ४२ आपके सब युद्धवर्त्ती और दुर्य्योधनादिक पुत्र राजाओं समेत यहकहकर पुकारे कि हाय कर्ण हाय कर्ण यही समयहै उस परशुरामजीके आज्ञावर्ती शस्त्रविद्यामें अजेय कर्णके पराक्रममें हमारा चित्त ऐसेगया जैसे कि नाशहोनेवालोंका मन बन्धुओंमें जाताहै ४३।४४ हेराजा वह कर्ण हमलोगोंको बड़ेभारी भयसे ऐसे रक्षाकरनेको समर्थ है जैसे कि गोविन्दजी बड़े २ भयों से देवताओंकी रक्षाकरनेको समर्थ हैं ४५ वैशम्पायनजी बोले कि यहसुनकर राजाधृतराष्ट्र सर्पके समान श्वासाओंको लेकर उस बारंबार कर्णके बखान करनेवाले संजयसे यहवचन बोले ४६ कि जब तुम्हाराचित्त शरीरसे कवच त्याग करनेवाले सूर्य्यके पुत्र कर्णमेंगया तब उस कवचत्यागी राजा और सूतके पुत्रको देखाभीहै ४७ उस सत्य पराक्रमी कर्णने उनव्याकुल दुःखी भयभीत और रक्षाके अभिलाषी कौरवोंकी इस आशाको कहीं निष्फलतो नहींकिया ४८ उस श्रेष्ठधनुषधारीने युद्धमें उनकी आशाको पूर्णकिया या नहीं अर्थात् भीष्मजीके मरनेके पीछे अपनेबल पराक्रमसे उसने उस खण्डको पूराकरके दूसरोंको भयभीत किया या नहीं क्योंकि हे संजय इसलोक में वही अकेला कर्ण पुरुषोत्तम कहा जाता है ४९।५० युद्धमें अपने प्राणोंको त्यागकर अधिकतर रुदनकर वे पीड़्यमान बांधवोंकी रक्षाके निमित्त उनके कल्याणको करके मेरेपुत्रों को विजय रूपी आशाको भी सफल किया या नहीं ५१ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिधृतराष्ट्रसंजयसम्वादेप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय॥

संजय बोले कि हे राजा तब धनुषधारियों में अत्यन्त श्रेष्ठ शत्रुओं को जीतनेवाला वह सूतका पुत्र कर्ण उन पुरुषोंके इन्द्र अजेय शन्तनुके पुत्र महारथी अथाह समुद्रमें डूबतेहुये कौरवों के नौकारूप भीष्म को गिराया और मराहुआ सुनकर अपने निज सहोदरभाईके समान आपके पुत्रकी सेनाको कठिन दुःखों से छुटानेका अभिलाषी होकर अकस्मात् समीप आया १। २ शत्रुओंके हाथसे समुद्रमें डूबजानेवाली नौकाके समान रथियों में श्रेष्ठ भीष्मके मरनेपर आपके पुत्रकी सेनाको दुःख समुद्रसे तारनेकी इच्छा करताहुआ शीघ्रता पूर्वक कौरवों केपास ऐसे आया जैसे कि पुत्रोंको डूबते देखकर उनके निकालनेकी अभिलाषा से पिता आताहै ३ कौरवोंकेपास आकर कर्ण यह बचन बोला कि जिस भीष्म में धैर्य्य बल बुद्धि प्रताप सत्यता स्मरणता बीरों के सम्पूर्ण गुण अशेष दिव्य अस्त्र सन्नति लज्जा प्रियभाषणता और दूसरोंके गुणोंमें दोष न लगाना आदि अनेक गुणहैं उस सदैव कृतज्ञ और ब्राह्मणोंके शत्रुसंहारी में यह सब गुण इस रीतिसे प्राचीन हैं जैसे कि चन्द्रमामें लांछनरूप चिह्न होताहै जो वही शत्रुओं के बीरोंका मारनेवाला शान्त होगया तो मैं अन्य सब बीरों को भी मृतकके ही समान समझताहूं ४। ५ यहां कोई भी अविनाशी नहीं है इसलोक में कर्म्म के विनाशमान होने से इस महाव्रत भीष्मके मरनेपर सूर्य्योदयके समय अपनी वर्तमानता को कौन निस्सन्देह करसक्ताहै ६ अष्टबसुनाम देवताओंके अंश और बसुओंकीही शक्तिसे प्रकट होनेवाले राजा भीष्मको बसुओं से एकता होने पर धन पुत्रों समेत पृथ्वी और कौरवों को और इससेनाको शोचो अर्थात् इनकी चिन्ताकरो ७ संजय बोले कि बड़े प्रभाववाले वरकेदाता लोकेश्वर शासनकर्ता प्रतापोंसे पूर्ण भीष्मके गिराने व भरत बंशियों के पराजय होनेपर उद्विग्नचित्त होकर अश्रुपातोंको डालतेहुये कर्णने अत्यन्त श्वासेंलीं ८ हे राजा आपकेपुत्र और सेनाके मनुष्योंने कर्ण के इस बचनको सुनकर परस्पर में वारंवार मोहसे उत्पन्न होनेवाले शब्दकिये और सब लोगोंने शब्दों को करतेहुये अश्रुपातों कोभी डाला ९ फिर राजाओंसे मँझाईहुई सेनामें महायुद्धके वर्तमान होनेपर वह महारथियोंमें श्रेष्ठ अतुल पराक्रमी कर्ण उत्तम रथियोंकी प्रसन्नताका बढ़ानेवाला

वचन बोला १० कि सदैव अहर्निशव्यतीत होनेवाले इस विनाशमान संसारके मध्यमें अब अत्यन्त शोचताहुआ मैं किसीको अविनाशी नहीं देखताहूं यहां आप लोगोंके नियत होनेपर पर्व्वतके समान महातेजस्वी कौरवों में श्रेष्ठभीष्म जी युद्धके मध्यमें किसरीतिसे गिरायेगये ११ पृथ्वीतलमें वर्तमान सूर्य्यके समान महारथी भीष्मजी के गिरने पर राजालोग अर्जुनके सहनेको ऐसे समर्थ नहीं हैं जैसे कि पर्व्वतपर चलनेवाले वायुके वेग को वृक्ष नहीं सहसक्ते १२ निश्चय करके यह कौरवोंकी सेना जिसका कि अधिपति मारागया वह शत्रुओंके हाथ से साहसको त्याग महादुःखी होकर अनाथ होरही है वह सब सेना युद्धके मध्य में मुझसे उसीप्रकार रक्षाके योग्यहै जैसे कि उस महात्मा भीष्मजी से रक्षितथी १३ जोकि मैंने अपने ऊपर इस प्रकारका भार अच्छे प्रकार से नियत किया है इस हेतुसे इस जगत् कोभी अविनाशी देखताहूं जो युद्धमें कुशल भीष्मके युद्ध में गिरने से भय उत्पन्न हुआ है वह भय मैं नही दिखाऊंगा में उन कौरवोंमें श्रेष्ठ पुरुषों को युद्धके मध्यमें सीधे चलनेवाले बाणों से ढकता यमलोक में पहुँचता हुआ संसारमें बड़े यशको उत्पन्न करके कर्मवर्त्ती हूंगा अथवा शत्रुओं के हाथ से मरकर पृथ्वीपर शयन करूंगा १४ । १५ संसारमें सत्य संकल्प युधिष्ठिर और दशहजार हाथीके समान पराक्रमी भीमसेन और बली तरुण अवस्थावाला अर्जुन भी इन्द्रका पुत्रहै इसलोकमें वह पाण्डवोंकी सेना देवताओंसमेत इन्द्रसे भी सुगमता पूर्व्वक विजय होनेके योग्य नही है १६ जिस युद्धमें बलमें अश्विनीकुमारोंकी समानता रखनेवाले नकुल और सहदेव हैं और जिसमें सात्यकी समेत श्रीकृष्णजी हैं उसी सेनाके सम्मुख आनेवाला नपुंसक मृत्युके मुखसे जीवता नही लौटताहै १७ बड़ा तपस्याहीसे शान्त और विजय होताहै इसीप्रकार बड़े साहसी प्रतापी पुरुषोंकी सेनासे सेना पीड़ा पातीहै निश्चय करके मेराचित्त शत्रुओंके पराजय करने और अपनी रक्षामें चलायमानके समान नियतहै १८ हे सूत अब मैं जाकर उन सबके प्रभाव को इस प्रकारसे मथन करके विजय करताहूं यह मित्रके साथ शत्रुता मुझसे सहने के योग्य नहीं है क्योंकि सेनाके आगे होकर सम्मुखताकरे वही मित्रहै १९ अबमैं सत्पुरुषोंके इस कर्मको करना चाहताहूं और प्राणों को छोड़कर भीष्मजी केही साथ जाऊंगा मैं युद्धमें शत्रुओंके सब समूहों को मारूंगा अथवा उनके हाथसे मरकर वीरोंके लोकों को पा-

ऊंगा २० दुर्योधनका पराक्रम न्यून और हतहोने वा अतिशय प्रत्युत्तरमें और स्त्री समेत कुमारोंके रोदन करनेपर मुझको युद्ध कर्मकरना योग्यता पूर्व्वक उचितहै हे सूत मैं यह जानताहूं इसी हेतुसे अबमैं राजा दुर्योधनके शत्रुओं को विजय करूंगा २१ मैं इस महा भयकारी युद्धमें कौरवोंकी रक्षा करता और पाण्डवों को मारता अपने प्राणोंकी आशा छोड़ लड़ाईमें शत्रुओंके सब समूहों को मारकर दुर्योधनके अर्थ राज्य को दूंगा २२ मेरे उस कवच को बांधो जोकि उज्ज्वल सुवर्णमय महा अपूर्व्व होकर मणि रत्नादिकों मे प्रकाशमान है और सूर्य्य के समान प्रकाशित शिरस्त्राण को और अग्नि वा बिषके समान धनुष बाणों को २३ सोलह उपासंगों समेत रथपर लगाओ और इसीप्रकार मेरे दिव्य धनुषोंको लाओ इसके विशेष खड्ग शक्ति वा भारी २ गदा और सुबर्ण जटित प्रकाशमान शंखोंको लाओ २४ इस स्वर्णमयी अपूर्व्व नागकक्षाको और कमल के समान शोभायमान ध्वजा को और अच्छी बँधीहुई अद्भुत माला को शुद्ध वस्त्रों से स्वच्छ करके जाल समेत लाओ २५ हे सूतपुत्र श्वेत बादलके समान प्रकाशमान हृष्ट पुष्ट शरीरवाले मन्त्रोंसे पवित्र कियेहुये जलोंसे स्नान कराये वा संतप्त कियेहुये सुबर्णपात्रों से युक्त शीघ्रगामी घोड़ों को तुरन्त लाओ २६ स्वर्णमयी मालाओं से अलंकृत सूर्य्य चन्द्रमाके समान प्रकाशमान रत्नोंसे जटित युद्धके योग्य घोड़ोंसे युक्त आलस्य को दूर करनेवाले द्रव्यों सहित उत्तम रथको शीघ्र वर्तमान करो २७ वेगवान् बिचित्र धनुष वा अच्छेप्रकार बांधनेके योग्य प्रत्यंचाओं को और २ बाणों से भरेहुये बड़े २ तूणीरों को वा कवचों को पाकर लाओ २८ यात्राका सब सामान शीघ्र लाओ और हे बीर दहीसे भरेहुये सुबर्ण और कांस्यपात्र लाओ मालाको लाकर अंगमें बांधकर शीघ्रतासे विजयके निमित्त भेरी को बजाओ २९ हे सूत तू वहांपर बड़ी शीघ्रतासे चल जहांपर अर्जुन भीमसेन युधिष्ठिर और नकुल सहदेव हैं मैं युद्धमें सम्मुख होकर उनको मारूंगा अथवा शत्रुओंके हाथसे मरकर भीष्मजीके साथ जाऊंगा ३० जिससेना में सत्य धैर्य्यवाला राजा युधिष्ठिर नियतहै और भीमसेन, अर्जुन, सात्यकी, सब सृंजय और वासुदेवजी नियत हैं वह सेना अन्य राजाओं से अजेयहै ऐसा मैं मानताहूं ३१ यद्यपि युद्धमें सबका मारनेवाला काल बड़ी सावधानी से उस अर्जुनकी चारों ओरसे रक्षा करताहै तौभी मैं संग्राममें सम्मुख होकर मारने वाला

हूं वा यमराज के निमित्त भीष्मजी के साथजाऊंगा ३२ मैं उन शूर लोगों के मध्यमें नहीं जाऊंगा क्योंकि मैं कहताहूं कि उसमें मित्रसे शत्रुता करताहै जो अल्प पराक्रमी और पापात्मा हैं वे मेरे सहायक नहीं हैं ३३ संजय बोले कि रत्नादिसे जटित दृढ़ स्वर्णमयी शुभकारी कूबर रखनेवाली पताका धारण किये वायुके समान शीघ्रगामी घोड़ों से युक्त उत्तम रथपर बैठकर विजयके निमित्त चला ३४ तब जैसे कि देवताओं के समूहों से इन्द्रपूजित होता है उसी प्रकार कौरवों से अच्छे प्रकार पूजित महात्मा रथियों में श्रेष्ठ भयानक धनुषधारी कर्ण बड़ी सेना समेत ध्वजाधारी सुवर्ण मोती और मणि रत्नोंकी मालाओंसे युक्त उत्तम घोड़ोंसहित बादलके समान शब्दायमान अग्निके समान प्रकाशमान शुभरूप और लक्षणोंसे शोभित रथपर नियत होकर उस युद्धभूमि में शोभित हुआ जहांपर कि भरतर्षभ राजा दुर्य्योधनका निवासस्थान था अर्थात् उसस्थानपर ऐसे शोभितहुआ जैसे कि विमानमें नियतहोकर सब देवताओं में इन्द्र शोभित होताहै ३५। ३६। ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्वितीयोऽध्याय. २॥

तीसरा अध्याय॥

संजयबोले कि उसबड़े प्रतापी तेजस्वी महात्मा शरशय्यापर सोनेवाले बड़े वायु समूहसे शुष्क समुद्र के समान १ सब क्षत्री कुलोंके नाशकर्त्ता बड़े धनुषधारी अर्जुनके दिव्य अस्त्रों से गिराये हुये गुरूरूप भीष्म पितामह को देखकर आपके पुत्रोंकी विजय और सुख वा कल्याणकी आशा सब नष्ट होगई २ अतलस्पर्श समुद्रमें थाह चाहनेवाले और पार न पहुँचनेवाले द्वीप और यमुनाजीके स्रोतके समान बाणोंके समूहों से भरेहुये ३ महाइन्द्रके हाथसे गिरायेहुये असह्यताके योग्य मैनाक पर्व्वतके समान प्रकाशित और आकाशसे गिरकर पृथ्वीतलमें पड़ेहुये सूर्य्यके समान देदीप्यमान ४ और पूर्व्व समयमें वृत्तासुरसे विजय किये हुये अचिन्त्य इन्द्रके समान भीष्मको जिसका कि युद्धमें गिराना ही सबसेनाका मोहित करना है ५ सबसेनाके प्रधान और सब धनुषधारियों के ध्वजारूप अथवा अर्जुनके उत्तम बाणोंसे विदीर्ण शरीर वीर शय्यापर शयन करनेवाले पुरुषोत्तम वीर उस मेरे और भरतवंशियों के पिता भीष्मको इस बड़े

अधिरथी कर्णने देखकर ६।७ महापीड़ा युक्त अश्रुपातों समेत गद्गद
युक्त कर्ण रथ से उतर दण्डवत्कर हाथ जोड़कर प्रशंसा करता हुआ
बोला ८ हे भरतबंशी मैं कर्णहूं आपका शुभहोय अब आप पवित्रता
ल्याण संयुक्त बचनोंसे मेरे सम्मुख बार्तालाप करिये और नेत्रोंसे देखो ९
करके इस लोकमें कोई पुरुष उत्तम कर्म्मके भोग को नहीं भोगता है
ानपर कि धर्म्म को उत्तम जाननेवाले आप वृद्ध पृथ्वीपर सोते हैं १०
में श्रेष्ठ मैं कौरवोंकी वाधनागारकी सम्मतकी व्यूह को और शस्त्र च-
बृद्धिमें किसी दूसरे को नहीं देखताहूं ११ अत्यन्त पवित्र बुद्धिसे युक्त
कौरवों को भयसे तारनेवाला था वह बहुत से युद्ध कर्त्ताओं को मार
पितृलोक को जायगा १२ अबसे लेकर अत्यन्त क्रोध युक्त पांडव लोग
कुलका ऐसे नाश करेंगे हे भरतबंशी जैसे कि व्याघ्र मृगोंका नाश
१३ अब अर्जुनके गांडीव धनुषके पराक्रम और सामर्थ्यके जाननेवाले
से भयभीत होंगे जैसे कि बज्रधारी इन्द्रसे असुर भयभीत होतेहैं १४ अब
धनुषसे छोड़ेहुये बज्रके समान बाणोंके शब्द कौरवोंको और राजाओं
ातकरेंगे १५ हे वीर जैसे कि बड़ी बृद्धिमान और अत्यन्त प्रचंड अग्नि
भस्म करडालती है उसीप्रकार अर्जुनके बाण भी धृतराष्ट्रके पुत्रों को
ंगे १६ बनके मध्यमें बायु और अग्नि एक साथ जिस २ मार्ग्गसे चलते
गतिसे बहुतसे गुल्म तृण और बृक्षादिकोंको जलाते हैं १७ और जिस
अग्नि है उसी प्रकारका अर्जुन भी निस्संदेह उत्पन्न हुआ है और हे
जैसा कि बायु होता है उसी प्रकारके निस्संदेह श्रीकृष्णजी हैं १८ हे
पांचजन्य शंखके बजानेपर और गांडीव धनुषके शब्दायमान होतेहीं
के लोग उस शब्द को सुनकर भयभीत होंगे १९ हे वीर भीष्मजी श-
जीतनेवाले बानरध्वज अर्जुनके रथके दौड़नेपर आपके सिवाय अन्य
ा उस शब्द के सहने को समर्थ नहीं होंगे २० आपके सिवाय दूसरा
राजा अर्जुन से लड़नेके योग्यहै क्योंकि उस अर्जुन को सब बुद्धिमान्
व्यकर्मी कहते हैं २१ जिसका अमानुषी युद्ध शिवजी के साथ ऐसा
ाकि बुद्धिसे बाहर था और उन शिवजी से वह वरपाया जो कि अप-
पुरुषों से कठिनता से भी प्राप्त करना असम्भव है २२ उसको युद्ध में

हूं वा यमराज के निमित्त भीष्मजी के साथजाऊंगा ३२ मैं उन शूर लोगों के मध्यमें नहीं जाऊंगा क्योंकि मैं कहताहूं कि उसमें मित्रसे शत्रुता करताहै जो अल्प पराक्रमी और पापात्मा हैं वे मेरे सहायक नहीं हैं ३३ संजय बोले कि रत्नादिसे जटित दृढ़ स्वर्णमयी शुभकारी कूबर रखनेवाली पताका धारण किये वायुके समान शीघ्रगामी घोड़ों से युक्त उत्तम रथपर बैठकर विजयके निमित्त चला ३४ तब जैसे कि देवताओं के समूहों से इन्द्रपूजित होता है उसी प्रकार कौरवों से अच्छे प्रकार पूजित महात्मा रथियों में श्रेष्ठ भयानक धनुषधारी कर्ण बड़ी सेना समेत ध्वजाधारी सुवर्ण मोती और मणि रत्नोंकी मालाओंसे युक्त उत्तम घोड़ोंसहित बादलके समान शब्दायमान अग्निके समान प्रकाशमान शुभरूप और लक्षणोंसे शोभित रथपर नियत होकर उस युद्धभूमि में शोभित हुआ जहांपर कि भरतर्षभ राजा दुर्योधनका निवासस्थान था अर्थात् उसस्थानपर ऐसे शोभितहुआ जैसे कि विमानमें नियतहोकर सब देवताओं में इन्द्र शोभित होताहै ३५। ३६। ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्वितीयोऽध्यायः २॥

तीसरा अध्याय॥

संजयबोले कि उसबड़े प्रतापी तेजस्वी महात्मा शरशय्यापर सोनेवाले बड़े वायु समूहसे शुष्क समुद्र के समान १ सब क्षत्री कुलोंके नाशकर्त्ता बड़े धनुषधारी अर्जुनके दिव्य अस्त्रों से गिराये हुये गुरुरूप भीष्म पितामह को देखकर आपके पुत्रोंकी विजय और सुख वा कल्याणकी आशा सब नष्ट होगई २ अतलस्पर्श समुद्रमें थाह चाहनेवाले और पार न पहुँचनेवाले द्वीप और यमुनाजीके सोनके समान बाणोंके समूहों से भरेहुये ३ महाइन्द्रके हाथसे गिरायेहुये असह्यनाके योग्य मैनाक पर्व्वतके समान प्रकाशित और आकाशसे गिरकर पृथ्वीतलमें पड़ेहुये सूर्य्यके समान देदीप्यमान ४ और पूर्व्व समयमें वृत्तासुरसे विजय किये हुये अचिन्त्य इन्द्रके समान भीष्मको जिसका कि युद्धमें गिराना सबसेनाका मोहित करना है ५ सबसेनाके प्रधान और सब धनुषधारियों के [illegible] अथवा अर्जुनके उत्तम बाणोंसे विदीर्ण शरीर वीर शय्यापर शयन करनेवाले पुरुषोत्तम वीर उस मेरे और भरतवंशियों के पिता भीष्मको इस बड़े

तेजस्वी अधिरथी कर्णने देखकर ६।७ महापीड़ा युक्त अश्रुपातों समेत गद्गद वाणी से युक्त कर्ण रथ से उतर दण्डवत्कर हाथ जोड़कर प्रशंसा करता हुआ यह बचन बोला ८ हे भरतबंशी मैं कर्णहूं आपका शुभहोय अब आप पवित्रता और कल्याण संयुक्त बचनोंसे मेरे सम्मुख बार्तालाप करिये और नेत्रोंसे देखो ९ निश्चय करके इस लोकमें कोई पुरुष उत्तम कर्म्मके भोग को नहीं भोगता है जिस स्थानपर कि धर्म्म को उत्तम जाननेवाले आप वृद्ध पृथ्वीपर सोते हैं १० हे कौरवों में श्रेष्ठ मैं कौरवोंकी वाधनागारकी सम्मतकी व्यूह को और शस्त्र चलानेकी वृद्धिमें किसी दूसरे को नहीं देखताहूं ११ अत्यन्त पवित्र बुद्धिसे युक्त जो भीष्म कौरवों को भयसे तारनेवाला था वह बहुत से युद्ध कर्त्ताओं को मार कर अब पितृलोक को जायगा १२ अबसे लेकर अत्यन्त क्रोध युक्त पांडव लोग कौरवों के कुलका ऐसे नाश करेंगे हे भरतबंशी जैसे कि व्याघ्र मृगोंका नाश करते हैं १३ अव अर्जुनके गांडीव धनुषके पराक्रम और सामर्थ्यके जाननेवाले कौरव ऐसे भयभीत होंगे जैसे कि बज्रधारी इन्द्रसे असुर भयभीत होतेहैं १४ अब गांडीव धनुपसे छोड़ेहुये बज्रके समान बाणोंके शब्द कौरवोंको और राजाओं को भयभीतकरेंगे १५ हे वीर जैसे कि बड़ी वृद्धिमान और अत्यन्त प्रचंड अग्नि वृक्षों को भस्म करडालती है उसीप्रकार अर्जुनके बाण भी धृतराष्ट्रके पुत्रों को भस्म करेंगे १६ बनके मध्यमें बायु और अग्नि एक साथ जिस २ मार्ग्गसे चलते हैं उस २ गतिसे बहुतसे गुल्म तृण और वृक्षादिकोंको जलाते हैं १७ और जिस प्रकारकी अग्नि है उसी प्रकारका अर्जुन भी निस्संदेह उत्पन्न हुआ है और हे नरोत्तम जैसा कि बायु होता है उसी प्रकारके निस्संदेह श्रीकृष्णजी हैं १८ हे भरतबंशी पांचजन्य शंखके बजानेपर और गांडीव धनुषके शब्दायमान होतेही सब सेनाके लोग उस शब्द को सुनकर भयभीत होंगे १९ हे वीर भीष्मजी शत्रुओंके जीतनेवाले बानरध्वज अर्जुनके रथके दौड़नेपर आपके सिवाय अन्य राजालोग उस शब्द के सहने को समर्थ नहीं होंगे २० आपके सिवाय दूसरा कौनसा राजा अर्जुन से लड़नेके योग्यहै क्योंकि उस अर्जुन को सब बुद्धिमान् लोग दिव्यकर्मी कहते हैं २१ जिसका अमानुषी युद्ध शिवजी के साथ ऐसा हुआ जोकि बुद्धिसे बाहर था और उन शिवजी से वह वरपाया जो कि अपवित्रात्मा पुरुषों से कठिनता से भी प्राप्त करना असम्भव है २२ उसको युद्ध में

कौन पुरुष विजय करनेको समर्थ है जिस आपके भुजवलके पराक्रमसे क्षत्रियों के नाशकर्त्ता और देवता दानवों के भी अहङ्कारों के दूर करने वाले भयकारी परशुरामजी विजय हुये २३ ऐसे महापराक्रमी आपसे भी वह अर्ज्जुन नहीं विजय हुआ अव मैं आपकी आज्ञानुसार युद्धमें महाप्रवल और कुशल बुद्धि-मान् पाण्डव अर्जुनको न सहकर अपने अस्त्रोंके वलसे उससर्पके समानविपले दृष्टिके आकर्पण करनेवाले बड़े भयकारी शूरवीरके मारनेको समर्थ हूंगा २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणितृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

संजय वोले कि कौरवों के वृद्धपितामह प्रसन्न चित्त भीष्मजी उस विलाप को करतेहुये कर्णसे देशकालके समान वचन वोले १ जैसे कि नदियोंके समुद्र प्रकाश करनेवालोंके सूर्य्य सत्यताके सन्तलोग वीजोंकी पृथ्वी और जीवों का आश्रयस्थान और प्रतिष्ठारूप वादल हैं उसी प्रकार मित्रोंमें तेरी प्रतिष्ठाहै और वांधव लोग तेरेपास ऐसे जीविका सहित निर्वाह करते हैं जैसे कि देवतालोग इन्द्रकेपास अपना निर्वाहकरते हैं २।३ शत्रुओंके मानका तोड़नेवाला और मित्रों के आनन्दका वढ़ानेवाला होकर कौरवोंके वैसी गतिरूपहो जैसे कि देवताओं की गति विष्णुभगवान् होतेहैं ४ हे दुर्योधनकी विजय चाहनेवाले कर्ण तुमने राजपुर को जाकर अपने भुजवल और पराक्रमसे काम्बोजदेशी विजय किये ५ और गिरिव्रजमें वर्त्तमान होकर नग्नजित आदिक राजा और अम्बष्टदेशी वि-देहदेशी और गान्धारदेशी राजाओं को भी विजय किया ६ हे कर्ण पूर्व समय में हिमालय पर्वतके दुर्गम स्थानोंके रहनेवाले युद्धमें महानिर्दय किरातलोगों को भी तुम्हींने दुर्योधन के आज्ञावर्ती किये ७ तुम्हींने उत्कलदेशी, मेकलदेशी पौंड्र, कलिंग, आन्ध्र, निपाद, त्रिगर्त्त और वाह्लीकदेशी भी युद्ध में विजय किये ८ हे दुर्योधनके प्रिय चाहनेवाले बड़े तेजस्वी कर्ण तुमने जहां तहां युद्ध में अन्य २ अनेक वीरों को भी विजय किया ९ हे तात जैसे दुर्योधन ज्ञातिकुल और वांधवों समेत है उसी प्रकार तुम भी सव कौरवोंकी गतिहो १० मैं तुझको आनन्द पूर्वक कहताहूं कि तुम जाओ और शत्रुओंके साथ युद्धकरो और ल-ड़ाईमें कौरवोंके शिक्षक होकर दुर्योधन को विजयदो ११ जिस प्रकार दुर्योधनहै

उसी प्रकार तुम भी हमारे पौत्रकी समानहो और हम जिस प्रकार दुर्योधनके हैं उसी प्रकारसे तुम्हारे भी हैं १२ हे नरोत्तम ज्ञानीलोगों का कथन है कि अच्छे लोगोंकी मित्रता जो सत्पुरुषोंके साथ होती है वह नातेदारी आदिसे भी अधिकहै १३ सो मेरा यह निश्चय किया हुआ है कि तुम सच्ची प्रीति करके कौरवों की सेनापर ऐसी प्रीतिकरो जैसे कि दुर्य्योधन करता है १४ सूर्य्य का पुत्र कर्ण भीष्मजीके बचनों को सुनकर उनके चरणों को दण्डवत् करके सब धनुषधारियों के सम्मुख गया १५ और सेनाके समूहवर्ती पुरुषों को अनुपम उत्तम सभा को देखकर नियत हुआ तब उसको देखकर दुर्य्योधनादिक सब कौरवलोग प्रसन्न हुये १६ उस महात्मा युद्धोत्सुक सेनाके अग्रवर्ती महाबाहु कर्णको समीप आया हुआ देखकर १७ कौरवोंने सिंहनाद वा भुजदण्डोंके शब्द और अनेक प्रकार के धनुषोंके शब्दोंके द्वारा उस कर्णकी अच्छीरीति से प्रतिष्ठाकरी १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुर्थोऽध्यायः ४॥

पांचवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा उस पुरुषोत्तम कर्ण को रथमें सवार और नियत देखकर प्रसन्न चित्त दुर्योधन इस वचन को बोले १ कि आपसेरक्षित और पोषित सेनाको सनाथजानताहूं यहां आप अपने चित्तसे जिस बातको श्रेष्ठ और प्रियकारी जानतेहो उसीको करो २ कर्णबोले हे पुरुषोत्तम राजादुर्योधन तुमबड़े बुद्धिमान्हो जैसे कि अर्थपति अर्थात् प्रयोजनवाला पुरुष कहता है उसी प्रकार तुम अपने प्रयोजन की बातको कहौ ३ हे राजा हमसबलोग आपके वचनोंके सुनने के अभिलाषी हैं आप न्यायके विपरीत वचनोंको नहीं कहौगे यह मेरासिद्धांतहै ४ दुर्योधन बोले कि जैसे आयुर्बल शास्त्र और ज्ञानसे पूर्णसब युद्धकर्ताओंके समूहोंसे युक्त भीष्मजी सेनापति हुये ५ हे कर्ण उस वृद्ध और मेरे शत्रु समूहोंके मारनेवाले महात्माने अच्छीरीतिके युद्धोंको करके दशदिनतक हमलोगों की रक्षाकरी ६ उसकठिनकर्म करनेवाले भीष्म के स्वर्गवासी होने पर अबकिसको सेनापति करनेके योग्य मानतेहो ७ विनास्वामीके सेना एकमुहूर्त्त मात्रभी युद्धमें ऐसे नियत नहीं रहसक्ती ८ जैसे कि मल्लाहसे रहित नौका जल में नहीं रहसक्ती ९ जैसे कि कर्णधारसे रहित नौका और जैसे सारथी न रखने

वाला रथ इच्छा के अनुसार अर्थात् स्वेच्छाचारी होकर चलते हैं इसी प्रकार के सेनापतिके विना सेनाभी स्वतन्त्र होकर स्वेच्छाचारी अपनेसे छिन्नभिन्न होजातीहै १० जैसे कि परदेश को न जानेवाला व्यापारी सब दुःखों को पाताहै उसी प्रकार विना सेनापतिके सब सेनाभी सब प्रकार के दोषोंको पाती है सो आप यहां हमारे सब महात्मा शूरबीरों में से किसी महात्मा पुरुष को भीष्मजीके पीछे सेनापतिके अधिकार के योग्यदेखो ११ आप जिसको युद्धमें सेनापतिके योग्य कहौगे उसीको हमसाथवाले सेना का स्वामी बनावेंगे १२ कर्णबोले कि ये सब महात्मा शूरबीरलोग निस्सन्देह सेनापतिके योग्यहैं इसमें किसी प्रकार का भी विचार न करना चाहिये १३ ये सब कुलीन शरीर ज्ञान बल पराक्रम बुद्धि और शास्त्रज्ञ होकर युद्धमें मुखको न मोड़ने वालेहैं १४ परन्तु वे सब एकसाथही अधिपति सेनाधीश करनेके योग्य नहीं हैं इन सबमेंसे अनेक गुणवाला एकही सेनापति करना उचितहै १५ जो इन परस्पर ईर्षा करनेवालोंमेंसे किसी एकको स्वामी वनाओगे तो प्रकट है कि बाकीवचेहुये शेष शूरबीर प्रसन्नहोकर आपके अभीष्टको नहीं करेंगे १६ ई सब युद्धकर्ताओं के गुरू वृद्ध द्रोणाचार्य्यजी सेनापति करनेके योग्यहैं १७ इस अजेय शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ शुक्र और बृहस्पतिजी के दर्शन के समान द्रोणाचार्य्य जीके सिवाय दूसरा कौन सेना पतिहोनेके योग्यहै १८ हे भरतवंशी सबराजाओंमें ऐसाकोई तेरा शूरबीर भी नहींहै जो युद्धभूमिमें लड़ाई के निमित्त जानेवाले द्रोणाचार्य्य के साथजाय १९ हे राजा यह आपकेगुरू सबसेनापतियोंमें श्रेष्ठहैं यही सब शस्त्रधारियोंमें उत्तमहैं यही बुद्धिमानोंमेंभी अधिकहैं २० हे दुर्योधन इस बिचारसे आचार्य्यजीको शीघ्रहीसेनापति करना चाहिये जैसे कि असुरोंके बिजय करनेके लिये देवताओंने कार्तिकेयजीको सेनापति किया उसीप्रकार तुम इनद्रोणाचार्यजीको सेनापतिकरो २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

संजय बोले कि राजादुर्योधन कर्णके इसवचनको सुनकर सेनाके मध्यमें वर्तमान द्रोणाचार्य जीसे यह वचनबोले १ वर्णों में उत्तमता, कुलकी उत्पत्ति, शास्त्र, अवस्था, बुद्धि, पराक्रम, चतुराई, अजेयता, अर्थज्ञता, बुद्धित्व, तप, उपकारज्ञता, सर्व

गुणविशिष्टता इत्यादि गुणों से युक्त आपके समान योग्य और सेनाकारक्षक राजाओंमें कोई दूसरा वर्तमान नहींहै २।३ सो आप हमको ऐसे रक्षाकरो जैसे कि इन्द्र देवताओं की रक्षा करताहै हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ आपकी आज्ञाके अनुसार हम लोग शत्रुओं को बिजय करना चाहते हैं ४ जैसे कि रुद्रोंका स्वामी कापाली, बसुओंका अग्नि, यक्षोंका कुबेर, मरुत नाम देवताओं का इन्द्र ५ ब्राह्मणोंका बशिष्ठ, प्रकाशमानोंका सूर्य, पितरों का धर्म, देवताओंका इन्द्र, जलके जीवोंका बरुण ६ नक्षत्रोंका चन्द्रमा और दितिके पुत्रोंका स्वामी शुक्रहै इसीप्रकार सेनापतियों में श्रेष्ठ आप हमारे सेनापति हूजिये ७ हे पापोंसे रहित यह ग्यारह अक्षौहिणी आपकी आज्ञानुवर्ती होंगी इन सबसेनाओं के साथ ब्यूहको रचकर शत्रुओंको ऐसेमारो जैसे कि इन्द्र दानवोंको मारताहै ८ आप हमलोगोंके आगे ऐसे चलो जैसे कि देवताओं के आगे अग्निदेवता चलते हैं और हम युद्धभूमिमें आपके पीछे ऐसे चलेंगे जैसे कि गौओंके साथ उनके बच्चे बैल चलते हैं ९ अथवा जैसे पिताके साथ पुत्र चलते हैं हे शत्रुओं के भयभीत करनेवाले, बड़े उग्र धनुषधारी गुरूमहाराज आप दिव्य धनुषको टंकोरतेहुये आगे हूजिये आप को देखकर अर्ज्जुन कभी प्रहार न करेगा १० हे पुरुषोत्तम जो आप सेनापति होंगे तो निश्चय करके युद्धमें उसके बान्धव और सब साथियों समेत युधिष्ठिर को बिजय करूंगा ११ संजय बोले कि उसके इसप्रकार कहनेपर राजालोग बड़े सिंहनाद से आपके पुत्रको प्रसन्न करते हुये द्रोणाचार्य्यजी से यह बचन बोले कि विजय कीजिये १२ और प्रसन्नतासे युक्त बड़ेयशकी अभिलाषा करते सेना के मनुष्यों ने दुर्योधनके आगे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यकी बड़ी प्रशंसाकरी इसके पीछे द्रोणाचार्य्यजी दुर्योधनसे बोले १३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

द्रोणाचार्य्य बोले कि मैं छः अंग रखने वाले वेदको और मनुष्यों के अर्थ विद्या अर्थात् देशप्रबन्धनी विद्याको और पाशुपति बाण अस्त्र और अन्य नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्रों को जानताहूं १ और विजयाभिलाषी आपलोगों ने भी जो २ गुण मुझमें बर्णन किये हैं उन सबको करनेका अभिलाषी होकर में पां-

डवों से लड़ूंगा २ परंतु हे राजा मैं किसी दशामें भी युद्धके मध्यमें धृष्टद्युम्नको नहीं मारसकूंगा क्योंकि वही पुरुषोत्तम मेरे मारने के निमित्त उत्पन्न कियागया है ३ मैं सब सोमकों का नाश करता हुआ सेनाओं से लड़ूंगा और पांडव प्रसन्नता पूर्व्वक मुझसे नहीं लड़ेंगे ४ संजय बोले कि हे राजा इसके अनन्तर इसरीतिसे उनके आज्ञावर्त्ती होनेवाले आपके पुत्रने शास्त्रमें देखेहुये कर्मकेद्वारा द्रोणाचार्य्यको सेनापति बनाया ५ फिर उन सब राजाओं ने जिनमें अग्रगामी दुर्योधन था द्रोणाचार्य्यजीको सेनाके सेनानीपदपर इसरीतिसे अभिषेक किया जैसे कि पूर्व्व समय में इन्द्रादिक देवताओं ने स्कन्दजी को किया था ६ तब द्रोणाचार्य्य के सेनापति करने पर बड़े २ बाजे और शंखोंके शब्दों के द्वाराप्रसन्नता प्रकटकरी ७ इसके पीछे पुण्याहवाचन के घोष स्वस्तिवाचन के शब्द सूत मागध बंदियोंके स्तव गीत वाद्यके शब्द उत्तम ब्राह्मणों के जयशब्द विजयशब्द और शुभांगनाओं के नृत्यसे बुद्धि के अनुसार द्रोणाचार्य्य जी का सत्कार करके पांडवों को पराजित माना ८। ९ संजय बोले कि फिर महारथी भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजी सेनाकी अधिपताको पाकर युद्धाभिलाषी सेनाओंको अलंकृत करके आपके पुत्रों के साथचले १० सिन्धका राजा और कलिंगदेश का राजा और आपका पुत्र विकर्ण दाहिने पक्षमें वर्तमान होकर शस्त्रों से अलंकृत अच्छीरीति से नियतहुआ ११ और उन सेनाओंका रक्षक परपक्षवाला राजाशकुनी निर्म्मल शस्त्रों से लड़नेवाले गान्धारदेशी और अत्यन्त उत्तम अश्वारूढ़ों समेतचला १२ और कृपाचार्य्य कृतवर्मा चित्रसेन विविंशति और दुश्शासनादि सावधान लोगों ने वामपक्षको रक्षित किया १३ उन्हों के परपक्ष कांबोजदेशी यवनोंसमेत शकुनि जिनका कि अग्रगामी राजासुदक्षणथा वह बड़े शीघ्रगामी घोड़ों समेत चले १४ मद्र, त्रिगर्त्त, अम्बष्ठ, पश्चिमीय उत्तरीय राजा लोग मालवीय शिबय सूरसेन और मलयदों समेत सौवीर १५ कि तब सब पूर्वीय और दक्षिणीय राजा आपके पुत्रको आगे करके कर्ण के पीछे १६ अपनी सेनाओं को प्रसन्न करते आपके पुत्रोंके साथ चले सब शूरवीरों में शिरोमणि द्रोणाचार्य्यजीने सेनाओं में पराक्रम नियत किया १७ और सूर्य्यके पुत्र कर्ण ने सब धनुषधारियों के आगे होकर बड़ी शीघ्रता पूर्वक अपने शरीरके [illegible] से सब सेनाको प्रसन्न किया १८ हाथीकी कक्षाका चिह्न रखनेवाली बड़ी

उत्तम ध्वजा धारण करनेवाला सूर्य्यके समान तेजस्वी कर्ण बड़ा शोभायमान हुआ उस कर्णको देखकर किसी ने भी भीष्म के दुःखको नहीं माना १९ और कौरवों समेत सब राजालोग शोक से रहित हुये उससमय प्रसन्न चित्त बहुत से शूरवीर बड़ी तीव्रतासे और दर्पसे बोले कि इस कर्णको देखकर पांडवलोग युद्ध में नियत नहीं होंगे यह कर्ण युद्धमें इन्द्र समेत सब देवताओं के विजय करने को समर्थहै २०।२१ बल पराक्रमसे रहित पांडवोंको युद्धमें विजयकरना क्या बात है बाहुशाली भीष्मने पांडवोंको दया करके पोषण किया और रक्षाकरके नहीं मारा २२ परन्तु अब यह कर्ण उनको युद्ध में तीक्ष्ण बाणों से नष्ट करदेगा हे राजा इस रीतिसे वह सब राजालोग परस्पर में कहते २३ और कर्ण को पूजते उसकी प्रशंसा करतेहुये चलदिये हमारी सेनाका यह शकटव्यूह द्रोणाचार्य्यने रचा २४ हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र दूसरे महात्मा अर्थात् पांडवोंका क्रौंचव्यूह प्रसन्नचित्त धर्म्मराज युधिष्ठिरने रचा २५ उनके व्यूह के मुखपर पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी और अर्जुन अपनी बानरध्वजाको ऊंची करके नियतहुये २६ उस अर्जुन की जो ध्वजाथी वह सब सेनाओं का राजचिह्न और सब धनुषधारियोंकी ज्योतिरूपथी बड़े तेजस्वी महात्मा अर्ज्जुनकी ध्वजा जो कि सूर्य्य के मार्ग में बर्त्तमान थी उसने उस सेनाको ऐसे प्रकाशमान किया जैसे कि प्रलयके समय बड़ी अग्निकी ज्वाला और सूर्य्यका तेज पृथ्वीको प्रकाशित करताहै २७।२८ उसी प्रकार से वह अर्जुनकी प्रकाश करनेवाली ध्वजा सब स्थानों पर प्रकाश करती हुई दिखाई पड़ी युद्धकर्ताओं में श्रेष्ठ अर्जुनहै और धनुषोंमें महा उत्तम गांडीव धनुषहै २९ सब जीवधारियों में बासुदेवजी और चक्रों में सर्वोत्तम सुदर्शनचक्र है इन चारों तेजोंका लेचलनेवाला श्वेतघोड़ेवाला रथ ३० कालचक्र के समान उदय होनेवाला शत्रुओं के आगे नियत हुआ इसरीति से वह दोनों महात्मा सेनाके आगे चलनेवाले हुये ३१ आपके पुत्रोंके आगे कर्ण और पाण्डवोंके आगे अर्जुन हुआ तब उसके पीछे विजयके निमित्त क्रोधसे भरे परस्पर मारनेके अभिलाषी ३२ कर्ण और पाण्डव अर्जुनने युद्धमें जाकर परस्पर बाटदेखी अर्थात् एकने दूसरेका पैंड़ादेखा इसके पीछे अकस्मात् महारथी द्रोणाचार्य्यके चलनेपर ३३ दुःखों से भराहुआ महाशब्द हुआ पृथ्वी अत्यन्त कंपायमान हुई और बड़ी धूलिने सूर्य्य समेत आकाश को ढकदिया ३४ तदनन्तर

रेशमी वस्त्रोंके समूहोंके समान कठिन और असह्य धूलिउठी और विना बादलों केही आकाश से मांस रुधिर और अस्थियोंकी बर्षा होनेलगी। ३५ और हे राजा उस समय हजारों गृध्र बाज बगले कङ्क काक आदि अशुभ द्योतक पक्षी सेनाके ऊपर गिरे ३६ और शृगाल बड़े भयकारी अशुभसूचक शब्दों को करने लगे और बहुतसे पक्षियोंने आपकी सेनाको दक्षिण किया ३७ वह पक्षी मांसके खाने और रुधिरके पानकरनेके अभिलाषीहुये और अग्निसे प्रज्वलित प्रकाशमान उल्का प्रहारोंके शब्दोंसमेत कम्पायमान करती पीठकी ओरसे सबको घेर कर युद्धभूमिमें गिरी हे राजा सेनापतिके चलनेपर सूर्य्यका बड़ा मंडल बिजली और बादलकी गर्जनासमेत बाहरको उदयहुआ यहसब और अन्य २ भी अनेक भयकारी उत्पात प्रकट हुये ३८।३९।४० यह सब उत्पात युद्धमें वीरलोगों के नाश करनेवालेथे इसके पीछे परस्पर मारनेके इच्छावान् वीरोंके युद्ध ४१ कौरव और पांडवोंकी सेनाओंके शब्दोंसे संसारको व्याप्त करतेहुये जारीहुये औरवह पांडव कौरवोंके साथ परस्पर क्रोधमें भरे विजयके अभिलाषी तीक्ष्ण शस्त्रोंसे प्रहार करनेलगे फिर वह बड़ा तेजस्वी युद्धमें हजारों बाणोंसे ढकता बड़ी तीव्रता से महापुरुष पाण्डवोंके सम्मुख गया हे राजा जब पाण्डवोंने सृंजियोंसमेत युद्ध में प्रवृत्तरूप द्रोणाचार्यको देखा ४२।४३ तब उनको देखकर पृथक् २ बाणोंकी वर्षाओं से रोका द्रोणाचार्य्य के हाथ से अत्यन्त व्याकुल और घायल हुई बड़ी सेना४४।४५पांचालोंसमेत ऐसे छिन्नभिन्न होगई जैसे कि हवासे बादल इधर उधर होजाते हैं फिर युद्धमें बहुत से अस्त्रों को प्रकट करतेहुये द्रोणाचार्य्यजी ने एक क्षणमात्रमेंही पाण्डव और सृंजियों को ऐसे पीड़ामान किया जैसे कि इन्द्र के हाथसे दानव पीड़ित होते हैं इसीप्रकार द्रोणाचार्य्यके हाथसे घायल वह सब पांचाल४६।४७जिनका कि अग्रगामी धृष्टद्युम्नथा अत्यंत कम्पायमानहुये इसके पीछे दिव्य अस्त्रोंके जाननेवाले शूर महारथी धृष्टद्युम्न ने ४८ बाणोंकी वर्षा से द्रोणाचार्य्यकी सेना को अनेक प्रकारसे घायल किया अर्थात् उस पुर्षतके पौत्र पराक्रमी धृष्टद्युम्नने अपने बाणोंकी वर्षासे द्रोणाचार्य्यके बाणोंकी वर्षा को ४९ अच्छी रीति से रोककर सब कौरवों को भी घायल किया तदनन्तर बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्यजी युद्धमें अपनी सेना को इकट्ठा करके और अच्छे प्रकार से नियत करके धृष्टद्युम्नके सम्मुख गये और वहां जाकर उन्होंने धृष्टद्युम्नके ऊपर

ऐसी बड़ीभारी बाणोंकी बर्षाकरी ५१ जैसे कि अत्यन्त कोपयुक्त इन्द्र अकस्मात् दानवों पर करताहै द्रोणाचार्य्यके बाणों से कम्पायमान वह पाण्डव और सृंजय ५२ बारम्बार भयभीत होकर कांपनेलगे जैसे कि सिंहसे अन्य मृगादिक कांपते हैं उसी प्रकार वह बलवान् द्रोणाचार्य्यजी पांडवों की सेनामें अलातचक्र अर्थात् बनेठीके समान घूमनेलगे यह सबको बड़ा आश्चर्य्यसाहुआ ५३। ५४ आकाशमें घूमनेवाला नगर के समान शास्त्रके अनुसार बनायाहुआ अथवा सब शत्रुओं के डरानेवाले उस उत्तम रथपर जो कि आनन्दरूप चलायमान घोड़ेवाला अथवा बायुसे चलायमान पताका रखनेवाला था और स्फटिकके समान जिसकी स्वच्छ ध्वजाथी ऐसे रथपर सवार होकर द्रोणाचार्य्यजीने शत्रुओं की सेनाको मारा ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसरीतिसे घोड़े और सारथियों समेत रथ और हाथियों के मारनेवाले द्रोणाचार्य्य को देखकर पांडवलोग बड़े पीड़ामान हुये और उनको न रोकसके १ इसके पीछे राजा युधिष्ठिरने धृष्टद्युम्न और अर्जुन से कहा कि सब ओरसे उपाय करनेवाले शूरबीरों समेत द्रोणाचार्य्यको हटाना चाहिये २ वहां अर्जुन और अपने साथियों समेत धृष्टद्युम्नने उनको घेरलिया फिरतो सब महारथी चारोंओर से दौड़े ३ पांचोंकैकेय भीमसेन अभिमन्यु घटोत्कच युधिष्ठिर नकुल सहदेव मत्स्यदेशीय और इसीप्रकार राजाद्रुपद के पुत्र ४ अत्यन्त प्रसन्न चित्त द्रौपदी के पुत्र और सात्यकी समेत धृष्टकेतु और अत्यन्त क्रोधयुक्त चेकितान महारथी युयुत्सु और हे राजा पांडवके पीछे चलनेवाले जो अन्य २ राजा थे उनसबने कुल और पराक्रमके अनुसार कर्मोंको बहुत प्रकार से किया ५। ६ फिर भारद्वाज द्रोणाचार्य्य ने युद्धमें पांडवोंसे अच्छीरीतिसे रक्षित उस सेनाको देखकर बड़े क्रोधयुक्त दोनों नेत्रोंको निकालकर देखा ७ युद्धमें कठिनतासे विजय होनेवाले उन द्रोणाचार्य्यजीने बड़े क्रोधयुक्त होकर पांडवोंकी सेनाको ऐसे घायल किया जैसे कि वायु बादलको करताहै ८ द्रोणाचार्य्य जहां तहां रथ घोड़े मनुष्य और हाथियोंके भी सम्मुख दौड़े और वृद्धहोकरभी तरुण और मदोन्म-

त्त के समान घूमनेलगे ९ हे राजा निश्चय करके उसके वह लालरंग केसे घोड़े जोकि रुधिरसे लिप्त शरीर वायुके समान शीघ्रगामी आजानेय जातवाले थे वह बिना विश्राम लेतेहुये घूमतेथे १० उसकालके समान क्रोधयुक्त सावधान व्रतको आताहुआ देखकर पांडवोंके शूरवीर जहां तहां भागे ११ उन भागते फिर लौटते देखते और नियत होते हुये युद्धकर्त्ताओं के शब्द महाभयकारी और कठिनहुये १२ वीरलोगोंकी प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाले भयभीतों के भयबढ़ानेवाले शब्दने पृथ्वी और आकाश के मध्यभागको सबओरसे भरदिया १३ इसके अनन्तर युद्धमें नामको सुनातेहुये सैकरों बाणों से शत्रुओंको ढकते द्रोणाचार्य्यने फिर अपने रूपको रुद्ररूपकिया १४ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र वह वृद्धद्रोणाचार्य्य तरुण और महाबलवान् के समान पांडवोंकी उन सेनाओं के मध्यमें कालके समान भ्रमणकरनेलगे १५ भयकारी शिरोंको और भूषणोंसे अलंकृत भुजाओंकोभी काटकर रथके ऊपर नियत होनेवाले शूरवीर महारथियोंको पुकारे १६ हे समर्थ उसकी प्रसन्नताके शब्दोंसे और बाणोंके वेगसे शूरवीरलोग ऐसे अत्यन्त कंपायमानहुये जैसे कि शरदीसे पीड़ामान गौवें कंपायमान होती हैं १७ द्रोणाचार्य्य के रथके व धनुष और प्रत्यंचाके खैंचनेके शब्दोंसे आकाश में महाभयकारी शब्द उत्पन्नहुये १८ इन द्रोणाचार्य्यके धनुषसे निकलकर घूमनेवाले हजारोंबाण सबदिशाओं को व्याप्तकरके हाथी घोड़ेरथ और पदातियों के ऊपर गिरे १९ पांडवोंसमेत पांचालोंने उन द्रोणाचार्य्यकी सम्मुखताकही जिनके बड़े वेगवान धनुष और प्रकाशित अग्न्यास्त्र थे २० द्रोणाचार्य्य ने थोड़ेही समयमें उनसबको हाथी घोड़े और पदातियो समेत यमलोक को भेजा और पृथ्वीको रुधिर रूप कीचवाली करदिया २१ उत्तम शस्त्रोंको छोड़ते और बराबर बाणोंको चलाने द्रोणाचार्य्य का रचाहुआ बाणोंकाजाल दिशाओं में दिखाई दिया २२ उसके ध्वजा पदाती और रथके घोड़े और रथों के मध्यभी सब ओरसे ऐसे दृष्ट पड़े जैसे कि बादलों में घूमती हुई बिजली होती हैं २३ वे बड़े साहसी हाथ में धनुषबाण धारण करनेवाले द्रोणाचार्य्य केकयदेशियों में अत्यन्त श्रेष्ठ पांचों राजकुमार और राजाद्रुपद को बाणोंसे मथनकर युधिष्ठिरके सम्मुखगये २४ भीमसेन, अर्जुन और शिनीकापौत्र, द्रुपदकापुत्र, सात्यकी, शैव्यात्मज, काशिपति, शिवि इन सब शूरोंने उन द्रोणाचार्य्यजीको देखकर बाणोंके समूहोंसे ढ-

कदिया २५ द्रोणाचार्य्यजी के धनुषसे छूटेहुये सुनहरी पुंखवाले बाण उन सब बीरोंके और हाथी घोड़े और अन्य बीरलोगोंके शरीरोंको बेधकर रुधिरमें भरेहुये पृथ्वीमें समागये २६ वह पृथ्वी शूरबीरोंके समूह टूटेहुये बाण और गिरेहुये हाथी घोड़ों से ऐसी ढकगई जैसे कि कालके मेघोंसे आच्छादित आकाश होताहै २७ आपके पुत्रोंका ऐश्वर्य चाहनेवाले द्रोणाचार्य्यने सात्यकी,भीमसेन,अर्जुन, धृष्टद्युम्न, अभिमन्यु, द्रुपद, काशीनरेश और युद्ध में अलंकृत अन्य बहुत से बीरोंको पराजयकिया २८ हे कौरवेन्द्र राजा धृतराष्ट्र महात्मा द्रोणाचार्य्य भी इनकर्मोंको और अन्य २ कर्मोंको करके और कालरूप सूर्य्यके समान लोगोंको तपाकर इसलोक से स्वर्गको गये २९ इसरीतिसे वह शत्रुओंकी सेनाको पीड़ा देनेवाले स्वर्णमयी रथपर सवार द्रोणाचार्य्य महाभारी कर्मको करके और युद्धमें पांडवोंके लाखों शूरबीरोंको मारकर धृष्टद्युम्नके हाथसे गिराये गये ३० युद्ध में मुख न मोड़नेवाले आचार्य ने शूरोंके एक अक्षौहिणीसे भी अधिक समूहको मारकर और आपभी घायल होकर परमगतिको पाया ३१ हे राजा वह स्वर्णमयी रथपर सवार द्रोणाचार्य्य अत्यन्त कठिन कर्मको करके अशुभ और क्रूरकर्मी पांचालोंसमेत पांडवोंसे मारेगये ३२ तदनन्तर युद्धमें उन आचार्यजीके मरनेपर आकाशमें जीवोंके और सेनाके मनुष्योंके बड़े शब्द प्रकटहुये ३३ स्वर्ग पृथ्वी आकाश दिशा और विदिशाओंको भी शब्दायमान किया और जीवोंके यह उच्चस्वरसे शब्दहुये कि क्षत्रिय धर्मको धिक्कार है ३४ देवता पितरोंने और जो उसके पीछे बान्धवथे उन्होंने वहांपर मरेहुये महारथी द्रोणाचार्य्य को देखा ३५ फिर पांडवों ने विजयको पाकर सिंहनादों को किया और अत्यन्त सिंहनादों के होनेसे पृथ्वी बड़ी कंपायमान हुई ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्रजी बोले कि पांडव और सृंजियोंने उन अस्त्रों में कुशल सबशस्त्रधारियों के शिरोमणि द्रोणाचार्य को क्या कर्म करतेहुये मारा १ इनका रथ टूटा अथवा खिंचाहुआ धनुष टूटा या यह द्रोणाचार्य निर्मोहको प्राप्तहुये जिससे कि उन्होंने मृत्युको पाया २ हे तात राजा द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न ने उन शत्रुओं से

भय न करनेवाले और सुनहरी पुङ्खवाले वाणोंके समूहोंको बहुतप्रकारसे फैलानेवाले ३ हस्तलाघवी ब्राह्मणों में श्रेष्ठ साधु अपूर्व युद्धकर्त्ता दूर २ के स्थानोंपर दौड़नेवाले जितेन्द्रिय शस्त्रों के युद्ध में प्रवीण ४ दिव्य अस्त्रों के धारण करनेवाले अजेय भयकारी कर्मों के करनेवाले महासाहसी और महारथी द्रोणाचार्य्य को मारा ५ प्रकट है कि उपाय करने से होनहार भावी प्रबल है यह मेरा मत है जिसके कारणसे कि महात्मा धृष्टद्युम्नके हाथसे द्रोणाचार्य मारेगये ६ । ७ जिस शूरवीर में चार प्रकारके अस्त्र नियतथे उस बाण और अस्त्रों के धारण करनेवाले मेरे आचार्य्य को मराहुआ कहता है अब मैं उस व्याघ्रचर्म से मढ़े सुनहरी जातरूप नाम सुवर्ण से चित्रित रथवाले को मृतक सुनकर शोकको करताहूं ८ हे संजय निश्चय करके कोई मनुष्यभी दूसरेके दुःखसे नही मरताहै जो मैं निर्बुद्धी उन द्रोणाचार्य्यजी को मृतक सुनकर जीवताहूं ९ मैं होनहारको अधिकतर मानताहूं और उपाय करना निरर्थकहै जोमैं अल्पबुद्धी उन द्रोणाचार्य को मृतक हुआ सुनकर जीवताहूं १० निश्चयकरके मेरा हृदय वज्रसेभी कठोरहै जो द्रोणाचार्यजीको मृतक सुनकर सौ प्रकार से खण्ड २ नही होता है ११ गुण के चाहनेवाले ब्राह्मण और राजकुमारों ने ब्रह्मास्त्र और देवताओं के अस्त्र इसीप्रकार बाणविद्यामें भी जिसकी उपासना करी वह कैसे मृत्यु से हरागया १२ शुष्क समुद्र वा मेरुकी चलायमानता अथवा सूर्य्य के पतन होनेके समान द्रोणाचार्य्य के गिरानेको नहीं सहसक्ताहूं १३ वह पापियोंको निषेध करनेवाला और धर्मकरनेवालोंका रक्षक हुआ और जिस शत्रुसन्तापी ने उस नीचके निमित्त प्राणोंकोभी त्याग किया १४ और जिसके पराक्रममें मेरे अभागे पुत्रोंको विजय की आशाथी और जो बुद्धि में बृहस्पति जी और शुक्रजी के समान था वह कैसे मारागया १५ वह लालरङ्गवाले बड़े घोड़े सुनहरी जालों से ढकेहुये वायु के समान शीघ्रगामी रथमें जुड़े और युद्ध में सब शस्त्रों को उल्लङ्घन करके चलनेवाले १६ पराक्रमी हिंसन शब्द करनेवाले शिक्षा पायेहुये सिन्धदेशी श्रेष्ठ घोड़ोंके सवार करानेवाले युद्धमें भयाकुल होकर भयभीततो नहींहुये १७ युद्धमें शङ्ख और दुन्दुभियों के शब्दों से चिंघारते हाथियों को प्रत्यञ्चाके आघात को और बाणों समेत शस्त्रों की वर्षाके सहनेवाले १८ शत्रुओं के विजय करने की आशा करनेवाले श्वास और पीड़ाके जीतनेवाले शीघ्रगामी द्रोणाचार्य्यके रथके

लेचलने वाले घोड़े पराजय हुये १९ हे तात स्वर्णमयी रथमें जुड़ेहुये नरबीरोंके हाथ से घायल उन घोड़ोंने पाण्डवोंकी सेनाको कैसे नहींतरा २० सत्यपराक्रमी भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजी ने जातरूप नाम सुवर्ण से अलंकृत और उत्तम रथपर सवार होकर युद्ध के मध्यमें क्या किया २१ सब लोक के धनुषधारी जिस की विद्यासे अपनी जीविका और निर्वाह करतेहैं उस सत्यसङ्कल्पी पराक्रमी द्रोणाचार्यने युद्धमें क्या किया २२ जिसप्रकार कि स्वर्ग में इन्द्र उत्तमहै उसी प्रकार कौनसे रथी युद्धमें उस श्रेष्ठ और धनुषधारियों के बृद्धभयकारी कर्म करनेवाले के सम्मुखगये २३ पांडवलोग उस स्वर्णमय रथवाले दिव्यअस्त्रों के चलानेवाले महाबली को युद्धमें देखकर भागे २४ कहो कि धर्मराज युधिष्ठिर ने अपने छोटे भाई और सब सेना समेत धृष्टद्युम्न सेनापति होनेमें द्रोणाचार्य्यको सब ओरसे घेरलिया २५ निश्चय करके अर्जुनने सीधे चलनेवाले बाणोंसे अन्य रथियोंको रोकदिया इस हेतुसे पापकर्म करनेवाला धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्यके ऊपर चढ़ाई करके प्रबल होगया २६ मैं उस अर्जुनसे रक्षित रुद्रधृष्टद्युम्न के सिवाय द्रोणाचार्य के मारने की सामर्थ्य किसी शूर में नहीं देखता हूं २७ इसहेतु से पाञ्चालदेशियोंमें नीच और सब ओरसे उन कैकेय चन्देरी कारुष्य और मत्स्यदेशियों के शूरबीर आदि अन्य राजाओं से घिरेहुये शूर धृष्टद्युम्न ने २८ कठिन कर्मों में प्रवृत्त जैसे कि चेटियों से व्याकुल सर्प होता है उसी प्रकार से महाव्याकुल आचार्य्यजीको माराहै यह मेरा मतहै २९ जो अंगों समेत चारोंवेद जिनमें कि पांचवां इतिहासहै उनको पढ़कर ब्राह्मणोंमें ऐसा प्रतिष्ठावान् हुआ जैसे कि नदियों में समुद्र की प्रतिष्ठा होती है ३० जो शत्रुओं का तपानेवाला इस लोक में क्षत्रिय और ब्राह्मण के धर्म में नियत हुआ उस वृद्धब्राह्मणने किसप्रकारसे शस्त्रविद्यामें लड़कर गतिको पाया ३१ सदैव मुझसे अप्रसन्न और कुन्तीके पुत्र से पूजन न पानेवाले अशान्तचित्त में उसको क्षमा किया उसीका यह फल है ३२ लोकके मध्य में सब धनुषधारी जिसके कर्म्म के अनुसार कर्मों को करते हैं वह सत्यसङ्कल्पी शुभकर्म्मी किसरीति से धनाभिलाषी पुरुषों के हाथ से मारा गया ३३ स्वर्ग में रहनेवाले इन्द्रके समान श्रेष्ठ महाबली और पराक्रमी थे वह पाण्डवों के हाथ से ऐसे क्यों मारेगये जैसे कि छोटी मछलियों के हाथ से तिमि नाम मत्स्य माराजाताहै ३४ वह हस्तलाघवी महाबली बड़े दृढ़ धनुपका रखने

वाला और शत्रुओंका मर्दन करनेवालाथा विजयाभिलाषी जिसके देशको पाकर जीवता नहीं रहता है ३५ जिस जीवतेहुये को दो प्रकारके शब्दों ने कभी नहीं त्यागकिया वेद चाहनेवालोंकी वेदध्वनि और धनुषधारियोंकी प्रत्यञ्चाका शब्द ३६ में उस बड़े साहसी पुरुषोत्तम लज्जायुक्त अजेयसिंह और हाथी के समान पराक्रमी द्रोणाचार्य्य का मरना नहीं कहसक्ता हूं ३७ हे सञ्जय धृष्टद्युम्नने युद्धके मध्य में सब राजाओं के देखतेहुये उस निर्भय अजेय यशी और महापराक्रमी को किसप्रकार से मारा ३८ द्रोणाचार्य को सम्मुखसे रक्षा करतेहुये कौन आगे युद्ध करनेवालेहुये और दुःखसे मिलनेवाली गतिके पानेवाले उसी द्रोणाचार्य्य के पीछे कौन २ वर्तमान हुये ३९ युद्धमें लड़तेहुये उसी वीर महात्माके दाहिने और बायें चक्रको किस किसने रक्षित किया और किन लोगोंने आगे से रक्षा करी ४० और किन किन पुरुषों ने उस युद्ध में शरीरोंको त्यागकर विपरीत मृत्युको पाया और कौनसे वीरोंने द्रोणाचार्य्य के युद्ध में परमगति को पाया ४१ निर्बुद्धी रक्षा करनेवाले क्षत्रियोंने भयसे युद्ध में उसको त्यागतो नहीं करदिया जिससे कि एकाकीहोकर शत्रुओंके हाथसे मारागयाहो ४२ वह महाआपत्ति में भी प्राप्त होकर अपनी वीरताके कारण शत्रुओंके भयसे पीठ नही दिखला सक्ता था वह किसरीति से शत्रुओं के हाथसे मारागया ४३ हे संजय दुःख और आपत्तियों के प्राप्त होजानेपर श्रेष्ठलोगों को यही करनेके योग्यहै कि सामर्थ्य के अनुसार पराक्रम करे तो वही गुण उसमें नियत है ४४ हे तात अब मेरा चित्त मोहित अर्थात् विह्वल हुआ जाताहै तबतक कथा बन्द करो जब मुझ को सावधानी होगी तब मैं फिर तुम से पूछूंगा ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिनवमोऽध्यायः ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

वैशंपायनजी बोले कि सूतके पुत्र संजय से इतना पूछकर हृदयके शोकसे अत्यन्त पीड़ामान पुत्रोंकी विजयमें निराशावान् होकर धृतराष्ट्र पृथ्वीपर गिर पड़े १ तब सेवक लोगोंने उस असावधान निश्चेष्ट गिरेहुये सजीव के ऊपर अत्यन्त शीतल और सुगन्धित जलसे सींचा २ । ३ हे महाराज भरतवंशियों की स्त्रियोंने उस पृथ्वीपर गिरेहुये धृतराष्ट्र को देखकर चारोंओर से घेरकर हाथें

से स्पर्श किया अर्थात् पकड़ा अश्रुपातों से पूर्ण सुन्दर मुखवाली स्त्रियोंने बड़े धीरेपने से इस राजाको पृथ्वीपर से उठाकर आसन पर बैठाया ४ तब मूर्च्छा से संयुक्त राजा आसनको पाकर चारोंओर से पंखोंकी वायु का लेनेवाला होकर निश्चेष्ट और निश्चल होकर नियतहुआ ५ उस कंपायमान राजाने बड़े धीरे पने से सावधानी को पाकर फिर गोलकनके पुत्र सूत संजयसे सत्य २ वृत्तान्त पूछा ६ कि उस सूर्य्य के समान उदय होनेवाले अपनी ज्योतिसे अन्धकारको दूर करनेवाले अजातशत्रु युधिष्ठिर को किसने द्रोणाचार्य्यकी ओरसे हटाया ७ मद झाड़नेवाले क्रोधयुक्त वेगवान् हाथी के समान प्रसन्नमुख हाथी के सम्मुख जानेवाले को किसनेरोका ८ जो कि उसरीतिसे विजयकरने के योग्य न था जैसे कि अपनी हस्थिनी से संग करते झुंडके प्रधानों से हाथी अजेय होता है उस पुरुषोत्तम वीरने युद्धमें बड़े २ वीरोंकोमारा ९ जो बड़े बली धैर्य्यवान् सत्यसंकल्पी अकेलाही अपने घोर नेत्रों से दुर्योधन की सब सेनाको भस्म करसक्ताथा १० उसनेत्रसे मारनेवाले विजय में प्रवृत्त धनुषबाणधारी अजेय जितेन्द्रिय और लोक में महामान्यको किन २ शूरोंने रोका ११ वहांपर मेरे कौन २ से शूरोंने उस निर्भय धनुषबाणधारी अविनाशी पुरुषोत्तम राजा युधिष्ठिरसे अच्छे प्रकार करके सम्मुखता करी १२ फिर जो तीव्रता से आकर द्रोणाचार्य्य के सम्मुखदौड़ा और जो बड़ापराक्रमी शत्रुओं के युद्ध में बड़े कर्म का करनेवाला है १३ वह बड़े शरीर और उत्साहवाला बलमें दशहजार हाथीके समान है उस आतेहुये भीमसेनको किन २ शूरोंने रोका १४ । १५ जब बादल के समान बड़ेरथमें बैठा हुआ महापराक्रमी वीर्य्यमान इन्द्रके समान बाणरूप वज्रोंको फेंकता तल और नेमियों के शब्दोंसे सब दिशाओं को शब्दायमान करता अर्जुन आया धनुष रूप बिजलीका प्रकाश रखनेवाला नेमीके शब्दरूप गर्जना का करने वाला व बाणों के शब्दों से अत्यन्त सुन्दर १६ । १७ क्रोधजन्य जीमूतनाम बादल रखने वाला चित्तके विचारके समान शीघ्रगामी मर्मोंको भेदकर चलनेवाले बाणोंका धारण करनेवाला रुधिररूप अथाह जल रखनेवाला दिव्य दिशाओंको चलायमान करता मनुष्यों से पृथ्वी को आच्छादित करता भयकारी शब्द वाला जो अर्जुन है १८ उस बुद्धिमान् गांडीव धनुषधारी अर्जुनने युद्ध में दुर्योधनादिकों को तीक्ष्ण धारवाले बाणों से स्नान कराया तब तुम्हारा मन कैसा हुआ१९।२०

आकाश को बाणों से पूर्ण करता उत्तम वानरी ध्वजा रखनेवाला जब वह अ-
र्जुन आया उससमय तुम्हारा चित्त कैसाहुआ २१ गाण्डीव धनुष के शब्द
से सेनाका तो नाशनहींहुआ जब वह अर्जुन महाभयकारी युद्धकर्त्ता तुम्हारे
सम्मुख आया उस समय अर्जुनने बाणों से तुम्हारे प्राणोंको तो शरीर से पृथक्
नहींकिया और जैसे वायुवेगसे बादलोंको घायल करता है उसीप्रकार बाणों के
समूहों से राजाओंको घायलकिया २२।२३ कौन मनुष्य युद्धमें गांडीव धनुष-
धारिके सहने के योग्यहै तव सेनाके पुरुषके समूह जिसको सेनाके आगेहुआ
सुनकर व्याकुल होकर भागते हैं २४ वह सेना जब अत्यन्त कंपायमान हुई
अथवा वीरोंको भयने स्पर्श कियाथा उससमय किन २ लोगोंने द्रोणाचार्य्य को
नहीं त्याग किया और कौनसे नीचपुरुष भयसे व्याकुल होकर भागे २५ वहां
किन लोगोंने शरीरको त्यागकरके विपरीत मृत्युको पाया जहां कि युद्धमें दे-
वताओंके भी विजय करनेवाले अर्जुन को अपने सम्मुखपाया २६ मेरे पुत्र
अथवा अन्यशूरवीर उस श्वेत घोड़े रखनेवाले अर्जुनके वेगको और वर्षाऋतु
के बादलके समान गांडीव धनुषके शब्दको सह नही सकेंगे २७ जिसके स-
हायक श्रीकृष्णजीहैं और युद्ध करनेवाला वीर अर्जुनहै वह रथी देवता और
असुरों सेभी विजय करना असंभवहै यह मुझे पूर्ण निश्चयहै २८ यह पांडव
सुकुमार युवा शूरवीर और दर्शनीय होकर मेधावान् निपुण बुद्धिमान् और सं-
ग्राम में सत्य पराक्रमी है २९ बड़े शब्दको करते सब सेनाके मनुष्योंको पीड़ा-
मान करतेहुये और द्रोणाचार्य्य के सम्मुख आनेवाले उस नकुल को कौन २ से
शूरवीरोंने रोका ३० जब सर्प के समान क्रोधयुक्त युद्धमें अपने तेजसे पराजय
न होनेवाले सहदेव शत्रुओंके नाशको करता हुआ सम्मुख आया ३१ उस श्रेष्ठ
पुरुषोंके व्रत रखनेवाले सफल बाणवाले लज्जावान् अजेय युद्धमें आतेहुये स-
हदेवको किन किन शूरवीरोंने रोका ३२ जिसने राजा सौवीर की सेनाको मथन
करके शरीरसे शोभायमान सुन्दर भोजवंशी पटरानीको हरणकिया ३३ और
जिसी पुरुषोत्तम युयुधान में सत्यता धैर्य शूरता और पवित्र ब्रह्मचर्य्य व्रत इत्यादि
सब गुणहैं ३४ उस पराक्रमी सत्यकर्मी उदारबुद्धि महासाहसी अजेय युद्ध में
वासुदेवजीके समान अथवा वासुदेवजीसे अन्तरहित ३५ अर्जुन की शिक्षासे
शस्त्र और अस्त्रोंके कर्मों श्रेष्ठ अस्त्रविद्या में अर्जुनके समान उस युयुधान को

किसने द्रोणाचार्य्य की ओरसे रोंका ३६ जा कि वृष्णिवंशियों में अत्यन्त श्रेष्ठ वड़ा बीर सब धनुषधारियों में प्रबल शूर यश पराक्रम के साथ अस्त्रों में बलदेवजी के समान है ३७ सत्यता धैर्य्य बुद्धि शूरता सर्वोत्तम ब्रह्मास्त्र यह सब उसी यादव में इस रीतिसे नियत हैं जैसे कि तीनों लोक केशवजी में नियत हैं ३८ इस रीति के सब गुणों से युक्त और देवताओं से भी अजेय बड़े धनुषधारी उस यादव को किन शूरों ने रोंका ३९ पाञ्चालदेशियों में श्रेष्ठ बीर और उत्तम जीवोंके प्यारे सदैव उत्तम कर्मवाले युद्ध में उत्तम पराक्रमवाले ४० अर्ज्जुन के हित करने में प्रवृत्त और मेरे अनर्थके निमित्त तत्पर और यमराज कुबेर सूर्य्य महाइन्द्र और बरुण नाम देवताओं के समान ४१ महारथी नाम से विख्यात और तुमुल युद्ध में द्रोणाचार्य्य के विजय करने के निमित्त उपाय करनेवाले प्राणों के त्यागनेवाले धृष्टद्युम्न को किस२ शूरबीर ने रोंका ४२ जो अकेलाही चन्देरी देशवासियोंसे पृथक् होकर पाण्डवों में संयुक्त हुआ उस द्रोणाचार्यके सम्मुख आनेवाले धृष्टकेतु को किसने रोंका ४३ जिस ध्वजाधारी बीरने कठिनता से बिजय होनेवाले पर्व्वत के द्वारपर भागनेवाले राजकुमार को मारा उसको द्रोणाचार्य्य की ओरसे किसने रोंका ४४ जो पुरुषोत्तम स्त्री और पुरुषके गुण अवगुणों का जाननेवालाहै उस युद्धमें प्रसन्न मन और लड़ाई में महात्मा देवव्रत भीष्मजीकी मृत्यु के कारण और द्रोणाचार्य्य के सम्मुख जातेहुये राजा द्रुपद के पुत्र शिखण्डी को किन किन शूरों ने रोंका ४५ जिस बीरमें सब गुण अर्जुनसे अधिकहैं और जिसमें सब अस्त्र सत्यता ब्रह्मचर्य्य सदैव बल पराक्रम में बासुदेव जी के समान बल में अर्जुन के तुल्य तेज में सूर्य्य के समान बुद्धि में बृहस्पतिजी के सदृश ४६ महात्मा व्यात्तानन मृत्युके समान द्रोणाचार्य्यके सम्मुख जातेहुये अभिमन्युको किन शूरोंने रोंका ४७ तरुण अवस्था युवा बुद्धि शत्रुओंके वीरोंका मारनेवाला अभिमन्यु जब द्रोणाचार्य्यके सम्मुख दौड़ा तब तुम्हारा चित्त कैसा होगयाथा ४८ जैसे कि नदियां समुद्रको वेगसे जातीहैं उसी प्रकार पुरुषोत्तम द्रौपदी के पुत्र अपने आपही जब द्रोणाचार्य के सम्मुख गये तब उनको किस २ शूरने रोंका ४९ जो वह धृष्टद्युम्नके पुत्र बालक वीर बारह वर्ष की अवस्थावाले और क्रीड़ा कुतूहलों को छोड़कर उत्तम व्रतको धारण करतेहुये अस्त्रोंके निमित्त भीष्मजीके पास निवासी हुये ५० जिनके नाम क्षत्रं-

जय क्षत्रदेव क्षत्रवर्मा और मानद हैं उनको द्रोणाचार्य्यकी ओरसे किस २ शूर वीरने रोंका ५१ वृष्णियोंने जिस बड़े धनुषधारी चेकितानको सौ शूरवीरोंसे भी उत्तममाना उसको द्रोणाचार्य्य की ओर से किसने रोंका ५२ जिस अनाधृष्टी अदीनात्मा वार्द्धक्षेमीने युद्धमें कलिंगदेशियों की कन्याको हरणकिया उसको किसने द्रोणाचार्य्य की ओरसे रोंका ५३ पांचों कैकेय आदि धार्म्मिक और सत्यविक्रम इन्द्र गोपकनाम जीवके समान रक्तवर्ण कवच शस्त्र और ध्वजाको भी अरुणही रखनेवाले ५४ पांडवों की मौसीके पुत्र बड़े वीर पांडवों की ही विजय के चाहनेवाले हैं द्रोणाचार्य्य के मारने को आनेवाले उनपांचों को द्रोणाचार्य्यकी ओरसे कौन २ से वीरोंने रोंका ५५ क्रोधयुक्त मारनेके अभिलाषी छः महीनेतक लड़तेहुये राजालोगोंने भी जिस शूरवीरोंके प्रधानको वारणावत नगरमें विजय नहीं किया ५६ उस धनुषधारियों में श्रेष्ठ नरोत्तम शूर सत्यसंकल्प महाबली युयुत्सुको किसने द्रोणाचार्य्यकी ओरसे रोंका ५७ जिसने वाराणसी अर्थात् काशीमें काशीके राजाके पुत्र महारथी स्त्रियोंमें आसक्त होनेवालेको युद्धमें अपने भल्लकेद्वारा रथसे गिराया ५८ उस बड़े धनुषधारी पांडवोंमें मुख्यमंत्री दुर्योधनके अनर्थमें प्रवृत्त द्रोणाचार्य्यके मारनेके निमित्त उत्पन्न ५९ युद्धमें शूरवीरोंको जलाते और सब ओरसे छिन्न भिन्न करते और द्रोणाचार्य्यके सम्मुख आने उस धृष्टद्युम्नको कौन २ से शूरवीरोंने रोंका ६० द्रुपदकी गोदीमें पोषण पानेवाले अस्त्रोंके उत्तम जाननेवाले शस्त्रोंसे रक्षित शिखंडीको कौनसे युद्ध कर्त्ताओंने द्रोणाचार्य्यकी ओरसेरोंका ६१ जो श्रेष्ठ शत्रुओंका मारनेवाला महारथी रथके बड़े शब्दके साथ इस सम्पूर्ण पृथ्वीको चमड़ेके समान लपेटलेवे और प्रजाओंको पुत्रोंकेसमान पोषणकरते इसराजाने अच्छेअन्न ६२ पान और उत्तम दक्षिणावाले दश अश्वमेधोंकोकिया वह सब यज्ञ अर्गलसे रहितथे अर्थात् उन यज्ञमें किसी देखनेवाले की रोंक न थी ६३ गंगानदीमे जितने कि वालूके कणहैं उतनीही गौयें यज्ञमें उसवीर उशीनरके पुत्रने दानकी ६४ कठिनतासे करने के योग्य कर्मके करनेपर देवताओंने बड़े उच्चस्वरसे यह वचन कहा कि पहले और पीछे मनुष्योंमेंसे किसीने यह नहींकिया ६५ अब तीनोंलोकमें जीव मात्रोंके मध्य सिवाय उशीनरके पुत्र शिवीके राज्यका भार उठानेवाला अन्य किसी वर्त्तमानको अथवा आगे उत्पन्न होनेवालेको भी नहीं देखतेहैं लोकवासी

मनुष्य जिसकी गतिको नहीं पावेंगे ६६।६७ उसके पौत्र धनसे अत्यन्त उदार मृत्युके समान द्रोणाचार्य्य के सम्मुख आनेवाले शिवीको किस पराक्रमी शूरने रोंका ६८ शत्रुओंको मारनेवाली राजाविराटकी रथसेना जोकि युद्धमें द्रोणाचार्य्य को चाहनेवालीथी उस सेनाको किन २ बीरोंने रोंका ६९ भीमसेभी अधिक बल पराक्रमका रखनेवाला मायावी बीर राक्षस जोकि शीघ्रही उत्पन्न हुआहै उससे मुझको बड़ाही भय उत्पन्न होताहै ७० पांडवोंके विजयकरनेके अभिलाषी मेरे पुत्रों के कंटक रूप उस बड़े साहसी घटोत्कच को द्रोणाचार्य्य की ओरसे किसने रोंका ७१ हे संजय जिन्होंके निमित्त यह और अन्य बहुत से शूरबीर लोग युद्धमें प्राणोंके त्याग करनेवालेहैं युद्धमें जिनका अजेय कोई भी नहींहै ७२ जिन पांडवोंका रक्षा स्थान शार्ङ्गधनुषधारी पुरुषोत्तम है और उनके प्रिय हित का भी चाहनेवाला है उनकी पराजय कैसे होसक्ती है ७३ लोकों के गुरू लोकनाथ और सनातन नारायण दिव्यात्मा दिव्य प्रभु श्रीकृष्णजी युद्ध में जिनके स्वामीहैं ७४ ज्ञानी लोग जिनके जिनकर्मों को कहते हैं मैं अपने धर्म के निमित्त भक्ति पूर्व्वक उनको कहूंगा ७५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय अब बासुदेवजीके दिव्यकर्मोंको सुनो जिन २ कर्मोंको कि श्री गोविन्दजीने किया उनकर्मोंको कोई अन्य पुरुष कहीं भी नहीं करसक्ता १ हे संजय गोपकुल में पोषणपानेवाले महात्मा बालकनेही तीनों लोकोंमें अपने भुजबलको बहुत प्रकारसे अच्छी रीतिसे बिख्यात किया २ और उच्चैःश्रवाके समान बल शीघ्रगामीपनेमें तीव्र बायुके समान जमनाके बनवासी घोड़ोंके राजा केशीकोमारा ३ बाल्यावस्थामें भयकारी रूप गौवोंका कालरूप बैलकी सूरत धारण करनेवाला वृषभासुरको अपनी भुजाओं से मारा ४ इसी कमललोचन ने प्रलम्ब नरकासुर जंभपीठ और मृत्युके स्वरूप मुरनाम दैत्य को भी मारा ५ और इसीप्रकार से जरासन्धसे पोषणपाया हुआ बड़ातेजस्वी कंस अपने सबराक्षसों के समूहों समेत युद्धमें श्रीकृष्णजी से मारागया ६ इसी प्रकार कंस का भाई महाबली युद्धमें पराक्रमी और पूरी अक्षौहिणी सेना का

स्वामी वड़ा वेगवान् शूरसेन देशके राजा भोजराजके मध्यवर्ती सुनामा नामभी इस शत्रु संहारी वलदेवजीको साथमें रखनेवाले श्रीकृष्णजीके हाथ से युद्ध में अपनी सव सेना समेत मारागया ७।८ इसी प्रकार स्त्री समेत श्रीकृष्णजीने महाक्रोधी दुर्वासा ऋषिको भी सेवन किया उसने उनको अनेक वरदान दिये ९ इसी प्रकार यह कमललोचन वीर श्रीकृष्णजी स्वयंवर में राजाओं को विजय करके गांधारदेश के राजाकी पुत्रीको लाये १० सहन न करनेवाले राजालोग एकजातिके घोड़ोंके समान जिसके विवाहके रथमें जोते गये और चावुक से घायलहुये ११ जनार्द्दनजीने पूरी अक्षौहिणी के स्वामी महावाहु जरासन्धको वड़े उत्तम उपायसे मारा १२ और इसी वलवान् ने चंदेरीके स्वामी महापराक्रमी अर्घपर प्रथम पूजनके विवाह करनेवाले शिशुपाल को पशुके समान मारा १३ इन्हीं माधवजीने आकाशमें नियत राजाशाल्वसे रक्षित और अजेय दैत्यों के सौभनामपुर को पराक्रम करके समुद्रकी कुक्षिमें गिराया १४ और युद्धमें अंग, वंग, कलिङ्ग, मागध, काशी, कौशल, वात्स्य, गार्ग्य, करूष्प और पौण्ड्र देशियोंको भी विजय किया १५ आवन्त्य और दाक्षिणात्य पर्वती पदशेटक् काश्मीरके और सिक पिशाच मुद्गल १६ कांवोज वाट धान चोल पाण्ड्य संजय त्रिगर्त्त मालव और वड़े दुर्जय व दरददेशियों को भी विजय किया १७ और नाना दिशाओंसे सम्मुख होनेवाले अनुगामियों समेत वश और शक जातवालोंको और यवन अर्थात् यूनानके राजाको भी विजय किया १८ पूर्व्व समयमें इन्द्रियोंके स्वामी श्रीकृष्णजी ने जलचारी जीव समूहों के निवासस्थान ससद्रमें प्रवेश करके जलके मध्यवर्ती वरुण देवता को युद्धमें विजय किया १९ और पातालवासी पंचजन दैत्यको मारकर पांचजन्य नाम शंखको वजाया २० इस महावलीनेही अर्जुन को साथ लेकर खांडववन में अग्निको प्रसन्न करके अजेय और महाउत्तम अग्न्यास्त्र चक्रको पाया २१ यही वीर गरुड़पर सवार होकर अमरावतीपुरी को भयभीत करके महाइन्द्र के भवनमेंसे कल्पवृक्षको लाये २२ इन श्रीकृष्णजीके पराक्रम को जानकर इन्द्रने क्षमाकरी अर्थात् शान्तरहा यहां राजाओंके मध्यमें भी श्रीकृष्णजीसे अजेय किसीको नहीं सुनते हैं २३ हे संजय कमललोचन श्रीकृष्णजीने मेरीसभा में वह महाअपूर्व्व कर्म किया उसको करनेको इनके सिवाय कौन पुरुषकरने को समर्थ है २४ जिस हेतुसे

कि मैंने भक्ति के साथ प्रसन्नमूर्ति श्रीकृष्ण ईश्वर को देखा इसी कारणसे सब इनका कर्म मेरा जानाहुआहै जैसे कि वेद और शास्त्रसे निश्चय करनेके योग्य है २५ हे संजय पराक्रम और बुद्धिसे युक्त इन्द्रियोंके स्वामी श्रीकृष्णजीके कर्मों का अन्तपाने के योग्य नहीं है २६ इसी प्रकार गद, सांब, प्रद्युम्न, विदूरथ, अंगावह, अनिरुद्ध, चारुदेष्ण, सारण २७ उल्मुक, निशठ, झिल्ली पराक्रमी बभ्रु, पृथु, विपृथु, शमीक, अरिमेजय २८ यह और इनके विशेष अन्य पराक्रमी आघात करनेवाले वीर वृष्णिवंशीहैं वह वृष्णीवीर महात्मा केशवजीके बुलायेहुये किसी प्रकारसे युद्धमें नियतहोकर पांडवोंकी सेनामें संयुक्त होंगे इनके संयुक्त होनेके पीछे सब संशयसे युक्त होंगे यह मेरा विचार पूर्व्वक मतहै २९।३० दशहजार हाथीकेसमान पराक्रमी और कैलासके शिखरकेसमान शरीरवाले बनकीमाला और हलमूसलके धारण करनेवाले वीर बलदेवजीभी उधरहीहैं जिधर श्रीकृष्णजी हैं ३१ ब्राह्मणों ने जिन बासुदेवजीको सबका पालन करनेवाला वर्णन किया हे संजय यह श्रीकृष्णजीभी पांडवोंके निमित्त युद्ध करेंगे ३२ हे तात संजय जब वह पांडवों के निमित्त युद्ध करनेको उपस्थितहोयँ तो उनके सम्मुख लड़ने वाला हमारी सेना में कोई न होगा ३३ जो वह अकेलेही सब कौरव और पांडवोंको विजयकरें तो उस समय श्रीकृष्णजी उन पांडवोंके निमित्त उत्तम सलाहको देंगे ३४ तब वह महाबाहु पुरुषोत्तम युद्धमें सबराजाओं और कौरवोंको मारकर इस सब पृथ्वीको कुन्तीको देंगे ३५ जिसके सहायक श्रीकृष्णजी और युद्ध करनेवाला अर्जुन है उसके रथके सम्मुख कौन सारथी शूरता करसक्ता है ३६ किसी प्रकारसेभी कौरवोंको बिजयनहीं दिखाई देती है इस हेतुसे वह सब मुझसे कहो जैसे कि युद्ध जारी हुआ ३७ अर्जुन केशवजी की आत्मा है और श्रीकृष्णजी भी अर्जुन की आत्माहैं अर्जुन में सदैव पूर्ण विजय है और श्रीकृष्णजी में अविनाशी कीर्त्ति है ३८ सब लोकोंमें अकेला वही अर्जुन सबसे अजेय है और केशवजी में उत्तमताके साथ असंख्य गुण हैं ३९ जो दुर्य्योधन यहां अपने मोह से श्रीकृष्णजीको नहीं जानता है इसीसे वह दैवयोगसे मोहित होके फांसीके आगे नियत हैं ४० वह श्रीकृष्णजीको और पांडव अर्जुनको नहीं जानताहै वह दोनों महात्मा पूर्वके नरनारायण नाम देवताहैं ४१ यह एक आत्मा दो रूपों को धारण कियेहुये पृथ्वीपर

मनुष्यों को देखने में आते हैं यह दोनों अजेय यशस्वी इच्छाहीसे अर्थात् चित्त के संकल्पहीसे इस सेनाका नाश करसक्ते हैं ४२ परन्तु नररूप होनेसे ऐसा करना नहीं चाहते हैं समयकी विपरीतता और लोगों का मोहनहै ४३ हे तात जो यह महात्मा भीष्मजीका और द्रोणाचार्य्यजीका मरनाहै ब्रह्मचर्य वेदका पढ़ना ४४ यज्ञ और अस्त्रोंके द्वाराभी कोई मनुष्य मृत्युसे नहीं छूटसक्ताहै लोकके प्रधान प्रतिष्ठित और अस्त्र शस्त्रादिके युद्धमें महादुर्मद४५ शूरवीर भीष्म और द्रोणाचार्य्यको मृतक हुआ सुनकर मैं क्या जीवताहूं अर्थात् मृतकहीके समानहूं हे संजय हम पूर्वसमयमें जिस लक्ष्मीको युधिष्ठिरके पास देखकर दोष लगाते थे ४६ अव उस लक्ष्मी को भीष्म और द्रोणाचार्य्य के मरनेसे अंगीकार करेंगे यह कौरवोंका नाशभी मेरेही कारण से वर्त्तमान हुआहै ४७ हे तात पक्केफलों के नाश करने में घास आदिक तृणभी अत्यन्त कठोर होजाते हैं लोकमें इस अत्यन्त ऐश्वर्य्यको युधिष्ठिरने पाया ४८ जिसके क्रोधसे महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य्यजी गिराये गये उसने स्वभावसेही धर्मको पाया वह धर्म मेरे पुत्रोंमें नहीं है ४९ यह निर्दय काल सबके नाश के निमित्त पृथक् नहींहोताहै हे तात चित्त वाले मनुष्यों से अन्य प्रकार से शोचेहुये प्रयोजन ५० दैवकी इच्छासे अर्थात् होनहार और प्रारब्ध से विपरीत वर्त्तमानहोते हैं यह मेरामतहै इसहेतुसे हटाने के अयोग्य असंख्य ध्यानसेभी वाहर वड़े दुःख के वर्त्तमान होनेपर जैसे प्रकार से हुआ उस सवको व्यौरे समेत मुझसे कहो ५१ । ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

संजय वोले कि वहुतअच्छा जिसप्रकारसे कि मैंने अपनेनेत्रोंसेदेखाहै अर्थात् जैसे कि पांडव और सृंजियों से मारेहुये द्रोणाचार्य्य जी पृथ्वीपरगिरे उस सव वृत्तान्तको मैं आपसे कहताहूं १ महारथी भरद्वाज द्रोणाचार्य्य जी सेनाकी प्रधानताको पाकर सव सेनाके मध्य में आप के पुत्रसे यह वचनवोले २ हे राजा कौरवोंमें उत्तम गांगेय भीष्मजीके पीछे जो तुमने अव मुझको सेनाका सेनापति वनाया है ३ हे भरतवंशी उसके कर्मके सदृश फलको पावोगे अव तू क्याचाहताहै तमको मांग में तेरे कौनसे कामको करूं ४ इसकेपीछे राजा दुर्योधन कर्ण

और दुश्शासन आदि समेत उस बड़े विजयकर्त्ताओं में श्रेष्ठ अजेय आचार्य्य जी से यह बचन बोले ५ कि हे आचार्य्यजी जो आप मुझको बरदेते हो तो रथियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिरको जीवता पकड़कर यहां मेरे सम्मुखलावो ६ यह सुनकर कौरवों के आचार्य्यजी सब सेनाको प्रसन्नकरते यह बचनबोले ७ हे राजा कुन्तीकापुत्र युधिष्ठिर धन्यहै अर्थात् प्रशंसनीय अभीष्ट मनोरथवाला और प्रतापीहै तुम उसके पकड़नेको चाहतेहो परन्तु उस निर्भयके मारने को नहींचाहतेहो ८ हे नरोत्तम किसहेतुसे उसके मरणको नहीं चाहताहै दुर्य्योधन निश्चय करके इस हेतुसे उसके मारनेको नहीं कहताहै ६ कि उस धर्मराज युधिष्ठिरका शत्रु कोई नहीं है जो तुम उसको जीवता चाहतेहो और अपने कुलकी रक्षा करते हो १० हे भरतर्षभ अथवा तुम युद्धमें पांडवलोगों को विजय करके व अपनी ओरसे राज्यको देकर भाईपने की प्रीति प्रकट किया चाहतेहो ११ कुन्तीकापुत्र राजायुधिष्ठिर धन्यहै और इसीसे उस बुद्धिमान्‌की अजातशत्रुता निश्चय होतीहै क्योंकि जिसपर तुमभी प्रीति करतेहो १२ इसरीतिके द्रोणाचार्य्यके बचनों को सुनकर आपके पुत्रके मनकी अभिलाषा अर्थात् वह चित्तका भाव अकस्मात् चित्तसे बाहर निकला जो सदैव उसके मनमें नियतथा १३ जिसका वह हृद्गत भाव बृहस्पति सरीखे पुरुषोंसे भी जानने के अयोग्यथा हे राजा इसीहेतुसे आपकापुत्र अत्यन्त प्रसन्न मनहोकर यह बचन बोला १४ कि हे आचार्य्यजी युद्धभूमिमें युधिष्ठिरके मरनेसे मेरी पूर्ण विजय नहीं है क्योंकि युधिष्ठिरके मरनेपर निश्चय करके पांडवलोग हम सबको मारेंगे क्योंकि वह सब देवताओंसे भी युद्ध में मारनेके योग्य नहीं हैं उनमें से एक भी कोई शेष रहेगा वह भी हम सबको मारसक्ता है अर्थात् हमारा मूलसे नाश करसक्ता है १५ । १६ उस सत्यसंकल्प युधिष्ठिरके पकड़लाने और फिर उसको द्यूतमें हरानेसे उसकी आज्ञापाकर फिर पांडवलोग बनको चलेजायँगे निश्चयकरके वह मेरीविजय बहुतकालतक होगी इसकारणसे मैं धर्मराजके मारने को नहींचाहताहूं १७ । १८ मुख्यप्रयोजन के जाननेवाले बुद्धिमान् चतुर द्रोणाचार्य्यजीने उसके चित्तकी बड़ी नीच निन्दित और अयोग्य इच्छाको जानकर अपने चित्तमें बहुतसा विचारकर वह वर प्रतिज्ञाके साथ उसको दिया १६ द्रोणाचार्य्यजी बोले कि जो वीर अर्जुन युद्धमें युधिष्ठिरकी रक्षा नहीं करता होगा तो पांडवोत्तम युधिष्ठिर को पकड़ाहुआही

जानो अर्थात् अपने वशीभूतही जानकर लायाहुआही जानो २० अर्जुन युद्धमें इन्द्रसमेत देवताओं से और असुरोंसेभी जीतनेके योग्यनहींहै २१ हे तात इसहेतुसे मै उसको नहीं सहसक्ताहूं यद्यपि वह अस्त्रकर्म में निस्सन्देह मेरामन वाणी और उत्तम कर्मोंसे युक्त दृढ़चित्तसे २२ शिष्यहै इसके विशेष उसने इन्द्र और रुद्रजीसे भी अनेक अस्त्र अच्छे प्रकारसे पाये हैं और हे राजा तुझपर क्रोधयुक्त है इसहेतुसे मैं उसको नहीं सहसक्ताहूं २३ वहजब किसीउपायसे युद्ध से पृथक् होजाय अर्थात् अर्जुनके अलग होने और युद्धसे दूरलेजानेपर वह धर्मराज तुमसे विजय होसक्ताहै २४ हे पुरुषोत्तम उसके पकड़ने मेंही तुम्हारी विजय है इस उपाय से उसको अच्छी रीतिसे तुम पकड़ोगे २५ हे राजा अब मै धर्मकी सत्यता में नियत राजायुधिष्ठिर को पकड़ करके निस्सन्देह तेरी आधीनता में लाऊंगा २६ जो कुन्तीके पुत्र नरोत्तम अर्जुनके दूरलेजानेपर युद्धमें एक मुहूर्त्तभी मेरे आगे नियत होगा तो मैं उसको तेरे आधीन करसक्ताहूं २७ नहीं तो हे राजा युद्धमें अर्जुनके समक्षमें राजा युधिष्ठिर इन्द्रादिक देवता और असुरोंसे भी पकड़ने के योग्य नहीं है २८ संजय बोले कि राजाके पकड़ने में द्रोणाचार्य्यजीके नियम पूर्व्वक प्रतिज्ञाकरने पर आपके अज्ञानी पुत्रोंने उसको पकड़ाही जाना २९ आपका पुत्र द्रोणाचार्य्यको पांडवों से सम्बन्ध रखनेवाला जानताहै इसकारण प्रतिज्ञाके दृढ़ करनेके निमित्त उसने वह अपना गुप्त मंत्र प्रकट किया ३० हे शत्रुओंके विजय करनेवाले धृतराष्ट्र इसके अनन्तर दुर्योधन ने भी युधिष्ठिरके उस पकड़नेको सेनाके सब स्थानोंपर प्रसिद्ध करवादिया ३१॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्वादशोऽध्यायः १२॥

तेरहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि राजायुधिष्ठिरके पकड़ने के विषय में द्रोणाचार्य्यको नियम पूर्व्वक प्रतिज्ञा करनेपर और दुर्योधनके सर्वत्र विख्यात करने से आपकी सेनाके मनुष्योंने युधिष्ठिरके उस पकड़ने को सुनकर सिंहनादपूर्व्वक शब्दोंको किया १ और भुजा अर्थात् तालों को ठोंका हे भरतवंशी धर्मराज युधिष्ठिरने द्रोणाचार्य्य की उसकर्म करनेकी इच्छाको न्यायके अनुसार २ प्रमाणीक दूतोंके द्वारा सीनकी जानकर सब भाइयों को और अन्य सब राजाओंको बुलाकर ३

अर्जुन से यह बचन कहा कि हे पुरुषोत्तम तुमने भी द्रोणाचार्य्यजी के कर्म करने की इच्छाको सुना ४ अब जिस रीतिसे वह उनकी इच्छा सत्य न होय उसी प्रकार का बिचार करना चाहिये हे शत्रुओं के पराजय करनेवाले द्रोणाचार्य्यने नियम पूर्व्वक प्रतिज्ञाकरी है ५ हे बड़े धनुषधारी वह नियम उन्होंने तुझमेंही नियत कियाहै हे महाबाहो सो तुम अब मेरे पीछे लड़ो ६ जिससे कि दुर्य्योधन इस अभीष्टको द्रोणाचार्य्य से नहीं पावे अर्जुनने कहा हे राजा जिस रीतिसे मैं आचार्य्यजी को कभी मारने के योग्य नहीं हूं ७ उसीप्रकार मैं आपके भी त्यागनेको नहीं चाहता हे पांडव चाहै युद्धमें मेरे प्राण भी जातेरहैं ८ परन्तु मैं किसी दशा में भी आचार्य्यजी का शत्रु नहीं होसक्ता यह दुर्य्योधन आपको पकड़ कर राज्य को चाहता है ९ सो वह दुर्य्योधन इस जीवलोक में उस अभीष्ट को किसी दशा में भी नहीं पावेगा चाहै नक्षत्रों समेत स्वर्ग गिरपड़े अथवा पृथ्वी के खण्ड २ होजायँ १० परन्तु निश्चय करके मेरे जीवतेहुये द्रोणाचार्य्य आपको नहीं पकड़सक्के जो युद्धमें आप वज्रधारी इन्द्र भी उनकी सहायताकरें ११ अथवा देवताओं समेत विष्णुजी भी सहायक होजायँ तौ भी वह द्रोणाचार्य्य आपको युद्धमें नहीं पकड़सकेंगे हे राजेन्द्र मेरे जीवते रहने पर आप किसीप्रकार कभी भय के करने को योग्य नहीं हो १२ अस्त्रधारियों में और शस्त्रधारियों में भी श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य से तुम कभी भय मतकरो हे राजेन्द्र मैं दूसरी बात और भी कहताहूं कि मेरी प्रतिज्ञा सत्यही है १३ मैं अपने मिथ्या बचनको कभी स्मरण भी नहीं करताहूं और न कभी अपनी पराजयको यादकरताहूं और कुछ प्रतिज्ञाकरके आजतक कभी मिथ्या होजाने का भी मुझको स्मरण नहीं आता है तात्पर्य्य यह है कि मैंने मिथ्या न कभी किया और न करूंगा १४ संजय बोले हे महाराज इसके अनन्तर पांडवोंके निवास स्थानोंमें शंख भेरी मृदंग और ढोलोंके वड़े शब्द हुये १५ अर्थात् महात्मा पांडवोंके शंखोंके नादोंसे धनुष प्रत्यंचा और तलोंके महाभयकारी शब्द आकाश के स्पर्श करनेवाले हुये १६ वड़े तेजस्वी पाण्डवों के शंखों के शब्दों को सुनकर आपकी सेनाने भी वाजों को वजाया १७ हे भरतवंशी इसके पीछे आपकी और पाण्डवोंकी अलंकृत सन्नद्ध सेनाके लोग वड़े धैर्य्यसे युद्धमें लड़तेहुये परस्परमें सम्मुखहुये १८ फिर तो पांडव कौरवों समेत द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नका भी युद्ध रोमांच खड़ाकरनेवाला

लोमहर्षणनाम महाकठिन युद्ध जारीहुआ १६ युद्धमें बड़े विचारपूर्व्वक उपाय करनेवाले संजय उन द्रोणाचार्य्यजीकी सेनाके मारनेको समर्थ नहीं हुये क्योंकि वह सेना द्रोणाचार्य्यजीसे रक्षितथी २० इसीप्रकार आपके पुत्रके प्रहारकर्त्ता बड़ेरथी उस अर्जुनसे रक्षित पांडवी सेना के भी मारनेको समर्थ नहीं हुये २१ परस्परमें रक्षित वह दोनों सेना ऐसी स्तिमित और निष्फलसी होगई जैसे कि रात्रिके समय संसारी लोगोंके शयन करनेपर अच्छी प्रफुल्लित वनकी परम्परा अर्थात् पंक्ति निश्चल होजाती है २२ हे राजा इसके पीछे स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य्य प्रकाशमान सूर्य्यकेसमान रथपर सवारहोकर सेनाको सम्मुखकरके सेना के मुखपर भ्रमणकरनेलगे २३ रथकी सवारीसे उपाय पूर्वक परिश्रम करनेवाले युद्धमें शीघ्रकर्त्ता अकेले उस द्रोणाचार्य्यहीको पांडव और सृंजियोंने भयभीतहोकर बहुतोंके समान माना २४ हे महाराज उसके हाथसे छोड़ेहुये भयकारी वाण पांडवोंकी सेनाको डरातेहुये सब दिशाओंमें चलायमानहुये २५ सैकड़ों किरणोंसे संयुक्त दिवसमें वर्त्तमान ऊष्म किरणोंका रखनेवाला सूर्य्य जैसा दिखाई देताहै उसीप्रकार द्रोणाचार्य्य भी सब को दिखाई पड़े २६ हे भरतवंशी पांडवोंके मध्यमें पांडवोंकी सेनामेंसे कोई भी शूरवीर उस युद्धमें क्रोधरूप द्रोणाचार्य्यके देखनेको ऐसे समर्थ नहीं हुआ जैसे कि दानवलोग महाइन्द्रके देखनेको समर्थ नहीं हुये थे २७ इसके पीछे प्रतापवान् भरद्वाज द्रोणाचार्य्यने सेनाको मोहितकरके तीक्ष्ण धारवाले वाणोंसे धृष्टद्युम्नकी सेनाको शीघ्रही छिन्नभिन्नकरदिया २८ अर्थात् उन द्रोणाचार्य्यने सब ओर से दिशाओंको रोंककर और वाणोंसे आकाशको व्याप्त करके जहां पर धृष्टद्युम्न था वहां जाकर पांडवोंकी सेनाको मर्दन किया २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके अनन्तर उन द्रोणाचार्य्यजी ने पांडवोंकी सेनामें बड़े भयको उत्पन्न किया और सेनाको भस्मकरतेहुये ऐसे भ्रमण करनेलगे जैसे कि वनमें अग्नि देवता घूमते हैं १ संजय नाम क्षत्री उस साक्षात् अग्नि के समान प्रकटहोकर सेनाको भस्मीभूत करते क्रोध से पूर्ण सुवर्ण के रथपर सवार द्रोणाचार्य्य को देखकर अत्यन्त कंपायमानहुये २ वारंवार क्रोध युद्धमें शीघ्रता

करनेवाले द्रोणाचार्य्य के धनुषकी प्रत्यंचाके शब्द अत्यन्ततासे ऐसे सुनेगये जैसे वज्र के शब्द सुनाई देते हैं ३ द्रोणाचार्य्यके छोड़ेहुये भयकारी शायकोंने रथी सवार हाथी घोड़े और पदातियोंको अत्यन्त मर्दनकिया ४ जैसे कि ग्रीष्मऋतुके अन्तमें बड़ी वृद्धितायुक्त गर्जताहुआ बादल बर्षा करताहै उसीप्रकार पाषाणोंकीसी बर्षाकरनेवाले होकर शत्रुओं को भयके उत्पन्न करनेवाले हुये ५ हे राजा तब उस भ्रमण करते और सेनाको महाव्याकुल करते द्रोणाचार्य्य ने बुद्धिसे बाहर शत्रुओंके भयको बढ़ाया ६ जैसे कि बिजली बादलोंमें घूमती हुई दिखाई देतीहै उसीप्रकार सुवर्ण से जटित उनका धनुष उस बादलरूपी रथ के बीचमें बारम्बार घूमताहुआ दृष्टिपड़ा ७ फिर उस पूर्ण बुद्धिमान् सत्यवक्ता सदैव धर्मके अभ्यासी द्रोणाचार्य्यजीने प्रलय काल के समान जीवों के समूहों से युक्त घोर भयानक रूप नदीको जारीकिया ८ जो कि तीव्र क्रोधसे प्रकटहोनेवाले गर्दभ आदि जीव समूहों से व्याप्त और सब ओर से सेनाके समूहोंसे पूर्ण ध्वजारूप वृक्षोंको दूर फेंकनेवाली थी ९ रुधिररूप जल रथरूप आवर्त्त हाथी घोड़े रूप किनारे रखनेवाली कवचरूपी नौकाओंसे व्याप्त मांसरूपी कीचसे भरीहुई १० मेद मज्जा और अस्थिरूप सीपी धारण करनेवाली वेष्टनीरूप फेनोंसे युक्त युद्धरूप बादलोंसे घिरीहुई प्रास नाम शस्त्ररूपी मछलियोंसे पूर्ण ११ मनुष्य घोड़े और हाथियोंसे प्रकट तीक्ष्ण बाणोंके समूह रूप प्रवाहोंसे बहनेवाली शरीररूपी लकड़ी से परस्पर में घिसावटवाली रथरूपी कछुओं से पूर्ण १२ शिर और खड्ग रूप झषनाम मछलियोंसे भरीहुई रथ हाथी सूरतगर्त्तों से युक्त और नानाप्रकार के भूषणोंसे शोभायमान १३ महारथरूपी शतावर्त्त रखनेवाली धूल पृथ्वीरूप लहरोंकी पंक्ति रखनेवाली युद्धमें बड़े २ पराक्रमी बलवानों को बड़ी सुगमता से तरने के योग्य और भयभीतों को दुर्गम्य १४ हजारों शरीरोंसे परस्पर घिसावटवाली गृध्र कंकनाम जीवोंसे सेवित और हजारों महारथियोंको यमलोकमें पहुंचानेवाली १५ शूल रूप सर्पोंसे पूर्ण जीवोंकी पंक्तियोंसे सेवित टूटेछत्ररूप बड़े हंस रखनेवाली मुकुट रूप पक्षियों से शोभित १६ चक्ररूप कूर्म गदारूप नक्र और बाणरूपी छोटी २ मछलियोंसे पूर्ण बगले गृध्र और शृगालोंके भयकारी समूहोंसे सेवित १७ और युद्धमें द्रोणाचार्य्य से मारेहुये सैकड़ों जीवोंको पितृ लोकके निमित्त बहानेवाली १८ सैकड़ों शरीरोंसे परस्पर घिसा-

वटवाली वालरूप शैवल और शाड्वलोंकी रखनेवाली भयभीतोंके भयकीवढ़ा-
नेवाली नदीको जारी किया १६ फिर जिनका अग्रगण्य युधिष्ठिर है वह सब
शूरवीर उन कौरवी सेनाओंको घुड़कतेहुये महारथी द्रोणाचार्य्य के सम्मुख दौ-
ड़े २० उस समय आयके दृढ़पराक्रमी शूरवीरोंने उनके सम्मुख दौड़तेहुये वीरों
को सब ओर से घेरा वहां का युद्ध भी रोमांच खड़े करनेवाला हुआ २१ हजारों
छलोंसे भराहुआ शकुनि सहदेव के सम्मुख गया और तीक्ष्ण धारवाले वाणों
से सारथी ध्वजा और रथको घायल किया २२ माद्री के पुत्र क्रोधयुक्त सहदेवने
उसके उन ध्वजा धनुष और घोड़ोंको भी वाणोंसे काटकर सात वाणोंसे शकु-
नीको पीड़ित किया २३ फिर शकुनी गदाको लेकर उत्तम रथसे कूदा हे राजा
उसने गदासे उसके सारथी को रथसे गिराया २४ इसके अनन्तर वह दोनों म-
हावली शूरवीर रथसे रहित होकर गदा हाथोंमें लिये युद्धमें क्रीड़ाकरनेवाले
ऐसे हुये जैसे कि शिखरधारी दो पर्व्वत होते हैं २५ द्रोणाचार्य्य ने शीघ्रगामी
दशवाणोंसे राजा द्रुपदको वेधकर, जितने वाणोंसे द्रुपदने घायल कियाथा उस
से अधिक वाणोंसे आचार्य्य ने घायल किया २६ वीर भीमसेन ने तीक्ष्ण धार
वाले वीस वाणोंसे विविंशतिको वेधकर कंपायमान नहीं किया यह महाआ-
श्चर्य्यसाहुआ २७ हे महाराज फिर विविंशति ने अकस्मात् भीमसेनको घोड़े
ध्वजा और धनुष से रहित करदिया इस हेतुसे सेना के लोगोंसे उसकी प्रशंसा
करी २८ उस वीरने युद्धमें उस शत्रुके पराक्रम को न सहकर अपनी गदा से
उसके सब सिखायेहुये घोड़ोंको गिराया २९ हे राजा फिर वह महावली मृतक
घोड़ेवाले रथसे ढालको लेकर भीमसेन के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि मतवाला
हाथी मतवाले हाथीके सम्मुख जाताहै ३० फिर हँसते प्यार करते और क्रोधक-
रते वीर शल्य ने अपने प्यारे भानजे नकुल को वाणों से घायल किया ३१
प्रतापवान् नकुल ने उसके घोड़े छत्र ध्वजा सारथी और धनुषको गिराकर युद्ध
में अपने शंखको वजाया ३२ धृष्टकेतुने कृपाचार्य्य के चलायेहुये अनेकप्रकार
के वाणोंको काटकर सत्तरवाणोंसे कृपाचार्य्यको घायलकिया और उसकी ध्वजा
के चिह्नको भी तीन वाणोंसे तोड़ा ३३ कृपाचार्य्यने वाणोंकी वड़ी वर्षा से उस
को ढक दिया और वहुत क्रोधित होकर धृष्टकेतुको घायल किया ३४ सात्यकी
ने कृतवर्माको नाराचनाम वाणोंसे छाती में वेधकर वड़ी मन्द मुसकान समेत

फिर दूसरे सत्तर बाणोंसे घायल किया ३५ फिर उस भोजबंशीने शीघ्रही तीक्ष्ण धारवाले सतहत्तर बाणों से सात्यकीको बेधकर कंपायमान नहीं किया ३६ सेनापति धृष्टद्युम्नने सुशर्माको मर्म स्थलोंपर अत्यन्त घायल किया फिर उस ने भी उसको तोमरसे जत्रुस्थानपर घायलकिया ३७ विराट ने बड़े पराक्रमी मत्स्य देशियों समेत युद्धमें सूर्य्यके पुत्र कर्णको रोका यह भी आश्चर्य्यसा हुआ ३८ वहां कर्ण ने वह भयकारी बीरता करी कि सबसेनाको गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से रोका ३९ और आप राजाद्रुपद भगदत्तके साथ भिड़ा हे महाराज उनदोनोंका युद्ध अपूर्व्वरूपका हुआ ४० फिर पुरुषोत्तम भगदत्तने अपने बाणों से राजा द्रुपदको सारथी ध्वजा और रथसमेत घायल किया ४१ इसके पीछे क्रोध युक्त द्रुपदने महारथी भगदत्तको झुकी गांठवाले बाणों से शीघ्रही छातीपर घायल किया ४२ लोकके सब शूरबीरोंमें श्रेष्ठ अस्त्रविद्यामें पण्डित भूरिश्रवा और शिखण्डीने ऐसा युद्ध किया जो कि जीवमात्रों का भयकारीथा ४३ हे राजा पराक्रमी भूरिश्रवा ने युद्ध में महारथी शिखण्डीको शायकों के बड़े समूहों से ढक दिया ४४ हे भरतबंशी राजा धृतराष्ट्र इसके पीछे क्रोधयुक्त शिखण्डी ने भूरिश्रवाको नव्बे शायकों से कंपायमान किया ४५ बड़े भयकारी कर्मकर्त्ता परस्पर में बिजयाभिलाषी घटोत्कच और अलम्बुषनाम दोनों राक्षसोंने अत्यन्त अपूर्व्व युद्ध किया ४६ सैकड़ों माया के उत्पन्न करनेवाले अहंकारी मायासे एक दूसरेकी बिजय करनेवाले आश्चर्य्यकारी वह दोनों राक्षस अत्यन्त भ्रमण करने वाले हुये ४७ चेकितानने अनुबिन्द के साथ महाभयकारी ऐसा युद्ध किया जैसे कि देवता और असुरों के युद्ध में महाबली राजा बलि और इन्द्रका हुआ था ४८ लक्ष्मणने क्षत्रदेवसे ऐसा बड़ा युद्ध किया जैसे कि पूर्व्वसमय में विष्णु भगवान्ने युद्धभूमि के बीच हिरण्याक्ष के साथमें कियाथा ४९ हे राजा इस के पीछे राजा पौरव अत्यन्त शीघ्रगामी घोड़ेवाले बुद्धि के अनुसार तैयार किये हुये रथकी सवारीमें गर्जना करता हुआ अभिमन्युके सम्मुख गया ५० फिर वह युद्धाभिलाषी शत्रुओं का विजय करनेवाला महाबली अभिमन्यु भी शीघ्रता से सम्मुख आया और उससे बड़ा भारी युद्ध किया ५१ फिर पौरवने बाणों के समूहों से अभिमन्युको ढकदिया अर्जुन के पुत्र अभिमन्युने उसके ध्वजा छत्र और धनुषको पृथ्वी पर गिराया ५२ अभिमन्युने पौरवको दूसरे सात बाणों से

वेधकर उसके सारथी समेत घोड़े को पांच शायकोंसे घायल किया ५३ इस के अनन्तर सेनाको महाप्रसन्न करते सिंहके समान बारम्बार गर्जते अर्जुन के पुत्र अभिमन्युने पौरवके नाश करनेवाले वाणको शीघ्रतासे हाथमें लिया ५४ फिर पौरवने उस धनुष पर चढ़ाये हुये महाभयकारी शायकको जानकर दो वाणोंसे वाण समेत धनुषको काटा ५५ तब शत्रुओं के वीरोंके मारनेवाले अभिमन्युने उस टूटे धनुषके डालते और दूसरेधनुषके लेतेहुये तीक्ष्णखड्गको उठाया ५६ वह हस्तलाघव अपने पराक्रमके दिखलाता वहुतसेनक्षत्र चिह्नवाली ढालकोलेकर अनेकमार्गोंमेंघूमा ५७ हे राजा प्रथमतो ढाल और तलवारकोघुमाना ऊंचेसे उठाना नीचेगिराना और फिर उठाना विनाअन्तर दिखाई नहींपड़ा ५८ अकस्मात् गर्जना करतेहुये उस अभिमन्युने पौरवकेरथांग-ईशाको चलायमानकरके उसीके रथमें नियतहोकर कौरवकी चोटी को पकड़लिया ५९ और इसके सारथीको पावों से मारकर खड्गसे ध्वजाको गिराया और जिसप्रकार गरुड़ समुद्रको चलायमान करके सर्पको पकड़ लेताहै उसीप्रकारसे उसको पकड़लिया ६० सबराजालोगोंने सिंहसे गिराये हुये वैलके समान उस टूटीचोटीवाले महाव्याकुल अचेत रूपको देखा ६१ जयद्रथ ने अभिमन्युकी आधीनता में वर्त्तमान अनाथके समान खैंचे और गिरायेहुये पौरवको देखकर नहीं सहा ६२ हे महाराज वह सौक्षुद्रघंटिकाओंके जालसे युक्त मयूरोंके चित्रोंसे युक्त ढाल तलवारको लेकर गर्जता हुआ रथसे उतरा ६३ इसके पीछे अर्जुनका पुत्र अभिमन्यु जयद्रथको देखकर पौरव को छोड़ रथसे उछलकर वाज पक्षीके समान गिरा ६४ और गिरकर उस अर्जुनके पुत्रने शत्रुओं से चलायमान कियेहुये प्रास और पट्टिश और तलवारों को अपनी तलवारसे काटा और ढालसेही रोका ६५ अपनी हस्तलाघवता अपनीही सेनाओंको दिखलाकर वह पराक्रमी शूरवीर अभिमन्यु उस वड़े खड्ग और ढालको उठाकर वृद्धक्षत्रके पुत्र पिताके वड़ेभारीशत्रु जयद्रथके सम्मुख ऐसे गया जैसे कि शार्दूलसिंह हाथी के सम्मुख जाताहै ६६ । ६७ खड्ग दांत और नख रूप शस्त्र रखनेवाले वह दोनों परस्परमें सम्मुख होकर प्रसन्नचित्तोंके समान होकर ऐसे युद्धक्रीड़ा करनेलगे जैसे कि व्याघ्र और केशरी क्रीड़ा करते हैं ६८ किसीने भी उन नरोत्तमोंका अन्तर, वा ढाल तलवारका गिरना परस्पर के आघातों में नहीं देखा ६९ घुड़कना खड्गका शब्द शस्त्रोंकी रोकटोक का दिख-

लाना बाह्याभ्यन्तरीयघात यह सब उनदोनों के विना अन्तरके दृष्टि पड़े ७० वह दोनों महात्मा वीर बाह्याभ्यन्तरीय उत्तम मार्गों में घूमते हुये पक्षधारी पर्व्वतोंके समान दिखाई पड़े ७१ इसके पीछे जयद्रथने यशस्वी अभिमन्युके चलायमान कियेहुये खड्गको ढालके किनारे पर रोका ७२ उस सुनहरी पर और प्रकाशमान ढाल के मध्यमें लगाहुआ वह खड्ग जयद्रथ के पराक्रम से चलायमान होकर टूटा ७३ खड्गको टूटा हुआ जानकर और छः चरणहटकर एक निमेषही मात्रमें अपने रथ पर नियत हुआ देखाईदिया युद्धसे रहित उत्तम रथ पर नियत अभिमन्युको सब राजाओंने एकसाथही चारोंओरसे घेरलिया ७४ । ७५ तदनन्तर अर्जुन का पुत्र महाबली ढाल तलवारको छोड़कर जयद्रथ को देखता हुआ गर्जा ७६ शत्रुके मारनेवाले अभिमन्युने उस सिंध के राजा जयद्रथ को छोड़कर उससेनाको ऐसा तपाया जैसे कि सूर्य्य भुवनको संतप्त करताहै ७७ शल्यने अत्यन्त लोहमयी और सुवर्ण से जटित भयकारी महाप्रकाशमान अग्निज्वाल के समान शक्तीको युद्धमें उसके ऊपर फेंका ७८ अर्जुनके पुत्रअभिमन्युने उछलकर उसको पकड़लिया और खड्गको ऐसे मियानसे बाहर किया जैसे कि गरुड़ गिरतेहुये सर्पको ७९ उस अमिततेजस्वी अभिमन्युकी हस्तलाघवता और पराक्रमको जानकर सब राजा एकसाथही सिंहनादको करतेहुये गर्जे ८० शत्रुके बीरोंको मारनेवाले अभिमन्युने उस वैडूर्य्य जटित श्वेत बर्णवाली शक्तिको अपनी भुजाके पराक्रमसे शल्यके ऊपर छोड़ा ८१ उससर्पाकार छोड़ीहुई शक्तिने उस शल्यके रथकोपाकर उसके सारथी को मारा और उसको भी रथसे गिराया ८२ इसके पीछे विराट, द्रुपद, धृष्टकेतु, युधिष्ठिर, सात्यकी, पांचों कैकेय, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी ८३ नकुल और सहदेव यह सब धन्य हैं २ ऐसा कहकर पुकारे और नाना प्रकारके बाणों के शब्दों सहित सिंहनाद ८४ उस मुख न मोड़नेवाले अभिमन्युको प्रसन्नकरते प्रकटहुये आपके पुत्रने शत्रुके उस विजय के शब्द रूप चिह्नको नहीं सहा ८५ हे महाराज फिर सबने अकस्मात् उसको चारोंओरसे तीक्ष्ण धारवाले बाणों से ऐसे ढकदिया जैसे कि बादल पहाड़को ढकदेता है ८६ फिर उन्हों का प्रिय चाहनेवाला शत्रुहन्ता क्रोधयुक्त आर्त्तायनि अभिमन्यु के सम्मुख गया ८७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुर्द्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मैं तेरे कहेहुये बहुतसे विचित्र द्वन्द्वनाम युद्धोंको सुनकर नेत्रवाले मनुष्योंकी इच्छा करताहूं १ देवासुरों के युद्धों के समान इस कौरव पांडवोंके युद्धको लोकमें मनुष्यलोग आश्चर्य्य रूपही वर्णन करेंगे इस उत्तम युद्धके सुनने से मेरी तृप्ति नहीं होती है इसहेतुसे आर्त्तायनि और अभिमन्युके युद्धको मुझसे वर्णनकरो २। ३ संजय बोले कि राजा शल्य अपने सारथीको नाश हुआ देखकर केवल लोहमयी गदाको उठाकर महा क्रोधसे गर्जना करता हुआ उत्तम रथ से कूदा ४ और भीमसेन बड़ी शीघ्रता से अपनी उत्तम गदाको लेकर उसकालाग्निके समान प्रकाशित दण्डधारी यमराज के समान राजाशल्यके सम्मुख दौड़ा ५ और युक्तिपूर्व्वक भीमसेनसे शल्यको रुका हुआ जानकर अभिमन्युभी बड़ी गदाको लेकर शल्य से बोला कि आवो आवो ६ फिर प्रतापवान् भीमसेन अभिमन्यु को रोककर युद्धमें शल्यको पाकर पर्व्वतके समान निश्चल होकर नियतहुआ ७ और मद्रदेशका राजाशल्यभी महाबली भीमसेनको देखकर शीघ्रतासे ऐसे सम्मुखगया जैसे कि शार्दूल हाथी के सम्मुखजाताहै ८ इसके पीछे हजारों तूरीबाजे शंख भेरी आदिके बड़े२ शब्दों समेत सिंहनाद जारीहुये ९ देखते हुये परस्परमें सम्मुख दौड़ते हुये पांडव और कौरवों के सैकड़ों ऐसे शब्द प्रकट हुये कि धन्यहै धन्यहै १० हे भरतबंशी सब राजाओं में शल्य के सिवाय युद्ध में भीमसेन के वेग के सहनेको दूसरा कोई भी राजा सामर्थ्य नहीं रखताथा इसी प्रकार इसलोक में भीमसेन के सिवाय महात्मा शल्यकोभी गदाके वेगको कौन पुरुष सहनेको समर्थ होसक्ता है ११।१२ स्वर्णमयी रेशमी वस्त्रों से मढ़ीहुई वह गदा मनुष्यों को प्रसन्न करने वालीहु तव भीमसेन से फेंकीहुई बड़ी गदा अग्निरूप हुई उसी प्रकार सब प्रकार के मंडलों और मार्गोंको घूमतीहुई वह शल्यकी गदाभी बड़ी बिजली की सूरतहो कर शोभायमान हुई १३।१४ फिर वह बैलोंके समान गर्जतेहुये शल्य और भीमसेन जिनके गदारूपी सींग चारोंओरको फैलेहुयेथे मंडलोंमें घूमे १५ उनदोनों पुरुषोत्तमों का युद्ध चक्रमंडलरूप मार्गों और गदाके प्रहारोंमें समानहुआ अर्थात् किसी प्रकारका उनमें अन्तर नहीं हुआ १६ तब भीमसेन से ताड़ि

वह शल्यकी गदा जो सबको भयकारी और अग्निरूप थी शीघ्रही टूटी १७ इसीप्रकार भीमसेन कीभी गदा शत्रुसे ताड़ित होकर ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि वर्षाऋतुके त्रिदोष कालमें पटवीजनोंसे युक्त वृक्षहोताहै १८ हे भरत-वंशी युद्धमें मद्रदेशी राजा शल्यकी फेंकीहुई आकाश को प्रकाशित करतीहुई उसगदाने बारंबार अग्निको उत्पन्नकिया १९ इसीप्रकार शत्रुके ऊपर भीमसेन की भेजीहुई गदाने भी सेनाको ऐसे तपाया जैसे कि गिरतीहुई बड़ी उल्का संतप्त करतीहै २० गदाओं में श्रेष्ठ नागकन्याओं के समान श्वास लेनेवाली उन गदाओं ने परस्पर में मिलकर अग्नि को उत्पन्न किया २१ । २२ जैसे कि बड़े व्याघ्र नखोंसे और बड़े हाथी दांतोंसे आघात करते हैं उसीप्रकार वह गदा की नोकोंसे घायलहुये दोनों महात्मा एकक्षण में ही रुधिर से लिप्त ऐसे दि-खाई दिये जैसे कि फूलेहुये किंशुकके वृक्षहोते हैं २३ उनदोनों पुरुषोत्तमों की गदाओं के आघात शब्द इन्द्रके वज्रके समान सब दिशाओंमें सुनेगये २४ तब मद्रदेश के राजाकी गदासे दाहिने और बायें पक्षमें ताड़ित होकर भीमसेन ऐसे कंपायमान होकर चलायमान नहीं हुआ जैसे कि घायलहुआ पर्व्वत अचल होता है २५ उसीप्रकार भीमसेनकी गदाके वेगोंसे ताड़ित महाबली शल्यभी धैर्य्य से ऐसे नियतरहा जैसे कि वज्रोंसे ताड़ित पर्व्वत अचल रहताहै २६ गदा को उठानेवाले बड़े वेगवान् दोनों बीर दौड़े और फिर अन्तमार्गमें नियत होकर दोनों मण्डलोंको घूमे २७ फिर आठचरण जाकर हाथियों के समान गिरकर अकस्मात् लोह दण्डोंसे परस्पर में घायल किया २८ परस्पर की तीव्रतासे और गदाओं से अत्यन्त घायलहुये वह दोनों बीर इन्द्रधनुष के समान एक साथही पृथ्वी पर गिरे २९ इसके पीछे महारथी कृतबर्मा बड़ी शीघ्रता से उस व्याकुल और बारंबार श्वास लेनेवाले शल्यके पासगया ३० हे महाराज गदासे बारंबार पीड़ित सर्प के समान चेष्टा करनेवाले मूर्च्छासे संयुक्तको देखकर महारथी कृत-बर्मा युद्धमें से मद्रदेशियों के राजा शल्यको अपने रथमें बैठाकर युद्धभूमि से दूरलेगया ३१ । ३२ मतवाले के समान व्याकुल बीर शल्य एक निमिष में ही फिर उठखड़ा हुआ और बड़ा महाबाहु भीमसेन भी हाथमें गदा लियेहुये दि-खाई पड़ा ३३ हे श्रेष्ठ इसके अनन्तर आपके पुत्र मद्रदेशके राजाको मुखफेरने वाला देखकर हाथी प्रधान घोड़े और रथों समेत अत्यन्त कम्पायमान हुये ३४

विजयसे शोभा पानेवाले पाण्डवों से पीड़ामान वह आपके शूरवीर भयभीत होकर दिशाओं को ऐसे भागे जैसे कि वायुसे चलायमान बादल भागते हैं ३५ हे राजा महारथी पाण्डव आपके पुत्रोंको विजय करके युद्धमें प्रकाशित अग्नियों के समान शोभायमान हुये ३६ और बहुत प्रसन्नमन होकर सिंहनाद करके भेरी मृदंग और ढोलोंके बाजों समेत शंखोंको बजाया ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा अकेले पराक्रमी वृषसेनने उस आपकी संपूर्ण सेनाको पराजित देखकर अस्त्रोंकी माया से धारण किया १ युद्ध में वृषसेन के छोड़ेहुये वह बाण मनुष्य घोड़े रथ और हाथियों को घायल करके दशों दिशाओं में घूमे २ उसके हजारों प्रकाशित बड़े २ बाण इस प्रकार की चेष्टाकरनेवाले हुये जैसे कि उष्णऋतु में सूर्य्य की किरणें होती हैं ३ हे महाराज उसके हाथ से पीड़ायमान रथी और अश्वसवार अकस्मात् पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि वायु से ताड़ित वृक्ष टूटकर पृथ्वी पर गिरते हैं उस महारथीने युद्ध में घोड़े रथ और हाथियों के सैकड़ों हजारों समूहोंको गिराया ४।५ फिरयुद्ध में निर्भयके समान उस अकेले को घूमतेहुये देखकर सब राजाओं ने एक साथही चारों ओरसे घेर लिया ६ और नकुलका पुत्र शतानीक वृषसेन के सम्मुख गया और मर्मभेदी दश नाराचों से उसको घायल किया ७ कर्णके पुत्रने उसके धनुषको काटकर ध्वजाको गिराया तब द्रौपदी के पुत्र अपने भाई को चाहतेहुये उसके सम्मुख गये ८ और शीघ्र ही बाणों के समूहों से कर्णके पुत्रको दृष्टि से गुप्त करदिया फिर अश्वत्थामा आदिक महारथी गर्जतेहुये उनके सम्मुख दौड़े ९ हेमहाराज द्रौपदी के महारथी पुत्रों को बड़ी शीघ्रतापूर्व्वक नानाप्रकारके बाणों से ढकते हुये ऐसे सम्मुख गये जैसे कि बादल पर्व्वत को ढकते हुये सम्मुख जाते हैं १० बेटों को चाहते शीघ्रता करनेवाले पांडव शस्त्रधारी पांचाल कैकय मत्स्य और सृंजियों ने उनको घेर लिया ११ वहां आपके शूरवीरों के साथ पांडवों का वह युद्ध महाभयकारी रोमहर्षण ऐसा हुआ जैसा कि देवताओं के साथ असुरों का युद्ध महाभयकारी हुआ था १२ परस्पर अपराध करनेवाले और देखनेवाले

क्रोध में भरेहुये वीर कौरव और पांडव इसरीतिसे युद्धों के करने वाले हुये १३ उन असंख्य तेजस्वियों के शरीर क्रोधसे ऐसे दिखाई दिये जैसे कि पक्षियोंमें श्रेष्ठ गरुड़ से युद्धाभिलाषी सर्पों का रूप आकाश में होता है १४ भीमसेन, कर्ण, कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, धृष्टद्युम्न, और सात्यकी से वह युद्ध-भूमि ऐसी प्रकाशमान हुई जैसे कि उदयहोनेवाला समय सूर्य्यसे प्रकाशमान होता है १५ परस्पर में युद्धकरनेवाले उन महाबलियोंका युद्ध ऐसाकठिन हुआ जैसे कि पराक्रमी देवताओंके साथ दानवोंका युद्धहोता है १६ इसके अनन्तर समुद्रकेसमान शब्दायमान युधिष्ठिरकी सेनाने आपकी उस सेनाको मारा जिसके कि महारथी भागगये थे १७ द्रोणाचार्य्यजी उसपराजित शत्रुओंसे अत्यन्तपीड़ामान सेना को देखकर बोले कि हे शूरबीर लोगो तुममत भागो १८ इसके पीछे लालघोड़े रखनेवाले और चारदांत रखनेवाले हाथीके समान द्रोणाचार्य्य क्रोधरूप हो पाण्डवीय सेना में प्रवेश कर युधिष्ठिरके सम्मुखगये १९ युधिष्ठिरने कंकपक्षोंसे युक्त तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे उनको बेधा फिर द्रोणाचार्य्य भी शीघ्रतासे उसके धनुषको काटकर सम्मुख गये २० फिर पांचालों को यश बढ़ानेवाले चक्रके रक्षक कुमारने उनआतेहुये द्रोणाचार्य्यको ऐसे रोका जैसे कि समुद्रको समुद्रकी मर्यादा वा किनारा रोकता है २१ कुमारसे रुकेहुये ब्राह्मणोत्तम द्रोणाचार्य्य को देखकर धन्य धन्य बचनोंके साथ सिंहनादों के शब्दहुये २२ इस के पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त सिंहके समान बारंबार गर्जते कुमारने उसबड़े युद्ध में द्रोणाचार्य्य को अपने शायकोंसे छातीपर घायलकिया २३ फिर महाबली हस्तलाघवी और श्रमसे रहित कुमारने युद्धमें द्रोणाचार्य्य को रोका २४ ब्राह्मणवर्य द्रोणाचार्य्य ने उस शूरबीर श्रेष्ठव्रत रखनेवाले अस्त्रोंके मन्त्रों में परिश्रम करनेवाले चक्रकी रक्षा करनेवाले कुमारको मर्द्दनकिया २५ वह ब्राह्मणों में श्रेष्ठ भारद्वाज द्रोणाचार्य्य सेनाओं के मध्यको पाकर सब दिशाओंमें घूमते हुये आपकी सेनाके रक्षकहुये २६ शिखंडी को बारह बाणोंसे उत्तमौजस को बीसबाण से नकुल को पांच बाणसे और सहदेव को सात बाणों से घायल करके २७ युधिष्ठिर को बारह बाणोंसे द्रौपदी के पुत्रोंको तीन २ बाणोंसे सात्यकी को पांचबाणसे राजा द्रुपदको दश बाणों से घायल करके २८ युद्ध में जाकर बड़े २ शूरबीरोंको व्याकुल किया और बड़े २ श्रेष्ठ बीरों के सम्मुख दौड़े

और कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरको चाहते हुये सम्मुख आकर वर्त्तमान हुये २६ हे राजा इसके पीछे युगन्धरने वायुसे उठाये हुये समुद्रके समान क्रोधयुक्त महारथी भारद्वाज द्रोणाचार्य्य को रोका ३० उसने गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे युधिष्ठिर को घायलकरके भल्लसे युगंधर को रथके बैठने के स्थान से गिरा दिया ३१ तदनन्तर विराट द्रुपद कैकय सात्यकी शिवि व्याघ्रदत्त पांचालदेशी और प्रतापी सिंहसेन ३२ यह सब और अन्य बहुतसे शायकोंके फैलाने वाले और युधिष्ठिर के चाहनेवाले वीरोंने उन द्रोणाचार्य्यके मार्गको चारों ओरसे रोका ३३ फिर पांचालदेशी व्याघ्रदत्तने द्रोणाचार्य्य को तीक्ष्ण पचास बाणोंसे घायलकिया हे राजा इस हेतुसे सेनाके मनुष्योंने बड़ा उच्च शब्द किया ३४ फिर सिंहसेन शीघ्रतासे महारथी द्रोणाचार्य्य को घायल करके महारथियों को भयभीत करता हुआ अकस्मात् हँसनेलगा ३५ उसके पीछे द्रोणाचार्य्य अपने दोनों नेत्रोंको खोले धनुषकी प्रत्यंचाको टंकार तलके बड़े शब्दको करके उसके सम्मुख गये ३६ वहां जाकर उस पराक्रमीने सिंहसेन और व्याघ्रदत्तके शरीरसे कुंडलों समेत कानोंको दोभल्लोंसे काटकर गिराया ३७ और पांडवोंके उन महारथियों को बाणोंके समूहोंसे मर्द्दनकरके नाश करनेवाले कालके समान उस युधिष्ठिर के रथके पास नियत हुये ३८ हे राजा इनके पीछे व्रतमें सावधान द्रोणाचार्य के सम्मुख नियत होनेपर युधिष्ठिर की सेनाके मध्यमें युद्धकर्त्ताओं के बड़े शब्द हुये ३९ वहां सेनाके लोग द्रोणाचार्य्य के पराक्रमको देखकर बोले कि निश्चय करके अब राजा दुर्योधन अभीष्ट प्राप्तकरेगा ४० इस मुहूर्त्त में प्रसन्नचित्त द्रोणाचार्य पांडव युधिष्ठिर को पकड़कर दुर्योधन के युद्धमें हमारे सम्मुख आवेंगे ४१ इस प्रकारसे आपके शूरवीरों के कहतेहुये ही महारथी अर्जुन रथके शब्दसे गर्जताहुआ बड़ी तीव्रतासे आया ४२ और आतेही अर्जुनने सेनाके मारने में उस रुधिर रूप रथ रूप भँवरवाली शूरोंके अस्थिसमूहों से युक्त मृतकों को किनारेसे दूर फेंकने वाली नदीको जारीकरके ४३ उस बाणसमूह रूप बड़ेफेण रखनेवाली प्रासशस्त्ररूपी मछलियोंसे व्याकुल नदी को बड़ी तीव्रतासे पारहोकर और कौरवोंको भगाके ४४ वह मुकुटधारी अर्जुन अकस्मात् बाणोंके बड़े जालोंसे ढकता और मोहितकरता द्रोणाचार्य की सेनाके सम्मुख गया ४५ बाणों को बराबर चढ़ाने और शीघ्रताने छोड़नेहुये यशस्वी अर्जुन का अन्तर किसी

ने भी नहीं देखा ४६ हे महाराज नतो दिशा दीखीं न अन्तरिक्ष आकाश और पृथ्वी दिखाई पड़े सब बाणरूपही होगया ४७ उस समय गांडीवधनुषधारी से कियेहुये बड़े अन्धकारमें किसी को कुछभी नहीं दिखाई दिया ४८ तब सूर्य्यके अस्तहोने और अन्धकारमें संसारके प्रवृत्तहोनेपर मित्र शत्रुआदि कोई भी नहीं जान पड़े ४९ इसके पीछे उन द्रोणाचार्य्य और दुर्योधनादिकने बिश्रामकिया फिर अर्जुनने उन शत्रुओंको भयभीत और युद्धसे मन हटानेवाला जानकर ५० धीरेपनेसे अपनीसेनाओंको भी बिश्रामदिया इसके पीछे अत्यन्तप्रसन्नचित्त पांडव सृंजी और पांचालोंने चित्तरोचक वचनों से अर्जुनकी ऐसे प्रशंसापूर्वक स्तुति करी जैसे कि ऋषिलोग सूर्य्यकी प्रशंसापूर्वक स्तुतिकरते हैं इस रीतिसे अर्जुन शत्रुओंको बिजयकरके अपने डेरोंकोगया ५१।५२ और केशव जी प्रसन्नचित्त होकर उसकी सेनाओंके पीछे की ओर से गये ५३ पांडुका पुत्र अर्जुन इन्द्रनीलमणि और सुवर्ण रजत बज्र स्फटिक आदि उत्तमबस्तुओंसे जटित रथमें ऐसा प्रकाशमान हुआ जैसे कि नक्षत्रों से अलंकृत वा जटित आकाश में चन्द्रमा शोभित होता है ५४॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषोडशोऽध्यायः १६॥

सत्रहवां अध्याय॥

संजय बोले हे राजा वह दोनों सेना डेरोंको जाकर यथाभाग यथान्याय यथागुल्म सब ओर से बिश्राम करने वाली हुई १ अत्यन्त खेदित मन द्रोणाचार्य्य सेनाओं का बिश्राम करके दुर्य्योधन को देखकर लज्जायुक्त होकर यह वचन बोले २ कि मैंने पूर्व्व मेंही कहाथा कि अर्जुन के नियत होने पर युद्ध में देवताओं से भी युधिष्ठिर पकड़े जानेके योग्य नहींहै ३ अर्जुनने युद्धमें उपाय करने वाले तुमलोगों का वह बिचार तोड़ दिया तुम मेरे वचन परशंका मत करना मैंसत्य २ कहताहूं कि श्रीकृष्ण जी और अर्जुन सबसे अजेयहैं ४ हेराजा किसी हेतुसे अर्जुन के दूर लेजाने पर यह युधिष्ठिर तेरी स्वाधीनतामें वर्त्तमान होगा ५ कोई युद्धमें उसको बुलाकर दूसरे स्थानपर लेजाय और अर्जुन उसको न जीतकर किसी दशा में भी लौट कर न आवे ६ तो हेराजा मैं उसी अन्तरमें धृष्टद्युम्न के देखते हुये सेनाको छिन्न भिन्न करके अकेलेपने में धर्मराज को पक-

दूंगा ७ जो अर्जुन से पृथक् वह मुझको समीप आयाहुआ देख कर युद्ध को नहीं त्यागे तो पांडव युधिष्ठिर का पकड़ा हुआ ही जानो हेमहाराज अबमैं इस रीतिसे धर्मके पुत्र युधिष्ठिर को उसके सब समूहों समेत तेरी आधीनतामें वर्त्त-मान करूंगा इसमें किसीप्रकारका सन्देह न समझो ८। ९ जो पांडव एक मुहूर्त्त भी युद्धमें नियत होगा तो मैं उसको युद्धभूमिमें से पकड़ लाऊंगा क्योंकि वह अर्जुनही के कारणसे प्रबलहै १० संजय बोले हेराजा तब त्रिगर्तका राजा अपने भाइयों समेत द्रोणाचार्य्य के उस बचन को सुनकर बोला ११ किहमसदैव गां-डीवधनुपधारी से निरादर कियेगये निश्चय करके उसी ने हम निरपराधीलोगों पर भी बड़ी द्वेपता करी है १२ हमसब लोग उन पृथक् २ प्रकार के अपमानों को स्मरण करते अपनी क्रोधाग्नि से भस्मीभूत होकर कभी रात्रि में नींद भर कर नहीं सोते हैं १३ वह अस्त्रों से युक्त हमारे प्रारब्ध से हमारे नेत्रों केही सम्मुख दीखता हुआ वर्त्तमान है हम अपने हृदयवर्त्ती उस कर्म को करने वालेहैं जिस को कि हम अच्छा समझतेहैं १४ वह कर्म आपका प्रियकारी और हमारे यश का करनेवालाहै अर्थात् हम उसको युद्धभूमिसे बाहर लेजाकर मारेंगे १५ अब चाहै पृथ्वी अर्जुनसे रहित होय अथवा फिर त्रिगर्त्तदेशियों से रहित होय परंतु हमतुमसे सत्य २ प्रतिज्ञा करतेहैं हमारी प्रतिज्ञा मिथ्या नहीं होगी १६ हे भरत-वंशी महाराज दश हजार रथियों समेत वह पांचोंभाई इस रीति के वचनों को कह कर १७ युद्ध में शपथखाकर लौटे सबमालव और तुंडकेर तीसहजार रथों समेत प्रस्थलका राजा त्रिगर्त्तदेशी नरोत्तम राजासुशर्मा मावेल्लकललित्थ मद्र-क १८। १९ दश हजाररथ और भाइयोंके साथगया और नानाप्रकारके देशि-योंसे युक्त उत्तमपुरुषों का समूह दशहजार रथों समेत शपथखाने के निमित्त पासगया इसके पीछे सबने पृथक् २ अग्नि लाकर पूजन करके २०। २१ कुशों केचीर और अलंकृत कवचोंको लिया वहकवच धारण करनेवाले घृतसे संयुक्त शरीर कुशाओंके चीरधारी २२ मूंजकी मेखला धारण करनेवाले लाखोंदक्षिणा देनेवाला वीर अथवा यज्ञकरनेवाले सन्तानमान स्वर्गलोक के योग्य कृतकर्मी शरीरके अभिमानों को दूर करनेवाले २३ यश और विजय के साथ आत्माको पूजने वेदके मुख्य और काल दक्षिणावाले यज्ञोंसे ब्रह्मचर्य्य को पाकर २४ उत्तम युद्ध से शीघ्रही लोकों को जानेके अभिलाषी सब ब्राह्मणों को संतुष्ट और तृप्त

करके पृथक् २ निष्कों की दक्षिणा देकर २५ गौ और बस्त्रोंका दान करके परस्पर में वारंबार वार्त्तालाप करते अग्नि को प्रज्वलित कर युद्ध ब्रतको धारण करके २६ उन दृढ़ब्रत और निश्चय वालों ने उस अग्निके समक्ष में प्रतिज्ञा करी और सब जीवों के सुनते हुये उच्चस्वरसे बचनों को कहा २७ और सबों ने अर्जुन के मारने की भी प्रतिज्ञाकरी कि जो लोक मिथ्याबादियों के हैं और जो ब्राह्मणों के मारनेवालों के हैं २८। २९ जो मद्यपान औ गुरुकी स्त्रीसे संभोग करनेवालों के ब्राह्मणों का धन चुरानेवालों के राजपिण्ड चुराने वालों के शरणागत के त्यागने वालों के प्रार्थना करनेवालों के मारने वालों के घरोंमें अग्नि लगानेवालों के और गौओं के मारनेवालों के जो लोकहैं ३० अथवा दूसरों के अप्रिय करनेवालों के ब्राह्मणों से शत्रुता करनेवालों के ऋतुकाल में मोहसे अपनी स्त्रीके पास न जानेवालों के जो लोकहैं ३१ व श्राद्ध में संभोग करनेवालोंके आत्मघातियों के दूसरे की धरोहड़ मारनेवालोंके शास्त्र के नाशकर्त्ताओंके नपुंसकसे लड़नेवालोंके अथवा नीचों के पीछे चलनेवालों के जो लोकहैं ३२ और नास्तिक लोगोंके जो लोकहैं और अग्नि व माता पिताको त्याग करनेवालोंके अथवा अन्यप्रकारके भी पाप करनेवालोंके जो लोक हैं ३३ उन सब लोकोंको हम प्राप्त होयं जो हम अर्जुन को युद्ध में मारे बिना लौटकर आवें ३४ और उनलोगों से पीड़ामान होकर भयसे मुखको मोड़ें जो लोकके मध्य युद्धमें कठिन कर्मोंको करतेहैं ३५ इसीसे अब हम सब लोग अपने अभीष्ट लोकोंको निस्सन्देह पावेंगे हे राजा तब वह बीर इसप्रकार से कह कर अर्जुनको दक्षिण दिशामें बुलातेहुये युद्धमें सम्मुख बर्त्तमान हुये उन नरोत्तमोंसे बुलाया हुआ शत्रुओं के पुरोंको बिजय करनेवाला अर्जुन ३६। ३७ धर्मराज से शीघ्रही यह वचन बोला कि मैं बुलाया हुआ होकर नहीं लौटताहूं यह मेरा ब्रत नियतहै ३८ हे राजा प्रतिज्ञा करनेवाले संसप्तक मुझको बड़े युद्ध में बुलाते हैं और यह सुशर्मा भी भाइयों समेत युद्धाभिलाषी होकर युद्धमें बुलारहाहै ३९ सो आप उसके सब साथियों समेत मारने के निमित्त मुझको आज्ञादीजिये हे पुरुषोत्तम मैं इस बुलाने के सहनेको समर्थ नहींहूं ४० मैं आपसे सत्य २ प्रतिज्ञाकरताहूं कि युद्धमें सबशत्रुओंको मराहुआही जानो ४१ युधिष्ठिर बोले हे तात जो द्रोणाचार्य्य के चित्तमें कर्म करनेकी इच्छाहै उसको तुमने अ-

च्छीरीति से मुख्यतापूर्व्वक सुनाहै उनकी वह प्रतिज्ञा जैसे प्रकारसे मिथ्याहोय वही तुमको सब प्रकार से करना उचित्तहै ४२ निश्चय करके द्रोणाचार्य्यजी महापराक्रमी शूरबीर अस्त्रज्ञ और श्रमसे रहितहैं हे महारथी उसने मेरे पकड़ने की प्रतिज्ञा करी है ४३ अर्जुन बोले कि हे राजा निश्चय करके यह सत्यजित युद्धमें आपकी रक्षा करेगा और धृष्टद्युम्नके जीवतेहोने पर द्रोणाचार्य्य अपने अभीष्ट को नहीं पावेंगे ४४ हे प्रभु युद्धमें पुरुषोत्तम सत्यजितके मरनेपर मिले हुये सबका भी किसी दशामें नियत न होना चाहिये ४५ संजय बोले कि इस के अनन्तर अर्जुन राजा से आज्ञादिया गया और छातीसे मिलायागया और बहुत प्रसन्नचित्त होकर राजा ने अनेकप्रकार के आशीर्वाद दिये ४६ तब वह पराक्रमी अर्जुन इस रीति से कह सुनकर त्रिगर्त्तदेशियों के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि क्षुधामान सिंह अपनी क्षुधादूर करनेके निमित्त मृगोंके यूथोंके सम्मुख जाताहै ४७ इसके पीछे दुर्य्योधन की सेना बड़ी प्रसन्न हुई और अर्जुनकेजाने पर धर्मराजकेपकड़ने में अत्यन्त क्रोधयुक्त हुये ४८ फिर वह दोनों सेना शीघ्रतासे ऐसे परस्पर में भिड़ीं जैसे कि जल वाली वर्षा ऋतुमें गंगा और सरयू यह दोनों नदी वेगसे मिलतीहैं ४९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा इसके पीछे प्रसन्नतासेयुक्त संसप्तकलोग रथोंसे सेना को चन्द्रमाके आकारकी बनाकर समभूमिवाले स्थानपर नियतहुये १ हे श्रेष्ठ तब वह नरोत्तम आतेहुये अर्जुनको देखकर प्रसन्न होकर बड़े शब्दोंसे पुकारे २ उस शब्द ने सब दिशा और विदिशाओं समेत आकाश को व्याप्त करदिया और शब्दसे लोकके अत्यन्त भरजानेपर वहांपर कोई प्रकारका दूसरा शब्दनहीं हुआ ३ वह अर्जुन उन अत्यन्त प्रसन्नचित्त क्षत्रियों को देखकर कुछ मन्द मुसकान करताहुआ श्रीकृष्णजी से यह वचन बोला ४ कि हे देवकीनन्दन अब तुम युद्ध में इन मरने के अभिलाषी और रोनेके योग्यस्थानपर अत्यन्त प्रसन्नचित्त त्रिगर्त्तदेशी भाइयों को देखो ५ निस्संदेह त्रिगर्त्तदेशियों की प्रसन्नताका यह समय है कि वह उन श्रेष्ठ उत्तमलोकों को पावेंगे जोकि नीच म-

नुष्यों को कठिनतासे प्राप्तहोते हैं ६ इसके पीछे महाबाहु अर्जुन ने इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजीको ऐसे प्रकार के वचन कहकर युद्धमें त्रिगर्त्त देशियों की अलंकृत सेनाको सम्मुख हुआ पाया ७ तब उसने सुवर्णसे जटित देवदत्त नाम शंखको लेकर बड़ी तीव्रता से बजाया और उसके शब्द से सब दिशाओं को व्याप्त करदिया ८ उस शब्द से संसप्तकों की सेना महा भयभीत होकर पाषाण की मूर्त्तियोंके समान युद्धमें निश्चल होकर नियतहुई ६ और उनकी सवारियों के वाहनोंने नेत्रोंको फाड़कर कानों को खड़ाकर ग्रीवा और शिरों को स्तब्ध करके अपने चरणोंको स्थिर करते मूत्र और रुधिर को गेरा १० इसके पीछे सावधान और सचेत हो सेनाको नियत कर एक वारही सब इकट्ठे होकर अर्जुन के ऊपर बाणोंकी वर्षा करने लगे ११ पराक्रमी अर्जुनने उन पन्द्रह हजार बाणोंको शीघ्रही अपने तीव्र बाणोंसे बीचहीमें काटा १२ इसके पीछे फिर उन लोगोंने अर्जुन को दश २ बाणोंसे घायलकिया फिर अर्जुन ने उनको तीन २ बाणोंसे घायलकिया १३ हे राजा इसके पीछे प्रत्येकने अर्जुन को पांच २ बाणोंसे व्यथित किया इस पराक्रमीने भी उनको दो २ बाणोंसे घायल किया १४ फिर उनक्रोधयुक्तोंने केशव जी समेत अर्जुनको तीक्ष्ण बाणोंसे ऐसे घायलकिया जैसे कि वर्षाकी बूंदें तालाबको घायल करती हैं १५ तदनन्तर हजारों बाण अर्जुनके ऊपर ऐसे गिरे जैसे कि भ्रमरोंके गण फूलेहुये वनके वृक्षोंपर गिरतेहैं फिर सुबाहुने तीस लोहमयी बाणों से अर्जुनको मुकुटपर बहुत घायलकिया १६। १७ सुवर्ण का मुकुट रखनेवाला अर्जुन उन सुनहरी पुंख युक्त सीधे चलनेवाले मुकुट पर नियत हुये बाणोंसे उदय हुये सूर्य्यके समान शोभायमान हुआ १८ अर्जुनने युद्धमें सुबाहुके हस्तावाय अर्थात् लोहे के हस्तत्राण को काटकर बाणोंके जालोंसे ढकदिया १६ इसके पीछे सुशर्मा सुरथ सुधर्मा सुधनु और सुबाहुने अर्जुनको दश २ बाणोंसे घायल किया २० हनुमान्जी की ध्वजा रखनेवाले अर्जुन ने उन सबको पृथक् २ बाणों से वेधा और भल्लों से उन सबकी ध्वजा और शायकों को काटा २१ फिर सुधन्वाके धनुषको काट उसके घोड़ोंको मार उसके शरीर समेत शिरको पृथक् २ करके गेरदिया २२ उसवीरके गिरानेपर उसके अनुगामी भयभीत होकर महाव्याकुलतासे उधरको भागे जिधर दुर्योधन की सेनाथी २३ तदनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त इन्द्रके पुत्र अर्जुनने अखंडित बाण

जालों से उस बड़ी सेनाको ऐसे मारा जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों से अन्धकार को नाश करदेताहै २४ उस सेनाके पराजय और चारोंओरके भागजाने व गुप्त होजाने पर अथवा अर्जुनके अत्यन्त कोपयुक्त होनेपर त्रिगर्त्त देशियोंमें भय प्रविष्टहुआ २५ वह सब अर्जुनके गुप्त ग्रन्थीवाले बाणोंसे घायल जहां तहां मृगों के समूहोंके समान भयभीत और अचेतहोगये २६ इसके पीछे क्रोधयुक्त त्रिगर्त्त का राजा उन महारथियों से बोला कि हे शूरलोगो तुम मत भागो तुमको भय करना योग्य नहीहै २७ सबसेनाके सम्मुख भयकारी शपथोंको खाकर यहां आये हो अब दुर्योधन की सेनामें शीघ्रतासे जाकर क्याकहैंगे २८ हम सब एक साथ युद्ध में ऐसे कर्म करने से इसलोक में क्यों नहीं हास्यके योग्यहोंगे अवश्य निन्दित गिने जायँगे इससे तुम सब साथहोकर सेना समेत युद्धकरो २९ हे राजा ऐसे कहे हुये वे वीर परस्परमें प्रसन्न करते बारबार पुकारे और शंखों को बजाया ३० इसके पीछे वह संसप्तकों के समूह जिनका कि नारायण और गोपाल नामथा मृत्युको निवृत्तकरके फिरलौटे ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

संजयजी बोले कि अर्जुन फिर उन लौटे हुये संसप्तकों के समूहों को देखकर अर्जुन महात्मा वासुदेवजी से बोले १ कि हे श्रीकृष्णजी घोड़ों को संसप्तकोंके समूहों पर चलायमानकरो ये लोग जीवते हुये युद्धको त्याग नहीं करेंगे यह मेरा विचारहै २ अब आप मेरे भुजबल और धनुषके भयकारी पराक्रमको देखो अब मैं इनसबको ऐसे गिराऊंगा जैसे कि क्रोधयुक्त रुद्रजी पशुओं को गिराते हैं ३ इसके पीछे निर्भय श्रीकृष्णजीने मन्द मुसकान करके बड़े आनन्दसे उस को प्रसन्न करके सेनामें जाकर जहां जहां अर्जुनने चाहा वहां वहां उसकोप्रवेशित किया ४ तब युद्धमें श्वेत घोड़ोंसे खैंचा हुआ वह रथ ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि आकाश में चलायमान किया हुआ विमान होताहै ५ फिर दाहिने और बायें मण्डलोंको भी ऐसा किया जैसे कि पूर्व्वसमयमें इन्द्र के रथने देव दानवों के युद्धमें कियाथा ६ इसके पीछे बड़े क्रोध युक्त नानाप्रकार के शस्त्रोंको हाथमें रखनेवाले बाणों के समूहों से ढकतेहुये नारायण नाम क्षत्रियों

के समूहने अर्जुनको चारोंओर से घेरलिया ७ हे भरतर्षभ फिर उन्होंने युद्ध के मध्यवर्त्ती श्रीकृष्णजी समेत कुन्तीके पुत्र अर्जुनको एक मुहूर्त्त मात्रही में दृष्टि से गुप्त करदिया ८ फिर क्रोधभरे युद्धमें पराक्रमको द्विगुणित करनेवाले अर्जुन ने शीघ्रही युद्धमें अपने गांडीव धनुषको हाथ में लिया ९ और क्रोध को सूचन करनेवाली भृकुटीको मुखपर बांधकर देवदत्त नाम बड़ेशंखको बजाया १० और शत्रु समूहोंके मारनेवाले त्वाष्ट्र नाम अस्त्रको चलाया उसके चलतेही हजारों रूप पृथक् २ प्रकटहुये ११ अपने रूपके समान अथवा बहुत प्रकारके रूप रखने वाले उन रूपों से क्षत्री लोग अत्यन्त मोहित हुये और एकने दूसरेको अर्जुन मानकर अपने आप अपने को मारा १२ यह अर्जुन है यह गोबिन्दजी है यह पांडव लोग और यादव हैं ऐसे २ बचनोंको बोलतेहुये उन अज्ञानियोंने परस्पर युद्ध में एकने एक को मारा १३ अर्थात् उन अचेतोंने परम अस्त्र से परस्पर में नाशकिया उस युद्धमें शूर बीर लोग प्रफुल्लित किंशुक वृक्षके समान शोभायमानहुये १४ इसके पीछे उस अस्त्रने उनके छोड़ेहुये हजारों बाणोंको धूलमें मिलाकर उनबीरोंको यम लोकमें पहुंचाया १५ फिर अर्जुनने हंसकर ललित्थ मालव मावेल्लक और त्रिगर्त देशीय शूर बीरोंको बाणों से पीड़ामान किया १६ उन कालके प्रेरित और बीर अर्जुनसे घायलहुये क्षत्रियोंने अर्जुनके ऊपर नाना प्रकारके बाण जालोंको फेंका १७ वहां उस भयकारी बाणोंकी बर्षासे ढकीहुई न ध्वजा दृष्ट पड़ी न अर्जुन रथ और न केशवजी दिखाई दिये १८ तब तो वह लब्धहुये लक्षसे परस्पर में पुकारे कि दोनों अर्जुन और केशवजी को मारा है ऐसा पुकारकर प्रसन्नतासे वस्त्रोंको हलाया १९ हे श्रेष्ठ वहां हजारों बीरोंने भेरी मृदंग और शंखोंको भी बजाया और महाभयकारी सिंह नादों के शब्दों को किया २० इसके पीछे श्रीकृष्णजी प्रस्वेदसे व्याप्त होगये और महादुःखी होकर अर्जुनसे बोले हे अर्जुन तू कहां है मैं तुझको नहीं देखताहूं हे शत्रुओं के मारने वाले तू जीवताहे २१ श्रीकृष्णजी के इस वचनको सुनकर शीघ्रता करनेवाले अर्जुनने वायु अस्त्रसे उनके छोड़ेहुये बाणों के समूहों को दूरकिया २२ इसके अनन्तर उस समर्थ वायुने संसप्तकोंके समूहोंको घोड़े रथ हाथी और शस्त्रोंसमेत ऐसे उड़ाया जैसे कि सूखेपत्तों के समूहोंको उड़ाताहे २३ हे राजा वह फिरवायु से चलायमान होकर ऐसे बड़े शोभायमान हुये जैसे कि समय पर वृक्षसे उड़ने

वाले पक्षी शोभायमान होतेहैं २४ फिर शीघ्रता करनेवाले अर्जुनने उन सबको इसरीति से व्याकुल करके तीक्ष्णवाणोंसे हजारोंको मारा २५ भल्लोंसे शिर और शस्त्रों समेत भुजाओंको काटा हाथीकी शूंड़के समान उन सब की जंघाओंको वाणों से पृथ्वी पर गिराया २६ अर्जुनने शत्रुओं को टूटीपीठ और भुजाचरण कमर और नेत्रोंको तोड़कर नानाप्रकारके शरीर के अंगों से रहित किया २७ फिर बुद्धिके अनुसार गन्धर्व नगरके समान अलंकृत किये हुये रथों को वाणों से चूर्ण करके अर्जुन ने उन सब लोगों को रथ घोड़े और हाथी आदि सवारियों से भी रहित कर दिया २८ वहां पर कहीं कहीं टूटे रथ और ध्वजाओं के समूह स्थान स्थानपर मुण्डतालवनों के समान प्रकाशमान हुये उत्तरायुध पताका और अंकुशों समेत हाथी भी ऐसे गिर पड़े जैसे कि इन्द्र के वज्र से ताड़ित वृक्षधारी पर्व्वत गिरते हैं २९ । ३० चामर आपीड़ और कवचों के रखनेवाले और इसी प्रकार आंत निकलनेवाले घोड़े अपने सवारों समेत अर्जुन के वाणों से घायल होकर पृथ्वी पर गिरे ३१ जिनके खड्ग और नख कटगये और ढाल, दुधारा, खड्ग, शक्ति और कवच भी टूटगये ऐसे मर्मों से छिन्न महादुखी पत्तिलोग भी मृतक हुये ३२ उन मृतक घायल पड़े गिरते घूमते और शब्दों को करते शूर वीरों से वह युद्धभूमि शोभायमान हुई ३३ उस पृथ्वी की महाभयानक धूलि रुधिर की वर्षा से दबगई और सैकड़ों बिना शिर के शरीर अर्थात् रुंडोंसे भी युक्त होकर वह पृथ्वी दुर्गम्य होगई ३४ अर्जुन का वह भयकारी रथ युद्ध में ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि प्रलयके समय पशुओंके मारनेवाले रुद्रजीको क्रीड़ाका स्थान होता है ३५ अर्जुन से घायल हुये घोड़े रथ और हाथियों वाले और अर्जुन के सम्मुख नाशवान् उन क्षत्रियों ने इन्द्रकी आतिथ्यता को पाया ३६ हे भरतर्षभ उन चारों ओर से मृतकरूप महारथियों से आच्छादित वह पृथ्वी महा शोभायमान हुई ३७ इसी अन्तर में अर्जुन के अज्ञात होने पर सेनाको अलंकृत करके द्रोणाचार्य्य युधिष्ठिर के सम्मुख गये ३८ शीघ्रता से युक्त अलंकृत सेनावाले प्रहारकर्त्ता युधिष्ठिर को चाहनेवालों ने उसको घेर लिया उस समय वहां बड़ा कठिन युद्धहुआ ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥

बीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि हे राजेन्द्र महारथी भारद्वाज द्रोणाचार्य्य जी उस रात्रि को व्यतीतकर दुर्योधन को बहुतसे वचन कहके १ अर्जुन और संसप्तकों से युद्धको नियत करके संसप्तकों के रथों की ओर अर्जुन की यात्राहोने पर २ अलंकृत सेन.वाले द्रोणाचार्य्य धर्मराज के पकड़ने की इच्छासे पांडवों की बड़ी सेना के सम्मुख गये ३ तब युधिष्ठिरने भारद्वाजके रचे हुये गरुड़व्यूह को देखकर मंडलार्द्धनाम व्यूह से अपनी सेनाको अलंकृत किया महारथी भारद्वाज तो गरुड़ व्यूहके मुखपरहुये ४ राजा दुर्य्योधन अपने सगे भाइयों समेतपीछे चलनेवालों से संयुक्त होकर शिरके स्थान पर हुआ धनुषधारियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य्य और कृतवर्मा ये दोनों नेत्र हुये ५ भूतशर्मा, क्षेमशर्मा,पराक्रमी करवर्ष, कलिङ्गदेशी, सिंहलदेशी, पूर्व्वीय, राजा, लोग, शूर, अभीरक, दशेटक, ६ शक, यवन, कांबोजदेशी, इसी प्रकार हंसपथ शूरसेनदेशी, दरददेशी मद्रदेशी और जो केकय देशी हैं ७ वे ग्रीवामें संयुक्तहुये और हाथी घोड़े रथ और पत्तियों के समूह अच्छे अलंकृत होकर नियतहुये भूरिश्रवा शल्य सोमदत्त और बाह्लीक ८ ये सब वीर अक्षौहिणी से संयुक्त दक्षिण पक्ष में नियतहुये और विन्द, अनुविन्द, अवन्ति, देश के राजालोग काम्बोज और सुदक्षिण ९ बामपक्ष में आश्रित होकर अश्वत्थामा के आगे नियत हुये और पृष्ठभाग पर कलिंग, अम्बष्ठ, मागध, पौण्ड्र, मद्रक १० गान्धार देशी, शकुन देशी, पूर्व्वीय राजा पर्व्वतीय राजा और वशातय नियत हुये और पुच्छ पर सूर्य्यका पुत्र कर्ण अपने सब पुत्र बांधव और ज्ञाति वालों समेत नियतहुआ ११ नाना प्रकारके देशियों से उत्पन्न होने वाली बड़ी सेना समेत जयद्रथ, भीमरथ, संपाति, याजभोज, भूमिंजय,वृष,क्राथ १२ और पराक्रमी राजा निषध हे राजा युद्धमें सावधान और ब्रह्मलोकके अर्थ संस्कारी बड़ीसेनासे युक्त व्यूह की छातीपर नियत हुये द्रोणाचार्य्य से रचाहुआ व्यूह रथघोड़े हाथी और पदातियोंसमेत १३। १४ वायुसे उठाये हुये समुद्रके रूप नर्तक के समान दिखाईदिया उसके पक्ष और प्रपक्षों से युद्धाभिलाषी शूरवीर लोग ऐसे निकले १५ जैसे कि ऊष्मऋतु में विद्युत् और गर्जना समेत सब ओर से बादल निकलते हैं हे राजा उसराजा प्राग्ज्योतिप का हाथी सेना

के मध्यमें विधिके अनुसार अलंकृत १६ और नियत होकर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि उदयाचलमें सूर्य्यहोताहै मालायुक्त श्वेत छत्रधारी हार्थीसे ऐसी शोभाहुई १७ जैस कि पूर्णमासी के दिन कृत्तिका नक्षत्र के योगसेयुक्त चन्द्रमा समेत नीले बादलकी शोभाहोती है उसप्रकार उस मदसे अन्धे हाथीकी शोभा हुई १८ जैसे कि बड़ा पर्व्वत बड़े बादलोंकी कठिन वर्षासे युक्तहोय उसी प्रकार नानाप्रकार के देशों के बीर राजाओं से व नानाप्रकार के शस्त्र और भूषणोंसे अलंकृत पर्व्वतीय राजाओंसे ऐसे संयुक्त हुआ १९ जैसे कि देवताओं के समूहों से इन्द्र संयुक्त होताहै इसके पीछे राजा युधिष्ठिर उस दिव्य युद्धमें शत्रुओंसे अजेय व्यूहको देखकर धृष्टद्युम्नसे यह बचनबोले कि हे समर्थ अब मैं जैसी रीति से ब्राह्मण के स्वाधीनता में न आऊं २० । २१ हे कपोतग्रीव वर्ण अश्वोंके रखनेवाले वही उपाय करना चाहिये धृष्टद्युम्न बोले कि हे उत्तमव्रत धारण करनेवाले अब तुम उस उपाय करनेवाले द्रोणाचार्य्य के स्वाधीनता में नहीं होगे क्योंकि अब मैं उनके अनुगामियों समेत युद्धमें उनको रोकूंगा २२ हे युधिष्ठिर मेरे जीवते हुये आप को व्याकुलकभी न होनायोग्य है द्रोणाचार्य्य युद्ध में किसी दशामें भी मुझको विजय करने को समर्थ नहीं होसक्ते २३ संजय बोले कि कपोतग्रीव वर्ण के घोड़े वाला पराक्रमी द्रुपद का पुत्र धृष्टद्युम्न बाण जालों को फैलाता आपही द्रोणाचार्य्यके सम्मुख गया २४ द्रोणाचार्य्य उस अप्रिय दर्शन धृष्टद्युम्न को नियत देखकर क्षण मात्रही में अप्रसन्न चित्तवाले के समान हुये २५ तब शत्रुओंके विजय करने वाले आपके दुर्मुख नाम पुत्रने धृष्टद्युम्न को देखकर द्रोणाचार्य्य का प्रियकरनेकी इच्छासे धृष्टद्युम्न को रोका २६ हे भरतवंशी शूर धृष्टद्युम्न और दुर्मुखका वह साम्हना बड़ा कठिन और भयकारी हुआ २७ धृष्टद्युम्नने शीघ्रही बाणोंके जाल से दुर्मुखको ढकक बाणोंके बड़े समूहों से द्रोणाचार्य्य को रोंका २८ द्रोणाचार्य्य को रुकाहुआ देख कर आप का पुत्र शीघ्रता से आया और नानाप्रकारके चिह्नित बाण समूहों से धृष्टद्युम्न को मोहित किया २९ युद्ध में उन धृष्टद्युम्न और दुर्योधन के भिड़ने पर द्रोणाचार्य्य ने बाणोंसे युधिष्ठिर की सेनाको अनेक प्रकारसे छिन्न भिन्नकर दिया ३० जैसे कि बादल बायुसे चारों ओरको उच्छिन्न होजाते हैं उसी प्रकार पांडव युधिष्ठिर की सेनाभी जहां तहां उच्छिन्न होगई ३१ हे राजा व

युद्ध एक क्षणमात्रतो अपूर्व्व दर्शनीय हुआ तदनन्तर शूरबीर लोग उन्मत्तों के समान मर्य्यादा से रहित कर्मोंको करने लगे ३२ यहांतक कि परस्पर में अपने और दूसरोंकी नहीं जाना ध्यान और नामोंके द्वारा वहयुद्ध बर्त्तमानहुआ ३३ उन शूरबीरों की सूर्य्य वर्णवाली किरणों से युक्त चूड़ामणि निष्क और भूषणोंसे अलंकृत कवच प्रकाशमान हुये ३४ युद्धमें गिरीहुई पताकावाले रथ हाथी और घोड़ों का वहरूप बगलों के समूहों के समान श्वेत रंगका दिखाई पड़ा ३५ मनुष्योंने मनुष्योंको ऊंचे घोड़ोंने नीचेघोड़ों को रथियोंने रथियोंको और हाथियों ने उत्तम हाथियों को मारा ३६ ऊंची पताका वाले हाथियों का युद्ध उत्तम हाथियों के साथ एक क्षण मात्रमें महा भयकारी और कठिन बर्त्तमानहुआ ३७ उन छुटे अंग और परस्पर खैंचनेवाले हाथियोंके दांतोंके संघात और संघर्षण से सधूम अग्नि उत्पन्न हुई ३८ जिनकी पताका फैलगई और दांतों से अग्नि प्रकटहुई वह भिड़कर बिजली रखने वाले बादलों के समान होगये ३९ दौड़ते गर्जते और गिरते हुये हाथियों से पृथ्वी ऐसी आच्छादित होगई जैसे कि बादलोंसे शरदऋतु का आकाश होजाताहै ४० बाण और तोमरोंकी बर्षा से घायल उन हाथियों के शब्द ऐसे उत्पन्न हुये जैसे कि बड़ीचल विचलतामें बादलों के शब्द होतेहैं ४१ कितनेही उत्तम हाथी तोमर और बाणोंसे घायल होकर भयभीत हुये और कितनेही अन्यहाथियों के शब्दोंसे ही भाग गये ४२ वहां हाथियों के दांतों से घायल कितनोहीने पीड़ा युक्त होकर ऐसे भयानक शब्द किये जैसे कि उत्पात के बादल शब्द करते हैं ४३ उत्तम हाथियों से बिरुद्ध कियेहुये हाथी हाथियों को मथकर उत्तम अंकुशों से प्रेरित फिर लौट आये ४४ अच्छे अलंकृत बाण और तोमरों से घायल हुये हाथियों के अलंकृत वह सवार हाथियोंसे पृथ्वीपर गिरे जिनके कि हाथों से अंकुश और शस्त्र छूट गये थे ४५ अपने सवारों से रहित हाथी जहां तहां शब्दों को करतेहुये परस्पर प्रवेश करके टूटे हुये बादलोंके समान गिर पड़े ४६ अकेले घूमनेवाले के समान कितनेही बड़ेहाथी उन मृतक और गिरे हुये शस्त्र वाले मनुष्योंको लियेहुये दिशाओंको गये ४७ तब उस मारधार में तोमर दुधारे खड्ग और परसोंसे घायल व ताड़ित हाथी कष्टित शब्दोंको करते हुये पृथ्वीपर गिरपड़े ४८ उस पर्वताकार चारोंओर को गिरनेवाले हाथियों के शरीरों से आघा-

तित पृथ्वी अकस्मात् कम्पायमान होकर शब्दायमान हुई ४९ अश्वारूढ़ व पताकाधारी हाथियों के सवार और हाथियोंसे वह पृथ्वी चारोंओर से ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि फैले हुये पर्व्वतोंसे शोभित होतीहै ५० वह अच्छे अलंकृत हाथियों के सवार जिनके हृदय युद्ध में घायलहुये फैले अंकुश और तोमर और रथियोंके भल्लोंसे गिरायेगये ५१ और वहुतसे हाथी नाराचों से घायल क्रौंचके समान गर्जतेहुये शत्रुओंको और अपनी सेनाके भी लोगोंको मर्द्दनकरते हुये दशों दिशाओंको भागे ५२ हे राजा पृथ्वी हाथी घोड़े रथ और युद्ध कर्त्ताओंके असंख्य शरीरों से संयुक्त होकर मांस रुधिर रूप कीचकी रखनेवाली हुई ५३ दांतों की नोक से मथकर हाथियों से उछाले हुये और पहिये रखने वालेवड़े वड़े रथोंसेही विना पहिये किये हुये ५४ रथ अपने २ रथियों से रहितहुये और घोड़े भी अपने २ अश्वारूढ़ोंसे खाली होगये और जिन के सवार मारे गये वे भयसे दुखी हाथीभी दिशाओं को भागे ५५ इस युद्धमें पिताने पुत्रको और पुत्र ने पिताको भी मारा अर्थात् ऐसाकठिन युद्ध हुआ कि जिसमें किसी ने किसी को नहीं जाना ५६ उसयुद्धमें मनुष्य रुधिरकी कीचोंसे डाढ़ी मूछों समेत लिप्त होकर ऐसे दुखोहुये जैसे कि प्रकाशित अग्निसे संयुक्त वड़े २ वृक्ष होते हैं ५७ रुधिरसे लिप्त वस्त्र कवच छत्र और पताका ये सव लालरंग के दृष्ट पड़े ५८ गिराये हुये घोड़े रथ और मनुष्यों के समूह पृथ्वी पर पड़ेहुये फिर रथ की नेमियों से दवकर अनेकप्रकारसे खण्ड२ हुये ५९ वह सेनारूपी समुद्र हाथियोंके समूह से वड़ी तीव्रता से युक्त निर्जीव मनुष्य रूप शेवाल रखने वाला और रथों के समूह रूप कठिन भंवरवाला होकर महा शोभायमान हुआ ६० विजयरूपी धन के चाहनेवाले शूरवीरोंने सवारी रूपी वड़ी २ नौकाओंके द्वारा उस सेनासागर को मझाकर डूवनेवालोंने मोह को नहीं किया ६१ वाणोंकी वर्षासे अत्यन्तवर्षा युक्त घाव चिह्नों समेत उन शूरवीरोंके मध्यमें किसी विना घायलने भी चित्तकी दृढ़ताको नहीं पाया ६२ इसीप्रकार भयकारी रूप मद के उत्पन्न करनेवाले युद्ध के वर्त्तमान होनेपर द्रोणाचार्य्यजी शत्रुओंको मोहित और अचेत करके युधिष्ठिर के सम्मुखगये ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिविंशतितमोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके अनन्तर युधिष्ठिरने समीप आयेहुये द्रोणाचार्य्य को देखकर निर्भय पुरुषके समान होकर बाणोंकी वर्षा से उनको ढकदिया १ इस के पीछे युधिष्ठिर की सेना में बिलबिला नाम शब्द उत्पन्न हुआ कि बड़ा सिंह हाथियोंके स्वामीको पकड़ना चाहताहै २ फिर बड़ा शूरबीर सत्य पराक्रमी सत्यजित द्रोणाचार्य्य को देखकर युधिष्ठिर को चाहताहुआ आचार्य्य के सम्मुख गया ३ तब महाबलीद्रोणाचार्य्य और पांचालदेशी उस सेनाको व्याकुल करते हुये इन्द्र और बैरोचनके पुत्र असुराधिप राजाबलिके समान युद्ध करने लगे ४ इसके पीछे बड़े धनुषधारी सत्यपराक्रमी उत्तम शस्त्रको दिखाते हुये सत्यजित ने द्रोणाचार्य्य को तीक्ष्णधार वाले बाणोंसे घायल किया ५ उसी प्रकार विषैले सर्पके समान मृत्यु रूप पांच बाणोंको उनके सारथी पर छोड़ा और उन बाणोंके लगने से उनकासारथी अचेत हुआ ६ फिर अकस्मात् दशबाणों से उनके घोड़ोंको घायल किया और फिर इसीकोप संयुक्तने दशदशबाणों से उसके पार्ष्णि समेत सारथी को वेधा ७ फिर मंडल को घूमकर सेना के मुखपर घूमने लगा इन सब बातों के पीछे उस शत्रुओं के मारनेवालेने क्रोधकरके द्रोणाचार्य्यकी ध्वजाको काटा ८ फिरशत्रुओंके बिजय करनेवाले द्रोणाचार्य्यने युद्धमें उसके उसकर्म को देखकर अपने मनसे मरणप्राय समझा ९ और शीघ्रही बाणसमेत उसके धनुषको काटकर मर्मवेधी तीक्ष्ण दशबाणोंसे सत्यजितको घायल किया १० हेराजा फिर उस प्रतापीने शीघ्रतासे दूसरे धनुषको लेकर तीस बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको व्यथित किया ११ युद्धमें सत्यजितसेग्रसेहुये द्रोणाचार्य्यको देखकर पांचालदेशी वृकनेसैकड़ों तीक्ष्ण बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको पीड़ामान किया १२ तब युद्धमें महारथी द्रोणाचार्य्यको बाणोंसे ढकाहुआ देखकर पांडव प्रसन्नतासे पुकारे और बड़ी प्रसन्नतासे वस्त्रोंको फिराया १३ हेराजा बड़े पराक्रमी क्रोधयुक्त वृकने फिर द्रोणाचार्य्यको साठ बाणोंसे छातीपरघायल किया और बड़ा आश्चर्य्यसा हुआ १४ बाणोंकी वर्षासे ढकेहुये बड़ेवेगवान् महारथी द्रोणाचार्य्यने क्रोधसे दोनोंनेत्रोंको निकालकर बड़ावेग किया १५ अर्थात् द्रोणाचार्य्यने सत्यजित और वृकके धनुषोंको काटकर छःबाणोंसे सारथी

और घोड़ोंसमेत वृकको मारा १६ इसके पीछे सत्यजितने बड़ेवेगवान् दूसरे धनुषको लेकर विशिखनाम बाणोंसे घोड़े सारथी और ध्वजा समेत द्रोणाचार्य्य को घायल किया १७ पांचाल देशीसे युद्धमें पीड़ामान द्रोणाचार्य्यनेभी उसके प्रहारोंको नहींसहा और उसके नाशकरने के लिये शीघ्रही बाणोंको छोड़ा १८ अर्थात् द्रोणाचार्य्यने हजारोंबाणोंकी वर्षासे उसकेघोड़े धनुष ध्वजा सारथी और पृष्ठके रक्षकोंको आच्छादित करदिया १६ इसीप्रकार वारवार धनुष के टूटनेपर उत्तम अस्त्रोंके ज्ञाता पांचालदेशी सत्यजितने रक्तवर्ण घोड़े रखनेवाले द्रोणाचार्य्य से बड़ा युद्ध किया २० द्रोणाचार्य्यने युद्धमें उस सत्यजित को इसप्रकार का शूरवीर जानकर अपने अर्धचन्द्र नाम बाणसे उस महात्माके शिरको काटा २१ उस पांचालों के महारथी बड़े पराक्रमी के मरनेपर द्रोणाचार्य्य से भयभीत राजा युधिष्ठिर शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा हटगया २२ पांचाल, केकय, मत्स्य, चेदि, कारुष्य और कोशल देशियोंके शूरवीर युधिष्ठिर को चाहते उस द्रोणाचार्य्यको देखकर उनके सम्मुख गये २३ इसको पीछे शत्रुसमूहों के मारनेवाले आचार्य्यने युधिष्ठिर की चाहनेवाली उनसेनाओं को ऐसे भस्म करदिया जैसे कि तृण समूहको अग्नि भस्मकरदेताहै २४ राजा विराटका छोटा भाई सतानीक उस सब सेनाके वारंवार नाश करनेवाले द्रोणाचार्य्य के सम्मुख वर्त्तमान हुआ २५ और सूर्य्यकी किरणोंके समान प्रकाशमान कारीगरके स्वच्छ कियेहुये छः बाणोंसे सारथी और घोड़ों समेत द्रोणाचार्य्यको अत्यन्त घायल करके बड़े वेग से गर्जा २६ निर्दय कर्म में प्रवृत्त कठिनतासे होनेके योग्य कर्मको करनाचाहते सतानीकने महारथी द्रोणाचार्यको सैकड़ोंबाणोंसे ढकदिया २७ फिर द्रोणाचार्यने भी शीघ्रताकरके क्षुर नाम बाणसे उस गर्जतेहुये सतानीकके शरीरसे कुंडलधारी शिरको काटकर पृथ्वीपर गिराया इसके मत्स्य देशीलोग भागगये २८ भारद्वाज ने मत्स्य देशियों को विजयकरके चन्देरी कारुष्य केकय पांचाल सृंजय देशी और पांडवोंको भी वारंवार विजयकिया २६ जैसे कि अग्नि वनको भस्म करता है इसीप्रकार सेनाओंके भस्म करनेवाले क्रोध रूप स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य्यको देखकर सृंजयनाम क्षत्री अत्यन्त कम्पायमानहुये ३० इस शीघ्रता करने वाले उत्तम धनुषधारी शत्रुहन्ता द्रोणाचार्य्यकी प्रत्यंचाका शब्द सब दिशाओं में सुना गया ३१ हस्तलाघवी द्रोणाचार्य के छोड़ेहुये भयकारी शायकोंने हाथी

घोड़े पदाती रथारूढ़ और गजारूढ़ोंको बहुतमथा ३२ जैसे कि हिम ऋतुके पीछे वायुसे युक्त गर्जताहुआ बादल वर्षाको करता है उसीप्रकार पाषाण वृष्टिके समान वर्षा करते द्रोणाचार्य्य ने शत्रुओं के भयको उत्पन्न किया ३३ पराक्रमी शूरवीर बड़े धनुषधारी मित्रों के अभय देनेवाले द्रोणाचार्य्य सेनाको व्याकुल करते सब दिशाओं में घूमे ३४ हमने उस बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य्यके स्वर्णमयी धनुषको सब दिशाओं में ऐसे देखा जैसे कि बादलों में बिजली होती है ३५ हे भरत-वंशी हमने इस युद्धमें अत्यन्त घूमते द्रोणाचार्य्य की ध्वजा में शोभायमान हिमाचल के शिखरकी समान वेदीको देखा ३६ फिर द्रोणाचार्य्य ने युधिष्ठिर की सेनाके मध्यमें ऐसा बड़ा विध्वंसन किया जैसे कि देवता और असुरों से प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले विष्णु भगवान् दैत्यों के समूहों में विध्वंसन करते हैं ३७ उस शूरवीर सत्यवक्ता ज्ञानी पराक्रमी सत्य पराक्रमी महानुभाव द्रोणाचार्य्य ने उस नदीको जारी किया ३८ जोकि प्रलयकालीन भयकारी नदीके समान भयभीतों को डराने वाली कवच रूप तरंग ध्वजा रूप भंवर मृतकोंको किनारे से दूर हटानेवाली हाथी घोड़े रूपी बड़े ग्राह और खड्गरूपी मछली रखनेवाली कठिनता से स्पर्श करनेके योग्य ३९ वीरोंके अस्थिरूप कंकड़ रखने वाली भ-यकारी भेरी मृदंग रूपी कछुये रखने वाली ढाल और कवचरूपी नौका रखने वाली महाभयानक केशरूप शैवाल और शाद्वल रखने वाली ४० बाण स-मूहों को रखने वाली धनुष रूप झिरनोंसे युक्त भुजा रूप पत्तों से व्याप्त युद्ध-भूमि में बहनेवाली कठिन कौरव और सृंजियों से प्राप्त करनेवाली ४१ मनुष्यों के शिर रूप पाषाण रखने वाली शक्ति रूप मछली गदा रूप मुडुपनाम नौका रखने वाली पगड़ी रूपी फेनों से आच्छादित निकली हुई आंतरूपी सर्पों से युक्त ४२ वीरों को मारने वाली और भयकारी मांस रुधिर रूप कीच रखनेवाली हाथी रूप ग्राह ध्वजारूप वृक्षों सहित क्षत्रियों को डुबानेवाली ४३ निर्दय श-रीरों से परस्पर घिसावट रखनेवाली अश्वारूढ़ रूप नक्रों की रखने वाली ऐसी दुर्गम नदीको द्रोणाचार्य्य ने प्रकट किया वह नदी मृत्युरूप कालसे मिलीहुई थी ४४ राक्षस और गिद्ध आदिके समूहोंसे सेवित श्वान शृगालोंके समूहों से युक्त बड़े भयकारी मांसभक्षी जीवों करके चारों ओरसे सेवितथी ४५ वह युधि-ष्ठिरादिक उस कालरूपके समान सेनाके नाश करने वाले बड़े रथी द्रोणाचार्य्य

के सम्मुखगये ४६ वहां उन शूरोंने एकसाथही द्रोणाचार्य्य को सब ओर से ऐसे रोंका जैसे कि किरणोंसे संसार के तपाने वाले सूर्य्य रुकते हैं ४७ शस्त्र उठाने वाले आपके बेटे राजा लोग और राजकुमारों ने बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्य को चारों ओरसे घेरलिया ४८ इसके पीछे शिखण्डीने पांचवाणसे क्षत्रधर्मा ने बीस वाणोंसे बसुदान ने पांच वाण से उत्तमौजाने तीन बाणोंसे क्षत्रदेवने सात बा-णोंसे सात्यकीने सौ बाणोंसे युधामन्युने आठ बाणोंसे ४९ युधिष्ठिरने बारह शा-यकों से द्रोणाचार्य्य को घायल किया ५० और धृष्टद्युम्न भी तीन बाणसे व्य-थित किया ५१ इसके पीछे सत्यसंकल्पी महारथी द्रोणाचार्य्य ने मतवाले हाथी के समान रथवाली सेनाको उल्लंघन करके इस दृढ़ सेनाको गिराया ५२ फिर निर्भयके समान प्रहार करनेवाले राजाको पाकर नौ बाणोंसे क्षेमको ऐसाघायल किया कि मृतक रथसे गिरपड़ा ५३ वह रक्षाके योग्य गुरू द्रोणाचार्य्य सेना के मध्य को पाकर सब दिशाओं में घूमे और किसी दशा में भी अन्य लोगों के रक्षक नहीं हुये ५४ बारह बाणसे शिखण्डीको बीस बाणसे उत्तमौजस को घा-यल करके भल्लसे बसुदानको यम लोकमें भेजा ५५ अस्सी बाणोंसे कृतवर्मा को छब्बीस बाणसे सुदक्षिण को घायल करके भल्ल से क्षत्रदेव को रथके नीड़ स्थान से गेरा ५६ फिर उस स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य्यने साठबाणसे युधा-मन्युको तीस बाणसे सात्यकी को घायल करके शीघ्रही युधिष्ठिर के सम्मुखगये ५७ फिर राजाओं में श्रेष्ठयुधिष्ठिर शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा शीघ्रही गुरुके सम्मुख से हटगये और पांचालदेशी शूरवीर द्रोणाचार्य्य के सम्मुख गया ५८ फिर द्रोणाचार्य्य ने उसको धनुष घोड़े और सारथी समेत ऐसा मारा कि वह मृतक होकर रथसे पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि आकाश से तारागिरता है ५९ उसपांचाल देशियों के यश करनेवाले राजकुमारके मरनेपर यह बड़ाभारी शब्द हुआ कि द्रोणाचार्य्यको मारो मारो ६० पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने उन अ-त्यन्त क्रोध युक्त पांचाल मत्स्य और केकय देशियों समेत सृंजयों से युक्त पां-डवों को छिन्न भिन्न करदिया ६१ सात्यकी, चेकितान, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, वार्ध-क्षेम, चित्रसेन, सेनाविन्दु, सुवर्चस ६२ इन समेत अन्य २ नानाप्रकारके देशा-धिपति अनेक राजाओं को कौरवों से घिरेहुये द्रोणाचार्य्य ने विजयकिया ६३ हे महाराज आपके शूरवीरों ने महायुद्ध में विजयको पाकर युद्धमें चारोंओर से

छिन्न भिन्नहुये पांडवोंके शूरवीरोंको मारा ६४ हे भरतवंशी जैसेकि इन्द्रके हाथसे दानव घायलहोते हैं उसीप्रकार महात्मा द्रोणाचार्य के हाथसे घायलहुये वह पांचाल केकय और मत्स्य देशीभी अत्यन्त कंपायमानहुये ६५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वेणिएकविंशतितमोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले उस बड़े युद्धमें द्रोणाचार्य्य से पांचालोंके और पांडवों के पराजयहोने पर कोई भी दूसरा सन्मुख न रहा १ क्षत्रियों के यशकी बढ़ाने वाली उत्तम बुद्धिको जिसपर कि नीच मनुष्य नहीं चलते और उत्तम पुरुष उसपर कर्मकरते हैं उस बुद्धिको युद्धमें करके सम्मुख वर्त्तमानहुआ २ वही बड़ा पराक्रमी और शूरवीर है जो छिन्न भिन्न होनेवालों में लौटताहै बड़ा आश्चर्य्य है कि कोई मनुष्यभी द्रोणाचार्य्य को नियत देखकर सम्मुख नहीं हुआ ३ व्याघ्र के समान जंभाई लेनेवाले मतवाले हाथीके समान युद्धमें प्राणोंके त्यागनेवाले अलंकृतहोकर अपूर्व्व युद्धकरनेवाले ४ बड़े धनुषधारी नरोत्तमशत्रुओं को भयवढ़ानेवाले उपकारके ज्ञाता सत्यवक्ता दुर्योधन का प्रिय चाहनेवाले ५ शूरवीर द्रोणाचार्य्य को सेनामें देखकर कौन २ से शूरवीर लौटे हे संजय यहसवमुझसेकहो ६ संजय बोलेकि पांचाल पांडव मत्स्य देशी सृंजयी चन्देरी देशियों और केकयोंको युद्धमें द्रोणाचार्य्य के शायकोंसे घायल और छिन्न भिन्नको ७ जैसे कि समुद्रके बड़े समूहसे नौका हरणकी जाती हैं उसीप्रकार द्रोणाचार्य्य के धनुष से छोड़ेहुये और शीघ्रमारनेवाले बाणों के समूहों से स्वाधीनतामें होने वालों को देखकर ८ कौरवोंने नानाप्रकारके बाजों के शब्द और सिंहनादोंको करतेहुये रथ हाथी और मनुष्यों को सब ओरसे घेरलिया ९ सेनाके मध्यमें नियत अपने मनुष्यों से युक्त राजादुर्य्योधन उनको देखताहुआ अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक कर्ण से बोला १० हे कर्ण द्रोणाचार्य्य के शायकों से घायलहुये पांचालों को देखो कि जैसे सिंहसेबनमें मृग भयभीतहोते हैं उसीप्रकार दृढ़ धनुषधारी द्रोणाचार्य्य से भयभीत इनलोगों को भी देखो ११ यह मेरी बुद्धिमें आताहै कि यह कभी युद्ध को नहीं चाहेंगे क्योंकि द्रोणाचार्य्य से इसरीतिपर पराजयहुये हैं जैसे कि वायु से बड़े २ वृक्षताड़ित होकर गिरते हैं १२ इन महात्मा के सुन-

हरी पुंखवाले वाणों से पीड़ामान जहांतहां घूमतेहुये ये लोग एकमार्ग से नहीं
जाते हैं १३ कौरवों से और महात्मा द्रोणाचार्य्य से रोकेहुये ये और अन्य शू-
रवीर लोग ऐसे मंडलरूप घिरावमें हुये जैसे कि अग्निसे हाथीहोते हैं १४ द्रो-
णाचार्य्य के तीक्ष्ण धारवाले भ्रमररूपवणों से युक्तशरीर भागने में प्रवृत्तचित्त
होकर परस्परमें भिन्न २ होगये १५ हे कर्ण यह बड़ा क्रोधी भीमसेन पांडवों और
सृंजयों से पृथक् होकरमेरे शूरवीरों से घिराहुआ मुझको प्रसन्नकरता १६ प्रकट
है अब यह दुर्बुद्धीलोकको द्रोणाचार्य्यरूप देखताहै इससे निश्चयहोता है कि
यह भीमसेन अबअपने जीवन से और राज्य से निराशहोगया है १७ कर्ण
बोला यहमहाबहु अपने जीतेजी कभी युद्धको नही त्यागेगा यह पुरुषोत्तम इन
सिंहनादों को नहींसहैगा। १८ और पांडवभी युद्ध में से कभी पृथक् नहींहोंगे
यहमेरा विचार है क्योंकि पराक्रमी शूरवीर अस्त्रज्ञ होकर युद्धमें दुर्मद हैं १९ ये
पांडवलोग विष अग्नि द्यूत और वनबास करने के दुःखोंको स्मरणकरते युद्ध
को नहीं त्यागेंगे यह मेरा निश्चय सिद्धान्त है २० बड़ातेजस्वी महाबाहु कु
न्तीका पुत्र भीमसेन लौटता हुआभी बड़े २ उत्तम रथियों को मारेगा २१ खड्ग
धनुषशक्ति घोड़े हाथी और मनुष्योंके समूहोंको रथ और लोहेके दण्ड से मारे
गा। २२ पांचाल केकय मत्स्यदेशी शूर सात्यकी आदिक रथी पांडव अधिकत
इस भीमसेन के पीछे कर्म करनेवाले होतेहैं २३ शूरवीर पराक्रमी और बड़े
बलवान् महारथी लोग इस अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेनकी प्रेरणासे मारनेवाले
२४ कौरवों में श्रेष्ठ भीमसेनको चाहतेहुये लोग सबओर से द्रोणाचार्य्य के स
म्मुख ऐसे वर्त्तमानहैं जैसे कि बादलोंके समूह सूर्य्यको सबओर से घिरेहुये हो
हैं २५ एक स्थानपर वर्त्तमान ये लोग इस अरक्षित व्रतमें सावधान द्रोणाचार्य
को ऐसे पीड़ा देतेहैं जैसे कि मरण के अभिलाषी टीड़ियों के समूह दीपकक
ष्ट देते हैं २६ निस्सन्देह ये लोग अस्त्रज्ञ होकर युद्धमेंभी पूरे हैं अब मैं भा
रद्वाज द्रोणाचार्य्य के ऊपर बड़ाभारी बोझा नियतमानताहूं २७ हम वहां शीघ्र
जायंगे जहां कि द्रोणाचार्य्यजी नियतहैं ये लोग इस सावधान व्रत द्रोणाचा
को ऐसे न मारडालें जैसे कि कोकनाम जीव बड़े सर्पको मारडालताहै २८
सञ्जय बोले हे राजा इसके पीछे राजा दुर्य्योधनकर्ण के वचनको सुनकर भाइ
समेत द्रोणाचार्य्य के रथके समीप गया २९ वहां पर नानाप्रकारके वर्ण रख

वाले उत्तम घोड़ों की सवारी से लौटेहुये अकेले द्रोणाचार्य्य के मारने के अभिलाषी पांडवों का बड़ाभारी शब्द हुआ ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय सबके रथोंके चिह्नों को मुझसे वर्णनकरो जो क्रोध युक्त शूरवीर जिनमें अग्रणीय भीमसेन था वे सब द्रोणाचार्य्य के सम्मुख हुये १ संजय बोले कि सुवर्ण वर्ण वाले घोड़ोंकी सवारीसे जातेहुये भीमसेनको देखकर रुक्म वर्णवाले अश्वोंकी सवारी वाला शूरवीर रथी सात्यकी लौटा २ और निर्भयता पूर्व्वक क्रोधयुक्त कपूर वर्णवाले घोड़ोंको चलाता हुआ युधामन्यु भी द्रोणाचार्य्य के रथ के समीप वर्त्तमान हुआ ३ राजा पांचालका पुत्र धृष्टद्युम्न कपोतग्रीव वर्णवाले बड़े शीघ्रगामी सुवर्ण के आभूषणादिक सामानोंसे अलंकृत घोड़ोंकी सवारी से लौटा ४ पितको चाहता और उसकी सिद्धी का अभिलाषी व्रतमें सावधान श्वेत घोड़ेवाला क्षत्रधर्मा लौटा ५ शिखण्डी का पुत्र कमलपत्र और मल्लिकाके समान नेत्र रखनेवाला क्षत्रदेव अपने सुन्दर अलंकृत घोड़ोंको आप चलाताहुआ गया ६ तोतेके परके समान हरितबर्णवाले दर्शनीय सामान रखनेवाले कांबोजदेशी घोड़ोंपर सवारहोकर नकुल भी आपके शूरबीरोंके सम्मुखगया ७ हेभरतर्षभ मेघके समान श्यामवर्ण क्रोधभरे घोड़े कठिन युद्धकरनेके बिचारसे अपने स्वामी उत्तमौजसको लेचले ८ इसीप्रकार उस तुमुल युद्धमें तीतर केसमान चिह्न रखनेवाले बायुके समान शीघ्रगामी घोड़े उसशस्त्रधारी सहदेवको लेचले ९ श्वेतरंग काली पूंछ महाभयकारी तीव्रतासे युक्त वायुके समान शीघ्रगामी घोड़े उस नरोत्तम राजा युधिष्ठिर को लेचले १० सुबर्ण निर्मित सामानोंसे अलंकृत बायुके सदृश शीघ्रगामी घोड़ों की सवारी से युधिष्ठिर के पास आकर वर्त्तमान हुये ११ रजायुधिष्ठिरके पीछे पांचाल देशका राजा द्रुपदहुआ वह बड़ा धनुषधारी महानिर्भय युद्ध में सब प्रकार के शब्दों को सहने वाले घोड़े सुबर्ण के छत्र और घोड़ों के सामानों से युक्त राजाओं में सब से रक्षित होकर सम्मुख वर्त्तमान हुआ १२ । १३ राजा विराट सब महारथियों समेत शीघ्रतासे उस के पीछे चला. सब केकय देशी शिखण्डी धृष्टकेतु १४ ये सब

अपनी २ सेनाओं से परिवेष्टित राजा विराट के पीछे २ चले उस शत्रुहन्ता राजा विराट के पाटलि पुष्प के समान वर्ण रखने वाले उत्तम घोड़े उस राजा विराट की सवारी में महा शोभायमान हुये हलदी के समान पीतरंग तीव्रगामी सुवर्ण माला धारी घोड़े १५ । १६ राजा विराट के पुत्र को शीघ्र ले चले पांचोंभाई केकय इन्द्र गोपक जीव अर्थात् वीर बहूटी के समान लालरंगवाले घोड़ों की सवारी से चले १७ जात रूप सुवर्ण के समान प्रकाशित रक्त ध्वजा और सुवर्ण की माला रखने वाले शूर वीर युद्ध में कुशल वह सब भाई १८ शस्त्रों से अलंकृत बादलों के समान बाणों की वर्षा करते दिखाई दिये हरित पत्र के समान रंगवाले और तुम्बुर गन्धर्व्व के दिये हुये दिव्य घोड़े उस बड़े तेजस्वी पांचाल देशी शिखण्डी को लेचले इसी प्रकार पांचालदेशों के महारथी बारह हजार थे १९ । २० उनमें छः हजारतो वे थे जो शिखण्डी के पीछे चले हे श्रेष्ठ नरोत्तम धृतराष्ट्र प्रतापी शिशुपाल के पुत्रको २१ कपूरी रंगके घोड़े बड़ीक्रीड़ा करते हुये लेचले फिर चंदेरी देशियों में श्रेष्ठ दुर्ज्जय रक्तवर्ण की पोशाक वाला धृष्टकेतु २२ नाना प्रकारके रंग रखनेवाले काम्बोज देशी घोड़ों की सवारी से सम्मुख वर्त्तमानहुआ २३ वे फिर केकयदेशी सुकुमार वृहच्छत्र को भी बड़े २ उत्तम घोड़े लेचले वे घोड़े भी पलाल धूसर वर्णके सिन्ध देशीथे चमेलीके समान नेत्र रखनेवाले कमलवर्ण अच्छे अलंकृत वाल्हीक देशी घोड़े २४ शिखण्डीके पुत्र शूरवीर क्षत्रने देवको लेचले और स्वर्णमयी सामानसे अलंकृत रेशमी वर्णवाले घोड़े २५ उस शत्रुविजयी सेनाविन्दु को युद्ध में लेचले और क्रौंचके समान रंगवाले शान्त रूप उत्तम घोड़े राजाकाशी के पुत्र युवा सुकुमार अतिभुव को युद्ध में लेचले हे राजा उसकुमार प्रतिविन्दुको श्वेतरंग कालीगर्द्दने और चित्तके समान शीघ्रगामी २६ । २७ सारथी के प्रसन्न करनेवाले घोड़े लेचले फिर जिस पांडवने अपूर्व्व दर्शनीय सुतसोम नामपुत्र को उत्पन्नकिया २८ उसको उर्द के फूलके रंगवाले घोड़े युद्धमें लेचले कौरवों के उदयेन्दुनाम पुरमें हजार चन्द्रमाके स्वरूप वाला उत्पन्नहुआ और जो कि वह सोमसंक्रंद के नक्षत्रमें उत्पन्नहुआ इसहेतु से उसपुत्रका नाम सोमहुआ २९ नकुलके पुत्र प्रशंसनीय सतानीक नामको शाल पुष्पके वर्णवाले और तरुण सूर्य्य के समान प्रकाशित घोड़े लेचले ३० सुवर्ण के समान योक्त्र मोरकी ग्रीव

के समान रंगवाले घोड़े उस द्रौपदीके पुत्र नरोत्तम श्रुतकर्माको युद्धमें लेचले ३१ नीलकण्ठके पक्षके समान रंगवाले उत्तम घोड़ों ने उस द्रौपदीके पुत्र शास्त्रज्ञ युद्धमें अर्जुनके समान श्रुतकीर्त्तिको सवारकिया ३२ जिसको युद्धमें श्री कृष्णजी और अर्जुनसे ड्योढ़ाकहाहै उसकुमार अभिमन्युको पिंगलवर्ण घोड़े युद्धमें लेचले ३३ जो अकेलाही धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे पृथक् होकर पांडवों के पास शरणागतहुआ उस युयुत्सूको बड़े शरीरवाले बड़े घोड़े लेचले ३४ और बड़े तुमुलयुद्ध में प्रसन्न और अच्छे अलंकृत पलाल काण्डके वर्णवाले घोड़ें वेगवान् वार्द्धकेशी को लेचले ३५ श्वेत वा श्याम चरण सारथी के आज्ञावर्त्ती घोड़े बड़े सामानवाले सुनहरी रथकेद्वारा उस कुमार सौचित्तिको लेचले ३६ स्वर्णमयी जीनपोश वाले रेशम शरीर सुवर्ण निर्मित मालाधारी शान्तरूप घोड़े श्रेणिमन्तको लेचले ३७ सुनहरी मालाधारी बड़े शूर स्वर्णमयी जीनपोशधारी अच्छे अलंकृत घोड़े उस प्रशंसनीय नरोत्तम काशीके राजाको लेचले ३८ उस अस्त्रज्ञ धनुर्वेदज्ञ ब्रह्मअस्त्र और वेदों में पूर्ण सत्यधृतिको लालघोड़े लेचले ३९ जिस पांचाल देशी पतिने अपना अंश अर्थात् भाग द्रोणाचार्य्य को नियत किया उस धृष्टद्युम्नको कपोत वर्णवाले घोड़े लेचले ४० सत्य धैर्य्यसे युक्त युद्ध में दुर्म्मद सौचित्ति श्रेणिमान बसुदान और बड़ासमर्थ काशी के राजाका पुत्र ये सब उसके पीछेचले ४१ तीव्रगामी सुवर्णमयी मालाधारी कांबोज देशी उत्तमघोड़े से संयुक्त रथोंपर सवार यमराज और कुबेरके समान वे सबलोग शत्रु की सेनाको डरातेहुये चले ४२ प्रभद्रक और कांबोजदेशी शस्त्रोंसे अलंकृत सुनहरीरथ और ध्वजाओं के रखनेवाले छःहजार शूरवीर नानाप्रकारके वर्णवाले घोड़ोंकी सवारी से ४३ धनुषखैंचनेवाले बाणोंके समूहोंसे शत्रुओं को कंपायमान करनेवाले वे सबलोग मृत्युके समान होकर धृष्टद्युम्नके पीछेचले ४४ लालरेशमके वर्ण उत्तम सुवर्ण के माला रखनेवाले उत्तमघोड़े चेकितानको लेचले ४५ सव्यसाची अर्जुनका मामा पुरुजित कुन्तभोज इंद्रधनुषके वर्ण बड़ेश्रेष्ठघोड़ों की सवारी के द्वारा आया ४६ अन्तरिक्ष वर्ण चित्रित तारागणों के समान घोड़े राजा रोचमान को युद्ध में लेचले ४७ नानाप्रकार के रंग रखनेवाले श्वेत चरण सुवर्ण के जाल आदि सामानों से अलंकृत उत्तम घोड़ें उस जरासन्धके पुत्र सहदेव को लेचले ४८ और जो घोड़े कि कमलनाल के समान वर्ण शी-

घ्रता में बाजपक्षी के समान महाअपूर्व उत्तम थे वह सुदासाको लेचले ४९ शश लोहितवर्ण श्वेतरेखा रखनेवाले घोड़े पांचालदेशी पति के पुत्र सिंहसेन को लेचले ५० जो नरोत्तम जन्मेजय नाम पांचालदेशियों का राजा प्रसिद्धहै उसके सरसोंके पुष्प वर्णवाले उत्तम घोड़े पीतवर्णथे ५१ माषवर्ण शीघ्रगामी स्वर्णमयी मालाधारी श्वेतपृष्ठ और चित्र मुखवाले बड़े घोड़े उस पांचालदेशी को शीघ्रता से लेचले ५२ शूर भद्रकशर कोडके समान किंजल्क वर्ण प्रकाशमान घोड़े दंडधारको लेचले ५३ रासभारुण वर्ण पृष्ठभाग में मूषकवर्ण सावधान अपनी चाल चलते हुये घोड़े व्याघ्रदत्तको लेचले ५४ कालक प्रकारवाले अपूर्व्व मालाओं से अलंकृत घोड़े पांचालदेशी नरोत्तम सुधर्मा को लेचले इन्द्र बज्रके समान स्पर्शवाले बीरबहूटीके वर्ण शरीरों में नाना प्रकारके चित्रों से चित्रित अद्भुत घोड़े चित्रायुधको लेचले ५५।५६ चक्रवाकके समान उदर रखनेवाले स्वर्णमयी मालाधारी घोड़े राजा कोशलके पुत्र सुक्षत्रको लेचले ५७ हरताल के वर्ण बड़े शिक्षित सुनहरी मालाधारी ऊंचे शुभ घोड़े युद्ध में सच्चे धैर्य्यवाले क्षेमीको लेचले ५८ एकही श्वेत रंगवाली ध्वजा कवच धनुष और घोड़ोंसे युक्त राजा शुक्ल लौटा ५९ शशांक वर्ण समुद्रदेशी घोड़े समुद्रसेन के पुत्र चन्द्रसेन जोकि रुद्रजीके समान तेजस्वी था उसको लेचले ६० नीले कमलके वर्ण स्वर्णालंकृत अपूर्व्व मालाधारी घोड़े युद्धमें शिवी के पुत्र चैत्ररथ को लेचले ६१ गुलावके पुष्प के समान रंगवाले श्वेत रक्तपंक्ति रखनेवाले घोड़े उस युद्धमें दुर्मद रथसेनको लेचले ६२ जिस राजा को सब मनुष्यों से उत्तम और शूरवीर कहते हैं उस पटच्चरथा को तोतेके समान वर्णवाले घोड़े लेचले ६३ और किंशुक के पुष्प के समान वर्ण रखने वाले उत्तम घोड़े उस चित्रायुध को लेचले जो कि अपूर्व्व माला कवच शस्त्र और ध्वजा का धारण करनेवाला था ६४ राजानील एक नीले रंगवाली ध्वजा कवच धनुष रथ और घोड़ों से युक्त सम्मुख आकर वर्त्तमानहुआ ६५ नाना प्रकार के रूपवाले रत्नोंसे चिह्नित कवच धनुष अपूर्व्व घोड़े और ध्वजा पताकाओं से युक्त राजा चित्र सम्मुख आया ६६ जो कमल वर्णके समान रंगवाले उत्तम घोड़े हैं वह रोचिमानके पुत्र हेमवर्णको लेचले ६७ युद्धकर्त्ता शुभरूप शर दंड अनुदंड श्वेतांड और कुक्कुटांड वर्णवाले घोड़े दंडकेतुको लेचले ६८ हे राजा युद्धमें केशवजीके हाथ से पिताके मरने पर पांड्य

देशियों के द्वार खंडितहोने और बांधव लोगों के भाग जाने पर ६६ भीष्म द्रोणाचार्य्य राम और कृपाचर्य्य से अस्त्रोंको पाकर और अस्त्रोंके द्वारा रुक्म कर्ण अर्जुन और श्रीकृष्णजी के साथ समानता को पाकर ७० द्वारकाके नष्ट करने वा सब पृथ्वी के विजय करनेकी अभिलाषाकरी इसके अनन्तर बुद्धिमान् मित्रोंकी ओर से उसी की भलाई के निमित्त निषेध किया गया ७१ जो राजा शत्रुता के हठको त्यागकर अपने राज्यमें शासन करताहै वह पराक्रमी सागर ध्वजनाम राजा पांड्य चन्द्ररश्मिके समान वर्णवाले ७२ वैडूर्य्य मणिके जालोंसे ढकेहुये घोड़ोंके द्वारा बीर्य द्रविणको धरेहुये अपने दिव्य धनुषको टंकारताहुआ द्रोणाचार्यके सम्मुखगया ७३ आटरूशाक बर्णवाले एकलाख चालीसहजारघोड़े राजा पांड्यके पीछे चलनेवाले उत्तमरथोंको लेचले ७४ नानाप्रकारके रूप और मुखोंकी आकृति रखनेवाले घोड़े उस शूरबीर घटोत्कच जिसकी ध्वजामें रथके चक्रका चिह्नथा उसको लेचले ७५ जो अकेला मिलेहुये भरतबंशियोंके मतोंको त्यागकर अपने मनके सब मनोरथों से रहित होकर प्रीति से युधिष्ठिर में आकर संयुक्तहुआ ७६ उस रक्तनेत्र महाबाहु सुवर्णके रथमें नियत उस बृहंतको चक्ररूप ध्वजाधारी बड़ेपराक्रमी और उन्नत शरीरवाले घोड़े लेचले ७७ सुवर्ण वर्ण सब घोड़ोंमें श्रेष्ठघोड़े सबओरसे और मुख्यकर पृष्ठभागसे उस धर्मज्ञराजाओंमें श्रेष्ठ सेनाके मध्यवर्ती युधिष्ठिर के साथचले ७८ देवता रूप बहुत से प्रभद्रक कुमार नानाप्रकार के शरीरवाले अन्य २ उत्तम घोड़ोंकी सवारी से युद्ध के निमित्तलौटे ७९ हे राजेन्द्र वह स्वर्णमयी ध्वजावाले भीमसेनके साथ उपाय करनेवाले ऐसे दिखाईदिये जैसे कि इन्द्रके साथमें देवता होते हैं ८० धृष्टद्युम्न ने उन सबआये हुओं को अत्यन्त अंगीकारकिया और भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजी सबसेनाओंको उल्लंघकर शोभायमानहुये ८१ हे महाराज उनकी ध्वजा जोकि काले मृगचर्म से संयुक्त थी और उनके शुभदर्शनीय सुनहरे कुंडलभी अत्यन्त शोभित होरहे थे ८२ मैंने भीमसेनकी उस ध्वजाको जिसमें कि वैडूर्य्य मणिकी आंख रखने वाला महाप्रकाशित शोभायुक्त बड़ासिंह था अच्छे प्रकारसे देखा और उसी में ग्रहों के समूहों से संयुक्त चन्द्रमाभी प्रकाशमान होरहा था ८३ मैंने बड़े तेजस्वी कौरवराज पांडव युधिष्ठिरकी सुनहरी ध्वजाको भी देखा कि उस में भी नवग्रह समूहों समेत चन्द्रमा देदीप्यमान था ८४ यहां नन्द उपनन्दनाम दो बड़े मृदंग

जो कि सुन्दर शब्दवाले और आनन्दके बढ़ानेवाले थे वह यन्त्रद्वारा बजाये गये ८५ हमने नकुल की बहुतबड़ीध्वजा जोकि शरभनाम पशुका चिह्न रखनेवाली सुवर्ण पृष्ठ रथमें भयानकरूप नियतथी उसकोभी देखा ८६ सहदेवकी ध्वजा में सुवर्ण निर्मित हंसघंटा और पताका रखनेवाला महादुर्जय शत्रुओंके दुःख और शोकका बढ़ानेवालाभी देखा ८७ द्रौपदीके पांचोंपुत्रों की ध्वजा धर्म बायु इन्द्र और महात्मा अश्विनीकुमारकी मूर्तियोंसे शोभायमानथी ८८ हे राजा अभिमन्यु कुमारके रथमें तपायेहुये सुवर्ण के समान अतिउज्ज्वल और श्रेष्ठ ऐसी ध्वजाथी जिसमें सुनहरी सारंगनाम पक्षीथा ८९ हे राजेन्द्र घटोत्कचकी ध्वजामें गिद्ध शोभायमानथा और उसके घोड़े ऐसे इच्छाके अनुसार चलनेवाले जैसे कि पूर्व्वसमयमें रावण के घोड़े थे ९० हे राजा धर्मराज युधिष्ठिरके पास माहेन्द्र नाम दिव्य धनुष और भीमसेन के पास वायव्यनाम उत्तम दिव्यधनुष था ९१ ब्रह्माजी ने तीनोंलोकोंकी रक्षाकेनिमित्त जो धनुष उत्पन्न किया वह दिव्य और रूपान्तर दशा से रहित धनुष अर्जुन के लिये व शार्ङ्गनाम विष्णुधनुष नकुल के लिये व अश्विनीकुमार का धनुष सहदेवकेलिये और रावणका दिव्य और भयका उत्पन्न करनेवाला धनुष घटोत्कचके निमित्त आकर वर्त्तमान था ९२।९३ हे भरतवंशी द्रौपदी के पांचोंपुत्रोंके धनुष रूपरत्न यह थे रुद्रजीका धनुष अग्नि का धनुष कुवेरका धनुष यमराज का धनुष और शिवजी का धनुष ९४ बलदेवजी ने जिस धनुषों में श्रेष्ठ महाउत्तम रुद्रधनुषको पाया और प्रसन्न होकर बलदेवजी ने वह धनुष महात्मा अभिमन्युके निमित्तदिया ९५ शूरलोगोंकी यह वर्णनकीहुई और अन्य २ सुवर्ण से अलंकृत ध्वजा शत्रुओं के शोभा की वह बढ़ानेवाली वहां देखने में आई ९६ हे महाराज द्रोणाचार्य्य की वह उत्तमलोगोंकीसेना ध्वजाओं से ऐसे व्याप्तहुई जैसे कि वस्त्रपर खैंचाहुआ चित्र शोभित होताहै ९७ तब युद्ध में द्रोणाचार्य्य के सम्मुख दौड़नेवाले वीरों के नाम गोत्र ऐसे सुनेगये जैसे कि स्वयंवरमें सुनेजाते हैं ९८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रयोविंशतितमोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्रबोले हे संजय यह देवताओं की भी सेनाको पीड़ामान करने वाले

राजा लोग जिनमें मुख्य भीमसेनहै युद्धमें लौटे १ निश्चय करके यह पुरुष प्रारब्धसे अच्छीरीतिसे संयुक्त होता है उसीमें पृथक् २ प्रकारके राज्य धनआदिक अर्थ दिखाई देते हैं २ जटा और मृगचर्मधारी होकर युधिष्ठिर ने बहुत कालतक बनमें निवास किया और लोकों से अज्ञात होनेपर क्रीड़ा करनेवाला हुआ ३ उसने युद्धमें बड़ी सेनाको प्रवृत्त किया और मेरे पुत्रकी भी सेनाइकट्ठीहुई दैव संयोग से दूसरी बात क्या है ४ निश्चय करके प्रारब्ध से संयुक्त मनुष्य चेष्टा करता है और उससे वह उस प्रकार से खैंचा जाता है जिस प्रकार को कि वह आप नहीं चाहता है ५ युधिष्ठिर द्यूतके दुःखको पाकर दुःखित होगया था और फिर उसने प्रारब्ध से ही सहायकों को पाया ६ अब मुझको केकय देशी मिले और जो काशीदेशी कोशलदेशी चंदेरी और बंगदेशी हैं वह मेरे पास आकर वर्त्तमान हुये ७ हे तात जैसे यह संपूर्ण पृथ्वी मेरी है उस प्रकार पांडव युधिष्ठिर की नहीं है हे तात पूर्व्व समयमें निर्बुद्धी दुर्योधन ने मुझसे कहाथा ८ कि उस की सेनाके समूहोंमें अच्छे प्रकार से रक्षित हुये द्रोणाचार्य्य जी युद्धभूमि में धृष्टद्युम्न के हाथसे मारेगये इस हेतुसे मेरी बुद्धि में प्रारब्ध से अन्य और क्या बातहै ९ सदैव युद्धको अच्छा माननेवाले सब अस्त्रोंके पारगामी महाबाहु द्रोणाचार्य्य को राजाओं के मध्य में किसरीतिसे मृत्युने प्राप्त किया १० बड़ी आपत्तियों के भोगनेवाले मैंने बड़ेभारी मोहको पाया मैं भीष्म और द्रोणाचार्य्य को मृतक सुनकर जीवते रहनेको साहस नहीं करसक्ताहूं ११ हे तात मुझको बेटेका लोभी देखकर जो २ बिदुरजीने कहाथा हे सूत वह सब मुझ समेत दुर्योधन ने पाया १२ जो दुर्योधन को त्याग करने से मेरी निर्द्दयता न समझी जाय तो पुत्रोंको बाकीरक्खूं अर्थात् सब न मारेजायँ १३ जो मनुष्य धर्मको त्याग करके धनादिक अर्थ को उत्तम माननेवाला होताहै वह इस लोकसे भी पतित होताहै और नीचभावको पाता है १४ हे संजय अबमैं छत्रादिक के मर्द्दित होनेपर इस उत्साहसे रहित देशके भी बाकी रहने को नहीं देखताहूं १५ नाश होनेवाले दोनों राजाओं का शेष कैसे होय हम जिन शान्त क्षमावान् पुरुषों के पास सदैव अपना निर्वाह करते हैं १६ हे संजय इस बातको प्रकट करके मुझसे कहो जिस प्रकारसे कि युद्ध जारी हुआ कौन २ लड़े और कौन २ युद्धसे हटगये और कौनसे नीच भयसे भागे १७ उस अर्जुनको भी मुझ

से कहौ कि जिस रथियोंमें श्रेष्ठ पुरुषोत्तम ने जो २ कर्म किये और मेरेभतीजे भीमसेन से भी मुझको बड़ाभय है १८ हे संजय पांडवों के शूरवीरों के लौटने पर मेरी शेष बाकी बचीहुई सेनाकी अत्यन्त भयकारी सम्मुखता कैसी रीतिसे हुई १९ हे तात पांडवोंके लौटने पर तुम्हारा चित्त कैसाहुआ और मेरेपुत्रों स-मेत शूरवीरों में जो बड़े शूर हैं उनमें से किन्होंने किनलोगों को रोका २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि पांडवों के लौटने पर जैसे कि बादलों से सूर्य्य गुप्त होता है उसी प्रकार द्रोणाचार्य्य को उनलोगोंसे. ढकाहुआ देखकर बड़ा भयकारी युद्ध हुआ १ उनसे उठीहुई कठिन धूलने आपकी सेनाको ढकादिया इसके पीछे ह-मने दृष्टि के मार्ग बन्द होजानेपर द्रोणाचार्य्य को मृतक माना २ उन शूरवीर बड़े धनुषधारी निर्दय कर्म करने के अभिलाषी लोगोंको देखकर दुर्योधनने शी-घ्रही अपनी सेनाको चलायमान किया ३ और सब से यह वचन कहा कि हे राजाओ पराक्रम बुद्धि बल सामर्थ्य और समयके अनुसार पांडवोंकी सेनाको हटाओ ४ इसके पीछे आपका पुत्र दुर्मर्षण समीपसे भीमसेन को देखकर बाणों को फैलाता उसके मारनेकी अभिलाषा करताहुआ सम्मुखगया ५ युद्धमें मृत्युके समान क्रोधयुक्त ने उसको अपने बाणोंसे ढकदिया और भीमसेन ने भी उस को बाणोंसे महापीड़ित किया उससमय बड़ाकठिन युद्धहुआ ६ वह ईश्वरकी आज्ञासे बड़ेज्ञानी शूरवीर प्रहार करनेवाले राज्यको और मरनेके भयको त्यागकर के युद्धमें शत्रुओंके सम्मुख नियतहुये ७ हेराजा कृतवर्माने युद्धको शोभादेने वाले द्रोणाचार्य्य को चाहनेवाले आतेहुये शूरसात्यकीको रोका ८ फिर क्रोध युक्त सात्यकी ने उस क्रोधयुक्त कृतवर्मा को बाणोंके समूहोंसे रोका और कृतव-र्माने सात्यकिको ऐसेरोका जिस प्रकार मतवालाहाथी मतवाले हाथीको रोकता है ९ फिर भयकारी धनुषवाले बड़े उपायमें प्रवृत्त सिंधके राजाजयद्रथने बड़े धनु-षधारी आतेहुये क्षत्रधर्माको तीक्ष्ण धारवाले बाणोंके द्वारा द्रोणाचार्य्यकी ओर से रोका १० क्षत्रधर्माने सिन्धके राजाकीध्वजा और धनुषको काटकर बड़े क्रोध पूर्वक दशनाराचों से उसके सब मर्मस्थलोंको घायल किया ११ इसकेपीछे हस्तलाघवी

राजा सिन्धने दूसरे धनुषको लेकर युद्धमें लोहमयी बाणोंसे छत्रधर्माको घायल किया १२ पांडवके निमित्त उपाय करनेवाले भाई शूरबीर महारथी युयुत्सूको उपायकरनेवाले सुबाहुने द्रोणाचार्यकी ओरसे रोका युयुत्सूने बाणचलानेवाले सुबाहु की दोनोंभुजा जो कि सुन्दर धनुष बाणकी रखनेवाली और परिघके समानथीं उनको श्वेत और पीत क्षुरनाम बाणोंसे काटा १३।१४ और मद्रके राजा शल्यने धर्मात्मा पांडवों में श्रेष्ठ राजा युधिष्ठिरको ऐसी अच्छीरीति से रोका जैसे कि मर्य्यादा वा किनारा बड़े व्याकुल समुद्र को रोकते हैं १५ धमराज ने मर्मों के भेदी अनेक बाणोंसे उसको ढकदिया फिर राजा मद्र चौंसठ बाणोंसे उसको बेधकर बड़े शब्दसे गर्जा १६ तब युधिष्ठिरने क्षुरनाम दोबाणोंसे उस गर्जनेवाले की ध्वजा और धनुषकोकाटा और काटतेही सबमनुष्यपुकारे १७ और इसीप्रकार सेनासमेत राजा बाह्लीकने भी आतेहुये राजा द्रुपदको सेना समेत बाणों सेरोका १८ उन दोनों वृद्धोंका युद्ध सेनाओं समेत ऐसा बड़ाभयकारी हुआ जैसे कि बड़े २ समूहोंको आदिपति दो हाथियोंका युद्धहोताहै १९ और अवन्तिदेशों के राजा बिन्द अनुबिन्दने अपनी सेनाओं समेत मत्स्य देशके राजा विराटको सेनासमेत ऐसे ग्रासकिया जैसे कि पूर्व समयमें इन्द्र और अग्नि दोनों ने राजाबलि को ग्रासकिया था २० केकयों के साथ मत्स्यदेशियों का वह युद्ध महाभयानक देवासुर युद्ध के समान हुआ जिसमें कि हाथी घोड़े और रथ भयभीतथे २१ उस राजा भूतकर्माने बाणों के जालों को छोड़नेवाले और द्रोणाचार्य्यकी ओर को जातेहुये नकुलके पुत्र सतानीक को रोका २२ इसके पीछे नकुलके पुत्रने युद्धमें जाकर अत्यन्त तीव्र धारवाले तीनवाणोंसे भूतकर्मा को भुजा और शिरसे रहित किया २३ फिर पराक्रमी बाण समूहोंके रखनेवाले द्रोणाचार्य्य के सम्मुखजाते पराक्रमी शूरबीर सुतसोम को विविंशतिने रोका २४ तब वह अत्यन्त क्रोधभरा सुतसोम उस पिताके भाई विविंशति को सीधे चलनेवाले बाणों से घायल करके सम्मुख बर्त्तमान नहीं रहा २५ इसके पीछे भीमरथने शीघ्रगामी तीक्ष्णलोहमयी छःबाणों से शाल्वको घोड़े और सारथीसमेत यमपुर को भेजा २६ हे महाराज चित्रसेनने मोरके समान वर्णवाले घोड़ों की सवारी से आतेहुये आपकेपुत्र श्रुतवर्माको रोका २७ उन आपके दोनों निर्भय और परस्पर मारने के अभिलाषी पौत्रों ने पिताओं के अभीष्ट सिद्धों के लिये

वड़ा भारी युद्धकिया २८ पिताकी प्रतिष्ठा करतेहुये अश्वत्थामाने युद्धमें सम्मुख वर्त्तमान उस प्रतिविन्धको वाणों के द्वारा अच्छेप्रकारसे रोका २९ फिर प्रतिविन्धने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से उस क्रोधयुक्त सिंह लांगूल के चिह्न रखनेवाले और अपने पिताके हेतु युद्धमें नियत अश्वत्थामाको घायलकिया ३० हे भरत वंशी नरोत्तम जैसे बीजबोनेके समय बीजोंको बोतेहैं उसीप्रकार वाणोंको फैलाते हुये द्रौपदीके पुत्रोंने अश्वत्थामाको वाणोंकी वर्षासे आच्छादित किया ३१ अर्जुन और द्रौपदी के महारथीपुत्र श्रुतकीर्त्ति को जोकि द्रोणाचार्य्य की ओर जाताथा उसको दुश्शासन के पुत्रने रोंका ३२ फिर श्रीकृष्णजी के समान श्रुतकीर्त्ति अत्यन्त तीक्ष्णधारवाले तीनभल्लोंसे उसके धनुष ध्वजा और सारथीको काटकर द्रोणाचार्य्य के पासगया ३३ हे राजा जो दोनों सेनाओं के मध्यमें वड़ाशूर गिना जाताथा उस पटच्चरहन्ताको लक्ष्मणने रोंका ३४ हे भरतबंशी वह लक्ष्मणके धनुष और ध्वजाको काटकर और उसीके ऊपर वाणजालों को छोड़ता अत्यन्त शोभायमानहुआ ३५ फिर वड़ेज्ञानी और तरुण अवस्थावाले बिकर्णने राजा द्रुपद के पुत्र युवा शूरवीर युद्धमें आतेहुये शिखण्डी को रोंका ३६ इसके अनन्तर राजा द्रुपदके पुत्रने उसको वाणों के जालसे ढकदिया उससमय आपका पराक्रमी पुत्र उस वाणों के जाल को काटकर महाशोभायमान हुआ ३७ अंगदने द्रोणाचार्य्य के सम्मुख जातेहुये उत्तमौजस को बाणों के समूहों से रोंका ३८ उन दोनों पुरुषोत्तमों का वह वड़ा भारी युद्धहुआ और सब सेनाके मनुष्यों का युद्धभी उनदोनोंकी प्रसन्नताका वढ़ानेवाला हुआ ३९।४० फिर वड़े धनुषधारी पराक्रमी दुर्मुख ने द्रोणाचार्य्य के सम्मुख जातेहुये वीरपुरजितको वत्सदन्तनाम वाणोंसे रोंका ४१ फिर उसने दुर्मुख को नाराच से दोनों भृकुटियों के मध्य में घायल किया उसका वह मुख सनाल कमलके समान शोभायमान हुआ ४२ फिर कर्णने लाल ध्वजा रखनेवाले द्रोणाचार्य्य के सम्मुख जातेहुये केकयदेशी पांचो भाइयों को वाणोंकी वर्षासे रोंका ४३ उन अत्यन्त पीड़ामानों ने भी उसको वाणोंकी वृष्टिसे ढकदिया उसने उनको फिर वाणोंकी वर्षासे वारंवार ऐसे ढकदिया कि घोड़े सारथी और ध्वजा समेत दोनोंबाणोंसे ढकेहुये न वह पांचों दिखाईपड़े और न कर्ण दिखाईपड़े ४४ आपके दुर्ज्जय जय और बिजय तीनों पुत्रोंने नील काशीके राजा और जयत्सेन इन तीनों को रोंका ४५ वह युद्धभी

महा भयकारी और तमाशा देखनेवालों का ऐसा महा आनन्दकारी हुआ जैसे कि सिंह और ब्याघ्रोंका युद्ध उत्तम रीछ और भैंसाओं के साथ होताहै ४६ क्षेत्रधूर्त्त और बृहन्त इन दोनों भाइयों ने द्रोणाचार्य्य के सम्मुख जाते हुये सात्यकी यादवको तीव्र बाणोंसे घायल किया ४७ उन दोनोंका और उसका वह युद्ध ऐसा अत्यन्त अपूर्व्व हुआ जैसे कि बनके मध्यमें सिंह का युद्ध दो मतवाले उत्तम हाथियोंसे होताहै ४८ उसी प्रकार क्रोध युक्त बाणों को छोड़ते चन्देरी के राजाने युद्ध को श्रेष्ठ माननेवाले अकेले राजा अम्बष्ट को द्रोणाचार्य्य की ओरसे रोंका ४९ इसके पीछे अम्बष्ट ने हाड़ोंकी भेदन करनेवाली शलाकासे उसको ऐसा घायलकिया कि वह बाण समेत धनुष को छोड़कर पृथ्वी पर गिरपड़ा ५० शारद्धत महासाहसी कृपाचार्य्य ने क्षुद्रक नाम बाणों से यादव वार्द्धक्षेमी को रोंका ५१ जिन्हों ने उन अपूर्व्व युद्ध करनेवाले कृपाचार्य्य और वार्द्धक्षेमी को लड़ते हुये देखा उन युद्ध में चित्त लगानेवालों ने दूसरे कर्मको नहीं जाना ५२ और द्रोणाचार्य के यश को बढ़ाते सोमदत्तने चैतन्य होकर आते हुये राजा मणिमन्त को रोंका ५३ फिर उस शीघ्रता करनेवाले सोमदत्त ने उसको धनुष ध्वजा पताका सारथी और छत्र समेत रथसे गिराया ५४ इसके पीछे शत्रुओं के मारनेवाले ध्वजामें यूप चिह्न रखनेवाले सोमदत्त ने शीघ्रही रथसे कूदकर घोड़े सारथी ध्वजा और रथ समेत उस को उत्तम खड्गसे काटा ५५ हे राजा दूसरे रथमें सवार होकर दूसरे धनुषको लियेहुये आपही घोड़ोंके हांकनेवाले ने पांडवीय सेनाको छिन्नभिन्न करदिया ५६ असुरोंकेऊपर इन्द्रके समान आते हुये दुर्जय राजा पांड्यको समर्थ वृषसेन ने बाणों से रोंका ५७ गदा, परिघ, खड्ग, पट्टिश, दुधारेखड्ग, भुशुंडी, प्रास, तोमर शायक और जो २ युद्धभूमिके मल्लयुद्धहैं ५८ मूसल, मुद्गर, चक्र, भिण्डपाल परश्वध, धूली, वायु, अग्नि, जल, भस्म, लोष्ट, तृण और वृक्षोंसे ५९ पीड़ादेता और चलायमान करता तोड़ता मारता भगाता गिराता और सेनाको डराता द्रोणाचार्य्य को चाहता घटोत्कच सम्मुख आया ६० फिर क्रोध युक्त अलंबुष राक्षसने नाना प्रकारके शस्त्रोंसे और बहुत प्रकारके युद्ध रीतियोंसे उस राक्षसको अच्छी तरह घायल किया ६१ उनदोनों राक्षसोत्तमों का वह युद्ध उस प्रकार का हुआ जैसा कि पूर्व्व समय में शम्बर और देवराज इन्द्रका हुआथा ६२

आपका कल्याण होय इसरीतिसे आपके और उन्होंके कठिन युद्धमें हजारों रथ हाथी घोड़े और पदातियोंके द्वन्द्वनाम युद्धहुये ६३ इस प्रकार का युद्ध मैंने कभी सुना भी नहीं था जैसे कि द्रोणाचार्य्य की वर्त्तमानता अथवा अवर्त्तमानता में शूर वीरोंने किया ६४ हे समर्थ यह युद्ध बड़ा भयकारी अपूर्व और भयानकरूप वाला हुआ इसप्रकारके फैलेहुये अनेक युद्धदेखनेमें आये ६५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचविंशतितमोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले इसप्रकार उनके लौटने और भागियोंके सम्मुख जानेपर वेगवान् पांडव और मेरेपुत्र किस प्रकार से युद्ध में प्रवृत्त हुये १ हे संजय अर्जुन ने भी संसप्तकों की सेना में क्या २ कर्म किये अथवा संसप्तकों ने अर्जुन से युद्ध करने में जो २ कर्म किये उन सबको मुझसे कहौ २ संजय बोले कि उस प्रकार से उन्हों के लौटने और भागियोंके सम्मुख जाने पर आपका पुत्र हाथियों की सेनासे युक्त आय भीमसेन के सम्मुख दौड़ा ३ जैसे कि हाथी हाथीको और गोवृष गोवृष को युद्धमें बुलाता है उसी प्रकार आप राजासे बुलायागया वह भीमसेन हाथियों की सेनाके सम्मुख गया ४ हे श्रेष्ठ उस युद्धमें सावधान और भुजबल से युक्त पराक्रमी भीमसेनने थोड़ेही समयमें हाथियों की सेनाको छिन्न भिन्न करदिया ५ वह पर्व्वताकार हाथी सब ओरसे मदको छोड़ते हुये उस भीमसेनके नाराचों से मुख फेर फेर कर मदों से रहित होगये ६ जैसे कि अत्यन्त कठोर और प्रबल वायु बादलके जालोंको तिर्र बिर्र करदेता है उसी प्रकार वायुके पुत्रने भी उन सब सेनाओं को छिन्न भिन्न करदिया ७ वह भीमसेन उन हाथियोंपर बाणोंको छोड़ता ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि उदयमान सूर्य्य सब संसार पर अपनी किरणों को छोड़ता हुआ शोभित होताहै ८ भीमसेन के बाणोंसे घायल और अच्छे प्रकार से छिरेहुये वह हाथी ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि आकाशमें सूर्य्य की किरणोंसे नानाप्रकारके बादल शोभा पानेवाले होतेहैं ९ क्रोधयुक्त दुर्योधन ने इस प्रकार हाथियों के नाशकरनेवाले वायुपुत्र भीमसेन को देख और सम्मुख जाकर उसको तीक्ष्ण बाणों से घायल किया १० इसके अनन्तर रक्तनेत्र और राजा दुर्योधनके नाश करने की इच्छा

करते भीमसेन ने क्षण भरही में अपने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से राजाको घायल किया ११ बाणोंसे छिदे हुये शरीर महाक्रोधित मन्द मुसकानके साथ बड़े आश्चर्य को करते उस दुर्योधन ने सूर्य्य की किरणके समान प्रकाशित नाराचों से पांडव भीमसेन को घायल किया १२ फिर पांडव ने दो भल्लों से उस के रत्न जटित ध्वजा में वर्त्तमान मणियोंसे जटित नागको और धनुषको शीघ्रही काटा १३ हेश्रेष्ठ हाथी पर नियत राजा अंग दुर्योधन को भीमसेन से पीड़ामान देखकर उस के व्याकुल करने की इच्छासे उसके सम्मुख गया १४ भीमसेन ने उस बादलके समान शब्द करते हुये गजेन्द्रको नाराचों से मस्तकके मध्य में अत्यन्त पीड़ामान किया १५ वह बाण उसके शरीर को वेधकर पृथ्वी में प्रवेश करगया उसके पीछे वह हाथी ऐसे पृथ्वी पर गिरपड़ा जैसे कि वज्रसे ताड़ित पर्व्वत पृथ्वीपर गिर पड़ता है १६ फिर शीघ्रता करनेवाले भीमसेन ने भल्लसे उस हाथी से रहित नीचेको गिराना चाहते हुये म्लेच्छ का शिर काटा १७ उस वीर के गिरने पर वह सेना जिसके कि घोड़े हाथी और रथ महा व्याकुल थे पदातियोंको मर्द्दनकरते हुये भागे १८ उन सब सेनाओं के पराजय होने और चारों ओरके भागने पर राजा प्राग्ज्योतिष हाथी की सवारी से भीमसेन के सम्मुख आया १९ इन्द्रने जिस हाथीकी सवारी से दैत्य और दानवों को विजय किया उस घराने या जातिके हाथी की सवारी से भीमसेन के सम्मुख गया २० वह हाथियों में बड़ा श्रेष्ठ दोनों पैर और लिपटी हुई सूंड़से अकस्मात् भीमसेन के सम्मुख गया २१ उस बड़ी आंखवाले क्रोध युक्त भीमसेन के मथन करने के अभिलाषी हाथीने भीमसेन के रथको घोड़ों समेत चूर्णकिया २२ इसके पीछे पांवोंसे दौड़ता हुआ भीमसेन उसके अंगोंमें चिपट गया और जोकि भीमसेन अंजलिकावेध नाम पेंचको जानता था इसी से नहीं हटा २३ अंगोंके मध्य में वर्त्तमान होकर बारंबार हाथों से घायल करतेहुये भीमसेन ने उस मारनेके अभिलाषी अति दुर्ज्जय हाथी को प्यार किया २४ तब वह हाथी शीघ्रही कुम्हार के चक्रके समान घूमने लगा दशहजार हाथी के समान पराक्रमी श्रीमान् भीमसेन उसको चलायमान करनेवाला हुआ २५ इस के पीछे भीमसेन भी अंगोंसे निकलकर उस सुप्रतीक नामहाथी के आगे हुआ उसने भीमसेनको सूंड़से झुकाकर अपनी जंघाओंसे घायलकिया २६ उस हाथीने उसको गर्दनमें

लपेटकर मारनाचाहा तब भीमसेन ने घुमावदेकर सूंड़की लपेटनको छुड़ादिया २७ फिर भीमसेन हाथीके अंगों में प्रवेशकरगया जबतक अपनी सेनामें नियत हाथीके सम्मुख आयेहुये हाथीको देखा २८ तबभीमसेन हाथी के अंगों से निकलकर बड़ी तीव्रतासे दूर चलागया उसकेपीछे सबसेनाका बड़ा शब्दहुआ २९ कि बड़े खेदकी बात है कि भीमसेन हाथीसे मारागया हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र उस हाथीसे पांडवों की सेना भयभीतहोगई ३० हे राजा सबशूरवीर अकस्मात् उस स्थानपर आगये जहांपर कि भीमसेन नियत था उसके पीछेराजा युधिष्ठिर ने भीमसेनको मृतकजानकर ३१ धृष्टद्युम्न समेत भगदत्तको सबओर से घेरलिया उन शत्रुसंतापी रथियों में श्रेष्ठों ने उसरथकोघेरकरके ३२ हजारों तीक्ष्ण बाणों से ढकदिया पृषत्कनाम बाणों के आघातको अंकुश से निष्फल करते हुये ३३ उस पर्व्वतीय राजाने हाथी से पांडवों और पांचालों को छिन्न भिन्न करदिया हे राजा युद्ध में उसप्रकार के वृद्धभगदत्त के उसअपूर्व ३४ कर्म्मको हाथी के द्वारादेखा इसकेपीछे दशार्ण देशियोंका राजा भगदत्त के सम्मुखगया ३५ तिरछे चलनेवाले मतवाले शीघ्रगामी हाथी द्वार के उनभयानक रूपवाले दोनों हाथियो का ऐसा बड़ाभारी युद्धहुआ ३६ जिस प्रकार से कि पूर्व्व समय में पक्षधारी और वृक्षों से संयुक्त दोपर्व्वतों के हुये राजाप्राग्ज्योतिपके हाथीने लौटकर और दूरजाकर राजादशार्ण के हाथीको पार्श्व में घायल करके गिरायाथा ३७ फिर भगदत्त ने सूर्य्य की किरणके समान प्रकाशित सात तोमरों से ३८ उस हाथीपर सवार प्रचलित आसनवाले शत्रुकोमारा तब युधिष्ठिरने राजा भगदत्तको बहुत प्रकारसे घायलकरके ३९ रथकी बड़ीभारी सेनासे चारों ओरको घेरलिया वह हाथीपर चढ़ाहुआ भगदत्त सब ओर को रथियों से संयुक्त होकर ऐसा शोभायमानहुआ ४० जैसे कि पर्वत में वन के अन्तर्गतवर्ती अग्निका पुंजहोताहै उसहाथी ने उनबाणों की वर्षाओंको फैलाते और भयानक धनुषधारी रथियों के मंडल जो कि सब ओर से चिपटाथा उससे सम्मुखताकरी इसके पीछे राजाप्राग्ज्योतिप ने बड़े हाथीको रोंककर ४१ ।- ४२ अकस्मात् युयुधान के रथपर भेजा फिर उस बड़े हाथी ने शिनीके पौत्रके रथको पकड़कर ४३ बड़ी शीघ्रता से फेंकदिया और युयुधान रथसे कूदगया फिर सिन्धदेशी सारथी बड़े घोड़ों को अन्तर्गति से खड़ा करके ४४ सात्यकी को पाकर नियतहुआ और

वह अपने रथपरगया इसके पीछे वह हाथी मौक़ेको पाकर शीघ्रही रथमंडल से निकलगया ४५ और फिर सबराजाओंको व्याकुलकिया उसशीघ्रगामी हाथी से भयभीतहुये उननरोत्तमों ने ४६ युद्धमें उसअकेले हाथीको सैकड़ों हाथियों के समान माना व पांडव हाथीपर चढ़ेहुये भगदत्तसे ऐसे पृथक् २ होतेथे ४७ जैसे कि ऐरावत हाथीपर चढ़ेहुये देवराज इन्द्रसे दानवलोग पृथक् होतेहैं इसके अनन्तर इधर उधरसे बोलतेहुये उन पांचालों के भयकारी शब्द ४८ और हाथी घोड़ों के बहुत बड़े शब्द उत्पन्नहुये युद्धमें भगदत्तसे पांडवों के छिन्न भिन्नहोने पर ४९ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन राजा प्राग्ज्योतिषके सम्मुखगया उसके सम्मुखजातेहुये भीमसेनके घोड़ोंको हाथीने सूंड़से निकालेहुये जलसे ५०तराबोर करके भयभीत किया फिर वह घोड़े भीमसेन को दूरलेगये तब आकृतीका पुत्र रुचिपर्वा शीघ्रही उसके सम्मुखगया ५१ वह कालारूप रथपरसवार बारह बाणोंसे अच्छीरीति से घायल करताहुआ ५२ इसके पीछे उस सुन्दर तेजवाले पहाड़ी राजाने गुप्तग्रन्थीवाले बाणसे रुचिपर्वको यमलोकोंमें पहुंचाया उसबीरके गिरने पर उनअभिमन्यु द्रौपदी के पुत्र ५३ चेकितान धृष्टकेतु और युयुत्सूने उसहाथी को बाणोंकी वर्षासे ऐसासींचा जैसे कि जलकी धाराओंसे बादल सींचताहै ५४ और मारने के अभिलाषी होकर बड़े भयानक शब्दों से गर्जनाकरी इसकेपीछे योग्य पार्ष्णीके अंकुश और अंगूठेसे चलायमान वहहाथी ५५ जिसकी फैलीहुई सूंड़ कान आंख खड़ेथे बड़ीशीघ्रतासे चला और अपने पैरोंसे घोड़ोंको दाबकर युयुत्सूको पीड़ामानकिया ५६ हेराजा शीघ्रतासे युक्त युयुत्सूरथसे कूदगया उसके पीछे मारनेके अभिलाषी भयकारी शब्दोंको गर्जते उन युधिष्ठिरके शूरबीरों ने बाणोंसे शीघ्रही हाथीको व्यथितकिया फिर आपकापुत्र भ्रान्तीसे युक्तहोकर अभिमन्यु के रथपरगया ५७ । ५८ वह हाथीपर नियतराजाभगदत्त शत्रुओं के बाणोंको छोड़ता ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि भुवनों के ऊपर किरणों को डालता सूर्य्य शोभायमान होताहै ५९ उसको अभिमन्युने बारह बाणोंसे युयुत्सूने दशबाणोंसे और द्रौपदीके पुत्रों समेत धृष्टद्युम्नने तीन २ बाणोंसे पीड़ामान किया ६० वह हाथी बड़े उपाय पूर्व्वक मारेहुये बाणोंसे छिन्नशरीर होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि सूर्य्यकी किरणों से व्याप्तहोकर बड़ा बादल शोभित होताहै ६१ हाथीवानकी शिल्प विद्याके उपायों से चलायमान और

शत्रुके बाणोंसे पीड़ामान उस हाथीने शत्रुओंको दायें बायें फिरने से कंपाया ६२ जैसे कि ग्वालिया वनमें पशुओंके समूहों को दंडसे घेरताहै उसीप्रकार भगदत्त नेभी वारम्वार उस सेनाको घेरलिया ६३ जैसे कि बाजपक्षी के अपराधी अथवा सम्मुख जानेवाले काकपक्षियों के शीघ्रतासे शब्दहोते हैं उसीप्रकार भागते अथवा दौड़ते पांडवोंके शूरवीरोंके शीघ्र शब्दहुये ६४ हेराजा जैसे कि पूर्व समयमें पक्षधारी उत्तम पहाड़ घायल होताहै उसीप्रकारके अत्यन्त उत्तम अंकुश से घायलहुये उस गजराजने शत्रुओं के मध्यमें ऐसे बड़े भयको उत्पन्न किया जैसे कि क्षुभितहुआ समुद्र व्यापारी लोगोंके भयको बढ़ाताहै ६५ इसके पीछे मार्गमें उन हाथी रथ और राजालोग जो कि भयसे भागतेथे उनसे बड़ा भयकारी शब्द उत्पन्नहुआ हे राजा इसीप्रकार उस शब्दसे युद्धमें पृथ्वी आकाश स्वर्ग दिशा और विदिशा व्याप्तहोगईं ६६ उस राजाने उस अत्यन्त श्रेष्ठ हाथी के द्वारा शत्रुओंकी सेनाको ऐसे अत्यन्त मथाया जैसे कि पूर्व समय में देवताओं से सुरक्षित देवसेनाको युद्धमें विरोचन असुरने मथाया था ६७ बड़ेवेग वाली वायुचली और धूलने वारम्वार आकाशको और सेनाके मनुष्योंको भी ढकदिया फिर मनुष्योंने चारोंओरसे चेष्टा करनेवाले चलायमान उस अकेले हाथीको हाथियों के समूहकी समान माना ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे महाबाहो जो तुम युद्धमें अर्जुनके कर्मको मुझसे पूंछते हो सो तुम उसको सुनो जो कि अर्जुनने युद्धमें काम किया १ उठीहुई धूलको देखके और हाथी के शब्दको सुनकर भगदत्तसे भय का जानने वाला अर्जुन श्रीकृष्णजी से बोले २ कि हे मधुसूदन जी जैसे राजा प्राग्ज्योतिप सवारी में बैठाहुआ शीघ्रता करताहुआ निकलाहै निश्चय करके उसीका यह शब्दहै ३ युद्धमें इन्द्र के समान हाथीकी सवारी में अति कुशल और युद्धके हाथियों के सवारों में सबसे श्रेष्ठहै यह मेरी रायहै ४ उस श्रेष्ठ हाथी के भी समान युद्ध में कोई नहींहै वह युद्धमें सब शस्त्रोंको उल्लंघन करके चलनेवाला बड़ा कर्मकरने वाला और थकावट से रहित होकर ५ शस्त्रों के प्रहार और अग्निके स्पर्श का

सहनेवाला है हेपापोंसे पृथक् श्रीकृष्णजी अब वह अकेलाही हाथी पांडवों की सब सेनको नाशकरेगा ६ हम दोनोंके सिवाय दूसरा कोई भी पुरुष उसके रोंकनेको समर्थ नहींहै आप शीघ्रही उधरही कोचलो जिधर राजा प्राग्ज्योतिषहै ७ मैं युद्धमें इस हाथीके पराक्रमसे अहंकार में भरेहुये वृद्धावस्थासे भी आश्चर्य्य युक्त इन्द्र के प्यारे अतिथि को स्वर्ग में भेजूंगा ८ इसके अनन्तर श्रीकृष्ण जी अर्ज्जुन के इस बचन से वहां गये जहां पर कि पाण्डवी सेना भगदत्तसे छिन्न भिन्न होरही थी ९ इसके पीछे चौदह हजार संसप्तक महारथी उस जातेहुये को पीछे से पुकारते हुये चढ़ाई करनेवाले हुये १० त्रिगर्त्त देशियों के दशहजार महारथी और चारहजार बासुदेव की सेनाके मनुष्य भी चढ़ाई करनेवाले हुये ११ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र भगदत्त से छिन्न भिन्न करी हुई सेना को देखकर उन संसप्तकों से बुलाये अर्जुनका हृदय दो प्रकारका हुआ १२ और शोचनेलगा कि इन दोनों कामों में से कौनसा काम आनन्द से सुफल करने के योग्य है इस चिन्ता में पड़ा कि यहां लौटूं कि युधिष्ठिर के पास जाऊं १३ तब अपनी बुद्धिसेही बिचार कर उस अर्ज्जुन की बड़ी बुद्धि संसप्तकों केही मारने में नियतहुई वह हनुमान् जीकी ध्वजाकाधारण करनेवाला इन्द्र का पुत्र अर्ज्जुन अकेलाही उन हजारों रथियों के मारने को अकस्मात् युद्ध में लौटा १४ दुर्य्योधन और कर्ण दोनों का भी वही बिचार अर्जुन के मारने के उपाय में हुआ अर्थात् उन दोनोंने उसके मारने की कल्पना करी १५ वे पांडव दोप्रकार के बिचारसे डोलायमान हुये तब उत्तम पुरुषोंके मारनेमें उसको नहीं छिपाया १६ हे राजा इस के पीछे संसप्तक नाम महारथियों ने गुप्त ग्रन्थी वाले लाखोंवाण अर्जुनके ऊपर छोड़े १७ फिर वह बाणों से ढकाहुआ कुन्तीनन्दन अर्जुन दृष्ट नहीं पड़ा न जनार्द्दन श्रीकृष्णजी घोड़े और रथसमेत दिखाई पड़े १८ उस समय जनार्द्दन जीने मोहको पाया अर्थात् पसीने में तर होगये तब अर्जुन ने उनको अक्षर ब्रह्मास्त्र से मारा १६ उस समय शूरवीरों के बाण प्रत्यंचा और धनुष समेत सैकड़ों हाथ कटगये ध्वजाओं समेत घोड़े सारथी रथ और रथी भी पृथ्वीपर गिर पड़े २० सवृक्ष पर्व्वत के शिखर और बादलके समान शरीरवाले अच्छे अलंकृत हाथी जिनके कि सवार मारेगये वे सब अर्जुन के बाणों से घायल होकर पृथ्वीपर गिरे २१ टूटी झूल बिखरे हुये भूषणों समेत निर्जीव हाथी

सवारों समेत युद्ध में बाणोंसे अत्यन्त मथन किये हुये गिरपड़े २२ अर्जुन के भल्लोंसे मरेहुये वहुत से मनुष्य दुधारेखड्ग पाशनखर मुद्गर परशेआदि शस्त्रों समेत पृथ्वी पर गिरपड़े २३ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र वालसूर्य्य कमल और चन्द्रमा के समान रूपवान् अर्जुनके बाणोंसे कटेहुये पृथ्वी पर वर्त्तमान हुये २४ तब नाना प्रकार की सूरतोंसे शत्रुओंको क्रोध युक्तअर्जुन के हाथसे मारे जाने पर वह अलंकृत सेना उन प्राणों के हरनेवाले अर्जुन के बाणों से अग्निके समान होगई २५ जैसे कि हाथी कमलों के समूहों को विध्वंस करताहै उसी प्रकार सेनाको व्याकुल करनेवाले अर्जुन को जीवों के समूहों ने पूजा अर्थात् धन्य है धन्यहै ऐसा कहकर स्तुति करी २६ माधव जी इन्द्रके समान अर्जुन के उस कर्मको देखकर बड़े आश्चर्य्य युक्त होकर बड़ी नम्रता पूर्व्वक उससे बोले २७ हे अर्जुन जो युद्ध में तैंने कर्म किया ऐसा कर्म इन्द्र यमराज और कुबेर से भी होना महा कठिन है यह मेरा मत है २८ मैंने संसप्तक नाम महारथी हजारों एक साथही युद्धभूमि में गिरे हुये देखे २९ इसके पीछे अर्थात् उन सम्मुख वर्त्तमान असंख्य संसप्तकों को मारकर श्रीकृष्णजी से कहा कि अब भगदत्त के सम्मुख चलो ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तविंशतितमोऽध्यायः २७ ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

इसके अनन्तर श्रीकृष्णजीने जाने के अभिलाषी अर्जुन के उन घोड़ों को जो कि चित्तके समान शीघ्रगामी स्वर्णमयी भूषणों से अलंकृत होकर शीघ्र चलनेवाले थे द्रोणाचार्य्यकी सेनाकी ओर चलाया १ युद्धाभिलाषी सुशर्मा अपनेभाइयों समेत उस कौरव्य अर्जुनके पीछेकी ओरसे जोकि द्रोणाचार्य्यसे संतप्त कियेहुये अपने भाइयों के पास जाता था पीछे २ चला २ इसके अनन्तर वह महाविजयी अर्जुन उन अजेय श्रीकृष्णजी से बोले हे अविनाशी यह सुशर्मा भाइयों समेत मुझको बुलाता है ३ हेमधुसूदनजी वह सेना उत्तर दिशासे छिन्न भिन्न होतीहै अव मेरा चित्त संसप्तकों ने दोप्रकारका किया अव मैं संसप्तकोंको मारूं अथवा शत्रुओं से पीड़ामान अपने भाई वन्धु आदिकी रक्षा करूं आप मेरे चित्तके ज्ञाताहैं अव मुझको क्या करना योग्यहै ४ अर्जुनके इस कहने से

श्रीकृष्णजीने रथको लौटाया और उसीमार्ग होकरचले जिस मार्ग में त्रिगर्त्तके राजाने अर्जुनको बुलाया था ५ फिर अर्जुनने सात बाणों से सुशर्माको बेधकर उसके धनुषको क्षुरप्रनाम दो बाणों से काटा ६।७ उनको काटकर अर्जुनने बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक अपने छःबाणोंसे राजात्रिगर्त्तके भाईको घोड़े और सारथी समेत यमलोकको पहुंचाया ८ तदनन्तर सुशर्माने अर्जुन को लक्षबनाकर सर्पाकार लोहेकी शक्तिको वासुदेवजी के ऊपरको फेंका ९ फिर अर्जुन तीनबाणसे शक्तिको और तीनही से तोमरको भी काटकर शरोंके समूहों से सुशर्माको अचेतकरके लौटा १० हे राजा आपकी सेनाओं में से किसीने भी उस बाणोंकी बर्षा करनेवाले भयकारी इन्द्रके समान आतेहुये अर्जुनको नहींरोका ११ फिर अर्जुन अपने बाणोंसे उन कौरवी महारथियोंको ऐसे मारताहुआ आया जैसे कि सूखे वनको जलाताहुआ अग्नि आताहै १२ वह सबलोगभी उस बुद्धिमानी अर्जुन के उस महाअसह्य बेगके सहने को ऐसे समर्थ नहींहुये जैसे कि प्रजाके लोग अग्नि के स्पर्शको नहीं सहसक्के १३ हे राजा वह अर्ज्जुन बाणों की बर्षा से सेनाओं को ढकता गरुड़के झपटनेके समान राजा प्राग्ज्योतिष के सम्मुख आया १४ और अर्जुन ने भागनेवाले भरतवंशियों का शुभदायक और युद्ध में शत्रुओं को अश्रुपातों का बढ़ानेवाला अपना धनुष लचाया १५ अर्थात् हे राजा अर्जुन ने दुष्ट द्यूत करनेवाले आपके पुत्रके कारण से क्षत्रियों के नाश के निमित्त उसी धनुषको खैंचा १६ फिर अर्जुन के हाथसे व्याकुलहुई आपकी सब सेना ऐसे भयभीत होकर खंडमंड होगई जैसे कि पर्व्वत से टक्करखाकर नौका खंडमंड होजाती है १७ इसके पीछे धनुषधारी दशहजार शूरवीर युद्ध में जय पराजय के निमित्त बुद्धिको निर्द्दय करके लौटे १८ वहां उन निर्भय चित्तवाले महारथियोंने उस अर्जुन को घेरलिया फिर युद्धमें सबभारके सहनेवाले अर्जुन ने बड़े कठिन भारको सहा १९ जैसे कि क्रोधयुक्त मतवालाहाथी वनको मर्द्दन करता है उसीप्रकार अर्जुन ने भी आप की सेना को मर्द्दन किया २० उस सेनाके अत्यन्त मथने पर राजा भगदत्त अकस्मात् उस हाथी समेत अर्ज्जुन के सम्मुख गया २१ नरोत्तम अर्जुन ने रथके द्वारा उसको रोंका रथ और हाथीका वह भिड़ना भी अत्यन्त कठिन हुआ २२ वह भगदत्त और अर्जुन दोनों वीर शास्त्र के अनुसार अलंकृत रथ और हाथी की सवारी के द्वारा घूमने लगे २३

इसके पीछे इन्द्रके समान समर्थ भगदत्त ने बादल के समान हाथी परसे अ-र्जुनके ऊपर बाणों के समूहों की वर्षा करी २४ उस पराक्रमी इन्द्रके पुत्र अर्जुन ने भी भगदत्त के उस बाणवृष्टिको मार्गही में काटा २५ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इस के पीछे उस राजा प्राग्ज्योतिषने उस बाणों की वर्षा को रोंककर अपने बाणों से महाबाहु अर्ज्जुन और श्रीकृष्णजी को घायल किया २६ और बाणों के बड़े जालसे उन दोनों को ढककर उस हाथीको श्रीकृष्ण और अर्जुनके मारने के निमित्त प्रेरित किया २७ जनार्द्दनजी ने उस कालके समान क्रोधयुक्त आतेहुये हाथीको देखकर रथके द्वारा दक्षिण किया २८ धर्मको देखते अर्जुन ने उस सम्मुख वर्त्तमान समीप पहुंचेहुये हाथीको भी उसके सवार समेत मारडाल-ने की इच्छा नहीं की २९ हे श्रेष्ठ फिर उस हाथी ने हाथी घोड़े और रथोंको मर्द्दन करके यमलोकको भेजा इसहेतु से अर्जुन क्रोधयुक्त हुआ ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८ ॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्रजी बोले कि इसप्रकार से क्रोधयुक्त अर्ज्जुन ने भगदत्त का क्या किया अथवा उस राजा प्राग्ज्योतिष ने अर्जुन का क्या किया हे सञ्जय इस को यथार्थता से वर्णन करो १ सञ्जय बोले कि सब जीवों ने राजा प्राग्ज्योतिष से भिड़ेहुये पाण्डव अर्जुन और श्रीकृष्ण जी को काल के गाल में फँसाहुआ माना २ हे समर्थ महाराज वह भगदत्त गजेन्द्र के कन्धे परसे उन रथपर सवार दोनों अर्जुन और श्री कृष्णजी पर इस रीति से बाणों की बर्षा करता था ३ फिर उसने पूरे धनुषसे निकलेहुये सुनहरी पुंख तीक्ष्णधार और काले लोहेके बाणों से श्रीकृष्ण जी को वेधा ४ अग्नि के स्पर्श से संयुक्त भगदत्त से प्रेरित सुन्दर पक्षवाले बाण श्रीकृष्ण जी को घायल करके पृथ्वी में समागये ५ अ-र्जुन ने उसके धनुष को काटकर रक्षकों को मारकर राजा भगदत्त से लालन करतेहुये के समान युद्ध किया ६ उस अर्ज्जुन ने सूर्य्य की किरणों के समान तीक्ष्ण चौदह तोमरों को चलाया और उसने प्रत्येक तोमरोंके दो दो खण्ड कर दिये ७ इसके पीछे इन्द्रके पुत्र अर्जुनने हाथीके उसकवचको बाणोंके बड़े जाल से टुकड़े २ करदिया और वह पृथ्वीपर गिरपड़ा यहां यहभी प्रसिद्धहै कि राजा

भगदत्तने अपने गिरतेहुये मेरे हाथीको अपनी जंघाओंसे पृथ्वीपर नहीं गिरने दिया ८ फिर वह कवचसे रहित वाणोंसे अत्यन्त पीड़ितहाथी ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि जलकी धाराओंसे संयुक्त वादलसे रहित गिरिराज होताहै ९ इसके पीछे राजा प्राग्ज्योतिपने सुनहरी दंड रखनेवाली लोहेकी शक्तिको वासुदेवजीके ऊपर छोड़ा और अर्जुनने उसको बीचमें से दो खंड करदिये १० इसके पीछे मन्द मुसकान करते अर्जुनने राजाके छत्र ध्वजाको काटकर शीघ्रता पूर्व्वक दशवाणों से उस पर्व्वतीय राजाको पीड़ितकिया ११ पुंखवाले कंकपक्ष से युक्त अर्जुनके वाणोंसे घायल क्रोधयुक्त राजा भगदत्तने १२ उस श्वेत घोड़े वाले पांडवके मस्तकपर तोमरोंको छोड़ा और वड़े उच्चस्वरसे गर्जा युद्धमें उन वाणोंसे अर्जुनका मुकुट लौटगया १३ उस लौटे हुये मुकुटको संभालते उस अर्जुनने राजा से कहा कि लोकमें देखाहुआ कर्म्मकरना चाहिये १४ इसरीतिसे कहेहुये अर्जुनके वचनसे क्रोधयुक्त भगदत्तने प्रकाशित धनुषको लेकर वाणों की अर्जुन और गोबिन्दजीपर वर्षाकरी १५ फिर वो अर्जुनने उसके धनुषको काट तूणीरोंको तोड़के बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक बहत्तर वाणसे सव मर्मोंको बिदीर्ण किया १६ इसके पीछे घायल और अत्यन्त पीड़ामान क्रोधयुक्त विष्णु अस्त्रको प्रयोग करतेहुये भगदत्तने अंकुशको मन्त्रसे संयुक्त करके अर्जुनकी छातीपर छोड़ा १७ केशवजीने अर्जुनको ढककर भगदत्तके छोड़ेहुये सवके मारनेवाले उसअस्त्रको अपनी छातीपर रोंका १८ वह अस्त्र केशवजी की छातीपर जाकर बैजयन्तीमाला होगया जो कि अपूर्व्व कमलोंके समूहोंसे संयुक्त सर्वत्र पुष्पोंसे जटित १९ अग्नि सूर्य्य और चन्द्रमा के समान प्रकाशित और अग्निहीके समान प्रकाशित पत्रोंसे संयुक्त अलसीके पुष्पके वर्णवालीथी उस मालासे श्रीकृष्णजी अत्यन्त शोभायमान हुये वह माला वायुसे कंपायमान कमलके पत्तोंके समानथा इसके पीछे दुःखीचित्त होकर अर्जुन श्रीकृष्णजीसे बोले २० । २१ कि हे निष्पाप केशवजी मैं युद्धको त्यागकर घोड़ोंको हांकूंगा यह कहकर कि अपनी प्रतिज्ञाकी रक्षानहीं करतेहो जो मैं आपत्तिमें फँसाहुआ २२ अथवा रोंकने में असमर्थ होजाऊं तो तुमको ऐसा करना योग्यहै मेरे नियत होनेपर यह आपको न करना चाहिये २३ धनुषवाणको रखनेवाला मैं होकर इनलोकोंको देवता असुर और मनुष्यों समेत आपकी कृपासे विजय करनेको समर्थहूं यह

सब आपको विदितहै २४ फिर उस वृत्तान्तके जाननेवाले वासुदेवजी अर्जुनसे बोले हे निष्पाप अर्जुन तुम इस प्राचीन और गुप्तवृत्तान्तको सुनो २५ मैं चार मूर्त्तियोंका रखनेवाला संसारकी रक्षाके निमित्त सदैव प्रवृत्तहोकर रहा अव यहां आपलोगोंको विभाग करके लोकोंके कल्याणको किया २६ मेरी एकमूर्त्ति तो पृथ्वीपर नियतहोकर तपस्याकरतीहै दूसरी मूर्त्ति शुभाशुभकर्मों की करनेवाली संसारको देखतीहै २७ तीसरी मूर्त्ति नरलोकमें नियतहोकर कर्मको करतीहै और चौथी मूर्त्ति दिव्य हजारवर्षकी नींदमें सोतीहै २८ जो यह मेरी मूर्त्ति हजार वर्ष के अन्तपर सोतेसे उठती है वह उस समयपर वरकेयोग्य भक्तोंके निमित्त उत्तम वरदानों को देती है २९ एकसमय मेरी चौथी मूर्त्तिके उठने के समय पृथ्वी ने समय वर्त्तमान जानकर अपने नरक नाम पुत्रके अर्थ वरको मांगा उसको सुनो ३० अर्थात् उसने याचनाकरी कि मेरापुत्र वैष्णवास्त्रसे संयुक्त देवता और दानवों से अजेयहोय यहवर आप मुझे देनेके योग्यहैं ३१ मैंने पूर्व समयमें इसप्रकारके वरको सुनकर पृथ्वीके पुत्रको सबसे श्रेष्ठ सफल वैष्णवास्त्रको दिया ३२ और यह भी मैंने कहा कि हे पृथ्वी निश्चयकरके यहअस्त्र नरककी रक्षाके निमित्त सफल होय इसको कोई नहींकाटेगा ३३ इसअस्त्रसे रक्षितहोकर तेरापुत्र सदैव सबलोक के मध्यमें शत्रुकी सेनाको पीड़ा देनेवाला और निर्भयहोगा ३४ तव वहचित्तसे प्रसन्न देवी पृथ्वी ऐसाहोय यहकहकर अभीष्टपानेवाली हुई और वहनरकभी नि र्भयहोकर शत्रुओंको तपानेवाला हुआ ३५ हे अर्जुन इसका रणसे वहमेरा अस्त्र राजाप्राग्ज्योतिषको प्राप्तहुआ हे श्रेष्ठ इसअस्त्रसे इन्द्र रुद्रादि समेत कोई भी लो कोमें अवध्य नहीं है अर्थात् सबको वध करनेवालाहै ३६ इसीनिमित्त इस अस्त्र को मैंने तेरे कारण से विपरीत करदिया हे अर्जुन इस उत्तम अस्त्रसे यह रहित होगया अब इस महा असुरको मारो ३७ इस निर्भय और देवताओं से शत्रुता करनेवाले अपने शत्रु भगदत्त को ऐसे मारो जैसे कि मैंने पूर्व्व समय में संसारके कल्याणके लिये नरकासुर को माराथा ३८ तब तो महात्मा केशवजी के इस प्रकार कहेहुये अर्जुनने भगदत्तको तीक्ष्णबाणों से अकस्मात् ढकदिया ३९ इसकेपीछे निर्भय और बड़े साहसी अर्जुन ने हाथी को दोनों कुंभों के मध्य नाराचसे घायल किया ४० जैसे कि वज्र पर्व्वतको पाकर उसमें समा जाता है उसी प्रकार वह बाण भी हाथी को पाकर पुंख समेत ऐसे समागया जैसे कि

सर्प बामी में समाजाता है ४१ तब भगदत्त से बारंबार प्रेरणा किया हुआ वह हाथी उसके बचन को ऐसे नहीं करताथा जैसे कि स्त्रियां दरिद्री के बचन को नहीं करती हैं ४२ वह बड़ा हाथी अपने अंगोंको रोककर दांतों के बल पृथ्वी पर गिरपड़ा और महापीड़ा के शब्दों को करता हुआ मृत्युके बश हुआ ४३ यह राजा नेत्र खोलने के निमित्त पटका बांधने वालाथा अर्जुन ने देवताके बचनसे उस पटके को अपने बाणसे काटा ४४ उस पटके के टूटतेही वह अंधा होगया इसके अनन्तर सूर्य्य और चन्द्रमा के मंडल के समान रूपवाले गुप्तग्रन्थीके बाणों से ४५ अर्जुन ने राजा भगदत्त के हृदयको घायल किया तब वह राजा भगदत्त अर्जुन के बाणों से घायल हृदय हुआ ४६ और निर्जीव होकर धनुष बाणको छोंड़ दिया उस समय उसके शिरसे उत्तम मुकुट भी ऐसे गिर पड़ा ४७ जैसे कि नालके छेदन करने से कमलके वृक्ष से गिराहुआ पत्ताहोता है ४८ वह सुवर्ण की माला रखनेवाला भगदत्त उस स्वर्णमयी मालावाले पर्व्वताकार हाथी से ऐसे गिर पड़ा जैसे कि अच्छा फूलाहुआ और वायुसे झुकाया हुआ कर्णकारका वृक्ष पर्व्वत के शिखर से गिरता है ४९ इन्द्रके समान पराक्रमी और इन्द्रके मित्र भगदत्तको युद्ध में मारकर फिर उस इन्द्रके पुत्र विजयाभिलाषी ने आप के अन्य लोगों को ऐसे पराजय किया जैसे कि प्रबल बायु वृक्षों को संहार करती है ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकोनत्रिंशत्तमोऽध्यायः २९॥

तीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि अर्जुन ने सदैव से इन्द्रके प्यारे मित्र बड़ेतेजस्वी राजा प्राग्ज्योतिषको मारकर प्रदक्षिण किया १ इसके पीछे राजा गान्धार के पुत्र उन वृषिक और अचल नाम दोनों भाइयोंने जोकि शत्रुओंके पुरके विजय करने वाले थे युद्ध में अर्जुन को पीड़ामान किया २ उन दोनों वीर धनुषधारियों ने सम्मुखहोकर बड़े बेगवान् शीघ्रगामी तीक्ष्ण धारवाले बाणों के द्वारा अर्जुनको आगे और पीछे से अत्यन्त घायलकिया ३ अर्जुन ने सौबलके पुत्र वृषिक के घोड़े सूत धनुष छत्र रथ और ध्वजाको अपने तीक्ष्ण बाणों से तिलके समान खण्ड २ करदिया ४ तदनन्तर अर्जुन ने सौबल आदि गांधारियों को बाणों के

समूह और अन्य नाना प्रकार शस्त्रों से भी महा व्याकुल किया ५ इसके पीछे क्रोध युक्त अर्जुनने बाणोंसे उन शस्त्र उठानेवाले पचास गांधारदेशी वीरोंको यमलोकको भेजा ६ वह महाबाहु मृतक घोड़ेवाले रथसे शीघ्रही उतरकर भाई के रथपर तीव्रता से सवार होगया और दूसरे धनुषको जल्दी से हाथ में लिया ७। ८ उन एकरथमें सवार वृषिक और अचल दोनों भाइयों ने वाणों की वर्षा से वारंवार अर्जुन को ऐसे घायल किया जैसे कि वृत्रासुर और वलिने इन्द्रको कियाथा ९ फिर उन दोनों लक्षभेदी गांधारदेशियों ने पांडवको इस प्रकार से व्यथित किया जैसे कि लोकमें गरमी और वरसातके महीने गरम और ठंढे जलों से पीड़ित करते हैं १० हे राजा अर्जुन ने उन अंगों से शिथिल रथमें नियत नरोत्तम वृषिक और अचल दोनों भाइयों को एकही वाणसे मारा ११ तव वे सिंह के समान लालनेत्र महावाहु एक लक्षणवाले दोनों शूरवीर और सगे-भाई रथमे गिरपड़े १२ उन दोनोंके रथसे गिरनेपर उनके पवित्र और बन्धुजनों के प्रियशरीर दशोंदिशाओं में यशको प्रसिद्ध करके नियतहोगये १३ हे राजा आपके पुत्रों ने युद्धमें भागनेवाले मृतकरूप दोनों मामाओंको देखकर वारंवार अश्रुपातोंको छोड़ा १४ इसकेपीछे हजारों मायाओंके ज्ञाता शकुनीने उन दोनों भाइयोंको देखकर अर्जुन और श्रीकृष्णजीको मोहित करके मायाका करना प्रारम्भकिया १५ लकुट,अयूगढ़, पाषाण, शतघ्नी,शक्ति, गदा, परिघ, तलवार, शूल, मुद्गर,पट्टिश १६ सकम्पन,दुधारेखड्ग नखर,मुशल, परश्वध, क्षुर, क्षुरप्र, नालीक,वत्सदन्त,अस्थिसंधि,चक्र,विशिख,प्राश और अन्य २ प्रकारके सैकड़ों शस्त्र दिशाओं से अर्जुनके ऊपरगिरे १७। १८ खर, उष्ट्र, महिष, सिंह, व्याघ्र, समर, चिल्लक, ऋक्ष, शृगाल आदि गर्दभ और वन्दरके रूप १९ और नाना प्रकारके राक्षस और अनेक प्रकार के पक्षी भी वड़े क्रोध युक्त भूंखे होकर अर्जुन की ओर को दौड़े २० इसके पीछे दिव्य अस्त्रोंके जाननेवाले शूरवीर बाणजालोंको फेंकते हुये कुन्तीके पुत्र अर्जुनने अकस्मातही उनको घायलकिया २१ फिर वह सव शूरवीर अर्जुनके अत्यन्त दृढ़ वाणोंसे घायल होकर वड़ेभारी शब्दोंसे गर्जना करते सवओरसे मरकर नाशहोगये २२ इसके पीछे अर्जुन के ऊपर अंधेरा प्रकट हुआ उस अंधेरेमेसे वड़े २ कठोर वचनों से अर्जुन को घुड़का २३ अर्जुनने उस वड़े भयानक वड़े युद्धमें भयके उत्पन्न करनेवाले अ-

न्धकारको अपने बड़े उत्तम ज्योतिष नाम अस्त्र से दूरकिया २४ उसके नाश करने पर भयानक जलके समूह प्रकटहुये तब अर्जुन ने उस जलके नष्ट करने के निमित्त आदित्य अस्त्रको प्रयोग किया इसके पीछे उसअस्त्रके द्वारा बहुत प्रकारसे जलको २५ नष्टकिया अर्थात् शुष्ककिया इसी प्रकारसे शकुनी की उत्पन्नकीहुई अनेक मायाओंको दूरकिया २६ तब हँसते हुये अर्जुन ने शीघ्रही अस्त्रोंके प्रभावसे मायाओंको नाशकिया उन मायाओंके दूरहोनेपर अर्जुन के बाणोंसे घायल कियाहुआ वह भयभीत २७ शकुनी साधारण मनुष्यके समान शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा युद्धभूमिसे हटगया इसके पीछे अस्त्रोंका जाननेवाला अर्जुन अपने शत्रुओं में तीव्रताको दिखाता २८ कौरवों की सेनापर बाणों के समूहोंसे बर्षा करनेलगा हे महाराज अर्जुन के हाथसे घायल आपके पुत्रकी वह सेना २९ ऐसे दोप्रकारकी होगई जैसे कि गंगाजी समुद्र से मिलकर होती हैं वहांपर कितनेही नरोत्तम तो द्रोणाचार्य्य की शरणमें गये ३० और कितने ही अर्जुनसे पीड़ामान होकर दुर्योधनके परिकरमें जामिले उसके पीछे धूलसे सेनाके गुप्त होजाने पर हमने उसको नहीं देखा ३१ मैंने गांडीव धनुषका शब्द दक्षिण की ओरको सुना कि उस गांडीव धनुषके शब्दमें शंख दुन्दुभी आदि बाजोंके शब्दोंको उल्लंघन करके आकाशको स्पर्शकिया ३२ इसके अनन्तर दक्षिण ओरसे अपूर्व्व युद्ध करनेवालोंका युद्ध फिर जारीहुआ ३३ वहां अर्जुन को अच्छा युद्ध हुआ फिर मैं द्रोणाचार्य्यके पीछे गया युधिष्ठिरकी सेना जहां तहां से प्रहार करतीथीं ३४ हे भरतबंशी अर्जुनने समयपर आपके पुत्रोंकी नाना प्रकारकी सेनाओं को ऐसे छिन्नभिन्न करदिया जैसे कि आकाशमें वायु बादलोंको तिरबिर करदेताहै ३५ बड़े धनुषधारी नरोत्तमों ने उस इन्द्रके समान आनेवाले बहुत बाणोंकी वर्षा करनेवाले भयानकरूप अर्जुन को नहींरोंका ३६ अर्जुन से घायल उन आपके अत्यन्त पीड़ामान जहां तहां भागतेहुये अनेक शूरवीरोंने अपनेही लोगोंको मारा ३७ अर्जुनके छोड़े कंकपक्षसे युक्त शरीरके छेदन करनेवाले वे बाण दशोंदिशाओं को ढकतेहुये टीड़ी के समानगिरे ३८ हे श्रेष्ठ वह अर्जुनके बाण घोड़े हाथी रथी और पदातियोंको भी घायल करके पृथ्वीमें ऐसे समागये जैसे कि बामीमें सर्प समाजाता है ३९ उसने हाथी घोड़े और मनुष्योंपर दूसरे बाणको नहीं छोड़ा उसीसे एकबाणसे इनसबके सिवाय

वह सबध्वजाभी टूटटूटकर गिरपड़ी ४० तब वह युद्धभूमि मृतक मनुष्य हाथी और सबओरसे छोड़ेहुये बाणों के द्वारा गिरायेहुये घोड़ों से अपूर्व्व रूपहोकर श्वान और शृगालों से शब्दायमान होगई ४१ पिताने पुत्रको मित्रने उत्तम परममित्र को त्यागकिया और इसी प्रकार बाणोंसे दुःखी पुत्रने पिताको त्याग किया तब अपनी रक्षामें बिचार करनेवाले और अर्जुनसे पीड़ामान मनुष्योंने सवारियों को भी त्यागकिया ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिंशत्तमोऽध्यायः ३० ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्रजी बोले हे संजय अर्जुनसे उस सेनाके पराजय होनेपर चेष्टाकरते और भागतेहुये तुम लोगोंका चित्त कैसाहुआ १ पराजित और आश्रय देखने वाली अर्थात् शरण ढूंढ़नेवाली सेनाओंका सम्मुख करना बड़ा कठिनहै हे संजय वह सब मुझसे कहो २ संजय बोले हे राजा इसी प्रकार आपके पुत्रके प्रिय चाहनेवाले बड़े २ बीर लोकोंके मध्य में अपने २ यशकी रक्षाकरते द्रोणाचार्य्य के पीछे चले ३ अस्त्रोंके प्रकट होने और युधिष्ठिरके सम्मुख आने अथवा भयकारी युद्धके वर्त्तमान होनेपर निर्भयके समान उत्तम २ कर्मोंको किया ४ और अमितौजस भीमसेन के ऊपर और वीर सात्यकी व धृष्टद्युम्नके ऊपरभी चढ़ाई करी ५ निर्दय चित्त पांचालोंने प्रेरणाकरी कि द्रोणाचार्य्यको मारो और आपके पुत्रोने सब कौरवोंको यह प्रेरणाकरी कि द्रोणाचार्य्यका नाश मतकरावो ६ कोई यह बोले कि द्रोणाचार्य्यको द्रोणाचार्य्यको और किसी २ ने यह कहा कि द्रोणाचार्य्यको नहीं किन्तु कौरव और पांडवोंका द्यूत द्रोणाचार्य्यसे संबन्ध रखने वाला जारी हुआहै ७ द्रोणाचार्य्य पांचालोंके जिन २ रथ समूहोंको मथन करते थे वहां वहां पांचालदेशी धृष्टद्युम्नही उनके सम्मुख होताथा ८ इसी प्रकार भाग के बिपर्य्ययसे और भयकारी युद्धके होनेपर भयानक शब्दोंके करनेवाले वीरों ने वीरोंको सम्मुख पाया ९ वहांपर पांडवलोग शत्रुओंके कंपायमान करनेवाले हुये और अपने कष्टोंको स्मरण करके उन्होंने सेनाओंको कंपायमानकिया १० वह क्रोधके वशीभूत होकर लज्जासे युक्त पराक्रमसे चेष्टा करनेवाले उस बड़े युद्धमें प्राणोंको त्यागकरके द्रोणाचार्य्यको घायल करने में प्रवृत्तहुये ११ तुमुल

युद्धमें प्राणोंपर खेलते वड़े तेजस्वी लोगोंके लोहेके शस्त्रोंका गिरना शिलाओं के समानहुआ १२ हे महाराज वृद्धलोग भी ऐसे युद्धका देखना और सुनना कभी स्मरण नहीं करतेहैं १३ उस बीरोंके नाशमें उस लौटेहुये सेनाके बड़े समूहके भारसे पीड़ामान पृथ्वी बड़ी कंपायमानहुई १४ और उस घूमतेहुये सेना के समूहके बड़े भयानक शब्दभी आकाशको पूर्णकरके युधिष्ठिरकी सेनामें प्रवेशित होगये १५ पांडवों की हजारों सेना सम्मुख होकर युद्ध में घूमतेहुये द्रोणाचार्य्य के तीक्ष्णधार बाणोंसे पराजितहुई १६ अपूर्व्वकर्मी द्रोणाचार्य्यसे उस सेनाओंके अत्यन्त मथेजानेपर आप सेनापतिने द्रोणाचार्य्यको पाकर घेरलिया १७ वहां द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नको वह युद्ध अपूर्व्व हुआ मेरे चित्तसे उस की किसीसे समानता नहीं होसक्तीहै १८ इसके पीछे अग्निके समान उस राजा नीलने जिसका कि प्रस्फुलिङ्ग अग्निके समान धनुषथा कौरवीय सेनाको ऐसे भस्मकरदिया जैसे कि सूखेवनको अग्नि भस्म करता है १९ प्रथम वचन कहने वाले आश्चर्य्यकारी प्रतापवान् अश्वत्थामाजी उससेनाके भस्मकरनेवाले राजा नीलसे यह शुद्ध वचन बोले २० कि हे नील तेरे बाणरूप अग्निसे बहुतसे शूरबीरोंके भस्महोनेसे क्या लाभहै तू केवल मुझ अकेलाही के साथ युद्धकर और क्रोधित होकर तू बड़ी शीघ्रतासे मुझपर प्रहारकर २१ खिलेहुये कमलके समान प्रकाशमान मुखवाले राजानीलने उस कमल समूहों के समानरूप और कमल पत्रके समान नेत्रधारी अश्वत्थामा को शायक नाम बाणों से घायलकिया २२ अकस्मात् उससे अत्यन्त घायल अश्वत्थामा जीने तीन तीक्ष्ण भल्लों से उस शत्रुके धनुष ध्वजा और छत्रको बिध्वंसन किया २३ फिर उत्तम ढाल तलवार रखनेवाले राजानीलने पक्षीके समान उस रथसे कूदकर अश्वत्थामाके शरीरसे शिरको काटनाचाहा २४ हे निष्पाप धृतराष्ट्र फिर मंदमुसकान करते अश्वत्थामाने उसके शरीरसे ऊंचे कन्धे सुन्दर नाक और कुंडलधारी शिरको भल्लसे काटकर गिराया २५ पूर्ण चन्द्रमा के समान मुख व कमलपत्र के समान नेत्र और अत्यन्त प्रकाशित कमलपत्रके समान प्रकाशमान वह माराहुआ राजा नील पृथ्वीपर गिरा २६ उसके पीछे आचार्य्य के पुत्रके हाथसे देदीप्य तेजवाले राजा नील के मरनेपर पांडवीयसेना अत्यन्तव्याकुल होकर पीड़ामान हुई २७ हेश्रेष्ठ उस समय पांडवों के उन सब महारथियों ने यह चिन्ताकरी कि इन्द्रका पुत्र

अर्जुन शत्रुओं से किसप्रकार करके हमारी रक्षाकरेगा २८ क्योंकि वह बलवान् सेना के दक्षिण भागमें संसप्तकोंकी शेष बचीहुई नारायण नाम सेनाका नाश कररहा है २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि फिर भीमसेन अपनी सेनाके घायलपनेको नहीं सहसका उसने गुरूको साठ बाणोंसे और कर्णको दशबाणोंसे घायलकिया १ फिर उस के मरणको चाहते द्रोणाचार्य्यने तीक्ष्णधार तीव्र सीधे चलनेवाले बाणोंसे शीघ्रही भीमसेन के मर्मस्थलोंको घायलकिया २ । ३ भीमसेनके पराजयको चाहते द्रोणाचार्य्यने छव्वीसबाणसे कर्णने बारह बाणोंसे और अश्वत्थामाने सातबाणोंसे घायलकिया महाबली भीमसेनने भी उन सबको घायलकिया ४ द्रोणाचार्य्यको पांचसौ बाणसे कर्णको दशबाणसे दुर्योधनको बारहबाणसे अश्वत्थामा को आठबाणसे घायलकिया ५ और युद्धमें कठिन शब्दको करता उनके सम्मुख वर्त्तमान हुआ उसकी ओर से प्राणोंकी प्रीतिको अत्यन्त त्यागने और मृत्युके साधारण करनेपर ६ अजातशत्रु युधिष्ठिरने उन शूरवीरोंको प्रेरणाकरी कि भीमसेनकी रक्षाकरो फिर वह बड़े तेजस्वी युयुधानआदि और पांडव नकुल सहदेव ये सब भीमसेनके पासगये वह अत्यन्त क्रोधयुक्त पुरुषोत्तम सब साथ मिलकर ७ । ८ उत्तम धनुषधारियोंसे रक्षित और द्रोणाचार्य्यकी सेनाको पराजय करनेके अभिलाषी बड़ेपराक्रमी भीमसेन आदिक रथी चढ़ाई करनेवाले हुये ९ रथियोंमें श्रेष्ठ और सावधान द्रोणाचार्यने भी उन बड़ेपराक्रमी युद्धभूमिके लड़ने वाले वीर महारथियोंको रोका १० फिर पांडवराज भी मृत्युकेभयको त्यागकरके आपके शूरवीरोंके सम्मुखगये अश्वारूढ़ोंने अश्वारूढ़ोंको और रथियोंने रथियों को मारा ११ शक्ति खड्गोंका गिरना और फरसोंसे भी युद्धहुआ प्रकृष्ट तलवारोंसे वह युद्ध बड़ा कठिन और तीव्रताका प्रकट करनेवाला हुआ १२ हाथियोंकी चढ़ाई में महाभयकारी युद्धहुआ कोई हाथीसे और कोई घोड़ेसे औंधेमुख होकर गिरे १३ और हे श्रेष्ठ बहुतसे मनुष्य बाणोंसे घायलहोकर रथसे गिरे बड़े गर्द मिलाने युद्धमें हाथीने किसी २ बिना कवचवाले गिरेहुये मनुष्यके शिरको

छातीपर दबाकर तोड़डाला और किसी हाथीने अन्य २ बहुतसे गिरेहुये मनुष्योंको मर्द्दनकिया १४। १५ और दांतोंसे पृथ्वीको पाकर बहुतसे रथियोंको भी मर्द्दन किया कोई २ हाथी भयकारी रुधिरमें भरेहुये दांतोंसे युक्त १६ युद्धमें सैकड़ों मनुष्यों को मर्द्दनकरते घूमनेलगे और पड़ेहुये कार्ष्ण्य लोहेके कवचधारी मनुष्य घोड़े रथ और हाथियोंको दूसरे हाथियोंने ऐसा मर्द्दनकिया १७ जैसे कि नरकुल नाम मोटेतृणको करतेहैं वहां लज्जायुक्त राजालोग समयके योगसे उन शयन स्थानोंपर सोये जो कि गृध्रपत्ररूप बस्त्रोंसे आच्छादित बड़े दुःख रूपथे इस युद्धमें पिताने रथकी सवारी से सम्मुख होकर पुत्रको १८। १९ और पुत्रने मोहसे पिताको मारा यह बड़ा अमर्यादावाला युद्ध बर्त्तमानहुआ रथटूटे ध्वजा कटगई छत्र पृथ्वीपर गिरे २० और घोड़े टूटेहुये आधेजुयेंको लियेहुये भागे और कुण्डलधारी शिरके खण्ड २ हुये खड्ग रखनेवाली भुजाभी गिरपड़ी २१ पराक्रमी हाथीने रथको पृथ्वीपर दबाकर चूर्णकिया और रथीके नाराचसे घायल हुआ हाथी पृथ्वीपर गिरा २२ हाथीसे अत्यन्त घायल कियाहुआ घोड़ा अपने सवार समेत गिरा बड़ा भयकारी युद्ध बर्त्तमान हुआ २३ हाय पिता हाय पुत्र हायमित्र कहां है खड़ाहो कहां दौड़ता है प्रहारकर और मन्दमुसक्यान और सिंहनाद समेत इसको मार २४ इस प्रकार की बातोंके नाना प्रकारके बचन सुने गये और मनुष्य घोड़े व हाथियों का भय दूरहुआ २५ पृथ्वीकी धूल शान्त होगई और भयभीत लोगोंको मूर्च्छाहुई प्रत्येक बीरने अपने चक्र से दूसरे बीरके चक्रको पाकर २६ अस्त्रमार्ग के बन्दहोने के समय गदासे शिरको गिराया बालोंका पकड़ना आदि मुष्टिक युद्ध भी बड़ा भयकारी हुआ २७ तब विजयाभिलाषी बीरोंका युद्ध दन्त नखके प्रहारों से हुआ वहां खड्ग समेत उठी हुई शूरों की भुजा भी कटीं २८ इसी प्रकार किसी २ की भुजा धनुष बाण और अंकुश समेत कटगई इस युद्धमें एकने दूसरे को पुकारा और दूसरा मुख फेरकर भागा २९ एकने दूसरे के शिरको स्वाधीन करके शरीरसे पृथक् किया कोई शब्द के साथही दौड़ा कोई शब्दसे अत्यन्त भयभीत हुआ ३० किसीने सेनाके मनुष्यों को और किसीने अपने शत्रुओं को तीक्ष्ण बाणों से मारा इस युद्धमें पर्व्वतके शिखरके समान हाथी नाराच बाणसे गिराया हुआ ३१ पृथ्वी पर गिरा जैसे कि ऊष्म ऋतुमें नदी का रोध होता है उसी प्रकार पर्व्वताकार

हाथी रथीको मारता और पीड़ा देता ३२ घोड़े और सारथी समेत पृथ्वी पर नियत हुआ शस्त्रज्ञ भयभीत और प्रहार करनेवाले शूरों को देखकर ३३ दूसरे भयभीत और निर्बल चित्तवाले बहुतसे लोगोंमें मोह पैदाहुआ सब व्याकुलहुये और कुछ नहीं जाना गया ३४ सेनाकी उठीहुई धूलसे गुप्त मर्य्यादा से रहित युद्ध वर्त्तमान हुआ इसके पीछे सेनापति शीघ्रता से यह बोलताथा कि यही समय है ३५ सदैव शीघ्रता करने वाले पाण्डवों को प्रेरणा करने वाला हुआ फिर बाहुशाली पाण्डव उसकी आज्ञाको करते ३६ और मारते हुये द्रोणाचार्य्य के रथपर ऐसे गिरे जैसे कि सरोवर पर हंस गिरते हैं परस्पर दौड़ो पकड़ो भय मत करो मारो ३७ उस निर्भय द्रोणाचार्य्य के रथपर यह कठिन शब्द हुये इस के पीछे द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य कर्ण अश्वत्थामा राजा जयद्रथ ३८ बिन्दु अनुविन्द अवन्ती देशके राजा लोग और शल्यने उनको रोंका उन उत्तम धर्म से संयुक्त क्रोध भरे कठिनतासे हटाने और पकड़नेके योग्य ३९ बाणसे पीड़ामान पांचालोंने पाण्डवों समेत द्रोणाचार्य्य को त्याग नहीं किया इसके पीछे अत्यंत क्रोध युक्त सैकड़ों बाणोंको छोंड़तेहुये द्रोणाचार्य्य ने ४० चंदेरी देशी पांचाल देशी और पांडवों का बड़ा मर्द्दन और नाशकिया हे श्रेष्ठ उसके धनुषकी प्रत्यंचा और तलका शब्द दशोंदिशाओंमें सुना गया ४१ वह शब्द हजारों मनुष्यों का भयभीत करनेवाला वज्रके समानथा इसअन्तर में बिजयका अभ्यासी अर्जुन बहुत से संसप्तकों को विजयकरके ४२ वहां आया जहां पर कि वह द्रोणाचार्य्य जी पांडवों का मर्द्दन कररहे थे संसप्तकों को मारकर उन बड़े भारी भँवर और रुधिर रूप जल संयुक्त ह्रद रखनेवाली रुधिर प्रवाहसे बहनेवाली नदी से पार उतरा हुआ अर्जुन दृष्टिगोचर हुआ हमने उस कीर्तिमान् और सूर्य्यके समान तेजस्वी अर्जुन के चिह्न ४३। ४४ वानरी ध्वजाको तेजसे प्रकाशमान देखा उस संसप्तका नाम समुद्रको अस्त्रोंकी किरणों से शुष्क करके ४५ प्रलय कालके समान उस पांडव अर्जुनने कौरवोंकोभी तपाया अर्जुनने अस्त्रोंकेसंताप से सबकौरवोंको ऐसे भस्मकरदिया ४६ जैसे कि प्रलय कालकी उठीहुई अग्नि सब जीवोंको भस्म करदेती है इसके बाणोंके हजारों समूहोंसे घायल हुये हाथी घोड़े और रथोंकी सवारीसे लड़नेवाले ४७ शूरवीर पृथ्वीपर गिरे और कितनेही बाण लगने वालों से पीड़ित मनुष्यों ने महापीड़ा के शब्द किये और कितनेही

नाश होगये ४८ और कुछेक मनुष्य अर्जुन के बाणों से पीड़ित और निर्जीव होकर गिरपड़े उन सबमेंसे कितनेही उछल २ कर गिरे और मुख फेरनेवालेशूर-बीरों को शूरोंके ब्रतको स्मरण करते अर्जुनने नहीं मारा फिर वह गिरेहुये और अपूर्व रथवाले मुखोंको फेर फेर कर बहुतसे कौरव पुकारे ४६।५० कि हाय कर्ण हाय कर्ण तब अधिरथी कर्ण उन शरण चाहनेवालोंके दीनताके बचनोंको सुन कर ५१ भयमतकरो यह कहकर अर्जुन के सम्मुखगया हे भरतबंशी उन रथियों में श्रेष्ठ सब भरतबंशियों के प्रसन्न करनेवाले ५२ और अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ कर्णने अग्न्यास्त्रको प्रकटकिया तब अर्जुन ने उस प्रकाशित बाण समूह और धनुष रखनेवाले कर्ण के ५३ बाण समूहोंको अपने बाण समूहोंसे काटा और कर्णने भी उस अग्नि रूप अर्जुन के भी बाणोंको काटा ५४ और अस्त्रको अस्त्रसे अच्छीरीतिसे रोंककर बाणों को छोड़ताहुआ अत्यन्तगर्जा फिर धृष्टद्युम्न भी-मसेन और महारथी सात्यकि ने ५५ कर्ण को पाकर तीन २ बाणों से घायल किया कर्ण ने अर्जुन के अस्त्रको बाणकी बर्षासे हटाकर ५६ उन तीनोंके धनुषों को तीन बिशिखों से काटा वह टूटे धनुष और निर्विष सर्पों के समान शूरवीर ५७ रथसे अपनी शक्तियों को फेंककर सिंहों के सदृश अत्यन्त गर्जे हाथ से छोड़ी हुई और बड़ी शीघ्रगामी सर्पों के समान ५८ प्रकाशमान महाशक्तियां कर्ण के ऊपरगई तब बाणों के समूहों से और मुख्य तीन २ बाणों से उन श-क्तियों को काटकर ५६ अर्जुन के ऊपर बाणों को छोड़ताहुआ बलवान् कर्ण गर्जा फिर अर्जुन ने भी सात बाणों से कर्ण को घायल करके ६० तीक्ष्ण धार वाले बाणसे कर्ण के छोटेभाई को मारा इसके पीछे अर्जुनने छःबाणों से शत्रुं-जयको मारकर ६१ शीघ्रही भल्लसे बिपाटके शिरको रथ से गिराया धृतराष्ट्रके पुत्रों के देखते हुये अकेले अर्जुन ने ६२ कर्ण के सम्मुखही उसके तीनभाइयों को मारा उसकेपीछे भीमसेनने गरुड़के समान अपने रथसे उछलकर ६३ उत्तम खड्गसे कर्ण के पन्द्रह पक्षवालोंको मारा फिर रथमें नियतहो द्वितीय धनुपको लेकर ६४ दशबाणों से कर्णको और पांच बाणों से सारथीसमेत घोड़ोंको घा-यलकिया धृष्टद्युम्नने भी उत्तम खड्ग और प्रकाशित ढालको लेकर ६५ निषध देशी बृहच्छत्र और चन्द्रवर्माको मारा इसके पीछे धृष्टद्युम्नने अपने रथमें निय-तहोकर दूसरे धनुपको लेकर ६६ युद्ध में गर्जना करके तिहत्तर बाणों से कर्ण

को घायलकिया फिर चन्द्रमाकेसमान सात्यकी भी दूसरे धनुषको लेकर ६७ चौं-सठ वाणोंसे कर्णको वेधकर सिंहके समान गर्जा अच्छेप्रकारसे छोड़ेहुये दोभल्लोंसे कर्णके धनुषको काटकर ६८ फिर कर्णको तीन वाणोंसे भुजा और छाती पर घायलकिया इसके पीछे दुर्य्योधन द्रोणाचार्य्य और राजाजयद्रथ ने ६९ डूबे हुये कर्णको सात्यकीरूप समुद्र से निकाला फिर आपके अन्य २ सैकड़ों प्रहार करनेवाले शूरवीर पति घोड़े रथ और हाथियोंको ७० दौड़तेहुये कर्ण के समीप दौड़े तब धृष्टद्युम्न भीमसेन अभिमन्यु अर्जुन ७१ नकुल और सहदेव ने युद्ध में जाकर सात्यकी की रक्षाकरी इसरीति से आपके और पांडवों के सब धनुषधारियों के नाशके निमित्त प्राणों को त्याग करके यह बड़ा भारी भयानक युद्ध हुआ पदाती रथी हाथी और घोड़े दूसरे रथ हाथी और घोड़ों के अन्य २ पतियोंके साथ युद्ध करनेवालेहुये ७२।७३ रथी हाथी से पती घोड़ों से रथपति अन्य घोड़े रथ और हाथियोंके साथ घोड़ों से घोड़े हाथियोंसे हाथी और रथियोंसे रथी युद्ध करनेवाले हुये ७४ पती भी पतियों के साथ भिड़ेहुये दिखाई पड़े इसप्रकार मांसाहारियोंका प्रसन्न करनेवाला घोर और कठिन युद्धहुआ ७५ उन महापुरुषों के साथ निर्भय लोगों का युद्ध यमराज के देशोंका अत्यन्त वृद्धि करनेवाला हुआ ७६ इसकेपीछे बहुत से हाथी रथपति और घोड़े दूसरे रथ घोड़े हाथी और मनुष्यों से मारेगये हाथियों से हाथी और रथियों से शस्त्रधारी रथी घोड़ोंसे घोड़े और पतियों के समूहोंसे पति मारेगये ७७ रथियों से हाथी और उत्तम हाथियों से बड़े घोड़े और घोड़ोंसे मनुष्य और उत्तम रथियोंसे वह घोड़े जिनकी जिह्वा दांत और आंखें निकलपड़ी और कवचसमेत भूषण टूटे उनसबने मृत्युकोपाया ७८ इसीप्रकार अन्य बहुतसी क्रियावाले उत्तम शस्त्रों से मरेहुये भयानक रूप होकर पृथ्वीपर गिरपड़े घोड़े और हाथियोंके पैरों से घायल और मर्दनकियेहुये अत्यन्त व्याकुल और घोड़ों के खुर और रथके पहियों से कुचले हुये थे ७९ वहां महाभयानक कुत्ते शृगाल पक्षी और राक्षसोंके अत्यन्त प्रसन्नकरनेवाली पुरुषों की प्रलय वर्त्तमान होने पर वह क्रोधयुक्त बड़ीसेना परस्पर मारती हुई पराक्रम से घूमनेवाली हुई ८० हे भरतवंशी तदनन्तर सूर्य के अस्ताचल पर नियत होनेपर वह अत्यन्त चलायमान रुधिर से भरीहुई परस्पर में देखनेवाली दोनों सेना डेरों में गईं ८१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

तेंतीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि प्रथम बड़े तेजस्वी अर्जुनसे हमारे शूरबीरों के पराजय होनेपर और द्रोणाचार्य्यके निष्फल प्रतिज्ञा होने और युधिष्ठिरके रक्षित होनेपर १ आप के सब युद्धकर्त्ता टूटे कवच और युद्धमें पराजित धूलमें लिपटे अत्यन्त व्याकुलहोकर दशोंदिशाओं के देखनेवाले हुये इसके पीछे भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के कहने से विश्रामको करके युद्धमें लक्षभेदी बाणोंसे घायल और कठिन कर्मोंके करनेसे निश्चेष्ट होगये २।३ स्तुतिमान् पुरुषों में अर्जुनके असंख्य गुण और अर्जुन में केशवजी की प्रीतिको कहनेपर ४ दुष्ट कर्मोंसे अपवाद युक्तोंके समान ध्यान रूप मौनतामें नियतहुये इसके पीछे प्रातःकालके समय दुर्योधन द्रोणाचार्य्यजीसे बोला ५ अर्थात् शत्रुओंकी वृद्धिसे खेदित चित्त महाक्रोध युक्त वार्त्तालापमें कुशल दुर्य्योधन नम्रता और अहंकारसे सब शूरों के समक्षमें यह बचन बोला ६ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ निश्चय करके हम आपके कारणसे बध्यपक्षमें हैं अब भी आपने इसप्रकार सम्मुख पायेहुये युधिष्ठिरको नहीं पकड़ा ७ देवताओं समेत पांडवोंसे रक्षित युद्धमें नेत्रके सम्मुख आयेहुये शत्रुको आप पकड़ना चाहैं तो वह किसी प्रकारसे भी नहीं छूटसक्ताहै ८ आपने प्रसन्नता से मुझ को वरदान देकर विपरीत कर्म कियाहै उत्तमपुरुष किसी दशामें भी अपने भक्त को निराश नहीं करतेहैं इसके पीछे बड़े लज्जित होकर भारद्वाजजी दुर्योधनसे बोले कि मैं तेरे प्रियमें उपाय करनेवालाहूं तुमको मुझे वैसा न जानना चाहिये ९।१० देवता असुर गन्धर्व यक्ष सर्प और राक्षसों समेत सब लोकभी इस अर्जुनके रक्षा कियेहुये पुरुषको विजय करनेको समर्थ नहींहैं ११ जहां सबके पति जगत्के स्वामी गोबिन्दजी और सेनापति अर्जुनहैं वहां सिवाय प्रभु शिवजी के और किसकी सेना जासक्तीहै १२ हे तात अब मैं सत्य २ कहताहूं यह कभी मिथ्या न होगा कि अबमैं किसी एक अत्यन्त उत्तम महारथीको गिराऊंगा १३ मैं उस व्यूहको रचूंगा जो कि देवताओंसे भी नहीं टूटसक्ताहै हे राजा अब तुम किसी उपायसे अर्जुनको दूरलेजाओ १४ युद्धमें कोई बात भी उससे अविदित और करनेके अयोग्य नहीं है उसने सम्पूर्ण प्रकारके ज्ञान विद्या आदि जहां तहां से प्राप्त किये हैं १५ द्रोणाचार्य्य के इसप्रकार कहनेपर संसप्तकों के समूहों

ने अर्जुनको दक्षिण दिशाकी ओर बुलाया १६ फिर इसके पीछे अर्जुनका युद्ध शत्रुओंसे उस प्रकारका हुआ जैसा कभी न देखाथा न सुनाथा १७ हे राजा वहां द्रोणाचार्य्य का रचाहुआ व्यूह ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि मध्याह्नके समय अत्यन्त संतप्तकर्त्ता कठिनतासे देखनेके योग्य घूमताहुआ सूर्य्य होताहै १८ हे भरतवंशी अभिमन्युने अपने ताऊजीके वचनसे उस कठिनतासे तोड़ने के योग्य व्यूहको युद्धमें अनेक प्रकारसे तोड़ा १९ फिर वह उस कठिनकर्मको करके और हजारों वीरों को मारकर छःवीरों से भिड़ाहुआ दुश्शासनके पुत्र के आधीन हुआ २० हे शत्रुसंतापी राजा धृतराष्ट्र उस सुभद्राके पुत्र अभिमन्युने प्राणोंको छोड़ा उसके सुननेसे हम अत्यन्त प्रसन्न और पांडव शोकग्रस्तहुये हे राजा अभिमन्युके मरनेपर हमने विश्राम लिया २१ धृतराष्ट्र बोले हे संजय उस पुरुषोत्तमके पुत्रको जिसने तरुणताको भी नहीं पायाथा युद्धमें मराहुआ सुन-कर मेरा चित्त अत्यन्त दुर्विदीर्ण होताहै २२ धर्म नियत करनेवालोंने यह क्षत्रिय धर्म बड़ा भयकारी नियतकियाहै जिसधर्ममें राज्यके अभिलाषी शूरबीरोंने बाल-कके ऊपर शस्त्रोंका प्रहारकिया २३ हे संजय अब तुम यह बताओ कि बड़ेभारी अस्त्रज्ञ लोगोंने उस महासुखी और निर्भयके समान घूमनेवाले बालकको कैसे२ मारा २४ हे संजय जैसे कि रथकी सेना के तोड़ने के अभिलाषी बड़े तेजस्वी अभिमन्युने युद्धमें क्रीड़ाकरी वह सब तुम मुझसे कहो २५ संजयबोले हे राजा जो आप अभिमन्युका मारना मुझ से पूछतेहो वह मैं संपूर्णता पूर्व्वक तुमसे कहताहूं तुम बड़ी सावधानीसे सुनो कि जिसप्रकार सेनाके तोड़नेके अभिलाषी कुमारने क्रीड़ाकरी और जैसे आपत्तिमें भी पड़कर कठिनता से विजय करनेके योग्य वीरों को मारा जैसे कि बहुतसे गुल्म तृण और वृक्षवाले बनमें दावानल नाम अग्निसे घिरेहुये बनवासी जीवों को भय होता है उसीप्रकार आपके शूर-वीरोंको भी भय उत्पन्न हुआ २६ । २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रयस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ३३ ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि युद्धमें अत्यन्त भयकारी कर्मवाले और कर्म में शस्त्रों का अभ्यास प्रकट करनेवाले पांचो पाण्डव श्रीकृष्णजी समेत देवताओं से भी

विजय करने को कठिनहैं १ वुद्धिका पराक्रम कर्म कुल वुद्धि कीर्त्ति यश और लक्ष्मीसे युक्त ऐसे न हैं न होंगे न थे और न वैसे सदैव सर्वगुण संपन्नवाले पुरुषहैं २ और निश्चय सच्चे धर्ममें प्रीति रखनेवाला जितेन्द्रिय राजा युधिष्ठिर ब्राह्मणादि करके पूजनादि गुणोंसे सदैव स्वर्गका प्राप्त करनेवाला है ३ हे राजा प्रलयकाल में मृत्यु व पराक्रमी परशुरामजी और युद्ध में नियत भीमसेन यह तीनों एकसे कहेजाते हैं ४ प्रतिज्ञा और कर्म में कुशल और सावधान गांडिव धनुषधारी अर्जुन के समान दृष्टान्तके अर्थ उपमाके देनेको इस पृथ्वीपर युद्ध में लड़नेवाला मैं किसीको नहीं पाताहूं ५ नकुल में गुरुभक्ति सेवा परायणता नम्रता शान्ती जितेन्द्रियपन बीरता और अनुपम स्वरूपता यह गुण वर्त्तमान हैं ६ निश्चयकरके शास्त्र गंभीरता मधुरता सत्यता और स्वरूपसे बीर सहदेव यह दोनों अश्विनीकुमार देवताओं के समानहैं ७ जो वृद्धियुक्त गुण श्रीकृष्ण जीमें हैं और जो गुण कि पांडव अर्जुनमें हैं निश्चयकरके वह सबगुण अभिमन्युमें वर्त्तमान दीखते थे वह अभिमन्यु पराक्रम में युधिष्ठिर के और कर्म में श्रीकृष्णजीके और भयानक कर्म करने में भीमसेनके समान था ८। ९ और रूप-पराक्रम और शास्त्रमें अर्जुनके और नम्रतामें सहदेव और नकुलके समान था १० धृतराष्ट्र बोले हे सूत मैं उस अजेय सुभद्राके पुत्र अभिमन्युके सब वृत्तान्तको यथार्थ सुनाचाहताहूं वह ऐसा बीर बालक युद्धभूमिमें कैसे मारागया ११ संजय बोले हे महाराज स्थिरचित्त होकर दुस्सह शोकको सहो अब मैं बांधवोंके बड़े नाशको तुमसे कहताहूं तुम उसको सावधानीसे सुनो १२ हे महाराज आचार्य्यजी ने चक्रव्यूह को रचा उसमें इन्द्रके समान सब राजा नियत किये १३ और द्वारोंपर सूर्यके समान तेजस्वी कुमार नियतकिये तब सब राजकुमार इकट्ठेहुये १४ सब नियम करनेवाले सुनहरी ध्वजा लालवस्त्र रक्ताभरणधारी १५ लाल पताकावाले सुनहरी माला युक्त अगर चन्दनसे लिप्त अंग होकर सूक्ष्म वस्त्रों केही धारण करनेवाले थे १६ वह सब मिलकर अभिमन्युसे युद्धाभिलाषी होकर एकसाथही दौड़े उन दृढ़धनुषधारियों की दशहजार संख्या थी १७ वह सब आपके दर्शनीयपौत्र लक्ष्मणको आगे करके समानदुःखी और समानही साहसी १८ परस्पर में ईर्षायुक्त और प्रिय करने में प्रवृत्तचित्त थे हे राजा दुर्योधन भी सेनाके मध्यमें आकर १९ राजाकर्ण दुश्शासन और कृपाचार्य्य आदिक

महारथियों समेत देवराज इन्द्रके समान शोभायमान श्वेतछत्रसे संयुक्त होकर नियतहुआ २० और चमररूप पंखोंके चलाने से उदय होनेवाले सूर्य्यके समान था उस सेना के मुखपर सेनापति द्रोणाचार्य्य के नियत होनेपर २१ श्रीमान् राजा सिंधभी मेरुपर्व्वत के समान निश्चल होकर नियतहुआ और देवताओं के समान आपके वह तीसपुत्र जिनके अग्रगामी अश्वत्थामाजी थे यह सब सिंधके राजाके पक्षमें नियतहुये हे महाराज राजा गान्धार कितव शल्य और भूरिश्रवा २२ । २३ यह सब महारथी राजासिंध के पक्षमें नियतहुये उसके पीछे अपने जीवनसे निराश होकर आप के शूरवीर और दूसरों का युद्ध महाकठिन और रोमहर्षण करनेवाला जारीहुआ २४ । २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि वह पांडव जिनका अग्रगण्य भीमसेनहै उस भारद्वाजजी से रक्षित और अजेय सेनाके सम्मुख वर्त्तमानहुये १ सात्यकी, चेकितान, पुरुषत कापुत्र धृष्टद्युम्न, पराक्रमी कुन्तभोज, महारथी द्रुपद, अभिमन्यु, क्षत्रधर्मा, पराक्रमी बृहच्छत्र, धृष्टकेतु, चन्देरीकाराजा नकुल, सहदेव, घटोत्कच २ । ३ पराक्रमी युधामन्यु, अजेयशिखंडी, साहसी उत्तमौजा, महारथी विराट ४ द्रौपदी के पुत्र क्रोधमूर्त्ति शिशुपालका पुत्र पराक्रमी बड़ेबली केकय और हजारोंसृंजी ५ यह और अन्य २ अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्मद अपनेसमूहों समेत द्रोणाचार्य्यसे लड़ने के अभिलाषी एकाएकी सम्मुख दौड़े ६ बड़े पराक्रमी और निर्भय भारद्वाज द्रोणाचार्य्य ने उन सम्मुख वर्त्तमान शूरवीरों को अपने बाणों के बड़े समूहों से रोका ७ जैसे कि जलका बड़ा समूह दुःख से पराजय होनेवाले पहाड़ को पाकर नियत नहीं रहताहै उसी प्रकार यह सब वीरभी द्रोणाचार्य्यके सम्मुख ऐसे नियत नहीं रहे जैसे कि नदियां मर्य्यादापर नियत नहीं रहतीं ८ हे राजा भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के धनुष से निकलेहुये बाणोंसे पीड़ामान पाण्डव उनके सम्मुख खड़े होनेको समर्थ नहीं हुये ९ हमने द्रोणाचार्य्यकी दोनों भुजाओंका वह अपूर्व्व पराक्रम देखा जो सृंजियों समेत पांचालदेशी उनके सम्मुख नियत नहीं के युधिष्ठिर ने उस अत्यन्त क्रोधयुक्त आतेहुये द्रोणाचार्य्य को देखकर

उनके रोकनेको अनेकप्रकार से विचार किया १० । ११ फिर युधिष्ठिरने उन द्रोणाचार्य्य को अन्य से अजेयमानकर बड़े भारी असह्य कठिन भार को अभिमन्युके ऊपर छोड़कर १२ वासुदेव जी और अर्जुन के समान बड़े तेजस्वी शत्रुओं के वीरोंको मारनेवाले अभिमन्युसे यह बचन कहा १३ कि हे तात अर्जुन आकर जिस प्रकार से हमारी निन्दा न करे उसी प्रकार को करो हम चक्रव्यूह का तोड़ना किसी प्रकारसे भी नहीं जानतेहैं १४ उस चक्रव्यूहको अर्जुन श्रीकृष्ण जी प्रद्युम्न जी अथवा तुम तोड़सक्ते हो हे महाबाहु तुम चारों के सिवाय पांचवां कोई तोड़नेवाला नहीं है १५ हे पुत्र अभिमन्यु तुम पिता आदिक वा मामा अथवा सब सेनाओं का मांगा हुआ यह बरदान देने को योग्यहो १६ नहीं तो हे पुत्र अर्जुन युद्धभूमि से आकर हमारी निन्दा करेगा इस हेतुसे तुम शीघ्रही अस्त्रको लेकर द्रोणाचार्य्य की सेनाको मारो १७ अभिमन्यु बोला कि मैं पितालोगों की बिजयको चाहता हुआ युद्ध में द्रोणाचार्य्य की अत्यन्त उत्तम दृढ़ और बड़ी भयकारी शीघ्रगामिनी सेनाको मैंझाऊंगा १८ मेरे पिताने सेनाके नाश करने में मुझको योगका उपदेश किया है परन्तु मैं किसी आपत्ति में बाहर निकलने को उत्साह नहीं करता हूं १९ युधिष्ठिर बोले कि हे शूरबीरोंमें श्रेष्ठ तू सेनाको पराजित करके हमलोगों के द्वारको उत्पन्नकर हे तात हम सबभी तेरे पीछे उसी मार्गसे जायँगे जिस मार्गसे तुम जावोगे २० हे तात हम युद्धमें अर्जुनके समान तुमको लड़ाई में आगे करके सब ओरको मुख किये हुये तेरीरक्षा करतेहुये पीछे २ चलैंगे २१ भीमसेन बोले कि मैं तेरे पीछे जाऊंगा और धृष्टद्युम्न, सात्यकी, पांचलदेशी, कैकय, मत्स्यदेशी और सब प्रभद्रक भी तेरे पीछे २ चलेंगे २२ हम एकवार तेरे तोड़ेहुये व्यूहको जहां तहां उत्तम २ शूरबीरोंको मारतेहुये वार २ सबका नाशकरैंगे २३ अभिमन्यु बोले कि मैं द्रोणाचार्य्यके इस दुःखसे सम्मुखताके योग्य सेनामें ऐसी रीतिसे प्रवेश करूंगा जैसे कि अत्यन्त क्रोधयुक्त पतंग पक्षी प्रज्वलित अग्निमें जाताहै २४ अब मैं उस कर्मको करूंगा जो दोनों कुलोंका प्रिय होगा और वह मेरेमामू व पिताकी प्रसन्नताहै उसीको उत्पन्न करूंगा २५ निश्चय करके सब जीवधारी युद्धमें मुझ बालकसे हटायेहुये शत्रुओंकी सेनाओंके समूहोंको देखैंगे २६ मैं अर्जुनसे पैदा नहीं अथवा सुभद्रा से भी उत्पन्न नहीं हूं जो अब मेरे युद्धमें कोई भी जीवता

वचसकै २७ जो मैं युद्ध में एकरथसे सम्पूर्ण क्षत्रीमंडलको आठ खण्ड न करूं तो अर्जुनका पुत्र नहींहूं २८ युधिष्ठिर बोले कि हे अभिमन्यु तुझ ऐसे वचन कहनेवाले के पराक्रमकी वृद्धिहोय जो तू द्रोणाचार्य्य की उस सेना के पराजय करनेको उत्साह करताहै जो कि कठिनतासे सम्मुखहोनेके योग्य और साध्य रुद्र मरुतनाम देवता वसु अग्नि और सूर्य्यके तुल्य पराक्रमी महाबली बड़े धनुष-धारी पुरुषोत्तमोंसे रक्षितहै २९।३० संजय बोले कि युधिष्ठिरने अभिमन्युके इस वचनको सुनकर सारथीको प्रेरणा करी ३१ कि हे सुमित्र युद्धमें घोड़ोंको शीघ्र-तासे द्रोणाचार्य्यकी सेनामें चलायमान करो ३२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५॥

छत्तीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि हे भरतवंशी अभिमन्यु ने बुद्धिमान् धर्मराजके उस वचन को सुनकर सारथीको द्रोणाचार्य्यकी सेनामें चलने की आज्ञादी १ चलो चलो ऐसी रीतिसे उसकी आज्ञाको पाकर वह सारथी अभिमन्युसे यह वचन बोला २ हे चिरंजीवि पांडवों ने यह बड़ाभारी बोझा तुझपर नियतकिया है एकक्षणभर बुद्धि से विचारकर फिर तुम युद्ध करनेको योग्यहो ३ द्रोणाचार्य्य बड़े अस्त्रादि-क कर्मोंकेज्ञाता और परिश्रमी हैं और तुम बड़े सुखमें पोषण पानेवालेहो अभी युद्धमें अति कुशल नहींहो ४ इसके पीछे अभिमन्यु अत्यन्त हँसताहुआ सा-रथीसे यह वचन बोला हे सारथी यह द्रोणाचार्य्य अथवा सम्पूर्ण क्षत्रीमंडलभी क्या पदार्थहै ५ मैं युद्धमें देवताओं समेत ऐरावत हाथीपर सवार इन्द्रको अथवा सब जीवधारियोंके समूहोंसे पूजित ईश्वर रुद्रजीसे भी युद्ध करसक्ताहूं अब मु-झको इस क्षत्रीमंडलमें किसीप्रकारका भय नहीं है ६ यह शत्रुओंकी सेना मेरी सोलहवीं कलाके भी योग्य नहीं है हे सूतके बेटे विश्वभरके स्वामी अपनेमामा विष्णुजीको पाकर और युद्धमें अर्जुनको भी पाकर मेरे सम्मुख भय नहीं आ-वेगा इनवाक्योंसे अभिमन्यु सारथीके उस वचनको तुच्छ और कदर्थी करके ७।८ उससे कहनेलगा कि द्रोणाचार्य्य की सेनामें चल विलम्ब मतकर उसके पीछे उस सारथीने जो कि मनमें अत्यन्त अप्रसन्नथा सुनहरी सामान और तीन वर्ष की अवस्थावाले घोड़ोंको शीघ्रही चलायमान किया सुमित्रसे द्रोणाचार्य्य की

सेनामें भेजेहुये वह घोड़े ९ । १० वड़े वेग और पराक्रमवाले द्रोणाचार्य्यके सम्मुखगये हे राजा सब कौरव जिनके अग्रगामी द्रोणाचार्य्यथे वह सब उस आते हुये अभिमन्यु को देखकर सम्मुख वर्त्तमान हुये और पांडव लोग उसके पीछे चले ११ वह श्रेष्ठतम कर्णकार वृक्षके चिह्नवाली ध्वजाको ऊंचाकरनेवाला अर्जुनके समान पराक्रमी सुवर्णकी ध्वजावाला अर्जुनका पुत्र अभिमन्यु युद्धाभिलाषीहोकर द्रोणाचार्य्य आदिक महारथियोंके सम्मुख ऐसे हुआ जैसे कि सिंहका बच्चा हाथियोंके सम्मुखहोय वह सब प्रसन्नतासे युक्तहोकर प्रवेशितहुये और ऐसा वड़ाभारी युद्ध एक मुहूर्त्ततक किया जैसे कि गंगाजी का आवर्त समुद्रमें होताहै १२।१३ हे राजा परस्पर मारते और लड़तेहुये शूरवीरोंका युद्ध कठिन और महाभयकारी वर्त्तमानहुआ १४ उस अत्यन्त भयानक युद्धके वर्त्तमान होनेपर अर्ज्जुन का पुत्र अभिमन्यु द्रोणाचार्य्य के देखते व्यूह को बेधकर प्रवेशकरगया १५ हाथी घोड़े रथ और पत्तियों के शस्त्र उठानेवाले समूहों ने उस प्रवेश करके शत्रुओं के समूहों को मारते हुये महाबली अभिमन्यु को चारों ओर से घेरलिया १६ नानाप्रकारके बाजे और कठिन गर्ज्जनाओंकीध्वनि टंकार सिंहनाद और खड़ा हो खड़ाहो इन शब्दों के १७ और घोरहला हलानाम शब्दों के साथ मतजाओ यहां मेरे सम्मुख खड़ाहो हे शत्रु यह मैं हूं इसरीतिसे अनेक भांति वारम्बार वचन कहनेवाले हुये १८ हाथियों की चिंहाड़ गर्ज्जना हंसना खुर और रथके पहियों के शब्दों से पृथ्वी को शब्दायमान करते अभिमन्युके सम्मुखगये १९ हे राजा शीघ्रता से युद्धकरनेवाले और अस्त्र चलानेवाले मर्मस्थलों के जाननेवाले महाबली वीर अभिमन्यु ने मर्मभेदी वाणों से उन आनेवाले शूरवीरों को घायल किया २० नानाप्रकार के चिह्नवाले तीक्ष्ण वाणों से घायल अस्वतंत्र वह वहुत से शूरवीर उसके सम्मुख ऐसे आये जैसे कि टीड़ीदल अग्नि के सम्मुख आता है २१ इसके पीछे उस अभिमन्यु ने उन शूरों के शरीर और शरीरों के अंगों से ऐसे शीघ्र पृथ्वीको आच्छादित किया जैसे कि यज्ञके मध्यमें कुशाओं से वेदीको आच्छादित करते हैं २२ हस्तत्राण के धारण करनेवाले, धनुष, वाण, तलवार, ढाल, अंकुश, लगाम, तोमर, फरसे २३ गदा, आयोगुड़, प्रास, दुधारे खड्ग, तोमर, पट्टिश, भिन्दपाल, परिघ, शक्ति, वाण, कंपन २४ चावुक, महाशंख, भल्ल, कचग्रह, मुद्गर, क्षेपणी, पाश,

परिघ और उपल के रखनेवाले २५ केयूर, बाजूबन्द आदि भूषणों से युक्त मनोहर सुगन्धियों से संयुक्त आपके शूरबीरों की हजारों भुजाओं को जो २ कि दृष्टिके सम्मुख आई उन सबको अभिमन्यु ने काटा २६ हे श्रेष्ठ महाराज उन फड़कती और अत्यन्त रक्तवर्णवाली भुजाओं से पृथ्वी ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि गरुड़ जी के काटे हुये पंचमुखी सर्पों से शोभितहोती है सुन्दरनाक मुख केशान्त धारी और स्वच्छ कुंडल रखनेवाले और बहुत रुधिरको छोड़ते क्रोध से दोनों ओठोंको काटनेवाले २७। २८ मणिरत्नोंसे अलंकृत सुन्दर मुकुट और पगड़ी रखनेवाले नालसे रहित कमलके स्वरूप सूर्य्य चन्द्रमाके समान प्रकाशमान २९ समयपर प्रियबाणी से शुभवार्त्ता के कहनेवाले बहुत पवित्रसुगंधियों से युक्त शत्रुओं के शिरों से उस अभिमन्युने पृथ्वीको आच्छादित करदिया ३० गन्धर्व नगर के समान विधिपूर्व्वक अलंकृत ईशा रूप मुख और विचित्र तूणवाले रथोंको जिनके दंडकबन्धुर गिर पड़े ३१ चक्र उपस्कर और उपस्थों से रहित और सबसामान भी टूटगये थे अथवा जिनके उपस्तरण गिरपड़े और हजारों जीवधारी जोकि जांघ चरण नाक और दांतों से भी रहित होगये थे वह सब मरगये उनरथों को खंड २ करता सब दिशाओंमें दिखाई पड़ा ३२। ३३ फिर हाथी और हाथी के सवार बैजयन्ती अंकुश ध्वजा तरकस छ कवच हाथी के बन्धन की रस्सी गलेकाभूषण कम्बल ३४ घंट, सूंड़, दांतकीनोक, छत्र, माला, पदानुग शत्रुओं के इन सब सामान आदिकों को तीच्ण धार वाले बाणों से नाशकिया ३५ बानायुज प्रकार के पहाड़ी कांबोजदेशी और बाह्लीक देशी घोड़ोंको जिनकी आंख कान और पूंछनियतथी शीघ्रगामी और अच्छेलोगों के सवार करानेवाले थे ३६ और शक्ति दुधारे खड्ग और पासों से युद्ध करनेवाले होकर शिक्षित शूरवीरों से युक्तथे जिनके चामरमुख टूटे उनप्रसिद्ध घोड़ों को ३७ जिनकी जिह्वा और आंखें निकल पड़ीथी कान आंखसे रहित जिन के कि सवार मरगये घंटेटूटगये और गिद्धराक्षसादि के समूहों के प्रसन्न करने वाले थे ३८ और जिनके चर्मका कवच कटगया बारंबार मूत्र रुधिर से लिप्तथे उन आपके उत्तम घोड़ों को गिराताहुआ शोभायमानहुआ ३९ अकेले विष्णु भगवान् के समान एकाकी नेही ध्यानसे अगम्य बड़े दुःखसे करने के योग्य कर्म को करके उसने इसरीतसे आपकीतीन अंग रखनेवाली बड़ी सेनाको बारंबार ऐसे

मथ डाला ४० जैसेकि बड़े तेजस्वी शिवजी असुरों की बड़ी घोर सेना को मथते हैं अर्जुन के पुत्रने शत्रुओं के साथ असह्य कर्म को करके ४१ आप के सब शूरबीरों को बाणों से घायलकिया जैसे कि देवताओंके सेनापति स्वामकार्त्तिक जी असुरों की सेनाको मारते हैं उसी प्रकार उस अकेले अभिमन्यु के तीक्ष्ण बाणों से उस सेनाको अत्यन्त घायल देखकर आप के पुत्र और शूरबीर दशों दिशाओं को देखते ४२।४३ अत्यन्त शुष्कमुख और चलायमान नेत्र पसीनेसे लिप्त शरीर रोमांचों से युक्त भागनेके विचारमें चित्तसे प्रवृत्त शत्रुके बिजय करने में साहसों को त्यागेहुये ४४ जीवनके अभिलाषी सबलोग गोत्र और नामों के द्वारा परस्परमें पुकारे मरेहुये पुत्र पिता भाई बांधव और नातेदारोंको ४५ छोड़कर घोड़े और हाथियों को शीघ्र चलाते सम्मुखगये ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि बड़े तेजस्वी अभिमन्युसे उस अत्यन्त पराजित हुई सेना को देखकर अत्यन्त कोप में भराहुआ दुर्योधन आपही अभिमन्यु के सम्मुख गया १ तदनन्तर युद्धमें अभिमन्युके सम्मुख लौटे हुये राजाको देखकर द्रोणाचार्य्य जी शूर बीरोंसे बोले कि राजाको चारों ओर से रक्षित करो २ पराक्रमी अभिमन्यु हमारे देखतेहुये समीप ही लक्ष भेदन करताहै उसके सम्मुख जाओ भय मतकरो शीघ्रतासे इस दुर्य्योधनकी रक्षाकरो ३ इसके पीछे कृतज्ञ पराक्रमी विजयसे शोभापानेवाले और भयसे भयभीत सुहृदोंने आपके पुत्र वीर दुर्य्योधन को चारोंओर से घेरकर रक्षित किया ४ द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, कर्ण, कृतवर्मा, शकुनी, बृहद्बल, शल्य, भूरिश्रवा, पौरव, वृषसेन इस सब शूर बीरों ने तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करके अभिमन्युको ढकदिया ५।६ फिर उस अभिमन्यु को अचेत करके दुर्य्योधन को छुटाया अर्जुन के पुत्रने मुखसे गिरे हुये ग्रासके समान उस को न सहकर ७ वह सुभद्राका पुत्र बाणों के बड़े समूहों से उन महारथियों को घोड़े और सारथियों समेत मुख मोड़नेवाला करके फिर सिंहनाद को गर्जा ८ इसके अनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्यादिक रथियोंने उस मांसाभिलाषी सिंहके समान गर्जना करनेवाले अभिमन्युके ग्रा-

व्दको सुनकर नहीं सहा ६ हे श्रेष्ठ फिर उनसबोंने रथोंके समूहों से उसको घेर-कर नानाप्रकारके रूपवाले बाणजालों के समूहों को उत्पन्नकिया १० आपके पोतेने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे उन सबके बाणजालोंको अन्तरिक्ष मेंही अर्थात् बीचमेंही काटा और उनको भी घायलकिया यह बड़ा आश्चर्य्य सा हुआ ११ इसके पीछे उससे क्रोधरूप किये हुये सर्प के विषके समान बाणों से मारने के अभिलाषी उन लोगोंने अजेय अभिमन्युको चारोंओरसे घेरलिया १२ हे भ-रतर्षभ उस अकेले अभिमन्युने बाणों से आपके उस सेनारूपी समुद्रको ऐसे धारणकिया जैसे कि किनारा या मर्य्यादा समुद्रको धारणकरता है १३ परस्पर मारते और लड़ते हुये अभिमन्यु और शत्रुओंके शूरों मेंसे किसी ने भी मुख नहीं मोड़ा १४ उस घोर और भयकारी युद्धके वर्त्तमान होनेपर अन्य शत्रुओं ने नौ बाणों से अभिमन्युको घायल किया १५ दुश्शासन ने बारहबाणों से सारद्वत कृपाचार्य्य ने तीन बाणसे द्रोणाचार्य्य ने ऐसे सत्रह बाणों से जोकि सर्पके विषके समानथे १६ विविंशतिने सत्रहबाणों से कृतबर्मा ने सातबाणों से से वृहद्बलने आठबाण से अश्वत्थामा ने सात बाण से भूरिश्रवाने तीन बाणसे राजामद्रने छः बाणसे शकुनी ने दो बाणसे और राजा दुर्य्योधनने तीन बाणसे घायल किया १७।१८ हे महाराज उस धनुष हाथमें लिये नृत्य करतेके समान प्रतापी अभिमन्युने तीन २ बाणोंसे उनको घायलकिया १९ इसके पीछे आपके पुत्रोंसे व्याकुल अत्यन्त कोपयुक्त और शिक्षित अभ्याससे उत्पन्नबड़ेभारी प-राक्रमको दिखलाते अभिमन्युने गरुड़ और वायुके समान शीघ्रगामी सारथीके आज्ञावर्ती और शिक्षापायेहुये घोड़ोंके द्वारा शीघ्रता करनेवाले अश्मक पुत्र को रोंका २०।२१ और दश बाणोंसे घायलकिया और तिष्ठतिष्ठ इस वचन को भी बोला फिर मन्दमुसकान करते अभिमन्यु ने दशबाणोंसे घोड़े सारथी ध्वजा २२ भुजा और धनुष समेत उसके शिरको पृथ्वीपर गिराया अभिमन्युके हाथसे उस वीर राजा अश्मक के मरने पर २३ सब सेना भागने में प्रवृत्तचित्त होकर अत्यन्त कंपायमानहुई इसको देखकर कर्ण, कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा राजा गान्धार, शल २४ शल्य, भूरिश्रवा, क्राथ, सोमदत्त, विविंशति, वृषसेन, सुषेण, कुण्डभेदी, प्रतर्दन २५ वृन्दारक, ललित्थ, सुबाहु, दीर्घलोचन और क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने बाणों की वर्षाओं से ढकदिया २६ बड़े धनुषधारियों के

बाणोंसे अत्यन्त घायल हुये उस अभिमन्युने कवच और शरीर के भेदन करनेवाले बाणको कर्ण के मारने के लिये हाथमें लिया २७ वह बाण उसके कवचको काटकर शरीरको घायल करके ऐसे पृथ्वीमें समागया जैसे कि सर्प बामी में प्रवेश करजाताहै उस प्रहारसे पीड़ामान महाब्याकुल के समान कर्ण युद्धमें ऐसे अत्यन्त कंपायमानहुआ जैसे कि भूकम्प होनेसे पर्व्वत कम्पायमान होता है २८।२९ फिर अत्यंत क्रोधयुक्तने उसीप्रकार दूसरे तीक्ष्ण तीन २ बाणोंसे सुषेण दीर्घलोचन और कुण्डभेदी को घायलकिया ३० फिर कर्णने पच्चीस नाराचोंसे अश्वत्थामाने बीस बाणसे कृतबर्म्माने सातबाणसे घायलकिया ३१ वह इन्द्रका पोता बाणोंसे युक्त सब शरीर होकर भी पाशको हाथमें लिये सेनाके भीतर काल के समान घूमताहुआ दिखाई दिया ३२ और सम्मुख नियतहुये शल्यको बाणों की बर्षा से ढकदिया फिर वह महाबाहु आपकी सेनाओंको भयभीत करताहुआ गर्जा ३३ हे राजा इसके पीछे बड़े अस्त्रज्ञ अभिमन्युके मर्म्मभेदी बाणोंसे घायल वह शल्य रथके बैठनेके स्थानपर बैठगया और अचेत होगया ३४ यशस्वी अभिमन्युसे इसप्रकार घायल शल्यको देखकर सब सेना द्रोणाचार्य्यजी के देखते हुये भागी सुनहरी पुंखोंवाले बाणोंसे युक्त उस महाबाहुको देखकर आपके शूरबीर ऐसे भागे जैसे कि सिंहसे पीड़ामान होकर मृगभागतेहैं ३५।३६ फिर वह पितर, देवता, चारण, सिद्ध औ यक्षोंके समूहोंसे और पृथ्वीतल परवर्त्ती सम्पूर्ण जीवधारियोंके समूहों से युद्धमें कीर्त्तिमान स्तुतिमान प्रतिष्ठामान होकर ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि घृतसे सींचाहुआ अग्नि प्रकाशमान होकर शोभित होता है ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७॥

अरतीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि इसप्रकार बाणोंसे बड़े धनुषधारियोंको मर्द्दन करते उस अभिमन्युको कौनसे शूरबीरोंने रोका १ संजयबोले कि हे राजन् भारद्वाज द्रोणाचार्यसे रक्षित रथकी सेनाके तोड़नेको अभिलाषी अभिमन्यु कुमारके युद्धक्रीड़ा को सुनो २ सुभद्राके पुत्र अभिमन्युके बाणोंसे युद्धमें पीड़ामान राजामद्रको देख कर शल्यका छोटाभाई महाक्रोधित होकर बाणोंको फैलाताहुआ सम्मुख आया

और आतेही दशवाणोंसे घोड़े सारथी समेत अभिमन्यु को घायल करके वड़े शब्दसे तिष्ठ २ इसवचनको पुकारा ३।४ अर्जुनके पुत्र हस्तलाघवी अभिमन्युने उसके शिर,ग्रीवा,हाथ पैर,धनुष,घोड़े, छत्र, ध्वजा,सारथी,त्रिवेणु, कल्प ५ दोनों चक्र,युग धनुपकी प्रत्यंचा, तूणीर, अनुकर्प, पताका,चक्रके रक्षक और सब छ-त्रादिक सामानको वाणों से ६ काटा उसको किसी ने नहीं देखा फिर वह मरा हुआ जिसके कि सब भूपण और वस्त्र टूटगयेथे पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वड़े तेजस्वी वायुसे टूटाहुआ पर्वतगिरताहै इसके अनन्तर उसके सब साथीलो-गभी महाभयातुर होकर सब दिशाओंको भागे ७।८ हे भरतवंशी सब जीवधारी अभिमन्युके उस कर्मको देखकर धन्यहै धन्यहै इसशब्द के साथ चारों ओर से शब्द करनेवाले हुये ९ इसशल्यके भाई के मरनेपर वहुतसे सेनाके मनुष्य अ-पनाकुल, देश, नाम अर्जुनके पुत्रको सुनाते अत्यन्त क्रोधित नानाप्रकार के शस्त्र हाथमें लिये सम्मुख दौड़े और कोई रथ घोड़े और हाथियों की सवारी से और कितनेही वलसे प्रमत्त पदाती भी सम्मुख दौड़े १०। ११ वाणों के रथकी नेमियों के हुंकार और हिनहिनाहट गर्जना वड़े सिंहनाद ज्यातलत्रआदि के शब्दों को करते अभिमन्यु के ऊपर गर्जते थे १२ कोई शूरवीर यह बोलते थे जीवता तो रहता परन्तु अब हमारे हाथ से जीवता नही वचसकेगा १३ हँसते हुये अभिमन्यु ने उन उसप्रकार वोलतेहुये शूरवीरों को देखकर जिस २ ने पूर्व में इसपर प्रहार किया उस २ को घायलकिया १४ शूर अभिमन्यु अपूर्व तीक्ष्ण अस्त्रों को अच्छी रीतिसे दिखलाता युद्ध में मृदुताके साथ युद्ध करनेलगा १५ जो अस्त्र वासुदेवजी से और अर्ज्जुन से लिये थे उनको अभिमन्यु ने प्रकट किया वह दोनों अस्त्रभी श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनकेही समानथे १६ वारम्बार उस वड़े वोझे को और भयको हटाते सहते वाणों को चढ़ाते और छोड़ते निर्वि-शेप दिखाई पड़े १७ इस का धनुपमंडल दिशाओं में चलायमान होकर ऐसा दिखाईदिया जैसे कि शरदऋतु में अत्यन्त प्रकाशमान सूर्य्य का मंडल होता है १८ उसकी प्रत्यंचा का और नलका शब्द ऐसा भयकारी जान पड़ता था जैसे कि वर्पाकेसमय वड़ी विजली छोड़नेवाले वादलका शब्दहोताहै १९ महा नम्रतासेयुक्त क्रोधसे अग्नि रूपमान करनेवाला अपूर्व दर्शनीय अभिमन्यु वीरों की अच्छी रीति से प्रतिष्ठा करता वाणोंसे और अस्त्रोंसे युद्धको करके हे महा-

राज वह नम्र होकर भी फिर ऐसा कठिन वर्त्तमानहुआ जैसे कि वर्षाऋतुको उल्लंघनकर शरदऋतुमें भगवान् सूर्य्यदेवता प्रचंड होतेहैं २०।२१ उस क्रोधाग्नि रूपने विचित्र तीक्ष्णधार सुनहरी पुंखवाले बाणों को ऐसे छोड़ा जैसे कि सूर्य्य किरणोंको छोड़ता है २२ उस बड़े तरुण अवस्थावाले यशस्वीने क्षुरप्र, वत्सदन्त, विपाट, नाराच, अर्द्धचन्द्राकार भल्ल और अंजलिकोंसे भी २३ भारद्वाज द्रोणाचार्य्यके देखतेहुये रथवाली सेनाको आच्छादित करदिया उसके पीछे बाणों से पीड़ामान होकर वह सेना मुख फेरफेरकर भागी २४॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८॥

उन्तालीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मेरा चित्त भय और प्रसन्नतासे दोप्रकार का होताहै जो अभिमन्युने मेरेपुत्र की सेनाको अच्छी रीतिसे रोंका १ हे संजय फिर उस कुमारकी सबक्रीड़ा को ब्योरे समेत मुझसे कहो जो कि असुरों के साथ स्वामिकार्त्तिक जीकी क्रीड़ाके समानथी २ संजयबोले कि बड़े खेदकी बात है कि मैं इस भयकारी युद्धको उसीप्रकार से आपके आगे कहूंगा जैसे कि अकेले एक का और बहुत से शूरबीरों का युद्ध हुआ ३ रथमें सवार बड़ासाहसी अभिमन्यु उन परस्परमें शत्रुओंके पराजय करनेवाले आपके सब रथियोंपर वर्षा करनेवाला हुआ ४ द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, शल्य, अश्वत्थामा, भोज, बृहद्बल, दुर्योधन, सोमदत्त, महाबली शकुनि ५ बहुत राजा और राजकुमार और नानाप्रकार के सेनाओं के मनुष्यों को उस अलातचक्र अर्थात् बनेठी के समान घूमते हुये अभिमन्युने घायलकिया ६ हे भरतबंशी वह प्रतापवान् तेजस्वी अभिमन्यु परम अस्त्रोंसे शत्रुओंको मारता सब दिशाओं में दिखाई दिया ७ उस बड़े तेजस्वी अभिमन्युके उस कर्मको देखकर आपकी हजारों सेना भयभीत होकर कंपायमान हुई ८ इसके पीछे प्रसन्नतासे प्रफुल्लित नेत्र प्रतापवान् महाज्ञानी भारद्वाज द्रोणाचार्य्य शीघ्रही कृपाचार्य्यको संबोधन करके यह वचन बोले ९ अर्थात् हे भरतर्षभ आपके पुत्रके मर्मोंके कंपायमान करनेवाले युद्धमें कुशल अभिमन्युको युद्धभूमि में देखकर यह वचन बोले १० यह सुभद्राकापुत्र अभिमन्यु व पांडवोंका प्रसिद्ध युवा सब सुहृदोंको और राजा युधिष्ठिर भीमसेन

नकुल सहदेव बांधव अन्य नातेदार और मध्यम स्नेही लोगों समेत अन्यसव सुहृदोंको प्रसन्न करताहुआ जाताहै ११।१२ मैं इसके समान अन्य किसी धनुष-धारीको नहीं मानताहूं यह जो चाहै तो इस सेनाको भी मारसक्ता है फिर किस निमित्त इच्छा नहीं करताहै १३ आपका पुत्र द्रोणाचार्य्यके प्रीति संयुक्त वचनों को सुनकर और मंद मुसक्कान करताहुआ द्रोणाचार्य्य को देखके अर्जुनके पुत्र पर अत्यन्त क्रोधयुक्त हुआ १४ और कर्णराजा वाह्लीक दुश्शासन और राजा मद्र और अन्य २ भी महारथियों से यह वचन वोला १५ कि यह ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ सव महाराजाओं का आचार्य्य अज्ञानी द्रोणाचार्य्य अर्ज्जुन के पुत्रको नही मारना चाहताहै १६ हे मित्र इस आततायी के युद्धमें काल भी नहीं युद्ध करसक्ताहै फिर दूसरा कौन मनुष्य लड़सक्ताहै यहमैं तुमसे सत्य २ ही कहताहूं १७ यह अर्जुन के पुत्रकी शिष्यताके कारणसे रक्षा करते हैं शिष्य और पुत्र वड़े प्यारेहोते हैं वह धर्मात्मा पुरुषों की सन्तान है १८ वह अहंकारी अज्ञानी द्रोणाचार्य्य से रक्षित अपने को पराक्रमी मानता है इसको मर्द्दन करो विलम्व न करो १९ राजा करके इसप्रकार कहेहुये महाक्रोध रूप मारने को अभिलाषी वह सवलोग भारद्वाजजीके देखते अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु के सम्मुखगये तव कौरवोंमें श्रेष्ठ दुश्शासन दुर्य्योधनके उसवचनको सुनकर दुर्य्योधनसे यहवचन वोला २० । २१ हे महाराज मैं तुमसे कहता हूं कि पांडवों के और पांचालों के देखते में ही इस सुभद्राके पुत्र अभिमन्युको ऐसे ग्रसूंगा जैसे कि सूर्य्य को राहु ग्रसलेताहै यह वड़ी वातें करके दुर्य्योधनसे कहनेलगा २२ । २३ कि वह दोनों मुख्य श्रीकृष्ण और अर्जुन भी सुभद्राके पुत्र अभिमन्युको मुझ से ग्रस्तहुआ सुनकर निस्सन्देह जीवलोकसे प्रेतलोकको जायँगे २४ प्रत्यक्षहै कि वह दोनों इस अभिमन्युको मृतक सुनकर प्राणोंको त्यागदेंगे और पांडुके क्षेत्र में उत्पन्न होनेवाले पुत्र अर्थात् पांडव सुहृदोंके समूहों समेत एकही दिनमें नपुंसकता से जीवनको त्याग करेंगे इसहेतुसे इसशत्रुके मरनेसे आपके सव शत्रु मारेजायँगे हे राजा कल्याण पूर्व्वक मुझको ध्यानकरो कि मैं आपके शत्रुओंको मारूंगा २५।२६ हे राजा आपका पुत्र दुश्शासन इसप्रकार कहकर गर्जा और महाक्रोधित होकर वाणों की वर्षा से अभिमन्यु को ढकता सम्मुख गया २७ फिर शत्रु विजयी अभिमन्युने आपके अत्यंत क्रोधभरे पुत्रको आताहुआ देखकर छव्वीस

तीक्ष्ण बाणोंसे घायलकिया २८ फिर मतवाले हाथी के समान अत्यन्त क्रोध युक्त दुश्शासन युद्ध में अभिमन्युसे युद्ध करनेलगा २९ रथकी शिक्षामें साव-धान वह दोनों रथों करके दायें बायें अपूर्व्व मंडलों को घूमते युद्ध करनेवाले हुये ३० इसके पीछे मनुष्योंने पणव मृदंग दुन्दुभी क्रकच बड़ा खेल भेरी और झर्झर नाम बाजों के वह शब्द जो कि शंख और सिंहनादों के शब्दोंसे संयुक्त थे बजाये ३१॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९॥

चालीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि इसके पीछे बाणोंसे घायल अंग बुद्धिमान् अभिमन्यु मन्द मुसकान करता उस सम्मुख नियत दुश्शासन शत्रुसे बोला १ कि मैं प्रारब्धसे युद्ध में उस आयेहुये मानी शूरबीरको देखताहूं जो कि कठिन प्रकृति धर्म का त्यागनेवाला और केवल असभ्य बार्त्ताओंका करनेवालाहै २ जो तुमने सभामें राजाधृतराष्ट्र के सुनतेहुये कठोर वचनोंसे धर्मराज युधिष्ठिरको क्रोधितकिया ३ और भीमसेन को भी तुझ बिजयसे मदोन्मत्त ने बहुत से कठोर और अयोग्य वचन कहे फिर शकुनिके छली पाशे के आश्रयीभूत होकर तुमने अपने परा-क्रम को प्रकटकिया इसी हेतु करके उस महात्मा के क्रोधसे तुझको यह फल मिला है ४ दूसरे के धनका लेना क्रोधबिरोधता लोभ ज्ञानध्वंस शत्रुता अप्रिय भाषण ५ अथवा उग्र धनुषधारी मेरे पिता लोगों के राज्यका हरना इन सब पापों का फल उन सब महात्माओं के क्रोधसे तुझको प्राप्तहुआ है ६ हे दुर्बुद्धी तू उस अधर्म के महाभयकारी फलको प्राप्तकर अब मैं सब सेना के देखते हुये बाणोंसे तुझको दंड देनेवालाहूं ७ मैं युद्धमें असह्यहोकर कृष्णाकी व्याकुलताके और अपने पिताके चित्तकी व्याकुलता के ऋणसे अऋणहुआ चाहताहूं ८ हे कौरव अब मैं युद्धमें भीमसेनके भी ऋणसे अऋण होनेवालाहूं जो तू युद्धसे न भागेगा तो मुझसे युद्धमें जीवता न बचैगा ९ शत्रुओंके वीरों के मारनेवाले महाबाहु अभिमन्युने इसप्रकार से कहकर दुश्शासन के मारनेवाले कालाग्नि और वायुके समान प्रकाशित बाणको धनुषपर चढ़ाया १० वह बाण शीघ्रही उसकी छाती को पाकर जत्रुस्थान को घायल करके पुंखों समेत ऐसे समागया

जैसे कि वामी में सर्प समाजाताहै ११ इसके पीछे भी अग्नि के स्पर्शके समान कानतक खैंचेहुये पचीस बाणोंसे उसको घायल किया १२ हे महाराज वह कठिन घायल और पीड़ामान दुश्शासन रथके बैठनेके स्थानपर वड़ा अचेत होकर वैठगया १३ फिर शीघ्रता करनेवाला सारथी उस अभिमन्युके पीड़ित कियेहुये अचेत दुश्शासनको युद्धमें से दूरलेगया १४ इसके पीछे पांडव द्रौपदी के पुत्र राजा बिराट पांचालदेशी और केकयोंने उसको देखकर सिंहनादकिये १५ वहां पांडवोंकी सेनाके अत्यन्त प्रसन्न मनुष्योने नानाप्रकारके रूपवाले वाजोंको सव ओरसे अच्छी रीतिसे बजाया १६ और आश्चर्य करनेवाले प्रतिपक्षी लोगों ने अभिमन्युके युद्ध कर्मको देखा और वड़े अहंकारी शत्रुको पराजित देखकर ध्वजाके शिरपर धर्म,वायु,इन्द्र और अश्विनीकुमारोंके स्वरूप १७ धारण करनेवाले द्रौपदी के पुत्र महारथी सात्वकी, चेकितान, धृष्टद्युम्न,शिखण्डी १८ केकयदेशी, धृष्टकेतु, मत्स्यदेशी,पांचाल,संजय और प्रसन्नता से युक्त युधिष्ठिर आदि पांडव शीघ्रता करनेवाले द्रोणाचार्य्य की सेना के तोड़ने के अभिलाषी होकर सम्मुख दौड़े १९ इसके पीछे बिजयाभिलाषी मुख न मोड़नेवाले आपके शूरवीरों का वड़ा भारी युद्ध उन शत्रुओं के साथहुआ २० हे महाराज इस प्रकार उसअत्यन्त भयकारी युद्ध के वर्त्तमान होनेपर दुर्य्योधन कर्ण से यह बचन बोला २१ कि इस सूर्य्य के समान संतप्त करनेवाले युद्ध में शत्रुबर्गों के मारनेवाले वीरदुश्शासनको अभिमन्यु के आधीनता में हुआ देखो २२ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त सिंह के समान पराक्रम से मतवाले वड़े सन्नद्ध यह पांडव अभिमन्यु की रक्षा करने को सम्मुख दौड़े २३ इसके अनन्तर आपके पुत्रका प्रिय करनेवाला वड़ा क्रोधयुक्त कर्ण अपने तीक्ष्ण वाणों से उस कठिनता से सम्मुखहोने के योग्य अभिमन्यु पर वर्षा करनेवाला हुआ २४ शूरवीर कर्ण ने युद्धभूमि में वड़े उत्तम तीक्ष्ण वाणों से उस अभिमन्युके साथ पीछे चलने वालोंको वड़े अनादर पूर्वक घायल किया २५ हे राजा द्रोणाचार्य्य को चाहते वड़े साहसी अभिमन्युने तिहत्तर वाणों से वड़ी शीघ्रता पूर्व्वक कर्णको घायलकिया २६ इसीप्रकार रथों के समूहोंको पीड़ामान करते उस इन्द्रके पोते रथी अभिमन्यु को द्रोणाचार्य्य की ओर से कोई शूरवीर रोकने को समर्थ नहीं हुआ २७ तदनन्तर विजयाभिलाषी सव धनुषधारियों मे श्रेष्ठ कर्ण ने उत्तम अस्त्रोंको दिखलाकर सैकड़ों प्रकारसे

अभिमन्यु को घायल किया २८ उस अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ परशुराम जी के शिष्य प्रतापी कर्ण ने युद्धमें अस्त्रों करके उस शत्रुओं से निर्भय अभिमन्युको पीड़ामान किया २९ वह देवताके समान इस प्रकार कर्ण के अस्त्रों की बर्षासे पीड़ामान भी अभिमन्यु व्याकुल नहीं हुआ ३० इस के पीछे अर्जुन के पुत्रने तीक्ष्ण और तीक्ष्ण गुप्त ग्रन्थीवाले भल्लों से शूरवीरों के धनुषों को काटकर कर्ण को पीड़ामान किया ३१ और मन्द मुसकान करते अभिमन्यु ने धनुषमंडल से छोड़े हुये सर्पके बिषकी समान बाणों से शीघ्रही छत्र ध्वजा सारथी समेत उस कर्ण को घायल किया ३२ कर्ण ने भी गुप्तग्रन्थी वाले बाणों को उसके ऊपर फेंका ३३ अर्जुन के निर्भय पुत्रने उन सबको सहा इसके पीछे पराक्रमी वीरने एकबाणसे कर्ण धनुष को ध्वजा समेत काटकर पृथ्वीपर गिराया ३४ इसके पीछे कर्णका छोटाभाई आपत्ति में पड़ेहुये कर्ण को देखकर दृढ़धनुष को उठाकर शीघ्रही अभिमन्यु के सम्मुखगया ३५ तब पांडव समेत उसके पीछे चलने वाले मनुष्य उच्चस्वर से पुकारे और बाजोंको बजाय अभिमन्युको प्रसन्नकिया ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि वह अत्यन्त गर्जता और बारंबार प्रत्यंचा को खैंचता धनुष हाथमें लिये अभिमन्यु बड़ी शीघ्रता से उन दोनों महात्माओं के रथोंपर जाकर गिरा १ कि मन्दमुसकान करतेहुये उस कर्ण के भाई ने बड़ी जल्दी करके दश बाणों से दुःखसे सम्मुख होने के योग्य अभिमन्युको छत्र ध्वजा सारथी और घोड़ों समेत घायल किया २ आपके शूरबीर बाप दादों के अमानुपी कर्म के करनेवाले अभिमन्यु को बाणों से पीड़ामान देखकर प्रसन्नहुये ३ फिर मन्द मुसकान करते अभिमन्यु ने एकबाण से उसके शिरको काटकर गिराया तब वह रथसे पृथ्वीपर गिरपड़ा ४ हे राजा कर्ण ने वायु से कंपित अथवा पर्व्वत से गिरे हुये कर्णकार वृक्षके समान भाई को मृतक देखकर अत्यन्त पीड़ाकोपाया ५ फिर सुभद्राका पुत्र अभिमन्यु कर्णको अपनेबाणों से मुख फेरनेवाला करके शीघ्रही दूसरे बड़े धनुषधारियोंके भी सम्मुखगया ६ इसके पीछे बड़े तेजस्वी महारथी क्रोधभरे अभिमन्युने उस बड़ी सेनाको जो कि हाथी घोड़े रथ और पतियों

से संयुक्तथी घायल किया ७ अभिमन्युके वहुत वाणोंसे पीड़ामान कर्ण शीघ्र-
गामी घोड़ोंके द्वारा दूरचलागया उसके पीछे सेना छिन्न भिन्न होगई ८ हे राजा
अभिमन्युके वाणोंसे ऐसे कुछ नहीं जानागया जैसे कि टीड़ियोंसे व जलकी
धाराओंसे व्याप्तहुये आकाश में कुछ नहीं जानाजाताहै ९ फिर तीक्ष्णवाणोंसे
घायल आपके शूरवीरों में राजासिन्धके सिवाय कोई नियत नहीं रहा १० हे भर-
तर्षभ धृतराष्ट्र इसके पीछे पुरुषोत्तम अभिमन्यु शंखवजाकर भरतवंशियोंकी से-
नाके ऊपर जापहुंचा ११ और सूखेवनमें प्रज्वलित अग्निके समान अपने वेग
से शत्रुओंको भस्मकरता वह अभिमन्यु सेनाओं के मध्यमें भ्रमण करनेलगा
१२ रथ हाथी घोड़े और मनुष्योंको अपने तीक्ष्णवाणोंसे भस्मकरते उस अभि-
मन्युने प्रवेशकरके विना शिरवाले रुण्डों के समूहोंसे व्याप्त करदिया १३ अभि-
मन्युके धनुपसे प्रकटहुये उत्तम वाणोंसे घायल और जीवनकी इच्छा करनेवाले
शूरवीर सम्मुखतामें वर्त्तमान अपनीही सेनाके मनुष्योंको मारतेहुये भागे १४
वह भयकारी दुःखसे सहने के योग्य कर्म करनेवाले विपाठ रथ और घोड़ों को-
मारतेहुये शीघ्रही पृथ्वी में समागये १५ स्वर्णमयी भूषणोंसे अलंकृत शस्त्र अं-
गुलित्राण गदा और वाजूवन्दोंकी रखनेवाली वहुत भुजा युद्धमें कटीहुई दि-
खाई देतीथीं १६ कुंडल मालाधारी शिर शरीर खड्ग धनुष और हजारों वाण
पृथ्वीपर गिरेहुये दिखाई पड़े १७ छत्रआदि रथके चक्र ईशादण्ड मुकुट अक्ष
और मथेहुये चक्र और वहुत प्रकार से पड़ेयुग १८ शक्ति धनुष तलवार और
गिरीहुई वड़ी २ ध्वजा ढाल धनुपवाण इन सव चारों ओरसे फैलीहुई वस्तुओं
से १९ और मरेहुये क्षत्री घोड़े और हाथियोंसे पृथ्वी एक क्षणही में कठिन दुर्ग-
म्यरूप और भयकारी हुई २० परस्पर पुकारते और घायल होतेहुये राजपुत्रोंके
वड़े शब्द भयभीतोंको भय वढ़ानेवाले प्रकट हुये २१ हे भरतर्षभ उस शब्द ने
सव दिशाओंको भी शब्दायमान करदिया और अभिमन्यु उत्तम घोड़े रथ और
हाथियोंको मारता सेनाकी ओर दौड़ा २२ हे भरतवंशी सूखेवनमें छोड़ेहुये अ-
ग्निके समान वेगसे शत्रुओंको भस्म करताहुआ अभिमन्यु सेनाओं के भीतर
दिखाईपड़ा २३ उस समय धूलसे सेना व्याप्तहोगई उस दशामें हमने सव दिशा
विदिशाओं में भी घूमतेहुये अभिमन्युको नहीं देखा २४ हे राजा फिर हमने एक
क्षणमें ही हाथी घोड़े और मनुष्यों की आयुर्दाओं को आकर्षण करनेवाले उस

अभिमन्यु को ऐसे देखा जैसे कि मध्याह्न के समय सूर्य होता है २५ हे महाराज इसरीति से शत्रुओं के समूहों को अत्यन्त संतप्त करतेहुये अभिमन्यु को देखा वह इन्द्रका पोता युद्ध में इन्द्र के समान अभिमन्यु सेना में अत्यन्त शोभायमान हुआ २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले युधिष्ठिरकी सेनासे कोई बलवान् उसबालक अत्यन्त सुखिया भुजबलसे अहंकारी युद्ध में कुशल बीर कुलको पुत्र शरीरकी प्रीति से रहित और तीनबर्षकी अवस्थावाले उत्तम घोड़ोंके द्वारा सेनाओं के मँझानेवाले अभिमन्युके पीछेआया १ । २ संजय बोले युधिष्ठिर भीमसेन शिखण्डी सात्यकी नकुल सहदेव धृष्टद्युम्न बिराट द्रुपद केकय ३ धृष्टकेतु क्रोधभरे मत्स्यदेशी युद्ध में समीप आये उसी मार्ग से उसके पिता मामाओं के साथ चले ४ वह अलंकृत सेना और घायल करनेवाले अभिमन्यु को चाहनेवाले सम्मुख दौड़े उन चढ़ाई करनेवाले शूरबीरोंको देखकर आपके शूरबीर मुख फेरगये ५ इसके पीछे आपका तेजस्वीजमाई आपके पुत्रकी उस बड़ी सेनाको मुखफेरनेवाली देख कर नियत करानेकी इच्छासे दौड़ा ६ हे महाराज सिन्धके राजाके पुत्र उस राजा जयद्रथ ने अपने पुत्रको चाहनेवाले पांडवों को सेनाओं समेत रोका ७ वह बार्द्धक्षत्र का पुत्र उग्र धनुषधारी और वज्रबाण प्रहारी दिव्य अस्त्रों को प्रकट करता ऐसे सम्मुख नियतहुआ जैसे कि चौराहे में हाथी नियत होता है ८ धृतराष्ट्र बोले हे संजय मैं सिन्ध के राजा पर बड़ाभार नियत मानता हूं कि जिस अकेले ने उन क्रोधयुक्त और पुत्रको चाहनेवाले पाण्डवों को रोका ९ मैं सिन्ध के राजा में अत्यन्त अपूर्व्व पराक्रम और शूरताको मानताहूं उस महात्मा के पराक्रम और उत्तमकर्म्म को तुम मुझसे कहो १० इसने ऐसा क्या होम दान और तप अच्छे प्रकार से किया है जिसके द्वारा अकेले राजा सिन्ध ने पांडवों को रोका ११ संजयबोले कि जो वह जयद्रथ द्रौपदीहरण में भीमसेन से विजय कियागया उस बरके चाहनेवाले राजाने पूजनकरके बड़े तपको अच्छे प्रकारसे तपा १२ इन्द्रियों को इन्द्रियों के प्यारे विषयों से रोककर क्षुधा तृषा और

तपके सहनेवाले बड़ेकृश शरीर केवल अस्थिमात्र शरीर १३ उस सनातन ब्रह्म देवता शिवजी को स्तुति करके जयद्रथने पूजाथा उसके पीछे भक्तोंपर कृपा करनेवाले भगवान् शिवजी ने उसपर दयाकी १४ और शयनके समयपर सिन्धके पुत्रसे कहा कि हे जयद्रथ मैं प्रसन्नहूं क्या वर चाहताहै उसको मांग १५ शिवजी के इस प्रकारके वचनको सुनकर सावधानचित्त और नम्रतासे हाथजोड़ सिंधके राजा जयद्रथने कहा १६ कि मैं अकेलाही एकरथके द्वारा युद्धमें भयकारी बल पराक्रमवाले पांडवों को रोकूं यह वरदान चाहताहूं १७ इसके इस वचनको सुन कर देवताओं के ईश्वर शिवजी जयद्रथसे बोले कि हे सौम्य मैं तुझको वर देताहूं कि सिवाय पांडव अर्जुनके १८ चारों पांडवोंको युद्धमें रोकेगा फिर राजा जयद्रथ तथास्तु कहकर निद्रासे जागपड़ा १९ उस अकेलेने उस वरदान और दिव्य अस्त्रके प्रभावसे पांडवोंकी सेनाको अच्छी रीतिसे रोका २० उसके धनुष की प्रत्यंचा और तलके शब्दसे शत्रु क्षत्रियों में भय प्रवृत्तहुआ और आपकी सेनाको बड़ा आनन्दहुआ २१ हे राजा फिर क्षत्रियलोग राजासिंधपर नियतहुये सब भारको देखकर बड़ा साहस करके उधरको दौड़े जिधरकी ओर राजा युधिष्ठिरकी सेनाथी २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विचत्वारिंशोऽध्याय ४२ ॥

तैंतालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजेन्द्र जो तुम सिन्धके राजाके पराक्रमको पूछते हो और जैसे वह पांडवों से युद्ध करनेवाला हुआ उस सबको मैं कहताहूं तुम सुनो १ आज्ञाकारी और अच्छे लोगोंको सवार करानेवाले वायुके समान वेगवान् प्रसन्नतासे प्रफुल्लित मुख और शिरपरके बाल सिन्धदेशी बड़े बड़े घोड़े उसकोले-चले २ जिसका विधिपूर्व्वक गंधर्वनगरके समान रथ अलंकृत कियागया वाराहका चिह्न रखनेवाली महाप्रकाशित उसकी ध्वजा शोभायमानहुई ३ वह जयद्रथ श्वेतछत्र पताका और चमर व्यजनादिक राजचिह्नोंसे ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि आकाश में ताराओंका स्वामी चन्द्रमा शोभित होताहै ४ उस का वह लोहमयी कवच मोती हीरा मणि और सुवर्ण से जटित होकर ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि नक्षत्रादिकोंसे संयुक्त आकाश शोभितहोताहै ५ बड़े

धनुषको चलायमान करके बाणोंके बहुत समूहोंको फैलाते उसने उस उसखण्ड को पूर्णकिया जिस जिसको अभिमन्युने हटायाथा ६ उसने सात्यकी को तीन बाणसे भीमसेनको आठबाणसे धृष्टद्युम्नको साठिबाणोंसे विराटको दशबाणोंसे ७ द्रुपदको तीक्ष्ण पांचबाणोंसे शिखंडीको सातबाणों से केकयोंको पचीसबाणों से द्रौपदीके पुत्रोंको तीन २ बाणोंसे ८ और युधिष्ठिर को सत्तरिबाणोंसे घायल किया उसके पीछे शेष बचेहुये शूरवीरोंको बाणोंके बड़ेजालों से जो पीड़ामान किया यह भी बड़ा आश्चर्य्यसाहुआ ९ फिर हँसतेहुये धर्मपुत्र प्रतापवान् राजा युधिष्ठिरने श्वेत और पीततायुक्त भल्लसे उसके धनुषको लक्ष्यबनाकर काटा १० उसने एक निमिषही में दूसरे धनुषको लेकर दशबाणों से पांडवोंको और तीन तीनबाणों से उन अन्यमनुष्यों को घायलकिया ११ भीमसेनने उसकी हस्तलाघवता को जानकर तीन २ भल्लोंसे उसके धनुष ध्वजा और छत्रको शीघ्रता से पृथ्वीपर गिराया १२ हे श्रेष्ठ उस बलवान्ने दूसरे धनुषको तैयार करके भीमसेन की ध्वजा धनुष और घोड़ोंको गिराया १३ वह धनुष टूटा भीमसेन मृतक घोड़े वाले उत्तम रथ से कूदकर सात्यकी के रथपर ऐसे सवार होगया जैसे कि केशरीसिंह पहाड़की चोटीपर चढ़जाताहै १४ इसके पीछे आपके शूरबीर राजासिन्धके उस श्रद्धाके योग्य अपूर्व्व कर्मको देखकर बहुत श्रेष्ठहै इस वचनको कहते अत्यन्त प्रसन्नहुये १५ जिस अकेलेने अत्यन्त क्रोधयुक्त पांडवोंको अपने अस्त्रों के तेजसे रोका उसके उसकर्मकी प्रशंसा सब जीवमात्रोंने करी १६ फिर अभिमन्युसे मारेहुये मार्ग में मरेहुये हाथियोंसे दिखलाया हुआ पांडवका मार्ग राजासिंधने रोका १७ और उपाय करनेवाले वह मत्स्य पांचाल केकय और बीर पांडव सम्मुखहुये परन्तु सिन्धके राजा को पराजय नहीं करसके १८ जो जो आपका शत्रु द्रोणाचार्य्यकी सेनाके तोड़नेका उपाय करताथा उस २ को बरपानेवाले राजा सिन्धने रोका १९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि राजासिन्धसे विजयाभिलाषी पांडवोंके रुकजानेपर आपके शूरवीरोंका और शत्रुओं का महाघोर और भयकारी युद्धहुआ १ फिर सत्य सं-

कल्प कठिनतासे सम्मुख होनेके योग्य तेजस्वी अभिमन्युने प्रवेश करके सेना को ऐसे व्याकुल किया जैसे कि समुद्रको मगर भयभीत और व्याकुल करता है २ इसप्रकार बाणोंकी वर्षासे व्याकुल करनेवाले शत्रुओंके बिजयी उस अभिमन्युके सम्मुख वह उत्तम रथी हुये जो कि प्रधान गिनेजाते थे ३ बाणों की वर्षाके उत्पन्न करनेवाले बड़े तेजस्वी उनलोगोंका और अभिमन्युका वह युद्ध बड़ा भयकारी और कठिन जारीहुआ ४ उन शत्रुओंके रथोंसे इसप्रकार रुकेहुये अभिमन्युने वृषसेनके सारथीको मारकर धनुषको काटा ५ और इसी बलवान्ने सीधे चलनेवाले बाणोंसे उसके घोड़ोंको भी अत्यन्त घायलकिया फिर वह उन भागनेवाले घोड़ोंके द्वारा युद्धसे दूर हटायागया अर्थात् अभिमन्यु के उस अन्तरसे सारथी रथको दूरलेगया इसके पीछे रथके समूह प्रसन्नहोकर पुकारे कि बहुत अच्छा बहुत अच्छा ६। ७ फिर विशातप उस सिंहके समान क्रोधी बाणोंसे शत्रुओंको मथनेवाले सम्मुखसे आतेहुये अभिमन्युके समीप आकर शीघ्रही सम्मुखगया ८ उसने सुनहरी पुंखवाले साठिबाणोंसे अभिमन्युको ढकदिया और यह वचन बोला कि मेरे जीवते तू इस युद्ध में बचकर जीवता नहीं छूटेगा ९ अभिमन्युने उस लोहेके कवचधारी विशातपको दूर गिरनेवाले बाणसे हृदयपर घायलकिया तब वह निर्जीव होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा १० हे राजा तब मारने के अभिलाषी अत्यन्त क्रोधभरे उत्तम क्षत्रियोंने उस मरेहुये विशातपको देखकर आपके पोतेको चारों ओरसे घेरलिया ११ वह क्षत्रिय नानारूपवाले धनुषों को अनेक प्रकारसे चलानेवाले थे वह अभिमन्युका युद्ध शत्रुओं से महाभयकारीहुआ १२ फिर क्रोधयुक्त अभिमन्युने उनके बाण धनुष शरीर और कुंडल समेत मालाधारी शिरोंको काटा १३ तब खड्ग पट्टिश अंगुलित्राण और फरसों समेत कटीहुई सुवर्ण के भूषणों से अलंकृत भुजा दिखाई पड़ीं १४ माला भूषण वस्त्र और पड़ीहुई बड़ी २ भुजा कवच ढाल हार मुकुट छत्र चामर १५ उपस्कर अधिष्ठान ईशादण्ड कबन्ध अक्ष टूटेहुये चक्र अनेक प्रकारके टूटेहुये जुए अनुकर्ष पताका सारथी घोड़े टूटेरथ और मृतक हाथियोंसे पृथ्वी व्याप्तहुई १६। १७ नानाप्रकारके विजयाभिलाषी देशाधिपति मरेहुये शूरवीर क्षत्रियोंसे संयुक्त पृथ्वी बड़ीभयानक वर्त्तमान होगई १८ उस क्रोधयुक्त युद्धकी सबदिशा विदिशाओंमें घूमतेहुये अभिमन्युका रूप दृष्टिमें गुप्तहोगया १९ इसके कवच भूषण धनुष

और बाणोंका जो २ अंग सुनहरीथा हमने उन सबों में से केवल उसीको देखा २० तब कोई पुरुषभी उसबाणों के द्वारा शूरवीरों को आधीन करनेवाले अभिमन्यु के देखने को ऐसे समर्थ नहीं हुआ जैसे कि मध्याह्नवर्ती सूर्य्यको कोई देखनेको समर्थ नहीं होताहै २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि अर्जुनका पुत्र शूरवीरों की आयुर्दाओं का ऐसे हरनेवाला हुआ जैसे कि समय आनेपर काल सब जीवोंके प्राणों को हरलेताहै १ तबवह इन्द्रके समान पराक्रमी इन्द्रकापोता बलवान् अभिमन्यु सेनाको व्याकुलकरता हुआ दिखाईदिया २ हे राजेन्द्र फिर राजाओं के कालरूप अभिमन्युने सेनामें प्रवेश करके सत्यश्रवसको ऐसे मारा जैसे कि गर्जताहुआ व्याघ्र मृगको मारताहै ३ सत्यश्रवस के मारनेपर शीघ्रता करनेवाले महारथी बड़े शस्त्रों को लेकर अभिमन्युके सम्मुखगये ४ ईर्षा करनेवाले उत्तम क्षत्री पहिले मैं पहिले मैं इस वचन के कहनेवाले अर्जुन के पुत्रको मारने के अभिलाषी होकर सम्मुखगये ५ अभिमन्यु ने उन चलती और सम्मुख दौड़ती हुई क्षत्रियोंकी सेनाको ऐसे अपने स्वाधीन किया जैसे कि समुद्रके मध्यमें तिमि नाम जलजन्तु छोटी २ मछलियोंको पाकर अपने स्वाधीन करताहै ६ जो कोई मुख न मोड़नेवाले क्षत्री उसके सम्मुखगये वह फिरकर अर्थात् लौटकर ऐसे नहीं आये जैसे कि सिन्ध नदी समुद्र से लौटकर नहीं आती ७ समुद्र में बड़े ग्राहसे पकड़े और बायु के बेगसे पीड़ामान डूबेहुये जहाज के समान वहसेना कंपायमानहुई ८ इसकेपीछे रुक्मरथ नाम मद्रदेशके राजा के पुत्रने उस भयातुर सेनाको विश्वास कराया और यह बचन बोला ९ हे शूरबीरो तुमभय मतकरो मेरे विद्यमान और नियत होनेपर यह कुछ नहीं है मैं इसको निस्सन्देह जीवताहुआही पकडूंगा १० वह पराक्रमी इसप्रकार कहकर बड़े सुन्दर अलंकृत शोभित रथपर सवार अभिमन्यु के सम्मुखगया ११ और अभिमन्युको तीनबाणों से छातीपर और तीन२ बाणों से दाहिनी और बाईं भुजाघायल करके बड़े शब्द से गर्जा १२ उस अर्जुन के पुत्रने उसके धनुषको काटकर दाहिनी बाईं भुजाओं को और सुन्दरनेत्र और

भृकुटी रखनेवाले शिरको शीघ्रही पृथ्वीपर गिराया १३ अभिमन्युको जीवता हुआ पकड़ने के अभिलाषी शल्यके प्यारे रुक्मरथ पुत्रको यशस्वी अभिमन्यु के हाथ से मराहुआ देखकर १४ युद्धदुर्मद प्रहार करनेवाले रुक्मरथ के समान अवस्था सुनहरी ध्वजा रखनेवाले १५ महावली तालवृक्षके समान वारंवार धनुषोंको खैंच तेजकुमारों ने वाणोंकी वर्षा से अर्जुन के पुत्रको चारोंओर से रोंका १६ पराक्रम और शिक्षा से युक्त तरुण अवस्थावाले अत्यन्त क्रोधयुक्त शूरों से युद्ध में उसअकेले शूर अजेय अभिमन्युको १७ वाणों के समूहों से ढकाहुआ देखकर दुर्योधन वड़ा प्रसन्नहुआ और उसको यमराज के भवन में गयाहुआ माना १८ उन राजकुमारों ने एकनिमिषमेंही अर्जुन के पुत्रको सुनहरी पुंखवाले अनेक चिह्नधारी सुन्दर वेतरखनेवाले वाणों के द्वारा दृष्टिसे अगोचर करदिया १९ हे श्रेष्ठ हमने उसके उसरथ को सारथी घोड़े और ध्वजासमेत छिपाहुआ टीड़ियों से व्याप्तके समान देखा २० जैसे कि चावुकों से पीड़ामान हाथीहोता है उसीप्रकार अत्यन्त घायल और पीड़ामान महाक्रोध युक्त उस अभिमन्यु ने गन्धर्व अस्त्रों समेत वहुतसी मायाओं को प्रकटकिया २१ अर्जुन ने तपस्याओं को करके तुंवुरु आदिक गंधर्वों से जो अस्त्रलिये उन्हीं में से एक अस्त्र करके उन शत्रुओंको इसने भी अचेतकरदिया २२ हे राजा वह युद्ध में शीघ्रही अस्त्रोंको दिखलाताहुआ वनेठी के समान एकप्रकार दो प्रकार और अनेकों प्रकारों से दिखाईदिया २३ फिर उस शत्रुसंतापीने रथ और अस्त्रोंके भ्रमण चक्र की मायासे सवको अचेत करके उन राजाओंके शरीरोंको सौ २ प्रकारसे काटा २४ हे राजा युद्ध में तीक्ष्ण धारवाले वाणों से भेजेहुये राजाओं के प्राणों ने परलोकको पाया और मृतकशरीर पृथ्वीपर गिरपड़े २५ अर्जुनके पुत्रने तीक्ष्ण शरों से उनसवके धनुष घोड़े सारथी ध्वजा और वाजूवन्दों समेत भुजाओं समेत शिरोंकोकाटा २६ जैसे कि पांचवर्षका लगायाहुआ आंवोंका फलवान् वागकाटा जाता है इसीप्रकार अभिमन्यु के हाथसे राजकुमारों का एकसौ मनुष्यों का समूहगिरायागया २७ क्रोधयुक्त सर्पोंके समान सुकुमार सुखके योग्य राजकुमारों को अकेले अभिमन्युके हाथसे मराहुआ देखकर दुर्योधन वड़ाभयभीत हुआ २८ और अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर दुर्योधन रथ हाथी घोड़े और पदातियों के मर्द्दन करनेवाले उस अभिमन्यु को देखकर शीघ्रही सम्मुख आया २९ एक क्षणभर

तक तो उन दोनोंका बड़ा कठिन युद्ध हुआ उसके पीछे सैकड़ों बाणोंसे घायल आपका पुत्र मुखफेर गया ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे सूत तू जिसप्रकार एकका बहुतोंके साथ कठिन और भयकारी युद्धको और उसी महात्मा की बिजय को जैसे मुझसे कहता है १ अभिमन्युका पराक्रम श्रद्धाके अयोग्य अद्भुत है फिर क्या उन्होंका पराक्रम अत्यन्त अपूर्व्व नहीं है जिन्हों का कि रक्षाश्रयधर्म है २ और दुर्य्योधन के मुख फेरने और राजकुमारों का सैकड़ा मरने पर मेरे शूरबीरों ने अभिमन्युके विषय में किस कर्मके ज्ञानको पाया ३ संजय बोले कि अत्यन्त शुष्कमुख चलायमान अर्थात् भैचक नेत्र प्रस्वेदोंसे युक्त रोमांच खड़े भागने में प्रवृत्त चित्त शत्रुकी बिजयमें असाहसी वह आपके शूरवीर ४ मरेहुये पिता भाई बेटे मित्र नातेदार और बान्धवों को छोड़ २ अपने २ घोड़े हाथी आदिको शीघ्रता से चलातेहुये हटगये ५ उन सबको उस प्रकार से अलग २ हुआ देखकर द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा बृहद्बल कृपाचार्य्य दुर्य्योधन कर्ण कृतबर्मा शकुनि ६ यह सब अत्यन्त क्रोध युक्त होकर उस अजेय अभिमन्युके सम्मुख दौड़े हे राजा फिर वह भी आपके पौत्रसे मुखों को मोड़गये ७ सुखसे पोषण किया हुआ बालकपने में अहंकार से निर्भय बाण अस्त्रों का ज्ञाता बड़ा तेजस्वी लक्ष्मण अकेलाही अभिमन्यु के सम्मुख गया ८ और उसका पिता पुत्रको चाहता हुआ उसके पीछे चलनेवाला होकर फिर लौटा और दुर्य्योधन के पीछे दूसरे महारथी भी लौटे ९ उन्हों ने उसको बाणोंसे ऐसे सींचा जैसे कि जलकी धाराओंसे बादल पर्व्वत को सिंचन करता है फिर उस अकेलेने उनको ऐसे अत्यन्त मर्द्दनकिया जैसे कि वायु संसारी बादलों को मर्द्दन करताहै १० अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु ने उस निर्भय प्रिय दर्शनीय पिताके सम्मुख वर्त्तमान शूरवीर ऊंचा धनुष करनेवाले बड़े सुख पूर्व्वक लालन किये हुये कुबेर के पुत्रकी समान आपके पौत्र लक्ष्मण को युद्धमें सम्मुख पाया ११ । १२ शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले अभिमन्युने लक्ष्मण से भिड़कर अत्यन्त तीक्ष्ण धारवाले तीन बाणोंसे छाती

और भुजाओं पर घायलकिया १३ हे महाराज अत्यन्त घायल सर्पके समान क्रोधयुक्त आपका पोता आप के दूसरे पोते से बोला १४ कि लोकका दर्शन अच्छी रीतिसे करो परलोक को जावोगे मैं तुमको सब बांधवों के देखते हुये यमलोक में पहुंचाताहूं १५ शत्रुओंके वीरोंके मारनेवाले महाबाहु अभिमन्युने इस प्रकार कहकर कांचली से रहित सर्प के समान भल्लको हाथमें लिया १६ उसकी भुजासे छूटे हुये उस भल्लने उस लक्ष्मण के शिरको जोकि सुन्दर नाक केशान्त और कुंडलोंसे शोभित था काटकर गिराया १७ सेना के लोग लक्ष्मण को मराहुआ देखकर हाय हाय पुकारे इसके पीछे पुत्रके मरने से क्रोध युक्त क्षत्रियों में श्रेष्ठ दुर्य्योधन १८ क्षत्रियों को पुकारा कि इसको मारो इसके पीछे द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य कर्ण अश्वत्थामा बृहद्बल १९ हार्दिक्यका पुत्र कृतबर्मा इन छः रथियोंने अभिमन्युको चारों ओर से घेरलिया अर्जुन का पुत्र उनको भी अपने तीक्ष्ण बाणोंसे मुखके फेरनेवाला करके २० क्रोधयुक्त होकर सिंधके राजा की सेनापर दौड़ा कलिंग निषाद और क्राथके पराक्रमी पुत्र हाथियों की सेनासे अलंकृत इन सबने उस अभिमन्युके मार्ग को रोका हे राजा वह युद्ध भी बड़ा कठिन हुआ २१ । २२ इसके पीछे क्राथने बाणोंके समूहों से अभिमन्युको बहुत अच्छा ढका उसके पीछे द्रोणाचार्य्य आदिक अन्य सबरथी भी फिर लौटे २३ । २४ और परम अस्त्रोंको चलातेहुये अभिमन्युके सम्मुखगये अभिमन्युने बाणसे उनको हटाकर फिर क्राथके पुत्रको पीड़ामान किया २५ शीघ्रता करनेवाले अभिमन्युने मारनेकी इच्छासे धनुष बाण और केयूर नाम भूषणों समेत उसकी दोनों भुजा और मुकुट समेत शिरको २६ और छत्र ध्वजा और सारथी समेत रथको और घोड़ों को गिराया कुलवान् प्रियभाषी वेदज्ञ पराक्रमी कीर्त्ति और अस्त्र बलसे संयुक्त उस बीर के मरनेपर दूसरे बहुधा शूरबीर लोग मुखोंको फेरगये २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि इसप्रकार सेनामें प्रविष्ट तरुण अवस्थावाले अजेय सुभद्राके पुत्र नकुलके समान कर्मकरनेवाले कभी युद्धों में पराजय न होनेवाले १

अच्छे पराक्रमी छःबर्षके अवस्थावाले आजानेयजातिके घोड़ों से संयुक्त और आकाशमें चेष्टा करनेवाले के समान अभिमन्युको किन शूरोंने रोका २ संजय बोले कि पाण्डवनन्दन अभिमन्युने सेनामें प्रवेश करके इन आपके सब शूर-वीर राजाओं के मुखों को फेरदिया ३ फिर द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य कर्ण अश्व-त्थामा बृहद्बल हार्दिक्यका पुत्र कृतवर्म्मा इन छवों रथियों ने उसको चारों ओर से घेर लिया ४ हे महाराज फिर आपकी सेनाके लोग राजासिंधके ऊपर बड़े भारी बोझेको देखकर युधिष्ठिरके सम्मुख दौड़े ५ और दूसरे महाबली शूरबीर तालवृक्ष के समान बड़े २ धनुषों को खैंचतेहुये बाणरूपी जालों से अभिमन्यु के ऊपर बर्षा करनेलगे ६ शत्रुओं के बीरों के मारनेवाले अभिमन्यु ने युद्धमें बाणों से इनसब बड़े २ धनुषधारी और सब विद्याओं में पूर्ण लोगों को रोका ७ द्रोणाचार्य्य को पचासबाणोंसे बृहद्बलको बीस बाणों से कृतबर्माको अस्सीबाणों से और कृपाचार्य्य को साठबाणोंसे घायलकिया ८ अर्जुन के पुत्रने सुनहरी पुंखवाले बड़े बेगवान् कानतक खिंचेहुये दशबाणोंसे अश्वत्थामा को घायलकिया ९ और पीतरंग के तीक्ष्ण उत्तम बाणोंसे शत्रुओं के मध्यमें कर्ण को कानके ऊपर घायलकिया १० फिर कृपाचार्य्य के घोड़ोंको और दोनों ओर के रक्षकों समेत सारथी को गिराकर उनको भी दशबाणों करके छातीपर घायल किया ११ इसके अनन्तर उस बलवान्ने आपके शूरबीर पुत्रोंके देखतेहुये कौरवों के कीर्त्तिबढ़ानेवाले बीर बृन्दारकको मारा १२ अश्वत्थामाने उस निर्भयके समान उत्तम २ शत्रुओं के पीड़ा देनेवाले अभिमन्यु को क्षुद्रक नाम पच्चीस बाणोंसे घायलकिया १३ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र फिर उस अभिमन्युने आपके पुत्रोंके समक्षमें अश्वत्थामाको शीघ्रही तीक्ष्ण बाणोंसे घायलकिया १४ अश्वत्थामाने तीक्ष्णधार और उत्तम बेतरखनेवाले साठिबाणोंसे उसको घायल करके ऐसे कंपित नहीं किया जैसे कि मैनाक पर्व्वतको कंपित नहीं करसके १५ उस बड़े तेजस्वी बलवान्ने सुनहरी पुंख और सीधे चलनेवाले तिहत्तरि बाणोंसे अप्रिय करनेवाले अश्वत्थामाको घायल किया १६ फिर पुत्रको चाहनेवाले द्रोणाचार्य्य ने उसपर सौ बाण गिराये इसी प्रकार पिता के चाहनेवाले अश्वत्थामा ने युद्धमें आठबाण मारे कर्ण ने बाईस भल्लोंको कृतवर्माने बीसबाणों को बृहद्बल ने पचास बाणों को और शारद्वत कृपाचार्य्य ने दश बाणों को मारा १७।१८

सब ओरसे उनके तीक्ष्ण बाणों से पीड़ामान अभिमन्यु ने उन सबको दश २ बाणों से घायलकिया १६ कौशिल देशियों के राजा ने उसको करणी नाम बाण से हृदय में घायलकिया उसने उसके घोड़े ध्वजा धनुष और सारथी को पृथ्वीपर गिराया २० फिर रथसे रहित ढाल तलवार रखनेवाले राजा कौशिलने अभिमन्युके शरीर से कुंडलधारी शिरको काटना चाहा २१ उसने कौशिल्त देशियों के स्वामी राजपुत्र वृहद्धलको बाणों से हृदयपर घायलकिया और हृदय में घायल होकर पृथ्वीमें गिरपड़ा २२ अयोग्य और अशुभ वचनों को बोलते महात्माने खड्ग धनुपधारी राजाओंके दशहजार यूथको छिन्न भिन्न किया २३ इस रीतिसे वृहद्धलको मारकर सुभद्राका पुत्र युद्धमें घूमनेलगा और उसी दशा में बड़े धनुष से आपके शूरवीरों को बाणरूप जालों की वर्षासे रोका २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

अरतालीसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि उस अर्जुनके पुत्रने करणी नाम बाणसे कर्णको फिरघायल किया और अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उसने पचासबाण से फिर घायलकिया १ तब कर्ण ने भी उतनेही बाणों से उसको घायलकिया हे भरतवंशी उन बाणोंसे संयुक्त सबशरीर के अंगोंसमेत वह अभिमन्यु बहुतही शोभायमानहुआ २ फिर उस क्रोधयुक्त अभिमन्यु ने कर्ण को भी रुधिरकी वेदनाओं से युक्त करदिया ३ और बाणों से जटित और रुधिरसे लिप्त वह दोनों महात्मा फूलेहुये किंशुक वृक्ष के समान शोभायमान हुये ४ इसके पीछे अभिमन्युने कर्ण के छः मंत्रियों को जोकि बड़े शूर और उत्तम युद्धके करनेवाले थे घोड़े सरथी रथ और ध्वजा के समेत मारा ५ इसी प्रकार निर्भय अभिमन्युने दश २ बाणों से अन्य २ धनुपधारियों को घायल किया वह आश्चर्य्यसा हुआ ६ इसी प्रकार छः बाणों से राजा मगध के तरुण पुत्र अश्वकेतु को घोड़े और सारथी समेत मारकर गिराया ७ इसके पीछे ध्वजा में हाथी का चिह्न रखनेवाले राजामार्त्तिकावर्तिक भोज नामको क्षुरप्रसे मथकर बाणोंको छोड़ताहुआ गर्जा ८ दुश्शासन के पुत्र ने चारबाणों से उसके चारों घोड़ों को घायलकरके एक बाण से सारथी और दशबाणों से अभिमन्युको घायलकिया ९ इसके पीछे अभिमन्यु सातबाणों से

दुश्शासन के पुत्र को घायल करके क्रोध से रक्तनेत्र उच्चस्वरसे इस वचनको बोला १० तेरापिता नपुंसक के समान युद्धको त्याग करके गया तूभी प्रारब्ध से युद्ध करना जानताहै अब नहीं बचसक्ताहै ११ इतना बचन कहकर कारीगर के साफ किये हुये नाराच को उस पर छोड़ा तब अश्वत्थामा ने उसको तीन बाणों से काटा १२ अभिमन्युने उसकी ध्वजाको काटकर तीनबाणोंसे शल्यको घायल किया शल्यने नव बाणों से उसको घायल किया १३ अर्थात् निर्भय के समान हृदयपर घायल किया हे राजा यह भी आश्चर्य्यसा हुआ अर्जुनके पुत्र ने उसकी ध्वजा को काट दोनों ओरके रक्षकों को संहारकर १४ उसको छःलोहे के बाणों से घायल किया वह दूसरे रथ में सवार हुआ शत्रुंजय चन्द्रकेतु मेघ वेग सुवर्चस १५ सूर्य्यभास इन पांचोंको मारकर शकुनी को घायल किया शकुनी तीनबाणों से घायल करके दुर्योधन से बोला १६ हमसब मिलकर इसको मथन करैं क्योंकि यह हम एक एकको मारता है फिर सूर्य्य का पुत्र कर्ण युद्ध में द्रोणाचार्य्य से बोला १७ कि यह पहलेही से हम सबको मथन करता है इस के मारने को शीघ्र हम से कहौ इसके पीछे बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्य जी उन सब से बोले कि १८ इस कुमारका कुछ छिद्रही देखो अबसब दिशाओं में घूमते हुये इसका छोटाहीसा छिद्र है १९ इस नरोत्तम पांडवके पुत्रके उस छिद्रको शीघ्रता से देखो इसका धनुष मंडलही रथके मार्गों में दिखाई पड़ता है २० जो कि विशेष नाम बाणों को धनुषपर चढ़ा २ कर शीघ्रतासे छोड़ने वाला है फिर यह शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला अभिमन्यु शायकों से मेरेप्राणों को पीड़ित और मोहित करता हुआ मुझको अत्यन्त प्रसन्नकरता है अर्थात् यहशत्रुओं के वीरोंका मारनेवाला अभिमन्यु मुझको अत्यन्त प्रसन्न करता है २१ । २२ क्रोध युक्तमहारथी इस हस्तलाघव और बड़े तीक्ष्णबाणों से सब दिशाओं को चलायमान करते हुये भी अभिमन्युके अन्तर अर्थात् छिद्रको नहीं देखते हैं २३ मैं युद्ध में गाण्डीव धनुषधारी कीभी ऐसी मुख्यताको नहीं देखता हूं अर्थात् अर्ज्जुन और अभिमन्युमें कुछ अन्तर नहीं है इस के पीछे अभिमन्युके बाणोंसे घायल हुआ कर्ण फिर द्रोणाचार्य्य से बोला २४ नियतहोना योग्यही है इसी हेतुसे कि अभिमन्युसे पीड़ामानहोकर भी मैं युद्ध में नियतहूं इसकुमार के बाण बड़े भयकारी हैं २५ अब अग्निकी समान प्रकाशित भयकारी उसके

वाणमेरे हृदयको पीड़ादेते है यह सुनकर हंसते हुये आचार्य्यजी उसकर्ण से बोलेकि २६ इसका कवच अभेद्य है अर्थात् टूट नही सक्ताहै और युवा पुरुष शीघ्रतासे पराक्रम करनेवाला है मैंने इसके पिता को कवचका धारण करना सिखलाया है २७ यह शत्रु के पुरका विजय करनेवाला अभिमन्यु निश्चय करके उस सबको जानता है इसका धनुष और प्रत्यंचा अच्छी रीतिसे चलाये हुये वाणोंसे काटना संभवहै २८ इसीप्रकार लगाम घोड़े पृष्ठरक्षक और सारथी का भी मारना संभव है हे बड़े धनुषधारी कर्ण तुम जो समर्थ होतो यहीकरो २९ इसके पीछे उसको मुख फिरवाके प्रहारकरो धनुष का रखनेवाला यह देवता और असुरोंसे भी विजय करना संभवनहीं है ३० जो तुम चाहते हो तो इसको रथ और धनुष से रहित करो सूर्य्यके पुत्रकर्ण ने आचार्य्यजीके उस वचन को सुनकर शीघ्रतासे ३१ उस हस्तलाघव और धनुष खैंचनेवालेके धनुष को प्रस्तक वाणोंसे काटा भोजने उसके घोड़ों को मारा और कृपाचार्य्यने पृष्ठरक्षक समेत सारथीको मारा ३२ फिर शीघ्रता करनेवाले बाकी छः महारथियों ने उस टूटे धनुष और विरथको वाणोंकी वर्षाओं से ढकदिया ३३ उन निर्दय लोगोंने वाणोंकी वर्षासे अकेले बालकको ढकदिया वह टूटे धनुष रथसे विहीन ढाल तलवार का रखनेवाला श्रीमान् अभिमन्यु अपने धर्म को पालनकर्त्ता आकाश से गिरा और कौशिक आदिक मार्गोंसे और हस्तलाघवता पूर्व्वक पराक्रम से ३४ । ३५ ऐसे अत्यन्त घूमनेलगा जैसे कि पक्षियोंका राजा गरुड़ भ्रमण करता है आकाशमें खड्ग हाथमें लिये प्रत्येक को ऐसा विदित हुआ कि यह मेरेही ऊपर गिरता है इस हेतुसे ऊपर को दृष्टि रखनेवाले ३६ युद्धमें छिद्र देखनेवाले शूरवीरों ने उस बड़े धनुषधारी को पीड़ामान किया द्रोणाचार्य्य ने उसकी मुष्टिकासमेत मणिजटित खड्गको काटा ३७ अर्थात् शत्रु के विजय करनेवाले और शीघ्रता करनेवाले बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य्य ने उसकी खड्ग संयुक्त मुष्टिकाको क्षुरप्र से काटा कर्णने उसकी उत्तम ढालको तीक्ष्णधारवाले वाणों से तोड़ा तलवार और ढालके टूटनेपर वाणोंसे भराहुआ शरीर वह अभिमन्यु फिर अन्तरिक्षसे पृथ्वीपर नियतहुआ और क्रोधसे भराहुआ रथके चक्रको उठाकर द्रोणाचार्य्यके सम्मुख दौड़ा ३८।३९ अत्यन्त उज्ज्वल चक्रको हाथमें रखनेवाला भस्मसे उत्पन्न उज्ज्वल शक्तिसे शोभायमान शरीरवाला वह अभिमन्यु प्रका-

शमानहुआ और बासुदेवजी के समान कर्मको करता युद्धमें एक क्षणभर को तो रुद्ररूपहुआ ४० गिरेहुये रुधिरसे रंगेहुये सब बस्त्र और भृकुटी पुटोंसे अत्यन्त ब्याकुल बड़े सिंहनादोंका करनेवाला समर्थ अतुल पराक्रमी अभिमन्यु युद्धमें उत्तम राजाओं के मध्यमें वर्त्तमान होकर अत्यन्त शोभायमान हुआ ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥

उनचासवां अध्याय ॥

संजय बोले कि बिष्णुकी भगिनी की प्रसन्नताका उत्पन्न करनेवाला बिष्णु जी केही शस्त्रोंसे अलंकृत दूसरे श्रीकृष्ण के समान अतिरथी अभिमन्यु युद्ध में शोभायमानहुआ १ उस बायुसे गिरेहुये के शान्त उत्तम शस्त्रों के उठानेवाले देवताओंसे भी दुःखसे देखने के योग्य शरीर को देखकर २ ब्याकुल चित्तवाले राजाओंने उस चक्रको अनेक प्रकारसे काटा इसके पीछे उस महारथी अभिमन्युने बड़ी भारी गदाको लिया ३ उन शत्रुओंसे धनुष रथ खड्ग और चक्र से रहित कियेहुये गदा हाथमें लिये अभिमन्युने अश्वत्थामाको पीड़ामान किया४ वह नरोत्तम अश्वत्थामाजी वज्रके समान प्रकाशित उठायेहुये गदाको देखकर रथके बैठने के स्थानसे तीन चरण हटगये ५ अभिमन्यु गदासे उसके घोड़ोंको मारकर उसके पृष्ठ रक्षक समेत सारथीको मारताहुआ बाणों से भराहुआ घायल शरीरवाला दिखाई पड़ा ६ उसके पीछे सौबलके पुत्र कालिकेय को मारा और उसके अनुगामी सतत्तरि गान्धार देशियों को भी मारा ७ फिर दशरथी बिशातप लोगों को मारा और केकयों के सातरथ और दश हाथियों को मारकर ८ गदासे दुश्शासनके पुत्रके रथको घोड़ोंसमेत मारा हे श्रेष्ठ इसके पीछे क्रोधयुक्त दुश्शासनका पुत्र गदाको उठाकर ९ अभिमन्यु के सम्मुख जाकर तिष्ठ २ इस वचनको बोला वह गदाधारी वीर परस्पर में मारने के अभिलाषी दोनों शत्रु ऐसे प्रहारकर्त्ताहुये जैसे कि पूर्व्व समय में त्र्यंबक और अन्धक युद्ध करनेवाले हुये थे वह दोनों पुरुषोत्तम गदाओं से परस्पर में प्रहार करके पृथ्वीपर गिरपड़े १० । ११ शत्रुओं के तपानेवाले वह दोनों युद्ध के बीच में पड़ेहुये इन्द्रध्वजा के समान दिखाई दिये इसके पीछे कौरवोंकी कीर्त्तिके बढ़ानेवाले दुश्शासनके पुत्र ने उठकर १२ उठतेहुये अभिमन्युको गदासे मस्तकपर घायलकिया गदाके बड़े

वेग और परिश्रमसे अचेत १३ शत्रुओं के वीरोंका मारनेवाला अभिमन्यु नि-श्चेष्ट होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा हे राजा इसप्रकार वह अकेलाही वहुतसे शूरवीरों से युद्धमें मारागया १४ जैसे कि हाथी नलनीको छिन्न भिन्न करतेहैं उसीप्रकार सब सेनाको व्याकुल करके वह मराहुआ वीर ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि व्याधाओं करके माराहुआ जंगली हाथी होताहै १५ उस प्रकार गिरेहुये उस शूरवीरको आपके बीरोंने चारों ओरसे ऐसे घेरलिया जैसे कि शिशिरऋतुमें अ-र्थात् माघ फाल्गुनके अन्तमें वनको भस्म करके शान्तहुई अग्निको घेरलेतेहैं १६ वृक्षकी शाखाओंको मर्द्दन करके लौटेहुये वायुके समान भरतवंशियोंकी सेना को तपाकर अस्तहुये सूर्य्य के समान अथवा ग्रसेहुये चन्द्रमाके सदृश सूखे स-मुद्रके तुल्य पूर्णचन्द्रमाके समान मुखवाले वालोंसे संयुक्त नेत्र १७।१८ उसअभि-मन्युको पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखकर वह आपके महारथी बड़े आनन्दमें भरेहुये सिंहके समान वारम्वार गर्जे १९ हे राजा आपके पुत्रोंको वड़ा आनन्द हुआ और दूसरे शत्रुओं के नेत्रोंसे अश्रुपात गिरे २० हे राजा आकाशसे गिरेहुये चन्द्रमाके समान पड़ेहुये वीर अभिमन्युको देखकर पृथ्वी और आकाशके मध्य में सब जीव पुकारे २१ कि द्रोण कर्ण आदिक छःरथियों के साथ धृतराष्ट्र के महारथी पुत्रोंसे माराहुआ यह अकेला अभिमन्यु सोताहै हमने इसके मारने में धर्म नहीं माना किन्तु इन सवने इसको अधर्म से माराहै २२ इस वीरके मारने पर पृथ्वी ऐसी अत्यन्त शोभायमानहुई जिस प्रकार नक्षत्रमंडलका रखनेवाला आकाश सूर्य्य और चन्द्रमासे शोभायमान होताहै २३ सुनहरी पुंखवाले बाणों से पूर्ण अत्यन्त रुधिरसे भरेहुये और शूरवीरोंके शोभादेनेवाले कुंडलधारी शिरों से पृथ्वी शोभायमान हुई २४ विचित्र प्रस्तों में और पताकाओं से संयुक्त चा-मर भूलें और खंडित उत्तम चमर २५ घोड़े मनुष्य और हाथियों अच्छे प्रकाशि-त भूषणोंसे और कांचली से निकलेहुये सर्पों के समान विषसे बुझायेहुये ती-क्ष्णधार खड्ग कटेहुये नानाप्रकार के धनुष,शक्ति, दुधारे, खड्ग, प्रास, कम्पन और अन्य २ प्रकारके नानाशस्त्रोंसे संयुक्त होकर पृथ्वी शोभायमानहुई २६।२७ अभिमन्युसे गिरायेहुये श्वासोंको लेते रुधिरसे भरेहुये सवारों से रहित निर्जीव घोड़ोंसे भी पृथ्वी दुर्गम्य होगई २८ वहुमूल्य अंकुश कवच शस्त्र ध्वजा और विशिखनाम बाणोंसे मथेहुये पर्व्वताकार हाथियों से २९ घोड़े सारथियों समेत

पृथ्वीपर गिरेहुये शूरबीरोंसे व ह्रदोंके समान क्षुभित मरेहुये उत्तम हाथियोंसे ३० नानाप्रकार के शस्त्रों से अलंकृत मरे पदातियों के समूहों से पृथ्वी भयभीतों के भयों की उत्पन्न करनेवाली भयानक रूपकी होगई ३१ चन्द्रमा और सूर्य्यके समान प्रकाशमान उस अभिमन्यु को देखकर आपके शूरबीरोंको बड़ा आनन्द और पांडवों को बड़ा खेदहुआ ३२ हे राजा उस बालक और तरुणता न पाने वाले अभिमन्यु के मरनेपर सब सेना धर्मराज के देखतेहुये भागी ३३ अजातशत्रु युधिष्ठिर उस अभिमन्यु के गिरानेपर सेनाको छिन्न भिन्न देखकर उन बीरों से यह बचन बोले ३४ कि यह शूर स्वर्ग को गया जो कि मुख फेरकर नहीं मारागया नियत होजाओ भय मनकरो हम युद्ध में शत्रुओं को बिजय करेंगे ३५ इस प्रकार शोक युक्तों से वार्त्तालाप करते बड़े तेजस्वी और प्रकाशमान शूरबीरों में श्रेष्ठ धर्मराज ने दुःखको सहा ३६ वह अर्ज्जुनका पुत्र अभिमन्यु पहिले युद्धमें सर्प के बिषके रूप शत्रुहुये राजकुमारों को मारकर पीछे से युद्ध में सम्मुख गया ३७ श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन के समान अभिमन्यु दश हजार शूरबीर और महारथी कौशिली को मारकर निश्चय इन्द्रलोक को गया ३८ वह पवित्रकर्मी हजारों रथ घोड़े हाथी और मनुष्यों को मारकर युद्धसे तृप्त न होनेवाला शोचने के योग्यनहीं है उसने पवित्र कर्मों से बिजय कियेहुये उन उत्तमलोकों को पाया जोकि पवित्रकर्मी जीवोंके लोकहैं ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ४९ ॥

पचासवां अध्याय ॥

संजय बोले कि फिर हम उन्हों के उत्तम रथीको मारकर उनके बाणों से पीड़ामान रुधिर भरेहुये शरीरों से सायंकालके समय अपने डेरोंकोगये १ हे राजा हम और दूसरे लोग धैर्य्य से युद्धभूमिको देखते ग्लानिको प्राप्तहोकर महा व्याकुलता पूर्व्वक हटगये २ इसके पीछे दिवस के अन्त में शृगालों के शब्दों समेत अशुभ रूप संध्या वर्त्तमान हुई अस्ताचल पर्व्वतको पाकर कमल और आपीड़ के समान सूर्य्यके वर्त्तमानहोनेपर ३ श्रेष्ठ खड्ग शक्ति कवच ढाल और भूषणों के प्रकाशों को आकर्षण करते स्वर्ग और पृथ्वी को एकसा करते सूर्य्य ने अपने प्यारे शरीर रूप अग्निको प्राप्तकिया ४ बड़े बादलोंके समूहके समान

वज्रसे गिराये हुये पर्व्वत के शिखर के तुल्य वैजयन्तीमाला अंकुश कवच और हाथीवानों समेत गिराये हुये अनेक हाथियों से युक्त पृथ्वी बड़ी दुर्गम्यहुई ५ जिनके स्वामी मारेगये वह सब सामान चूर्णहुई घोड़े और सारथी मारेगये प-ताका और ध्वजा टूटीं उन विध्वंस कियेहुये रथोंसे पृथ्वी ऐसे शोभित होगई ६ हे राजा जैसे कि शत्रुओं से नाश कियेहुये पुरों से शोभित होती है सवारों के साथमरेहुये रथ और घोड़ोंके समूहोंसे और पृथक् २ प्रकारके टूटेहुयेसामान और भूषणों से और निकलीहुई जिह्वा दांत नेत्र और आंतों से पृथ्वी भयानक और अशुभ रूप देखने में आई ७ जिनके कवच भूषण वस्त्र और शस्त्र टूटे और हाथी घोड़े रथ और आगे पीछेके मनुष्यों का नाश हुआ वह बहुमूल्य शय्या और उपरिधान समेत परिधानों के योग्य मरेहुये वीर अनाथों के समान पृथ्वी पर सोते हैं ८ युद्धमें कुत्ते शृगाल काक बक गरुड़ भेड़िये तरक्ष और रुधिर पी-नेवाले पक्षी और महाभयानक राक्षस और पिशाचों के समूह अत्यन्त प्रसन्न हुये ९ खालको फाड़कर बसाओं के रुधिर को पीते और बसामांस को खाते ब-हुत से मृतकों को खैंचते बसाको काट २ कर हँसते और गाते हैं १० शरीरों के समूहों की बहानेवाली रुधिर रूप जल रथरूप नौका हाथीरूपी पर्व्वतों से दु-र्गम्य मनुष्यों के शिररूप पाषाण मांसरूप कीच और नानाप्रकार के टूटे अस्त्रों की माला रखनेवाली ११ भयकारी वैतरणी के समान दुर्गम उत्तम शूरवीरों से उत्पन्न की हुई नदी युद्धभूमि में जारीहुई जोकि अत्यन्त भयको उत्पन्न करने वाली और मृतक जीवोंकी बहानेवाली थी १२ जिस नदीमें भयानक रूप पि-शाचों के समूह खाते पीते और शब्दों को करते हैं और जीवों के नाश करने वाले समान भोजन वाले अत्यन्त प्रसन्न कुत्ते शृगाल और पक्षी भी १३ जिस में वर्त्तमान थे फिर सायंकाल के समय धैर्य्य से देखते हुये मनुष्यों ने उस भया-नक दर्शन यमलोक की वृद्धि करनेवाले उठे हुये और नृत्य करते हुये धड़ोंसे व्याकुल युद्धभूमिको त्याग किया १४ तब मनुष्यों ने बड़े लोगों के योग्य और टूटेहुये भूषणोंसे रहित इन्द्रके समान बड़ेपराक्रमी गिरेहुये अभिमन्युको ऐसे युद्ध में देखा जैसे कि हव्यसेरहित अग्निको अग्निहोत्रवाली शालामें देखते हैं १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

चौथेदिनकेयुद्धकाप्रारंभ ॥

संजय बोले कि उस बड़े पराक्रमी और महारथी अभिमन्युके मरने पर रथ और कवच से रहित धनुष को त्यागनेवाले सब शूरवीर १ अभिमन्यु में प्रवृत्त चित्त उसी युद्ध को ध्यान करतेहुये धर्मराज युधिष्ठिर को घेरकरके समीप बैठ गये २ इसके पीछे अपने भतीजे महारथी अभिमन्युके मरनेपर बड़े शोकग्रस्त होकर राजा युधिष्ठिरने बिलाप किया ३ यह अभिमन्यु मेरे प्रिय करने की इच्छा से द्रोणाचार्य्य की महाअजेय सेनाको पराजय करके ब्यूह में ऐसे प्रवेश करगया जैसे कि बैलोंके मध्यमें केसरीसिंह प्रवेश करजाता है ४ बड़े धनुषधारी अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्मद शूरबीर जिसकी सेनाके सम्मुख गयेहुये पराजय होकर लौटे ५ जिसने युद्ध में हमारे बड़े शत्रु सम्मुख आयेहुये दुश्शासन को शीघ्रही बाणों से मुख फेरनेवाला करके अचेतकिया ६ उस अर्जुनके पुत्रने कठिनता से वृद्धिके योग्य द्रोणाचार्य्य की सेनारूपी समुद्रको तरकर दुश्शासन के पुत्रको पाकर सूर्य्यके पुत्र यमराज के लोकको पाया ७ सुभद्रा के पुत्र अभिमन्युके मरनेपर पांडव अर्ज्जुन को अथवा प्यारे पुत्रको न देखनेवाली महाभागा सुभद्रा को कैसे देखूंगा ८ और हम उन दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन से प्रयोजन से रहित युक्तिके बिना इस अप्रिय बचनको कैसे कहैंगे ९ प्रिय चाहनेवाले बिजयाभिलाषी मैंनेही सुभद्रा केशवजी और अर्जुन काभी यह महाअप्रिय किया १० अर्थी दोषोंको नहीं जानता है क्योंकि वह लोभ और मोहमें फँसाहुआ होताहै मुझशहदके चाहनेवालेने इस प्रकारकी भावीको नहीं देखा ११ जो बालक भोजन सवारी शयन और भूषणों में आगे करनेके योग्य था उसको मैंने युद्ध के सम्मुख किया १२ युद्धमें अकुशल युवा बालक उत्तम घोड़े के सदृश किस प्रकार से परस्परके मर्द्दन और कठिन स्थानोंपर कल्याणके योग्य है १३ दुःखकी बातहै कि अब क्रोधसे ज्वलित अर्जुन के दुःखी नेत्रोंसे हमलोग भी भस्म होकर इस पृथ्वी पर सोवेंगे १४ जो कि लोभसे रहित ज्ञानी लज्जावान् क्षमावान् रूपवान् महाबली तेजस्वी मानका करनेवाला बीर प्रिय और सत्य पराक्रमी है १५ जिस बड़े कर्मी के कर्मोंको देवता लोगभी बड़ा और अच्छा कहते हैं और

जिस पराक्रमी ने निवातकवच और पराक्रमी कालिकेय नाम असुरों को मारा १६ और जिसने कि नेत्रोंके एक पलक मारने से महाइन्द्र के शत्रु हिरण्यपुर के वासी पौलोमोंको उनके सब समूहों समेत मारा १७ जो समर्थ कि निर्भयता चाहने वाले शत्रुओं को भी निर्भयता देताहै उसका पराक्रमी पुत्र हम लोगों से रक्षित नहीं होसका १८ फिर उस महाबली से धृतराष्ट्र के पुत्रों को बड़ाभय प्राप्तहुआ पुत्रके मारडालनेसे क्रोधयुक्त अर्जुन कौरवोंको भस्मकरेगा १९ प्रकट है कि नीच लोगोंको सहायक रखनेवाला अपने पक्षका नाशक नीच दुर्य्योधन देखकर शोच करताहुआ अपने जीवन को त्याग करेगा २० इस अतुल्य पराक्रमी महाइन्द्रके पौत्र अभिमन्यु को गिराहुआ देखकर विजयका होनाभी मेरी प्रसन्नताका करनेवाला नहीं है और यह राज्य व देवतारूप होना और देवताओं के साथ सालोक्यता का होनाभी मेरी प्रसन्नता का देनेवाला नहीं है २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकपंचाशत्तमोऽध्याय. ५१ ॥

बावनवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इस के पीछे कृष्ण द्वैपायन महर्षिब्यासजी वहां इसविलाप को करते कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर के पास आये १ भतीजे के मरने से शोक युक्त युधिष्ठिर समीप आकर बैठेहुये ऋषि को न्यायके अनुसार पूजन करके बोले २ कि युद्धमें लड़ताहुआ अभिमन्यु बड़े धनुषधारी अधर्म वाले अनेक महारथियों से घेरकर मारागया ३ वह बालक वृद्धोंकीसी बुद्धि रखनेवाला शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला सुभद्राका पुत्र अधिकतर युद्ध में विना युक्ति और विचार के लड़नेवाला हुआ ४ उससे मैंनेही कहाथा कि युद्ध में हमारे द्वार को उत्पन्नकर सेना के मध्य में उसके पहुंचनेपर हमलोग राजा सिंध से रोंकेगये ५ प्रकट है कि युद्ध की जीविका करनेवालों को सत्य सत्य युद्ध करना चाहिये यह इस प्रकारका युद्ध विपरीत है जिसको कि शत्रुलोगों ने किया ६ इस हेतुसे मैं अत्यन्त दुःखी और शोकके अश्रुपातों से महाव्याकुल हूं और बारम्वार चिन्ता करताहुआ शान्ती को नहीं पाताहूं ७ संजय बोले कि भगवान् व्यास जी इसप्रकार विलाप करते शोकसे उद्विग्न चित्त होकर युधिष्ठिर से यह वचन बोले ८ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ बड़े ज्ञानी सर्व्वशास्त्रज्ञ पंडित युधिष्ठिर तेरे समान

के क्षत्रिय दुःखों में मोहको नहींपाते हैं ६ निश्चय करके यह शूरवीर पुरुषोत्तम वृद्धों के समान कर्म्म को करके युद्ध में असंख्य शत्रुओं को मारकर स्वर्ग को गया १० हे भरतवंशी युधिष्ठिर निश्चय करके शुभाशुभकर्म्म, उल्लंघन के योग्य नहीं है क्योंकि वही कर्म मृत्युरूप होकर देवता दानव और गन्धर्वोंको भी मारताहै ११ युधिष्ठिर बोले कि निश्चय करके यह महाबली राजालोग सेनाके मध्यमें मरे और मृतकनाम होकर पृथ्वीपर सोते हैं १२ इसीप्रकार जो दूसरे दश हजार हाथियों के समान पराक्रमी और वायुके बेगके समान बलवाले हैं वे भी बारम्बार समान रूपवाले मनुष्यों के हाथसे युद्ध में मारेगये १३ मैं युद्ध में इन जीवों के मारनेवाले को कहीं नहीं देखताहूं क्योंकि वे सब पराक्रम से संयुक्त और तपस्याके बलसे भी युक्तहैं १४ सदैव जिनके चित्तमें बिजय करनेकी अभिलाषा नियत रहती है वह बड़े २ पूर्ण बुद्धिमान् मृतकहोकर निर्जीव सोते हैं १५ इस अर्थका बाची शब्द बर्त्तमान होजाताहै कि ये मरगये इसहेतुसे पुरुषको दूसरा कौन मारताहै यह भयकारी पराक्रम करनेवाले राजा लोग बहुधा मरगये १६ अर्थात् अस्वतन्त्र प्रसन्नता रहित निश्चेष्ट होकर वे सब शूर शत्रुके आधीनहुये और बहुतसे क्रोधयुक्त राजकुमार बैश्वानर अग्निके मुखमें गये १७ अब मुझको इसस्थानपर यह सन्देह उत्पन्नहुआहै कि मृतक यहनाम कैसे और कहांसे है और मृत्यु किसकी होती है और मृत्यु कहांसेहै और किसप्रकार करके संसार को मारतीहै हे देवताके समान पितामह जिसप्रकारसे वह सब संसार को मारती है उसको आप मुझसे कहिये १८ संजय बोले कि भगवान्ऋषि इस कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरके इस बातके पूंछनेपर युधिष्ठिरसे यह विश्वास करानेवाला बचनबोले १९ हे राजा इसस्थानपर राजा अकंपन के उस प्राचीन इतिहास को कहताहूं जो कि पूर्व्व समय में नारदजी ने कहाहै २० हे राजा उस राजाने भी लोक में असह्यता के योग्य बड़ेभारी पुत्र शोकको पायाहै मैं मृत्युकी उसप्रथम उत्पत्ति को कहताहूं २१ इसके सुननेसे तू पुत्रके स्नेह बन्धन और शोकसे निवृत्तहोगा २२ उसको चित्त लगाकर सुनो जो कि सब पापों के ओघोंका नाश करनेवाला धन आयुकी पूर्णता का देनेवाला शोकका शान्त करनेवाला और नीरोग्यताका बढ़ानेवाला है २३ पवित्रात्मा शत्रुओं के समूहों का मारनेवाला और मंगलोंका भी मंगलहै जैसे कि वेदका पढ़नाहै उसी प्रकार यह उपाख्यान

भी है २४ हे महाराज यह आख्यान पुत्र धन आयु और राज्य के चाहनेवाले उत्तम राजाओं को सदैव प्रातःकालके समय सुनने के योग्यहै २५ हे तात पूर्व्व समयमें सतयुगके मध्य में राजा अकंपनहुआ वह युद्धभूमि में दैवयोग से शत्रुके आधीनहुआ २६ उसकापुत्र हरिनामथा जो कि बलमें नारायणके समान श्रीमान् अस्त्रज्ञ शास्त्र रखनेवाली बुद्धिका स्वामी पराक्रमी युद्धमें इन्द्रके समान था २७ वह युद्धभूमि में शत्रुओंसे बहुत घिराहुआ शूरबीर और हाथियोंपर हजारोंबाणोंको चलाता २८ युद्धमें शत्रुसंतापी कठिन कर्मको करके सेनाके मध्य शत्रुओं के हाथ से मारागया २९ शोच से युक्त उस राजाने उसके प्रेतकर्मों को करके अहर्निश शोचग्रस्त होकर कभी सुखको नहीं पाया ३० इसके पीछे देवऋषि नारदजी पुत्रके दुःख से जनित इसके शोक को जानकर उसके सम्मुख आये ३१ तब उस महाभाग राजाने देवऋषियोंमें श्रेष्ठ नारदजीको देखकर न्यायके अनुसार पूजनकरके सब वृत्तान्त कहा ३२ राजाने जैसा कि वृत्तांत युद्धमें पराजय और पुत्रके मरनेकाथा सब ज्योंकात्यों वर्णनकिया ३३ बड़ापराक्रमी इंद्र और विष्णु के समान तेजस्वी बड़ा बली मेरापुत्र युद्ध में पराक्रम करके बहुत से शत्रुओं के हाथ से मारागया ३४ हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ समर्थ ऋषि यह मृत्यु क्याहै और किस बल पराक्रम और वीरताकी रखनेवाली है इसको मैं ब्यौरेसमेत सुनना चाहताहूं ३५ वरदाता समर्थ ऋषियों में श्रेष्ठ नारदजी ने उसके उसवचनको सुनकर पुत्रके शोकका दूर करनेवाला यह बड़ा आख्यान वर्णन किया ३६ अर्थात् नारदजी ने कहा कि हे महाबाहु राजा अकंपन इस बड़े विस्तारवाले आख्यानको सुनो कि वह जैसे हुआ और मैंने सुना ३७ जब सबके प्रथम प्रपितामह ब्रह्माजी ने सृष्टिको उत्पन्नकिया फिर उसी बड़े तेजस्वी प्रभुने इस संसारको मरणधर्मा देखकर ३८ उसके नाशकरनेकी चिंताकरी हे राजा चिंता करतेहुये ब्रह्माजीने इस संसार के नाशको नहींजाना ३९ फिर उनके क्रोधद्वारा आकाशसे अर्थात् उनके कर्णादि बिवरसे अग्नि उत्पन्नहुई अन्तर्दिशों समेत सबदिशों के भस्म करने के अभिलाषी उस अग्नि से सबदिशा व्याप्तहुई ४० उसके पीछे प्रभु भगवान् अग्निने स्वर्ग पृथ्वी और ज्वालाकीमालाओं से व्याकुल सबस्थावर जंगम जड़ चैतन्य संसारको भस्म करदिया ४१ जब सबजड़ चैतन्य जीवनाशहुये अर्थात् पराक्रमी अग्निने क्रोधके बड़े वेगसे भयको उत्पन्न

करके सबको भस्मकिया ४२ इसके पीछे जटाधारी निशाचरों के स्वामी रुद्र हर शिवजी उसदेवता परमेष्ठी ब्रह्माजी की शरणमें गये ४३ सृष्टि के प्रियकरनेकी इच्छा से उन शिवजी के परम देवता महामुनि ब्रह्माजी ज्वलित अग्नि के समान वचनबोले ४४ हे मनोरथों के योग्य मैं तुम्हारे किस मनोरथ को करूं हे पुत्र तू इच्छासे उत्पन्नहुआ है इससे तेरी सब इच्छाओं को पूर्ण करूंगा हे रुद्र जो तुम्हारी इच्छाहोय सो कहो ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

तिरपनवां अध्याय ॥

रुद्रजी बोले कि हे समर्थ तुमने संसार के उत्पत्तिको निमित्त उपाय किया और भिन्न २ प्रकार के जीव समूह तुमसे उत्पन्न होकर पोषण पानेवाले हुये १ वह सब सृष्टि अब यहां आपके क्रोधसे फिर भस्मी भूतहोते हैं उनको देखकर मुझको दयाआई है सो हे प्रभु भगवान् प्रसन्नहो २ ब्रह्माजीबोले कि मारने में मेरी इच्छा नहीं है यह ऐसाही होय मुझको पृथ्वी के प्रियकरने की इच्छाथी इसहेतु से मुझ में क्रोध होगया ३ हे महादेवजी इससंसार के भारसे पीड़ित और घायल पतिव्रता देवी पृथ्वी में संसार के नाश के निमित्त बारंबार मुझको प्रेरणा करी ४ तब उसके पीछे मैंने उसरीतिके असंख्य संसारके नाशको नहीं पाया इस कारण मुझमें क्रोधआया ५ रुद्रजी बोले कि हे पृथ्वीके स्वामी संसारके नाशके लिये क्रोध मतकरो प्रसन्न हूजिये और सब जड़ चैतन्य संसारको नाशमतकरो ६ हे भगवन् आपकी कृपासे यह तीन प्रकारका जगत अर्थात् जो प्रकट नहीं हुआ और जो भूत कालमें हुआ और जो अब वर्त्तमान है वह सब प्रकटहोय ७ हे भगवन् क्रोधसे ज्वलितरूप आपने अपने क्रोधरूप अग्निको उत्पन्नकिया ८ वह पर्व्वत के शिखरनदी और रत्नोंको भस्म करताहै पल्वलनाम तड़ाग और सब बनोंसमेत स्थावर जंगम संसारका नाशकरता है ९ हे भगवन् आप प्रसन्न हूजिये आपमें क्रोध नहोय यह मेरा वरहै हे देवता आपके सबसृष्टिके जीवकिस प्रकार से नाशको पाते हैं १० इसहेतु यह तेज लौटजाय और आपमेंही लय होजाय हे देवता सृष्टि के उपकारकी इच्छा से उसको आप अच्छी रीति से विचारकरो ११ जैसी रीति से ये सब जीव प्रकटहोयँ वही रीति आपको करना

योग्य है यहां अपने बालवच्चों समेत सव सृष्टि के जीवनाश न होयं १२ हे संसारके स्वामी मैं तुम्हारी ओर से लोकों के मध्यमें संसारकी वृद्धि के लिये प्रवृत्तकिया गयाहूं हे जगत्पति यह स्थावर जंगम रूप जगत् नाशको न पावे १३ इस हेतु से मैं कपालु देवता से प्रार्थना करताहूं नारदजी वोले कि देवताने उस वचनको सुनकर प्रजाओं के हितकी इच्छा से तेजको फिर अन्तरात्मामें धारण किया १४ इस के पीछे लोक के प्रतिष्ठित प्रभु भगवान् ब्रह्माजी ने अग्नि को अपने में लय करके संसारकी उत्पत्तिसे संवंध रखनेवाले कर्म को और मोक्षसंवंधीकर्मों को भी वर्णनकिया १५ इस प्रकारसे क्रोधसे उत्पन्न अग्निको अपनेमें लयकरते उस महात्माकी सव इन्द्रियोंसे एक ऐसीस्त्री प्रकटहुई १६ जोकि कृष्ण रक्त और पिंगल वर्ण और रक्त जिह्वा और नेत्रोंसे युक्त निर्मल कुंडलों समेत पवित्र आभूषणोंकी धारणकरनेवालीथी १७ इसप्रकार वह इन इन्द्रियोंसे निकलकर मन्द मुसकान करतीहुई विश्वके ईश्वर दोनों देवताओं को देखकर दक्षिण दिशा में नियतहुई १८ हे राजा तव संसार के उत्पत्ति प्रलयके कर्त्ता देवता ब्रह्माजी उसको वुलाकर वोले कि हे मृत्यु इन सृष्टियोंका नाशकर १९ तू संसार के नाशसे संवंध रखनेवाली बुद्धि के कारण मेरेक्रोध से प्रकट हुई है इसहेतु से तू इस सव जड़ चैतन्यको नाशकर २० तू मेरी आज्ञा से इसकर्मको कर सव प्रकार कल्याणको पावेगी फिर उनके इस प्रकारके वचनोंको सुनकर उस कमललोचनी अवला मृत्युने २१ वड़ा ध्यानकिया और वड़े स्वरों से रोनेलगी पितामहने उसके अश्रुपातों को हाथों में लिया २२ तव सव जीवों की वृद्धिकेलिये उसको भी विश्वास कराया २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रयपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

चौवनवां अध्याय ॥

नारदजी वोले कि वह लता के समान एकही आश्रय रखनेवाली मृत्युरूप अवला दुःख को आत्मा में लयकरके हाथ जोड़कर ब्रह्माजीसे वोली १ कि हे वक्ताओंमें श्रेष्ठ विचारकरने का स्थान है कि तुमसे इसप्रकारकी उत्पन्न कीहुई मैं स्त्री जानवूझकर किसरीतिसे निर्दय और अप्रिय कर्म को करूं २ मैं अधर्म से डरतीहूं हे भगवन् प्रभु प्रसन्न हूजिये हे देवता प्रिय पुत्र समान नय भाई

माता पिता और भर्त्ताओं की मुझ मारनेवाली को ३ मृतकों के पास बैठीहुई स्त्रियां खोटे वचन कहकर २ शापदेंगी मैं उनसे डरतीहूं निश्चय करके दुखी और रोतेहुये जीवों के जो अश्रुपातों के बुन्द गिरते हैं ४ हे भगवन् मैं उन से भयभीत होकर आपकी शरणमें आईहूं हे देवताओं में श्रेष्ठ देवता मैं यमराज के भवन को नहींजाऊं ५ हे संसार के पितामह मस्तक अंजुली और शरीर के द्वार बड़ी नम्रतापूर्व्वक मैं आपसे इस अभीष्टको चाहतीहूं ६ हे संसारके ईश्वर मैं आपकी कृपासे तपकरना चाहती हूं हे भगवन् प्रभु देवता तुम यह बर मुझ को दो ७ तुम्हारी आज्ञानुसार मैं धेनुक नाम उत्तम आश्रमको जाऊंगी आप के पूजन में बड़ी प्रीति करनेवाली मैं कठिन तपस्या को करूंगी ८ हे देवताओं के ईश्वर मैं विलाप करतीहुई जीवोंके प्यारे प्राणों के हरने में समर्थ नहींहूं ९ मुझको अधर्म से रक्षाकरो ब्रह्माजी बोले कि हे मृत्यु तू संसार के नाशहीके हेतु से उत्पन्नकी गई है तुम सब सृष्टिको जाकर मारो और तू किसी बात का शोचमतकर १० यह मेरी इच्छाहै ऐसेही होगा इस में किसी प्रकार बिपरीत न होगा तू लोकमें निन्दितहो और मेरे बचन को कर ११ नारदजी बोले कि इस प्रकार के ब्रह्माजी से बचनों को सुनकर वहस्त्री भगवान्की ओर हाथजोड़कर प्रसन्नहुई और संसार के उपकारकी इच्छासे संसार के नाशमें बुद्धिको नहीं प्रवृत्त किया १२ तब प्रजाओंके ईश्वरों के भी ईश्वर ब्रह्माजी मौनहुये आपही शीघ्र प्रसन्न हुये १३ वह देवदेव ब्रह्माजी सब लोकों को देखकर मन्द मुसकान करनेवाले हुये उन क्रोध रहित ब्रह्माजीके देखने से वह लोग प्रथमके समान प्रकटहुये १४ उस अजेय भगवान् को क्रोध से रहित होजाने पर वह कन्या भी उस बुद्धिमान के सम्मुख से चलीगई १५ हे राजेन्द्र तबवह मृत्यु सृष्टि के नाश को स्वीकार न करके वहां से शीघ्रही चलकर धेनुकाश्रम में गई १६ उसने वहां जाकर बड़े कठिन और उत्तम व्रतको किया तब सृष्टि के प्रियकी चाहनेवाली मृत्यु दया करके इक्कीस पद्मवर्षतक एक पैर से खड़ी रही वह इन्द्रियों के प्यारे विषयों से अच्छे प्रकार रोककर तपस्या करनेलगी १७ । १८ इसके पीछे सात पवित्र बनों में चौदह पद्म बर्षतक एकचरण से खड़ी रही १९ इसके पीछे वह दशहजार पद्म वर्षतक मृगों के साथ भ्रमण करनेवाली हुई फिर पवित्र शीतल और स्वच्छ जलवाले नन्दातीर्थपर जाकर २० उस निष्पाप ने

नन्दानदीपर नियमको धारण करके जलके मध्यमें आठहजार वर्ष व्यतीतकिये २१ वह नियमसे बुद्धिमान प्रथम पवित्र नदी कौशिकीपर गई वहां वायुजलका आहार करके फिर नियम किया २२ फिर उस पवित्र कन्याने पांचों गंगा और वेतसकों में बहुत प्रकारकी तपस्याओं से अपने शरीर को जीर्ण करदिया २३ इसके पीछे वह अकाशगंगा और महामेरुपर जाकर प्राणायाम करनेवाली प्रकाशित पत्थरपर केवल निश्चेष्टहोकर नियतहुई २४ फिर वह शुभ और श्रेष्ठस्त्री उस हिमाचल के मस्तकपर जहां देवताओंने पूर्व्व समयमें यज्ञकिया वहां एक निखर्व वर्षतक नियत हुई २५ फिर पुष्कर में गोकर्ण नैमिष और मलयाचल में बड़ी प्रीतिसे चित्त के नियमोंसे अपने शरीरको कृषकिया ब्रह्माजी की दृढ़भक्ति रखनेवाली और सदैव ब्रह्माजीको सर्वरूप मानकर दूसरे देवताको न रखनेवाली अनन्य भक्तिमें नियतहुई २६ और धर्मसे पितामह को प्रसन्नकिया २७ हेराजा तब उसके पीछे लोकोंके स्वामी अविनाशी प्रसन्नचित्त प्रीतिमान् ब्रह्माजी बड़े हित प्रिय वचन उससे बोले २८ कि हे मृत्यु यह क्याबातहै तब बड़े तपोंके करने के पीछे वह मृत्यु उन भगवान् पितामहसे फिर यह वचन बोली कि हे देवता इष्ट मित्र नातेदार आदि के मध्यमें नियत पुकारतेहुये सृष्टिके लोगोंको मैं नहीं मारूं २९ हे सबके ईश्वर प्रभुमैं इसवरको तुमसे चाहती हूं ३० मैं धर्म के भयसे भयभीतहूं इसी हेतुसे तपमें नियतहुई हूं हेमहाभाग अविनाशी मुझ भयभीतको निर्भय करो ३१ मैं पीड़ावान निरपराधी स्त्री आपसे प्रार्थना करती हूं तुम मेरी गति अर्थात् आश्रयस्थान हूजिये इसके पीछे भूत भविष्य वर्त्तमानके ज्ञाता देवताओं के देवता ब्रह्माजी उससे बोले ३२ हे मृत्यु इन सब सृष्टियों के नाशकरने में तुझको अधर्म नहीं है हे कल्याणिनि मेरा कहाहुआ किसी दशा में भी मिथ्या नहींहै और न होगा ३३ इसहेतुसे तुमचारों प्रकारकी सब सृष्टिको मारो तुझको सनातन धर्म सब प्रकारसे पावना करेगा ३४ लोकपाल यमराज और सम्पूर्ण रोगादिक भी तेरे सहायक होंगे और मैं और सब देवता मिलकर तुझको यह वर देते हैं ३५ कि जैसे तू पापोंसे रहित होकर विरजानाम से विख्यात होगी हे महाराज ब्रह्माजी के इस वचनको सुनकर वह मृत्यु शिरसे ब्रह्माजीको प्रसन्न करती हुई हाथ जोड़कर यह वचन बोली कि जो यह इसीप्रकार करने के योग्य है तो हे प्रभु यह मेरे विना नहीं होय ३६ । ३७ मैंने आपकी आज्ञाको

मस्तकपर धारणकिया अब जो मैं आपसे कहतीहूं उसको आपसुनिये क्रोध लोभ दूसरे के गुणमें दोष लगाना ईर्षा शत्रुता देहमें मोहकरना ३८ निर्लज्जता और परस्पर कठोर वचन यह सब भी पृथक् २ प्रकारसे शरीर को व्यथितकरें ब्रह्माजी बोले कि हे मृत्यु इसीप्रकार से होगा बहुत श्रेष्ठहै तुम सृष्टिको मारो तुझको कभी अधर्म न होगा हे शुभ स्त्री मैं तुझको शाप नहीं दूंगा ३९ मैंने जिन अश्रुपातों को हाथमें लिया वह जीवोंके शरीरों से उत्पन्न होनेवाले रोगहैं वह निर्जीव मनुष्योंको मारेंगे तुझको अधर्म नहीं होगा भय मतकर ४० प्राणियों को मारकर तुझको अधर्म नहीं होगा निश्चयकरके तूही धर्म है और तूही धर्मकी स्वामिनीहै तूही धर्मरूप होकर सदैव धर्म में नियतहोके सबको धारणकरनेवालीहै इस हेतुसे इनसृष्टियोंके प्राणोंको सब प्रकारकरके अपने स्वाधीनकर ४१ तू क्रोध और इच्छाको अच्छी रीतिसे त्याग करके इसलोक में सब प्राणियों के जीवों को भी आधीनकर इसप्रकार से तुझको अत्यन्त धर्म होगा अधर्म दुराचारी लोगों को मारेगा ४२ इसकारण तुम आत्माके द्वारा आत्मा को पवित्रकरो और सतोगुण से रहित लोग अपने पापसेही अपने को नाश करेंगे इसहेतु से तुम अपने सम्मुख आयेहुये इच्छा और क्रोधको श्रेष्ठ रीतिसे त्याग करके अवस्था के अन्त होने पर जीवों को मारो ४३ नारदजी बोले कि निश्चय करके वह मृत्यु नाम के उपदेश से और शाप से भयभीत होकर उन ब्रह्माजी से बोली कि बहुत अच्छा ऐसा कहकर इच्छा और क्रोध को त्याग करके वह मृत्यु मारने के कर्म में प्रवृत्त होकर समय के अन्तहोनेपर जीवों के प्राणोंको हरती है ४४ मृत्यु और उस मृत्युसेही उत्पन्न होनेवाले इनसब जीवों के रोग और मारनेवाले रोग जिनसे कि जीव पीड़ा पाता है यह सब संपूर्ण जीवों के शरीर त्यागने के समय आते हैं इस हेतुसे तुम निरर्थक शोक मतकरो ४५ सब इन्द्रियरूप देवता शरीर के त्यागने के समय जीवात्माओं के साथ मृतक के समान जैसे परलोक में जाते हैं उसी प्रकार वहां लौटकर भी आते हैं अपने कर्म से देवता रूप होने वाले कर्मदेवभी लौटकर आते हैं और सच्चे परमात्मा से प्रकाशित रूप होने वाले ज्ञानदेव फिर लौटकर नहीं आते हैं हे राजाओं में श्रेष्ठ इस प्रकार जीवधारियों के प्रथम देवता शीघ्रता से मृतक के समान जाकर फिर प्रकटहुये ४६ यह सर्वत्र वर्त्तमान भयकारी और भयानक शब्द बड़ा वेगवान् प्राणवायु जीवों

के शरीरों को मारनेवाला है अत्यन्त प्रकाशित उग्र वायु रूप शिव और अ-
पूर्व्व प्राण जन्म मरणको नहीं पाता है अर्थात् जीवन्मुक्त है ४७ सब देवता मृ-
तक नाम के योग्यहैं हे राजेन्द्र इस हेतुसे तुम पुत्रका शोक मतकरो तेरा पुत्र
रमणीक बीर लोकोंको पाकर स्वर्ग में बर्त्तमान होकर सदैव आनन्द करता है
४८ दुःखको त्यागकर पवित्रकर्म्मी पुरुषों के साथ में बैठो यह सृष्टिभरे की मृत्यु
देवता की आज्ञासे समय आनेपर विधिके अनुसार मारनेवाली है यह सृष्टिके
शरीरों के प्राणों की हरण करनेवाली आप अपनेही से उत्पन्नकीगई है ४९ नि-
श्चय करके सब जीवधारी अपना आपही अपघात करते हैं दण्डधारी मृत्यु उ-
नको नहीं मारती है इसहेतुसे पण्डित लोग बास्तवमें मृत्युको ब्रह्माजी से उत्पन्न
जानकर मृतकों को नहीं शोचते हैं इस सृष्टिभरको देवताकी सृष्टि जानकर मृ-
तक पुत्रों के शोकों को शीघ्र त्यागो ५० व्यासजीबोले कि राजा अकंपन ना-
रदजी के कहेहुये इस सार्थक वचनको सुनकर अपने मित्र नारदजीसे बोला ५१
हे भगवन् ऋषियों में श्रेष्ठ मैं आप के मुखसे इस इतिहास को सुनकर शोक से
रहित और प्रसन्नहोकर अब मैं कृतार्थहूं और आपको दंडवत् करताहूं ५२ नारद
जी शीघ्रही नन्दनवनको गये ५३ इसीप्रकार सदैव इस इतिहासका सुनना और
सुनाना पुण्य कीर्ति स्वर्ग धन और पूर्णायुका देनेवाला है ५४ संजय बोले कि
तब राजा युधिष्ठिर इस प्रयोजनवाले पदको सुनकर क्षत्रिय धर्म और शूरों की
परमगतिको जानकर शांतहुआ और जाना ५५ कि यह महापराक्रमी महारथी
अभिमन्यु सब धनुषधारियों के सम्मुख शत्रुओं को मारकर स्वर्गलोकको अ-
च्छी रीति से प्राप्तहुआ ५६ वह बड़ा धनुषधारी महारथी युद्ध में सम्मुख होकर
खड्ग गदा शक्ति और धनुष से लड़ताहुआ मारागया ५७ और वह चन्द्रमा
का पुत्र रजोगुण से रहित फिर अपनेही तेज में लय होता है इसहेतु से पांडव
युधिष्ठिर अपने भाइयों समेत बड़े धैर्य्यको करके सावधानता से अच्छा अलंकृत
होकर शीघ्रही लड़ने को सम्मुखगया ५८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

पञ्चपनवां अध्याय ॥

संजयबोले कि धर्मराज युधिष्ठिर मृत्युकी उत्पत्ति समेत अद्भुत कर्मोंको

सुनकर और व्यासजीको प्रसन्न करके फिर यह वचन बोले १ अर्थात् युधिष्ठिर ने कहा कि हे निष्पाप पवित्रात्मा सत्यवक्ता गुरू और इन्द्र के समान पराक्रमी राजऋषि सत्यलोकादिक स्थानों में निवास करते हैं २ तुम फिर भी मुझको सत्यबचनों से संतुष्टकरो और प्राचीन राजऋषियों के कर्मों से भी मुझको विश्वास कराओ ३ किन २ पवित्रात्मा राजऋषियों ने कितनी २ दक्षिणादीं वह सब आप मुझसे वर्णन कीजिये ४ व्यासजीबोले कि राजा शैब्यका पुत्र संजय नामथा उसके परम मित्र नारद और पर्वतऋषिथे ५ वह दोनों ऋषि एक समय उस राजाके देखनेकी इच्छासे उसके घरमें गये वहां राजासे बिधिके अनुसार पूजित होकर बड़ी प्रसन्नता से निवासी हुये ६ फिर दैवयोगसे एक समय पवित्र मुसकान और सुन्दर वर्णवाली उसकी कन्या उन दोनों ऋषिके समीप आनन्द पूर्व्वक बैठेहुये राजा संजयके पासआई ७ उसने राजाको प्रणामकिया फिर उसकी प्रणाम लेनेवाले राजाने उस समीप में बैठीहुई कन्या को बिधिके अनुसार उसके योग्य और चित्तके अभीष्ट आशीर्बादों से प्रसन्नकिया ८ तब पर्व्वतऋषि उसको अच्छी रीतिसे देखकर हँसते हुये इस बचन को बोले कि यह चंचलाक्षी सब लक्षणों से युक्त महासुन्दर किसकी कन्या है ९ आश्चर्य्य है कि यह सूर्य्य का प्रकाश है व अग्नि की ज्वाला है या लक्ष्मी ह्रि कीर्त्ति धृति पुष्टि सिद्धि नाम देवी है अथवा चन्द्रमा का प्रकाश है १० इस प्रकार से कहने वाले देवऋषि पर्व्वत से राजा संजय बोले हे भगवन् यह मेरी कन्या है और मुझसे अपने बरको चाहती है ११ फिर नारदजी उससे बोले कि हे राजा जो तुम अपना बड़ा कल्याण चाहते हो तो इस कन्याको भार्य्या करनेके अर्थ मुझकोदो १२ यहसुनकर अत्यन्त प्रसन्न होकर राजा संजयने नारदजीसे कहा कि दूंगा फिर अत्यन्त क्रोधित होकर पर्व्वतऋषि नारदजीसे यह वचन बोले १३ कि निश्चय प्रथम मेरे हृदयसे बरीहुई इस कन्यको तुमने मांगा है हे ब्राह्मण जो आपने मेरे चित्तसे वरीहुई कन्याको तुमने वरा है इसहेतु से तुम अपनी इच्छाके अनुसार स्वर्ग को न जाओगे १४ इस प्रकार से शापित होकर नारदजी उत्तम रूप वचन उससे बोले कि मन, वचन, बुद्धि और वाणी से जलसंयुक्त दीहुई अथवा कन्या और वरकाहाथ मिलना और मन्त्र यह सातों कन्या के वरहोने के चिह्नप्रसिद्ध हैं १५ परन्तु यह निष्ठा निश्चयात्मक नहीं

है सत्पुरुषों की निष्ठा सप्तपदी है १६ तुमने बिना विवाह होनेकेही मुझको शापदिया है इस हेतुसे तुमभी मेरे बिना कभी स्वर्गको न जाओगे १७ तब वह दोनों परस्पर में शाप देकर वहां निवास करनेलगे फिर पुत्रके आकांक्षी पवित्रात्मा उस राजाने भी बड़ी सामर्थ्य और उपायसे खाने पीने की वस्तुओं समेत वस्त्रोंके आस्तरणोंसे ब्राह्मणोंकी सेवाकरी १८ एक समय तपस्या से युक्त वेद पढ़नेमें प्रवृत्त वेदवेदांग पारगामी ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ और उस पुत्राभिलाषी राजापर प्रसन्नहोकर सब ब्राह्मणलोग मिलकर नारदजीसे बोले कि इस राजाको चित्त के अनुसार पुत्रदो १९। २० ब्राह्मणों से यह बचन सुनकर नारदजी तथास्तु कहकर राजा संजयसे बोले कि हे राजऋषि ये सब ब्राह्मण प्रसन्न होकर तेरे पुत्र होनेके निमित्त याचना करते हैं २१ तेरे कल्याण होय तू जैसापुत्र चाहताहै उसको मांग इस प्रकार के नारदजीसे वचन सुनकर राजाने हाथजोड़कर ऐसा सर्वगुणसंपन्न पुत्र नारदजीसे मांगा २२ जोकि यशस्वी कीर्त्तिमान् तेजस्वी शत्रुओं को विजय करनेवाला हो और जिसका मूत्र विष्ठा थूक और प्रस्वेद ये सब सुवर्ण होजायँ २३ उनकी कृपासे वैसाही पुत्रहुआ इसरीतिसे उसका नाम सुवर्णष्ठीव इस पृथ्वीपर विख्यातहुआ वरप्रदान से उसराजाके पास असंख्य धन बढ़ता था २४ तब उस सुवर्णष्ठीव राजाने गृह प्राकार दुर्ग ब्राह्मणों के स्थान और सब सामान सुवर्णके अपनी रुचिके समान बनवाये २५ शय्या आसन सवारियां थाली हंडेआदि पात्र और उसराजाके जो महलआदि बाहरी सामानये २६ वे स्वर्णमय और समयके अनुसार बड़े वृद्धिमानहुये इसके पीछे चोरोंके समूह सुनकर और इसको इसप्रकार का देखकर २७ उस राजाका निरादर करके बुराइयां करने के लिये दुष्ट कर्म करनेलगे कितनेही चोरों ने कहा कि हम आप जाकर इस राजा के पुत्रकोही पकड़ें २८ क्योंकि वही इसको सुवर्ण की खानि है उसका उपायकरें इसके पीछे उन लोभीचोरों ने राजा के घर में प्रवेश करके २९ पराक्रम से सुवर्णष्ठीव नाम राजकुमार को हरण करलिया उपाय के न जाननेवाले बड़े निर्बुद्धी उन चोरों ने उसको पकड़कर वनमें लेजाके ३० मारकर खंड २ करके लोभियों ने कुछभी धनको नहीं देखा प्राणों से रहित उस बालक का वह धन जो कि वरप्रदान से प्राप्तहुआ था वह सब नाश होगया तब मूर्ख और अचेत चोरोंने परस्पर में अपना २ भी अपघात किया

और उस कुमार को मारकर इस पृथ्वी से आप नष्ट होगये ३२ वे दुष्टकर्मी चोर कठिन और भयानक नरक को गये फिर उस वड़े तपस्वी और दयावान् राजाने उसवरसे प्राप्तहुये पुत्रको मराहुआ देखकर ३३ महादुखी और पीड़ासे व्याकुल होकर विलापक्रिया पुत्रके शोकसे घायल और बिलाप करते राजा को सुनकर देवऋषि नारदजी ने उसके सम्मुख आकर दर्शन दिया ३४ उन नारदजी ने उसके पासआकर उसदुःखसे पीड़ित और अचेततासे बिलापकरनेवाले राजासे जो कहा ३५ हे युधिष्ठिर उसको समझो अर्थात् नारदजीने कहा कि यहां अभीष्टोंसे तृप्त होनेवाला होकर तू मरजायगा ३६ हम ब्रह्मवादी जिसके घरमें नियत होकर ठहरे हे संजय हम उस राजा मरुत और आवीक्षितको मृतक सुनतेहैं ३७ जिस मरुतने प्रसन्नता पूर्व्वक बृहस्पतिजीसे संवर्त्तकको पूजनकराया उस भगवान् प्रभुने नानाप्रकारके यज्ञों से पूजन करनेके अभिलाषी जिस राजऋषि को धन और हिमालय पर्व्वतके स्वर्णमयी चौथे भागको दिया ३८ जिसके यज्ञके पास उस देवताओं के समूह जिनमें मुख्य इन्द्र समेत बृहस्पतिजी हैं ३९ और संसार के उत्पन्न करनेवाले सब देवता वर्त्तमानहुये और यज्ञशालाके सब सामान स्वर्णमयीहुये ४० तब वेदपाठी भोजनों के अभिलाषी सब ब्राह्मणों ने उसके उस अन्नको जो इच्छाके अनुसार पवित्र बिचार कियाथा यथेच्छ भोजन किया ४१ जिसके सब यज्ञोंमें दूध दही घृत सहत और भक्ष्य भोज्य की बस्तु और बस्त्र भूषणादि भी उत्तम सुडौल मनोहर और चित्तरोचक थे ४२ उस यज्ञमें वेद वेदांग पारग अत्यन्त प्रसन्नमूर्त्ति ब्राह्मणलोग जिस २ बस्तुको चाहते थे वह सब वर्त्तमान होतीथी उस राजा मरुतके गृह में मरुत देवताको परोसनेवाले हुये ४३ और राजऋषि आवीक्षितके सभासद बिश्वेदेवानाम देवताहुये जिस पराक्रमी राजाकी धनरूप खेती अच्छी बर्षासे थी ४४ जिसने अच्छे प्रकार से तैयारकिये हुये हव्यसे ऋषि पितर और सुख पूर्व्वक जीवन करनेवाले देवताओं के स्वर्गबासी प्रकाशों को ४५ सदैव ब्रह्मचर्य्य वेदोक्त यज्ञ और सब प्रकार के दानों के द्वारा तृप्तकिया शय्या आसन खान पानकी वस्तु और दुःखसे त्यागकरनेके योग्य सुवर्ण केचय ४६ और सब प्रकारका असंख्यधन अपनी इच्छा से ब्राह्मणों को दिया वह श्रद्धावान राजा प्रजाको प्रसन्न करके इन्द्रके बुलानेसे प्रजा राज्य मंत्री स्त्री संतान और बांधवों समेत बिजय कियेहुये कर्म फलके देनेवाले अवि-

नाशी लोकों को गया ४७ । ४८ राजा मरुत्तने तरुणतासे हजार वर्षतक राज्य किया हे संजय जो वह धर्म ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्य्य अथवा धर्म अर्थ काम वल इन सब कल्याणोंको तुझसे भी अधिक रखनेवालाहै ४६ और तेरे पुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा मरगया तब तुम यज्ञोंसे रहित दक्षिणाओं के न देनेवाले होकर पुत्रका शोच मतकरो यह नारदजीने कहा ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥

छप्पनवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे संजय हम उस राजा सुहोत्रको भी मराहुआ सुनते हैं जो कि एकवार देवताओं से भी अजेयहुआ देखागया १ जिसने राज्यको धर्म से पाकर ऋत्विज ब्राह्मण और पुरोहितोंसे अपना कल्याण पूंछा और पूंछकर उनकी आज्ञामें नियतहुआ २ सुहोत्रने प्रजाके पोषण धर्म दान यज्ञ और शत्रुओंकी विजय इनसव बातोंको जानकर धर्मके अनुसार धनकी प्राप्तिको चाहा ३ धर्म से देवताओंको पूजा और बाणों से शत्रुओं को विजयकिया और अपने गुणों से सव जीवोंको प्रसन्न करके विदित किया ४ जिसने म्लेच्छ और आटविक देशों के सिवाय इससव पृथ्वीको भोगा और जिसके निमित्त इन्द्रने वर्षोंतक सुवर्ण को वरसाया ५ वहां पूर्व्व समय में इच्छा के अनुसार जारी होनेवाली सुवर्ण की उत्पत्ति स्थान नदियोंने ग्राह कर्कट और अनेक प्रकारके असंख्य मत्स्यों को धारण किया ६ और इन्द्र देवता अभीष्ट पदार्थ और नानाप्रकार की स्वर्णमयी अनुपम मूर्त्तियों को वरसाता था और बावड़ी एक २ कोशकी लम्बी थीं ७ तव स्वर्णमयी सैकड़ों बौने कुवड़े नक्र मकर और कच्छपों को देखकर आश्चर्य्य किया ८ यज्ञ करनेवाले राजऋषिने कुरुजांगल देशके मध्य विस्तृत यज्ञमें उस असंख्य सुवर्ण को ब्राह्मणोंके अर्थ संकल्प किया ६ उसने हजार अश्वमेध और सौ राजसूय और अन्य वहुत दक्षिणवाले पवित्र यज्ञों से १० और सदैव नैमित्तिक कर्मोंके करनेसे चित्तकी अभीष्ट गति को पाया हे सौत्यके पुत्र संजय जो वह राजा सौहोत्रादि व धर्म्मादि चारो कल्याणों को तुझसे अधिक रखनेवाला और तेरे पुत्रसे भी अधिक धर्म्मात्मा मरगया तो तुम यज्ञ न करने

व दक्षिणा के भी न देनेवाले होकर पुत्र का शोच मत करो यह नारदजी ने कहा ११ । १२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे संजय हम वीर राजा पौरव को मृतक हुआ सुनते हैं जिसने दशलाख श्वेत घोड़ों को यज्ञके निमित्त छोड़ा १ उस राजऋषिके यज्ञ में देश २ के आनेवाले पण्डितोंकी गणना नहीं होसकी जो कि शिक्षा अक्षर और बिधिके जाननेवाले अर्थात् वेदके पढ़नेकी रीति से सूत्र व्याकरणादि के जाननेवाले २ वेद विद्या और व्रत से स्नान किये हुये दानके अभ्यासी अपूर्व प्रिय दर्शन और संन्यासीआदिके भोजन भिक्षाके देनेवाले वस्त्र गृह शय्या आसन और सवारीवाले थे ३ वे वहां सदैव उपाय और क्रीड़ा करनेवाले नटनर्त्तक गन्धर्व पूर्णक और बर्धमानकों के द्वारा प्रसन्न कियेगये ४ उसने प्रतियज्ञ में समयके अनुसार श्रेष्ठ दक्षिणा बांटी दशहजार ऐसे हाथी जो सुवर्ण भूषणों से अलंकृत होकर प्रकाशमान और अत्यन्त मतवाले थे ५ उसीप्रकार ध्वजा पताका समेत सुवर्ण के रथ दान किये और जिसने स्वर्ण भूषणों से अलंकृत दशलाख कन्या ६ अच्छी जातिवाले घोड़े और हाथियों पर सवार और सुन्दर घर और खेत रखनेवाले सैकड़ों बैल और एकलाख सुवर्णकी मालाओं समेत गौयें और हजार दास इस प्रकारकी दक्षिणा जिसने दीं ७ सुवर्ण शृङ्ग चांदीके खुर कांस्य दोहनी रखनेवाली सवत्सा गौयें ८ दासी दास खच्चर ऊंट और बहुत से कंबल आदिको दानकिया ९ उस यज्ञके विस्तार होनेपर दक्षिणा बहुतसी बांटी उसमें पुराणके ज्ञातालोग इसकी गाथाको गाते हैं १० उस उपायकरनेवाले राजा अंग के निज धर्म्म से प्राप्त गुणों में श्रेष्ठ सब अभीष्ट वस्तुओं से युक्त वह शुभ यज्ञ था ११ हे सौत्यके पुत्र संजय जो वह चारों कल्याणों में तुझसे और तेरे पुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा मरगया तब तुम यज्ञ न करनेवाले और दक्षिणाके न देनेवाले होकर पुत्रका शोक मत करो १२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे संजय हम औसीनरके पुत्र शिवी कोभी मृतक सुनते हैं जिसने इस सम्पूर्ण पृथ्वी को चमड़ेके समान लपेटा अर्थात् अपने स्वाधीन किया १ उस शत्रुओं के विजय करनेवाले रथके शब्दसे पर्वत द्वीप समुद्र और वन समेत पृथ्वी भर को शब्दायमान करते शिवी ने सदैव उत्तम शत्रुओं को मारा २ उसने पूर्ण दक्षिणावाले वहुत प्रकारके यज्ञोंसे पूजन किया वह पराक्रमी बुद्धिमान राजा वहुत धनको पाकर ३ युद्धमें सब महाराजोंका अंगीकृत हुआ जिसने इस सब संसारकी पृथ्वीको विजयकरके उन अश्वमेधोंसे पूजन किया ४ जो कि अर्ग्गल न रखनेवाले वहुत फलों से युक्त थे उस हजारों कोटि निष्कोंके दान करनेवाले ने हाथी घोड़े आदि पशु धान मृग गौ और भेड़ बकरियों समेत ५ इस नानाप्रकारवाली पवित्र पृथ्वीको ब्राह्मणोंके अर्थ भेटकिया बादलकी जितनी धाराहोतीहैं और आकाशमें जितने नक्षत्र हैं ६ और जितने कि गंगा की वालूके कण हैं और मेरु पर्वतके जितने पाषाण हैं और समुद्र में जितनेरत्न और जलजीवहैं औसीनरके पुत्र शिवीने उतनीही गौयें यज्ञमें दानकरीं ७ संसारके स्वामीने उसके कर्मके बोझको उठानेवाला कोई पुरुष तीनों कालमें नहीं पाया ८ उसके नानाप्रकारके यज्ञ सब अभीष्ट वस्तुओंसे युक्तहुये ९ जिनमें सुनहरी यूप आसन गृह भित्ती परिधि और बाह्यद्वार और खाने पीनेकी पवित्रवस्तु और प्रयुतसंख्यावाले ब्राह्मण थे १० उसके यज्ञके बाड़ोंमें नानाप्रकार की भोजनादिककी वस्तुओंके साथ दूध दहीके ह्रद नदी और उज्ज्वल अन्नके पर्वत और चित्तरोचक कथाहुई ११ स्नान भोजन पान इनमें से जो जिसको प्रिय होय वह करो ऐसी आज्ञा सब लोगोंको दे रक्खीथी इस पवित्रकर्मसे प्रसन्नहोकर रुद्रजीने शिवराजाको वरदिया १२ कि हे राजा तेरे धनकांक्षा कीर्त्ति और जो तू करे वह सबकर्म अविनाशी होयँ और जीवोंकी प्रीति समेत उत्तम स्वर्गको पाओगे १३ शिवी इन अभीष्ट वरदानों को पाकर समय पर स्वर्ग को गया हेसंजय जो वह चारों कल्याणों में तुझसे अधिक है १४ और तेरे पुत्र से भी अधिक महात्मा पुरुष मरगया तब तुम यज्ञ और दक्षिणा से रहित अपने पुत्रका शोच मतकरो यह नारदजीने कही १५ ॥

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि अष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥

उनसठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे संजय हम दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र जीको भी शरीर त्यागनेवाला सुनतेहैं जिसके साथ प्रजालोग ऐसे प्रसन्नहुये जैसे कि औरस पुत्रको देखकर पिता प्रसन्नहोता है १ जिस बड़ेभारी तेजस्वीमें असंख्यों गुण भरेहुये थे और जो अविनाशी लक्ष्मणजीके ज्येष्ठ भ्राता अपने पिताकी आज्ञा से स्त्री समेत चौदह वर्षतक वनमें नियतहुये उस नरोत्तम ने जो तपस्वियों की रक्षाके निमित्त जनलोक में चौदहहज़ार राक्षसोंको मारा और रावण नाम महा प्रबल प्रतापी अतुल बल राक्षस ने वहांपर निवास करनेवाले २ । ४ रामचन्द्र जीकी भार्य्या सीताजीको हरणकिया उस राक्षसको अपने छोटेभाई समेत जाकर महाहितकर युद्ध में अत्यन्त कोप करके श्री रामचन्द्रजीने उस अपराधी अन्यसे अजेय पुलस्त्यवंशी रावणको ऐसे मारा ५ जैसे कि पूर्व्व समयमें शिवजीने अन्धक को माराथा उस देवता असुरों से भी न मरनेवाले देवता और ब्राह्मणोंके दुःखदायी कंटकरूप ६ पुलस्त्यबंशी रावणको उस महाबाहु रामचन्द्र जीने युद्धमें उसके सब राक्षसों के समूहों समेत मारा वह रामचन्द्रजी प्रजाओं पर अनुग्रह करके देवताओं से भी पूजन कियेगये ७ देवता और ऋषियों के समूहों से पूजित और सेवित सब जीवोंपर दया करनेवाले उन रामचन्द्रजीने संपूर्ण संसारको अपनी कीर्त्तिसे व्याप्तकरके नानाप्रकार के राज्यको पाकर फिर धर्मसे प्रजापालन करनेवाले समर्थ दशरथात्मज ने अनर्गल बड़े राजसूय और अश्वमेध को किया और हविषसे देवताओं के ईश्वर इन्द्र को प्रसन्नकिया फिर उस राजाधिराजने बहुत गुणवाले नानाप्रकार के अन्य २ यज्ञों से भी पूजन किया ८ । १० सदैव अपनेगुणों से संयुक्त अपने तेजसे प्रकाशित रामचन्द्रजी शरीरवर्ती सम्पूर्ण रोगरूप क्षुधा पिपासा आदि को भी विजय किया अर्थात् निवृत्त किया ११ दशरथके पुत्र रामचन्द्रजी सब जीवमात्रों को उल्लंघन करके शोभायमानहुये राज्य में श्रीरामचन्द्र के समान करनेपर पृथ्वी के ऊपर ऋषि देवता और मनुष्यों का निवास हुआ १२ उस समय राज्य में रामचन्द्रजी के राजशासन करनेपर जीवधारियों के प्राण नाशको प्राप्त नहींहुये और प्राण अपान समान किसी के विपरीत नहींहुये अर्थात् किसी प्रकारका अनर्थ नहीं

हुआ १३ और किसी की अपमृत्यु आदि कभी नहींहुई चारों ओर से तेजों की वृद्धिहुई सब प्रजा पूर्णायुवाली हुई उस समय तरुण अवस्थावाला नहीं मरताथा और चारों वेदों के मन्त्रों से प्रसन्न देवता अनेक प्रकार के हव्यकव्य और तड़ागादिक केही पूजन और यज्ञ कोही पाते थे और सब देश मच्छर डांस और विषवाले सर्प्पादिकों से रहित थे १४ । १६ जलमें जीवों की मृत्यु नहीं हुई और विना समय के अग्नि ने किसी को न जलाया उनके राज्य में मनुष्य लोभी मूर्ख और अधर्म करनेवाले नहीं हुये १७ तव सब वर्ण अच्छे लोगोंके प्रियकारी ज्ञानियोंके कर्मोंको करनेवाले हुये उस ईश्वरने जनस्थानपर राक्षसों से नाशकरीहुई स्वधा और पूजा को उन राक्षसों को मारकर पितृ और देवताओं के अर्थदिया उस समय मनुष्य हज़ार २ पुत्रवाले और हज़ारों वर्षों की अवस्थावाले उत्पन्नहुये थे उसकाल में वड़े भाइयोंने छोटे भाइयों से श्राद्धों को नहीं करवाया उस श्याम तरुण अरुणाक्ष मतवाले हाथीके समान पराक्रमी आजानुवाहु सुन्दर भुजा सिंहस्कन्ध महावली सब जीवोंके आनन्ददायक श्री रामचन्द्रजीने ग्यारह हज़ार वर्षतक राज्यकिया राम रामेति रामेति यही सब प्रजाकी रटना रहती थी १८।२२ राज्यपर रामचन्द्रजी के राज्यशासन करनेपर संसार रामचन्द्रजीसे मनोहर और शोभायमानहुआ वह रामचन्द्रजी चारप्रकारकी सृष्टिको स्वर्ग में पहुंचाकर आपभी स्वर्ग को गये २३ वह रामचन्द्रजी इसलोक में अपने राजवंशको आठप्रकारसे नियतकरके शरीरके त्यागनेवाले हुये हे सृंजय वह भी सुधर्मादि चारों कल्याणोंमें तुझसे २४ और तेरे पुत्रसे भी अधिक धर्मात्माथे तव तुम यज्ञ और दक्षिणादेनेसे रहितहोकर अपने पुत्रका शोक क्यों करतेहो यह नारदजीका कथन है २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९ ॥

साठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे सृंजय हम राजा भगीरथकोभी मृतकहुआ सुनते हैं जिसने श्रीभागीरथी गंगाके दोनोंकिनारे सुवर्णके चयोंसे संयुक्तकिये १ उसने राजा और राजकुमारों को उल्लंघनकर स्वर्णमयी भूषणों से अलंकृत दशलाख कन्या ब्राह्मणोंको दीं कि वह सब कन्या रथों रथोंपर सवारथीं कि चार२घोड़ोंसे संयुक्त

प्रत्येक रथके साथ सौ २ हाथी सुवर्ण की मालाओंसे शोभितथे २।३ और हरएक हाथी के पीछे हज़ार हज़ार घोड़े और घोड़े २ के पीछे सौ २ गाएं और गौवों के पीछे भेड़ बकरियांभी थीं ४ और जो कि गंगाके सम्मुख बहुतसी दक्षिणादेनेवाला राजावर्त्तमानथा उस कारण से स्थानकी संकोचता से जल की आधिक्यताके भारसे आक्रांत और पीड़ामानहोकर गंगा उस राजाकी गोदमें बैठगई ५ इसके अनन्तर पूर्व्वकाल में जब भागीरथी गंगा जंघापर विराजमानहुई तब गंगाजीने राजाकी पुत्री होनेके भावको पाया और नरकसे रक्षाकरने के कारण पुत्रभावको भी पाया ६ सूर्य्यके समान प्रकाशमान मनोहर वचनवाले गन्धर्वोंने पितृ देवता और मनुष्योंके सुनतेहुये उस गाथाकोगाया ७ समुद्रमें मिलनेवाली गंगादेवीने बड़ी दक्षिणासे यज्ञोंके करनेवाले इच्वाकुवंशी भगीरथ को अपना पिता वर्णनकिया ८ उसका यज्ञ इन्द्र समेत देवताओं के समूहोंसे सुन्दर अलंकृत और श्रेष्ठरीतिसे रक्षित विघ्न रोग और उपाधियों से रहितहुआ ९ निश्चय करके जिस २ वेदपाठी दैवज्ञब्राह्मणने जहां जहांपर अपने अभीष्टको चाहा उसी उसी स्थानपर भगीरथने अत्यन्त प्रसन्नहोकर दिया १० उस राजाके यहां ब्राह्मणको अदेय कोई भी वस्तु नहीं हुई जो जिसको अभीष्ट धनथा वही उसने उस को दिया वह राजाभी ब्राह्मणों की कृपासे ब्रह्मलोक को गया ११ जिस हेतु से बालखिल्य आदिका ऋषि कर्मयज्ञ और ज्ञानयज्ञ के प्राप्तहोनेके द्वारा रूप सूर्य्य और उसके भीतर नियत ज्योतिस्वरूप ब्रह्मके सम्मुख होना चाहते हैं वह उसी प्रयोजन के लिये उस भगीरथके सम्मुख होना चाहते हैं क्योंकि वह मोक्षसे प्रकाशमान ईश्वर है अर्थात् सूर्य्य के दर्शन से जो पापनष्टहोते हैं वही उसके भी दर्शनसे पापका नाशहोताहै और जो सूर्य्य के अन्तर्य्यामिकी उपासनासे सत्य संकल्पादिकफल प्राप्तहोते हैं वह उसकी भी उपासनासे प्राप्तहोते हैं तात्पर्य्य यह है कि ब्रह्मभाव प्राप्त करने से यह राजाभी उन ऋषियों की उपासना और देखनेके योग्यहुआ १२ हे सृंजय जो वह भगीरथ भी अर्थ धर्मादि चारों कल्याणोंमें तुझसे और तेरे पुत्र सेभी धर्मात्मा शरीरका त्यागनेवाला हुआ तब यज्ञ और दक्षिणा से रहित तुम अपने पुत्रका शोक मतकरो यह नारदजीका कहा हुआ है १३ । १४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषष्टितमोऽध्यायः ६० ॥

इकसठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले हे सृंजय हम अलोलके पुत्र दिलीप को मृतक हुआ सुनते हैं जिसके शतयज्ञमें प्रयुत अयुत संख्यक ऐसे ब्राह्मण वर्त्तमानथे १ जोकि ब्रह्मज्ञान और अर्थ शास्त्रज्ञाता याज्ञिक और पुत्र पौत्रादिसे सम्पन्नथे जिस यज्ञ करनेवाले राजाने इस धनसे भरीहुई पृथ्वीको २ विस्तृतहुये यज्ञमें ब्राह्मणोंके अर्थ दान किया उस दिलीपके यज्ञों में स्वर्णमय मार्ग बनायेगये उसके धर्मरूप करनेवाले देवता अपने ईश्वर इन्द्रके समेतआये ३ जिसमें पर्वताकार हजार हाथी सामग्री पहुँचानेको जाते थे वह सब सभा सुनहरी और अत्यन्त प्रकाशितहुई ४ जिसमें रसोंके तड़ाग और भोजनकी बस्तुओंके पहाड़ वर्तमानथे हे राजा सुनहरी यज्ञस्तम्भ जिसमें हजार व्यायामके लम्बेथे ५ इन्द्र समेत देवता और अन्य जीवधारी उसको धर्मरूप करनेवालेहुये जिसके सुनहरी यज्ञस्तम्भमें चषाल और प्रचपाल थे ६ उसके यज्ञ में छः हजार अप्सरा सात प्रकारसे नृत्य करतीथीं और विश्वावसु गन्धर्व्वभी जहांपर अपनी प्रीतिसे आपही वीणाको बजाताथा और सब जीवोंने राजाको सत्य स्वभावयुक्त माना ७ मीठे मीठे भोजनों से मतवाले मार्गों में सोतेथे उसके उस कर्म्म को मैं अपूर्व्व मानताहूं उसके समान दूसरा कोई राजा नहीं है ८ जो जल के मध्य में युद्ध करनेवाले राजाके दोनों रथके पहिये जल मे नहीं डूबे जिन मनुष्यों ने उस दृढ़ धनुषधारी सत्यवक्ता ९ बड़ी दक्षिणा देनेवाले राजा दिलीपको देखाथा वहभी स्वर्ग के विजयकरनेवालेहुये उस खट्वाङ्ग नाम दिलीपके घरमें यह पांचप्रकारके शब्द कभी बन्द नहीं होते थे वेदध्वनि, धनुष और प्रत्यञ्चाका शब्द और खाओ पीओ भोगो यह शब्द हे सृंजय जो वह चारों कल्याणों में तुझसे और तेरे पुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा मृत्युवश होगया तो तुम यज्ञ और दक्षिणासे रहित होकर अपने पुत्रका शोक मतकरो यह नारदजीने कहा १०।१२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

बासठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले हे सृंजय हम युवनाश्व के पुत्र राजा मांधाताको भी मृतक

सुनतेहैं जोकि देवता असुर और मनुष्यों समेत तीनों लोकों का विजयकरने-वालाथा १ अश्विनीकुमार नाम देवताओंने जिसको पूर्व पिताके गर्भ से आ-कर्षण किया वह राजा आखेटमें घूमताहुआ घोड़ों के थकितहोने और परिश्रम से तृषितहुआ और कहीं धुएंको देखकर यज्ञशालामें गया और दही मिलेहुये घृतको पाया वैद्योंमें श्रेष्ठ अश्विनीकुमार देवताओंने युवनाश्वके उदर में पुत्र रूप प्राप्तकरनेवाला उसको देखकर गर्भ से खैंचलिया पिताके पास सोनेवाले देवताके समान तेजस्वी उसको देखकर २ । ४ देवता लोग परस्पर में बोले कि इसका पोषण कौन करेगा इन्द्र ने कहा कि यह प्रथम मुझीको धारणकरे अर्थात मैंहीं इसका पोषण करूं ५ इसके पीछे इन्द्र की उंगलियों से दूधरूप अमृतप्रकट हुआ इन्द्र ने जोकि उसपर कृपाकरी कि यह मुझीको धारण करेगा ६ इस हेतुसे उसका अपूर्व नाम मांधाता कियागया इसके अनन्तर महात्मा इन्द्र के हाथने उस मांधाताके मुखमें दूध और घृतकी धारा गिराई उसने इन्द्र के हाथको पिया और एकही दिनमें बड़ा होगया ७।८ फिर वह पराक्रमी बारह दिनमें बारह वर्ष की अवस्थाके समान हुआ उसने इस सम्पूर्ण पृथ्वी को एकही दिनमें बिजय किया ९ उस धैर्य्ययुक्त धर्म्मात्मा सत्यसङ्कल्प जितेन्द्रिय मनके जीतनेवाले वीर मांधाताने जनमेजय, सुधन्वा,गय,पुरु, बृहद्रल १० असित और नृगको विजय किया सूर्य्य के उदय से अस्त पर्य्यन्त जितनी पृथ्वी है ११ वह सब युवनाश्व के पुत्र मांधाताका क्षेत्र कहा जाताहै हे राजा उसने सैकड़ों अश्वमेध और सौ राजसूय यज्ञों से पूजन करके १२ ब्राह्मणों के अर्थ ऐसी सुबर्ण वर्ण की रोहित मछलियां दान करीं जो कि एक योजन ऊंची और सौ योजन लम्बी थीं १३ उन यज्ञों में ब्राह्मणों से शेष वचेहुये भोजनों को मनुष्य खाते थे और आदर करतेथे उन अनेक प्रकारके भक्ष्य भोज्य चूस्य लेह्य आदि सुस्वादु पदार्थोंके और अन्नके पर्व्वत लगेथे १४ खाने पीनेकी वस्तुओंके ढेर और अन्नके पहाड़ महा शोभायमानहुये घृतरूप ह्रद और सूप आदिक रूप कीच दधिरूप फेण और रसरूप जल १५ सहत दूधसे वहनेवाली शुभ नदियोंने उन अन्नके पहाड़ों को घेरलिया वहांपर देवता असुर मनुष्य यक्ष गन्धर्व सर्प पक्षी १६ और वेद वेदाङ्ग पारगामी वेदपाठी ब्राह्मण और ऋषि लोगभी आकर नियतहुये वहां आने-वालों में कोई भी अपण्डित नहीं था १७ तब वह राजा अपने यशोंसे सब दि-

शाओं को व्याप्त करके पवित्रकर्मी पुरुषों के लोकोंको गया हे सृंजय वह चारों कल्याणों में तुझ से और तेरेपुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा पुरुष मृत्युवश हुआ उस दशामें यज्ञ ओर दक्षिणा से रहित तू अपने पुत्रका शोक मतकरे यह नारदजीने कहा १८ । २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

तिरसठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले हे सृंजय हम नहुष के पुत्र ययातिको मृतक सुनतेहैं उसने सैकड़ों राजसूय अश्वमेधों से पूजन करके १ हजार पुण्डरीक यज्ञ सैकड़ों वाजपेय यज्ञ हजार अतिरात्र यज्ञ अपनी इच्छासे चातुर्मास यज्ञ अग्निष्टोमआदि नाना प्रकारके दक्षिणावाले यज्ञों से पूजन करके २ पृथ्वीपर ब्राह्मणों के शत्रु म्लेच्छों का जो कुछ धन था वह सब छीनकर ब्राह्मणों के अर्थ भेटकिया ३ देव दानवोंके अलंकृत युद्धमें देवताओंकी सहायता करके इस सम्पूर्ण पृथ्वी भरके चार ऋषियों को चार भाग करके बांटदी और नाना प्रकारके यज्ञों से पूजनक उत्तम सन्तान को उत्पन्न करके ४ वह देवता के समान शुक्रजीकी पुत्री देवयानी में और धर्म से शर्मिष्ठामें सन्ततिको उत्पन्न करके सब देववनोंमें विहा करनेवाला हुआ ५ अपने स्वेच्छाचारी कर्म्म से दूसरे इन्द्रके समान सब वेदोंके ज्ञाताने जब इच्छाओं की पूर्णताको नहीं पाया ६ तब इस गाथाको गाकर स्त्री समेत वनको चलागया पृथ्वी पर जितने धान्य जब सुवर्ण पशु और स्त्री हैं वह सब मिलकर भी एककी तृप्ति नहीं करसक्तेहैं ऐसा मानकर जितेन्द्रिय होन चाहिये इस प्रकार राजाययाति अपनी इच्छादिकों को त्यागकर धैर्य्यको पाव ८ अपने पुत्र पुरुके राज्यपर नियत करके वनको गया हे सृंजय जो वहभी चा कल्याणों में तुझसे ६ और तेरे पुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा प्रतापी होकर देहव त्याग गयातो तू यज्ञ और दक्षिणाओ से रहित अपने पुत्रके शोक को मत यह नारदजीने कहा १० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

चौंसठवां अध्याय ॥

नारदजीबोले हे सृंजय जो हम नाभागके पुत्र अम्बरीष को मृतकहुआ सुनते हैं कि जिसअकेले नेही लाखों राजाओं से युद्ध किया १ विजयाभिलाषी और अस्त्र युद्धके ज्ञाता और अशुभ अयोग्य बचनों के कहनेवाले घोर रूप शत्रु युद्धमें उसके चारों ओरसे सम्मुखगये २ तब वह राजा बल हस्त लाघवता शिक्षित अस्त्रों के पराक्रम से उन्हों के छत्र ध्वजा और शस्त्रों को काटकर प्राणों को पीड़ा देनेवाला हुआ ३ वह कवच के त्यागनेवाले जीवन के अभिलाषी शरणागत शब्द के कहनेवाले प्रार्थना को करते हुये उस शरण्य राजा की शरण में गये ४ हे निष्पाप फिर उस राजाने उन राजाओं को आज्ञावर्त्ती कर और इसपृथ्वी को बिजयकरके शास्त्रकी रीति से सैकड़ों यज्ञों से पूजनकिया ५ उस यज्ञ में वेदपढ़नेवाले उत्तम ब्राह्मण बड़े पूजितहोकर तृप्त हुये और दूसरे मनुष्यों ने सदैव सब बस्तुओं से संयुक्त अन्नको भोजन किया ६ वहांपर ब्राह्मण लोग मोदक पूरिक पूप स्वादुष्ट शस्कुली करम्भ पृथक् और अच्छे प्रकार बने हुये रुचिदायक अन्न सूप मैरिक पूप रागखांडव पानक और अच्छीरीति से बनायेहुये मृदु सुगंधित मिष्टान्न ७। ८ घृत सहत दूध जल दही यह सब और रसों से युक्त अत्यन्त चित्तरोचक फल और मूलों को भोजन करतेथे ९ मदकी उत्पन्न करनेवाली पापकी मूल मद्यादिकों को अपना आनन्ददायक जानकर मद्यपीनेवालों ने गीत बाद्यों समेत अपनी २ इच्छानुसार सबने पानकिया १० वहांपर प्रसन्न और मदोंसे उन्मत्तोंने नाभागकी प्रशंसाओंसे भरीहुई गाथाओं को गानकर करके पढ़ा और हजारों नृत्य करनेलगे ११ राजा अम्बरीप ने उन यज्ञों में दक्षिणाओं को दिया उस यज्ञमें एकलाख दशप्रयुत १२ राजाओं की संख्याथी उन सब सुनहरी कवच श्वेत छत्र और चामर रखनेवाले सुनहरे रथपर चढ़ेहुये राजाओंको उनके बस्तु लेचलनेवाले अनुगामियों समेत १३ और मूर्द्धाभिषिक्त राजाओं को और सैकड़ों राजकुमारों को उस बिस्तृत यज्ञमें पूजन करनेवाले राजाने दक्षिणादिया १४ हे सृंजयजो वह चारों कल्याणों में तुझसे और तेरे पुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा कालवश होगया तो तू यज्ञ और दक्षिणाओं से रहित पुत्रके शोचने को नहीं योग्य है यह नारदजीने कहा १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुष्षष्टितमोऽध्यायः ६४ ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे सृंजय हम राजा शशिविन्दुको मृतक सुनते हैं उस श्रीमान् सत्य पराक्रमी ने नाना प्रकारके यज्ञों से पूजनकिया १ उस महात्माकी एक लाख स्त्रियां थीं प्रत्येक भार्य्या के हजार २ पुत्रहुये २ वह सब बड़े पराक्रमी नियुत यज्ञोंके कर्त्ता बेद बेदांगों के पारगामी उत्तम याज्ञिक राजा नाम ३ उत्तम सुनहरी कवच और श्रेष्ठ धनुषधारी अश्वमेधी शशिविन्दुके कुमारथे ४ हे महाराज उनके पिताने अश्वमेध यज्ञमें उन कुमारों को ब्राह्मणों की भेंटकिया तब प्रत्येक राजपुत्र के पीछे सौ २ रथ और हाथी गये तब सुवर्ण भूषणों से अलंकृत कन्याओं का दानकिया हरएक कन्याके साथ सौ हाथी और हर हाथीके साथ सौ२ रथ दिये ५।६ और हरएक रथके साथ पराक्रमी और सुनहरी माला रखनेवाले सौ २ घोड़े और घोड़े २ के साथ हजार २ गौ और प्रत्येक गौके साथ पचास कंबल ७ महा भाग शशिविन्दुने बड़े अश्वमेध यज्ञमें यह असंख्य धन ब्राह्मणोंको दानकिया ८ बड़े अश्वमेध यज्ञमें जितने यज्ञस्तंभ और चैत्यथे वह उसी प्रकार बनेरहे फिर उतनेही दूसरे स्वर्णमयी हुये ९ उस राजाके अश्वमेध यज्ञके समाप्त होने पर एककोश ऊंचे खाने पीने के पर्व्वताकार ढेर तेरह बाकी रहगये राजा शशिविन्दु प्रसन्न और नीरोग शरीर मनुष्यों से पूर्ण रोगादि विघ्नोंसे रहित इसपृथ्वीको बहुतकाल तक भोगकर स्वर्गको गये १०।११ हे सृंजय जो वह चारों अर्थ धर्मादिक चारों कल्याणोंमें तुझसे और तेरे पुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा इस देहको त्यागगये तो तुम दक्षिणा सहित यज्ञके न करनेवाले होकर अपने पुत्रको शोकमत करो यह नारदजीने कहा है १२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥

छाछठवां अध्याय ॥

नारदजी बोलेकि हे सृंजय हम अमूर्त्तरयस को भी मृतकहुआ सुनतेहैं निश्चय करके यह राजा सौ वर्षतक यज्ञके शेषबचेहुये हव्यका भोजन करनेवाला हुआ १ अग्निने उसको वरदिया फिर गयने उससे वरमांगा कि तप, ब्रह्मचर्य्य, व्रत, नियम और गुरुओंकी प्रसन्नता समेत वेदोंको जानना चाहताहूं और अपने

धर्मसे दूसरोंको न मारकर अविनाशी धनको चाहताहूं ३ ब्राह्मणोंमें दान देने की सदैवमुझको श्रद्धाहोय और दूसरेमेंचित्त न लगानेवाली सजातीय स्त्रियोंमें मेरेपुत्रोंका जन्महोय ४ अन्नदान करनेमें मेरी श्रद्धाहोय धर्ममें मेरामन रमे और हे अग्नि मेरे धर्मकार्य्योंमें कभी विघ्न न होय तथास्तु अर्थात् ऐसाहीहोगा ऐसे कहकर अग्नि उसी स्थान में गुप्तहोगये गयनेभी उन सब वरदानों को पाकर धर्मसे शत्रुओंको विजय किया ५।६ उस राजाने दर्श,पूर्णमास,आग्रयण,चातुर्मास्य और पूर्ण दक्षिणावाले नानाप्रकारके यज्ञों से पूरे सौ बर्षतक श्रद्धा समेत पूजन किया एकलाख गौ दशहजार घोड़े ७।८ एकलाख निष्क प्रातःकाल के समय प्रतिदिन उठ २ कर ब्राह्मणों को दानकी ९ नक्षत्रों के समान दक्षिणा देनेवाले सब नक्षत्रों में दानकिया और अन्य २ बहुत प्रकारके यज्ञों से ऐसे पूजन किया जैसे सोम और अंगिराने किया था १० जिस राजाने बड़ेभारी अश्वमेध यज्ञ में पृथ्वी को स्वर्णमयी और मणिरूप कंकड़ रखनेवाली बनवाकर वेदपाठी ब्राह्मणोंके अर्थ दानकरी ११ राजागयके सब सुबर्ण के यज्ञस्तम्भ रत्नों से जटित बड़े धनवाले होकर सब जीवों के चित्तरोचक हुये १२ तब गयने सब अभीष्ट वस्तुओं से युक्त अन्न को अत्यन्त ब्राह्मण आदि सब जीवों के निमित्त दानकिया समुद्र समेत बन, द्वीप, नदी, नद, नगर, देश और स्वर्ग्ग आकाशादिमें १३।१४ जो नानाप्रकारके जीवोंके समूहहैं वह सब यज्ञके धन धान्य से अच्छेप्रकार तृप्तहुये और तृप्त होकर कहने लगे कि राजागय के समान दूसरा किसीका यज्ञ नहीं है १५ छब्बीस योजन चौड़ी और तीस योजन लम्बी और आगे पीछेसे चौबीस योजन सुनहरी वेदी उस यजमानरूप राजागयकीथी उसने मोती हीरे मणिश्रवे बस्त्र और भूषणादिक ब्राह्मणों के निमित्त दान किये १६ । १७ और बड़ी दक्षिणा देनेवाले ने शास्त्रकी आज्ञानुसार दूसरी दक्षिणा ब्राह्मणों के लिये दान कीं यहां पर यज्ञ से शेष बचेहुये भोजनों के पच्चीस पर्वत थे १८ तब रसों के तड़ागों से पृथ्वी पर चेष्टा करनेवाली नदियां वहीं और बस्त्र भूषण और सुगन्धित वस्तुओं के ढेर पृथक् प्रकार के थे १९ और जिसके प्रभाव से राजा गय तीनों लोकों में प्रसिद्ध हुआ वह अविनाशी अंगवाला पवित्र बट ब्रह्मसर नाम है २० हे सृंजय जो वह अर्थ धर्मादिक चारों कल्याणों में तुझसे और तेरे पुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा होकर मरगया तो यज्ञ

और दक्षिणाओं से रहित पुत्रका शोक मतकर यह नारदजी ने कहा २१

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥

सरसठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे सृंजय हम सांकृति रन्तिदेव को मृतक हुआ सुनते हैं जिस महात्माके भोजन बनानेवाले सूपशास्त्रज्ञ दोलाख थे १ जोकि घरमें आयेहुये अतिथि ब्राह्मणों को अमृतके समान उत्तम पके और कच्चे अन्न को अहर्निश परोसा करते थे २ न्याय से प्राप्तहुये धन को ब्राह्मणोंके अर्थ दानकिया और धर्म्म से वेदों को पढ़कर शत्रुओं को अपने आधीन किया ३ स्वर्गके चाहनेवाले बहुतसे पशु विधिके अनुसार जिस यज्ञसे पूजन करनेवाले स्तुतिमान राजाके पास आप आ आकर नियत हुये ४ जिसके रसोईके घरके चर्म्म समूहों से नदी वर्त्तमान हुई उसी हेतुसे पूर्व्व समयमें अग्निहोत्रके मध्यमें चर्म्मरावती नाम नदी विख्यातहुई ५ वह तेजस्वी ब्राह्मणोंके अर्थ सुवर्णके निष्कों को देता हुआ बड़ी प्रसन्नता से बोला कि तेरे अर्थ निष्क तेरे अर्थ निष्क तेरे अर्थ २ ऐसी रीतिसे कहकर हजारों निष्कों को दानकिया ६ फिर उसके पीछे विश्वास कराके निष्कोंको देताथा ७ अब मैंने थोड़ादिया यह कहताहुआ एकही दिनमें हजारों कोटि निष्क देता था कि फिर दूसरा इसको कौनदेगा ८ ब्राह्मणका हाथ खाली होनेसे निस्संदेह मुझको बड़ा दुःख होगा इस प्रकारसे राजाने धनको दानकिया ९ सैकड़ों गौके पीछे चलनेवाले सुनहरे हजारों बैल और इसी प्रकार वह निष्कधन जो कि एक सौ आठ सुवर्ण का कहा जाता है हर एक पक्ष में सौ वर्ष तक ब्राह्मणों को दानकिया अग्निहोत्र की सामग्रियां यज्ञ के उपकारी औजारहैं अर्थात् कमंडलु, घट, स्थाली, पीठर, शयन, आसन, सवारियां, महल, गृह, १० । १२ नाना प्रकार के वृक्ष और अनेक प्रकार के अन्न व धनों को ऋषियोंके अर्थ दिया इस बुद्धिमान् रन्तिदेव का सबपुर सुवर्ण का था १३ वहां पर जो २ पुराण के ज्ञाता पुरुष थे वे सब उस बुद्धिमान् से परे रन्तिदेवकी लक्ष्मीको देखकर उसकी गाथाको गानेलगे १४ ऐसा पूर्णधन जो इसके यहांथा वह पहले कभी कुबेरके यहां भी नहीं देखाथा तो मनुष्यों में क्याहोगा १५ वहां मनुष्यों ने आश्चर्यित होकर यह कहा कि प्रकटहै कि उस रन्तिदेव के घरमें

जो अतिथि एकरात्रि निवासकरे वह उत्तम धनोंको पाताहै यह जानकर उसके घरमें अतिथि आये १६ तब उन अतिथियों ने इक्कीस हजार गौओं को पाया और वहांपर अत्यन्त स्वच्छमणि कुण्डलधारी रसोइये पुकारे १७ कि बहुतसे शाकादिकों को और तरकारियों को खाओ अब पूर्व्व के समान मांस नहीं हैं तब रन्तिदेवका जो कुछ रसोई आदिका सामानथा वह सब सुनहरी होगया १८ विस्तृत यज्ञमें वह सब ब्राह्मणों के अर्थ दानकिया देवताओं ने उसके समक्ष में हव्यों को लिया १९ समयपर पितरों ने कव्यों को लिया और श्रेष्ठ ब्राह्मणों ने सब अभीष्टों को प्राप्त किया हे संजय जो वह चारों कल्याणोंमें तुझसे और तेरे पुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा मृत्यु वश हुये तब यज्ञ और दक्षिणा से रहित तुम अपने पुत्रके शोक को क्यों करतेहो यह नारदजी ने कहा २०।२१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७ ॥

अड़सठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे संजय हम दुष्यन्त के पुत्र भरत कोभी मराहुआ सुनते हैं जिस बालक ने बनके मध्यमें अन्य से कठिनता से होनेके योग्य कर्म्म को किया १ अर्थात् उस पराक्रमी ने हिमावट प्रकार के नख डाढ़रूप शस्त्रधारी सिंहों को अपनी तीब्रता से निर्बल करके खैंचा और बांधा २ और जिसने निर्दयी भयकारी रक्त पीत रङ्गवाले व्याघ्रों को पराजय करके अपने स्वाधीन किया ३ फिर बड़े पराक्रमी ने व्याल और सुप्रतीकबंशी हाथी जोकि मुख फिरेहुये सूखे मुखवाले थे उनके दांतों को पकड़कर अपने बशीभूत किया ४ उस बड़े बली ने बलवान् भैंसों को भी खैंचा और सैकड़ों अत्यन्त दृप्त सिंहों को अपने बलसे खैंचा बड़े बली समर गैंड़े आदि अनेक प्रकारके जीवों को भी प्राणों के कष्ट समेत बनमें बांधकर और अपने स्वाधीनकर करके फिर छोड़ दिया ५।६ ब्राह्मणों ने उसके उस कर्मसे उसका नाम सर्वदमन नाम रक्खा माताने उसको निषेध किया कि तू जीवों को मत मार ७ उस पराक्रमी ने यमुनाजी के समीप सौ अश्वमेधसे पूजन करके सरस्वतीके तटपर तीनसौ घोड़ों को और गंगाजी के समीप चारसौ घोड़ों को छोड़ा ८ फिर उसने उत्तम पूर्ण दक्षिणावाले बड़े २ हजार यज्ञ सौ अश्वमेध औ सौ राजसूय यज्ञों से पूजन किया ९ अग्निष्टोम

और अतिरात्र नाम यज्ञों से पूजनकर विश्वजित यज्ञ से पूजन करके अच्छी रक्षासे युक्त लाखों वाजपेय नाम यज्ञोंसे भी पूजन किया १० जिन यज्ञोंमें शकुन्तलाके पुत्र राजाभरतने ब्राह्मणों को देखकर धनों से तृप्त करके कण्वऋषि के अर्थ हजार पद्ममुद्रा दिये ११ बड़े यशस्वी ने जाम्बूनद नाम शुद्ध सुवर्ण को दिया और उसका सुनहरी यज्ञस्तम्भ दो सै गज लम्बा था १२ जिस प्रतापी ने ब्राह्मण और इन्द्र समेत सब देवताओं से मिलकर सब प्रकारके चित्तरोचक रत्नों से अलंकृत और प्रकाशमान १३ स्वर्णालंकृत घोड़े हाथी रथ ऊंट भेड़ बकरी दास दासी धन धान्य और दूध देनेवाली सवत्सा गौ १४ ग्राम गृह क्षेत्र और अनेकप्रकारके किरोड़ों सामानों को ब्राह्मणों के अर्थ दान किया १५ निश्चय करके वह चक्रवर्त्ती प्रतापवान् शत्रुओं को पराजय करनेवाला और शत्रुओं से सदैव अजेय था हे संजय जो वे चारों कल्याणों में तुझसे और तेरे पुत्र से भी अधिक १६ धर्मात्मा काल के वशीभूतहुये तो तू यज्ञ और दक्षिणासे रहित अपने पुत्रका शोक क्यों करता है यह नारदजीने कहा १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥

उनहत्तरवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे संजय वेणुके पुत्र राजा पृथु को भी हम मृतक हुआ सुनते हैं जिसको राजसूय यज्ञ में महर्षियों ने सम्पूर्ण संसार के राज्य पर अभिषेक कराया १ सब के ऊपर अपना आतंक प्रबल करते हुये राजाने उपाय करके इसधराको पृथ्वी प्रसिद्ध किया इसी हेतुसे इसराजाको पृथु कहते हैं और वह हम सब घायलोंकी रक्षा करताहै इस कारणसे वह क्षत्रिय हुआ २ और जिस निमित्तसे प्रजाके लोग पृथुको देखकर यह वचन बोले कि हमसब प्रीतिसे युक्त अत्यन्त प्रसन्नहैं इस हेतुके द्वारा उसकी प्रीतिसे इसका नामराजाहुआ ३ जिस पृथुकी पृथ्वी कामधेनु अर्थात् अभीष्टों को प्राप्त करने वाली और अकृष्टपच्या अर्थात जोतने आदिके भी विना अनाजों की उत्पन्न करनेवाली हुई और सब गौएं कामनाओं की दाता पुटपुट में मधुकी रूप होगईं ४ दर्भ सुखसे स्पर्श करने के योग्य महानुखदायी सुनहरी रंगकी हुईं उन्होंके वस्त्रों को प्रजालोगों ने अपने शरीर का आच्छादन बनाया और उन्हीं पर शयन भी किया ५ फल

अमृत के समान स्वादुयुक्त और मधुरता से युक्तहुये वही उन सबका आहार हुआ निराहार कोई नहीं हुये ६ सब मनुष्य रोगों से रहित अभीष्टकाम निर्भय होकर वृक्षों के नीचे अथवा पर्व्वतों की गुफाओं में निवासी हुये उस समयतक देश और पुरों का विभाग नहीं हुआथा इसी प्रकारसे यह सब प्रजा सुखपूर्व्वक अपनी इच्छानुसार प्रसन्न हुई ७।८ उस समुद्रमें जानेवाले राजाके जल अच्छी रीतिसे नियत हुये और पर्व्वतों ने मार्ग दिया उसकी ध्वजाभी कभी नहीं टूटी ९ बनस्पति, पर्व्वत, देवता, असुर, मनुष्य, सर्प, सप्तऋषि, पवित्र देहधारी गन्धर्व, अप्सरा, और पितृ, देवता, उस सुख पूर्व्वक बैठे हुये राजा के पास जाकर यह बचन बोले कि आप सब संसारके राजाहो क्षत्री हो और हमारे राजा और रक्षक होनेसे पितारूप हो १०।११ हे महाराज आप समर्थ हो इस निमित्त से हमसबको वह अभीष्ट वरदानदो जिन बरप्रदानों के द्वारा हम सब सुख पूर्वक सदैव तृप्ती को प्राप्तकरें १२ राजापृथुने तथास्तु अर्थात् ऐसाही होय यह कहकर अजगव नाम धनुष को और अनुपम भयकारी बाणों को लेकर बड़ी चिन्ताकरता हुआ पृथ्वी से बोला १३ कि हे पृथ्वी तेरा कल्याण होय आओ आओ और शीघ्रता से इन प्रजाओंके निमित्त अभीष्ट दुग्ध को दो इसके पीछे मैं उस अन्न को दूंगा जो जिसको अभीष्ट है १४ पृथ्वी बोली कि हे बीर तुम मुझको अपनी पुत्री करके संकल्प करने के योग्यहो फिर उस योगी राजापृथुने ऐसाही होय यह बचन कहकर सब बिधान को किया १५ तब उसके पीछे उस जीवोंकी निवासस्थान पृथ्वी को दोहन किया प्रथम उसके दोहने की अभिलाषा वाली बनस्पति उठीं १६ वह प्रीति से संयुक्त पृथ्वी बछड़े को दूध निकालने वाले को और पात्रों को चाहती हुई नियत हुई तब फूलों से संयुक्त शालका वृक्ष तो बछड़ा हुआ और दुहनेवाला प्लक्षका वृक्ष हुआ १७ काटने से अंकुरका निकलना दूध हुआ और औदुम्बरपात्र हुआ और उदयाचल पर्व्वत बछड़ा और सब से बड़ा मेरु पर्व्वत दुहनेवाला १८ रत्न औषधी आदिक दूध और पाषाण रूपपात्र हुआ फिर सब देवताओंका समूह तो बछड़ा हुआ और इन्द्र सुनहरी पात्र हुआ और सविता देवता दूधके निकालने वाले हुये और दूध पराक्रम उत्पन्न करनेवाला अथवा जीव दान देनेवाला सबका प्रियकारी हुआ १९।२० असुरों ने आमपात्रमें मद्य को दुहा वहांपर निकालनेवाला द्विमूर्द्धा हुआ और बछड़ा

वैरोचन नाम असुर हुआ इसी प्रकार पृथ्वी पर मनुष्योंने खेती के अनाजों को दुहा वहां स्वायम्भू मनु बछड़ा और उन्होंका दूध निकालनेवाला राजापृथु हुआ २१ इसी प्रकार तांबेके पात्रमें पृथ्वी के विष को दुहा वहां धृतराष्ट्र सर्प्प तो दूध को दुहनेवाला और बछड़ा तक्षक हुआ २२ इसी प्रकार सुगमकर्म्मी सप्त ऋषियों के द्वारा वेद कोभी दुहा वहां दुहनेवाले बृहस्पतिजी छन्दपात्र और बछड़ा सोमराट हुआ २३ बिराटने धर्मात्मा पुरुषोंके साथ आमपात्रमें अन्तर्द्धान शक्ति को दुहा उन्हों का दुहनेवाला वैश्रवण अर्थात् कुबेर देवता और शिवजी बछड़े हुये २४ गन्धर्व्व और अप्सराओं ने कमल पात्रमें पवित्र सुगंधियों को दुहा उनका बछड़ा चित्ररथ गन्धर्व और दुहनेवाले बिश्वरुचि प्रभु हुये २५ पितरोंने चांदीके पात्रमें स्वधारूप पितरों के अन्न को दुहा तब उन्होंका बछड़ा वैवश्वत और दुहनेवाले यमराज हुये २६ इस प्रकार करके उस बिराटने उन समान धर्म्मवालों जीव समूहों समेत अभीष्ट दुग्धों को दुहा निश्चय करके अब जिन पात्र और बछड़ोंके द्वारा सदैव निर्वाह करते हैं २७ वेणुके पुत्र प्रतापवान राजापृथ्वी ने नाना प्रकारके यज्ञों से पूजनकर और चित्तके प्यारे सब अभीष्टों से जीवधारियोंको अत्यन्त तृप्तकरके २८ धनवान करदिया और जो कोई राजा पृथ्वीपरथे उन सबको राजाने बड़े अश्वमेध नाम यज्ञ में ब्राह्मणों के अर्थ दान किया २९।३० राजाने इस मणि रत्नोंसे अलंकृत सब पृथ्वी को स्वर्णमयी किया और सुवर्णमय करके सब ब्राह्मणों को दान करदी ३१ हे संजय जो वह चारों कल्याणों में तुझसे और तेरे पुत्र से भी अधिक धर्म्मात्मा पुरुष इस संसार को त्यागगया तब यज्ञ और दक्षिणा देने से रहित अपने पुत्रका शोक मतकर यह नारदजी ने कहा ३२।३३॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९॥

सत्तरवां अध्याय॥

नारदजी बोले कि बड़े तेजस्वी पराक्रमी लोक में कीर्तिमान बड़े यशस्वी जमदग्निजी के पुत्र परशुरामजी संसार से तृप्ती न पानेवाले भी अपने शरीर को समयपर त्याग करेंगे १ जिस हेतुसे इस संसार को सुखी करतेहुये परशुरामजीने इस पृथ्वी में भ्रमण किया और अतुल्य धन को पाकरभी जिनकी रूपा-

न्तर दशा नहीं हुई २ जिन्हों ने बनमें क्षत्रियों के हाथ से पिताके घायल करने और मारनेपर युद्धमें अन्यों से विजय न होनेवाले कार्त्तवीर्य्य को मारा ३ तब अकेलेनेही मृत्युके पंजेमें दबेहुये चौंसठ अयुत हजार क्षत्रियों को एकही धनुष से विजय किया ४ ब्राह्मणों से शत्रुता करनेवाले उन क्षत्रियों के विध्वंस करने में चौदह हजार को मारा और बहुतों को पकड़कर दन्तक्रूर को मारा ५ हजारों को मूशल से हजारों को खड्ग से हजारों को फांसी से और हजारों को जलमें डुबो डुबोकर मारडाला ६ हजारों के दांतों को तोड़कर नाक कानों को काटा इसके पीछे सात हजार को कटु धूमवाली अग्निमें गिराया ७ शेष बचे हुयों को बांधकर मृतकक्कर उनके मस्तकों को विदीर्ण करके गुणावती के उत्तर खाण्डीव बनके दक्षिणओर को युद्धमें मारेहुये लाखोंही क्षत्री पृथ्वी में समागये ८ पिता के मरने से महाक्रोध भरे बुद्धिमान परशुरामजीके हाथसे रथ घोड़े और हाथियों समेत मारेहुये बड़े २ बीर उस स्थानमें शयन करनेवाले हुये ९ तब परशुरामजी ने अपने फरसे से दश हजार क्षत्रियों को मारा और उन बचनों को नहीं सहा जोकि उन ब्राह्मणों से बारम्बार कहे गये थे १० जब उत्तम ब्राह्मण पुकारे कि हे भृगुवंशी परशुरामजी दौड़ो उसके पीछे प्रतापवान परशुरामजीने काश्मीर, दरद, कुन्ति, क्षुद्रक, ११ अंग, बंग, कलिंग, बिदेह, ताम्र, लिप्तक, रक्षोवाह, वीतिहोत्र, त्रिगर्त्त, मार्त्तिकावत, शिवी और देश देशके दूसरे हजारों राजाओं को तीक्ष्ण धारवाले बाणों से मारा १२।१३ क्षत्रियों के लाखों कोटि संहार किये इन्द्रगोपक अर्थात् बीरबहूटी के रंगवाले अथवा बन्धुजीव वृक्षके समान १४ रुधिरोंके समूहों से नदियों को पूर्ण करके उन भार्गवजी ने अष्टादश द्वीपों को अपने स्वाधीन करके १५ उत्तम पूर्ण दक्षिणावाले हजारों पवित्र यज्ञों से पूजन किया और आठ ताल वृक्षों के समान ऊंची ब्रह्माजी की बनाईहुई स्वर्णमयी वेदी को सब प्रकार के हजारों रत्नों से जटित सैकड़ों पताका रूप माला रखनेवाली ग्रामीण और बनके बसनेवाले पशुओं के समूहोंसे पूरित उस पृथ्वीको १६।१७ फिरस्वर्णमयीभूषणोंसे अलंकृत लाखों गजेन्द्रोंको जमदग्निजीके पुत्र परशुरामजीके दियेहुयों को कश्यपजीने लिया १८ परशुरामजी ने पृथ्वी को चोरों से रहित करके उत्तम अभीष्ट पदार्थों से पूर्ण धरादेवीको बड़े अश्वमेध यज्ञमें काश्यपजीके अर्थ दानकरदिया १९ उस प्रभुपराक्रमी बीरने इकीसवार इस पृथ्वी

को क्षत्रियों से रहित करके और सैकड़ों यज्ञोंसे पूजन करके ब्राह्मणोंके निमित्त दानकिया २० मरीचि के पुत्र कश्यप ब्राह्मणने सप्तद्वीपा पृथ्वीको दानमें लेकर परशुरामजीसे कहा कि अब मेरी आज्ञासे आप इस पृथ्वीसे बाहर निकलजाओ २१ ब्राह्मणकी आज्ञा पालन करनेवाले उस श्रेष्ठशूरवीर प्रतापीने कश्यपजीके वचनसे बाणोंके गिरने के स्थानतक समुद्रको हटाकर २२ पहाड़ों में श्रेष्ठ बायुके समान महेन्द्र पर्व्वतपर निवासस्थान किया इस रीति से हजारों गुणों से संपन्न भृगुवंशियोंकी कीर्त्ति के बढ़ानेवाले २३ बड़े यशस्वी तेजस्वी परशुरामजी भी अपने शरीरको त्यागकरेंगे जो कि चारों कल्याणोंमें तुझसे और तेरे पुत्रसेभी अधिक धर्मात्मा हैं २४ फिर तू यज्ञ न करनेवाले दक्षिणा देनेसे रहित अपने पुत्रको मतशोच हे नरोत्तम सञ्जय यह सब तुझसे चारों कल्याणों में अधिक किन्तु सैकड़ों कल्याण अधिक रखनेवाले वशहुये २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्ततितमोऽध्याय. ७० ॥

यह सोलह राजाओंका वर्णन समाप्त हुआ ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

व्यासजी बोलेकि वह राजा संजय सोलह राजाओंके इस आख्यानको जो कि धर्म उत्पन्न करनेवाला और पूर्णायु का करनेवाला है सुनकर बोलताहुआ मौनहुआ १ भगवान् नारदऋषि उस मौन होनेवाले राजासे बोले कि हे बड़े तेजस्वी तुमने मेरे कहेहुये इतिहासों को सुनकर अंगीकार किया २ अब कहो कि इन इतिहासों के सुनने से यह तेरा शोक ऐसा दूरहुआ जैसाकि शूद्रा स्त्री के पति में श्राद्धनाश होताहै इसवचन को सुनकर राजा संजय हाथ जोड़कर बोले ३ हे महाबाहो प्राचीन यज्ञ करनेवाले और दक्षिणा देनेवाले राज ऋषियों के इसधन धान्यादि को देनेवाले उत्तम इतिहास को सुनकर ४ जैसे कि सूर्य्य के प्रकाश से अन्धकार दूरहोता है उसी रीतिसे आश्चर्य्य समेत शोकके दूरहोकर पापोंसे रहित और पीड़ासे विगतहूं अब आपआज्ञाकरें कि मैं क्याकरूं ५ नारदजी बोले कि तुम प्रारब्ध से निश्शंक होकर जो चाहतेहो सो मांगो वह सब तुमको मिलेगा हम मिथ्या वादी नहीं हैं ६ संजय बोले कि अबजो आप

मुझपर प्रसन्नहै मैं इसीसे बहुत आनन्दितहूं जिसपर आप प्रसन्न हैं उसको कोई वस्तु दुष्प्राप्य नहीं है ७ नारदजी बोले कि यज्ञके निमित्त संस्कार कियेहुये पशुके समान नरकरूप दुखसे उठाकर तेरे उस पुत्रको फिर देताहूं जोकि चोरों से निरर्थक मारागया है ८ व्यासजी बोले कि इसके पीछे प्रसन्नहुये ऋषिका दियाहुआ पुत्र फिर प्रकट हुआ वह पुत्र अपूर्व्व प्रकाशमान कुबेरके पुत्रके समान था ९ इसके पीछे राजा अपने पुत्रसे मिलकर प्रसन्नहुआ और धर्म उत्पन्न करनेवाले पूर्ण दक्षिणा के यज्ञों से पूजन किया १० वह अभीष्टोंको न प्राप्त करने वाला भयभीत यज्ञोंसेरहित असन्तान बालक युद्धमें नहींमारा गया इसी हेतुसे वह फिर सजीव हुआ ११ शूरवीर अभीष्टों को प्राप्त करनेवाला अभिमन्यु हजारों शत्रुओंको संतप्त करके सेनाके सम्मुख माराहुआ होकर गया १२ ब्रह्मचर्य्य ज्ञानशास्त्र और इष्टीनाम यज्ञों से जिन लोकों को जाते हैं तेरापुत्र उन्हीं अविनाशी लोकों को गया १३ ज्ञानीलोक सदैव धर्म उत्पन्न करनेवाले कर्मोंके द्वारा स्वर्गको चाहते हैं परन्तु इससंसारी पृथ्वी को स्वर्गबासी लोग स्वर्ग से श्रेष्ठ न समझकर नहीं चाहतेहैं १४ इस हेतुसे युद्धमें माराहुआ स्वर्गबासी अर्जुनका पुत्र यहां लानेके योग्य नहीं है और कोई पदार्थ उसको अपेक्षित नहींहै क्योंकि सब उत्तमपदार्थ उसको प्राप्त हैं १५ ध्यानसे एकान्तमें ब्रह्मका दर्शन करनेवाले योगी जिसको पाते हैं और यज्ञ करने वाले उत्तम पुरुष जिसको पाते हैं और वृद्धि पानेवाले जिसको तपोंके द्वारा पाते हैं उस अबिनाशी गतिको तेरे पुत्र ने पाया है १६ फिर वह भगवद्भक्त बीर चन्द्रमा की किरणों से राजाके समान समीप बर्त्तमान है वह अभिमन्यु ब्राह्मणोंसे बृद्धिपाने के कारण चन्द्रमाके शरीर को प्राप्त हुआ वह शोकके योग्य नहीं है १७ इसप्रकार से जानकर दृढ़चित्तता से शत्रुओंको मार धैर्य्यको प्राप्तकरो हे निष्पाप हम जीवतेही शोचने के योग्य हैं और स्वर्ग में पहुंचे हुये जीवधारी तो कभीभी शोचने के योग्य नहीं हैं १८ हे महाराज शोच करनेसे पापही बढ़ता है इस हेतुसे मनुष्य अपने शोक को त्याग करके अपने कल्याणके निमित्त उपायकरे १९ बड़ी प्रसन्नता ज्ञान और सुखकी प्राप्ती का बिचारकरे बुद्धिमानों ने इसको जानकर कल्याण को कहा है शोक कल्याण नहीं कहा जाताहै २० हे ज्ञानी तुम इसप्रकार से उठो और नियमके धारणकरनेवाले होकर शोचको त्यागकरो तुमने मृत्युके प्रतापोंको अनु-

पम उपमाओंसे युक्त दृष्टान्त समेत सुना २१ और सब ऐश्वर्य्य विनाशवान्हैं यह भी सुना और मराहुआ और फिर सजीवहुये संजयके पुत्रको भी सुना २२ हे ज्ञानी महाराज तुम इसप्रकार से शोच मतकरो मैं अब जाता हूं इतना कहकर भगवान् व्यासऋषि उसी स्थान पर गुप्त होगये २३ युधिष्ठिर को इसरीति से समाश्वासन करके उन बक्ताओंमें श्रेष्ठ भगवान् वुद्धमानों में श्रेष्ठ स्वच्छ अभ्रके समान प्रकाशित व्यासजी के चले जानेपर २४ महाइन्द्र के समान तेजस्वी न्यायसे धन उपार्जन करनेवाले प्रथम महाराजाओं के यज्ञोंके धनों को सुनकर २५ चित्तसे प्रशंसा करता हुआ वह ज्ञानी युधिष्ठिर शोकसे रहित हुआ परन्तु फिर भी उसके दुःखी मनने चिन्ताकरी कि मैं अर्जुनसे क्याकहूंगा २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र उस भयकारी जीवों के नाश करने वाले दिनके समाप्त होने और श्रीमान् सूर्य्य के अस्त होने संध्याकाल वर्त्तमान १ होने और निवासके लिये सब के चले जानेपर हनुमान्जी की ध्वजा रखने वाला अर्जुन दिव्य अस्त्रों से संसप्तकों के समूहों को मारकर २ अपने बिजयी रथपर सवार होकर अपने डेरोंको आया अश्रुपातोंसे पूर्ण गद्गद कण्ठ अर्जुन चलता हुआ गोविन्दजीसे बोला कि हे केशवजी मेराहृदय क्यों भयभीतहोता है ३ और वचन रुकताहै और अप्रिय अशुभ शकुन दिखाईदेते हैं और शरीरमें क्लेश प्राप्तहोताहै ४ और मेराअप्रियदुःख हृदयसे दूर नहीं होताहै पृथ्वी और दिशाओंमें जो अत्यन्त भयकारी उत्पातहैं वह मुझको भयभीत करते हैं ५ वे सब उत्पात अनेकप्रकारके दुःखोंके सूचक दिखाई पड़तेहैं मन्त्रियों समेत मेरे गुरुरूप राजायुधिष्ठिरकी कुशल होय ६ वासुदेवजी बोले कि प्रकटहै कि मन्त्रियोंसमेत तेरेभाई का कल्याण होगा शोच मतकर वहां औरही कुछ अशुभ और अप्रिय होगा ७ संजय बोला कि इसके पीछे दोनों वीर श्रीकृष्ण और अर्जुन वीरों का मरणभूमि में संध्याकी उपासना करके रथमें नियत होकर युद्ध के वृत्तान्तों को कहते हुये चले ८ इसके अनन्तर वासुदेवजी और अर्जुन अत्यन्त कठिन कर्म को करके अपने उन डेरोंमें पहुंचे जो कि आनन्दसे रहित अप्रकाशमान थे ६

उसके पीछे शत्रुओ के बीरोंका मारने वाला हृदयसे व्याकुल अर्जुन डेरे को नाशमानरूप देखकर श्रीकृष्णजीसेबोला १० कि हे जनार्द्दनजी अब दुन्दुभियों के शब्दसेसंयुक्त प्रसन्नता के बाजे और आनन्दके शब्दों समेत शङ्ख भी नहीं बजते हैं ११ अब शम्यातालके शब्दों समेत बीणा नहीं बजतीहैं और आनन्द के गीतोंकोभी कोई नहीं गातेहैं १२ और मेरी सेनाओंमें बन्दीजन प्रशंसासेयुक्त चित्तरोचक स्तुतियोंको नहीं पढ़तेहैं और शूरबीर भी मुझकोदेखकर नीचाशिर किये हुये लौटे जाते हैं १३ और पूर्व्व के समान कर्मों को करके मुझ आयेहुये को प्रतिष्ठा नहीं करते हैं अर्थात् अभ्युत्थान नहीं देते हैं हे माधवजी अब मेरे भाइयों कीभी कुशलहोय १४ अपने मनुष्यों को व्याकुल देखकर मेरे चित्तकी व्याकुलता दूर नहीं होती है हे बड़ाई देनेवाले राजा पांचाल और बिराटके सब शूरबीरों कीभी सामग्रता अर्थात् मुलाकात मुझसे होय हे अबिनाशी अब भाइयों समेत अत्यन्त प्रसन्न अभिमन्यु १५ मुझ युद्ध से आये हुये प्रसन्नचित्तके सम्मुख हँसता हुआ नहीं आता है १६ संजय बोले कि इस प्रकार से कहतेहुये और अपने डेरे में प्रवेश करनेवाले उन दोनों ने महाव्याकुल और अचेत सब पाण्डवों को देखा १७ हनुमानजी की ध्वजा रखनेवाला अर्जुन भाइयों को उदासचित्त देख और अभिमन्यु को न देखकर यह बचन बोला १८ कि तुम सवोंके मुखका वर्ण अप्रसन्न दिखाई देताहै और अभिमन्यु को नहीं देखताहूं और तुम मुझको प्रसन्न नहीं करतेहो १९ मैंने सुना है कि द्रोणाचार्य्यने चक्रव्यूह बनाया २० और उस बालक अभिमन्युके बिना तुम सबमें उस व्यूह को तोड़ने वाला कोई नहीं था परन्तु मैंने सेनासे बाहर निकलना उसको नहीं सिखलाया था क्या तुमलोगोंने उस बालक को शत्रुओं की सेनामें प्रवेशित तो नहीं किया २१ वह बड़ा धनुषधारी शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला अभिमन्यु युद्ध में शत्रुओंकी बहुतसी सेना को पराजय करके युद्धमें मारातो नहीं गया २२ वह लालनेत्र बड़ी भुजावाला पर्व्वतों में उत्पन्न हुये सिंहके समान विष्णुके समान कहो कि किस प्रकार से युद्धभूमि में मारागया २३ उस सुकुमार बड़े धनुषधारी इन्द्रके पौत्र सदैव मेरे प्यारेका वर्णन करो कि वह कैसे २ युद्धमें मारागया २४ मृत्यु से अचेत होकर किस पुरुषने उस सुभद्राके प्यारे पुत्र और सदैव द्रौपदी व केशवजी अथवा अम्बा माताके प्यारे को मारा २५ पराक्रम शास्त्र बुद्धिकी प-

वलता से वृष्णियों के वीर महात्मा केशवजी के समान अभिमन्यु कैसे २ युद्ध-भूमिमें मारा गया २६ यादवी सुभद्राके प्यारे और आपसे सदैव पोषण पायेहुये शूरवीर पुत्र को जो नहीं देखताहूं तो यमलोक को जाऊंगा २७ मृदु और घूंघर-वाले वालों से युक्त मृगशावकके समान नेत्रवाले मतवाले हाथीके समान परा-क्रमी सिंहके बच्चेके समान उन्नत २८ बालक मन्द मुसकानके साथ बोलनेवाले जितेन्द्रिय सदैव गुरुपरायण बाल्यावस्थामें भी बड़े कर्म्मवाले ईर्षा से रहित प्रि-यभाषी २९ महोत्साह महाबाहु दीर्घनेत्र भक्तोंपर दया करनेवाले शिक्षित नीचों के संग से रहित ३० कृतज्ञ ज्ञानी अस्त्रज्ञ वृद्धोंके आज्ञाकारी सदैव युद्धाभिनन्द-न शत्रुओंके भयके बढ़ानेवाले ३१ । ३२ इष्ट मित्र जाति कुटुम्ब नातेदार आ-दिके प्रिय बातोंकी वृद्धि में प्रवृत्त पिताओं की विजयों का अभिलाषी प्रथम न मारनेवाले युद्धमें निर्भय ३३ । ३४ ऐसे पुत्र को जो नहीं देखताहूं तो मैं यम-लोक को जाऊंगा सुन्दर नासिका उत्तम ललाट कन्ध नेत्र भृकुटी दांतोंकी सु-न्दर पंक्तिवाले ३५ उस मुख को न देखतेहुये मेरे हृदयकी क्या शान्ती होसक्ती है ३६ और उस वीरकी उस अनुपम शोभा को जो कि देवताओं कोभी कठि-नता से प्राप्त होसक्ती है ३७ न देखते हुये मेरे हृदयकी कैसे शान्ती होसक्ती है प्रणाम करने में सावधान और पिताओं के वचन में प्रीति करनेवाले उस अभि-मन्युको जो मैं अब नहीं देखताहूं ३८ तो मेरे हृदयकी क्या शान्ती है वह सुकु-मार वीर बड़े मूल्यके शयनस्थानके योग्य ३९ सनाथोंमें श्रेष्ठ अनाथके समान निश्चय करके पृथ्वी पर सोता है पूर्व्व समयमें उत्तम स्त्रियां जिस शयन करने वाले की उपासना करती थीं ४० अब उस अत्यन्त घायल शरीरवाले के शरीर की अशुभ शृगाल उपासना करते हैं प्रथम जो सोया हुआ सूत मागध और ब-न्दीजनों से जगाया जाता था ४१ अब निश्चय करके उसको कुत्ते और शृगा-ल अपने अशुभ शब्दों से जगाते हैं उसका वह शुभ मुख छत्रकी छाया के योग्य था ४२ अब युद्धभूमिकी धूली उसको भस्मसे मिश्रित करेगी ४३ हा पुत्र प्रियदर्शनीय सदैव मेरे देखने के उत्सुक हे अभागेके पुत्र तू कालके पराक्रमसे भेजाजाताहै निश्चय करके सदैव शुभ कर्म करनेवालोंकी गति वह यमपुरी ४४ जो कि अपने प्रकाशोंसे प्रसन्नतापूर्वक सुन्दरहै तुझसे अत्यन्त शोभापातीहै निश्चय शुभ निर्भय घोर आनन्द पाये हुये को यमराज वरुण ४५ इन्द्र और

कुबेर पूजन करतेहैं जैसे कि वह व्यापारी जिसका जहाज टूटगया हो हाय २ कर पुकारे उसी प्रकार अनेक प्रकारका विलाप करके ४६ बड़े दुःखसे भरेहुये अर्जुनने युधिष्ठिरसे पूंछा कि हे कुरुनंदन वह अभिमन्यु शत्रुओंका नाशकरके ४७ युद्धमें सम्मुखहुये नरोत्तमोंसे युद्ध करताहुआ स्वर्गको गया निश्चयकरके उपाय करनेवाले बहुत नरोत्तमोंसे लड़ते ४८ उस असहाय और सहायता चाहने वालेने मुझको स्मरण किया मेरा पुत्र अभिमन्यु कर्ण द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य आदि बड़े २ बीरों के तीक्ष्ण बाणोंसे पीड़ामान ४९ नाना प्रकार के रूपयुक्त अत्यन्त साफ नोकवाले बाणों से अचेत हो इस स्थानपर मेरा पिता रक्षक होय ५० इस प्रकार बारम्बार विलाप करता हुआ निर्दय लोगोंके हाथ से गिराया गया मैं यह मानताहूं कि मेरा पुत्र अथवा माधवजी का भानजा ५१ सुभद्रा में जन्म लेनेवाला इसरीतिसे कहनेके योग्य नहीं है निश्चय करके मेरा बज्र के समान हृदय अत्यन्त कठोरहै ५२ जो लम्बी भुजा और रक्तनेत्र वाले अभिमन्यु को बिना देखते हुये नहीं फटता है ५३ उन बड़े धनुषधारी मर्मस्थलों के भेदन करनेवाले निर्दय लोगोंने किस प्रकार उस बालकपर जो कि बासुदेवजी का भानजा और मेरा पुत्रथा बाणोंको छोड़ा जो साहसी सदैव शत्रुओंको मारकर समीप आयेहुये मुझको देखकर अभिबादन करके प्रतिष्ठा करताथा ५४ वह अब मुझको क्यों नहीं देखता है निश्चय वह गिराया हुआ रुधिरमें भरा पृथ्वी पर सोताहै ५५ और सूर्य्यके समान पृथ्वी को शोभित करता हुआ सोताहै मैं उस सुभद्रा को शोचताहूं जो युद्धमें मुख न फेरनेवाले पुत्र को ५६ युद्धमें मरा हुआ सुनकर शोक से नाश को पावेगी सुभद्रा और द्रौपदी अभिमन्यु को न देखकर मुझको क्या कहैंगी और मैं उन दुःख से पीड़ामान उसकी माताओं से क्या कहूंगा ५७ । ५८ निश्चय मेरा हृदय बज्र है जो शोकसे पूर्ण रोतीहुई वधू को देखकर हजारों टुकड़े नहीं होता है मैंने धृतराष्ट्र के अहंकारी पुत्रोंके सिंहनाद सुने ५९ और श्रीकृष्णजीने बीरों को कठोर बचन कहता हुआ युयुत्सु को सुना हे महारथियो अर्जुन को न सहकर तुम बालक को मारकर ६० क्या प्रसन्न होतेहो हे धर्म्मके न जाननेवाले तुम पाण्डव अर्जुनके पराक्रम को देखो युद्धमें उन केशवजी और अर्ज्जुनके अप्रिय को करके ६१ शोकका समय बर्त्तमान होनेपर प्रसन्न हो होकर तुम सिंहके समान क्या गर्जतेहो इस बुरे कर्म्मका

फल तुमको शीघ्रही मिलैगा ६२ निश्चय करके तुम लोगों ने बड़ा कठिन अधर्म्म किया वह कैसे विलम्बतक निष्फल होसक्ता है निश्चय करके बड़ा बुद्धिमान् क्रोध और शोकसे युक्त वेश्याका पुत्र उनसे कहता हुआ शस्त्रोंको छोड़कर हटगया हे श्रीकृष्णजी आपने युद्ध में किस कारण यह मुझको नहीं कहा ६३ । ६४ मैं उसी समय उन निर्दयी महारथियों को भस्म करता संजय बोले कि वासुदेव श्रीकृष्णजी उस पुत्रके शोक से पीड़ामान अश्रुपातोंसे पूर्णनेत्र पुत्रके दुःखों से भरे शोक से संयुक्त ध्यान करनेवाले उस अर्जुन को पकड़कर ६५ यह बोले कि तुम इस रीति से शोक मतकरो मुख न मोड़नेवाले शूरोंकी यही मार्ग है ६६ मुख्य करके युद्धसे जीविका रखनेवाले मुख न फेरनेवाले शूरबीर क्षत्रियों की शास्त्रज्ञ लोगोंने यही गति वर्णनकी है ६७ और ऐसे मुख न मोड़कर लड़नेवाले शूरोंका मरना युद्धही में होता है ६८ निश्चय अभिमन्यु पवित्रकर्म्मी पुरुषोंके लोकों को गया हे भरतर्षभ सब वीरोंकी यही चित्तकी इच्छा है ६६ कि युद्ध में सम्मुख होकर मृत्यु को पावें हे प्रतिष्ठा के देनेवाले वह अभिमन्यु वीरों समेत बड़े २ राजकुमारों को मारकर ७० युद्ध में सम्मुख होनेवाले वीरों की चाही हुई मृत्यु को प्राप्त करनेवाला हुआ हे पुरुषोत्तम शोच मतकर युद्ध में क्षत्रियों को नाशरूप यह सनातन पूर्व्व के धर्म्म करनेवालों से नियत किया गयाहै हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ये तेरे सब भाई महादुःखी हैं ७१ । ७२ और तेरे शोकयुक्त होने पर राजालोग और तेरे मित्रवर्ग आदिक शोक से युक्त हैं हे प्रतिष्ठा करने वाले तुम उनको अपने विश्वस्थ वचनों से आश्वासन करो ७३ जो जानने के योग्य है वह तेरा जाना हुआ है शोक करने के योग्य नहीं है उन अपूर्व्वकर्मी श्रीकृष्णजी से ऐसा विश्वासित और आश्वासन कियाहुआ अर्जुन ७४ उन गद्गदकंठ वाले सबभाइयों से बोला कि वह लंबी भुजाबड़े स्कन्धकमललोचनवाला अभिमन्यु ७५ जैसे वृत्तान्तवाला है मैं उस को वैसाही यथार्थ सुना चाहताहूं मेरे पुत्रके उन शत्रुओं को इष्टमित्र भाई बन्धु नातेदार आदिक समेत घोड़े हाथी और रथों समेत युद्धमें मेरे हाथ से मरेहुये देखोगे अस्त्रज्ञ और अस्त्रधारी तुमलोगों के समक्षमें ७६ । ७७ किस रीतिसे इन्द्रसे घायलभी अभिमन्यु नाश को पावे जो मैं इस प्रकार अपने पुत्र की रक्षा में पांडव और पांचालोंको असमर्थ जानता तो वह मुझसे रक्षितहोता

बाणोंकी वर्षा करते रथमें सवार तुमलोगों का किस प्रकार ७८। ७९ अनादर करके शत्रुओं के हाथसे अभिमन्यु मारागया आश्चर्य्य है कि तुम्हारा—उद्योग और उपाय नहीं है न तुम्हारा पराक्रम है ८० जिस स्थानपर युद्ध में तुम्हारे देखतेहुये युद्धमें अभिमन्यु गिरायागया मैं अपनी निन्दा करूं कि जो अत्यन्त निर्बल ८१ भयभीत और निश्चय न करनेवाले तुम लोगों को जतलाकर चलागया ॥ दुःखकी बातहै कि तुम्हारे कवच और शस्त्रादि शोभाही के दिखाने वाले हैं ८२ मेरे पुत्रकी रक्षा न करनेवालों के बचन अच्छे लोगोंके मध्यमें कहनेके योग्यहैं इस प्रकार वचन को कहकर धनुष और उत्तम खड्गको धारण करनेवाला नियत ८३ अर्जुन किसी के देखने को समर्थ नहींहुआ सुहृदजन लोग उस मृत्युके समान क्रोधसे पूर्ण बारंबार श्वासलेनेवाले ८४ पुत्रके शोक से दुःखी अश्रुपातोंसे व्याप्त मुखवाले अर्जुनके उत्तर देनेको अथवा देखने को ८५ बासुदेवजी और बड़े पांडुनन्दन युधिष्ठिरके सिवाय कोई समर्थ नहीं हुआ वह दोनों सब दशामें प्रिय करनेवाले और अर्जुन के मन के अनुसार थे ८६ वही दोनों बड़े मान और प्रीतिसे इससे बोलने को समर्थ हैं इसके पीछे पुत्रके शोकसे अत्यन्त दुःखीमन ८७ कमललोचन क्रोध से भरेहुये उस अर्जुनसे राजा युधिष्ठिर बचन को बोले ८८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे महाबाहो संसप्तकों की सेनामें तेरे जानेपर आचार्य्यने मेरे पकड़ने में बड़ाभारी कठिन उपायकिया १ हम सबने भी रथकी सेनाको अलंकृत करके उसप्रकार के उपाय करनेवाले द्रोणाचार्य्य को युद्धमें रोका २ मेरे रक्षित होनेपर रथियोंसे रुकेहुये वह द्रोणाचार्य्य तीक्ष्ण बाणोंसे पीड़ावान् करते हुये शीघ्रही हमारे सम्मुख आये ३ द्रोणाचार्य्य से पीड़ावान् वह सब वीर युद्धभूमिमें द्रोणाचार्य्यकी सेनाके देखने को भी समर्थ नहीं हुये तो उसके पराजय करनेको कहांसे समर्थ होते ४ हेसमर्थभाई फिर हमसबने उस पराक्रममें असादृश्य अभिमन्युसे कहा कि इससेनाको पराजयकर ५ उस पराक्रमी उत्तम घोड़ेके समान और हमसे उसप्रकार आज्ञापायेहुयेने सहनेकेअयोग्य उसभारकोभी उठाना प्रारंभ

किया ६ तेरे अस्त्रोंकी शिक्षा और पराक्रमसेसंयुक्त वहबालक उससेनामें ऐसे प्र-
वेश करगया जैसेकि समुद्रमें गरुड़जी प्रवेश करजाते हैं ७ हमयुद्धके मध्य सेनामें
प्रवेशकरनेके अभिलाषी उसयादवीके पुत्र बीर अभिमन्युके पीछे उसीमार्गसे चले
जिस मार्गसे कि वह सेनामें गयाथा ८ हे तात इसके अनन्तर सिंधकेराजा नीच
जयद्रथने रुद्रजी के बरदानसे हम सबको रोंका ९ उसके पीछे द्रोणाचार्य्य, कृपा-
चार्य्य,कर्ण, अश्वत्थामा, कौशिली, कृतबर्मा, इन छःरथियोंने अभिमन्युको चारों
ओरसे रोंका १० वह बड़ेपराक्रमसे उपायकरनेवाला बालक युद्धमें उन सबमहा-
रथियोंसे घिरकर बिरथ कियागया ११ इसके पीछे उन महारथियों से बिरथकिये
हुये अभिमन्युको दुश्शासनकेपुत्रने बड़ेसंशयको पाकरमारा १२ वह अभिमन्यु
मनुष्य घोड़े रथ और हजारोंहाथियोंको मारकर अर्थात् आठहजार रथ नौसेहाथी
१३ दो हजार राजकुमार और दृष्टिमें न आनेवाले बहुत से बीरोंको और राजा
बृहद्बलको युद्धभूमिमें स्वर्गमें भेजकर १४ फिर बड़ेधर्मात्माने मृत्युकोपाया हमारे
शोक का बढ़ानेवाला यही वृत्तान्त है १५ हे पुरुषोत्तम उसने इसप्रकारसे स्वर्ग
लोकको पाया इसके पीछे अर्जुन धर्मराजके कहेहुये वचनको सुनकर १६ हाय
पुत्र इसप्रकार वह बड़ी २ श्वासोंको लेताहुआ महापीड़ितहोकर पृथ्वीपर गिर-
पड़ा फिर व्याकुलचित्तहोकर वह सब भाई बन्धुआदिक बीर अर्जुनको चारों ओर
से घेरकर १७ महादुःखी मन पलक न मारनेवाले नेत्रोंसे परस्पर देखनेलगे इसके
पीछे क्रोधसे मूर्च्छावान् इन्द्रका पुत्र अर्जुन चैतन्यताको पाकर ज्वरसे कंपायमान
के समान वारम्वार श्वासोंको लेताहुआ हाथको हाथमें पीसकर श्वासलेता अ-
श्रुपातोंसे पूर्णनेत्र १८।१९ उन्मत्तके समान देखकर इसबचनको बोला कि मैं तुम
से सत्य २ प्रतिज्ञा करताहूं कि कल्हही जयद्रथको मारूंगा जो वह मरने के भय
से डराहुआ होकर धृतराष्ट्र के पुत्रों को त्याग नहीं करेगा २० हे महाराज जो
वह हमारी अथवा पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी की वा आपकी शरण में नहीं आवे
तो कल उस जयद्रथको अवश्य मारूंगा २१ मैं उस दुर्य्योधनके प्रिय करनेवाले
और मेरी प्रीतिको भूलजानेवाले और बालक के मारनेके मुख्य कारणरूप ज-
यद्रथ को कल मारूंगा २२ हे राजा जो कोई युद्धमें उसकी रक्षाकरनेवाले और
द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्यजी भी जो मुझसे युद्ध करेंगे तो मैं उनको भी बाणों से
ढकूंगा २३ हे पुरुषोत्तमो जो मैं युद्ध में इसप्रकार कियेहुये प्रणको नहीं करूं तो

धर्म उत्पन्न करनेवाले कर्मसे प्रकट शूरों के लोकोंको नहीं पाऊं २४ माता पिता के मारनेवालों के जो लोक हैं अथवा गुरुकी स्त्री से संभोग करनेवालों के जो लोकहैं सदैव दुःख देनेवालों के जो लोकहैं २५ साधुओं के गुणोंमें दोष लगानेवालों के जो लोकहैं परोक्ष निन्दा करनेवालों के जो लोकहैं किसीकी धरोहर मारनेवालोंके जो लोकहैं विश्वासघातियोंके जो लोकहैं २६ ब्राह्मण मारनेवालों के जो लोक हैं और गोबध करनेवालों के भी जो लोक हैं २७ खीर यवआदि के भोजन शाक कृसर संयाव पूप मांस और निरर्थक मांसखानेवालोंके जो लोक हैं २८ मैं एकही दिन में उन लोकों को जाऊं जो जयद्रथ को नहीं मारूं वेदके बहुत पढ़नेवाले तेज व्रतवाले उत्तम ब्राह्मण २६ वृद्ध साधू और गुरुलोगों का अपमान करनेवाले जिन लोकों को जाते हैं और चरणसे अग्नि गौ और ब्राह्मण के छूनेवालोंकी जो गतिहोय ३० और जलमें थूक मूत्र और बिष्ठा छोड़नेवालोंकी जोगतिहै उस दुःखरूप गतिको पाऊं जो जयद्रथको न मारूं ३१ नंगेस्नान करनेवाले की और बंध्या के आतिथि की जोगति हैं उत्कोची अर्थात् घूसलेनेवाले मिथ्याबादी और छली लोगोंकी जो गतिहै ३२ आत्मघात करने वालों की जो गति है मिथ्याभाषण करनेवालों की जो गति है नौकर पुत्र स्त्री और शरणागत लोगोंके साथ बिवाद करनेवालोंकी जो गतिहै ३३ और मिष्टान्न को बिना बिभाग करके खानेवालों की जो गति है इनसब भयकारी गतियों को पाऊं जो मैं जयद्रथ को न मारूं ३४ जो निर्दयचित्तवाला अपने आज्ञाकारी साधू और शरणागत को भी त्याग करके पोषण नहीं करताहै और उपकार करनेवालोंकी निन्दा करताहै ३५ जो प्रातःकालका समय वेश्याके निमित्त देता है और श्राद्धको नहीं करताहै और जो अयोग्य ब्राह्मणों के निमित्तदे और वृपलीपति के अर्थ दे ३६ और जो मद्यपीनेवाला वेमर्याद और उपकारको भूलने वाला और स्वामी की निन्दा करनेवाला है मैं उन सबकी गतियों को शीघ्रही पाऊं जो जयद्रथको नहीं मारूं ३७ वामहाथसे भोजन करनेवाले और गोदी में रखकर खानेवालों की भी जो गति है और पलाश का आसन और तिंदुककी दांतनको ३८ त्यागन करनेवालों के जो लोकहैं और प्रातःकाल सायंकाल के समय सोनेवालोंके जो लोकहैं जो ब्राह्मण शीतसे भयभीत और क्षत्रिय युद्धमें भयभीत है उनके ३९ और वेदध्वनि से रहित और एकही कूपके जल से नि-

र्वाह करनेवाले गांव में जो छः महीने निवास करनेवालों के जो लोक हैं उसी प्रकार शास्त्रकी अधिक निन्दाकरनेवालोंके जो लोकहैं ४० जो लोक कि दिन में स्त्रीसंग करनेवालों के हैं और जो दिनमें सोते हैं उनके और घरों में अग्नि लगाने वालों के और विष देनेवालों के जो लोक माने गये हैं ४१ अग्नि के पूजने से रहित गौके जलपान करने में विघ्न करनेवाले रजस्वला से भोग करनेवाले मूल्य लेकर कन्यादान करनेवाले ४२ और धर्म्म से विरुद्ध जो अन्य २ लोग यहां नहीं कहे गये और जो कहे गये उन सबों की गति को मैं जल्दी से पाऊं ४३ जो रात्रि व्यतीत होने पर कल के दिन जयद्रथ को नहीं मारूं इसके विशेष मेरी इस दूसरी प्रतिज्ञाको भी जानो ४४ वहुत से मनुष्यों को यज्ञ करानेवाले श्वानवृत्ती रखनेवाले ब्राह्मणों की जो गति है और मुखसे सम्भोग करनेवालोंकी जो गतिहै और जो दिनके सम्भोग करनेमें प्रवृत्तचित्त हैं जो ब्राह्मण से प्रतिज्ञा करके लोभसे फिर नहीं देते हैं उनकी गतिको पाऊं जो कल जयद्रथ को न मारूं ४५ । ४६ जो इस पापी के मरने पर सूर्य्य अस्त होजायगा तो मैं इसी स्थानपर प्रकाशित अग्निमें प्रवेश करजाऊंगा ४७ असुर, देवता, मनुष्य, पक्षी, सर्प, पितृ, राक्षस, ब्रह्मऋषि, देवऋषि और यह जड़ चैतन्य जीवभी और इनसे भी परे हैं वहभी मेरे शत्रुकी रक्षा करनेको समर्थ नहीं हैं ४८ जो वह रसातल अग्नि आकाश देवताओं के पुर और असुरों के पुरमें प्रवेश करजाय तौभी मैं प्रातःकाल बाणों के समूहों से उस अभिमन्यु के शत्रुका शिर काटूंगा ऐसे कहकर अपने गाण्डीव धनुष को दाहें बायें फिराया तब धनुष के शब्द ने उसके शब्द को उल्लंघन करके आकाश को स्पर्श किया ४९।५० अर्जुनके इस प्रतिज्ञाके करनेपर श्रीकृष्णजीने अपने पांचजन्य शंखको वजाया और अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्ज्जुनने अपने देवदत्त शंख को वजाया ५१ श्रीकृष्णजी के मुखकी वायु से अत्यन्त पूरित उदर और ध्वनि उत्पन्न करनेवाले पांचजन्य शंखने जगत् को पाताल आकाश और दिगीश्वरों समेत ऐसे कम्पायमान किया जैसे कि प्रलयके समय संसार कंपित होताहै ५२ इसके पीछे उस महात्माके प्रतिज्ञा करनेपर पाण्डवों के सिंहनाद और हजारों वाजों के शब्द प्रकटहुये ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रयसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

चौहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि वहां जयद्रथ दूतों के मुख से इस वृत्तान्त को जानकर और विजयाभिलाषी पाण्डवों के उस बड़े शब्द को सुनकर १ अपने स्थान से उठके शोक से अज्ञानरूप दुःखसे भराहुआ अथाह शोकसमुद्र में डूबा हुआ २ बहुत शोचको करता सिन्धका राजाजयद्रथ राजाओंकी सभामेंगया और वहां जाकर उसने उन राजाओं के सम्मुख विलाप किया ३ अभिमन्युके पिता से भयभीत और लज्जायुक्त होकर इस बचन को बोला निश्चय करके जो यह अर्ज्जुन पाण्डुके क्षेत्रमें कामी इन्द्र से उत्पन्न हुआ ४ वह निर्बुद्धी मुझ अकेले को निश्चय यमलोकमें पहुँचाया चाहता है इस हेतुसे मैं प्रणाम करताहूं आपका कल्याणहोय मैं अपने जीवनकी अभिलाषा से अपने घरको जाऊंगा हे क्षत्रियों में श्रेष्ठ अस्त्रों के बल रखनेवाले अर्ज्जुन से चाहेहुये मुझको तुम सब मिलकर मेरी रक्षाकरो हे बीरलोगो तुम मुझको अभयदानदो ५।६ द्रोणाचार्य्य, दुर्योधन, कृपाचार्य्य, कर्ण, शल्य, बाह्लीक और दुश्शासनादिक मुझ मृत्यु से पीड़ावान् की रक्षा करने को समर्थ हैं ७ हे मित्रो आप सब पृथ्वीके स्वामी इस मारने के अभिलाषी अकेले अर्ज्जुन से क्या मेरीरक्षा नहीं करसक्तेहो ८ पाण्डवोंकी बड़ी प्रसन्नता को सुनकर मुझको बड़ा भयहै हे राजाओ मरनेके अभिलाषी मनुष्य के समान मेरे अंग शिथिल होते हैं ९ निश्चय करके गाण्डीवधनुषधारी ने मेरे मारनेका प्रण कियाहै और इसी प्रकार दुःखके समय प्रसन्न होकर पाण्डवों ने शब्द किये १० वहां देवता, गन्धर्व, असुर, सर्प और राक्षसभी उसकी प्रतिज्ञा मिथ्या करने को समर्थ नहीं होसक्ते हैं फिर राजालोग कैसे करसक्ते हैं ११ इस निमित्त हे राजालोगो आपका भलाहो आप सब मुझको आज्ञादो कि मैं भाग कर ऐसा गुप्त होजाऊंगा जहां पाण्डव मुझको न देखसकेंगे राजादुर्योधन अपने कार्य्य की महत्त्वता से उस महाव्याकुल विलाप करनेवाले भयसे पीड़ित चित्तवाले जयद्रथ से बोले १२।१३ कि हे नरोत्तम तुमको भय न करना चाहिये हे पुरुषोत्तम कौनसा बीर युद्ध में क्षत्रियों के मध्य में नियत हुये तुझ को अपने आधीन करसक्ता है १४ मैं और सूर्य्यकापुत्र कर्ण, चित्रसेन, विविंशति, भूरिश्रवा, शल्य और दुःख से सम्मुखना के योग्य वृषसेन १५ पुरु,

मित्रोजय, भोज, काम्बोज, सुदक्षिण, सत्यब्रत, महाबाहु, विकर्ण, दुर्मुख, दु-
श्शासन, सुबाहु और शस्त्रधारी राजाकलिंग, बिन्द, अनुविन्द, अवन्ती देश
के राजालोग, द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, शकुनि १६ । १७ यह सबलोग और
दूसरे नानादेशों के राजा और हे राजासिंध आपभी रथियों में श्रेष्ठ शूरबीर हो
सो तुम किसप्रकार पांडवों करके भयको करते हो १८।१६ मेरी ग्यारह अक्षौहि-
णीसेना तेरीरक्षामें कुशलहोकर युद्ध करेंगी हे सिन्धके राजा तुम भय मतकरो
तुम्हाराभय दूरहोय २० संजय बोले कि हे राजा आपकेपुत्रसे इसरीतिपर विश्वा-
सितकिया हुआ सिंधका राजा जयद्रथ दुर्योधन समेत रात्रिके समय द्रोणाचार्य्य
के समीप गया २१ वहां जाकर उसने द्रोणाचार्य्य के चरणों में दण्डवत् करके
बड़ी नम्रतासे समीप बैठकर इस बातको पूछा २२ कि हे भगवन् लक्षभेदन क-
रना दूर गिराना हस्तलाघवता और दृढ़ घायलकरने में अर्जुनका अधिक गुण
मुझसे कहो २३ हे आचार्य्यजी मैं मूलसमेत उस अर्जुनकी और आपकी सब
विद्याओं को जानना चाहताहूं आप अपनी और अर्जुनकी ठीक २ संपूर्ण वि-
द्याको वर्णनकरो २४ द्रोणाचार्य्य बोले कि हे तात तेरी और अर्जुन की शिक्षा
समानहै परन्तु योग और दुःखके सहने में अर्जुन तुझसे अधिकहै २५ तुझको
किसी दशामें भी अर्जुन से भय न करना चाहिये हे तात मैं तुझको निस्सन्दे-
ह भयसे रक्षा करूंगा २६ देवताभी मेरे भुजों से रक्षित पर प्रबल नहीं होसक्ते हैं
मैं उस व्यूहको तैयार करूंगा जिसको कि अर्जुन नहीं तरसकेगा २७ इसहेतु
से तुम युद्धकरो भयमतकरो अपने धर्मका पालनकरो हे महारथी तुम बाप दादे
के मार्गपर चलो २८ तुमने बुद्धिके अनुसार वेदों को पढ़कर अग्नियों में अ-
च्छीरीतिसे हवन कियाहै और बहुत से यज्ञोंसे भी पूजनकियाहै तेरी मृत्यु भय
की उत्पन्न करनेवाली नहीं है २९ नीच मनुष्यों से दुष्प्राप्य बड़े प्रारब्धको पा-
कर भुजबल से विजयहोकर उत्तमलोकों को पावेगा ३० कौरव पांडव और या-
दव और जो दूसरे मनुष्य हैं और मैं भी अपने पुत्र समेत सब विनाशवान् हैं
यह विचार करो ३१ हम सब क्रमपूर्व्वक पराक्रमी काल से घायलहुये पड़े हैं
अपने २ कर्म से संयुक्त होकर परलोक को जायँगे ३२ तपस्वी तपस्याओं को
करके जिन लोकों को पाते हैं उन लोको को क्षत्रिय लोग क्षत्रियधर्म में प्रवृत्त
होकर प्राप्तकरते हैं ३३ भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के इसप्रकार के समझाने और दू-

ढ़ता करनेके कारणसे राजा जयद्रथने अर्जुन से भयको दूरकिया और युद्ध में चित्तको लगाया ३४ हे राजा इसके पीछे आपकी सेनाओंको भी बड़ी प्रसन्नताहुई और सिंहनादों के शब्दों समेत बाजोंकी कठिन ध्वनि हुई ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुस्सप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

पचहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि तब सिंधके राजाके मारनेमें अर्जुनकी प्रतिज्ञाहोनेपर महाबाहु वासुदेवजी अर्जुनसे बोले १ कि तुमने भाइयोंके मतको न जानकर अपने वचनों से प्रतिज्ञाकरी कि मैं जयद्रथ को मारूंगा यह तुमने बिना विचारके कर्म किया २ और मुझसे सलाह न करके कठिन बोझेको उठाया हम किस प्रकारसे सब लोकके योग्य पढ़ेहुये न होवें ३ मैंने दुर्य्योधन के डेरों में दूत नियत किये वह दूत बड़ी शीघ्रतासे आकर इस वृत्तान्त को कहतेहैं ४ कि हे समर्थ सिंध के राजा के मारने की तेरी प्रतिज्ञा करनेपर उन लोगों से कियेहुये बड़े सिंहनाद बाजों समेत सुने गये ५ धृतराष्ट्र के पुत्र जयद्रथ समेत उस शब्द को सुनकर भयभीत हुये कि यह सिंहनादनिहेतुकनहीं है यह मानकर नियतहुये ६ हे महाबाहो कौरवों के बड़े शब्दका भी प्रादुर्भाव हुआ और हाथी घोड़े पत्ति और रथों के शब्द बड़े भयकारी हुये ७ अर्ज्जुन निश्चय करके अभिमन्यु के मरण को सुनकर पीड़ावान् होकर रात्रिहीमें क्रोधयुक्त होकर सम्मुख आवेगा यह समझकर सब नियतहुये ८ हे कमलवत् नेत्रवाले अर्जुन उन उपाय करनेवालों ने सिन्धके राजाके मारने में तुझ सत्यवक्ताकी सत्यप्रतिज्ञा सुनी ९ इसके पीछे दुर्योधनके मन्त्री और वह राजा जयद्रथ यह सब चित्तसे दुःखित नीच मृगोंके समान भयभीत हुये १० इसके पीछे सौवीर और सिन्धदेशोंका स्वामी अत्यन्त दुःखी जयद्रथ मंत्रियों समेत वहांसे उठकर अपने डेरेको आया ११ वह सलाह करने के समय परिणाम में कुशल करनेवाले कर्मकी सलाहकरके राजसभा के मध्य सुयोधन से जाकर यह वचन बोला कि १२ अर्जुन अपने पुत्र का मारने वाला मुझको समझकर कलके दिन मेरे सम्मुख आवेगा और सब सेनाके मध्यमें उसने मेरे मारने की प्रतिज्ञा करीहै १३ अर्जुनकी प्रतिज्ञाको देवता गन्धर्व

राक्षस असुर और सर्पादिक कोई भी मिथ्या करनेको समर्थ नहीं होसक्ते हैं १४ सो तुम मुझको युद्धमें रक्षाकरो अर्जुन तुम्हारे मस्तकोंको उल्लंघन करके लक्ष को न पावे इसहेतुसे इस स्थानपर रक्षाकरने का उपाय करो हे कुरुनन्दन जो युद्धमें मेरी रक्षा नहीं करसक्तेहो तो मुझको आज्ञादो कि मैं अपने घरको जाऊंगा १५।१६ इसप्रकार कहेहुये उस शिर झुकाये हुये और वेमन सुयोधनने उस प्रतिज्ञाको सुनकर विचार किया १७ कि निश्चय करके उसराजा जयद्रथने उस पीड़ावान् दुर्य्योधनको देखकर मूढ़ और अपनी वृद्धिका करनेवाला प्रतिज्ञापूर्व्वक यह वचन कहा १८ कि यहां आप लोगों के मध्य में उस प्रकारका प्रवल धनुषधारी नहीं देखताहूं जो बड़े युद्ध में अर्जुन के अस्त्रको अपने अस्त्रसे निवारणकरे १९ बासुदेवजीकी सहायता रखनेवाले और गांडीव धनुष के चलायमान करनेवाले अर्जुन के आगे कौन नियतहोसक्ताहै जो साक्षात् इन्द्रभी होय वहभी नियत नहीं होसक्ता है २० सुना जाताहै कि पूर्व्वसमय में बड़े पराक्रमी प्रभु महेश्वरजी भी हिमालय पर्व्वतपर पदाती अर्जुन के साथ युद्ध करनेवाले हुये २१ और उसी देवराजकी आज्ञापायेहुये ने एकही रथके द्वारा हिरण्यपुरवासी हजारों दानवोंको मारा २२ बुद्धिमान् बासुदेवजीसे संयुक्त अर्जुन देवताओं समेत तीनों लोकोंको भी मारसक्ताहै यह मेरामतहै २३ सो मैं आज्ञादेनेको अथवा पुत्र समेत महात्मा वीर द्रोणाचार्य्यसे रक्षित होनेको अभिलाषा करताहूं जो तुम मानतेहो २४ हे अर्जुन वहां आप राजाने जाकर द्रोणाचार्य्यसे प्रार्थना करी और यह आगे लिखेहुये लोग रक्षित नियत कियेगये और निश्चयकरके रथ तैयार कियेगये २५ कर्ण,भूरिश्रवा,अश्वत्थामा,वृषसेन,दुर्जय कृपाचार्य और शल्य यह छःरथी अग्रगामी हैं द्रोणाचार्यने शकट पद्मक अर्द्धव्यूह सेनाके आगे वनाया और पद्मकर्णक नाम व्यूह मध्यमें नियतहुआ और व्यूह के एकपक्षमें शूची रचागया २६।२७ वीरों से रक्षित अत्यन्त दुर्मद वह सिंधका राजा जयद्रथ नियतहोगा धनुषविद्या अस्त्रविद्या पराक्रम और स्वाभाविक वलमें २८ यह छः रथी सहने के अयोग्य कियेगये हैं इनछओं रथियों को विना विजय किये हुये यह जयद्रथ आधीन होने के योग्य नहीं है २९ तुम छओं रथियों में प्रत्येक के पराक्रम को विचारकरो हे नरोत्तम यह सब मिलेहुये शीघ्रतासे विजय करने के योग्य नहीं है ३० मैं फिर कार्य्यकी सिद्धीके अर्थ और अपनी वृद्धिके निमित्त

सलाह के और मंत्र विचार के जाननेवाले मंत्री और मित्रों के साथ नीतिको निर्णय करूंगा ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

छिहत्तरवां अध्याय ॥

अर्जुन वोले कि आप दुर्य्योधनके जिन छओं रथियोंको पराक्रमी मानतेहो उनसबका पराक्रम मेरे आधे पराक्रमके भी समान नहीं है यह मेरामत है १ हे मधुसूदनजी मुझ जयद्रथके मारनेके अभिलाषी के अस्त्रसे इनसबोंके अस्त्रोंको आप कटाहुआ देखोगे २ मैं द्रोणाचार्य्यके देखतेहुये अपने समूहके साथ बिलाप करते राजासिन्धके मस्तक को पृथ्वी पर गिराऊंगा ३ जो साध्य, रुद्र, बसु, अश्विनीकुमार,इन्द्र समेत मरुत, ईश्वरोंसमेत विश्वेदेवा ४ पितृ, गन्धर्व्व, गरुड़, समुद्रादिक, स्वर्ग, आकाश और यह पृथ्वी दिगीश्वरों समेत सव दिशा ५ गांव और बनके जीव और सैकड़ों स्थावर जंगम जीवभी राजासिन्धके रक्षक होजायँ ६ हे मधुसूदनजी तौभी प्रातःकालके समय मेरे बाणों से युद्धमें उसको मरा हुआही देखोगे हे श्रीकृष्णजी मैं सत्यतापूर्वक शपथ खाताहूं और उसी प्रकार शस्त्र को उठाताहूं ७ हे केशवजी जिसपापी दुर्बुद्धीका रक्षक वह बड़ा धनुषधारी द्रोणाचार्य्य है प्रथम उसी द्रोणाचार्य्यके सम्मुख मैं जाऊंगा ८ वह दुर्योधन उस द्रोणाचार्य्यमें इस जुआ को बँधा हुआ मानताहै इस हेतुसे उसकी सेनाके मुख को तोड़कर जयद्रथ को आधीन करूंगा ९ तुम प्रातःकालके समय मेरे अत्यन्त तीक्ष्ण नाराचों से बड़े धनुषधारियों को युद्धमें ऐसे छिन्न भिन्न और व्याकुल हुआ देखोगे जैसे कि बज्रों से फटेहुये पर्व्वतोंके शिखर होते हैं १० गिरते व गिरेहुये अथवा तीक्ष्ण बाणों से अत्यन्त घायल मनुष्य हाथी और घोड़ोंके शरीरोंसे रुधिर को जारी करूंगा ११ गाण्डीव धनुषके छोड़े हुये शीघ्रगामिता में मन और बायुके समान असंख्य बाण हजारों हाथी घोड़े और मनुष्योंके शरीरों को प्राणों से पृथक् करेंगे १२ मैंने यम, कुबेर, वरुण, इन्द्र और रुद्रजी से जो घोर अस्त्रलिये हैं उनको मनुष्य इस युद्धमें देखेंगे १३ राजासिन्धके सम्पूर्ण रक्षकोंके अस्त्रों को युद्धमें मेरे ब्रह्मास्त्रसे दूर कियेहुये देखोगे १४ हे केशवजी प्रातःकाल युद्धमें मेरे बाणोंके वेगों से कटेहुये राजालोगों के शिरों से इस पृथ्वी को आ-

च्छादित हुआ देखोगे १५ मैं मांसभक्षी जीवों को तृप्त करूंगा शत्रुलोगों को भगाऊंगा मित्रों को प्रसन्न करूंगा और राजासिन्ध को मथूंगा १६ बड़ा अपराधी दुष्ट नातेदार पापदेशमें उत्पन्न हुआ राजासिन्ध मेरे हाथसे मरकर अपने इष्टमित्र नातेदार आदि को शोचेगा १७ सब क्षीरोंके पीनेवाले पापाचारी जयद्रथ को रणभूमिमें मेरे हाथसे मराहुआ देखोगे १८ हे श्रीकृष्णजी मैं प्रातःकाल वह कर्म्म करूंगा कि जिसको देखकर कोई भी लोकमें युद्धके बीच मेरे समान दूसरे धनुषधारी को नहीं मानेगा १९ हे नरोत्तम मेरा दिव्य धनुष गाण्डीव है और मैं युद्ध करनेवालाहूं और हे इन्द्रियोंके स्वामी आप सारथीहो फिर मुझसे अजेय कौन होसक्ता है २० हे भगवन् आपकी कृपासे युद्धमें मुझको अप्राप्त पदार्थ क्या है हे हृषीकेशजी मुझको असहिष्णुशील जानतेहुये आप क्या निन्दा करतेहो २१ जिस प्रकार चन्द्रमामें चिह्न नियतहै और जैसे कि समुद्रमें जल नियतहै हे जनार्द्दनजी उसी प्रकार मेरी इस सत्य प्रतिज्ञा कोभी जानो २२ मेरे अस्त्रों का अपमान मतकरो और मेरे दृढ़ धनुषका भी अपमान मतकरो और दोनों भुजाओं के पराक्रमका भी अपमान मतकरो और मुझ संसारके धन विजय करनेवालेका भी अपमान मतकरो २३ मैं युद्धमें जाकर विजय करूंगा नहींतो जीवता नहीं रहूंगा इस सत्यतासे युद्धमें जयद्रथ को मृतक हुआही जानो २४ ब्राह्मणों में सत्यता अचल है साधुओं में नम्रता अचलहै यज्ञोंमें लक्ष्मी अचलहै श्रीनारायणजी में विजय अचलहै २५ संजय बोले कि इन्द्रके पुत्र गर्ज्जते हुये अर्ज्जुन ने इन्द्रियों के स्वामी को इस प्रकार कहकर भी फिर केशवजी से कहा २६ हे श्रीकृष्णजी जिस प्रकार से कि मेरा रथ प्रातःकालही अलंकृत होजाय वही प्रकार आप को करना योग्य है निश्चय करके बड़ाभारी कार्य्य बर्त्तमान हुआ है २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥

सतहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि दुःख शोकसे पीड़ावान् सर्पके समान श्वास लेनेवाले वासुदेवजी और अर्ज्जुनने उस रात्रि को निद्रा नहींली १ नरनारायण को क्रोधयुक्त जानकर इन्द्रसमेत देवताओं ने भी पीड़ावान् होकर चिन्ताकरी कि यह

क्या होगा २ उस समय सूक्ष्मभय की सूचन करनेवाली दारुण वायुचली और सूर्य्य में कवन्ध समेत परिघ दृष्टिगोचर हुआ ३ परस्पर आघात करतीहुई वायु और विद्युत् समेत सूखे वज्र गिरे और वन पर्व्वतों समेत पृथ्वी भी कंपायमान हुई ४ हे महाराज मकरादिक जीवों के आश्रय स्थान समुद्र उमगने वालेहुये और झरने नदी आदिक भी चलने को उद्युतहुये ५ रथ घोड़े हाथी और मनुष्यों के नाशका समय मांसभक्षियों को प्रसन्नता यह सब यमराज के देशकी वृद्धिके निमित्त वर्त्तमानहुये ६ सवारियोंने मूत्र विष्ठाको करके रुदनकिया उन भयकारी रोमांच खड़े करनेवाले सब उत्पातों को देखकर ७ और बड़े पराक्रमी अर्जुनकी भयकारी प्रतिज्ञाको सुनकर आपकी सब सेना पीड़ामानहुई ८ इसके पीछे इन्द्रका पुत्र महाबाहु अर्जुन श्रीकृष्णजी से बोले कि तुम अपनी बहिन सुभद्रा को पुत्रवधू समेत विश्वास कराके ढाढस बंधाओ ९ हे माधवजी इसकी वधू और समान वयवालों को शोक से रहितकरो हे प्रभु मीठे और सत्यता से युक्तवचनोंसे उसको आश्वासनकरो १० इसके पीछे अत्यन्त दुखित चित्त वासुदेवजीने अर्जुनके घर जाकर पुत्र के शोकसे पीड़ामान और दुखी होनेवाली अपनी बहिनको ढाढस बंधाया ११ वासुदेवजी बोले कि हे यादवी बधू समेत तू अभिमन्युके विषयमें शोचमतकर सब जीवधारियों की यह निष्ठा कालदेवतासे नियतकी गई है १२ यह तेरे पुत्रका मरना मुख्यकर कुलमें उत्पन्न पंडित क्षत्रिय के समान है शोचमतकर १३ महारथीवीर पिताके समान पराक्रमी अभिमन्युने प्रारब्धसे क्षत्रियोंकी विधिसे बीरोंकी अभीष्ट गतिको पाया १४ बहुतसे शत्रुओं को बिजय करताहुआ उनको मृत्युके पास भेजकर पवित्र कर्मसे प्रकट और सब कामनाओं के देनेवाले अविनाशी लोकोंको पाया १५ सन्तलोग तप ब्रह्मचर्य्य शास्त्र और बुद्धिके द्वाराभी जिसगतिको चाहतेहैं उस गतिको तेरे पुत्रने पाया १६ तू वीर पुत्रको उत्पन्न करनेवाली बीर पुरुषकी स्त्री बीरकी पुत्री और वीरही बांधव रखनेवाली है हे कल्याणिनि पुत्रको मत शोच क्योंकि उसने परमगति को पायाहै १७ यह पापी और बालकका मारनेवाला राजासिंध मित्र भाइयोंके समूहों समेत इसपापके फलको पावेगा १८ रात्रिके व्यतीत होनेपर यह पापकर्म करनेवाला अमरावतीपुरी में भी प्रवेश करताहुआ अर्जुन के हाथ से विनामरे नहीं छूटसक्ता १९ कल्ह उस राजासिंधका शिर युद्ध में स्यमन्तपंचक से वाहर

डालाहुआ लोग सुनैंगे शोकसे रहितहोजा रोदनमतकर २० उस शूरने क्षत्रिय धर्म को आगे करके सत्पुरुषों की गतिको पाया जिसको हम और अन्यलोग जो यहां शस्त्रोंसे निर्वाह करनेवाले हैं अन्तमें पावें गे २१ बड़ा वक्षस्स्थल और वड़े भुजावाला मुख न फेरनेवाला रथियोंको मारनेवाला तेरा पुत्र स्वर्गको गया अव तू मनके तापको दूरकर २२ वह पराक्रमी माता और पिताके पक्षका अनुयायीहुआ वह शूर महारथी हजारों शत्रुओंको मारकर मरगया २३ हे रानी तू अपनी पुत्रवधूको विश्वासितकर क्षत्रिय के विषयमें वड़े शोचको मतकर हे नन्दनी कल्ह वड़ी प्रिय वातको सुनकर शोकसे रहितहो २४ अर्जुनने जो प्रतिज्ञाकरी है वह यथार्थ है मिथ्या नहीं होसक्ती तेरे पतिकी कर्मकी इच्छाभी निष्फल नहीं होती २५ जो प्रातःकाल मनुष्य सर्प पिशाच राक्षस पशु देवता और असुरभी युद्धमें वर्त्तमानहोकर जयद्रथके साथ में होंगे तौ भी वह नहीं वच सकैगा अर्थात् नाशको पावेगा २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि उन महात्मा केशवजी के इसवचनको सुनकर पुत्रके शोक से पीड़ामान और अत्यन्त दुःखी सुभद्राने विलाप किया १ हाय पुत्र मुझ अभागिनी के वेटे और पिताके समान पराक्रमी तुमने युद्धको पाकर कैसे अपने जीवको गँवाया २ हे पुत्र उत्तम कमल के समान श्यामसुन्दर डाढ़ और नेत्र वाला तेरामुख कैसा युद्धकी धूलसे लिपटाहुआ दिखाई देताहै ३ निश्चयकरके तुझ मुख न फेरनेवाले सुन्दर शिर ग्रीवा भुजा स्कन्ध आयत वक्षस्स्थल पतले उदरवाले शूरवीरको पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखकर ४ जंगलके सव जीव तेरे सुन्दर नेत्र युक्त अलंकृत और शस्त्रोंसे युक्त घायल शरीरको उदयहुये चन्द्रमाके समान देखते हैं ५ जिसके शयनके स्थान पूर्व्व समयमें वहु मूल्यवाले विस्तरों से युक्त थे उस सुखके योग्य तू अव कैसे घायल होकर पृथ्वीपर सोरहा है ६ पूर्व्व काल में जो वड़ी भुजावाला उत्तम वीर स्त्रियोंके साथ क्रीड़ा करताथा अव वह युद्धभूमिमें पड़ाहुआ किस प्रकार शृगालों के साथ अनुरक्त है ७ पूर्व्व कालमें जो प्रसन्न चित्त वीर सूत मागध और वन्दीजनों से स्तूयमान हुआ अव वह अधि-

क शब्द करनेवाले भयकारी मांसभक्षी गिद्ध आदिके समूहों से उपासना किया जाताहै ८ हे समर्थ अपने स्वामी पाण्डव बीर वृष्णी और बीर पांचालोंके मध्य में किसकारण से अनाथके समान मारागयाहै ९ हे पापोंसे रहित बेटा प्रकट होता है कि तेरे देखने से तृप्त न होनेवाली मैं अभागिनी यमलोक को जाऊंगी १० हे पुत्र बड़े नेत्र सुन्दर केशान्त मृदुभाषी सुगन्धित और स्वच्छ तेरे मुखको फिर देखूंगी ११ भीमसेनके बल को धिक्कार अर्ज्जुनके धनुष रखने को धिक्कार वृष्णी वीरोंके पराक्रम को धिक्कार और पांचालों के बल पुरुषार्थ को धिक्कार है १२ केकयदेशी चन्देरीदेशी मत्स्यदेशी और सृंजय देशियोंको भी धिक्कार है जो कि तुझ युद्धमें वर्त्तमान शूरवीर की रक्षाकरने को समर्थ नहीं हुये १३ अब शोकसे व्याकुल नेत्र और अभिमन्यु को न देखने से मैं पृथ्वी को शून्य देखतीहूं १४ अब मैं वासुदेवजी के भानजे गाण्डीव धनुषधारी के पुत्र गिराये हुये अति रथी को कैसे देखूंगी १५ हे पुत्र आओ आओ मुझ अभागिनी और पुत्रके देखने से तृप्त न होनेवालीकी बगलमें चढ़कर तू दूधसे भरीहुई छातियोंको शीघ्रता से पानकर १६ हाय वीर नाश पाया हुआ तू मेरे स्वप्नके धनके समान दिखाई दिया है आश्चर्य है कि यह नरलोक बिनाशमान पानीके बुलबुलेके समान चंचलहै १७ इस तेरी तरुणभार्य्या को तेरे दुःखसे पूर्ण बछड़ेसे जुदीहुई गौके समान को मैं किसप्रकारसे रक्खूंगी १८ हे पुत्र बड़े खेदकी बातहै कि तुमने मुझ अत्यन्त पुत्र के दर्शनाभिलाषिणी को फलके उदय होनेके समयत्याग करके विना समय के यात्राकरी है १९ निश्चय करके बलवान् कालकी गति श्रेष्ठलोगों सेभी जाननी कठिनहै जिस युद्धमें केशवजीके नाथ होनेपर अनाथके समान मारागया २० यज्ञ करनेवाले और दानकी प्रकृति रखनेवाले शुद्ध अन्तःकरण और ब्रह्मचर्य्य करने वाले पवित्र तीर्थोंके स्नान करनेवाले २१ ब्राह्मणके और उपकारके ज्ञाता अति दानी गुरुभक्ति परायण और हजारों दक्षिणा देनेवालों की जो गति है उसको तुम पाओ २२ युद्ध करनेवाले मुखके न फेरनेवाले और युद्धमें शत्रुओं को मार कर मारनेवाले शूरोंकी जो गतिहै उसको पाओ २३ हजारों गौ दान करनेवाले और यज्ञमें दान देनेवालों की जो गति है उसको पाओ और प्रिय स्थानों के दान करनेवालों की जो शुभ गति है २४ शरणके योग्य ब्राह्मणोंको रक्षा करने वालोंकी और अपराधों के क्षमा करनेवालों की जो गति है हे पुत्र उसको पा-

ओ २५ तेज प्रशंसा और व्रतोंके धारण करनेवाले मुनि ब्रह्मचर्य्यके द्वारा जिस गति को पाते हैं और एक स्त्री रखनेवाले जिस गति को पाते हैं हे पुत्र तुम उस गति को पाओ २६ राजाओंके सुन्दर आचरणों से जो सनातन गति होती है और पवित्र शरीरवाले चारों आश्रमियोंके पवित्र कर्मों से जो गति होतीहै २७ दीनोंपर दया करनेवालोंके समान भाग करनेवालोंके और परोक्षमें निन्दा करके रहित मनुष्यों की जो गति होतीहै हे पुत्र तुम उसगति को पाओ २८ व्रत करनेवाले धर्म के अभ्यासी गुरुभक्ति से गुरुकी सेवाकरने और आतिथ्य करनेवालोंकी जो सफल गतिहोती है हेपुत्र तुम उसको पाओ २९ संकट और दुःख में जीवन करनेवाले और शोककी अग्निसे जलनेवालों की जो गतिहै उसगतिको पाओ ३० जो इस लोकमें माता पिताकी सेवाको करते हैं उनकी और जो पुरुष अपनीही स्त्री में प्रीति रखनेवाले हैं उनकी जो गति है उसको पाओ ३१ ऋतुकाल में अपनी स्त्री के पास जानेवाले और अन्यकी स्त्रियों से बचनेवाले बुद्धिमानों की जो गतिहै हे पुत्र उनकी गतिको पाओ ३२ जो ईर्षासे रहित मनुष्य सब जीवधारियोंको क्रोधसे रहित प्रीतिके साथ देखते हैं और मर्मों को पीड़ा न देनेवालोंकी जो गतियां हैं हे पुत्र उनकोपाओ ३३ मद्यमांस अहंकार छल और मिथ्यासे रहित होनेवाले अथवा दूसरेके दुःखों के दूरकरने वाले मनुष्यों की जो गति है हेपुत्र तुम उसकोपाओ ३४ लज्जा युक्त सर्व शास्त्रज्ञ परमार्थसे तृप्त और जितेन्द्रिय साधु पुरुष जिसगतिकोपाते हैं हेपुत्र तुम उसगति को पाओ ३५ तब द्रौपदी उत्तरा समेत उस सुभद्राको इसरीति से विलाप करती और दुखी देखकर उसके पासआई ३६ हे राजा वह सब अत्यन्त दुखीचित्त बारंबार रोदनोंको करके उन्मत्तके समान अचेत होकर पृथ्वी पर गिरपड़ीं ३७ फिर विश्वसित वचनोंके द्वारा पुण्डरीकाक्ष श्रीकृष्णजी उस महादुखी सुभद्राको जल से सिंचनकर उन २ प्रिय वचनोंको कहके ३८ बहुतसा ढाढस बंधाकर उसअचेतरूपा मर्मस्थलोंसे भिदीहुई अत्यन्त कंपायमान बहिनसे यह वचनबोले कि ३९ हेसुभद्रा पुत्रका मतशोचकर हेद्रौपदी उत्तराको विश्वासकरा क्षत्रियों में श्रेष्ठअभिमन्युने परमगतिको पायाहै ४० हे सुन्दरमुखी जो अन्यपुरुषभी हमारे वंशमें हैं वह सबभी उस यशस्वी अभिमन्युकी गतिपाओ ४१ हम और हमारे सब मित्रादिक उसकर्मको करें जिसकर्मको कि तेरे अकेले महारथी पुत्रने किया ४२

शत्रुओंके विजय करनेवाले महाबाहु श्रीकृष्णजी अपनी बहिन सुभद्रा द्रौपदी और उत्तराको इस प्रकारसे विश्वासित करके फिर अर्जुनकेहीपासगये ४३ हे राजा इसके पीछे श्रीकृष्णजी राजाओंको बन्धु जनोंको और अर्जुन को आज्ञा देकर अन्तःपुर में गये और वे सब लोगभी अपने २ डेरों को गये ४४॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८॥

उनासीवां अध्याय॥

संजय बोले कि इसके पीछे समर्थ कमललोचन श्रीकृष्णजीने अर्जुन के अति उत्तम महल में प्रवेश करके आचमनादिक कर शुभ लक्षण और समान भूमिपर १ वैडूर्य्य के समान कुशाओंसे शुभशय्याको बिछाया उसके पीछे माला धान आदिकबड़े मंगलीक सुगन्धादिकों से २ उस शय्या को अलंकृत करके उत्तम अस्त्रोंसे घेर दिया इसके पीछे अर्जुन के स्नान और आचमन करने पर अच्छे शिक्षितविनीति परिचारकोंने ३ समीपही देखतेहुये शिवजी के रात्रि संबंधी बलिप्रदान को तैयारकिया इसके पीछे प्रसन्न चित्त अर्जुनने चन्दन और पुष्पमाला आदि से माधवजी को ४ अलंकृत करके उस रात्रिके बलिदान को उनके अर्पण किया फिर मन्द मुसकान करते हुये गोबिन्दजी अर्जुनसे बोले ५ हे अर्जुन तेरा कल्याणहोय तुम अपनी वृद्धिके निमित्त शयनकरो मैं जाताहूं इसके पीछे श्रीमान् कृष्णजी द्वारपाल और अस्त्र उठानेवाले रक्षक मनुष्योंको नियतकरके ६ अपने डेरेमेंगये उनके पीछे दारुक सारथीथा उस समय बहुत कर्मों में विचार करते हुये उज्ज्वल शयन शय्या पर शयन करनेवाले हुये ७ भगवान् श्रीकृष्णजीने शोकदुःखों को दूर करनेवाला तेज प्रतापको बढ़ाने वालीं सब विधियां अर्जुन के निमित्त करीं ८ सबके महेश्वर जगदात्मा बड़े यशस्वी अर्जुन का प्रिय करने वाले कल्याण चाहनेवाले विष्णुजीने योगमें नियतहोकर उस बिधिको किया ९ उस रात्रिको पांडवों के डेरोंमें कोई भी न सोया हे राजा सब मनुष्यों की नींदेंजातीरहीं १० पुत्रके शोकसे दुखी महात्मा गांडीवधनुषधारीके हाथसे एकाएक सिन्धकेराजाका मारना प्रतिज्ञाकियागया ११ शत्रुओंके वीरोंका मारने वाला महाबाहु इन्द्रका पुत्र अर्जुन किस रीतिसे उस अपनी प्रति-

ज्ञाको सफल करेगा इस विषय में उन्होने बड़ी चिन्ताकरी १२ महात्मा पांडवने यह कठिन कर्म निश्चय किया और वह राजा बड़ा पराक्रमीहै ईश्वरकी कृपासे वह अर्जुन अपनी उस प्रतिज्ञाको पूराकरे १३ पुत्र के शोकसे महादुखी अर्जुन ने बड़ी प्रतिज्ञाकी और पराक्रमी भाइयों समेत बहुतसी सेनाओंको धृतराष्ट्रके पुत्रनेउसके सम्मुखकिया १४ वह अर्जुन युद्धमें सिन्धके राजाको मारकर फि मिलो १५ अर्जुनशत्रुओंके समूहोंके विजय करके व्रतको पूराकरताहुआ कल्ह सिन्धकेराजा को न मारकर निश्चय अग्नि में प्रवेश करेगा १६ यह अर्ज्जुन अपनी प्रतिज्ञा को मिथ्या करने को समर्थ नहीं है अर्ज्जुनके मरनेपर धर्म्मका पुत्र राजायुधिष्ठिर कैसा होजायगा १७ क्योंकि उस धर्म्मपुत्र पाण्डवने उसी अर्ज्जुन में सम्पूर्ण विजय नियतकरी है जो हमारे कर्म्म है दान किया है और जो हवन किया है १८ उस सबके फलसे अर्ज्जुन शत्रुको विजय करो हे समर्थ राजा धृतराष्ट्र इस प्रकारसे उन विजयके आशीर्वाद देनेवाले शूरवीरोंके कहते हुये १९ वड़े दुःखों से रात्रि व्यतीतहुई फिर उस रात्रिके मध्यमें जागे हुये श्रीकृष्णजी २० अर्जुनकी प्रतिज्ञा को स्मरण करके बोले कि उस पीड़ामान अर्जुनने जिसका कि पुत्र मारागया यह प्रतिज्ञाकरी है २१ कि कल्ह जयद्रथ को मारूंगा हे दारुक उस वात को सुनकर दुर्योधन अपने मन्त्रियों के साथ मिलकर सलाह करेगा २२ कि जिससे अर्ज्जुन युद्धमें जयद्रथ को न मारसके और वह उसकी सव अक्षौहिणी सेना जयद्रथकी रक्षाकरेंगी २३ और द्रोणाचार्य्य अपने पुत्र समेत सव अस्त्रोंके चलानेमें अत्यन्त कुशल हैं और अकेला इन्द्रभी दैत्य और दानवों के अभिमानोंका दूर करनेवाला है २४ वह भी युद्धमें द्रोणाचार्य्य जी से रक्षित मनुष्यके मारने को साहस नही करसक्ता अव मैं प्रातःकाल वही करूंगा जिस प्रकार से कि कुन्तीका पुत्र अर्ज्जुन २५ सूर्य्यास्त होने से पूर्व्वही जयद्रथ को मारेगा क्योंकि कुन्तीनन्दन अर्जुनसे अधिक मेरा कोई प्यारा नहीं है जैसा वह मुझको प्याराहै वैसा भाई वन्धु स्त्री नातेदार आदिभी मुझको नहीं प्यारे हैं हे दारुक मैं एक मुहूर्त्तभी अर्जुनसे रहित होकर इस लोकके २६। २७ देखने को समर्थ नहींहूं और वह वैसा नहीं होगा मैं अकस्मात् उन सबको घोड़े हाथियों समेत विजय करके कर्ण और दुर्योधन समेत सबको अर्जुनके निमित्त मारूंगा प्रातःकाल तीनोंलोक मेरे पराक्रम को देखो २८। २९ हे दारुक युद्ध

अर्जुनके निमित्त मुझ पराक्रम करनेवालेका बल देखो हे दारुक प्रातःकाल ह-
ज़ारों राजा और राजकुमारों को ३० घोड़े हाथी और रथों समेत युद्धभूमिमें से
भगाऊंगा प्रातःकाल उन राजाओंकी सेनाओं को चक्रसे मथाहुआ देखेगा ३१
युद्धमें अर्जुनके निमित्त मुझ क्रोधयुक्त से गिराईहुई सेना को देखेगा प्रातःका-
ल देवता और गन्धर्वों समेत पिशाच सर्प और राक्षस ३२ और सब लोक मुझ
को अर्जुनका मित्र जानेंगे जो अर्जुन से शत्रुता करताहै वह मुझी से शत्रुता
करताहै और जो उसका साथी है वह मेरा साथी है ३३ अर्थात् श्रीकृष्णजी ना-
रायण हैं और अर्जुन नरहैं इस हेतुसे यह दोनों परमात्मा और जीवात्मा रूप
से शरीरमें साथही रहते हैं ३४ उसको बुद्धिसे संकल्प करके अर्जुन मेरा आधा
शरीर है तुम इस रात्रिके व्यतीत होनेपर मेरे उत्तम रथ को शास्त्र के अनुसार
अलंकृत करके हांकते हुये सावधानी से मेरे साथ चलो कौमोदकी नाम गदा
दिव्य शक्ति चक्र धनुष बाण ३५ और सब सामग्री को रथपर रखकर और रथके
बैठने के स्थानपर मेरी ध्वजाके स्थान को बिचार करके ३६ युद्धमें रथको शोभा
देनेवाले वीर गरुड़के स्थान को बिचार करके सूर्य्याग्निके समान प्रकाशित सु-
वर्ण जालों से युक्त उस छत्र को ३७ जिसके जाल बिश्वकर्म्मा के बनाये हुये
दिव्य हैं और अलंकृत बलाहक मेघ पुष्प शैव्य और सुग्रीव नाम घोड़ोंमें श्रेष्ठ
जुड़ेहुये घोड़ों को अपने स्वाधीन करके सावधानी से कवच धारण करके नि-
यत होजाओ हे दारुक वृषभके शब्दके समान पांचजन्यशंखके भयकारी शब्द
को ३८।३९ सुनकर बड़ी शीघ्रतासे मेरे पास आओ हे दारुक मैं एकही दिनमें
फूफी के पुत्र भाई अर्जुनके क्रोध और सब दुःखों को दूर करूंगा जैसे कि अर्जु-
न युद्ध में ४०। ४१ धृतराष्ट्र के पुत्रों के देखते हुये जयद्रथ को मारेगा अथवा
अर्जुन जिस २ के मारने में उपाय करेगा हे सारथी मैं कहताहूं कि वहां २ उस
की विजय होगी ४२ दारुक बोला कि उसकी विजयतो अवश्यहै पराजय कैसे
होसक्ती है हे पुरुषोत्तम जिसकी रथवानी को आपने पायाहै ४३ मैं इस रात्रिके
व्यतीत होनेपर अर्ज्जुनकी विजयके निमित्त यह सब बातें इसी प्रकार करूंगा
जैसी कि आप मुझको आज्ञा देरहे हैं ४४॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९॥

अस्सीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि ध्यान और बुद्धिसे परे पराक्रमी कुन्तीका पुत्र अर्ज्जुन उस सलाह को स्मरण करता और अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा करता हुआ अचेत होगया १ फिर बड़े तेजस्वी गरुड़ध्वज ने उस शोकसे दुःखी ध्यान करते वानरध्वज अर्ज्जुन को स्वप्न में दर्शन दिया २ धर्म्मात्मा अर्ज्जुन सदैव भक्ति और प्रेम के साथ सब दिशा में श्रीकृष्णजी की प्रतिष्ठा को बन्द नहीं करता था ३ उस ने उठकर उन गोविन्दजी के निमित्त आसन दिया तब अर्ज्जुनने आसन में अपनी बुद्धिमानी नहीं की ४ इसके पीछे अर्ज्जुन के निश्चय को जानते बड़े तेजस्वी विराजमान श्रीकृष्णजी उस नियत हुये अर्ज्जुन से यह वचन बोले ५ हे अर्जुन अपने चित्तको व्याकुल मतकरो निश्चयकरके काल बड़ी कठिनता से विजय होनेवाला है वह काल सब जीवमात्र को परमेश्वर मे लय करताहै ६ हे द्विपादोंमें श्रेठ तेरी व्याकुलता किस हेतुसे है उसको कहौ हे ज्ञानियोमें श्रेष्ठ शोक न करना चाहिये शोकही नाशकारक कर्म है ७ जो कार्य करने के योग्य होय उसको कर्म से करो कर्मसे पृथक् जो मनुष्यका शोकहै हे अर्जुन वही शत्रुहै ८ शोच करताहुआ मनुष्य अपने शत्रुओंको प्रसन्न करता है और बांधवोको दुःखदेताहै उससे मनुष्य नाशको पाताहै इसहेतुसे तुम शोच करने के योग्य नहीं हो ९ वासुदेवजी के इसप्रकार के वचनोंको सुनकर विद्यावान् और अजेय अर्जुन इस सार्थक वचनको बोला १० हे केशवजी मैंने जयद्रथ के मारने में बड़ी प्रतिज्ञाकरी कि प्रातःकाल इसदुष्टात्मा पुत्रघाती जयद्रथ को मारूंगा ११ हे अविनाशी निश्चयकरके सब महारथियों से रक्षित राजा सिन्ध मेरी प्रतिज्ञाके मिथ्या करनेके अर्थ धृतराष्ट्र के पुत्रोंसे यह पीछेकीओर करनेके योग्यहै १२ हे श्रीकृष्ण माधवजी दुःखकी बातहै कि वहां वह मरनेसे शेष बची हुई ग्यारह अक्षौहिणी सेना बड़ी कठिनतासे विजय होनेवाली है १३ हे माधवजी युद्धमें उन सेनाओंसे और सब महारथियोंसे घिराहुआ वह दुष्टात्मा जयद्रथ कैसे देखने को संभव है १४ हे केशवजी जो मेरी प्रतिज्ञा पूरी न होगी तो प्रतिज्ञाके निष्फल होनेपर मुझसा क्षत्रिय कैसे जीवतारहैगा १५ हे वीर मुझको दुःखके दूरकरनेके उपायकी बड़ी अभिलाषाहै और सूर्य्य बड़ी शीघ्रतासे आता

है इसहेतुसे मैं यह कहताहूं १६ तदनन्तर गरुड़ध्वज श्रीकृष्णजी अर्जुन के उस शोक स्थानको सुनकर अपने आचमनादिकको करके पूर्वाभिमुख नियत हुये १७ जयद्रथके मारने में कर्म करनेवाले बड़े तेजस्वी श्रीकृष्णजी पांडवोंकी वृद्धिके अर्थ यह बचन बोले १८ हे अर्जुन पाशुपत नाम सनातन परम अस्त्र है श्री महेश्वर देवताने जिसअस्त्रके द्वारा युद्धमें सब दैत्यों को मारा १९ जो अब वह अस्त्र तुझको यादहै तो प्रातःकाल अवश्य जयद्रथको मारेगा और विस्मरण होगयाहै तो प्रासकर और मनसे शिवजीको ध्यानकर २० हे अर्जुन उस देवताको मनसे ध्यानकरके प्रसन्नहो फिर तुम उनके भक्तहो उसीदेवताकी कृपासे उस बड़े अस्त्रको पावोगे २१ इसके अनन्तर अर्जुनने श्रीकृष्णजी के बचनको सुनकर आचमन पूर्वक सावधान होकर पृथ्वीपर बिराजमान श्रीशंकरजी को मनसे ध्यानकिया २२ फिर शुभ लक्षण ब्राह्ममुहूर्त्तके बर्त्तमान होनेपर अर्जुनने केशवजी समेत अपनेको आकाशमें देखा २३ हिमालयके पवित्रभाग प्रकाशों से संयुक्त सिद्ध चारणोंसे सेवित मणिमन्त पर्व्वतको चला २४ बायुके वेगके समान चलनेवाला अर्जुन केशवजी के साथ आकाशको गया और दहिनी भुजापर वह अर्जुन समर्थ केशवजीसे पकड़ाहुआथा २५ और अपूर्व्व दर्शनीय बहुत से चमत्कारोंको देखतागया उस धर्मात्माने उत्तरदिशामें श्वेत पर्व्वत को देखा २६ कुबेरजी के विहारमें कमलोंसे शोभायमान कमलिनीको और नदियों में श्रेष्ठ अत्यन्त जलकी रखनेवाली उस श्रीगंगाजीको भी देखता चला जो कि सदैव फूल फल रखनेवाले वृक्षोंसे कीर्ण युक्त स्फटिक पाषाणोंसे युक्त सिंह व्याघ्रोंसे व्याप्त नानाप्रकारके मृगोंसे व्याकुल २७।२८ पवित्र आश्रमों समेत सुन्दर चित्तरोचक पक्षियोंका आश्रय स्थानथा और मंदराचलके स्थानोंको जोकि किन्नरोंके उद्गीतोंसे शब्दायमान स्वर्णमयी और रजतमयी शिखरों से युक्त अपूर्व नानाप्रकारकी औषधियोंसे अत्यन्त प्रकाशित और उसीप्रकार फूलेहुये मन्दार वृक्षोंसे भी महाशोभायमानथी २९ । ३० और स्वच्छस्निग्ध प्रकाशके समूहरूप कालपर्व्वत ब्रह्म तुंगआदि बहुत सी नदी और देशोंकोभी देखा ३१ और तुंग शतशृङ्गपर्वत समेत शर्याति के वनको और पुण्यकारी अश्वशिरनाम पवित्र स्थान और अथर्वण ऋषिके आश्रमकोदेखा ३२ और वृषदेश और अप्सराओं के आश्रयस्थान किन्नरोंसे शोभित पर्वतोंके इन्द्र महामन्दरकोदेखा ३३ उस पर्व-

तपर श्रीकृष्णजीके साथ चलतेहुये अर्जुनने उस पृथ्वीको भी देखा जो कि शुभ निर्झरों से शोभित सुवर्ण धातुमयी चन्द्रमाकी किरणोंके समान प्रकाशित अंगवाली मालिनियोंसे व्याप्तथी और वहुत से आकारवाले अपूर्व्वरूप अनेक खानोंसे युक्त समुद्रोंको देखा ३४।३५ श्रीकृष्णजीके साथमें आश्चर्य युक्त अर्जुन आकाश स्वर्ग और पृथ्वीपर चलता हुआ छोड़े हुये बाणके समान आकाश को गया ३६ तब अर्ज्जुनने ग्रह नक्षत्र चन्द्रमा सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशमान अतिज्वलितरूप पर्व्वत को देखा ३७ फिर पर्व्वत के शिखरपर नियत उस ज्योतिरूप पर्व्वत को पाकर सदैव तप करनेवाले उन महात्मा वृषभध्वज शिवजीको देखा ३८ जो कि अपने तेजसे हज़ार सूर्य्यके समान प्रकाशित गौर वर्ण शूल जटाधारी केवल मृगचर्म के धारण करनेवाले ३९ हजारों नेत्रों से अद्भुत शरीर बड़े तेजस्वी देवता प्रकाशित जीवोंमेंव्याप्त श्रीपार्वतीजी के साथ विराजमानथे ४० गीतवाद्योंके शब्द और हास्य नृत्य करती हुई अप्सराओंके घूमने के उत्तम शब्दों से मनोहर पवित्र सुगन्धियों से शोभायमान ४१ ब्रह्मवादी ऋषियों के दिव्य स्तोत्रों से स्तूयमान होकर सब जीवधारियों के रक्षक धनुष को धारण किये अविनाशी वर्त्तमान थे ४२ फिर सनातन ब्रह्मकी स्तुति करते हुये अर्ज्जुन समेत धर्म्मात्मा वासुदेवजीने उन शिवजी को देखकर शिर से पृथ्वीपर साष्टांग प्रणाम किया ४३ जो कि सृष्टिके आदि विश्वकर्मा अजन्मा अविनाशी चित्तवृत्तिकी निवृत्ति के हेतु उत्पत्तिस्थान ईशानरूप आकाशादि पंचभूतोंके और तेजोंके निवास स्थान ४४ जलकी धाराओंके उत्पन्न करनेवाले महत्तत्त्व और प्रकृति से परे देवता दानव यक्ष और मनुष्यों के साधनरूप ४५ योगियों के आश्रयस्थान अपने स्वरूप में मग्न ब्रह्मज्ञानियों के आवागवन के स्थान जड़ चैतन्य जीवों के स्वामी प्रलयकर्त्ता ४६ काल के समान क्रोध रखने वाले होकर महात्मा हैं और उन्हीं से इन्द्र और सूर्य्यके गुणोंका उदयहै तब श्रीकृष्णजीने मन वाणी और बुद्धिके कर्मों से उन शिवजी को प्रणाम किया ४७ सूक्ष्म अध्यात्म पदके चाहनेवाले ज्ञानीलोग जिसको प्राप्त होते हैं उस अजन्मा कारणात्मा शिवजी की शरण में प्राप्तहुये ४८ अर्ज्जुनने भी उस देवता को सब जीवधारियोंका आदि तीनोंलोकोंका भी उत्पत्ति स्थान जानकर वारम्बार प्रणामकिया ४९ इसके पीछे अत्यन्त प्रसन्नचित्त और हँसतेहुये शिवजी उन आये

हुये दोनों नर नारायणजी से बोले ५० हे नरोत्तमो तुम्हारा आना सफल होय तुम आनन्द से उठो हे वीरो तुम्हारे चित्तकी क्या अभिलापा है शीघ्र कहौ ५१ तुम जिस प्रयोजन से मेरे पास आयेहो उसको कहौ मैं उसको करूंगा तुम अपने कल्याण को मांगो मैं सब तुमको दूंगा इसके पीछे बड़े बुद्धिमान् महात्मा प्रशंसनीय वासुदेवजी और अर्ज्जुनने उनके उस बचनको सुनकर और उठकर भक्तिपूर्व्वक हाथ जोड़कर शिवजी की दिव्य स्तोत्रों से स्तुति करी ५२। ५४ अर्ज्जुन और श्रीकृष्णजी बोले कि ॥

स्तुति ॥

नमोभवायशर्वायरुद्रायवरदायच । पशूनांपतयेनित्यमुग्रायचकपर्द्दिने ५५ महादेवायभीमायत्र्यम्बकायचशान्तये । ईशानायमखघ्नायनमोस्त्वन्धकघातिने ५६ कुमारगुरवेतुभ्यंनीलग्रीवायवेधसे । पिनाकिनेहविष्यायसत्यायविभवेसदा ५७ विलोहितायधूम्रायव्याधायानपराजिते । नित्यंनीलशिखण्डायशूलिने दिव्यचक्षुषे ५८ होत्रेहोत्रेत्रिनेत्रायव्याधायवसुरेतसे । अचिन्त्यायाम्बिकाभर्त्रे सर्वदेवस्तुतायच ५९ वृषध्वजायमुंडायजटिनेब्रह्मचारिणे । तप्यमानायसलिलेब्रह्मण्यायाजितायच ६० विश्वात्मनेविश्वसृजेविश्वमावृत्यतिष्ठते । नमोनमस्तेसेव्याय भूतानांप्रभवेसदा ६१ ब्रह्मवक्रायसर्वायशंकरायशिवायच । नमोस्तुवाचांपतयेप्रजानांपतयेनमः ६२ नमोविश्वस्यपतयेमहतांपतयेनमः । नमःसहस्रशिरसेसहस्रभुजमन्यवे ६३ सहस्रनेत्रपादायनमोऽसंख्येयकर्मणे । नमोहिरण्यवर्णाय हिरण्यकवचायच । भक्तानुकंपिनेनित्यं सिध्यतांनोवरःप्रभो ६४ ॥

इति ॥

संजय बोले कि अर्जुन समेत वासुदेवजीने अस्त्रमिलनेके निमित्त उन महादेवजीको इसप्रकारसे स्तुतिकरके प्रसन्नकिया ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वण्यशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

इक्यासीवां अध्याय ॥

इसके पीछे प्रसन्नचित्त प्रफुल्लित नेत्र हाथजोड़े हुये अर्जुन ने उन तेजोंके भंडार शिवजीके सम्पूर्ण रूपको देखा १ और उस अच्छी रीतिसे दृष्टिगोचरकी हुई अपनी भेंटको जो कि रात्रिके समय सदैव अर्पण कीजातीथी उसको शिव

जी के पास बर्त्तमान देखा अर्थात् जिसको कि बासुदेवजीके अर्थ निवेदन किया था २ इसके पीछे पांडव अर्जुन चित्तसे श्रीकृष्णजी को और शिवजी को पूज कर शंकरजीसे बोले कि कृपासिंधु भक्तवत्सल मैं दिव्य अस्त्रको चाहताहूं फिर वरके निमित्त अर्जुनके उस बचनको जानकर मन्दमुसकान करते देवता शिव जी बासुदेवजी और अर्जुनसे बोले ३।४ कि हे नरोत्तम पुरुषो तुम्हारा आना श्रेष्ठ हुआ तुम्हारे चित्तका मनोरथ विदितहुआ तुम दोनों जिस अभिलाषाके लिये यहां आयेहो उस मनोरथको मैं तुम्हारे अर्थ देताहूं हे शत्रुओंके मारनेवालो समीपही अमृतसे भराहुआ दिव्य सरोवर है उसमें मैंने पूर्व्वकालके समय से वह दिव्यधनुष और बाण रक्खाहै ५ । ६ जिसके द्वारा मैंने युद्धमें देवताओंके शत्रु सब दैत्योंको माराथा हे श्रीकृष्ण और अर्जुन तुम दोनों उस उत्तम धनुष और बाणको लाओ ७ यह सुनकर उनके वचनको अंगीकार करके वह दोनों शिव जी के सब पार्षदों समेत उस दिव्य सरोवरको चले जो कि सैकड़ों दिव्य ऐश्वर्य्योंसे भराहुआ पवित्र दिव्य अभिलाषाओं का देनेवाला शिवजीका बतलाया हुआथा वह दोनों नर नारायण ऋषि निर्भय उस सरोवरपर गये ८ । ९ तदनन्तर उन दोनों अर्जुन और श्रीकृष्णजी ने सूर्य्यमंडलके समान उस सरोवरपर जाकर जलके भीतर भयकारी सर्पको देखा १० और हजार शिर रखनेवाले अग्निके समान प्रकाशमान बड़ीज्वालाओं के उगलनेवाले एकदूसरे उत्तम सर्प को देखा ११ इसके पीछे श्रीकृष्णजी और अर्जुन आचमनादिक करके शिवजी को नमस्कारकर हाथजोड़ करके उनदोनों सर्पोंके सम्मुख खड़ेहुये वेदोंके जानने वाले वह दोनों अर्जुन और श्रीकृष्णजी सर्वात्म भावसे शिवजी को प्राप्तहोकर उस अतुल्य प्रभाववाले ईश्वर को प्रणाम करके ब्रह्मरूप शतरुद्री का पाठकरने लगे१२।१३ फिर वहदोनों सर्प रुद्रजीके माहात्म्यसे सर्परूपको छोड़कर धनुषबाण रूपहोगये वही शत्रुओंका मारनेवाला जोड़ा प्राप्तहुआ १४ उन प्रसन्नचित्त दोनों महात्माओं ने उस अच्छे प्रकाशमान धनुष बाण को उठालिया और वहां से लाकर महात्मा शिवजी को दिया १५ इसके पीछे शिवजी के बगल से उनका दूसरारूप ब्रह्मचारी और पिंगलवर्ण नेत्र तपका स्थान पराक्रमी आरक्त नीलारंग रखनेवाला प्रकटहुआ १६ फिर वह सावधान उस उत्तम धनुषको लेकर खड़ाहुआ और बाण समेत उस उत्तम धनुषको बुद्धिके अनुसार खैंचा १७ नि-

ससन्देह पराक्रमी अर्जुनने उसकी मौर्वी अर्थात् प्रत्यंचा और मूठके स्थानको देख कर और शिवजीके कहेहुये मन्त्रको सुनकर अस्त्रको लेलिया फिर उस बड़े पराक्रमी प्रभुने उसबाणको सरोवरहीमें छोड़ा अर्थात् उसबीरने उस धनुषको फिर सरोवरहीमें नियतकिया१८।१६ तब उसकेपीछे स्मरण करनेवाले अर्जुनने शिव जीको प्रसन्न जानकर बनमें दियेहुयेबरको और शंकरजीके दर्शनको २० अपने मनसे यादकिया और कहा कि वह अस्त्र मुझको प्राप्तहोय तब प्रसन्न मन होकर शिवजीने उसकी उस अभिलाषाको जानकर २१ उस श्रेष्ठ और भयकारी उसकी प्रतिज्ञाके पूरे करनेवाले पाशुपत अस्त्रको दिया उसके पीछे ईश्वरसे उस पाशुपत नाम दिब्यअस्त्रको पाकर २२ रोम २ से प्रसन्नचित्त निर्भय अर्जुनने अपने कार्य को कियाहुआ माना और अत्यन्त प्रसन्नमन दोनोंने शिरोंसे महेश्वर शिवजी को दंडवत्की २३ उस समय शिवजी से आज्ञा लेकर बीर अर्जुन और श्रीकृष्णजी बड़े आनन्दसे युक्तहोकर अपने डेरेमें पहुंचे २४ असुरसंहारे शिवजी से ऐसे आज्ञा लेनेवाले हुये जैसे कि पूर्व्व समय में जंभके मारने के अभिलाषी प्रसन्नचित्त इन्द्र और विष्णुहुये थे २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥

बयासीवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा इस प्रकार से उन दोनों श्रीकृष्ण और दारुक सारथी के वार्त्तालाप करते हुये वह रात्रि व्यतीत हुई और राजा युधिष्ठिर भी जगे १ उस समय पाणिस्वनिक, (अर्थात् हाथ की चुटकी वजानेवाले) मागध, मधुपर्क्किक, वैतालिक और सूत इन सब लोगोंने उस पुरुषोत्तम युधिष्ठिर की प्रशंसा करी २ नर्त्तक लोग नृत्य करनेलगे और चित्तरोचक स्वरवाले गायकोंने यह गान किया कि आपका वंश तुम्हारे अभीष्टोंको प्राप्तकरे ३ मृदंग झर्झर भेरी पणव आनक गोमुख आडंवर शंख और बड़े शब्दवाली दुन्दुभी ४ इनके सिवाय अन्य २ बाजोंकोभी उन सबलोगों ने बजाया जो कि अत्यन्त प्रसन्न सर्व गुणसंपन्न अपने काम में कुशल बड़े २ प्रवीणोंके शिक्षित शिष्यथे ५ उन बादल के शब्दों के समान बड़े भारी शब्दों से स्वर्गको स्पर्शकरके उन सोये हुये राजशिरोमणि युधिष्ठिरको जगाया ६ वह बड़ों के योग्य उत्तम शयन पर से

सोकर जागाहुआ राजा शय्यासे उठकर आवश्यक कार्य्यके निमित्त स्नानालयको गया ७ फिर वहां स्नान करने के पीछे श्वेत वस्त्रों की पोशाकों से अलंकृत स्नान करानेवाले एकसौ आठ तरुण पुरुष सुनहरी जल से पूर्ण कलशों समेत आन कर सम्मुख नियत हुये ८ तब वह लघु अम्बरों को धारण करके शुभ आसन पर विराजमान हुआ और चन्दनसे युक्त अभिमंत्रित जलों से राजाने स्नान किया ९ फिर पराक्रमी सुशिक्षित मनुष्यों के द्वारा सर्वौषधी के उवटनों से उवटन कियेहुये सुगन्धियों से युक्त जलसे स्नान करके अग्निकी दी हुई राजहंस के समान वर्णवाली पगड़ी को मस्तकके जलके सुखाने के लिये शिरपर बांधा १०।११ वह महाबाहु श्वेत चन्दनसे शरीरको लेपन करके मालाधारी और पवित्र वस्त्रोंका धारण करनेवाला हाथ जोड़कर पूर्व्वाभिमुख नियत हुआ १२ सत्पुरुषोंके मार्गमें नियत युधिष्ठिरने जयकरने के योग्य मंत्रको जपा फिर नम्रता पूर्व्वक वह युधिष्ठिर ज्वलित अग्नि की शाला में पहुंचा १३ वहां पवित्रासन समेत समिध आहुती और मंत्रोंसे संयुक्त अग्निको पूजकर उस घर से निकला १४ फिर उस पुरुषोत्तम राजाने दूसरे महलमें जाकर वेदज्ञ और बड़े श्रेष्ठ वृद्ध ब्राह्मणोंका दर्शन किया १५ उन जितेन्द्रिय वेद व्रतमें स्नान कियेहुये अनृतनाम स्नानसे स्नान कियेहुये हजारों शिष्येंसमेत सूर्य्यके उपासक अन्य ब्राह्मणोंकोभी देखा १६ फिर उस महाबाहुने उन सब ब्राह्मणोंको अक्षत पुष्पोंसे स्वस्तिवाचन कराके प्रत्येक ब्राह्मणको सहत घृत फल और उत्तम मंगली अनेक वस्तुओंसे युक्त १७ एक २ निष्क सुवर्ण का दानदिया फिर अलंकृत सौ घोड़े अच्छे २ वस्त्र और यथाभिलाष दक्षिणादीं १८ इसी प्रकार उस पांडुनन्दन ने दूधकी देनेवाली सुवर्ण शृंगी चांदीके खुर रखनेवाली सवत्सा कपिला गौओंको दान करके परिक्रमाकरी १९ स्वस्तिक अर्थात् शुभ वस्तु संपुट सुवर्णके अर्घपात्र माला जल पूरित घट और प्रकाशितअग्नि २० अक्षत पूर्णपात्र मंगलीरूप गोरोचन अच्छी अलंकृत शुभकन्या दही, घृत, सहत, जल २१ मंगली रूप पक्षी और अन्य २ भी जो मंगलीवस्तुहैं उनसबको युधिष्ठिर देखकर और स्पर्शकरके बाहरके द्वारपर गया २२ उस के पीछे उस द्वारपर महाबाहु युधिष्ठिर के नियत होने पर सेवक लोगोंने विश्वकर्माजीके बनाये हुये उस दिव्य उत्तम आसनको प्राप्त किया जो कि स्वर्णमय सब ओर से कल्याण रूप मुक्ता और वैडूर्य्य मणियोंसे

शोभायमान २३ वहुमूल्य वस्त्रादिकोंसे अलंकृत और रत्नोंसे जटित था २४ उस आसनपर विराजमान हुये युधिष्ठिर के उन वृद्धोंके योग्य वड़े उत्तम आभूषणों को सेवक लोगोंने लाकर उपस्थित किया २५ हे महाराज माला मणि मुक्ताओं के भूषण और पोशाकधारी महात्मा युधिष्ठिरका रूप शत्रुओंके शोकोंका बढ़ानेवाला हुआ २६ सूर्य्य की किरणों के समान प्रकाशित शोभायमान सुनहरी दंडवाले चलायमान चामरों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बिजलियोंसे बादल शोभायमान होता है २७ फिर वह कौरवनन्दन सूतलोगों से स्तूयमान वन्दीजनों से वंद्यमान गन्धर्व्वोंसे गीयमान होता हुआ २८ फिर एक मुहूर्त्तमें ही वन्दियोंके वड़ेशब्दहुये रथोंकी नेमियोंके और घोड़ोंके खुरोंके शब्द प्रकटहुये२६ हाथियोंके घंटों के शब्द शंखों की ध्वनि और मनुष्यों के चरणों के आघात से पृथ्वी कंपायमानके समान हुई ३० इसके पीछे कुण्डलधारी खड्गयुक्त कवचधारी तरुणपुरुष द्वारपालक ने द्वारके भीतर जाकर जंघाओं से पृथ्वीपर नियतहोकर प्रणाम के योग्य राजा को शिरसे दंडवत् और प्रणामकरके धर्मपुत्र ३१ । ३२ महात्मा युधिष्ठिरसे समीप आयेहुये श्रीकृष्णजीके आनेका समाचार निवेदन किया वह पुरुषोत्तम आगमनके धन्यबादके साथ श्रीकृष्णजीसे बोला ३३ और कहनेलगा कि परम पूजित अर्घ आसनादिक इन श्रीकृष्णजी को दो इसके पीछे धर्मराज युधिष्ठिरने श्रीकृष्णजी को बैठाकर और आपभी उत्तम आसन पर बैठकर ३४ उनका बिधिके अनुसार पूजनकिया ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥

तिरासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके पीछे अत्यन्त प्रसन्न कुन्तीनन्दन राजा युधिष्ठिर जनार्द्दनजी को प्रसन्न करके उन देवकीनन्दनजी से बोले १ हे मधुसूदनजी क्या आपकी रात्रि सुख पूर्व्वक व्यतीतहुई और हे अविनाशी आपके सब ज्ञान निर्म्मल हैं २ फिर बासुदेवजीने भी युधिष्ठिर को उनके योग्य सत्कार किया इसके अनन्तर सूतने आयेहुये सेवक नौकर आदिके आनेका निवेदन किया ३ फिर राजाकी आज्ञासे उस सूतने उन मनुष्यों को सभामें बुलाकर बैठाया विराट, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, सात्यकी ४ धृष्टकेतु, चन्देरीका राजा महारथी द्रुपद, शिख-

एडी, नकुल, सहदेव, चेकितान, केकय, युयुत्सु, पांचालदेशी, उत्तमौजस, युधामन्यु, सुवाहु और द्रौपदी के सव पुत्रों को राजसभा में लाकर वैठाया ५ यह सव लोग और अन्य क्षत्रिय उन क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ महात्मा युधिष्ठिरके पास आये और सव शुभ आसनोंपर वैठगये ६ । ७ महावली महात्मा वड़े तेजस्वी दोनों वीर श्रीकृष्ण और युयुधान एकआसनपर वैठे ८ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर उन महात्माओं के समक्षमें मधुदैत्यसंहारी कमल लोचन श्रीकृष्णजीसे वड़ी नम्रता और मधुरवाणीसे यह वचन वोले कि जिस प्रकारसे देवता लोग इन्द्रकी रक्षामें हैं उसी प्रकार हम सवलोग आप अकेलेकी शरण में होकर युद्ध में विजय पूर्व्वक अविनाशी सुखोंको चाहतेहैं ९।१० हे श्रीकृष्णजी आप उस हमारे राज्यके नाशको वा शत्रुओंसे अप्रतिष्ठाआदि नानाप्रकार के कष्टोंको भी जानते हैं ११ हे सवके ईश्वर हे भक्तोंके प्यारे हे मधुदैत्यके मारनेवाले श्रीकृष्णजी हम सवके वड़े सुख और यात्रा तुम्ही में नियतहैं १२ हे श्रीकृष्णजी सो तुम सव प्रकार से वही करने को योग्यहो जिसको कि मेरा चित्त आप में अभिलाषा करताहै अर्थात् वह अर्जुन की प्रतिज्ञा जिसको कि उसने करनाचाहा है वह सत्यहोय १३ सो आप इसदुःख और क्रोधरूप अथाह समुद्रसे पार उतारो हे माधवजी अवपार उतरनेके अभिलापी हम सव लोगों की आपही नौका हूजिये १४ शत्रुके मारने को उद्युक्त रथी युद्धमे वह वात नहीं करताहै जैसे कि हे माधवजी उपाय करनेमें प्रवृत्त सारथी करताहै १५ हे महावाहु जनार्द्दनजी जिसप्रकारसे कि आप वड़ी२ आपत्तियोंसे यादव लोगोंकी रक्षा करतेहो उसीप्रकार हम लोगोंकी भी दुःखोंसे रक्षाकरने को योग्यहो १६ हे शंख चक्र गदाधारी आप नौकारूप होकर नौकासे रहित महागम्भीर कौरवरूपी समुद्रमें डूवे हुये पाण्डवों को वाहर निकालो १७ हे देवताओंके ईश्वर देवता आदि अन्त से रहित संसारके संहारकर्त्ता संसारके सन लघु दीवों से व्याप्त विजयके अभ्यासी पापोंके नाश करनेवाले वैकुण्ठ परमात्मा श्रीकृष्णजी आप को नमस्कार हैं १८ नारदजी ने आप को प्राचीन ऋषियोंमें श्रेष्ठ वरदाता शार्ङ्गधनुपधारी और सवसे परे कहाहै हे माधवजी उस को सत्यकरो १९ सभाके मध्य में इस रीतिसे धर्म्मराज युधिष्ठिरके कहनेपर सजल वादलके समान शब्दवाले पीताम्वर कमललोचन श्रीकृष्णजी युधिष्ठिर से यह वचन वोले २० देवताओं समेत सव लोकोंमें भी उस प्रकारका धनुपधारी

कोई नहीं है जैसा कि संसारके सबधन्वोंका बिजय करनेवाला २१ महाबली अ-स्त्रोंका ज्ञाता अतुल पराक्रमी युद्ध में कुशल सदैव क्रोधयुक्त और तेजधारियों में श्रेष्ठ यह पांडव अर्जुन है २२ वह तरुण अवस्थावाला उन्नतस्कन्ध दीर्घबाहु महाबली उत्तम सिंहके समान चलनेवाला श्रीमान् अर्जुन तेरे सब शत्रुओं को मारेगा २३ और मैं वह करूंगा जिस प्रकार कुन्ती का पुत्र अर्जुन उठीहुई अग्निके समान दुर्य्योधन की सेनाओं को भस्मकरेगा २४ अब अर्जुन उस दुर्बुद्धी नीच अभिमन्यु के मारनेवाले दुष्टात्मा जयद्रथ को अपने बाणों से उस मार्ग में डालेगा जिसमें कि फिर उसका दर्शन न होगा अब गिद्ध बाज क-ठिन शृगाल आदि अनेक जीव जो मनुष्योंके खानेवाले हैं वह सब उसके मां-सको खायेंगे २५।२६ जो कदाचित् इन्द्रसमेत देवता भी उसके रक्षक होयँ तो भी यह जयद्रथ अब युद्धमें माराहुआ होकर यमराजकी राजधानी को पावेगा २७ अब अर्जुन जयद्रथको मारकर आपके पास आवेगा हे ऐश्वर्य्यके आगे रखने वाले राजा युधिष्ठिर तुम निस्संदेह होकर शोचसे रहित होजाओ २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥

चौरासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इस प्रकार से उनलोगों के वार्त्तालाप करने की दशामें भ रतर्षभ राजा युधिष्ठिर के देखने के लिये अपने मित्र वर्गों समेत अर्जुन भी आकर प्रकटहुआ १ फिर पांडवोंमें श्रेष्ठ राजायुधिष्ठिर अपने आसनसे उठकर उस मंगलकारी सभामें नमस्कार पूर्व्वक आगे नियतहुये अर्जुन को बड़े प्रेमसे छातीसे मिलाकर मिले २ और उसके मस्तकको सूंघकर भुजासे अपनी बगल में लेकर उत्तम २ आशीर्वादों को देकर मन्द मुसकानके साथ यह वचन बोले ३ हे अर्जुन प्रकट है कि युद्धमें निश्चय करके तेरेचित्त के अनुसार तेरी बड़ी बिजयहै क्योंकि श्रीकृष्णजी प्रसन्न हैं ४ फिर अर्जुन युधिष्ठिरसे बोले कि आ-पका भलाहोय मैंने केशवजी कीही कृपासे दृष्टि गोचरहोनेवाले एक बड़े आ-श्चर्य को देखा ५ तदनन्तर अर्जुन ने अपने शुभचिन्तकों की प्रसन्नता और विश्वास के निमित्त जिस प्रकार से कि उन महात्मा योगेश्वर शिवजी से मु-लाक़ातहुई उस सब वृत्तान्तको वर्णन किया ६ तदनन्तर वह सबलोग आश्च-

र्यित होकर शिरोंसे पृथ्वीको स्पर्श पूर्व्वक शिवजीको नमस्कार करके धन्यहै
धन्यहै यह शब्द बोले ७ तदनन्तर सब इष्टमित्र व भाई बन्धु धर्मपुत्र युधिष्ठिर
से आज्ञालेकर शस्त्रोंको धारणकियेहुये प्रसन्नचित्त होकर बड़ी शीघ्रतासे युद्धके
निमित्त निकले ८ और वह सात्यकी अर्जुन और श्रीकृष्णजीभी बड़ेप्रसन्नचित्त
राजाको नमस्कार करके युधिष्ठिर के डेरेसे बाहर निकले ६ फिर वह सात्यकी
और श्रीकृष्णजी दोनों वीर एक रथकी सवारी में साथ बैठकर अर्जुन के डेरेमें
गये और श्रीकृष्णजीने वहां जाकर सारथी के समान युद्धमें रथियोंमें श्रेष्ठ अ-
र्जुनके उस रथको जिसपर कि हनुमान्जीका स्वरूप था अलंकृत किया वह बा-
दल के समान शब्दायमान संतप्त कियेहुये सुवर्ण के समान प्रकाशित १०।११
अलंकृत कियाहुआ उत्तम रथ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बाल सूर्य्य से
प्रकाशित होकर शोभित होताहै इसके पीछे सब सामानसे अलंकृत पुरुषोत्तम
ने उस अलंकार कियेहुये रथको नित्य कर्म जपादिक से निवृत्त होनेवाले अ-
र्जुनसे वर्णन किया फिर पुरुषोंमें मुकुटके समान श्रेष्ठ सुवर्ण की माला रखने
वाले १२।१४ धनुषबाणधारी अर्जुनने उसरथको दाहिना किया और तप, विद्या
और अवस्थामें बड़े क्रियावान् जितेन्द्रिय पुरुषों के विजयकारी आशीर्वादों से
स्तूयमान अर्जुन उस बड़े रथमें सवार हुआ तदनन्तर युद्धकी विजय से संबंध
रखनेवाले मन्त्रोंसे वह श्रेष्ठ और प्रकाशित रथ १५ ऐसे अभिमंत्रित कियागया
जैसे कि उदय होनेवाला सूर्य्य अभिमंत्रित होता है फिर वह सुवर्ण के भूषणों
से अलंकृत रथियोंमें श्रेष्ठ १६ अर्जुन ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि मेरुप-
र्व्वत पर स्वच्छ और प्रकाशमान सूर्य्य होताहै फिर सात्यकी और श्रीकृष्णजी
भी अर्जुन के सम्मुख ऐसे सवार हुये १७ जैसे कि राजा शर्यातिके यज्ञमें जाते
हुये इन्द्र देवता के आगे दोनों अश्विनी कुमार होते हैं फिर सारथियों में श्रेष्ठ
गोविन्दजीने बागडोरोंको ऐसे पकड़ा १८ जैसे कि वृत्रासुरके मारने को जाते
हुये इन्द्रके रथकी रस्सियोंको इन्द्रके सारथी मातलिने पकड़ाथा उन दोनों के
साथ अत्यन्त उत्तम रथ में बैठाहुआ अर्जुन १६ जयद्रथके मारनेका और शत्रु-
ओंके समूहोंके नाशकरनेका अभिलाषी होकर ऐसे चला जैसे कि बुध और
शुक्रके साथ अन्धकारको दूर करताहुआ चन्द्रमा चलता २० अथवा जैसे कि
बरुण और मित्र देवताओंके साथ तारकसम्बन्धी युद्ध में इन्द्र गयेथे इसके पीछे

मागधोंने मंगलीरूप शुभस्तोत्र और बाजोंके शब्दोंके साथ २१ जातेहुये उस बीर अर्जुनकी स्तुतिको किया वह विजयके आशीर्वाद पुण्याहवाचन घोष सूत मागधोंके शब्द २२ बाजोंके शब्दों से संयुक्त उन्होंकी प्रसन्नता उत्पन्नकरनेवाले हुये इसके पीछे चलनेवाली सुगन्धियों से युक्त पवित्र बायु भी २३ अर्जुन को प्रसन्न करती और शत्रुओंको सुखातीहुई चली और हे राजा उसीक्षण में नाना प्रकारके मंगलोंके सूचक २४ बहुतसे शकुन पाण्डवोंकी विजयके निमित्त प्रकट हुये और हे श्रेष्ठ वही उनके शकुन तुम्हारे पुत्रोंके अशकुनरूप हुये २५ अर्जुन विजयके निमित्त उन दाहिने शकुनोंको देखकर बड़े धनुषधारी सात्यकीसे यह बचन बोले कि २६ हे सात्यकी अब युद्धमें मेरी विजय अवश्य दिखाई देती है हे शिनिवंशमें पुङ्गव जोकि शकुन दिखाई देते हैं २७ इस हेतुसे मैं अवश्य वहां जाऊंगा जिस स्थानपर यमलोक में जानेका अभिलाषी राजासिन्ध मेरे पराक्रमकी बाट देखरहाहै २८ जैसे कि जयद्रथका मारना मेरा उत्तम कर्महै उसी प्रकार धर्मराजकी रक्षाकरना भी मेरा बहुत बड़ा परमकर्म है २९ हे महाबाहु सो तुम अब राजाको चारों ओरसे ऐसे रक्षितकरो जैसे कि मैं रक्षाकरूं उसी प्रकार तुमसेभी रक्षित कियाजाय ३० मैं लोकमें ऐसा किसीको नहीं देखताहूं जो युद्ध में तुझ बासुदेवजीके समान को विजयकरे चाहै आप देवताओंका इन्द्रभीहोय उसकोभी तेरे सम्मुख होनेको समर्थ नहीं देखताहूं ३१ हे नरोत्तम मैं तुझमें और महारथी प्रद्युम्न में विश्वास करनेवालाहोकर बिना रुकाहुआ जयद्रथ के मारने को समर्थहूं ३२ हे यादव किसी दशामेंभी मुझ में रुकावट न करनाचाहिये तुझको सर्वात्मभावसे राजाकी रक्षाकरनी योग्य है ३३ जहांपर महाबाहु बासुदेवजी बर्तमानहैं और मैंभी जहां नियतहूं निश्चयकरके वहां किसीप्रकार की आपत्ति नहीं पड़तीहै ३४ शत्रुओंके बीरोंका मारनेवाला सात्यकी अर्जुन के इसप्रकारके बचन सुनकर बहुत अच्छा कहकर वहां गया जहांपर कि राजा युधिष्ठिर वर्तमान थे ३५॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४॥

पचासीवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि अभिमन्युके मरने और प्रातःकाल होनेपर उन दुःखशोक

से युक्त पांडवोंने क्या किया और वहां मेरे कौन २ शूरवीरोंने युद्ध किया १ कौरव और मेरेपुत्र इसपापको करके उस अर्जुन के कर्मोंको जानतेहुये किसप्रकारसे निर्भय हुये उसको मुझसे कहो २ पुत्र के शोकसे दुःखी व नाश करनेवालेकालके समान क्रोधयुक्त आते हुये पुरुषोत्तम अर्जुनको किसप्रकारसे युद्धमें देखा ३ मेरेपुत्रों ने उस हनुमान्जी की ध्वजा रखनेवाले बड़े धनुष को चलायमान करनेवाले पुत्र के मरने से दुःखी अर्जुन को युद्ध में देखकर क्या किया ४ हे संजय युद्धमें दुर्य्योधन की क्या दशाहुई अब मैंने बड़ा विलाप सुनाहै प्रसन्नता नहींसुनी ५ जो शब्द कि चित्तरोचक और कानोंको सुख देनेवालेथे वह सब अब जयद्रथ के डेरे में नहीं सुनेजाते हैं ६ अब मेरेबेटोंके डेरे में प्रशंसा और स्तुति करनेवाले सूत मागध और नर्त्तकों के समूहों के शब्द सब रीति से नहीं सुने जातेहैं ७ जहांपर मेरे कान शब्दोंसे सदैव शब्दायमान होतेथे उन दोनोंके शब्दोंको अब नही सुनताहूं ८ हे तात सञ्जय पूर्व समयमें सत्य और धृतवाले सोमदत्तके महलमें मैंने बैठकर उत्तम शब्दको सुना ९ सो मैं पापात्मा पुण्यसे रहित अपने पुत्रोंके डेरेको शोकके शब्दोंसे शब्दायमान और उत्साह के विना देखताहूं १० विविंशति, दुर्मुख, चित्रसेन, विकर्ण और दूसरे मेरे पुत्रोंके शब्दभी पूर्व के समान नहीं सुने जाते हैं ११ जिस द्रोणाचार्य के पुत्र और मेरे पुत्रों के रक्षास्थान बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा को ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य जातिके शिष्यलोग उपासना करतेथे १२ और वितण्डावाद वर्णन वार्तालाप शीघ्रता करनेवाले और बजायेहुये नानाप्रकारके चित्तरोचक बाजे और गानों से दिन रात्रि रमण करताहुआ हास विलास करताथा १३ और बहुतसे कौरव पाण्डव और यादवोंसे उपासना कियाहुआथा हे सूत उस अश्वत्थामा के घर में अब पूर्वके समान शब्द नहीं है १४ जो नर्तक और गानेवाले उस बड़े धनुषधारी अश्वत्थामाके पास सदैव नियत होतेथे उनकीभी ध्वनि नहीं सुनीजाती है १५ रात्रिके समय विन्द अनुविन्द राजाओं के डेरेमें जो बड़ी भारी ध्वनि १६ सुनीजाती थी अब उस प्रकारकी नही सुनने में आती है और प्रसन्न रहनेवाले केकयलोगोंके डेरेमें ताल समेत गीतोंके बड़े बड़े शब्द सुनेजाते थे १७ और हे तात नर्तक लोगोंके जो शब्द सुनेजाते थे वह अब नही सुनेजाते जो तान तानवाले तम्बूरोंके फैलानेवाले शास्त्रज्ञ याजकलोग सोमदत्तकी उपासना

करतेथे १८ उनकेभी शब्द नहीं सुने जातेहैं धनुष प्रत्यञ्चा के शब्द वेदध्वनि तोमर खड्ग और रथ के जो शब्द १९ द्रोणाचार्य्य के घरमें होतेथे मैं उनको भी नहीं सुनता हूं नानाप्रकार के देशजन्य गीतों के जो शब्द और बाजों के जो शब्द आधिक्यतासे होतेथे वह भी अब नहीं सुनेजाते हैं जब अविनाशी श्रीकृष्णजी सब जीवोंकी दयाके लिये शान्तिकी इच्छा से उपप्लवी स्थानसे आये तब उसके पीछे मैंने उस निर्बुद्धी दुर्य्योधनसे कहाथा २०। २२ कि हे बेटा वासुदेव रूप तीर्थ के द्वारा पांडवोंसे सन्धि करलो मैं इस बातको समय के अनुसार उचित और योग्य जानताहूं हे दुर्य्योधन तुम बिपरीत कर्म मतकरो २३ जो तुम सन्धि चाहनेवाले और परिणाममें कुशल चाहनेवाले केशवजीको उत्तरदोगे तो युद्धमें तेरी बिजय नहींहै २४ उसने उस सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ और पूर्वकर्मोंके कहनेवाले श्रीकृष्णजीको उत्तर दिया और अन्यायसे उनकी बातको अंगीकार नहीं किया २५ इसके पीछे वह दुर्बुद्धी कालका खैंचाहुआ दुर्य्योधन मुझको त्यागकरके उन दोनों दुश्शासन और कर्ण के मतपरकर्म करनेवालाहुआ २६ मैं द्यूतकर्मको नहीं चाहताहूं और बिदुरजी उसको निषेधकरतेहैं और जयद्रथ भी उस द्यूतकर्म को नहीं चाहता है और भीष्मजी भी बारम्बार निषेध करते हैं२७ हे संजय शल्य,भूरिश्रवा,पुरु,मित्रोजय, अश्वत्थामा, कृपाचार्य,द्रोणाचार्य यहसब भी द्यूतकर्मको नहीं चाहते हैं २८ जो मेरापुत्र इनसबकेमनको अंगीकार करके कर्म करेगा तो ज्ञाति,मित्र और अपने शुभचिंतकों समेत वेदनासे रहित नीरोग होकर जीवतारहैगा २९ और शुद्ध मधुर भाषण करनेवाले ज्ञाति बांधवोंसे प्रीति पूर्व्वक बोलनेवाले कुलीन संमती और प्राज्ञ अर्थात् ज्ञानी पांडव लोग सुखको पावेंगे ३० धर्म से सम्बन्ध रखनेवाला मनुष्य सदैव और सब स्थानों में सुखको पाताहै और मरनेपर शुद्ध मोक्षको भी प्राप्तकरताहै ३१ वह पराक्रमसे विजयकरनेवाले पाण्डव आधे राज्यको भोगने के योग्यहैं यह समुद्रान्त पृथ्वी उन्हों के भी बाप दादोंकी है ३२ पांडव लोग धर्म मार्ग में प्रवृत्त होकर धर्ममें ही नियत होतेहैं हे तात वह पांडवलोग जिनलोगों के वचनोंको मानते हैं वह मेरी ज्ञाति वालेहैं ३३ शल्य, सोमदत्त, महात्माभीष्म, द्रोणाचार्य्य, विकर्ण, बाह्लीक, कृपाचार्य्य ३४ और अन्य सब महात्मा भरतवंशी वृद्धलोग तेरे निमित्त वार्त्तालाप करेंगे उन महात्मा लोगोंके वचनको वह पांडव करेंगे ३५ क्या तुम उनके म-

ध्यमें किसीको ऐसा मानतेहो कि वह तुम्हारे विपरीत कहेगा श्रीकृष्णजी कभी धर्म को नहीं त्यागेंगे और वह सब उनकी आज्ञानुसार चलनेवाले हैं ३६ वह बीर मुझसे भी धर्मरूप उपदेशोंके द्वारा समझाये गये हैं इससे वह पांडव लोग धर्म के विपरीत कभी नहीं करेंगे क्योंकि वह धर्मात्मा हैं ३७ हे सूत इस प्रकार विलाप करतेहुये मैंने अनेक प्रकार से पुत्रको समझाया परन्तु उस अज्ञानी ने मेरे बचनों को नहीं सुना इसमें मैं कालकी बिपरीत गति मानताहूं जिसस्थान पर भीमसेन अर्जुन वृष्णियों में बीर सात्यकी पांचाल देशी, उत्तमौजा, दुर्जय युधामन्यु ३८।३९ निर्भय धृष्टद्युम्नआदि करके सहित दुर्जय शिखण्डी,अश्मक, केकयदेशी क्षत्रधर्मा सोमकि ४० चन्देरीका राजा चेकितान काशी के राजाका पुत्र समर्थ द्रौपदी के पुत्र राजा बिराट महारथी द्रुपद ४१ पुरुषोत्तम नकुल और सहदेव और मंत्री श्रीकृष्णजी हैं वहां इसलोकका जीवन चाहनेवाला कौनसा शूरवीर इन बड़े शूरबीरों से युद्ध करसक्ता है ४२ सिवाय दुर्य्योधन कर्ण सौबल के पुत्र शकुनि और दुश्शासनके मेरा कौनसा शूरवीर इन दिव्य अस्त्र चलाने वाले शत्रुओं को सहसक्ता है मैं इन चारों के सिवाय किसी पांचवें शूरबीर को इनके सम्मुख जानेवाला नहीं देखताहूं बागडोरों को हाथमें रखनेवाले श्रीकृष्ण जी जिसके रथपर नियतहोयँ ४३ । ४४ और अलंकार युक्त शस्त्रों का धारणकरनेवाला अर्जुन युद्धकर्त्ताहो उस दशामें उनकी पराजय किसी प्रकार से नहीं होसक्ती है फिर यह दुर्य्योधन उन बिलापों को स्मरण न करे कि ४५ पुरुषोत्तम भीष्म और द्रोणाचार्य्य मारेगये संजयने कहा निश्चय करके यह बात तुमने मुझसे कहीथी फिर धृतराष्ट्रने कहा कि भविष्यत् वृत्तान्तों के ज्ञाता बिदुरजीके कहेहुये उन बचनों के ४६ इस प्रत्यक्ष प्रकट होनेवाले फलको देखकर मेरे पुत्र शोचको करते हैं इससे मैं यह मानताहूं कि सात्यकी समेत अर्जुनसे पराजित हुई मेरी सेनाको देखकर ४७ और रथके बैठकोंको खाली देखकर मेरे पुत्र शोचकरतेहैं मैं यह मानताहूं कि जिस प्रकार वायुसे चलायमान बड़ी अग्नि समूह हिमऋतु के अन्तमें सूखेहुये वनको ४८ भस्म करदेताहै उसी प्रकार अर्जुन भी मेरी सेना को भस्म करताहै वह सब तुम मुझसे कहो क्योंकि हे संजय तुम वृत्तान्तके वर्णन करने में बड़े कुशलहो ४९ जब अर्जुनके अपराधको करके सायंकाल के समय अपने डेरेको आये हे तात तब अभिमन्यु के मरनेपर तुम्हारा

चित्त किस प्रकारका हुआ ५० हे संजय मेरे पुत्र बड़े भारी अपराध को करके युद्धमें गांडीव धनुषधारी के उन कर्मोंके सहनेको समर्थ नहीं होंगे ५१ ऐसी दशावाले उन लोगोंके मध्य में दुर्य्योधनने क्या करने के योग्य कहा और कर्ण दुश्शासन और शकुनि ने भी क्या करने के योग्य कहा ५२ अभागे लोभी दुर्बुद्धी क्रोधसे दुष्टचित्त राज्यके अभिलाषी अज्ञानी और रोगी चित्त दुर्य्योधनके अन्यायोंसे युद्धमें इकट्ठे होनेवाले मेरे सब पुत्रोंका जो वृत्तान्त है वह चाहे न्यायके अनुसार अथवा न्यायके बिपरीतहोय उससबको मुझसे वर्णनकरो ५३।५४ ॥

इतिश्रीमहाभार० द्रोणपर्व्वणिपंचाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

छियासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि मैंने सब वृत्तान्त अपने नेत्रोंसे देखा है उसको यथार्थता से कहताहूं तुम चित्त लगाकर सुनो उसमें सब आपकाही बड़ा अन्यायहै १ हे राजा जैसे कि बिना जलवाली नदी में सेतु अर्थात् पुलका बांधनाहै उसी प्रकार यह आपका बिलाप करना भी निरर्थक है हे भरतर्षभ शोचमतकरो २ यह कालकी मर्य्यादा उल्लंघन करनेके योग्य नहीं है इसकारण आप शोचको मतकरो यह होनहार बड़ी प्राचीनहै ३ जो तुम द्यूतहोनेसे प्रथमही कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिरको और अपने पुत्रों को खेलने से हटादेते तो तुमको दुःख कभी नहीं होता ४ फिर युद्ध के वर्त्तमान होने के समय पर भी जो आप उन क्रोधयुक्तों को निषेध कर देते तब भी आपको कष्ट न होता ५ जो तुम सब कौरव लोगों को यह आज्ञा करते कि इस अनाज्ञाकारी दुर्य्योधनको पकड़कर बंधनमें डालो तो भी आपको दुःख न होता ६ वह पांडव पांचालदेशी यादव और अन्य २ देशी राजालोग हैं वे भी बिपरीत बुद्धिको नहीं चाहेंगे ७ जो तुम पितृकर्म को करके और अपने पुत्रको शुभमार्ग में नियत करके धर्म से कर्म करो तो तुमको दुःखप्राप्त न होगा ८ इसलोक में तुम ऐसे बड़े ज्ञानी होकर अपने सनातन धर्मको छोड़कर दुर्य्योधन कर्ण और शकुनिके मतोंपर काम करनेवालेहुये ९ हे राजा तुझ स्वार्थी और अपने प्रयोजन में प्रवृत्त चित्तवाले का वह सब बिलाप मैंने सुना जो कि बिष मिलेहुये सहतके समानहै १० पूर्व्वकालमें श्रीकृष्णजी राजा युधिष्ठिर भीष्म और द्रोणाचार्य्य को भी ऐसा नहीं मानते थे जैसा कि वह अविनाशी तुमको

मानतेथे ११ जबसे उन्होंने तुमको राजधर्मसे हीन और अन्यायमें प्रवृत्त जाना तभीसे श्रीकृष्णजी तुमको वैसा नहीं मानते हैं १२ हे पुत्रोंके राज्यके चाहनेवाले धृतराष्ट्र जैसे तुमने कठोर वचन कहकर पांडवों को नहीं ध्यान किया उसी का फल तुमको प्राप्तहुआ है १३ हे पापों से रहित प्रथम तो बाप दादोंका राज्य सन्देह युक्तहुआ फिर तुमने पांडवों से विजय कीहुई सम्पूर्ण पृथ्वी को पाया १४ जैसे कि पांडुने कौरवों का राज्यलेकर अपने यशको बढ़ाया उसी प्रकार उससे भी अधिक धर्मात्मा पांडवोंने प्राप्तकिया १५ उनका वह उस प्रकारका कर्म तुम को प्राप्तहोकर निष्फलहुआ जो पिताके राज्यसे तुमने उनको निकालकर भ्रष्ट करदिया १६ हे राजा जो तुम युद्ध के समय में अब भी अपने पुत्रोंके दोषोंका विचार करके उनको बुरासमझो तो अब वह दुःख प्राप्त नहीं होगा १७ युद्धमें लड़नेवाले राजा लोग जीवनकी रक्षा नहीं करते हैं और वह क्षत्रियों में श्रेष्ठ पांडवोंके सेनाको मँझाकर युद्धकरते हैं १८ जिस सेनाको श्रीकृष्णजी अर्जुन सात्यकी भीमसेन ये चारों रक्षित करते हैं उस सेनाके सम्मुखता कौरवोंके सिवाय कौनकरसक्ताहै १९ जिन्हों में लड़नेवाला अर्जुन और मन्त्री श्रीकृष्णजी हैं और जिन्होंके शूरवीर भीमसेन और सात्यकीहैं २० उनके सम्मुख कौरवलोग अथवा उनके अनुगामी लोगों के सिवाय कौनसा धनुषधारी लड़ने को समर्थ है २१ हे राजा जबतक मित्र लोग क्षत्रिय धर्म में प्रीति रखनेवाले शूरोंसे युद्ध करना संभवहै तबतक कौरवभी करते हैं २२ अब जिस प्रकार पुरुषोत्तम पांडवों के साथ कौरवोंका कठिन युद्धहुआ उस सबको मूल समेत सुनो २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषडशीतितमोऽध्यायः ८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि उस रात्रिके व्यतीत होनेपर शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यजीने व्यूह बनाने के निमित्त अपनी सब सेनाको समझाया १ हे राजा परस्पर मारनेके अभिलाषी क्रोधयुक्त अमर्षी और गर्जनेवाले शूरोंके अपूर्व्व वार्त्तालाप सुनीगई २ कोई तो धनुष को टंकारकर और कोई प्रत्यंचा को चढ़ाकर श्वास लेलेकर पुकारे कि अब अर्जुन कहां है ३ किसीने उत्तम मूठ तीक्ष्णधार वाली प्रकाशित आकाशके समान अच्छी रीति से उठाई हुई मियान से जुदी

तलवारोंको चलायमान किया ४ कोई युद्धमें प्रवृत्तचित्त हजारों शूरवीर अपनी सुशिक्षिताओं के प्रभाव और बलसे तलवार और धनुषोंके मार्गोंको घुमातेहुये दिखाई पड़े ५ किसी २ ने उन गदाओंको जोकि घंटा रखनेवाले चन्दनसे लिप्त सुवर्ण और वज्ररूप लोहेसे अलंकृतथीं उनको उठा २ कर पांडव अर्जुन को पूंछा ६ बलके मदसे मदोन्मत्त भुजासे शोभित किसी किसी ने इन्द्रकी ध्वजा के समान परिघनाम शस्त्रोंसे आकाशको रोंकदिया ७ और कोई कोई शूर विचित्र मालाओं से अलंकृत युद्धमें प्रवृत्त चित्त नाना प्रकारके शस्त्रों समेत जहां तहां वर्त्तमान होकर नियतहुये और युद्धभूमि में आकर पुकारनेलगे कि अर्जुन और श्रीकृष्णजी कहां हैं और प्रतिष्ठावान भीमसेन कहां है ८ और इनके सब मित्र लोग कहां हैं ९ उसके पीछे घोड़ोंको शीघ्रतासे चलाते आप द्रोणाचार्य्य शंख को बजाकर उन घोड़ों को इधर उधर से दौड़ातेहुये बड़ीतीव्रता से भ्रमणकरने लगे १० हे महाराज उन युद्धमें प्रसन्न होनेवाले सब सेनाओंके नियत होनेपर भारद्वाज द्रोणाचार्य्य जी राजाजयद्रथ से बोले ११ कि तुमसोमदत्ति, महारथी कर्ण, अश्वत्थामा, शल्य, वृषसेन, कृपाचार्य्य १२ और एक लाख घोड़े साठ हजार रथ चौदह हजार मतवाले हाथी १३ और इक्कीस हजार शस्त्रधारी पदाती छः कोशपर मुझसे पृथक् होकर नियत होजाओ १४ इन्द्र समेत देवताभी तुझे वहां नियत होनेवाले के सम्मुखता करने को समर्थ नहीं हैं १५ फिर सब पांडव क्याहोसक्ते हैं १६ राजा इस प्रकार के वचनों से विश्वासित किया हुआ वह सिन्धका राजा जयद्रथ उन महारथियोंसे वेष्टित होकर गान्धार देशियों के साथ चला १७ जोकि कवचधारी युद्धमें सावधान प्रास हाथों में रखनेवाले सेनाओं में नियत होकर सवारों से व्याप्तथे हे महाराज जयद्रथ के सब घोड़े चामर आपीड़ रखनेवाले सुवर्ण से अलंकृत १८ अच्छे २ लोगों के सवार करनेवाले थे उनकी संख्या सातहजारथी और तीन हजार सिन्धु देशी थे १९ आपका पुत्र दुर्मर्षण उन डेढ़ हजार हाथियों समेत जोकि मतवाले और सावधान हाथीवानों से युक्त होकर भयकारी कर्म करनेवाले थे सब सेनाके आगे लड़ताहुआ आगे नियत हुआ २० । २१ उसके पीछे आपके दोनोंपुत्र दुश्शासन और विकर्ण जयद्रथके अभीष्टके प्राप्तिके लिये सेनाके आगे नियतहुये २२ द्रोणाचार्य्य से वह चक्र शकटनाम व्यूह चौबीस कोशलंबा और पिछले भाग में दशकोश

विस्तृत बनायागया २३ आप द्रोणाचार्य्यने जहांतहां हजारों शूरवीर राजा रथ घोड़े और पत्तियों से वह व्यूह अलंकृत किया २४ उसके पीछे के भागमें कठिनतासे तोड़नेके योग्य पद्मगर्भ नाम व्यूह अलंकृत किया फिर पद्मव्यूहके भीतर शूची नाम गुप्तव्यूह बनाया २५ इस प्रकारसे द्रोणाचार्य्य इस बड़े व्यूह को अलंकृत करके नियतहुये और बड़ा धनुषधारी कृतबर्मा शूचीके मुखपर नियतहुआ २६ हे श्रेष्ठउसके पीछे राजा काम्बोज और जलसन्ध नियतहुये उन दोनों के पीछे दुर्य्योधन और कर्ण नियतहुये २७ फिर शकटके मुखके रक्षक मुखोंके नफेरनेवाले लाखों शूरवीर लोग नियतहुये २८ उनके पीछे बड़ी सेना से व्याप्त राजा जयद्रथ हुआ अर्थात् वह राजा शूची के पार्श्व में नियत हुआ २९ हे महाराज शकटके मुखपर द्रोणाचार्य्य जी नियत हुये उन के पीछे राजा भोजहुआ और आपही उसकी रक्षाकरी ३० श्वेत कवच वस्त्र पगड़ी रखने वाले बड़े वक्षस्स्थलवाले काल के समान क्रोधरूप महाबाहु द्रोणाचार्य्यजी धनुष को टंकोरतेहुये नियत हुये ३१ कौरव द्रोणाचार्य्य के उसरथको जो कि पताका समेत रक्तवर्ण के घोड़ोंसे युक्तथा और जिसकी ध्वजामें वेदी और काले मृगचर्म का चिह्नथा उसको देखकर अत्यन्त प्रसन्नहुये ३२ व्याकुल समुद्र के समान द्रोणाचार्य्य के रचेहुये व्यूहको देखकर सिद्धचारणों के समूहों को आश्चर्यहुआ ३३ जीवधारियोंने यह मानाकि यह व्यूह अनेक देश पर्व्वत और समुद्रों समेत पृथ्वीको निगलजाय तो कुछ आश्चर्य्य नहीं ३४ उस असंख्य रथ मनुष्य घोड़े हाथी और पत्तियों समेत भयकारी शब्दवाले अपूर्व्वरूप शत्रुओंके हृदयके तोड़नेवाले बनायेहुये बड़े शकट व्यूहको देखकर राजा दुर्य्योधन बड़ा प्रसन्नहुआ ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७ ॥

अट्ठासीवां अध्याय ॥

संजयबोले कि सेनाओं के अलंकृत होने और बड़े उच्च शब्दसे परस्पर एक २ के बुलाने भेरी मृदंगोंके बजने १ सेनाओं समेत बाजों के शब्द होने शंखोंके बजने और शरीर के रोमांच खड़े करनेवाले शब्दों के होने धीरेपनेसे युद्धाभिलाषी भरत बंशियोंके अलंकृत होने और भयकारी मुहूर्त्त के वर्त्तमान

होनेपर अर्जुन दिखाई दिया ३ हे भरतबंशी वहां अर्जुन के आगे हजारों काकों के बच्चे क्रीड़ा करने लगे ४ और इसी प्रकार चलनेवाले हम लोगोंके दाहिने भयकारी शब्दवाले मृग और अशुभ दर्शन शृगाल शब्दोंको करनेलगे ५ और हजारों प्रकाशित उल्का बायुके साथ परस्पर के आघात शब्दों समेत पृथ्वी परगिरे और महाकठिन भयके वर्त्तमान होनेपर सम्पूर्ण पृथ्वी कंपायमान हुई ६ अर्जुनके आने और युद्ध में सम्मुख नियतहोनेपर महारूखी कंकड़ों की बर्षा करनेवाली संसार की बायु उनके परस्परीय आघातीय शब्दोंके साथ चलने लगी ७ तब बड़े ज्ञानी नकुलके पुत्र सतानीक पर्षतका पौत्र धृष्टद्युम्न इनदोनों ने पांडवों की सेनाओं को अलंकृत किया ८ इसके पीछे आपका पुत्र दुर्मर्षण हजाररथ सौ हाथी तीनहजार घोड़े और दशहजार पदातियोंके साथ डेढ़हजार धनुषके अन्तरपर सब सेनाओंके आगे नियत यहबचन बोला ९।१० कि अब मैं इसयुद्ध में युधिष्ठिर को और संतप्त करनेवाले गांडीव धनुषधारी अर्जुनको ऐसे रोकूंगा जैसे कि समुद्र को मर्य्यादा रोकती है ११ अब क्रोधयुक्त और निर्भय अर्जुन को युद्धमें मुझसे भिड़ाहुआ ऐसे देखो. जैसे कि पाषाणसे भिड़ाहुआ पाषाण होताहै १२ युद्धके ज्ञातातुम सबरथी लोग नियतहोजाओ और मैं यश और मानको बढ़ाताहुआ इनसब मिलेहुओंसे युद्ध करूंगा १३ हे महाराज वह महात्मा अति बुद्धिमान बड़े धनुषधारियों से संयुक्त बड़ा धनुषधारी इस प्रकार के बचनों को कहताहुआ नियतहुआ १४ इसके पीछे कालके समान क्रोध युक्त बज्रधारी इन्द्रके तुल्य दंडधारी कालके समान सहने के अयोग्य कालसे प्रेरित शूलधारी रुद्र वा पाशधारी बरुण के समान व्याकुलता से रहित प्रलयकाल में फिर संसारको भस्मकरतेहुये प्रकाशित अग्निके समान १५।१६ क्रोध और अधैर्यसे चलायमान शरीर निवात कवचों का मारनेवाला महाविजयी अर्जुन बड़े भारी व्रतको धैर्य्य और सत्यसे पूराकरना चाहता आकरके नियतहुआ १७ कवच खड्ग समेत सुवर्ण का मुकुट धारण करनेवाला श्वेतमाला पोशाक और सुन्दर बाजूबन्दों समेत कुंडलों से शोभित १८ नररूप अर्जुन नारायण श्रीकृष्णजी के साथ अत्यन्त उत्तम रथमें बैठकर युद्धमें गांडीव धनुषको चलायमान करते उदयहुयेसूर्य्यके समान प्रकाशित होकर शोभायमानहुआ १९ उस प्रतापवान अर्जुनने बड़ी सेनाके आगे एकतीरके अन्तरपर रथको नियत करके धनं-

जय शंखको बजाया २० हे श्रेष्ठ फिर उन निर्भय श्रीकृष्णजीने भी अर्जुनके साथ ही अपने पांचजन्य शंखको बड़े बेगसे बजाया २१ हे राजा उनदोनों शंखोंके शब्दों से आपकी सेना में सब कंपायमान और अचेत होकर रोमांचों के खड़े होनेवाले हुये २२ जैसे कि बज्रके शब्दसे सब जीवधारी भयभीत होते हैं उसी प्रकार आपकी सेनाओंके लोग शंखोंके शब्दोंसे भयभीत होगये २३ और सब सवारियों में भी मूत्र और विष्ठाको छोड़ा इसरीतिसे सवारियों समेत सब सेना व्याकुलहुई २४ हे नरोत्तम राजा धृतराष्ट्र शंखोंके शब्दोंसे कितनेही तो सुस्त हुये और कितनेही अचेतहुये और कितनेही डरगये २५ इसके अनन्तर मुखको चौड़ा किये आपकी सेनाओंको भयभीत करते हनुमानजीने ध्वजामें रहनेवाले जीवों समेत बड़ाभारी शब्द किया २६ आपकी सेनाके प्रसन्न करनेवाले शंख भेरी मृदंग और ढोल भी फिर बजायेगये २७ नानाप्रकारके बाजोंके शब्द सिंहनादों समेत तालोंका ठोकना इत्यादि बाजोंसे युक्त महारथियों से २८ उस भयभीतों के भयके बढ़ानेवाले बड़े कठोर शब्दके होनेपर अत्यन्त प्रसन्न इन्द्रका पुत्र अर्जुन श्रीकृष्णजीसे बोला २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

नवासीवां अध्याय ॥

अर्जुन बोले कि हे श्रीकृष्णजी आप घोड़ों को चलायमान करिये मैं जहां दुर्मर्षण नियतहै उस हाथियों की सेनाको छिन्नभिन्न करके शत्रुओंकी सेना में प्रवेशकरूंगा १ संजय बोले कि अर्जुनके इस बचनको सुनकर महाबाहु श्रीकृष्णजीने घोड़ों को वहांही चलायमान किया जहांपर कि दुर्मर्षण नियत था २ वह अत्यन्त भयका उत्पन्न करनेवाला कठिन युद्ध उन एकरूप मिलेहुये वीरों के साथहुआ जो कि रथ हाथी और मनुष्यों को नाश करनेवाला था ३ इसके पीछे बादल की वर्षा के समान बाणों की वर्षा करनेवाले अर्जुनने शत्रुओं को ऐसे ढकदिया जैसे कि पर्व्वत को बादल ढकदेता है ४ उन शीघ्रता करनेवाले रथियोंने भी हस्तलाघवता के समान बाणों के जालों से श्रीकृष्ण और अर्जुन को आच्छादित करदिया ५ तदनन्तर युद्धमें शत्रुओंसे रुकेहुये क्रोधयुक्त महाबाहु अर्जुनने बाणोंसे रथियों के शिरोंको शरीरोंसे पृथक्किया ६ ऊपरकी ओर

घूमनेवाले नेत्रोंसे युक्त दोनों ओठों को चाबनेवाले कुण्डल पगड़ियों के धारण करनेवाले उत्तम मुखोंसे वह पृथ्वी आच्छादितहोगई ७ जैसे कि चारोंओरसे कमलोंके बन टूटतेहैं उसीप्रकार शूरवीरोंके फैलेहुये मुख शोभायमानहुये ८ सुवर्ण के कवचोंसे अलंकृत रुधिर में लिप्त शरीर ऐसे भिड़ेहुये दृष्टिपड़े जैसे कि बादलोंके समूह बिजलीसे भिड़ेहुये होतेहैं हे राजा पृथ्वीपर गिरतेहुये उन शिरोंके ऐसे शब्दहुये जैसे कि समयपर पककर तालके फलोंके शब्दहोतेहैं ९।१० इसके पीछे कितनेही धड़ धनुषको पकड़कर नियतहुये कितनेही खड्ग को पकड़कर ध्वजा से उठाकर नियतहुये ११ और कितनेही युद्धमें अर्जुन को न सहनेवाले विजयाभिलाषी पुरुषोत्तम अपने गिरेहुये शिरोंको भी नहीं जानतेथे १२ घोड़ों के शिर हाथियोंकी सूंड़ बीरोंकी भुजा और शिरोंसे पृथ्वी आच्छादित हुई १३ यह अर्जुनहै यह अर्जुनहै हे प्रभु इसप्रकार आपकी सेनाओंमें शूरबीरोंके शब्द अर्जुनसे संबंध रखनेवाले हुये १४ एकने दूसरे को मारा और दूसरेने अपने को भी मारा समयसे अचेतहोकर उन लोगोंने संसारभरको अर्जुन रूपही माना।१५ पुकारते रुधिर में लिप्त अचेत कठिन पीड़ाओं से युक्त बारम्बार अपने बांधवों को पुकारते हुये पृथ्वीपर गिरपड़े अर्थात् मरकर पृथ्वीपर सोये १६ भिण्डिपाल, प्रास,शक्ति, दुधारा खड्ग,फरसे, यूपक,खड्ग,धनुष,और तोमरोंको रखनेवाले१७ बाण कवच भूषण गदा और बाजूबन्दधारी परिघ के समान बड़े सर्प के समान भुजायें १८ पकड़ती थीं और चेष्टा करतीहुई सब ओरसे आघात करती थीं और उत्तम बाणोंसे कटीहुई क्रोधयुक्तहोकर बेगको करतीथीं १९ जो जो मनुष्य युद्धमें अर्जुनके सम्मुख जाताथा उस उसके शरीरको उसका नाशकारी बाण आघात करताथा २० वहां रथके मार्गों में नाचते और धनुषको खैंचतेहुये उस अर्जुनका छोटासा भी अन्तर किसीने नहीं देखा २१ उपायपूर्व्वक विचार करनेवाले और शीघ्रतासे बाणोंके खैंचनेवाले अर्जुनकी हस्तलाघवतासे दूसरे मनुष्य आश्चर्य्ययुक्त हुये २२ अर्जुनने बाणोंसे हाथी वा हाथीके सवार घोड़े वा घोड़ोंके सवार और सारथियों समेत रथियोंको बाणोंसे घायलकिया २३ वह पांडव अर्जुन घूमनेवाले लौटनेवाले युद्ध करनेवाले और सम्मुख युद्धमें नियत शूरवीरोंको मारता था २४ जैसे कि आकाश में उदय होताहुआ सूर्य्य बड़े अन्धकार को दूरकरता है उसी प्रकार अर्जुनने बाणोंसे हाथियोंकी सेनाको मारा २५ मारेहुये और गिरे

हुये हाथियोंसे आपकी सेना ऐसी दिखाई पड़ी जैसे कि प्रलयके समय पर्व्वतों से आच्छादित पृथ्वी होती है २६ जैसे कि सूर्य्य मध्याह्नके समय सदैव जीव- धारियोंसे दुःख से देखने के योग्य होता है उसी प्रकार युद्धमें क्रोधयुक्त अर्जुन भी शत्रुओं से कठिनतापूर्व्वक देखने के योग्यहुआ २७ हे शत्रुसंतापी इस प्रकार से आप के पुत्रकी वह सेना युद्ध में भागीहुई भयभीत और छिन्न भिन्न होकर बाणोंसे अत्यन्त पीड़ामान २८ ऐसे व्याकुलहुई जिस प्रकार बड़ी वायु से बादलों की सेना होती है फिर वह छिन्न भिन्न होनेवाली सेना सम्मुख देखने को समर्थ नहीं हुई २९ चाबुक धनुषकी कोटि वा अच्छे प्रकार कियेहुये हुंकार कोड़े बड़े २ आघात और भयकारी शब्दों से ३० आपके अश्वसवार रथसवार और पत्तिलोग उस अर्जुनके हाथसे पीड़ावान् होकर बड़ी शीघ्रतासे अपने २ घोड़ोंको चलायमान करके भागे ३१ कोई २ शूरवीर हाथियोंको एड़ी अंगुष्ठ और अंकुश आदिसे चलायमान करके भागे और बहुत से बाणों से अचेत होकर फिर उसी के सम्मुख गये ३२ तब आपके शूरवीर उत्साहोंसे रहित होकर महा- व्याकुलचित्त हुये ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

नव्वेका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि उस सेनाके मुखके टूटने और अर्जुनके हाथसे वहां घायल होनेपर वहां कौन २ शूरवीर अर्जुनके सम्मुखहुये १ खेदकी बातहै कि सकल नि- श्चयवाले द्रोणाचार्य्य की शरण में नियतहोनेवाले हम सब उस शकटव्यूह में ऐसे घुसेहुये हैं जैसे कि गढ़ अर्थात् किलेमें निर्भय होते हैं २ संजय बोले कि हे निष्पाप धृतराष्ट्र उसप्रकार अर्जुनके हाथसे उस आपकी सेनाको पराजित सा- हससे रहित भागने में प्रवृत्तचित्त नाशवान् वीरों से रहित होजाने पर ३ और इन्द्रके पुत्रके उत्तम बाणों से हजारोंके वारम्बार मरनेपर वहांपर कोई भी युद्ध में अर्जुनके सम्मुख देखनेको समर्थ नहीं हुआ ४ हेराजा उसके पीछे आपका पुत्र दुश्शासन उस दशावाली सेनाको देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त युद्धके लिये अ- र्जुनके सम्मुखगया ५ हे महाराज उस सुवर्ण के कवचसे अलंकृत सुनहरी मुकुट धारी तेज पराक्रमी शूरवीर ६ और हाथियोंकी बड़ी सेनासे पृथ्वी को निगलने

वाले के समान दुश्शासनने अर्जुन को घेरलिया ७ हाथियों के घंटों के शब्द शंखोंकी ध्वनि धनुषोंकी टंकार और हाथियों की चिंहाड़ोंसे ८ पृथ्वी दिशा बिदिशा और आकाश शब्दों से पूर्ण होगये वह भयकारी महायुद्ध एक मुहूर्त्त तक वर्त्तमान रहा ९ अंकुशोंसे प्रेरित पेचदार सूंड़वाले क्रोधयुक्त पक्षधारी पर्व्वत के समान शीघ्रता से आतेहुये उन हाथियों को देखकर उस नरोत्तम अर्जुनने बड़े भारी सिंहनादके साथ शत्रुओं के हाथियोंकी सेनाको चारों ओरसे अपने बाणोंके जालोंसे छिन्न भिन्न करदिया १० । ११ जैसे कि बड़े बेगवान् बायुसे उठायेहुये बड़े समुद्रमें मगर प्रवेश करताहै उसी प्रकारसे वह अर्जुन भी उस हाथियोंकी सेनामें प्रवेश करगया १२ शत्रुओंके पुरोंका बिजय करनेवाला अर्जुन सब दिशाओंमें ऐसे दिखाई दिया जैसे कि मर्यादको उल्लंघन करनेवाला सूर्य्य अत्यन्त संतप्त करताहुआ प्रलयकाल में होताहै १३ घोड़ों के खुरोंके शब्द रथ के पहियोंकी नेमियोंके शब्द प्रत्यंचाका शब्द १४ नानाप्रकारके बाजोंके शब्द पांचजन्य और देवदत्त नाम शंखों की ध्वनि और गांडीव धनुषके शब्दसे १५ वह सब मनुष्य और हाथियोंके समूह मन्दबेग होकर अचेत होगये अर्ज्जुन के बाणोंसे जिनका स्पर्शपूर्व्वक लगना बिषधर सर्प के समानथा इसी से सब मरगये १६ वह हाथी युद्धमें अर्जुनके चलायेहुये तीक्ष्ण लाखों बाणोंसे सब अंगों में घायलहुये १७ अर्ज्जुन से घायल होकर बड़े व्याकुलताके शब्द करते सब पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि पृथ्वीपर टूटेहुये पर्व्वत गिरतेहैं १८ और कितने ही हाथी दांतोंकी जड़ मुख मस्तक और कमरोंपर बाणोंसे छिदेहुये क्रौंच पक्षी के समान बारम्बार शब्दों को करनेलगे १९ अर्जुनके चलायेहुये गुप्तग्रन्थीवाले भल्लोंसे हाथीके सवार और अन्य मनुष्योंके शिर खण्ड २ होगये २० अर्जुनके बाणोंसे कुंडलधारी कमलोंके समान गिरेहुये शिरोंके समूहोंसे पृथ्वीपर भेट कियेहुये २१ जंत्रों से बँधेहुये प्रत्यंचासे रहित घावोंसे पीड़ित रुधिरसे लिप्त मनुष्य उन युद्ध में घूमते हुये हाथियों के ऊपर चिपटगये २२ कितनेही मनुष्य अच्छी रीतिसे चलायेहुये एकही बाणसे मरकर पृथ्वीपर गिरपड़े २३ नाराचों से अत्यन्त घायल मुखों से रुधिर को डालते हाथी सवारों समेत पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़े जैसे कि वृक्ष रखनेवाले पर्व्वत गिरते हैं २४ अर्ज्जुनने गुप्तग्रन्थीवाले भल्लों से रथके सवारोंकी प्रत्यंचा, ध्वजा, धनुष, युग और ईषादंडोंको चूर्ण २ करदिया २५

वह अर्जुन अपने धनुषमण्डलसे नाचतेहुये के समान नतो बाणों को धनुषपर चढ़ाता दिखाई दिया न खैंचता छोड़ना और उठाता दिखाई दिया २६ और ब-हुत से हाथी नाराचों से अत्यन्त घायल मुखोंसे रुधिर को गेरते एकमुहूर्त्त मेंही पृथ्वीपर गिरपड़े २७ हे महाराज उस कठिन युद्धमें चारों ओर से उठेहुये असं-ख्यों धड़ देखने में आये २८ धनुष, हस्तत्राण, खड्ग, बाजूबन्द रखनेवाली स्व-र्णमयी भूषणों से अलंकृत भुजा युद्धमें कटीहुई दिखाईपड़ी २९ उपस्करों के साथ अधिष्ठान, ईपादण्ड, कर्बधर, चक्र, मथेहुये अक्ष और नानाप्रकार के टूटे हुये शस्त्र ३० जहां तहां फैली हुई ढालें धनुषधारियों की माला आभूषण वस्त्र गिरीहुई बड़ी २ ध्वजा मारेहुये हाथी घोड़े और गिरायेहुये क्षत्रियोंसे वह पृथ्वी महा भयानक देखने में आई ३१।३२ हेमहाराज इसप्रकार अर्जुनके हाथसे मरीहुई महाव्यथित होकर पीड़ामान दुश्शासन की सेनाभागी ३३ इसके पीछे सेना-समेत बाणों से पीड़ामान भयभीत और द्रोणाचार्य्य की शरण को चाहताहुआ दुश्शासन उस शकटव्यूह में चलागया ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिनवतितमोऽध्यायः ९० ॥

इक्यानवेका अध्याय ॥

संजय बोले कि महारथी अर्जुन दुश्शासनकी सेनाको मारकर जयद्रथ को खोजता द्रोणाचार्य्य की सेनाके सम्मुखगया १ फिर वह अर्जुन व्यूहके मुखपर नियत द्रोणाचार्य्य को पाकर श्रीकृष्णजीकी अनुमति से हाथजोड़कर यह व-चनबोला २ कि हे ब्राह्मण आप मुझको कल्याण के साथ ध्यानकरो और मेरे कल्याणको कहो आपकी कृपासे मैं इस कठिनतासे पराजय होनेवाली सेनामें प्रवेश किया चाहताहूं ३ आप मेरे और धर्मराज के पिताके समानहैं और जैसे हमारे हैं उसीप्रकार श्रीकृष्णजीके भी सदैवसे हैं यह आपसे मैं सत्य २ कहताहूं ४ हे निष्पाप ब्राह्मणों में श्रेष्ठ जैसे कि अश्वत्थामाजी आपसे रक्षाके योग्यहैं उसी प्रकार मैं भी रक्षाके योग्यहूं ५ हे द्विपादों में श्रेष्ठ प्रभु मैं युद्धमें आपकी कृपासे सिन्धके राजाको मारना चाहताहूं आप मेरी प्रतिज्ञाकी रक्षाकरो ६ संजय बोले कि अर्जुन के ऐसे ऐसे वचनों को सुनकर मन्दमुसकान करते द्रोणाचार्य्य जी बोले कि हे अर्जुन मुझे जीते विना जयद्रथ का विजय करना तुझको योग्य

नहीं है ७ इतना कहकर हँसतेहुये द्रोणाचार्य्यने तीक्ष्णबाणोंके समूहोंसे अर्जुन को रथ घोड़े सारथी और ध्वजा समेत बाणों से ढकदिया ८ फिर अर्जुन अपने शायकों से द्रोणाचार्य्य के बाणसमूहोंको रोककर भयकारी रूपवाले बड़े बाणों समेत द्रोणाचार्य्य के सम्मुखगया ९ हे राजा अर्जुनने क्षत्रियधर्म में नियतहोकर भक्तिपूर्व्वक उनकी गौरवताकी प्रतिष्ठा करके द्रोणाचार्य्य को नवशायकों से घायल किया १० द्रोणाचार्य्य ने उसके बाणों को अपने बाणों से काटकर उन दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन को विष और प्रकाशित अग्निके समान बाणों से घायलकिया ११ तब अर्जुनने उनके धनुषको काटनाचाहा उस महात्मा अर्जुन के इसप्रकार चिन्ताकरने पर सावधान और पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने बाणों से बड़ी शीघ्रतापूर्व्वक उसकी प्रत्यंचाको काटा और उसके घोड़े ध्वजा और सारथीको भी घायलकिया १२।१३ मन्दमुसकान करते बीर द्रोणाचार्य्यने फिर बाणों से अर्जुन को ढकदिया इसी अन्तरमें अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ आचार्य्यजीको नाशकरने की अभिलाषा करनेवाले अर्जुनने बड़े धनुषको तैयार करके जैसे एक बाणको लेते हैं उसी प्रकार छःसौ बाणों को एकबारही लेकर बड़ी शीघ्रता से छोड़ा १४। १५ फिर दूसरे प्रकार के सातसौ बाणों को और बिना लक्ष्य भेदहुये न लौटनेवाले हजार बाणों को और नानाप्रकार के हजारों बाणों को फेंका फिर अर्जुनने द्रोणाचार्य्य की उस सेनाको मारा १६ उस पराक्रमी महाकर्मी अपूर्व्व युद्ध करनेवाले अर्जुनके अच्छी रीतिसे चलायेहुये बाणों से घायल मरेहुये निर्जीवमनुष्य घोड़े और हाथी गिरपड़े १७ सूत घोड़े और ध्वजासे रहित टूटे शस्त्र जीवन वाले बाणों से पीड़ित रथों के सवार अकस्मात् रथोंसे गिरपड़े १८ पर्व्वतके शिखर वा जलमें निवास करनेवाले बज्र वायु और अग्निसे चूर्ण उखड़ेहुये भस्मीभूत पर्व्वतों के रूप हाथी पृथ्वी पर गिरपड़े १९ अर्ज्जुन के बाणों से घायल हजारों घोड़े ऐसे गिर पड़े जैसे कि हिमाचल की पृष्ठ पर पानीकी वर्षा से घायलहुये हंस गिरते हैं २० जलके समूह के समान अपूर्व्व रथ हाथी घोड़े और पत्तियों के समूह अर्ज्जुनके उन अस्त्र और बाणों से जो कि प्रलयकालके सूर्य्य की किरणों के समान थे मारेगये २१ उस बादल रूप द्रोणाचार्य्य ने बाणरूपी वर्षा की तीव्रता से उस पाण्डवरूप सूर्य्य के बाणरूप किरणों के समूहों को जो कि युद्धमें कौरवों के उत्तम वीरोंके तपानेवाले थे ऐसा ढकदिया

जैसे कि सूर्य्यकी किरणोंको बादल ढकदेताहै २२ फिर द्रोणाचार्य्यने शत्रुओंके प्राणों के भोजन करनेवाले बलसे छोड़ेहुये नाराचनाम वाणसे अर्जुनकी छातीपर घायल किया २३ जैसे कि पृथ्वीके कंपायमान होनेपर पर्व्वत कंपायमान होताहै उसी प्रकार सब अंगों से व्याकुल उस अर्ज्जुनने स्वस्थतापूर्व्वक दृढ़ता को धारण करके बाणोंसे द्रोणाचार्य्य को घायल किया २४ फिर द्रोणाचार्य्य ने पांचबाणोंसे बासुदेवजीको और तिहत्तर बाणोंसे अर्जुनको घायल किया और तीन बाणसे उसकी ध्वजाको काटा २५ हेराजा अपने शिष्यको मारना चाहते पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने पलमात्रमें ही बाणोंकी वर्षासे अर्जुनको दृष्टि से गुप्तकरदिया २६ हमने द्रोणाचार्य्य के शायक नाम बाणोंको मिलकर गिराहुआदेखा और उनका धनुषभी अपूर्व्व मंडलाकार दिखाई पड़ा २७ हे राजा द्रोणाचार्य्य के छोड़ेहुये कंकपक्षोंसे युक्त वह बहुतसे बाण युद्धमें बासुदेवजीके और अर्जुन के सम्मुख गये २८ तब बड़ेबुद्धिमान् वासुदेवजी ने द्रोणाचार्य्य और अर्जुनके उस प्रकारके युद्धको देखकर कार्य्यवत्ता को चिन्तवन किया २९ तदनन्तर वासुदेवजी अर्जुन से यह वचनबोले हे महाबाहु अर्जुन हमारा समय हाथसे न जानेपावे ३० हम द्रोणाचार्य्य को छोड़कर चलें यह बहुत बड़ा काम करनेके योग्यहै फिर अर्जुनने भी श्रीकृष्णजीसे कहा कि जैसी आपकी इच्छाहोय सोई करिये ३१ इसकेपीछे अर्जुन महाबाहु द्रोणाचार्य्यको परिक्रमा करके चला और परिक्रमा करनेवाला अर्जुन बाणोंको छोड़ताहुआ चलागया ३२ इसके पीछे आय द्रोणाचार्य्य जी यह बचन बोले कि हे पांडव कहां जाताहै निश्चयकरके प्रकटहै कि तू युद्धमें शत्रुओंकी बिना बिजय कियेहुये कभी नहीं लौटताहै ३३ अर्जुनबोले कि आप मेरेगुरुहैं शत्रु नहीहैं और मैं शिष्य आपके पुत्रके समानहूं ऐसा मनुष्य कौनहै जो आपको युद्धमें बिजय करसके ३४ संजयबोले कि जयद्रथके मारने में उपाय करनेवाला शीघ्रतासे युक्त महाबाहु अर्जुन इसप्रकार से कहताहुआ उस सेनाके सम्मुखदौड़ा ३५ चक्रकेरक्षक पांचालदेशी, महात्मा युधामन्यु, उत्तमौजस, उस आपकी सेनामें जानेवाले अर्ज्जुन के पीछेचले ३६ हेमहाराज उसकेपीछे जय, यादव कृतवर्मा, काम्बोजका राजा और श्रुतायु ने अर्जुनको रोका ३७ उन्हों के पीछे चलनेवाले दशहजार हाथी थे उनके यह आगे लिखेहुये नामहैं अभीषाह, शूरसेन, शिबय, वशात, मावेल्लिक, ललित्थ,

केकय, मद्रक नारायण, गोपाल, और जितने कि कांबोजदेशियों के समूहहैं ३८।३९ और वह शूरोंके अंगीकृत जिनको कि पूर्व्वसमयमें युद्धके बीच कर्णने विजय किया था वह सब प्रसन्नमन द्रोणाचार्य्यको आगेकरके अर्जुनके सम्मुख गये ४० और पुत्रके शोकसे दुःखी नाशकरनेवाले कालके समान क्रोधयुक्त कठिन युद्ध में प्राणों के त्याग करनेवाले कवचादि से अलंकृत अपूर्व युद्धके करनेवाले गजेन्द्रके समान सेनाओंके मथानेवाले बड़े धनुषधारी पराक्रमी नरोत्तम अर्जुनको रोका ४१। ४२ उन परस्पर बुलानेवाले शूरवीरोंसे अर्जुनका महा कठिन रोमहर्षण करनेवाला युद्ध जारीहुआ ४३ सबने एक साथही उस जयद्रथ के मारने के अभिलाषी आतेहुये पुरुषोत्तम अर्जुनको ऐसा रोका जैसे कि उठे रोगको औषधियां रोकती हैं ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणि एकनवतितमोऽध्यायः ९१ ॥

बानबेका अध्याय ॥

संजय बोले कि उन शूरवीरों से रुका हुआ बड़े पराक्रम वाला रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन शीघ्रही द्रोणाचार्य्य के सम्मुखगया १ जैसेकि सूर्य्य अपनी किरणों को फैलाताहै उसीप्रकार तीक्ष्ण बाणों के समूहों को फैलातेहुये उस अर्जुन ने उससेनाको ऐसे तपाया जैसे कि रोगों के समूह शरीर को संतप्त करते हैं २ घोड़ा मारागया रथटूटा हाथी अपने सवारसमेत गिरायागया छत्रटूटे रथ अपने चक्रोंसे जुदेहुये ३ और बाणों से पीड़ामान सेना चारों ओर से भागी वह युद्ध ऐसा कठिन हुआ कि कुछनहीं जानागया ४ सीधे चलनेवाले बाणों से युद्धमें उनलोगोंके परस्पर प्रहार करनेपर अर्जुनने सेनाको बारम्बार कंपायमान किया ५ सत्यसंकल्पी श्वेतघोड़े रखनेवाला अर्ज्जुन अपनी प्रतिज्ञाको पूराकरना चाहता रथियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य के सम्मुख गया ६ द्रोणाचार्य ने मर्मभेदी पच्चीस बाणोंसे सम्मुख नियतहुये बड़े धनुषधारी अर्जुनको घायलकिया ७ सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन बाणोंके वेगोंके नाश करनेवाले उत्तम बाणोंको छोड़ताहुआ शीघ्रही उनद्रोणाचार्य्य के सम्मुखदौड़ा ८ बड़े बुद्धिमान् ब्रह्मअस्त्रको प्रकट करते हुये उस अर्जुन ने शीघ्रतासे गुप्तग्रन्थी वाले भल्लोंसे उनके चलायेहुये भल्लों को काटा ९ हमने युद्ध में द्रोणाचार्य्य के उस अद्भुतकर्म को देखा

ज़ो उपाय करनेवाला बीर अर्ज्जुन उनको घायल न करसका १० द्रोणाचार्य्य रूपी बादल अपने बाणरूपी बर्षासे अर्जुनरूपी पर्व्वत के ऊपर ऐसे बर्षा करने लगा जैसे कि हजारों जलकी धाराओं को छोड़ता बड़ा बादल होता है ११ हे श्रेष्ठ बाणोंसे बाणोंको काटतेहुये तेजस्वी अर्जुनने उस बाणों की बर्षा को ब्रह्म अस्त्र से नाश करदिया १२ फिर द्रोणाचार्य्य ने शीघ्र चलनेवाले पच्चीस बाणों से अर्जुनको और सत्तर बाणोंसे वासुदेवजी को भुजा और छातियोंपर पीड़ा-वान् किया १३ फिर हँसतेहुये बुद्धिमान् अर्ज्जुनने उस बाणसमूहों के धारण करनेवाले तीक्ष्णबाणों के छोड़नेवाले आचार्य्य को युद्ध में रोका १४ फिर द्रो-णाचार्य्य के हाथसे घायल उन रथियों में श्रेष्ठ दोनों ने उस प्रलयकाल के उठे हुये प्रज्वलित अग्नि के समान दुर्बिजय द्रोणाचार्य्य को हटाया १५ द्रोणाचा-र्य्य के धनुष से निकलेहुये तीक्ष्ण बाणों को हटातेहुये अर्ज्जुन ने कृतवर्मा की सेनाका अत्यन्त नाशकिया १६ वह अर्ज्जुन मैनाक नाम पर्व्वतके समान द्रो-णाचार्य्यको रोकता हुआ मध्य में कृतबर्मा काम्बोज और सुदक्षिण के सम्मुख गया १७ इसके पीछे स्थिरचित्त नरोत्तम कृतवर्मा ने शीघ्रही दशबाणों से उस कौरवों में श्रेष्ठ अजय अर्ज्जुनको घायल किया १८ हे राजा अर्ज्जुनने युद्ध भूमिमें उसको सौ बाणों से घायल किया फिर दूसरे तीन बाणों से अचेत करते हुये कृतवर्मा को घायल किया १९ फिर हँसतेहुये कृतवर्माने माधव वासुदेवजी और अर्ज्जुनको पच्चीस पच्चीस शायकों से घायलकिया २० तब अर्ज्जुनने उस के धनुषको काटकर अग्निज्वाल के समान रूप क्रोधमें सर्प के समान होकर सात बाणों से उसको घायल किया २१ हे भरतवंशी फिर महारथी कृतवर्माने दूसरे धनुषको लेकर बड़ी शीघ्रतापूर्व्वक पांच शायकों से छातीपर घायल कर के २२ फिर भी पांच तीक्ष्ण बाणोंसे अर्ज्जुनको घायल किया अर्ज्जुनने भी उसको नव बाणोंसे छातियोंपर घायल किया २३ श्रीकृष्णजीने कृतबर्माके रथ पर भिड़ेहुये अर्जुनको देखकर चिन्ता करी कि हमारा समय नाशहुआ जाता है २४ यह विचारकर श्रीकृष्णजी अर्जुनसे बोले कि कृतबर्मा पर दया न करो नातेदारीको छोड़कर उसको मथनकरके मारो २५ इसके पीछे वह अर्जुन बाणों से कृतवर्माको अचेत करके शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा कांबोजदेशियोंकी सेनाके सम्मुखगया २६ अर्जुनके सेनामें प्रवेशित होनेपर क्रोधयुक्त कृतवर्मा बाणोंको

लिये धनुषको चलायमान करता दोनों पांचाल देशियोंपर दौड़ा २७ अर्जुनके पीछे चलनेवाले चक्रके रक्षक आतेहुये पांचाल देशियों की कृतबर्मा ने समीप प्रहार करनेवाले बाणों से रोका २८ इसके पीछे भोजवंशी कृतवर्माने उन दोनों को अपने तीक्ष्ण बाणोंसे घायलकिया अर्थात् तीन बाणोंसे युधामन्युको और चार बाणोंसे उत्तमौजसको २९ उन दोनोंने भी उसको दश २ बाणोंसे घायल किया और तीन २ बाणोंसे उसकी ध्वजा और धनुषको भी काटा फिर क्रोधसे मूर्च्छामान कृतबर्माने दूसरे धनुषको लेकर ३०।३१ दोनों बीरोंको धनुषोंसे रहित करके बाणों की बर्षासे ढकदिया तदनन्तर फिर उन दोनोंने दूसरे धनुषों को तैयार करके भोजवंशी कृतवर्मा को घायलकिया ३२ उसी मौकेसे अर्जुन शत्रुकी सेनामें प्रवेश करगया कृतवर्मासे रुकेहुये उन दोनों वीरोंने द्वारको नहीं पाया३३ यद्यपि वह दोनों नरोत्तम दुर्य्योधनकी सेनाओं के मध्य में उपाय करनेवाले थे तौ भी वह द्वार न पासके फिर शीघ्रता करनेवाले शत्रुओं के नाश करनेवाले युद्धमें सेनाओं को पीड़ादेते हुये अर्जुन ने ३४ वशीभूत कृतबर्म्मा को भी नहीं मारा उस प्रकारसे जातेहुये उस अर्ज्जुन को देखकर शूरबीर राजा श्रुतायुध ३५ बड़े क्रोध पूर्व्वक बड़ेभारी धनुष को चलायमान करताहुआ सम्मुख गया और उसने तीन बाणों से अर्ज्जुन को और सत्तर बाणों से श्रीकृष्णजी को मोहित किया ३६ और अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्रनाम बाणसे अर्ज्जुन की ध्वजाको घायल किया उसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन ने झुकी हुई गांठवाले नब्बे बाणों से ३७ ऐसे घायल किया जैसे कि चाबुकों से बड़े हाथी को घायल करते हैं हे राजा उसने अर्जुनके उस पराक्रमको नहीं सहा ३८ और उसको सत्तर नाराचोंसे घायलकिया फिर अर्जुनने उसके धनुष को काट शरावापको तोड़कर ३९ बड़े क्रोध पूर्व्वक छातीपर घायलकिया तब क्रोधसे मूर्च्छामान उस राजाने दूसरे धनुषको लेकर ४० इन्द्रके पुत्र अर्जुन को नौ बाणोंसे भुजा और छातीके ऊपर घायलकिया उसके पीछे शत्रुको पराजय करनेवाले मन्दमुसकान करते अर्जुन श्रुतायुध को ४१ हजारों बाणोंसे पीड़ित किया हे भरतवंशी फिर महारथी अर्जुनने शीघ्रही उसके घोड़ोंको सारथी समेत मारा ४२ और सत्तर नाराचोंसे उसको भी घायलकिया फिर वह पराक्रमी राजा श्रुतायुध मृतक घोड़ेवाले रथको छोड़कर ४३ गदाको हाथमें लेकर युद्धमें अर्जुनके सम्मुखगया वह वीर राजा श्रुता-

युध बरुण देवताका पुत्रथा ४४ जिसकी माता शीतल जल रखनेवाली पर्णा-
शा नामथी हे राजा पूर्व्व समयमें उसकी माता पुत्रके कारण बरुणसे बोली ४५
कि यह मेरा पुत्र शत्रुओंसे अजेय होय फिर प्रसन्न मनसे बरुण देवताने कहा
कि इसको इसका प्रियकारी वरदेताहूं ४६ अर्थात् इसको मैं वह अस्त्रदेताहूं जिस
के द्वारा यह अजेयहोगा और मनुष्यकी अविनाशता तो किसी दशामें भी नहीं
होसक्ती ४७ हे नदियों में श्रेष्ठ सब सृष्टिमात्र को अवश्य मरना है यह तेरा पुत्र
सदैव युद्धमें शत्रुओं से अजेय होगा ४८ निश्चय करके इस अस्त्र के प्रभावसे
तेरे चित्तका संताप दूर होगा ऐसा कहकर बरुण देवताने मंत्र समेत आगे की
हुई गदाको दिया ४९ जिस गदाको पाकर श्रुतायुध सब लोकमें अजेय होग-
या जलके स्वामी भगवान् बरुणदेवता फिर इस्से बोले ५० कि इसगदाको बिना
लड़नेवाले के ऊपर न छोड़ियो जो छोड़ेगा तो तुझपरही गिरेगी और हे समर्थ
यह गदा विपरीत प्रकारसे छोड़नेवालेको भी मारेगी ५१ कालके बर्त्तमान होने
पर श्रुतायुधने उस बचनको नहीं किया और उस बीरोंकी मारनेवाली गदासे उस
ने श्रीकृष्णजी को घायलकिया ५२ पराक्रमी श्रीकृष्णजीने उस गदाको अपने
मोटे कन्धेपर लिया उसने श्रीकृष्णजीको ऐसे नहीं कँपाया जैसे कि वायु मन्दरा-
चल पर्वतको नहीं हिलासक्ती ५३ कृत्याके समान कठिनतासे नियतहोनेवाली
और उसीके सम्मुखजातीहुई उसगदाने युद्धमें नियत क्रोधयुक्त बीर श्रुतायुधको
हीमारा ५४ और उसकोमारकर पृथ्वीमें गिरपड़ी फिर टूटीहुई गदाको और मरेहुये
श्रुतायुधको देखकर ५५ वहां सेनाओंका बड़ा हाहाकार उत्पन्न हुआ अर्थात् श-
त्रुओंके मारनेवाले श्रुतायुधको अपनेही अस्त्रसे मराहुआ देखकर बड़ा हाहा-
कार हुआ ५६ हे राजा जोकि श्रुतायुधने युद्ध न करनेवाले केशवजी के ऊपर
गदाको छोड़ा उसकारणसे गदाने उसीको मारा ५७ जैसे कि वरुण देवताने कहा
था उसीप्रकारसे उसने युद्धमें नाशको पाया और सब धनुषधारियोंके देखते वह
राजा मृतकहोकर पृथ्वीपर गिरा ५८ वह पार्णाशा नदीका प्यारा पुत्र गिराहुआ
ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि वायुसे टूटाहुआ बहुतसी शाखाओंवाला वृक्ष
होताहै ५९ इसके पीछे सब सेना और सेनाओं के अधिपति शत्रुओंके मारने
वाले श्रुतायुध को मराहुआ देखकर भागनिकले ६० उससमय राजा काम्बोज
का पुत्र शूर सुदक्षिण नाम शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा शत्रुके मारनेवाले अर्जुन

के सम्मुख गया ६१ हे भरतबंशी अर्जुनने सात बाणोंको उसपर फेंका वह बाण उस शूरको घायल करके पृथ्वी में प्रवेश करगये ६२ युद्धमें गांडीव धनुषसे भेजेहुये तीच्ण बाणोंसे अत्यन्त घायलहोकर उसने भी अर्जुनको दशबाणों से घायलकिया ६३ और बासुदेवजीको तीन बाणोंसे घायल करके अर्जुनको फिर पांचबाणों से व्यथित किया तब अर्जुन ने उसके धनुषको काटकर ध्वजा को काटा ६४ और बड़ी तीव्रता पूर्वक अर्जुनने दो भल्लोंसे फिर घायलकिया वह अर्जुनको तीनबाणों से घायल करके सिंहनाद को गर्जा ६५ उसक्रोध युक्त शूर सुदक्षिण ने सब लोहेके घंटे रखनेवाली भयकारी शक्ति को गांडीव धनुषधारी के ऊपरफेंका ६६ वह बड़ी उल्का के समान ज्वलित रूप पतंग रखनेवाली महारथी अर्जुनको पाकर उसको घायल करके पृथ्वीपर गिरपड़ी ६७ शक्तिसे अत्यन्त घायल मूर्च्छा से युक्त बड़े तेजस्वी बुद्धिसे परे पराक्रम रखनेवाले होठोंको चाबतेहुये अर्जुन ने अपने को संभालकर कंकपक्षों से युक्त चौदह नाराचों से उसको घोड़ेरथ ध्वजा और सूत समेत घायलकिया ६८। ६६ और दूसरे बहुत बाणोंसे रथको खण्ड २ करदिया फिर उस निष्फल संकल्प और पराक्रमवाले सुदक्षिण कांबोज को ७० अर्जुनने तीच्णधारवाले बाणसे हृदयपर घायल किया वह टूटेकवच और ढीले अंगवाला शूर जिसके मुकुट और बाजूबन्द गिरपड़ेथे ७१ यंत्र से पृथक् होनेवाली ध्वजाके समान ऐसे सम्मुख गिरपड़ा जैसे कि हिमऋतु के अन्त में पर्व्वत के शिखरपर उत्पन्न शोभायमान सुन्दर डालीवाला अच्छी रीतिसे नियत कर्णकार का वृक्षहोताहै बायुसे टूटकर गिरपड़े वह सुन्दर वस्त्रोंपर सोनेके योग्य काम्बोजदेशी मराहुआ पृथ्वीपर शयन करनेवालाहुआ ७२। ७३ वहुमूल्य भूषणों से युक्त शिखरधारी पर्व्वत के समान अपूर्व्वदर्शनीय रूपवाला सुदक्षिण करणीनाम वाण से ७४ अर्जुन के हाथसे गिराया हुआ महावाहु राजा काम्बोज का पुत्र गले में अग्निरूप सुवर्ण की माला रखनेवाला ७५ निर्जीव पृथ्वीपर गिरायाहुआ शोभायमान हुआ इसके पीछे आपके पुत्रकी सब सेना श्रुतायुध और काम्बोज सुदक्षिण को मृतक देखकर भाग गई ७६॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विनवतितमोऽध्यायः ९२॥

तिरानबेका अध्याय॥

संजय बोले हे राजा सुदक्षिण और वीर श्रुतायुध के मारेजाने पर आपकी सेनाके मनुष्य क्रोधयुक्त होकर बड़ीतीव्रता से अर्जुन के सम्मुखगये १ और अभिषाह, शूरसेन, शिबय, वशातय, यहसब भी अर्जुन के बाणों की वर्षा करने लगे २ अर्जुन ने बाणों के द्वारा उनके दूसरे छःसौ शूरवीरोंको मथडाला वह भयभीत होकर ऐसे भागे जैसे कि व्याघ्रसे नीच मृग भागते हैं ३ उनलौटे हुओंने फिर उस अर्जुनको सब ओरसे घेरलिया जोकि युद्धमें शत्रुओंको मारने वाला और शत्रुओं की विजय का अभिलाषी था ४ अर्जुनने गांडीव के छोड़े हुये बाणोंसे शीघ्रही उन सम्मुखता करनेवालों के भुजाओं समेत शिरोंको भी गिराया ५ वहां गिरायेहुये शिरोंसे पृथ्वी बारंबार आच्छादित हुई और युद्धमें काक और गृद्धोंके समूहों से बादलोंकीसी छाया होगई ६ उनके नाशहोनेपर क्रोध और अमर्ष से युक्त श्रुतायु और अच्युतायु यह दोनों अर्जुनसे युद्ध करने लगे ७ उन पराक्रमी ईर्षा से भरे कुलीन दोनों सुन्दर भुजावालों ने उसके ऊपर दाहें वायें होकर बाणोंकी वर्षाकरी ८ हे महाराज वह शीघ्रतासे युक्त दोनों धनुषधारी आपके पुत्रके अर्थ अर्ज्जुनके मारनेके अभिलाषी होकर बड़े यशकी इच्छा करनेवाले थे ९ उन दोनों क्रोधयुक्तों ने झुकी गांठवाले हजार बाणों से अर्ज्जुन को ऐसे पूर्ण करदिया जैसे कि बादल तालाब को पूर्ण करदेते हैं १० उसके पीछे क्रोधयुक्त नरोत्तम श्रुतायुने पीत रंगके तीक्ष्ण तोमरसे अर्ज्जुन को घायल किया ११ वह शत्रुओंका पीड़ा देनेवाला अर्जुन युद्धमें पराक्रमी शत्रु से अत्यन्त घायल केशवजी को मोहित करता बड़ेभारी मोह को प्राप्तहुआ १२ और उसी समयपर अच्युतायुने अत्यन्त तीक्ष्ण शूलसे अर्जुन को घायल किया १३ उसने महात्मा पाण्डव अर्जुनके घावमें नोन लगाया उस समय वह महात्मा अर्ज्जुन भी अत्यन्त घायल होकर ध्वजाके दण्डके आश्रयसे रक्षित हुआ १४ हे राजा इसके पीछे अर्जुन को मृतक मानकर आपकी सेनाके बड़ेसिंहनादहुये १५ वहां अत्यन्त दुःखी चित्त श्रीकृष्णजीने अर्जुन को अचेत देखकर चित्तके प्रियकारी वचनों से अर्जुन को ढाढ़स बँधाई १६ फिर उन रथियोंमें श्रेष्ठ दोनों लक्षभेदियोंने अर्ज्जुन को और वासुदेवजी को बाणोंकी वर्षा करके

चारों ओरसे १७ युद्धमें चक्र कूवर रथ घोड़े ध्वजा और पताका समेत दृष्टिसे गुप्त करदिया वह आश्चर्य्य सा हुआ १८ हे भरतबंशी बड़े धैर्य्यसे विश्वासयुक्त और मरकट जियेहुये के समान उस महारथी अर्जुनने १६ केशवजी समेत अपने रथ को बाणोंके जालोंसे ढका हुआ देखकर और अग्निके समान प्रकाशमान दोनों शत्रुओं को सम्मुख वर्त्तमान देखकर इन्द्रास्त्र को प्रकट किया उस अस्त्रसे झुकी गांठवाले हजारों बाण उत्पन्नहुये २० । २१ उन्होंने उन दोनों बड़े धनुषधारियों को मारा उन दोनोंके छोड़ेहुये बाण आकाशमें वर्त्तमान अर्ज्जुन के बाणसे कट २ कर घूमनेलगे २२ फिर अर्जुन बाणोंकी तीव्रतासे शीघ्र बाणों को काटकर महारथियों से लड़ता हुआ जहां तहां गया २३ अर्जुनके बाणों के समूहों से हाथ और शिरोंसे रहित वह दोनों पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि हवासे उखाड़ेहुये दो वृक्ष होते हैं २४ इन श्रुतायु और अच्युतायु दोनों शूरवीरों का मरना लोकका ऐसा महाआश्चर्य्यकारी हुआ जैसे कि समुद्रका सूखजाना असम्भव और आश्चर्य्यकारी होता है २५ फिर अर्जुन उन दोनोंके ओर पास और पीछे चलनेवाले पचास रथियों को मारकर उत्तम २ शूर लोगों को मारता हुआ भरतवंशियोंकी सेनामें गया २६ हे भरतश्रेष्ठ श्रुतायु और अच्युतायु को मराहुआ देखकर क्रोधसे भरे नियतायु और दीर्घायु २७ उन दोनोंके पुत्र नरों में श्रेष्ठ पिताओंके शोकसे दुःखी नानाप्रकारके बाणोंको फैलातेहुये अर्ज्जुनके सम्मुख गये २८ तब अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुनने एक मुहूर्त्तमेंही गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से उन दोनों कोभी यमलोकमें भेजा २६ जैसे कि हाथी कमलके सरोवर को उथल पुथल करताहै उसी प्रकार सेनाओंके छिन्न भिन्न और मथन करनेवाले अर्ज्जुन को वह सब श्रेष्ठ क्षत्रिय रोकनेको समर्थ नहीं हुये ३० हे राजा उन क्रोधयुक्त शिक्षा पायेहुये हजारों अंगदेशी हाथियोंके सवारोंने गजेन्द्रोंके द्वारा पाण्डव अर्जुन को रोका ३१ दुर्योधनके आज्ञावर्त्ती पूर्वीय और दक्षिणीय राजा जिनमें कलिंगका राजा मुख्य और अग्रगामीथा उन्होंने पर्व्वताकार हाथियोंकी सवारियोंसे सम्मुखताकरी ३२ भयकारीरूप अर्जुनने उन आनेवाले राजाओंके शिर और अच्छी अलंकृत भुजाओं को भी गाण्डीव धनुषसे छोड़ेहुये बाणोंके द्वारा बहुतही शीघ्रतासे काटडाला ३३ उन शिरों और बाजूबन्द रखनेवाली भुजाओंसे आच्छादित पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि सुवर्णके पाषाण और

सर्पोंसे संयुक्त होतीहै ३४ विशिख नाम बाणोंसे टूटीहुई भुजा और मथेहुये शिर पृथ्वीपर पड़ेहुये ऐसे दृष्टिपड़े जैसे कि वृक्षोंसे गिरेहुये पक्षी होतेहैं ३५ बाणोंसे घायल हजारों हाथी ऐसे दिखाई पड़े जिनके शरीरसे इसप्रकार रुधिर जारी था जैसे कि गेरू धातु रखनेवाले झिरनाओंसे संयुक्त पर्वत होतेहैं ३६ हाथीकी पीठपर सवार विकृत दर्शनवाले म्लेच्छ उस अर्जुनके तीक्ष्ण बाणोंसेमरेहुये अस्त्रोंसे ताड़ितहुये ३७ हे राजा नानाप्रकारकी पोशाकों से शोभित बहुत भांति के शस्त्रोंकेसमूहोंसे संयुक्त रुधिरमें लिप्त शरीर बड़े अपूर्व्व रूपके बाणोंसेमरेहुये दिखाई पड़े ३८ अर्जुनके बाणोंसे घायल हाथियोंने रुधिरोंकी वमनकरी और पीछेवाले अन्य हजारों सवारों समेत टूटेहुये शरीरवाले हुये ३९ कितनेही हाथी पुकार २ कर पृथ्वीपर गिरपड़े और दिशाओंमें घूमने लगे और बहुतसे अत्यन्त भयभीत हाथियोंने अपनेही मनुष्योंको मर्द्दनकिया ४० जो कि तीव्र विषके समान समीपही युद्ध करनेवाले हाथीथे और जो असुर मायाके जाननेवाले भयकारी रूप और नेत्रों से संयुक्त ४१ काकवर्ण दुराचारी स्त्रियों के लोभी उपद्रवी वारदशक और वाह्लीक युद्ध करनेवाले थे ४२ और मतवाले हाथी के समान पराक्रमी द्राविड़ लोगभी युद्धकर्त्ताथे और कालके समान प्रहार करनेवाले वह म्लेच्छ जो कि वशिष्ठजी की गौ की योनिसे उत्पन्नहुयेथे ४३ दारव, अतिसार, दरद, हजारों पुंड्र पौर लाखों व्रात ज्ञातिवाले जिनकी संख्या करनी असंभवहै ४४ वह सब तीक्ष्ण बाणों से अर्जुनके ऊपर वर्षा करनेवाले हुये नानाप्रकार के युद्ध में कुशल उन म्लेच्छोंने अर्जुन को बाणों से ढकदिया ४५ अर्जुनने भी उनके ऊपर शीघ्रही बाणोंकी वर्षाकरी उस युद्ध में बाणों की ऐसी शोभाहुई जैसे कि शलभ पक्षियों के समूहों की होतीहै ४६ अर्जुनने बाणोंसे सेनाके ऊपर बादल के समान छायाकरके उन मुंड अर्द्धमुंड जटाधारी अपवित्र और जटिलमुखी ४७ भागेहुये सब म्लेच्छोंको अस्त्रके प्रतापसे नाश करदिया वह पहाड़ियोंके हजारों समूह बाणोंसे घायल युद्धमें भयभीत होकर भागे जो पर्व्वतके दुर्गमस्थानों में रहनेवालेथे ४८ और तीक्ष्ण बाणोंसे गिरेहुये हाथी घोड़े सवार और म्लेच्छों के रुधिरको पृथ्वीपर बगले कंक और भेड़ियोंने बड़ी प्रसन्नतासे पिया पत्ती घोड़े रथ और हाथियो से प्रच्छन्नरूप सेतु बाणों की वर्षा रूप नौका रखनेवाली भयकारी बालरूप शेवल और शाड्वल रखनेवाली महाभयानक रुधिरके समूहोंसे

तरंगवाली नदीको जारीकिया ४९। ५० टूटीहुई उंगली सूरत छोटी २ मछली रखनेवाली प्रलयके समय कालरूप हाथियोंसे दुर्गम्य अत्यन्त रुधिर से पूर्ण नदी को ५१ राजकुमार हाथी घोड़े और रथ सवारोंके शरीरोंसे जारीकिया जैसे कि इन्द्र के वर्षा करनेपर स्थल और गर्त्त नहीं रहते हैं ५२ उसीप्रकार सब पृथ्वी रुधिरसे भरीहुई होगई उन क्षत्रियों में श्रेष्ठ अर्जुनने छः हजार अश्वसवार शूरबीरों को और एक हजार उत्तम क्षत्रियों को ५३ मृत्युके लोक में भेजा और बिधिके अनुसार अलंकृत हजारों हाथी बाणोंसे घायल ५४ पृथ्वी को पाकर ऐसे सोगये जैसे कि बज्रसे प्रहार कियेहुये पर्व्वत पृथ्वीपर गिर पड़तेहैं वह अर्जुन घोड़े रथ और हाथियोंको मारताहुआ ऐसे घूमनेवाला हुआ ५५ जैसे कि मतवाला हाथी कमलके वनको मर्द्दन करताहुआ घूमताहै और जैसे कि बहुतसे बृक्ष लता गुल्म सूखे ईंधन घास और कोमल तृण रखनेवाले ५६ बनको बायुसे प्रेरित अग्नि भस्म करताहै उसी प्रकार श्रीकृष्णरूपी वायुसे प्रेरित अर्जुनरूपी अग्निने आप की सेनारूपी बनको भस्म करदिया ५७ बाणरूपी ज्वाला रखनेवाले पांडव अर्जुनरूप क्रोधभरे अग्निने भस्म करदिया रथके आश्रय स्थानोंको खाली करता और मनुष्यों से पृथ्वी को आच्छादित करता ५८ बज्रके समान बाणोंसे पृथ्वी को रुधिर से पूर्ण करता धनुषधारी अर्जुन युद्धमें घूमनेलगा ५९ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन भरतबंशियों की सेना में प्रविष्टहुआ उस जातेहुये को श्रुतायु और अम्बष्टने रोका हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र अर्जुनने शीघ्रही उस उपाय करनेवाले के घोड़ोंको कंकपक्षसे जटित तीक्ष्ण बाणोंसे गिराया ६०।६१ और दूसरे बाणोंसे उस के धनुष को काटकर अर्ज्जुन घूमनेलगा फिर क्रोधसे व्याकुल नेत्र अम्बष्ट ने गदाको लेकर ६२ युद्ध में महारथी अर्ज्जुन और केशवजी को सम्मुखपाया हे भरतबंशी इसके पीछे गदाको उठाकर प्रहार करतेहुये वीरने ६३ रथको गदासे रोंककर केशवजी को घायल किया फिर गदासे पीड़ित केशवजी को देखकर शत्रुओंके वीरोंका मारनेवाला ६४ अर्जुन अम्बष्टके ऊपर अत्यन्त क्रोधितहुआ उसके पीछे सुनहरी पुंखवाले बाणों से उस रथियों में श्रेष्ठको गदासमेत ६५ युद्धमें ऐसे ढकदिया जैसे कि उदय होनेवाले सूर्य्य को बादल ढकदेताहै तब अर्जुन ने दूसरे बाणों से उस महात्माकी गदाको भी ६६ टुकड़े २ किया वह आश्चर्य्यसा हुआ फिर उसने उस गिरीहुई गदाको देखकर दूसरी बड़ी गदाको

लेकरके ६७ अर्जुन और वासुदेवजीको वारंवार घायल किया अर्जुन ने गदा समेत उठीहुई उसकी उनदोनों भुजाओंको क्षुरप्रनाम दो बाणोंसे काटा ६८ जो कि इन्द्रकी ध्वजा के समान थीं और दूसरे बाणसे शिरको भी काटा हे राजा वह मृतक हुआ राजा पृथ्वीको शब्दायमान करता ऐसे गिरपड़ा ६९ जैसे कि यन्त्रसे पृथक् इन्द्रकी छोड़ीहुई ध्वजा गिरती है तब रथकी सेनासे घिरा सैकड़ों हाथी और घोड़ोंसे युक्त अर्जुन ऐसे दिखाई दिया जैसे कि बादलों से घिराहुआ सूर्य्य होताहै ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिनवतितमोऽध्यायः ९३ ॥

चौरानबेका अध्याय ॥

संजय बोले इसके अनन्तर दुःखसे पार होनेके योग्य द्रोणाचार्य्य और कृतवर्म्माकी सेनाओं को छिन्न भिन्न करके जयद्रथके मारनेकी इच्छासे अर्ज्जुन के प्रवेशित होनेपर १ और अर्जुनके हाथसे काम्बोजके पुत्र सुदक्षिणके मारे जाने और पराक्रमी श्रुतायुधके मरनेपर २ चारों ओरसे सेनाओं के भागने और नाश होनेपर आपका पुत्र अपनी सेना को छिन्न भिन्न देखकर द्रोणाचार्य्यके पास गया ३ अर्थात् एक रथके द्वारा शीघ्रता से चलकर द्रोणाचार्य्य से बोला कि वह पुरुषोत्तम अर्ज्जुन इस सेना को गर्द मर्द करके गया ४ बुद्धिसे बिचारिये कि इन मनुष्योंके नाश करनेवाले कठिन युद्धमें अर्ज्जुनके नाशके अर्थ शीघ्रतापूर्व्वक क्या करना चाहिये ५ जैसे रीति से वह पुरुषोत्तम अर्ज्जुन जयद्रथ को न मारसके उसी प्रकार को करिये आपका भलाहोगा आपही हमारे परम गतिरूप रक्षा के आश्रय हो ६ क्रोधरूप वायु से प्रेरित यह अर्ज्जुनरूप अग्नि मेरी सेनारूपी वन को ऐसे भस्म करे देताहै जैसे कि उठाहुआ अग्नि सूखे वन को जलाता है ७ हे शत्रुओंके तपानेवाले सेना को पृथक् २ करके अर्ज्जुनके प्रवेश करनेपर जयद्रथके रक्षकों ने बड़े संशय को पाया है ८ हे ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ राजाओं का यह पक्का बिचार और सम्मत था कि जीवता हुआ अर्ज्जुन द्रोणाचार्य्य को उल्लंघन नहीं करेगा ९ हे बड़े तेजस्वी जो यह अर्ज्जुन आपके देखतेहुये दूर चलागया तो अब सबको मैं व्याकुलही मानताहूं और यह सेना मेरी नहीं है १० हे महाभाग मैं तुमको पाण्डवों के हितमें प्रवृत्तचित्त मानता हूं

और हे ब्रह्मन् इसी प्रकार करनेके योग्य कर्म्म को विचारता हुआ अचेत होता हूं मैं सामर्थ्य के अनुसार आपमें उत्तमवृत्ती को बर्त्तताहूं ११ और सामर्थ्यकेही अनुसार चाहताहूं आप उसको नहीं ध्यान करतेहो १२ हे बड़े पराक्रमी तुम सदैव भक्ति करनेवाले हमलोगों को नहीं चाहतेहो और हमारे अप्रिय करने में चित्तसे प्रवृत्त पाण्डवों को सदैव चाहतेहो १३ तुम हमारे पास अपनी जीविका करते और हमारे अप्रिय में प्रीति रखनेवाले हो शहदसे डूबी हुई छूरीके समान आप को मैं नहीं जानताहूं १४ जो आप पाण्डव अर्ज्जुनके रोकने में मुझको वर नहीं देते तो मैं घर जातेहुये जयद्रथ को नहीं रोकता १५ आपसे रक्षा को न जाननेवाले और मुझ से समझाया हुआ सिन्धका राजा जयद्रथ आश्वासित कियागया और मोहसे मृत्युके अर्थ दियागया १६ यमराजकी भी डाढ़में बर्त्तमान हुआ मनुष्य चाहै बच जाय परन्तु युद्धभूमि में अर्ज्जुनके आधीन हुआ जयद्रथ कभी नहीं बच सक्ता है १७ हे रक्त घोड़े रखनेवाले आप वही कीजिये जिस्से कि जयद्रथ आपत्ति से बचे आप मुझ दुःखीके बचनोंपर क्रोध न करिये किसी प्रकार से जयद्रथ को बचाओ १८ द्रोणाचार्य्य बोले कि मैं तेरे बचनों में दोष नहीं लगाता हूं तू मेरे पुत्र अश्वत्थामा के समान है तुझ से सत्य सत्य कहता हूं हे राजा तू उसको अंगीकार कर श्री कृष्णजी बड़ेही उत्तम उस के सारथीहैं और उसके उत्तम घोड़े भी शीघ्रगामी हैं अर्जुन छोटासा भी बिवरकर के शीघ्र चलाजाता है १९ । २० शीघ्र चले जानेवाले अर्ज्जुन के एक कोश पर फेंके हुये और रथके पीछे पड़े हुये बाणों के समूहों को क्या तू नहीं देखताहै २१ अब मैं वृद्ध होकर शीघ्र चलने में समर्थ नहींहूं और हमारी सेनाके मुखपर पांडवों की यह सेना सम्मुख नियतहै २२ सब धनुषधारियों के देखतेहुये भी मैं युधिष्ठिर के पकड़ने को समर्थ हूं हे महाबाहु मैंने उस प्रकार क्षत्रियों के मध्यमें प्रतिज्ञा करीहै २३ हे राजा वह युधिष्ठिर अर्जुन से पृथक् होकर मेरे सम्मुख बर्त्तमान है इस हेतुसे मैं व्यूहके मुखको छोड़कर अर्जुन से नहीं लड़ूंगा २४ शूर मनुष्यों का रखनेवाला समान कुल और कर्म रखनेवाले अकेले शत्रु से भयको त्यागकर तूही क्यों नहीं लड़ता तूही तो इस पृथ्वी भरेका स्वामीहै २५ राजा शूरबीर कर्मका करनेवाला विजय करने में सावधान शत्रुओंके पुरके विजय करनेवाले और पराक्रमी होकर तुम आपही वहांजाओ जहां कि पांडव

अर्जुन है २६ दुर्योधन बोला कि हे आचार्य्यजी सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ आप को भी उल्लंघन करनेवाला अर्जुन कैसे मुझसे पराजय होनेको योग्यहै २७ वज्रधारी इन्द्रभी युद्धमें चाहै विजय कियाजाय परन्तु शत्रुओं के पुरोंका विजय करनेवाला अर्जुन युद्धमें विजय करने के योग्य नहीं होसक्ता २८ जिसने भोजवंशी कृतवर्मा और देवता के समान आपको भी अस्त्रों के प्रताप से विजय किया और राजा श्रुतायु को मारकर २९ सुदक्षिण श्रुतायुध और श्रुतायु अच्युतायु को भी मारकर लाखों म्लेच्छों को मारा ३० युद्ध में अग्नि के समान भस्म करनेवाले अजेय अस्त्रविद्यामें कुशल पांडव अर्जुनसे मैं कैसे लड़सकूंगा ३१ अब आप युद्धभूमि में उसके साथ मेरे युद्धको योग्य और उचित समझतेहो मैं दासके समान आपकी स्वाधीनता मेंहूं आप मेरे यशकी रक्षाकरो ३२ द्रोणाचार्य्य बोले कौरव तू सत्य कहताहै बास्तवमें अर्जुन दुर्जय है अब वही करूंगा जिस्से तू उसको सहैगा ३३ अब लोक में धनुषधारी बासुदेवजीके देखतेहुये तुझसे भिड़ेहुये अर्जुनको और अपूर्व्व युद्धको देखेंगे ३४ हे राजा यह स्वर्णमयी कवच तेरे शरीरपर उस प्रकार का बांधता हूं जिस्से कि बाणयुद्ध में व अस्त्रयुद्धमें तुझपर कोई प्रहार नहीं करसके ३५ जो असुर यक्ष सर्प राक्षस देवता और मनुष्य समेत तीनों लोकभी तुझसे युद्धकरें तौभी तुझको किसी प्रकार का भय नहीं होसक्ता ३६ श्रीकृष्ण अर्जुन अथवा दूसरा कोई भी शस्त्रधारी युद्धमें तेरे कवचमें बाणके प्रवेश करनेको समर्थ नही होगा ३७ सो अब तू शीघ्रतासे उस कवचको शरीर में धारणकरके आपही युद्धमें क्रोधयुक्त अर्ज्जुनके सम्मुखहो वह तुझको न सहसकेगा ३८ संजय बोले कि शीघ्रता करनेवाले द्रोणाचार्य्य ने इस प्रकार से कहकर आचमन कर विधिपूर्व्वक मंत्रको जपते हुये अत्यन्त अपूर्व्व प्रकाशमान कवचको बांधा ३९ अपनी विद्या से लोकों को आश्चर्य्य युक्त करनेके अभिलाषी ब्रह्मज्ञानियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य ने आपके पुत्रके और अर्जुन के उस बड़े युद्ध में यह वचन कहा ४० ब्रह्म ब्रह्मा और ब्राह्मण लोगभी तेरे कल्याणको करो और हे भरतवंशी जो २ उत्तम सर्प हैं वह भी तेरे कल्याणको करो ४१ ययाति, नहुष, धुंधुमार, भगीरथ, सब राजऋषि यह सब भी सदैव तेरे कल्याण को करो ४२ सदैव बड़े युद्धमें एक चरण रखनेवालों से भी तेरा कल्याण होय ४३ स्वाहा स्वधा और शची भी तेरा सदै-

व कल्याण करें हे निष्पाप लक्ष्मी अरुन्धती भी तेरा कल्याणकरें ४४ हे राजा असित, देवल, विश्वामित्र, अंगिरा, वशिष्ठ, कश्यप यह भी तेरा कल्यणाकरो ४५ धाता विधाता लोकेश्वर दिगीश्वरों समेत सब दिशा और षड़ानन कार्त्तिकेयजी भी अब तुझ को कल्याण करो ४६ भगवान् सूर्य्य सब प्रकारसे तेरी रक्षाकरो चारो दिग्गज अर्थात् ऐरावत, वामन, अंजन, सार्बभौम, पृथ्वी, आकाश और ग्रह तेरे कल्याण को करो ४७ हे राजा जो यह सर्पों में श्रेष्ठ शेषनाग नीचेसे पृथ्वी को सदैव धारण करताहै वह तुझको कल्याणहो ४८ हे गान्धारी के पुत्र पूर्व्व समय में वृत्रासुरने युद्धमें पराक्रम करके उत्तम देवताओं को बिजयकिया और हजारों मारडाले ४९ तब महाअसुर वृत्रासुर से भयभीत तेजबलसे रहित इन्द्र समेत सब देवता ब्रह्माजीकी शरणमें गये ५० और उनसे देवताओं ने कहा कि हे देवताओं में श्रेष्ठ वृत्रासुरसे मर्द्दन कियेहुये देवताओं की आप रक्षाकरिये हे सुरोंमें शिरोमणि हमको भयसे निर्भयकरो ५१ फिर ब्रह्मा जी एक पक्ष में नियत बिष्णुको और देवताओं में श्रेष्ठ इन्द्रादिक देवताओं से यह सत्य २ बचन बोले ५२ कि इन्द्र और ब्राह्मणों समेत सब देवता सदैव मुझ से रक्षाकरने के योग्यहैं त्वष्टा देवताका तेज बड़ी कठिनता से सहने के योग्यहै जिससे कि यह वृत्रासुर उत्पन्नहुआहै ५३ हे देवताओ पूर्व्व समयमें त्वष्टाने महादेवजीसे बरको पाकर दशलाख वर्षतक तपस्या करके वृत्रासुरको उत्पन्नकिया ५४ वह महाबली देवताओं का शत्रु उन शिवजी की कृपासे तुमको मारता है शिवजीके स्थानको बिना गयेहुये वह भगवान् शिव दिखाई नहीं देते ५५ उन शिवजीको देखकर उस वृत्रासुरको बिजय करोगे इसहेतुसे तुम शीघ्रही उस मन्दराचल पर्व्वतपर जाओ जिसपर कि वह तपों के उत्पत्ति स्थान दक्षके यज्ञके नाशक पिनाक धनुषधारी सब जीवधारियोंके ईश्वर भगनेत्रको मारनेवाले निवासकरते हैं फिर उन देवताओंने ब्रह्माजी समेत मन्दराचलपर जाकर ५६ । ५७ उस तेजपुंज कोटिसूर्य्य के समान प्रकाशित शिवजी को देखा तब शिवजी ने कहा कि हे देवताओ तुम्हारा आना कल्याणकारी हो कहो मैं तुम्हारा कौनसा भयेजन करूं ५८ मेरादर्शन सफल है इसहेतुसे तुम्हारा अभीष्ट सिद्धहोय यह वचन शिवजी के सुनकर सब देवताओंने उन शंकरजी को उत्तरदिया ५९ कि हे स्वामी वृत्रासुरने हम सबका तेज हरणकिया आप देवताओंके रक्षा स्थानहो

हे देवदेव उसके प्रहारों से घायलहुये देवताओं को देखो ६० हम सब आपकी शरणमें आयेहैं हे महेश्वरजी आप हमारे रक्षाश्रय हूजिये शिवजी बोले कि हे देवताओ तुमको विदित है जैसे कि त्वष्टा देवताके तेज से सृष्टि और भयकारी ज्ञानियों से भी कठिनता पूर्व्वक हटाने के योग्य बड़ी पराक्रमी यह कृत्याहै ६१ मुझको सब देवताओंकी सहायता अवश्य करनी उचितहै हे इन्द्र मेरे शरीरसे उत्पन्न बड़े प्रकाशमान इस कवच को ले हे देवेन्द्र चित्तसे कहेहुये इस मंत्र के साथ शरीर में धारणकरके जाओ ६२ द्रोणाचार्य्य बोले कि वरदाता शिवजी ने यह कहकर उस कवच और मन्त्रको दिया उस कवचसे रक्षित वह इन्द्र वृत्रासुर की सेनापर आया ६३ बड़े युद्धमें छोड़ेहुये नानाप्रकारके शस्त्रोंके समूहोंसे उस कवचका तोड़ना असंभवथा ६४ इसके पीछे इन्द्रने आपही युद्ध में वृत्रासुर को मारा और मंत्ररूप जोड़ बन्दवाले उस कवचको अंगिराऋषिको दिया ६५ और अंगिरा ने बड़े मंत्रज्ञ अपने पुत्र बृहस्पतिजी को सिखाया और बृहस्पतिजीने महात्मा अग्निवेश्य ऋषिको शिक्षाकरी ६६ हे राजाओंमें श्रेष्ठ फिर अग्निवेश्य ने मुझको दिया अब उस मंत्रसे तेरे कवचको तेरे शरीरकी रक्षाके निमित्त बांधताहूं ६७ संजय बोले आचार्य्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने इसप्रकार कहकर आप के बड़े तेजस्वी पुत्रसे बड़े धीरेपने से फिर यह वचन कहा ६८ कि हे भरतवंशी तेरे कवचको मैं ब्रह्मसूत्रसे ऐसे बांधताहूं जैसे कि पूर्व्व समय में ब्रह्माजीने युद्ध में विष्णुके शरीरमें बांधाथा ६९ और जिस प्रकार तारासे संबंध रखनेवाले युद्ध में ब्रह्माजीने इन्द्रके दिव्य कवचको बांधाथा उसी प्रकार मैं इस कवचको तेरे बांधताहूं ७० द्रोणाचार्य्य ब्राह्मणने मंत्रके द्वारा विधि पूर्व्वक उस कवचको बांधकर राजाको बड़े युद्धमें लड़नेके निमित्त भेजा ७१ महात्मा आचार्य्य से कवच धारण कियेहुये वह महाबाहु प्रहार करनेवाले त्रिगर्तदेशियों के हजार रथ ७२ ब बलसे मतवाले हजार हाथी और नियुत संख्यावाले घोड़े और अन्य अन्य महारथियों समेत महाबाहु दुर्योधन अनेक प्रकार के बाजों के शब्दों समेत अर्ज्जुन के रथके पास ऐसे गया जैसे कि विरोचनका पुत्र बलि इन्द्रके पास गया था ७३।७४ हे भरतवंशी इसके पीछे बड़े गम्भीर समुद्रमें जातेहुये कौरवको देख कर आपकी सेनाओं के बड़े शब्द हुये ७५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुर्नवतितमोऽध्यायः ९४ ॥

पञ्चानबेका अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज युद्धमें अर्ज्जुन और श्रीकृष्णजीके प्रवेश करनेपर और पीछेकी ओर से पुरुषोत्तम दुर्योधनके जानेपर १ पाराडवलोग सोमकों समेत तीव्रता पूर्व्वक बड़े शब्द को करतेहुये द्रोणाचार्य्य के सम्मुख गये और युद्धजारी हुआ २ व्यूहके आगे पाराडवों और कौरवोंका वह युद्ध अपूर्व कठिन और रोमहर्षण करनेवाला हुआ ३ वैसा युद्ध हमने कभी न देखा था न सुना था जैसा कि वह मध्याह्नके समय हुआ ४ प्रहार करनेवाली अलंकृत सेनावाले उन सब पाराडवोंने जिनमें मुख्य धृष्टद्युम्न था बाणोंकी बर्षा से द्रोणाचार्य्य की सेना को ढकदिया ५ हम सबलोग शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य को आगे करके बाणों से उन पाराडवों के ऊपर जिनमें कि प्रधान धृष्टद्युम्न था बर्षा करने लगे ६ जैसे कि हिमऋतुके अन्तमें वायुसे युक्त बड़े बादलोंकी शोभा होती है उसी प्रकार सुन्दर रथोंसे अलंकृत दोनों सेना शोभायमानहुई ७ फिर उन दोनों बड़ी सेनाओंने भिड़कर ऐसाबड़ा वेगकिया जैसे कि बर्षाऋतुमें बहुत जलरखने वाली गंगा और यमुना दोनों नदी परस्पर करती हैं ८ नाना प्रकारोंके शस्त्ररूप वायु आगे रखनेवाला हाथी घोड़े और रथसे संयुक्त गदारूपी बिजली से महा भयानक युद्धरूपी बड़ा बादल ९ द्रोणाचार्य्यरूपी वायुसे उठाया हुआ बाणरूपी हज़ारों धाराओंका रखनेवाला पाराडवीय सेनारूपी अग्निसे घायल बड़ी सेना रूपी बादल वर्षा करनेलगा १० जैसे कि वर्षाऋतुमें भयकारी प्रवेश करनेवाला बड़ा वायुका वेग समुद्र को व्याकुल करताहै उसी प्रकार द्रोणाचार्य्यने पाराडवों की सेना को छिन्न भिन्न करदिया ११ और वह सब भी उपायों को करते हुये द्रोणाचार्य्य के सम्मुख ऐसे गये जैसे कि अत्यन्त पराक्रमी जलका समूह बड़े पुलके तोड़नेकी इच्छासे जाताहै १२ द्रोणाचार्य्यने उन युद्धमें क्रोधरूप पांडव और पांचालों को केकयों समेत ऐसे रोका जैसे कि जलके समूहों को पर्व्वत रोकताहै १३ उसके पीछे बड़े पराक्रमी शूरवीर अन्य राजाओंने घेरकर पांचाल को रोका १४ तब सेनाके पराजय करनेके अभिलाषी नरोत्तम धृष्टद्युम्नने पाराडवोंके साथ होकर युद्धमें द्रोणाचार्य्य को घायल किया १५ जैसे कि धृष्टद्युम्न और द्रोणाचार्य्यने बाणोंकी वर्षा को किया उसको सुनो कि १६ खड्गरूपी वायु

आगे करनेवाले शक्ति प्रास दुधारे खड्गों से युक्त प्रत्यंचारूप विद्युत शब्द कहनेवाला धृष्टद्युम्नरूप बादल १७ सब दिशाओं से बाण धारारूप पाषाणों की वृष्टि को उत्पन्न करता उत्तम रथ घोड़ोंके समूहों को मारता सेना को छिन्न भिन्न करनेवाला हुआ १८ द्रोणाचार्य्यने पाण्डवोंके जिस २ रथोंके समूहोंको बाणोंसे घायल किया उसी २ ओरसे धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्य को बाणों से हटाया १९ हे भरतवंशी इस रीति से उपाय करनेवाले द्रोणाचार्य्यकी सेना धृष्टद्युम्न को पाकर तीन ओरसे छिन्न भिन्न होकर पृथक् २ होगई २० कोई तो कृतवर्मा के पास चलेगये कोई राजा जलसन्धके समीप जाकर शरण हुये और बहुत से पाण्डवों से घायल होकर द्रोणाचार्य्यही के शरणमें गये २१ रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य सेनाओं को पृथक् २ करते थे और महारथी धृष्टद्युम्न भी उनकी उन सेनाओं को छिन्न भिन्न करता था २२ उस दशावाले आपके पुत्रों पाण्डव और सृंजयों से ऐसे घायल होते थे जैसे कि रक्षकों से जुदा हुआ पशुओंका समूह बनमें बहुतसे मांसाहारी जीवों से व्याकुल होताहै २३ उस कठिन युद्धमें मनुष्योंने धृष्टद्युम्नके हाथसे अचेतहुये शूरबीरों को कालका निगला हुआ माना २४ जैसे कि अन्यायी राजा का देश दुर्भिक्ष व रोगोपद्रव में अथवा चोरों से दुखी होकर भागताहै उसी प्रकार आपकी सेना पाण्डवोंके हाथसे आपत्तिमें फँसीहुई व्याकुलहुई २५ सूर्य्यकी किरणोंसे युक्त शस्त्र और कवचोंमें और उसीप्रकार सेनाकी धूलसे घायलहुये नेत्रोंमें २६ सेनाओं के शिरों के खंड२ होने वा पांडवों के हाथ से मारेजाने पर क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य ने बाणों से पांचालोंको पृथक् २ कर दिया २७ उन सेनाओंके मर्द्दन करते बाणों से भी मारतेहुये द्रोणाचार्य्य का रूप कालाग्निके समान प्रकाशमान हुआ २८ हे राजा उस महारथीने युद्धमें एकएक बाणसे रथ हाथी घोड़े और पत्तियों को भी घायलकिया २९ हे भरतवंशी प्रभु धृतराष्ट्र पांडवों की सेनाओ में कोई ऐसा नहीं था जिसने युद्धमें द्रोणाचार्य्य के धनुपसे गिरेहुये बाणों को सहलियाहो ३० हे राजा द्रोणाचार्य्य के बाणों से व्याकुल सूर्य्य से संतप्तहुये के समान धृष्टद्युम्नकी वह सेना जहां तहां घूमी ३१ उसी प्रकार धृष्टद्युम्न के हाथ से छिन्न भिन्न आपकी भी सेना सब ओर से ऐसी अग्निके समान प्रज्वलितहुई जैसे कि अग्निसे सूखाहुआ वन ज्वलितहोता है ३२ द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्न के बाणों से सेनाओं के पीड़ामान होनेपर सब

ओर को मुख रखनेवाले सम्पूर्ण बीर प्राणों को त्याग करके बड़े पराक्रम से लड़ते थे ३३ हे भरतबंशियो में श्रेष्ठ आपके और पांडवों के शूरबीरों में ऐसा कोई नहीं हुआ जिसने भयसे युद्ध को त्याग कियाहो ३४ बिविंशति चित्रसेन और महारथी बिकर्ण सगेभाइयों ने कुन्तीके पुत्र भीमसेन को चारों ओर से घेरा ३५ आपके पुत्रोंके पीछे चलनेवाले यह आगे लिखेहुये बीरथे बिन्द, अनबिन्द, अवन्तिदेशका राजा और पराक्रमी क्षमधूर्त्ति ३६ महारथी तेजस्वी कुलवान राजा बाह्लीकने सेना और मंत्रियोंके साथ द्रौपदीके पुत्रोंको रोककर ३७ हजारों शूरबीरों के सहित राजा शैब्य गोवासन काशी के राजाके पुत्र पराक्रमी अभिभुवको रोका ३८ मद्रदेशाधिपति राजा शल्यने अग्निके समान प्रकाशमान अजात शत्रु राजा युधिष्ठिरको घेरलिया ३९ क्रोधयुक्त असहनशील शूर दुश्शासन अपनी सेनाको नियतकरके युद्धके बीच रथियोंमें श्रेष्ठ सात्यकीके सम्मुख गया ४० अपनी सेनासे अलंकृत इसने कवचधारी अपने चारसौ बड़े धनुषधारियों समेत चेकितानको रोका ४१ फिर शकुनीने धनुष शक्ति और खड्ग हाथमें रखनेवाले सातसौ गान्धारदेशी सेनाके साथ जाकर माद्री के पुत्रको रोका ४२ मित्रके अर्थ शस्त्रोंके उठानेवाले बड़े धनुषधारी अवन्तिदेशोंके राजा बिन्द अनुबिन्द प्राणों को त्यागकरके मत्स्यदेशके राजा बिराटके सम्मुखगये ४३ सावधान बाह्लीक ने द्रुपद के पुत्र अजेय पराक्रमी और रोकनेवाले शिखण्डी को रोका ४४ फिर युद्धमें निर्द्दय प्रभद्रक और सौबीरके साथ राजा अवन्तीने राजा द्रुपदके पुत्र क्रोधरूप धृष्टद्युम्नको रोका ४५ अलायुध नाम राक्षस युद्ध में आते हुये क्रोधसे निर्द्दयकर्मी शूरघटोत्कच राक्षसके सम्मुख शीघ्रतासे गया ४६ बड़ी सेनासे युक्त महारथी कुन्तभोजने राक्षसोंके राजा क्रोधरूप अलंबुपको रोका ४७ हे भरतवंशी बड़े धनुषधारी कृपाचार्य्य आदिक रथियोंसे रक्षित जयद्रथ सब सेना के पीछे था ४८ उस जयद्रथके चक्रके रक्षक दो बड़े बीरहुये दाहिनीओर अश्वत्थामा और बाईं ओर कर्ण था ४९ और उसके पृष्ठ रक्षक कृपाचार्य्य, वृषसेन शल, शल्य और दुर्जयहुये जिनका कि अग्रगामी सोमदत्तथा ५० नीतिज्ञ बड़े धनुषधारी युद्धमें कुशल वह सब इसरीतिसे जयद्रथकी रक्षाकरके उसके पीछे युद्ध करनेवाले हुये ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचनवतितमोऽध्यायः ९५ ॥

छियानवेका अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा जैसे कि कौरव और पांडवोंका वह अपूर्व्व युद्ध जारी हुआ उसको सुनो कि पांडव लोग १ द्रोणाचार्य्य की सेनाको पराजय करने के अभिलाषी युद्ध में व्यूहके मुखपर नियतहोकर द्रोणाचार्य्य से युद्ध करनेलगे २ तव बड़े यशको चाहते और अपने व्यूह को रक्षित करतेहुये द्रोणाचार्य्य ने भी सेनाके मनुष्योंको साथ लेकर पांडवोंसे युद्धकिया ३ आपके पुत्रका हित चाहनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त अवन्तिदेशों के राजा विन्द अनुविन्दने दशवाणों से बिराट राजाको घायलकिया ४ हे महाराज विराटने पराक्रम करके उन युद्धमें नियत पराक्रमी दोनों राजाओं से उनके साथियों समेत युद्ध किया ५ उन्होंकी लड़ाई भी महा कठिन रुधिररूप जल स्रवनेवाली ऐसीहुई जैसे कि वनके मध्यमें सिंहका युद्ध दो मतवाले उत्तम हाथियोंसे होताहै ६ बड़े पराक्रमी राजा द्रुपदने मर्म और अस्थियोंके छेदनेवाले भयकारी तीक्ष्ण विशिख नाम बाणों से उस युद्ध में वेगवान वाह्लीकको घायलकिया ७ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त वाह्लीकने सुनहरी पुंख तीक्ष्णधार झुकी गांठवाले नौ बाणोंसे द्रुपदको घायलकिया ८ वह युद्ध भयकारी वाण शक्तियों से व्याकुल भयभीतों के भयको उत्पन्न करनेवाला और शूरवीरों की प्रसन्नता का बढ़ानेवालाहुआ ९ वहां उन्होंके छोड़हुये बाणों से पृथ्वी और आकाशका मध्य और सब दिशा व्याप्त होगई कुछभी नहीं जाना गया १० सेना समेत शैव्य गोवासन ने युद्धमें काशी के राजाके पुत्र महारथी से ऐसा युद्धकिया जैसे कि हाथी हाथीके साथ युद्ध करताहै ११ अत्यन्त क्रोध युक्त राजा वाह्लीक युद्ध में द्रौपदीके पुत्र महारथियोंसे लड़ताहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि मन पांचों ज्ञानेन्द्रियोंके साथ लड़ताहै १२ हे देहधारियों में श्रेष्ठ वह चारों ओरसे वाणों के समूहों से ऐसे अत्यन्त युद्ध करतेहुये जैसे कि इन्द्रियोंके विषय सदैव शरीरसे युद्धको करते हैं १३ आपके पुत्र दुश्शासनने युद्धमें तीक्ष्ण और झुकी गांठवाले नौ शायकोंसे वृष्णिवंशी सात्यकी को घायलकिया १४ पराक्रमी बड़े बाणप्रहारी धनुषधारीसे अत्यन्त घायल उससत्य पराक्रमी सात्यकीने शीघ्रही कुछ मूर्च्छाको पाया १५ फिर चैतन्यहुये सात्यकी ने शीघ्रही कंकपक्षसे जटित दश शायकोंसे आपके महारथी पुत्रको पीड़ामान

किया १६ हे राजा वह दोनों परस्पर कठिन घायल और बाणोंसे पीड़ामान युद्ध में ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि फूलेहुये किन्शुकके वृक्षहोते हैं १७ कुन्तभोज के बाणोंसे पीड़ामान अत्यन्त अलंबुप बड़ी शोभासे ऐसा शोभित हुआ जैसे कि फूलों से लदाहुआ किंशुकका वृक्षहोता है १८ इसके पीछे आपकी सेनाके मुखपर नियत अलंबुष राक्षस बहुतसे लोहमयी बाणोंसे कुन्तभोजको घायलक-रके भयकारी शब्द से गर्जा १६ उस समय परस्पर युद्ध में लड़तेहुये वह दोनों शूर सब सेनाओं को ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि पूर्व्वसमयमें इन्द्र और जंभ बर्त्त-मानथे २० हे भरतबंशी माद्रीके दोनों क्रोधयुक्त पुत्रोंने बाणोंसे युद्धमें क्रोधयुक्त शत्रुता करनेवाले शकुनीको अत्यन्त पीड़ामान किया २१ हे राजा तुमसे अ-धिकता उत्पन्न और कर्णसे अच्छी वृद्धिपायाहुआ मनुष्योंका नाश करनेवाले कठिन युद्ध जारीहुआ २२ अर्थात् यह क्रोधसे उत्पन्न अग्नि आपके पुत्रोंसे र-क्षितहोकर इस सब पृथ्वी के भस्मकरने को तैयार हुआहै २३ वह शकुनी पांडव नकुल और सहदेवके बाणोंसे मुखको फेरगया और ऐसा व्याकुलहुआ कि उ-सने युद्धमें करनेके योग्य कर्म और कुछ भी पराक्रमको नहीं करना जाना २४ माद्रीके महारथी दोनों पुत्र इसको मुख फिराहुआ देखकर फिर ऐसे बाणोंकी बर्षा करनेलगे जैसे कि दो बादल बड़े पहाड़पर बर्षा करते हैं २५ वह गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे अत्यन्त घायल शकुनी शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा द्रोणाचार्य्यकी सेना में चलागया २६ इसी प्रकार घटोत्कच साधारण तीव्रतासे युक्तहोकर उस युद्धमें वेगवान शूरबीर अलायुध राक्षसके सम्मुखगया २७ हे महाराज उन दोनों का युद्ध ऐसा अपूर्व रूपकाहुआ जैसे कि पूर्व्व समयमें राम रावणका युद्धहुआ था २८ इसके पीछे राजा युधिष्ठिरने युद्धमें राजा शल्यको पचास बाणोंसे वेध-कर फिर सात बाणोंसे वेधा २६ उन दोनों का युद्धभी ऐसा अपूर्व जारी हुआ जैसे कि पूर्व्वसमयमें इन्द्र और सम्बर दैत्यका भयकारी और अपूर्व्व हुआथा३० बड़ी सेनासे युक्त आपके पुत्र विविंशति चित्रसेनसे और विकर्ण ने भीमसेनसे युद्ध किया ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपरणवतितमोऽध्यायः ९६ ॥

सत्तानबेका अध्याय ॥

संजय बोले कि इसप्रकारसे उस रोमहर्षण युद्धके जारी होनेपर पांडव लोग उस तीन खण्डहोनेवाले कौरवोंके सम्मुखगये १ भीमसेन उस महाबाहु जलसन्धके सम्मुख वर्त्तमान हुआ और सेनासे युक्त राजा युधिष्ठिर युद्ध में कृतवर्मा के सम्मुखहुआ २ हे महाराज सूर्य्य के समान शोभायमान बाणोंकी वर्षाकरता हुआ धृष्टद्युम्न युद्ध में द्रोणाचार्य्य के सम्मुखगया ३ इसके पीछे शीघ्रता करने वाले परस्पर क्रोधयुक्त कौरव पांडव और अन्य सब धनुषधारियों का युद्ध जारी हुआ ४ फिर बड़े भयकारक उस प्रकारके नाश वर्त्तमान होने और सेनाओं में निर्भयता के समान दो दो के द्वन्द्व युद्ध होनेपर ५ जो पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने पराक्रमी धृष्टद्युम्नके साथ युद्ध करने में बाणोंके समूहों को छोड़ा वह आश्चर्य साहुआ ६ कमल वनों के समान चारों ओरसे नाशहोनेलगा द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नने मनुष्योंके शिरोंको बहुत चूर्णकिया ७ सेनाओंके मध्यमें चारों ओर से शूरवीरोंके वस्त्र भूषण शस्त्र ध्वजा कवच और धनुषआदिक फैलगये ८ रुधिर से लिप्त सुवर्ण के कवच ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि भिड़ेहुये बादलोंके समूह बिजली समेत होतेहैं ९ फिर तालवृक्षके समान धनुषोंको खैंचते दूसरे महारथियोंने हाथी घोड़े और मनुष्यों को गिराया १० उस युद्ध में महात्मा शूरोंकी तलवार, ढाल, धनुष, शिर, कवच पृथ्वीपर फैलगये ११ और चारों ओर से उठेहुये अगणित धड़भी युद्धमें दिखाई पड़े १२ हे श्रेष्ठ उस युद्धमें मांसभक्षी गिद्ध कङ्क बगले बाज काक और शृगालभी बहुतसे देखनेमें आये १३ मांसोंको खाते रुधिरको पीते और बहुत प्रकारसे बालों समेत शिरों को उखाड़तेथे १४ इसी प्रकार जहां तहां मनुष्य घोड़े और हाथियोंके भी शिरों को शरीरोंके अवयवों समेत खैंचते दिखाई दिये १५ तब वह लोग युद्ध में विजयको चाहते बारम्बार युद्धोंको करने लगे जो कि अस्त्रोंके ज्ञाता युद्धकी दीक्षासे दीक्षितहोकर युद्ध करने में प्रशंसनीयथे १६ सेनाके बहुतसे मनुष्य युद्ध में तलवारोंके अनेक पैतड़ों से मार्गों में गये और बहुतसे मनुष्य दुधारे, खड्ग, शक्ति, प्रास, शूल, तोमर, पट्टिश, गदा, परिघआदि अनेक प्रकार के शस्त्र और भुजाओं से भी परस्पर प्रहार करतेहुये क्रोध में भरे युद्धभूमि में वर्त्तमान थे १७ । १८ रथी रथियोंके साथ और पदाती

पदातियोंके साथ युद्ध करनेवाले हुये १६ मदोन्मत्तोंके समान मतवाले युद्धभूमिमें वर्त्तमान बहुतसे हाथी परस्पर पुकारे और एकने दूसरेको मारा २० हे राजा उस प्रकार के बेमर्याद युद्धके वर्त्तमान होनेपर धृष्टद्युम्नने अपने घोड़ों को द्रोणाचार्य्य के घोड़ोंसे मिलादिया २१ वह वायुके समान शीघ्रगामी श्वेत कपोत वर्ण युद्ध में मिलेहुये घोड़े अत्यन्त शोभायमान हुये २२ अर्थात् वह मिलेहुये कपोतवर्ण लालरंग घोड़े ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि बिजली समेत बादल शोभायमान होतेहैं २३ हे भरतवंशी वीर धृष्टद्युम्नने समीप में वर्त्तमान द्रोणाचार्य्यको देखकर धनुषको छोड़ ढाल तलवारको लिया २४ कठिन कर्मको करना चाहता शत्रुओंके वीरोंका मारनेवाला धृष्टद्युम्न ईर्षा से दौड़कर द्रोणाचार्य्य के रथपर पहुंचा २५ और युगके मध्य युगके बन्धनों में जाकर बड़ी धृष्टता से घोड़ोंके मध्यमें प्रहारकिया फिर सेनाके मनुष्योंने उसके उस कर्मकी प्रशंसाकरी २६ द्रोणाचार्य्य ने लाल घोड़ों के समीप वर्त्तमान खड्ग समेत घूमतेहुये उस धृष्टद्युम्नका कोई छिद्रनहीं देखा वह आश्चर्य्यसाहुआ २७ जैसे कि वनके बीच में मांसके अभिलाषी बाजका गिरना होताहै उसीप्रकार उसद्रोणाचार्य्यके मारने के अभिलाषी धृष्टद्युम्नका उनके पास जानाहुआ २८ इसके पीछे द्रोणाचार्य्यने धृष्टद्युम्नकी उस ढालको जो कि सौ चन्द्रमा रखनेवालीथी अपने सौबाणों से गिराया और दशबाणों से उसके खड्गको तोड़ा २९ इसीप्रकार पराक्रमीने चौंसठ बाणोंसे घोड़ोंको मारा और भल्लोंसे ध्वजा छत्र और पीछे बैठेहुये सारथी को भी गिराया ३० फिर शीघ्रता करनेवाले ने जीवनके नाश करनेवाले कानतक खैंचे हुये दूसरे बाणको ऐसे छोड़ा जैसे कि वज्रधारी इन्द्र अपने वज्रको छोड़ताहै ३१ तब सात्यकी ने उस को चौदह तीक्ष्ण बाणों से काटा और आचार्य्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्यकी आधीनता में वर्त्तमान होजानेवाले धृष्टद्युम्न को छुड़ाया ३२ हे श्रेष्ठ जैसे कि सिंहसे निगलाहुआ मृग होता है उसीप्रकार द्रोणाचार्य्य से आधीन कियेहुये धृष्टद्युम्न को शिनी के पौत्रों में श्रेष्ठ सात्यकी ने छुटाया ३३ शीघ्रता करनेवाले द्रोणाचार्य्य ने रक्षाकरनेवाले सात्यकी को और धृष्टद्युम्नको देखकर बड़े युद्ध में छब्बीस बाणों से घायल किया ३४ उसके पीछे शिनी के पौत्र ने सृञ्जियों के निगलनेवाले द्रोणाचार्य्य को छब्बीसही बाणों से छाती के मध्यमें घायल किया ३५ फिर धृष्टद्युम्नकी विजय चाहनेवाले पाञ्चालदेशी

सब रथी भी उसीसमय जब कि द्रोणाचार्य्य सात्यकी के सम्मुख गये धृष्टद्युम्न को दूर लेगये ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तनवतितमोऽध्यायः ९७॥

अट्ठानबेका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय उस वृष्णियों में बड़ेबीर सात्यकी के हाथसे उस बाणके टूटजाने और धृष्टद्युम्न के छूटजाने पर १ सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ बड़े धनुषधारी क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य ने युद्ध में नरोत्तम सात्यकी के ऊपर क्या किया सञ्जय बोले कि अत्यन्त शीघ्रगामी क्रोधरूप विषरखनेवाले धनुषरूप अत्यन्त भोजन करनेवाले मुख तीक्ष्णधार बाणरूप दांत चांदी के नाराचरूप डाढ़ रखनेवाले २ । ३ क्रोध और अशान्ती से लाल नेत्र बड़ेसर्प्प के समान श्वासा लेनेवाले नरों में बीर अत्यन्त प्रसन्न द्रोणाचार्य्य उनबड़े शीघ्रगामी लालघोड़ोंकी सवारीसे ४ जो कि आकाशको उछलते और पहाड़ों को उल्लङ्घन करते विदित होते थे सुनहरी पुङ्खवाले बाणों को चलाते सात्यकी के सम्मुख गये ५ गिरतेहुये बाणरूप वर्षावाले रथके शब्दरूप बादल रखनेवाले धनुष के आकर्षणरूप चेष्टा करनेवाले बहुत नाराचरूप बिजली वाले ६ शक्ति और खड्गरूप बिजली रखनेवाले क्रोध की तीव्रता से उठेहुये घोड़ेरूप वायुसे चलायमान हटाने के अयोग्य उस द्रोणाचार्य्य रूप सम्मुख आनेवाले बादल को ७ देखकर शूरबीर शत्रु पुरञ्जय युद्ध दुर्म्मद सात्यकी हँसकर सारथी से बोला ८ हे सूत अत्यन्त प्रसन्नचित्त के समान तू बड़े शीघ्रगामी घोडों के द्वारा इसराजकुमारों के आचार्य्य सदैव शूरों के प्रधान राजा दुर्योधन के आश्रय स्थान उसके दुःख शोकोंके दूर करनेवाले अपने कर्म्म में अद्वितीय शूरबीर ब्राह्मण के सम्मुख चल ९ । १० उसके पीछे चांदी के समान श्वेतरङ्ग बायुके समान शीघ्रगामी सात्यकी के उत्तम घोड़े शीघ्रही द्रोणाचार्य्य के सम्मुखगये ११ तदनन्तर उन दोनों शत्रुओं के सन्तापी द्रोणाचार्य्य और सात्यकी ने युद्धकिया और हजारों बाणों से परस्पर में घायल किया १२ दोनों पुरुषोत्तम बीरों ने आकाश बाणोंके जालों से पूर्ण करदिया और दशों दिशाओंको भी बाणों से भरदिया १३ जैसे कि वर्षाऋतु में दो बादल अपनी जलधाराओं से वर्षा करते हैं उसी

प्रकार उनदोनों ने परस्पर वर्षाकरी उससमय न सूर्य्य दिखाई पड़े न वायुचली १४ तब बाणों के जाल से ढकाहुआ महाभयकारी अन्धकार दूसरे शूरोंका पराजय करनेवाला चारोंओर से हुआ १५ उससमय शीघ्रता पूर्व्वक अस्त्र चलाने में उन दोनों द्रोणाचार्य्य और सात्यकी के बाणों से लोकके अप्रकाशित होने पर उन दोनों १६ नरोत्तमों के बाणोंकी वर्षाओंका अन्तर नहीं देखनेमें आया बाणों के गिरने से ऐसे शब्द सुनेगये जैसे कि जलधाराओं के आघात से उत्पन्न शब्दों के होते हैं १७ अथवा जैसे इन्द्रके छोड़ेहुये वज्रोंके शब्द होते हैं नाराचोंसे अत्यन्त छिदेहुये उनदोनों शूरोंका रूप ऐसा शोभायमान हुआ १८ हे भरतवंशी जिसप्रकार बड़े बिषैले सर्पोंका रूप होजाता है युद्धमें उन दोनों मतवालों की प्रत्यञ्चाओंके ऐसे शब्द सुनेगये १६ जैसे कि बारंबार वज्रसे घात कियेहुये पर्व्वतों के शिखरों के शब्द होते हैं हे राजा उनदोनों के वह दोनों रथ घोड़े और सारथी २० सुनहरी पुङ्खवाले बाणोंसे ताड़ित अपूर्व्वरूप के प्रकाशमान हुये और स्वच्छ सीधे चलनेवाले २१ कांचली से छुटे हुये सर्पों के समान नाराचोंका गिरनाभी बड़ा भयकारीहुआ उन दोनोंके छत्रों समेत ध्वजाभी गिरपड़ीं २२ दोनोंके शरीर रुधिरमें लिप्तहुये और अंगोंसे रुधिरको डालते दो मतवाले हाथियोंके समान २३ जीवनके नाशकारक बाणोंसे परस्पर घायलहुये हे महाराज गर्जने पुकारने और शङ्ख दुन्दुभी आदि के बाजे बन्दहुये किसी ने वार्त्तालाप भी नहीं की सब सेना चुपहोगई शूरोंने युद्ध करना बन्दकिया २४।२५ जिन मनुष्योंको अपूर्व्वताके देखनेका उत्साह उत्पन्नहुआ उन रथसवार हाथी के सवार अश्वसवार और पदातियों ने उन दोनों के द्वैरथ युद्ध को देखा २६ दोनों नरोत्तमों को घेर करके अचल नेत्रों से सब देखने लगे हाथियोंकी सेना नियत होगई और घोड़ों की भी सेना ठहरगई मोती मूंगों से जटित मणि सुवर्णादि से अलंकृत २७ । २८ ध्वजा भूषण और अपूर्व्व स्वर्णमयी कवच अपूर्व पताका परस्तोम सूक्ष्म कंबल २६ स्वच्छ तीक्ष्ण शस्त्र घोड़ोंके मस्तकपर शोभायमान सुवर्ण भूषण मूर्द्धा और हाथियों के कुंभ और दांतोंमें लिपटीहुई मालाओं से वह सेना बादलों की पंक्तिके समान ऐसी दिखाई पड़ी जैसे कि वर्षा ऋतुमें बलाक पटबीजने इन्द्रधनुप और बिजली समेत बादल होयँ हमारे शूरवीर और पाण्डवों के वह शूरबीर तमाशा देखने को नियतहुये ३०।३२ महात्मा

द्रोणाचार्य्य और सात्यकीके उस युद्ध को विमानों में बैठे देवताओं ने जिन-
में मुख्य अग्रगामी ब्रह्माजी और सोम देवता थे देखा ३३ सिद्ध चारणों के स-
मूह और विद्याधर गन्धर्व्व और बड़े २ सर्पोंने उन दोनों पुरुषोत्तमोंकी नानाप्र-
कारकी गतियां अथवा लौट २ कर प्रहारोंका करना और अस्त्रोंके अपूर्व्व घातों
से आश्चर्य्य को पाया अस्त्रोंमें अपनी २ हस्तलाघवता को दिखलाते उन दोनों
महाबली ३४। ३५ द्रोणाचार्य्य और सात्यकीने बाणों से परस्परमें घायल किया
इसके अनन्तर सात्यकीने बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य्यके बाणों को युद्धमें काटा ३६
और अत्यन्त दृढ़ बाणों से शीघ्रही धनुष कोभी काटा भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने
पलपात्रमेंही दूसरे धनुष को ३७ तैयार किया सात्यकी ने उनके उस धनुष को
भी काटा इसके पीछे जल्दी करनेवाले हाथमें धनुष लेकर नियत हुये ३८ इसी
प्रकार जो २ धनुष तैयार करते थे उस २ को वह काटता हुआ सौधनुषोंका का-
टनेवाला हुआ धनुष चढ़ाने और काटनेमेंभी उन दोनोंका अन्तर नहीं देखा ३९
हे महाराज इसके पीछे द्रोणाचार्य्यने प्रत्येक युद्धमें इस सात्यकीके बुद्धिसे बा-
हर कर्म्म को देखकर चित्तसे यह चिन्ताकरी कि जो यह अस्त्रबल परशुरामजी
कार्त्तिवीर्य्य अर्जुन और पुरुषोत्तम भीष्ममें है वही अस्त्रबल यादवों में श्रेष्ठ सा-
त्यकी में है द्रोणाचार्य्य ने उसके उस पराक्रम को चित्तसे स्तूयमान किया अ-
र्थात् प्रशंसाकरी ४०। ४१ अस्त्रज्ञोंमें श्रेष्ठ ब्राह्मणों में उत्तम द्रोणाचार्य्यजी इन्द्रके
समान उसकी हस्तलाघवताको देखकर प्रसन्नहुये और इसीप्रकार इन्द्रसमेत सब
देवता भी प्रसन्नहुये ४२ हे राजा देवता और गन्धर्वोंने उस शीघ्रकर्मी युद्ध के
करनेवाले सात्यकी की उस हस्तलाघवता को नहीं देखा ४३ सिद्ध चारणों के
समूहों ने द्रोणाचार्य्य के उस कर्म्म को नहीं जाना इसके पीछे क्षत्रियोंके मर्द्दन
करनेवाले महा अस्त्रज्ञ द्रोणाचार्य्य ने दूसरे धनुष को लेकर ४४ अस्त्रों से युद्ध
किया हे भरतवंशी सात्यकी ने उनके अस्त्रों को अपने अस्त्रोंकी मायाओं से दूर
करके ४५ तीक्ष्ण बाणों से घायल किया वह भी आश्चर्य्यसा हुआ युद्धमें अ-
सादृश्य बुद्धि से बाहर उसके कर्म्म को देखकर ४६ योग अर्थात् भिड़ जानेके
ज्ञाता आप शूरवीरों ने योगसे संयुक्त होनेवाले उस कर्म्मकी प्रशंसाकरी द्रोणा-
चार्य्यजी जिस २ अस्त्र को चलाते थे उसी उसी को सात्यकी भी चलाताथा ४७
फिर शत्रुओंके संतप्त करनेवाले निर्भय आचार्य्य ने उससे युद्ध किया हे महा-

राज धनुर्वेदमें पूर्ण क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्यने ४८ सात्यकी के मारनेके लिये दिव्य अस्त्रका प्रयोग किया उस बड़े धनुषधारीने उस शत्रुके मारनेवाले बड़े भयकारी आग्नेय अस्त्र को देखकर ४९ दिव्य वारुणास्त्रका प्रयोग किया उन दिव्य अस्त्रधारियों को देखकर बड़ा हाहाकार हुआ ५० तव आकाशमें रहनेवाले जीवधारी भी आकाशके मध्यमें नहीं चले उन दोनों करके वाणपर नियत कियेहुये वारुणास्त्र और अग्न्यास्त्र जबतक परस्पर नहीं भिड़े थे कि सूर्य्य मध्याह्नसे आगे को वढ़े उसके पीछे पाण्डव और युधिष्ठिर भीमसेन ५१।५२ नकुल सहदेव और विराटने धृष्टद्युम्न आदिक केकयों समेत सात्यकी को चारोंओर से रक्षित किया ५३ मत्स्य और शाल्वेय नाम सेना शीघ्रता से द्रोणाचार्य के पास आई और हज़ारों राजकुमार दुश्शासनको आगे करके ५४ शत्रुओंसे घिरेहुये द्रोणाचार्य्य के पास वर्त्तमान हुये हे राजा इसके पीछे उन्होंके और आपके धनुषधारियोंके युद्धहुये ५५ धूलके गुब्बारों से संसारके गुप्त होने और वाणों के जालों से ढकजाने पर सब संसार महाव्याकुल हुआ कुछ नहीं जानागया दोनों सेना धूल से गुप्त होगई और अमर्य्यादगी वर्त्तमान हुई ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टनवतितमोऽध्यायः ९८ ॥

निन्नानवेका अध्याय ॥

सञ्जय बोले वहां अस्ताचल के शिखरपर सूर्य्य के अधिक वर्त्तमान होने और धूल से संयुक्त होकर सूर्य्य के न्यून प्रकाश होनेपर १ युद्ध करने में नियत शूरवीर फिर लौटनेवाले अथवा पृथक् होनेवाले और बिजय करनेवालोंका वह दिन धीरेपने से गया २ इस प्रकार उन बिजयाभिलाषी सेनाओं के भिड़ने पर अर्ज्जुन और बासुदेव जी जयद्रथ के मारने के निमित्त चले ३ वहां अर्ज्जुन ने तीक्ष्ण वाणों से रथके जाने के योग्य मार्ग्ग को किया उसी मार्ग्ग से श्रीकृष्ण जी चले ४ हे राजा जहां जहां महात्मा पाण्डव अर्ज्जुनका रथ जाताथा वहां २ से आपकी सेना छिन्न भिन्न होकर पृथक् हुई ५ फिर उत्तम मध्यम निकृष्ट मण्डलों को दिखलाते पराक्रमी श्रीकृष्णजी ने रथकी सुशिक्षितता को दिखलाया ६ फिर जिन पर नाम मुद्रित था और नोक पर सूक्ष्म चर्म्म लगाहुआ था वह पीत रङ्ग कालाग्नि के स्वरूप सुन्दर पर्व्ववाले बड़ी दूर पहुंचनेवाले ७

भयकारी लोहेके नानाप्रकार के वाण शत्रुओं के शरीरों में लगते युद्ध में प-
क्षियों समेत जीवों के रुधिर पीनेवाले हुये ८ रथमें बैठाहुआ अर्ज्जुन आगे से
जिन वाणोंको एक कोश परसे चलाता था उसके वह वाण उस समय पर श-
त्रुओं को मारते थे जब कि उसका रथ एक कोश भर मार्ग्ग को उल्लङ्घन कर
जाताथा ९ तब श्रीकृष्णजी सम्पूर्ण जगत् को आश्चर्य्ययुक्त करते गरुड़ और
वायु के समान शीघ्रगामी उत्तम पुरुषोंके सवार करनेवाले घोड़ों के द्वारा चल
दिये १० हे राजा उस प्रकार का न सूर्य्य का न इन्द्रका न रुद्रका न कुवेरका ११
और पर्व्व समय में भी किसीका रथ नहीं चला जैसा कि चित्त के अनुसार
शीघ्रता से अर्ज्जुन का रथ गया १२ हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र फिर शत्रुओं
के वीरों के मारनेवाले केशवजी ने युद्धमें प्रवेश करके सेना के मध्य में शीघ्र-
तासे घोड़ों को चलायमान किया १३ उसके पीछे उस रथसमूहोंके मध्यको पा-
कर क्षुधा तृषा से युक्त उत्तम घोड़ों ने उस रथको वड़े दुःखसे खैंचा १४ क्योंकि
वह घोड़े वड़े युद्धकुशल शस्त्रविद्या के ज्ञाता शूरवीरों के नानाप्रकार के वहुत
से शस्त्रों से घायल होकर वारम्वार अनेक मण्डलों को घूमेथे १५ और मनुष्यों
समेत मृतक घोड़े हाथी रथियों के ऊपर से ऐसे उल्लङ्घन करनेवाले हुये जैसे
कि शलभाओं के हज़ारों समूह सवको उल्लङ्घन करते हैं १६ हे राजा इसीअ-
न्तरमें दोनों भाई अवन्ती के राजाओं ने सेना समेत थके घोड़ेवाले पाण्डव
अर्ज्जुन से आकर सम्मुखता करी १७ उन दोनों प्रसन्नचित्तों ने चौंसठ वाणों
से अर्ज्जुन को सत्तर वाणों से श्रीकृष्णजी को और सैकड़ों वाणों से घोड़ों
को घायल किया १८ हे महाराज क्रोधयुक्त और मर्म्मस्थलों के जाननेवाले
अर्ज्जुन ने झुकी गांठवाले मर्म्मभेदी नौ वाणोंसे उन दोनोंको युद्धमें घायल
किया १९ उसके पीछे उन दोनों क्रोधयुक्तों ने केशव जी समेत अर्ज्जुन को
वाणों के समूहों से ढकदिया और सिंहनाद किये २० श्वेत घोड़े रखनेवाले अ-
र्ज्जुनने युद्ध में दो भल्लों से उन दोनों के जड़ाऊ धनुषों को काटा और शी-
घ्रही सुवर्ण के समान प्रकाशित दोनों ध्वजाओंको भी काटा २१ हे राजा तव
अत्यन्त क्रोधयुक्त उनदोनों ने दूसरे धनुषोंको लेकर युद्धमें वाणों से अर्ज्जुनको
पीड़ायमान किया २२ फिर उन दोनों के वाणों से अत्यन्त क्रोधयुक्त पांडुनन्दन
अर्ज्जुनने फिर उनके दोनों धनुषों को काटा २३ और सुनहरी तीक्ष्णधार दूसरे

बिशिखों से शीघ्रही पदातियों समेत घोड़ोंको मारा और दोनोंके सारथियों स-
मेत पृष्ठरक्षकोंको भी मारगिराया २४ और क्षुरप्रनाम बाणसे बड़े भाईके शिरको
शरीर से काटा वह मृतकहोकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बायुसे उखाड़ा
हुआ वृक्ष गिरता है २५ फिर प्रतापवान् महाबली अनुबिन्द को मराहुआ देख
कर और उस रथको जिसके कि घोड़े मरगयेथे छोड़कर गदाको हाथमें लेकर२६
भाईके मारनेको स्मरण करता और रथियोंमें श्रेष्ठ महारथी गदासे संयुक्त नर्त्तक
के समान युद्ध में सम्मुख बर्त्तमानहुआ २७ फिर क्रोधयुक्त अनुबिन्दने गदासे
मधुसूदनजीको ललाटपर घायलकरके ऐसे कंपित नहीं किया जैसे कि मैनाक
पर्व्वतको २८ अर्जुनने छःबाणोंसे उसकी ग्रीवा चरण भुजा और शिरको काटा
वह फिर ऐसे खंड २ होकर गिरा जैसे कि पर्व्वतोंका समूह गिरताहै २९ हेराजा
फिर उनके पीछे चलनेवाले शूरबीर उन दोनों को मराहुआ देखकर अत्यन्त
कोपयुक्त सैकड़ों बाणोंको मारतेहुये सम्मुख दौड़े ३० हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ वह
अर्जुन शीघ्रही बाणोंसे उनको मारकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि हिम-
ऋतुके अन्तमें बनको भस्म करके अग्नि शोभायमान होताहै ३१ अर्जुन बड़ी
कठिनता से उन दोनों की सेनाको उल्लंघन करके ऐसा शोभितहुआ जैसे कि
बादल से पृथक् होकर उदयहुआ सूर्य्य होताहै ३२ सब कौरव लोग उसको दे-
खकर भयभीतहोगये परन्तु फिर अत्यन्त प्रसन्नहुये और चारों ओरसे अर्जुनके
सम्मुखहुये ३३ उसको थकाहुआ देखकर और जयद्रथ को दूर जानकर बड़े सिं-
हनादपूर्व्वक सब ओर से घेरलिया ३४ उनको अत्यन्त क्रोधयुक्त देखकर मन्द
मुसकान करताहुआ पुरुषोत्तम अर्जुन बड़े धीरेपने से श्रीकृष्णजीसे यह वचन
बोला ३५ कि घोड़े बाणों से पीड़ावान् और बलसे रहितहैं और जयद्रथ दूर है
यहां शीघ्रतासे कौनसा उत्तम कर्म तुमको स्वीकारहै हे श्रीकृष्णजी आप मूल
वृत्तान्त कहो आपही सदैव बड़े ज्ञानीहो यहांपर आपके आज्ञाकारी पांडव श-
त्रुओंको विजयकरेंगे ३६।३७ मेरा जो कामशीघ्रतासे करनेकेयोग्यहै आप उसको
मुझसे सुनिये हे माधवजी सुखपूर्व्वक घोड़ोंको छोड़ो और भल्लोंको शरीर से
निकालो ३८ अर्जुनके इस वचन को सुनकर श्रीकृष्णजी ने उत्तरदिया कि हे
अर्जुन मेरी भी यही रायहै जो तुमने कही ३९ अर्जुन बोले हे केशवजी मैं सब
सेनाओंको रोकूंगा आपही यहां शीघ्रतापूर्व्वक न्याय के अनुसार कर्मकरो ४०

संजय बोले कि वह निर्भय स्थिरचित्त अर्जुन रथ के बैठने के स्थान से उतरकर गांडीव धनुषको लेकर पर्व्वतके समान निश्चलहोकर नियतहुआ ४१ विजयाभिलाषी पुकारतेहुये क्षत्रिय यही समयहै ऐसा जानकर उस पृथ्वीपर नियतहुये अर्जुनके सम्मुख दौड़े ४२ धनुषोंको खैंचते शायकों को छोड़ते बहुतसे रथसमूहों समेत उन क्षत्रियोंने उस अकेलेको घेरलिया ४३ जैसे कि बादल सूर्य्यको ढकदेताहै उसी प्रकार बाणोंसे अर्जुनको ढकते क्रोधयुक्त क्षत्रियों ने वहां अपने अपूर्व्व शस्त्रों को दिखाया ४४ बड़े रथी क्षत्रिय वेगसे उस क्षत्रियों में श्रेष्ठ अर्ज्जुनके सम्मुख ऐसे गये जैसे कि मतवाले हाथी सिंहके सम्मुख होतेहैं ४५ वहां पर अर्जुन की भुजाओं का बड़ा पराक्रम देखने में आया कि उस क्रोधयुक्त ने बहुतसी सेनाओं को सब ओरसे रोका ४६ अर्थात् उस समर्थ ने अस्त्रोंसे शत्रुओंके अस्त्रोंको सब ओरसे रोककर शीघ्रही बहुत बाणोंसे सबको ढकदिया ४७ हे राजा वहांपर पृथ्वी और आकाश में बहुत बाणोंकी घिसावटसे बड़ी ज्वलितरूप अग्नि उत्पन्नहुई ४८ और जहां तहां रुधिर से भरेहुये श्वासाओंको लेते बड़े धनुषधारी घायल और गर्जतेहुये शत्रुओंसे दुःखीहुये घोड़े हाथी ४९ और युद्ध में विजय चाहनेवाले क्रोधयुक्त एकस्थानमें नियत बहुतसे शत्रुओंके वीरों से गर्मी उत्पन्न हुई ५० तब मर्यादरूप अर्जुन ने उस बाणरूपी तरंग ध्वजारूपी भंवर हाथीरूप ग्राह रखनेवाली महादुस्तर पदातीरूप मछलियोंसे व्याप्त शङ्ख दुंदुभियोंसे शब्दायमान ५१ असंख्य रथरूपी बड़ी लहरें रखनेवाली और पगड़ी मुख छत्र पताकारूपी फेनोंकी माला रखनेवाली ५२ हाथियोंके अंगरूप शिलाओंसे संयुक्त निश्चल रथरूपी समुद्र को रोका ५३ धृतराष्ट्र बोले कि अर्जुनके पृथ्वीपर वर्त्तमान होने और घोड़ों को हाथसे पकड़नेवाले केशवजीके होनेपर ऐसे समय को पाकर भी अर्ज्जुन कैसे नहीं मारागया ५४ संजय बोले हे राजा पृथ्वीपर नियत अर्जुन से शीघ्रही सब राजालोग जो कि रथपर नियत थे ऐसे रोके गये जैसे कि वेदके न जाननेवालों के वचन रोके जाते हैं ५५ उस अकेले पृथ्वीपर नियत अर्जुनने रथपर चढ़ेहुये सब राजाओं को ऐसे हटाया जैसे कि लोभ सब गुणों को हटा देताहै ५६ उसके पीछे निर्भय महाबाहु श्रीकृष्णजी युद्धमें उस अपने प्यारे पुरुषोत्तम अर्जुन से यह वचन बोले ५७ हे अर्जुन यहां युद्धमें घोड़ों के जल पीनेका जलाशय पूर्ण नहीं है और यह घोड़े पीनेके यो-

ग्य जल को चाहते हैं स्नान को नहीं चाहते हैं ५८ इस बातके कहतेही अर्जु-नने अस्त्रके द्वारा पृथ्वी को फाड़कर घोड़ोंके जल पीनेका ऐसा उत्तम शुभदा-यक जलका सरोवर उत्पन्न किया ५९ जो कि मन्त्रके प्रभाव से हंस कारण्डवों से युक्त चक्रवाकों से शोभित वहुत विस्तृत फूलेहुये उत्तम कमल और स्वच्छ जलका रखनेवाला ६० कूर्म मछलियों आदि से पूर्ण अथाह वड़े २ ऋषियों से सेवित था उस एकही क्षणमें उत्पन्न हुये सरोवरके देखनेको नारदमुनि भी आ पहुँचे ६१ त्वष्टा देवताके समान अपूर्व कर्म्म करनेवाले अर्ज्जुनने वह बाणोंका स्थान वनाया जिसमें बाणकेही वांस खम्भ और बाणोंकाही अद्भुत पटावथा ६२ इसके पीछे महात्मा अर्जुन से उस बाणों के महल बनाये जानेपर गोबिन्दजी अत्यन्त हँसकर बोले कि साधुहै साधुहै ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकोनशततमोऽध्यायः ९९॥

सौका अध्याय ॥

संजय बोले कि महात्मा अर्ज्जुन से उस जलाशयके उत्पन्न होने शत्रुओं की सेना हटाने और बाण महलके बनानेपर वड़े तेजस्वी वासुदेवजीने १ शी-घ्रही रथसे उतरकर बाणों से घायल घोड़ों को छोड़दिया २ उस अपूर्व्वदर्शन कर्म्म को देखकर सिद्ध चारणों के समूहों में और सब सेनाओं में बहुतसे प्रशं-साओं के वचन प्रकटहुये ३ महारथी लोग उस पदाती युद्ध करनेवाले महारथी अर्जुनके रोकने को समर्थ नहीं हुये यह आश्चर्य्यसा हुआ ४ तब अर्जुन बहुत हाथी घोड़े रखनेवाले रथसमूहों के सम्मुख आजानेपर भी भयभीत नहीं हुआ वह इसका कर्म्म सब मनुष्यों से अधिक और अपूर्व था ५ उन राजाओंने अ-र्जुनके ऊपर बाणों के समूहों को छोड़ा शत्रुओं के वीरोंका मारनेवाला धर्मात्मा इन्द्रका पुत्र अर्जुन पीड़ावान् नहीं हुआ ६ उस पराक्रमी अर्ज्जुनने उन बाणों के जाल गदा और प्रासोंको वीचही में ऐसे निगला अर्थात् ऐसे काटा जैसे कि नदियों को समुद्र काटता है ७ अर्जुनने अस्त्रों के वड़े वेग और ध्वजाके परा-क्रमसे सब महाराजाओं के उन उत्तम बाणों को निगला ८ हे महाराज कौरवों ने अर्जुन और वासुदेवजी इन दोनों के उस अपूर्व्व और वड़े पराक्रमकी स्तु-तिकरी अर्थात् प्रशंसाकरी ९ लोकमें ऐसा अपूर्व्व कर्म्म न हुआ न होगा जैसे

कि अर्जुन और गोविन्दजी ने युद्धमें घोड़ों को छोड़कर कियाहै १० उन दोनों नरोत्तमों ने हम लोगों में बड़ा भय उत्पन्न किया और युद्धके मस्तक पर दोनों ने महाभयकारी अपने पराक्रम को दिखाया ११ हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र तब युद्धमें अर्जुनके हाथसे बाणमहलके तैयार होनेपर स्त्रियों के मध्यवर्त्तियों के समान मन्द मुसकान करते कमललोचन सावधान श्रीकृष्णजी ने आपकी सब सेनाओं के देखतेहुये उन घोड़ों को जल से तृप्त करके थकावटसे भी रहित कर दिया १२।१३ शालिहोत्रादि शास्त्रोंके कर्मोंमें कुशल श्रीकृष्णजीने उन घोड़ोंके शरीरोंकी वेदना निर्बलता झागोंका वमन करना और बड़े घाव इन सबको दूर किया १४ हाथों से भल्लोंको उखाड़कर और उन घोड़ोंको मलकर रीतिके अनुसार स्नान कराकर जलको पिलाया १५ उन अत्यन्त प्रसन्नचित्त श्रीकृष्णजी ने उन स्नान और जलपान करचुकनेवाले दानेआदिसे तृप्त दुःख और थकावटसे रहित घोड़ों को फिर उस उत्तम रथमें जोड़ा १६ सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ बड़े तेजस्वी श्रीकृष्णजी अर्जुन समेत उस श्रेष्ठ रथपर सवार होकर शीघ्रचले १७ कौरवीय सेना में श्रेष्ठ शूरवीर युद्धभूमिमें उस रथियोंमें श्रेष्ठ अर्जुनके रथ को जलपान कियेहुये घोड़ोसे संयुक्त देखकर वेमन अर्थात् चित्तसे उदास होगये १८ हे राजा टूटीहुई डाढ़वाले सर्पकी समान श्वासालेनेवाले लोग पृथक् पृथक् होकर बोले कि बड़ी धिक्कार है कि वह अर्जुन और श्रीकृष्णजी निकल गये १९ वह दोनों कवचधारी बालकों के खेलही के समान हमारे बलको निरादरकरके सब क्षत्रियों के देखते एकरथके द्वाराही निकलगये २० उन शत्रुओंके तपानेवाले पुकारते उपाय करते शूरवीरों में चित्त न लगानेवाले वह दोनों सब राजाओं के मध्य में अपने बल पराक्रम को दिखलाकर चलदिये २१ तब दूसरे सेनाके मनुष्य उन जानेवाले दोनों को, देखकर फिर बोले कि सब कौरवलोग श्रीकृष्ण और अर्जुन के मारने में शीघ्रता करो २२ यह रथसवार श्रीकृष्णजी युद्ध में सब धनुषधारियों के देखतेहुये हमलोगों को तुच्छ और निरादर करके जयद्रथ की ओर को जाते हैं २३ वहां पर कुछ राजालोग युद्धमें पूर्व्व कभी न देखे हुये उस अद्भुत बड़े कर्म्म को देखकर परस्पर में यह बोले २४ कि दुर्य्योधन के अपराध से सब सेना समेत राजा धृतराष्ट्र और क्षत्रियोंके कुलोंने नाश को पाया और सम्पूर्ण पृथ्वी ने २५ बड़ीभारी बरबादी को पाया उसको राजा नहीं

जानताहै हे भरतबंशी वहांपर क्षत्रिय और दूसरे लोग इसरीतिसे वार्त्तालाप क-रतेथे २६ कि यमलोकमें पहुंचेहुये जयद्रथका जो कर्महै उसको निष्फल दोपने-वाला उपायका न जाननेवाला दुर्य्योधन करो २७ उसके पीछे सूर्य्य के तीक्षण किरणोंको अस्ताचलकी ओर जानेपर पांडव अर्जुन अत्यन्त प्रसन्न जलपाना-दि करनेवाले तृप्त घोड़ोंकी सवारीसे बड़ी शीघ्रतापूर्वक जयद्रथके ऊपर गया २८ शूरवीर लोग उस सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ काल के समान क्रोधयुक्त जातेहुये महाबाहु अर्जुन के रोकनेको समर्थ नहीं हुये २६ इसके अनन्तर शत्रुओंके त-पानेवाले अर्जुनने सेना को उच्छिन्न करके जयद्रथके निमित्त ऐसा छिन्न भिन्न किया जैसे कि मृगोंके समूहोंको सिंह छिन्न भिन्न करदेताहै ३० सेनाओंको मँ-भातेहुये श्रीकृष्णजी ने शीघ्रही घोड़ों को चलायमान किया और वलाका के समान श्वेतरंगवाले पांचजन्य शंखको बजाया ३१ आगेसे अर्जुनके छोड़ेहुये बाण उसके पीछे गिरे और वायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंने उस मार्गको बड़ी शीघ्रतासे व्यतीत किया ३२ इसके पीछे क्रोधयुक्त राजाओंने और अनेक क्षत्रि-योंने जयद्रथके मारनेके अभिलाषी अर्जुनको चारों ओरसे घेरलिया ३३ सेना-ओं के भागनेपर शीघ्रता करनेवाला दुर्य्योधन उस बड़े युद्धमें नियतहोनेवाले पुरुषोत्तम अर्जुनके सम्मुखहुआ ३४ सब रथी उस वायुसे खड़ी पताकावाले बा-दलके समान शब्दायमान भयकारी हनुमान्जीकी ध्वजा रखनेवाले रथको दे-खकर महाव्याकुल हुये ३५ फिर धूलसे सूर्य्य के सब ओरसे ढकजानेपर युद्ध में बाणोंसे पीड़ामान शूरवीर लोग उन श्रीकृष्ण और अर्जुनके देखनेको भी सा-मर्थ नहीं हुये ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततमोऽध्यायः १०० ॥

एकसौएकका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा आपकी सेनाके राजा लोग उन उल्लंघनकरके प-हुंचेहुये अर्जुन और वासुदेवजी को देखकर भयसे पृथ्वीपर गिरपड़े १ फिर वह सब क्रोधयुक्त लज्जावान् बलसे चलायमान महात्मा नियतहोकर अर्जुनके स-म्मुख गये २ जो क्रोध और अधैर्य से युक्त युद्ध में अर्जुनके सम्मुख गये वह अबतक भी ऐसे लौटकर नहीं आये जैसे कि समुद्र से फिर लौटकर नदियां न-

हीं आतीं ३ परन्तु असन्तलोग ऐसे मुख फेरनेवाले हुये जैसे कि वेदों से नास्तिकलोग मुख को फेरलेते हैं उन नरकके चाहनेवालों ने पापकोही प्राप्त किया ४ वह दोनों पुरुषोत्तम रथकी सेना को उल्लंघनकर सबसे छुटेहुये ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि राहुके मुखसे छुटेहुये दो सूर्य्यहोंय ५ जैसे कि बड़े जाल को तोड़कर दुःख शोकसे रहित दो मछली दिखाई पड़ें उसी प्रकार श्रीकृष्ण और अर्जुन उस सेनाके जाल को फाड़कर दृष्टिगोचरहुये ६ बड़े दुःखसे तोड़नेके योग्य बाणों के कष्ट रखनेवाले द्रोणाचार्य्य की सेनासे छुटेहुये दोनों महात्मा ऐसे दिखाईपड़े जैसे कि उदय हुये दो कालरूप सूर्य्य होते हैं ७ अस्त्रों की पीड़ा और बाणोंके दुःखों से छुटेहुये वह दोनों महात्मा जो कि शत्रुओंके पीड़ा उत्पन्न करनेवाले थे दिखाईपड़े ८ अथवा जैसे अग्निके समान स्पर्शवाले समुद्रसे पृथक् होनेवाली झसनाम दो मछलियां होती हैं फिर उन दोनोंने उस सेना को ऐसे छिन्न भिन्न करदिया जैसे कि समुद्र को दो बड़े मगर उथल पुथल कर देतेहैं ९ प्रथम आपके शूरवीरोंने और पुत्रोंने द्रोणाचार्य्यकी सेनामें उन दोनोंके नियत होनेपर यह बात पक्की चित्तसे जानलीथी कि यह द्रोणाचार्य्यको नहीं तरेंगे १० हे महाराज फिर द्रोणाचार्य्यकी सेनाको उल्लंघन करनेवाले उन दोनों बड़े तेजस्वियों को देखकर जयद्रथके जीवन की आशा को त्यागदिया ११ हे समर्थ राजा धृतराष्ट्र जयद्रथ के जीवन में द्रोणाचार्य्य और कृतबर्मा की बड़ी बलिष्ठ आशाथी कि श्रीकृष्णजी और अर्जुन इस व्यूहके पार नहीं होसकेंगे १२ हे महाराज शत्रुके तपानेवाले वह दोनों उस आशा को निष्फलकरके कठिनता से तरनेके योग्य द्रोणाचार्य्य और कृतबर्मा की सेनाको अच्छी रीतिसे तरगये १३ फिर अग्निके समान प्रकाशित सेनाके उल्लंघन करनेवाले उन दोनों को देखकर आशासे रहित शूरवीरोंने जयद्रथके जीवनकी आशा नहीं की १४ उन निर्भय दूसरेके भयके बढ़ानेवाले श्रीकृष्ण और अर्जुनने जयद्रथके मारनेमें उन २ वचनों को वारम्बार कहा १५ कि यह जयद्रथ दुर्य्योधनके छः महारथियों ने बीच में कियाहै यह मेरे नेत्रों के सम्मुख आयाहुआ बच नहीं सक्ता १६ जो युद्ध में देवताओं के समूहों समेत इन्द्रभी इसकी रक्षाकरें तौ भी उसको मारेंगे यह वचन श्रीकृष्ण और अर्जुनने कहाहै १७ तब परस्परमें महाबाहु श्रीकृष्णके इसप्रकार कहनेपर जयद्रथको देखतेहुये आपके पुत्र बहुत पुकारे १८ रेतके स्थान को उ-

लंघनकर जातेहुये तृषासे पीड़ित दो हाथी जैसे जलको पीकर तृप्तहोंय उसीप्रकार शत्रुओं के पराजय करनेवाले यह दोनों हैं १९ व्याघ्र सिंह और हाथियों से व्याप्त पहाड़ोंको उल्लंघनकरके हानि मृत्यु और वृद्धावस्थासे छूटेहुये दो व्यापारी जैसे दिखाई पड़ें २० उसी प्रकार इनदोनों के मुखका वर्ण दिखाई देता है आपके शूरवीर उन दोनोंको पारहुये देखकर सब प्रकारसे पुकारे २१ कि सर्पके रूप अग्निके समान प्रकाशित द्रोणाचार्य्य आदिक अन्य राजाओं से भी मुक्त वह दोनों दो सूर्य्योंके समान प्रकाशमानहुये २२ द्रोणाचार्य्यकी समुद्ररूप सेना से पार उतरनेवाले शत्रुविजयी दोनों आनन्दयुक्त ऐसे दिखाई पड़े जैसे समुद्र के पारगामी पुरुष दीखते हैं २३ अस्त्रों के बड़े समूहों से छुटे द्रोणाचार्य्य कृतवर्म्मा की रक्षित सेना से मुक्त वह दोनों युद्ध में इन्द्र और अग्नि के समान शोभित होकर दृष्टिगोचर हुये २४ रुधिर से लिप्त और द्रोणाचार्य्य के तीक्ष्ण शायकों से संयुक्त दोनों कृष्णवर्ण ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि कर्णिकार के वृक्षोंसे युक्त दो पर्व्वत होते हैं २५ द्रोणाचार्य्य रूप ग्राहरखनेवाली शक्ति रूप मार से दुःखवाली लोहे के बाणरूप नौकारूपी मगर वाली क्षत्रियरूपी जलसे भरी ह्रदसे निकलीहुई २६ कवच और प्रत्यञ्चा के शब्द से शब्दायमान गदा खड्ग रूप बिजली रखनेवाले द्रोणाचार्य्य के अस्त्ररूप बादलों से युक्त दोनों ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि अँधेरे में से निकलेहुये सूर्य्य और चन्द्रमा २७ मानों बर्षा ऋतु में जल से पूर्ण बड़े ग्राहों से व्याकुल उन नदियों को जिनका छठवां सिन्धु है अपने भुजबल से पारहुये २८ सब जीवधारियों ने द्रोणाचार्य्य के अस्त्र बलके आश्चर्य्य से उन यश करके लोक में प्रसिद्ध बड़े धनुषधारी दोनों कृष्ण और अर्ज्जुन को इस प्रकार से माना २९ मारने की इच्छा से सम्मुख वर्त्तमान हुये जयद्रथ को देखते हुये वह दोनों नियत हुये जैसे कि चढ़ाई में रुरुनाम मृग के अभिलाषी दो व्याघ्र होते हैं ३० उसी प्रकार इन दोनों के मुखका वर्ण था हे महाराज आप के शूरवीरों ने जयद्रथ को मृतक हुआ माना ३१ लाल नेत्र महाबाहु युद्ध में प्रवृत्त श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन उस सिन्धु के राजा को सम्मुख देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर बारम्बार गर्ज्जे ३२ उस समय बागडोर हाथ में रखनेवाले श्रीकृष्णजी का और उसधनुषधारी अर्ज्जुन के शरीर का प्रकाश उस प्रकारका हुआ जैसे कि सूर्य्य और अग्नि

का होताहै ३३ द्रोणाचार्य्य की सेना से मुक्त उन दोनोंकी प्रसन्नता जयद्रथ को सम्मुख देखकर ऐसी उत्पन्न हुई जैसे कि मांस को देखकर दो बाज़ पक्षियों की होती है ३४ फिर वह दोनों सम्मुख वर्त्तमान जयद्रथ को देखकर क्रोधरूप होकर अकस्मात् ऐसे दौड़े जैसे कि मांस को देखकर दो बाज़ दौड़ते हैं ३५ उल्लङ्घन करके पहुंचनेवाले अर्ज्जुन और केशवजी को देखकर आपका पुत्र राजा सिन्ध की रक्षाके निमित्त चला ३६ हे प्रभो धृतराष्ट्र इसके अनन्तर घोड़ों के संस्कारका जाननेवाला राजा दुर्य्योधन जिसके शरीर पर द्रोणाचार्य्य ने कवच बांधाथा एकही रथसे युद्धभूमिमें गया ३७ अर्थात् आपका बेटा बड़ेधनुषधारी श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन को उल्लङ्घन करके पुण्डरीकाक्ष बासुदेवजी के आगे गया ३८ इस के पीछे अर्ज्जुन को आपके बेटे के उल्लङ्घन करनेपर सब सेनामें बड़े आनन्द के समान बाजे बजे ३९ वहांपर दोनों कृष्ण के आगे नियत दुर्य्योधन को देखकर शङ्खों के शब्दों से संयुक्त सिंहनादें जारी हुई ४० हे प्रभो अग्नि के समान जो शूरवीर राजा सिन्ध के रक्षक थे वह आपके पुत्रको युद्ध में देखकर अत्यन्त प्रसन्नहुये ४१ तब श्रीकृष्णजी पीछे चलनेवालों समेत उल्लङ्घन करनेवाले दुर्य्योधन को देखकर समय के अनुसार यह वचन अर्ज्जुन से बोले ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणि एकाधिकशततमोऽध्याय १०१ ॥

एकसौदोका अध्याय ॥

वासुदेव जी बोले हे अर्जुन इस उल्लङ्घन करनेवाले दुर्य्योधन को देखो मैं इसको अत्यन्त अपूर्व्व मानताहूं इसके समान कोई रथी नहींहै १ यह धृतराष्ट्र का बेटा बड़ा पराक्रमी दूर पहुंचनेवाला धनुषधारी अस्त्रज्ञ युद्ध में दुर्म्मद दृढ़ अस्त्रवाला अपूर्व्व युद्ध करनेवाला २ बड़े सुखपूर्व्वक पोषण कियाहुआ महारथियों से प्रतिष्ठित सदैव कर्म करताहै हे अर्ज्जुन वह सदैव बान्धवों से शत्रुता करताहै ३ हे निष्पाप मैं समय आने पर तेरा युद्ध उसके साथ में उचित जानताहूं यहां तुम्हारा द्यूत विजय अथवा पराजय के लिये जारी हुआ ४ हेअर्जुन बहुत दिनों के रोकेहुये क्रोधरूप विषको इसपर छोड़ यह महारथी पाण्डवों के अनर्थों का मूल है ५ वही अब आकर तेरे बाणों के सम्मुख वर्त्तमान हुआ है

अपनी सफलता को देखो कि किसप्रकार से राज्यका चाहनेवाला राजा युद्ध को पावे अब यह प्रारब्ध से तेरे बाणों के लक्ष्य में वर्त्तमान हुआ है यह जिस प्रकारसे जीवन को त्यागे हे अर्ज्जुन उसी प्रकार से काम करो ६ । ७ राज्य के भोगने से मदोन्मत्त होकर इसने कभी दुःखको नहीं पाया हे पुरुषोत्तम यह युद्ध में तेरे पराक्रम को नहीं जानताहै ८ और हे अर्ज्जुन देवता असुर और मनुष्यों समेत तीनों लोक भी युद्धमें तेरे विजय करने को साहस नहीं करसक्के हैं फिर अकेला दुर्य्योधन क्या करेगा ९ यह प्रारब्ध से तेरे रथके पास वर्त्तमान हुआहै हे महाबाहु उसको इस प्रकार से मारो जैसे कि इन्द्र ने वृत्रासुर को माराथा १० हे निष्पाप यह तेरे अनर्थ में सदैव उपाय करनेवाला रहा है इसने द्यूत में छल करके धर्म्मराजको ठगा ११ हे प्रतिष्ठा देनेवाले इसपापबुद्धी ने तुमनिष्पाप लोगोंको सदैव दुःख दिये हैं १२ हे अर्ज्जुन युद्ध में उत्तमकर्म को करके बिचारको न करके उसनीच सदैव क्रोधयुक्त कामरूप पुरुष को मारो १३ हे पाण्डव छल से राज्य हरणकरना बनवास और द्रौपदीके दुःखोंको हृदयमें धारण करके पराक्रम करो १४ यह प्रारब्धसे तेरेबाणोंके लक्षपर बर्त्तमानहै और प्रारब्धहीसे अपनेकर्म के नाशके अर्थ तेरे आगे उपाय करताहै १५ और भाग्यसे युद्धमें तेरे साथ लड़ना चाहताहै हे अर्जुन बिना चाहेहुये सब मनोरथ सिद्ध और सफल हैं १६ इस हेतुसे इस कुलमें महानीच दुर्योधन को युद्धमें ऐसे मारो जैसे कि पूर्व्व समयमें देवासुरों के युद्धमें जम्भनाम असुरको इन्द्रने मारा था १७ तेरे हाथसे उस दुर्योधनके मरनेपर यह विना स्वामीकी सेना सब पृथक् २ होजायगी इस शत्रुका अष्टभूत स्नानहो अर्थात् अन्तहो दुरात्माओंके मूल को काटदे १८ संजय बोले कि यह सुनकर अर्जुनने श्रीकृष्णजी से कहा कि यह मेरा कर्मरूप है दूसरे सब कार्य्योंका निरादर करके चलो जहां दुर्योधन है १९ जिसने हमारा यह निष्कण्टक राज्य बहुत कालतक भोगा है उसके मस्तक को पराक्रम करके युद्ध में काटूं २० हे केशवजी उस दुःखके अयोग्य द्रौपदी के केश खींचने में उसके कष्टोंका बदला लेने को समर्थहूं २१ इस प्रकार बार्त्तालाप करते प्रसन्नचित्त उस राजा को चाहते दोनों कृष्ण और अर्जुनने अपनेश्वेत उत्तम घोड़ों को युद्ध में हांका २२ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ धृतराष्ट्र आपके बेटेने उन दोनोंके सम्मुख जाकर बड़े भयके वर्त्तमान होने पर भी भय को नहीं किया २३ वहां सब क्षत्रियों

ने उसके उस साहसकी बड़ी प्रशंसाकरी जो सम्मुख आनेहुये अर्जुन और श्रीकृष्णजी को रोका २४ हे राजा वहां राजा को युद्धमें देखकर आपकी सब सेना के बड़े शब्दहुये २५ मनुष्योंके उस भयकारी शब्दके वर्त्तमान होनेपर आपके पुत्रने शत्रु को निरादर और तुच्छ करके रोका २६ आपके धनुषधारी पुत्रसे रोकेहुये शत्रुके तपानेवाले अर्जुनने फिर उसपर क्रोध को प्रकट किया २७ भयकारी सूरत उन क्रोधयुक्त अर्जुन और वासुदेवजी को देखकर युद्धाभिलाषी हँसतेहुये आपके पुत्रने अर्ज्जुन को बुलाया २८।२९ इसके पीछे अत्यन्त प्रसन्न श्रीकृष्णजी और पाण्डव अर्जुनने बड़ाभारी शब्दकिया और अपने २ उत्तम शंखों कोभी बजाया ३० फिर कौरवलोग उन प्रसन्नरूप दोनों को देखकर आपके पुत्रके जीवनमें सब प्रकार करके निराशायुक्तहुये ३१ उन सब कौरवोंने बड़े शोकसे युक्त होकर आपके पुत्रको अग्निके मुखमें होमाहुआ माना ३२ भयसे पीड़ामान आपके सब शूरवीर उस प्रकारसे प्रसन्नमन श्रीकृष्ण और अर्जुनको देखकर बोले कि राजा मारा राजा मारा ३३ फिर दुर्य्योधन मनुष्योंके शब्दों को सुनकर बोला तुम अपने भयोंको दूर करो मैं इन दोनों श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन को मृत्यु के निकट भेजूंगा ३४ विजयाभिलाषी राजा दुर्य्योधन सेना के सब मनुष्यों से यह वचन कहकर अर्ज्जुन को सम्मुख करके क्रोधसे यह वचन बोला ३५ हे अर्ज्जुन तुमने स्वर्ग और पृथ्वी सम्बन्धी जो अस्त्र शस्त्र सीखे उनको मुझे शीघ्र दिखलाओ जो असल पाण्डु से उत्पन्न हुआ है तो अवश्य दिखा ३६ तेरा और केशवजी का जो बल पराक्रम है उसको शीघ्रता से मुझपर करो आज तेरी वीरता को देखेंगे ३७ मेरे नेत्रों के परोक्ष में तेरे किये हुये कर्म्मोंको जो लोग कहा करते हैं कि बड़े बड़े गुरुओं की शिक्षाओं से युक्तहैं उनको यहां दिखाओ ३८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिद्वितीयोऽध्यायः १०२॥

एकसौतीनका अध्याय॥

संजय बोले कि राजाने अर्जुनसे इसप्रकार कहकर मर्मों को उल्लंघनकर चलनेवाले बड़े तीक्ष्ण तीन बाणों से अर्जुन को और चार बाणों से चारों घोड़ों को घायल किया १ और वासुदेवजी को दश बाणों से छातीके मध्यमें घायल

किया और एक भल्लसे उसके चाबुक को काटकर पृथ्वीपर गिराया २ फिर सावधान अर्जुनने सुनहरी पुंख तेजधारवाले चौदह बाणोंसे उसको घायल किया वह अर्ज्जुनके बाण उसके कवचसे लगकर टूटपड़े ३ अर्ज्जुनने उन बाणों की निष्फलताको देखकर फिर चौदह तीक्ष्णबाणोंको चलाया वह भी कवचपर लग कर टूटे ४ उन चलायेहुये अट्ठाईस बाणोंको निष्फल देखकर शत्रुओंके बीरोंके मारनेवाले श्रीकृष्णजी अर्जुनसे यह वचनबोले ५ कि पूर्वमें जो कभी नहीं देखा है उन शिलाओं के समान बाणों के गिरनेको निष्फल देखताहूं हे अर्जुन तेरे भेजेहुये बाण प्रयोजनको नहीं करते हैं ६ हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ गांडीवका पराक्रम उसी प्रकारकाहै और तेरी मुष्टि और हस्तलाघवता भी पूर्वकेही समानहै ७ अब तेरा और इस तेरे शत्रुका यह पहला समय बर्त्तमान नहीं है इसका क्या हेतु है उसको मुझसे कहो ८ हे अर्जुन दुर्य्योधनके रथपर तेरेबाणोंको निष्फल देखकर मुझको बडा आश्चर्य होताहै ९ वज्र और बिजलीके समान भयकारी शत्रुओं के शरीरों के भेदन करनेवाले तेरे बाण अभीष्टको नहीं करते हैं हे अर्जुन अब उनका क्या तिरस्कार है १० अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी द्रोणाचार्य्यने यहमति दुर्य्योधनको दीहै कि यह मेरा बनायाहुआ और धारणकराया हुआ कवच अस्त्रोंसे नहीं टूटनेवालाहै ११ हे श्रीकृष्णजी इसकवचमें तीनोंलोक भी गुप्तहैं इस को केवल अकेले द्रोणाचार्य्यही जानतेहैं और उसी श्रेष्ठ पुरुषसे मैंनेभी सीखा है १२ हे गोविन्दजी युद्धमें आप वज्रधारी इन्द्रके बाणोंसे भी यह कवच किसी दशामें टूटनेके लायक नहीं है १३ हे कृष्णजी तुम जानतेहुये भी मुझको कैसे भुलातेहो हे केशवजी तीनोंलोकमें जो हुआहै और होरहाहै १४ और जो होगा उस सबको आप जाननेवाले हैं हे मधुसूदनजी जैसे आप जानतेहो वैसे दूसरा कोई नहीं जानसक्ताहै १५ हे श्रीकृष्णजी द्रोणाचार्य्यकी दीहुई इस कवच धारणाको शरीरपर शोभित करनेवाला यह दुर्य्योधन युद्ध में निर्भयके समान नियत बर्त्तमानहै १६ हे माधवजी अब जो कर्म यहां करने के योग्य उसको यह नहीं जानताहै स्त्री के समान यह दूसरे की धारणकराई हुई इसकवच धारणाको धारण करताहै १७ हे जनार्द्दनजी मेरी भुजाओंके और धनुषके पराक्रमको भी देखो मैं इस कवचसे रक्षितहुये भी कौरव को विजय करूंगा १८ देवताओंके ईश्वरने यह प्रकाशित कवच अंगिराऋषिको दिया उनसे बृहस्पतिजीने पाया उन

बृहस्पतिजीसे इन्द्रने पाया १६ फिर इन्द्रने यह देवताओं का बनायाहुआ कवच उपदेश पूर्वक मुझको दिया जोकि इसका कवच आप ब्रह्माजीका बनाया हुआ है अब यह कवच मेरे बाणोंसे घायलहोकर इस दुर्बुद्धी की रक्षा नहीं करेगा २० सञ्जय बोले कि स्तुति के योग्य अर्ज्जुन ने इसप्रकार कहकर कवचके काटने वाले तीक्ष्ण मानव अस्त्र से बाणों को अभिमन्त्रित करके खींचा २१ उसके खींचेहुये और उसके धनुष के मध्यवर्त्ती उन बाणों को अश्वत्थामा ने सब अस्त्रोंके दूर करनेवाले अपने अस्त्र से काटा दूरसे ब्रह्मवादी अश्वत्थामा के काटेहुये उन बाणोंको २२ देखकर आश्चर्य्य युक्त अर्जुन ने केशवजी से वर्णन किया कि हे जनार्द्दन जी यह अस्त्र मुझ को दुबारा चलाना योग्य नहीं है २३ क्योंकि दुबारा चलायाहुआ अस्त्र मुझी को मारेगा और मेरी सेनाको भी मारेगा हे धृतराष्ट्र इसके पीछे दुर्य्योधन ने दोनों कृष्णार्जुन को ऐसे नौ नौ बाणोंसे २४ जो कि सर्पों के समान थे युद्ध में घायल किया और फिरभी इन दोनों के ऊपरबाणोंकी बर्षा करने लगा २५ बाणों की बड़ी बर्षा से आपके शूरवीर लोग प्रसन्न हुये और बाजोंके शब्दों समेत सिंहनाद किये २६ इसके पीछे युद्ध में दोनों होठोंको चाटताहुआ अर्ज्जुन बड़ा क्रोधयुक्तहुआ फिर उसके उसअङ्ग को नहीं देखा जो कि धर्म से रक्षित न होय २७ इसके पीछे मृत्युके समान अच्छेप्रकारसे छोड़ेहुये तीक्ष्णबाणों से उसके घोड़ोंको और दोनों आगे पीछे वालों समेत सारथीको शरीर से रहित किया २८ और पराक्रमी अर्ज्जुन ने उसके धनुष हस्तावापको काटा और रथको खण्ड खण्ड करना प्रारम्भ किया २६ इसी प्रकार अर्ज्जुन बिरथ कियेहुये दुर्य्योधन को दो तीक्ष्ण बाणोंसे दोनों हाथोंकी हथेलियों पर घायलकिया ३० फिर बड़े उपायोंके ज्ञाता अर्जुनने बाणोंसे मांस और नखों के मध्यमें घायलकिया वह पीड़ा से महाव्याकुल होकर भागनेको प्रवृत्तहुआ ३१ अर्जुनके बाणों से पीड़ामान उस दुर्योधनको चाहते बड़े २ धनुषधारी उस राजा को आपत्ति में फँसाहुआ देखकर दौड़े ३२ उन लोगोंने हज़ारों रथों के समूह हाथी घोड़े और क्रोधयुक्त पदातियों समेत आनकर उस अर्जुनको चारों ओरसे घेरलिया ३३ इसके पीछे अस्त्रोंकी बड़ी बर्षाओं समेत मनुष्योंके समूहों से घिरेहुये अर्जुन और गोविन्दजी दिखाई नहीं पड़े और उनका रथभी दिखाई नहीं पड़ा ३४ फिर अर्जुनने अपने अस्त्रोंके बलसे उस सब सेनाको मारा वहांपर

अंगोंसे रहित सैकड़ों हाथी पृथ्वीपर गिरपड़े ३५ फिर उन मृतके और घायलों ने उस उत्तम रथको घेरलिया वह रथ चारों ओरसे एककोशतक रुकाहुआ नियत हुआ ३६ इसकेपीछे वृष्णियोंमें बीर श्रीकृष्णजी अर्जुनसे यहबचन बोले कि धनुष को अत्यन्त टंकारकरो और मैं शंखको बजाऊंगा ३७ इसकेपीछे अर्जुनने गांडीव धनुषको बड़ेबलसे टंकारकर बाणोंकी बड़ी बर्षा और प्रत्यंचाके शब्दोंसे शत्रुओं को मारा ३८ धूलसे भरे पलक पसीनोंसे अत्यन्त तरबतरमुख पराक्रमी केशव जीने बड़े शब्द से पांचजन्य शंखको बजाया ३९ तब उस शंख और धनुष के शब्दसे पराक्रमी और बिना पराक्रमी सब मनुष्य पृथ्वीपर गिरपड़े ४० उन रथियोंसे रहितहोकर रथ ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि बायुसे चलायमान बादल होतेहैं इसके अनन्तर जयद्रथके रक्षक लोग पीछे चलनेवालों समेत तेहेमें आये ४१ फिर पृथ्वीको कंपायमान करते जयद्रथके बड़े धनुषधारी रक्षकोंने अकस्मात् अर्जुनको देखकर शब्द किये ४२ उन महात्माओंने शंखों के शब्दों से संयुक्त भयकारी शब्दों समेत सिंहनादोंको प्रकटकिया ४३ आपके शूरबीरोंके उठेहुये इस भयकारी शब्दको सुनकर अर्जुन और बासुदेवजीने अपने २ उत्तम शंखों को बजाया ४४ हे राजा उस बड़े शब्द से यह पृथ्वी पर्व्वत समुद्र द्वीप और पाताल समेत भरगई ४५ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ वह शब्द दशों दिशाओंको ब्याप्तकरके उस कौरवीय और पांडवीय सेनामें शब्दोंके करनेवाले हुये ४६ वहां आपके रथी और शीघ्रता करनेवाले महारथियों ने अर्जुन और श्रीकृष्णजीको देखकर बड़े भयसे उत्पन्न होनेवाली बड़ी ब्याकुलता को पाया ४७ इसके पीछे आपके शूरबीर अत्यन्त क्रोधयुक्त उन महाभाग कवचधारी दोनों कृष्ण और अर्जुनको देखकर सम्मुखगये वह आश्चर्यसा हुआ ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिशतोपरितृतीयोऽध्यायः १०३ ॥

एकसौचारका अध्याय ॥

संजय बोले कि आपके शूरबीर वृष्णी अंधक और कौरवोंमेंश्रेष्ठ श्रीकृष्ण और अर्जुनको प्रथम सम्मुख देखकर मारनेके इच्छावान् शीघ्रता करनेवाले हुये उसी प्रकार अर्जुनने भी दूसरों को १ हे राजा सुबर्ण से जटित व्याघ्र चर्म से मढ़ेहुये शब्दायमान अग्निकान्तिके समान बड़े २ रथोंसे सब दिशाओं को प्रकाशित

करते २ सुनहरी पुंख दुःखसे देखनेके योग्य वाण क्रोधरूप सर्पों के समान बड़े शब्दों को करनेवाले धनुषों समेत ३ वह रथियों में श्रेष्ठ भूरिश्रवा, शल्य, कर्ण, वृषसेन, जयद्रथ, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा यह सब महारथी सुवर्णमयी चन्द्रमा वाले व्याघ्रचर्म की झूलों से संयुक्त घोड़ों के द्वारा आकाश को स्पर्श करते दशों दिशाओंको प्रकाशोंसे शोभायमान करनेवाले हुये ४।५ उन कवचधारी अत्यन्त क्रोधयुक्त वीरोंने वादलोंके समूहों के समान शब्दायमान रथोंके साथ तीक्ष्ण बाणोंसे अर्जुनकी दशों दिशाओंको ढकदिया ६ तब कौलूतदेशी शीघ्रगामी अपूर्व्व घोड़े उन महारथियों को सवार करते दशों दिशाओंको प्रकाशित करते अत्यन्त शोभायमानहुये ७ हे राजा आजानेय प्रकारवाले बड़े वेगवान् नानाप्रकारके देशों में उत्पन्न होनेवाले पहाड़ी नदीज और सिन्धदेशी उत्तम घोड़ोंकी सवारीसे ८ आपके पुत्रको चाहतेहुये उत्तम शूरवीर लोग शीघ्रही अर्जुन के रथके सम्मुखगये ९ और वहां उन पुरुषोत्तमों ने बड़े शंखों को लेकर बजाया उनके शब्दोंने समुद्रों समेत पृथ्वी और आकाश को व्याप्त कर दिया १० उसी प्रकार सब देवताओं में बड़े श्रेष्ठ वासुदेवजी और अर्जुनने भी अपने शंखोंको बजाया ११ अर्जुनने देवदत्तको केशवजीने पांचजन्यको बजाया अर्ज्जुनके बजायेहुये देवदत्त शंखके शब्दने १२ पृथ्वी अन्तरिक्ष और दिशाओं को व्याप्त करदिया उसीप्रकार वासुदेवजीके बजाये हुये पांचजन्य शंखने भी १३ सब शब्दोंको उल्लंघनकर पृथ्वी और आकाशको पूर्ण किया हे महाराज भयभीतोंके भयके उत्पन्न करनेवाले शूरोंकी प्रसन्नता के बढ़ानेवाले भयकारी कठोर शब्द के वर्त्तमान होने व भेरी झर्झर समेत ढोलोंके बजने १४।१५ और बहुत प्रकारसे मृदङ्गों के बजने पर दुर्य्योधनका अभीष्ट चाहनेवाले बुलायेहुये १६ उस शब्दके न सहनेवाले क्रोधयुक्त बड़ेधनुषधारी अपनी सेनासे रक्षित नानादेशों के राजा १७ उन क्रोधयुक्त महारथी राजाओंने बड़े शङ्खोंको बजाया जोकि केशवजी और अर्जुनके कर्मपर अपना कर्म्म करनेके अभिलाषी थे १८ हे समर्थ आप की वह सेना शङ्खसे चलायमान होकर व्याकुल हुई जिसके कि रथहाथी और घोड़े व्याकुलता से पूर्ण थे १९ वह सेना शूरवीरों से घायल शङ्ख से शब्दायमान ऐसे महा व्याकुल हुई जैसे कि परस्पर वायुके टकरों से शब्दायमान वादलों से आकाश शब्दायमान होता है २० हे राजा उस बड़े शब्द ने सब

दिशाओं को शब्दायमान करके उस सेना को ऐसे भयभीत किया जैसे कि प्रलयकाल का बायु भयभीत करता है २१ उसके पीछे दुर्य्योधन और उनआठों महारथियों ने जयद्रथ की रक्षाके निमित्त अर्जुन को चारोंओर से घेरलिया २२ तदनन्तर अश्वत्थामा ने तिहत्तर बाणों से बासुदेव जी को तीन भल्ल से अर्जुन को और पांच बाणों से ध्वजा समेत घोड़ों को ताड़ित किया २३ श्रीकृष्णजी के घायल होने पर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्ज्जुन ने पृषत्क नाम छःसौ बाणों से उन अश्वत्थामाजी को घायल किया २४ फिर पराक्रमी ने दशबाणों से कर्ण को तीन बाणों से वृषसेनको घायल करके शल्यकी मुष्टिको बाण और धनुष समेत काटा २५ फिर शल्य ने दूसरे धनुष को लेकर अर्ज्जुन को घायल किया भूरिश्रवा ने सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्ण धारवाले तीन बाणोंसे २६ कर्ण ने बत्तीस बाणों से वृषसेन ने सात बाणों से जयद्रथ ने तिहत्तर बाणोंसे कृपाचार्य्य ने दश बाणों से २७ शल्य ने दश बाणों से युद्ध में अर्ज्जुन को घायलकिया उसके पीछे अश्वत्थामा ने साठि बाणों से अर्ज्जुन को आच्छादित करदिया २८ वासुदेवजी को बीस बाण से फिर अर्जुन को पांच बाण से घायल किया तब अपनी हस्तलाघवता को दिखाते हँसते हुये श्वेत घोड़े और श्रीकृष्ण जी को सारथी रखनेवाले नरोत्तम अर्जुन ने २९ उन सब को इस प्रकार से घायल किया कि कर्ण को बारह बाण से घायल करके वृषसेन को तीन बाणसे घायल किया और शल्य के धनुष समेत मुष्टि के स्थानको बाण समेत काटा भूरिश्रवा को तीन बाणों से घायल कर शल्य को दश बाणों से घायल किया ३० । ३१ अग्नि की ज्वाला के समानरूप तीक्ष्ण आठ बाणों से अश्वत्थामाको घायल किया कृपाचार्य्य को पचीस बाण से जयद्रथ को सौ बाणों से ३२ फिर उस ने अश्वत्थामाको सत्तर बाणोंसे घायलकिया तदनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त भूरिश्रवाने श्रीकृष्णजी के चाबुक को काटा ३३ और अर्जुनको भी तिहत्तर बाणों से घायलकिया इसके पीछे अर्जुनने सैकड़ों तीक्ष्ण बाणोंसे उनसब शत्रुओंको ३४ शीघ्रतासे ऐसे हटाया जैसे कि क्रोधयुक्त वायु बड़े २ बादलोंको हटाताहै ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिचतुर्थोऽध्यायः १०४ ॥

एकसौपांचका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मेरे पुत्रोंकी और पाण्डवों की अनेक रूपोंकी शोभायमान ध्वजाओं को मुझसे वर्णन करो १ संजय बोले कि उन महात्माओं की बहुतसे रूपोंकी ध्वजाओं को सुनो मैं उनको रूप रंग समेत वर्णन करता हूं २ हे महाराज उन उत्तम रथियोंके रथोंपर नानाप्रकारकी अग्निके समान प्रकाशित ध्वजा दिखाईदी ३ वह ध्वजा सुवर्णमयी लुवर्णही के पीड़ और स्वर्ण निर्म्मित मालाओं से ऐसे अलंकृत थीं जैसे कि सुवर्णके बड़े पर्व्वत के बड़े २ स्वर्णमयी शिखर होते हैं ४ अनेक रंग रखनेवाली अत्यन्त शोभायमान बहुत से रूपोंकी ध्वजायें थीं उन्होंकी वह ध्वजा चारोंओर पताकाओं से संयुक्तथीं ५ वह नानाप्रकारकी ध्वजा श्वेत पताकाओं से सब ओर को संयुक्त होकर अत्यन्त शोभायमान हुईं उसके पीछे वायुसे चलायमान वह पताका ६ युद्धभूमि में प्रकाशित और नृत्य करनेवाली दिखाई पड़ीं हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ इन्द्रवज्र के समान रंग रूप से युक्त कम्पायमान उन पताकाओं ने ७ रथियों के बड़े २ रथो को शोभायमान किया भयकारी ध्वनिसे युक्त हनुमान्‌जीका चिह्न रखने वाली सिंह लांगूलनाम भयकारी अर्ज्जुन की ध्वजा ८ युद्धमें दिखाई पड़ी हे राजा हनुमान्‌जी से युक्त पताकाओं से अलंकृत ९ अर्जुनकी उस ध्वजाने उस सब सेना को भयभीत किया हे भरतवंशी उसी प्रकार अश्वत्थामाकी सिंह लांगूल १० नाम ध्वजाकी नोक को हमने देखा वह ध्वजा भी बाल सूर्य्यके समान प्रकाशित सुनहरी वायु से कम्पायमान इन्द्रकी ध्वजाके समान प्रकाशितथी ११ और कौरवीय राजाओं का प्रसन्न करनेवाला अश्वत्थामाका ऊंचा चिह्न था और कर्ण की स्वर्णमयी ध्वजा हाथी की कक्षाका चिह्न रखनेवाली थी १२ हे महाराज युद्धमें वह ध्वजा आकाश को पूर्ण करतीहुई दिखाई पड़ी और कर्ण की ध्वजापर माला रखनेवाली स्वर्णमयी पताका १३ वायुसे चलायमान रथके ऊपर नाचतीहुई सी दिखाई पड़ी फिर पाण्डवों के आचार्य्य तपस्वीब्राह्मण १४ गौतम कृपाचार्य्यकी अच्छी अलंकृत ध्वजा गोवृषका चिह्न रखनेवाली थी हे राजा वह तानी उस ध्वजा से ऐसा शोभायमान हुआ १५ जैसे कि त्रिपुर के मारनेवाले शिवजीका अत्यन्त प्रकाशित रथ नन्दीगण से शोभायमान होता

है और वृषसेनका सुनहरी मोर मणि और रत्नों से जटित १६ सेना के आगे शोभा करता और बोलता हुआसा नियत हुआ उस महात्माका रथ उस मोर से ऐसा प्रकाशमान हुआ १७ हे महाराज जैसे कि अत्यन्ततम प्रकाशमान मोर से स्वामिकार्त्तिकजीका रथ शोभित होताहै मद्रदेशके राजा शल्यकी ध्वजाके ऊपर प्रज्वलित अग्निके समान प्रकाशित १८ स्वर्णमयी अनुपम मङ्गल रूप सीताको देखा हे श्रेष्ठ वह सीता उसके रथपर नियत होकर ऐसी प्रकाशमानहुई १९ जैसे कि सब बीजों से संयुक्त शोभासे भरीहुई लक्ष्मी समेत सीता प्रकाशित होती है सिन्ध के राजा की ध्वजापर वराह प्रकाशमान था २० और अरुण सूर्य्य के समान प्रकाशित होकर सुनहरी जालों से अलंकृत जयद्रथ की ध्वजाथी वह जयद्रथ उस ध्वजा से ऐसा शोभायमान हुआ २१ जैसे कि पूर्व्व समयमें देवासुरों के युद्ध में पूषा शोभायमान हुआ था और यज्ञके अभ्यासी बुद्धिमान सोमदत्त की ध्वजामें यज्ञस्तम्भका चिह्न था २२ वह ध्वजा सूर्य्यके समान प्रकाशमान होकर जिसमें चन्द्रमारूप दिखाई देताहै हे राजा वह सोमदत्तका स्वर्णमयी यज्ञस्तम्भ ऐसा प्रकाशमान था २३ जैसे कि राजसूय यज्ञमें बहुत ऊंचा यूप होताहै हे महाराज उस शल्यकी ध्वजामें बड़ा हाथी भी प्रकाशमान था २४ वह ध्वजा स्वर्ण से जटित अंगवाले मोरों से शोभायमान थी हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ उस ध्वजाने आपकी सेना को ऐसे शोभायुक्त किया २५ जैसे कि देवराज इन्द्रकी सेना को बड़ा श्वेत ऐरावत हाथी शोभित करता है आपके पुत्र राजाकी ध्वजाका हाथी मणियों से जटित सुवर्ण से खचित २६ सैकड़ों क्षुद्रघंटिकाओं से शब्दायमान अपूर्व्व उत्तम रथपर शोभायमान था वह ध्वजा भी अत्यन्त शोभायमानहुई तब कौरवों में श्रेष्ठ राजा दुर्य्योधन उस अपनी ध्वजाओं समेत युद्ध करनेलगा २७ आपकी सेनाकी उन उत्तम ऊंची प्रलयकालके सूर्य्यके समान प्रकाशित नव ध्वजाओंने आपकी सेना को अत्यन्त प्रकाशित किया और हनुमान्‌जी से युक्त दशवीं ध्वजा एक अर्ज्जुन की थी २८। २९ उसी ध्वजासे अर्जुन ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि अग्नि से हिमालय पर्व्वत शोभित होताहै उसके पीछे शत्रुसन्तापी महारथियों ने अपूर्व उज्ज्वल बड़े बड़े ३० धनुषों को अर्ज्जुन के लिये हाथों में लिया हे राजा उसी प्रकार आपकी दुर्म्मतिता में दिव्यकर्म्मी शत्रुहन्ता अर्ज्जुन ने गाण्डीव धनुष

को लिया फिर आपकेही अपराध से अनेक राजा मारेगये ३१ । ३२ और जिन राजाओं को हाथी घोड़े और रथों समेत नानादेशों से बुलवायाथा उन परस्पर गर्जनेवाले लोगोंकी बड़ी चढ़ाईहुई ३३ दुर्य्योधनादिक धृतराष्ट्र के पुत्रोंके साथ पाण्डवोंमें श्रेष्ठ अर्जुनका बड़ा कठिन युद्ध हुआ श्रीकृष्णजी को सारथी रखने वाले अर्जुनने वहां बड़ा अपूर्व कर्मकिया ३४ कि जो अकेलाही निर्भयके समान बहुतसे बड़े बड़े शूरबीरोंके सम्मुख युद्ध करनेवाला हुआ वह महाबाहु गाण्डीव धनुषको चलायमान करता शोभायमान हुआ ३५ और जयद्रथ के मारने का अभिलाषीहुआ शत्रु के तपानेवाले नरोत्तम अर्जुनने वहांपर छोड़ेहुये हजारों बाणोंसे ३६ आपके शूरबीरोंको दृष्टिसे अलक्ष करदिया इसके पीछे उन सब नरोत्तम महारथियोंने भी ३७ युद्धमें बाणोंके समूहोंसे अर्ज्जुनको चारोंओरसे ढकदिया उन नरोत्तमों से कौरवों में श्रेष्ठ अर्ज्जुनके ढक जानेपर उनकी सेनाओं के बड़े शब्द प्रकटहुये ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिपञ्चमोऽध्यायः १०५ ॥

एकसौछःका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे सञ्जय जयद्रथ से अर्ज्जुन के सम्मुख होने पर द्रोणाचार्य्य के सम्मुख वर्त्तमान पांचालों ने कौरवोंके साथ क्या किया १ सञ्जय बोले हे महाराज तीसरे पहरको रोमहर्षण करनेवाले युद्धमें पाञ्चाल और कौरवोंके द्यूतरूप द्रोणाचार्य्य जी वर्त्तमान हुये २ हे श्रेष्ठ अत्यन्त प्रसन्नमन द्रोणाचार्य्य के मारनेके अभिलाषी और गर्जतेहुये पांचालोंने बाणोंकी वर्षाको छोड़ा ३ इसके पीछे उन पाञ्चाल और कौरवों का युद्ध अत्यन्त कठिन अपूर्व्व भयकारी देवासुरों के युद्धके समान हुआ ४ उस सेनाके छिन्न भिन्न करने के अभिलाषी पाण्डवों समेत पाञ्चालों ने द्रोणाचार्य्य के रथको पाकर बड़े अस्त्रों को दिखलाया ५ रथ में नियत रथी सामान्य तीव्रता से युक्त होकर पृथ्वीको कंपितकरतेहुये द्रोणाचार्य्य के रथके समीप वर्त्तमान हुये ६ केकय देशियों का महारथी बृहत्क्षत्र इन्द्र वज्रके समान तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करताहुआ उसके सम्मुखगया ७ फिर बड़ा यशस्वी क्षेमधूर्त्त हजारों तीक्ष्ण बाणों को छोड़ता शीघ्रही उसके सम्मुख गया ८ बड़े बलमें उदय होनेवाले चन्देरी देशियों में श्रेष्ठ धृष्ट-

केतु भी ऐसे शीघ्रतासे सम्मुख गया जैसे कि देवेन्द्र संवर दैत्यके पास गयाथा ६ अत्यन्त खुलाहुआमुख कालकेसमान अकस्मात् आतेहुये उस धृष्टकेतुके सम्मुख बड़ा धनुषधारी शूरधन्वा शीघ्रतासे गया १० इसके पीछे पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने विजयाभिलाषी सम्मुखतामें नियत हुये महाराज युधिष्ठिरको सेना समेत रोका ११ हे प्रभो आपका पुत्र पराक्रमी विकर्ण उस युद्धकुशल बड़े पराक्रमी आते-हुये नकुल के सम्मुख हुआ १२ शत्रुविजयी दुर्मुखने तीक्ष्ण चलनेवाले हज़ारों बाणों से उसी प्रकार आते हुये सहदेव को ढक दिया १३ अत्यन्त तीक्ष्ण धार वाले बाणों से वारंवार कम्पायमान करते व्याघ्रदत्तने नरोत्तम सात्यकीको रोका १४ सोमदत्त ने उत्तम बाणों को छोड़ते अत्यन्त क्रोधयुक्त नरोत्तम उत्तम रथी द्रौपदीके पुत्रोंकोरोका १५ तब भयकारीरूप बड़े उत्कट महारथी आर्षशृङ्गीने उस क्रोधयुक्त आतेहुये भीमसेनको रोका १६ हे राजा युद्धभूमिमें उन दोनों नर और राक्षस का ऐसा कठिन युद्ध हुआ जैसा कि पूर्व्व समय में राम और रावणका हुआ था १७ हे भरतवंशी इसके पीछे भरतवंशियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर ने झुकी गांठवाले नब्बेबाणोंसे द्रोणाचार्य्यको सब मर्म्मोंपर घायलकिया १८ तब यशस्वी युधिष्ठिर से घायल क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्यने पचीस बाणोंसे उसको छातीपर घा-यल करके १९ सब धनुषधारियों के देखते उसको घोड़े ध्वजा और सारथीसमेत बीसबाणोंसे बेधा २० फिर हस्तलाघवता दिखलाते धर्म्मात्मा पाण्डवने द्रोणाचा-र्य्यके उन छोड़हुये बाणोंको अपने बाणोंकी बर्षासे हटाया २१ इसके पीछे अत्य-न्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्यने युद्धभूमिके बीच उस धर्म्मात्मा धर्म्मराजके धनुषको काटा २२ और बड़ी शीघ्रतासे हजारों बाणोंके द्वारा इस टूटेधनुषवाले राजा यु-धिष्ठिर को सब ओरसे आच्छादित किया २३सब जीवधारियोंने भारद्वाज द्रो-णाचार्य्यके बाणोंसे ढकेहुये राजा युधिष्ठिरको देखकर मृतकरूप माना २४ हे महा-राज इसीप्रकार बहुतसे मनुष्योंने इस मुख फेरनेवाले राजाको देखकर माना कि यह राजा इस महात्मा ब्राह्मणके हाथसे मारागया २५ फिर बड़ी आपत्तिमें पड़े-हुये उस धर्मराज युधिष्ठिरने युद्ध में द्रोणाचार्य्यके काटेहुये उस धनुष को छोड़-कर २६ दूसरे प्रकाशमान अत्यन्त दिव्य तीव्र धनुषको लेकर उस वीरने द्रोणा-चार्य्य के उन चलायमान हजारों बाणों को २७ युद्ध में काटा यह आश्चर्य्यसा हुआ और क्रोधसे रक्तनेत्रवाले युधिष्ठिरने उन बाणोंको काटकर २८ युद्धमें महा-

ड़ोंको भी विदीर्ण करनेवाली सुवर्णदंड युक्त आठघंटे रखनेवाली महाभयकारी भयानक शक्तिको हाथ में लिया २६ हे भरतबंशी वह पराक्रमी प्रसन्नमुख उस शक्तिको फेंककर सब जीवधारियों को भयभीत करताहुआ बड़े बलसे गर्जा३० युद्ध में धर्मराज की उठाई शक्ति को देखकर सब जीवधारी अकस्मात् बोले कि द्रोणाचार्य्यका कल्याणहो ३१ राजाकी भुजासे छोड़ीहुई कांचलीसे निकलेहुये सर्प की समान वह शक्ति आकाश दिशा विदिशाओं को प्रकाशमान करती प्रकाशित मुखवाले सर्पकी समान द्रोणाचार्य्यके पास पहुंची ३२ हे राजा इसके पीछे अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य ने उस अकस्मात् गिरतीहुई शक्ति को देखकर ब्रह्मास्त्रको प्रकटकिया वह अस्त्र उस भयकारी दर्शनवाली शक्तिको अत्यन्त भ· स्मकरके ३३ । ३४ शीघ्रतासे यशस्वी धर्मराज के रथपर गया हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछे बड़े ज्ञानी राजा युधिष्ठिरने द्रोणाचार्य्यके चलायेहुये उसअस्त्रको ३५ ब्रह्मअस्त्रसे ही शान्त किया फिर युद्धमें द्रोणाचार्य्यको पांच बाणों से घायलकर के ३६ क्षुरप्रनाम अत्यन्त तीक्ष्ण बाणसे उनके बड़े धनुषको काटा तब क्षत्रियों के मर्द्दन करनेवाले द्रोणाचार्य्यने उस टूटेहुये धनुषको डालकर ३७ युधिष्ठिरके ऊपर अकस्मात् गदाको फेंका युधिष्ठिरने उसअकस्मात् गिरतीहुई गदाको देखकर ३८ बड़े क्रोधयुक्त होकर गदाकोही लिया और लेकर फेंका हे शत्रुसंतापी वह अक- स्मात् छोड़ीहुई दोनों की दोनों गदा परस्पर मिलकर ३९ घिसावट से अग्नि- योंको छोड़कर पृथ्वीपर गिरपड़ी हे श्रेष्ठ उसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणा- चार्य्य ने धर्मराजके चारों घोड़ोंको बड़े तीव्र चार उत्तम बाणोंसे मारा ४० और इन्द्रकी ध्वजाके समान धनुप को एक भल्लसे काटा ४१ एक बाण से ध्वजा को काटकर तीन बाणों से युधिष्ठिरको पीड़ामान किया हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ फिर ऊपरको भुजा रखनेवाला अशस्त्र राजा युधिष्ठिर मृतक घोड़ेवाले रथसे शीघ्रही कूदकर खड़ाहुआ उसको विरथ और अधिकतर निरशस्त्र देखकर ४२ । ४३ द्रो- णाचार्य्य ने शत्रुओंको और सब सेनाओं को अत्यन्त मोहितकिया और इस के पीछे फिर तीव्रव्रती द्रोणाचार्य्य तीक्ष्ण बाणों के समूहों को छोड़ते ४४ राजा के सम्मुख ऐसे दौड़े जैसे कि गर्जताहुआ सिंह मृगके सम्मुख जाताहै शत्रुओं के मारनेवाले द्रोणाचार्य्य से पराजितहुये उस युधिष्ठिर को देखकर ४५ अक- स्मात् पांडवों के हायहाय शब्द प्रकटहुये हे श्रेष्ठ फिर पांडवों की ओरसे ऐसा

शब्दभी हुआ कि भारद्वाजके हाथ से राजा मारागया ४६ हे भरतवंशी इसके पीछे कुन्तीका पुत्र राजा युधिष्ठिर शीघ्रही सहदेवके रथपर चढ़कर शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा दूर हटगया ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषष्ठोऽध्यायः १०६॥

एकसौसातका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे महाराज क्षेमधूर्त्ती ने उस दृढ़ पराक्रमी केकयदेशी आते हुये बृहच्छत्रको बाणोंसे छातीपर घायलकिया १ और द्रोणाचार्य्य की सेना को छिन्न भिन्न करनेके अभिलाषी शीघ्रता करनेवाले राजा बृहच्छत्रने उसको नब्बे बाणोंसे व्यथित किया २ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त क्षेमधूर्त्तीने महात्मा बृहच्छत्रके धनुष को तीक्ष्ण पीतबर्ण के भल्लसे काटा ३ फिर सब धनुषधारियों में अत्यन्त श्रेष्ठ इस बृहच्छत्र को जिसका कि धनुष टूटगयाथा गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे शीघ्रही युद्धमें घायलकिया ४ फिर हँसतेहुये बृहच्छत्रने दूसरे धनुषको लेकर महारथी क्षेमधूर्त्तीको घोड़े सारथी और रथसे रहित करदिया ५ इसके पीछे तीक्ष्णधार पीतरंगवाले दूसरे भल्ल से प्रकाशमान कुण्डल रखनेवाले राजाके शिर को शरीर से अलग किया ६ वह घूंघुरवाले बालोंवाला अकस्मात् कटाहुआ उसका कुण्डल समेत शिर पृथ्वी को पाकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि आकाशसे गिराहुआ तारा होताहै ७ फिर प्रसन्नचित्त महारथी बृहच्छत्र युद्धमें उसको मारकर अर्जुन के कारण से आपकी सेनापर अकस्मात् दौड़ा ८ हे भरतवंशी पराक्रमी बड़े धनुषधारी बीरधन्वा ने द्रोणाचार्य्य के निमित्त इस प्रकार जातेहुये धृष्टकेतु को रोका ९ बाणरूप डाढ़ रखनेवाले वेगवान् उन दोनों ने परस्पर सम्मुख होकर हजारों बाणों से एकने दूसरे को घायल किया १० वह दोनों नरोत्तम परस्परमें ऐसे युद्ध करनेवाले हुये जैसे कि महावनमें बड़े मतवाले गजराज लड़ते हैं ११ अर्थात् वह दोनों बड़े पराक्रमी परस्पर मारने की अभिलाषा से ऐसे युद्ध करते हुये जैसे कि क्रोधयुक्त दो शार्दूल पहाड़की कन्दरा को पाकर लड़ते हैं १२ हे राजा वह कठिन युद्ध देखनेके योग्य सिद्ध चारणों के समूहोंके आश्चर्यों से अपूर्व्वही देखने के योग्य हुआ १३ इसके पीछे क्रोधयुक्त हँसते हुये बीरधन्वाने धृष्टकेतुके धनुष को भल्लसे दोखण्ड करदिया १४ महारथी राजा

चन्देरीने उस टूटे धनुष को छोड़कर सुनहरी दण्डवाली लोहेकी बड़ी शक्ति को हाथ में लिया १५ हे राजा फिर उस सावधान ने उस बड़ी पराक्रमवाली शक्ति को दोनों हाथों से अकस्मात् वीरधन्वा के रथपर फेंका १६ तब उस वीरोंकी मारनेवाली शक्ति से अत्यन्त घायल और टूटे हृदयवाला वीरधन्वा शीघ्रही रथसे पृथ्वीपर गिरा १७ हे समर्थ त्रिगर्त्तदेशियों के उस महारथी वीरके मरनेपर आप की सेना पाण्डवों की चढ़ाई से चारों ओर को छिन्न भिन्न हुई १८ उसके पीछे दुर्मुखने साठ बाणों को सहदेवपर छोड़ा और युद्धमें पाण्डव सहदेव को घुड़कताहुआ बड़ेशब्द से गर्जा १९ इसके पीछे हँसतेहुये क्रोधयुक्त भाई सहदेव ने तीक्ष्ण बाणों से उस आतेहुये भाई दुर्मुख को घायल किया २० फिर दुर्मुखने युद्धमें उस वेगवान् महाबली सहदेव को देखकर नवबाणों से घायल किया २१ महाबली सहदेवने भल्लसे दुर्मुखकी ध्वजाको काटकर तीक्ष्णधारवाले चारबाणों से चारों घोड़ोंको मारा २२ फिर पीतरंग दूसरे तीक्ष्ण भल्लसे सारथी के शरीरसे प्रकाशित कुंडल रखनेवाले शिरको काटा २३ इसके पीछे सहदेवने क्षुरप्रनाम तीक्ष्णबाणसे युद्धमें उसके बड़े धनुषको काटकर पांचबाणोंसे उसको भी घायल किया २४ हे भरतवंशी धृतराष्ट्र तब बिमन दुःखी दुर्मुख उस मृतक घोड़ेवाले रथ को त्याग करके निरमित्रके रथपर सवारहुआ २५ इसके पीछे शत्रुओंके संतापी क्रोधयुक्त सहदेवने बड़े युद्धमें सेनाके भीतर भल्लसे निरमित्रको घायल किया २६ वह त्रिगर्त्तके राजाका पुत्र निरमित्र अपनी सेनाको दुःख युक्त करता रथके बैठने के स्थानसे पृथ्वीपर गिरपड़ा २७ महाबाहु सहदेव उसको मारकर ऐसे अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि दशरथात्मज श्रीरामचन्द्रजी बड़े पराक्रमी खर राक्षसको मारकर शोभितहुयेथे २८ हे राजा उस महारथी राजकुमार निरमित्रको मृतक देखकर त्रिगर्त्तदेशियों में बड़ा हाहाकार हुआ २९ फिर नकुल ने आपके पुत्र बड़े नेत्रवाले विकर्णको भी एकमुहूर्त्तमात्र में विजय किया वह भी सबको आश्चर्य्यसा हुआ ३० तब व्याघ्रदत्तने सेनाके मध्यमें गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से सात्यकी को घोड़े सारथी और ध्वजा समेत दृष्टिसे गुप्त करदिया ३१ शूर सात्यकी ने हस्तलाघवता के समान उन बाणों को रोककर अपने बाणों से व्याघ्रदत्तको घोड़े ध्वजा और सारथीसमेत रथसे गिराया ३२ हे प्रभु उस मगधके राजकुमार के मरनेपर युद्धमें कुशल मगधदेशी उस सात्यकी के सम्मुख

गये ३३ बाणों को छोड़ते हजारों तोमर भिन्दिपाल प्रास मुद्गर और मूशलों को छोड़ते हुये शूरों ने युद्ध में दुर्मद यादव सात्यकी से युद्धकिया हँसते हुये पुरुषोत्तम पराक्रमी युद्धदुर्मद सात्यकी ने उन सबको ३४ । ३५ बड़ी सुगमता से विजय किया हे समर्थ मरनेसे बाकी बचेहुये चारोंओर से भागते हुये मगध देशियों को देखकर ३६ सात्यकीके बाणोंसे पीड़वान् आपकी सेना छिन्न भिन्न होगई मधुदेशियों में श्रेष्ठ सात्यकी युद्ध में आप की सेनाको मारकर ३७ बड़ा यशस्वी उत्तम धनुषको चलायमान करता अत्यन्त शोभायमान हुआ हे राजा महात्मा सात्यकी के हाथसे छिन्न भिन्न ३८ उस लम्बी भुजावाले से भयभीत वह सेना युद्ध के निमित्त सम्मुखता में वर्त्तमान नहीं रही इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य अकस्मात् दोनों नेत्रों को उघाड़कर आपही उस सत्यकर्मी सात्यकी के सम्मुख गये ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणि शतोपरिसप्तमोऽध्यायः १०७ ॥

एकसौआठका अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि बड़े यशवान् सौमदत्तने बड़े धनुषधारी द्रौपदीके पुत्रोंको पांच पांच बाणों से घायल करके फिर प्रत्येक को सात सात बाणोंसे छेदा १ हे समर्थ उस भयकारी सौमदत्त से अकस्मात् अत्यन्त पीड़ावान् और अचेत द्रौपदी के पुत्रोंने युद्धमें करनेके योग्य किसी कर्म्म को भी नहींजाना २ शत्रुका पराजय करनेवाला नकुल का पुत्र सतानीक नरोत्तम सौमदत्त को दो बाणों से घायल करके बड़ी प्रसन्नतासे गर्जा ३ इसीप्रकार युद्धमें कुशल अन्यलोगोंने भी युद्धमें तीन तीन बाणों से शीघ्रही उस क्रोधयुक्त सौमदत्त को घायल किया ४ हे महाराज उस बड़े यशस्वी सौमदत्त ने उनके ऊपर पांच बाणों को फेंका और प्रत्येकको एक एक बाणसे हृदय पर घायल किया ५ इसके पीछे उस महात्माके बाणों से बहुत घायल उन पांचों भाइयोंने युद्धमें उसको घेरकर शायकोंसे अत्यन्त घायल किया ६ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्ज्जुन के पुत्रने तीक्ष्णधारवाले चार बाणों से उसके घोड़ों को यमलोक में पहुंचाया ७ भीमसेन का पुत्र उस महात्मा सौमदत्त के धनुष को काटकर बड़े वेगवाले शब्द को गर्जा और तीक्ष्ण बाणों से घायल किया ८ युधिष्ठिर के पुत्र ने उसकी ध्वजा को काटकर

पृथ्वीपर गिराया फिर नकुल के पुत्रने सारथी को रथके बैठने के स्थानसे गिरा-
या ९ और सहदेवके पुत्रने अपने भाइयोंसे मुख फेरनेवाला जानकर क्षुरप्रनाम
वाण से महात्माके शिरको काटा १० उसका शिर सुवर्ण से अलंकृत वालार्क के
समान प्रकाशित युद्धभूमि को सुशोभित करता पृथ्वीपर गिरपड़ा ११ हे राजा
महात्मा सौमदत्तके कटेहुये उस शिरको देखकर आपकी सेनाके लोग भयभीत
होकर अनेक प्रकार से भागे फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अलंबुष महावली भीमसेन
से युद्धमें ऐसे युद्ध करनेवाला हुआ जैसे कि रावणका पुत्र मेघनाद लक्ष्मण
जीके साथ करनेवाला हुआथा १२।१३ उन दोनों नर और राक्षसको युद्धमें क-
ठिन युद्ध करनेवाला देखकर सब जीवोंको आश्चर्य्य पूर्व्वक बड़ी प्रसन्नता प्राप्त
हुई १४ हे राजा इसके पीछे हँसतेहुये भीमसेनने तीक्ष्णधारवाले नववाणोंसे उस
क्रोधयुक्त राक्षसाधिप अलंबुष राक्षसको घायलकिया १५ इसके अनन्तर युद्ध में
घायल हुआ वह राक्षस भयकारी शब्दको करके भीमसेनके सम्मुख दौड़ा और
जो उसके आगे पीछे रहनेवाले थे वे भी दौड़े १६ उस राक्षसने युद्धमें गुप्तग्रंथी
वाले पांचवाणों से भीमसेन को घायलकरके शीघ्रही भीमसेन के तीस रथों को
मारा १७ फिर चारसौ शूरवीरों को मारकर वाणसे भीमसेनको घायलकिया इस
प्रकार उस राक्षसके हाथसे अत्यन्त घायल वह महावली भीमसेन १८ मूर्च्छासे
युक्तहोकर रथके बैठनेके स्थानपर बैठगया इसके पीछे महाक्रोधभरे वायुपुत्र भी-
मसेनने १९ वोझेके साधनेवाले भयकारी उत्तम धनुषको खैंचकर तीक्ष्णवाणोंसे
अलंबुषको सब ओरसे पीड़ावान् किया २० हे राजा नीले बादलोंके समान वह
राक्षस बहुत वाणोंसे घायलहोकर फूलेहुये किंशुकके समान शोभायमान हुआ
२१ युद्ध में भीमसेन के धनुष से गिरेहुये वाणों से घायलहुआ राक्षस महात्मा
पांडवके हाथसे भाईके मरनेको स्मरण करता २२ भयानकरूप वनाकर भीमसेन
से बोला हे कुन्तीके बेटे अब युद्धमें नियतहोकर मेरे पराक्रमको देख २३हे दुर्बु-
द्धी वह युद्ध मेरे पीछे जारी हुआथा जिसमें राक्षसोंमें श्रेष्ठ बड़ा पराक्रमी वक
नाम मेराभाई तेरे हाथमे मारागया २४ इसके पीछे अंतर्द्धान होजानेवाले राक्षस
ने वाणोंकी बड़ी वर्षासे उस भीमसेनको अत्यन्त घायलकिया २५ तब राक्षसके
गुप्त होनेपर भीमसेन ने गुप्तग्रन्थीवाले वाणोंसे आकाश को पूर्ण करदिया २६
भीमसेन के हाथ से घायल वह नीच राक्षस क्षणभरही में रथपर चढ़कर पृथ्वी

पर आया और अकस्मात् आकाशको गया २७ बादल के समान शब्द करते हुये उस राक्षसने छोटे और बड़े नाना प्रकारके अनेक रूपों को धारण किया अर्थात् कभीछोटा कभी लम्बा और कभीमोटा होजाताथा २८ इसीप्रकार नाना प्रकार के बचनों को भी चारोंओर से बोला और आकाश से बाणोंकी हजारों धारा गिरी २९ शक्ति, क्षणप, प्रास, शूल, पट्टिश, तोमर, शतघ्नी, परिघा, भिण्डिपाल, फरसा ३० शिलाखड्ग, अगुड़, दुधाराखड्ग, बज्र यह सब आकाश से गिरे राक्षसकी छोड़ीहुई अत्यन्त भयकारी शस्त्रों की वर्षाने ३१ युद्ध में जाकर पाण्डवकी सेनाके मनुष्यों को मारा उस युद्धमें पाण्डवी सेनाओं के हाथी नाशहुये ३२ हे राजा इसी प्रकार अनेक घोड़े और बहुत से पत्तिलोग भी नाश को प्राप्तहुये और उसके बाणों से घायल रथ सवार रथोंसे गिरपड़े ३३ रुधिररूपी जल रथरूपी भँवर छत्ररूप हंस रखनेवाली हाथीरूप ग्राह और भुजा रूप सर्पों से व्याकुल ३४ राक्षसोंके समूहों से व्याकुल चन्देरी सृंजय और पांचालदेशियों की बहुधा बहानेवाली नदी जारी होगई ३५ तब अत्यन्त ब्याकुल पाण्डवोंने उस प्रकार निर्भयके समान घूमनेवाले राक्षस को और उसके पराक्रम को देखा ३६ फिर आपकी सेना में बड़ी प्रसन्नताहुई और बाजोंके बड़े भारी भयकारी रोमहर्षण करनेवाले शब्द जारीहुये ३७ पाण्डवने आपके भयकारी शब्दों को सुनकर ऐसे नहीं सहा जैसे कि हथेली से किये हुये शब्द को सर्प्प नहीं सहसक्ता ३८ इसके पीछे क्रोध से रक्तनेत्र ज्वलितअग्नि के समान बायुपुत्र भीमसेनने आपही त्वष्टा देवताके समान त्वाष्ट्र अस्त्र को धनुषपर चढ़ाया ३९ उस अस्त्र से हजारों बाण चारोंओर को प्रकटहुये उन बाणों से आप की सेनाके अत्यन्त भागने पर ४० युद्धमें भीमसेन से चलायेहुये उस अस्त्र ने राक्षसकी बड़ी माया को नाश करके पीड़ामान किया ४१ भीमसेन के हाथ से बहुत घायल हुआ वह राक्षस युद्धमें भीमसेन को त्याग करके द्रोणाचार्य्य की सेनामें चलागया ४२ हे राजा महात्मा भीमसेन के हाथ से उस राक्षसाधिप के विजय होनेपर पाण्डवोंने अपने सिंहनादों से सब दिशाओं को शब्दायमान किया ४३ उन अत्यन्त प्रसन्न मनवालोंने बायुकेपुत्र महाबली भीमसेनकी ऐसी प्रशंसाकरी जैसे कि मरुद्गण नाम देवताने युद्धमें प्रह्लाद को विजय करके इन्द्रकी स्तुतिकरी थी ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टोत्तरशततमोऽध्यायः १०८ ॥

एकसौनवका अध्याय ॥

संजय बोले कि इस प्रकार युद्धमें निर्भय के समान घूमनेवाले अलम्बुष के सम्मुख घटोत्कच गया और शीघ्रही तीक्ष्णधारवाले बाणों से उसको घायल किया १ नानाप्रकार की माया को प्रकट करनेवाले उन दोनों राक्षसोत्तमों का युद्ध ऐसा भयकारी हुआ जैसा कि इन्द्र और सम्बर दैत्यका हुआ था २ अत्यन्त क्रोधयुक्त अलम्बुषने घटोत्कच को घायल किया फिर उन दोनों प्रबल राक्षसों का ऐसा युद्ध हुआ ३ जैसे कि पूर्व्व समय में रामचन्द्रजी और रावण का युद्ध हुआ था हे प्रभु फिर घटोत्कच ने बीस नाराचों से छाती के मध्यमें ४ अलम्बुष को घायल करके वारम्वार सिंहनाद किया हे राजा इसी प्रकार अलम्बुष भी उस युद्ध दुर्मद घटोत्कच को वेधकर ५ प्रसन्न मन चारोंओरसे आकाश को व्याप्त करता हुआ गर्ज्जा उसी प्रकार अत्यन्त क्रोधयुक्त बड़े पराक्रमी दोनों राक्षसाधिप ६ मायाओं के द्वारा परस्पर समान वल करनेवाले हुये सदैव सैकड़ों मायाके करनेवाले परस्पर एक एक को मोह युक्त करनेवाले ७ माया के युद्धों में सावधान मायाही के युद्ध करनेवाले हुये घटोत्कच ने जिस जिस माया को प्रकट किया ८ हे राजा अलम्बुष ने उस उस माया को मायाही से नाश किया उस माया युद्ध में कुशल और युद्ध करनेवाले उस राक्षसाधिप अलम्बुष को देखकर पाण्डव लोग क्रोधरूप हुये अत्यन्त व्याकुल क्रोधयुक्त वह भीमसेनादिक पाण्डव रथों के द्वारा सबओर से उसके सम्मुख गये हे श्रेष्ठ उन्हों ने अपने बहुत से रथों से उसको घेरकर ९।१०।११ सबओर को बाणों से ऐसा ढक दिया जैसे कि उल्काओं से हाथी को ढकते हैं वह माया के अस्त्रों से उन्हों के वेगों को दूर करके १२ उन रथ समूहों से ऐसे निकलगया जैसे कि वनकी अग्नि से हाथी निकल जाताहै वह इन्द्र वज्रके समान शब्दायमान भयकारी धनुष को टङ्कार कर १३ वायु के पुत्र भीमसेन को तीस बाण से युधिष्ठिर को तीन बाणों से सहदेव को सात बाण से नकुल को बहत्तर बाणोंसे और द्रौपदी के पुत्रों को पांच पांच बाणों से छेदकर बड़े भयकारी शब्द से गर्जा १४। १५ भीमसेन ने उस राक्षस को नव बाणों से सहदेव ने पांच बाणसे युधिष्ठिर ने सौ बाणों से घायल किया १६ फिर नकुलने चौंसठ बाण से द्रौपदीके पुत्रोंने

तीन २ बाण से घटोत्कच ने पचास बाण से उसको घायल करके १७ फिर सत्तर बाण से घायल करताहुआ बड़े बेग से गर्जा हे राजा उसके बड़े शब्द से यह पृथ्वी १८ पर्ब्बत वृक्ष और नदियों समेत कम्पायमान हुई सबओर से उन बड़े धनुषधारी महारथियों से अत्यन्त घायल उस राक्षस ने १९ उनसबको पांच पांच बाणों से घायल किया हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ फिर युद्ध में क्रोधयुक्त घटोत्कच राक्षस ने उस क्रोध भरे राक्षस को २० सात बाणों से घायल किया तब उस बलवान् के हाथ से अत्यन्त घायल उस बड़े पराक्रमी राक्षसाधिप ने २१ शीघ्रही सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्ण बाणों को छोड़ा वह झुकीहुई गांठवाले बाण राक्षस के शरीर में ऐसे प्रविष्ट होगये २२ जैसे कि बड़े बलवान् प्रसन्न सर्प्प पर्ब्बत के शिखर में प्रविष्ट करते हैं हे राजा उसके पीछे उन व्याकुल पाण्डवों ने चारोंओरसे तीक्ष्ण धारवाले बाणोंको बर्षाया २३ और हिडम्बाके पुत्र घटोत्कचने युद्धमें विजयसे शोभा पानेवाले पाण्डवोंसे घायल २४ मरण धर्म्मको पानेवाले उस राक्षसने करने के योग्य कर्म्मको नहीं जाना इसके पीछे युद्धमें भीमसेन के पुत्र घटोत्कचने २५ ऐसी दशावाले उस राक्षसको देखकर उसके मारनेके निमित्त मन से बिचार किया और उस राक्षसाधिपके रथपर बड़ाबेग किया २६ क्रोधयुक्त घटोत्कच ने रथके द्वारा सम्मुख जाकर भस्महुये पर्व्वत के शिखरके समान टूटे हुये बादलों के समूह के सदृश रथको पकड़ लिया २७ जैसे कि गरुड़जी सर्प्प को पकड़लेते हैं उसीप्रकार उसराक्षस को भी रथ से उठालिया और भुजाओं से दबाकर बारम्बार घायल करके २८ शीघ्रही पृथ्वीपर ऐसाघिसा जैसे कि पूर्णघटको पत्थरपर घिसते हैं बल पराक्रमकी तीव्रतासे युक्त २९ क्रोधयुक्त घटोत्कचनेयुद्धमें सबसेनाओं को डराया सब अंगों से रहित चूर्णीभूत अस्थि भयकारी सूरतवाला राक्षस ३० उसवीर घटोत्कचके हाथसे मारागया फिर उसराक्षसके मरनेपर प्रसन्न चित्तपांडव ३१ सिंहनादसे गर्जना करनेलगे और वस्त्रोंकोभी फिराया और आप के शूरवीर और सेनाकेलोगों ने उसबड़े पराक्रमी राक्षसों के राजा ३२ अलम्बुष को अत्यन्त फटेहुये पर्व्वतके समान देखकर हाहाकारों को किया उस अपूर्व्व दर्शनीय के देखनेके इच्छावान् मनुष्यों ने दैव इच्छासे मंगल नक्षत्रके समान पृथ्वीपर पड़े हुये उस राक्षसको देखा ३३।३४ फिर घटोत्कचने उस बड़े पराक्रमी राक्षसको मारकर बड़े बलको प्रकट करके ऐसा शब्दकिया जैसे कि गजासुरनि

को मारकरके इन्द्रने कियाथा ३५ तब उस कठिन कर्म के करनेपर बान्धव और पिताओंसे स्तुतिमान वह घटोत्कच पकेहुये लजालूवृक्षके समान अलम्बुष शत्रु को मारकर अत्यन्त प्रसन्नहुआ ३६ इसके पीछे शंखों के और नानाप्रकार के बाणों के शब्दों समेत बहुत बड़े शब्दहुये जिसको सुनकर पाण्डव लोग गर्जे फिर इतना बड़ा शब्दहुआ कि स्वर्गलोकको भी स्पर्श करगया ३७ । ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिनवमोऽध्यायः १०९ ॥

एकसौदशका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय द्रोणाचार्य्य ने युद्ध में कैसे सात्यकी को रोका इस को मूल समेत मुझसे कहौ इसके सुननेका मुझको बड़ा उत्साहहै १ संजयबोले हे बड़ेज्ञानी राजाधृतराष्ट्र जिनका अग्रगामी सात्यकीहै उनपांडवोंके साथ उस रोमांच खड़े होनेवाले द्रोणाचार्य्यके युद्धको मुझसे सुनो २ हे राजा सात्यकीसे घायलहुई सेनाको देखकर आप द्रोणाचार्य्यजी उस सत्य पराक्रमी सात्यकी के सम्मुखगये ३ सात्यकी ने उस अकस्मात् आतेहुये महारथी द्रोणाचार्य्य को पचीस बाणोंसे घायलकिया ४ युद्ध में पराक्रमी और सावधान द्रोणाचार्य्यने भी सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्ण पांच बाणोंसे सात्यकीको घायलकिया ५ हे राजा शत्रु के मांसके भोजन करनेवाले वह बाण अत्यन्त दृढ़ कवच को काटकर सर्पों के समान श्वासा लेतेहुये पृथ्वीपर गिरपड़े ६ उस लम्बी भुजावाले अत्यन्त क्रोध युक्त चाबुक से संतप्तकिये हाथी के समान सात्यकी ने अग्निके समान नाराच नाम पचास बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको छेदा ७ युद्धमें सात्यकी के हाथ से घायल द्रोणाचार्य्य ने उपाय करनेवाले सात्यकी को बहुत से बाणों से छेदा ८ इसके पीछे क्रोधयुक्त बड़े धनुषधारी महापराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने गुप्तग्रंथीवाले बाण से फिर यादव सात्यकी को पीड़ितकिया ९ हे राजा युद्ध में द्रोणाचार्य्य के हाथसे घायल सात्यकी ने करनेके योग्य किसी कर्म को नहीं पाया १० युद्ध में तीक्ष्ण बाणोंके छोड़नेवाले द्रोणाचार्य्य को देखकर सात्यकी भी व्याकुल मुखहुआ ११ आपके पुत्र और सेनाके लोग उसको देखकर अत्यन्त प्रसन्न मनसे सिंहके समान बारम्बार गर्जे १२ हे भरतवंशी वह राजा युधिष्ठिर उस भयकारी शब्दको और माधव सात्यकी को पीड़ामान सुनकर सब सेनाके लोगोंसे बोला १३ कि

वृष्णियों में श्रेष्ठ सत्यपराक्रमी वह सात्यकी युद्ध में बीर द्रोणाचार्य्यसे ऐसेग्रसा जाताहै जैसे कि सूर्य्य राहुसे १४ चलो वहांजावो जहांपर कि सात्यकी लड़ता है यह बात राजाने पांचालदेशी धृष्टद्युम्नसे कही १५ हे पुरुषतके पौत्र क्यों खड़ेहो तुम द्रोणाचार्य्य के सम्मुख जावो तुम द्रोणाचार्य्यसे हमारे समक्ष में नियत कठिन भयको नहीं देखतेहो १६ यह बड़ा धनुषधारी द्रोणाचार्य्य युद्ध में सात्यकी के साथ ऐसे क्रीड़ा करताहै जैसे कि बालक सूतमें बंधेहुये पक्षीके साथ करताहै १७ भीमसेन जिनमें अग्रगणनीय हैं वह सब उसके पास जावो और सब तुम्हारे साथमें होकर सात्यकी के रथके समीप पहुँचे १८ मैं सेना समेत तुम्हारे पीछे चलूंगा अब तुम सब यमराजके मुखफँसेहुये सात्यकी को छुड़ावो १९ हे भरतबंशी राजा इस प्रकार सबसे कहकर सब सेनाके लोगों समेत सात्यकी के कारणसे युद्धमें द्रोणाचार्य्य के सम्मुख गया २० आपका कल्याणहो वहां अकेले द्रोणाचार्य्य से लड़ने के अभिलाषी पाण्डव और सृञ्जियों के बड़े शब्द सब ओरसे प्रकटहुये २१ वह नरोत्तम महारथी द्रोणाचार्य्य के सम्मुख होकर कंकपक्ष और मयूरपक्षों से युक्त तीक्ष्ण बाणों से बर्षा करनेवाले हुये २२ फिर मन्द मुसकान करते द्रोणाचार्य्य ने आपही उन बीरों को ऐसे लिया जैसे कि आये हुये अतिथियों को जल और आसनसे लेते हैं २३ वह धनुषधारी लोग उन द्रोणाचार्य्य के बाणों से ऐसे तृप्तहुये जैसे कि अतिथि लोग राजाकी अतिथिशाला को पाकर तृप्त होते हैं हे प्रभु वह सब लोग द्रोणाचार्य्य की ओर देखने को ऐसे समर्थ नहीं हुये जैसे कि मध्याह्न के समय सूर्य्यके देखने को समर्थ नहीं होते हैं २४। २५ फिर शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य ने उन सब बड़े धनुषधारियों को बाणों के समूहों से ऐसे संतप्त किया जैसे कि अपनी किरणों से सूर्य्य सब को तप्त करता है २६ हे महाराज इस प्रकार घायलहुये पाण्डव सृञ्जियों ने अपना रक्षक ऐसे नहीं पाया जैसे कि कीचमें फंसा हुआ हाथी २७ द्रोणाचार्य्य के बड़े बाण अच्छे प्रकारसे चलायमान होकर ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि चारों ओरसे तप्त करनेवाले सूर्य्य की किरणें होती हैं २८ उस युद्धमें द्रोणाचार्य्य के हाथसे वह पचीस पांचालदेशी मारेगये जो कि धृष्टद्युम्न के अंगीकृत महारथी प्रसिद्ध थे २९ सब सेनाओं के मध्यमें पांचाल और पाण्डवों के उत्तम २ शूरबीरों के मारनेवाले शूरबीर द्रोणाचार्य्य को देखा ३० हे महाराज वह द्रोणा-

चार्य्य केकय लोगोंके सौ शूरबीरोंको मारकर चारों ओरसे छिन्नभिन्न करके मुख फैलाकर मृत्युके समान नियतहुये ३१ महाबाहु द्रोणाचार्य्यने सैकड़ों हजारों पांचाल सृञ्जी मत्स्य और केकय लोगों को बिजयकिया ३२ द्रोणाचार्य्य के शायकों से घायल उन लोगोंके शब्द ऐसे प्रकटहुये जैसे कि वनके मध्यमें अग्नि से व्याप्त बनबासियों के होतेहैं ३३ हे राजा वहांपर देवता लोग गन्धर्व पित्रों समेत बोले कि यह पांचाल और पांडव लोग सेनाके सब मनुष्यों समेत जाते हैं ३४ युद्धमें इसी प्रकार सोमकोंके मारनेवाले उस द्रोणाचार्य्यके सम्मुख भी नहीं गये कितनेही लोग घायल भी नहीं हुये ३५ इस रीतिपर उन उत्तम बीरोंके उस महाभयकारी नाश के होनेपर युधिष्ठिरने अकस्मात् पांचजन्य शंख के शब्दको सुना ३६ जयद्रथके सहायक बीरोके लड़नेपर बासुदेवजीका पूर्णकियाहुआ वह शंखोंका राजा पांचजन्य अत्यन्त शब्द करताहै ३७ अर्जुनके रथके पास धृतराष्ट्र के पुत्रोंके गर्ज्जने और चारों ओरसे गांडीव धनुषके शब्द न सुनाई देने से ३८ मूर्च्छासे घायल राजा युधिष्ठिरने चिन्ताकरी कि निश्चयकरके अर्ज्जुन का कल्याण नहीं मालूम होता है क्योंकि ऐसे शंख शब्द करता है और कौरव लोग प्रसन्न होकर बारम्बार गर्जते हैं इसप्रकार बिचार करते बारम्बार अचेत होते हुये अजात शत्रु युधिष्ठिर जयद्रथके मारने में निर्विघ्नता चाहनेवाला अन्तःकरणसे व्याकुल अश्रुपातोंसे गद्गद बचनों समेत शिनीबंशियों में श्रेष्ठ यादव सात्यकी से बोला ३६ । ४१ हे सात्यकी आपत्तिकालमें मित्रोंके काममें जो वह सनातन धर्म पूर्व्व समय में अच्छे लोगोंसे देखागयाहै वही समय अब वर्त्तमान हुआहै ४२ हे शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी मैं सब बीरलोगों में सबको शोचता हुआ तुझसे अधिकतर किसी अपने शुभचिन्तक को नहीं देखताहूं ४३ कि जो सदैव प्रसन्न मन और सदैव अनुकूल है अपत्तिकालमें प्रवृत्त होकर भी वह कर्म्म करनेके योग्य है ४४ जैसे कि केशवजी सदैव पाण्डवों के रक्षक हैं हे सात्यकी उसी प्रकार तुमभी श्रीकृष्णजी केही समान पराक्रमीहो ४५ मैं तुम्हारे ऊपर भारको रक्खूंगा तुम उसके उठानेके योग्यहो तुम मेरे विचारको कभी व्यर्थ करनेके योग्य नहींहो ४६ हे नरोत्तम सो तुम युद्धमें भाईके समान अवस्था और गुरुरूप अर्ज्जुनकी आपत्तिकाल में सहायताकरो ४७ तुम सत्य संकल्पी होकर मित्रोंके निर्भय करनेवाले प्रसिद्धहो ४८ हेसात्यकी मित्रके निमित्त जो युद्ध कर-

नेवाला पुरुष शरीर को त्यागकरे और जो ब्राह्मणों के अर्थ पृथ्वी को दानकरे वह दोनों समानहैं ४९ जो राजा इस सब पृथ्वी को विधिके अनुसार ब्राह्मणोंके लिये दान करके स्वर्ग को गये उन सबको हमने बहुत सुना है ५० हे धर्म्मात्मा अब मैं यहां हाथ जोड़कर तुझसे भी प्रार्थना करताहूं हे समर्थ पृथ्वी दानके समान अथवा इससे भी अधिक फलहोगा ५१ हे सात्यकी मित्रों के निर्भय करनेवाले एक श्रीकृष्णजी सदैव युद्धमें प्राणोंकी प्रीति को त्याग करते हैं और दूसरे तुम ५२ युद्धमें यशके चाहनेवाले और पराक्रम करनेवाले बीरका सहायक वीर पुरुषही होसक्ता है दूसरा सामान्य पुरुष नहीं होसक्ताहै ५३ हे माधव इस प्रकारके युद्धमें वर्त्तमान अर्ज्जुनका रक्षक युद्धमें तेरे सिवाय कोई दूसरा वर्त्तमान नहीं है ५४ तेरे सैकड़ों कर्मोंकी प्रशंसाकरते और मेरी प्रसन्नताको उत्पन्न करतेहुये पाण्डव अर्जुनने तेरे कर्मों को बारम्बार कहाहै ५५ कि हस्तलाघवी अपूर्व युद्धकर्त्ता तीव्र पराक्रमी और सब अस्त्रज्ञों में बुद्धिमान् शूर सात्यकी युद्धमें अचेत नहीं होताहै ५६ वह महात्मा महारथी महास्कन्ध बड़ा वक्षस्स्थल महाबाहु महाहनु महाबली और महाबीर्य्यवान् है ५७ और मेरा शिष्य होकर और मित्रहै मैं उसका प्याराहूं और वह मेरा प्यारा है मेरा सहायक सात्यकी कौरवों को छिन्न भिन्न करके मर्द्दन करेगा ५८ हे महाराज जो हमारे निमित्त केशवजी युद्ध में प्रवृत्तहोंय व बलदेवजी व अनिरुद्ध व महारथी प्रद्युम्न ५९ गद और दशार्ण और शाम्ब भी वृष्णियों समेत युद्ध के मुखपर ६० सन्नद्ध होकर सहायता के लिये आकर नियत होंय हे महाराज तौभी मैं इस सत्यपराक्रमी नरोत्तम सात्यकीको अपनी सहायतामें संयुक्त करूंगा उसके समान दूसरा कोई नहीं है ६१ हे तात द्वैत बनके मध्य अच्छे लोगोंकी सभामें तेरे परोक्ष में तेरे सत्य गुणोंको कहतेहुये अर्ज्जुन ने मुझ से कहा है ६२ हे वृष्णिवंशी तुम उस अर्ज्जुनके इस सङ्कल्प और मेरे और भीमसेनके सङ्कल्पको निरर्थक और मिथ्या करनेकोयोग्य नहीं हो ६३ जो मैं तीर्थों में घूमता द्वारकापुरी को गया वहांभी मैंने तेरीभक्तिको अर्ज्जुनमें देखा ६४ हे सात्यकी मैंने तेरीसी प्रीति दूसरोंमें नहीं देखी जैसे तुम युद्धमें वर्त्तमान हमलोगोंको चाहते हो ६५ हेमहाबाहु बड़ेधनुषधारी माधव सात्यकी तुम कुलीनतासे भक्ति से मित्रतासे शिष्यतासे प्रीतिसे पराक्रमसे कुलके गुणों से ६६ और सत्यताके अनुसार अर्ज्जुनपर दया करनेके लिये कर्म्म कर-

नेको योग्यहो भीमसेन और हम सब सेना समेत युद्धमें प्रवृत्तहोकर उन द्रोणा-
चार्य्यको रोकैंगे जो तेरे सम्मुख जांयगे हे सात्यकी युद्धमें चलायमान सेनाओं
को और भरतवंशियोंकी छिन्न भिन्न सेनाओंको देखो और युद्धमें होनेवालेवड़े
शब्दको भी सुनो ६७।७१ जिस प्रकारसे पर्व्वों में कठिन वायुकी तीव्रता से स-
मुद्र व्याकुल होताहै उसीप्रकार अर्ज्जुनके हाथसे दुर्य्योधनकी सेना उच्छिन्न हो-
गई ७२ चारोंओरसे दौड़तेहुये रथघोड़े और मनुष्योंसे उठीहुई यह धूलभीचारों
ओरसे वर्त्तमानहै ७३ शत्रुके वीरोंका मारनेवाला अर्ज्जुन अत्यन्तसमीपी वर्त्त-
मान नखर प्रांसोंसे लड़नेवाले सिन्धु सौवीरनाम शूरवीरोंसे घिराहुआ है ७४
यह सेना हटानेके योग्यहै और जयद्रथका विजय करना सम्भव है यह सबलोग
जयद्रथके अर्थ अपने अपने जीवनको त्यागेहुये हैं ७५ धृतराष्ट्रके पुत्रोंकी उस
सेना को देखो जो कि उत्तम वाण शक्ति ध्वजाकी रखनेवाली घोड़े हाथियों से
व्याकुल होकर कठिनता से सम्मुखताके योग्यहै ७६ दुन्दुभी और शंखों के वड़े
शब्द सिंहनाद वा रथकी नेमियों के शब्दों को सुनो ७७ हजारों हाथी पति
और चेष्टा करते वा पृथ्वी को कम्पायमान करते सवारों के शब्दों को सुनो ७८
प्रथम जयद्रथकी सेनाहै उसके पीछे द्रोणाचार्य्यकी सेनाहै हे नरोत्तम वह इतनी
अधिकहै कि देवराज कोभी पीड़ित करसके ७९ उस असंख्य सेनामें डूबाहुआ
अर्जुन भी जीवन को त्यागेहुये है जो युद्धमें वह जीवन को त्यागदेगा तो उ-
सके मरनेपर मुझसा राजा कैसे जीसक्ता है ८० तेरे जीवतेहुये मैंने सब रीतिसे
वड़े कष्ट को पाया हेतात वह श्याम तरुण दर्शनीय शीघ्रतासे अस्त्रोंका चला-
नेवाला अपूर्व्व युद्धकर्त्ता महावाहु पाण्डव अर्जुन सूर्य्य के उदय होनेके सम-
यपर भरतवंशियोंकी सेनामें प्रवेशित हुआहै और अब दिन ढलावपरहै ८१।८२
हे यादव मैं उसको नही जानता हूं कि वह जीवता है अथवा नहीं जीवता है
और कौरवोंकी वह सेनाभी समुद्र के समान वड़ी है ८३ हे तात वह अकेला म-
हावाहु अर्ज्जुन वड़े युद्धमें देवताओं से भी असह्य भरतवंशियों की सेनामें प्र-
विष्ट हुआ है ८४ अब मेरी बुद्धि किसी दशा में भी युद्ध में नहीं नियत होती
और युद्धमें वेगवान् द्रोणाचार्य्य भी मेरी सेनाको पीड़ा देते हैं ८५ हे महाबाहो
जिसप्रकार यह ब्राह्मण घूम रहाहै वह तेरे नेत्रों के समक्ष है तुम साथही आगे
आजानेवाले कार्य्योंमें सावधान और कुशलहो ८६ हेप्रतिष्ठा देनेवाले सात्यकी

शीघ्र करने के योग्य बड़ेकर्म्म के करनेको योग्यहो इसकाम को मैंने सब कामों से बड़ा माना है ८७ कि युद्ध में अर्ज्जुन की रक्षा और सहायता करनी योग्य है मैं उस जगत् के स्वामी रक्षक श्रीकृष्णचन्द्रजी को नहीं शोचताहूं ८८ हे तात वह पुरुषोत्तम युद्धमें सम्मुख होनेवाले तीनोंलोकों को भी विजय करनेको समर्थ है यह तुझ से सत्य २ कहता हूं ८९ फिर दुर्य्योधन की यह अत्यन्त निर्बल सेना क्या पदार्थ है हे यादव युद्ध में बहुत बीरों से पीड़ामान वह अर्ज्जुन ९० युद्ध में ही कहीं प्राणोंको न त्याग दे इस हेतु से मैं मूर्च्छित हुआ जाता हूं तुम उसकेही मार्ग्ग पर जाओ जैसे कि तुम सरीखे बीर जाते हैं ९१ उस प्रकारवाले समयपर मुझ सरीखे राजा से प्रेरणा कियेहुये तुम जावो वृष्णियों के बड़े बीरोंमें युद्ध के करनेवाले दोही अतिरथी कहे हैं ९२ एक महाबाहु प्रद्युम्न और दूसरे यादवों में प्रसिद्ध तुमहो हे नरोत्तम तुम अस्त्रों में नारायणके समान बल पराक्रम में बलदेवजी के समान ९३ और बीरता में अर्ज्जुन के सम तुल्यहो लोक में सन्तलोग भीष्म और द्रोणाचार्य्य को उल्लंघनकर तुझ पुरुषोत्तमको सब युद्धोंमें कुशल और सावधान कहते हैं और हे माधव यह भी वर्णन करते हैं कि लोक में ऐसा कोई कर्म्म नहीं है जिसको सात्यकी नहीं करसके ९४।९५ इस हेतुसे हे बलवान् पराक्रमी जो मैं तुमसे कहूं उसके करनेको तुम योग्यहो हे महाबाहु तुम मेरे अर्ज्जुन के और लोकके बिश्वास पात्र हो ९६ अन्यथा करनेके योग्य नहीं हो प्यारे प्राणोंको त्यागकरके युद्धमें बीरोंके समान भ्रमण करो ९७ हे सात्यकी युद्धमें यादवलोग अपने जीवन और प्राणोंकी रक्षा नहीं करते हैं युद्ध न करना युद्धमें नियत न होना और भागना ९८ यह मार्ग्ग भयभीत और नीचलोगोंका है यादवलोगों का किसी दशा में भी नहीं है हे शिनियों में श्रेष्ठ तात सात्यकी धर्म्मात्मा अर्ज्जुन तेरा गुरुहै ९९ और बासुदेवजी भी तेरे और बुद्धिमान् अर्ज्जुनके गुरुहैं इन दोकारणोंको मैं जानताहूं इसीसे मैंने तुझसे कहाहै १०० मेरे बचनका अपमान मतकर मैं तेरे गुरूकाभी गुरुहूं बासुदेवजीका अर्ज्जुनका और मेरा बहमतहै १०१ मैंने तुझसे यहसत्य २ हीकहाहै अब तुम मेरे कहने से शीघ्र वहां जावो जहां कि अर्ज्जुन बर्त्तमानहै हे सत्यपराक्रमी इस मेरे बचनको जानकर १०२ दुर्बुद्धी दुर्य्योधनकी इस सेनामें प्रविष्ट होकर न्यायके अनुसार महारथियों से भिड़कर जैसा उचितहै वैसाही युद्धमें अपना कर्म्म दिखलावो १०३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिदशोपरिशततमोऽध्यायः ११० ॥

एकसौग्यारहका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे भरतर्षभ प्रीतिसे संयुक्त वृद्ध मधुराक्षसों से लिप्त समयके अनुसार अद्भुत और न्यायके अनुसार भी जो २ कहा १ उस धर्मराजके वचनों को सुनकर शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी ने युधिष्ठिर को उत्तर दिया २ हे अधिकारसे च्युत न होनेवाले आपके कहेहुये इन सब बचनों को मैंने सुना यह आपके वचन न्यायसे युक्त अपूर्व्व और अर्जुनके प्रयोजन में यशके करनेवाले हैं ३ हे महाराज इस प्रकारके समयपर मुझ सरीखे शुभचिन्तक को देखकर आप के उसी प्रकारकी आज्ञा करनी उचित है जैसे कि अर्जुन को करतेहो ४ किसी दशामें भी अर्ज्जुनके प्रयोजन में मेरे प्राण रक्षाके योग्य नहीं हैं फिर मैं युद्ध में आपकी आज्ञासे कौनसा कर्म्म नहीं करसक्ता अर्थात् जो आप कहेंगे उसी को करूंगा ५ हे महाराज आपकी आज्ञा को पाकर मैं देवता असुर और मनुष्यों समेत तीनोंलोकों सेभी युद्ध करसक्ताहूं यहां यह अत्यन्त अल्प पराक्रमी सेना कौन वस्तुहै ६ हे राजा अब मैं युद्धमें चारोंओर से दुर्योधनकी सेनासे युद्ध करूंगा और युद्धमें सबको विजय करूंगा ७ हे राजा आप सावधान रहिये मैं बुद्धिमान् अर्ज्जुन को पाकर जयद्रथके मरनेपर आपके पास आऊंगा ८ हे राजा वासुदेवजीका और बुद्धिमान् अर्जुनका जो वचन है वह सबभी मुझको आपसे कहना अत्यन्त योग्यहै ९ सब सेनाके मध्यमें वासुदेवजी के समक्ष में अर्ज्जुन मुझको वारम्वार यह समझा गयाहै १० कि हे माधव अब तुम युद्धमें उत्तम बुद्धिको करके बड़ी सावधानी से सचेत होकर जबतक कि मैं जयद्रथ को मारकर आऊं तबतक श्रेष्ठ रीति से राजाकी रक्षाकरो ११ हे महाबाहो मैं तुझपर अथवा महारथी प्रद्युम्नपर राजा को धरोहड़के समान सुपुर्द करके निर्पेक्ष होकर जयद्रथके सम्मुख होऊंगा १२ तुम दुर्य्योधनके विश्वासपात्र और शुभचिन्तक द्रोणाचार्य्य को युद्धमें जानते हो हे समर्थ उस देखनेवाले ने दुर्य्योधन से यह प्रतिज्ञा की है कि मैं देखतेही युधिष्ठिर को पकड़कर तेरे सुपुर्द करूंगा इस कारण भारद्वाज द्रोणाचार्य्य भी युधिष्ठिरके पकड़ने की अभिलाषा करता है यह द्रोणाचार्य्य जी युद्ध में युधिष्ठिरके पकड़ने को समर्थ हैं १३ । १४ अब मैं इस रीतिसे नरोत्तम धर्म्मराज युधिष्ठिर को तेरे सुपुर्द करके जयद्रथ के मारने को जाऊं-

गा १५ हे माधव मैं जयद्रथ को मारके शीघ्र आऊंगा ऐसा न होय कि युद्ध में द्रोणाचार्य्य बलकरके युधिष्ठिरको पकड़ें १६ हे सात्यकी भारद्वाज द्रोणाचार्य्यके हाथसे धर्मराज युधिष्ठिरके पकड़नेपर वैसीही मेरी अप्रसन्नता होगी १७ अर्थात् सत्य वक्ता नरोत्तम युधिष्ठिरके पकड़े जानेपर फिर हम लोगों को बनमें जाना होगा १८ और यह सब मेरी विजयकीहुई अत्यन्त व्यर्थ और निरर्थक होजायगी जो क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य युधिष्ठिरको पकड़ेंगे हे माधव सो तुम युद्धमें मेरे प्रियके निमित्त और विजयरूपी यशके अर्थ राजाकी रक्षाकरो १९।२० हे समर्थ सदैव द्रोणाचार्य्यसे भयको माननेवाले अर्जुनकी ओरसे आप मुझको धरोहड़ रूप सुपुर्द कियेगयेहो २१ हे समर्थ महाबाहो मैं सदैव युद्धमें प्रद्युम्न के सिवाय किसी दूसरे को उससे सम्मुखता करने को नहीं देखताहूं २२ वह मुझको बुद्धिमान द्रोणाचार्य्य के युद्ध में योग्य समझता है सो मैं इस बिश्वास और गुरूके उस बचनको २३ अथवा तुम्हारे त्यागकरने को साहस नहीं करताहूं अजेय कवचधारी द्रोणाचार्य्य २४ तुमको युद्ध में सम्मुख पाकर अपनी हस्तलाघवता से इस प्रकार क्रीड़ा न करैं जैसे कि बालक पक्षी के साथ करताहै जो धनुष हाथमें लेनेवाला मकरध्वज प्रद्युम्न यहां होवे तो मैं तुमको उसके पास छोड़ूं क्योंकि वह अर्जुनके समान तुम्हारी रक्षाकरेगा और तुमभी अपनी रक्षाकरो मेरेजानेपर आपका ऐसा रक्षक कौनहै २५।२६ जोकि युद्धमें तबतक द्रोणाचार्य्यकी सम्मुखताकरे जबतक कि मैं जयद्रथ को मारकर युधिष्ठिरके पास न आजाऊं हे राजा अब तुम अर्ज्जुन की ओरका कभी भयमतकरो २७ वह महाबाहु अपने ऊपर भारको उठाकर कभी पीड़ामान नहीं होताहै जो सौ बीरक सिन्धुबासी पौरव उत्तरीय दक्षिणीय शूरबीर आदिक महारथी हैं और जो कर्णमुखनाम बड़े रथी विख्यात हैं २८ यह सब क्रोधयुक्त अर्ज्जुनके सोलहवीं कलाके भी समान नहीं हैं हे राजा देवता असुर मनुष्य राक्षसोंकेसमूह किन्नर और बड़े २ सर्पोंसमेत उपाय करनेवाले जड़ चैतन्य जीवों समेत सब पृथ्वी युद्धमें अर्जुनके साथ लड़ने को समर्थ नहीं हैं २९।३१ हे महाराज इसप्रकार जानकर आप अर्जुनके विषयमें उत्पन्न भयको कभी मनमें भी न लाओ जहांपर सत्य पराक्रमी धनुषधारीवीर अर्जुन और श्रीकृष्णजीहैं ३२ वहां किसी प्रकारका भी आपत्ति कर्म नहीं व्याप्त होताहै तुम युद्धमें भाई अर्जुनके दिव्य अस्त्रोंके योग क्रोध ३३ यादव कृष्णको

उपकार और दयाको बिचारकरो और मेरे दूरजाने अर्थात् अर्ज्जुनके पास चले जानेपर ३४ तुम युद्ध में द्रोणाचार्य्यकी अपूर्व्व अस्त्रविद्या को विचारो हे राजा आचार्य्यजी आपके पकड़ने की अत्यन्त इच्छाकररहेहैं ३५ हे भरतवंशी वह गुरूजी अपनी प्रतिज्ञाके सत्यकरनेको तुम्हारे पकड़नेके अभिलाषी हैं अव अपनी रक्षाकरिये मेरे जानेपर आपका रक्षक कौनहै ३६ जिसपर भरोसाकरके और उसके सुपुर्द्दगी में आपको करके मैं अर्ज्जुन के पास चलाजाऊं हे महाराज मैं इस महायुद्धमें आपको सुपुर्द न करके ३७ कहीं नहीं जाऊंगा हे कौरव मैं यह आपसे सत्य २ कहताहूं हे बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ तुम अनेकप्रकारकी बुद्धिसे इसको विचारकरिये ३८ और बुद्धिसेही अपने वड़ेकल्याणको देखलो तव मुझको आज्ञाकरो ३९ युधिष्ठिर बोले हे महाबाहो माधव सात्यकी यह इसीप्रकारहै जैसा कि तुम कहते हो हे श्रेष्ठ परन्तु मेरे चित्तको बृत्तान्त अर्ज्जुन के विषयमें स्पष्ट नही होताहै ४० मैं अपनी रक्षामें बड़े उपायों को करूंगा मेरी आज्ञानुसार तुम वहां जाओ जहां अर्ज्जुन गयाहै ४१ युद्धमें अपनी रक्षाको और अर्ज्जुन के पास जानेको मैंने अपनी बुद्धिसे बिचारकर दोनों कार्य्योंमेंसे वहांका तुम्हारा जानाही मैं ठीक विचार करताहूं ४२ सो तुम जहां अर्ज्जुन है वहीं जाओ मेरी रक्षा को वड़ा वली और पराक्रमी भीमसेन करेगा ४३ हे तात सगे भाइयों समेत धृष्टद्युम्न आदिक बड़े बड़े पराक्रमी राजा लोग और द्रौपदी के पुत्र मेरी निस्सन्देह रक्षा करेंगे ४४ हे श्रेष्ठ पांचो भाई केकय घटोत्कचराक्षस राजा बिराट द्रुपद महारथी शिखण्डी ४५ महावली धृष्टकेतु कुन्तभोज नकुल सहदेव सब पांचालदेशी और सृञ्जयदेशी ४६ यह सब सावधानी से निस्सन्देह मेरी रक्षा करेंगे युद्ध में सेना समेत द्रोणाचार्य्य और कृतवर्मा मेरे पकड़ने को समर्थ नहीं हैं और न मुझको पराजय करसकैंगे जहां शत्रुओं का तपानेवाला धृष्टद्युम्न नियतहोगा ४७ । ४८ वहांपर द्रोणाचार्य्यजी किसी प्रकारसे भी सेनाको उल्लंघन नहीं करसक्ते क्योंकि यह धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्य केही नाशके निमित्त कवच बाण धनुष खड्ग और उत्तम आभूषणों समेत अग्निसे उत्पन्नहुआहै ५० हे सात्यकी तुम विश्वासकरो और मेरे विषय में व्याकुलता को मतकरो युद्ध में क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्यको धृष्टद्युम्न रोकेगा ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकादशोपरिशततमोऽध्यायः १११ ॥

एकसौबारहका अध्याय॥

संजय बोले कि वह शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी धर्मराजके बचन को सुनकर राजा युधिष्ठिरके त्यागसे अर्ज्जुन से भयभीतताको कहता १ और मुख्यकर संसारकी ओरसे अपनी इस अपकीर्त्तिको देखकर कि सब लोग मुझको अर्ज्जुन की ओर न जानेसे भयभीत न कहैं २ ऐसे अनेक बातों का निश्चयकरके वह युद्धमें दुर्मद पुरुषोत्तम सात्यकी धर्मराजसे यह बचनबोला ३ हे राजा जो आप अपनी रक्षाको कीहुई मानतेहो तो आपका कल्याणहोय मैं अर्जुनके पास जाऊंगा और आपकी आज्ञाको करूंगा ४ हे राजा तीनोंलोकमें अर्ज्जुनसे प्यारा मुझको कोई नहीं है यह मैं सत्य २ आपसे कहता हूं ५ हे प्रतिष्ठा के देनेवाले मैं आपकी आज्ञासे उसके मार्गको जाऊंगा आपके अर्थ किसी दशामें भी मेरा कोई काम न करनेके योग्य नहीं है ६ हे द्विपादों में श्रेष्ठ जैसे कि गुरूका बचन मुझको माननीय और श्रेष्ठहै उसीप्रकार आपकाभी बचन मुझको श्रेष्ठ समझकर मानना योग्यहै ७ दोनों भाई श्रीकृष्ण और अर्जुन आपके हितमें प्रवृत्त होकर कर्मकररहे हैं हे राजाओंमें श्रेष्ठ आप मुझको उन दोनों पुरुषोत्तमोंके मनोरथोंमें प्रवृत्त और नियतजानो ८ हे समर्थ नरोत्तम युधिष्ठिर मैं आपकी आज्ञाको शिरसे अंगीकार करके अर्जुनके निमित्त उस कठिनतासे पृथक्होनेवाली सेना को छिन्नभिन्नकरके जाऊंगा ९ हे राजा अब मैं द्रोणाचार्य्यकी सेनामें ऐसे प्रविष्ट होताहूं जैसे कि क्रोधयुक्त झषनाम जलजीव समुद्रमें प्रवेशकरताहै मैं वहांपर जाऊंगा जहांपर कि राजा जयद्रथहै १० जहांपर पाण्डव अर्ज्जुन से भयभीत होकर अश्वत्थामा कर्ण और कृपाचार्य्य आदिक उत्तम रथियों से रक्षित जयद्रथ सेना में शरणागतहोकर नियतहै ११ हे राजा यहां से मैं उसमार्गको तीनयोजन मानताहूं जहांपर कि जयद्रथके मारने में प्रवृत्त अर्ज्जुन नियतहै १२ मैं जयद्रथ के मरनेसे पूर्व्वही बड़े दृढ़ अन्तरात्माके द्वारा तीनयोजनपर वर्त्तमान उस अर्जुन के चरणको पाऊंगा १३ गुरूसे आज्ञापाये बिना कौन मनुष्य युद्ध करसक्ताहै हे राजा गुरूकी आज्ञाको पाकर मुझसा कौन मनुष्य युद्धको नही करे १४ हे प्रभु मैं उस स्थानको जानताहूं जहांपर कि जाऊंगा और शूल शक्ति गदा प्रास ढाल खड्ग दुधाराखड्ग तोमर १५ और उत्तम बाण अस्त्रों से भी दुर्गम्य सेनारूपी समुद्र

को उथल पुथल करूंगा जो इस हजारों सेनाओंके समान हाथियों की सेनाको देखतेहो १६ जिनका कुल आंजनक नामहै जिस सेना में यह प्रहारकरनेवाले युद्ध में कुशल शूरवीर लोग बहुत से म्लेच्छों के साथ नियतहैं १७ हे राजा वर्षा करनेवाले बादलों के समान मदझाड़नेवाले बादलकेही रूपवाले यह हाथी हैं यह हाथी अपने हाथीवानोंके प्रेरणा कियेहुये होकर कभी मुखोंको नहींफिरते १८ सो हे राजा इन हाथियोंको मारनेके सिवाय किसी प्रकारसे पराजय नहीं है और हजारों रथियोंके समान जिन रथियोंको सम्मुख देखतेहो १६ हे श्रेष्ठ यह सुवर्ण के रथवाले राजकुमार महारथी रथ बाण अस्त्र और हाथीकी सवारी में सावधान हैं २० धनुर्वेद में पूर्ण मुष्टिकयुद्ध में कुशल गदायुद्ध के विशेष ज्ञाता भुजाओं के युद्धों में प्रवीण २१ खड्ग चलाने में योग्य ढाल तलवार के उठाने चलाने में प्रशंसनीय शूर विद्यावान् परस्पर में ईर्षा करनेवाले हैं २२ हे राजा कर्ण करके नियत किये हुये दुश्शासन के आज्ञावर्त्ती यह सब लोग सदैव युद्ध में मनुष्यों को विजय करना चाहते हैं २३ बासुदेवजी भी इन बड़े रथियोंकी प्रशंसा करते हैं यह सबलोग सदैव हितकरने के अभिलाषी कर्ण के आधीन बर्त्तमान हैं २४ उसी के वचन से अर्ज्जुन से हटायेगये वह दृढ़ धनुष और कवच वाले थकावट और दुःखसे रहित हैं २५ निश्चयकरके यह लोग दुर्योधनकी आज्ञा से मेरे निमित्त नियतहैं हे कौरव्य आपके प्रियकेअर्थ इन्हींको युद्धमें मथकर २६ अर्ज्जुन के मार्गको जाऊंगा हे राजा और जो दूसरे तरुण कवचधारी किरात पुरुषोंकी सवारीमें नियत उन सातसौ हाथियोंको देखतेहो जिन हाथियोंको कि राजाकिरातने अर्ज्जुनको दिया२७।२८ और उसीप्रकार फिर अपनेजीवनको चाहतेहुये उस राजा किरातने अच्छे अलंकृत करके नौकरोंको दिया हे राजा पूर्व्वसमयमें यह सबलोग आपही के दृढ़ कार्य्यकर्त्ता थे २६ अब यह आपही से लड़ते हैं इस समयकी विपरीतताको देखो यहसब किरात बड़े धनवान् युद्ध में दुर्म्मद ३० हाथियों की शिक्षाके ज्ञाता अग्निसे उत्पन्न होनेवाले हैं इनको युद्धभूमिमें अर्जुन ने विजय कियाथा ३१ दुर्योधनके आज्ञावर्त्ती होकर अब यहलोग मेरे निमित्त उद्यत हैं हे राजा इनयुद्धदुर्म्मद किरातों को युद्धमें बाणोंसे मारकर ३२ जयद्रथ के मारने में प्रवृत्त अर्ज्जुनके पीछे जाऊंगा फिर आंजनकुलमें उत्पन्न होनेवाले यह बड़ेहाथी ३३ महाकर्क्कश विनीत और गण्डस्थलों से मद झाड़नेवाले स्व-

र्णमयी कवचों से अलंकृत ३४ युद्धमें लक्षभेदी ऐरावतके समान युद्धकरनेवाले हैं यह हाथी उत्तरीय पर्व्वतों के बड़ेउग्र चोरोंके साथ नियतहैं ३५ यहांपर गौ से उत्पन्न होनेवाले और बन्दरसे उत्पन्न होनेवाले शूरबीर अत्यन्तश्रेष्ठ लोहेके कवच आदि धारणकरनेवाले बीरोंसमेत वर्त्तमानहैं ३६ और बहुतसे अनेकप्रकारके उत्पत्ति स्थानवाले और मनुष्यों सेभी उत्पन्न होनेवाले हैं जिनको धूम्रवर्ण कहते हैं वह हिमाचल पर्व्वत के दुर्ग्गमस्थानों के रहनेवाले और पापकर्त्ता होकर महाम्लेच्छहैं दुर्य्योधनने इससम्पूर्ण राजमंडल को पाकर ३७।३८ रथियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य सोमदत्त जयद्रथ और कर्णको पाकर पाण्डवों का अपमान किया ३९ फिर कालके चक्रमें फँसाहुआ दुर्य्योधन अपनेको कृतार्थ मानताहै अब वह सब मेरे बाणोंके गोचरता में वर्त्तमानहुये हैं ४० हे युधिष्ठिर जो मैं चित्तके अनुसार तीव्रगामी हूं तो यह किसी प्रकारसे छूटकर नहीं जासक्ते दुर्योधनने सदैवसे दूसरेके बलसे अपना निर्वाह कियाहै ४१ हे राजा जो यहसुनहरी ध्वजावाले रथी दृष्टपड़ते हैं वह मेरे बाणोंसे पीड़ावान्होकर नाशको पावेंगे ४२ यह काम्बोजदेशी शूर विद्यावान् और धनुर्व्वेदमें पूर्ण आपने सुने हैं वह दुर्वारणनामहैं ४३ यह परस्पर अभीष्ट चाहनेवाले अत्यन्त दृढ़शरीरहैं हे भरतवंशी दुर्य्योधनकी ग्यारहअक्षौहिणी सेना क्रोधयुक्तहै ४४ और चारोंओरसे रक्षित कुरुबीर मेरे निमित्त बड़ी सावधानी से नियतहैं हे महाराज वह सब चैतन्य होकर अभ्रान्तचित्त मेरेही सम्मुख वर्त्तमानहैं ४५ मैं उनको ऐसे मथूंगा जैसे कि तृणों को अग्नि मथना है इसकारण से सबतूणीरादि उपासंग और सब सामान ४६ को रथके तैयार करनेवाले मनुष्य विधिके अनुसार मेरे रथपर नियतकरें निश्चय करके इसबड़ेभारी युद्धमें नानाप्रकारके शस्त्र हाथमें लेनेके योग्यहैं ४७ जैसे कि गुरुओंसे सिखलाये गयेहैं उसप्रकारसे रथोंको पँचगुने करनेचाहिये फिर तीक्ष्ण सर्प्पोंकेसमान काम्बोज देशियों से भिड़ूंगा ४८ उन नानाप्रकार के शस्त्र समूहों के रखनेवाले विषकेसमान प्रहारकरनेवाले किरातोंसेभी लड़ूंगा ४९ राजासे सदैव पालन किये हुये दुर्य्योधन का हितचाहनेवाले इन्द्रके समान पराक्रमी शकों के साथ भिड़ूंगा ५० इसीप्रकार अग्निके समान अजेय और तेजस्वी और कालके समान दुःखसे आधीन करनेके योग्य नानाप्रकारके अन्य २ शूरवीरों सेभी लड़ूंगा ५१ हे राजा युद्धमें दुर्म्मद बहुतसे शूरवीरोंके साथ युद्धभूमिमें भिड़ूंगा इसहेतु

से शुभलक्षणवाले घोड़ों में श्रेष्ठ प्रशंसनीय ५२ और पृथ्वी के लेटनेसेही थका-
वट से रहित जल से तृप्त घोड़े फिर मेरे रथ में संयुक्त किये जायँ संजय बोले कि
राजाने उसके सब तूणीरादिक सामान ५३ और नाना प्रकारके शस्त्रों को उस
के रथपर अलंकृत करवाया इसके पीछे चार मनुष्योंने उन सब सामानों से युक्त
उत्तम घोड़ों को ५४ रसयुवान नशेदार जल पिलाया उन थकावटसे रहित दाना
जल आदि से तृप्त स्नान किये हुये अच्छे अलंकृत विना घाव सुवर्णकी माला
रखनेवाले योग्य सुवर्णवर्ण बिनीत शीघ्रगामी ५५।५६ अत्यंत प्रसन्नमन विधिके
अनुसार अलंकृत चारों घोड़ों को उस रथमें जोड़ा जो कि स्वर्णमयी केशरकी
मालाओंसे युक्त सिंहमूर्त्ति रखनेवाली ध्वजासे शोभित ५७ मणि मूंगोंसे जटित
सुनहरी केतुओं से संयुक्त श्वेत बादलके समान प्रकाशमान पताकाओं से अ-
लंकृत ५८ सुनहरी दण्डसे ऊंचे छत्रवाला और बहुत शस्त्रों समेत सामानों से
भराहुआ था उस स्वर्णमयी सामानसे अलंकृत रथको विधि पूर्व्वक जोड़ा ५६
दारुक के छोटे भाई और उसके सखा सूतने तैयार कियेहुये रथ को ऐसे वर्णन
किया जैसे कि इन्द्रके तैयार कियेहुये रथ को मातलिनाम सारथी कहता है ६०
इसके पीछे स्नान करनेवाले सात्यकी ने जिसका कौतुक मंगल कियागया प-
वित्र होकर स्नातकनाम ब्राह्मणों को हजार २ अशर्फियांदीं ६१ उसके पीछे आ-
शीर्वादों समेत सबसे मिल श्रीमानोंमें श्रेष्ठ मधुपर्कके योग्य सात्यकी कैलातक
नाम मदिरा पानकर ६२ अरुण नेत्र होकर महाशोभायमान हुआ फिर बड़ी प्र-
सन्नता से युक्त मदसे चूर्ण और घूर्ण नेत्र सात्यकी वीरों के कांस्यपात्रको पाकर
६३ अग्निके समान प्रकाशित द्विगुणित तेजवाला रथियों में श्रेष्ठ बाण समेत
धनुष को गोद में लेकर ६४ ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन किया हुआ कवच धारण
किये लाजा अर्थात् धानकी खील चन्दनादि सुगन्धित वस्तु और मालाओं से
अच्छी रीति से अलंकृत कन्याओं करके अभिनन्दित ६५ युधिष्ठिर के दोनों
चरणोंको दोनोंहाथों से दण्डवत् करके और युधिष्ठिर करके मस्तकपर सूंघा हु-
आ सात्यकी बड़े रथपर सवार हुआ ६६ उसके पीछे उन प्रसन्न हर्षित शरीर वा-
युके समान शीघ्रगामी अजेय आनन्दसे प्रफुल्लित मुख सिन्धदेशी घोड़े उस
विजय करनेवाले रथ को लेचले ६७ इसी प्रकार धर्मराजसे पूजित भीमसेन भी
युधिष्ठिरको दण्डवत् करके सात्यकी के साथ चले ६८ आपकी सेनामें प्रवेशित

होने को अभिलाषी शत्रुओं के बिजय करने वाले उन दोनों बीरों को देखकर आपके सब पुत्र जिनमें मुखिया द्रोणाचार्य्य थे नियतहुये ६९ तब वह प्रसन्नता से पूर्ण बीर सात्यकी कवच धारण किये पीछे चलनेवाले भीमसेन को देखकर उसको भी प्रसन्न करके प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाले बचन को बोला कि हे भीमसेन तुम राजाकी रक्षाकरो यह कर्म्म तेरेही करनेके योग्य माना है ७०।७१ मैं इस काल से पकी हुई सेना में प्रवेश करूंगा और राजाकी रक्षा करना वर्त्तमान और भविष्यत दोनों कालों में कल्याण करनेवाली है ७२ हे शत्रुओंके पराजय करनेवाले भीमसेन तुम मेरे पराक्रम को जानतेहो औ मैं तुम्हारी सामर्थ को जानताहूं इस हेतुसे जो तुम मेराहित चाहतेहो तो लौटो ७३ सात्यकी के इस बचन को सुनकर भीमसेन सात्यकी से बोले हे पुरुषोत्तम तुम प्रयोजन सिद्ध करने के अर्थ यात्राकरो मैं राजाकी रक्षा करूंगा ७४ इस रीतिसे कहाहुआ माधव सात्यकी भीमसेन से बोला कि हे पाण्डव तुम अवश्य जाओ निश्चय करके मेरीही बिजयहै ७५ क्योंकि जो मेरी रक्षामें प्रीति रखनेवाले तुम मेरी आधीनतामें नियतहो और हे भीमसेन यह शुभ शकुन भी मेरी बिजय को शूचन करते हैं ७६ और इसी हेतुसे महात्मा अर्ज्जुनके हाथसे पापी जयद्रथके मरनेपर मैं धर्म्मात्मा युधिष्ठिरसे आकर मिलूंगा ७७ उस बड़े यशस्वी ने इतना कहकर भीमसेन को बिदा करके आपकी सेना को इस प्रकारसे देखा जैसे कि व्याघ्र मृगोंके समूहों को देखता है ७८ हे राजा सम्मुख देखते हुये उस सात्यकी को देखकर आपकी सेना अत्यन्त अचेत होकर फिर कम्पायमानहुई ७९ तदनन्तर अर्जुनके देखने का अभिलाषी वह सात्यकी धर्मराज की आज्ञा से अकस्मात् आपकी सेनाकी ओर चला ८० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्वादशोपरिशततमोऽध्यायः ११२ ॥

एकसौतेरहका अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज युद्धाभिलाषीहोकर आपकी सेनाकी ओर सात्यकी के जानेपर सेनासे युक्त धर्मराज १ द्रोणाचार्य्यके रथको चाहनेवाले सात्यकी के पीछेचला २ उसके पीछे युद्धमें दुर्मद धृष्टद्युम्न और वसुदान पाण्डवी सेनामें पुकारे कि आवो आवो प्रहारकरो शीघ्रतासे ऐसेदौड़ो ३ जैसे कि युद्धदुर्मद सात्य-

की सुखपूर्व्वक जाताहै और बहुत से महारथी उसके पराजयकरनेमें उपायकरते हैं ४ इस रीतिसे बोलतेहुये वह महारथी बड़ी तीव्रतासे दौड़े वहां विजयाभिलाषी हम सब लोग उनके सम्मुखगये ५ उसके पीछे सात्यकी के रथपर बड़े शब्द हुये अर्थात् चारों ओरसे बर्त्तमान दौड़तीहुई आपके पुत्रकी सेना ६ यादव सात्यकी के हाथसे सैकड़ों प्रकारसे छिन्नभिन्नहुई उस सेनाके तितिरबितिर होजाने पर महारथी सात्यकीने ७ सब सेनाओंके आगे बड़े धनुषधारी सात शूरवीरोंको मारा हे महाराज फिर अनेक प्रकारके देशों के स्वामी अन्य २ राजा लोगों को भी ८ अग्निरूप बाणोंसे यमलोकमें पहुंचाया एक बाणसे सौ को घायलकिया और सौ बाणों से एकको ९ हाथी के सवारों समेत हाथियों को घोड़े के सवारों समेत घोड़ों को और घोड़े सारथियों समेत रथोंको भी ऐसे मारा जैसे कि पशुओंको शिवजी मारते हैं १० आपकी सेनाके कोई भी शूरवीर लोग उस प्रकार अपूर्व्वकर्म्मी बाणरूपी बर्षा करने वाले सात्यकी के सम्मुख नहीं दौड़े ११ उन भयभीत घायल और लम्बी भुजावाले सात्यकी से मलेहुये वीरोंने उस बड़े शूर प्रतापी को देखकर युद्धभूमिको त्यागकिया उसके तेज से अचेत उन लोगों ने उस अकेलेको अनेकप्रकारसे देखा १२ हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र मथेहुये टूटे नीड़वाले रथ और टूटेहुये रथ चक्र गदा छत्र ध्वजा १३ अनुकर्ष पताका सुनहरी मुकुट बाजूबन्द रखनेवाली चन्दनसे लिप्त भुजा १४ और हाथीके सूंड़की समान सर्प के फणकी सूरत जंघाओंसे पृथ्वी आच्छादित होगई १५ वह पृथ्वी उत्तम चक्षुवाले शूरवीरोंके पड़ेहुये चन्द्रमा के समान प्रकाशित कुंडलधारी मुखोंसे अग्निके समान प्रकाशमान होगई १६ अनेक प्रकारसे टूटे पर्वतोंके समान पड़ेहुये हाथियों से ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि पड़ेहुये पहाड़ोंसे शोभितहोती है १७ मोतियों के जालोंसे अलंकृत सुनहरी ईशादण्डआदिक अपूर्व्व जेरबन्दों समेत घोड़ेभी अपूर्व्व शोभायमानहुये १८ निर्जीव पृथ्वीको पाकर उस बड़ी भुजावालेसे अत्यन्त मर्दित कियेगये फिर वह यादव सात्यकी आपकी अनेक प्रकारकी सेनाओंको मारकर १९ और शेष सब सेनाको उच्छिन्नकरके आपकी सेनामें घुसगया वहां जाकर सात्यकीने जिस मार्गसे कि अर्जुन गयाथा उसी मार्गसे जाना चाहा २० उसके पीछे द्रोणाचार्य्यसे रोकागया अत्यन्त क्रोधयुक्त सात्यकी भारद्वाजको पाकर ऐसे उल्लंघन करने वाला नहीं हुआ २१ जैसे मर्यादा को समुद्र

नहीं उल्लंघन करसका फिर द्रोणाचार्य्यने युद्धमें महारथी सात्यकीको रोककर २२ मर्मभेदी तीक्ष्ण पांच बाणों से घायलकिया हे राजा फिर सात्यकी ने भी उनको ऐसे सातबाणों से व्यथित किया २३ जोकि सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्णधार कंक और मोर के परों से संयुक्त थे फिर द्रोणाचार्य्य ने छःबाणों से घोड़े और सारथी समेत उसको घायलकिया २४ महारथी सात्यकीने उन द्रोणाचार्य्यजी को नहीं सहा इसके पीछे सात्यकी ने सिंहनाद करके द्रोणाचार्य्य को व्यथित किया २५ और दूसरे चौबीस बाणों से द्रोणाचार्य्य को घायलकरके भी फिर दशबाणों से घायलकिया २६ हे श्रेष्ठ युद्ध में एकबाण से उनके सारथी को चारबाणों से चारों घोड़ों को और एकबाण से उनकी ध्वजा को भी काटा २७ फिर शीघ्रता करने वाले द्रोणाचार्य्य ने टीड़ीदलोंके समान तीक्ष्ण चलनेवाले बाणोंसे उसको घोड़े सारथी रथ और ध्वजा समेत ढकदिया २८ उसी प्रकार भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलतासे रहित सात्यकी ने तीव्र चलनेवाले अनेक बाणों से द्रोणाचार्य्यको ढक दिया इसके पीछे द्रोणाचार्य्य बोले २९ कि हे सात्यकी तेरा आचार्य्य तो मुझ लड़नेवाले को त्याग करके नपुंसकके समान युद्धको छोड़कर गया और परिक्रमा करी ३० हे माधव अब तुम मुझ से युद्ध करते जीवते नहीं जावोगे जो तुम भी अपने गुरुके समान मुझको युद्धमें छोड़कर नहीं जावोगे तो ३१ सात्यकी बोला हे ब्रह्मन् आपका कल्याण हो मैं धर्मराज की आज्ञा से अर्ज्जुनके खोजने को जाऊंगा मेरा समय व्यर्थ न होजाय ३२ आचार्य्यों का खोलाहुआ मार्ग्ग सदैव शिष्यों से बर्त्ताव कियाजाता है इसहेतु से मैं उसीप्रकार शीघ्र जाताहूं जिसप्रकारसे कि मेरे गुरू गयेहैं ३३ सञ्जय बोले हे राजा सात्यकी इतना कहकर आचार्य्यजी को त्याग करताहुआ चलने के समय सारथी से यह बचन बोला ३४ कि द्रोणाचार्य्यजी सबप्रकार से मेरे रोकनेको उपाय करेंगे हे सूत युद्धमें सावधान होकर चल और इसउत्तम बचनको सुन ३५ कि अवन्तिदेशियों की यहसेना बड़ी प्रकाशमान दिखाईदेती है और उसके पीछे यह दाक्षिणात्यों की बड़ी सेना दृष्टि पड़ती है ३६ उसके आगे बाह्लीक देशियोंकी भी वह बड़ी सेना और बाह्लीक देशियों के पास कर्णकी बड़ीसेना नियत है ३७ हे सारथी यह सबसेना एक दूसरेसे पृथक् नियतहैं और युद्धभूमिमें एक दूसरेकी सहायता लेकर परस्पर रक्षा करती हैं ३८ सो हे सारथी इस अवकाश को पाकर अत्यन्त

प्रसन्नके समान घोड़ोंको चलायमानकरो मध्यम तीव्रतामें नियत होकर मुझको वहां लेचल ३९ जहांपर कि नानाप्रकारके शस्त्रोंके उठानेवाले वाह्लीकदेशी और वहुतसे वह दाक्षिणात्य जिनका अग्रगामी कर्ण है दिखाई देते हैं ४० और जहां पर नानाप्रकार के देशों में उत्पन्न होनेवाले पदातियों से व्याप्त हाथी घोड़े और रथों से दुर्गम्य सेना दिखाई पड़ती है ४१ द्रोणाचार्य्य ब्राह्मणको त्याग करता हुआ सात्यकी अपने सारथी से इतना कहकर कि जो कर्ण की भयकारी वड़ी सेनाहै उसमें होकर चलो यह कहकर चलदिया ४२ फिर वहुत वाणोंको फैलाते हुये क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य उस मुख न मोड़नेवाले जातेहुये महाभाग सात्यकी के पीछे चले ४३ वह सात्यकी तीक्ष्ण वाणोंसे कर्णकी वड़ीसेनाको घायल करके उस भरतवंशियों की सेनामें प्रवेश करगया जो कि असंख्यातथी ४४ फिर चलायमान सेनाके मध्यमें सात्यकी के प्रवेशित होजाने पर क्रोधयुक्त कृतवर्मा ने सात्यकी को रोका ४५ पराक्रमी सात्यकी ने छःवाणों से उस आतेहुये कृतवर्म्माको घायल करके चार वाणों से उसके चारोंघोड़ोंको घायल किया ४६ इसके पीछे सात्यकी ने तीव्र चलानेवाले सोलह वाणों से कृतवर्म्मा को छातीके मध्यमें फिर घायल किया ४७ हे महाराज यादव सात्यकी के अत्यन्त प्रकाशवान् अनेक वाणों से घायल उस कृतवर्म्मा ने सहनता नहींकी ४८ उस सात्यकी ने टेढ़े चलनेवाले वायुके समान वत्सदन्तनाम वाणको धनुषपर चढ़ाकर कानतक खैंचकर छाती पर घायलकिया ४९ वह सुन्दर पुंख और पक्षवाला शायकनाम वाण उसके शरीर के कवच को छेदकर रुधिर में लिप्तहोकर पृथ्वी में प्रवेश कर गया ५० हे राजा इसके पीछे उत्तम अस्त्रके ज्ञाता कृतवर्माने सात्यकीके धनुषको वाणोंके समूहों समेत अपने वहुत से वाणोंसे काटा ५१ हे राजा इसके पीछे अत्यन्त क्रोधकरके दूसरे दश तीक्ष्णवाणों से सत्य पराक्रमी सात्यकीको छाती के मध्यमें घायलकिया ५२ तव धनुषके टूटनेपर शक्तिमानों में श्रेष्ठ सात्यकीने अपनी शक्तिसे कृतवर्माकी दाहिनी भुजाको घायलकिया ५३ इसके पीछे सात्यकीने अत्यन्त दृढ़ पूर्ण धनुष को चलाकर वड़ी शीघ्रता से हजारोंहीं वाणों को छोड़ा ५४ इसके पीछे भी सात्यकीने हार्दिक्यके पुत्र कृतवर्माको रथ समेत चारों ओरसे ढकदिया और वाणों से ढककर ५५ फिर उसके सारथी के शिरको भल्लसे काटा फिर मृतक सारथी कृतवर्मा के वड़े रथसे गिरपड़ा ५६ तदनन्तर सारथी से

रहित वह घोड़े अत्यन्त भागे फिरतो भ्रांतिसे युक्त भोजवंशी वीर कृतवर्म्मा आ-पही घोड़ोंको पकड़कर ५७ धनुष हाथमें लेकर नियत हुआ सेनाके लोगों ने उसकी प्रशंसाकरी उसने एक मुहूर्त्त दम लेकर उन उत्तम घोड़ोंको चलायमान किया ५८ और बड़ी निर्भयता से शत्रुके भय को उत्पन्न किया सात्यकी वहांसे चलदिया और वह कृतवर्म्मा भीमसेनके सम्मुख गया ५९ हे महाराज कृतवर्म्मा की सेना से बाहर निकला हुआ सात्यकी भी बड़ी शीघ्रतासे काम्बोजदेशियों की बड़ी सेना को गया ६० वहां बहुत से शूरवीर महारथियों से रोका हुआ वह सत्य पराक्रमी सात्यकी कम्पायमान नहीं हुआ ६१ युद्ध में उपाय करने वाले द्रोणाचार्य्य सेना को नियत स्थानपर नियत करके कृतवर्म्मापर भार को रखकर युद्धकी इच्छासे सात्यकी के सम्मुखगये ६२ पाण्डवी सेनामें प्रसन्नचित्त बड़े शूर वीरोंने इस प्रकार सात्यकीके पीछे दौड़नेवाले द्रोणाचार्य्यको रोका ६३ फिर जि-नका अग्रगामी भीमसेन है वे साहसी पांचालदेशी रथियों में अत्यन्त श्रेष्ठ कृ-तवर्मा को पाकर ६४ और पराक्रम करके उस वीर कृतवर्म्मा से रोकेहुये उन सब उपाय करनेवाले कुछेक विमनलोगों को ६५ बाणोंके समूहों से चारोंओरसे थकी सवारीवाला किया कृतवर्म्माकी सेना को चाहनेवाले वह बीर युद्ध में उस भोज-वंशी से रुकेहुये ६६ कुलीनों के समान बड़े सुयश को चाहते नियतहुये ६७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिदशोपरिशततमोऽध्यायः ११३ ॥

एकसौचौदहका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय ऐसी असंख्य सेना और ऐसे २ अगणित शूरबीर और इस रीति के न्याय के अनुसार रचे हुये व्यूहवाली अगणित सेना १ सदैव हम लोगों से पारितोषिक पानेवाली प्रतिदिन हमसे प्रीति रखनेवाली अत्यन्त वृद्धियुक्त अपूर्व्वरूप प्रथमही से दृढ़ पराक्रम रखनेवाली २ न बहुत वृद्ध न बा-लक न दुर्बल न स्थूल चित्तरोचक चाल चलनेकी वृद्धि रखनेवाली उत्तम नीरोग अंगवाली शरीरों में कवच धारण किये बहुत शस्त्रादिक सामानों से अलंकृत शस्त्र विद्याओं में बड़ी कुशल ३ । ४ चढ़ने उतरने चलने और समय पाकर अ-च्छी रीति से प्रहार करने सम्मुखजाने और हट जाने में सावधान ५ हाथी घोड़े और रथोंकी सवारियों में अच्छे परीक्षा कियेहुये और परीक्षा लेकर न्यायके अ-

नुसार मासिक पानेवाले ६ और न केवल बातचीत सेवा और नातेदारी के कारणसे नियत होनेवाले और दैव इच्छासे किसी से न मिलनेवाले मेरी सेना के लोगथे ७ और कुलीन श्रेष्ठलोगोंसे संयुक्त प्रसन्न प्रफुल्लित नम्र कार्यकर्त्ता यशस्वी साहसी ८ उत्तम पवित्रकर्मी लोकपालोंके समान नरोत्तम दूसरे अनेक मंत्रियोंसे रक्षित ६ अपनी इच्छासे सेना और पीछे चलनेवालों समेत हमारेपास पास आनेवाले हमारे हित करनेके अभिलाषी बहुतसे राजाओंसे रक्षित १० चारों ओर से नदियों से पूर्णहुये समुद्रके समान पक्षियों के समान विना पक्षवाले रथ घोड़ों से युक्त ११ और गंडस्थलों से मद भाड़नेवाले हाथियों से संयुक्त मेरी बड़ी सेना जो मारीगई इसमें प्रारब्धके सिवाय दूसरी बात क्याहै १२ शूरवीररूपी अविनाशी जल रखनेवाले भयकारी सवारीरूप लहरोंसेयुक्त यंत्र खड्ग गदा शक्ति बाण और प्रासरूप मछलियों से व्याप्त १३ ध्वजाओंके आभूषणोंसे दुर्गम्य रत्नरूप पाषाणों से युक्त दौड़नेवाली सवारियों रूप बायुकी तीव्रता से कम्पायमान द्रोणाचार्य्यरूप गम्भीर पातालवाले कृतवर्मारूपी महाह्रदवाले बड़े राजाजलसिंधु रूपी बड़े ग्राहवाले कर्णरूपी उदयमान चन्द्रमासे उन्नत होनेवाले समुद्रकी समान सेनाहै १४।१५ हे संजय तीव्रतासे मेरी समुद्ररूप सेना को पराजय करके एक रथकेही द्वारा अर्जुन और सात्यकी के जानेपर १६ उस सेनामें अर्जुन और बड़े रथी यादव सात्यकीके पहुँचनेपर मैं अपनी शेष रहीहुई सेना कोभी बचता नहीं देखताहूं १७ वहां सबको उल्लङ्घन कर जानेवाले तीव्रगामी उन दोनों को देख कर गाण्डीव के लक्ष्य में राजाजयद्रथ को देखकर १८ कालसे प्रेरित कौरवों ने किसकर्म्म को किया उस अत्यन्त भयकारी समयपर वह लोग किस रीति से कर्म्म करनेवाले हुये १६ हे तात मिले हुये कौरवों को काल से निगला हुआ मानताहूं उन्होंका पराक्रमभी युद्धमें वैसा नहीं दिखाई देता है २० वहां युद्ध में श्रीकृष्णचन्द्रजी और अर्ज्जुन विना घायलही सेनामें पहुंचगये हे सञ्जय यहां उन दोनों का रोकनेवाला कोई नहीं है २१ और ऐसे बहुतसे शूरवीर मारे गये जो महारथी परीक्षा लेकर योग्यताके समान मासिकादिसे पोषण कियेगये और बहुत से मीठे वचनों से प्रसन्न कियेहुये २२ हे तात मेरी सेनामें आदर सत्कारसे कोई भी रहित नहीं है अपने २ कर्मके अनुसार मासिकआदि प्रतिदिन का सब खर्च मिलताहै २३ हे संजय मेरी सेना में कोई न लड़नेवाला वा थोड़ा

पारितोषिक पानेवाला और विना मासिक का कोई भी मनुष्य नहीं होगा २४ मैंने सामर्थ्य के अनुसार सबको दानमान और सत्कारादिकोंसे प्रसन्न किया हे तात इसी प्रकार सजातीय बांधवों के साथ अपने इष्ट मित्रोंको भी मेरे पुत्रों ने प्रसन्न कियाहै २५ उनको युद्धमें पाकर अर्जुनने विजयकिया और सात्यकी से मर्दित कियेगये इसमें प्रारब्धके सिवाय और कौनसी बात समझना चाहिये २६ हे संजय जो युद्ध में रक्षित कियाजाताहै और जो रक्षा करनेवाला है रक्षकों समेत रक्षितोंका साधारण एकही मार्ग है २७ युद्धमें जयद्रथके सम्मुख अर्ज्जुन को नियत देखकर अत्यन्त निर्बुद्धी मेरे पुत्रने किस कर्म को किया २८ और युद्धमें निर्भयके समान प्रवेश करनेवाले सात्यकी को देखकर दुर्य्योधनने समय के अनुसार किस कर्मको माना २९ सब शस्त्रों को उल्लंघन करके चलनेवाले रथियोंमें श्रेष्ठ उन दोनोंको सेनामें पहुंचनेवाला देखकर मेरे पुत्रोंने क्या बुद्धि करी ३० मैं मानताहूं कि अर्ज्जुनके निमित्त नियत श्रीकृष्णजी को और शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी को देखकर मेरे पुत्र शोच करते हैं ३१ मैं मानताहूं कि सात्यकी अर्ज्जुन से उल्लङ्घन कीहुई सेनाको और भागनेवाले कौरवों को देख कर मेरे पुत्र शोच करते हैं ३२ मैं यहभी मानताहूं कि मेरे पुत्र रथ सवारों को पृथक् पृथक् और शत्रुको विजयकरने में असाहसी होकर भागने में प्रवृत्तचित्त देखकर शोच करते हैं ३३ यहभी अनुमान करताहूं कि मेरे पुत्र यादव सात्यकी और अर्ज्जुन से खाली कियेहुये रथके बैठनेके स्थानोंको और मृतक शूरबीरोंको देखकर शोच करते हैं ३४ यहभी अनुमान होताहै कि मेरे पुत्र युद्ध में हज़ारों घोड़े हाथी रथ और वीरों को व्याकुलचित्त दौड़ताहुआ देखकर शोचते हैं ३५ यहभी मानताहूं कि अर्ज्जुन के बाणों से घायल भागतेहुये बड़े बड़े हाथी और गिरतेहुये अनेक हाथियोंको देखकर मेरे पुत्र शोच करते हैं ३६ मैं मानताहूं कि वहां सात्यकी और अर्ज्जुन के सवारों से विहीन कियेहुये घोड़े और रथसे विहीन कियेहुये मनुष्यों को देखकर मेरे पुत्र शोच करते हैं ३७ मैं मानताहूं कि युद्धमें सात्यकी और अर्ज्जुनके मारेहुये और जहां तहां से भागतेहुये घोड़ों के समूहोंको देखकर मेरे पुत्र शोच करते हैं ३८ मैं मानताहूं कि युद्धमें सबप्रकारसे दौड़ते समूहोंके पतियोंको देखकर विजयसे निराश होकर मेरे सबपुत्र शोच करते हैं ३९ मैं मानताहूं कि यह एक क्षणभर मेंही द्रोणाचार्य्यकी सेनाको उल्ल-

ङ्घन करनेवाले महाविजयी दोनों अजेय बीरोंको देखकर मेरे पुत्र शोक में डूब रहे हैं ४० हे तात सात्यकी समेत मेरी सेनामें प्रवेश करनेवाले इनदोनों अजेय श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन को सुनकर अत्यन्त अचेतहूं ४१ शिनियों में अत्यन्त उत्तम रथी उस सात्यकी के सेनामें आजाने और कृतबर्म्मा की सेनाके उल्लङ्घन करनेपर कौरवों ने क्या किया ४२ इसीप्रकार उस युद्धमें पाण्डवों के रोके जाने पर कैसेप्रकारका युद्धहुआ हे सञ्जय वह सब मुझसे बर्णनकरो ४३ निश्चय करके द्रोणाचार्य्य पराक्रमी और श्रेष्ठ अस्त्रज्ञ होकर युद्ध में दुर्म्मदहैं ऐसे बड़े धनुषधारी वीरको उस युद्धमें कैसे घायल किया ४४ अर्ज्जुन की बिजय चाहनेवाले वह लोग द्रोणाचार्य्य से शत्रुता करनेवालेहैं इसीहेतुसे भरद्वाज का पुत्र महारथी द्रोणाचार्य्य उनसे कठिन शत्रुता करनेवाले हैं ४५ अर्ज्जुनने भी जयद्रथके मारनेमें जो जो कर्म्म किये वह सबभी मुझसे कहो क्योंकि हे सञ्जय तुम बर्णन करने में बड़े कुशलहो ४६ सञ्जय बोले कि हे भरतर्षभ वीर धृतराष्ट्र तुम अपने ही अपराध से उत्पन्न होनेवाले दुःखोंको पाकर साधारण मनुष्यके समान शोच करने के योग्य नही हो ४७ पूर्व्व समय में अत्यन्त बुद्धिमान् बिदुर आदिक शुभ चिन्तकों ने जो तुम को समझाया था कि तुम पाण्डवों को मत त्यागकरो हे राजा उनके वचनों को तुमने नहीं सुना निश्चय है कि जो अपनी वृद्धि चाहनेवाला मनुष्य अपने शुभचिन्तकोंकी बातोंको नहीं सुनता है वह बड़े दुःखोंको पाकर ऐसे शोचताहै जैसे कि तुम शोचते हो ४८।४९ हे राजा पूर्व्व समय में सन्धिके विषयमें श्रीकृष्णजीने भी आपसे अनेक प्रकारकी प्रार्थनाकीथी उस समय बड़े यशस्वी श्रीकृष्णजी ने भी उस मनोरथ को नहीं पाया अर्थात् तुमने उनके भी कहनेको नहीं माना ५० तुम्हारी अगुणता पुत्रोंका पक्ष और धर्म्म में अदृढ़ता और पांडवोंके ऊपर ईर्षा जानकर ५१ और श्रेष्ठ पांडवों में तेरी कुटिलता पूर्वक बहुत पीड़ाके शब्दोंको जानकर ५२ सब लोकोंके मूलके जाननेवाले सर्वेश्वर प्रभु वासुदेवजी ने कौरवों के महायुद्धको किया ५३ हे बड़ाई देनेवाले तुमने अपने बहुत बड़े अपराधसे बड़ेभारी नाशको पाया यह अपराध दुर्योधन में लगानेके योग्य नहीं है ५४ हे भरतवंशी आदि अन्तमें आगे पीछेसे तुम्हारा कुछ शुभकर्म नहीं दिखाईदेताहै इससे तुम पराजयके मूलहो ५५ इसहेतुसे चित्त में स्थिरकरके और लोककी मृतदशाको जानकर देवासुर युद्धके समान भय-

कारी युद्ध जैसे जारीहुआ उसको सुनो ५६ आपकी सेनामें सत्य पराक्रमी सात्यकीके प्रवेश करनेपर भीमसेनआदिक पांडव आपकी सेनाके सम्मुखगये ५७ महारथी अकेले कृतबर्माने उन क्रोधके रूप पीछे चलनेवालों समेत अकस्मात् आतेहुये पांडवोंको रोका ५८ निश्चयकरके जैसे उठेहुये समुद्रको मर्यादा रोकतीहै उसी प्रकार कृतबर्माने युद्धमें पांडवी सेनाको रोका ५९ वहां हमने कृतबर्मा के अपूर्व्व पराक्रमको देखा कि जिसको पांडवोंने एकसाथ होकर भी युद्धमें उल्लंघन नहीं किया ६० इसके पीछे सब पांडवोंको प्रसन्नकरते महाबाहु भीमसेन ने तीव्र चलनेवाले तीनबाणों से कृतबर्मा को छेदकर शंखको बजाया ६१ फिर सहदेवने बीसबाणसे धर्मराजने पांचबाणसे और नकुलने भी सौ बाणों से कृतबर्माको घायलकिया ६२ द्रौपदीके पुत्रोंने तिहत्तरबाणोंसे घटोत्कचने सातबाणों से और धृष्टद्युम्नने तीन बाणोंसे कृतबर्माको पीड़ितकिया ६३ बिराट और यज्ञसेनके पुत्र द्रुपदने पांचबाणों से और शिखण्डीने कृतबर्माको पांचबाणोंसे छेद कर ६४ फिर भी हँसते हँसते बीस शायकों से घायलकिया हे राजा इसके पीछे कृतबर्माने सब ओरसे उन प्रत्येक महारथियों को ६५ पांच २ बाणोंसे घायलकरके सातबाणोंसे भीमसेनको व्यथितकिया और उसके धनुष और ध्वजाको भी पृथ्वीपर गिराया ६६ फिर शीघ्रता करनेवाले क्रोधयुक्त उसी महारथी ने सत्तरि तीक्ष्णबाणोंसे टूटे धनुषवाले भीमसेन को छातीपर घायलकिया ६७ तब रथ में बैठा पराक्रमी भीमसेन कृतबर्माके उत्तम बाणोंसे अत्यन्त घायलहोकर ऐसे कंपायमानहुआ जैसे कि पृथ्वीके कंपनेसे पर्व्वत कंपितहोता है ६८ हे राजा उन पांडवोंने जिनके अग्रगामी धर्मराजथे उस दशावाले भीमसेनको देखकर बाणों के द्वारा कृतवर्माको पीड़ामानकिया ६९ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र उन प्रसन्न चित्तोंने उस कृतवर्माको अपने रथ समूहोंसे इस प्रकार घेरकर युद्ध में भीमसेनकी रक्षाके निमित्त शायकोंसे घायलकिया ७० इसके पीछे महाबली भीमसेनने चेतको पाकर सुनहरी दण्ड रखनेवाली लोहेकी शक्तिको लिया ७१ और शीघ्रही अपने रथसे कृतवर्माके रथपर फेंका भीमसेनके हाथसे छोड़ीहुई वह कांचली से छूटेहुये सर्प्प की समान ७२ अत्यन्त भयकारी शक्ति कृतवर्माके सम्मुख आकर अग्निके समान प्रज्वलितहुई तब कृतवर्मा ने उस प्रलयकालके समान प्रकाशमान अकस्मात् आतीहुई शक्तिको ७३ दो बाणोंसे बीचमें से दो खण्डकिये वह सुवर्णसे

जटित शक्ति खण्ड खण्ड होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी ७४ हे राजा वह दिशाओंको प्रकाशित करतीहुई शक्ति ऐसे गिरी जैसे कि आकाशसे गिरीहुई बड़ी उल्का होती है भीमसेन उस शक्तिको टूटीहुई देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्तहुआ ७५ इस के पीछे युद्धमें क्रोधभरे भीमसेनने वेगवान् बड़े शब्दवाले दूसरे धनुषको लेकर कृतबर्मा को रोका ७६ हे राजा आपकी कुमतिसे पराक्रमी भीमसेनने पांचवाणों से छाती के मध्य में कृतबर्मा को व्यथित किया ७७ हे श्रेष्ठ फिर भीमसेनके हाथ से घायलहुये सब अंग वह कृतबर्मा युद्धभूमि में फूलेहुये लाल अशोक वृक्षके समान शोभायमान हुआ ७८ इसके पीछे क्रोधयुक्त हँसतेहुये कृतवर्म्मा ने तीन वाणों से भीमसेनको घायल करके युद्धमें उनसबको भी अत्यन्त घायल किया ७९ बड़े धनुषधारी कृतबर्मा ने उन उपाय करनेवाले महारथियोंको तीन २ वाणों से व्यथित किया उन्होंने भी उसको सात २ बाणोंसे घायलकिया ८० इसके पीछे हँसतेहुये क्रोधयुक्त महारथी यादव कृतबर्माने युद्धमें क्षुरप्रनाम बाणसे शिखण्डी के धनुषको काटा ८१ फिर धनुषके टूटनेपर क्रोधयुक्त शीघ्रता करनेवाले शिखंडी ने युद्धमें खड्गको हाथमें लिया और सौ चन्द्रमा रखनेवाली प्रकाशित ८२ सुवर्ण से अलंकृत बड़ी ढाल को घुमाकर उस खड्गको कृतबर्मा के रथपर चलाया ८३ हे राजा वह बड़ा खड्ग उसके बाण समेत धनुषको काटकर पृथ्वीपर ऐसा गिरपड़ा जैसे कि आकाश से गिरहुआ नक्षत्र ८४ उसीसमयपर युद्धमें शीघ्रता करनेवाले उन महारथियोंने कृतवर्म्माको शायकों से अत्यन्त घायल किया ८५ हे भरतर्षभ इसके पीछे शत्रुहंता कृतबर्माने उस टूटेहुये बड़े धनुषको त्यागके अन्य दूसरे धनुषको लेकर ८६ युद्धमें तीन २ बाणोंसे पाण्डवों को घायल किया और आठ वाणों से शिखण्डी को घायल किया ८७ फिर बड़े यशस्वी शिखण्डी ने दूसरे धनुप को लेकर कच्छपके नखाकारक लक रखनेवाले बाणों से हार्दिक्यके पुत्र कृतवर्मा को रोका ८८ इसके पीछे युद्धमें क्रोधयुक्त कृतबर्मा तीव्रता से उस याज्ञसेनके पौत्र महारथी शिखण्डी के सम्मुख गया ८९ हे राजा वह शूर युद्धमें महात्मा भीष्मजी के मरनेकेकारण शिखण्डीको अपना पराक्रम दिखलाता हुआ ऐसे चला जैसे कि शार्दूल हाथीपर जाताहै ९० वह दोनों दिग्गजोंके समान अग्निके समान ज्वलित शत्रुओंके पराजय करनेवाले कृतबर्मा और शिखण्डी बाणोंकी परस्पर वर्षा करतेहुये दोनों परस्पर सम्मुख दौड़े ९१ उत्तम ध-

नुषों को चलायमान करते शायकों को धनुषोंपर चढ़ातेहुये जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों को छोड़ताहै उसी प्रकार सैकड़ों बाणों को छोड़ते ६२ और बाणों की तीव्रतासे परस्पर संतप्त करते दोनों महारथी बीर प्रलय कालीन दो सूर्य्योंके समान शोभायमान हुये ६३ कृतवर्म्मा ने युद्धमें महारथी शिखण्डी को तिहत्तर बाणों से घायल करके फिर सात बाणों से घायल किया ६४ वह कठिन घायल पीड़ित मूर्च्छा में डूबाहुआ धनुष बाण को छोड़कर रथके बैठनेके स्थानपर बैठ गया ६५ हे पुरुषोत्तम आपके शूरवीरों ने युद्ध में उसको व्याकुल देखकर कृतवर्म्माकी प्रशंसाकरी और कपड़ोंको हलाया ६६ शीघ्रता करनेवाला सारथी कृतवर्म्मा के बाणों से पीड़ामान महारथी शिखण्डी को उस दशामें युक्त जानकर युद्धभूमि से दूरलेगया ६७ उस रथके बैठनेके स्थानपर शिखण्डी को पीड़ामान जानकर पाण्डवोंने रथोंके द्वारा शीघ्रही कृतवर्माको घेरलिया ६८ वहांपर महारथी कृतवर्मा ने बड़ा अपूर्व कर्म्म किया जो अकेलेनेही साथियों समेत पांडवों को युद्धमें रोंका ६९ महारथी कृतवर्मा ने पाण्डवों को बिजय करके चन्देरी पांचाल संजय और केकयदेशी महा पराक्रमी शूरवीरों कोभी बिजय किया १०० कृतवर्मासे घायल इधर उधर दौड़नेवाले पाण्डवों ने युद्धमें धैर्य नहीं किया १०१ वह हार्दिक्यका पुत्र कृतबर्म्मा भीमसेनादिक पाण्डवों को युद्ध में बिजय करके निर्धूमअग्निके समान युद्ध में नियत हुआ १०२ युद्धमें कृतबर्म्मा से भागेहुये बाणोंकी बर्षा से पीड़ामान वह सब महारथी मुखों को फेरगये १०३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुर्दशाधिकशततमोऽध्यायः ११४॥

एकसौपन्द्रहका अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा चित्त को स्थिर करके सुनो जैसे कि महात्मा कृतबर्म्मा से उस सेनाके भागनेपर १ और अत्यन्त प्रसन्न आपके शूरवीरोंके कारणसेभी लज्जा से नीचा शिर करनेपर अथाह में थाह चाहनेवाले पाण्डवोंका जो द्वीप अर्थात् रक्षाश्रय हुआ २ हे श्रेष्ठ बड़े युद्ध में आपके शूरवीरों के उस भयकारी शब्द को सुनकर सात्यकी शीघ्रही कृतबर्मा के सम्मुख आया ३ वहां क्रोध और अधैर्य से युक्त सात्यकी अपने सारथीसे बोला कि हे सूत मेरे उत्तम रथको कृतबर्माके सम्मुखकर ४ और देख यह क्रोधयुक्त होकर पांडवी सेनाको नाशकरता

है हे तात इसको विजयकरके अर्जुनके पासजाऊंगा ५ हे बड़ेज्ञानी धृतराष्ट्र इस वचनके कहनेपर उसका सारथी एक पलभरमेंही कृतवर्मा के सम्मुखगया ६ अत्यन्त क्रोधयुक्त हार्दिक्यके पुत्र कृतवर्माने तीक्ष्णबाणोंसे सात्यकीको ढका उस कारणसे वह सात्यकी क्रोधरूप हुआ ७ फिर सात्यकीने युद्धमें शीघ्रही तीक्ष्ण भल्लको कृतवर्मा के ऊपर चलाया और दूसरे ऐसे चारबाणों को भी फेंका ८ कि जिन्होंने उसके घोड़ों को मारा और भल्लसे उसके धनुषको काटा और इसी प्रकार पृष्ठ रक्षक और सारथीको भी तीक्ष्णबाणोंसे छेदा ९ इसके पीछे सत्य पराक्रमी सात्यकीने उसको विरथकरके गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से उसकी सेनाको पीड़ामानकिया १० तब सात्यकीके बाणोसे पीड़ितहोकर सेना पृथक् २ होगई यह सब कामकरके वह सत्य पराक्रमी सात्यकी शीघ्रतासे चलदिया ११ हे राजा वह सात्यकी इसप्रकार से आपकी सेना में कर्मकर और द्रोणाचार्य्य की समुद्ररूपी सेनाको उल्लंघनकरके १२ अत्यन्त प्रसन्न चित्तसे युद्धमें कृतवर्माको पराजयकरके सारथी से बोला कि भय और व्याकुलता से रहितहोकर धीरेधीरे चलो १३ और रथ घोड़े हाथी और पदातियों से पूर्ण आपकी उस सेना को देखकर फिर सारथीसे बोला १४ कि द्रोणाचार्य्यकी सेनाके बाईं ओर जो यह बादलरूपी बड़ी भारी हाथियोंकी सेनाहै जिसका मुख सुवर्णका रथ रखनेवाला वीरहै १५ हे सूत यह बहुत से शूरवीर युद्धमें कठिनतासे हटानेके योग्य और मेरे निमित्त जीवन के त्यागनेवाले दुर्य्योधनके आज्ञावर्त्ती १६ सब बड़े धनुषधारी और सिंहके समान लड़नेवाले सुवर्ण जटित ध्वजाधारी त्रिगर्त्त देशियोंके बड़े रथी राजकुमार १७ वीर युद्धाभिलाषी मेरे सम्मुख नियतहैं हे सारथी अब घोड़ोंको चलायमान करके मुझको वहां पहुंचा दे १८ मैं भारद्वाज द्रोणाचार्य्यके देखते हुये त्रिगर्त्त देशियोंसे लड़ूंगा इसके पीछे यादव सात्यकी के विचार में नियतहोकर सूत बड़े धैर्यसे १९ सूर्य्यवर्ण प्रकाशित पताकाधारी रथकी सवारीसे चला सारथीके आज्ञाकारी और अपनी गतिसे चलनेवाले २० युद्ध में वायुके वेगके समान कुन्द नाम फूल और चन्द्रमा और चांदी के समान प्रकाशमान उत्तम घोड़े उसको ले चले तदनन्तर तीक्ष्ण छेदनेवाले नानाप्रकारके तीक्ष्ण शायकों को फैलाते शूरोंने सिंहवर्ण उत्तम घोड़ोंकी सवारीसे युद्ध में आतेहुये उस सात्यकीको सब ओरसे हाथियोंकी सेनाओंके द्वारा आकर घेरलिया २१।२२ यादव सात्यकी ने

भी तीव्रबाणों के द्वारा हाथियोंकी सेनासे ऐसा युद्धकिया जैसे कि वर्षाऋतु में बड़ा बादल अपनी बर्षासे बड़े पहाड़ोंके ऊपर बर्षा करताहै २३ शिनियों में बीर सात्यकी से प्रेरित बज्र और बिजलीके स्पर्शके समान बाणोंसे घायलहुये हाथी युद्धको त्याग २ करभागे २४ हे राजा टूटे दांत रुधिरमें लिप्त टूटे मस्तक गिरेहुये कान मुख ध्वजा सारथी और पताकाओंसे रहित २५ टूटे कवच घंटे टूटीहुये बड़ी ध्वजा कम्बलसेरहित और मृतक सवारीवाले हाथी दिशाओंकोभागे २६ यादव सात्यकी के नाराच, बत्सदन्त, भल्ल, अंजुलिक, क्षुरप्र और अर्द्धचन्द्रनाम बाणों से खण्ड २ अंग बादलके समान शब्दकरनेवाले हाथी नानाप्रकार के शब्दों को करते रुधिर मूत्र और बिष्ठा को छोड़तेहुये भागे २७। २८ और बहुतसे हाथी घूमनेवाले और चेष्टा करनेवालेहुये और कितनेही पृथ्वी पर गिरपड़े इसी प्रकार बहुतसे मृतकप्राय होगये इसप्रकारसे वह हाथियोंकी सेना महापीड़ामान हुई २६ अग्नि और सूर्य्यके समान बाणोंसे चारों ओरको भागे उस हाथियोंकी सेनाके मरनेपर बड़े पराक्रमी और उपाय करनेवाले जलसिन्धुने ३० चांदीबर्ण के घोड़े रखनेवाले सात्यकी के रथपर अपने हाथी को पहुंचाया वह जलसिन्धु स्वर्णमयी कवचधारी शूरबीर सुवर्णके बाजूबन्दों समेत पवित्र ३१ कुण्डल मुकुट और खड्ग रखनेवाला लालचंदनसे लिप्तांग शिरपर स्वर्णनिर्मित प्रकाशित मालाधारी ३२ छातीपर निष्क और प्रकाशित कण्ठसूत्रको धारणकर्त्ता हाथीकेमस्तकपर स्वर्णमयी धनुषको चलायमान करता ३३ ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि बिजली समेत बादल होताहै राजा मगधके अकस्मात् आतेहुये उस उत्तम हाथीको ३४ सात्यकी ने ऐसे रोका जैसे कि समुद्र को मर्य्यादा रोकती है हेराजा सात्यकी के उत्तम बाणों से रुकेहुये उस हाथीको देखकर ३५ बड़ा पराक्रमी जलसिन्धु युद्धमें क्रोधरूप हुआ इसके अनन्तर क्रोधयुक्त जलसिन्धु ने भारके साधनेवाले बाणों से ३६ शिनी के पौत्रको छातीपर घायलकिया इसके पीछे विषमें बुझायेहुये तीक्ष्ण दूसरेभल्लसे ३७ वृष्णियोंमें वीर धनुषधारी सात्यकीके धनुष को काटा हे भरतवंशी फिर उस हँसतेहुये मगधदेशी वीरने उस टूटे धनुषवाले सात्यकीको पांच तीक्ष्ण बाणोंसे घायलकिया जलसिन्धुके बहुतबाणोंसे घायल वह पराक्रमी ३८। ३६ महाबाहु कम्पायमान नहीं हुआ यह आश्चर्य्यसा हुआ बाणोंको ध्यान न करते पराक्रमी सात्यकीने दृढ़ता और बिश्वाससमेत ४० दूसरे

धनुपको लेकर तिष्ठ तिष्ठ इस शब्द को कहा सात्यकी ने इतना कहकर जलसिन्धुको वह वृहद्वक्षस्स्थल पर ४१ साठवाणोंसे अत्यन्त घायलकिया और हँसतेहुये ने अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्रसे जलसिन्धु के बड़े धनुपको मुष्टिके स्थानपर काटा ४२ और तीन वाणों से घायलकिया फिर जलसिन्धु ने उसधनुष को वाणसमेत त्याग करके ४३ शीघ्रही सात्यकीके ऊपर तोमरको छोड़ा वहभयकारी तोमर उसवड़े युद्धमें सात्यकीकी वाम भुजाको छेदकर ४४ वड़ेसर्प्पके समानश्वास लेता पृथ्वीपर गिरपड़ा फिर वामभुजाके छेदनेपर सत्यपराक्रमी सात्यकी ने ४५ तीस तीक्ष्ण विशिखों से जलसिन्धुको घायलकिया इसके पीछे वड़े पराक्रमी जलसिन्धु ने खड्गको लेकर ४६ और सौ चन्द्रमाओं से युक्त वड़ी उत्तम ढालको लेकर खड्गको घुमाकर सात्यकीपर छोड़ा ४७ वह खड्ग सात्यकी के धनुपको काटकर पृथ्वीपर गिरपड़ा और पृथ्वीपर गिरकर वनेठी के समान शोभायमान हुआ ४८ फिर सात्यकी ने सव शरीरके चीरनेवाले शालकी शाखा के रूप इन्द्र वज्रके समान शव्दायमान दूसरेधनुषको लेकर ४९ क्रोधसे टङ्कारकर वाणकेद्वारा जलसिन्धुको घायलकिया इसके पीछे मधुदेशियों में श्रेष्ठ हँसतेहुये सात्यकी ने जलसिन्धुकी भूषणों से अलंकृत दोनों भुजाओंको क्षुरप्रनाम दोवाणों से काटा फिर वह परिघके समान उसकी दोनों भुजा उस उत्तम हाथी के ऊपरसे पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ी ५०।५१ जैसे कि पर्व्वतसे गिरेहुये पांचशिरवाले दोसर्प्प इसके पीछे सात्यकीने सुन्दरदाढ़ और कुण्डलोंसे शोभित ५२ उसके वड़े उत्तम शिरको तीसरे क्षुरप्रनाम,वाणसे काटा जलसिन्धुके उस भयकारी दर्शनवाले धड़ने जिसके शिर और भुजा काटडाले थे हाथीको रुधिरसे सींचा ५३ हे राजा युद्धभूमिमें जलसिन्धु को मारकर शीघ्रता करनेवाले सात्यकी ने विमानको हाथी के कन्धे से गिराया ५४ जलसिन्धुका हाथी रुधिरमें भराहुआ लटकते और चिपटेहुये उत्तम आसनको लेचला ५५ यादवके वाणों से पीड़ामान वह वड़ाहाथी अपनी सेना को पीड़ित और मर्द्दन करताहुआ वड़े भयकारी शव्दों को करताहुआ भागा ५६ हे श्रेष्ठ फिर वृष्णियों में श्रेष्ठ सात्यकीके हाथसे मरेहुये जलसिन्धुको देखकर आपकी सेनामें वड़ा हाहाकार हुआ ५७ आपके शूरवीर भागने में प्रवृत्तचित्त शत्रुओं के विजय करने में असाहसी और मुख मोड़ मोड़कर चारोंओरसे भागे ५८ इसी अन्तर में शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य शीघ्रगामी घोड़ों को

सवारी से महारथी सात्यकी के सम्मुख गये ५६ बड़े बड़े कौरवलोग उस प्रकार के पराक्रम करनेवाले सात्यकी को देखकर द्रोणाचार्य्य के साथ क्रोधरूप सात्यकीके सम्मुख गये ६० इसके पीछे यादव सात्यकी द्रोणाचार्य्य और कौरवों का युद्ध महाभयकारी देवासुरों के युद्धके समान जारीहुआ ६१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिपंचदशोऽध्यायः ११५ ॥

एकसौसोलहका अध्याय ॥

संजय बोले कि बाण समूहों के फैलानेवाले सावधान प्रहारकर्त्ता और शीघ्रता करनेवाले उन सबने सात्यकी से युद्ध किया १ द्रोणाचार्य्यने सत्तर तीक्ष्ण धारवाले बाणों से उसको घायल किया दुर्म्मर्षणने बारह बाण से दुस्सहने दश बाणों से २ बिकर्णने भी तीक्ष्ण धारवाले तीस बाणों से बामभागमें और दोनों छातियोंके मध्यमें घायल किया ३ दुर्मुखने दश बाणों से दुश्शासनने आठ बाणसे और चित्रसेनने दो बाणों से सात्यकी को घायल ४ हे राजा दुर्योधनने युद्धमें बाणों की बड़ी बर्षा से माधव सात्यकी को पीड़ामान किया और अन्य २ बहुतसे शूर महारथियोंने भी घायल किया ५ फिर आपके महारथी पुत्रोंसे रुके हुये यादव सात्यकी ने उन सबको पृथक् २ बाणों से घायल किया ६ भारद्वाज द्रोणाचार्य्य को तीन बाणसे दुस्सह को नव बाणों से बिकर्ण को पचीस बाणों से चित्रसेनको सात बाणसे ७ दुर्म्मर्षण को बारह बाणसे बिविंशतिको आठ बाणों से सत्यव्रत को नव बाणों से और विजय को दश बाणों से घायल किया ८ इस के पीछे धनुषको टङ्कारताहुआ महारथी सात्यकी शीघ्रतासे आपके महारथी पुत्र सुवर्णके बाजूबन्द रखनेवाले दुर्य्योधनके सम्मुख गया ९ सब पृथ्वीके राजा और सब लोकके महारथी को बाणों से कठिन घायल किया इसके पीछे उन दोनोंका युद्ध हुआ १० तीक्ष्ण बाणों को छोड़ते शायकों को धनुषपर चढ़ाते उन दोनों महारथियोंने युद्धमें परस्पर दृष्टिसे गुप्त किया ११ कौरवराज दुर्य्योधनसे घायल सात्यकी अत्यन्त शोभित हुआ और ऐसे बहुत रुधिर को डाला जैसे कि लाल चन्दन अपने रसको डालताहै १२ और यादवके बाण समूहोंसे घायल आपका पुत्रभी ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि स्वर्णमयी भूषणोंका रखनेवाला ऊंचा यज्ञस्तम्भ होताहै १३ हे राजा युद्धमें हँसतेहुये माधव सात्यकी ने युद्धमें धनुष-

धारी दुर्य्योधनके धनुष को क्षुरप्रसे काटा १४ फिर इस टूटे धनुषवाले को अनेक वाणों से ढकदिया उस शीघ्रता करनेवाले शत्रुके वाणों से घायल १५ राजा ने युद्धमें शत्रुके विजय चिह्न को नहीं सहा १६ इसके पीछे सुवर्णपृष्ठ कठिनता से खैंचनेके योग्य दूसरे धनुष को लेकर शीघ्रही सौशायकों से सात्यकी को घायल किया १७ आपके पराक्रमी धनुषधारी पुत्रसे अत्यन्त घायल क्रोधके वशीभूत हुये उस सात्यकी ने आपके पुत्र को पीड़ामान किया १८ आपके महारथी पुत्रों ने राजा को पीड़ित देखकर वड़े वलसे वाणोंकी वर्षा के द्वारा सात्यकी को ढकदिया १९ आपके वहुतसे महारथी पुत्रोंसे ढकेहुये सात्यकीने प्रत्येक को पांच २ वाणों से घायल करके फिर सात वाणों से घायल किया २० और शीघ्रही आठ वाणों से दुर्य्योधन को घायल किया और हँसतेहुये सात्यकीने उसके उस शत्रुओंके डरानेवाले धनुप कोभी काटा २१ और मणिजटित नागवाली ध्वजा को वाणोंसे गिराया और वड़े यशवानने तेज धारवाले चार वाणोंसे चारों घोड़ों को मारकर क्षुरप्रनाम वाणसे सारथी को गिराया २२ इसी अन्तरमें प्रसन्नचित्त सात्यकी ने मर्मोंके छेदनेवाले वहुत वाणों से महारथी राजा दुर्य्योधन को आच्छादित करदिया २३ हे राजा युद्धमें सात्यकीके उत्तम वाणोंसे घायल वह आपका पुत्र दुर्य्योधन अकस्मात् भागकर २४ धनुपधारी चित्रसेनके रथपर सवार हुआ जैसे कि आकाशमें राहुसे ग्रसेहुये चन्द्रमा को देखते हैं उसी प्रकार युद्धमें सात्यकी से पराजय कियेहुये राजा को देखकर संसारभर हाहाकाररूप होगया फिर महारथी कृतवर्मा उस शब्द को सुनकर अकस्मात् वहांपर सम्मुख आया जहांपर कि वह समर्थ सात्यकी था २५ । २६ उत्तम धनुपको टङ्कारता और घोड़ों को चलायमान करता सारथी को घुड़कता कि शीघ्र आगेचलो २७ हे महाराज सात्यकी उस खुलेहुये मुख कालके समान आतेहुये को देखकर सारथीको यह वचन वोला २८ कि यह वाण रखनेवाला कृतवर्मा रथकी सवारीसे शीघ्र आताहै सो तू अपने रथके द्वारा इस सर्वोत्तम धनुपधारीके सम्मुखचल २९ इसके पीछे अत्यन्त तीव्रगामी घोड़ेवाले विधिपूर्व्वक अलंकृत रथकी सवारीसे सात्यकी ने धनुपधारियोंके मूर्त्तिरूप भोजवंशी कृतवर्माको युद्धमें सम्मुखपाकर ३० अत्यन्त क्रोधसे अग्निरूप व्याघ्रकेसमान वेगवान दोनोंनरोत्तम परस्पर सम्मुखहुये ३१ कृतवर्मा ने सात्यकी को छब्बीस तीक्ष्णधारवाले शायकोंसे घायलकिया ३२ सारथी को

पांचवाणसे और चार उत्तम वाणों से उन चारों घोड़ों को ३३ घायलकिया जो कि बहुत उत्तम जातिके सिन्धुदेशी थे फिर उसी सुनहरी ध्वजावाले सुवर्णपृष्ठी बड़े धनुष को टंकार करनेवाले ३४ सुवर्णके बाजूबन्द और कवचधारी ने सुवर्ण के पुंखवाले बाणोंसे उसे ढकदिया इसके पीछे शीघ्रतासे युक्त अर्जुनके देखनेके अभिलाषी सात्यकी ने अस्सी शायकोंको कृतबर्माके ऊपर फेंका ३५ उस पराक्रमी के हाथ से अत्यन्त घायल शत्रुओं का तपानेवाला अजेय कृतबर्मा ऐसे अत्यन्त कम्पायमान हुआ जैसे कि भूकम्प होने में पर्व्वत कम्पायमान होता है ३६ सत्य पराक्रमी सात्यकी ने शीघ्रतासे ही तीक्ष्णधारवाले तिरसठबाणों से उसके चारों घोड़ों को और सात बाणों से सारथी को घायल किया ३७ इसके पीछे सात्यकी ने सुनहरी पुंखवाले बिशिखनाम बाणको धनुषपर चढ़ाकर उस बड़े अग्निरूप क्रोधयुक्त सर्प्प के समान बाणको छोड़ा ३८ यमदण्ड के समान रूपवाले उस बाणने कृतबर्मा को छेदा ३९ वह भयकारी बाण सुवर्ण से जटित उसके प्रकाशित कवच को काटकर रुधिर से लिप्तहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ४० युद्धभूमि में यादव सात्यकी के बाणों से रुधिर से पूर्ण पीड़ामान होकर वह कृतबर्मा बाणसमेत धनुष को छोड़कर अपने उत्तम रथ से गिरपड़ा ४१ अर्थात् सिंहकी समान दंष्ट्रावाला अतुल पराक्रमी वह नरोत्तम कृतबर्मा सात्यकी के बाणोंसे पीड़ामान रथके बैठनेके स्थानपर जंघाओंसे गिरपड़ा ४२ सहस्राबाहु और समुद्र के समान व्याकुलता से रहित कृतबर्मा को रोककर फिर सात्यकी चलागया ४३ वह शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी सब सेना के लोगोंके देखते हुये खड्ग धनुष और शक्तियों से व्याप्त हाथी घोड़े और रथों से व्याकुल और सैकड़ों उत्तम क्षत्रियों के कारण भयकारी रुधिरसे लिप्त सेनाको छोड़कर बीच में से ऐसे चला जैसे कि वृत्रासुरका मारनेवाला इन्द्र असुरोंकी सेनामें से गयाथा ४४। ४५ फिर वह पराक्रमी कृतबर्मा सचेतहोकर दूसरे बड़े धनुषको लेकर वहां युद्ध में पांडवोंको रोकताहुआ नियतहुआ ४६॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिषोड़शोऽध्यायः ११६॥

एकसौसत्रहका अध्याय॥

संजय बोले कि जहां तहां सात्यकीके हाथसे पृथक् २ सेनाके होनेपर भारद्वाज

द्रोणाचार्य्य ने बाणों के बड़े समूहों से सात्यकी को ढकदिया १ द्रोणाचार्य्य और सात्यकीका वह कठिन युद्ध सबसेनाके लोगोंके देखते ऐसाहुआ जैसे कि राजा बलि और इन्द्रका हुआथा २ इसके पीछे द्रोणाचार्य ने अपने अपूर्व्व लोहेके ब-नेहुये सर्प्प के समानरूप तीन बाणों से सात्यकी के ललाटपर छेदा ३ हे महा-राज वह सात्यकी ललाटपर लगेहुये सीधे चलनेवाले उन बाणों से ऐसा शो-भमानहुआ जैसे कि तीन शिखर रखनेवाला पर्व्वत ४ इसके पीछे अवकाश के चाहनेवाले भारद्वाज द्रोणाचार्य्य ने इन्द्रवज्रके समान शब्दायमान दूसरे बाणों को उसके ऊपर चलाया ५ उत्तम अस्त्रके जाननेवाले सात्यकी ने द्रोणाचार्य्यके धनुपसे छुटे और गिरतेहुये उन बाणोंको सुन्दर पुङ्खवाले दो दो बाणों से काटा ६ हे राजा द्रोणाचार्य्य ने उसकी इस हस्तलाघवताको देखकर बहुतहँसकर तीस बाणों से सात्यकी को घायलकिया ७ इसके पीछे सात्यकीकी हस्तलाघवताको अपनी हस्तलाघवता से नाश करते द्रोणाचार्य्य ने फिर पचास बाणों से उसको घायल किया ८ जैसे कि बामी से क्रोधयुक्त बड़े बड़े सर्प्प उछलते हैं हे राजा उ-सीप्रकार द्रोणाचार्य्यके रथसे शरीरके छेदनेवाले बाण गिरतेथे ९ उसीप्रकार सा-त्यकी के छोड़ेहुये रुधिर पीनेवाले बाणोंने द्रोणाचार्य्यके रथको ढक दिया १० हे श्रेष्ठ ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य और यादव सात्यकी की हस्तलाघवतामें मुख्यता को हमने नहींपाया वह दोनोंनरोत्तम समानथे ११ इसके पीछे अत्यन्तक्रोधयुक्त सात्यकी ने नवबाणोंसे घायलकिया और तीक्ष्णधार बाणसे भुजाको १२ और भारद्वाजजी के देखतेहुये सौ बाणोंसे सारथीको घायलकिया महारथी द्रोणाचा-र्य्य ने सात्यकीकी हस्तलाघवताको देखकर १३ सत्तरबाण से सारथी को घायल करके तीन २ बाणों से घोड़ों को घायलकिया १४ फिर सुनहरी पुंख और पक्ष रखनेवाले दूसरे भल्लसे महात्मा सात्यकीकी ध्वजाको भी काटा १५ उसके पीछे क्रोधयुक्त महारथी सात्यकी ने धनुपको त्यागकर बड़ी गदाको लिया और भा-रद्वाजके ऊपर फेंका १६ द्रोणाचार्य्य ने उस रेशमी कपड़े से मढ़ीहुई लोहमयी अकस्मात् आतीहुई गदाको बहुत प्रकारके अनेक बाणोंसे रोका १७ फिर सत्य पराक्रमी सात्यकी ने दूसरे धनुपको लेकर तीक्ष्णधारवाले बहुत बाणोंसे द्रोणा-चार्य्य को घायलकिया १८ उसने युद्ध में द्रोणाचार्य्य को छेदकर सिंहनाद को छोड़ा निश्चयकरके सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने उसको नही सहा १९

इसके पीछे सुनहरी दण्डवाली लोहेकी शक्तीको लेकर वेगसे सात्यकी के रथपर फेंका २० वह कालके समान भयकारी शब्दयुक्त महाभयानकरूप शक्ति सात्यकीको न पाकर रथको आघातित करके पृथ्वीपर गिरपड़ी २१ हे भरतर्षभ राजा धृतराष्ट्र इसके पीछे बाणसे दाहिनी भुजाको पीड़ामान करतेहुये सात्यकीने द्रोणाचार्य्यको घायलकिया २२ द्रोणाचार्य्य ने भी युद्ध में अर्द्धचन्द्र नाम बाणसे सात्यकी के बड़े धनुषको काटा और रथ शक्ति नाम शक्तिसे सारथी को घायल किया २३ और उसका सारथी रथ शक्तिसे घायलहोकर अचेत होगया वह एक मुहूर्त्ततक रथकी बैठकको पाकर बैठगया २४ हे राजा सात्यकी ने बुद्धिसे बाहर सारथ्य कर्मकोकिया जो द्रोणाचार्य्यसे युद्ध करनेवाला होकर आपही घोड़ोंकी बागडोरों को पकड़ा २५ इसके पीछे प्रसन्नरूप महारथी सात्यकी ने युद्ध में सौ बाणों से ब्राह्मण को घायलकिया २६ हे भरतबंशी फिर द्रोणाचार्य्य ने पांचबाण उसपर चलाये युद्ध में उन पांचों भयकारी बाणों ने कवच को छेदकर रुधिरका पानकिया २७ फिर भयकारी बाणोंसे घायल सात्यकी अत्यन्त क्रोधयुक्त हुआ और अपने शायकनाम बाणोंको सुवर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य्यपर छोड़ा २८ उसके पीछे एकबाणसे द्रोणाचार्य्यके सारथी को पृथ्वीपर गिराकर मृतक सारथी वाले घोड़ों को बाणों से इधर उधर भगाया २९ हे राजा उस प्रकाशमान और चलायमान रथने युद्ध में ऐसे हजारों मंडलकिये जैसे कि सूर्य्य करतेहैं ३० सब राजकुमार राजाओं समेत पुकारे कि चलो दौड़ो द्रोणाचार्य्यके घोड़ोंको पकड़ो ३१ हे राजा वह महारथी युद्धमें शीघ्रही सात्यकीको छोड़कर जिधर द्रोणाचार्य्यथे उधरहीको चलेगये ३२ युद्धमें सात्यकी के बाणोंसे पीड़ामान और दौड़ते हुये उन लोगोंको देखकर आपकी सेना फिर ब्याकुलहोकर छिन्नभिन्न होगई३३ फिर बायुके समान शीघ्रगामी सात्यकी के बाणोंसे पीड़ामान घोड़ोंसे पहुंचाये हुये द्रोणाचार्य्य ब्यूहके मुखको पाकर नियतहुये ३४ पराक्रमीने पांडव पांचाल और सात्यकीसे पृथक् कियेहुये ब्यूहको देखकर उपाय किया और ब्यूहकीही रक्षाकरी ३५ अग्निके समान भस्मकरनेवाले पाण्डव और पांचालोंको रोककर काल सूर्य्यके समान उदयहुये द्रोणाचार्य्यरूपी प्रकाशित अग्नि नियतहुई३६॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तदशोपरिशततमोऽध्यायः ११७॥

एकसौअठारहका अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि वह पुरुषों में और शिनियों में बड़ावीर और श्रेष्ठ कौरवों सेभी अतिश्रेष्ठ सात्यकी द्रोणाचार्य्य और कृतवर्म्मा आदिक आपके बड़े बड़े शूरवीरों को बिजय करके हँसताहुआ सारथीसे यह वचन बोला १ कि हे सारथी हम यहां केवल एक निमित्तमात्रही हैं क्योंकि केशवजी और इन्द्रकेपुत्र अर्जुन के हाथसे मरेहुये अथवा मारेहुयेही शत्रुओं को हमने माराहै वा मारेंगे २ तबवह उत्तम धनुषधारी शत्रुओं का मारनेवाला पराक्रमी शिनिवंशियों में श्रेष्ठ सात्यकी युद्धमें उसको इसप्रकारसे कहता सबओरको बाणोंकीवर्षा करताहुआ अकस्मात् ऐसा दौड़ा जैसे मांसको देखकर बाज पक्षी दौड़ता है ३ हे भरतवंशी जितने कि आपकी सेनाके समूहथे वे सबलोग चारोंओर से उस चन्द्रमा और शङ्खके समान श्वेत घोड़ों की सवारीवाले इन्द्रके समान प्रभाव और पराक्रमवाले असह्य पराक्रमी सूर्य्य के समान तेजस्वी रथियों में श्रेष्ठ सेनाको मझाकर जानेवाले नरोत्तम सात्यकीके रोकनेको ऐसे समर्थ नहींहुये जैसे कि आकाशमें बादल सूर्य्यको नहीं रोकसक्ने ४।५ क्रोधयुक्त और अत्यन्त अपूर्व्व युद्ध करनेवाले धनुषधारी उस स्वर्णमयी कवचधारी राजाओं में श्रेष्ठ सुदर्शनने हटकरके आते हुये सात्यकीको रोका ६ हे भरतवंशी उन दोनोंका युद्ध बड़ा भयकारीहुआ उस युद्धको आपके शूरवीर और सोमकों ने ऐसी प्रशंसाकरी जैसे कि देवताओं के समूहों ने वृत्रासुर और इन्द्रके युद्धकी करीथी ७ सुदर्शनने युद्धभूमि में अत्यन्त तीक्ष्ण सैकड़ों बाणों से उस यादवों में श्रेष्ठ सात्यकी को घायल किया हे राजा सात्यकीने भी उन बाणोंको बीचही में काटा ८ इसीप्रकार इन्द्रके समान सात्यकीनेभी राजा सुदर्शनपर जिन शायकों को फेंका उन शायकों को उत्तम रथपर सवार सुदर्शनने अपने उत्तम बाणों से खण्ड खण्ड करदिया ९ इसके अनन्तर बड़े तेजस्वी सुदर्शनने सात्यकी के बाणोंकी तीव्रता से उन अपने पूर्व्व बाणों को कटाहुआ देखकर क्रोधसे भस्म करनेवाले के समान उसने सुवर्ण से जटित बाणोंको छोड़ा १० फिर उसने तीक्ष्णधार सुन्दर पुङ्ख अग्निके समान कानतक खैंचेहुये तीन बाणों से छेदा वह बाण कवचको काटकर सात्यकी के शरीरमें प्रवेश करगये ११ फिर उस राजकुमार ने धनुष चढ़ाकर दूसरे अग्निरूप चारबाणों

से हटकरके उसके चांदीके वर्ण चारोंघोड़ोंको घायल किया १२ इसीप्रकार उसके हाथसे घायल वेगवान इन्द्रके समान पराक्रमी सात्यकी अत्यन्त तीक्ष्ण बाणोंके समूहोंसे शीघ्रही सुदर्शनके चारों घोड़ोंको मारकर बड़े शब्द से गर्जा १३ फिर शिनियोंमें बड़े वीर सात्यकीने इन्द्रवज्रके रूप कालाग्निके समान क्षुरप्रनाम बाण से उसके सारथी के शिरको काटकर सुदर्शनके भी उस शिरको १४ जो कि कुण्डलधारी और पूर्ण चन्द्रमाके समान प्रकाशमान था शरीरसे ऐसा जुदाकिया जैसे कि पूर्व्व समय में वज्रधारी इन्द्रने हटकरके बड़े पराक्रमी राजा बलिके शिर को काटाथा १५ हे राजा वह यादव में श्रेष्ठ बेगवान बड़ी प्रसन्नतासे युक्त महात्मा इन्द्रके समान सात्यकी उस राजकुमारको मारकर युद्धमें शोभायमान हुआ १६ हे राजा इसके पीछे लोकको आश्चर्य्य युक्त करनेका अभिलाषी नरोंमें बीर अर्ज्जुन बाणों के समूहों से आपकी सेनाको हटाकर उत्तम घोड़ोंसे युक्त रथकी सवारी के द्वारा जिस मार्ग्ग होकर गयाथा उसी मार्ग्ग में होकर यहभी गया१७ इकट्ठे उत्तम शूरवीरों ने उसके उस आश्चर्य्य युक्त कियेहुये कर्म की बड़ी प्रशंसाकी कि इसने बाणोंके लक्षों पर बर्त्तमान कियेहुये शत्रुओंको ऐसे भस्म करदिया जैसे कि अग्नि करताहै १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशनोपरिअष्टादशोऽध्यायः ११८ ॥

एकसौउन्नीसका अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके अनन्तर वह बुद्धिमान और बड़ा साहसी वृष्णियोंमें श्रेष्ठ सात्यकी युद्धभूमि में सुदर्शन को मारकर सारथी से फिर बोला १ कि रथ हाथी और घोड़ेरूप कीच रखनेवाले बाण शक्तिरूप तरङ्ग मालाधारी खड्गरूप मछली और गदारूप ग्राह रखनेवाले शूरोंके धनुष आदि से बड़े शब्दवाले २ प्राणों के घातक भयकारी बाजे और सिंहनादों से शब्दायमान शूरवीरों से कठिनता पूर्व्वक स्पर्श होनेवाले और विजयाभिलाषियों को दुखसे विजय होने वाले ३ दुखसे तरनेके योग्य इस द्रोणाचार्य्य के महासमुद्र से हम पारहोगये वह समुद्र युद्धभूमिमें जलसिन्धुकी सेनारूप मनुष्य खादकों से घिरा हुआथा ४ इस के सिवाय दूसरी शेष बचीहुई सेना को थोड़े जलवाली उतरने के योग्य छोटी नदी मानताहूं अब तुम घोड़ों को निर्भयतासे चलायमानकरो ५ अब मैं युद्धमें

दुःखसे सम्मुखताके योग्य द्रोणाचार्य को उनके साथियों समेत विजय करके अ-र्जुनकी प्राप्ती को मानताहूं ६ और शूरवीरों में श्रेष्ठ कृतवर्मा को विजय करकेभी अर्ज्जुन को मिला हुआ मानताहूं नानाप्रकार की सेनाओं को देखकर मुझको ऐसे भय नहीं उत्पन्न होता है ७ जैसे कि सूखी घास और लतावाले सूखे वनमें ज्वलित अग्निका पाण्डवोंमें श्रेष्ठ मुकुटधारी अर्जुनसे चलीहुई ८ और पड़ेहुये घोड़े हाथी रथ और पत्तियों के समूहों से विषमकीहुई पृथ्वी को ऐसी देखो जैसे कि उस महात्मासे पराजितहुई वह सेना भागती है ९ हे सूत चारोंओर को दौ-ड़तेहुये रथ हाथी और घोड़ोंसे यह धूल उठतीहै जो कि सोमनी रङ्गवाले रेशमी कपड़ेके समानहै १० मैं श्वेत घोड़े और श्रीकृष्ण को सारथी रखनेवाले अर्जुन को समीपही नियत मानताहूं बड़ेतेजस्वी गाण्डीव धनुषके यह शब्द सुनाई देते हैं ११ निश्चय करके जैसे शकुन मेरे आगे प्रकट होतेहैं उनसे प्रत्यक्षहै कि सू-र्य्यास्तके पूर्व्वही अर्ज्जुन जयद्रथ को मारेगा १२ धीरेपने से घोड़ों को विश्वास देताहुआ वहांपर चल जहां कि शत्रुओं की सेनाहै और जहांपर हस्तत्राण र-खनेवाले दुर्य्योधनको आगे रखनेवाले यह १३ कवचधारी निर्दयकर्म्मी युद्ध में दुर्म्मद काम्बोजदेशी बाण धनुधारी प्रहार करनेवाले यव १४ शक, किरात, दरद बर्व्बर, ताम्रलिप्तक और नाना प्रकार के शस्त्र हाथ में रखनेवाले अन्य अनेक म्लेच्छहैं १५ जहांपर हस्तत्राणयुक्त दुर्य्योधन को आगे रखनेवाले युद्धाभिलाषी यह सब लोग सम्मुख नियतहैं १६ इन शत्रुओं को रथ हाथी और घोड़ों समेत युद्धभूमि में मारकर इस बड़े भयकारी दुर्गम्य सेनारूपी समुद्र को तराहुआ जा-नो १७ सूत बोला हे सत्यपराक्रमी माधव सात्यकी भयसे उत्पन्न होनेवाली व्या-कुलता मुझको नहीं उत्पन्न होसक्ती चाहै क्रोधयुक्त परशुरामजीभी आपके आगे नियत होजांय १८ अथवा रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य और शल्य भी सम्मुख होंय हे महाबाहु उस दशामें भी आपकी रक्षामें होकर मुझको भय नहीं होसक्ता १९ हे शत्रुओं के मारनेवाले तुमने युद्धमें कवचधारी निर्दयकर्म्मी युद्ध में दुर्म्मद बहुतसे काम्बोजदेशी विजय किये २० धनुषबाण रखनेवाले प्रहारकर्त्ता यवन, शक, किरात, दरद, बर्व्बर, ताम्रलिप्तक २१ और नानाप्रकार के शस्त्रहाथ में रखनेवाले अन्य बहुतसे म्लेच्छभी विजय किये तबतो किसीदशामें भी मुझ को भय नहीं हुआ २२ हे पण्डित अब गोखुरके समान युद्धको पाकर मैं क्या

भय करूंगा हे दीर्घायुवाले किसी मार्ग्ग से तुमको अर्ज्जुनके पास पहुंचाऊंगा २३ हे यादव तुम किन लोगोंपर क्रोधितहो और किनका काल सम्मुख वर्त्तमान है और किन्होंका मन यमपुरके जानेकी अभिलाष करताहै २४ और युद्धमें पराक्रम करनेवाले अथवा नाश करनेवाले कालके समान तुमसे पराक्रमीको देखकर किन्होंकी सेना भागेगी हे महाबाहो अब यमराज किनको याद करताहै २५ सात्यकी बोला कि मैं अपनी प्रतिज्ञाको पूरा करूंगा और काम्बोज देशियों समेत इन मुण्डों कोभी ऐसे मारूंगा जैसे दानव लोगोंको इन्द्र मारताहै तू मुझको ले चल २६ अब मैं इन्होंका नाश करके प्यारे पाण्डव अर्ज्जुनसे मिलूंगा अब दुर्योधन समेत कौरवलोग मेरे पराक्रमको देखेंगे २७ हे सूत अब बारम्बार मुण्डों की सेना और सब सेनाके मनुष्यों के मरनेपर युद्ध में छिन्नभिन्न होनेवाली कौरवी सेनाके २८ शब्दको सुनकर दुर्योधन अनेक प्रकारसे दुखी होगा अब मैं श्वेत घोड़े रखनेवाले अपने आचार्य्य महात्मा अर्ज्जुनके कियेहुये मार्ग्गको देखूंगा २९ अब राजा दुर्योधन मेरे बाणों से हज़ारों उत्तम शूरबीरों को मराहुआ देखकर पछतावेगा ३० अब कौरव मुझ हस्तलाघव वा उत्तम बाणों के फेंकनेवालेके धनुष को बनेठी के रूपको देखेंगे ३१ मेरे बाणों से संयुक्त अंग वा बारम्बार रुधिर छोड़नेवाले सेनाके लोगों के नाश को सुनकर दुर्योधन दुःखी होगा ३२ अब दुर्योधन मुझ क्रोधरूप और उत्तम उत्तम बीरों को मारने वाले के कर्म्म को देखकर इस लोकको दो अर्ज्जुन रखनेवाला मानेगा ३३ अब राजा दुर्योधन बड़े युद्धमें मेरे हाथसे मारेहुये हजारों राजाओंको देखकर दुःखी होगा ३४ अब हजारों राजाओं को मारकर राजाओं के मध्य में महात्मा पाण्डवों में अपनी प्रीति और भक्तिको दिखलाऊंगा कौरव लोग मेरे बल पराक्रम और कृतज्ञताको जानेंगे ३५ संजय बोले कि सात्यकी के इसप्रकारके वचनोंको सुनकर उस सारथी ने चन्द्रबर्ण अति शीक्षित श्रेष्ठोंके सवार करानेवाले घोड़ोंको अत्यन्त चलायमानकिया ३६ मन और वायुके समान शीघ्रगामी आकाशको पान करतेहुये उत्तम घोड़ों ने सात्यकी को यवनों के सम्मुख पहुंचाया ३७ उन बड़े हस्तलाघवी यवनों ने सेनाओं से मुख न फेरनेवाले सात्यकी को सम्मुख पाकर बाणोंकी वर्षासे ढकदिया ३८ हे राजा तब उस वेगवान सात्यकीने अपने बाणों से उन सबके बाण और अस्त्रों को काटा और उनके बाणों ने उसको नहीं पा-

या ३६ उस भयकारीरूप सात्यकी ने सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्णधार सीधे चलने वाले बाणोंसे यवनोंके शिर और भुजाओंको भी काटा ४० वह बाण चारोंओर से लालरंग लोहे कांसीके कवचोंको और उनके शरीरोंको छेदकर पृथ्वीपर गिर-पड़े ४१ युद्धमें बीर सात्यकी के हाथसे मारेहुये वह हजारों निर्जीव म्लेच्छ वहां पृथ्वीपर गिरपड़े ४२ कानतक प्रत्यंचा को खैंचकर छोड़ेहुये अटूटधार बाणों से पांच छः सात आठ यवनों को छेदा ४३ हे राजा वहां आपकी सेना को मारते सात्यकी ने कांबोज देशियों समेत शक शबर किरात और हजारों बर्बरोंसे ४४ पृथ्वी को गुप्तमांस रुधिर सूरत कीचरखनेवाली किया ४५ शिरत्राण रखनेवाले टूटेबाल डाढ़ी मूंछ रखनेवाले सैन्यनाम म्लेच्छोंके शिरोंसे पृथ्वी ऐसी आच्छादि-तहोगई जैसे कि बिना पक्षवाले पक्षियोंसे व्याप्तहोती है ४६ तब उन रुधिरसे लिप्त सर्वांग और धड़ोंसे युक्त सब युद्धभूमिमें ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि लालबा-दलोंसे व्याप्त आकाश होताहै ४७ इन्द्रवज्रके समान स्पर्शवाले सुन्दरपर्व्व सीधे चलनेवाले यादवके बाणोंसे होकर उन लोगोंने पृथ्वीको आश्रयस्थानकिया ४८ प्राणोंकी आपत्ति में फंसेहुये अचेतरूप थोड़े शेष बचेहुये लोग छिन्नभिन्न हो-कर पृथक् होगये हे महाराज उन कवचधारियों को युद्ध में सात्यकी ने विजय किया ४६ ऐंड़ी और चाबुकोंसे घोड़ोंको मारते और भयके कारण बड़ी तीव्रता में नियतहोकर सब ओरसे भागे ५० हे भरतवंशी युद्धमें कठिनतासे विजय होने वाले कांबोज देशियोंकी सेनाको भगाकर और यवनोंकी उस अनीकको छिन्न भिन्नकरके ५१ सेनाको प्रवेशकर वह पुरुषोत्तम सत्य पराक्रमी सात्यकी आपके पुत्रों को विजयकरके अपने सारथी से कहने लगा कि चलो ५२ गन्धर्बों समेत चारणोंने युद्ध में उसके कियेहुये उस कर्मको जो कि पूर्व्वसमय में किसी ने नहीं कियाथा देखकर बड़ी प्रशंसाकरी ५३ हे राजा प्रसन्न चित्त धारण और आप के शूरवीरों ने उस आतेहुये सात्यकी को जो कि अर्ज्जुन का पृष्ठरक्षक था देखकर प्रशंसाकरी ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकोनविंशतितमोऽध्याय. ११९ ॥

एकसौबीसका अध्याय ॥

संजय बोलेकि इसके अनन्तर रथियों में श्रेष्ठ सात्यकी यवन और काम्बोजों

को विजयकरके आपकी सेना में होकर अर्जुनकी ओरको चला १ सुन्दर दंष्ट्रा अपूर्व्व कवच ध्वजा रखनेवाले नरोत्तमने आपकी सेनाको ऐसा भयभीत किया जैसे कि व्याघ्र मृगोंको सूंघकर भयभीत करताहै २ रथकी सवारीसे मार्गोंको घूमते उस सात्यकी ने सुवर्ण पृष्ठ बड़े वेगवान् सुनहरी चन्द्रमाओं से संयुक्त धनुष को अच्छे प्रकारसे घुमाया ३ सुवर्ण के बाजूबन्दोंसे अलंकृत स्वर्णमयी कवचधारी सुवर्णकीही ध्वजा वा धनुषका धारण करनेवाला शूर सात्यकी मेरु पर्व्वत के शिखरके समान शोभायमान हुआ ४ युद्धमें धनुष मंडल और पराक्रमरूपी किरणोंका रखनेवाला वह नररूपी सूर्य्य ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि शरद ऋतुका उदयहुआ सूर्य्य होताहै ५ उत्तम भुजा पराक्रमी उत्तम चक्षुवाला नरोत्तम सात्यकी आपके शूरवीरोंके मध्यमें ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि गौओं के मध्यमें बली वर्द्ध शोभितहोताहै ६ व्याघ्रोंके समान मारनेके अभिलाषी आप के शूरवीर उस मदोन्मत्त हाथीके समान मदोन्मत्त हाथी के समान चलनेवाले और समूहके मध्यमें नियत मदझाड़नेवाले हाथी के समान सात्यकीके सम्मुख गये कठिनतासे तरनेके योग्य द्रोणाचार्य्य और कृतवर्माकी सेनाओं के उल्लंघन करनेवाले ७।८ राजा जलसिन्धु और काम्बोज देशियों की सेनारूपी समुद्रसे पार होकर कृतवर्मारूपी नक्रसे रहित सेनारूपी सागरसे पार होनेवाले ९ सात्यकीको अत्यन्त क्रोधरूप आपके इन रथियों ने घेरलिया जिनके कि नाम यहहैं कि दुर्य्योधन, चित्रसेन, दुश्शासन, विविंशति १० शकुनि, दुस्सह, तरुण, दुर्धर्षण, क्रथ और दूसरे अन्य बहुतसे शूर जो कि शस्त्रोंके धारण करनेवाले कठिनतासे आधीन होनेवाले थे वह क्रोधरूप होकर उस जातेहुये सात्यकीके पीछे दौड़े ११ हे श्रेष्ठ फिर आपकी सेनाका ऐसा बड़ा शब्दहुआ जैसे कि पूर्व्वकाल में वायुसे व्याकुल कियेहुये समुद्रका शब्दहोताहै १२ सात्यकी उन सब सम्मुख दौड़नेवालोंको देखकर हंसताहुआ सारथी से बोला कि चल १३ हाथी घोड़े रथ और पत्तियोंसे पूर्ण जो यह दुर्य्योधन की सेना मेरे सम्मुख आई है जिसने कि रथोंके शब्दसे सब दिशाओंको शब्दायमान कियाहै और पृथ्वी आकाश और समुद्रादिकों को भी कंपितकिया १४।१५ हे सारथी मैं बड़े युद्ध में इस सेनारूपी समुद्रको ऐसे रोकूंगा जैसे कि पूर्णमासी के उठेहुये समुद्रको मर्यादा रोकतीहै १६ हे सारथी इस बड़े युद्धमें इन्द्रके समान मेरे बड़े पराक्रमको देखो इन शत्रुओंकी

सेनाओंको अपने तीक्ष्णवाणोंसे शब्दायमान करताहूं १७ युद्धमें अग्निके समान मेरे बाणों से घायल शरीर और मेरेहुये हजारों पदाती घोड़े रथ और हाथियोंको देखोगे १८ इसप्रकार कहतेही कहते उस बड़े तेजस्वी सात्यकी के सम्मुख सेनाके लोग युद्धाभिलाषी होकर शीघ्रही जापहुंचे मारो चलो भिड़ो देखो देखो ऐसे शब्द करतेहुये गये १९ सात्यकीने तीक्ष्णधारवाले वाणोंसे उन इसप्रकारसे बोलतेहुये वीरोंको घायलकिया और तीनसौ घोड़ोंसमेत चारसौ हाथियों को मारा २० उससात्यकी और उनधनुषधारियोंका वह कठिन युद्धहुआ कि जिसमें देवासुरयुद्धके समान मनुष्यादिकोंका नाशहुआ २१ हे श्रेष्ठ उस सात्यकी ने सर्पोंके समान बाणों से आपके पुत्रकी उस बादलोंके जालों के समान रूपवाली सेना को आच्छादित करदिया २२ हे महाराज युद्धमें बाणोंके जालोंसे ढकेहुये आपके बहुत से शूरवीरोंको उस सात्यकी ने मारा हे महाराज वहां मैंने बहुत बड़े आश्चर्य्य को देखा हे प्रभु सात्यकी का कोई बाणभी निष्फल नहीं हुआ २३।२४ रथ हाथी और घोड़ेरूप कीच रखनेवाला पदातीरूप तरंगोंसे व्याप्त सेनारूपी सागर सात्यकीरूप मर्य्यादा को पाकर स्थिरहुआ २५ चारों ओर को उसके बाणोंसे घायल वह सेना जिसके मनुष्य घोड़े हाथीआदिक व्याकुल थे बारंबार सम्मुखगये २६ और जहां तहां ऐसे भ्रमण करने लगे जैसेकि शरदीसे दुखित गौएं मैंने वहां सात्यकीके शायकोंसे बिना घायलहुये पदाती रथ हाथी और सवारों समेत किसी घोड़े को भी नहीं देखा २७।२८ हे राजा वहां अर्जुन ने भी वैसा नाश नहीं किया था जैसा कि सेनाओंका नाश सात्यकी ने किया २९ अभय हस्तलाघवतासे युक्त पुरुषोत्तम सात्यकी अर्जुन को उल्लंघनकर अपने कर्म को दिखलाता हुआ युद्ध करता है ३० इसके पीछे राजा दुर्य्योधनने तीक्ष्णधार वाले तीन बाणोंसे सात्यकीके सारथीको और चारबाणसे चारों घोड़ोंको घायल किया ३१ सात्यकी को तीनबाणों से छेदकर फिर आठ बाणों से घायल किया दुश्शासनने सात्यकीको सोलह बाणों से ३२ शकुनिने पच्चीसबाणसे चित्रसेनने पांचबाणों से और दुस्सहने पन्द्रह बाणों से सात्यकी को छाती पर घायल किया ३३ हे महाराज इसप्रकार बाणों से घायल मन्दमुसकान करते वृष्णियों में श्रेष्ठ सात्यकी ने उन सबको तीन २ बाणों से घायल किया ३४ बड़ा उग्र पराक्रमी सात्यकी अत्यन्त प्रकाशित बाणों से शत्रुओं को कठिन घायल कर-

के युद्ध में बाजके समान घूमने लगा ३५ फिर शकुनी के धनुष को और हस्तत्राणों को काट तीन बाणों से दुर्योधन को छाती के मध्य में घायल किया ३६ सात्यकी ने सौ बाणों से चित्रसेन को दश बाणों से दुस्सह को और बीसबाणों से दुश्शासन को घायल किया ३७ हे राजा आपके साले शकुनि ने दूसरे धनुष को लेकर आठ बाणसे सात्यकी को घायल करके फिर पांच बाणों से घायल किया ३८ हे राजा दुश्शासनने दश बाणों से दुस्सहने तीन बाणों से और दुर्म्मुखने बारह बाणों से सात्यकी को घायल किया ३९ इसके पीछे दुर्योधन ने तिहत्तर बाणों से माधव सात्यकी को घायल करके तीन तीक्ष्ण बाणों से उसके सारथी को घायल किया ४० सात्यकी ने एक साथहोकर उपाय करनेवाले उन शूरवीर महारथियों को पांच २ बाणों से फिर घायल किया ४१ और उस रथियों में श्रेष्ठ सात्यकी ने आपके पुत्रके सारथी को शीघ्रही भल्लसे मारा और वह मरकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ४२ हे प्रभु धृतराष्ट्र उस सारथी के गिरनेपर आपके पुत्र का रथ वायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा युद्धभूमिसे दूर चलागया ४३ हे राजा इसके पीछे आपके पुत्र और सैकड़ों सेनाके मनुष्य राजाके रथ को देखकर भागे ४४ वहां सात्यकीने उस सेना को भगाहुआ देखकर सुनहरी पुंख तीक्ष्ण धारवाले बाणों से ढकदिया ४५ हे राजा इस रीति से सात्यकी आपकी हजारों सेनाओं को भगाकर अर्ज्जुनके रथके समीप गया ४६ आपके शूरवीरोंने उस बाणोंके लेनेवाले सारथी समेत अपने शरीरकी रक्षा करनेवाले सात्यकीकी बहुत प्रशंसा करी ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिविंशतितमोऽध्यायः १२० ॥

एकसौइक्कीसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मेरे उन निर्लज्ज पुत्रोंने उस बड़ी सेना को मर्द्दन कराके अर्ज्जुनके पास जाते हुये सात्यकी को देखकर क्या किया १ उस समय अर्जुनके और सात्यकीके इस प्रकारके कर्मों को देखकर इन काल पानेवाले मेरे पुत्रोंकी स्थिरता युद्धमें कैसे हुई २ सेनाके मध्यमें वह पराजय हुये क्षत्रिय क्या कहेंगे और बड़ा यशस्वी सात्यकी युद्धमें कैसे सबको उल्लंघन करके गया ३ हे संजय युद्धमें सात्यकी किस प्रकारसे मेरे जीवतेहुये पुत्रोंके सम्मुखगया वह सब

मुझसे कहौ ४ हे तात मैं तेरे मुखसेही उस अत्यन्त अपूर्व युद्धको सुनताहूं जो कि एकके साथ बहुतसे महारथी शत्रुओंका हुआ ५ मैं अपने अभागे पुत्रमें इस विपरीतता को मानताहूं जिस युद्धमें यादवके हाथसे महारथी मारेगये ६ हे संजय जो सेना उस क्रोधयुक्त अकेले सात्यकीकेही साथ लड़ने को समर्थ नहींहै तो उसका स्वामी पाण्डव अर्ज्जुन ७ महाकर्मी और अपूर्व्व युद्ध कर्त्ता द्रोणाचार्य्य को विजय करके मेरे पुत्रों को इस प्रकार से मारेगा जैसे कि पशुओं के समूहों को सिंह मारताहै ८ जो पुरुषोत्तम सात्यकी युद्धमें कृतवर्मा आदिक मतवाले शूरोंसे भी न मरसका ९ वहां अर्जुननेभी इस प्रकारका युद्ध नही किया जैसा कि युद्ध बड़े यशस्वी सात्यकी ने किया १० संजय बोले कि हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र दुर्योधनके कारणसे आपके कुमंत्र होनेपर जो युद्ध हुआहै वह मैं तुमसे कहताहूं तुम चित्त लगाकर सुनों ११ कि वह परस्पर शपथ खानेवाले युद्ध में बड़ी निर्दय बुद्धिको करके आपके पुत्रकी आज्ञासे लौटआये १२ हे महाराज जिनमें मुख्य दुर्य्योधनहै वह तीन हजार सवार शक, काम्बोज, बाह्लीक, यवन, पारद १३ कुणिंग, तङ्गण, अम्बष्ठ, बर्बर समेत पैशाच और पहाड़ी यह सब क्रोधयुक्त हाथमें पाषाण लिये १४ सात्यकी के सम्मुख ऐसे दौड़े जैसे कि शलभनाम पक्षी अग्निमें जाते हैं हे राजा पांचसौ शूरवीर सात्यकी के सम्मुखगये १५ इसके पीछे हजार रथ सौ महारथ हजार हाथी दो हजार घोड़े नानाप्रकारके महारथी और असंख्य पातलोग बाणोंकी वर्षाओंको छोड़ते सात्यकीके सम्मुखगये १६ हे भरतवंशी महाराज दुश्शासनने सबको यह प्रेरणाकरी कि इसको मारो इसप्रकारसे सब को कहनेवाले दुश्शासनने सात्यकीको घेरा १७।१८ वहांपर हमने सात्यकीके महा अद्भुत कर्मको देखा जो अव्याकुल चित्त होकर अकेलेनेही सबसे युद्धकिया १९ उस हाथी और रथोंवाली सब सेनाको और सब सवारियों समेत दस्युनाम जाति वालोंको भी मारा २० वहां मथेहुये चक्र और टूटेहुये धनुष और अनेकप्रकारके टूटेहुये ईशा दण्डक बन्धुर और अक्षों से २१ और मथेहुये हाथी और गिराईहुई ध्वजा और कवचधारी सेनाओंसेभी पृथ्वी आच्छादित होगई २२ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ वहां माला भूषण वस्त्र और अनुकर्षों से पृथ्वी ऐसी ढकगई जैसे कि ग्रहों से आकाश आच्छादित होताहै २३ हे श्रेष्ठ जो हाथी कि अञ्जन वंशमें उत्पन्न हुये और जो वामन वंशमें सुप्रतीक वंशमें और महापद्म वंशमें उत्पन्नहुये वह

पर्व्वताकार उत्तम हाथीभी पृथ्वीपर गिरपड़े २४ हे राजा जो हाथी ऐरावत बंशमें और बहुतसे अन्य २ बंशमें उत्पन्नहुये वह बहुतसे हाथीभी मृतकहोकर पृथ्वीपर सोतेहैं २५ वहां सात्यकीने बानायुज पहाड़ी काम्बोज और बाह्लीक देशी उत्तम घोड़ोंको भी मारा २६।२७ और नानाप्रकारके देशोंमें उत्पन्न होनेवाले बहुत प्रकारकी जातिवाले सैकड़ों हज़ारों हाथियोंको मारा २८ उन्हों के छिन्नभिन्न होने पर दुश्शासन दस्युज्ञातिवाले शूरबीरों से बोला कि हे धर्म्म के न जाननेवालो लौटो युद्धकरो भागनेसे क्या लाभ होगा २९ आपके पुत्र दुश्शासनने अत्यन्त छिन्न भिन्न उन लोगों को देखकर पत्थरों से लड़नेवाले पहाड़ी शूरोंको चलायमान किया ३० और कहा कि हे पाषाणयुद्ध में सावधान लोगो सात्यकी इस को नहीं जानताहै इस पाषाणयुद्ध के न जाननेवाले युद्धाभिलाषी सात्यकीको मारो ३१ इसीप्रकार सबकौरवभी पाषाणयुद्धमें कुशल नहीं हैं तुम सम्मुखजाओ भयमत करो सात्यकी तुमको नहीं पासकेगा ३२ पाषाणों से लड़नेवाले वहसब पहाड़ी राजा सात्यकी के सम्मुख ऐसे गये जैसे कि मन्त्री लोग राजाके सम्मुख होते हैं ३३ इसके पीछे वह पहाड़ी राजा हाथी के मस्तकों के समान पाषाणोंको हाथोंमें लिये युद्धमें सात्यकीके आगे खड़ेहुये ३४ और इसी प्रकार आपके पुत्र के कहने से यादवके मारनेके अभिलाषी अन्य शूर लोगोंने भी भल्लों को लेले कर सबओर से दिशाओं को रोंका ३५ सात्यकी ने बाणोंको धनुष पर चढ़ाकर उन पाषाणयुद्ध करने के अभिलाषियों पर तीक्ष्णधार बाणों को फेंका ३६ और उन पहाड़ियों के चलायेहुये कठिन पाषाण समूहोंको सर्प्पाकार नाराचोंसे काटा ३७ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र खद्योतों के समूहों के समान प्रकाशित उन पाषाण खण्डों से हाहाकार करनेवाले सेना के लोगही घायल होगये ३८ हे राजा उसके पीछे बड़े बड़े पाषाण उठानेवाले वह पांचसौ शूरबीर जिनकी भुजा कटगई थीं सबपृथ्वीपर गिरपड़े ३९ फिर अन्य हज़ारों लाखों मनुष्य सात्यकी को न पाकर पत्थर रखनेवाले कटीहुई भुजाओं समेत गिरपड़े ४० पाषाणों से लड़नेवाले वा उपाय करनेवाले हज़ारों नियत शूरबीरों को मारा वहभी आश्चर्य्य सा हुआ ४१ इसके पीछे उन व्यात्तमुख, दरद, तंगण, खश, लम्पाक और कुणिन्दनाम म्लेच्छ जिनके हाथमें शूल और खड्ग थे उन्हों ने सबओरसे पाषाणों को वर्षाया तब बुद्धिमानी के कर्म्म में कुशल सात्यकी ने उन पाषाण वृष्टियोंको नाराचों

से काटा ४२।४३ अन्तरिक्षमें तीक्ष्ण बाणों से टूटेहुये पत्थरों के शब्दोंसे रथ घोड़े हाथी और पतिलोग युद्धसेभागे ४४ पाषाण खण्डों से घायल मनुष्य हाथी और घोड़े खड़ेहोने को ऐसे समर्थ नहीं हुये जैसे कि भौरों से काटेहुये नहीं ठहरसक्ते ४५ तब मरने से बचेहुये रुधिर में लिप्त टूटे मस्तक और पिण्डवाले हाथियों ने सात्यकी के रथको त्याग किया ४६ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछे सात्यकीसे पीड़ित होकर आपकी सेनाके ऐसे बड़े शब्दहुये जैसे कि पर्व्वों में सागरके शब्द होते हैं ४७ द्रोणाचार्य्य जी उस कठिन और कठोर शब्द को सुनकर सारथी से बोले हे सूत यह यादवोंका महारथी युद्धमें क्रोधयुक्त ४८ सेनाको अनेक प्रकार से पराजय करता हुआ कालके समान घूमता है सो हे सारथी जहां पर यह कठोर शब्द है वहांही रथको लेचल ४९ निश्चय सात्यकी पत्थरों से युद्ध करने वालोंके साथ भिड़ाहै और यह सब रथी भी शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा युद्धभूमि से शीघ्रजाते हैं ५० शस्त्र और कवचोंसे रहित बड़े पीड़ित होकर जहां तहां गिरते हैं और कठिन युद्ध में सारथी लोग घोड़ों को नहीं संभाल सक्ते हैं ५१ इस वचनको सुनकर द्रोणाचार्य्यका सारथी शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ भारद्वाजजीसे बोला ५२ कि हे दीर्घायुवाले यह कौरवी सेना चारों ओरसे भागतीहै और युद्धमें छिन्नभिन्न हुये जहांतहां दौड़तेहुये शूरबीरोंको देखो ५३ यह शूर पांचाल पांडवोंके साथ मिलेहुये तुमको मारनेकी इच्छासे चारों ओर दौड़तेहैं ५४ हे शत्रुओंके पराजय करनेवाले यहां स्थिरतासे अथवा चलायमान होकर समयके अनुसार कर्मकरो सात्यकी दूरगया ५५ हे श्रेष्ठ इसप्रकार भारद्वाजकी वार्त्तालाप में ही सात्यकी अनेक प्रकारके रथियोंको मारताहुआ दिखाई दिया ५६ युद्धमें सात्यकी के हाथसे घायल वह आपके शूरवीर सात्यकी के रथको त्यागकरके द्रोणाचार्य्य की सेनामें चलेगये ५७ फिर दुश्शासन पूर्व्व में जिनके साथ लौटा था वह रथ भी द्रोणाचार्य्य के रथकी ओर दौड़े ५८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकविंशतितमोऽध्यायः १२१ ॥

एकसौबाईसका अध्याय ॥

संजय बोले कि दुश्शासनके रथको सम्मुख नियत देखकर द्रोणाचार्य्यजी दुश्शासनसे यह वचन बोले १ कि हे दुश्शासन यह सब रथ किस रीतिसे भागे

कहो राजा कुशल है और जयद्रथ जीवता है २ तूभी राजकुमार और राजा का भाई होकर महारथी है तू किस निमित्त युद्ध में भागताहै युवराज पदवीको प्राप्त कर ३ तू द्यूतके समय द्रौपदीसे कहताथा कि तू द्यूतमें बिजयकीहुई दासीहै और मेरे बड़े भाई दुर्य्योधनके बस्त्रोंकी लानेवाली होकर हमारी आज्ञानुसार काम करनेवाली है ४ अब थोथेनलोंके अर्थात् नपुंसकोंके समान सब पाण्डव तेरे पति नहीं हैं हे दुश्शासन पूर्व्वमें तुम ऐसे बचन कहकर क्यों भागतेहो ५ तू आपही पांचाल और पांडवों के साथ शत्रुताकरके अकेले सात्यकीको सम्मुख पाकर युद्ध में किसहेतुसे भयभीतहै ६ तुम पूर्वसमयमें नष्टद्यूतमें पांसोंको लेतेहुये नहीं जानतेथे कि यह सब भयकारी सर्पोंके समान बाणहोंगे ७ पूर्व्वमें सबसे प्रथम अधिकतर तुमहीं पाण्डवों के साथ असभ्य और अयोग्य अप्रिय बचनों के कहनेवाले और द्रौपदीके दुःखदेने के मूलहो ८ तेरी बड़ाई अहंकार और अहंकारसे उत्पन्न होनेवाला पराक्रम कहांगया अब सर्पके समान पांडवोंको क्रोधयुक्त करके कहां जायगा ९ यह भरतबंशियोंकी सेना राज्य और राजादुर्योधन शोचनेके योग्यहै जिसके कि तुम भाई होकर युद्धसे मुख फेरनेवालेहो १० हे बीर अपनी भुजाके बल में नियतहोकर सेनाके छिन्नभिन्न होनेसे तुझ भयभीतके कारण पीड़ामान सेना रक्षाके योग्यहै सो तुम युद्धमें भयभीतहोकर युद्धको त्यागकरके शत्रुओंको प्रसन्न करतेहो हे शत्रुओंके मारनेवाले तुझ सेनाके अधिपति और रक्षाश्रयके भयभीत होकर भागनेपर युद्धमें कौनसा भयभीत नियतहोगा ११।१२ अब युद्धकरनेवाले अकेले सात्यकी के कारणसे तेरी बुद्धि युद्धसे भागनेमें प्रवृत्तहै १३ हे कौरव जब तुम युद्धमें गांडीव धनुषधारी अर्जुन भीमसेन नकुल और सहदेवको देखोगे तब क्याकरोगे १४ युद्ध में सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशमान जैसे अर्ज्जुन के बाणहैं उन बाणोंके समान सात्यकीके बाण नहीं हैं जिनसे कि भयभीत होकर तुम भागतेहो १५ हे बीर तुम शीघ्रजाओ और गान्धारी के गर्भ में फिर प्रवेश करो तुझ पृथ्वीपर दौड़नेवालेका जीवन मैं और किसी प्रकार नहीं देखताहूं १६ जो तेरी बुद्धि भागनेमें ही प्रवृत्तहै तो सन्धि पूर्व्वक इसपृथ्वीको युधिष्ठिरको दो १७ जबतक अर्ज्जुनके कांचली से छूटे सर्प्पकी समान छोड़े बाण तेरे शरीर में नहीं लगतेहैं तबतक पांडवोंसे संधिकरो १८ जबतक महात्मापांडव तेरे सौ भाइयों कोयुद्धमें मारकर पृथ्वीको नहीं लेते हैं तबतक पांडवोंसे संधिकर १९ जबतक कि

धर्मकापुत्र राजायुधिष्ठिर और युद्धमें प्रशंसनीय श्रीकृष्णजी कोपयुक्त नहीं होते हैं तबतक पाण्डवोंके साथ सन्धिकर २० जबतक महाबाहु भीमसेन बड़ीसेनाको मँझाकर तेरे सगेभाइयों को आधीन नहीं करताहै तबतक पाण्डवोंकेसाथ सन्धि कर २१ पूर्व्व समयमें इस तेरे भाई दुर्य्योधन को भीष्मजीने समझाया था कि हे सुचाल और सुन्दर स्वभाववाले युद्धमें पांडवलोग अजेय हैं उनसे अवश्य सन्धि करले २२ तब तेरे निर्बुद्धी भाई दुर्योधनने उनके कहने को नहीं किया सो तुम अब सावधान होकर बड़ी धीरतासे पाण्डवोंके साथ युद्धकरो २३ और मैंने सुनाहै कि भीमसेन तेरे रुधिर को पियेगा यहभी सत्यहै और वह अवश्य उसी प्रकार होगा २४ हे अज्ञानी क्या तू भीमसेनके पराक्रमको नहीं जानता है जो युद्धमें मुख फेरनेवाले होकर तुमने उनसे शत्रुता प्रारम्भकी २५ शीघ्रही रथकी सवारीसे वहां जाओ जहां सात्यकी वर्त्तमानहै हे भरतबंशी तुझसे पृथक् होकर यह सब सेना भाग जायगी अपने अर्थ युद्ध में सत्यपराक्रमी सात्यकी के साथ युद्ध करो २६ इतने समझाने और कहनेपर भी आपके पुत्रने कुछभी नहींकहा सुनी अनसुनी करके उसमार्गको चला जिस मार्गमें होकर वह सात्यकी जाताथा २७ मुख न फेरनेवाले म्लेच्छों की बड़ी सेना समेत युद्धमें सावधान वह दुश्शासन सात्यकी से युद्ध करने लगा २८ रथियों में श्रेष्ठ अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य भी मध्यम तीव्रता से संयुक्त पाञ्चाल और पाण्डवों के सम्मुख गये २९ द्रोणाचार्य्य ने युद्धमें पाञ्चालों की सेनामें प्रवेश करके सैकड़ों हजारों शूर वीरों को भगाया ३० हे महाराज इसके पीछे द्रोणाचार्य्यने युद्धमें अपने नामको सुनाकर पाण्डव पाञ्चाल और मत्स्य देशियोंका बड़ा बिनाश किया ३१ द्रुपद का पुत्र तेजस्वी बीरकेतु जहांतहां सेनाओं के विजय करनेवाले उन भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजी के सम्मुख गया ३२ उसमें गुप्तग्रन्थीवाले पांच बाणोंसे द्रोणाचार्य को घायल करके एक बाणसे ध्वजाको भेदा और सातबाणोंसे उसके सारथीको घायल किया ३३ हे महाराज वहां युद्धमें मैंने अपूर्व्व कर्म्मको देखा जो द्रोणाचार्य्यजी युद्धमें वेगवान् धृष्टद्युम्न के सम्मुख नियत नहीं रहे ३४ हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र युद्ध में रुकेहुये द्रोणाचार्य्य को देखकर उन विजयाभिलाषी पाञ्चालों ने धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर को सबओरसे आवर्ण करलिया ३५ हे राजा उन लोगोंने अग्निरूप बाण और बड़े बादलरूप तोमर और नानाप्रकार के शस्त्रों से अकेले

द्रोणाचार्य्य को ढकदिया ३६ कि द्रोणाचार्य्य उनको बाणोंके समूहोंके द्वारा सब ओर से घायल करके ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि बड़े आकाश में बादलों को घायल करके वायु शोभित होते हैं ३७ इसके पीछे शत्रुहन्ता ने सूर्य्य और अग्निके समान बड़े भयकारी बाणोंको वीरकेतु के रथपर चलाया ३८ हे राजन् वह बाण द्रुपदके पुत्र बीरकेतुको छेदकर रुधिरसे लिप्त अग्निरूपके समान शीघ्रही पृथ्वीपर गिरपड़ा ३६ इसके पीछे राजा पाञ्चालका पुत्र शीघ्रही रथसे ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बायुसे पीड़ित चम्पेका बड़ा वृक्ष पर्व्वत के शिखरसे गिरताहै ४० उस बड़े धनुषधारी बड़े पराक्रमी राजकुमार के मरने पर शीघ्रता करने वाले पाञ्चालों ने द्रोणाचार्य्य को सबओरसे घेरलिया ४१ हे भरतबंशी भाई के दुःखसे पीड़ामान चित्रकेतु सुधन्वा चित्रवर्म्मा चित्ररथ ४२ यह सब बर्षाऋतु के समान बाणों की बर्षा करते युद्धाभिलाषी होकर एकसाथही द्रोणाचार्य्य के सम्मुख गये ४३ महारथी राजकुमारों से बहुत प्रकार से घायल उस उत्तमब्राह्मण ने उनके बिनाश के अर्थ क्रोध करके ४४ बाणों के जालों को उनपर छोड़ा हे राजाओंमें श्रेष्ठ धृतराष्ट्र कानतक खींचेहुये द्रोणाचार्य्य के बाणोंसे घायल ४५ कुमारों ने करनेके योग्य कर्मको नहीं जाना हे भरतबंशी हँसते और क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य ने उन अचेत कुमारों को ४६ युद्ध में घोड़े रथ और सारथियों से रहित किया फिर बड़े यशस्वी द्रोणाचार्य्यने अत्यन्त तीक्ष्णधारबाण और भल्लों से उन सबके ४७ शिरोंको फूलोंके समान गिराया फिर वह तेजस्वी राजकुमार मृतकहोकर रथों से पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़े ४८ जैसे कि पूर्व्व समय में देवासुरों के युद्ध में दैत्य और दानव गिरे थे हे राजा प्रतापवान् भारद्वाज द्रोणाचार्य्य ने युद्धमें उनको मारकर ४९ सुबर्णपृष्ठी कठिनता से चढ़ाने के योग्य धनुषको घुमाया देवताओंके रूप समान महारथी पांचालदेशी कुमारोंको मृतकदेखकर ५० युद्धमें क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्नने नेत्रोंसे जलको गिराया और क्रोधयुक्त होकर बाणों को मारता हुआ युद्धमें द्रोणाचार्य्यके रथके पास आया ५१ हे राजा इसके पीछे युद्धमें धृष्टद्युम्नके बाणों से ढकेहुये द्रोणाचार्य्य को देखकर अकस्मात् हाहाकार शब्द उत्पन्नहुआ ५२ परन्तु महात्मा धृष्टद्युम्नके हाथ से बहुत प्रकारसे ढकेहुये वह द्रोणाचार्य्य पीड़ामान नहीं हुये और मन्दमुसकान करते युद्ध करनेलगे ५३ हे महाराज इसके पीछे क्रोधसे मूर्च्छावान् क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्नने नब्बेबाणोंसे द्रो-

णाचार्य्यको छातीपर घायलकिया ५४ उस पराक्रमीके हाथसे कठिन घायल बड़े यशस्वी द्रोणाचार्य्यजी रथके बैठनेके स्थानपर बैठकर मूर्च्छावान् होगये ५५ फिर महाबली पराक्रमी धृष्टद्युम्नने उस दशामें युक्त उन द्रोणाचार्य्यको देखकर धनुष को त्यागकर शीघ्रही खड्ग को लिया ५६ हे श्रेष्ठ वह महारथी धृष्टद्युम्न शीघ्रही अपने रथसे कूदकर द्रोणाचार्य्यके रथपर चढ़गया ५७ क्रोधसे लालनेत्रने शरीर से शिर को काटना चाहा उसके पीछे सचेतहुये द्रोणाचार्य्य ने नवीन धनुष को लेकर ५८ मारनेकी अभिलाषासे सम्मुख बर्त्तमान धृष्टद्युम्नको देखकर समीपसे छेदनेवाले वैतस्तिक नाम बाणोंसे घायलकिया ५९ और युद्ध में महारथी शत्रु से लड़े हे राजा वह समीपसे मारनेवाले द्रोणाचार्य्य के छोड़हुये जो वैतस्तिक बाण थे ६० उन बहुतसे शायकों से घायल और बेगसे रहित दृढ़ पराक्रमी बीर महारथी धृष्टद्युम्नने अपने रथपर चढ़कर और बड़े धनुषको लेकर युद्धमें द्रोणा-चार्य्यको घायलकिया ६१।६२ द्रोणाचार्य्यनेभी बाणोंसे धृष्टद्युम्नको घायलकिया तब द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नका वह महायुद्ध ऐसा अत्यन्त अपूर्व हुआ ६३ जैसा कि तीनोंलोकों के चाहनेवाले इन्द्र और प्रह्लादका युद्ध हुआथा यमक आदि अनेक मंडलों के घूमनेवाले ६४ युद्धकी रीतिके ज्ञाता और युद्धभूमि में शूरवीरोंके चित्तोंको अचेत करनेवाले द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नने बाणोंसे पर-स्पर घायलकिया ६५ वर्षाऋतु में बलाहकनाम बादलोंके समान बाणोंकी वर्षा करतेहुये दोनों महात्मा बाणों से आकाश दिशा और पृथ्वीको ढकनेवाले हुये ६६ हे महाराज वहांपर जीवोंके समूह क्षत्रियोंके समूह और जो अन्य २ सेनाके मनुष्यथे उन सबने इन दोनोंके अपूर्व्व युद्धकी प्रशंसाकरी ६७ हे महाराज फिर पांचालदेरी पुकारे कि युद्धमें धृष्टद्युम्नसे भिड़ेहुये द्रोणाचार्य्य अवश्यही हमारे आधीनतामें वर्त्तमानहोंगे ६८ फिर शीघ्रता करनेवाले द्रोणाचार्य्यने युद्धमें धृष्ट-द्युम्नके सारथीके शिरको ऐसे गिराया जैसे कि वृक्षके पकेहुये फलको गिराते हैं ६९ हे राजा इसके पीछे उस महात्माके घोड़े भागे उनके भागनेपर पराक्रमी द्रो-णाचार्य्य ने जहां तहां युद्धमें पांचाल और सृञ्जियोंसे युद्धकिया ७० हे समर्थ धृतराष्ट्र शत्रुविजयी प्रतापी द्रोणाचार्य्य पाण्डव और पांचालोंको विजयकरके फिर अपने व्यूहमें नियतहोकर खड़ेहुये पाण्डवोंने युद्ध में उनके विजय करने को साहस नहीं किया ७१ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिद्वाविंशतितमोऽध्यायः १२२ ॥

एकसौतेईसका अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा इसके पीछे बादलके समान बाणों की वर्षा करताहुआ दुश्शासन सात्यकी के सम्मुख गया १ उसने सात्यकीको साठबाणोंसे और सोलहबाणों से युद्ध में घायल करके युद्ध में नियतहुये को ऐसे कम्पायमान नहीं किया जैसे कि मैनाक पर्व्वत को नहीं करसक्के २ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ फिर नानादेशोंमें उत्पन्न होनेवाले रथोंके समूहों समेत सब ओरसे असंख्य शायकों को छोड़ते और बादलके समान शब्दोंसे दशोंदिशाओंको शब्दायमान करते शूरबीर दुश्शासनने शायकनाम बाणों से उस सात्यकी को बहुत ढका ३।४ महाबाहु सात्यकीने युद्धमें उस आतेहुये दुश्शासन को देखकर सम्मुखमें जाकर शायकोंसे ढकदिया ५ बाणोंके समूहोंसे ढकेहुये युद्धमें भयभीत वह लोग जिनमें मुख्य दुश्शासनथा आपकी सेनाके देखतेहुये भागे ६ हे महाराज राजाधृतराष्ट्र उन लोगों के भागनेपर आपका पुत्र दुश्शासन सेनासे पृथक् होकर नियत हुआ और बाणों से सात्यकी को पीड़ामान किया ७ उसने चार बाणों से उसके घोड़ों को तीन बाणों से सारथी को और सौ बाणों से सात्यकी को युद्धभूमिमें घायल करके सिंहनाद को किया ८ इसके पीछे क्रोधयुक्त सात्यकीने युद्धमें उसके रथ ध्वजा और सारथी को बाणों से गुप्त करदिया ९ उसने शूरबीर दुश्शासन को शायकों से ऐसा अच्छा ढका जैसे कि मकड़ी प्राप्त होनेवाले मशक जन्तु को अपने जालों से ढकती है शत्रुके बिजय करनेवाले शीघ्रता युक्त सात्यकी ने अपने बाणों से आच्छादित करदिया १० राजादुर्योधनने इस प्रकार सैकड़ों बाणों से ढकेहुये दुश्शासन को देखकर त्रिगर्त्तदेशियों को सात्यकी के रथपर भेजने की प्रेरणा करी ११ तब वह निर्द्दयकर्म्मी युद्ध कुशल त्रिगर्त्तदेशी तीन हजार रथी सात्यकीके सम्मुख गये १२ वहां जाकर उन लोगोंने परस्पर शपथ खाकर युद्ध में बुद्धि को प्रवृत्त करके उस सात्यकी को रथोंके बड़े समूहों से घेरलिया १३ युद्धमें उपाय करनेवाले और बाणोंकी वर्षा करनेवाले उन त्रिगर्त्तदेशियोंके पांचसौ उत्तम शूरबीरों को सब सेनाके देखतेहुये सात्यकी ने मारडाला १४ शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकीके हाथसे मरेहुये वह लोग ऐसे शीघ्रगिरे जैसे कि बड़े वायुके वेगसे पर्व्वतसे टूटेहुये वृक्ष गिरते हैं १५ हे राजा वहां बहुत प्रकार

से टूटे अंगवाले हाथियों से ध्वजाओं से सुवर्णभूषित पड़ेहुये घोड़ों से १६ और सात्यकीके बाणोंसे टूटेहुये रुधिरमें मनुष्योंके शरीरोंसे पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि प्रफुल्लित किंशुकके वृक्षोंसे शोभित होती है १७ युद्धमें सात्यकीके हाथसे घायल उन आपके शूरबीरोंने अपने रक्षकको ऐसे नहीं पाया जैसे कीच में फँसाहुआ हाथी अपने रक्षकको नहीं पासक्ता १८ इसके पीछे वह सब द्रोणाचार्य्य के रथके पास ऐसे बर्त्तमान हुये जैसे कि पक्षियों के राजा गरुड़के भयसे बड़े २ सर्प बिलोंमें गुप्त होते हैं १६ वह बीर सर्पाकार बाणों से पांचसौ बीरों को मारकर धीरे से अर्ज्जुन के रथकी ओर को चला २० आपके पुत्र दुश्शासन ने शीघ्रही गुप्त ग्रन्थीवाले नव बाणों से उस जातेहुये नरोत्तम सात्यकी को घायल किया २१ फिर उस बड़े धनुषधारी ने तीक्ष्णधार सुनहरी पुंखवाले गृद्ध पक्षयुक्त सीधे चलनेवाले बाणों से उसको घायल किया २२ हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र हँसतेहुये सात्यकीने तीन बाणोंसे दुश्शासन को छेदकर फिर पांच बाणोंसे घायल किया २३ फिर सात्यकी तीक्ष्ण शीघ्रगामी पांच बाणों से आपके पुत्र को घायल करके और युद्ध में उसके धनुष कोभी काटकर हँसता हुआ अर्ज्जुनकी ओर चला २४ इसके पीछे मारनेके इच्छावान् क्रोधभरे दुश्शासनने केवल लोहे की बनीहुई शक्ति को चलतेहुये सात्यकीके ऊपर छोड़ा २५ हे राजा तब सात्यकीने आपके पुत्रकी उस भयकारी शक्ति को तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे काटा २६ हे राजा फिर आपके पुत्रने दूसरे धनुष को लेकर बाणों से सात्यकी को घायल करके सिंहनाद किया २७ फिर युद्धमें क्रुद्ध सात्यकीने आपके पुत्र को अचेत करके अग्निके समान बाणों से छाती में घायल किया २८ फिर उसी महाभाग गुप्त ग्रन्थीवाले केवल लोहेके तीक्ष्ण मुख तीन बाणों से छेदकर फिर आठ बाणों से घायल किया २६ दुश्शासनने बीस बाण से सात्यकी को घायल किया सात्यकीने भी गुप्त ग्रन्थीवाले तीन बाणों से छातीके मध्यमें व्यथित किया ३० इस के पीछे महारथी सात्यकीने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे उसके घोड़ोंको मारा और बड़े तीव्र गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से सारथी कोभी मारा ३१ एक भल्ल से धनुष को पांच बाणसे हस्तत्राण को दो भल्लसे ध्वजा समेत रथकी शक्ति को काटा उसी प्रकार त्रिशिखनाम तीक्ष्ण बाणसे सारथीके पीछेवाले को मारा ३२ वह टूटे धनुष रथमे विहीन मृतक घोड़े व सारथीवाला दुश्शासन सेनापति त्रिगर्त्तदेशियोंकी

सेनाके मुख्य रथके द्वारा हटायागया ३३ हे भरतवंशी महाबाहु सात्यकीने एक मुहूर्त्त भर सम्मुख जाकर भीमसेन के बचनको स्मरण करके उस दुश्शासन को नहीं मारा ३४ हे भरतवंशी भीमसेनने सभाके मध्यमें आपके सब पुत्रोंके मारने की प्रतिज्ञाकरी है ३५ हे समर्थ राजा धृतराष्ट्र इसके पीछे युद्ध में सात्यकी दुश्शासन को विजय करके उसी मार्ग में शीघ्रतासे चला जिस मार्ग होकर कि अर्ज्जुनगयाथा ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिशततोपरित्रयोविंशतितमोऽध्यायः १२३ ॥

एकसौचौबीसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे सञ्जय क्या मेरी उस सेना में कोई महारथी नहीं थे जिन्होंने उस प्रकार जाते और मारतेहुये सात्यकी को भी नहीं रोंका १ युद्ध में उसने वह कर्म किया जैसे कि महाइन्द्र ने दानवोंके मध्य में कियाथा २ अथवा वह पृथ्वी शूरबीरों से रहित थी जिधर होकर सात्यकी गया वा वह बहुत मृतक वाली थी जिस मार्गसे सात्यकी गया ३ हे संजय युद्ध में बीर सात्यकीके किये हुये जिस कर्मको कहताहै ऐसे कर्म करनेको इन्द्रभी साहस नहीं करसक्ता है ४ हे संजय जैसा तू कहताहै वह श्रद्धासे रहित बुद्धिसे बाहर है निश्चयकरके उस अकेले सत्यपराक्रमी ने बहुतसी सेनाओंको बिध्वंस किया ५ अकेला सात्यकी किस प्रकार उन युद्ध करनेवाले बहुत महात्माओं को बिजयकरके दूर चलागया हे संजय वह मुझसे कहो ६ संजयबोले हे राजा आपकी सेनाके मनुष्य रथ हाथी घोड़े और पतियों की चढ़ाई बड़ी कठिन प्रलयकालके समान हुई ७ हे बड़ाई देनेवाले आह्निक समूहों में संसारके मध्य आपकी सेनाके समान कोई समूह नहीं हुआ यह मेरामतहै ८ वहांपर आनेवाले देवता और चारण लोग बोलेकि इस पृथ्वीपर सेनाओंके समूह इससे बढ़कर कभी नहीं होंगे ९ हे राजा इस प्रकारका कोई व्यूह नहीं हुआ जैसा कि जयद्रथ के मारने में द्रोणाचार्य्यकी ओर से नियतहुआ १० युद्ध में परस्पर सम्मुख दौड़ते हुये सेनाओं के समूहोंके ऐसे शब्दहुये जैसेकि कठिन वायुसे ओत प्रोत समुद्रोंके शब्दहोते हैं ११ हे नरोत्तम आपकी और पाण्डवोंकी सेनामें इकट्ठे होनेवाले हजारों राजाथे १२ वहां युद्ध में दृढ़कर्मी क्रोधयुक्त बड़े बीरोंके बड़े रोमहर्षण करनेवाले कठिन शब्दहुये १३

हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछे भीमसेन धृष्टद्युम्न नकुल सहदेव और धर्मराज युधिष्ठिर पुकारे १४ कि आओ प्रहार करो शीघ्र चारों ओरसे दौड़ो वीर सात्यकी और अर्ज्जुन शत्रुकी सेना में पहुंचेहुयेहैं १५ सुख पूर्व्वक जयद्रथके पास चलो शीघ्रतासे ऐसाही करो इसप्रकारसे सेनाओंको प्रेरणाकरी १६ उन दोनों के मरनेपर कौरव अभीष्ट सिद्धिकरैं और हम हारजावें बड़े वेगवाले तुम सब साथहोकर शीघ्रही सेना सागरको १७ ऐसे उथल पुथलकरो जैसे कि वायु समुद्रको उथल पुथल करताहै हे राजा भीमसेन और धृष्टद्युम्नकी आज्ञानुसार उन लोगोंने अपने प्राणोंको त्यागकरके युद्धमें कौरवोंको घायलकिया युद्धमें शस्त्रोंके द्वारा मृत्युको चाहते स्वर्ग्गाभिलाषी बड़ेतेजस्वियोंने १८।१९ मित्र के कार्य्य में अपने जीवनकी इच्छा को नहीं किया हे राजा उसी प्रकार बड़े यशको चाहते आपके शूरबीर युद्ध में उत्तम बुद्धि को करके नियतहुये २० उस कठिन भयकारी युद्ध के उत्पन्न होने पर सात्यकी सब सेना को बिजय करके अर्जुनके पासगया २१ उस युद्ध में सूर्य की किरणों से प्रकाशमान शरीरों के कवचोंके प्रकाश ने सेना के लोगों की दृष्टियों को चारोंओर से घायल किया २२ हे महाराज इस प्रकार उपाय करनेवाली महात्मा पाण्डवों की बड़ी सेना को राजादुर्य्योधन ने मँझाया २३ हे भरतबंशी उन्होंका और उसका वह कठिन युद्ध सब जीवों का महा बिनाशकारी हुआ २४ धृतराष्ट्र बोले हे सूत इस प्रकार सेनाके भागनेपर आपत्ति में फँसेहुये दुर्य्योधन ने आपही पीछे की ओर से युद्ध किया २५ बड़े युद्ध में एकका और बहुतका मुख्य करके राजाका युद्ध मुझको बहुत कठिन बिदित होताहै २६ बड़े सुखसे पोषण कियाहुआ और लक्ष्मी से लोकका ईश्वर अकेला वह दुर्य्योधन बहुत शूरबीरों को पाकर मुखको तो नहीं फेरगया २७ संजय बोले कि हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र आपके अकेले पुत्रका अपूर्व्व युद्ध जैसे कि बहुतों से हुआ उसको मैं तुमसे कहताहूं तुम चित्तसे सुनो २८ युद्ध में दुर्य्योधन ने पाण्डवी सेनाको ऐसा तिर्रे बिर्रे किया जैसे कि कमलोंकावन हाथी से छिन्न भिन्न होताहै २९ हे राजा इसके पीछे आपके पुत्रके हाथसे घायल हुई उस सेनाको देखकर वह पाञ्चाल देशी जिनमें मुख्य भीमसेनथा उसके सम्मुख गये ३० उसने पाण्डव भीमसेनको दश बाणोंसे वीर नकुल वा सहदेवको तीन तीन बाणसे और धर्म्मराजको सात बाण से घायल किया ३१ बिराट समेत द्रु

पदको छः बाणसे शिखण्डी को सौ बाणसे धृष्टद्युम्न को बीस बाणसे और द्रौपदी के पुत्रों को तीन तीन बाणसे छेदा ३२ और युद्धमें हाथी और रथों समेत अन्य सैकड़ों शूरबीरों को भयकारी बाणोंसे ऐसे मारा जैसे कि क्रोधयुक्त काल सृष्टिको मारताहै ३३ गुरूकी आज्ञा पूर्व्वक अपने अस्त्रों के बलसे शत्रुओंको मारा वह दुर्य्योधन जिसका कि धनुषमण्डलरूप था वह न बाणको चढ़ाता और न छोड़ता दिखाई पड़ा ३४ मनुष्योंने युद्धमें उस शत्रुहन्ता दुर्य्योधनका स्वर्णमयी पृष्ठवाला बड़ा धनुष मण्डलरूप देखा ३५ हे कौरव इसके पीछे राजा युधिष्ठिरने दो भल्ल से आप के उपाय करनेवाले पुत्रके धनुषको युद्ध में काटा ३६ और अच्छेप्रकारसे चलायेहुये उत्तम दश बाणोंसे उसको घायलकिया वह शीघ्रही कवचको फाड़ शरीरको छेदकर पृथ्वीपर गिरपड़े ३७ इसके पीछे अत्यन्त प्रसन्न पाण्डवों ने युधिष्ठिरको ऐसे आवर्ण किया जैसे कि पूर्व्व समयमें देवता और महर्षियों ने बृत्रासुरके मारने में इन्द्रको आवर्णित कियाथा ३८ उसके पीछे आपका प्रतापी पुत्र दूसरे धनुषको लेकर राजा युधिष्ठिर को तिष्ठ तिष्ठ शब्द कहकर सम्मुख गया ३९ बड़े युद्धमें आतेहुये उस आपके पुत्रको सम्मुख आया हुआ देखकर अत्यन्त प्रसन्न बिजयके इच्छावान पाञ्चाल देशी उसके सम्मुख गये ४० युद्धमें पाण्डवको चाहते द्रोणाचार्य्य ने उनको ऐसे रोका जैसे कि कठिन बायुसे उठायेहुये जल छोड़नेवाले बादलोंको बायु रोकताहै ४१ हे महाबाहो राजा धृतराष्ट्र उस युद्धमें पाण्डवों का और आपके पुत्रोंका ऐसा बड़ा संग्राम हुआ जो कि रोमांचोंको खड़ा करताथा ४२ रुद्रजीके क्रीड़ा स्थान के समान सब देहधारियोंका बिनाश हुआ इसके पीछे जिधर अर्जुन था उस ओरसे ऐसा बड़ाभारी शब्द हुआ ४३ जो कि सब शब्दों से अधिकतर रोमांचोंका खड़ा करनेवाला था महाबाहु अर्जुनके और आपके धनुषधारियों के शब्द ४४ और भरत बंशियों की सेनाके मध्यवर्त्ती बड़े युद्धमें सात्यकीके शब्द और व्यूहके द्वारपर शत्रुओं के साथ बड़े युद्धमें द्रोणाचार्य्य केभी बड़े शब्दहुये ४५ हे राजा अर्जुन द्रोणाचार्य और महारथी सात्यकीके क्रोधरूप होनेपर इस रीतिसे यह बड़ाभारी बिनाश पृथ्वीपर वर्त्तमान हुआ ४६॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिचतुर्विन्शतितमोऽध्यायः १२४॥

एकसौपच्चीसका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे महाराज सोमकों के साथ द्रोणाचार्य्य का वड़ाभारी युद्ध हुआ वह युद्ध बादल के समान शब्दायमान था १ नरों में वीर और सावधान द्रोणाचार्य्य लाल घोड़े वाले रथपर सवार होकर मध्यम तीव्रता में नियत होकर युद्धमें पाण्डवों के सम्मुखगये २ हे भरतवंशी आपके प्रियहितकी वृद्धिमें प्रवृत्त बड़े धनुषधारी पराक्रमी उत्तम कलश से उत्पन्न होनेवाले प्रतापी भारद्वाज द्रोणाचार्य्य अपूर्व्व पुंखवाले तीक्ष्ण बाणों से उत्तम २ शूरवीरों को चुनतेहुये युद्ध में क्रीड़ा करनेवाले हुये ३।४ और युद्धमें निर्द्दय केकयोंका महारथी पांचोभाइयोंमें श्रेष्ठ वृहच्छत्र उनके सम्मुख गया ५ और तीक्ष्ण बाणोंको छोड़ते उसने ऐसा अत्यन्त पीड़ामान किया जैसे कि गन्धमादन पर्व्वतपर वर्षाके जल को बरसाता हुआ बड़ा बादल होताहै ६ हे महाराज अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्यने सुनहरी पुंख तीक्ष्णधारवाले पन्द्रहबाणोंको उसके ऊपर फेंका ७ प्रसन्न चित्तके समान उसने युद्ध में द्रोणाचार्य्यके छोड़ेहुये उन प्रत्येक बाणोंको जो कि क्रोध भरे सर्पकी सूरतथे पांचबाणोंसे काटा ८ उत्तम ब्राह्मणने उसकी उस हस्तलाघवताको देख वहुत हँसकर गुप्तग्रन्थीवाले आठबाणों को चलाया ९ द्रोणाचार्य्यके धनुषसे निकलेहुये शीघ्रतासे गिरनेवाले उन बाणोंको देखकर युद्धमें उसने उतनेही तीक्ष्ण बाणोंसे रोका १० हे महाराज वृहच्छत्रके कियेहुये कठिनतासे करनेके योग्य उस कर्मको देखकर आपकी सेनावालोंको आश्चर्य्यहुआ ११ इसके पीछे वृहच्छत्रको मारनेकी इच्छासे द्रोणाचार्य्य ने युद्ध में बड़े कष्टसे विजय होनेवाले दिव्य ब्रह्मअस्त्रको प्रकटकिया १२ तब उस वृहच्छत्रने द्रोणाचार्य्य के छोड़ेहुये अस्त्रको देखकर ब्रह्मअस्त्रसे ही उस ब्रह्मअस्त्र को निवारण किया १३ हे भरतवंशी इसके पीछे अस्त्रसेही उस ब्रह्मअस्त्रके शान्तहोनेपर वृहच्छत्रने सुनहरी पुंख तीक्ष्णधारवाले साठबाणों से ब्राह्मणको घायलकिया १४ फिर द्विपादों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने उसको नाराचसे घायलकिया वह बाण उसके कवच को काटकर पृथ्वी में समागया १५ हे राजाओं में श्रेष्ठ जैसे कांचली से छुटा हुआ कालासर्प बामीमें प्रवेश करताहै उसी प्रकार वह बाण युद्धमें वृहच्छत्रको घायलकरके पृथ्वीमें समागया १६ हे महाराज द्रोणाचार्य्यके शायकोंसे अत्यन्त

घायल बड़े क्रोधसे पूर्ण उस बृहच्छत्रने अपने दोनों शुभ नेत्रोंको खोलकर १७ सुनहरी पुंख तीक्ष्णधारवाले सत्तरबाणोंसे द्रोणाचार्य्यको व्यथितकिया और एक बाणसे उनके सारथीको मर्मस्थल में अत्यन्त घायलकिया १८ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र बृहच्छत्र के बहुत बाणोंसे घायल द्रोणाचार्य्यने बड़े तीक्ष्ण बाणोंको बृहच्छत्रके रथपर फेंका १९ फिर द्रोणाचार्य्यने उस महारथी बृहच्छत्रको व्याकुलकरके उसके चारों घोड़ों को चारबाणों से मारा २० एकबाण से सारथी को रथ के बैठने के स्थान से गिरादिया और बाणों से ध्वजा समेत छत्र को काटकर पृथ्वी पर गिराया २१ इसके पीछे उत्तम ब्राह्मणने अच्छेप्रकार छोड़ेहुये नाराचसे बृहच्छत्रको हृदयपर छेदा तब वह हृदयसे विदीर्ण होकर गिरपड़ा २२ हे राजा केकयोंके महारथी बृहच्छत्रके मरनेपर अत्यन्त क्रोधयुक्त वीरों में उत्तम शिशुपाल का पुत्र अपने सारथीसे यह बचन बोला २३ हे सारथी तू वहांचल जहां यह कवचधारी द्रोणाचार्य्य सब केकय और पांचालदेशियोंकी सेनाको मारताहुआ नियतहै२४ रथियों में श्रेष्ठको सारथीने शीघ्रगामी काम्बोजदेशी घोड़ोंके द्वारा द्रोणाचार्य्य के सम्मुख किया २५ चंदेरीदेशियों में उत्तम बड़े पराक्रमसे उदयमान धृष्टकेतु मारनेके निमित्त द्रोणाचार्य्यके सम्मुख ऐसे गया जैसे कि पतंग अग्निमें जाता है २६ तब सोतेहुये व्याघ्र को पीड़ामान करतेहुये उस धृष्टकेतुने साठबाणों से ध्वजा रथ और घोड़ों समेत द्रोणाचार्य्यको घायलकिया फिर दूसरे अन्य तीक्ष्ण बाणों से भी व्यथित किया २७ तब द्रोणाचार्य्यने तीक्ष्ण और पक्षवाले क्षुरप्रसे उस उपाय करनेवाले धृष्टकेतुके धनुष को मध्यसे काटा २८ महारथी धृष्टकेतुने फिर दूसरे धनुषको लेकर कंक और मोरके पंखोंसे मढ़े शायकोंसे द्रोणाचार्य्यको घायलकिया २९ हँसतेहुये द्रोणाचार्य्य ने चारबाणोंसे उसके चारों घोड़ोंको मारकर सारथी के शरीर समेत उसके शिरको काटा ३० फिर उसको पचीसशायकों से घायलकिया राजा चन्देरी ने शीघ्रही रथसे कूद शीघ्रही गदाको लेकर ३१ क्रोधयुक्त सर्पिणी के समान उस गदाको द्रोणाचार्य्य के ऊपर फेंका उस काल रात्रिके समान उठाईहुई लोहेकी भारी सुवर्णसे खचित आतीहुई गदाको देखकर भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने हजारों तीक्ष्ण बाणोंसे काटा ३२।३३ हे श्रेष्ठ कौरव धृतराष्ट्र भारद्वाजके बहुत बाणोंसे टूटीहुई वह गदा पृथ्वीको शब्दायमान करतीहुई पृथ्वीपर गिरपड़ी ३४ फिर क्रोधयुक्त वीर धृष्टकेतुने उस गदाको टूटीहुई देखकर

तोमर और सुवर्णके समान प्रकाशमान शक्तिको छोड़ा ३५ तोमरको पांचवाण से तोड़कर शक्तिको पांचवाणोंसे काटा और गरुड़से काटेहुये दो सर्पोंके समान वह दोनों पृथ्वीपर गिरपड़े ३६ इसके पीछे मारनेके उत्सुक प्रतापवान द्रोणाचार्य्यने इसके मारनेके निमित्त युद्धमें तीक्ष्ण वाण को चलाया ३७ वह वाण उस तेजस्वी के कवच और हृदय को तोड़कर पृथ्वीपर ऐसे गया जैसे कि कमलके वनमें हंस जाताहै ३८ जैसे कि भूखा नीलकण्ठ क्रोधसे पतङ्ग को निगल जाता है उसी प्रकारसे शूर द्रोणाचार्य्यने युद्धमें धृष्टकेतु को मारा ३९ चन्देरी के राजा के मरनेपर क्रोधके आधीन उत्तम अस्त्रोंका जाननेवाला उसका पुत्र उस सेना के भागमें पहुँचा ४० हँसतेहुये द्रोणाचार्य्य ने वाणों से उसको भी यमलोक में ऐसे पहुँचाया जैसे कि वड़े वनमें पराक्रमी वड़ा व्याघ्र मृगके बच्चे को खाजाता है ४१ हे भरतवंशी शूरबीरों के नाश होनेपर जरासन्धका वीरपुत्र आपही द्रोणाचार्य्यके सम्मुख गया ४२ फिर उस महावाहुने युद्धमें वाणोंकी धाराओं से शीघ्रही द्रोणाचार्य्य को ऐसे दृष्टिसे गुप्तकरदिया जैसे कि वादल सूर्य्यको आच्छादित करदेता है ४३ क्षत्रियों के मर्दन करनेवाले द्रोणाचार्य्यने उसकी उस हस्त लाघवता को देखकर शीघ्रही सैकड़ों और हजारों शायकों को छोड़ा ४४ द्रोणाचार्यने उस रथियों में श्रेष्ठ रथपर सवार जरासन्धके पुत्र को युद्धमें वाणों से ढककर सव धनुषधारियोंके देखतेहुये शीघ्रही मारा ४५ जो शूरवीर वहांगया उसको कालरूप द्रोणाचार्यने ऐसे मारा जैसे कि समयके अन्तपर काल सव जीवधारियों को मारताहै ४६ हे महाराज इसके पीछे द्रोणाचार्यने युद्धमें नामों को सुनाकर हजारों वाणों से पाण्डवों के शूरबीरों को ढकदिया ४७ द्रोणाचार्य्य के चलायेहुये तीक्ष्ण धारवाले उन वाणोंने जिनपर कि नामखुदा हुआ था युद्धमें सैकड़ों मनुष्य हाथी और घोड़ों को मारा ४८ जैसे कि इन्द्रके हाथसे महाअसुर घायल होते हैं उसी प्रकार द्रोणाचार्यके हाथसे घायलहुये वह पांचाल ऐसे कम्पायमानहुये जैसे कि शरदी से पीड़ामान गौएं होती हैं ४९ हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्यके हाथसे सेनाओंके मरने और घायल होनेपर पाण्डवोंके दुखदाई शब्द उत्पन्नहुये ५० तव सूर्य्य से संतप्त और शायकों से घायल पाञ्चाल चित्तसे भयभीतहुये ५१ युद्धमें द्रोणाचार्य्यके वाण जालोंसे अचेत वड़े ज्ञान में आश्रित पांचालदेशियों के महारथी ५२ और चन्देरी सृञ्जय काशी और कौ-

शिलदेशियों के शूरबीर अत्यन्त प्रसन्न युद्धकी इच्छा से द्रोणाचार्य्य के सम्मुख गये ५३ चन्देरी पाञ्चाल और सृंजयदेशियों के वह शूरबीर युद्धमें परस्पर यह कहतेहुये कि द्रोणाचार्य्यको मारो द्रोणाचार्य को मारो द्रोणाचार्य के सम्मुखगये बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य्य को यमलोक में पहुँचाने के अभिलाषी वह पुरुषोत्तम अपनी २ सब सामर्थियों से उपाय करनेवालेहुये ५४। ५५ भारद्वाज द्रोणाचार्य्य ने उन उपाय करनेवाले बीरों को मुख्य करके चन्देरी देशके उत्तम शूरों को बाणों से यमलोक को भेजा ५६ उन चन्देरीदेशियोंके उत्तम बीरोंके नाश होने पर द्रोणाचार्य्य के बाणों से पीड़ामान सब पांचाल बड़े कम्पायमानहुये ५७ हे श्रेष्ठ भरतबंशी धृतराष्ट्र वह पांचाल द्रोणाचार्य्य के उस प्रकार के कर्म्मों को देखकर भीमसेन और धृष्टद्युम्न को पुकारे ५८ कि निश्चय करके इस ब्राह्मण ने दुखसे होने के योग्य महातप को किया है जो क्रोध होकर युद्धमें इस प्रकार से क्षत्रियों का बिध्वंस करता है ५९ क्षत्रिय का धर्म्म युद्ध है और ब्राह्मण का धर्म्म उत्तम तपस्या है यह तपस्वी विद्यावान दृष्टि से भी भस्म करसक्ते हैं ६० हे भरतबंशी बहुतसे उत्तम क्षत्रिय द्रोणाचार्य्य के अस्त्रों की उस अग्निमें जो कि अग्निके समान स्पर्शवाली कठिनतासे तरनेके योग्य महाभयकारी थी प्रवेशित हुये और वहां जाकर भस्महुये ६१ बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य्य बल पराक्रम और साहसके अनुसार सब जीवोंको अचेत करते हमारी सेनाओं को मारतेहैं ६२ क्षत्रधर्मा उन सबके बचनों को सुनकर सम्मुख नियतहुआ और क्रोधसे ब्याकुल चित्त बड़े पराक्रमी क्षत्रधर्मा ने अर्द्धचन्द्र नाम बाणसे द्रोणाचार्य्य के धनुषबाण को काटा क्षत्रियोंके मर्दन करनेवाले द्रोणाचार्य्यने अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर ६३। ६४ प्रकाशित और बेगवान् दूसरे धनुषको लेकर शत्रुकी सेनाके मारनेवाले तीक्ष्णबाणको उसपर चढ़ाकर ६५ पराक्रमी आचार्य्यजीने कानतक खैंचेहुये बाण को छोड़ा वह बाण क्षत्रधर्मा को मारकर पृथ्वीपर गया ६६ फिर वह भी हृदयसे विदीर्ण सवारी से पृथ्वी में गिरपड़ा इसके पीछे धृष्टद्युम्नके पुत्रके मरनेपर सब सेना कम्पायमानहुई ६७ तब बड़े पराक्रमी चेकितान ने द्रोणाचार्य्यके ऊपर चढ़ाई करी उसने द्रोणाचार्य्य को दशबाणों से छेदकर छाती में घायलकिया ६८ चारबाणसे उनके सारथी को और चारही बाणोंसे उनके घोड़ों को घायलकिया द्रोणाचार्य्यने सोलह २ बाणोंसे उसकी दक्षिण भुजा ६९ ध्वजाको और सातबा-

णसे सारथीको मारा उसके सारथीके मरनेपर वह घोड़े रथको लेकर भागे ७० हे श्रेष्ठ युद्ध में भारद्वाजके बाणोंसे चेकितान के रथको मृतक घोड़े और सारथीसे रहित देखकर पांचाल और पाण्डवोंमें बड़ा भय उत्पन्नहुआ ७१ उस समय युद्ध में इकट्ठेहुये उन चंदेरी पांचाल और सृञ्जयदेशियों के शूरोंको चारों ओरसे प्रसन्न करतेहुये द्रोणाचार्य्य बहुत शोभायमानहुये ७२ कानतक श्वेतबाल रखने वाले अवस्था में पचासी वर्षके वृद्ध द्रोणाचार्य्य सोलहवर्षकी अवस्थावाले के समान युद्ध में घूमनेलगे ७३ तब शत्रुओं ने उन निर्भयके समान घूमनेवाले शत्रुओंके मारनेवाले द्रोणाचार्य्यको वज्रधारी इन्द्रमाना ७४ इसके पीछे बुद्धिमान् महाबाहु राजा द्रुपद बोले कि यह लोभकर्मी क्षत्रियों को ऐसे मारताहै जैसे कि व्याघ्र छोटे मृगोंको ७५ दुर्बुद्धी और पापी दुर्य्योधन दुःखरूपीलोकों को पावेगा जिसके लोभसे युद्धमें उत्तम २ क्षत्रिय लोग मारेगये ७६ उत्तम गौ बैलोंके समान मरेहुये रुधिरसेलिप्त अंग कुत्ते और शृगालोंके भोजनरूप सैकड़ों शूरवीर पृथ्वीपर सोते हैं ७७ हे महाराज तब अक्षौहिणी सेनाका स्वामी राजाद्रुपद इस प्रकार से कहकर युद्धमें पाण्डवोंको आगे करके द्रोणाचार्य्यके सम्मुखगया ७८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशनोपरिपंचविंशतितमोऽध्यायः १२५॥

एकसौछब्बीसका अध्याय ॥

संजय बोले जहां तहां पाण्डवोंकी सेनाओंके छिन्नभिन्न करनेपर पाण्डवलोग पांचाल और सोमकों समेत बहुत दूरगये १ हे भरतवंशी जैसे कि प्रलयकाल में संसारका कठिन विनाश होताहै उसी प्रकार भयकारी रोमहर्षण करनेवाले युद्ध में संसार के अत्यन्त नाशहोनेपर २ युद्ध में पराक्रम करनेवाले द्रोणाचार्य्य के वारम्वार गर्जते वा पांचालदेशियोंके नाशयुक्त होने और पाण्डवोंके घायलहोने पर धर्मराज युधिष्ठिरने किसी आश्रय स्थानको नहीं देखा ३ हे महाराज उससमय उसने चिन्ताकरी कि यह कैसे होगा तदनन्तर अर्जुनके देखनेकी इच्छासे सब दिशाओंकोदेखा ४ फिर नरोत्तम युधिष्ठिरने न अर्जुनको देखा न श्रीकृष्णजीको और हनुमान्जीकी मूर्त्ति रखनेवाली ध्वजाको भी नहींदेखा ५।६ तब उन दोनों नरोत्तमों को न देखकर चिन्तासे पूर्ण शरीर धर्मराज युधिष्ठिरने शान्ती को नहीं पाया ७ बड़े साहसी महाबाहु धर्म्मराज युधिष्ठिरने संसारके अपकी-

र्त्तिके भयसे सात्यकी के रथके विषय में चिन्ताकरी कि मित्रोंका अभय करने-वाले सत्यसङ्कल्प शिनी के पौत्र सात्यकीको युद्धमें मैंनेही अर्ज्जुनके खोजके लिये भेजाहै ९ अब निश्चयकरके मुझको दोप्रकारकी चिन्ता उत्पन्नहुई सात्यकी पाण्डव अर्ज्जुन समेत अन्वेषण करने के योग्यहै १० अर्ज्जुन के पीछे चलने-वाले सात्यकीको भेजकर युद्धमें सात्यकीके पीछे चलनेवाले किस वीरको भेजूं-गा ११ जो मैं सात्यकी को खोज न करके बड़े उपाय से भाई के खोजको करूं-गा तो संसार मुझको बुरा कहैगा १२ कि धर्म्मका पुत्र युधिष्ठिर भाईको तला-श करके सत्यपराक्रमी यादव सात्यकी को त्याग करदेता है १३ सो मैं संसार के अपवाद के भयसे पाण्डव भीमसेन को महातमा सात्यकी की तलाशको भे-जूंगा १४ शत्रुओंके मारनेवाले अर्ज्जुनमें जैसी मेरी प्रीति है उसीप्रकार युद्धमें दुर्म्मद वृष्णियोंमें वीर प्रतापी सात्यकीमें भी मेरी बड़ीप्रीतिहै १५ मैंने सात्यकी को बड़े भारमें संयुक्त कियाहै वह बड़ा पराक्रमी मित्रकी प्रेरणा और बड़प्पन से १६ भरतवंशियों की सेनामें ऐसे पहुंचा जैसे कि सागर में मगर जाताहै मुख न फेरनेवाले बुद्धिमान् वृष्णी वीरके साथ परस्पर युद्ध करनेवाले शूरवीरोंके यह श-ब्द सुनेजाते हैं मैंने समयके अनुसार बहुत प्रकारसे निश्चय कियाहै १७।१८ कि धनुषधारी पाण्डव भीमसेन का वहां जाना मुझको स्वीकार है जहांपर वह दोनों महारथी गये हैं १९ इस पृथ्वीपर भीमसेन का असह्य कुछ भी नहीं वर्त्त-मान है युद्ध में उपाय करनेवाला यह भीमसेन अपने भुजबल में नियत होकर पृथ्वीके सब धनुषधारियों से सम्मुखता करने को समर्थ है २०।२१ हम सब जिस महातमा के भुजबल के आश्रित होकर बनबास से निवृत्तहुये और युद्ध में परा-जय नहीं हुये २२ इधरसे सात्यकीके पास पाण्डव भीमसेनके जानेपर वह दोनों अर्ज्जुन और सात्यकी सनाथ होंगे २३ मेरी बुद्धिसे शस्त्र चलानेमें कुशल वह दोनों सात्यकी और अर्ज्जुन आप श्रीबासुदेव जीसे रक्षित शोचके योग्य नहीं हैं परन्तु मुझको अपने शोचका दूरकरना अवश्य उचितहै इसहेतुसे सात्यकीके खोजनेके निमित्त भीमसेनको आज्ञादूंगा२४।२५इसके पीछे सात्यकीके विषयमें कर्म्मको कियाहुआ मानताहूं धर्म्मपुत्र राजायुधिष्ठिर इस प्रकार मनसे निश्चय ठहराकर सारथीसे बोला कि मुझको भीमसेनके पास लेचल २६ अश्वविद्या में कुशल सारथी ने धर्म्मराजके वचनको सुनकर सुवर्ण के समानवाले रथको भी-

मसेनके पास पहुंचाया २७ फिर भीमसेनको आज्ञा देकर समयके अनुसार चि-
न्ताकरी अर्थात् वहांपर राजा आज्ञा करताहुआ बड़ा मूर्च्छितहुआ २८ वह मू-
र्च्छा से व्यास कुन्ती का पुत्र राजा युधिष्ठिर भीमसेन को बुलाकर यह बचन
बोला २९ हे भीमसेन जो अकेला रथी होकर देवता गन्धर्व्व और दैत्यों को भी
बिजय करसक्ताहै उस तेरे छोटेभाई के ध्वजाके चिह्नको नहीं देखताहूं ३० इसके
पीछे भीमसेन उस दशावाले धर्म्मराजसे बोले कि आपकी इस प्रकारकी मूर्च्छा
मैंने न कभी देखी और न सुनी ३१ निश्चय पूर्व्वसमय में बड़े दुःखसे व्याकुल
हम लोगों के आप गतिरूप हुये हे महाराज आप उठिये उठिये जो आप कहैं
वही हम करें ३२ हे बड़ाई देनेवाले मेरा कर्म्म निष्फल नहीं है हे कौरवों में श्रेष्ठ
आज्ञाकरो और चित्तमें खेद न करो ३३ काले सर्प्पके समान श्वास लेता अश्रु-
पातों से युक्त अप्रकाशित मुख राजा युधिष्ठिर उस भीमसेन से यह बचन बोले
३४ कि क्रोधयुक्त यशस्वी वासुदेवजी के पाञ्चजन्य शङ्खका शब्द जैसा सुनाई
देताहै ३५ निश्चय मालूम होताहै कि अब तेरा भाई अर्ज्जुन मृतक होकर सो-
ताहै उसके मरनेपर अब यह श्रीकृष्ण जी लौटते हैं ३६ पाण्डव जिस पराक्रमी
के बलसे अपना जीवन करते हैं और बड़े बड़े भयों में जिसकी ऐसे शरण लेते
हैं जैसे कि देवता इन्द्रकी लेते हैं ३७ जयद्रथ के मारनेकी इच्छा से वह शूर भ-
रतवंशियों की सेनामें गयाहै हे भीमसेन हम उसकी यात्राको तो जानते हैं प-
रन्तु लौटनेको नहीं जानते हैं ३८ वह अर्ज्जुन श्याम तरुण दर्शनीय महारथी
बड़े वक्षस्स्थल और भुजाओंका रखनेवाला मतवाले हाथीके समान पराक्रमी ३९
चकोरके समान नेत्रधारी रक्तमुख शत्रुओंके भयका बढ़ानेवालाहै हे शत्रुविजयी
तेरा कल्याणहो मेरे शोचका यह हेतुहै ४० हे महाबाहु भीमसेन सात्यकी और
अर्ज्जुन के कारण से मुझको इतना कष्ट बढ़ रहा है जैसे कि बारम्बार घृत की
आहुति से वृद्धियुक्त अग्नि ४१ उसकी ध्वजा के चिह्न को नहीं देखता हूं इसी
हेतुसे मूर्च्छा को पाताहूं उस पुरुषोत्तम को और महारथी सात्यकीको खोजकरो
वह सात्यकी उस तेरे छोटेभाई अर्ज्जुन के पीछे गया है मैं उस महाबाहु को न
देखकर मूर्च्छायुक्त होता हूं ४२।४३ निश्चय करके उस अर्ज्जुनके मरनेपर वह
श्रेष्ठ सात्यकी लड़ता है उस का कोई सहायक नहीं है इस हेतु से मूर्च्छा को
पाता हूं ४४ उस अर्ज्जुन के मरने पर वह युद्ध में कुशल सात्यकी लड़ता है

इस से तुम वहां जाओ जहां अर्ज्जुन गया है ४५ और जहां पर बड़ा पराक्रमी सात्यकी भी गया है हे धर्म्मज्ञ जो मेरा बचन करनेके योग्य तू मानताहै तो कर मैं तेरा बड़ाभाई हूं ४६ अर्ज्जुन तुझसे इस प्रकार खोजनेके योग्य नहीं है जैसे कि सात्यकी खोजनेके योग्यहै ४७ हे भीमसेन वह सात्यकी मेरे हितको चाहता हुआ अर्जुन के खोज करने को गयाहै जो कि कठिनतासे प्राप्त भयकारी और मूर्खोंको अप्राप्तहै हे भीमसेन दोनों कृष्ण और यादव सात्यकीको कुशलपूर्व्वक देखकर अपने सिंहनादसे प्रकट करो ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषड्विंशतितमोऽध्यायः १२६ ॥

एकसौसत्ताइसका अध्याय ॥

भीमसेन बोले कि पूर्व्व समयमें जिस रथने ब्रह्मा शिव इन्द्र और बरुणनाम देवताओं को सवार किया उसी रथपर श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन भी सवार होगये हैं उन दोनों को कभी भय उत्पन्न नहीं है मैं आपकी आज्ञा को शिरसे धारण करके जाताहूं शोच मतकरो मैं उन नरोत्तमों से मिलकर आप को बिदित करूंगा १।२ संजय बोले कि इसप्रकार कहकर वह पराक्रमी भीमसेन युधिष्ठिर को धृष्टद्युम्न आदिक शुभचिन्तकों के सुपुर्द करके चलदिया ३ बड़ा बली भीमसेन धृष्टद्युम्नसे यह बोला कि हे महाबाहो तुमको बिदितहै जैसे कि यह महारथी द्रोणाचार्य्य हैं वह सब उपायों से धर्म्मराज के पकड़ने में प्रवृत्तहैं हे धृष्टद्युम्न मेरा काम यात्रामें ऐसा बर्त्तमान नहीं है ४।५ जैसा कि हमारा बड़ा काम राजाकी रक्षामें है मुझको राजाकी यह आज्ञाहुई है मैं उनको उत्तर नहीं देसक्ताहूं ६ अब मैं वहां जाऊंगा जहांपर कि वह मृत्युकी इच्छा करनेवाला जयद्रथ नियतहै निस्सन्देह धर्म्मराजके बचनपर नियत होना योग्यहै ७ मैं बुद्धिमान् यादव सात्यकी और भाई अर्जुनके ढूंढ़ने को जाऊंगा सो अब तुम युद्धमें सावधान होकर राजायुधिष्ठिरकी चारोंओरसे रक्षाकरो ८ युद्धके मध्यमें सब कामों से मुख्य काम यही है हे महाराज यह सुनकर धृष्टद्युम्न भीमसेनसे बोला ९ हे भीमसेन तू किसी बातकी चिन्ता न कर और यात्रा करो मैं तेरे अभीष्ट को करूंगा द्रोणाचार्य्य धृष्टद्युम्न को युद्धमें विना मारेहुये किसी दशामें १० भी धर्म्मराज को नहीं पकड़सक्के इसके पीछे भीमसेन राजायुधिष्ठिर को धृष्टद्युम्नके सुपुर्द करके ११ और

वड़ेभाई गुरुरूप को दण्डवत्कर धर्म्मराजसे मिलकर यात्रा करनेवाला हुआ हे भरतवंशी जिस प्रकारसे अर्जुन गया था १२ उसी प्रकार मस्तकपर सूंघा हुआ शुभमङ्गलकारी आशीर्बाद सुनाया हुआ भीमसेन पूजिन प्रसन्नचित्त ब्राह्मणों को दक्षिणावर्त्ती करके १३ अग्नि, गौ, सुवर्ण, दूर्वा, गोरोचन, अमृतके स्थानमें जल घृत, अक्षत, दही इन आठों मङ्गलीक वस्तुओं को स्पर्श करके और कैरातिकनाम मधु को अर्थात् मादक रसको पीकर दूने युद्धके सामानों को रख मद से रक्तनेत्रवाला वीर १४ ब्राह्मणों से स्वस्तिबाचन किया हुआ विजय के उत्पत्ति की जतानेवाली विजयानन्द बढ़ानेवाली अपनी बुद्धिको देखता १५ अनुकूल पवनों से शीघ्रही विजयके उदयका देखनेवाला महाबाहु भीमसेन कवच और शुभकुण्डलधारी १६ बांजूबन्द हस्तत्राण वा रथका रखनेवाला रथियों में श्रेष्ठ होकर प्रस्थित हुआ उसका सुवर्ण से जटित लोहमयी कवच बहुमूल्य धनुष १७ सब ओरसे शरीरमें चिपटा हुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बिजली रखनेवाला बादल पीत रक्त कृष्ण और श्वेत बस्त्रों से अलंकृत १८ कण्ठत्राणसमेत ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि इन्द्रधनुष रखनेवाला बादल आप की सेनासे युद्धाभिलाषी भीमसेनके यात्रा करनेके समय १९ फिर पांचजन्य शंखका भयकारी शब्द हुआ हे राजा उस तीनोंलोकों के भयकारी पांचजन्यके बड़े शब्द को सुनकर २० धर्म्मकापुत्र युधिष्ठिर महाबाहु भीमसेनसे बोला कि यहशंख वृष्णियों में बड़े वीर श्रीकृष्णजी ने बड़े वेगसे कठिन बजाया है २१ इस शंखके राजा ने पृथ्वी अन्तरिक्ष और आकाश को महाशब्दायमान करदिया है निश्चय करके बड़े दुःख में अर्ज्जुन के पड़जाने से २२ चक्रगदाधारी श्रीकृष्णजी आपही सब कौरवों से लड़ते हैं निश्चय करके आर्य्या कुन्ती वा देखने वाली द्रौपदी और सुभद्रा ने बान्धवों समेत पापरूप शकुनों को कहाहै सो हे भीमसेन अब शीघ्रताकरके तुम वहां जाओ जहांपर कि अर्जुनहै २३।२४ हे वृकोदर अर्जुनके और यादव सात्यकीके न देखनेके कारण मेरी सब दिशा और विदिशा मोहसे गुप्त होती हैं २५ हे राजा धृतराष्ट्र वह भीमसेन गुरूसे यह आज्ञा दियागया कि जाओ जाओ इसके पीछे पांडुका पुत्र प्रतापवान् भीमसेन २६ धर्मके हस्तत्राण और अंगुष्ठत्राणका धारण करनेवाला हाथोंमें धनुष लिये भाईका हित करनेवाला बड़े भाईका भेजाहुआ २७ भीमसेन दुन्दुभी को बजाकर और बार-

म्बार शंखको भी शब्दायमानकरके सिंहनादसे गर्जकर बारम्बार प्रत्यंचाको खैंचताहुआ चला २८ उस शब्दसे बीरोंके चित्तोंको गिराकर अपने शरीरको भयकारी दिखलाता अकस्मात् शत्रुओंके सम्मुखचला २९ शिक्षित हींसतेमन और बायुके समान शीघ्रगामी बिशोक नाम सारथी से युक्त बहुत उत्तम शीघ्रगामी घोड़े उसको लेचले ३० मारते पीड़ादेते हाथसे प्रत्यंचाको अच्छीरीतिसे खैंचते लक्षबांधकर बाणों को छोड़ते पाण्डव भीमसेनने सेना मुखको इधर उधर करके छिन्नभिन्न करदिया ३१ सोमकों समेत पांचलदेशी शूर उस चलनेवाले महाबाहु के पीछे ऐसे चले जैसे कि इन्द्रके पीछे देवता चलते हैं ३२ हे महाराज आपके उन शूरबीरोंने मिलकर उसको घेरलिया जिनके कि यह नामहैं दुःशल, चित्रसेन, कुण्डभेदी, विविंशति ३३ दुर्मुख, दुस्सह, बिकर्ण, शल्य, बिन्द, अनुबिंद, सुमुख, दीर्घबाहु, सुदर्शन ३४ वृन्दारक, सुहस्त, सुषेण, दीर्घलोचन, अभय, रुद्रकर्मा, सुबर्मा, दुर्बिमोचन ३५ यह सब रथियोंमें श्रेष्ठ सेनासे युक्त और पीछे चलनेवालों समेत शोभायमानहुये और युद्ध में कुशल वह सब बीर भीमसेनके सम्मुखगये ३६ युद्धों में बड़ा शूरबीर महारथी चारों ओरसे उन युद्धकर्त्ता लोगोंसे घिराहुआ कुन्तीका पुत्र पराक्रमी भीमसेन उनको देखकर सम्मुखता में ऐसे बर्त्तमान हुआ जैसे कि बेगमान सिंह छोटे मृगों के सम्मुख होताहै ३७ वहां उन बीरों ने दिव्य महाअस्त्रोंको दिखलाया और बाणोंसे भीमसेनको ऐसे ढकदिया जैसे कि उदयहुये सूर्य्य को बादल आच्छादित करदेते हैं ३८ वह बेगसे उनको उल्लंघन कर द्रोणाचार्य्य की सेनापर दौड़ा और आगेसे हाथियों की सेनाको बाणों की बर्षासे ढकदिया ३९ उस बायु पुत्रने थोड़ेही समयमें सब दिशाओंको आच्छादित करके तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे उस हाथियोंकी सेनाको छिन्नभिन्न किया ४० जैसे कि वनके मध्यमें शरभके गर्जनेसे मृग भयभीत होतेहैं उसीप्रकार भीमसेन के गर्जने से सब हाथी भयभीत होकर भागे ४१ फिर बेगसे उस हाथियों के समूहोंको उल्लंघनकर द्रोणाचार्य्यकी सेनाके सम्मुखगया वहां आचार्य्यजी ने उस को ऐसे रोका जैसेकि उठेहुये समुद्रको मर्यादा रोकतीहै ४२ और मन्दमुसकान करतेहुये आचार्य्य जी ने उसको ललाटपर घायल किया उससे भीमसेन ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि उन्नतज्वाला रखनेवाला सूर्य्य होता है ४३ आचार्य्यजी ने कहा कि जैसा मेरा शिष्यअर्ज्जुन है उसी प्रकार यह भीमसेन है यह

मेरा पूजनकरेगा इस प्रकार मानतेहुये उन आचार्य्य ने भीमसेनसे कहा ४४ हे महाबाहु भीमसेन अब युद्धमें मुझ शत्रुको बिना विजय कियेहुये तुझको शत्रुओंकी सेना में प्रवेश करना योग्य नहीं ४५ जो वह तेरा छोटाभाई अर्जुन मेरी अनुमतिसे सेनामें प्रविष्टहुआ परन्तु यहां तुझसे मेरी सेना में प्रवेश करना असंभवहै ४६ फिर निर्भय क्रोधसे रक्तनेत्र शीघ्रता करनेवाला भीमसेन गुरूके वचनको सुनकर द्रोणाचार्य्यसे बोला ४७ हे ब्रह्मबन्धु अर्ज्जुन आपकी अनुमतिसे युद्धभूमि में नहीं गया वह निर्भय होकर इन्द्रकी सेना में भी प्रवेश करसक्ताहै ४८ उत्तमपूजनके करनेवाले अर्जुनसे आप पूजितहोकर प्रतिष्ठा दियेगये हो हे द्रोणाचार्य्य मैं दयावान अर्ज्जुन नहीं हूं मैं आपका शत्रु भीमसेनहूं ४९ तुम हमारे पिता गुरू और बन्धुहो और उसीप्रकारसे हम आपके पुत्रहैं प्रतिष्ठापूर्व्वक नम्रतासे नियत हम सब आपको इसरीतिसे मानते हैं ५० अब आपकी बातोंके करनेमें गुरुभक्ति पूर्व्वक गुरूकी प्रीति विपरीति दिखाई देती है जो तुम अपने को शत्रु मानतेहो तो वैसाही होय ५१ मैं भीमसेन तुम शत्रुरूप के योग्य कर्म्म को करताहूं हे राजा जैसे कि यमराज कालदण्डको घुमाताहै उसीप्रकार भीमसेनने गदाको घुमाकर ५२ द्रोणाचार्य्यके ऊपर छोड़ा वह रथसे कूदपड़े तब उस गदाने द्रोणाचार्य्यके रथको घोड़े सारथी ध्वजाको भी खण्ड २ अर्थात् चूर्ण करदिया ५३ और बहुतसे शूरवीरोंको ऐसे मर्द्दन किया जैसे कि वायु अपने वेगसे बृक्षों को करताहै फिर आपके उन पुत्रोंने उस उत्तमरथीको घेरलिया ५४ प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य दूसरे रथपर सवार होकर ब्यूहके द्वारको पाकर युद्ध के निमित्त सम्मुख नियत हुये ५५ हे महाराज उसके पीछे क्रोधयुक्त पराक्रमी भीमसेनने आगे से रथोंकी सेनाको बाणोंकी वर्षा से ढक दिया ५६ वह युद्ध में घायल महारथी युद्धमें भयकारी पराक्रमी और विजयाभिलाषी आपके पुत्र भीमसेनसे युद्ध करने लगे ५७ इसके पीछे पाण्डुनन्दन भीमसेन के मारने के अभिलाषी दुश्शासन ने अत्यन्त लोहमयी रथ शक्ति को फेंका ५८ भीमसेन ने आपके पुत्रकी फेंकी हुई उस महाशक्ति को आताहुआ देखकर दो खण्ड किये यह आश्चर्य्य सा हुआ ५९ फिर पराक्रमी क्रोधयुक्त भीमसेन ने दूसरे तीक्ष्ण तीनबाणोंसे गण्डभेदी सुषेण और दीर्घनेत्र इन तीनों आपके पुत्रोंको मारा ६० और युद्ध करनेवाले आपके वीर पुत्रों के मध्य कौरवोंकी कीर्त्ति बढ़ानेवाले वीर

वृन्दारक को भी मारा ६१ फिर भीमसेनने अभय रुद्रकर्म्मा और दुर्व्विमोचन इन तीनों आपके पुत्रोंको तीन बाणों से मारा ६२ हे महाराज उस बलवान के हाथ से घायल आपके पुत्रों ने प्रहारकर्त्ताओं में श्रेष्ठ भीमसेन को चारोंओर से घेर लिया ६३ वह सब युद्धमें भयकारी कर्म्मकर्त्ता भीमसेन पर ऐसे बाणों की वर्षा करने लगे जैसे कि वर्षाऋतु में बादल अपनी धाराओं से पर्व्वत पर वर्षा करते हैं ६४ जैसे कि पर्व्वत पाषाण वृष्टिको सहता है उसी प्रकार शत्रुओंका मारनेवाला वह पाण्डव भीमसेन उन बाणरूपी वर्षाको सहताहुआ पीड़ामान नहीं हुआ ६५ फिर हँसतेहुये भीमसेन ने बाणों से बिन्द अनुबिन्द को एक साथही आपके सुवर्म्मा नाम पुत्र समेत यमलोकमें पहुंचाया ६६ हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ इसके पीछे युद्ध में आपके पुत्र बीर सुदर्शनको भी घायलकिया और वह शीघ्रही गिरकर मरगया ६७ उस पांडुनन्दनने सब दिशाओंको अच्छीरीतिसे देखकर थोड़ेही समय में उस रथकी सेनाको तीक्ष्ण चलनेवाले बाणोंसे छिन्नभिन्न करदिया ६८ हे राजा इसके पीछे आपके पुत्र युद्धमें ऐसे छिन्नभिन्न होगये जैसे कि रथके शब्दसे और गर्जनेसे मृग छिन्नभिन्न होकर इधर उधर भगजाते हैं६९ भीमसेनके भयसे वह सब अकस्मात् भागे और भीमसेन आपके पुत्रोंकी बड़ी सेनापर दौड़ा ७० हे राजा युद्धमें उसने सब ओरसे कौरवोंको घायलकिया फिर भीमसेनके हाथसे घायल आपके शूरबीर ७१ भीमसेनको त्यागकर उत्तम घोड़ों को चलायमान करते युद्धभूमिसे चलेगये महाबली पाण्डव भीमसेनने युद्ध में उनको बिजयकरके ७२ सिंहनाद और भुजाओं के शब्दों को किया फिर महाबली भीमसेन अपने हाथोंकी हथेलियोंसे भी बड़ेभारी शब्दों को करके ७३ रथ की सेनाको दौड़ाकर उत्तम २ शूरों को मारता उत्तम २ रथियों को उल्लंघनकर द्रोणाचार्य्यकी सेनाके सम्मुखगया ७४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिशतोपरिसप्तविंशतितमोऽध्यायः १२७ ॥

एकसौअट्ठाइसका अध्याय ॥

संजय बोले कि युद्धमें रोकने के अभिलाषी हँसतेहुये आचार्य्यजीने रथकी सेनासे पार होनेवाले भीमसेन को बाणोंकी वर्षा से ढक दिया १ द्रोणाचार्य्य के धनुषसे गिरेहुये उन बाणोंके समूहोंको पानकरता अपने बलके प्रभावसे सबको

अचेतकरता वह भीमसेन भाइयोंके सम्मुखगया २ आपके पुत्रकी प्रेरणासे उत्तम धनुषधारी राजाओं ने बड़े बेगमें नियत होकर युद्धमें सवओरसे उसको घेरलिया ३ हे भरतबंशी उन सिंह समान गर्जनेवाले राजाओं से घिराहुआ उस भीमसेननें उन राजाओं के निमित्त अपनी घोर गदा को उठाया ४ और शत्रुओं के मारनेवाली उस गदा को बड़े बेगसे ऐसे फेंका जैसे कि दृढ़ चित्तवाले इन्द्रसे घुमाया हुआ इन्द्रबज्र होताहै हे महाराज उस गदाने आपकी सेनाके मनुष्यों का चूर्ण करडाला ५ हे राजा बड़े शब्दसे पृथ्वी को शब्दायमान करती अपने तेजसे प्रकाशित उस भयकारी गदाने आपके पुत्रों को भयभीत किया ६ आपके सब शूरबीर उस बेगमान प्रकाशित गदा को गिरता हुआ देखकर भयकारी शब्दों को कर करके इधर उधर को भागे ७ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र तब वहां रथसवार और मनुष्य उस गदाके असह्य शब्द को सुनकर अपने २ रथों से गिरपड़े ८ गदा हाथ में लेनेवाले भीमसेन से घायल आपके शूरबीर ९ युद्ध में ऐसे भागे जैसे कि ब्याघ्रके सूंघेहुये भयभीत मृग भागते हैं उस भीमसेनने युद्धमें उन कठिनतासे बिजय होनेवाले शत्रुओं को भगाकर पक्षियोंके राजागरुड़के समान बड़े बेगसे सेनाओं को उल्लंघन किया १० हे राजा भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजी उस प्रकार अप्रिय कर्म्म करनेवाले महारथी भीमसेनके सम्मुख गये ११ द्रोणाचार्य्य ने युद्धमें बाणरूपी तरङ्गों से भीमसेन को रोककर अकस्मात् शब्दों को करके पाण्डवोंके भय को उत्पन्न किया १२ महाराज महात्मा भीमसेन और द्रोणाचार्य्यका वह महायुद्ध ऐसा हुआ जैसा कि महाभयकारी देवासुरोंका युद्ध हुआ था १३ जब द्रोणाचार्य्यके धनुषसे निकले हुये तीक्ष्ण बाणों से सैकड़ों और हजारों बीर युद्धमें मारेगये १४ हे राजा इसके पीछे पाण्डव रथसे कूदकर बड़े बेगमें नियत होकर दोनों नेत्रों को बन्द करके पदाती द्रोणाचार्य्यके सम्मुख गया १५ पराक्रमी भीमसेन ने कन्धेपर शिर और छातीपर दोनों हाथों को नियत करके मन बायु और गरुड़के समान तीव्रतामें नियत होकर १६ जैसे कि उत्तम वृषभ लीलाही से जलकी वृष्टि को सहताहै उसी प्रकार नरोत्तम भीमसेनने बाणोंकी वर्षाको सहा १७।१८ हे श्रेष्ठ युद्धमें घायल उस बड़े पराक्रमीने द्रोणाचार्य्य के रथ को हाथसे ईशादण्डपर पकड़कर फेंकदिया हे राजा फिर युद्धमें भीमसेनके हाथ से फेंकेहुये द्रोणाचार्य्य शीघ्रही दूसरे रथपर सवार होकर व्यूहके द्वारपर गये १९

तब फिर उस निरुत्साहरूप गुरूको उसी प्रकारसे आताहुआ देखकर भीमसेनने वेगसे रथकी धुरीको पकड़कर २० बड़े क्रोध पूर्व्वक उस बड़े रथ कोभी फेंकदिया इसी प्रकार लीला पूर्व्वक भीमसेनने द्रोणाचार्य्यके आठ रथों को फेंका २१ फिर एक पलभरमेंही अपने रथपर नियत दिखाई पड़ा और आश्चर्य करके आपके शूरोंने उसकीओर को देखा २२ हे कौरव उसी क्षणमें भीमसेनके सारथीने शीघ्रही घोड़ों को चलायमान किया वहभी आश्चर्य साहुआ इसके अनन्तर बड़ा पराक्रमी भीमसेन अपने रथमें नियत होकर वेगसे आपके पुत्रकी सेनाकीओर दौड़ा २३।२४ जैसे कि उठा हुआ वेगवान वायु वृक्षोंका मर्द्दन करताहै उसी प्रकार युद्धमें क्षत्रियोंको मर्द्दन करता अथवा जैसे कि समुद्रका वेग पहाड़ोंको घेर लेताहै उसी प्रकार सेना को रोकता गया २५ वह बड़ा पराक्रमी बीर भोजबंशी कृतवर्मा से रक्षित सेना को पाकर और उसको बड़े वेगसे मथकर २६ तलके शब्दोंसे सेनाओं को डरातेहुये भीमसेनने सब सेनाओंको ऐसे बिजय किया जैसे कि शार्दूल सिंह गौ और बैलों को बिजय करता है २७ कृतबर्म्माकी सेना को उल्लंघनकर दुर्योधनकी सेना कोभी बिजय किया उसी प्रकार म्लेच्छोंके उन बड़े समूहों को जो कि युद्धमें कुशल थे उनको भी बिजय किया २८ लड़तेहुये महारथी सात्यकी को देखकर उपाय करनेवाला भीमसेन रथकी सवारी पर बड़ी तीव्रता से चला २९ हे महाराज अर्ज्जुन के देखनेका अभिलाषी पाण्डुनन्दन भीमसेन युद्धमें आपके शूरवीरों को उल्लंघन करके ३० उस पराक्रमी ने जयद्रथके मारनेके निमित्त पराक्रम और युद्ध करनेवाले महारथी अर्ज्जुन को वहां देखा ३१ हे महाराज बर्षाऋतुके समयमें गर्जनेवाले बादलके समान पुरुषोत्तम भीमसेनने उस अर्ज्जुन को देखकर बड़े शब्द किये ३२ हे कौरव अर्ज्जुन और बासुदेवजीने युद्धमें उस गर्ज्जनेवाले भीमसेनके भयकारी शब्द को सुना ३३ वह दोनों वीर एक साथ बारम्बार गर्ज्जनेवाले पराक्रमी भीमसेन के शब्द को सुनकर देखने के अभिलाषी हुये ३४ हे महाराज इसके पीछे अर्ज्जुन और सात्यकी ने बड़े शब्दोंको किया और उत्तम वृषभों के समान गर्जतेहुये सम्मुख गये ३५ फिर धर्मका पुत्र युधिष्ठिर धनुषधारी अर्जुन और भीमसेनके शब्दोंको सुनकर प्रसन्नहुआ उन दोनों के शब्दों को सुनकर राजा शोचसे रहित हुआ और उस समर्थ युद्धमें अर्जुन की ही बिजयकी आशाकरी ३६।३७ उसरीतिसे

मदोन्मत्त भीमसेनके गर्जनेपर धर्मपुत्र महाबाहु धनुर्धर युधिष्ठिरने मन्दमुसकान पूर्व्वक चित्तसे ध्यानकरके स्नेहमें प्रवृत्तहोकर यह वचन कहा हे भीमसेन तुमने मुझको जतलाया और मुझ गुरुकी आज्ञाका पालन किया ३८।३९ हे पाण्डव तुम जिनके शत्रुहो युद्ध में उनकी विजय नहीं होसक्ती सव्यसाची और संसार के धनोंका विजय करनेवाला अर्जुन युद्ध में प्रारब्धसे जीवताहै ४० और प्रारब्धही से सत्य पराक्रमी वीर सात्यकी भी आनन्द पूर्व्वकहै और मैं भी प्रारब्धही से वासुदेवजी और अर्ज्जुनको गरजता हुआ सुनताहूं ४१ जिसने युद्ध में इन्द्र को विजयकरके अग्निदेवता प्रसन्नकिये वह शत्रुओंका मारनेवाला अर्जुन युद्ध में प्रारब्धहीसे जीवताहै ४२ हमसब जिसके भुजोंके आश्रयसे जीवतेरहे वह शत्रुओं की सेनाओंका मारनेवाला अर्जुन प्रारब्धसे चिरंजीवी है ४३ जिसने देवताओंसे भी कठिनतासे विजय होनेवाले निवातकवची नाम दैत्यों को एकही धनुषके द्वारा विजयकिया वह अर्जुन भाग्यसे जीवताहै ४४ जिसने विराटनगर में गौओंके हरनेके निमित्त एकसाथ आतेहुये सब कौरवों को विजयकिया वह अर्जुन प्रारब्धसे जीताहै ४५ जिसने बड़े युद्ध में अपने भुजबलसे चौदहहजार कालकेयनाम असुरोंको मारा वह अर्ज्जुन प्रारब्धसे जीवताहै ४६ निश्चयकरके जिसने दुर्य्योधन के निमित्त पराक्रमी गन्धर्वोंके राजाको अपने अस्त्रोंके बलसे विजयकिया वह अर्जुन प्रारब्धसे जीवताहै ४७ मुकुट मालाधारी पराक्रमी श्वेत घोड़ोंसेयुक्त श्रीकृष्णजीको सारथीरखनेवाला और सदैव मेराप्याराहै वह अर्जुन प्रारब्धसे जीवताहै ४८ पुत्रके दुःखसे दुःखी और कठिन कर्म के करनेका अभिलाषी जयद्रथके मारनेकी प्रतिज्ञाको जिस अर्जुनने पूराकिया ४९ वह अर्ज्जुन कब जयद्रथको युद्ध में मारेगा और कब मैं सूर्य्यास्त होनेसे पूर्व्वही उस जयद्रथ को मारकर प्रतिज्ञा पूरी करनेवाले वासुदेवजी से रक्षित अर्ज्जुनसे मिलूंगा और कब दुर्य्योधन की वृद्धि में प्रीति रखनेवाला राजा जयद्रथ ५०।५१ अर्जुनके हाथ से गराहुआ शत्रुओंको प्रसन्न करेगा क्या राजा दुर्य्योधन अर्जुनके हाथसे गिराये ५२ सिन्धुके राजा जयद्रथ को देखकर युद्ध में हमारे विषय में कल्याण को धारण करेगा युद्धमें भीमसेनके हाथसे मारेहुये अपने भाइयोंको देखकर निर्बुद्धी दुर्य्योधन हमारे विषय में कल्याणको धारणकरेगा ५३ कहीं अभागा दुर्य्योधन पृथ्वीपर गिरायेहुये दूसरे बड़े शूरवीरोंको देखकर पश्चात्तापको करेगा ५४ कहीं

हमारी शत्रुता अकेले भीष्मसेही शान्ती को पावेगी और शेषों की रक्षाके निमित्त दुर्योधन सन्धिकरेगा ५५ तब इसप्रकारसे बहुत प्रकारकी चिंता करनेवाले कृपासे संयुक्त शरीरवाले उस राजाका घोर युद्ध वर्त्तमान हुआ ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशनोपरिअष्टाविंशतितमोऽध्यायः १२८ ॥

एकसौउन्तीसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि इसप्रकारसे गर्जनेवाले मेघस्तनित के समान शब्दायमान महाबली भीमसेनको किन वीरोंने रोका १ मैं तीनोंलोकों में ऐसे किसी शूरवीरको नहीं देखताहूं जो कि युद्ध में क्रोधयुक्त भीमसेनके सम्मुख नियतहोय २ हे संजय मैं यहां उस पुरुषको नहीं देखताहूं जो इसकालके समान गदाके घुमानेवाले भीमसेनके आगे नियत होय ३ जो रथसे रथको तोड़े हाथी को हाथी से मारे उसके युद्धमें कौन नियत होसक्ताहै साक्षात् इन्द्रभी वहां नहीं ठहरसक्ते हैं ४ दुर्य्योधनके हितमें प्रवृत्त कौन २ से वीर उस मेरे पुत्रोंके मारनेके अभिलाषी क्रोधयुक्त भीमसेनके आगे अच्छेप्रकारसे नियतहुये ५ कौन मनुष्य घासके समान मेरे पुत्रों को जलाने के अभिलाषी भीमसेनरूपी दावानलके आगे युद्धके मुख पर नियतहुये ६ जैसे कि कालसे सब सृष्टि परलोकको जातीहै उसीप्रकार भीमसेनके युद्धमें मेरे पुत्रोंको भगाहुआ देखकर किन वीरोंने भीमसेनको रोका ७ मुझको वैसा भय अर्ज्जुन श्रीकृष्ण और सात्यकी से भी नहीं है जैसा कि भय अग्निसे उत्पन्न होनेवाले धृष्टद्युम्नसे और भीमसेनसेहै ८ कौन शूरवीर उस मेरे पुत्रोंके नाश करनेके अभिलाषी अत्यन्त प्रकाशित भीमसेनरूपी अग्निके सम्मुख वर्त्तमान हुये हे संजय वह सब मुझ से कहो ९ संजय बोले कि पराक्रमी कर्णभी कठोर शब्द से युक्त इसप्रकार गर्जनेवाले महाबली भीमसेन के सम्मुख गया १० बड़े युद्ध को चाहते और युद्ध में अपने पराक्रमको दिखलाना चाहते और बहुत धनुषको चलायमान करते क्रोधयुक्त कर्णने भीमसेनके मार्गको ऐसे रोका ११ जैसे कि वायुके मार्ग को वृक्षरोकताहै भीमसेनने भी अहंकारी सम्मुख वर्त्तमान सूर्य्यके पुत्र कर्णको देखकर १२ कठिन क्रोध किया और बड़ी शीघ्रता से वीरने तीक्ष्णधारवाले बाणोंको उसके ऊपर फेंका कर्णने भी उन बाणोंको न सहकर शत्रुपर बाणोंको छोड़ा १३ इसके अनन्तर कर्ण और भीमसेनके युद्धमें

उपाय करनेवाले और तमाशा देखनेवाले शूरवीरोंके अंग अत्यन्त कंपायमान हुये १४ उन दोनोंकी प्रत्यंचाके शब्दों को सुनकर रथसवार और अश्व सवारों के भी अंग कांपनेलगे युद्धभूमि में भीमसेनके भयकारी शब्द को सुनकर १५ उत्तम २ क्षत्रियोंने आकाश और पृथ्वीको एक माना फिर महात्मा पाण्डव भीमसेन के घोर शब्दसे १६ युद्धमें सब शूरवीरोंके धनुष गिरपड़े और दोनों हाथों से शस्त्रभी गिरपड़े कितनेही शूरवीरोंके प्राण निकलगये १७ और सब भयभीत लोगों ने मूत्र और विष्ठाको छोड़ा और सब सवारियां निरुत्साह हुईं १८ और भयकारी अनेक अशकुन प्रकटहुये गृध्र कङ्क आदिक पक्षियोंके समूहोंसे पृथ्वी और आकाश मध्यभाग पूर्ण हुआ १९ हे राजा कर्ण और भीमसेनका अत्यन्त घोरयुद्ध हुआ इसके पीछे कर्णने भीमसेनको बीस बाणोंसे पीड़ामान किया २० औरशीघ्रही उसके सारथी को पांच बाणों से घायल किया भीमसेन भी हँसकर युद्धमें कर्णके सम्मुख दौड़ा २१ और शीघ्रता करके उस यशस्वीने चौंसठ बाण मारे बड़े धनुषधारी कर्ण ने चार बाण उसपर फेंके २२ हे राजन् हस्तलाघवताको दिखलाते हुये भीमसेन ने झुके पक्षवाले बाणों से बीचही में उनको काटा २३ कर्ण ने उस को बाणसमूहों से बहुत रीति करके ढक दिया कर्ण के हाथसे अत्यन्त ढकेहुये पाण्डुनन्दन २४ महारथी ने कर्ण के धनुष को मूठके स्थान परसे काटा और गुप्तपर्व्ववाले बहुत बाणोंसे उसकोछेदा २५ फिर भयकारी कर्मकरनेवाले कर्ण ने दूसरे धनुषको लेकर युद्धमें भीमसेन को छेदा २६ अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन ने वेगसे कर्णकी छातीपर गुप्तपर्व्ववाले तीन बाणोंको मारा२७ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ उस समय कर्ण छातीपर वर्त्तमानहुये उन बाणोंसे ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि तीन शिखरवाला ऊंचा पहाड़ शोभित होता है २८ उत्तम बाणों से घायल उस कर्णका रुधिर ऐसे निकलने लगा जैसे धातुके गिरानेवाले पर्वतसे धातु निकलती है २९ घटित प्रहारसे पीड़ित और कुछ कम्पायमान कर्ण ने कानतक खैंचकर बाणों से भीमसेन को वेधा ३० फिर हज़ारोंबाणों को फेंका उस दृढ़धनुषधारी कर्ण के बाणों से पीड़ामान भीमसेनने शीघ्रही क्षुर से उसकी प्रत्यञ्चा को काटा ३१ और फिर महारथी ने उसके सारथी कोभी भल्लसे रथके स्थान से नीचे गिरादिया और उसके चारों घोड़ों को यमपुर भेजा ३२ हे राजन् फिर कर्ण उस मृतक घोड़ेवाले रथसे कूदकर भयसे शीघ्रही वृषसेन

के रथपर सवार हुआ ३३ फिर प्रतापवान् भीमसेन युद्धमें कर्णको विजय करके बादलके समान शब्दायमान गर्ज्जना को गर्ज्जा ३४ युधिष्ठिर उसके उस शब्दको सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुये युद्ध में भीमसेन के हाथ से कर्णको पराजित मानकर ३५ पाण्डवी सेनाने चारोंओर से शङ्खों के शब्द किये आपके शूरबीर शत्रुओंकी सेनाके शब्द को सुनकर अत्यन्त गर्ज्जे ३६ उस राजा युधिष्ठिर ने प्रसन्नता पूर्व्वक युद्ध में शङ्ख बीणा आदिक प्रसन्नता के बाजों से अपनी सेना को प्रसन्न किया ३७ अर्ज्जुनने गाण्डीवधनुष को टङ्कार और श्रीकृष्णजीने पांचजन्य शङ्ख को बजाया हे राजन् तब गर्ज्जते हुये भीमसेनके शब्द उन सब शब्दों को दबाकर सब सेनाओं में बड़े कठोर सुनेगये ३८ इसके पीछे पृथक् २ बाण और अस्त्रों से कर्ण ने बड़ी नम्रता से प्रहार किये और भीमसेन ने कठोरतासे प्रहार किये ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकोनत्रिंशतितमोऽध्यायः १२९ ॥

एकसौतीसका अध्याय ॥

संजय बोले कि उस सेनाके पृथक् २ होने और जयद्रथके लिये अर्जुन सात्यकी और भीमसेनके जानेपर आपका पुत्र द्रोणाचार्य्य के पास गया १ एक रथके द्वाराही शीघ्रता करता और बहुत बातों को बिचारता हुआ गया आपके पुत्रका वह रथ बड़ी शीघ्रतासे युक्त २ मन बायुके समान वेगवान् शीघ्रही द्रोणाचार्य्य के पासगया और क्रोधसे रक्तनेत्र होकर आपका पुत्र उनसे बोला ३ अर्थात् हे कौरवनन्दन भयसे उत्पन्न होनेवाले वेगसे युक्त वह दुर्योधन यह बचन बोला कि अजेय महारथी अर्जुन सात्यकी और भीमसेन सब बड़ी सेनाको विजय करके बिना रुकेहुये जयद्रथके सम्मुख वर्त्तमानहुये ४५ वह सब अजेय महारथी सब सेनाओं को विजय करके वहांभी प्रहार करते हैं ६ हे बड़ाई देनेवाले आप किस रीति से सात्यकी और भीमसेनसे उल्लंघन कियेगयेहो इस लोक में यह आश्चर्य्य कीसी बात है जैसे कि समुद्रका सूखजाना ७ हे उत्तम ब्राह्मण सात्यकी अर्ज्जुन और भीमसेन के हाथसे आपके पराजय होने को लोग बड़ा आश्चर्य करते हैं ८ कि धनुर्वेदके पारगामी द्रोणाचार्य युद्धमें कैसे विजय किये गये सब शूरबीर इस प्रकारसे कहते हैं यह आपकी पराजय श्रद्धा और विश्वास

के योग्य नहीं है ६ निश्चय करके मुझ अभागेका युद्ध में पराजयपूर्व्वक विनाशही है जिस स्थानमें कि तीन रथियोंने तुम सरीखे पुरुषोत्तम को उल्लंघन किया १० ऐसी दशामें इस करने के योग्य कर्म्ममें जो आपका कहना योग्य है उसको कहो जो वह व्यतीत हुआ सो व्यतीत हुआ अब आगे शेषवचेहुये को विचारो ११ शीघ्रता से समयके अनुसार जयद्रथ का जो काम है उसको अच्छी रीतिसे विचारकर करो व्याकुल मतहो १२ द्रोणाचार्य्यजी बोले कि जो बहुत प्रकारसे विचारने और करनेके योग्यहै हे तात उसको मुझसे सुनो कि पाण्डवोंके तीनों महारथी उल्लंघन करनेवालेहुये १३ उन्होंके पीछेसे जितना भयहै उतनाही उनके आगे है मैं उसको बड़ीबात मानताहूं जिस स्थानपर श्रीकृष्ण और अर्जुनने १४ वह भरतवंशियोंकी सेना आगे और पीछे से आधीनतामें करी वहां मैं जयद्रथकी रक्षा को करनेके योग्य मानताहूं १५ हे तात क्रोधयुक्त अर्जुनसे भयभीत वह जयद्रथ हमसे बड़ी रक्षाके योग्यहै भयकारीरूप सात्यकी और भीमसेन जयद्रथके सम्मुख गये १६ यह वह द्यूत प्राप्तहुआ जो कि शकुनिकी बुद्धिसे उत्पन्न हुआहै उस सभामें न विजयहुई न पराजयहुई १७ अब यहां बाजी करनेवाले हम लोगोंकी जय पराजयहै पूर्व्व समयमें शकुनी कौरवोंकी सभामें जिन भयकारी पांसों को मानता हुआ खेला है वह कठिनतासे सहने के योग्य बाण हैं १८। १६ हे राजन् जहांपर वह बहुतसे कौरव नियत हैं हे तात उस सेना को द्यूत खेलनेवाला और बाणों को पांसे जानो २० उसमें जयद्रथ दांवहै फिर जयद्रथकेही विषयमें बड़ा द्यूत शत्रुओं से हुआ २१ हे महाराज यहां तुम सब अपने जीवन को त्याग करके युद्धमें बुद्धिके अनुसार जयद्रथकी रक्षा करनेके योग्यहो २२ दांव लगानेवाले हम लोगोंकी उस स्थानपर विजय और पराजय है जहांपर कि वह बड़े उपाय करनेवाले धनुषधारी जयद्रथकी रक्षा करते हैं २३ तुम आप वहां शीघ्र जावो और रक्षा करनेवालोंकी रक्षाकरो मैं इसी स्थानपर नियत हूंगा और शत्रुओं को यमलोकमें भेजूंगा २४ पांचालों को पाण्डव और सृञ्जियोंसमेत मारूंगा इसकेपीछे गुरुकी आज्ञा पातेही दुर्योधन शीघ्र चलागया २५ पीछे चलनेवालों समेत अपनेको कठिन कर्मके अर्थ उद्युक्त करके गया पांचालदेशी युधामन्यु और उत्तमौजस जो कि चक्रके रक्षकथे २६ वह बाहरकी ओरसे सेना में प्रवेशकरके अर्जुनके पासगये हे महाराज जोकि पूर्व्व में कृतवर्मासे रोके

गये थे २७ हेराजन् युद्धाभिलाषीपने से आपकी सेनामें अर्ज्जुनके प्रवेश करने पर दोनों वीर बगलसे आपकी सेनाको चीरकर सेनामें प्रवेशितहुये २८ राजादुर्योधनने बगलमेंसे आयेहुये उनदोनोंको देखा पराक्रमी शीघ्रता करनेवाले भरतवंशी दुर्योधनने उन जल्दी करनेवाले दोनोंभाइयोंके साथ उत्तम युद्धकिया २९ वह दोनों जो प्रसिद्ध महारथी और क्षत्रियों में अत्यन्त श्रेष्ठ जिन्होंने धनुषको ऊंचाकर रक्खाथा उसके सम्मुखगये ३० युधामन्युने तीसबाणोंसे उसको घायल करके बीसबाणसे उसके सारथीको और चारबाणसे चारों घोड़ोंको घायलकिया ३१ आपके पुत्र दुर्य्योधनने एकबाणसे युधामन्युकी ध्वजाको दूसरे बाणसे उस के धनुषको काटकर ३२ भल्लसे उसके सारथीको रथके बैठकके स्थानसे नीचे गिरादिया उसके पीछे चार तीक्ष्ण बाणोंसे चारों घोड़ोंको छेदा ३३ अत्यन्त क्रोधयुक्त शीघ्रता करनेवाले युधामन्युने युद्ध में तीसबाण आपके पुत्रपर छोड़े ३४ और इसी प्रकार अत्यन्त क्रोधयुक्त उत्तमौजा ने सुवर्णजटित तीक्ष्णबाणों से छेदा और उसके सारथीको यमलोक में भेजा ३५ हे राजेन्द्र दुर्य्योधनने भी उस पांचालदेशी उत्तमौजा के चारों घोड़ोंको और उन दोनों आगे पीछेवाले सारथियों को मारा ३६ युद्ध में मृतक घोड़े और सारथीवाला उत्तमौजा शीघ्रतासे अपने भाई युधामन्युके रथपर सवारहुआ ३७ उसने भाईके रथको पाकर दुर्य्योधनके घोड़ोंको बहुत बाणों से घायलकिया वह घोड़े मृतकहोकर पृथ्वीपर गिरपड़े ३८ युधामन्युने घोड़ोंके गिरनेपर युद्ध में शीघ्रही उत्तम बाणसे उसके धनुष और तरकसको काटा ३९ आपके पुत्र राजाने मृतक घोड़े और सारथीवाले रथसे उतर गदाको लेकर उन दोनों पांचालदेशियों को पीड़ावान्‌किया ४० तब उस क्रोधयुक्त आतेहुये कौरवपति दुर्य्योधनको देखकर युधामन्यु और उत्तमौजा रथसे कूदकर पृथ्वीपर चलेगये ४१ इसके पीछे उस क्रोधयुक्त गदाधारी ने गदा से उस सुवर्णजटित रथको घोड़े सारथी और ध्वजासमेत खण्ड २ करदिया ४२ शत्रुसंतापी वह मृतक घोड़े और सारथीवाला आपका पुत्र रथको तोड़कर शीघ्रही शल्यके रथपर सवारहुआ ४३ इसके पीछे पांचालदेशियों में श्रेष्ठ दूसरे राजपुत्र महारथी रथपर सवार होकर अर्जुनके पासगये ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिएकशततीसोऽध्यायः १३० ॥

एकसौइकतीसका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे महाराज रोमहर्षण करनेवाले युद्धके वर्त्तमान होने सबके व्याकुल होने और सब प्रकारसे पीड़ावान् होनेपर १ कर्णने भीमसेनको युद्धके निमित्त ऐसे रोका जैसे कि वनमें मतवाला हाथी मतवाले हाथीके सम्मुख जाता है २ धृतराष्ट्र बोले कि जो वह महाबली कर्ण और भीमसेन कठिन युद्ध करने वाले हुये तब कहो कि यहयुद्ध अर्जुनके रथके पास कैसाहुआ ३ युद्धमें भीमसेन से कर्ण पूर्व्वही विजयकिया गयाथा फिर वह महारथी कर्ण किस प्रकारसे भीमसेनके सम्मुख हुआ ४ अथवा भीमसेनही युद्ध में कैसे उस कर्णके सम्मुखगया जो कि पृथ्वीपर रथियों में अत्यन्त श्रेष्ठ महारथी विख्यातहै ५ धर्मराज युधिष्ठिर ने भीष्मपितामह और द्रोणाचार्य्य को छोड़कर सिवाय महारथी कर्णके किसी और से भय नहीं पाया ६ हे महाबाहो वह युधिष्ठिर सदैव महात्मा कर्णके पराक्रमको शोचता और उससे भयको करताहुआ बहुतवर्षसे नहीं सोताहै भीमसेन ने किस प्रकार करके उस कर्णसे युद्धकिया ७ पाण्डव भीमसेनने उस ब्राह्मणों के भक्त पराक्रमी युद्धों में मुख न फेरनेवाले शूरवीरों में श्रेष्ठ कर्णसे कैसे २ युद्ध किया ८ जो वह बड़े वीर पराक्रमी कर्ण और भीमसेन युद्ध में सम्मुखहुये उन दोनोंका किस प्रकारका युद्धहुआ ९ जिसने पूर्व्व में अपना भायपनेका नाता दिखाया वह दयावान् कर्णभी कुन्ती के वचनोंको स्मरण करता भीमसेनके साथ में कैसे लड़ा १० अथवा शूरवीर भीमसेन प्राचीन शत्रुताको स्मरण करताहुआ सूतके पुत्र कर्ण से कैसे युद्ध करनेवाला हुआ ११ मेरापुत्र दुर्य्योधन सदैव कर्ण मेंही यह भरोसा करताहै कि कर्णही सब पाण्डवों को विजय करेगा १२ मेरेअभागे पुत्र दुर्य्योधन को युद्ध में विजयकी आशा जिस में है वह कर्ण भयकारी कर्म्म करनेवाले भीमसेन के साथ किस प्रकारसे लड़ा १३ मेरे पुत्रों ने जिसको अपना आश्रय जानकर महारथियों से शत्रुता करी हे तात वह भीमसेन उस सूतके पुत्रके साथ कैसे लड़नेवाला हुआ १४ सूत पुत्रके कियेहुये अनेक अनुपकारी कर्म्मों को स्मरण करतेहुये राधेय कर्ण से कैसे युद्ध किया १५ जिस पराक्रमी अकेले ने सब पृथ्वीको एक रथके द्वारा विजय किया उस सूतके लड़के के साथ भीमसेनने किसप्रकारसे युद्ध किया १६ जोकि दो कुण्डल और कवच-

धारी शरीरसे उत्पन्न हुआ उस सूतपुत्र के साथ भीमसेन ने कैसे युद्धकिया १७ जिस प्रकार से उन दोनोंका युद्ध हुआ और दोनोंमें जो बिजयी हुआ उसको मुख्यता समेत मुझसे कहो १८ क्योंकि हे सञ्जय तुम बृत्तान्तों के बर्णन करने में बड़े सावधानहो सञ्जय बोले फिर भीमसेनने रथियों में श्रेष्ठ कर्ण को छोड़कर वहां जानेकी इच्छा करी जहांपर कि वे दोनों बीर श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनथे १९ हे महाराज कर्ण उस जातेहुये भीमसेनके पास जाकर बाणोंसे ऐसे बर्षाकरने लगा जैसे कि बादल पर्व्वत पर पानीकी बर्षा करताहै २० तब प्रफुल्लित कमलके समान मुखसे हँसतेहुये पराक्रमी अधिरथी कर्णने जातेहुये भीमसेन को युद्धमें बुलाया २१ कर्ण बोला हे भीमसेन शत्रुओं के साथ तेरा युद्ध स्वप्नमें भी अधिक चिन्ताके योग्य नहीं हुआ सो तुम किस हेतुसे अर्ज्जुनके देखनेकी इच्छासे मुझको पीठ दिखलाते हो २२ हे पाण्डुनन्दन यह बात कुन्ती के पुत्रों के समान नहीं है इस हेतुसे मेरे सम्मुख नियत होकर बाणोंकी बर्षासे मुझको ढको २३ तब भीमसेन युद्ध में कर्णके बुलाने को न सहसका और आधे मण्डल को घूमकर सूतके पुत्रसे युद्ध किया २४ वह बड़े सीधे चलनेवाले बाणों से उस कवचधारी और सब शस्त्रोंमें कुशल और द्वैरथ आनेवाले कर्णपर शरोंकी बर्षाकने लगा २५ युद्धका अंतकरना चाहते और मारने के अभिलाषी बड़े पराक्रमी भीमसेनने उसके पीछे चलनेवाले को मारकर उस कर्णको घायल किया २६ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र शत्रुसन्तापी क्रोधभरे भीमसेनने क्रोधसे भयकारी नानाप्रकारके बाणों की बर्षा उसपर करी २७ फिर उत्तम अस्त्रके जाननेवाले कर्ण ने उस मतवाले हाथी के समान चलनेवाले भीमसेनके उन बाणोंकी वर्षाको अस्त्रोंकी मायाओं से दूर किया २८ वह महाबाहु बड़ानामी धनुर्द्धर पराक्रमी कर्ण अपनी विद्याके बलसे विधिके अनुसार आचार्य्य के समान भ्रमण करने लगा २९ हे राजन् वह हँसताहुआ कर्ण उस क्रोधसे लड़नेवाले कुन्ती के पुत्र भीमसेन के सम्मुखहुआ ३० चारोंओर से वीरोंके लड़ने और देखने पर भीमसेन ने युद्धमें कर्ण की उस अस्वज्ञता को नहीं सहा ३१ पराक्रमी क्रोधयुक्त भीमसेनने वत्सदन्त नाम बाणों से उस सम्मुख वर्त्तमान कर्णको हृदयपर ऐसा घायल किया जैसे कि चाबुकोंसे बड़े हाथीको घायल करते हैं ३२ फिर सुवर्ण कवचसे अलंकृत सूतपुत्र को सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्ण धारवाले अच्छी रीति से छोड़ेहुये सात बाणों से छेदा ३३

कर्ण ने सुनहरी जालों से ढके वायुके समान शीघ्रगामी भीमसेन के घोड़ों को पांच पांच वाणों से घायल किया ३४ हे राजन् इसके पीछे आधेही निमिष में कर्णका उत्पन्न कियाहुआ वाणरूपी जाल भीमसेनके रथपर दिखाईदिया ३५ तब भीमसेन कर्णके धनुष से निकलेहुये वाणोंसे रथ ध्वजा और सारथी समेत ढक गया ३६ कर्णने चौंसठवाणसे उसके दृढ़ कवच को तोड़ा और मर्मभेदी वाणोंसे बड़ी शीघ्रता पूर्वक भीमसेनको घायलकिया ३७ इसके पीछे भयसे उत्पन्नहोनेवाली व्याकुलतासे रहित महाबाहु भीमसेनने कर्णके धनुपसे निकलेहुये वाणों से भयको न करके सूतपुत्रसे युद्धकिया ३८ हे महाराज उसभीमसेनने कर्णकेधनुपसे प्रकटहुये सर्पाकार वाणोंको सहा और युद्धमें पीड़ाको नहीं पाया ३९ इसके पीछेप्रतापवान् भीमसेनने युद्धमें कर्णको तीक्ष्ण बेतवाले पचीस भल्लोंसे घायल किया ४० कर्णने विना उपायकेही अपने वाणोंसे उस जयद्रथके मारनेके इच्छावान् भीमसेन को अत्यन्त ढकदिया ४१ कर्णने युद्धभूमिमें साधारणतासे भीमसेनके साथ युद्ध किया और वैसेही प्रथमकी शत्रुता स्मरण करके भीमसेन ने क्रोधसे कठोरता पूर्वक युद्ध किया ४२ क्रोधयुक्त शत्रुओंके मारनेवाले भीमसेन ने उस अपमान को न सहा और शीघ्रता से वाणोंकी वर्षा उसपरकरी युद्ध में उस भीमसेनके छोड़ेहुये वह वाण सबओरसे पक्षियों के समान शब्द करते वीर कर्णके ऊपर गिरे ४३।४४ भीमसेनके धनुपसे सुनहरीपुंख और साफ नोकवाले उन वाणोंने कर्ण को ऐसे ढकदिया जैसे कि शलभनाम पक्षी अग्नि को आच्छादित करते हैं ४५ हे भरतवंशी राजाधृतराष्ट्र फिर चारोंओरसे ढकेहुये रथियों में श्रेष्ठ कर्णने भयकारी वाणोंकी वर्षाकरी ४६ भीमसेनने उस युद्धमें शोभा पानेवाले कर्णके उन वाणों को जो कि वज्रके समान थे बहुत भल्लों से बीचही में काटा ४७ हे भरतवंशी फिर शत्रुहन्ता सूर्य्यके पुत्र कर्ण ने युद्धमें उस भीमसेन को वाणोंकी वर्षा से ढकदिया ४८ वहां युद्धमें सब शूरवीरोंने भीमसेन को शायकों से छेदा हुआ शरीर ऐसा देखा जैसे कि शललों से घायल कुत्ता होताहै उस वीरने युद्धमें कर्णके धनुप से निकलेहुये साफ वाणों को ऐसे धारण किया जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों को धारण करताहै ४९।५० वसन्तऋतुमें बहुतसे पुष्पोंसे युक्त अशोकवृक्षके समान रुधिरसे लिप्त अंग भीमसेन महाशोभायमान हुआ ५१ फिर क्रोधसे रक्तनेत्र महाबाहु भीमसेनने युद्धमें महाबाहु कर्णके उस

कर्म्म को नहीं सहा ५२ उसने कर्ण को पचीस बाणोंसे ऐसे घायल किया जैसे कि श्वेत पर्व्वतको बड़े बिषधारी सर्पोंसे घायल करते हैं फिर भी देवताके समान पराक्रमी भीमसेनने शरीरसे कवच त्यागनेवाले सूतपुत्रको मर्मोंपर चौदहबाणों से घायलकिया ५३।५४ फिर प्रतापवान् हंसतेहुये भीमसेनने शीघ्रही दूसरे बाण से कर्णके धनुषको काटकर ५५ और तीक्ष्ण बाणोंसे चारों घोड़े और सारथीको मारा और सूर्य्य के समान प्रकाशित नाराचनाम बाणसे कर्ण को छातीपर घायलकिया ५६ वह बाण बड़े शीघ्र कर्ण को घायलकरके पृथ्वी में ऐसे समागये जैसे कि बादलको तोड़कर सूर्य्यकी किरणें समाजाती हैं ५७ उस प्रकार बाणों से घायल टूटा धनुष पुरुषोत्तम कर्ण बड़ी ब्याकुलता को पाकर दूसरे रथपर चलागया ५८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकत्रिंशतितमोऽध्यायः १३१ ॥

एकसौबत्तिसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि जो भृगुबंशियों में श्रेष्ठ और धनुषधारी श्रीमहादेवजीके शिष्य कर्ण ने उन परशुरामजीकी शिष्यताको पाया और अस्त्रविद्या में उनके समानहै १ अथवा शिष्यताके गुणोंसे युक्त कर्ण उनसे बिशेषहै वह कुंतीके पुत्र भीमसेनसे लीला पूर्व्वकही बिजय कियागया २ हे संजय जिसमें मेरे पुत्रों की बिजयकी बड़ी आशा है उस कर्ण को भीमसेनसे पराजित देखकर दुर्य्योधन ने क्या कहा ३ हे तात बलमें प्रशंसित पराक्रमी भीमसेन ने कैसे २ युद्ध किया अथवा इससे पूर्व्व कर्णने युद्ध में उस अग्निके समान प्रज्वलित क्रोधरूप भीमसेन को देखकर क्या किया संजय बोले कि वायुसे उठायेहुये समुद्रके समान कर्ण विधिके अनुसार तय्यार कियेहुये दूसरे रथपर सवारहोकर पाण्डव भीमसेन के सम्मुख आया ४।५ हे राजा आपके पुत्रोंने कर्णको क्रोधयुक्त देखकर भीमसेन को अग्निके मुखमें होमाहुआ माना ६ इसके पीछे कर्ण धनुष और तलके भयकारी शब्दों को करके भीमसेनके रथकी ओर चला ७ फिर उस सूर्य्य के पुत्र शूर कर्ण और वायुपुत्र महात्मा भीमसेन का युद्ध भयकारी हुआ ८ क्रोधयुक्त और परस्पर मारने के अभिलाषी नेत्रों से भस्म करनेवाले दोनों महाबाहों ने परस्पर में देखा ९ क्रोध से रक्तनेत्र सर्प की समान श्वास लेनेवाले शत्रुविजयी

दोनों शूरों ने सम्मुख होकर परस्पर घायल किया १० व्याघ्रों के समान क्रोध युक्त और बाजपक्षियों के समान शीघ्रगामी और शरभनाम पक्षियों के समान क्रोधभरे परस्पर युद्धकर्त्ताहुये ११ उसके पीछे शत्रुविजयी भीमसेन द्यूतके पांसे वनके दुःख और बिराट नगरमें पायेहुये दुःखों को १२ और आपके पुत्रोंके हाथ से वृद्धियुक्त रत्नवाले देशों के हरणको और पुत्रों समेत तुमसे दियेहुये वारम्बार के कष्टोंको १३ जिस दुर्योधनने निरपराधिनी कुन्तीको पुत्रों समेत भस्मकरना चाहा और उसी प्रकार सभा में दुराचारियों के हाथसे द्रौपदी के कष्टों को १४ हे भरतबंशी उसी प्रकार दुश्शासनके हाथसे शिरकी चोटीका पकड़ना और कर्ण की ओर कठोर बचनोंका कहना १५ कि दूसरे पतिको इच्छाकर तेरे पति नहींहैं थूथेतल अर्थात् नपुंसकों के समान सब पाण्डव नरक में पड़े इन सब बातों को स्मरण करता १६ और हे कौरव उस समय आपके सम्मुख जो २ बातें कौरवोंने कहीं और आपके पुत्र दासीभावमें करके द्रौपदी के भोगनेके अभिलाषीहुये१७ और कर्णने आपके सम्मुख सभाके मध्यमें श्याम मृगचर्मधारी वनवासको जा- नेवाले पाण्डवोंको भी जो कठोर बचनकहे १८ और जैसे कि सुखीहुये क्रोधयुक्त निर्बुद्धी आपके पुत्रने दुःखी पाण्डवोंको तृणके समान करके भीमसेनके चलने की नकल करके उपहास किया और बहुतसी बातें करीं १९ शत्रुओं का मारने वाला धर्मात्मा भीमसेन अपनी बाल्यावस्थासे दुःखोंको शोचता जीवनसे दुःखी हुआ २० इसके पीछे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ शरीरकी प्रीति त्यागनेवाला भीमसेन सुवर्णपृष्ठी बड़ी कठिनता से चढ़ाने के योग्य धनुष को चढ़ाकर कर्ण के सम्मुख गया २१ उस भीमसेन ने कर्णके रथपर प्रकाशित तीक्ष्णधार बाणोंके जालों से सूर्य्यकी किरणोंको रोका २२ इसके पीछे कर्णने हँसकर शीघ्रही तीक्ष्णधार बा- णोंसे इस भीमसेनके बाणजालों को तोड़ा २३ तब उस महाबाहु महाबली कर्ण ने तीक्ष्णधारवाले नौ बाणोंसे भीमसेन को घायल किया २४ चाबुकोंसे रोकेहुये हाथी के समान बाणोंसे रोकाहुआ वह भ्रांती से युक्त भीमसेन कर्ण के सम्मुख दौड़ा २५ कर्णभी उस बेगसे गिरते महाबेगवान् पाण्डवों में श्रेष्ठ भीमसेनके स- म्मुख ऐसेगया जैसे कि युद्धमें मतवाला हाथी मतवाले हाथीके सम्मुखजाताहै२६ इसके पीछे सौभरीके शब्दके समान शंखको बजाया तब सेना प्रसन्नता से ऐसे चलायमानहुई जैसे कि उठाहुआ समुद्र २७ भीमसेनने हाथी घोड़े रथ और

पतियोंसे पूर्ण उस उठीहुई सेनाको देखकर और कर्णको पाकर शायकोंसे ढकदि-या २८ कर्णने युद्धमें ऋक्षवर्ण घोड़ोंको हंसवर्णवाले उत्तम घोड़ोंसे मिलादिया और पाण्डवको बाणोंसे ढकदिया २६ वायुके समान शीघ्रगामी ऋक्षवर्ण घोड़ों को श्वेत रंगवाले घोड़ों से मिलाहुआ देखकर आपके पुत्रों की सेना हाहाकार करनेवाली हुई ३० हे महाराज वह वायुके समान शीघ्रगामी श्वेत और श्याम रंगवाले घोड़े ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि आकाश में बादल होते हैं आपके पुत्रोंके महारथी उन क्रोधरूप और क्रोधसे रक्तनेत्र कर्ण और भीमसेन को देख कर बड़े भयपूर्व्वक कम्पायमानहुये ३१।३२ उन दोनोंकी युद्धभूमि यमराजवाले देशके समान भयकारी और ऐसे कठिनता पूर्व्वक देखनेके योग्य हुई जैसे कि प्रेतोंके राजा यमराजका पुरहोताहै ३३ उस अपूर्व्व रंगभूमिको देखते महारथियों ने बड़े युद्ध में प्रत्यक्षतासे एककी भी विजयको नहीं देखा ३४ हे राजा पुत्रके साथ आपका दुर्मन्त्र होनेपर उन बड़े अस्त्रज्ञोंके कठिन युद्धको देखा ३५ तीक्ष्ण बाणों से परस्पर ढकते उन दोनों शत्रुसंतापियोंने बाणों की वृष्टी के द्वारा आ-काशको बाण जालोंसे संयुक्त करदिया ३६ तीक्ष्ण बाणों से परस्पर प्रहार करने वाले वह दोनों महारथी ऐसे बड़े दर्शन के योग्य हुये जैसे कि वर्षा करनेवाले दो बादल होते हैं ३७ हे प्रभु सुवर्णजटित बाणोंको छोड़ते उन दोनों शत्रु वि-जयियों ने आकाशको ऐसा प्रकाशितकिया जैसे कि बड़ी उल्काओंसे होता है हे राजा उन दोनोंके छोड़ेहुये बाण जो कि गिद्धके पक्षसे युक्त थे ऐसे शोभाय-मानहुये जैसे कि शरदऋतुमें आकाश में मतवाले सारसों की पंक्तियां होती हैं श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनने शत्रुओंके विजय करनेवाले भीमसेनको कर्णके साथ युद्ध करनेवाला देखकर भीमसेनके ऊपर बड़ाभारी भारमाना ३८। ३९। ४० वहां कर्ण और भीमसेनके छोड़े बाणोंसे महाघायल घोड़े मनुष्य और हाथी बाणोंके पतनस्थानों को उल्लंघन कर गिरपड़े ४१ हे महाराज राजा धृतराष्ट्र उन गिरते गिरेहुये और निर्जीव बहुतसे मनुष्य घोड़े आदिसे आपके पुत्रोंके मनुष्यों का विनाशहुआ ४२ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ पृथ्वी एकक्षणभरमेंही निर्जीव मनुष्य घोड़े और हाथियोंके शरीरों से पूर्णहोगई ४३॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिद्वात्रिंशोऽध्यायः १३२॥

एकसौतैंतिसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे सञ्जय मैं भीमसेनके पराक्रमको अत्यन्त अपूर्व्व मानताहूं जो युद्धमें तीव्र पराक्रमी कर्ण से युद्ध करनेवाला हुआ १ जो कर्ण युद्ध भूमिमें सब शस्त्रधारी चढ़ाई करनेवाले देवताओंकोभी यक्ष असुर और मनुष्यों समेत को हटा सक्ताहै २ उसने उस युद्धमें उस लक्ष्मी से शोभित पाण्डव भीमसेनको युद्धमें कैसे नहीं विजय किया हे सञ्जय इस हेतुको मुझसे कहो ३ प्राणोंके द्यूतमें उन दोनोंका युद्ध किस प्रकारसे हुआ मैं मानताहूं कि इस युद्धमें जयाजय दोनों मिलीहुई हैं ४ हे सूत मेरा पुत्र दुर्य्योधन युद्धमें कर्णको पाकर गोविन्दजी और यादवों के साथ पाण्डवों के विजय करनेको साहस करताहै ५ युद्धमें भयकारी कर्म्म करनेवाले भीमसेन के हाथसे कर्ण को बारम्बार पराजित हुआ सुनकर बड़ा मोह होताहै ६ मैं अपने पुत्रके अन्यायों से कौरवों को विनाशहुआ मानताहूं हे सञ्जय वह कर्ण बड़े धनुषधारी पाण्डवोंको विजय नहीं करसकेगा ७ कर्ण ने पाण्डवों के साथ जो युद्ध किया तो सर्व्वत्र पाण्डवोंनेही युद्धभूमि में कर्णको विजय किया ८ हे तात पाण्डव लोग देवताओं समेत इन्द्र सेभी अजेयहैं वह मेरापुत्र निर्बुद्धी दुर्य्योधन नहीं जानताहै ९ मेरा निर्बुद्धीपुत्र दुर्य्योधन कुबेरके समान अर्ज्जुन के धनको हरण करके सुहृद के चाहने के समान उपाधियों को नहीं जानताहै १० मैंने विजय करलियाहै इस बातका माननेवाला छल संयुक्त बुद्धि रखनेवाला दुर्य्योधन बड़े छलसे महात्माओं के राज्य को छलकर पाण्डवों का अपमान करताहै ११ पुत्रकी प्रीतिसे विमोहित व म्लानचित्त मुझसे भी धर्म्म में नियत महात्मा पाण्डव लोग अपमान किये गये १२ सगेभाइयों के साथ सन्धिको अभिलाषी ऊंची दृष्टिवाला युधिष्ठिर यह मानकर कि यह असमर्थ है मेरे पुत्रों से अपमान कियागया १३ उन बहुत से दुःख बुरे कर्म्म और उन अपकारोंको हृदयगं करके महाबाहु भीमसेन कर्ण के साथ युद्ध करनेवाला हुआ १४ हे सञ्जय उसीहेतुसे जिसप्रकार युद्धमें श्रेष्ठ परस्पर मारने के अभिलाषी कर्ण और भीमसेनने युद्धभूमिमें युद्ध किया उसको मुझसे कहो सञ्जय बोला कि हे राजा जैसे कि कर्ण और भीमसेनका युद्ध जारीहुआ उस को कहताहूं जैसे कि वनमें परस्पर मारनेवाले दो हाथियोंका युद्ध होता है उसी

प्रकार इन दोनोंका युद्ध हुआ १५।१६ हे राजा क्रोधयुक्त कर्ण ने पराक्रम करके तीस बाणों से उस पराक्रमी शत्रुहन्ता भीमसेनको घायल किया हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ सूर्यके पुत्र कर्ण ने बड़े बेगवान साफ नोक सुवर्णजटित बाणों से भीमसेन को घायल किया १७।१८ भीमसेन ने उस खैंचनेवाले के धनुष को तीन बाणोंसे काटा और भल्ल से सारथी को रथसे गिराया १९ भीमसेनके मारने को सदैव चाहते उस कर्ण ने सुवर्ण और वैडूर्य्य मणियों से जटित दण्ड शक्ति को हाथमें लिया २० अर्थात् वहां बली कर्णने उस द्वितीय कालशक्तिके समान उस दण्डशक्ति को उठाकर और पराक्रमसे पकड़ कर २१ उस जीवन की नाशकारिणी शक्तिको भीमसेन के ऊपर फेंका इन्द्रवज्र के समान शक्तिको छोड़कर २२ वह सूतका पुत्र कर्ण बड़े भारी शब्दसे गर्ज्जा इसके पीछे उस शब्दको सुनकर आपके पुत्र प्रसन्न हुये २३ भीमसेन ने उस कर्ण के हाथकी फेंकीहुई शक्ति को सात बाणों से आकाशही में काटा २४ हे श्रेष्ठ उसकी सर्प्प के समान शक्ति को काट कर कर्ण के प्राणों को चाहते क्रोधयुक्त भीमसेन ने २५ युद्ध में मोरपक्ष से जटित सुनहरी पुंख और स्वच्छ यमराज के दण्ड के समान वाले बाणों को चलाया २६ तब कर्णने भी सुवर्ण पृष्ठी दुःप्राप्य दूसरे धनुष को लेकर बहुत खैंचकर शायकों को छोड़ा २७ हे राजा पाण्डव भीमसेनने कर्ण के छोड़ेहुये नौ बड़े बाणों को टेढ़े पर्व्ववाले बाणों से काटा २८ फिर भीमसेन उन बाणों को काटकर सिंहके समान गर्ज्जा जैसे कि गौवों के मध्यमें दो बैल गर्ज्जें उसी प्रकार वह दोनों पराक्रमी शब्द करनेवाले हुये २९ और जैसे कि दो शार्दूल मांसके अर्थ गर्जैं उसी प्रकार परस्पर प्रहार करनेके अभिलाषी परस्पर छिद्र देखनेवाले और चाहनेवाले दोनों परस्पर में गर्ज्जे ३० जिस प्रकार गौशाला में दो बैल परस्पर देखते हैं उसी प्रकार परस्परमें देखनेवाले हुये दांतोंकी नोकों से बड़े हाथियोंके समान परस्पर सम्मुख होकर ३१ कानतक खैंचेहुये बाणों से परस्पर घायल किया हे महाराज बाणों की वर्षा से एक एक को क्रोधित करनेवाले ३२ और क्रोधयुक्त फैलेहुये नेत्रोंसे देखने और हँसनेवाले और वारम्वार आपसमें घुड़की देनेवाले ३३ शङ्खोंको शब्दायमान करनेवाले होकर परस्पर युद्ध करनेलगे हे श्रेष्ठ फिर भीमसेनने उसके धनुषको मुष्टिकाके स्थानपर काटा ३४ और बाणों से उन शङ्खवर्ण घोड़ों को यमलोकमें पहुँचाया और इसी प्रकार उ-

सके सारथी कोभी रथके नीड़से नीचे गिरादिया ३५ इसके पीछे युद्धमें वाणोंसे ढकेहुये सूर्य्य के पुत्र कर्णने जिसके कि घोड़े और सारथी मरगये थे वड़ी भारी चिन्ता को पाया ३६ और वाणजाल से मोहित होकर करनेके योग्य कर्म्म को नहीं पाया इसके पीछे क्रोधसे कम्पायमान राजादुर्योधनने उस प्रकारकी आपत्तिमें पड़ेहुये कर्ण को देखकर दुर्जय को आज्ञाकरी कि हे दुर्जय तुम कर्णके सम्मुख जावो वह भीमसेन आगे से उसको ग्रसेलेताहै ३७।३८ तू कर्णके पराक्रम को आश्रित होकर इस वड़े भोजन करनेवाले को मार इस प्रकार आज्ञा दिया हुआ आपका पुत्र तथास्तु कहकर ३९ उस भिड़ेहुये भीमसेन को बाणों से ढकता सम्मुख दौड़ा उसने भीमसेन को नौ वाणों से और घोड़ों को आठ वाण से घायल किया ४० छः वाणों से सारथी को तीन वाण से ध्वजा को और सात वाणों से फिर उसको घायल किया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेनने भी शीघ्र चलनेवाले वाणोंसे घोड़े सारथी समेत ४१ टूटे कवचवाले दुर्जय को यमलोकमें पहुँचाया फिर पीड़ामान और रोतेहुये कर्णने उस अच्छे अलंकृत पृथ्वीपर गिरे सर्प्प के समान कड़कड़ाते आपके पुत्र को प्रदक्षिणा किया तव उस हँसते हुये भीमसेनने उस वड़े शत्रु कर्णको विरथ करके ४२।४३ बाणोंके समूह और दिव्य शतघ्नी शंकुओं से चिनदिया उसके वाणों से घायल शत्रुसन्तापी अतिरथी कर्णने युद्धमें क्रोधरूप भीमसेन को त्याग नहीं किया ४४।४५॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरित्रयस्त्रिंशतितमोऽध्यायः १३३॥

एकसौचौंतिसका अध्याय॥

संजय वोले कि इस प्रकार विरथ और भीमसेनसे पराजितहुये कर्णने फिर दूसरे रथपर सवार होकर पाण्डव भीमसेनको फिर घायल किया १ दांतकी नोकों से वड़े हाथियोंके समान परस्पर सम्मुख होकर कानतक खैंचेहुये वाणोंसे परस्पर घायल किया २ अर्थात् कर्ण वाणोंके समूहों से भीमसेन को घायल करके वड़े शब्द को गर्जा और फिर भी छातीपर घायल किया ३ भीमसेनने सीधे चलने वाले दश वाणोंसे उसको घायल किया फिर टेढ़े पर्ववाले सत्तर वाणोंसे घायल किया ४ हे राजा भीमसेनने कर्ण को हृदयपर नौ वाणोंसे घायल करके तीक्ष्ण धारवाले एक शायकसे ध्वजा को छेदा ५ इसके पीछे पाण्डवने तिरसठ वाणोंसे

ऐसे घायल किया जैसे कि चाबुकों से बड़े हाथी को घायल करते हैं और कोड़े से घोड़े को ६ यशमान पाण्डवके हाथ से अत्यन्त घायल क्रोध से रक्तनेत्र वीर कर्णने होठों को चाटा ७ हे महाराज इसके पीछे सब शरीरोंके चीरनेवाले बाण को भीमसेनके लिये ऐसे फेंका जैसे कि बलिके अर्थ इन्द्र बज्र को फेंकता है ८ कर्णके धनुषसे वह गिरा हुआ सुनहरी पुंखवाला बाण युद्धमें भीमसेन को घायल करके पृथ्वी को फाड़ पृथ्वीमें समागया ९ इसके पीछे बिचार रहित क्रोधसे रक्तनेत्र महाबाहु भीमसेन ने बज्रके समान चार हाथ मोटी स्वर्णमयी बाजूबन्द रखनेवाली छः पक्ष रखनेवाली भारी गदा को कर्णके ऊपर फेंका उस गदाने श्रेष्ठोंकी सवारी के योग्य कर्णके उत्तम घोड़ों को मारा १०।११ अर्थात् क्रोधयुक्त भरतबंशी भीमसेनने गदासे घोड़ों को ऐसे मारा जैसे कि इन्द्र बज्रसे मारता है हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ इसके पीछे महाबाहु भीमसेनने क्षुरनाम दो बाणोंसे १२ कर्णकी ध्वजा को काटकर बाणों से सारथी कोभी मारा फिर धनुष को टङ्कारता महादुःखी चित्त कर्ण उस घोड़े सारथी और ध्वजासे रहित रथ को त्याग करके खड़ा होगया वहां हमने कर्णके अपूर्व्व पराक्रम को देखा १३।१४ जिस रथियों में श्रेष्ठ बिरथरूपने शत्रु को रोका युद्धमें उस नरोत्तम कर्णको बिरथ देखकर १५ दुर्य्योधनने दुर्म्मुखसे कहा हे दुर्म्मुख यह कर्ण भीमसेनके हाथ से बिरथ कियागया १६ उस नरोत्तम महारथी कर्णको रथ संयुक्तकरो इसके पीछे दुर्मुख दुर्य्योधन के बचन को सुनकर १७ शीघ्रही कर्णके पास आया और बाणोंसे भीमसेनको ढकदिया युद्धमें कर्णके पीछे चलनेवाला दुर्मुख को देखकर १८ बायुपुत्र भीमसेन होठों को चाटता हुआ अत्यन्त प्रसन्न हुआ हे राजा इसके पीछे पाण्डवनें शिलीमुखनाम बाणोंसे कर्णको रोककर १९ शीघ्रही अपने रथको दुर्मुखके पास पहुँचाया हे महाराज इसके पीछे भीमसेनने एक क्षणभरमेंही टेढ़े २० सुन्दरमुख वाले नौ बाणों से दुर्मुख को यमलोकमें पहुँचाया हे राजा दुर्मुखके मरनेपर कर्ण उसी रथपर सवार होकर सूर्य्यके समान तेजस्वी शोभायमान हुआ टूटेहुये मर्मस्थल और रुधिरमें भरेहुये दुर्मुख को देखकर २१।२२ अश्रुपातोंसे भरे नेत्रवाला कर्ण एक मुहूर्त्ततक सम्मुख वर्त्तमान नहीं हुआ लम्बे और उष्णश्वास लेतेहुये वीर कर्णने उस निर्जीव को उल्लंघनकर प्रदक्षिणा करके करनेके योग्य कर्म्मको नहीं जाना हे राजा उस अवकाशमें भीमसेनने गृध्र पक्षसे जटित चौदह नारा-

चौंको २३ । २४ कर्ण के निमित्त चलाया हे महाराज उन प्रकाशमान सुनहरी पुंखवाले बाणों ने उसके स्वर्ण जटित कवच को तोड़कर २५ दिशाओं को प्रकाशित किया और उन रुधिर पीनेवालों ने कर्णके रुधिर को पानकिया २६ हे महाराज कालके प्रेरित क्रोधयुक्त तीव्रगामी सर्प्पोंके समान वह बाण पृथ्वी पर ऐसे शोभायमानहुये २७ जैसे कि पृथ्वीके विवरों में आधे घुसेहुये बड़े २ सर्प्प होते हैं फिर विचारसे रहित कर्ण ने सुवर्ण से शोभित भयकारी चौदहों नाराचों से छेदा वह भयकारी बाण भीमसेनकी बाईं भुजा को छेदकर २८ । २६ पृथ्वीमें ऐसे प्रवेशकर गये जैसे कि क्रौंच पक्षी पर्व्वतमें प्रवेश करजाते हैं पृथ्वी में घुसे हुये वह नाराच ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि सूर्य्य के अस्त होनेपर प्रकाशित किरणें होती हैं युद्धमें मर्म्म भेदी नाराचों से घायल उस भीमसेन ने ३० । ३१ ऐसे रुधिर को गिराया जैसे कि जल को पर्व्वत गेरताहै उस दुःखित हुये भीमसेनने गरुड़के समान शीघ्रगामी तीन बाणोंसे कर्ण को और सात बाणोंसे उसके सारथीको घायल किया हे महाराज भीमसेनके बाणोंसे घायल हुआ व्याकुल कर्ण ३२।३३ बड़े भयसे युद्धको त्यागकर शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा भागा फिर अग्नि के समान प्रकाशमान अतिरथी भीमसेन सुवर्ण जटित धनुष को टङ्कारकर युद्धमें नियत हुआ ३४ । ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिचतुस्त्रिंशतितमोऽध्यायः १३४ ॥

एकसौपैंतीसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मैं दैवको अर्थात् प्रारब्ध को बड़ा मानताहूं इस निरर्थक उपाय और उद्योग करने को धिक्कारहै इस स्थानपर उपाय करनेवाले कर्ण ने भीमसेन को नही तरा १ कर्ण युद्धमें गोविन्दजी समेत सब पाण्डवों को विजय करनेका उत्साह करता है मैं लोकमें इस कर्ण के समान किसी शूरबीर को नहीं देखताहूं २ मैंने वारम्वार यह बात कहनेवाले दुर्य्योधन के मुख से सुना कि कर्ण पराक्रमी शूर और दृढ़ धनुषधारी और महा परिश्रमी है ३ हे सूत पूर्व्वसमय में निर्बुद्धी दुर्य्योधन ने मुझसे यह वचन कहा कि देवता भी मुझ कर्णको साथ रखनेवाले के सम्मुख होनेको समर्थ नहीं हैं ४ फिर निर्बुद्धी निर्व्बल विचारे पाण्डव कैसे होसक्तेहैं अर्थात् कभी नहीं होसक्ते वहां निर्विष सर्प्पके समान परा-

जित कर्णको देखकर ५ उस युद्ध से मुख मोड़नेवाले को दुर्य्योधनने क्या कहा दुःखकी बात है कि मोहितहुये कर्ण ने युद्धों में अकुशल अकेले दुर्म्मुखको ६ पतङ्ग के समान अग्निमें प्रवेशित किया हे सञ्जय निश्चय करके अश्वत्थामा शल्य, कृपाचार्य्य और कर्ण यह सब एक होकरभी ७ भीमसेन के सम्मुख नियत होनेको समर्थ नहीं हैं वहभी इस भीमसेन के बड़े भयकारी दश हजार हाथियों के समान बलको और वायुके समान कठिन पराक्रमीके कठिन बिचारको जानते उस निर्द्दयकर्म्मी कालमृत्यु और यमराज के समान भीमसेन को किस निमित्त ८।९ युद्धमें क्रोधयुक्त करतेहैं जोकि उसके बल क्रोध और पराक्रमके जाननेवाले हैं अपने भुजबल से अहङ्कारी महाबाहु अकेले कर्णने भीमसेनको तिरस्कार करके युद्धभूमि में संग्राम किया जिस भीमसेनने युद्ध में कर्णको ऐसे बिजय किया जैसे कि इन्द्र असुरको बिजय करताहै १०। ११ वह पाण्डव भीमसेन युद्ध में किसीसे भी बिजय करने के योग्य नहीं जो अकेलाही द्रोणाचार्य्य की सेनाको मथकर मेरी सेना में प्रवेशित हुआ १२ भीमसेन अर्जुन के खोजने में प्रवृत्त है कौन जीवनकी इच्छा करनेवाला उसको पराजय करसक्ता है हे सञ्जय कौनसा बीरहै जो भीमसेनके आगे सम्मुख होने को उत्साहकरे जैसे कि बज्रके उठानेवाले महाइन्द्रके आगे आनेको कोई दानव मनुष्य साहस नहींकर सक्ताहै उसीप्रकार भीमसेनकेभी सम्मुख होनेको समर्थ न होकर कोई उत्साहनहीं करसक्ताहै १३ चहै बज्रधारी इन्द्रके आगे दानव मनुष्य यमराजके पुरको पाकर लौट आवे परन्तु १४ भीमसेन को पाकर कभी नहीं लौट सक्ता जैसे कि पतङ्ग अग्निमें प्रवेश करताहै उसी प्रकार वह सब उसमें भस्म हुये १५ जब अचेत पुरुष अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन के सम्मुख दौड़े तब क्रोधयुक्त भयकारी रूपवाले भीमसेन ने सभामें कौरवों को सुनाकर तेरे पुत्रों के मारनेसे सम्बन्ध रखनेवाला जो उसने वचन कहाथा उसको विचार कर और कर्णको विजय कियाहुआ देखकर १६। १७ दुश्शासन अपने भाई समेत भय करके भीमसेन से हटगया हे सञ्जय जिस दुर्ब्बुद्धीने सभाके मध्यमें बारम्बार यह वचन कहाथा कि १८ कर्ण दुश्शासन और हम मिलकर युद्ध में पाण्डवों को विजय करेंगे निश्चय करके वह मेरा पुत्र भीमसेनसे पराजित विरथ कर्णको देखकर १९ श्रीकृष्णजीके अपमानसे अत्यन्त दुःख पाताहै निश्चय है कि मेरा पुत्र युद्धमें कवचधारी भाइयों

को मराहुआ देखकर अपने अपराध से बड़ा पछतावा करके दुःखों को पाता है अपने जीवनका चाहनेवाला बिरुद्धहुये पाण्डव भीमसेन के आगे जासक्ता है १६। २० जो कि भयकारी रूप और शस्त्रों का धारण करनेवाला क्रोध से पूर्ण साक्षात् कालके समान वर्त्तमानहै चाहै बड़वानल अग्निके मुखसेभी मनुष्य बच-सके २१ परन्तु भीमसेन के मुखमें पहुंच कर फिर नहीं छुट सक्ता यह मेरा मत है क्रोध युक्त अर्ज्जुन पाञ्चालदेशी सात्यकी और केशवजी २२ जीवनकी रक्षा करने को जानते हैं हे सूत बड़े कष्टकी बातहै कि मेरे पुत्रों का जीवन आपत्ति में फँसा हुआहै २३ सञ्जय बोले कि हे कौरव जो तुम बड़े भयके वर्त्तमान होने पर भयको करतेहो सो तुम्हीं निस्सन्देह इस संसार के नाशके मूलहो २४ पुत्रों के बचनोंपर निश्चत होकर आप बड़ी शत्रुता को करके समझाने सेभी तुम ऐसे नहीं मानते थे जैसे कि मरणहार मनुष्य नीरोगकारी औषधीको नहीं अंगीकार करता है २५ हे महाराज नरोत्तम तुम आप बड़ी कठिनता से पचनेवाले काल-कूट नाम विषको पान करके अब उसके पूरे पूरे सब फलों को पावोगे २६ फिर जो तुम युद्ध करनेवाले बड़े पराक्रमी शूरवीरों की निन्दा करते हो उसका वृ-त्तान्त तुमसे इस स्थान पर कहता हूं जैसे कि युद्ध प्रारम्भ हुआ २७ हे भरत-वंशी इसके अनन्तर आप के पुत्रों ने भीमसेन से पराजित कर्ण को देखकर बड़े धनुषधारी पांचों सगेभाइयों ने नहीं सहा २८ दुर्म्मर्षण, दुस्सह, दुर्म्मद, दु-र्धर और जय यह पांचों अपूर्व्व कवचों को धारण कियेहुये पाण्डव भीमसेनके सम्मुख गये २९ उन्होंने सब ओर से महाबाहु भीमसेन को घेरकर बाणों से दिशाओं को ऐसे ढकदिया जैसे कि शलभनाम पक्षियों के समूहों से आच्छा-दित होती हैं ३० हँसतेहुये भीमसेनने युद्ध में उन अकस्मात् आतेहुये देवरूप कुमारोंको लिया ३१ भीमसेनके आगे चलनेवाले आपके पुत्रोंको देखकर कर्ण भी फिर बड़े पराक्रमी भीमसेनके सम्मुखगया ३२ उस समय भी आपके पुत्रोंसे रोकाहुआ वह भीमसेन तीव्र सुनहरी पुंख तीक्ष्णधारवाले बाणोंको छोड़ता शी-घ्रही उस कर्णके सम्मुखगया ३३ फिर कौरवोंने सब ओरसे कर्णको मध्यमें कर-के टेढ़े पर्व्ववाले बाणोंसे भीमसेनको ढकदिया ३४ हे राजा भयकारी धनुष रख-नेवाले भीमसेनने पचीस बाणों से उन नरोत्तमों को घोड़े सारथियों समेत यम-लोक में पहुंचाया ३५ वह मृतकहोकर सारथियों समेत रथोंसे ऐसे गिरपड़े जैसे

कि अपूर्व्व पुष्प रखनेवाले वायुसे टूटेहुये बड़े २ वृक्षहोते हैं ३६ वहां हमने भीमसेन के अपूर्व्व पराक्रमको देखा जो बाणोंसे कर्णको रोककर आपके पुत्रोंको मारा ३७ हे महाराज चारों ओरसे भीमसेनके तीक्ष्ण बाणोंसे रुकेहुये उस कर्ण ने भीमसेनको देखा ३८ और क्रोधसे रक्तनेत्र भीमसेनने बड़े धनुषको टंकारकर बारम्बार उस कर्णको देखा ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिशतोपरिपंचत्रिंशत्तमोऽध्यायः १३५ ॥

एकसौछत्तीसका अध्याय ॥

संजय बोले कि फिर वह प्रतापवान् कर्ण पृथ्वीपर पड़ेहुये आपके पुत्रों को देखकर बड़े क्रोधमें भरा जीवनसे निराशहुआ १ तब कर्णने अपनेकोही अपराधीमाना जो कि उसके नेत्रोंके समक्षमें आपके पुत्र भीमसेनके हाथसे मारेगये २ उसके पीछे भ्रांतिसे युक्त क्रोधभरे पूर्व्व शत्रुताको स्मरण करते भीमसेनने कर्ण के तीक्ष्णधार बाणों को काटा ३ फिर उस हँसतेहुये कर्णने भीमसेनको पांचबाणोंसे घायल करके फिर सुनहरी पुंखवाले सत्तर तीक्ष्ण बाणोंसे घायल किया ४ भीमसेनने कर्णके चलायेहुये उन बाणोंको ध्यानकरके युद्ध में सुनहरी पुंखवाले सौबाणोंसे कर्णको घायल किया ५ हे श्रेष्ठ फिर पांचबाणोंसे उसके मर्मस्थलोंको छेदकर एक भल्लसे कर्णके धनुषको काटा ६ हे भरतबंशी इसके पीछे शत्रुसंतापी दुःखी चित्त कर्णने दूसरे धनुषको लेकर बाणोंसे भीमसेनको ढकदिया ७ फिर भीमसेन उसके घोड़े और सारथीको मारकर बदला लेनेवाला कर्म होनेपर अत्यन्त प्रसन्नहुआ ८ तब पुरुषोत्तमने बाणोंसे उसके धनुषको काटा हे महाराज वह सुवर्ण पृष्ठी और बड़े शब्दवाला धनुष भी गिरपड़ा ९ फिर तो महारथी कर्ण उस रथसे उतरा और क्रोधकरके गदाको भीमसेनके ऊपर फेंका १० भीमसेनने उस आतीहुई बड़ी गदाको देखकर सब सेनाके देखतेहुये अपने बाणों से रोकदिया ११ इसके पीछे कर्णके मारनेके अभिलाषी शीघ्रता करनेवाले पराक्रमी भीमसेन ने हजारों बाणों को चलाया १२ कर्ण ने उस बड़े युद्ध में इन बाणों को अपने बाणों से रोककर शायकों से भीमसेनके कवच को गिराया १३ इसके पीछे सब सेनाके लोगोंके देखते पचीस नाराचोंसे उसको घायलकिया यह आश्चर्य्यसा हुआ १४ हे श्रेष्ठ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त महाबाहु भीमसेनने नौ बाणों

को कर्ण के ऊपर चलाया १५ वह तीक्ष्ण बाण उसके कवच और दाहिनी भु-
जाको छेदकर पृथ्वी में ऐसे समागये जैसे कि सर्प बामी में समाजाते हैं १६
भीमसेनके धनुषसे गिरेहुये बाणों के समूहोंसे ढकाहुआ कर्ण फिर भी भीमसेन
से मुख फेरगया १७ राजा दुर्योधन भीमसेनके बाणोंसे ढकेहुये मुख फेरनेवाले
पदाती कर्णको देखकर बोला १८ कि सब ओरसे उपायोंको करके तुम शीघ्रही
कर्णके रथके समीप जाओ हे राजा इसके अनन्तर आपके पुत्र भाईके अपूर्व्व
वचन को सुनकर १६ युद्ध में बाणों को छोड़ते भीमसेन के सम्मुख गये उनके
नाम चित्र, अपचित्र, चित्राक्ष, चारुचित्र, शराक्षन, मित्रायुध, चित्रवर्मा यह सब
युद्ध में अपूर्व्व युद्ध करनेवाले थे २० महारथी भीमसेन ने इन आतेहुये २१
आपके पुत्रों को एक एक बाण से युद्ध भूमि में गिराया वह मृतक होकर पृथ्वी
पर ऐसे गिरपड़े जैसे कि वायुसे उखाड़ेहुये वृक्ष होते हैं २२ हे राजा आप के
महारथी पुत्रोंको मराहुआ देखकर अश्रुपातों से भीजेहुये मुखवाले कर्ण ने वि-
दुरजी के वचनों को स्मरण किया २३ फिर युद्धमें शीघ्रता करनेवाला पराक्रमी
कर्ण विधि के अनुसार अलंकृत कियेहुये दूसरे रथपर सवार होकर भीमसेन के
सम्मुख गया २४ वह दोनों सुनहरी पुङ्ख तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे परस्परमें घा-
यल करके ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि सूर्य्यकी किरणों से घिरेयेहुये २५ दो
बादल उसके पीछे क्रोधयुक्त पाण्डव ने तीक्ष्णधार और तीक्ष्ण बेंतवाले छत्तीस
भल्लों से कर्णकी प्रत्यञ्चा को तोड़ा २६ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ महाबाहु क-
र्णनेभी टेढ़े पर्व्ववाले पचास बाणों से भीमसेन को घायल किया २७ रुधिर से
लिप्त अंग और बाणोंसे टूटेकवच शरीर वहदोनों कर्ण और भीमसेन ऐसे शो-
भायमान हुये जैसे कि काञ्चली से छूटेहुये दो सर्प्प होते हैं २८ जैसे कि दोव्याघ्र
डाढ़ों से परस्पर रुधिरकी वर्षाकरें उसी प्रकार से बाणधारा को उत्पन्न करनेवाले
दोनों नरोत्तम वीर बादलों के समान वर्षा करनेवाले हुये २६ जैसे किसी गौ से
दो बैल परस्परमें घायल करें उसी प्रकार शायकों से अंगोंको घायल करनेवाले
वह दोनों शत्रु विजयी अच्छे शोभायमान हुये ३० वह रथियों में श्रेष्ठ शब्दों
को करके प्रसन्न होते परस्पर क्रीड़ा करते रथों से मण्डलोंको भी करनेवाले हुये
३१ सिंहोंके समान पराक्रम करनेवाले नरोत्तम महाबली ऐसे गर्ज्जे जैसेकि गौ
के स्पर्शको दो महाबली बैल गर्ज्जना करते हैं ३२ परस्पर देखने... क्रोध से

रक्तनेत्र बड़े पराक्रमी वह दोनों इन्द्र और राजाबलिके समान युद्धकर्त्ता हुये३३ हे राजा इसके पीछे महाबाहु भीमसेन युद्धमें भुजाओं से धनुष को चलायमान करता ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि बिजली रखनेवाला बादल होताहै नेमी रूप शब्द रखनेवाले भीमसेन रूपी बड़े बादल ने धनुष रूप बिजली और बाण रूप जलधाराओं से कर्णरूपी पर्व्वतको ढकदिया ३४ । ३५ हे भरतबंशी इसके पीछे भयकारी पराक्रम करनेवाले भीमसेन ने अच्छे प्रकार से छोड़े हुये हजार बाणसे कर्ण को आच्छादित करादिया ३६ वहां पर आपके पुत्रों ने भीमसेन के पराक्रम को देख ३७ जो उसने कर्ण को सुन्दर पुंख गृध्र पक्षयुक्त बाणों से ढक दिया और अर्ज्जुन समेत यशस्वी केशवजी को युद्धमें प्रसन्न किया ३८ और दोनों चक्रके रक्षक सात्यकी कोभी प्रसन्न किया और कर्ण से युद्ध किया हे महाराज उसके विख्यात बलके पराक्रम भुजबल और धैर्य्यको देखकर आपके पुत्र उदासचित्त हुये ३९ । ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिशतोपरिषट्त्रिंशत्तमोऽध्यायः १३६ ॥

एकसौसैंतीसका अध्याय ॥

संजय बोले कि कर्ण ने भीमसेनकी प्रत्यंचा और तलके शब्द को सुनकर ऐसे नहीं सहा जैसे कि मतवाला हाथी अपने सम्मुख आनेवाले मतवाले हाथी के शब्द को १ उसने भीमसेनके सम्मुखसे एक मुहूर्त्त दूर हटकर भीमसेनके हाथ से गिराये हुये आपके पुत्रों को देखा २ हे नरोत्तम उनको देखकर लम्बी और उष्ण श्वास लेकर फिर भीमसेनके सम्मुखगया ३ वह क्रोधसे रक्तनेत्र कर्ण बड़े सर्पकी समान श्वासलेता और बाणोंको छोड़ता ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि किरणोंको फैलाता हुआ सूर्य्य शोभित होताहै ४ हे भरतर्पभ जैसे कि सूर्य्य की किरणोंसे पर्व्वत ढक जाताहै उसीप्रकार भीमसेनभी कर्णके फेंकेहुये बाणोंसे ढकगया ५ कर्णके धनुपसे प्रकट होनेवाले मोरपक्षसे जटित वह बाण सबओर से भीमसेनके शरीरमें ऐसे प्रवेश करगये जैसे कि पक्षी निवासस्थान के लिये वृक्ष में घुस जातेहैं ६ कर्णके धनुपसे गिरेहुये और जहां तहां गिरते सुनहरी पुङ्खवाले वहबाणभी ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि पंक्ति बांधे हुये हंस होते हैं ७ हे राजा कर्णके बाण धनुप ध्वजा सामान छत्र और ईशामुख और युगसे प्रकट होनेवाले

दिखाई पड़े आकाशको पूर्ण करते कर्णने बड़े वेगवान और पक्षियोंके परोंसे ज-टित आकाशगामी सुवर्ण गुंफित अपूर्ववाणोंको छोड़ भीमसेनने वाणोंको त्याग करके विजयीहोकर तीक्ष्णधारवाले वाणोंसे उस कालके समान तीव्र प्रकृतियुक्त आयेहुये कर्णको घायलकिया ८।१० पराक्रमी भीमसेनने उस कर्णकी असह्य तीव्रताको देखकर उन बड़े वाण समूहोंको हटाया ११ इसके पीछे भीमसेनने कर्णके वाण जालोंको तोड़कर दूसरे तीक्ष्णधारवाले बीस वाणसे कर्णको घायलकिया १२ जैसे कि वह पांडव कर्णके वाणोंसे ढकगयाथा उसीप्रकार पाण्डवने भी युद्ध में कर्णको वाणोंसे ढकदिया १३ हे भरतवंशी युद्धमें भीमसेनके पराक्रमको देख कर आपके शूरवीरोंने प्रशंसाकरी १४ भूरिश्रवा, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, शल्य, जयद्रथ,उत्तमौजा,युधामन्यु,सात्यकी, अर्जुन केशवजी कौरव और पाण्डवों में अत्यन्त श्रेष्ठ दश महारथी वेगसे धन्य धन्य शब्दकरके पुकारे और सिंहनादकिये१५।१६हे राजा उस कठिन और रोमहर्षण करनेवाले शब्दके उठनेपर आपका पुत्र दुर्य्योधन शीघ्रता करताहुआ बोला १७ राजा राजकुमार और मुख्यकरके सगे भाइयोंसे बोला तुम्हारा भलाहो भीमसेनसे कर्णको रक्षाकरतेहुये जाओ १८ भीमसेनके धनुषसे गिरेहुये वाण कर्णको बहुत शीघ्रही मारना चाहते हैं हे बड़े धनुषधारियो सो तुम कर्णकी रक्षा करने में उद्योगकरो १९ हे भरतवंशी फिर दु-र्य्योधनकी आज्ञानुसार सातसगे भाइयोंने सम्मुख जाकर भीमसेनको घेरलिया २० उन्होंने भीमसेनको पाकर वाणोंकी वर्षासे ऐसे ढकदिया जैसे कि वर्षाऋतुमें वा-दल जलकी धाराओंसे पर्व्वतको ढकदेताहै २१ हे राजा उन क्रोधरूप सातों म-हारथियों ने भीमसेनको ऐसे पीड़ामान किया जैसे कि प्रलयकाल में सातोंग्रह सोम देवताको पीड़ित करते हैं २२ इसके पीछे समर्थ भीमसेनने वेगसे मुष्टिका के द्वारा अच्छे अलंकृत धनुषको खैंचकर २३ और मनुष्योंकी संख्याको जान-कर उनके समान सातशायकों को चढ़ाकर सूर्य्यकी किरणोंके समान वाणोंको उनकी ओरको छोड़ा २४ हे महाराज पहली शत्रुताको स्मरण करते और आप के पुत्रोंके शरीरोंसे प्राणों को निकालते भीमसेनने उन वाणोंको छोड़ा २५ हे भरतवंशी भीमसेनके छोड़ेहुये सुनहरी पुंख तीक्ष्णधारवाण उनसातों आपकेपुत्र भरतवंशियों को मारकर आकाश को उछले २६ अर्थात् वह सुवर्ण से अलंकृत वाण उन सातोंके हृदयोंको फाड़कर आकाशचारी गरुणोंके समान शोभायमान

हुये हे राजेन्द्र वह रुधिरमें लिप्तनोक और पक्षवाले सुबर्णजटित सातोंबाण आप के पुत्रोंके रुधिरों को पानकरके आकाशको गये २७।२८ बाणोंसे घायल मर्म-स्थलवाले वह सातों मृतकहोकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि पर्व्वतके शिखरपर उत्पन्नहुये हाथीसे तोड़ेहुये बड़े वृक्ष गिरते हैं २९ शत्रुंजय, शत्रुसह, चित्र, चित्रा-युध, दृढ़, चित्रसेन, बिकर्ण यह सातों मारेगये ३० पाण्डव भीमसेन आपके सब मृतक पुत्रोंके मध्यमें से एक प्यारे विकर्णको अत्यन्त शोचताथा ३१ अर्थात् इस वचनको कहताथा कि हे बिकर्ण मैंने यह प्रतिज्ञाकी है कि धृतराष्ट्र के सब पुत्र मारने के योग्यहैं उस हेतुसे तूभी मारागया और मैंने अपनी प्रतिज्ञाका पालन किया ३२ हे बीर क्षत्रिय धर्मको स्मरण करता तू युद्ध करनेको आया इसीहेतुसे युद्ध में मारागया निश्चय करके धर्म्मयुद्ध बड़ा कठिन है ३३ तुम बड़े तेजस्वी होकर राजाकी और हमारी दोनों ओरकी वृद्धि करनेमें प्रीति रखनेवालेथे इसप्र-कारके न्यायसे तुम न्यायके ज्ञाताकाही केवल दुःखहै ३४ पृथ्वीपर बृहस्पतिजीके समान अतिबुद्धिमान् श्रीगंगाजीके पुत्र भीष्मजीने युद्धमें प्राणोंको त्यागकिया इसहेतुसे युद्ध बड़ा कठिनहै ३५ संजय बोले कि महाबाहु पाण्डवनन्दनने कर्ण के देखते उनको मारकर भयकारी सिंहनादको किया ३६ हे भरतबंशी उस शूर के उस शब्दने वह युद्ध और अपनी बड़ी बिजय धर्मराज युधिष्ठिरको बिदित करी ३७ धनुषधारी भीमसेनके उस बड़े शब्द को सुनकर बुद्धिमान् धर्मराजको बड़ी प्रसन्नताहुई ३८ हे राजा इसके पीछे प्रसन्नचित्त युधिष्ठिरने भाईके सिंहनादके शब्दको बाजोंके बड़े शब्दोंके साथलिया ३९ भीमसेनके इससंज्ञा करनेपर बड़ी प्रसन्नतासे युक्त सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर युद्धमें द्रोणाचार्य्यके सम्मुख गये ४० हे महाराज दुर्य्योधनने आपके इकतीस पुत्रों को गिराये और मारेहुये देखकर बिदुरजीके उस बचनको स्मरणकिया ४१ बिदुरजीका वह कल्याणकारी बचन वर्त्तमान हुआ ऐसा जान आपके पुत्रने इस बातको शोचकर उत्तर नहीं पाया ४२ आपके निर्बुद्धी अज्ञानी और अचेत पुत्रने कर्णके साथहोकर द्यूतके समय द्रौपदी को बुलाकर सभा में जो कहा ४३ और कर्ण ने पाण्डवों के और आपके समक्षमें सभाके मध्य में द्रौपदीसे जो कठोर वचनकहे ४४ अर्थात् हे रा-जेन्द्र आपके और सब कौरवों के सुनतेहुये यह बचनकहे कि हे द्रौपदी पाण्डव नाशहुये और सनातन नरकको गये ४५ तुम दूसरे किसी पतिकोवरो उसी का

यह फल अब प्राप्तहुआहै और जो नपुंसकआदि कठोर बचन क्रोधयुक्त करनेकी इच्छासे आपके पुत्रोंने महात्मा पाण्डवों को सुनाये ४६ पाण्डव भीमसेन तेरह बर्षसे नियतहुये उस क्रोधकी अग्निको उगलता है और उस अग्नि में आपके पुत्रोंका हवन करताहै ४७ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ बहुत बिलाप करतेहुये विदुर जीने आपके विषयमें शान्तीको नहीं पाया सो तुम पुत्र समेत उसके उदयहुये फलको भोगो ४८ तुझ वृद्ध परिडत और फलकी मुख्यताके देखनेवालेने शुभ-चिन्तकोंके कहनेको नहीं माना और न उनकी शिक्षाको किया इसमें दैव बड़ा बलवान् है ४६ हे नरोत्तम सो तुम शोच मतकरो आपकाही इसमें महाअन्याय है आपही अपने पुत्रोंके नाशके मूलहो यह मेरा कथनहै ५० हे राजेन्द्र विकर्ण और पराक्रमी चित्रसेन मारेगये आपके पुत्रोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ अन्य २ बहुत से महारथी भी मारेगये ५१ हे महाराज भीमसेनने नेत्रोंके सम्मुख आयेहुये जिन२ आपके दूसरे पुत्रों को देख बड़ी शीघ्रतासे उनको मारा ५२ निश्चयकरके मैंने आपके कारणसे भीमसेन और कर्णके छोड़ेहुये हजारों बाणोंसे भस्म होनेवाली सेनाको देखा ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिसप्तत्रिंशत्तितमोऽध्यायः १३७ ॥

एकसौअड़तीसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे सूत इसमें मेराही अधिकतर अन्यायहै हे संजय मैं मानताहूं कि अब वही मुझ शोच करनेवाले के सम्मुख आया १ जोहुआ सोहुआ यह मेरे चित्तमें नियतहुआ अब इस स्थानपर अर्थात् वर्त्तमान दशा में क्याकरना चाहिये हे संजय मैं उसको करूंगा २ मेरेही अन्यायसे यह बीरोंका बिनाश हुआ वह मुझसे कहो मैं नियतहूं संजय बोले कि हे महाराज पराक्रमी महाबली कर्ण और भीमसेनने बाणोंकी वर्षा ऐसीकरी जैसे कि वर्षा करनेवाले दो बादल होते हैं ३ । ४ सुनहरी पुंख तीक्ष्णधारवाले बाण जिनपर कि भीमसेन का नाम चिह्नितथा जीवनको क्षयकर कर्णको पाकर उसके शरीर में प्रविष्टहुये ५ उसी प्रकार मोरपक्षसे जटित कर्णके छोड़ेहुये हजारों बाणोंने वीर भीमसेनको ढकदिया ६ चारों ओरसे गिरते उन दोनों के बाणोंने उस युद्धमें सेनाके उनलोगोंको व्याकुल किया जोकि समुद्रके समानथे ७ हे शत्रुविजयी उस भीमसेनके धनुषसे नि-

कले और सर्प के समान भयकारी बाणोंसे आपकी सेना सब सेनाके बीच में मारीगई ८ हे राजा मनुष्यों समेत मरकर गिरेहुये हाथी और घोड़ों से आच्छादित पृथ्वी ऐसी दिखाई पड़ी जैसे कि बायुसे गिरेहुये वृक्षोंसे होती है ९ युद्ध में भीमसेनके धनुषके द्वारा गिरेहुये बाणोंसे घायलहोकर वह आपके शूरबीरभागे और यह बोले कि क्या आपत्तिहै उसके पीछे सिन्धु सौवीर और वह कौरवोंकी सेना कर्ण और भीमसेनके बड़े बेगवान् बाणोंसे हटाईहुई पृथक् २ होगई १०।११ वह शूर जिनके बहुत मनुष्य मारेगये और रथ हाथी और घोड़ोंका नाशहुआ वह भीमसेन और कर्णको छोड़कर सब दिशाओंको भागे १२ निश्चयकरके देवता अर्जुनके अभीष्ट के निमित्त हमको मोहित करते हैं जो हमारी सेना कर्ण और भीमसेनके छोड़ेहुये बाणोंसे मारीजातीहै १३ आपके शूरबीर भयसे दुःखी और इसप्रकार बोलते बाणके पतन स्थानोंको छोड़कर देखनेके अभिलाषी होकर युद्ध में नियतहुये १४ इसके पीछे युद्धभूमिमें वह नदी उत्पन्नहुई जो कि भयकारी सूरत शूरबीरों की प्रसन्नता करनेवाली भयभीतों के भयकी बढ़ानेवाली १५ हाथी घोड़े और मनुष्यों के रुधिरों से उत्पन्न निर्जीव हाथी घोड़े और मनुष्यों से युक्त १६ अनुकर्षों समेत पताका हाथी घोड़े और रथके भूषण टूटेरथ चक्र अक्षकूबर १७ और सुवर्ण से जटित धनुष सुनहरी पुंखवाले बाण हजारों नाराच १८ और कर्ण व भीमसेनके छोड़ेहुये कांचली से रहित सर्पाकार प्रास तोमरों के समूह फरसों समेत खड्ग १९ सुवर्ण जटित गदा मूसल पट्टिश और नानारूपोंके बज्र शक्ति परिघ २० और जड़ाऊ शतघ्नियोंसे शोभायमान थी हे भरतवंशी इसीप्रकार सुनहरी बाजूबन्द हार कुण्डल मुकुट २१ और टूटे वलय, अपविद्ध, अंगुलत्रेष्टक, चूड़ामणि सुवर्ण सूत्रकी वेष्टनी २२ कवच हस्तत्राण हार निष्क पोशाक छत्र टूटे चँवर व्यजन २३ घायल हाथी घोड़े मनुष्य रुधिर भरे बाण और जहां तहां इन नानाप्रकार की टूटीहुई वस्तुओं से २४ और टूटे गिरेहुये सामानोंसे पृथ्वी ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि ग्रहों से आकाश शोभित होताहै ध्यानसे बाहर अपूर्व बुद्धिसे परे उन दोनोंके कर्म्मों को देखकर २५ सिद्ध चारणों को भी आश्चर्य्य हुआ जैसे कि सूखेबनमें बायुके साथ रखनेवाले अग्निकी गति होतीहै हे राजा उसी प्रकार युद्धमें २६ भीमसेन को साथमें रखनेवाले कर्ण से युक्त वह मेघजालोंके समान सेना जिसके ध्वजा रथ घोड़े हाथी और मनुष्य मारेगये थे ऐसी

भयकारी रूपवालीहुई जैसे कि भिड़ेहुये दोहाथियोंसे कमलका वन होताहै २७।
२८ युद्धमें कर्ण और भीमसेन लड़ते २ बड़े नकरोलहुये २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिशतोपरिअष्टत्रिंशतितमोऽध्यायः १३८ ॥

एकसौउन्तालीसका अध्याय ॥

हे महाराज इसके पीछे कर्णने तीन बाणों से भीमसेन को घायल करके ब-
हुत उत्तम बाणों की वर्षा को छोड़ा घायलहुये पर्व्वतके समान कर्ण के हाथसे
घायल महाबाहु पाण्डव भीमसेन पीड़ावान् नहीं हुआ १।२ हे श्रेष्ठ उसने क-
र्णको विषमिले तीक्ष्ण तेलसे सफा किये हुये कर्णी नाम बाणों से कानपर अ-
त्यन्त घायल करके ३ कर्णके सुवर्ण जटित शोभायमान बड़े कुण्डल को पृथ्वी
पर ऐसे गिराया जैसे कि आकाश से तारा गिरताहै ४ इसके पीछे हँसते और
क्रोधयुक्त भीमसेनने कर्ण को दूसरे भल्लके द्वारा हृदयपर अत्यन्त घायल किया
हे भरतबंशी फिर शीघ्रता करनेवाले महाबाहु भीमसेनने युद्धमें कांचलीसे रहित
विषैले सर्प्पके समान दश नाराचों को उसके ऊपर चलाया ५।६ उस भीमसेन
से चलाये हुये वह बाण कर्ण के ललाट को छेदकर ऐसे घुसगये जैसे कि सर्प्प
बामी में घुसताहै ७ उसके पीछे कर्ण ललाटपर नियतहुये बाणों से ऐसा शोभा-
यमान हुआ जैसे कि पूर्व्व समयमें कमलकी माला को धारण करता हुआ दे-
वता शोभित होता है ८ वेगवान् पाण्डवके हाथ से अत्यन्त घायल उस कर्णने
रथके कूबरका बड़ा सहारा लेकर दोनों नेत्रों को बन्द करलिया ९ शत्रुके तपाने
वाले उस कर्णने एक मुहूर्त्तमेंही फिर सचेतता को पाया और रुधिरसे लिप्त श-
रीर कर्णने महाक्रोधको धारण किया १० इसके पीछे दृढ़ धनुषधारीसे पीड़ावान्
क्रोधयुक्त बड़े वेगवान् कर्णने युद्धमें भीमसेनके रथपर वेगकिया ११ हे भरतबंशी
राजाधृतराष्ट्र क्षमासे रहित पराक्रमी कर्ण ने गृध्रपक्षवाले सौ बाणों को उसके
ऊपर फेंका १२ इसके अनन्तर उसके पराक्रम को ध्यान न करते पाण्डव भीम-
सेनने युद्धमें उसको तिरस्कार करके बाणोंकी भयकारी वर्षाकरी १३ हे शत्रुओं
के तपानेवाले महाराज धृतराष्ट्र क्रोधभरे कर्ण ने क्रोधसे ज्वलित भीमसेन को
नव बाणों से छातीपर घायल किया १४ डाढ़ रखनेवाले शार्दूल के समान वह
दोनों नरोत्तम युद्धमें दो बादलों के समान परस्पर बाणोंकी वर्षा करनेलगे १५

तलके शब्दों से परस्पर दोनोंने भयभीतकर नानाप्रकारके बाणजालों सेभी भयभीत किया १६ और युद्धमें क्रोधयुक्त परस्पर युद्धकर्म करनेके अभिलाषीहुये हे भरतबंशी इसके पीछे शत्रुओं के बीरोंका मारनेवाला भीमसेन कर्ण के धनुष को १७ क्षुरप्रसे काटकर गर्ज्जा महारथी कर्ण ने टूटे धनुष को डालकर १८ भार के दूर करनेवाले बड़े बेगवान् दूसरे धनुष को लिया भीमसेन ने इसके उसधनुषको भी आधेही निमेष में काटा १९ इसी प्रकार पराक्रमी भीमसेन ने कर्ण के तीसरे चौथे पांचवें छठे सातवें आठवें नवें दशवें २० ग्यारहवें बारहवें तेरहवें चौदहवें पन्द्रहवें सोलहवें २१ सत्रहवें अठारहवें आदि अनेक धनुषोंको काटा२२ इतने धनुषों के कटनेपर भी आधेही निमेष में फिर धनुष हाथमें लिये कर्ण उपस्थितहुआ कौरव लोग सौबीर और सिन्धु के बीरोंके बड़े नाशको २३ और पड़े हुये कवच ध्वजा और शस्त्रों से ब्याप्त पृथ्वीको देखकर अथवा हाथी घोड़े और रथ सवारों के शरीरों को अनेक प्रकार से निर्जीव देखकर २४ क्रोधके मारे कर्ण का शरीर अग्निरूप हुआ उस कर्ण ने बड़े धनुषको चलायमान करके घोर आंखोंसे घोररूप भीमसेनको देखा इसके पीछे क्रोधयुक्त कर्ण बाणोंको छोड़ता ऐसे शोभायमान हुआ २५।२६ जैसे कि शरदऋतुमें मध्याह्नका सूर्य्य होताहै हे राजा सैकड़ों बाणोंसे चिताहुआ कर्णका शरीर ऐसा भयानक रूपहुआ जैसे कि किरणसमूहोंका धारण करनेवाला सूर्य्य का शरीर होताहै बाणों को हाथों से लेते और चढ़ाते २७।२८ खैंचते और छोड़ते कर्णका अन्तर युद्धमें दिखाई नहींदिया दाहिने और बायें बाणोंको फेंकते कर्णका धनुष अग्निचक्रके समान भयकारी मण्डलरूप हुआ हे महाराज कर्णके धनुषसे निकलेहुये सुनहरी पुङ्खवाले बाणों ने २९।३० सब दिशाओं समेत सूर्य्यकी किरणोंको ढकदिया उसके पीछे सुनहरी पुङ्ख और टेढ़े पर्ववाले धनुषसे निकलेहुये बाणोंके बहुत समूह आकाशमें दिखाई पड़े कर्णके धनुषसे शायकनाम बाण प्रकटहुये ३१।३२ और आकाश में पंक्तिवाले क्रौंच पक्षियों के समान शोभायमान हुये कर्णने गृध्रके पक्षोंसे जटित स्वच्छ सुवर्ण से शोभित ३३ बड़े बेगवान् प्रकाशित नोकवाले बाणों को छोड़ा धनुषके बेगसे फेंके और सुवर्ण से अलंकृत वह बाण ३४ बारम्बार भीमसेनके रथपर पड़े सुवर्ण से जटित और कर्णसे चलायमान वह हजारों बाण आकाशमें ऐसे शोभायमान हुये ३५ जैसे कि शलभनाम पक्षियोंके समूह कर्णके

धनुपसे निकलेहुये वाण ऐसे शोभितहुये ३६ जैसे कि अत्यन्त लम्बा एकवाण आकाश में नियत होताहै और जिस प्रकार बादल जलोंकी धाराओं से पर्व्वत को ढक देता है ३७ उसी प्रकार क्रोधयुक्त कर्णने वाणों की वर्पाओं से भीमसेन को ढकदिया हे भरतवंशी वहांपर भीमसेनके बल पराक्रम और निश्चयको आपके पुत्रों ने और सब सेनाके लोगों ने देखा कि उठे हुये समुद्र के समान बड़ी भारी उस वाणबृष्टि को कुछ ध्यान न करके क्रोधयुक्त भीमसेन कर्ण के सम्मुख गया ३८।३९ हे राजा भीमसेनका सुबर्णपृष्ठी बड़ा धनुष कानसे लेकर मण्डल रूप दूसरे इन्द्रधनुष के समानथा ४० उस धनुष से आकाश को पूर्ण करते हुये वाण प्रकटहुये ४१ सुनहरी पुङ्ख टेढ़े पर्व्ववाले बाणों से आकाशमें भीमसेन की रचीहुई स्वर्णमयी माला शोभायमान हुई ४२। ४३ युद्धमें उन दोनों कर्ण और भीमसेनके बाणजालोंसे जोकि अग्निके पतंगोंके समान स्पर्शवालेथे ४४ और जिनकी परस्पर गतियांभी मिलीहुई थीं बाणजालों से आकाश को व्याप्त होने पर कुछभी नहीं जानागया वह कर्ण पृथक् पृथक् प्रकारके बाणोंसे भीमसेन को ढकताहुआ ४५। ४६ उस महात्मा के पराक्रम को तिरस्कार करके पास गया हे श्रेष्ठ वहां उन दोनोंके छोड़ेहुये वाणोंके जाल ४७ परस्परमें मिलेहुये वायु रूप दिखाई पड़े और उन वाणों के परस्पर भिड़ने से ४८ आकाश में अग्नि उत्पन्न हुई हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ उसी प्रकार क्रोधयुन कर्णने कारीगरके साफ कियेहुये तीक्ष्ण ४९ सुवर्ण जटित वाणों को उसके मारने के निमित्त चलाया भीमसेन ने उन प्रत्येक वाणों को विशिख नाम वाणोंसे खण्ड खण्ड करदिया ५० कर्णके मारने के अभिलाषी भीमसेन वोले कि हे कर्ण खड़ाहो ऐसा कहकर उस भीमसेनने फिर भयकारी वाणोंकी वर्पाकी ५१ जो कि असहिष्णु वली क्रोधसे युक्त होकर भस्म करनेवाली अग्निके समानथा इसके पीछे उन दोनों गदा के प्रहारों से चटचटा नाम शब्दहुये ५२ और वहुत वड़े वलके शब्द व भयकारी सिंहनाद और रथकी नेमियोंकी ध्वनियोंसे वड़ा भयकारी शब्द उत्पन्नहुआ ५३ हे राजा परस्पर मारनेके अभिलापी कर्ण और भीमसेनके पराक्रमके देखनेके इच्छावान् शूरवीर लोगोंने युद्ध करना वन्दकरदिया ५४ देवता ऋपि सिद्ध और गन्धर्व्वों ने वड़ी प्रशंसाकरी कि धन्य धन्यहै उसी प्रकार विद्याधरों के समूहोंने पुष्पों की वर्पाकरी ५५ इसके पीछे क्रोधयुक्त दृढ़ पराक्रमी महावाहु भीमसेन ने अस्त्रों से

अस्त्रोंको रोककर बाणोंसे कर्णको घायलकिया ५६ महाबली कर्णने भी युद्ध में भीमसेनके बाणोंको हटाकर सर्पके समान नौ नाराचोंको चलाया ५७ फिर भीमसेनने उतनेही बाणों से कर्णके नाराचों को आकाश में काटा और तिष्ठ तिष्ठ बचनको कहा ५८ फिर महाबाहु भीमसेनने क्रोधरूप होकर काल और यमराज के समान दूसरे दण्डके समान बाणको कर्णके ऊपर छोड़ा ५९ हे राजा तब हँसतेहुये प्रतापवान् कर्णने पाण्डवके उस आतेहुये बाणको तीनबाणोंसे काटा ६० फिर भीमसेनने भयकारी बाणों की वर्षाकरी तब निर्भय के समान कर्णने उसके उन सब अस्त्रोंको सहकर ६१ बड़े क्रोधसे अस्त्रोंकी मायासे उस लड़नेवाले भीमसेनके दोनों तरकस धनुष व प्रत्यंचा को गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से काटकर ६२ घोड़ोंकी रस्सी और ईशादण्डआदिको युद्ध में काटा फिर उसके घोड़ोंको मारकर सारथी को पांचबाणों से घायलकिया ६३ वह सारथी शीघ्रही दूर जाकर युधामन्युके रथपर गया फिर क्रोधयुक्त कालाग्निके समान तेजस्वी हँसतेहुये कर्णने भीमसेनकी ६४ ध्वजाको काटकर पताकाको भी गिराया उस धनुष से रहित महाबाहु भीमसेनने रथ शक्ति को धारण किया ६५ उस शक्तिको घुमाकर क्रोध युक्त भीमसेनने कर्णके रथपर फेंका उपाय करनेवाले कर्णने उस सुवर्णजटित ६६ बड़ी उल्काके समान आतीहुई शक्तिको दशबाणोंसे काटा कर्णके तीक्ष्ण बाणों से दश स्थानपर कटीहुई वह शक्ति गिरपड़ी ६७ उस भीमसेन ने मित्रके अर्थ अपूर्व युद्ध करनेवाले कर्णसे बाण प्रहार करतेही करते सुवर्णजटित ढाल को हाथ में लिया और छिद्रान्वेषण करनेवालेने मृत्यु व बिजयके खड्गको भी हाथ में लिया तब कर्णने बड़े बेगसे उसकी उस स्वर्णमयी प्रकाशित ढालको बहुतसे भयकारी बाणों से तोड़ा हे महाराज कवच रथसे रहित क्रोधसे मूर्च्छामान ६८। ७० शीघ्रता करनेवाले भीमसेनने खड्गको घुमाकर कर्णके रथपर छोड़ा वह बड़ा खड्ग कर्णके सन्नद्ध धनुषको काटकर ७१ पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि आकाशसे क्रोधयुक्त सर्प्प गिरता है इसके पीछे क्रोधयुक्त अतिरथी कर्णने हँसकर युद्ध में शत्रुओंके मारनेवाले दृढ़ प्रत्यंचावाले दूसरे धनुषको लेकर भीमसेन के मारनेकी इच्छासे बाणों को छोड़ा ७२।७३ हे महाराज सुनहरी पुंख और सुन्दर बेतवाले हजारों बाणोंको मारा कर्णके धनुषसे गिरेहुये बाणों से घायल पराक्रमी ७४ कर्णके मनको पीड़ित करताहुआ भीमसेन आकाशको उछला उस युद्धमें

विजयाभिलाषी भीमसेनके कर्मको देखकर ७५ उस कर्णने शरीरको सिकोड़कर भीमसेनको ठगा उस इन्द्रियोंसे पीड़ित रथके बैठनेके स्थानमें छिपे और सिकुड़े हुये कर्णको बैठाहुआ देखकर ७६ भीमसेन उसकी ध्वजापर चढ़कर फिर पृथ्वी पर नियतहुआ सब कौरवोंने और चारण लोगोंने उसके उस कर्मकी बड़ी प्रशंसाकी ७७ उसने रथसे कर्णको ऐसे हरनाचाहा जैसे कि गरुड़ सर्पको हरण करताहै वह टूटा धनुष और रथसे विहीन भीमसेन अपने धर्मको पालन करताहुआ अपने रथको पीछेकी ओरको करके युद्धके निमित्त नियतहुआ ७८ इसके पीछे कर्ण उसके उस विचार को निष्फलकरके क्रोधसे युद्धभूमि में युद्ध के निमित्त आगे वर्त्तमान भीमसेनके सम्मुखहुआ हे महाराज वह दोनों ईर्षा करनेवाले महा बली परस्परमें भिड़े ७९।८० वर्षाऋतुके बादलोंके समान दोनों नरोत्तम गर्जने वालेहुये उन क्रोधयुक्त और असह्य दोनोंके प्रहार युद्ध में देवता और दानवोंके प्रहारोंके समानहुये फिर टूटे शस्त्रवाला भीमसेन कर्णके साथ सम्मुखतामें प्रवृत्त होकर अर्जुनके हाथसे मरकर पर्व्वताकार पड़ेहुये हाथियोंको देखकर रथके मार्गके विघातनके अर्थ बिनाही शस्त्रके प्रवेश करगया ८१।८२ हाथियोंके समूहोंको पाकर और रथोंके दुर्गम मार्गों में प्रवेश करके जीवनकी इच्छासे भीमसेनने कर्णको नहीं पकड़ा शत्रुके पुरको विजय करनेवाला पाण्डव भीमसेन अर्जुनके बाणों से घायल रक्षास्थानको चाहतेहुये हाथीको उठाकर ऐसे नियत किया ८४।८५ जैसे कि हनुमान्जी महौषधियोंसे युक्त द्रोणागिरि पर्व्वतको उठाकर शोभितहुये थे फिर कर्ण ने उसके उस हाथी को खण्ड २ किया ८६ तब पाण्डुनन्दनने हाथी और घोड़ों को पकड़ २ कर कर्ण के ऊपर फेंका और क्रोध से युक्त होकर रथके चक्र घोड़े आदि जिस जिस सामानको पृथ्वीपर देखा ८७ उस उसको कर्ण के ऊपर फेंका कर्णने उसके उन सब फेंकेहुये सामानोंको अपने बाणोंसे काटा ८८ फिर अर्जुन को स्मरण करतेहुये भीमसेन ने बड़ी भयकारी वज्ररूप मुष्टिका को उठाकर कर्णको मारना चाहा ८९ परन्तु अर्जुनकी प्रतिज्ञाकी रक्षाकरतेहुये समर्थ पाण्डुनन्दन भीमसेननेभी कर्णको नहीं मारा ९० कर्णने उसप्रकार व्याकुल हुये भीमसेन को तीक्ष्ण बाणोंके बारम्बार प्रहारों से मूर्च्छायुक्त किया ९१ कुन्ती के वचन को याद करतेहुये कर्ण ने इस अस्त्र को नहीं मारा फिर कर्ण ने समीप जाकर उसको धनुषकी नोकसे घायल किया ९२ धनुषके प्रहारसे क्रोधयुक्त उस

भीमसेन ने उसके धनुष को तोड़कर कर्ण को मस्तकपर घायल किया ६३ भीमसेन के हाथ से घायल और क्रोध से रक्तनेत्र हँसता हुआ कर्ण इस बचन को बोला ६४ हे बारम्बार बहुत भोजन करनेवाले निर्बुद्धी दीर्घ उदरवाले अस्त्रके न जाननेवाले युद्ध में नपुंसक बालयुद्ध मतकर ६५ हे दुर्बुद्धी पाण्डव भीमसेनने जिस स्थानपर अनेक प्रकारके भक्ष्य भोज्य और पान करने की अनेक बस्तुहैं वहांकेही तुम योग्यहो युद्धके योग्य तुम किसी प्रकारसे नहींहो ६६ हे भीमसेन तुम बनके मध्यमें ब्रत और नियमोंमें मूलफल फूलके आहारके योग्यहो तुम युद्ध में कुशल नहीं हो ६७ कहां युद्ध और कहां मुनिभाव हे भीमसेन तुम बन को जाओ हे तात तुम बनवास मेंही प्रीति रखनेवाले होकर अब युद्धके योग्य नहीं हो ६८ हे भीमसेन तुम शीघ्रता करनेवाले होकर घरमें भोजन के अर्थ रसोंइयां नौकर ६९ और दासोंको क्रोधसे अत्यन्त शासना करने के योग्यहो हे दुर्ब्बुद्धी भीमसेन तुम मुनि होकर फलोंको प्राप्तकरो हे कुन्ती के पुत्र बनको जाओ तुम युद्धमें सावधान नहींहो १०० हे भीमसेन तुम फल मूलादि के खाने और अतिथि के पूजनमें समर्थहो मैं तुमको शस्त्रविद्यामें योग्य नहीं समझताहूं १०१ हे राजा बाल्यावस्थाके जो अप्रिय बृत्तान्तथे उन सबकोभी रूखे २ बचनोंसे खूब सुनाया १०२ फिर वहां सिकुड़कर बैठेहुये उसको धनुषसे स्पर्श किया तब हँसतेहुये कर्ण ने भीमसेनसे यह बचन कहा १०३ हे श्रेष्ठ दूसरे स्थान में लड़ना चाहिये मुझ सरीके शूरबीरसे न लड़नाचाहिये मुझसे लड़नेवाले शूरबीरोंकी यह दशा और अन्य अनेकप्रकार की दशा होजाती हैं १०४ अथवा तुमभी वहीं जाओ जहां वहदोनों कृष्णहैं वह तेरी युद्धमें रक्षा करेंगे हे कुन्तीके पुत्र अथवा घरको जाओ हे बालक तुझको युद्धकरनेसे क्या प्रयोजनहै १०५ भीमसेन कर्ण के अतिकठोर बचनको सुनकर सबको सुनाकर हँसताहुआ कर्णसे यह बचन बोला १०६ हे दुष्ट तुझको बारम्बार मैंने विजयकिया तू निरर्थक अपनी क्यों बड़ाई करताहै पूर्व्वके बृद्धों ने महाइन्द्रकी बिजय और पराजय दोनोंको देखाहै १०७ हे दुष्ट कुलमें उत्पन्न होनेवाले जो तू बड़ाई करता है तो मुझसे मल्लयुद्धकर जैसे कि महाबली और महाभोगी कीचक मारागया १०८ उसी प्रकार सब राजाओंके देखतेहुये मैं तुझको मारूंगा बुद्धिमानों में श्रेष्ठ कर्ण भीमसेन के विचार को जानकर १०९ सब धनुषधारियों के देखतेहुये उस युद्धसे अलगहोगया हे राजा इस प्रकार कर्ण

ने उसको विरथकरके महात्मा अर्जुन और श्रीकृष्णजीके समक्षमें ऐसे कठोर व-
चनकहे हे राजा इसके पीछे केशवजी की प्रेरणासे बानरध्वज अर्ज्जुन ने साफ़
बाणोंको कर्णके निमित्त भेजा ११० फिर अर्जुनकी भुजासे छुटे सुवर्णसे जटित
गाण्डीव धनुषसे प्रकटहुये वाण १११ कर्ण के शरीर में ऐसे प्रवेश करगये जैसे
कि हंस क्रौंचपर प्रवेश करते हैं ११२ उस अर्ज्जुन ने सर्पों के समान घुसे और
गांडीव धनुष के भेजेहुये बाणों के द्वारा ११३ कर्ण को भीमसेनसे दूर हटादिया
भीमसेन के हाथसे टूटा धनुष और अर्ज्जुनके बाणसे घायल वह कर्ण बड़े रथके
द्वारा शीघ्रही भीमसेन के पास से हटगया नरोत्तम भीमसेन भी सात्यकी के रथ
पर सवार होकर ११४ । ११५ युद्ध में अपने भाई पाण्डव अर्ज्जुन के पीछे गया
उसके पीछे शीघ्रता करनेवाले क्रोध से रक्तनेत्र नाशकारी काल के समान अ-
र्ज्जुनने कर्ण को लक्ष्य बनाकर नाराच नाम बाण को भेजा गाण्डीव धनुष से
चलायमान और आकाश में सर्प को चाहनेवाले गरुड़जी के समान ११६।११७
वह नाराच कर्णके सम्मुख गिरा अश्वत्थामा ने उस बाणको अपने बाणसे अ-
न्तरिक्षमें ही काटा ११८ अर्ज्जुनके भय से कर्णकी रक्षाके अर्थ महारथी ने ऐसा
किया इसके पीछे क्रोधयुक्त अर्जुनने अश्वत्थामाको चौंसठबाणोंसे घायलकिया
११९ और फिर शिलीमुख नाम बाणोंसे भी घायलकिया और तिष्ठ तिष्ठ कहकर
गमनंमाकुरु अर्थात् मतजाओ यह भी कहा वह अश्वत्थामा अर्जुनके बाणोंसे
पीड़ामान शीघ्रही मतवाले हाथियों से पूर्ण और रथोंसे संकुलित १२० सेना में
चलागया उसके पीछे पराक्रमी अर्जुनने गांडीव धनुषके शब्दसे युद्ध में शब्द
करनेवाले सुवर्णपृष्ठी धनुषोंके शब्दोंको १२१ निरादरकिया और अर्जुन पीछेकी
ओरसे उस प्रकारसे जातेहुये अश्वत्थामाके सम्मुखगये १२२ जो कि बहुत लंबा
मार्ग नहीं था सेनाको भयभीत करतेहुये अर्जुनने नाराचोंसे मनुष्य हाथी और
घोड़ों के शरीरों को चीरकर १२३ कंक और मोरपक्षसे जटित बाणोंसे सेना को
छिन्नभिन्न किया फिर उपाय करनेवाले इन्द्रके पुत्र अर्जुनने उस घोड़े हाथी और
मनुष्योंवाली सेनाको मारा १२४।१२५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिभीमकर्णयुद्धेशतोपरिएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः १३९ ॥

एकसौचालीसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय दिन दिन मेरा प्रकाशमान यश क्षीण होताजाताहै मेरे बहुतसे शूरवीर मारेगये इस में मैं समयकी विपरीतता मानताहूं १ अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन मेरी सेनामें पहुंचा जो अश्वत्थामा कर्णसे रक्षित होकर देवताओंसे भी अजेय है २ जबसे वह बड़ा पराक्रमी उन बड़े पराक्रमी श्रीकृष्ण भीमसेन और शिनियोंमें श्रेष्ठ सात्यकी समेत सेनामें पहुंचाहै ३ तबसे मुझको शोक ऐसे भस्म कररहाहै जैसे मकानको अग्नि भस्म करताहै और जयद्रथके साथ राजाओंको ग्रसित देखताहूं ४ सिन्धका राजा उस अर्जुनका बड़ा असह्य अपराधकरके नेत्रोंके सम्मुख वर्त्तमान कैसे जीवनको पासक्ताहै ५ हे संजय अनुमानसे देखताहूं कि जयद्रथ नहीं है वह युद्ध जैसे जारीहुआ उसको मूलसमेत बर्णनकर ६ जो क्रोधयुक्त अकेलाही बड़ी सेनाको छिन्नभिन्नकरके और वारबार मझाकर ऐसे प्रवेशितहुआ जैसे कि कमलके बनमें हाथी प्रवेश करताहै ७ उस बृष्णियों में वीर सात्यकी का वह युद्ध मुझसे ठीक २ कहो जो उसने अर्ज्जुनके निमित्त कियाहै हे संजय तुम सावधानहो ८ संजय बोले हे राजा इसप्रकार कर्णसे पीड़ामान पुरुषों में बड़े बीर शीघ्रतासे जातेहुये उस भीमसेनको देखकर शिनियों में बड़ा बीर सात्यकी नर वीरोंके मध्यमें रथकी सवारीसे चला ९ वर्षाऋतुके बादलके समान गर्जता और बादलोंके हटजानेपर सूर्य्य के समान प्रकाशित दृढ़ धनुषसे शत्रुओंको मारता और आपके पुत्रकी सेनाको कंपाताहुआ चला १० हे भरतवंशी आपके सब रथी उस मधुदेशियों में श्रेष्ठ युद्धभूमि में गर्जते और चांदीके वर्ण घोड़ोंकी सवारीसे जाते सात्यकी के रोकनेको समर्थ नहीं हुये ११ तब क्रोधसे पूर्ण सम्मुख लड़नेवाले धनुषधारी सुवर्ण कवचधारी राजाओंमें श्रेष्ठ अलंबुषने समीप जाकर सात्यकी को रोका १२ हे भरतवंशी उन दोनोंका युद्ध ऐसा हुआ जैसाकि कोई नहीं हुआथा आप के शूरवीरआदि सब लोगोंने उन युद्धमें शोभापानेवाले दोनों वीरोंको देखा १३ राजाओंमें श्रेष्ठ अलंबुष ने इसको निरादरकरके दशबाणों से घायलकिया सात्यकीने भी बाणोंसे उन प्रथक नाम बाणों को बीचही में काटा १४ फिर उसने अग्नि के समान कानतक खैंचे हुये तीक्ष्णधार सुन्दर पुंखवाले तीन बाणों से कवच को काटकर छेदा वह बाण सा-

त्यकी के शरीर में प्रवेश करगये १५ अग्नि और वायुके समान प्रभाववाले ती-क्ष्णधार अग्निरूप उन बाणों से उसके शरीर को अनादर पूर्व्वक घायल करके चार बाणोंसे उन रजतवर्ण चारों घोड़ों को घायल किया १६ चक्रधारी श्रीकृष्ण जीके समान प्रभाववाले वेगवान् उस घायलहुये सात्यकी ने बड़े वेगवान् चार बाणों से अलम्बुषके चारों घोड़ों को मारा १७ फिर कालाग्निके समान भल्ल से उसके सारथीके शिरको काटकर कुण्डलधारी पूर्ण चन्द्रमाके समान प्रकाशमान और शोभायमान उसके मुख कोभी शरीरसे काटा १८ हे राजा यादवों में श्रेष्ठ शत्रुहन्ता अकेला सात्यकी युद्धमें उस सूर्य्यवंशी को मार आपकी सेना को ह-टाकर फिर अर्जुनके पीछे चला १९ अर्जुनके पीछे चलनेवाले शत्रुओं के मध्य में घूमनेवालेने जिस प्रकार बायु बादलके समूहोंको नाशकरे उसी प्रकार बाणों से कौरवी सेना को मारते वृष्णी सात्यकी को देखकर २० श्रेष्ठ लोगों से शिक्षा पाया हुआ गौके दूध कुन्द फूल और बरफके समान श्वेत वर्णवाले सुनहरी जा-लोंसे अलंकृत सिन्धुदेशी उत्तम घोड़े जहां जहां वह चाहता था वहां वहां उस को लेजाते थे २१ हे भरतवंशी इसके पीछे वह आपके पुत्रादि सब शूरवीर शी-घ्रही आपके पुत्र उस अजमीढ़वंशी दुश्शासन को जो कि शूरवीरों में मुख्यथा आगे करके एक साथही सम्मुख गये २२ सेना समेत उन वीरों ने सात्यकी को युद्ध में सबओर से घेरकर घायल किया हे वीर उस यादवों में श्रेष्ठ सात्यकी ने भी उन सबको बाणों के जालों से रोका २३ हे अजमीढ़वंशी शत्रुहन्ता सात्य-कीने धनुषको उठाकर शीघ्रही अग्निके समान बाणोंसे उनको रोककर दुश्शा-सनके घोड़ों को मारा २४ इसके पीछे अर्ज्जुनने पुरुषों में बड़े वीर श्रीकृष्णजी को देखकर युद्धमें बड़ी प्रसन्नता को पाया २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४० ॥

एकसौएकतालीसका अध्याय ॥

संजय बोले कि शीघ्रता योग्य कर्मोंमें शीघ्रता करनेवाले दुश्शासन के रथ के पास वर्त्तमान १ सेनारूपी समुद्रमें प्रवेशित महाबाहु सात्यकी को उन त्रिग-र्त्तदेशियों के धनुषधारियों ने जिनकी ध्वजा सुवर्ण जटित थीं चारोंओर से घेर-लिया २ उसके पीछे उन क्रोधरूप बड़े धनुषधारियों ने रथों के समूहों से उसको

सब ओर से घेरकर बाणों से आच्छादित करदिया ३ फिर सत्यपराक्रमी अकेले सात्यकी ने बड़े युद्ध में तत्त्वके शब्दों से व्याकुल खड्ग गदा शक्तियों से पूर्ण बिना नौकावाली नदीके समान भरतबंशियों की सेना को पाकर उन शोभासे युक्त पचास राजकुमार शत्रुओं को बिजय किया ४।५ उस युद्धमें हमने सात्यकीके अपूर्व्व कर्म्म को देखा कि उसको पश्चिम दिशा में देखकर शीघ्रतासेही पूर्व्वमें देखा ६ वह शूर उत्तर दक्षिण पूर्व्व पश्चिम आदि विदिशाओंमें नाचता हुआ ऐसा घूमा जैसे कि रथोंका एक सैकड़ा घूमताहै उसके उस कर्म्म को देखकर सिंहके समान चाल चलनेवाले पीड़ावान् त्रिगर्त्तदेशी अपने लोगों में लौटगये ७।८ बाणों के समूहों से घायल करते शूरसेनदेशियों के दूसरे शूरोंने युद्ध में उसको ऐसे रोका जैसे कि अंकुश से मतवाले हाथी को ९ उत्तमबुद्धि सात्यकी ने एक मुहूर्त्त उनके साथ युद्ध किया फिर बहुबुद्धि से बाहर बल पराक्रम रखनेवाला सात्यकी कलिङ्गदेशियों से युद्ध करनेलगा १० कलिङ्गदेशियों की सेना को उल्लंघन करके महाबाहु सात्यकी पाण्डव अर्जुनके पास पहुँचा ११ और उनको पाकर इतना प्रसन्न हुआ जैसे कि जलका थका हुआ स्थलको पाकर प्रसन्न होताहै सात्यकी उस पुरुषोत्तम को देखकर विश्वासित हुआ १२ केशवजी ने उस आते हुये सात्यकी को देखकर अर्ज्जुन से कहा हे अर्ज्जुन तेरे पीछे चलने वाला यह सात्यकी आता है यह सत्यपराक्रमी तेरा शिष्य और मित्रहै उस पुरुषोत्तमने सब शूरबीरोंको निरादर करके बिजय किया १३।१४ हे अर्ज्जुन प्राणों से भी तेरा प्यारा और परममित्र यह सात्यकी कौरवी शूरवीरों के घोर उपद्रवों को करके आता है १५ हे अर्ज्जुन यह सात्यकी विशिख नाम बाणों से द्रोणाचार्य्य और भोजबंशी कृतबर्म्मा इन दोनों को विजय करके आता है १६ हे तात यह धर्म्मराज के प्रियका खोजनेवाला अस्त्रज्ञ शूर सात्यकी उत्तम उत्तम शूरों को मारकर तेरे पास आता है १७ हे अर्ज्जुन यह बड़ा पराक्रमी सात्यकी युद्ध में कठिनतर कर्म्मों को करके तेरे दर्शनकी अभिलाषा को करता पास आता है १८ हे अर्ज्जुन यह सात्यकी युद्धभूमि में एक रथके द्वारा आचार्य्यादिक अनेक महारथियों से युद्ध करके आता है १९ हे अर्ज्जुन धर्म्मराजका भेजाहुआ यह सात्यकी अपने भुजबलके भरोसेसे सेनाको चीरकर पास आताहै २० हे अर्ज्जुन कौरवों में जिसके समान कोई शूरवीर नहीं है वह युद्धमें

दुर्म्मद सात्यकी आताहै २१ जैसे कि सिंह गौओंके मध्यमेंसे अलग होताहै उसीप्रकार कौरवी सेनाओंसे पृथक् होकर यह सात्यकी बहुत सेनाओंको मारकर पास आताहै २२ हे अर्ज्जुन यह सात्यकी कमलसमान मुखवाले हज़ारों राजाओंके शिरोंसे पृथ्वी को आच्छादित करके शीघ्रतासे आताहै २३ यह सात्यकी युद्धमें सब भाइयों समेत दुर्य्योधनको विजय करके और जलसिन्धु को मारकर के शीघ्र आताहै २४ यहसात्यकी रुधिरसमूह से युक्त रुधिररूपी कीचरखनेवाली नदीको जारी करके और कौरवोंको तृणके समान छोड़ करके आताहै २५ यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्नचित्त अर्ज्जुन केशवजी से यह वचन बोले कि हे महाबाहो मुझको स्वीकार नहींहै जो सात्यकी मेरे पासआताहै २६ हेकेशवजीमैं धर्मराजके बृत्तान्तको नहीं जानताहूं सात्यकी से पृथक् होकर वह जीवताहै या नहीं २७ हे महाबाहो श्रीकृष्णजी वह राजा युधिष्ठिर इस सात्यकीसेही रक्षाके योग्य था यह उसको छोड़कर किसहेतुसे मेरे पीछे चलनेवाला हुआ २८ राजायुधिष्ठिर को इसने द्रोणाचार्य्य के लिये छोड़ा और राजा सिन्धु नहीं मारागया और यह भूरिश्रवा युद्धमें सात्यकीके सम्मुख आताहै २९ यह बड़ाभारी भार जयद्रथके निमित्त नियत हुआ मुझसे राजा युधिष्ठिर जानने के योग्य और सात्यकी रक्षा करनेके योग्यहै ३० जयद्रथ मारनेके योग्यहै और सूर्य्य अस्ताचल की ओर को जाते हैं अब महाबाहु सात्यकी निर्बल और थकाहुआहै ३१ और उसका घोड़ों समेत सारथी भी थक गया है हे माधव केशवजी भूरिश्रवा थकाभी नहीं है और सहायता रखनेवाला है ३२ अब इस युद्धमें भी इसकी कुशल होय सत्यपराक्रमी सात्यकी सेनारूपी समुद्रको तरकर ३३ गायके खुरके समान जलरूप स्थान को पाकर नाशको न पावे बड़ा तेजस्वी सात्यकी भी कौरवों में श्रेष्ठ अस्त्रज्ञ महात्मा ३४ भूरिश्रवाके साथ भिड़कर कुशलपूर्व्वक रहै हे केशवजी मैं धर्म्मराज के इस विपर्य्ययको मानताहूं ३५ जो आचार्य्य से भयको त्याग करके सात्यकी को भेजा जैसे कि आकाशगामी सचान मांस को चाहै उसी प्रकार द्रोणाचार्य धर्मराज के पकड़ने को चाहते हैं ३६ वह सदैव चाहते हैं तो राजायुधिष्ठिरकी कैसे कुशल रहै ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशनोपरिएकचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४१ ॥

एकसौबयालीसका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा भूरिश्रवा उस युद्धमें दुर्मद आतेहुये यादव सात्यकी को देखकर क्रोध से एकाएकी सम्मुखगया १ हे महाराज सम्मुख होकर वह कौरव सात्यकी से बोला कि अब तू प्रारब्धसे मेरे नेत्रोंके सम्मुख वर्त्तमान हुआ है २ मैं बहुत कालसे चाहेहुये अभिलाषको अब युद्धमें पाऊंगा जो तू युद्ध को न त्यागेगा तो मुझसे जीवता बचकर न जायगा ३ हे यादव अब मैं तुझ सदैव शूरताके अभिमान रखनेवाले को युद्धमें मारकर कौरवराज दुर्योधन को प्रसन्न करूंगा बीर अर्ज्जुन और केशवजी दोनों एक साथही अब तुझको युद्धमें मेरे बाणसे मराहुआ पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखेंगे ४ । ५ अब धर्मपुत्र युधिष्ठिर भी मेरे हाथ से तुझको मराहुआ सुनकर शीघ्रही लज्जायुक्त होगा जिसने कि तुझको इस सेनामें भेजाहै अब तुझको रुधिरमें भरे पृथ्वीपर गिरेहुये मृतक होकर सोने पर पाण्डव अर्ज्जुन मेरे पराक्रमको जानेगा ६ । ७ यह तेरे साथमें युद्धका करना मैं बहुत कालसे ऐसे चाहता हुआहूं जैसे कि पूर्व्वसमय में देवासुरोंके युद्ध में इन्द्रका भिड़ना राजा बलिसे चाहाहुआथा हे यादव अब बड़ाभारी युद्ध तुझ से करूंगा उससे तू मेरे बल पराक्रम और बीरताको जानेगा ८ । ९ अब तू युद्ध में मेरे हाथसे माराहुआ यमलोकको ऐसे जायगा जैसे कि रामचन्द्रजी के छोटे भाई लक्ष्मणजी के हाथसे रावणका पुत्र मेघनाद यमलोकको भेजागयाथा १० ११ हे माधव अब तीक्ष्ण शायकों से तुझको दण्ड देकर उन स्त्रियों को प्रसन्न करूंगा जिनको कि युद्धमें तैंने विधवा करके माराहै १२ हे माधव मेरे नेत्रों के सम्मुख आयाहुआ तू ऐसे नहीं छुटसक्ता जैसे कि सिंहके देशमें वर्त्तमान छोटा मृग नहीं जासक्ता हे राजा फिर सात्यकीने भी हँसकर उसको उत्तर दिया कि हे कौरव युद्धमें मुझको भय नहीं वर्त्तमान है १३ । १४ केवल तेरी बातों से मैं भयके योग्यनहींहूं युद्धमें वही मुझकोमारसक्ताहै जोमुझको अशस्त्रकरे १५ जो मुझको युद्धमें मारै वह सदैव सबको विजय करै निरर्थक बहुतसी बातों से क्या लाभ है अपना कर्म्म करके दिखलाओ १६ शरद ऋतुके बादलों के समान तेरा गर्जना वृथाहै हे बीर तेरी गर्ज्जना को सुनकर मुझको हँसी आती है १७ हे कौरव अब लोकमें बहुत कालसे चाहाहुआ युद्ध होय हे तात तेरेयुद्धको चाहनेवाली मेरी

बुद्धि शीघ्रता कररहीहै १८ हे नीचपुरुष अब मैं तुझको विना मारे नहीं लौटूंगा इसप्रकार वाक्यपारुष्यों से परस्पर घायल करनेवाले वहदोनों नरोत्तम १६ मारनेके अभिलाषी और अत्यन्त क्रोधरूप होकर युद्धमें सम्मुखहुये वह बड़े धनुषधारी पराक्रमी ईर्षा करनेवाले युद्धमें ऐसे भिड़े जैसे कि मतवाले दो हाथी हथिनीके लिये बनमें भिड़ जाते हैं शत्रुहन्ता भूरिश्रवा और सात्यकी ने बादलों के समान भयकारी बाणोंकी वर्षाओं को परस्पर वर्षाया फिर भूरिश्रवा ने शीघ्र चलनेवाले बाणों से सात्यकी को ढककर २० । २१ । २२ मारने के अभिलाषीने तीक्ष्णधारवाले बाणों से घायल किया हे भरतवंशी इसके पीछेभी भूरिश्रवाने दश बाणों से सात्यकी को छेदन कर २३ मारने की इच्छासे दूसरे तीक्ष्ण बाणों को छोड़ा हे राजा सात्यकी ने उसके उन तीक्ष्ण बाणोंको अन्तरिक्षमें २४ अस्त्रोंकी मायासे काटा और हे प्रभो फिर वह दोनों पृथक् २ होकर बाणों की वर्षा से वर्षा करनेवाले हुये २५ बड़े कुलवान् कौरव और वृष्णियों के यशको उत्पन्न करनेवाले वह दोनों वीर ऐसे युद्ध करनेवाले हुये जैसे कि नखों से शार्दूल और दांतोंसे दोमतवाले हाथी लड़ते हैं २६ अंगोंसे घायल रुधिर छोड़नेवाले उनदोनों ने रथ शक्ति और बिशिखनाम बाणों से परस्पर घायल किया २७ प्राणों के द्यूत खेलनेवाले उन दोनोंने परस्पर रोका इसप्रकार उत्तमकर्म्मी कौरव और वृष्णियोंके यश बढ़ानेवाले वह दोनों २८ परस्पर में ऐसे युद्ध करनेवालेहुये जैसे कि समूहों के अधिपति दो हाथी युद्ध करते हैं थोड़ेही समयमें ब्रह्मलोक को उत्तम माननेवाले २६ उत्तम स्थानों में जाने के अभिलाषी वह दोनों परस्पर गर्ज्जे सात्यकी और भूरिश्रवा प्रसन्न मनके समान धृतराष्ट्र के पुत्रों के देखतेहुये परस्पर बाणोंकी वर्षा करनेलगे लोगोंने उन शूरवीरोंके अधिपतियों को लड़तेहुये ऐसे देखा ३० । ३१ जैसे कि हथिनी के लिये यूथोंके स्वामी दो हाथी लड़ते हैं परस्पर घोड़ोंको मार धनुषोंको तोड़ ३२ विरथ होकर बड़े युद्धमें खड्ग चलानेके लिये सम्मुख हुये उत्तमजटित सुन्दर सुन्दर बड़ी बड़ी ढालोंको लेकर ३३ खड्गों को मियानसे बाहर करके दोनों युद्धमें भ्रमण करनेवाले हुये नानाप्रकारके मार्गोंको घूमते अपने अपने भागके मण्डलोंको करते ३४ उन क्रोधयुक्त शत्रुहन्ताओं ने परस्पर वारम्वार प्रहार किये खड्ग कवच निष्क और बाजूबन्द रखनेवाले ३५ दोनों यशस्वियों ने घुमाना ऊंचे घुमाना तिरछे मारना छेदना रुधिर

से लिप्त करना रुधिरमें डुबोना हटाना गिराना आदि अनेक चमत्कारी खड्गों के प्रहारों को दिखलाया ३६ और दोनों खड्गों से परस्पर प्रहारकर्त्ता हुये और अन्तर चाहनेवाले दोनों वीरों ने अपूर्व्व भ्रमण किये ३७ शिक्षा तीव्रता और उत्तमता को दिखलाते युद्ध करने वालों में श्रेष्ठ दोनों पुरुषोत्तमों ने युद्ध में परस्पर एकने दूसरेको खींचा ३८ हे राजा दोनों वीर सब सेनाके लोगोंके देखते एक मुहूर्त्त परस्पर युद्धकरके फिर विश्राम करनेवाले हुये ३९ फिर उन पुरुषोत्तमोंने सौ चन्द्रमा रखनेवाली सुवर्णजटित ढालों को खड्गों से काटकर भुजाओंसे युद्धकिया ४० बड़ी छाती और लम्बी भुजारखनेवाले भुजाके युद्धमें कुशल वह दोनों लोहे की परिघोंके समान भुजोंसे भुजोंको मिलाकर चिपटगये ४१ हे राजा उन दोनोंकी भुजाओं के आघातसे उस बल और शिक्षासे उत्पन्न होने वाले निग्रह प्रग्रह नाम पेंच सब शूरों के प्रसन्न करनेवाले हुये ४२ तब युद्ध में लड़नेवाले उन दोनों नरोत्तमों के शब्द बड़े भयकारी ऐसे प्रकटहुये जैसे कि बज्र और पर्व्वतके भयकारी शब्दहोते हैं ४३ और जैसे कि दो हाथी दांतों और दो बड़े बैल सींगोंसे युद्धकरें उसी प्रकार भुजाओं की गसावट और शिरकी टक्कर चरणका खैंचना पैंतरे बदलना खम्भठोकना नोचना चरणसे पेटको दबाना चारों ओरको घूमना जाना आना फेंकना पृथ्वीपर लोटजाना उठबैठना कूदना दौड़ना इन पेंचोंसे ४४।४५ कौरव और यादवोंमें श्रेष्ठ दोनों महात्माओंका युद्ध हुआ ४६ हे भरतबंशी जो युद्ध कि बत्तीस अंग रखनेवालाहै उन सब अंगोंको उन युद्ध करनेवाले महारथियों ने वहां दिखलाया ४७ इसके पीछे टूटे शस्त्रवाले यादवके युद्ध करनेपर बासुदेवजी अर्जुनसे बोले कि सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ रथसे विहीन युद्ध में लड़नेवाले सात्यकी को देखो ४८ हे भरतबंशी अर्जुन यह सात्यकी तेरे पीछे भरतबंशियों की सेना को छिन्नभिन्नकरके आपहुंचा है और बड़े २ पराक्रमी सब भरतबंशियोंमे युद्ध किया ४९ और युद्धका अभिलाषी भूरिश्रवा इस बड़े शूरबीर थकेहुये आते सात्यकी के सम्मुख हुआहै हे अर्ज्जुन यह समयके अनुसार योग्य बात नहींहै ५० इसके पीछे युद्धमें दुर्मद क्रोधयुक्त भूरिश्रवाने सात्यकी को उठाकर ऐसे पटका जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथी को पटकताहै हे राजा युद्ध में रथपर नियत क्रोधयुक्त शूरवीरों में श्रेष्ठ अर्ज्जुन और केशवजीके युद्धमें देखनेपर ५१।५२ महाबाहु श्रीकृष्णजीने अर्जुनसे कहा

कि वृष्णी और अन्धकों में श्रेष्ठ सात्यकीको भूरिश्रवाकी आधीनतामें देखो ५३ हे अर्ज्जुन कठिन कर्मको करके थके पृथ्वीपर वर्त्तमान तेरे पास आनेवाले वीर सात्यकी की रक्षाकरो ५४ हे पुरुषोत्तम अर्जुन यह उत्तम सात्यकी तेरे कारणसे भूरिश्रवाके आधीन न होजाय हे समर्थ सो तुम शीघ्रताकरो ५५ इसके पीछे प्रसन्नचित्त अर्ज्जुन वासुदेवजीसे वोले कि कौरवों में श्रेष्ठ भूरिश्रवाको वृष्णियों में वड़े वीर सात्यकी के साथ ऐसे क्रीड़ा करनेवाला देखो ५६ जैसे कि वन में यूथके स्वामी सिंहको मतवाले वड़े हाथी के साथ संजय वोले हे भरतर्षभ पांडव अर्जुनके इसप्रकार कहनेपर ५७ सेनाओं में वड़ा हाहाकार हुआ फिर उस महावाहुने सात्यकी को उठाकर पृथ्वीपर पटका ५८ वह कौरवों में श्रेष्ठ भूरिश्रवा उस ज्ञाति में अत्यन्त श्रेष्ठ सात्यकीको युद्धमें खींचता ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि सिंहहाथियोंको खींचताहुआ शोभित होताहै ५९ फिर भूरिश्रवाने मियानसे खड्गको निकालकर उसके केशोंको पकड़ लिया और वैसे ले छातीपर घायलकिया ६० इसके पीछे उसके शरीरसे उसका कुण्डलधारी शिरकाटना चाहा फिर शीघ्रता करनेवाले यादव ने भी एक क्षणतक बाल पकड़नेवाली भूरिश्रवा की भुजाके साथ शिर को ऐसा अच्छा घुमाया जैसे कि दण्डसे छेदाहुआ कुम्हारका चक्रहोता है ६१ । ६२ हे राजा फिर वासुदेवजी युद्ध में खींचतेहुये उस यादवको देखकर अर्जुनसे वोले ६३ हे महावाहु तुम भूरिश्रवाकी आधीनता में आयेहुये उस सात्यकी को देखो जो वृष्णिवंशी और अन्धकवंशियों में श्रेष्ठ और तेरा शिष्यहै और धनुष विद्या में तेरे समानहै ६४ हे अर्जुन वहां पराक्रम मिथ्याहै जहां भूरिश्रवा युद्ध में सत्यपराक्रमी यादव सात्यकी को मारताहै ६५ वासुदेवजी के इस वचनको सुनकर महावाहु अर्जुनने युद्धमें भूरिश्रवाकी चित्त से प्रशंसाकी ६६ कौरवों की कीर्त्ति का वढ़ानेवाला युद्ध में क्रीड़ा करनेवाला भूरिश्रवा यादवों में श्रेष्ठ सात्यकी को खींचकर मुझको फिर प्रसन्न करताहै ६७ जो वृष्णिवंशियों में अत्यन्त श्रेष्ठ सात्यकी को नहीं मारता है और जैसे वनमें वड़े हाथीको सिंह खैंचताहै उसी प्रकार यह भी खैंचता है ६८ हे राजा महावाहु पाण्डव अर्ज्जुनने इसप्रकार मनसे कौरवको पूजकर वासुदेवजी से कहा ६९ कि जयद्रथ में दृष्टि लगनेसे इस माधव सात्यकीको नहीं देखताहूं इससे मैं इस कठिन कर्मको यादवके निमित्त करताहूं ७० वासुदेवजी के वचनको करतेहुये अ-

र्जुनने यह कहकर उसके पीछे तीक्ष्णधार क्षुरप्रको गांडीव धनुषपर चढ़ाया ७१ जैसे कि आकाशसे गिराहुआ उल्का होताहै उसी प्रकार अर्जुनकी भुजासे छूटेहुये उस बाणने भूरिश्रवाकी उस बाजूबन्दसे शोभित खड्ग पकड़नेवाली भुजा को शरीरसे काटा ७२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिद्विचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४२॥

एकसौतैंतालीसका अध्याय॥

संजय बोले कि वह भुजा खड्ग और शुभ बाजूबन्द समेत पृथ्वीपर गिरपड़ी उस उत्तम भुजाने जीवलोकके बड़े दुःख को नियत किया मारनेकी इच्छावान् भुजा दृष्टिसे गुप्त अर्ज्जुनके बाणसे काटीहुई पांच फण रखनेवाले सर्पकी समान वेगसे पृथ्वीपर गिरपड़ी १। २ उस कौरवने अर्ज्जुनके कारण अपने को निष्फल देख सात्यकी को छोड़कर क्रोधसे पाण्डवकी निन्दाकरी ३ अर्थात् भूरिश्रवा बोला हे कुन्ती के पुत्र दुःखकी बात है कि तुमने यह निर्दय कर्म्म किया जो मुझ दूसरे से प्रवृत्त युद्ध न देखनेवालेकी भुजाको काटा ४ धर्मके पुत्र राजा युधिष्ठिर जब पूछेंगे कि युद्धमें मेरे साथ किस कर्म्मके करने से भूरिश्रवा मारा गया तब तुम उसको क्या उत्तर दोगे हे अर्ज्जुन साक्षात् महात्मा इन्द्र रुद्र द्रोणाचार्य्य और कृपाचार्य्य ने यह अस्त्रविद्या तुझको उपदेशकी ५। ६ निश्चय करके तुम अस्त्रधर्मों के ज्ञाता और लोक में सब शूरबीरों से अधिक होकर भी तुमने मुझ युद्ध न करनेवाले को कैसे मारा ७ उत्तम चित्तवाले पुरुष अचेत भयभीत विरथ प्रार्थना करनेवाला और आपत्तिमें फँसाहुआ इतने प्रकारके शूरबीरोंपर प्रहार नहीं करते ८ यह कर्म्म जो तुमने किया है सो सत्पुरुषोंसे त्यागा हुआ और नीचोंका कियाहुआ है हे अर्ज्जुन तुमने इस कठिनता से करने के योग्य पापकर्मको कैसे किया ९ हे अर्जुन उत्तम कर्म्मका करना उत्तम पुरुषोंसे सुगम कहाहै और बुरा कर्म्म अच्छे लोगोंसे इस पृथ्वीपर करना कठिनहै १० हे नरोत्तम मनुष्य जिन २ अच्छे और बुरे मनुष्यों में और जिन २ बुरे भले कर्मों में वर्त्तमान होताहै उसी२ प्रकृतिको शीघ्रतासे पाताहै वह सब तुझमें दिखाई पड़ताहै ११ सुन्दर चलन और व्रत करनेवाला और राजाओंके वंशमें उत्पन्न मुख्यकरके कौरववंशी होकर तू क्षत्रिय धर्मसे किस निमित्त जुदाहुआ १२ जो यह

अत्यन्त नीचकर्म सात्यकी के निमित्त तुमने किया निश्चयकरके यह वासुदेवजी का मत है तुझ में नहीं विदित होताहै १३ प्रकटहै कि दूसरे के साथ युद्ध करने वाले और अचेत के अर्थ सिवाय श्रीकृष्ण के अपने मित्र को और कौन ऐसे दुःख देसक्ता है १४ हे अर्ज्जुन तुमने इस व्रात्य दुष्कर्मी स्वभावही से निन्दित वृष्णी और अन्धकबंशी को किस प्रकारसे प्रमाणकिया युद्धभूमि में उसके ऐसे वचनों को सुनकर अर्ज्जुन भूरिश्रवासे बोला कि प्रत्यक्ष है वृद्ध मनुष्य अपनी बुद्धिको भी वृद्ध करदेताहै यह जो तुमने कहाहै सब वृथा है १५।१६ इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजीको जानतेहुये तुम मुझ पांडवकी निन्दा करतेहो जो कि तुम युद्धोंके धर्म्मोंके ज्ञाता और सब शास्त्रोंके अर्थोंमें पूर्णतासे कुशलहो १७ मैं अधर्म कभी नहीं करसक्ता तुम जानतेहुये मोहित होतेहो अपने मनुष्योंसे संयुक्त क्षत्रिय लोग शत्रुओंसे लड़ते हैं १८ वह भाई,पिता,चाचाआदि और पुत्र,नातेदार मित्र और समान वयवालोंके साथ होकर शत्रुओंसे लड़ते हैं वह सब भुजामें रक्षितहैं १९ सो मैं अपने शिष्य सुखदायी नातेदार और कठिनतासे छोड़नेकेयोग्य प्राणों को छोड़कर हमारे निमित्त युद्ध करनेवाले २० मेरी दक्षिण भुजा रूप युद्धमें दुर्मद सात्यकीकी कैसे रक्षा नहीं करूं हे राजा निश्चय करके युद्धभूमि में वर्त्तमान वीरसे अपना शरीर रक्षा करनेके योग्य नहीं है २१ जो जिसके मनोरथ प्राप्त करनेमें प्रवृत्त होताहै निश्चय करके वह रक्षाकेयोग्यहै वह राजा बड़े युद्धों में उन रक्षितों से रक्षाके योग्यहै २२ जो मैं इस बड़े युद्धमें सात्यकी को मृतक देखूं तो उस अनर्थ से और उसके पृथक् होनेके विरहसे मुझको पाप होता २३ इस हेतुसे मैंने उसकी रक्षाकरी इस कारण से तुम मुझपर क्यों क्रोध करते हो हे राजा जो तुम दूसरे के साथ भिड़ेहोने से मेरी निन्दा करतेहो २४ कि मैं तुझसे ठगागयाहूं उसमें तेरेकवचको अस्तव्यस्तकरते और आपरथपर सवार धनुपकी प्रत्यंचाको खैंचतेहुये वह शत्रुओंके साथ लड़नेवाली बुद्धि भ्रांतिहै इसप्रकार रथ हाथियोंसे पूर्ण रथके सवार और पतियोंसे व्याकुल २५।२६ सिंहनादोंसे शब्दायमान सेनारूपी गम्भीर सागरमें मिलेहुये अपनी सेनाके लोग दूसरोंसे यादव समेत सम्मुख होने में २७ किस रीतिसे एकका युद्ध एकही के साथ होसक्ता है यहसात्यकी बहुतवीरोंसे भिड़कर और महारथियोंको विजयकरके २८थकाहुआ थकेहुये घोड़ोंवाला खेमन और शस्त्रोंसे पीड़ावानहै ऐसी दशावाले और अपने

बलके आधीन होनेवाले महारथी सात्यकीको युद्धमें विजयकरके२९अपनीही अधिकता जानतेहो और युद्धमें खड्गसे उसके शिरको काटना चाहतेहो ३० उस प्रकारकी आपत्तिमें फँसेहुये सात्यकी को कौन सहसकेगा तुम अपनीही निन्दाकरो जो अपनी भी रक्षा नहीं करतेहो जो मनुष्य तुम्हारी शरण में आवे तो हे वीर उसके विषयमें तुम कैसी करोगे ३१ सञ्जय बोले कि अर्ज्जुन के इन वचनोंको सुनकर महाबाहु भूरिश्रवा सात्यकीको छोड़कर युद्धमें मरनेके निमित्त बैठगया ३२ उस पवित्र लक्षण और ब्रह्मलोकके जानेके अभिलाषी भूरिश्रवाने बायेंहाथसे बाणोंको बिछाकर अपने प्राणोंको प्राणोंमें नियत किया ३३ सूर्य्यमें नेत्रोंको और जलमें स्वच्छ मनको लय करके महा उपनिषदों को ध्यान करता हुआ वह भूरिश्रवा योगमें नियतचित्त होगया ३४ उसके पीछे सब सेनाके मनुष्यों ने श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन की निन्दाकरी और उस मृतक पुरुषोत्तम की प्रशंसा करी ३५ इस प्रकारसे निन्दा कियेहुये दोनों पुरुष कुछ अप्रिय वचनको नहीं बोले उसके पीछे वह स्तुतिमान् भूरिश्रवा प्रसन्न नहींहुआ हे राजा चित्तसे उनके और उसके बचनको न सहता क्रोधरहित मनसे बचनों को ध्यान करता पाण्डव अर्ज्जुन इस प्रकारसे निन्दा करनेवाले आपके पुत्रोंसे बड़ीनिन्दापूर्वक बोला ३६। ३७। ३८ कि सब राजाभी मेरे बड़े व्रतको जानते हैं मेरा वह शूरबीर मारनेके योग्य नहीं है जो मेरे बाणके सम्मुख होवे ३९ भूरिश्रवाकी इसबातको देखकर मेरी निन्दा करनी योग्य नहीं है धर्म्मको न जानकर शत्रु निन्दा करनेके योग्य नहीं है ४० युद्ध में शस्त्र उठानेवाले और वृष्णी बीरको मारने के अभिलाषी भूरिश्रवा की भुजाको जो मैंने काटा वह धर्म्म से निन्दित कर्म्म नहीं है ४१ शस्त्र और कवचसे रहित बिरथ बालक अभिमन्यु का मारना धर्म्मरूप है हे तात उसको कौन अच्छा कहसक्ता है ४२ अर्ज्जुनके इस प्रकारके वचनको सुनकर उसने शिरसे पृथ्वी को स्पर्श किया और बायें हाथसे अपने कटेहुये दाहिने हाथको अर्ज्जुनकी ओर फेंका ४३ इसके पीछे बड़ा तेजस्वी भूरिश्रवा अर्ज्जुनके इस वचनको सुनकर नीचा शिर करके चुपहोरहा ४४ अर्ज्जुन बोले कि जो मेरी प्रीति धर्म्मराज में वा पराक्रमी भीमसेन में और नकुल सहदेवमें है हे शल्यके बड़ेभाई भूरिश्रवा वही मेरी प्रीति तुझमें है ४५ तुम मुझ से और महात्मा श्रीकृष्णजी से आज्ञा लेकर पवित्रलोकोंको ऐसे जावो जैसे कि औशीनर

का पुत्र शिवि स्वर्गको गया ४६ वासुदेवजी बोले कि हे सदैव अग्निहोत्र कर-
नेवाले भूरिश्रवा जो मेरे निर्म्मल लोक एकवारही प्रकाश करते हैं और देवता-
ओंमें श्रेष्ठ ब्रह्माजी आदिक जिनको चाहते हैं उन लोकों को तुम शीघ्रता से
जाओ और गरुड़के उत्तम शरीर पर सवारी करनेवाले होकर तुम मेरे समानहो
४७ सञ्जय बोले कि भूरिश्रवा के हाथसे छूटकर उठेहुये उस सात्यकी ने खड्ग
को लेकर उस महात्मा के शिरको काटने की इच्छा से ४८ अर्ज्जुन के हाथ से
मारे हुये परमेश्वर में प्रवृत्त चित्त निष्पाप भूरिश्रवा को मारना चाहा ४६ बड़े
दुःखी मनसे सब सेनाओं को पुकारते निन्दा करते और श्रीकृष्ण महात्मा अ-
र्जुन भीमसेन दोनों चक्रके रक्षक अश्वत्थामा कृपाचार्य्य कर्ण वृपसेन और ज-
यद्रथके निषेध करनेपर भी सात्यकी ने सेनाओंके पुकारतेहुये उस व्रतधारी टूटे
भुज टूटी शूंड़वाले हाथीके समान बैठेहुये भूरिश्रवा को मारा ५०।५१।५२ सा-
त्यकी ने युद्धमें शरीरके त्यागने के अर्थ अर्ज्जुनके वाण टूटे भुजवाले विराज-
मान भूरिश्रवाके शिरको खड्ग से काटा ५३ फिर सेनाके लोगों ने सात्यकी को
उस कर्णके करने से अच्छा नही कहा जो पूर्व्वमें अर्जुनके मारेहुये कौरव को
मारा ५४ सिद्ध चारण और मनुष्योंने उस इन्द्रकी समान भूरिश्रवा को युद्ध में
शरीर त्यागने के निमित्त बैठा और मराहुआ देखकर ५५ उसके कर्म्मों से आ-
श्चर्य्यित उन देवताओं ने उसको पूजा अर्थात् प्रशंसाकरी और आपकी सेना
के लोग पक्षपात के अनेक वचनों को बोले ५६ किं इसमें यादव सात्यकी का
अपराध नहींहै यह ऐसीही होनहारथी इस हेतुसे तुमको क्रोध न करना चाहिये
मनुष्योंका क्रोधही बड़ा दुःख है मैंने इसकी मृत्यु सात्यकी कोही नियत किया
है ५७।५८ सात्यकी बोला हे धर्म्मसे मुख फेरनेवाले और अधर्म्मके मार्गमें नि-
यत होनेवाले शूरलोगो यह मारनेके अयोग्य है इन धर्म्मरूप वचनों से जो मु-
झको कहतेहो ५६ तो उस कालमें जब कि सुभद्राका पुत्र बालक बिना शस्त्रके
युद्ध में तुम्हारे हाथ से मारा गया तब तुम्हारा धर्म्म कहां जातारहा था ६० मैंने
अपने किसी अपमान में यह प्रतिज्ञाकरी कि जो मुझ जीवते को युद्ध में खैंच
कर क्रोध पूर्व्वक पैरों से घायलकरे ६१ वह मेरा शत्रु मुझसेही मारने के योग्य
होय यद्यपि मुनिका व्रत रखनेवाला भी होय मुझ नेत्रवाले प्रहारमें भुजा समेत
चेष्टा करनेवाले को मरा हुआ मानतेहो यह तुम्हारी स्वल्प बुद्धिता है हे उत्तम

कौरवो मैंने इसका मारना योग्य समझकर किया है ६२ । ६३ प्रतिज्ञा की रक्षा करनेवाले अर्ज्जुनने जो उसकी खड्ग समेत भुजा को काटा उससे ठगा गया हूं ६४ जो होनहारहै वही होनेके योग्यहै और दैव अर्थात् प्रारब्धही कर्म करता है सो मैं इस युद्ध में उपाय करनेवाला हुआ इसमें कौनसा अधर्म्म किया ६५ पूर्व्व समय में वाल्मीकिजीने भी यह श्लोक कहाहै कि स्त्रियां मारने के योग्य नहीं हे वानर जो तुम कहतेहो सो सुनो कि निश्चयवाले मनुष्य को सदैव सब समय ६६ वह कर्म्म करना योग्यहै जो शत्रुओं के दुःखों को उत्पन्न करनेवाला होय संजय बोले कि हे महाराज सात्यकी के इन वचनों को सुनकर सब उत्तम कौरवों ने कुछ भी नहीं कहा और मन से प्रशंसा की ६७ बड़े यज्ञों में मन्त्र से पवित्र यशस्वी हजारों दक्षिणा देनेवाले वनवासी मुनिके समान उस भूरिश्रवा के मारनेकी वहां किसीने प्रशंसा नहीं की ६८ उस वरदाता शूरवीर भूरिश्रवाका वह शिर जिसके बाल बहुत नीले और कपोतके समान रक्तनेत्र थे ऐसे गिरपड़ा जैसे कि हवनके योग्य यज्ञशाला में कटा हुआ घोड़े का शिर रक्खा हुआ होताहै ६९ शस्त्रसे उत्पन्न तेजसे पवित्र वरके योग्य वह वरदाता अर्थात् बिष्णु-पदके मिलने से भूरिश्रवा अपने उत्तम धर्म्म से पृथ्वी और आकाश को व्याप्त करके उत्तम शरीर को त्यागकर ऊपरकी ओर चला ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिशतोपरित्रयश्चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४३ ॥

एकसौचवालीसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि बीर सात्यकी युधिष्ठिरके पास प्रतिज्ञाकरके द्रोणाचार्य्य कर्ण बिकर्ण और कृतबर्मासे अजेय सेनारूपी समुद्रसे पार उतरा १ युद्धोंमें नहीं हटायाहुआ वह सात्यकी किसप्रकार कौरव भूरिश्रवाके बलसे पकड़कर गिराया गया २ संजय बोले कि जैसे पूर्व्वसमय में सात्यकीका और भूरिश्रवाका जन्म हुआहै और उसी में आपका सन्देहहै उसको मुझसे सुनो कि ३ अत्रिका पुत्र चन्द्रमाहुआ चन्द्रमाका पुत्र बुध और बुधका एक पुत्र इन्द्रके समान पुरूरवानाम हुआ पुरूरवाका पुत्र आयु और आयुका पुत्र नहुष नहुषका पुत्र राजाययाति हुआ वह ययाति देवऋषियोंका अंगीकृतहुआ ४।५ देवयानीमें ययातिका बड़ा पुत्र यदुहुआ यदुके वंशमें देवमीढ़ नाम पुत्रहुआ ६ उसका पुत्र यदुवंशी शूर-

सेन नाम तीनों लोकों में बिख्यातकीर्त्ति हुआ शूरसेनके पुत्र नरोत्तम बड़े तेजस्वी वसुदेवजी हुये ७ शूरसेन धनुष विद्या में असादृश्य और युद्ध में कार्त्तवीर्य्यके समान हुआ और उसी कुलमें उसी के समान पराक्रमी शिनिहुआ ८ हे राजा उसी समय में महात्मा देवककी पुत्री देवकी के स्वयम्बर में सब क्षत्रियों के इकट्ठे होनेपर ९ उस स्थान में राजा शिनिने सब राजाओं को विजय करके देवी देवकी को वसुदेवजी के अर्थ शीघ्रता से रथपर बैठालिया १० तब बड़े तेजस्वी शूर सोमदत्त ने उस रथपर नियतहुई देवकी को देखकर शिनि से क्षमा नहीं की ११ और उन दोनों को अनेकप्रकार का अद्भुत युद्ध मध्याह्न तक हुआ हे पुरुषोत्तम लड़ते २ उन दोनों वीरोंका बाहुयुद्ध भी हुआ १२ और शिनिके हाथ से सोमदत्त पृथ्वीपर गिरायागया फिर खड्ग उठाकर शिरके बालों को पकड़ चारों ओर से देखनेवाले हजारों राजाओं के मध्य में पैरों से घायल किया फिर उसने दयाकरके उसको जीवताहुआ छोड़दिया १३ । १४ हे श्रेष्ठ फिर उस संशयसे उस दशावाले क्रोधयुक्त सोमदत्तने महादेवजीको प्रसन्न किया १५ फिर उस बड़े बरदानी शिवजीने उसपर प्रसन्नहोकर उसको वरदान मांगनेको उत्सुककिया फिर उस राजाने वरमांगा १६ कि हे भगवान् मैं ऐसे पुत्रको चाहता हूं जो कि युद्धमें हजारों राजाओं के मध्य में शिनिके पुत्रको गिरा कर चरणों से घायलकरे १७ हे राजा वह शिवजी उस सोमदत्त के उस बचन को सुनकर और तथास्तु कहकर उसी स्थानमें गुप्तहोगये १८ उसने उसीवरप्रदानसे भूरिश्रवानाम पुत्रको पाया और उस सोमदत्तके पुत्र भूरिश्रवाने शिनिके पुत्रको युद्धमें गिराया १९ और सब सेनाओंके देखतेहुये उसको चरणोंसे घायलकिया हे राजा जो आपने मुझसे पूछा सो मैंने तुमसे कहा २० यादव सात्यकी युद्धमें उत्तम पुरुषों से भी विजय करने के योग्य नहीं है क्योंकि यादव लोग युद्ध में लक्ष्यभेदी और अद्भुत योद्धा २१ देव दनुज और गन्धर्वों के विजय करनेवाले आश्चर्य्यसे रहित और अपने पराक्रमसे विजय में प्रवृत्त होनेवाले हैं यह दूसरे के आधीन नहीं हैं २२ हे प्रभु पुरुषोत्तम इसलोक में बल पराक्रमसे वृष्णियोंके समान तीनोंकाल में भी कोई शूरवीर उत्पन्न होनेवाला नहीं जाना जाताहै २३ वह जातिका अपमान नहीं करते हैं और वृद्धोंकी आज्ञाओं में प्रीति रखनेवाले होते हैं देवता असुर गन्धर्व यक्ष उरग और राक्षस भी २४ वृष्णी वीरोंके विजय

करनेवाले नहींहैं फिर मनुष्योंकी क्या सामर्थ्य है ब्राह्मण, गुरू और ज्ञानवालों के धनोंके रक्षकहैं और जो कि किसी दशा में बन्धनमें पड़ेहों उनके भी रक्षकहैं और धन अहंकार से रहित साधु ब्राह्मणों की सेवा करनेवाले और सत्यवक्काहैं २५।२६ वह समर्थ होकर किसीप्रकारके दुःखी लोगों का अपमान नहीं करते हैं सदैव परमेश्वरके भक्त जितेन्द्रिय रक्षक और आत्मश्लाघा के करनेवाले नहीं हैं २७ इसी हेतुसे वृष्णी वीरोंके प्रताप का नाश नहीं होता है चाहै कोई पुरुष समुद्र को तरकर मेरु पर्व्वत को भी उठाले २८ परन्तु सम्मुख होकर वृष्णी वीरोंके अन्तको नहीं पासक्काहै हे राजा जिन जिन बातोंमें आपको सन्देह था वह सब मैंने तुमसे कहा २९ हे नरोत्तम कौरवराज आपका बड़ा अन्यायहै ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसात्यकीप्रशंसायांशतोपरिचतुश्चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४४॥

एकसौपैंतालीसका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय उस दशावाले उस कौरव भूरिश्रवा के मरनेपर फिर जैसे युद्धहुआ उसको मुझसे कहो १ संजय बोले कि हे भरतवंशी परलोक में भूरिश्रवा के जानेपर महाबाहु अर्ज्जुनने बासुदेवजी से प्रार्थनाकरी २ कि हे श्रीकृष्णजी घोड़ों को अत्यन्त प्रेरितकरके वहां लेचलो जहांपर राजा जयद्रथ है हे निष्पाप आप मेरी प्रतिज्ञा को भी सफल करने को योग्य हो ३ हे महाबाहो शीघ्रता करनेवाला सूर्य्य अस्ताचल को प्राप्तहोता है हे पुरुषोत्तम मैंने भी बड़े कर्म्म की प्रतिज्ञाकरी है ४ और कौरवीय सेना महारथियों से रक्षित है जैसे कि सूर्य्य अस्त न होय और मेरा वचन सत्यहो ५ और जैसे मैं जयद्रथ को मारूं हे श्रीकृष्णजी उसी प्रकारसे आप घोड़ोंको चलायमान करो इसके पीछे घोड़ों के हृदयके जाननेवाले महाबाहु श्रीकृष्णजी ने रजत वर्णवाले घोड़ोंको ६ जयद्रथ के रथकी ओरको चलाया वायुकेसमान उछलकर चलतेहुये घोड़ोंके द्वारा जानेवाले उन सफल बाणवाले अर्ज्जुन की ओर ७ शीघ्रता करनेवाले जो सेना के अधिपतिलोग दौड़े उनके नाम यहहैं दुर्य्योधन, कर्ण, वृषसेन, शल्य ८ अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और आप जयद्रथ, अर्ज्जुन ने सम्मुख नियतहुते जयद्रथ को पाकर ९ क्रोधसे अग्निरूप नेत्रों से उसको देखा हे राजा इसके पीछे राजा दुर्य्योधन शीघ्रही जयद्रथके मारने के अर्थ जानेवाले अर्ज्जुन को देखकर कर्ण

से बोला हे सूर्य्य के पुत्र महात्मा यह वह युद्धका समय है अब तुम अपने उस बलको दिखलाओ जिससे अर्ज्जुनके हाथ से युद्धमें जयद्रथ नहीं मारा जाय हे कर्ण उसी प्रकार करना योग्यहै १०।१२ हे नरबीर दिन थोड़ाही बाकी है अब शत्रुको बाणोंके समूहोंसे अच्छे प्रकारसे घायलकर हे नरों में बड़ेबीर कर्ण दिनके अन्तको पाकर निश्चय हमारी विजय होगी १३ सूर्य्यास्त के समय जयद्रथ के बच जानेपर मिथ्या प्रतिज्ञा करनेवाला अर्ज्जुन अग्नि में प्रवेश करेगा १४ हे बड़ाई देनेवाले कर्ण अर्ज्जुन से रहित पृथ्वीपर इसके सब भाई अपने साथी सहायकों समेत एक मुहूर्त्त भी जीवते नहीं रहसक्के १५ हे कर्ण पाण्डवों के नाश होनेके पीछे इस अकण्टक पृथ्वीको पर्व्वत बन और काननों समेत भोगेंगे १६ हे बड़ाई देनेवाले कर्ण दैवसे मोहित प्रकृति के बिपरीत कार्य्याकार्य्य के न जाननेवाले अर्ज्जुनने युद्धमें प्रतिज्ञाकरी १७ हेकर्ण निश्चयकरके पाण्डव अर्ज्जुनने अपनेही नाशके निमित्त जयद्रथके मारनेमें यह प्रतिज्ञाकरी है१८ सो हे कर्ण तुझ अजेयके जीवते होनेपर अर्ज्जुन सूर्य्यास्त से पूर्व्वही कैसे राजा जयद्रथ को मारसक्ता है १९ यह अर्ज्जुन मद्रके राजा शल्य और महात्मा कृपाचार्य्य से रक्षितहुये जयद्रथ को युद्धके मुखपर कैसे मारेगा २० कालसे प्रेरित अर्ज्जुन अश्वत्थामा दुश्शासन और मुझसे रक्षित जयद्रथ को किस प्रकारसे पावेगा २१ बहुतसे शूरबीर लड़नेवालेहैं और सूर्य्य जल्दीसे अस्तङ्गत होनेवाले हैं मैं निश्चय करके अनुमान करताहूं कि अर्ज्जुन जयद्रथको नहीं पावेगा २२ हे कर्ण सो तुम मेरेसाथ और अश्वत्थामा शल्य और कृपाचार्य्य और अन्य अन्य महारथी शूरबीरों के साथ २३ बड़े उपायपूर्व्वक युद्धभूमिमें नियत होकर अर्ज्जुनसे युद्ध करो हे श्रेष्ठ आपके पुत्रके इन बचनोंको सुनकर कर्णने २४ कौरवों में श्रेष्ठ दुर्य्योधनसे यह बचन कहा कि मैं कठिन प्रहार करनेवाले धनुषधारी बीर भीमसेन के २५ नानाप्रकार के बाणजालों से अत्यन्त घायल शरीरहूं हे बड़ाई देनेवाले नियत होना योग्यहै इस हेतुसे मैंभी युद्ध में नियतहूं २६ बड़े बाणों से अच्छा सन्तप्त कियाहुआ मेरा कोई अङ्ग चेष्टा नहीं करता है सामर्थ्य के अनुसार मैं उसीप्रकारसे लड़ूंगा जिसमें कि यहअर्ज्जुन जयद्रथको नहीं मारेगा क्योंकि मेरा जीवन तेरेही निमित्तहै मेरे युद्ध करते और तीक्ष्ण शायकोंके छोड़ते २७।२८ संग्राम के धनोंका बिजय करनेवाला बीर अर्ज्जुन जयद्रथको नहीं पावेगा भक्ति

रखनेवाले सदैव दूसरे की भलाई चाहनेवाले पुरुषों से जो कर्म करने के योग्य है २९ हे कौरव मैं उसीको करूंगा आगे बिजय होना ईश्वरके आधीन है हे महाराज अब मैं जयद्रथ के अर्थ और तेरे प्रियके निमित्त युद्ध में उपाय करूंगा परन्तु बिजय ईश्वरके आधीनहै हे पुरुषोत्तम अब अपनी बीरता में नियत होकर मैं तेरे निमित्त अर्ज्जुन से लडूंगा बिजय ईश्वर के आधीन है हे कौरवों में श्रेष्ठ अब मेरे और अर्ज्जुनके उस युद्धको ३१।३२ जोकि भयका उत्पन्न करनेवाला और रोमहर्षण करनेवाला होगा सब सेनाओंके मनुष्योंके देखतेहुये युद्ध में कर्ण और दुर्य्योधन की इस प्रकारकी बातें होनेपरही ३३ अर्ज्जुन ने तीक्ष्ण बाणोंसे आपकी सेनाको मारा और तीक्ष्णधार बाणों से मुख न फेरनेवाले शूरों की ३४ भुजा जोकि परिघ और हाथीकी सूंड़ोंके समानथीं उनको युद्धमें काटा महाबाहुने फिर तीक्ष्ण धारवाले बाणों से उनके शिरों कोभी काटा ३५ हाथियों की सूंड़ें घोड़ोंकी गर्द्दनें और चारोंओरसे रथियोंके अक्ष परिघ और तोमरवाले रुधिर में भरे अश्व सवारों को ३६ घोड़ों और उत्तम हाथियों को अर्ज्जुनने अपने क्षुरोंसे दो दो और तीन तीन खण्ड करदिये फिर वह कट २ कर चारोंओर से गिरपड़े ३७ ध्वजा छत्र चामर और शिर चारोंओर से गिरे और जैसे उठा हुआ अग्नि सूखे बन को भस्म करताहै उसी प्रकार अर्जुनने आपकी सेनाको भस्मीभूत करदिया ३८ अर्जुनने थोड़ीही देरमें पृथ्वी को रुधिरसे पूर्ण करदिया वह पराक्रमी अर्जुन उस आपकी सेनाको अनेक शूरोंसे रहित करके भीमसेन और सात्यकी से रक्षित होकर ३९। ४० ऐसा प्रकाशमान हुआ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ जैसे कि प्रज्वलित अग्नि होताहै फिर बड़े धनुषधारी पुरुषोत्तम आपके शूरवीरोंने उस प्रकारसे नियत उस अर्जुन को देखकर बलरूपी धनसे अर्ज्जुन को नहीं सहा दुर्य्योधन कर्ण वृषसेन शल्य ४१।४२ अश्वत्थामा कृपाचार्य आप जयद्रथ इन सब कवचधारी बीरोंने जयद्रथके निमित्त अर्ज्जुन को घेरलिया ४३ युद्धमें कुशल और निर्भय कालके समान खुलेहुये मुखवाले उन सबने उस युद्ध कुशल रथके मार्गों में धनुष प्रत्यंचा और तलके शब्दोंके साथ नृत्य करनेवाले अर्जुन को चारोंओर से घेरलिया श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनके मारने के इच्छावान् उन लोगों ने जयद्रथ को पीछेकी ओर करके ४४।४५ सूर्य्य के रक्तवर्ण होनेपर सूर्य्यास्त को अभिलाषा करतेहुओंने सर्प्पके फणोंकेरूप हाथों से धनुषों को ल-

चाकर सूर्य्यके समान प्रकाशमान हजारों बाणों को छोड़ा उसके पीछे युद्ध दु-र्म्मद अर्जुनने उन खैंचेहुये प्रत्येक बाणोंको ४६।४७ दोदो तीनतीन खण्ड करके उन रथियों को घायल किया हे राजा अपने पराक्रम को दिखाते सिंह लांगूल ध्वजावाले ४८ सारद्धतके पुत्र अश्वत्थामा ने अर्जुन को रोका अर्जुन को दश बाणों से और वासुदेवजी को सात बाणों से घायल करके ४९ जयद्रथ को रक्षित करता हुआ रथके मार्ग्गों में नियत हुआ इसके पीछे सब उत्तम कौरवों ने उस को ५० बड़े रथोंके समूहों के द्वारा सब ओरसे रोका धनुषों को टङ्कारते शायकों को छोड़ते ५१ लोगोंने आपके पुत्रकी आज्ञासे जयद्रथ को चारोंओर से रक्षित किया इसके पीछे शूरबीर अर्ज्जुनकी दोनों भुजाओं का पराक्रम देखने में आ-या ५२ और बाणोंकी और गाण्डीव धनुषकी अविनाशता कोभी देखा कि अ-श्वत्थामा और कृपाचार्य्यके अस्त्रों को अस्त्रों से रोककर ५३ प्रत्येक को दश २ बाणों से घायल किया अश्वत्थामाने उसको पचीस बाणों से वृषसेनने सात बा-णोंसे ५४ दुर्य्योधनने बीस बाणों से कर्ण और शल्यने तीन २ बाणों से इस प्र-कार गर्ज्जते और वारम्वार घायल करते ५५ धनुषों को कम्पाते उन बीरोंने सब ओरसे अर्जुन को रोका और शीघ्र अपने रथमण्डल को लगाया ५६ सूर्य्यास्त को चाहते और उसके सम्मुख गर्जते धनुषों को चलायमान करते शीघ्रता कर-नेवाले महारथियों ने ५७ उसको तीक्ष्ण बाणों से ऐसा आच्छादित किया जैसे कि जलकी धाराओं से बादल पर्व्वत को आच्छादित करताहै हे राजा परिघके समान भुजाधारी उन शूरबीरों ने अर्ज्जुनके शरीरपर दिव्य महाअस्त्रोंको दिख-लाया फिर उसपराक्रमीने आपकी सेनाको बहुत मृतक शूरबीरवाली करके ५८। ५९सत्यपराक्रमी निर्भयने जयद्रथकोपाया हे राजा कर्णनेबाणोंसे उसको रोका६० हे भरतवंशी फिर अर्जुनने युद्धभूमिके मध्य भीमसेन और सात्यकीके देखतेहुये उस कर्णको दश बाणोंसे छेदा ६१ महाबाहु अर्जुनने यह युद्धकर्म सब सेनाके देखतेहुये किया हे श्रेष्ठ यादव सात्यकी ने कर्ण को तीन बाणों से घायल कि-या ६२ भीमसेनने तीन बाणसे और फिर अर्जुनने सात बाणसे इसके पीछे म-हारथी कर्णने साठ २ बाणों से उनको घायल किया हे श्रेष्ठ वहां हमने कर्ण के अपूर्व्व कर्म्मको देखा ६३।६४ कि जिस क्रोध युक्त अकेले नेही युद्धमें तीन रथि-यों को रोका फिर महाबाहु अर्ज्जुन ने सूर्य्य के पुत्र कर्ण को युद्ध में ६५ सौ

शायकों से सब मर्म्मों पर घायल किया रुधिर से लिप्त सब शरीर प्रतापवान् वीर कर्ण ने ६६ पचास बाणों से अर्ज्जुन को घायल किया अर्ज्जुन ने युद्धमें उसकी उस हस्तलाघवता को देखकर नहीं सहा ६७ फिर शीघ्रता करनेवाले वीर अर्ज्जुनने धनुषको काटकर नौ शायकों से उसको हृदयपर पीड़ामान किया ६८ इसके पीछे प्रतापी कर्णने दूसरे धनुष को लेकर आठहजार शायकों से अर्ज्जुन को ढकदिया ६९ अर्ज्जुनने कर्णके धनुषसे निकलेहुये उन बड़ी बाण वर्षा को शायकोंसे ऐसे छिन्नभिन्न किया जैसे कि सलभ नाम पक्षियों को वायु तिर्बिर करदेताहै ७० तब अर्जुनने भी शायकोंसे उसको ढकदिया और शीघ्रता युक्त अर्ज्जुनने शीघ्रताके समय युद्ध में उसके मारनेके निमित्त सूर्य्यके समान प्रकाशित शायकको फेंका ७१ अश्वत्थामा ने उस बेगसे आतेहुये शायक को अर्द्धचन्द्र नाम तीक्ष्णबाणोंसे काटा वह कटाहुआ पृथ्वीपर गिरपड़ा ७२ इसके पीछे प्रतापवान् कर्णने दूसरे धनुषको लेकर हजारों शायकों से अर्ज्जुनको ढक दिया ७३ अर्जुनने उस कर्णकी शस्त्रवर्षा को शायकोंसे ऐसे उच्छिन्न करदिया जैसे कि वायु शलभाओं को करता है ७४ तब उसने अर्ज्जुन को सब शूरवीरों के देखते और हस्तलाघवता को दिखातेहुये शायकों से ढकदिया ७५ शत्रुओं के मारनेवाले कर्णने भी युद्ध कर्मके बदला करनेकी इच्छासे अर्जुनको हजारों शायकोंसे ढकदिया ७६ बैलों के समान गर्जना करनेवाले उन नरोत्तम महारथियोंने सीधे चलनेवाले शायकोंसे आकाशको गुप्तकिया ७७ बाणोंके समूहों से गुप्त उन दोनोंने परस्पर में घायल किया और कहा कि हे कर्ण मैं अर्ज्जुनहूं ठहरो ७८ तब इसप्रकार घुड़कनेवाले दोनोंने बचन बज्रोंसे परस्पर पीड़ितकिया और दोनों वीर युद्ध में अपूर्व्व चित्तरोचक तीव्र युद्ध करते ७९ सब शूरवीरों के समूहों में देखनेके योग्यहुये सिद्ध चारण और सर्पोंने भी उनकी प्रशंसाकी ८० हे महाराज परस्पर मारने के अभिलाषी वह दोनों युद्ध करनेवाले हुये इसके पीछे दुर्य्योधन आपके शूरवीरों से बोला ८१ कि उपाय से कर्णकी रक्षाकरो यह कर्ण युद्धमें अर्ज्जुन को बिना मारेहुये नहीं लौटेगा क्योंकि उसने मुझसे कहा है ८२ हे राजा इसी अन्तर में कर्णके पराक्रम को देखकर श्वेत घोड़े रखनेवाले अर्ज्जुनने कानतक खैंचकर छोड़ेहुये चारबाणों से कर्ण के चारों घोड़ों को ८३ प्रेतलोक में पहुंचाया और भल्ल से उसके सारथी को रथकी नीड़में गिराया ८४

और फिर आपके पुत्रके देखतेहुये वाणोंसे उसको ढकदिया युद्धमें वाणोंसे ढके हुये मृतक सारथी और घोड़ेवाले ८५ वाण जालों से मोहितने करने के योग्य कर्म्मको नहीं-पाया हे महाराज तब उस प्रकार उस कर्णको रथसे रहित देखकर अश्वत्थामा ने ८६ रथपर बैठाकर फिर अर्ज्जुन से युद्ध किया और मद्रके राजा शल्यने अर्ज्जुन को तीसवाणोंसे छेदा ८७ फिर कृपाचार्य्यने वीसवाणसे वासुदेवजी को घायलकिया और शिलीमुख नाम बारहवाणोंसे अर्ज्जुन को घायल किया ८८ जयद्रथने चारवाण से वृषसेनने सातवाण से उसको घायल किया हे महाराज जैसे पृथक् २ श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन को उन सबने घायलकिया ८९ उसी प्रकार कुन्तीके पुत्र अर्जुनने भी उनको घायलकिया और चौंसठ वाणोंसे अश्वत्थामाको और सौवाणसे शल्यको ९० दशवाणसे जयद्रथ को तीनवाणसे वृषसेन को और वीसवाण से कृपाचार्य्य को घायलकर के गर्जा ९१ अर्ज्जुन की प्रतिज्ञाके नाशको चाहनेवाले वह सब इकट्ठे शूरवीर एक साथही अर्जुन के सम्मुख दौड़े ९२ इसके पीछे धृतराष्ट्रके पुत्रों को सब ओरसे भयभीत करतेहुये अर्जुनने वारुणास्त्रको प्रकटकिया वाणोंको वर्षाते कौरव वहुमूल्य रथोंकी सवारी से उस अर्ज्जुनके सम्मुखगये ९३ हे भरतवंशी उसके पीछे उस कठोर और बड़े भयकारी मोहके उत्पन्न करनेवाले युद्धके जारी होनेपर वह राजपुत्र अचेत नहीं हुआ फिर उस मुकुट और मालाधारी राजकुमार ने सम्मुख होकर वाणों के समूहों को छोड़ा ९४ कौरवों के राज्यके इच्छावान् बारह वर्षके पायेहुये महाखेदों को स्मरण करते महात्मा बुद्धिसे बाहर प्रभाववाले अर्ज्जुनने गाण्डीव धनुष के छोड़ेहुये वाणोंसे सब दिशाओंको ढकदिया ९५ और अन्तरिक्ष बड़ी प्रकाशमान उल्काओं से व्याप्तहुआ और मृतक शरीरोंपर पक्षी गिरे जिस हेतुसे क्रोधयुक्त अर्ज्जुन पिंगलवर्ण की प्रत्यंचावाले अजगवनाम धनुष से शत्रुओं को मारता था ९६ इसके पीछे बड़े यशस्वी शत्रुओंकी सेनाके विजय करनेवाले अर्जुनने बड़े धनुष से वाणोंको चलाकर उत्तमघोड़े और हाथियों की सवारियों से घूमने वाले कौरवीय शूरवीरोंको वाणोंसे गिराया ९७ भयकारी दर्शनवाले राजालोग भारी गदा और लोहेकी परिघ खड्ग शक्तिआदिक वहुत से बड़े बड़े शस्त्रों को लेकर युद्धमें अकस्मात् अर्जुनके सम्मुखगये ९८ इसके पीछे यमराजके देशको बढ़ानेवाले अर्ज्जुनने प्रलयकाल के बादलके समान शब्दायमान महाइन्द्र के

धनुषरूप गांडीव नाम बड़े धनुषको दोनों हाथोंसे खैंचा और बहुत हँसताहुआ आपके शूरबीरोंको भस्म करता शीघ्रही चला ९९ उस बीरने उन बड़े धनुषधारियों समेत पदातियोंके बड़े समूहोंको जिनके सब शस्त्र और जीवनभी नष्टहोगयेथे हाथी और रथसवारों समेत यमराजके देशका वृद्धि करनेवाला किया१००॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिजयद्रथसकुलयुद्धेशतोपरिपंचचत्वारिंशोऽध्यायः १४५ ॥

एकसौछियालीसका अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि अर्ज्जुनके खैंचेहुये उस धनुषका शब्द जोकि मृत्युके शब्दके समान अच्छे प्रकारसे प्रकट उन्नत इन्द्रबज्रके समान महाभयकारीथा उसको सुनकर आपकी वहसेना भयसे ऐसी व्याकुलहुई जैसे कि प्रलयकालकी वायुसे व्याकुल और चलायमान तरंगोंसे उत्तरङ्ग १।२ गुसमछली और मगरवाला सागरका जल होताहै वह पाण्डव अर्ज्जुन देखताहुआ युद्धमेंघूमा ३ एक साथही सब दिशाओं में सब अस्त्रों को प्रकट करता घूमनेलगा हे महाराज हमने उसकी हस्तलाघवता से उस लेते चढ़ाते ४ खैंचते छोड़तेहुये पाण्डवको नहीं देखा इसके पीछे सब भरतवंशियों को डराते क्रोधयुक्त महाबाहु अर्ज्जुनने कठिनतासे सहने के योग्य इन्द्रास्त्र को प्रकट किया इसके पीछे दिव्यमन्त्रों से अभिमन्त्रित ५।६ अत्यन्त प्रकाशमान सैकड़ों और हजारों बाण प्रकटहुये कानतक खैंचकर छोड़ेहुये अग्नि सूर्य्यकी किरणोंके समान बाणोंसे ७ आकाश दुःखसे देखनेके योग्य ऐसाहुआ जैसे कि उल्काओंसे संयुक्त होताहै इसके पीछे कौरवोंसे प्रकट कियेहुये उस शस्त्रोंके अन्धकार को ८ घूमतेहुये पाण्डवने पराक्रम करके दिव्य अस्त्रोंके अभिमंत्रित बाणोंसे नाश करदिया जो कर्म्म दूसरोंके मनसे भी करनेके योग्य ऐसे नहींथा ९ जैसे कि प्रातःकालके समय सूर्य्य अपनी किरणोंसे रात्रिके अन्धायोंको शीघ्रही दूरकरदेता है उसके पीछे आपकी सेना प्रकाशित बाणोंकी किरणों से १० ऐसे आकर्षण युक्तहुई जैसे उष्णऋतुमें प्रभु सूर्य्यदेवता छोटे २ तालावोंके जलोंको आकर्षण करताहै उससमय दिव्यअस्त्रज्ञ अर्ज्जुनके छोड़ेहुये शायकरूप किरणोंने ११ शत्रुओंकी सेनाको ऐसे स्पर्शकिया [illegible] सूर्य्यकी किरणें लोकको स्पर्शकरती हैं इसकेपीछे छोड़ेहुये दूसरे कठोर प्रकाशमान बाण १२ शीघ्रही बीरोंके हृदयमें प्यारे बान्धवोंके समान लगकर प्रवेशहुये जो शूरोंमें बड़े

आपके युद्धकर्त्ता लोग युद्धमें उसके सम्मुखगये १३ उन्होंने ऐसे नाशको पाया जैसे कि शलभनाम पक्षी अग्निको पाकर नाशहोते हैं इसप्रकार देहधारी काल के समान अर्जुन शत्रुओं के जीवन और यशोंको मर्द्दनकरता १४ युद्धमें घूमने लगा उसने कितनेही वीरोंके मुकुट वस्त्र और बाजूबन्द रखनेवाली बड़ीभुजा और कुण्डलों के जोड़े धारण करनेवाले कानोंको अपनेबाणोंसे काटा १५ उस पांडव ने तोमर रखनेवाले हाथीके सवारों की भुजाओं को और प्रास रखनेवाले अश्व सवारोंकी भी भुजाओं को काटकर १६ ढाल रखनेवाले पदातियोंकी भुजाओंको और धनुषबाण रखनेवाले रथियों की भुजाओंको और चाबुक रखनेवाले सारथियोंकी भी भुजाओंको काटा १७ वहांपर अर्ज्जुन अत्यन्त प्रकाशित और भयकारी बाणरूपी किरणोंका धारण करनेवाला होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि फुलिंगोंका धारण करनेवाला देदीप्य अग्नि होताहै १८ फिरवह उपाय करने वाले राजा लोगभी उस देवराज के समान सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ रथपर सवार पुरुषोत्तम बड़े अश्वोंके चलानेवाले दर्शनीयरूप रथके मार्गोंमें नाचनेवाले धनुष प्रत्यंचा और तल से शब्द करनेवाले पांडव अर्जुनको सब दिशाओंमें एकबार देखने कोभी ऐसे समर्थ नहीं हुये जैसे कि मध्याह्नके समय आकाशमें तपानेवाले सूर्य्य को कोई देख नहीं सक्ता १९ । २१ वह प्रकाशित नोकवाले बाणोंका रखने वाला ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि वर्षाऋतुमें इन्द्र धनुषके साथ बहुत जलों से भरा बड़ा बादल शोभित होताहै २२ उत्तम शूरबीरलोग अर्जुनके जारी किये हुये उस कठिनतासे तरनेके योग्य बड़े भयानक महा अस्त्ररूप समुद्रमें डूबगये २३ टूटे मुख और भुजावाले शरीर टूटे हाथवाली भुजा उंगली टूटे हुये हाथ टूटी हुई सूंड़ नोकदांत मदसे मतवाले हाथी ग्रीवा रहित घोड़े चूर्णीभूत रथ २४ । २५ टूटी आंत पैर इसी प्रकार टूटे जोड़वाले अन्य शूरवीर चेष्टा करने वाले वा अचेष्ट हज़ारों युद्ध कर्त्ताओं से २६ उस बड़ी युद्धभूमि को भयभीतोंके भयके बढ़ानेवाली मृत्युकालकी संहारभूमिके समान ऐसा चित्तरोचक देखा २७ जैसे कि पूर्व्व कालमें शूरोंके पीड़ा देनेवाले रुद्रजीका क्रीड़ास्थान होताहै क्षुरसे काटीहुई हाथियोंकी सूंड़ों से पृथ्वी ऐसी जुदी शोभायमानहुई जैसे कि सर्पों से युक्त होती है २८ किसी स्थानपर मुखरूपी कमलों से आच्छादित पृथ्वी मालाधारीके समान शोभायमान हुई विचित्र पगड़ी मुकुट कुण्डल केयूर बाजूबन्दोंसे २९ और

सुवर्ण जटित कवच घोड़े हाथियों के सामान और हजारों मुकुटों से जहां तहां आच्छादित और संयुक्त पृथ्वी नवीन बधूके समान अत्यन्त अद्भुत शोभायमानहुई बसा मस्तकरूप कीच रखनेवाली रुधिर समूहोंसे उत्तरंग मर्म और अस्थियों से अथाह केशरूप शैवल शाड्वल रखनेवाली शिर भुजारूप तटके पाषाण रखनेवाली कटेहुये घोड़ोंकी छातियोंके हाड़ों से अगम्य ३०।३१।३२ चित्र ध्वजा पताकाओं से युक्त छत्र धनुषरूप तरंगमाला रखनेवाली मृतक शरीरों से पूर्ण हाथियोंके शरीरों से बिगतरूप ३३ रथरूपी हजारों नौकाओं से युक्त घोड़ों के समूहरूप किनारेवाली और रथके चक्र जुये ईशा अक्ष और कूबरोंसे अत्यन्त दुर्गम ३४ प्रास खड्ग शक्ति फरसे और बिशिखरूप सर्पों से कठिन काक कङ्करूप नक्रोंसे पूर्ण शृगालरूप मगरोंसे कठिनरूप ३५ बड़े गृद्धरूप भयानक ग्राह रखनेवाली शृगालों के शब्दों से भयानकरूप और नाचते हुये प्रेत पिशाचादि हजारों भूतोंसे युक्त ३६ मृतक और निश्चेष्ट शूरवीरोंके हजारों शरीरोंकी बहाने वाली बड़ी भयानक रुद्र बैतरणी नदीके समान घोर ३७ भयभीतों के भयों की बढ़ानेवाली नदी को बहाया उस यमराजरूप अर्जुनके उस पराक्रम को जिसके समान पूर्ब्ब कोई नहीं हुआ ३८ देखकर युद्धभूमिके मध्य कौरवोंमें भय उत्पन्न हुआ रुद्र कर्म्ममें नियत अर्जुनने बीरोंके अस्त्रोंको अपने अस्त्रों से आधीन करके ३९ अपने को रुद्ररूप प्रकट किया हे राजा इसके पीछे अर्जुनने उत्तम रथियों को उल्लंघन किया ४० और सब जीवधारी अर्ज्जुनकी ओर देखने को ऐसे समर्थ नहीं हुये जैसे मध्याह्नके समय संतप्त करनेवाले सूर्य्य को कोई देख नहीं सक्ता ४१ उस महात्माके गाण्डीव धनुषसे निकलेहुये बाणोंके समूहों को युद्धमें ऐसा देखा जैसा कि आकाशमें हंसोंकी पंक्तियों को ४२ वह सबओरसे बीरों के अस्त्रों को अपने अस्त्रों से रोककर अपने शरीरको रुद्ररूप दिखलाता भयकारी कर्म्म में प्रवृत्त हुआ ४३ हे राजा तब नाराचों से मोहित करते सब दिशाओं में बाणों को छोड़ते श्रीकृष्ण को सारथी रखनेवाले अर्ज्जुनने जयद्रथके मारनेकी अभिलाषासे उन महारथियों को उल्लंघन किया ४४ फिर वह दर्शनीय रथी अर्ज्जुन शीघ्रतासे चला और महात्मा शूरवीर अर्ज्जुनके घूमतेहुये बाणोंके समूह ४५ हजारों अन्तरिक्ष में दिखाईपड़े निश्चय करके उस समय हमने शायकों को लेते चढ़ाते छोड़ते ४६ बड़े धनुषधारी पाण्डव को नहीं देखा हे राजा जिस

प्रकार वह कुन्तीका पुत्र सब दिशाओं को और सब रथियोंको युद्धमें ४७ व्याकुल करता जयद्रथके सम्मुख गया और टेढ़े पर्व्ववाले चौंसठ बाणों से घायल किया ४८ शूरबीर जयद्रथ के सम्मुख जाते हुये अर्ज्जुन को देखकर सब लोग उसके जीवन से निराश हुये ४९ हे प्रभु आप का जो जो शूरबीर उस युद्ध में अर्ज्जुन के सम्मुख दौड़ा उस उसके शरीर में वह नाशकारी बाणसमागये ५० विजय करनेवालों में श्रेष्ठ अर्ज्जुनने अग्निकी किरणके समान बाणों से आपकी सेनाको धड़ों से पूर्णकिया ५१ हे राजा तबअर्ज्जुन आपकी चतुरंगिणी सेनाको व्याकुल करके जयद्रथके पास गया ५२ पचास बाण से अश्वत्थामा को बीस बाणसे बृषसेन को घायल करके दयावान् अर्ज्जुन ने कृपाचार्य्यको नौबाणों से घायल किया ५३ शल्यको सोलह बाणों से कर्णको बारह बाणसे और जयद्रथको चौंसठ बाणसे घायल करके सिंहके समान गर्ज्जा ५४ गाण्डीव धनुषधारी के बाणोंसे उस प्रकार घायल होकर बड़े क्रोधयुक्त जयद्रथने ऐसे नहीं सहा जैसे कि चाबुकों से पीड़ित हाथी होताहै उस वराहध्वज जयद्रथ ने शीघ्रही सीधे चलनेवाले क्रोधभरे सर्प्प के समान और कारीगर के साफ कियेहुये कानतक खैंचेहुये बाणोंको अर्ज्जुन के रथपर फेंका फिर तीन बाणों से केशवजी को और छः नाराचसे अर्ज्जुनको घायल करके ५५।५७ एक बाणसे ध्वजाको और आठ बाणों से घोड़ोंको घायल किया फिर अर्ज्जुन ने शीघ्रही जयद्रथके चलायेहुये बाणोंको हटाकर ५८ एकहीबारमें दोबाणों से उसके सारथी के शिरको काटकर उसकी अलंकृत ध्वजाको भी काटा ५९ अर्ज्जुनके बाण से घायल वह जयद्रथकी ध्वजाका बहुत बड़ा देदीप्य अग्निके समान वराह जिसकी कि यष्टी टूटगईथी गिरपड़ा ६० हे राजा उसी समय सूर्य्यके शीघ्र जाने पर शीघ्रता करनेवाले श्रीकृष्णजी अर्ज्जुनसे बोले ६१ हे महाबाहु अर्ज्जुन इसजयद्रथको छः महारथी बीरों ने अपने मध्यमें किया है यह जीवन की इच्छा किये महाभयभीत नियत है ६२ हे महारथी अर्ज्जुन युद्ध में इन छः महारथियों के विना विजय किये जयद्रथ मारने के योग्य नहीं है तुम बड़ी सावधानी से प्रहार करो ६३ मैं यहां सूर्य्यके अस्तङ्गत होने में योग करूंगा वह अकेला जयद्रथही सूर्य्यको अस्तङ्गत देखेगा ६४ हे प्रभु अर्ज्जुन वह जीवनकी इच्छा करनेवाला दुराचारी जयद्रथ प्रसन्नता से तेरे नाशके लिये अपनेको किसी दशामें भी नहीं

छुपावेगा ६५ हे कौरवों में श्रेष्ठ उस समयपर तुझको इसपर प्रहार करना चाहिये सूर्य्य अस्त हुआ यह ध्यान न करना चाहिये ६६ अर्ज्जुनने केशवजी को उत्तरदिया कि तथास्तु ऐसाहोय उसके पीछे योगसे युक्त योगी और योगियोंके ईश्वर हरि श्रीकृष्णजी से सूर्य्यके गुप्त होने के निमित्त अन्धकार उत्पन्न करने पर सूर्य्य अस्तहुआ जानकर ६७।६८ आपके शूरबीर अर्ज्जुन के नाशसे प्रसन्नहुये हे राजा उन प्रसन्नमनहुये सेनाके लोगों ने मुखोंको ऊंचा करके सूर्य्यको देखा ६९ तब उस राजा जयद्रथने भी सूर्य्य की ओर दृष्टिकरी तब सूर्य्यको उस जयद्रथके दिखाई देनेपर ७० श्रीकृष्णजी अर्ज्जुनसे फिर यह बचन बोले कि हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ तुझसे अत्यन्त निर्भय होकर सूर्य्यको देखनेवाले बीर जयद्रथको देखो हे महाबाहो इस दुरात्माके मारनेका यही समय है ७१। ७२ शीघ्रही इसके शिरको काटकर अपनी प्रतिज्ञाकी सफलताको कर केशवजीसे इस बचन को सुनकर प्रतापवान् अर्जुनने ७३ सूर्य्याग्निके समान प्रकाशित बाणों से आपकी सेना को मारा बीस बाणसे कृपाचार्य्य को और पचास बाणसे कर्ण को ७४ और छः बाणोंसे शल्य समेत दुर्य्योधन को आठ बाणसे वृषसेनको और साठ बाणोंसे जयद्रथको घायल किया७५हे राजा वह महाबाहु पाण्डुनन्दन इसी रीतिसे आपके पुत्रों कोभी कठिन घायल करके जयद्रथके पासगया ७६ जयद्रथके रक्षकोंने अग्निके समान चाटनेवाले सम्मुख नियतहुये अर्जुन को देखकर बड़े सन्देहको किया ७७ हे महाराज फिर आपके सब बिजयाभिलाषी शूरबीरोंने युद्धमें बाणोंकी धाराओंसे इन्द्रके पुत्र अर्जुनको सींचा ७८ बहुत बाण जालोंसे ढका हुआ वह अजेय महाबाहु कौरवनन्दन अर्जुन क्रोधसे पूरितहुआ ७९ इस के पीछे इन्द्रनन्दन पुरुषोत्तम अर्ज्जुनने सेनाके मारनेकी इच्छासे बाणजालोंको उत्पन्न किया हे राजा बीर अर्जुनके हाथसे घायल और भयभीत आपके शूरबीरों ने युद्ध में जयद्रथ को त्याग किया और दो पुरुषभी साथमें न रहे ८०। ८१ वहां हमने अर्जुन के अपूर्व्व पराक्रमको देखा जो कर्म उस यशवान् ने किया वह न हुआहै न होनेवालाहै ८२ अर्थात् हाथी हाथीके सवार घोड़े घोड़ोंके सवार और सारथी लोगोंकोभी ऐसेमारा जैसे कि रुद्रजी पशुओंको मारतेहैं ८३ हे राजा उस युद्धमें हाथी घोड़े और मनुष्योंमें ऐसा किसीको नहीं देखा जो कि अर्जुनके बाणोंसे घायल नहीं हुआहो ८४ अंधेरे और धूलसे गुप्तनेत्रवाले शूरबीर घोरमोहमें

प्रवृत्तहुये और एकने दूसरे को नहीं जाना ८५ हे भरतवंशी वाणों से छिदे मर्म कालसे प्रेरित वह सेनाके लोग घूमें और घूम घूमकर चलायमान गिरेहुये पीड़ावान् और मृतक प्राय शरीरहुये ८६ उस बड़े भयकारी प्रलयके समान कठिनतासे पारहोनेके योग्य बड़े भयानक युद्धके वर्त्तमान होनेपर रुधिरकी आर्द्रता और वायुकीतीव्रतासे और पृथ्वीको रुधिरसे आर्द्रहोनेपर पृथ्वीकी धूलदबगई८७ ८८नाभिपर्य्यन्त रुधिरमें रथकेचक्र डूबगये हे राजा युद्धभूमिमें आपके पुत्रोंके मतवाले और वेगवान् ८९ टूटे अंग मृतक सवारवाले हजारों हाथी अपनी सेना को मर्द्दन करते क्रंदित चिग्घाड़ों को मारते भागे ९० और अर्ज्जुनके बाणों से घायल पतिलोग और घोड़े जिनके कि सवार गिरपड़ेथे वह सबभी भयभीतहोकर भागे ९१ फैलेहुये बाल कवचोंसे रहित घावों से रुधिर बहाते भयभीत लोग युद्धको त्यागकरके भागे ९२ वहां कोई तो पृथ्वीमें दुःखी होगये कोई मृतकहाथियों में गुप्तहोगये हे राजा अर्ज्जुनने इसप्रकारसे आपकी सेनाको भगाकर जयद्रथके रक्षकोंको घोर शायकोंसे घायलकिया९३।९४अर्जुनने तीक्ष्ण बाणजालों से अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, कर्ण, शल्य, वृषसेन और दुर्य्योधनको ढकदिया ९५ हे राजा वह अर्ज्जुन शीघ्र अस्त्र चलाने से युद्ध में बाणों को पकड़ता चढ़ाता खैंचता और छोड़ता हुआ किसी दशा में भी दृष्टि में नहीं आया ९६ इसबाण चलानेवाले का वह धनुष मण्डलही दिखाई पड़ा और चारों ओरको घूमतेहुये शायक दिखाई पड़े ९७ कर्ण और वृषसेनके धनुष को काटकर भल्लसे शल्यके सारथी को रथकी नीढ़से गिराया ९८ बड़े बिजयी अर्ज्जुनने युद्ध में उन दोनों मामा भानजे अश्वत्थामा और कृपाचार्य्यको बाणोंसे अत्यन्त घायलकरके९९ और इसरीति से आपके महारथियों को व्याकुलकरके अग्निरूप घोर बाण को निकाला १०० इन्द्रवज्रके समान विख्यात दिव्य अस्त्रसे अभिमंत्रित सब भारके सहनेवाले सदैव मालासे पूजित बड़े बाणको १०१ विधिपूर्व्वक वज्र अस्त्रसे मिलाकर फिर उस कौरवनन्दन महाबाहुने शीघ्रही धनुषपर चढ़ाया हे राजा उस अग्निके समान प्रकाशमान बाणके चढ़ानेपर अन्तरिक्ष में जीवोंके बड़े शब्द हुये१०२।१०३फिर शीघ्रता करनेवाले श्रीकृष्णजी बोले हे अर्जुन दुरात्मा जयद्रथ के शिरको काट १०४ क्योंकि सूर्य्य पहाड़ोंमें श्रेष्ठ अस्ताचलको जाना चाहता है और जयद्रथके मारने में इस मेरे बचन को सुन १०५ राजा जयद्रथका पिता

वृद्धक्षत्र नाम संसारमें विख्यातहुआ है उसने इसलोक में बहुतकाल पीछे जयद्रथ नाम पुत्रको पाया है १०६ मेघ दुन्दुभी के समान शब्दायमान शरीर रहित गुप्तवाणी ने उस शत्रुहन्ता राजा वृद्धक्षत्र से कहा है कि १०७ हे समर्थ राजा वृद्धक्षत्र तेरा पुत्र कुल स्वभाव और विजय कीर्ति वाला होगा १०८ क्षत्रियों में अत्यन्त श्रेष्ठ और लोक में बड़ा मान्यहोगा। परन्तु अत्यन्त क्रोधयुक्त क्षत्रियों में श्रेष्ठ वह पुरुष युद्ध में इसके शिरको काटेगा। जोकि पृथ्वीपर दिखाई नहीं पड़ेगा शत्रुओं का पराजय करने वाला राजा सिन्धु इस वचन को सुन बड़ी देरतक ध्यानकरके १०९ पुत्रके स्नेहबद्धने अपने ज्ञातिवालों से यह कहा कि जो पुरुष युद्ध में लड़नेवाले और बड़े भारके उठाने वाले ११०। १११ मेरे पुत्र के शिरको पृथ्वी पर गिरावेगा। उसका भी मस्तक सौ टुकड़े होगा। ११२ वृद्धक्षत्र इतना कहकर इस जयद्रथ को राज्यपर नियत करके बनको गया और उग्रतप में नियत हुआ ११३ हे बानरध्वज अर्ज्जुन वह तपस्वी वृद्धक्षत्र इस स्यमन्तपञ्चक से बाहर कठिनता से करने के योग्य घोर तपको तपरहा है ११४ हे शत्रुहन्ता भीमसेन के छोटे भाई भरतबंशी अर्ज्जुन इस हेतु से तुम इस बड़े युद्ध में महाघोर दिव्य अस्त्रसे जयद्रथ के शिरको काटकर ११५ फिर उस जयद्रथ के कुण्डलधारी शिरको इस वृद्धक्षत्र की गोद में गिराओ ११६ जो तुम इसके शिरको पृथ्वीपर गिराओगे तो तुम्हारे भी शिरके सौ टुकड़े निस्सन्देह होंगे ११७ जिसप्रकार कि वह तपमें युक्त राजा वृद्धक्षत्र उसको न जाने हे कौरवों में श्रेष्ठ अर्ज्जुन दिव्य अस्त्रों के आश्रयवाले तुमभी उसी प्रकारसे करो इसके पीछे तुम उसके शिरको पृथ्वीपर गिराओगे हे इन्द्रनन्दन तीनों लोकों मेंभी तुझको कोई कर्म्म करना कठिन नहीं है और कोई बात ऐसी नहीं है जिसको तुम किसी स्थानमें न करसको ११८।१२० होठोंको चाटतेहुये अर्ज्जुनने इस वचनको सुनकर इन्द्रवज्र के समान स्पर्शवाले दिव्यमन्त्र से अभिमन्त्रित १२१ सब भारके सहनेवाले सदैव सुगन्धित मालाओं से पूजित जयद्रथके मारनेके लिये धनुषपर चढ़ायेहुये बाण को शीघ्रही छोड़ा १२२ फिर गाण्डीव धनुष से छोड़ाहुआ वह बाजके समान शीघ्रगामी बाण जयद्रथके शिरको काटकर आकाश को उछला १२३ अर्ज्जुन ने मित्रोंकी प्रसन्नता और शत्रुओं के दुःखके अर्थ बाणों से जयद्रथके उस शिर को उठाया १२४ उस समय अर्ज्जुनने बाणों से जाल को फैला करके फिर उन

छः महारथियों सेभी युद्ध किया १२५ हे भरतवंशी इसके पीछे वहांहमने बड़ेआश्चर्य्यको देखा जो उस बाणसे जयद्रथका शिर स्यमन्तपञ्चक से बाहर डालागया १२६ हे श्रेष्ठ उसी समय पर आपका सम्बन्धी वृद्धक्षत्र सन्ध्या कररहा था १२७ फिर श्यामकेश कुण्डलधारी जयद्रथका शिर उस बैठेहुये बृद्धक्षत्रकी गोदीमें गिराया १२८ हे शत्रुहन्ता सुन्दर कुण्डलधारी वह शिर बृद्धक्षत्रका न देखाहुआ उसकी गोदी में गिरा १२९ हेभरतवंशी इसके पीछे उसजपके समाप्त करनेवाले बृद्धक्षत्रके उठतेही वह शिर अकस्मात् पृथ्वीपर गिरपड़ा १३० हे शत्रुहन्ता उस राजाके पुत्रका शिर पृथ्वीपर गिरने के समयही उसकाभी शिर सौ खण्ड होगया १३१ इसके पीछे सब सेनाके लोगोंको बड़ा आश्चर्य्यहुआ और सबने बासुदेवजी की और अर्ज्जुनकी प्रशंसा करी १३२ हे भरतर्षभ राजा धृतराष्ट्र अर्ज्जुन के हाथसे राजा जयद्रथके मारेजानेपर उस अन्धकारको बासुदेव जी ने दूर किया १३३ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र आपके पुत्रों ने अपने साथियों समेत पीछे से जाना कि यह माया बासुदेवजी की पैदा की हुईथी १३४ हे राजा आठ अक्षौहिणी सेनाको मारकर बड़े तेजस्वी अर्ज्जुन के हाथसे आपका जमाई जयद्रथ इसरीतिसे मारागया १३५ आपके पुत्रोंने जयद्रथको मराहुआ देखकर दुःख से अश्रुपातोंको गेरा और विजयसे निराशहुये १३६ हे शत्रुहन्ता राजा धृतराष्ट्र अर्ज्जुनके हाथसे जयद्रथके मारेजाने पर केशवजी और महाबाहु अर्ज्जुन ने शङ्खको बजाया १३७ हे भरतवंशी भीमसेन बृष्णियों में श्रेष्ठ युधामन्यु और पराक्रमी उत्तमौजा नेभी पृथक् पृथक् शङ्खोंको बजाया १३८ धर्म्मराज युधिष्ठिर ने उस बड़े शब्द को सुनकर महात्मा अर्ज्जुन के हाथसे जयद्रथ को माराहुआ माना १३९ इसके पीछे बाजोंके शब्दों से अपने शूरवीरों को प्रसन्न किया और द्रोणाचार्य्य के मारनेके अभिलाषी वह लोग युद्धमें सम्मुख वर्त्तमान हुये १४० हे राजा इसके पीछे सूर्य्यास्त होनेपर द्रोणाचार्य्य का युद्ध सोमकोंके साथ जारीहुआ वह युद्धभी रोमहर्षण करनेवाला था १४१ फिर सब उपायों से द्रोणाचार्य के मारने के अभिलाषी वह महारथी जयद्रथके मरनेपर युद्ध करनेवाले हुये १४२ फिर विजयमे मतवाले वहसब पाण्डव विजयको पाकर जयद्रथको मारकर जहां तहां द्रोणाचार्य्य से युद्ध करनेलगे १४३ इसकेपीछे महाबाहु अर्ज्जुननेभी राजा जयद्रथको मारकर रथियों में श्रेष्ठ आपके शूरवीरों से युद्ध किया १४४ जैसे कि

देवराज इन्द्र देवताओं के शत्रु असुरों को और उदय हुआ सूर्य्य अन्धकार को दूर करते हैं उसी प्रकार उस अति शूरवीर अर्ज्जुन ने चारोंओर से शत्रुओं को छिन्न भिन्न करदिया और अपनी पूर्व्वप्रतिज्ञा को दूर किया १४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिजयद्रथवधेशतोपरिषट्चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४६ ॥

एकसौसैंतालीसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय अर्जुनके हाथसे उस बीर जयद्रथके मरनेपर मेरेपुत्रों ने जो जो किया वह सब मुझसे कहो १ सञ्जय बोले कि हे भरतवंशी युद्ध में अर्जुनके मारेहुये जयद्रथको देखकर क्रोधयुक्त कृपाचार्य्यने २ बाणोंकी बड़ी बर्षा से अर्जुन को ढकदिया और अश्वत्थामा भी रथमें सवार होकर अर्ज्जुनके सम्मुखगये ३ इन रथियों में श्रेष्ठ दोनोंने रथकी सवारीके द्वारा दोनों ओरसे तीक्ष्ण बाणों की बर्षाकरी ४ इस प्रकार दोनों की बड़ी बाणबर्षा से पीड़ामान उस रथियोंमें श्रेष्ठ महाबाहु अर्जुनने बड़ी पीड़ाको पाया ५ उस युद्धमें गुरूको और गुरुपुत्र को न मारनेके अभिलाषी उस कुन्तीनन्दन अर्जुनने अस्त्रोंके अभ्यास की पूर्णताको प्रकट किया ६ न मारनेके अभिलाषी अर्जुनने अश्वत्थामा और कृपाचार्यके अस्त्रों को अपने अस्त्रोंसे रोककर मन्द वेगवाले बाणोंको उन दोनों के ऊपर छोड़ा ७ अर्जुनसे छोड़े हुये उन बिशिखनाम बाणोंने भी उनको अत्यन्त घायल किया और उन दोनों ने बाणोंकी आधिक्यता से बड़ी पीड़ा को पाया ८ हे राजा फिर अर्ज्जुनके बाणोंसे पीड़ामान कृपाचार्य्य रथके स्थानमेंही व्याकुलहुये और मूर्च्छाको पाया ९ सारथी बाणों से पीड़ित अपने स्वामी को अचेत जानकर और मरणप्राय समझकर दूरलेगया १० हे महाराज युद्धमें उस कृपाचार्यके पराजय होनेपर अश्वत्थामाजीभी अर्जुनसे हटगये ११ उस बड़ेधनुषधारी अर्जुनने कृपाचार्यको रथके ऊपर बाणोंसे पीड़ित और अचेत देखकर बड़ा विलापकिया १२ और अश्रुपूरित महादुःखीहोकर यह बचनबोला कि बड़ेज्ञानी और इसनाशके देखनेवाले विदुरजीने कुलके नाश करनेवाले दुर्य्योधनके उत्पन्नहोने पर राजा धृतराष्ट्रसे यह कहाथा कि बहुत अच्छाहै इस कुलकलंकी को परलोक में पहुंचाना चाहिये १३।१४ इससे उत्तम उत्तम कौरवों को महाभय उत्पन्नहोगा उस सत्यवक्ताका अब वह वचन वर्त्तमानहुआ १५ अब उस दुर्य्योधनके कारण

से गुरुजीको नरशय्यापर वर्त्तमान देखताहूं क्षत्रियके आचार बल और पराक्रम को धिक्कारहै १६ मुझसा कौनसा मनुष्य ब्राह्मण गुरु से शत्रुताकरे मेरे आचार्य ऋषिके पुत्रहैं और द्रोणाचार्य्यके मित्रहैं १७ यह कृपाचार्य्य मेरे बाणोंसे पीड़ामान रथके स्थानपर सोते हैं अनिच्छासे ही मैंने विशिखनाम बाणोंसे पीड़ामान किये १८ यह गुरुजी बैठनेके स्थानमें व्याकुल होकर मेरे प्राणों को पीड़ा देते हैं पुत्रके शोक से दुःखी बाणों से पीड़ित १६ उस पाप धर्म्मपर चलनेवाले मुझ क्षत्रियके बहुत बाणोंसे घायल यह गुरुजी निश्चय करके मेरे पुत्रके मरने से फिर मुझको शोचते हैं २० श्रीकृष्णजी इस दशामें युक्त अपने रथपर पड़ेहुये कृपाचार्य को देखो जो उत्तम लोग गुरुओं से विद्याको पढ़कर २१ इस लोक में अभीष्ट दक्षिणाओं को देते हैं वह देवभावको पाते हैं और नीच दुराचारी पुरुष गुरुओं से विद्याको लेकर २२ उनकोही मारते हैं वह निश्चय करके नरकगामी हैं मैंने यह कर्म्म अवश्य नरकके निमित्त किया २३ बाणोंकी वर्षासे रथपर कृपाचार्यजी को पीड़ामान करनेवाले मैंने ऐसा किया पूर्व समयमें अस्त्रविद्या को उपदेश करते समय कृपाचार्य ने मुझसे कहाथा २४ कि हे कौरव किसी दशामें भी गुरुपर न प्रहार करना चाहिये इन महात्मा आचार्य्यजी का वह वचन २५ अब युद्धभूमि में बाणोंकी वर्षा करनेवाला मैं काम में न लाया उस बड़े पूजाके योग्य मुख न मोड़नेवाले कृपाचार्यके अर्थ नमस्कार है २६ हे श्रीकृष्णजी मुझ को धिक्कारहै जो मैं इनपर प्रहार करताहूं उन कृपाचार्यके रथके पास इस रीतिसे अर्जुनके विलाप करनेपर २७ कर्ण जयद्रथको मरा देखकर सम्मुखगया २८ दोनों पांचालदेशी और सात्यकी अकस्मात् सम्मुखतामें गये महारथी अर्ज्जुन सम्मुख आनेवाले कर्णको देखकर २६ हँसताहुआ वासुदेवजीसे यहवचन बोला कि यह कर्ण सात्यकीके रथपर आताहै ३० निश्चय करके यह युद्धमें भूरिश्रवा का मृतक देखना नहीं सहताहै हे जनार्दनजी जहांपर जाताहै वहांपर आप इन घोड़ोंको चलायमान करो ३१ यह कर्ण सात्यकीको भूरिश्रवाके मार्ग्गमें नहीं पहुंचावे अर्ज्जुनके इसवचनको सुनकर महाबाहु केशवजी ३२ समयके अनुसार इस वचन को बोले कि हे अर्ज्जुन यह महाबाहु अकेला सात्यकी भी कर्ण के लिये बहुत है ३३ फिर द्रौपदीके पुत्रोंसमेत यह यादव सात्यकी क्यों न समर्थहोगा हेअर्ज्जुन तेरायुद्ध कर्णके साथ तबतक योग्य नहीं है ३४ जबतक बड़ी उल्काके समान

ज्वलितरूप इन्द्रकी शक्ति इसके पास वर्त्तमानहै हे शत्रुओंके मारनेवाले यह पूजित शक्ति तेरेही निमित्त रक्षा कीजाती है ३५ इसहेतुसे कर्ण इच्छानुसार सात्यकी के सम्मुख खुशी से जाय हे अर्ज्जुन मैं इस दुरात्मा के कालको जतलाऊंगा जिस समय तू इसको तीक्ष्ण बाणसे पृथ्वीपर गिरावेगा ३६ धृतराष्ट्र बोले कि भूरिश्रवाके मरने और जयद्रथके गिरानेपर कर्णके साथ वीर सात्यकीका जो यह संग्रामहै ३७ और रथसे बिहीन सात्यकी और चक्रके रक्षक दोनों पाञ्चालदेशी किसरथ पर सवार हुये हे सञ्जय वह मुझसे कहो ३८ सञ्जय बोले कि बड़े युद्धमें जैसा जैसा वृत्तान्त हुआ है उसको कहता हूं आप स्थिरचित्त होकर अपने दुष्टकर्म्म को सुनो ३९ हे प्रभु प्रथमही श्रीकृष्णजी ने अपने चित्तसे इस बातको जानाथा जैसे कि बीर सात्यकी भूरिश्रवा के हाथसे बिजय करने के योग्यथा ४० हे राजा वह श्रीकृष्णजी भूत भविष्य और वर्त्तमान इन तीनों कालोंकी बातोंको जानते हैं हे राजा उस महाबली ने इस हेतुसे दारुक सारथी को बुलाकर आज्ञा करी ४१ कि मेरा रथ बिधिके अनुसार जोड़ो देवता गन्धर्व यक्ष सर्प राक्षस ४२ और मनुष्य इनमें से कोईभी श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन के बिजय करनेको समर्थ नहीं है जिनमें मुख्य ब्रह्माजी हैं उन देवता और सिद्धोंने उनको जाना है ४३ उन दोनोंका बड़ा प्रभावहै और जैसे वह युद्ध हुआ उसको उसी प्रकारसे कहताहूं कि माधवजी ने सात्यकी को रथसे रहित और कर्ण को युद्धमें सन्नद्ध देखकर ४४ बड़े शब्दवाले शङ्ख को बड़े स्वरसे बजाया दारुकने उस इङ्गितको जानके और शङ्खके शब्दको सुनकर ४५ गरुड़ मूर्त्तिवाले ऊंची ध्वजा रखनेवाले रथ को उसके पास पहुँचाया वह शिनीका पौत्र सात्यकी केशवजी की सलाहसे उस दारुक सारथी से युक्त ४६ अग्नि सूर्य्यके समान रथपर सवार हुआ इच्छानुसार चलनेवाले बड़े वेगवान् सुवर्ण के सामानों से अलंकृत शैब्य सुग्रीव मेघपुष्प बलाहकनाम बड़े घोड़ों से संयुक्त बिमानरूप उस रथपर चढ़कर ४७ । ४८ बहुत शायकों को फैलाता हुआ सात्यकी कर्ण के सम्मुख गया और चक्ररक्षक युधामन्यु और उत्तमौजस ४९ अर्ज्जुनके रथको छोड़कर कर्ण के सम्मुख गये हे महाराज अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्ण भी बाणोंकी वर्षा को छोड़ता ५० अजेय सात्यकीके सम्मुख गया उस प्रकारका युद्ध देवता गन्धर्व्व और असुरोंका भी पृथ्वी और स्वर्गमें नहीं सुनागया जिसको देखकर रथ घोड़े हाथी

और मनुष्यों समेत सब सेनाभी युद्ध करनेसे ठहरगई ५१।५२ अर्थात् वह सब लोग उन दोनोंके कर्मों को देखकर अचेत थे उसके पीछे सबने भी उस बुद्धिसे बाहरवाले युद्ध को देखा ५३ हे राजा उन दोनोंका युद्ध और दारुकका सारथीपन गत प्रत्यागत मण्डल और रथसवार काश्यपगोत्री सारथी के कर्म्म से आकाश में वर्त्तमान देवता गन्धर्व्व और पृथ्वी के सब मनुष्य आश्चर्य्यित होकर कर्ण और सात्यकीके युद्ध को देखने में प्रवृत्तहुये वह दोनों पराक्रमी ईर्षा करनेवाले युद्धमें मित्रके लिये पराक्रम करनेवालेहुये ५४।५५।५६ हे महाराज देवता के समान कर्ण और सात्यकी ने परस्पर बाणोंकी वर्षा को बरसाया ५७ हे भूरिश्रवा और जलसिन्धके मारने को क्षमा न करनेवाले कर्णने शायकोंकी वर्षासे शिनीके पौत्र सात्यकीको घायलकरके अचेतकरदिया ५८ हे शत्रुविजयी शोक से पूर्ण बड़े सर्पकी समान श्वासलेता नेत्रोंसे भस्मकरता क्रोधयुक्त कर्ण ५९ तीव्रतासे फिर सात्यकीके सम्मुख दौड़ा तब सात्यकी उसको क्रोधयुक्त देखकर ६० बड़ी बाणोंकी वर्षा से ऐसे युद्ध करनेलगा जैसे कि हाथीके साथ हाथी युद्ध करता है व्याघ्रके समान वेगवान् अनुपम पराक्रमी सम्मुख होनेवाले नरोत्तमोंने ६१ युद्धमें परस्पर घायल किया हे धृतराष्ट्र इसके अनन्तर सात्यकी ने अत्यन्त लोहमयी बाणों से कर्णको सब अंगोंपर फिर घायलकिया और भल्लसे उसके सारथीको रथ की नीड़से गिरादिया ६२।६३ और तीक्ष्णबाणोंसे उसके चारों श्वेतघोड़ोंको मारा हे पुरुषोत्तम फिर ध्वजाको काटकर रथके सौ टुकड़े किये ६४ इसरीति से आपके पुत्रके देखतेहुये सात्यकीने कर्णको विरथकरदिया हेराजा फिरआपके उदासरूप महारथी ६५ कर्णका पुत्र वृषसेन मद्रदेशका राजा शल्य और अश्वत्थामा इन तीनोंने सात्यकीको सबओरसे घेरलिया ६६ इसके पीछे सबसेना महाव्याकुलहुई और कुछ नहीं जानागया हे राजा इसप्रकार सात्यकीके हाथसे वीर कर्णके विरथ करनेपर ६७ सब सेनाओं में बड़ा हाहाकारहुआ सात्यकी के बाणोंसे विरथ कियाहुआ कर्णभी ६८ श्वास लेताहुआ शीघ्रही दुर्योधनके रथपर सवारहुआ लड़कपनसेही आपके पुत्रकी प्रीतिको मानता ६९ और राज्यप्रदानकी हुई प्रतिज्ञाको पूरीकरना चाहता रथपर सवारहुआ हे राजा इसप्रकार रथसे रहित कर्ण को और दुश्शासनादिक आपके वीर पुत्रों को ७० प्रबल होनेवाले सात्यकीने नहीं मारा पूर्व्वसमय में भीमसेन और अर्ज्जुनकी कीहुई प्रतिज्ञाकी रक्षा करते

हुये सात्यकीने ७१ उनको रथसे रहित और अचेतभी किया परन्तु प्राणोंसे पृथक् नहीं किया क्योंकि भीमसेनने तेरे पुत्रोंके मारने की प्रतिज्ञाकरी ७२ और अर्ज्जुनने दूसरे द्यूतमें कर्णके मारनेकी प्रतिज्ञाकरी इसके अनन्तर उन कर्णआदिकोंने सात्यकीके मारनेमें उपायकिया ७३ परंतु वह सब अनेक उपायों से भी उस महारथी सात्यकीके मारनेको समर्थ नहीं हुये उनके नाम अश्वत्थामा,कृतवर्मा,आदि अन्य २ महारथी थे धर्मराजके प्रियकारी परलोकके चाहनेवालेसात्यकीने एकही धनुषके द्वारा हजारों क्षत्रियलोग विजयकिये ७४।७५ पराक्रम में श्रीकृष्ण और अर्जुनके समान शत्रुसंतापी हँसतेहुये सात्यकीने आपकी सेनाओंको विजयकिया ७६ हे नरोत्तम लोक में श्रीकृष्णजी धनुषधारी अर्जुन और तीसरा सात्यकी इनतीनों धनुपधारियोंके बिशेष चौथा कोई धनुषधारी नहीं बर्त्तमानहै ७७ धृतराष्ट्र बोले कि युद्धमें श्रीकृष्णजी के समान सात्यकीने बासुदेवजीके अजेय रथपर सवार होकर कर्णको रथसे हीनकरदिया ७८ अपने भुजबल से अहंकारी वह शत्रुसन्तापी दारुक सारथी समेत कहीं दूसरे रथपर भी सवार हुआ ७६ मैं उसको सुना चाहताहूं क्योंकि तुम वर्णन करने में सावधानहो मैं जिसको असह्य मानताहूं हे सञ्जय उसको मुझसे कहो ८० संजय बोले कि हे राजा जैसा वृत्तान्तहै उसको सुनो दारुकके छोटेभाई बड़े बुद्धिमान्ने शीघ्र रीति से अलंकृत ८१ लोहे और सुनहरी बस्त्रों से भी अलंकृतग्रीवा हजारों नक्षत्रों से जटित सिंहरूप ध्वजा पताकावाले ८२ वायुके समान शीघ्रगामी सुवर्ण के सामानों से शोभित चन्द्रवर्ण और सब शब्दों को उल्लंघन करके चलनेवाले दृढ़ और सुनहरी जड़ाव के कवच रखनेवाले और घोड़ों में श्रेष्ठ सिन्धदेशी घोड़ों से युक्त घंटाजालोंके शब्दों से ब्याकुल शक्ति तोमररूप बिजली रखनेवाले ८३ ८४ युद्ध के सामान और अनेक प्रकारके शस्त्रोंसे युक्त बादलके समान गम्भीर शब्द रखनेवाले रथको तैयारकिया ८५ सात्यकी उस रथपर सवारहोकर आपकी सेना के सम्मुखगया दारुकभी इच्छानुसार केशवजी के पासगया ८६ हे राजा शंख और गौके दुग्धसमान श्वेत सुनहरी जड़ाऊ कवच रखनेवाले बड़े वेगवान् उत्तम घोड़ों से और सुनहरी कक्षावाली ध्वजासे युक्त अपूर्व्व यंत्र और पताका से युक्त बहुतसे शस्त्रोंसे पूर्ण अच्छे सारथीवाले उत्तम कर्णके रथकोभी ८७।८८ बर्त्तमान किया कर्णभी उसपर बैठकर शत्रुओंके सम्मुखगया यह जो २ आपने

पूछा वह सब आपसे वर्णन किया ८९ फिरभी अपने अन्याय से होनेवाले इस विनाशको सुनो कि भीमसेनने आपके इकतीस पुत्र मारे ९० सदैव कठिन युद्ध करनेवाले दुर्मुख को आदि लेकर सात्यकी और अर्ज्जुनने हजारों शूरवीरों को मारा ९१ हे भरतवंशी धृतराष्ट्र इस प्रकार आपकी कुमन्त्रता में भीष्म और भगदत्त आदि करके यह विनाश वर्त्तमान हुआ ९२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिकर्णसात्यकीयुद्धेशतोपरिसप्तचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४७ ॥

एकसौअरतालीसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय तब मेरे और पाण्डवोंके शूरवीरोंकी उस दशाके होने पर भीमसेन अर्जुन और सात्यकीने क्याकिया १ संजय बोले कि रथसे विहीन कर्णके वचनरूप भालों से पीड़ित क्रोधके वशीभूत भीमसेनने अर्जुनसे यह वचन कहा २ कि हे अर्ज्जुन कर्णने जो यह वचन आपके देखतेहुये मुझसे कहे कि हे बड़े भोजन करनेवाले बहुत उदर रखनेवाले अज्ञान अस्त्रों से अभिज्ञ युद्ध में नपुंसक बालक भीमसेन युद्ध मतकरो ३ यह वचन कर्णने वारम्बार कहा ऐसे प्रकारसे कहनेवाला मेरे हाथसे मारनेके योग्यहै हे भरतवंशी मुझको उसने इस प्रकारसे कहाहै और ऐसा कहनेवाला मुझसे मारनेके योग्यहै ४ हे महाबाहु मैंने यह व्रत आपके साथ किया हे अर्ज्जुन जैसा कि तेरा व्रतहै उसी प्रकार निस्सन्देह मेराभी व्रतहै ५ हे नरोत्तम अर्ज्जुन उसके मारनेके निमित्त इस मेरे वचन को स्मरण करो और वह जिस प्रकारसे सत्यहोय उसी प्रकारसे करो ६ उस बड़े पराक्रमी भीमसेनके उस वचन को सुनकर युद्ध में अर्ज्जुन कुछ समीप जाकर कर्णसे बोले ७ हे अपनी प्रशंसा करनेवाले अधर्मबुद्धि निरर्थकदृष्टिवाले सूतपुत्र मेरे इन वचनोंको सुन ८ युद्धमें शूरोंके कर्म दोप्रकारकेहैं एक विजय और दूसरी पराजय युद्ध करनेवाले इन्द्रकेभी वहदोनों कर्म विनाशवान्हैं ९ मृत्युका चाहनेवाला इंद्रियोंसे आकुल और विरथहोकर मुझसे मारने के योग्य तुझको जानकर युद्धमें विजय करके तुमको जीवता छोड़दिया १० जो तुमने युद्ध में लड़नेवाले महाबली भीमसेनको किसी दशामें दैवयोगसे विरथकरके रूखे और अयोग्य वचनकहे ११ यह बड़ाअधर्म है और अच्छे लोगोंसे करनेके योग्य नहीं शत्रुको विजय करके अपनी प्रशंसा नहीं करतेहैं और न कठोर वचन क-

हतेहैं १२ नरोत्तम शूर और सन्तलोग किसीकी निन्दा नहीं करते हैं हे सूतके पुत्र तुम प्राकृतबुद्धि रखनेवाले होकर ऐसे २ बचनों को कहतेहो १३ युद्ध करनेवाले पराक्रमी शूर और श्रेष्ठलोगोंके व्रतमें प्रीति रखनेवाले भीमसेनको जो तुमने अत्यन्त निरर्थक सुननेके अयोग्य चपलतासे अनभ्यस्त अप्रियबचन कहे वहतेरे बचन सत्यनहीं हैं सब सेनाओं के और केशवजीसमेत मेरेदेखते १४।१५ युद्धमें तू बहुधा भीमसेनसे विरथ कियागयाहै पांडव भीमसेनने उस २ समयपर तुमको कभी कठोर बचननहीं कहा १६ जोकि तुमने भीमसेनको ऐसेअयोग्य और रूखे वचन सुनाये और अभिमन्यु मेरी अविद्यमानतामें तुम्हारे हाथ से मारागया १७ इसहेतुसे इस पापकर्म के फलको शीघ्रपावोगे हे दुर्बुद्धी तुमने अपने नाशके लिये उसकेधनुषकोकाटा १८ हे अज्ञानी इसहेतु से भृत्यपुत्र और बान्धवों समेत मेरे हाथसे तू मारनेके योग्यहै तुम सब कर्मोंको करो तेरे निमित्त बड़ाभय उत्पन्न होगा १६ युद्धमें तेरे देखतेहुये वृषसेन को मारूंगा और जो दूसरे राजालोग भी भूलसे मेरे सम्मुख आवेंगे उन सबको भी मारूंगा मैं सत्यता से शस्त्रोंकी शपथ खाताहूं हे अज्ञानी निर्बुद्धी युद्धमें अपने को बुद्धिमान् माननेवाले तुझको २० । २१ गिरा हुआ देख वह निर्बुद्धी दुर्य्योधन अत्यन्त दुःखी होगा अर्जुनकी ओरसे कर्णके पुत्रके मारनेकी प्रतिज्ञा करनेपर २२ रथीलोगोंके बड़े कठिन शब्दहुये उस बड़े भयकारी कठिन युद्धके वर्त्तमान होनेपर २३ मंद किरणोंका रखनेवाला सूर्य्य अस्ताचलके पास गया हे राजा इसके पीछे इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजी युद्धके मुखपर नियत २४ प्रतिज्ञा पूरी करनेवाले अर्जुनसे मिलकर यह बचन बोले हे विजयके अभ्यासी अर्ज्जुन तुमने प्रारब्धसे अपनी बड़ी प्रतिज्ञा को पूर्णकिया २५ और प्रारब्ध से पापी वृद्धक्षत्र अपने पुत्र समेत मारागया हे भरतवंशी अर्ज्जुन देवताओंकी सेनाभी दुर्य्योधनकी सेना को पाकर २६ युद्धमें पीड़ाको पाती है इसमें विचार न करना चाहिये हे पुरुषोत्तम मैं बिचार करता हुआ लोकोंमें कहीं उसपुरुषको नहीं देखताहूं २७ जो इस सेनासे युद्धकरे दुर्य्योधनके कारणसे इकट्ठे होनेवाले बड़े प्रभाववाले अपनी समान और अपने से भी अधिक बहुतसे राजालोग तुम्हारे सम्मुख हुये क्रोधयुक्त कवचधारी वह सब शूरवीर तुझको युद्ध में पाकर सम्मुख वर्त्तमान नहीं रहे २८ । २६ कोई युद्धमें रुद्र इन्द्र और यमराजकी समानता रखनेवाले तेरे इस प्रकारके बल परा-

क्रमके करनेको समर्थ नहींहुये ३० अब जिस प्रकारके पराक्रमको हे शत्रुसंतापी तुझ अकेलेने किया इसी प्रकार भाईआदि समेत दुरात्मा कर्णके मारेजानेपर ३१ तुझ विजय करनेवालेकी जिसके कि शत्रु मारेगये फिर प्रशंसा करूंगा अर्जुनने उनको उत्तरदिया कि हे माधवजी यह सब आपहीकी कृपासे हुआ और आगे भी सब पूराहोगा ३२ यह प्रतिज्ञा जो मैंने पूरीकी है इसको देवताभी कठिनता से पूरी करसक्ते हैं उन लोगोंकी विजय आश्चर्य्य से रहितहै जिन लोगोंके सहाय और साथमें हे केशव जी आपहो ३३ हे प्रभु श्रीकृष्ण जी राजा युधिष्ठिर आपकी कृपासे सम्पूर्ण पृथ्वी को पावेंगे यह आपकाही प्रभाव है और आपही की विजय है ३४ हेमधुसूदनजी हम सदैव आपसे पोषण के योग्यहैं इसकेपीछे ऐसे कहेहुये और धीरे धीरे घोड़ोंको चलातेहुये श्रीकृष्णजी ने ३५ वह बड़ीकठिन और भयकारी युद्धभूमि अर्ज्जुन को दिखलाई ३६ श्रीकृष्णजी बोले कि युद्धमें विजयको और विख्यात उत्तम यशको चाहते शूर राजालोग तेरे बाणों से मरेहुये पृथ्वीपर सोते हैं ३७ गिरेहुये शस्त्र और भूषणवाले घोड़े रथ और हाथियोंसे जुदे टूटे चूर्णीभूत कवचवाले उन लोगोंने बड़ी व्याकुलताको पाया३८ सजीव निर्ज्जीव बड़े प्रकाशित रूपों से युक्तहैं निर्ज्जीव राजा लोग जीवते से दिखाई देते हैं ३९ उन्होंके सुनहरी पुङ्ख बाण और नानाप्रकार के तीक्ष्ण शस्त्र सवारी और धनुष आदिकों से व्याप्त पृथ्वीको देखो ४० कवच,ढाल,हार, कुण्डलधारी,हस्तत्राण, मुकुट,माला,चूड़ामणि, वस्त्र ४१ कण्ठसूत्र,बाजूबन्द, प्रकाशित निष्क और अन्य २ जड़ाऊ भूषणों से पृथ्वी प्रकाशमान होरही है हे भरतवंशी ४२ अनुकर्ष, उपासङ्ग, पताका, ध्वजा, वस्त्र, अधिष्ठान, ईशादण्ड, कबन्धुर ४३ चूर्ण कियेहुये अपूर्व्व रथ चक्र, अनेक प्रकारके अक्ष, युग, योक्र, कलाप, धनुष, शायक, प्रस्तोम, कुथा, परिघ, अंकुश, शक्ति, भिण्डिपाल, तूणीर, शूल, फरसे ४४।४५ प्रास,तोमर,कुन्त,यष्टी, शतघ्नी, भुशुण्डी, खड्ग ४६ मूशल, मुद्गल, गदा, कणप, सुवर्णजटित कक्षा ४७ और गजेन्द्रोंके घण्टे और नाना प्रकारके सामान,माला,अनेक प्रकारके भूषण,बहुमूल्य वस्त्र ४८ इन सब टूटेहुये पदार्थोंसे पृथ्वी ऐसी शोभायमान है जैसे कि शरदऋतुका आकाश ग्रहोंसे शोभायमान होताहै पृथ्वीपर पृथ्वीकेही अर्थ पृथ्वीके स्वामी मारेगये ४९ पृथ्वीको अपने अंगों से दककर ऐसे सोगये जैसे कि लोग अपनी प्यारी स्त्रियोंको छिपाकर सोते

हैं शस्त्रोंके प्रहारों से उत्पन्न होनेवाले गुफा मुखघावों से बहुतसे रुधिरको श्रवते हुये पर्व्वतों के शिखरके समान ऐरावतके समान इनहाथियोंको ऐसे देखो जैसे कि कन्दरारूपी मुखोंके साथ झिरनेवाले पहाड़ होते हैं ५०।५१ हे बीर बाणों से घायल पृथ्वी पर झाग डालनेवाले इन हाथियोंको देखो और स्वर्णमयी सामानों से अलंकृत पड़ेहुये घोड़ोंको देखो ५२ हे तात अर्ज्जुन गन्धर्व्वनगर के रूप उन रथों को जिनके कि स्वामी मारेगये ध्वजा पताका अक्ष रथ चक्रादिक टूटे और सारथी मारेगये ५३ वह कूबरयुग टूटेहुये ईशादण्ड कबन्धुरसे टूटेहुये बिमानों के समान दीखनेवाले पृथ्वीपर टूटेहुये देखो ५४ हे बीर सैकड़ों हजारों मृतक पतिलोग और रुधिरसे लिप्त सोतेहुये धनुषधारी और ढालबन्दों को देखो ५५ हे महाबाहु तेरे बाणों से घायल शरीर और सब अंगों से पृथ्वी को मिल कर सोतेहुये शूरबीरों के बालोंको देखो ५६ हे नरोत्तम दुःखसे देखनेके योग्य पृथ्वीको देखो जो कि गिरायेहुये हाथी घोड़े और रथोंसे पूर्ण रुधिर मांसरूपी बड़ी कीच रखनेवाली और राक्षस श्वान भेड़िये और पिशाचों को प्रसन्न करनेवाली है ५७ हे प्रभु अर्ज्जुन युद्धभूमि में यशका बढ़ानेवाला यह बड़ा कर्म्म तुझी में शोभित होताहै इस प्रकार से बड़े युद्धमें दैत्य दानवोंके मारनेके अभिलाषी इन्द्रादिक देवताओं मेंभी श्रेष्ठ ५८ शत्रुओं के मारनेवाले और शीघ्रतासे शत्रुओंकी पृथ्वी अर्ज्जुनको दिखलातेहुये श्रीकृष्णजी ने अजातशत्रु युधिष्ठिरको मिलकर जयद्रथ को मृतकहुआ वर्णन किया ५६ चमर व्यजन छत्र ध्वजा घोड़े रथ हाथी अनेक प्रकार पृथक् घोड़ोंके परिकर्षण ६० बिचित्र कुथा बहुमूल्य सामानवाले रथ और बीरों से आच्छादित पृथ्वीको देखो मानों यह स्त्रीरूपा पृथ्वी अपूर्व्व वस्त्रों से अलंकृत है ६१ अलंकृत हाथियों से गिरेहुये बहुतेरे बीरोंको हाथियों समेत ऐसे देखो जैसे कि बज्र से मरेहुये पर्व्वतों के शिखरों से गिरे हुये सिंह होते हैं ६२ सञ्जय बोले कि इस प्रकार अर्ज्जुन को युद्धभूमि दिखलाते और अपने बिजयी बीरोंसे संयुक्त श्रीकृष्णजीने पांचजन्यको बजाया ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिअष्टचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४८ ॥

एकसौउनचासका अध्याय॥

संजय बोले कि जयद्रथके मारेजानेपर उन अत्यन्त प्रसन्न श्रीकृष्णजीने ध-

र्म के पुत्र राजायुधिष्ठिर से प्रणामपूर्व्वक मिलकर यह वचन कहा १ हे राजेन्द्र नरोत्तम तुम मृतरूप शत्रुओं से वृद्धि को पातेहो और आपके छोटेभाईने प्रारब्ध से प्रतिज्ञा को पूरा किया २ इसके पीछे श्रीकृष्णजी के इस प्रकार कहने पर वह प्रसन्नचित्त शत्रुके पुरको विजय करनेवाला राजायुधिष्ठिर रथसे उतरकर ३ आनन्दके अश्रुपातों से भीजा हुआ कमल के समान प्रभावाले उज्ज्वल मुख को साफ करके दोनों कृष्णों से प्रीतिके साथ मिला ४ और बोला कि हे कमललोचन तुमसे इस प्रिय बात को सुनकर मैं प्रसन्नता के अन्त को ऐसे नहीं पाताहूं जैसे कि पार होने का अभिलाषी मनुष्य समुद्रके अन्त को नहीं पाता है ५ हे श्रीकृष्णजी बुद्धिमान् अर्जुनने यह अत्यन्त अपूर्व्व कर्म्म किया प्रारब्धसे युद्ध में भारसेरहित हुये दोनों महारथियों को देखताहूं ६ और प्रारब्धसेही मनुष्यों में नीच पापी जयद्रथ मारागया और दोनों कृष्णोंने भाग्यसे मेरा बड़ा हर्ष उत्पन्न किया ७ हे गोविन्दजी आपसे रक्षित उस अर्ज्जुन ने पापी जयद्रथ को मारकर मुझको बड़ा आनन्दित किया जिनके आप रक्षकहैं उन लोगोंका कर्म अत्यन्त अपूर्व्व नहीं है ८ हे मधुसूदनजी सब लोकके आपही नाथ और गुरुहो आपही की कृपासे हम शत्रुओं को विजय करेंगे ९ तुम सदैव सर्वात्मभावसे हमारे प्रिय और वृद्धिमें नियतहो हमने तुम्हारी शरण लेकर युद्ध प्रारम्भ किया १० हे इन्द्रके छोटेभाई जैसे कि युद्धमें देवताओं के हाथसे असुरों के मरनेमें इन्द्रको प्रसन्नता होती है उसी प्रकार आपकी कृपालुतासे और अर्जुनकी वीरतासे मुझको प्रसन्नता प्राप्तहुई हे जनार्द्दनजी यह कर्म्म देवताओंसे भी होना असम्भवहै ११ जो इस अर्जुनने आपके बुद्धि बल और पराक्रमके द्वारा इस कर्म्म को किया हे श्रीकृष्णजी मैंने बाल्यावस्थासेही आपके कर्मोंको सुना जोकि बुद्धिसे बाहर दिव्य बड़े और बहुतहैं तभी मैंने शत्रुओं को मरा हुआ और सब पृथ्वीका प्राप्तहोना जानलिया १२।१३ हेइन्द्रियोंके स्वामी वीर श्रीकृष्णजी इन्द्रने आपकी कृपासे हजारों दैत्यों को मारकर देवताओंकी ईश्वरताको पाया और स्थावर जङ्गम जगत् अपनी बुद्धिमें नियत जप और होमों में प्रवृत्तहै १४ पूर्व्व समयमें यह सब जगत् जलरूप और अन्धकाररूप था हे महाबाहु पुरुषोत्तम फिर आपहीकी कृपा से यह संसार प्रकट हुआ १५ जो पुरुष सब लोकोंके उत्पन्न करनेवाले अविनाशी परमात्मा श्रीकृष्णजी को देखते हैं वह कभी मोहको नहीं पाते हैं १६ हे इ-

न्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजी जो भक्तजन आपही को आदि अन्त रखनेवाला सब सृष्टिका स्वामी और अबिनाशी ईश्वर जानते हैं वह सब आपत्तियोंसे पार होते हैं १७ जो प्रपंच से पृथक् पुररूप शरीरका अधिष्ठान परमात्मा और ब्रह्मादिक देवताओंका उत्पत्तिका कारण है उस पुरुषोत्तमके प्राप्त होनेवाले को बड़ा ऐश्वर्य्य प्राप्त होताहै १८ चारोंवेद जिसको गाते हैं और जो वेदोंमें गाया जाता है उस परमात्मा को प्राप्त होकर उत्तम ऐश्वर्यों को पाता है १९ हे परमेश्वर ईश्वरों के भी ईश्वर तिर्य्यग्गामी आदि सब नरों के ईश्वर निष्पाप श्रीकृष्णजी चिरंजीवि मार्कण्डेय ऋषि आपके चरित्रों के जाननेवाले हैं २० पूर्व्वसमय में असित देवल और महातपस्वी नारदमुनिने आपके माहात्म्य और अनुभावको वर्णन किया और मेरे पितामह ब्यासजीने भी तुमको श्रेष्ठतर कहा तुम्हीं तेज हो तुम्हीं परब्रह्म हो तुम्हीं सत्य तुम्हीं बड़े सत्य २१ तुम्हीं तेज तुम्हीं उत्तम तेज तुम्हीं जगत् के कारण तुम्हीं से यह सब जड़ चैतन्यात्मक सृष्टि उत्पन्न है २२ प्रलयके होने पर यह सब जगत् फिर तुम्हीं में लय होता है हे जगत्पति वेदज्ञ पुरुषों ने तुम्हींको आदि अन्तसे रहित देवता बिश्वका ईश्वर २३ धाता, अजन्मा, अव्यक्त, (अर्थात् मायासे पृथक् कहा है) देवताभी सब सजीव जीवों के तुम्ह आत्मा अनन्त बिश्वतोमुख २४ गुप्त प्रथम जगत्के स्वामी नारायण और परमदेवता और परमात्मा ईश्वर को नहीं जानते हैं २५ जो कि ज्ञानके उत्पत्ति स्थान हरि बिष्णु मोक्षाभिलाषियों के परमस्थान सबसे परे प्राचीन पुरीरूप शरीरों में बास करनेवाले प्राचीनों सेभी परेहो २६ इस लोक और स्वर्ग्गलोक के मध्य तीनों कालोंमें प्रकट होनेवाले आपके इन अनेक प्रकारके गुण और कर्म्मोंकी संख्याका करनेवाला यहां वर्त्तमान नहींहै २७ हम सबओरसे ऐसे रक्षा के योग्यहैं जैसे कि देवता इन्द्रसे रक्षाके योग्य होते हैं इन्हीं हेतुओं से सब गुण सम्पन्न तुम हम लोगों के शुभचिन्तक निश्चय कियेगये २८ इस रीतिसे धर्म्मराज युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णजी की स्तुति की तब जनार्द्दन श्रीकृष्णजी यह योग्य वचन बोले २९ आपके उग्रतप और उत्तम धर्म्म साधुता पूर्व्वक सरलपनसे पापी जयद्रथ को मारा ३० हे पुरुषोत्तम तेरी कृपासे संयुक्त होकर इस अर्ज्जुनने हजारों शूरवीरों को मारकर जयद्रथ को मारा ३१ कर्म्म भुजबल निर्भयता शीघ्रता और बुद्धिकी दृढ़तामें अर्ज्जुनके समान कोई नहीं है ३२ हे भरतर्षभ्रयों

में श्रेष्ठ जो यह तेरा भाई अर्ज्जुनहै उसने युद्ध में सेनाका नाश करके जयद्रथ के शिरको काटा ३३ हे राजा इसके पीछे प्रभु युधिष्ठिर ने अर्ज्जुन से मिलकर और उसके मुखको साफकर विश्वासदिया कि हे अर्ज्जुन तुमने बहुतबड़ा कर्म कियाहै यह कर्म देवताओं समेत इन्द्रसेभी सहने के योग्य नहीं है ३४।३५ हे शत्रुहन्ता तुम प्रारब्ध से भाररहित मृतक शत्रुवालेहो और प्रारब्धसे पापी जयद्रथको मारकर यह तुम्हारी प्रतिज्ञा सत्यहुई ३६ बड़े यशस्वी राजा युधिष्ठिर ने इस प्रकार कहकर पवित्र सुगन्धित हाथसे अर्ज्जुनकी पीठको स्पर्श किया ३७ इस रीतिसे कहेहुये वह दोनों महात्मा श्रीकृष्णजी और पाण्डव अर्ज्जुन राजा युधिष्ठिर से बोले ३८ पापी राजा जयद्रथ आपकी क्रोधाग्निसे भस्महुआ और युद्धमें दुर्य्योधनकी बड़ीसेना भी ३९ मरी और मारीजाती है और मारीजायगी हे शत्रुके विजयकरनेवाले भरतवंशी हे कौरव आपकेही क्रोधसे मारेगये ४० हे वीर दुर्बुद्धी दुर्य्योधन नेत्रोंसेही नाशकर्त्तारूप तुमको क्रोधयुक्तकरके युद्धमें मित्र बांधवों समेत प्राणोंको त्यागकरेगा ४१ पूर्व्व समयमें देवताओं से भी बड़ी कठिनतासे विजय होनेवाले कौरवों के पितामह भीष्मजी आपके क्रोधसे घायल शरशय्यापर वर्त्तमानहोकर शयनकरते हैं ४२ युद्ध में उन शत्रुहन्ताका विजय करना बड़ा कठिनथा वहभी मृत्युके वशीभूतहुये हे बड़ाई देनेवाले पांडव तुम जिसपर क्रोधयुक्तहो ४३ उसका राज्य प्राण लक्ष्मी पुत्र और अनेकप्रकार के सुख यह सब विनाशको पावेंगे ४४ हे शत्रुसंतापी सदैव तुम्ह राजधर्म में प्रवृत्त के क्रोधयुक्त होनेपर कौरवोंको पुत्र पशु और बांधवों समेत नाशहुआ मानता हूं ४५ उसकेपीछे बाणोंमे घायल महाबाहु भीमसेन और महारथी सात्यकी बड़े गुरुको दंडवत् करके ४६ पांचाल देशियोंसे आवृत पृथ्वीपर खड़े हुये उन बड़े धनुषधारी प्रसन्न चित्त हाथ जोड़े हुये आगे नियत दोनों वीरों को देखकर ४७ युधिष्ठिरने उन दोनों भीमसेन और सात्यकी को आशीर्वाददिये प्रारब्धसे उन दोनों शूरोंको सेनासागर से पारउतरे ४८ द्रोणाचार्य्यरूपी ग्राहसे दुर्गम्य कृतवर्मारूपी समुद्र से उत्तीर्ण देखताहूं और प्रारब्ध से युद्धमें पृथ्वीपर सबराजालोग विजय किये ४९ प्रारब्धसे युद्धमें तुम दोनोंको भी विजयी देखताहूं प्रारब्धहीसे महारथी कृतवर्मा और द्रोणाचार्य्यको युद्धमें विजयकिया ५० प्रारब्धसेही युद्ध में कर्णभी बाणोंसे पराजय कियागया हे पुरुषोत्तमो तुम दोनोंके हाथसे शल्यने

भी युद्धसे मुखफेरा ५१ प्रारब्धसे रथियोंमें श्रेष्ठ युद्धमें कुशल तुम दोनोंको कुशल पूर्व्वक युद्धसे लौटकर आनेवाला देखताहूं ५२ मैं प्रारब्धसेही अपने आज्ञाकारी अधिकार और प्रतिष्ठाके आधीन सेनासागरसे पारहोनेवाले दोनों बीरोंको देखताहूं ५३ मैं प्रारब्धसेही युद्धमें प्रशंसनीय पराजय न पानेवाले अपने प्राणोंसेभी प्यारे दोनों बीरों को देखता हूं ५४ राजा युधिष्ठिर उन सात्यकी और भीमसेन दोनों पुरुषोत्तमोंसे यह कहकर मिला और बड़े आनन्द के अश्रुपातोंको छोड़ा ५५ हे राजा इसके पीछे पाण्डवोंकी सबसेना अत्यन्त प्रसन्न होकर युद्धमें प्रवृत्त होगई और युद्ध के निमित्त मन किया ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकोनपंचाशत्तमोऽध्याय १४९ ॥

एकसौपच्चासका अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि हे राजा जयद्रथके मरने पर आपका पुत्र दुर्य्योधन अश्रुपातोंसे युक्त महादुःखी होकर शत्रुओं के विजय करने में अधैर्य्य पूर्व्वक असाहस हुआ १ दुर्म्मन टूटी डाढ़वाले सर्प्प के समान श्वास लेनेवाले दुष्टरूप सब लोकके अपराधी आपके पुत्रने बड़ी पीड़ाको पाया २ युद्धमें अर्ज्जुन भीमसेन और सात्यकी से कियेहुये अपनी सेनाके महाभयकारी नाशको देखकर ३ उस रूपान्तरवाले दुर्ब्बल दुःखी अश्रुपातों से भरे नेत्र दुर्य्योधनने माना कि इस पृथ्वीपर अर्ज्जुन की समान कोई शूरबीर नहीं है ४ हे श्रेष्ठ उसने बिश्वास कर लिया कि युद्धमें क्रोधयुक्त अर्ज्जुन के सम्मुख होनेको न द्रोणाचार्य्य न कर्ण न अश्वत्थामा और न कृपाचार्य्य जी समर्थ हैं ५ अर्ज्जुन ने मेरे सब महारथियों को विजय करके युद्ध में जयद्रथको मारा और युद्धमें किसी नेभी नहीं रोका ६ यह कौरवोंकी बड़ी सेना सब ओरसे नाशमान है इसका रक्षक साक्षात् इन्द्रभी नहीं होसक्ता जिसके कि आश्रयको लेकर युद्धमें शस्त्र चलावें वह कर्ण युद्धमें विजय कियागया और जयद्रथ मारागया ७।८ मैंने जिसके पराक्रमका आश्रय लेकर सन्धि चाहनेवाले श्रीकृष्णजी को भी तृणके समान जाना वह कर्ण भी युद्धमें पराजय हुआ ९ हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र इसप्रकार दुःखितचित्त और सब लोकका अपराधी आपका पुत्र दर्शन करनेको द्रोणाचार्य्य के पास आया १० वहां आकर उसने कौरवोंके उस सम्पूर्ण नाशको और डूब जानेवाले आप

के पुत्रोंका और विजय करनेवाले शत्रुओंका भी सब वृत्तान्त वर्णन किया ११ दुर्य्योधन बोला कि हे महाराजों के आचार्य्यजी मेरे पितामह भीष्मजीको आदि लेकर इस बड़े विनाशको देखो १२ यहलोभी अभीष्ट सिद्ध करनेवाला शिखण्डी उन भीष्मपितामह को मारकर सब पाञ्चालों समेत सेनाके आगे वर्त्तमानहै १३ और अर्ज्जुनने सात अक्षौहिणी सेनाको मारकर आपके दूसरे शिष्य कठिनता से पराजय होनेवाले जयद्रथको मारा १४ मेरी विजय चाहनेवाले कर्म्म कर्त्ता यमलोकमें पहुंचेहुये शुभचिन्तक लोगों की अनृणता को मैं कैसे पाऊंगा १५ जो राजा लोग इस पृथ्वीको मेरे निमित्त चाहते हैं वह संसारवाली पृथ्वी के राज्योंको छोड़कर पृथ्वीपर सोते हैं १६ मैं महानपुंसक मित्रों के ऐसे विनाश को करके हजार अश्वमेध यज्ञों के द्वाराभी अपने पवित्र होनेको नहीं उत्साह करता हूं १७ मुझ लोभी पापी धर्म्म के गुप्त करनेवालेकी विजयको पुरुषार्थ से चाहनेवाले क्षत्रियों ने यमलोक को पाया १८ राजसभा में पृथ्वी मुझे दुराचारी मित्रों के दुखदाई और शत्रुको अपने में प्रवेशकरनेको क्यों न विवर रूप हुई १९ जो मैं राजाओं के मध्यमें रुधिरलिप्त शरीर युद्धभूमिमें घायल और शयन करनेवाले भीष्मपितामह की रक्षा करनेको समर्थ नहीं हुआ २० वह परलोकके विजय करनेवाले कठिनतासे पराजय होनेवाले भीष्मजी मुझ नीच पुरुष और मित्र से शत्रुता करनेवाले अधर्म्मी से मिलकर क्या कहेंगे २१ प्राणों को त्याग करके मेरेही निमित्त युद्धमें प्रवृत्त सात्यकी के हाथसे मारेहुये बड़े धनुषधारी महारथी जलसिन्धुको देखो २२ काम्बोज, अलम्बुष और अन्य बहुत शुभचिन्तकों को मृतक देखकर अब जीवनसे मुझको क्या प्रयोजन है अर्थात् मेरा जीवन वृथाहै २३ मेरे अर्थ जो जीवनसे प्रीति रहित मुखों के न फेरनेवाले और मेरे शत्रुओं के विजय करनेको बड़े २ उपायों से उद्योग करनेवाले शूर मारे गये २४ हे शत्रुसन्तापी अब मैं बड़ी सामर्थ्य से उनकी अनृणता को पाकर यमुनाजी में उनको जलसे तृप्त करूंगा २५ हे सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ गुरूजी मैं आपसे सत्य सत्य प्रतिज्ञा करताहूं और यज्ञादिक कर्म्म और वापिका आदि बनाने के धर्म्मों के फल और पुत्रोंकी भी शपथ खाताहूं २६ कि मैं युद्धमें उन सब पाञ्चालोंको पाण्डवों समेत मारकर शान्ती को पाऊंगा अथवा युद्धमें उनकी सालोक्यता को पाऊंगा २७ सो मैं वहीं जाऊंगा जहांपर कि मेरे निमित्त

युद्ध में अर्ज्जुन से लड़कर वह पुरुषोत्तम मारेगये हैं २८ हे महाबाहु अब मेरे सहायक जिनको कि किसी प्रकारसे मैंने विरोधी नहीं बनाया वह सब मेरा कल्याण नहीं चाहते वह सब जैसा कि पाण्डवों को चाहते हैं उस प्रकार मुझको नहीं मानते २९ राजा सत्यसन्ध ने युद्धमें अपने आप अपनी मृत्युको उत्पन्न किया और आप शिष्यता से अर्ज्जुनके मारनेके बिचार को त्याग करते हैं ३० इस हेतुसे कि जो बीर हमारी बिजय चाहते थे वह युद्धमें मारेगये अब कर्णको भी मैं अपनी बिजय चाहनेवाला देखताहूं ३१ जो मन्दबुद्धी मित्र को मुख्यता से न जानकर मित्रके प्रयोजनमें संयुक्त होताहै उसका प्रयोजन नाशको पाता है ३२ बड़े शुभचिन्तकों ने मुझ लोभसे लोभी पापी कुटिल और धनके अभिलाषीका वह कर्मभी उसी रूपवाला किया ३३ पराक्रमी भूरिश्रवा, जयद्रथ, अभिषाह, शूरसेन, शिवय और वशातय मारेगये ३४ अब मैं वहांही जाऊंगा जहांपर युद्धमें मेरे अर्थ अर्जुनसे लड़कर वह पुरुषोत्तम मारेगये ३५ उन पुरुषोत्तमोंके बिना मेराभी जीवन निरर्थक है हे पाण्डवों के आचार्य्यजी आप हमको आज्ञा दो ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिपंचाशत्तमोऽध्यायः १५० ॥

एकसौइक्यावनका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे तात युद्धमें अर्जुनके हाथसे राजासिन्धुके और भूरिश्रवाके मारेजानेपर तुम्हारा चित्तकैसाहुआ १ और कौरवोंकी सभामें दुर्य्योधनसे उसप्रकारके बचनोंको सुनकर द्रोणाचार्य्यने उसके अर्थ कौनसा उत्तम वचन कहा हे संजय वह सब मुझसे कहो २ संजय बोले कि हे भरतबंशी जयद्रथ और भूरिश्रवा को मराहुआ देखकर आपकी सेनाके बड़े शब्दहुये ३ उन्होंने आपके पुत्रकी सब सलाहों को बुरा कहा जिस सलाह से सैकड़ों उत्तम क्षत्रिय मारेगये ४ फिर दुःखित चित्त अत्यन्त पीड़ावान् द्रोणाचार्य्य आपके पुत्र के उस बचन को सुन कर एक मुहूर्त्त ध्यान करके बोले ५ कि हे दुर्य्योधन अर्ज्जुन को युद्ध में सदैव अजेय कहनेवाले तू अपने ऐसे बचन बाणोंसे क्यों घायल करताहै ६ हे कौरव युद्धमें इतनीही बातसे अर्जुनका जानना सम्भवहै जो अर्जुनसे रक्षित शिखंडी ने भीष्मजी को मारा ७ मैंने युद्धमें देव दानवों सेभी अजेय बीरोंको मराहुआ

देखकर तभी यह जानलियाथा कि यह भरतबंशियोंकी सेना नहींहै ८ हम मा-
नते हैं कि जो तीनों लोकोंमें सब मनुष्योंमें सबका शूरहै उस शूरवीरके गिरने
पर किस शेष बचेहुये शूरकी संख्या और विद्यमानता करें ६ हे तात कौरवीय
सभामें जिन पाशों को शकुनी लेता था वह पाशे नहीं थे किन्तु शत्रुओंके त-
पानेवाले बाणथे १० हे तात वही बाण अर्जुनसे चलायमान होकर हमको मारते
हैं उस समय बिदुरजीके जेताने और समझानेपर भी तुमने उन बाणोंको नहीं
जाना ११ शुभचिन्तकतासे तुम्हारी कुशलके निमित्त कहनेवाले महात्मा पंडित
बिदुरजी के जिन २ कल्याणरूप बचनों को अपने द्यूतमें आसक्त होकर तुमने
नही सुना १२ हे दुर्य्योधन तेरेही कारण उस बचनके अपमानसे यह महाभय-
कारी नाश वर्त्तमान है १३ जो अज्ञानी पुरुष सत्यकर्म्मी शुभचिन्तकों के परि-
णाम कुशलरूप बचनों को तिरस्कार करके अपने मतको करता है वह शीघ्रही
शोचके योग्य होताहै १४ जो कुलमें उत्पन्न और सब धर्मोंपर कर्म्म करनेवाली
उस दशाके अयोग्य द्रौपदी को हमारे देखतेहुये उस सभामें बुलाकर अप्रतिष्ठा
पूर्व्वक निरादर किया १५ हे गान्धारीके पुत्र उस अधर्मका यह बड़ा फल प्रकट
हुआहै जो ऐसा न होय तो परलोकमें तुम इससे भी अधिक पापोंको भोगो १६
जो उन पाण्डवों को द्यूतमें अन्याय पूर्व्वक बिजय करके उन मृगचर्म्मधारियों
को बनबास दिया १७ अपने को ब्राह्मण कहनेवाला मुझसा दूसरा कौनसा म-
नुष्य उनसे शत्रुता करे जो कि पुत्रोंके समान सदैव धर्मके आचरण करनेवाले
हैं १८ तुमने शकुनी के साथ कौरवोंकी सभामें धृतराष्ट्रके मतसे पाण्डवोंके इस
क्रोध को अपने सम्मुख नियत किया दुश्शासन से युक्त और कर्णसे मिलेहुये
कर्म करनेवाले तुमने बिदुरजीके बचन को तिरस्कार करके उस क्रोधको बारम्बार
दृढ़ किया १६।२० और तुम सब सावधानी से कर्ममें प्रवृत्तहुये जिन्होंने जय-
द्रथ को आश्रय होकर अर्ज्जुन को घेरलिया वह तुम्हारे मध्यमें से कैसे माराग-
या २१ कर्ण कृपाचार्य शल्य अश्वत्थामा और तेरे जीवतेजी राजासिन्धुने कैसे
मृत्युको पाया २२ जयद्रथकी रक्षा करनेको युद्ध करनेवाले सब राजालोग कठिन
पराक्रम को करते थे उसपर भी वह तुम्हारे बीचमें से कैसे मारागया २३ हे तात
राजाजयद्रथ अर्ज्जुनसे अपनी रक्षाको अधिकतर मुझमें और तुझमें अभिलाषा
पूर्व्वक आशा रखता था २४ इसके पीछे अर्ज्जुन से उसके रक्षित न होनेपर अ-

पने जीवनका कोई स्थान नहीं देखताहूं २५ उस शिखण्डी समेत पांचालदेशि-
योंके बिना मारे धृष्टद्युम्नके अपराधमें आपको मग्नहुये के समान देखताहूं २६
हे भरतबंशी सो तुम राजा जयद्रथकी रक्षामें असमर्थ होकर मुझ दुःखीको बचन
रूपी बाणोंसे क्यों घायल करतेहो २७ सुगमकर्मी सत्यप्रतिज्ञ भीमसेनके स्वर्ण-
मयी कवचको युद्ध में देखता हुआ कैसे बिजयकी आशा करता है २८ जिस
स्थानपर महारथियोंके मध्यमें राजाजयद्रथ और भूरिश्रवा मारेगये वहां शेष बचे
हुओं को क्या मानतेहो २९ हे राजा कठिनता से पराजय होनेवाले जो कृपा-
चार्य्य जीवते हैं और राजासिन्धुके मार्ग्गको नहीं गये मैं उनकी प्रशंसा करता
हूं ३० हे कौरव इस स्थानपर तेरे छोटेभाई दुश्शासन के देखतेहुये कठिनकर्म्मी
युद्धमें इन्द्र समेत देवताओं से अजेय के समान भीष्मजी को मृतकप्राय देखा
तब मैंने यह चिन्ताकरी कि यह पृथ्वी तेरी नहीं है ३१ । ३२ हे भरतबंशी अब
पाण्डव और सृंजियों की यह सेना मुझपर एकसाथही चढ़ाई करती है ३३ हे
धृतराष्ट्र के पुत्र मैं सब पांचालों को बिना मारेहुये कवच को शरीरसे नहीं उता-
रूंगा और युद्धमें तेरे प्रियकर्म को करूंगा ३४ हे राजा तुम मेरेपुत्र अश्वत्थामा
से कहो कि युद्धमें जीवनकी रक्षा करनेवाले सोमक क्षत्रिय उसको छोड़ देनेके
योग्य नहीं हैं अर्थात् सबको मारे ३५ पिताकी जो आज्ञाहोय उस बचनपर का-
मकरो अर्थात् आज्ञाका प्रतिपालन करो दया जितेन्द्रियपन सत्य और सत्यव-
क्तापने में नियतहो ३६ उस्से बारम्बार कहदो कि धर्म्म अर्थ काम में सावधान
और धर्मको उत्तम माननेवाला अश्वत्थामा धर्म्म अर्थ को पीड़ा न देता हुआ
युद्ध कर्मोंको करे ३७ नेत्र मन और सामर्थ्य इन सब बातों से ब्राह्मण पूज्य हैं
इनका अप्रिय कभी न करना चाहिये निश्चय करके वह प्रज्वलित अग्निके स-
मान हैं ३८ हे शत्रुहन्ता राजादुर्य्योधन तेरे बचनरूपी बाणों से पीड़वान् होकर
मैं बड़े युद्ध करने के अर्थ सेनाओं में प्रवेश करताहूं हे दुर्य्योधन जो तुम समर्थ
हो तो अब तुम इस सेनाकी रक्षाकरो यह क्रोधयुक्त कौरव सृंजय रात्रिमेंभी युद्ध
करेंगे ३९ । ४० द्रोणाचार्य्य इस प्रकार से कहकर क्षत्रियों के तेजों को आकर्षण
करते पाण्डव और सृंजियों पर ऐसे दौड़े जैसे कि चन्द्रमा नक्षत्रों के तेजों को
आकर्षण करता दौड़ता है ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५१ ॥

एकसौबावनका अध्याय॥

संजय बोले कि इसके पीछे द्रोणाचार्यकी आज्ञानुसार क्रोधके वशीभूत राजा दुर्य्योधनने युद्ध के निमित्त मनसे विचार किया १ तब आपका पुत्र दुर्य्योधन कर्ण से बोला कि देखो श्रीकृष्णजी को साथमें रखनेवाले पाण्डव अर्जुनने गुरूजीके बनायेहुये उस व्यूहको जो कि देवताओं सेभी तोड़ना कठिन था तोड़ कर तुझ उपाय करनेवाले और महात्मा द्रोणाचार्य्य २। ३ और सेनाके बड़े २ उत्तम धनुषधारियों के देखतेहुये सिन्धुके राजा जयद्रथ को गिराया हे राधाके पुत्र कर्ण देखो युद्धमें अत्यन्त उत्तम राजालोग पृथ्वीपर ४ अकेले अर्ज्जुनके हाथसे ऐसे मारेगये जैसे कि सिंहके हाथसे दूसरे हज़ारों मृग महात्मा द्रोणाचार्य्यके और मेरे उपाय करनेपर ५ इन्द्रके पुत्र अर्ज्जुन ने सेनाको बहुतही न्यून करदिया अर्थात् थोड़ेही शेष रहगये हैं युद्ध में द्रोणाचार्य्य के उस अद्वितीय व्यूहको जो कि कठिनता से तोड़नेके योग्यथा तोड़कर अर्जुनने जयद्रथको मार कर अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण किया ६।७ हे कर्ण युद्धमें अर्ज्जुन के हाथसे मारे हुये और पृथ्वीपर गिरायेहुये उन बहुत राजाओं को जो कि इन्द्रके समान पराक्रमी थे सोतेहुये देखो ८ हे वीर पाण्डव अर्ज्जुन इस उपाय करनेवाले और अपनी विजय चाहनेवाले पराक्रमी द्रोणाचार्य्य के कठिनता से तोड़ने के योग्य व्यूहको कैसे तोड़सका ९ हे शत्रुहन्ता कर्ण यह पाण्डव अर्ज्जुन महात्मा आचार्य्यका सदैवसे प्याराहै उसी हेतुसे बिना युद्ध कियेही उसको द्वार देदिया १० शत्रुसन्तापी द्रोणाचार्य्य ने जयद्रथके अर्थ निर्भयता देकर अर्ज्जुन के निमित्त द्वारको दिया मेरी दुर्भाग्यताको देखो ११ कि जो प्रथमही मैं जयद्रथको घरजाने की आज्ञा देदेता तो यह मनुष्योंका नाश काहेको होता १२ हे मित्र द्रोणाचार्य्य से निर्भयताको पाकर मुझ अभागे ने उस जीवनकी इच्छा करनेवाले जयद्रथको घरजाने से रोका १३ अब मेरे भाई चित्रसेन आदिक युद्धमें भीमसेनको पाकर हम सब दुरात्माओं के देखतेहुये उसके हाथसे नाशहुये १४ कर्ण बोले कि आचार्य्यकी निन्दा मतकरो यह ब्राह्मण अपने जीवनको त्याग करके सामर्थ्य बल और उत्साह के समान युद्ध करता है १५ जो अर्ज्जुन उनको उल्लङ्घन करके सेनामें गया इसमें आचार्य्यका किसी प्रकारकाभी दोष नहीं है महाकर्म्मी साव-

धान तरुण शूरवीर अस्त्रज्ञ तीक्ष्ण सामर्थ्य और अभेद्य कवच से अलंकृत शरीर पराक्रमी भुजा धन से अहङ्कारी अर्ज्जुन जो दिव्य अस्त्रोंसे युक्त वानररूप ध्वजाधारी उस रथपर जिसके कि घोड़ों को श्रीकृष्णजी ने पकड़ाथा सवार होकर और अजर दिव्य गाण्डीव धनुष को लेकर तीक्ष्ण बाणोंको वरसाता द्रोणाचार्य के समीपही जाकर सम्मुख हुआ १८। १६ और हे राजा उसने यह विचारकिया कि आचार्य्य जी वृद्धहैं शीघ्रता से नहीं चलसक्ते हैं और भुजाके परिश्रम और कर्म्म करने में असमर्थहैं २० इस हेतुसे श्वेत घोड़े और श्रीकृष्णजी को सारथी रखनेवाला अर्ज्जुन इस प्रकारसे उल्लङ्घन करनेवाला हुआ इसमें उन द्रोणाचार्य्यका अपराध नहीं देखताहूं २१ युद्ध में इन अस्त्रज्ञ द्रोणाचार्य्य से पाण्डवों को मैं अजेय मानताहूं उसी प्रकार अर्ज्जुन ने इनको उल्लङ्घन करके सेना में प्रवेश किया २२ मैं मानताहूं कि दैवका उपदेश कियाहुआ कर्म्म कहींभी विपरीत नहीं वर्त्तमान होताहै हे सुयोधन इसी कारणसे बड़ी सामर्थ्य के साथ हम लोगोंके युद्ध करतेहुये भी युद्धमें जयद्रथ मारागया यहां युद्धभूमि में तेरे साथ बड़े उपाय करनेवाले हम लोगोंका प्रारब्ध वड़ा कहागया है २३। २४ वह दैव सदैव छल और पराक्रम से कर्म्म करनेवाले हम लोगों के उपाय आदिकों को नाश करके हमको पीछे करताहै दैवसे घायल पुरुष किसी स्थानपरभी जो कुछ कर्म्म करताहै वह कियाहुआ कर्म दैवसे न्यून हानिकारक होताहै २५।२६ निश्चय करनेवाले मनुष्यसे जो कर्म सदैव करनेके योग्यहै वह निस्सन्देह करना उचितहै उसकी सिद्धी दैवमें नियतहै २७ हे भरतवंशी पांडव छलसे और बिषके देनेसे भी ठगे और लाखके गृहमें भस्म कियेगये और द्यूतमें भी पराजय किये २८ और राजनीति को छोड़कर बनको भेजे इन उपायोंसे कियाहुआ वह कर्म दैवसे निष्फलहुआ २६ दैवको निष्प्रयोजन न करके उपायमें प्रवृत्त होकर युद्ध करो तेरे और उनके उपाय करतेहुये दैवमार्गसे प्राप्त होगा ३० हे बीर दुर्योधन कहीं उनलोगोंका कर्म्म श्रेष्ठ बुद्धिके अनुसार और तेराकर्म्म दुष्टबुद्धीके विपरीत देखनेमें नहींआताहै ३१ सुकृत और दुष्कृत कर्मका प्रमाण दैवहै दृढ़ कर्म्म वाला दैव शयन करनेवालों के मध्यमें भी जागताहै ३२ आपकी सेनाकी संख्या और बीरोंकी संख्या असंख्यथी इतनी पाण्डवोंकी न सेनाथी और न बीरथे इस रीतिसे युद्ध जारीहुआ ३३ तुम्हारी ओरके बहुतसे प्रहारकर्त्ता उनथोड़ेसे प्रहार-

कर्त्ताओं सें नाश कियेगये मैं निस्सन्देह कहताहूं कि दैवीकर्म है जिससे उपाय और उद्योग सब नष्टहुये ३४ सञ्जय बोले कि हे राजा इस रीतिके बहुत से वचनोंको कहते पाण्डवों की सेना युद्धमें दिखाईपड़ी ३५ हे राजा आपके कुविचार होने पर आपके शूरवीरों का युद्ध उन दूसरे शूरवीरों के साथहुआ जो कि रथ और हाथियोंसे संयुक्तथे ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशनोपरिद्विपंचाशत्तमोऽध्याय. १५२ ॥

एकसौतिरपनका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा आपकी वह बड़ी हाथियों की सेना पाण्डवी सेना को उल्लंघनकर सबओरसे युद्ध करनेलगी १ यमलोक और बड़े परलोकके निमित्त दीक्षित पांचालदेशी और कौरव परस्परमें युद्ध करनेलगे २ शूरोंने शूरोंके साथ भिड़कर युद्धमें बाण तोमर और शक्तियों से घायल किया और यमलोक में पहुँचाया ३ परस्पर मारनेवाले रथियोंका बड़ायुद्ध जो कि रुधिरके गिरने से भयका उत्पन्न करनेवाला था रथियों के साथ जारीहुआ ४ हे महाराज अत्यन्त क्रोधयुक्त मतवाले हाथियों ने परस्पर सम्मुख होकर एकने दूसरेको चीरडाला ५ और कठिन युद्धमें बड़े यशके चाहनेवाले अश्वसवारों ने प्रास शक्ति और फरसों से अश्वसवारों को घायल किया ६ हे महाबाहु राजाधृतराष्ट्र शस्त्रों को धारण कियेहुये सदैव पराक्रममें उपाय करनेवाले सैकड़ों पत्तियोंने परस्पर पीड़ावान् किया ७ हे श्रेष्ठ हमने गोत्रनाम और कुलोंके सुननेसेही पांचाल और कौरवोंको जाना ८ युद्धमें निर्भयके समान घूमनेवाले उन शूरवीरोंने बाण शक्ति और फरसों से परस्पर परलोकमें भेजा ९ हे राजा सूर्यके अस्त होनेपरभी दशो दिशाओं में उन्होंके छोड़ेहुये हजारों बाण अच्छे प्रकारसे प्रकाशमान नहीहुये थे १० हे भरतवंशी राजाधृतराष्ट्र उस प्रकारसे पाण्डवोंके युद्ध करने से दुर्योधन ने उस सेनाको मझाया ११ जयद्रथके मरने से अत्यन्त दुःखी दुर्य्योधन चित्त से मरना विचारकर सेना में प्रविष्ट हुआ १२ रथके शब्द से शब्दायमान पृथ्वी को कम्पाता आपका पुत्र पाण्डवोंकी सेनाके सम्मुख वर्त्तमान हुआ १३ हे भरतवंशी उसकी और उन्होंकी वह कठिन चढ़ाई सब सेनाओंकी बड़ी नाशकारी हुई १४ जिस प्रकार किरणों से तपानेवाले सूर्य्य को दिनके मध्य में नहीं देखसके उसी

प्रकार पाण्डव भरतबंशियों के युद्ध में बाणरूप किरणों से अत्यन्त तपानेवाले आपके पुत्रको सेनाके मध्यमें १५ देखने को समर्थ नहींहुये उस महात्मासे घायल पांचालदेशी भागनेमें प्रवृत्तचित्त और शत्रुके बिजय करनेमें असाहसी १६ चारोंओर को दौड़े पाण्डवी सेनाके लोग आपके धनुषधारी पुत्रके सुनहरी पुंख वाले साफ नोकके बाणों से १७ पीड़ावान् शीघ्र गिरपड़े आपके शूरोंने युद्धमें ऐसे प्रकारके कर्मको नहीं किया १८ हे राजा जैसा कि आपके पुत्रने कर्म किया युद्ध में वह सेना आपके पुत्रसे ऐसे मथीगई १९ जिस प्रकार प्रफुल्लित कमल रखनेवाली कमलिनी चारोंओर हाथी से बिलोडन कीजाती है और जिस प्रकार पानी से रहित कमलिनी सूर्य्यके कारणसे प्रभारहितहो २० उसी प्रकार आपके पुत्रके तेजसे पाण्डवी सेनाभी होगई हे भरतबंशी आपके पुत्रके हाथसे पाण्डवी सेनाको घायल और मरीहुई देखकर २१ सब पाञ्चालदेशी जिनमें मुख्य भीमसेनथा सम्मुखगये उसने भीमसेनको दश बाणोंसे नकुल और सहदेवको तीन तीन बाणों से २२ बिराट और द्रुपदको छः बाणसे शिखण्डी को सौ बाणसे धृष्टद्युम्नको सत्तर बाणों से धर्म्म के पुत्र युधिष्ठिर को सात बाणसे २३ केकय और चन्देरी देशियों को तीव्र धारवाले बहुत बाणों से सात्यकीको पांच बाणसे और द्रौपदी के पुत्रोंको तीन तीन बाणों से घायल करके २४ घटोत्कचको युद्धमें घायल करताहुआ सिंहके समान गर्ज्जनाकरी और बड़े युद्धमें दूसरे सैकड़ों शूरबीरों को हाथियों के साथ २५ उग्रबाणों से ऐसे काटा जैसे कि क्रोधयुक्त काल सृष्टिको संहार करता है हे राजा उस आप के पुत्रके बाणों से घायल वह पाण्डवी सेना २६ युद्धसे भागी हे राजा बड़े युद्ध में सूर्य्य के समान तपानेवाले उस कौरवराज दुर्य्योधनके देखने को २७ पाण्डवी सेना के लोग समर्थ नहीं हुये हे राजाओं में श्रेष्ठ इसके पीछे क्रोधयुक्त राजा युधिष्ठिर २८ आपके पुत्र को मारने की इच्छा से कौरवपति दुर्य्योधन के सम्मुख दौड़ा युद्ध में वह दोनों शत्रुसन्तापी सम्मुख हुये २९ अर्थात् वह दोनों दुर्य्योधन और युधिष्ठिर अपने प्रयोजनों के हेतुसे पराक्रम करनेवालेहुये इसके पीछे क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने झुके पर्व्ववाले ३० दश बाणों से घायल किया और शीघ्रही एक बाण से ध्वजा को भी काटा और उस इन्द्रसेन को तीन बाणसे ललाटपर घायलकिया ३१ जो कि महात्मा युधिष्ठिर का पहला सारथी था महारथी ने फिर दूसरे बाणसे उसके ध-

नुपको काटा ३२ और चार वाणोंसे चारों घोड़ोंको घायल किया इसकेपीछे क्रोधयुक्त युधिष्ठिर ने एक निमिषमें ही दूसरे धनुप को लेकर ३३ वेगसे कौरव को रोका हे श्रेष्ठ वड़े पाण्डव युधिष्ठिर ने शत्रुहन्ता उस दुर्योधनके स्वर्णपृष्ठी बड़े धनुपको ३४ दो भल्लों से तीन टुकड़े किया सूर्य्यकी किरणोंके समान अत्यन्त भयकारी दूर न होनेवाले वाणको लेकर ३५ हायमाराहै ऐसा कहकर युधिष्ठिर ने वाणको छोड़ा कानतक खैंचकर उस छोड़े हुये वाणसे घायल वह दुर्य्योधन ३६ अत्यन्त अचेत होकर रथके बैठनेके स्थानपर गिरपड़ा हे राजेन्द्र इसके पीछे पाञ्चालदेशियों की प्रसन्न सेनाके शब्द चारोंओर से हुये ३७ कि राजा मारा गया हे श्रेष्ठ वहां वाणों के महाभयकारी शब्द सुनेगये ३८ उसके पीछे द्रोणाचार्य्यजीभी उसयुद्धमेंशीघ्र दिखाईपड़े और प्रसन्नचित्त दुर्य्योधनभी दृढ़धनुपको लेकर ३९ तिष्ठ २ शब्दको वोलता राजा युधिष्ठिर के सम्मुख आया फिर विजयाभिलापी पाञ्चालदेशी शूरवीर शीघ्रही उसके सम्मुख गये ४० कौरवोंमें श्रेष्ठ दुर्य्योधन को चाहते द्रोणाचार्य्यजी ने उनको ऐसे रोंका जैसे कि कठिन वायु से उठायेहुये वादलों को सूर्य्य नाश करताहै ४१ हे राजा इसके पीछे युद्धकी इच्छा से सम्मुख होनेवाले आपके और पाण्डवों के शूरवीरों का महाप्रवल परस्पर में मारनेवाला कठिन युद्ध हुआ ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरित्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः १५३ ॥

एकसौचौवनका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र वोले कि जव क्रोधयुक्त वल पराक्रमवाले आचार्य्यजी शास्त्रके उल्लङ्घन करनेवाले निर्व्बुद्धी मेरेपुत्र दुर्य्योधनको कहकर पाण्डवोंकी सेनामें प्रवेश करनेवाले हुये १ तव पाण्डवों ने उस रथपर नियत शूरवीर प्रवेश करके घूमनेवाले वड़े धनुपधारी द्रोणाचार्य्यजी को कैसे रोंका २ वड़ेयुद्धमें वहुतसे शत्रुओं के मारनेवाले आचार्य्यजी के दक्षिण के चक्र को किन लोगों ने रक्षित किया और उत्तरीय चक्रको किन पुरुषों ने रक्षित किया ३ कौनसे शूरवीर इनके पीछे हुये और कौनसे रथी शत्रु इनके आगे वर्त्तमान हुये ४ मैं मानताहूं कि ऋतुके विपरीत कठिन शीतने उनको स्पर्शकिया और यहभी मानताहूं कि वह ऐसेभयसे कांपते होंगे जैसे कि शिशिर ऋतुमें गौवें कांपती हैं ५ जो वह वड़ाधनुष

धारी अजेय सब शस्त्रधारियों में और रथियों में श्रेष्ठ उत्पातग्रह अथवा अग्नि के समान क्रोधयुक्त रथके मार्गों में नृत्यकरता सब पाञ्चालदेशी सेनाओं को भस्म करता उन्हीं पाञ्चालदेशी सेनाओं में प्रविष्ट हुआ उसने कैसे मृत्यु को पाया ६।७ सञ्जय बोले कि बड़ा धनुषधारी सात्यकी और अर्ज्जुन सायङ्काल के समय जयद्रथ को मारकर राजासे मिलकर द्रोणाचार्य्य के सम्मुख दौड़े ८ उसीप्रकार उपाय करनेवाले पाण्डव युधिष्ठिर और भीमसेन पृथक् पृथक् सेनाओं समेत द्रोणाचार्य्य के सम्मुख दौड़े ९ उसी स्थानपर बुद्धिमान् और कठिनता से विजय होनेवाला सहदेव और सेनासहित धृष्टद्युम्न केकय के साथ विराट १० मत्स्यदेशी और शाल्वदेशी सेना युद्धमें द्रोणाचार्य्य के सम्मुख गई हे राजा धृष्टद्युम्नका पिता राजा द्रुपदभी पाञ्चालदेशियों से रक्षित ११ द्रोणाचार्य्य केही सम्मुख वर्त्तमान हुआ द्रौपदी के बड़ेधनुषधारी पुत्र घटोत्कच राक्षस १२ यहसब सेनाओंसमेत बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य्य के सम्मुखहुये और प्रहार करनेवाले पाञ्चाल देशी छः हजार प्रभद्रक नाम १३ शिखण्डीको आगे करके द्रोणाचार्य्यके सम्मुख वर्त्तमान हुये उसी प्रकार पाण्डवों के अन्य अन्य महारथी १४ एक साथही ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य के सम्मुख वर्त्तमानहुये हे भरतबंशियोंमेंश्रेष्ठ युद्धके निमित्त उन शूरवीरों के जानेपर वह रात्रि भयानकरूप भयभीतों के भय की बढ़ानेवाली शूरवीरों की नाशकारिणी रुद्ररूप होकर मृत्यु से मिलाने वाली हुई १५।१६ और हाथी घोड़ों समेत मनुष्यों के प्राणों की नाशकारक हुई उस घोर रात्रि में सब दिशाओं से बोलनेवाले शृगालों ने १७ अग्निरूप ग्रास रखनेवाले मुखों से घोर रुधिर को जारी किया फिर बड़े भयके सूचक उलूकभी दिखाई पड़े १८ कौरवोंकी सेनामें अत्यन्त भयकारी उत्पात बहुतसे दिखाईदिये हे राजा इसकेपीछे सेनाओंमें बड़ेशब्दहुये १९ भेरी मृदङ्गोंके बड़ेशब्द हाथियोंकी चिग्घाड़ घोड़ोंका हिंसनन २० खुरोंके शब्द और गिरने से सब ओरको कठिन शब्द हुये हे महाराज इसके पीछे द्रोणाचार्य्य और सृञ्जियों का अत्यन्त भयंकारी युद्ध सब ओरसे जारी हुआ और अन्धकार से सब संसारके ढक जाने के कारण कुछ नहीं जानागया २१।२२ चारोंओर से सेनाओं की उठीहुई धूल से मनुष्य घोड़े और हाथियोंका रुधिर मिलगया २३ हमने आर्द्रता से युक्त पृथ्वी की धूलको नहीं देखा जैसे कि पर्वत के ऊपर जलनेवाले बांसों के वनका २४

चटचटा शब्द होताहै उसी प्रकार रात्रिके समय गिरनेवाले अस्त्रों के शब्द हुये मृदङ्ग, ढोल, झर्झरी, पटा नाम बाजों से २५ फत्कार और हेपित शब्दों से सब व्याकुल और शोभायमान हुये हे राजा अन्धकारके कारण अपने और पराये कोई नहीं जानेगये २६ रात्रिमें वह सबसेना उन्मत्तोंके समान जानीगई हे राजा फिर पृथ्वी की धूल रुधिर से नष्ट हुई २७ स्वर्णमयी कवच और नानाप्रकार के भूषणों से अन्धकार दूरहुआ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ इसके पीछे मणि सुवर्णादि से अलंकृत भरतबंशियों की सेना २८ रात्रि में नक्षत्रयुक्त आकाश के समान हुई शृगालों के समूहों से शब्दायमान शक्ति ध्वजाओंसे व्याकुल २६ हाथियों के शब्दों से संयुक्त घोररूप वीरों के गर्ज्जने के बड़े शब्दवाली हुई वहांपर सब दिशाओं को पूर्ण करता रोमहर्षण करनेवाला महाइन्द्र बज्रकी समान बड़ाक-ठोर शब्द हुआ हे महाराज वह भरतबंशियों की सेना रात्रिके समय ३० । ३१ बाजूबन्द कुण्डल निष्क और अस्त्रों से प्रकाशित दिखाई पड़ी और सुबर्ण से अलंकृत हाथी रथ ३२ रात्रिके समय बिजलीसमेत बादलों के समान दृष्टिगो-चर हुये दुधारे, खड्ग, शक्ति, गदा, बाण, मुसल, प्रास और पट्टिश ३३ अग्नि के समान प्रकाशित गिरतेहुये दिखाई दिये जिस सेनामें दुर्य्योधन मुख्यथा वह रथ हाथी बादल ३४ और बादलों की गर्ज्जनासमेत धनुष ध्वजारूप बिजली द्रोणाचार्य्य और पाण्डवरूप बादल खड्ग शक्ति गदा बज्र ३५ और बाणों की धारा उस कठिन शीतोष्णता से पूर्ण घोर आश्चर्य्यकारी उग्रनाश जीवनरूप आपत्ति रखनेवाली ३६ बड़े भयकारी सेना में युद्धके चाहनेवाले शूरवीर लोग प्रवृत्त हुये बड़े शब्दसे शब्दायमान और घोररूपी उस रात्रिमें ३७ भयभीतोंके भयका बढ़ानेवाला और शूरोंके आनन्द का बढ़ानेवाला घोर भयानक रात्रि के युद्ध जारी होनेपर ३८ क्रोधयुक्त पाण्डव और सृञ्जय एकसाथही द्रोणाचार्यके सम्मुख गये हे राजा जो जो महारथी सम्मुख वर्त्तमान हुये ३९ उन सबके मुखों को फेरा और कितनोंही को यमलोक में पहुंचाया उन हजारों हाथी अयुतों रथ ४० और प्रयुतों अर्बुदों पदाती और घोड़ों के समूहों को रात्रिके समय अकेले द्रोणाचार्य्य ने घायल किया और मारा ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिरात्रियुद्धेद्गनोपरिचतु श्चाशत्तमोऽध्याय. १५४.॥

एकसौपचपनका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि सृञ्जियोंकी सेनामें उसनिर्भय बड़ेतेजस्वी असहनशील क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य के प्रवेश करनेपर तुम्हारी कैसी बुद्धिहुई १ फिर जब बड़े बुद्धिमान् द्रोणाचार्य्य जी शास्त्रको उल्लङ्घन करनेवाले मेरे पुत्र दुर्य्योधन को ऐसे कहकर सेनामें घुसे तब अर्ज्जुन ने कौन कर्म्म किया २ वीर जयद्रथ और भूरिश्रवाके मरनेपर जब बड़े तेजस्वी अजेय द्रोणाचार्य्यजी पांचालोंके सम्मुखगये ३ उस निर्भय शत्रुसंतापी द्रोणाचार्यके प्रवेशकरनेपर अर्जुन और दुर्य्योधनने समयके अनुसार किस २ कर्म्मको माना ४ उन ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ वरदाता बीर आचार्य्यके सम्मुख कौन २ गये पीछे कौन २ वीरगये ५ और आगे कौन वर्त्तमान हुये मैं द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे सब पाण्डवों को ऐसे पीड़ावान् मानताहूं ६ हे समर्थ जैसे कि शिशिर ऋतु में कम्पायमान और दुर्बल गौयें ७ उस बड़े धनुर्द्धर शत्रुविजयी पुरुषोत्तम द्रोणाचार्य्यने पांचालोंकी सेनामें पहुंचकर कैसे मृत्युको पाया ८ रात्रि के समय सब शूरबीरों के इकट्ठेहोने और महारथियों के भिड़ने और सेनाके छिन्नभिन्न होनेपर तुम लोगोंमें से कौन बुद्धिसे विचार करनेवाला हुआ ९ मेरे रथसवारों को युद्ध में मृतक युद्ध में प्रवृत्तचित्त पराजय बिरथ और मारेहुये कहतेहो १० तब पाण्डवों से छिन्नभिन्न होकर अचेत अथवा मोह में डूबे हुये उन शूरबीरोंका कौन विचारहुआ ११ यहां तुम पाण्डवोंको अत्यन्त प्रसन्न बुद्धिमान् और अभीष्टसिद्धीवाले कहतेहो और मेरे पुत्रोंको अप्रसन्न और नाशयुक्त वर्णन करतेहो १२ हे संजय तब वहां रात्रिके समय मुख न फेरनेवाले पाण्डवोंका प्रकाश कौरवों में कैसेहुआ १३ संजय बोले कि हे राजा तब अत्यन्त भयकारी रात्रिके युद्ध जारीहोनेपर सब पाण्डव लोग सोमकोंसमेत द्रोणाचार्य्य के सम्मुखगये १४ उसके पीछे द्रोणाचार्य्यने तीक्ष्ण चलनेवाले बाणोंसे केकयों समेत धृष्टद्युम्नके सब पुत्रोंको यमलोकमें भेजा १५ हे भरतबंशी धृतराष्ट्र जो महारथी उनके सम्मुख वर्त्तमानहुये उन सबको उन्होंने पितृलोक में भेजा १६ हे राजा तब प्रतापवान् शिवी अत्यन्त क्रोधसे उन वीरोंके मथनेवाले महारथी द्रोणाचार्य्यके सम्मुखगया १७ उस पांडवके महारथीको आताहुआ देखकर केवल लोहमयी दशवाणों से घायलकिया १८ शिवी ने तीक्ष्णधारवाले तीस बाणों से

उनको व्यथितकिया और मन्दमुसकान करतेहुयेने अपने भल्लसे उनके सारथी को गिराया १६ फिर द्रोणाचार्य्य ने भी उस महात्मा के सारथीसमेत घोड़ों को मारकर उसके शिरको देहसे जुदाकिया २० इसके पीछे दुर्य्योधनने शीघ्रही उन के दूसरे सारथी को आज्ञादी उस सारथीको लेकर वह द्रोणाचार्य्यजी फिर शत्रु ओंके सम्मुखगये २१ पूर्व्वसमय में अपने पिताके मारने से क्रोधयुक्त राजा क लिङ्गका पुत्र कलिङ्गदेशियों की सेनासे निकल युद्ध में भीमसेनके सम्मुखगया २२ उसने भीमसेन को पांचवाणों से पीड़ावान्करके फिर सातवाणों से पीड़ित किया विष्वक्सारथी को तीनबाणसे और ध्वजा को एकवाणसे खण्डित किया क्रोधयुक्त भीमसेनने रथके द्वारा रथके समीप जाकर उस क्रोधयुक्त कलिङ्गदेशि योंके शूरको मुष्टिकाओंसे घायलकिया २३।२४ युद्धभूमि में पराक्रमी भीमसेनकी मुष्टिकाओंसे घायल उसराजकुमारकी सब हड्डियां पृथक् २ होकर गिरपड़ीं २५ हे शत्रुसंतापी फिर कर्णके भाइयोंने उसको नहीं सहा और उन्होंने भीमसेनको विषधर सर्पके समान नाराचोंसे घायलकिया २६ इसके पीछे भीमसेन उस शत्रु के रथको छोड़कर ध्रुवरथके पासगया वहां जाकर बराबर बाण चलानेवाले ध्रुव को भी मुष्टिकाओंसे अच्छीरीतिसे मारा २७ पराक्रमी भीमसेनके हाथसे मारा हुआ वह ध्रुव पृथ्वीपर गिरपड़ा हे महाराज महाबली भीमसेन उसको मारकर २८ जयरातके रथको पाकर बारम्बार सिंहके समान गर्जा और गर्जतेहुयेमें बायेंहाथ से खैंच २९ कर्णके आगे वर्त्तमान होकर तमाचेसे नाशकिया फिर कर्णने सुन हरी शक्तिको भीमसेनके ऊपर छोड़ा ३० इसके पीछे अजेय पाण्डुनन्दन भीम सेनने उस शक्तिको पकड़लिया और उसीको युद्धभूमिमें कर्णके ऊपर छोड़ा ३१ शकुनी ने उस आतीहुई शक्तिको तैलपायनी नाम बाणसे काटा वह पराक्रमी युद्ध में इस बड़े कर्म्मको करके ३२ फिर शीघ्रही अपने रथपर सवारहोकर आप की सेनापर आटूटा हे राजा बड़े बाणोंकी वर्षासे ढकतेहुये आपके महारथी पुत्रों ने उस मारने के अभिलाषी कालके समान क्रोधयुक्त आतेहुये महाबाहु भीम सेन को रोका ३३ । ३४ उसके पीछे हँसते हुये भीमसेन ने युद्ध में बाणों से दुर्म्मदके सारथी और घोड़ोंको यमलोक में पहुंचाया ३५ तब दुर्म्मद दुष्कर्ण के रथपर सवार हुआ वह शत्रुसन्तापी एक रथपर सवार दोनों भाई ३६ युद्धके मु खपर भीमसेनके सम्मुख ऐसे दौड़े जैसे कि वरुण और मित्र देवता दैत्योंमेंश्रेष्ठ

तारक के सम्मुख दौड़े थे ३७ उसके पीछे दुर्म्मद और दुष्कर्णनाम आपके पुत्रों ने एक रथपर सवार होकर बाणों से भीमसेनको घायल किया ३८ शत्रुविजयी भीमसेन ने कर्ण अश्वत्थामा दुर्य्योधन कृपाचार्य्य सोमदत्त और बाह्लीक के देखते हुये ३६ वीरदुर्म्मद और दुष्कर्ण के उस रथको एक लात मारकर पृथ्वी पर गिरादिया ४० इसकेपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन आपके पराक्रमी और शूरवीर दुर्म्मद और दुष्कर्ण पुत्रों को मुष्टिका से घायल और मर्द्दन करके गर्ज्जा ४१ हे राजा उसके पीछे सेनाके हाहाकार करनेपर राजा लोग भीमसेनको देखकर बोले कि यह रुद्रजी भीमसेन के रूपसे धृतराष्ट्र के पुत्रों में लड़ते हैं४२ हे भरतवंशी सब राजा लोग ऐसा कहकर अचेत होकर सवारियोंको चलातेहुये भागे और दोभी साथ होकर नहीं दौड़े ४३ उसके पीछे सायङ्काल के समय सेनाके अत्यन्त उत्तम राजाओं से पूजित फूले कमल के समान नेत्र रखनेवाले महाबली भीमसेन ने राजा युधिष्ठिर को पूजा अर्थात् प्रशंसा करी ४४ उसके पीछे नकुल, सहदेव, द्रुपद, विराट, केकयदेशी राजकुमार और युधिष्ठिर ने भी बड़ी प्रसन्नता को पाया और उन सबने भीमसेन की ऐसी अत्यन्त प्रशंसाकरी जैसे कि अन्धकके मरनेपर देवताओं ने महादेवजी की करी थी ४५ उस समय वरुणके पुत्रोंके समान क्रोधयुक्त युद्धाभिलाषी आपके पुत्रों ने महात्मा गुरुजी के साथ होकर रथ पदाती और हाथियों के द्वारा भीमसेन को चारोंओर से घेर लिया ४६ इसके पीछे अन्धकाररूप बादलों से युक्त बड़ी भयकारी रात्रिमें महात्मा और उत्तम राजाओंका अपूर्व युद्ध भेड़िये काक और गृध्रोंका प्रसन्न करनेवाला भयकारी और भयानक रूपवाला हुआ ४७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिरात्रियुद्धेभीमपराक्रमेशतोपरिपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः १५५॥

एकसौछप्पनका अध्याय॥

संजय बोले कि सात्यकी के हाथ से उस पुत्रके मरनेपर जो कि मरनेके निमित्त आसनपर बैठा था अत्यन्त क्रोधयुक्त सोमदत्त ने सात्यकी से यह वचन कहा १ कि पूर्व्व समयमें महात्मा देवताओं से जो क्षत्रियधर्म्म देखागया है यादव उस धर्म्म को त्यागकर तुम चोरोंके धर्म्म में कैसे प्रीति करनेवाले हुये २ हे सात्यकी क्षत्रियधर्म्ममें प्रीति करनेवाला बुद्धिमान् मनुष्य युद्धमें मुख फेरनेवाले

दुःखी और शस्त्रोंके त्यागनेवाले वीरके ऊपर कैसे प्रहार करसक्ता है ३ हे यादव यादवों में निश्चय करके तुम और महाबाहु प्रद्युम्न दोही महारथी युद्ध में विख्यातहो ४ तुमने किस हेतुसे अर्जुनके बाणसे कटीहुई भुजावाले शरीर त्यागने के अर्थ बैठेहुये भूरिश्रवाके ऊपर उस प्रकारके निर्दय और पापकर्म्म को किया है ५ हे दुराचारी अब तूभी उस दुष्कर्मके फलको युद्धमें प्राप्तकर हे अज्ञानी अब मैं पराक्रम करके बाणों से तेरे शिरको काटूंगा ६ हे यादव मैं अपने दोनों पुत्र और शुभकर्मकी शपथ खाता हूं हे यादव कुलकलङ्की जो सूर्य्योदयके पूर्व्व विजयके अभ्यासी अर्जुनसे अरक्षित और वीरों से स्तुतिमान् मैं तुझको न मारूं तो घोर नरकमें पडूं ७।८ अत्यंत क्रोधयुक्त पराक्रमी सोमदत्तने इसप्रकार कहकर बड़े शब्दसे शङ्खको बजाकर सिंहनादको किया इसकेपीछे कमलपत्रके समान नेत्र सिंहकीसमान डाढ़ रखनेवाला कठिनतासे विजय होनेवाला अत्यन्त क्रोधयुक्त सात्यकी सोमदत्तसे बोला ६।१० हे कौरव तेरे साथ और दूसरोंके साथ मुझ युद्ध करनेवालेका कोई भय किसी दशामें भी मेरे हृदयमें वर्त्तमान नहीं है ११ हे कौरव जो तुम सब सेनासे रक्षित होकरभी मुझसे युद्धकरोगे तो भी तुमसे मुझको किसीप्रकारकी पीड़ानहीं है१२मैं युद्धसार बाक्योंसे और असत् लोगोंके सम्मतों से क्षत्रियधर्मवाला होकर तुझ से भयभीत होनेके योग्य नहीं हूं १३ हे राजा जो अब तू मुझसे लड़नेकी इच्छा करताहै तो तुम निर्दय होकर तीक्ष्णधार बाणोंसे प्रहारकरो मैं तुमपर प्रहार करताहूं १४ हे महाराज आपका पुत्र भूरिश्रवा मारा गया और भाईके दुःख से पीड़ित शल्यभी मारागया १५ और अब तुमको भी पुत्र बान्धवोंसमेत मारूंगा अब युद्धमें तुम उपाय करनेवाले होकर नियतहो तुम महारथी कौरवहो १६ जिस युधिष्ठिर में सदैव दान जितेन्द्रियपन शान्ती पवित्रता जीवमात्रसे शत्रुता न करना लज्जा धैर्य्य और क्षमा यह सब अविनाशी हैं १७ पूर्व्वसमय में तुम उस मृदंगकेतु युधिष्ठिरके तेजसे मारेगये अबभी तुम कर्ण और शकुनी समेत युद्ध में नाशको पाओगे १८ मैं श्रीकृष्णके चरण यज्ञ और वापीआदि बनानेके फलोंकी शपथखाताहूं जो क्रोधयुक्त कियाहुआ मैं तुझ पापीको पुत्र समेत नहीं मारूं १९ जो युद्धको त्यागकरके हटजायगा तो छूटेगा नहीं तो माराजायगा फिर क्रोधसे रक्तनेत्र दोनों पुरुषोत्तम परस्पर ऐसा कहकर शस्त्र चलानेको प्रवृत्तहुये उसके पीछे हजार रथ और दशहजार हाथियों समेत

२०। २१ दुर्य्योधनने चारों ओरसे सोमदत्त को मध्यवर्त्ती किया और आप का साला महाबाहु वज्रके समान दृढ़ शरीर युवा सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ अत्यन्त क्रोधयुक्त शकुनि जो कि इन्द्रके समान पुत्र पौत्र और भाइयोंसे संयुक्तथा२२।२३ और जिस बुद्धिमान् के घोड़ोंकी संख्या एकलाखसे ऊपर थी उसने भी बड़े धनुषधारी सोमदत्तको चारों ओरसे रक्षितकिया २४ पराक्रमियोंसे रक्षित सोमदत्त ने सात्यकी को बाणोंसे ढकदिया टेढ़पर्ववाले बाणोंसे ढकेहुये उस सात्यकी को देखकर २५ क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न बड़ी सेनाको लेकर सम्मुख आया बड़े कठिनबायु के वेगसे चलायमान समुद्रके जैसे शब्दहोतेहैं २६ उसी प्रकार प्रहार करनेवाली सेनाओं के परस्पर घातोंके शब्दहुये सोमदत्तने नवबाणोंसे सात्यकीको घायल किया २७ सात्यकीने भी उस कौरवोंमें श्रेष्ठ सोमदत्तको भी नवबाणोंसे व्यथित किया युद्धमें पराक्रमी दृढ़ धनुषधारीसे घायल २८ और अचेत सोमदत्त रथ के स्थिति स्थानको आश्रय लेकर अचेतहुआ सारथी उस महारथी वीर सोमदत्तको अचेत जानकर बड़ी शीघ्रतासे २९ युद्धसे दूरलेगया उसको अचेत और सात्यकी के बाणसे पीड़ावान् देखकर ३० द्रोणाचार्य्य यदुवीरके मारनेकी इच्छा से सम्मुखगये उस आतेहुयेको देखकर यादवों में श्रेष्ठ सात्यकीको चाहते और युधिष्ठिरको आगे करनेवाले वीरोंने उन महात्मा आचार्य्यजीको घेरलिया इस के पीछे द्रोणाचार्य्यका और पाण्डवोंका ऐसा युद्ध जारीहुआ ३१।३२ जैसे कि पूर्व्वसमय में तीनों लोकोंके विजयकी इच्छासे राजा बलिका युद्ध देवताओंके साथ हुआथा इसके पीछे बड़े तेजस्वी भरद्वाज द्रोणाचार्य्यने बाणोंके जालों से पाण्डवीय सेनाको ढकदिया और युधिष्ठिरको घायलकिया दशबाणोंसे सात्यकीको बीससे धृष्टद्युम्न को ३३।३४ नवबाणों से भीमसेन को पांचसे नकुलको आठसे सहदेवको सौबाणोंसे शिखण्डी को ३५ और पांच २ बाणोंसे द्रौपदी के पुत्रोंको ३६ तीन बाणसे युधामन्यु को छःबाणोंसे उत्तमौजस को और अन्य २ सेनाके लोगों को भी घायलकरके युधिष्ठिरके सम्मुखगये ३७ हे राजेन्द्र द्रोणाचार्य्यके हाथसे घायल वह पांडवी सेनाके लोग जिनके कि शब्द पीड़ासे युक्त थे भयभीत होकर दशों दिशाओं को भागे ३८ द्रोणाचार्य्यके हाथसे इधर उधर होनेवाली उस सेना को देखकर कुछ क्रोधयुक्त पाण्डव अर्ज्जुन गुरुके सम्मुख गया ३९ फिर द्रोणाचार्य्यजी युद्ध में सम्मुख दौड़नेवाले अर्जुनको देखकर नि-

यतहुये और फिर वह युधिष्ठिरकी सेनासी लौटी ४० इसके पीछे भरद्वाज द्रोणाचार्य्य का युद्ध पाण्डवों के साथ फिर हुआ हे राजा सब ओरसे आपके पुत्रों से रक्षित द्रोणाचार्य्यने ४१ पाण्डवीय सेनाको ऐसे भस्मकिया जैसे कि रुईके तोदे को अग्नि भस्म करदेता है हे राजा उस सूर्य्यके समान प्रकाश और प्रकाशित अग्निके समान तेजस्वी बाणरूप ज्वाला रखनेवाले सूर्य्यके समान तपानेवाले धनुप को मण्डलरूप करनेवाले ४२।४३ शत्रुओंके कठिन भस्म करनेवाले द्रोणाचार्य्यको देखकर सेनामें से किसीने नहीं रोका जो २ पुरुप द्रोणाचार्य्यके सम्मुख हुआ ४४ उस उसके शिरको काटकर द्रोणाचार्यके बाण पृथ्वीपर गये इस प्रकारसे महात्माके हाथसे घायल वह पाण्डवी सेना ४५ जो कि भयसे पूर्ण थी अर्जुनके देखतेही फिर लौटी हे भरतवंशी रात्रिमें द्रोणाचार्यके हाथसे इधर उधर होने और भागनेवाली सेना को देखकर ४६ अर्ज्जुन श्रीकृष्णजी से बोले कि द्रोणाचार्यके रथके पास चलिये उसके पीछे श्रीकृष्णजीने रजत दुग्ध गौ कुन्दके पुष्प और चन्द्रमाके समान प्रकाशित ४७ घोड़ों को द्रोणाचार्य्यजी के रथ की ओर चलायमान किया भीमसेन भी द्रोणाचार्यकी ओर जातेहुये उस अर्ज्जुन को देखकर ४८ अपने सारथी से बोले कि मुझको द्रोणाचार्य्यकी सेनामें लेचल उस विशोकने भी भीमसेनके वचन को सुनकर सत्यसङ्कल्प अर्ज्जुन की ओर पीछे से घोड़ों को चलाया हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ धृतराष्ट्र द्रोणाचार्य्यकी सेना की ओर जानेवाले सावधान दोनों भाइयों को देखकर ४९।५० पांचाल, संजय, मत्स्य, चन्देरी, कारुष्य, कौसिल और केकयदेशी महारथी भी उसके पीछे चले ५१ हे राजा इसके पीछे रोमहर्षण करनेवाला भयकारी युद्धजारी हुआ ५२ आपकी सेनाके दक्षिणीय भाग को अर्जुनने और उत्तरीय भाग को भीमसेनने रथके बड़े समूहोंसमेत घेरलिया ५३ हे राजा उन दोनों पुरुपोत्तम भीमसेन और अर्जुन को देखकर महाबली सात्यकी और धृष्टद्युम्न सम्मुखगये ५४ उस समय परस्पर प्रहार करनेवाले सेनाके समूहों के ऐसे शब्दहुये जैसे कि कठिन वायुसे चलायमान समुद्रों के शब्द होते हैं ५५ हे राजा भूरिश्रवा के मरने से क्रोधयुक्त मारने के लिये निश्चय करनेवाले अश्वत्थामा युद्ध में सात्यकी को देखकर सम्मुख दौड़े ५६ सात्यकीके रथपर आनेवाले उस अश्वत्थामा को देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त घटोत्कचने शत्रुको रोका ५७ कर्णनाम लोहेका बना बड़ेघोर रीछ

के चर्म्म से मढ़ेहुये छःसौ गज विस्तृत बड़े रथमें ५८ यन्त्र मन्त्र और कवच से अलंकृत बहुत बादलों के समूहोंके समान शब्दायमान हाथियों के तुल्य घोड़ों से युक्त जिनको न घोड़े कहसकें न हाथी ५९ कहसकें फैलेहुये पर और चरण बड़े नेत्र शब्द करनेवाले गृध्रराजके चिह्नवाली शोभायमान ध्वजासे युक्त जिसका दण्डा उठाहुआ था ६० लोहित और आर्द्रपताकावाला अतड़ियोंकी मालाओं से अलंकृत आठ चक्र रखनेवाले बहुत बड़े रथपर सवार होकर ६१ उस घोररूप राक्षसोंकी अक्षौहिणी सेनासे जो कि शूल मुद्गलधारी पहाड़ और वृक्षों को हाथोंमें लियेहुये थी आवृतहोकर सम्मुख आया ६२ बड़े धनुषको ऊंचा करने वाले उस राक्षसको देखकर राजालोग ऐसे पीड़ावान्हुये जैसे कि प्रलयके समय दण्डधारी कालको देखकर पीड़ित होतेहैं ६३ उसके पीछे उस पर्व्वतके शिखरके रूप भयानक भयकारी करालदाढ़ उग्रमुख शंखके समान कान बड़े नख रखने वाले ६४ उन्नतकेश भयानकनेत्र प्रकाशितमुख गंभीरउदर महावटके समान गलद्वार मुकुटसे गुप्तकेश ६५ सब जीवोंके डरानेवाले कालके समान खुला मुख तेजस्वी शत्रुको व्याकुल करनेवाले ६६ बड़े धनुषधारी राक्षसोंके इन्द्र आतेहुये उस घटोत्कचको देखकर आपके पुत्रकी सेनाके लोग भयसे पीड़ित ऐसे महाव्याकुलहुये ६७ जिसप्रकार वायुसे चंचलभँवर उत्तरंग गंगाजी होती हैं घटोत्कच के कियेहुये सिंहनादसे भयभीत ६८ हाथियों ने मूत्रको गिराया और मनुष्यभी अत्यन्त पीड़ावान्हुये इसके पीछे वहां चारों ओरसे पाषाणोंकी कठिनवर्षा हुई ६९ सायंकालके समय अधिक बलवान् होनेवाले राक्षसों के चलायेहुये लोहेके चक्र भुशुण्डी प्रास तोमर ७० शूल शक्ति और पट्टिशआदि शस्त्र बारम्बार अधिकतासे पृथ्वीपर गिरतेथे उसउग्र बड़े रौद्र युद्धको देखकर राजालोग ७१ आपके पुत्र और कर्णादिक शूरभी पीड़ावान्होकर दिशाओंको भागे वहांपर अस्त्रों के पराक्रममें प्रशंसनीय बड़े प्रतापी अकेले अश्वत्थामाही पीड़ावान् नहींहुये ७२ उन्होंनेही घटोत्कचकी उत्पन्नकीहुई मायाको नाशकिया फिर मायाके नाशहोने परउस क्रोधयुक्त घटोत्कचने ७३ घोरवाणोंको छोड़ा वहबाण अश्वत्थामाके शरीर में प्रवेशकरगये जैसे कि क्रोधसे मूर्च्छावान् सर्प तीव्रतासे बामीमें घुसजाते हैं उसी प्रकार वह बाण अश्वत्थामाजी को घायलकरके रुधिरसे लिप्त अंग ७४ सुनहरी पुंख तीक्ष्णधार शीघ्र चलनेवाले पृथ्वीमें समागये फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त हस्त-

लाघवी प्रतापवान् अश्वत्थामा ने अत्यन्त क्रोधयुक्त घटोत्कच को दशवाणों से छेदा ७५ अश्वत्थामाके हाथसे मर्मस्थलोंपर घायल कठिन पीड़ावान् घटोत्कचने लाख आरा रखनेवाले ७६ छुराओंसे युक्त बालार्कके समान प्रकाशित मणि वज्रसे शोभित चक्रको हाथमें लिया फिर उस भीमसेनके पुत्र घटोत्कचने मारने की इच्छासे अश्वत्थामापर फेंका ७७ फिर अश्वत्थामाने अपने बाणोंसे उसको काटा अश्वत्थामाके वाणों से टूटाहुआ वह चक्र बड़े वेगसे पृथ्वीपर जाकर ऐसे निष्फल गिरा जैसे कि अभागेका संकल्प निष्फल जाताहै ७८ इसके पीछे घटोत्कचने गिरायेहुये चक्रको देखकर शीघ्रही अश्वत्थामाको वाणों से ऐसे ढक दिया जैसे कि राहु सूर्य्यको ढकताहै ७९ घटोत्कचके पुत्र श्रीमान् भिन्नांजन समूहके समान अंजनपरवानामने आतेहुये अश्वत्थामाको ऐसे रोका जिसप्रकार गिरिराजने प्रभंजनको रोकाथा उस भीमसेनके पौत्र अंजनपरवाके बाणोंसे रुकाहुआ अश्वत्थामा ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि वादलकी धाराओंसे मेरु पर्व्वत शोभायमान होताहै ८०।८१ भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलतासे रहित रुद्र और विष्णु के समान पराक्रमी अश्वत्थामा ने एकवाणसे अंजनपरवा की ध्वजाको काटा ८२ दो वाणसे उसके सारथी को तीनवाणसे त्रिवीणक को एक वाणसे उसके धनुषको काटकर चारवाणों से चारों घोड़ोंको मारा ८३ उस रथसे विरथहुये के हाथसे उठायेहुये सुवर्ण विन्दुओंसे जटित खड्गको अत्यन्त तीक्ष्ण विशिख नाम वाणसे दोखंडकिया ८४ फिर हे राजा सुनहरी बाजूबन्द रखनेवाली गदा घटोत्कचके पुत्रने फेंकी वहभी अश्वत्थामाके वाणोंसे शीघ्रही गिरपड़ी ८५ उसके पीछे कालमेघके समान गर्जते उस अंजनपरवाने अन्तरिक्ष से उछलकर आकाशसे वृक्षोंकी वर्षाकरी ८६ इसके पीछे अश्वत्थामाने घटोत्कचके पुत्र मायाधारीको वाणोंसे आकाशमें ऐसे छेदा जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणोंसे वादल को छेदताहै ८७ तब वह आकाशसे उतरकर अपने स्वर्णमयी रथमें ऐसे नियत हुआ जैसे कि पृथ्वीपर वर्त्तमान बड़ा उग्र श्रीमान् अंजनका पर्व्वत होताहै ८८ फिर अश्वत्थामाने उस लोहेके कवच रखनेवाले अंजनपरवा नाम भीमसेनके पोतेको ऐसे मारा जैसे कि महेश्वरने अन्धकको माराथा ८९ इसके पीछे अश्वत्थामाके हाथसे मरेहुये अपने पुत्र अंजनपरवा को देखकर और अश्वत्थामाके पास आकर क्रोधसे कम्पित बाजूबन्द ९० भ्रान्तीसे रहित घटोत्कच उस उठीहुई

अग्निके समान पांडवीय सेनाके भस्म करनेवाले बीर अश्वत्थामासे बोला ९१ कि हे द्रोणके पुत्र खड़ाहो मेरे हाथसे जीवता नहीं जायगा अब तुझको ऐसे मारूंगा जैसेकि अग्निके पुत्र स्वामिकार्त्तिकजीने क्रौंच पर्व्वतको माराथा ९२ अश्वत्थामा बोले कि देवताके समान पराक्रमवाले पुत्र जावो दूसरोंके साथलड़ो हे हिडम्बाके पुत्र घटोत्कच पुत्रसे पिताको पीड़ा होना न्यायके अनुसार नहींहै ९३ निश्चयकरके मेरा क्रोध तुझपर नहींहै परन्तु यहबात है कि क्रोधयुक्त जीव अपनेको भी मारे ९४ संजय बोले कि यह बात सुनकर क्रोधसे रक्तनेत्र पुत्रके शोक से व्याकुल घटोत्कच अश्वत्थामासे बोला ९५ हे द्रोणाचार्य्यके पुत्र क्यामैं युद्धमें साधारण मनुष्यके समान भयानकहूं जो तुम मुझको बाणोंसे डरातेहो यह आपका बचन धन्यबादके योग्यहै ९६ निश्चयकरके कौरवों के बंशमें मैं भीमसेनसे उत्पन्नहुआ और युद्ध में मुख न फेरनेवाले पाण्डवका पुत्रहूं ९७ मैं राक्षसों का महाराजहूं बल पराक्रममें रावणके समानहूं हे द्रोणाचार्य्यके पुत्र खड़ाहो खड़ाहो मेरेहाथसे जीवता नहींजायगा ९८ अब मैं इसयुद्धभूमिमें तेरी युद्धकी इच्छाको नाशकरूंगा क्रोधसे रक्तनेत्र वह राक्षस यहकहकर ९९ क्रोधमें पूर्ण अश्वत्थामा के सम्मुख ऐसेगया जैसे गजराजके सम्मुख केशरी सिंहजाताहै घटोत्कच रथके अक्षकी समान बाणोंसे १०० रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यके पुत्रके ऊपर ऐसे बर्षा करनेलगा जैसे कि जलधाराओंसे बादल वर्षा करताहै अश्वत्थामाने उस बाणवृष्टिको मार्गमेंही नाशकरदिया १०१ उसके पीछे अंतरिक्षमें बाणोंका मानो द्वितीययुद्धहुआ तब अस्त्रोंके मर्द्दनसे उत्पन्न पतंगोंसे १०२ रात्रिकेसमय आकाश ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि पटबीजनोंसे आच्छादितहोकर शोभितहोताहै युद्धका अभिमान रखनेवाले अश्वत्थामासे दूर कीहुई उसमायाको देखकर १०३ अन्तर्द्धान होकर घटोत्कचने फिर मायाको उत्पन्नकिया वह राक्षस वृक्षोंसे पूर्ण शिखरोंसमेत बड़ा पर्व्वत बनगया १०४ वह पहाड़ शूल प्रास खड्ग और मूसलरूपी बड़े झिरनों का रखनेवाला था १०५ अश्वत्थामा उस अंजन पहाड़के समान पर्वत को देखकर गिरनेवाले अस्त्रोंके समूहों से पीड़ावान् नहींहुआ १०६ इसके पीछे हँसतेहुये अश्वत्थामाने वज्र अस्त्रको प्रकट किया उस अस्त्र से विदीर्ण वह गिरिराज शीघ्रही नाश होगया १०७ इसके पीछे उस राक्षसने युद्धमें आकाशके मध्यमें वज्र रखनेवाला नीला बादल होकर बड़े उग्ररूपसे शस्त्रों की

वर्षा से अश्वत्थामा को ढकदिया १०८ इसके अनन्तर अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ अश्वत्थामाजी ने वायु अस्त्र को चढ़ाकर उस उठेहुये नीले बादल को छिन्न भिन्न कर दिया १०९ उस द्विपादों में श्रेष्ठ अश्वत्थामाने बाणोंके समूहोंसे सब दिशाओंको ढककर एकलाख रथके सवारों को मारा ११० रथकी सवारी से आनेवाले बड़े धनुषधारी व्याकुलतारहित सिंह शार्दूलके समान मतवाले हाथी के समान पराक्रमी हाथीसवार रथसवार और भयानक १११।११२ मुख शिर और गला रखनेवाले पीछे चलनेवाले पुलस्त्यबंशी यातुधानबंशी तामसनामवाले इन्द्रकी समान पराक्रमी ११३ नानाप्रकारके शस्त्रधारी वीर नानाप्रकारके कवचों से अलंकृत बड़े पराक्रमी भयकारी शब्द और क्रोध से खुलेहुये नेत्र ११४ युद्धदुर्म्मद संग्राममें सम्मुख नियत अनेक राक्षसोंसेयुक्त घटोत्कचको देखने से आकुलचित्त अश्वत्थामाजी आपके पुत्रको देखकर यह बचन बोले ११५ कि हे दुर्योधन अब तुम ठहरो तुमको इन वीर भाई इन्द्रके समान पराक्रमी राजाओंसमेत भय से उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता न करनी चाहिये ११६ मैं तेरे शत्रुओं को मारूंगा तेरी पराजय नहीं है यह तुझसे मैं सत्य २ प्रतिज्ञा करताहूं तुम सेनाको विश्वास कराओ ११७ दुर्योधन बोले कि हे गौतमीनन्दन अश्वत्थामाजी मैं मानताहूं कि यह अपूर्व्व बात नहीं है जो यह आपका उदारचित्त और हमपर बड़ी प्रीति है ११८ संजय बोले कि अश्वत्थामासे ऐसा बचन कहकर दुर्योधन युद्धके शोभा देनेवाले एकहजार घोड़े और रथोंसे संयुक्त नियत होनेवाले शकुनीसे बोला ११९ कि हे शकुनी तुम साठ हजार रथियों समेत अर्जुनके सम्मुख जाओ कर्ण, वृषसेन, कृपाचार्य्य, नील १२० उत्तरीयराजा, कृतबर्मा, पुरोमित्र, सुतापन, दुश्शासन, निकुम्भ, पराक्रमी कुण्डभेदी १२१ पुरंजय, दृढ़रथ, पताकी, हेमकंपन, शल्य, अरुणी, इन्द्रसेन, संजय, विजय, जय १२२ कमलाक्ष, परक्राथी, जयवर्मा और सुदर्शन यह सब और छः अयुत सेनाके अधिपति तुम्हारेपीछे चलेंगे १२३ हे मामाजी तुम भीमसेन नकुल सहदेव और धर्मराज को ऐसे मारो जैसे कि देवताओंका इन्द्र असुरों को मारताहै मेरी आशा विजय होनेमें नियतहै १२४ हे मामाजी द्रोणाचार्यके बाणों से छिन्न भिन्न और अत्यन्त घायलहुये कुन्तीके पुत्रोंको ऐसे मारो जैसे कि अग्निके पुत्र स्वामिकार्त्तिकजीने असुरों को मारा था १२५ हे राजा आपके पुत्रके इस बचनको सुनकर शकुनी आपके पुत्रोंको प्रसन्न कर-

नेवाला पाण्डवों को भस्म करनेका अभिलाषी उसकी आज्ञा पातेही बड़ी शीघ्रतासे चला १२६ उसके पीछे रात्रिके समय युद्धभूमिमें अश्वत्थामा और राक्षस का ऐसा कठिन युद्ध जारी हुआ जैसे कि इन्द्र और प्रह्लादका युद्ध हुआथा १२७ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त घटोत्कच ने विष और अग्नि की सूरत दृढ़ दश बाणों से अश्वत्थामा को छातीपर घायल किया १२८ भीमसेनके पुत्रके हाथसे चलायमान उन बाणोंसे अत्यन्त घायल रथके मध्यमें वर्त्तमान अश्वत्थामाजी ऐसे कम्पायमानहुये जैसे कि वायु से वृक्ष कम्पायमान होते हैं १२९ फिर घटोत्कचने अंजुलिकनाम बाणसे अश्वत्थामाके हाथमें वर्त्तमान महाप्रकाशित धनुष को शीघ्र काटा १३० इसके पीछे अश्वत्थामाजी ने दूसरे बाणोंसमेत धनुष को लेकर तीक्ष्ण बाणोंकी ऐसी वर्षाकरी जैसे कि जलधाराओं को बादल वर्षाताहै १३१ हे भरतबंशी इसके पीछे अश्वत्थामाजीने सुनहरी पुंख शत्रुओंके मारनेवाले आकाशचारी बाणों को आकाशचारी घटोत्कचपर फेंका १३२ बड़े वक्षस्स्थलवाले राक्षसोंका वह समूह बाणोंसे पीड़ावान् होकर ऐसे शोभित हुआ जैसे कि सिंहसे व्याकुल मतवाले हाथियों का समूह होता है १३३ घोड़े हाथी और सारथियों के साथ रथियोंसमेत सब राक्षसों को छिन्न भिन्न करके ऐसे नाश करदिया जैसे कि प्रलयके समय भगवान् अग्नि सब जीवमात्रों को भस्म कर देते हैं १३४ हे राजा वह अश्वत्थामाजी बाणों से राक्षसों की अक्षौहिणी सेना को भस्म करते ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि स्वर्गमें त्रिपुर को भस्म करके महेश्वरजी शोभायमानहुयेथे १३५ जैसे कि प्रलयकालकी अग्नि जीवोंका नाश करके शोभित होतेहैं उसी प्रकार विजय करनेवालों में श्रेष्ठ अश्वत्थामा आप के शत्रुओं को भस्मकरके शोभितहुआ १३६ इसके पीछे क्रोधयुक्त घटोत्कचने भयकर्मी राक्षसोंके समूहोंको यह आज्ञाकरी कि अश्वत्थामाको मारो १३७ फिर वह राक्षस घटोत्कचकी आज्ञाको अंगीकारकरके बड़े सिंहनादसे पृथ्वी को शब्दायमान करते अश्वत्थामाके मारने को दौड़े जो कि स्वच्छदाढ़ बड़े मुखों से युक्त घोररूप महाभयानक विस्तृतमुख घोरजिह्वा क्रोध से अत्यन्त रक्तनेत्र इन नानाप्रकारके शस्त्रोंके धारण करनेवाले थे शक्ति शतघ्नी, परिघ, वज्र, शूल पट्टिश १३८।१३९।१४० खड्ग, गदा, मूसल, फरसे, प्रास, भिंडिपाल, दुधारा खड्ग तोमर, क्षणप, तेजकंपन १४१ स्थूल, भुशुंडी, अश्म, गदा, स्थूण जो कि कार्ष्ण्य

नाम लोहेकेथे और युद्ध में शत्रुओंके पराजय करनेवाले घोर मुद्गरों को १४२ अश्वत्थामाके मस्तकपर मारा और उन भयानक पराक्रमी क्रोधसे रक्तनेत्र राक्षसों ने हजारों शस्त्रों को फेंका १४३ इसके पीछे वह सब शूरवीर अश्वथामा के मस्तकपर पड़ी हुई उस वड़ीभारी शस्त्रों की वर्षाको देखकर पीड़ावान्हुये १४४ फिर पराक्रमी अश्वत्थामाने उस घोर और ऊंची शस्त्रोंकी वड़ी वर्षाको देखकर वज्रकी समान तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे नाशकिया १४५ इसके पीछे वड़े साहसी अश्वत्थामाजीने दिव्य अस्त्रसे अभिमन्त्रित सुनहरी पुंख दूसरे बाणोंसे शीघ्रही राक्षसोंको मारा १४६ बड़े बक्षस्स्थलवाले राक्षसों का वह समूह बाणों से पीड़ित होकर ऐसे शोभायमानहुआ जैसे सिंहोंसे भयभीत होनेवाला मतवाले हाथियों का समूह व्याकुल होताहै १४७ अश्वत्थामाके हाथसे घायल अत्यन्त क्रोधयुक्त वड़े पराक्रमी वह राक्षस अश्वत्थामा के मारने को दौड़े १४८ हे भरतवंशी वहां अश्वत्थामाने इस अपूर्व्व पराक्रमको दिखलाया जो कि सब जीवधारियोंमें अन्य पुरुषसे करना असंभवथा १४९ जो वड़े अस्त्रज्ञ अकेले अश्वत्थामाने राक्षसों के राजा घटोत्कचके देखतेहुये प्रकाशित बाणोंसे राक्षसी सेनाको एक क्षणमात्र में ही भस्म करदिया १५० वह अश्वत्थामा युद्ध में राक्षसों की सेनाको मारकर ऐसेशोभायमानहुये जैसे कि प्रलयकाल में सब जीवोंको मारकर संवर्त्तक नाम अग्नि शोभित होताहै १५१ हे भरतवंशी युद्धमें उन हजारों राजाओं और पाण्डवोंके मध्यमें राक्षसोंके राजा वीर घटोत्कचके सिवाय कोई वीर उस सर्पके समान बाणोंके चलानेवाले अश्वत्थामाजी के देखनेको भी समर्थ नहींहुये १५२ १५३ इसके अनन्तर वह क्रोधसे चलायमान नेत्र घटोत्कच दशनोंसे दशनच्छदोंको काटकर १५४ क्रोधयुक्त होकर अपने सारथीसे बोला कि मुझको अश्वत्थामा के पास लेचल यह कहकर वह शत्रुहन्ता अश्वत्थामाके साथ द्वैरथ युद्धको चाहताहुआ घोररूप प्रकाशित पताकावाले रथकी सवारीसे चला १५५ उस भयानक पराक्रम राक्षसने सिंहके समान बड़े शब्दको गर्जकर युद्धमें आठ घंटेरखने वाले वड़े घोर देवताओंके बनायेहुये वज्रको घुमाकर अश्वत्थामाके ऊपर फेंका अश्वत्थामा ने धनुष को रथपर रख रथसे उतरकर उस वज्रको पकड़लिया १५६ १५७ और उसको उसीके ऊपर छोड़ा वह रथसे उतरगया १५८ वह वड़ा प्रकाशित कठिन भयका उत्पन्न करनेवाला वज्र घोड़े सारथी और ध्वजासमेत रथको भस्म

कर पृथ्वीको चीरकर उसमें घुसगया १५९ सब जीवधारियों ने उस अश्वत्थामा के कर्म्म को देखकर उसकी स्तुतिकरी जो रथसे उतरकर शंकरजीके बनायेहुये घोर बज्रको पकड़ लिया १६० हे राजा इसके पीछे भीमसेन के पुत्र घटोत्कचने धृष्टद्युम्नके रथपर जाकर इन्द्रबज्र के समान बड़े घोर धनुष को लेकर तीक्ष्णधार वाले बाणोंको फिर अश्वत्थामाकी बड़ी छातीपर छोड़ा १६१ फिर ब्याकुलतासे रहित धृष्टद्युम्नने बिषैले सर्प्पके समान सुनहरी पुंखवाले बाणों को अश्वत्थामा की छातीपर छोड़ा १६२ इसके पीछे अश्वत्थामा ने हजारों नाराचों को छोड़ा और उन दोनों ने भी प्रज्वलित अग्नि के समान बाणों से उसके नाराचों को काटा १६३ हे भरतर्षभ उन दोनों पुरुषोत्तम और अश्वत्थामा का बड़ा कठिन युद्ध शूरबीरोंके आनन्दका उत्पन्न करनेवाला हुआ १६४ इसके पीछे भीमसेन हजार रथ तीनसौ हाथी और छःहजार घोड़ों समेत उसस्थानपर आये १६५ उस समय सुगम पराक्रमी धर्मात्मा अश्वत्थामाने भीमसेनके पुत्र राक्षससे और छोटे भाई समेत धृष्टद्युम्न से युद्धकिया १६६ वहां अश्वत्थामाने अपूर्व्व पराक्रमको दिखाया हेभरतबंशी जोकि सब जीवमात्रोंमें दूसरेके करनेके योग्य नहींथा १६७ भीमसेन घटोत्कच और धृष्टद्युम्नके देखते पलकमारनेमेंही तीक्ष्ण बाणोंसे राक्षसों की अक्षौहिणी सेनाको घोड़े रथ सारथी और हाथियोंसमेत मारडाला १६८ नकुल सहदेव युधिष्ठिर अर्जुन और श्रीकृष्णजीके देखतेहुये ऐसा कर्मकिया सीधे चलनेवाले नाराचोंसे अत्यन्त घायल १६९ हाथी शिखरधारी पर्व्वतों के समान गिर पड़े हाथियोंकी कटी हुई जहां तहां सूंड़ोंसे १७० आच्छादित होकर पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि चेष्टा करनेवाले सर्पोंसे शोभित होतीहै और सुनहरी दंडवाले गिरेहुये राजछत्रोंसे भी पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई १७१ जैसे कि प्रलयकालमें ग्रहोंसे युक्त उदयहुये चन्द्रमा और सूर्य्यवाला आकाश शोभित होताहै जिसमें बड़ी ध्वजा मेंढ़क और फैलीहुई भेरियां कछुये १७२ छत्ररूप हंसों की पंक्तियोंसे युक्त सुनहरी तोरणोंकी माला रखनेवाली जिनमें कंक और गृध्रही बड़े ग्राह और बहुत शस्त्ररूप झपनाम मछलियों से पूर्ण रथोंसे चूर्ण कियाहुआ बड़ारेतथा और पताका रूप सुन्दर वृक्ष और बाणरूप भयानक प्रकारके मत्स्य प्रास शक्ति दुधारे खड्ग रूप डिंडिभ नामके सर्पथे मज्जा मांसही बड़ी कीच और धड़रूपीनौका बालरूप शैवलथा भयभीतोंके मूर्च्छाकरनेवाले गजराज घोड़े और

शूरवीरों के मृतक शरीरों से उत्पन्न होनेवाली रुधिर समूहों से बड़ी घोर नदीको अश्वत्थामाजी ने जारीकिया १७३ । १७६ जोकि शूरवीरों के कथित शब्दों से शब्दायमान रुधिरकी तरंगों से लहलहाती पदातियों से महाघोर यमलोक का महासमुद्र था १७७ अश्वत्थामाने बाणोंसे राक्षसोंको मारकर घटोत्कचको पीड़ावान् किया फिर अत्यन्तक्रोधयुक्त महावली समर्थने भीमसेन और धृष्टद्युम्नसमेत १७८ पांडवोंको नाराचोंके समूहों से घायलकरके द्रुपदके पुत्र सुरथ नामकोमारा १७९ फिर युद्धमें द्रौपदीके पुत्र शत्रुंजय वलानीक जयानीक और जयासू नाम को मारा १८० अश्वत्थामाने राजा श्रुताह्वयको यमलोकमें पहुंचाया सुन्दरपुंख तीक्ष्ण धारवाले दूसरे तीनवाणोंसे हेममाली १८१ पृषध्र और चन्द्रसेनको मारा हेश्रेष्ठ उसने दशवाणोंसे कुंतिभोजके पुत्रोंको मारा १८२ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने उग्र सीधेचलनेवाले उत्तम यमदंडकेसमान घोर बाणको चढ़ाकर और शीघ्रही घटोत्कचको लक्ष्यबनाकर कानतक खैंचेहुये धनुपसे छोड़ा हेराजा वह सुन्दर पुंखवाला बड़ा बाण उसराक्षसके हृदयको छेदकर शीघ्रही पृथ्वी में घुसगया १८३ । १८४ हेराजेन्द्र महारथी धृष्टद्युम्नने उस घायल और गिरेहुये घटोत्कचको जानकर अश्वत्थामाके सम्मुखसे उत्तम रथको हटालिया १८५ इसके पीछे वह बीर अश्वत्थामा युधिष्ठिरकी उससेनाको जिसका स्वामी मुख फेरगया युद्धमें विजयकरके गर्जा जो कि सबजीवों के मध्यमें आपके पुत्रोंसे प्रशंसनीय था १८६ इसके पीछे सैकड़ों बाणोंसे टूटे और चूर्णहुये शरीर मृतक पड़ेहुये नाशवान् उन राक्षसों से पृथ्वी चारों ओर से अत्यन्त भयानक और दुर्गम्य होगई १८७ सिद्ध गन्धर्व,पिशाचोंके समूह,नाग,गरुड़,पितृ, पक्षी, राक्षसों के समूह,अप्सरा,देवता,और जीवधारियोंके समूहोंने उन अश्वत्थामाजीकी स्तुतिकरी१८८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः १५६ ॥

एकसौसत्तावनका अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि अश्वत्थामाके हाथसे मारेहुये द्रुपदके पुत्र कुंतिभोजके पुत्र और हजारों राक्षसोंको देखकर १ बड़े उपाय करनेवाले युधिष्ठिर भीमसेन धृष्टद्युम्न और सात्यकीने युद्धकेही निमित्त चित्त किया २ हे भरतवंशी फिर क्रोधयुक्त सोमदत्तने युद्ध में सात्यकी को देखकर बड़ी बाणों की वर्षासे ढकदिया ३

उसके पीछे बिजयाभिलाषी आपके पुत्रका और दूसरों का घोरयुद्ध महाकठिन और भयका बढ़ानेवाला हुआ ४ भीमसेनने उस सम्मुख आयेहुये सोमदत्त को देखकर सात्यकीके निमित्त सुनहरीपुङ्खवाले दश बाणोंसे उसको घायलकिया५ सोमदत्तनेभी उस बीरको सौ बाणोंसे घायलकिया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त सात्यकीने पुत्रादिकोंसे युक्त ६ नहुषके पुत्र ययातिके समान वृद्ध वृद्धों के गुणोंसे सम्पन्न सोमदत्तको बज्रकी समान गिरनेवाले तीक्ष्णधार दश बाणों से घायल किया ७ शक्तिसे उसको छेदकर फिर सात बाणों से घायल किया उसके पीछे सात्यकीके लिये भीमसेनने नवीन बनेहुये और दृढ़ ८ घोर परिघको सोमदत्त के मस्तकपर छोड़ा फिर क्रोधयुक्त सात्यकीनेभी युद्ध में अग्निके समान सुन्दर परवाले तीक्ष्णधार उत्तम बाण को सोमदत्त की छातीपर छोड़ा वह घोर परिघ और बाण एकसाथही उस बीरके ऊपर गिरे ९। १० फिर वह महारथी गिरपड़ा फिर पुत्रके अचेत होनेपर बाह्लीक ११ समयपर बर्षाकरनेवाले बादलके समान बाणोंकी बर्षाको करता उस सात्यकीके सम्मुखगया उसके पीछे युद्ध के मुखपर सात्यकीके निमित्त महात्मा बाह्लीकको अत्यन्त पीड़ा देतेहुये भीमसेनने नव बाणसे १२ घायलकिया फिर महाबाहु अत्यंतक्रोधयुक्त प्रातिपीयवंशी बाह्लीक ने शक्तिको भीमसेनकी छातीपर ऐसे मारा १३ जैसे कि इन्द्र बज्रको मारता है उसप्रकारसे घायलहुआ वह भीमसेन कम्पित होकर अचेत हुआ १४ फिर पराक्रमी ने सचेत होकर उसपर गदाको छोड़ा पाण्डवकी चलाई हुई उस गदा ने बाह्लीकके शिरको काटा १५ वह मृतकहोकर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बज्रसे घायलहोकर गिरिराज गिरताहै हे पुरुषोत्तम उस बीर बाह्लीकके मरने पर १६ श्रीरामचन्द्रजीके समान दश पुत्रोंने भीमसेनको पीड़ावान् किया उनके नाम नागदत्त, दृढ़रथ, बीरबाहु, अयोभुज १७ दृढ़, सुहस्त, बिरज, प्रमाथ, उग्रयायि, भीमसेन उनको देखकर क्रोधयुक्त हुआ और भार सहनेवाले बाणों को लिया १८ प्रत्येकको लक्ष्य बनाकर बाणोंसे आच्छादित किया वह दशों घायल और मृतक होकर रथोंसे ऐसे गिरपड़े १९ जैसे कि तीव्र वायु के वेगसे पर्वत के शिखरसे टूटेहुये वृक्ष गिरते हैं भीमसेनने दश नाराचोंसे आपके उन पुत्रों को मारकर २० कर्ण के प्यारे पुत्र वृषसेनको बाणोंसे ढकदिया उसके पीछे कर्ण के भाई प्रसिद्ध वृकरथ नामने नाराचोंसे भीमसेनको घायलकिया २१ वह पराक्रमी

उसकेभी सम्मुख गया हे भरतवंशी इसके पीछे बीर भीमसेन आपके शालों के सात रथियोंको २२ मारकर नाराचोंसे सुतचन्द्रको मारा सुतचन्द्र के मरने को न सहनेवाले २३ शकुनीके बीर भाई गवाक्ष शरभ और विसुनामोंने सम्मुखजाकर तीक्ष्णबाणोंसे भीमसेनको घायलकिया जैसे कि पर्वत वर्षाकी तीव्रतासे घायल होताहै उसीप्रकार नाराचोंसे घायल उस पराक्रमी भीमसेनने पांच बाणोंसे पांचों अतिरथियों को मारा २४। २५ उन मृतक हुये बीरों को देखकर श्रेष्ठ राजा भी कंपायमानहुआ उसके पीछे क्रोधयुक्त युधिष्ठिरने आपकी सेनाको मारा २६ हे निष्पाप धृतराष्ट्र युद्ध में क्रोधयुक्त युधिष्ठिरने द्रोणाचार्य्य और आपके पुत्रों के देखतेहुये अम्बष्ट, मालव, शूर, त्रिगर्त्त और सशिवीनों को भी मारकर यमपुरको भेजा २७ राजाने अभिषाह शूरसेन, वाह्लीक और बिशातकों को मारकर रुधिररूप कीचवाली पृथ्वीको किया २८ हे राजा युधिष्ठिरने बाणोंसे शूरबीर मालव और मद्रकोंके समूहोंके सिवाय अन्य २ शूरोंको भी यमलोकमें भेजा २९ मारो घेरो पकड़ो छेदो मारडालो यह कठिन शब्द युधिष्ठिरके रथके पासहुये ३० सेनाओंके भगानेवाले उस युधिष्ठिरको देखकर आपके पुत्रके कहनेसे द्रोणाचार्य्यने शायकोंसे युधिष्ठिरको ढकदिया ३१ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्यने वायु अस्त्रसे राजाको घायल किया उसने भी उस दिव्य अस्त्रको अपने अस्त्रसे दूरकिया ३२ उस अस्त्रके निष्फलहोनेपर पाण्डुनन्दनके मारनेको अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्यने युधिष्ठिरके ऊपर वारुण याम्य अग्नि और त्वाष्ट्र अस्त्रको चलाया ३३ निर्भयहुये धर्म्मपुत्रने द्रोणाचार्य्यके चलाये और चलेहुये उन अस्त्रों को अपने अस्त्रोंसे दूरकिया ३४ हे भरतबंशी फिर आपके पुत्रकी वृद्धिमें प्रवृत्त धर्म्मपुत्रके मारनेके इच्छावान् सत्यप्रतिज्ञा करनेकीइच्छासे द्रोणाचार्य्य ने ऐन्द्र और प्राजापत्य अस्त्रको प्रकटकिया ३५ कौरवोंके स्वामी हाथी और सिंहकेसमान चलनेवाले विशाल वक्षस्स्थल रक्त और दीर्घनेत्रवाले बड़े तेजस्वी युधिष्ठिर ने दूसरे महेन्द्र अस्त्रको जारीकिया उसने उनके अस्त्रको दूरकिया ३६ अस्त्रोंके निष्फल होनेपर युधिष्ठिरका मारना चाहनेवाले क्रोधसे पूर्ण द्रोणाचार्यने ब्रह्मअस्त्र को प्रकट किया ३७ हे राजा इसके पीछे घोर अन्धकारसे ढकजानेपर कुछ नहीं जानागया और सब जीवोंने बड़े भयकोपाया ३८ हे राजेन्द्र कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरने प्रकट होनेवाले ब्रह्मास्त्रको देखकर ब्रह्मास्त्रसेही उसअस्त्रकोभी रोकदिया ३९

उसके पीछे उन सेनाओंके स्वामियोंने उन बड़े धनुषधारी सब प्रकारके युद्धों में कुशल नरोत्तम युधिष्ठिर और द्रोणाचार्य्य की प्रशंसाकरी ४० हे भरतबंशी तब क्रोधसे रक्तनेत्र द्रोणाचार्य्य ने युधिष्ठिर को त्यागकरके वायव्य अस्त्रसे द्रुपदकी सेनाको छिन्नभिन्न किया ४१ द्रोणाचार्य्यके हाथसे घायल वह पांचाल महात्मा अर्जुन और भीमसेनके देखतेहुये भयभीत होकर भागे ४२ इसके पीछे अर्ज्जुन और भीमसेन दो बड़े रथसमूहों समेत सेनाको चारों ओरसे नियतकरके अकस्मात् लौटे ४३ अर्जुनने दाहिने पक्षको भीमसेनने उत्तरीय पक्षको रक्षितकिया और बाणोंके बड़े समूहोंसे भारद्वाजके ऊपर वर्षा करनेलगे ४४ हे महाराज बड़े तेजस्वी केकय, संजय, पांचाल और मत्स्यदेशी यादवों समेत पीछे चले ४५ तदनन्तर अर्जुनके हाथसे घायल वह भरतबंशियोंकी सेना लोग अन्धकार और निद्रासे फिर भी इधर उधरहुये ४६ हे राजेन्द्र तब द्रोणाचार्य्यसे और निज आपके पुत्रसे रोकेहुये वह शूरबीर रुकनेको समर्थ नहीं हुये ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिशतोपरिसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः १५७ ॥

एकसौअट्ठावनका अध्याय ॥

संजय बोले कि पाण्डवोंकी उस चढ़ाई करनेवाली बड़ी सेनाको देखकर उस को न सहनेके योग्य माननेवाले दुर्य्योधनने कर्णसे कहा १ हे मित्रोंके प्यारे मित्रोंका यह वह समय वर्त्तमानहुआहै कि तुम युद्ध में उन सब महारथी शूरबीरों की रक्षाकरो २ जो कि सब ओरसे क्रोधयुक्त सर्प्पके समान श्वास लेनेवाले पांचाल मत्स्य केकयदेशी और महारथी पाण्डवोंसे घिरेहुये हैं ३ विजयसे शोभायमान इन्द्र के समान वह पाण्डव और पांचालदेशियों के बहुतसे रथोंके समूह प्रसन्नचित्त होकर गर्ज्जरहे हैं ४ कर्ण बोले कि जो इन्द्रभी यहां अर्ज्जुनकी रक्षा करने को आवे तो प्रथम शीघ्रतासे उसको विजयकरके पीछेसे पाण्डवोंको मारूंगा ५ हे भरतवंशी मैं तुमसे सत्य सत्य प्रतिज्ञा करताहूं मेरा विश्वासकर सन्मुख आयेहुये पाण्डव और पांचालों का मैं नाश करनेवाला हूं ६ तुमको ऐसे विजयदूंगा जैसे कि स्वामिकार्तिकजीने इन्द्रको दीथी हे राजा तेरा अभीष्ट मुझ को करना अवश्य योग्यहै मैं केवल इसी निमित्त जीवताहूं ७ सब पाण्डवों में अर्ज्जुन अधिक पराक्रमी है उसपर इन्द्रकी बनाई हुई अमोघ शक्तिको छोड़ूंगा

हे वड़ाई देनेवाले उस धनुर्द्धारीके मरनेपर उसके सब भाई तेरे आज्ञाकारी होंगे अथवा फिर वनको जायँगे ८। ६ हे कौरव मेरे जीवते हुये कभी व्याकुलताको मतकरो युद्धमें सब पाण्डवोंको एकसाथही विजय करूंगा १० और सम्मुखआये हुये केकय पाञ्चाल और यादवों को भी बाणों के समूहोंसे खण्ड खण्ड करके पृथ्वी तुझको दूंगा ११ सञ्जय बोले कि फिर हँसतेहुये महाबाहु शारद्वत कृपाचार्य्यजी इसप्रकारसे कहनेवाले सूतके पुत्र कर्ण से यह वचन बोले १२ हे राधा के पुत्र धन्यहै धन्यहै तुझ नाथके होनेसे राजा दुर्योधन सनाथ है जो कि बातों हीसे सिद्ध होताहै हे कर्ण कौरवके सम्मुख ऐसी ऐसी बातें बहुधा कहाकरते हो परन्तु तेरा कोई बल पराक्रम देखने में नहीं आता १३। १४ तुमने बहुधा पांडवों के साथ सम्मुखता करी परन्तु हे सूतनन्दन तू सब स्थानों पर पाण्डवों से हारा है १५ हे कर्ण गन्धर्वोंके हाथसे दुर्योधन के पकड़ेजानेपर सेनाके लोगोंने युद्ध किया तूही अकेला सेनाके आगे से भागा १६ और हे कर्ण विराटनगरमें इकट्ठे सब कौरव और अपने छोटे भाई समेत तुमभी युद्ध में अर्ज्जुनसे पराजय किये गये १७ तुम युद्धभूमिमें अर्जुनके सम्मुख होनेको भी समर्थ नहींहो फिर श्रीकृष्णजीसमेत सब पाण्डवों के विजय करनेको कैसे उत्साह करतेहो १८ हे सूतके पुत्र कर्ण तुम बहुत कहतेहो बिना कहेहुये युद्धकर यही सत्पुरुषोंका व्रत है १६ हे सूतपुत्र तुम शरदऋतुके बादलके समान गर्जकर निष्फल और निरर्थक दिखाई पड़ते हो राजा तुम्हारी इसबातको नहीं जानताहै २० हे राधाके पुत्र तभी तक गर्जना करलो जबतक कि अर्जुनकारूप नहीं देखतेहो अर्जुनको समीपसे देखकरतेरा गर्जना कठिनहै २१ तुम अर्जुनके उनबाणोंको न पाकर अधिक गर्जतेहो अर्जुनके बाणोंसे घायलहोकर तुझ घायलका गर्जना बड़ा कठिनहै २२ क्षत्रिय भुजाओंसे शूरहैं ब्राह्मण बातोंमें गुरूहैं अर्ज्जुन धनुषसे शूरहै और कर्ण मनोरथोंसेही शूरहै २३ जिससे रुद्रजीभी प्रसन्नहुये उस अर्जुनको कौन मारसक्ता है तब २४ उन कृपाचार्य्यके वचनोंमें अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रहार करनेवालोंमें श्रेष्ठ कर्ण कृपाचार्य्यसे यह वचन बोला शूरवीर सदैव ऐसे गर्जते हैं जैसे कि वर्षाऋतु में बादल गर्जना करते हैं २५ और शीघ्रही फलको ऐसे देते हैं जैसे कि ऋतु में बोयाहुआ बीज फलको देताहै इस युद्धके मुखपर शूरोंके दोषों को नहीं देखता हूं २६ जो कि युद्ध में उस २ वचनके कहनेवाले और भारके उठानेवाले हैं पुरुष

चित्तसेही जिस भारके उठानेको निश्चय करताहै २७ उसमें सहायता करनेको दैव अवश्य उसके पास वर्त्तमान होताहै दृढ़ विचारकी सहायता रखनेवाला मैं मनसे भारको उठाताहूं २८ युद्धभूमिमें श्रीकृष्ण और यादवों समेत पाण्डवोंको मारकर जो गर्जताहूं हे ब्राह्मण उसमें तुम्हारी क्या हानि होती है २९ शूरवीर शरदऋतुके बादलोंके समान निरर्थक नहीं गर्जते हैं पंडित प्रथम अपनी सामर्थ्य को जानकर फिर गर्जते हैं ३० मैं अब युद्ध में साथ उपाय करनेवाले श्रीकृष्ण और अर्जुन के विजय करनेको चित्तसे उत्साह करताहूं हे गौतमजी मैं इसकारण से गर्जताहूं ३१ हे ब्राह्मण इस मेरे गर्जनेके फलको देखो कि युद्धभूमिमें श्रीकृष्णजी समेत पाण्डवोंको मारकर इस निष्कंट पृथ्वी को दुर्योधनके अर्थ दूंगा ३२ कृपाचार्य्यजी बोले कि हे सूतके पुत्र कर्ण यह मनोरथों की वार्त्ता मुझको अंगीकार नहीं है निश्चयकरके तुम सदैव श्रीकृष्ण अर्जुन और धर्म्मराज युधिष्ठिर की निन्दा करतेहो ३३ हे कर्ण निश्चयकरके वहीं विजयहै जहांपर युद्धमें कुशल कवचधारी शस्त्रधारी देवता गन्धर्व यक्ष मनुष्य उरग और राक्षसोंके समूहोंसे भी ३४ अजेयरूप श्रीकृष्ण और अर्जुनहैं धर्मपुत्र युधिष्ठिर वेद ब्राह्मणों का रक्षक सत्यवक्ता जितेन्द्रिय गुरू और देवताओंका पूजन करनेवाला ३५ सदैव धर्म्म में प्रीतिवान् अधिकतर शास्त्रोंका ज्ञाता धैर्य्ययुक्त उपकारका नहीं भूलनेवालाहै ३६ और उसके भाई बलवान् और अस्त्रोंमें परिश्रम करनेवाले गुरूमें भक्तिपूर्वक प्रीति रखनेवाले बुद्धिमान् सदैव धर्मपर चलनेवाले और यशस्वी हैं ३७ और उन के नातेदारभी इन्द्रके समान पराक्रमी बड़े प्रीतिवान् प्रहार करनेवाले धृष्टद्युम्न, शिखंडी, दुर्मुखी, जनमेजय, चन्द्रसेन, रुद्रसेन, कीर्त्ति, धर्मा, ध्रुव, धर, बसुचन्द्र, दामचन्द्र, सिंहचन्द्र, सुतेजन ३८।३९ और इसीप्रकार द्रुपदकेपुत्र महा अस्त्रज्ञ द्रुपद और जिन्होंके निमित्त छोटे भाइयों समेत राजा बिराट अच्छा उपाय करनेवालाहै ४० सतानीक, सूर्यदत्त, श्रुतानीक, श्रुतध्वज, बलानीक, जयानीक, जयाश्व, रथबाहन ४१ चन्द्रोदय, समर्थ यह सब बिराटके उत्तमभाई नकुल, सहदेव, द्रौपदीकेपुत्र और घटोत्कच राक्षस ४२ जिन्होंके अर्थ लड़ते हैं उन्होंकी पराजय नहीं होसक्ती पांडवों के यह सब और अन्य बहुतसे समूहहैं निश्चयकरके भीमसेन और अर्जुन देवता असुर मनुष्य यक्ष राक्षस भूत सर्प और हाथियोंसे समेत सब संसारको अस्त्रोंके बलसे निर्मूल करसक्ते हैं और युधिष्ठिर अपनी घोरदृष्टिसे

भी सब पृथ्वीको भस्म करसक्ता है ४३ । ४५ वह अत्यन्त पराक्रमी श्रीकृष्णर्जु
जिन्होंकेलिये कवच धारणकिये हैं हे कर्ण युद्धमें उनशत्रुओं के विजयकरनेके
तू किसप्रकार उत्साह करताहै ४६ हे सूतके पुत्र सदैव यह तेरा बड़ा अन्यायहै जो
युद्धमें श्रीकृष्ण और अर्जुनसे लड़नेको उत्साह करताहै ४७ संजयबोले हे भरत
बंशियों में श्रेष्ठ हँसते और इसप्रकार कहेहुये राधाके पुत्र कर्णने गुरू शारद्वत
कृपाचार्य्य से कहा ४८ कि हे ब्राह्मण जो तुमने पांडवों के विषयमें वचन कहा
सो सब सत्यहै निश्चयकरके पांडवोंमें यह सबगुण और इनके सिवाय औरभी
बहुतसे गुणहैं ४९ पांडव युद्धमें दैत्य यक्ष गन्धर्व पिशाच उरग राक्षस और इन्द्र
५० समेत सब देवताओंसे भी अजेय और अवध्य हैं तौभी इन्द्रहीकी दीहुई शक्ति
से पांडवोंको विजय करूंगा हे ब्राह्मण निश्चयकरके इन्द्रने यह अमोघ शक्ति
मुझकोदी है ५१ इसशक्तिसे युद्धमें अर्जुनको मारूंगा फिर पांडव अर्जुनके म-
रनेपर उसके सगेभाई ५२ अर्जुनसे रहित होकर किसी दशामें भी पृथ्वीके भो-
गनेको समर्थ नहींहोंगे हे गौतमजी उनसबके नाशहोनेपर यह ससागरा पृथ्वी
५३ विनाही परिश्रमके दुर्य्योधनके आधीन होगी इसलोकमें अच्छी नीतियोंसे
सब प्रयोजन सिद्धहोते हैं इसमें जरा भी सन्देह नहीं है ५४ हे गौतमजी मैं इस
ज्ञानको जानकर उस ज्ञानसे गर्जताहूं तुम वृद्ध ब्राह्मण और युद्धमें भी असम-
र्थ ५५ पांडवोंमें प्रीति करनेवाले होकर मोहसे मेरा अपमान करतेहो हे ब्राह्मण
जो तुम यहां इसरीतिसे फिर मेरे अप्रियको कहोगे ५६ तो हे दुर्बुद्धी खड्गसे तु-
म्हारी जिह्वाको काटूंगा हे दुर्बुद्धी विप्र जो तुम सब कौरवीय सेनाके मनुष्योंको
भयभीत करते युद्धमें पांडवोंकी प्रशंसा करना चाहतेहो हे ब्राह्मण इस स्थानपर
मेरे इस यथार्थ कहेहुये वचनकोसुनो ५७ दुर्य्योधन, द्रोण, शकुनि, दुर्मुख, जय
दुश्शासन,वृषसेन,शल्य और तुम ५८।५९ सोमदत्त,भूरिश्रवा,अश्वत्थामा, वि
विंशत यह सब युद्ध में कुशल और कवचधारी जिससेनामें नियतहोयँ ६० तब
इन्द्रकेसमान भी कौनसा शत्रु मनुष्य इनको विजय करसक्ताहै यह शूरवीर अ
स्त्रज्ञ स्वर्ग के अभिलाषी ६१ धर्मज्ञ युद्ध में सावधान लड़ाई में देवताओंको भी
मारसकेंगे पांडवों के मारने के अभिलाषी दुर्य्योधनकी विजय चाहनेवाले कव
चधारी यह लोग युद्धमें नियतहोयँ मैं बड़े पराक्रमी लोगोंकी भी विजयको दैव
के आधीन मानताहूं ६२ । ६३ जिस स्थानपर महाबाहु भीष्म सैकड़ों बाणों से

युक्तहोकर सोते हैं और विकर्ण, चित्रसेन, बाह्लीक, जयद्रथ ६४ भूरिश्रवा, जय जलसिन्धु, सुदक्षिण, रथियोंमें श्रेष्ठ शल्य, पराक्रमी भगदत्त ६५ यह और दूसरे राजा जो कि देवताओं से भी कठिनतासे विजय होनेवाले बड़े पराक्रमी शूरथे युद्धमें पांडवों के हाथसे मारेगये ६६ हे नीच पुरुष ब्राह्मण दैवसंयोगके विशेष दूसरी कौनबात मानतेहो जिससे कि दुर्य्योधनके शत्रुओंकी बारंबार प्रशंसाकरतेहो ६७ उन्होंके भी सैकड़ों और हजारों शूरमारेगये और पांडवोंसमेत कौरवों की सबसेना विनाश को पाती हैं ६८ यहांपर मैं किसी प्रकारसे भी पांडवों के प्रभावको नहीं देखताहूं हे नीच ब्राह्मण जो तुम सदैव उन्हींको वलवान् पराक्रमी मानतेहो ६९ मैं दुर्य्योधनके हितके निमित्त युद्धमें अपनी सामर्थ्य के अनुसार उनके साथ लड़नेको उपायकरूंगा विजय दैवके आधीनहै ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिअष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः १५८ ॥

एकसौउनसठका अध्याय ॥

संजयबोले कि अश्वत्थामा कर्णसे उसप्रकार कठोर वचन सुनेहुये मामाको देखकर शीघ्रही खड्गको उठाकर तीव्रतासे दौड़ा १ इसके पीछे अत्यन्त क्रोध युक्त अश्वत्थामा कौरवराज दुर्योधनके देखतेहुये कर्णके सम्मुख ऐसे आया जैसे कि सिंह मतवाले हाथीके सम्मुखजाय २ अश्वत्थामाबोले हे नरोंमें नीच अत्यन्त दुर्बुद्धीकर्ण जो तू अर्जुनके सत्य २ गुणोंके कहनेवाले शूरमामाजीको शत्रुतासे घुड़कताहै ३ अब शूरतासे अपनी प्रशंसा करनेवाला बड़े अहंकारमें फँसाहुआ तू सब लोकके धनुषधारीको युद्धमें कुछ न गिनता निन्दाको करताहै ४ तेरापराक्रमकहां और अस्त्र कहांरहे जिसतुझको गांडीव धनुषधारीने विजयकरके तेरे देखते हुये जयद्रथको मारा ५ जिसने पूर्व्वसमय के बीच साक्षात् महादेवजी से युद्धकिया हे सूतोंमें नीच निरर्थक मनोरथों से उस अर्जुनको विजय कियाचाहताहै ६ इन्द्रसमेत सुरासुरभी सब मिलकर जिस सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णकेसाथी लोकके एकवीर और अजेय अर्जुनको विजयकरनेको समर्थनहींहैं हे दुर्बुद्धीसूत फिर तुम युद्धमें इन सबराजाओं समेत क्या समर्थहोगे ७।८ हे नरों में नीच अत्यन्त दुर्बुद्धी कर्ण अब नियतहो मैं इसीसमय तेरे शिरको शरीर से जुदा करताहूं ९ संजयबोले कि बड़ेतेजस्वी आप राजादुर्योधन और द्विपादों में

श्रेष्ठ कृपाचार्य्यने उस युद्धकेलिये सन्नद्ध अश्वत्थामाको शीघ्रतासे रोका १० क
र्णबोला हे कौरवोंमें श्रेष्ठ दुर्योधन यह ब्राह्मणों में नीच दुर्बुद्धी शूर युद्धमें प्रशं
सनीय मेरे पराक्रमको पावो हे दुर्योधन तुम इसको छोड़दो ११ अश्वत्थामाबोले
कि हे दुर्बुद्धी कर्ण हमलोगों की ओरसे यह तेराअपराध क्षमाकियाजाताहै इस
तेरे बड़ेअहंकारको अर्जुन नाशकरेगा १२ दुर्योधनबोला हे बड़ाई देनेवाले अ
श्वत्थामाजी प्रसन्नहोकर क्षमाकरने के योग्य हो निश्चय करके आपको किसी
प्रकारसे कर्णके ऊपर क्रोध न करनाचाहिये १३ क्योंकि कर्ण, कृपाचार्य्य,द्रोणा
चार्य्य,शल्य,शकुनि और आप इन छओंकेऊपर बड़ाभार नियतहै हे ब्राह्मणोंमें
श्रेष्ठ प्रसन्न हूजिये १४ हे ब्रह्मन् यह सब पाण्डव कर्णके साथ सम्मुखहोकर युद्ध
करनेके अभिलाषी चारोंओरसे इसको बुलातेहुये आतेहैं १५ संजयबोले हे महा
राज इसके पीछे क्रोधकी तीव्रतासे युक्त बड़ेसाहसी राजासे प्रसन्न कियेहुये अश्व
त्थामाजी प्रसन्नहुये १६ हे राजेन्द्र फिर बड़ेसाहसी और शीघ्रही मृदुहोनेवाले कृपा
चार्य्यजी भी सौम्यभावसे यह वचन बोले १७ कि हे अत्यन्त दुर्बुद्धी कर्ण यह तेरा
क्रोध हमारीओरसे क्षमा कियाजाताहै अर्ज्जुनही तेरे बड़ेभारी अहंकारको नाश
करेगा १८ संजयबोले हे राजा इसके अनन्तर कर्णको चारोंओरसे घुड़कते वह
यशस्वी पांचाल और पांडव एकहीसाथ आपहुंचे १९ तब रथियों में श्रेष्ठ परा
क्रमी कर्णभी धनुषको उठाकर उत्तम कौरवों से ऐसा रक्षित हुआ जैसे कि देव
ताओंके समूहोंसे इन्द्र रक्षित होताहै २० अपने भुजबलमें आश्रित होकर कर्ण
नियतहुआ फिर कर्णका युद्ध पांडवोंके साथ जारीहुआ २१ हे राजा वह युद्ध
डरानेवाले सिंहनादसे शोभितथा तदनन्तर उन वीर पांडव और पांचालोंने २२
महाबाहु कर्णको देखकर उच्चस्वरसे शब्दकिया और बोले कि यह कर्ण है कर्ण
कहां है हे कर्ण इसबड़े युद्धमें नियतहो २३ हे पुरुषों में नीच दुर्बुद्धी हमारेसाथ
युद्धकर और कोई २ कर्णको देखकर क्रोधसे रक्तनेत्रकरके यह वचनबोले २४ यह
अहंकारी और निर्बुद्धी सूत का पुत्र सब उत्तम राजाओं की ओरसे मारने के
योग्यहै ऐसे मनुष्यके जीवने से हमारा कोई प्रयोजन नहीं है २५ यह दुर्य्योधन
के मत में नियत पापी पुरुष कर्ण सदैव से पाण्डवों का शत्रु होकर उपद्रवों का
मूल है २६ मारो २ यह वचन बोलते और बाणों की बड़ी वर्षासे ढकते महारथी
क्षत्रिय पाण्डव से आज्ञा दियेहुये कर्णके मारनेके निमित्त सम्मुख दौड़े कर्णने

उन उसप्रकार दौड़तेहुये महारथियोंको देखकर २७।२८ पीड़ा और भयको नहीं पाया उस प्रलयकालके समान उठेहुये सेनासागरको देखकर २९ आपके पुत्रों की प्रसन्नता चाहनेवाले युद्धों में अजेय पराक्रमी शीघ्रता करनेवाले महाबली कर्णने बाणों के समूहोंसे ३० उस सेना को सब ओरसे रोका हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ उसके पीछे पाण्डवों ने बाणों की वर्षाकरके उसको रोका ३१ वह हजारों बीर धनुषों को खैंचते कर्णसे ऐसे युद्ध करनेलगे जैसे कि दैत्योंके समूह इन्द्रसे लड़ते हैं ३२ हे प्रभु कर्णने राजाओं की बर्षाहुई बाणवृष्टिको अपने बाणों की बड़ी बर्षासे चारों ओरको हटाया ३३ युद्ध कर्म्म में उन युद्धाभिलाषियोंका युद्ध ऐसा हुआ जैसे कि देवासुरोंके युद्ध में इन्द्रका युद्ध दानवोंसे हुआथा ३४ वहां पर हमने कर्णकी अपूर्व्व तीव्रताको देखा जो युद्ध में कुशल पराक्रमी उन शत्रुओंने उसको आधीन नहीं किया ३५ महारथी कर्णने राजाओंके बाण समूहों को रोककर युग ईशा छत्र ध्वजा और घोड़ोंपर ३६ अपने नामसे चिह्नित बाणों को चलाया इसके पीछे कर्णके हाथसे पीड़ावान् व्याकुलरूप वह राजालोग ३७ जहां तहां ऐसे घूमे जैसे कि शरदीसे पीड़ावान् गौवें घूमती हैं उन मृतक घोड़े हाथी और रथोंके समूहोंको जो कि कर्णके हाथसे घायलथे जहां तहां देखा उस समय मुख न फेरनेवाले शूरोंके पड़ेहुये शिर भुजाओंसे ३८।३९ चारोंओरसे सब पृथ्वी आच्छादित होगई मरनेवाले और सब ओरसे शब्द करनेवाले बीरोंसे ४० युद्धभूमि यमराजकी पुरीके समान महारुद्ररूपहुई उसके पीछे राजा दुर्योधनने कर्णके पराक्रमको देखकर४१ और अश्वत्थामासे मिलकर यह बचन कहा कि कवचधारी कर्ण सब राजाओंके साथ युद्धभूमिमें लड़ताहै ४२ कर्णके बाणसे पीड़ित और भागीहुई इस सेनाको ऐसे देखो जैसे कि स्वामिकार्त्तिकके हाथसे मारीहुई आसुरी सेना होती है ४३ युद्धमें बुद्धिमान् कर्णके हाथसे मारीहुई उस सेनाको देखकर यह अर्ज्जुन कर्णके मारनेकी इच्छासे कर्णके सम्मुख आताहै सो जिस प्रकार अर्ज्जुन हमारे देखतेहुये युद्ध में महारथी कर्णको न मारसके उसी प्रकार की नीतिकीजिये ४४।४५ तब उसके पीछे महारथी अश्वत्थामा कृपाचार्य्य शल्य कृतबर्मा यह सब कर्णकी रक्षाके निमित्त अर्जुनके सम्मुखगये ४६ जैसे कि दैत्यों की सेना इन्द्र को देखती है उसी प्रकार आतेहुये अर्जुन को देखकर सम्मुख हुये हे राजेन्द्र पांचालोंसे रक्षित अर्ज्जुनभी कर्णके सम्मुख ऐसे गया जैसे वृत्रासुरके

सम्मुख इन्द्र जाताहै ४७ धृतराष्ट्र बोले हे सूत सूर्य्य के पुत्र कर्ण ने कालमृत्यु और यमराजके समान क्रोधयुक्त अर्जुनको देखकर किस उत्तररूप दशाको पाया ४८ वह महारथी सदैव अर्ज्जुनके साथ ईर्षा करता है और युद्धमें बड़े भयकारी कर्म्मवाले अर्ज्जुनके बिजय करनेकी अभिलाषा करता है ४९ हे सूत उस सूर्य्य पुत्र कर्णने उस सदैवके बड़े भारी शत्रुरूप अकस्मात् सम्मुख आयेहुये अर्ज्जुन को देखकर कौनसे प्रत्युत्तरको पाया ५० संजय बोले कि व्याकुलतासे रहित कर्ण उस सम्मुख आनेवाले पाण्डव अर्जुनको देखकर युद्धमें ऐसे सम्मुख हुआ जैसे कि हाथी हाथी के सम्मुख जाताहै ५१ अर्ज्जुनने उस वेगसे आतेहुये कर्ण को सीधे चलनेवाले बाणोंसे ढकदिया और कर्णने भी अर्जुनको बाणोंसे ढका ५२ फिर अर्ज्जुनने बाणजालों से कर्ण को ढकदिया इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्णने तीनबाणोंसे छेदा ५३ महाबली अर्ज्जुनने उसकी उस हस्तलाघवताको नहीं सहा फिर शत्रुके हटानेवाले अर्ज्जुनने शिलापर घिसेहुये सीधे चलनेवाले ५४ तीनसौ बाणोंको उस कर्णके निमित्त चलाया और फिर उसहँसतेहुये पराक्रमी बड़े बलीने एकबाणसे बायें हाथके पंजेको छेदा बाणसे घायल उस कर्ण के हाथसे धनुष गिरपड़ा ५५।५६ महाबली और हस्तलाघवी कर्ण ने आधेही निमिषमें उस धनुषको फिर लेकर बाणोंके समूहोंसे अर्ज्जुनको ढकदिया ५७ हे भरतवंशी कर्णके हाथसे उस छोड़ीहुई बाण बर्षाको मन्दमुसकान करते अर्जुनने बाणोंकी वर्षासे छिन्नभिन्न किया ५८ हे राजा युद्ध कर्मपर युद्ध कर्मकरनेके अभिलाषी उन दोनों बड़े धनुषधारियों में परस्पर सम्मुख होकर बाणों की वर्षा से ढकदिया ५९ यह युद्धभूमि में कर्ण और अर्ज्जुनका बहबड़ा अपूर्व्व युद्ध ऐसा हुआ जैसे कि हथिनी के ऊपर क्रोधयुक्त दो हाथियों का होताहै ६० इसके पीछे बड़े धनुपधारी शीघ्रतायुक्त अर्ज्जुन ने कर्णके पराक्रम को देखकर उसके धनुष को मुष्टिका के स्थानपर काटा ६१ फिर शत्रुओं के तपानेवाले ने चार भल्लोंसे उसके चारों घोड़ोंको भी यमलोकमें पहुंचाया और एक भल्लसे सारथीके शिर को उसके शरीर से जुदा किया ६२ इसके पीछे पाण्डुनन्दन अर्ज्जुन ने इस टूटे धनुप मरेघोड़े और नाशहुये सारथीवाले कर्णको चार शायकों से छेदा ६३ बाणोंसे पीड़ित नरोत्तम कर्ण मृतक घोड़ेवाले रथसे शीघ्र उतर कर कृपाचार्य्य के रथपर सवार हुआ ६४ अर्ज्जुन के बाणसमूहों से घायल शल्यक वृक्षके समान

चितेहुये जीवन की आशा करनेवाले कर्ण ने कृपाचार्य्य के रथपर सवारी करी ६५ हे भरतवंशी आपके शूरवीर लोग कर्णको पराजित देखकर अर्ज्जुनके बाणोंसे घायल होकर दशों दिशाओं को भागे ६६ हे राजा तब राजा दुर्य्योधनने उन भागेहुओंको देखकर फिर लौटाया और इस बचनको कहा ६७ हे शूरलोगो भागना बन्दकरो हे श्रेष्ठ क्षत्री लोगो ठहरो मैं आप युद्ध में अर्ज्जुन के मारने को जाताहूं ६८ मैं पाण्डव लोगोंको पाञ्चाल देशी और सोमकों समेत मारूंगा अब पाण्डव गाण्डीव धनुषधारी समेत मुझ युद्ध करनेवाले के ६९ पराक्रम को ऐसे देखेंगे जैसे कि प्रलयकालीन काल पुरुष के पराक्रम को देखते हैं अब शूरवीरलोग मेरे छोड़ेहुये हजारों बाणजालों को ७० युद्धमें ऐसे देखेंगे जैसे कि टीड़ियोंकी आधिक्यताको देखते हैं अब सेनाके लोग युद्धमें मुझ धनुषधारी के छोड़ेहुये बाणसमूहोंको ७१ युद्धमें ऐसे देखेंगे जैसे कि बर्षाऋतुके आदिमें बादल की वर्षाको देखते हैं अब मैं युद्धमें टेढ़े बरवाले शायकों से अर्ज्जुन को बिजय करूंगा ७२ हे शूरबीर लोगो युद्धमें नियत होकर अर्ज्जुन से भयको त्यागकरो अर्ज्जुन मेरे पराक्रम को पाकर ऐसे नहीं सहसकैगा जैसे कि मकरादिक जीवोंका आश्रयरूप समुद्र मर्य्यादा अथवा तटको पाकर नहीं सहसक्ता है अर्थात् उल्लङ्घन नहीं करसक्ता है यह कहकर बड़ी सेना से संयुक्त अजेय क्रोधसे रक्तनेत्र राजा दुर्य्योधन अर्ज्जुनके सम्मुख चला तब कृपाचार्य्यजी ने जातेहुये उस महाबाहु दुर्य्योधन को देखकर ७३ । ७५ और अश्वत्थामा से मिलकर इसबचन को कहा यह सहन न करनेवाला क्रोध से मूर्च्छावान् महाबाहु राजा दुर्य्योधन ७६ पतङ्ग के समान नियत होकर अर्ज्जुन से लड़ना चाहता है यह पुरुषोत्तम अर्ज्जुन के साथ युद्ध करते हमारे देखते ७७ जबतक प्राणोंको त्याग नहीं करे तबतक इस कौरव की रक्षा करो अब जबतक वीर राजा दुर्य्योधन अर्ज्जुन के बाणों के लक्ष्योंको नहीं पाता है ७८ तबतक युद्धमें रक्षाकरो जबतक काञ्चली से छुटे सर्प्प की समान घोर अर्ज्जुन के बाणोंसे ७९ राजा भस्म नहीं कियाजाताहै तबतक युद्धसे निषेध करो हे बड़ाई देनेवाले हमलोगों के विद्यमान होने पर इस बातको मैं अयोग्य जानताहूं ८० कि जो अकेलाही राजा आप अर्ज्जुन से लड़नेको उसके सम्मुख जाताहै मुकुटधारी अर्ज्जुनके साथ युद्ध करनेवाले दुर्य्योधन के जीवनको मैं कठिनता से प्राप्तहोना ऐसा मानताहूं ८१ जैसे कि शा-

दूलके साथ लड़नेवाले हाथीका जीवन कठिनता से होसक्ता है मामा से इस प्र-
कार आज्ञा कियाहुआ सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अश्वत्थामा ८२ शीघ्रतासे दु-
र्य्योधन से यह वचन बोला कि हे गान्धारी के पुत्र मेरे जीवते जी तुम युद्ध कर-
ने को योग्य नहीं हो ८३ हे अपने सदैव हित चाहनेवाले कौरव मुझको तिर-
स्कार करके अर्ज्जुनके विजयके लिये तुमको व्याकुलता न करना चाहिये ८४
मैं अर्ज्जुन को रोकूंगा हे दुर्य्योधन तुम ठहरो ८५ दुर्य्योधन बोला कि निश्चय
करके गुरुजी पाण्डवों को पुत्रों के समान रक्षा करते हैं हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ
तुमभी सदैव उन पाण्डवों में उदासीनता करतेहो ८६ अथवा मेरी अभाग्यता
से युद्ध में आपका पराक्रम थोड़ा है या धर्म्मराज और द्रौपदी के अर्थ थोड़ा है
उसको हम नहीं जानते ८७ मुझ लोभी को धिक्कारहै जिसके कारण सुख भोग-
ने के योग्य अजेय सब बान्धव लोग बड़े दुःखों को पाते हैं ८८ शस्त्रधारियों में
श्रेष्ठ युद्ध में महेश्वरजी के समान समर्थ गौतमी के पुत्रके सिवाय कौन शत्रु-
ओंको नाश करसक्ताहै ८९ हे अश्वत्थामाजी प्रसन्न होकर इन सावधान शत्रु-
ओंको नाशकरो आपके अस्त्रोंके लक्ष्यमें नियत होनेको देवता और असुरभी
समर्थ नहीं हैं ९० हे महात्माजी पांचाल और सोमकोंको उनके पीछे चलनेवालों
समेत मारो आपहीसे रक्षित होकर हमलोग शेष बचेहुये शत्रुओं को मारेंगे ९१
हे ब्रह्मन् यह यशवान् सोमक और पांचाल अत्यन्त क्रोधयुक्त मेरी सेनाओं में
दावानलनाम अग्निके समान विचरते हैं ९२ हे महाबाहु नरोत्तम उनको और
केकयों को रोको अर्ज्जुनसे रक्षितहोकर वह नाशको कररहे हैं ९३ हे शत्रुविजयी
श्रेष्ठ पुरुप अश्वत्थामाजी शीघ्रतायुक्त होकर तुम चलो प्रारंभ में अथवा अन्त
में यह आपका कर्म है ९४ हे महाबाहु तुम पांचालोंके मारने के निमित्त उत्पन्न
हुयेहो निश्चयकरके तुम सब जगत्को पांचालोंसे रहित करोगे ९५ इसके पीछे
वह यही सिद्ध वचन बोले कि ऐसाही होगा हे पुरुषोत्तम तुम इसकारणसे सब
पांचालोंको उनके पीछे चलनेवालों समेत मारो ९६ इन्द्र समेत सब देवताभी तेरे
अस्त्रोंके लक्ष्यपर नियत होनेको समर्थ नहीहैं फिर पांचालों समेत पाण्डवलोग
क्या पदार्थ हैं यह तुमसे मैं सत्य २ कहताहूं ९७ हे वीर युद्ध में सोमकों समेत
सब पाण्डव पराक्रमसे आपके साथ लड़नेको समर्थ नहीं हैं यह सत्य २ कहता
हूं ९८ हे महाराज चलो २ हमारा समय टल न जाय यह हमारी सेना पाण्डवों

के हाथसे पीड़ित होकर भागती है ९९ हे बड़ाई देनेवाले महाबाहु तुम अपने दिव्य तेजसे पाण्डव और पांचालोंके विजय करनेको समर्थहो १०० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकोनषाष्टितमोऽध्यायः १५९ ॥

एकसौसाठका अध्याय ॥

संजय बोले कि दुर्योधनके इसरीतिपर समझानेसे युद्धमें दुर्मद अश्वत्थामा ने शत्रुओंके मारने में ऐसा उपायकिया जैसे कि इन्द्रने दैत्योंके मारनेमें उपाय किया था उस महाबाहुने आपके पुत्रको यह उत्तर दिया १ कि हे महाबाहु कौरव जो तुम कहतेहो वह सब सत्यहै पाण्डव सदैव मेरे और मेरे पिताके प्यारेहैं २ उसीप्रकार हम दोनोंभी उनके प्यारे हैं परन्तु युद्धमें नहीं हे तात हम प्राणों को त्यागकर निर्भयके समान अपनी सामर्थ्यसे लड़ते हैं ३ हे राजाओंमें श्रेष्ठ मैं कर्ण शल्य कृपाचार्य्य और कृतबर्मा एक निमिषमेंही पाण्डवी सेनाका नाश करसक्ते हैं ४ और हे महाबाहु वह पाण्डव आधेही निमेषमें कौरवी सेनाको नाश करसक्ते हैं जब कि हमलोग युद्धमें न होयँ ५ जो सामर्थ्यसे पाण्डवोंसे युद्ध करनेवाले हम और हमसे युद्धाभिलाषी वह लोगभी युद्धमें न होयँ तो हे भरतबंशी तेज तेज से मिलकर नाशको पाताहै ६ पाण्डवों के जीवतेजी उनकी सेना शीघ्र विजय करनेके योग्य नहीं है यह मैं तुझसे सत्य कहताहूं ७ हे भरतबंशी अपने निमित्त युद्ध करनेवाले वह समर्थ पाण्डव आपकी सेनाको कैसे नहीं मारेंगे ८ हे राजा तुम बड़े लोभी और छलीहो हे कौरव तुम बातोंके अहंकारी होकर सन्देह करनेवालेहो इसहेतुसे तुम हमपर सन्देह करते हो ९ हे राजा मैं मानताहूं कि तुम नीच पापात्मा पापी पुरुषहो हे नीच तू पाप करनेवाला होकर हमारे मध्यमें दूसरोंपर भी सन्देह करताहै १० हे कौरवनन्दन तेरे निमित्त जीवनका त्यागनेवाला मैं उपाय में प्रवृत्तहोकर तेरेही कारण से युद्ध में जाताहूं ११ मैं शत्रुओं के साथ लड़ूंगा और उत्तम उत्तम शूरवीरों को मारूंगा पांचाल सोमक और केकयोंसे युद्ध करूंगा १२ हे शत्रुविजयी मैं तेरे निमित्त पाण्डवोंसे भी युद्धकरूंगा अब मेरे बाणों से टूटेहुये अंगवाले पाञ्चाल और सोमक १३ सब ओरसे ऐसे भागेंगे जैसे कि सिंहसे पीड़ित गौवें भागती हैं अब धर्म्मका पुत्र राजा युधिष्ठिर मेरे पराक्रमको देखकर १४ सोमकोंसमेत लोकको अश्वत्थामारूप मानेगा धर्म-

पुत्र युधिष्ठिर युद्धमें सोमकों समेत पांचालोंको मृतकहुआ देखकर वैराग्यको पावेगा युद्धमें जो मेरे सम्मुख होकर युद्धकरेंगे हे भरतवंशी मैं उनको मारूंगा १५।१६ वह बीर मेरीभुजाओं के मध्यमें वर्त्तमान होकर वचनहीं सके महाबाहु अश्वत्थामा आपके पुत्र दुर्योधनसे इसप्रकारके वचनकहकर १७ सब धनुषधारियोंको भयभीत करता और जीवधारियों में श्रेष्ठ आपके पुत्रोंके हितको करना चाहता युद्धके निमित्त सम्मुख वर्त्तमानहुआ १८ उसके पीछे वह गौतमीके पुत्र अश्वत्थामाजी पांचाल और केकयोंसे बोले कि हे महारथियो तुम सब इधरसे मेरेअंगोंपर प्रहारकरो १९ और अस्त्रोंकी तीव्रता दिखलाते नियतहोकर तुम युद्धकरो हे महाराज ऐसे वचनसुनकर उन सबने अश्वत्थामाके ऊपर शस्त्रोंकीवर्षा ऐसेकरी २० जैसे कि जलकी वृष्टिको बादल करते हैं अश्वत्थामाने उनबाणों को काटकर दशबीरोंको मारा २१ हे प्रभु वह दशों पांडवों समेत धृष्टद्युम्नके सम्मुख नाशहुये युद्धमें घायल वहपांचाल और सृञ्जय २२ युद्धमें अश्वत्थामाको त्यागकरके दशोंदिशाओं को भागे हे महाराज उन भागतेहुये सोमकों समेत शूर पांचालोंको देखकर २३ धृष्टद्युम्न युद्धमें अश्वत्थामाके सम्मुखगया उसके पीछे सुवर्णके सामानसे अलंकृत जलभरे बादलके समान गर्जनेवाले २४ मुख न फेरनेवाले सैकड़ों शूर रथियोंसे युक्त राजाद्रुपदका पुत्र महारथी धृष्टद्युम्न २५ गिरायेहुये शूरवीरोंको देखकर अश्वत्थामासे यह वचन बोला हे आचार्य्यके पुत्र दुर्बुद्धी इन शूरवीरोंके मारनेसे तुझको क्या लाभहै २६ जो तू युद्धमें बड़ाशूर है तो मेरेसाथ युद्धकर मैं तुझको अवश्य मारूंगा अब मेरेआगे नियतहो २७ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ इसके पीछे प्रतापवान् धृष्टद्युम्नने मर्मस्थलों के छेदनेवाले तीक्ष्ण बाणों से आचार्य्यके पुत्रको घायलकिया २८ फिर वह सुनहरी पुंख साफनोक सब शरीरके चीरनेवाले पंक्तीरूप बाण अश्वत्थामाके शरीरमें ऐसे प्रवेश करगये २९ जैसे कि स्वतन्त्र भ्रमर मधुके लोभी पुष्पित वृक्षपर वह अत्यन्त घायल चरणदबेहुये सर्पके समान अत्यन्त क्रोधयुक्त ३० भयसे उत्पन्नहोनेवाली व्याकुलता से रहित अहंकारी अश्वत्थामाजी हाथमें बाणको लेकर यह वचन बोले कि हे धृष्टद्युम्न तू नियतहोकर एकमुहूर्त्ततक ठहरजा ३१ फिर तुझको यमलोकमें भेजूंगा शत्रुओंके बीरोंके मारनेवाले अश्वत्थामाजी ने इस प्रकारसे कहकर ३२ हस्तलाघवता के समान बाणों के समूहों से धृष्टद्युम्नको चारोंओर से

ढकदिया संग्राम में अश्वत्थामा से पीड़ित युद्धमें दुर्मद ३३ उस द्रुपदके पुत्रने वचनोंही से अश्वत्थामाको घुड़का कि हे ब्राह्मण तुम मेरीप्रतिज्ञा और उत्पत्ति को नहीं जानतेहो ३४ हे अत्यन्त दुर्बुद्धी मैं निश्चयकरके द्रोणाचार्य्यको मारकर तुझको मारूंगा इसीसे तू मुझसे अबध्यहै और द्रोणाचार्य्यके जीवतेहुये अभी तुझको नहीं मारताहूं ३५ हे दुर्बुद्धी अब इसीरात्रिमें सूर्य्योदयसे पूर्व्वही तेरेपिताको मारकर फिर युद्धमें तुझको भी प्रेतलोक में पहुंचाऊंगा ३६ यह मेरे चित्तमें नियतहै इसहेतुसे कि जो तेरी शत्रुता पांडवों में और भक्ति कौरवोंमें है ३७ तो नियतहोकर उनको दिखलावो वह मुझसे जीवते नहीं बचसक्के जो ब्राह्मण अपने धर्मको त्यागकर क्षत्रिय धर्ममें प्रीतिरखनेवालाहै ३८ वह सबलोकों से ऐसे मारने के योग्यहै जैसे कि पुरुषोंमें नीच तुम धृष्टद्युम्नसे ऐसे कठोर बचनोंको सुनकर ब्राह्मणों में श्रेष्ठ अश्वत्थामाने ३९ कठिन क्रोधकिया और तिष्ठ तिष्ठ यह बचनभी कहा और दोनों नेत्रों से भस्म करतेहुये उसने धृष्टद्युम्नको देखा ४० सर्पकी समान श्वासलेते अश्वत्थामाने बाणों से ढकदिया हे राजाओं में श्रेष्ठ युद्धमें अश्वत्थामा के बाणों से ढका ४१ और पांचालदेशी सब सेना से संयुक्त रथियों में श्रेष्ठ अपने पराक्रममें आश्रित महाबाहु धृष्टद्युम्न कम्पायमान नहीं हुआ ४२ और नानाप्रकार के शायकों को अश्वत्थामा पर छोड़ा प्राणों का द्यूत और दांव रखनेवाले युद्ध में परस्पर बाणों के समूहों से पीड़ा देने वाले क्रोधयुक्त चारोंओर से बाणों की वर्षा करनेवाले बड़े धनुषधारी वह दोनों फिर सम्मुख वर्त्तमानहुये ४३। ४४ सिद्ध चारण और वार्त्तिकों ने अश्वत्थामा और धृष्टद्युम्न के उस घोररूप भयानक युद्ध को देखकर बड़ी प्रशंसाकी ४५ बाणों के समूहों से आकाश और दिशाओं को पूर्ण करतेहुये वह दोनों बाणों से बड़े अन्धकार को उत्पन्न करके दृष्टि से गुप्त होकर युद्ध करने लगे ४६ युद्धमें नाचते और धनुषको मण्डलरूप करने और एक दूसरे के मारनेमें उपाय करनेवाले परस्पर मारने के अभिलाषी ४७ युद्धमें हजारों उत्तम शूरवीरों से स्तुतिमान दोनों महाबाहु अपूर्व्व मनोहर और श्रेष्ठ युद्धके करनेवाले हुये ४८ जैसे कि वनमें दो जंगली हाथी होते हैं उसी प्रकार युद्धमें कुशल उन दोनोंको देखकर दोनों सेनावालों को अत्यन्त आनन्द हुआ ४९ सिंहनादोंके शब्द हुये शङ्खों को बजाया और हजारों बाजेभी बजे ५० भयभीतों के भयके

वढ़ानेवाले उस कठिन युद्ध में वह युद्ध एक मुहूर्त्त तक एकहीसा हुआ ५१ हे महाराज इसके पीछे अश्वत्थामाजी महात्मा धृष्टद्युम्नके भुजा धनुष और छत्र को घायलकरके यक्षके रक्षकसमेत ५२ चारोंघोड़े और सारथीको मारकर युद्धमें सम्मुखदौड़े बड़े साहसीने झुके पर्व्ववाले वाणोंसे उन सवपांचालोंको ५३ जो कि सैकड़ों और हजारोंथे भगादिया हे भरतर्षभ इसकेपीछे पांडवी सेना पीड़ावान् हुई ५४ युद्धमें अश्वत्थामाके इन्द्रके समान वड़े कर्मको देखकर सेनाने वड़ीपीड़ाको पाया महारथी अश्वत्थामाने सौवाणों से पांचालों के सौही मनुष्यों को मारकर ५५ और तीक्ष्णधार तीन वाणोंसे तीन महारथियों को मार धृष्टद्युम्न और अर्जुनके देखते ५६ उन वहुतसे पांचालोंका विनाशकिया जो कि सम्मुख वर्त्तमानथे युद्धमें सृञ्जियों समेत घायलहुये पांचाल ५७ जिनके रथ और ध्वजा गिरपड़े थे वह अश्वत्थामाको छोड़कर चलेगये वह अश्वत्थामा युद्धमें शत्रुओंको विजय करके ५८ वहुतवड़े शब्दसे ऐसे गर्जा जैसे कि वर्षाके प्रारम्भमें वादल गर्जताहै वह अश्वत्थामाजी वहुतसे शूरोंको मारकर ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि प्रलयकालकी अग्नि सबजीवों को भस्म करके शोभित होती है युद्धमें प्रशंसनीय प्रतापी अश्वत्थामा लड़ाईमें हजारों शत्रुओंको विजयकरके ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि शत्रुओं के समूहों को मारकर देवराज इन्द्र शोभित होताहै ५९ । ६० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषष्टितमोऽध्यायः १६० ॥

एकसौइकसठका अध्याय ॥

संजयवोले कि हे महाराज पांडव युधिष्ठिर भीमसेनने चारोंओरसे अश्वत्थामाको घेरलिया १ उसके पीछे द्रोणाचार्य्यको साथलेकर राजादुर्योधन युद्धमें पांडवोंके सम्मुखगया फिर वह युद्ध जारीहुआ २ हे महाराज जो कि घोररूप और भयभीतों के भयका वढ़ानेवाला था क्रोधयुक्त भीमसेनने अम्बष्ट, मालव, वंग, शिवी और त्रिगर्त्तदेशियोंके ३ समूहोंको भी यमपुरको भेजा इसके विशेष भीमसेनने अभिषाह और शूरसेन नामक्षत्रिय जो कि युद्धमें दुर्मदथे ४ उनको मारकर पृथ्वीको रुधिररूपी कीचसे पूर्णकिया हे राजा अर्जुनने पहाड़ी मालव और मद्रिक शूरवीरोंको भी ५ तीक्ष्ण धारवाले वाणोंसे मृत्युलोक में पहुंचाया

सीधे चलनेवाले नाराचोंसे अत्यन्त कठिन घायल ६ हाथी दो शिखर रखनेवाले पर्व्वतोंके समान पृथ्वीपर गिरपड़े हाथियोंकी कटीहुई और इधर उधर चेष्टाकरने वाली सूंड़ोंसे ७ आच्छादित पृथ्वी ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि चलायमान सर्पोंसे शोभित होती है ८ पड़ेहुये राजछत्रों से पृथ्वी ऐसी शोभितहुई जैसे कि प्रलयकालमें सूर्य चन्द्रमा आदिक ग्रहोंसे संयुक्त आकाशहोता है द्रोणाचार्य्यके रथके पास ऐसाकठोर शब्दहुआ कि हे बीर लोगो तुम निर्भयहोकर मारो प्रहार करो भेदो काटडालो ९ फिर बड़े क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्यने युद्धमें बायुअस्त्रसे ऐसे उनको छिन्न भिन्न किया जैसे कि दुःखसे उल्लंघनके योग्य बड़ाबायु बादलोंको तिर्रिबिर्र कर देताहै १० द्रोणाचार्य्य के हाथसे घायल वह पांचाल महात्मा अर्जुन और भीमसेनके देखतेहुये भयभीतहोकर भागे ११ उसके पीछे अर्जुन और भीमसेन बड़ेरथोंके समूहोंसमेत भारीसेनाको रोककर अकस्मात् लौटे १२ अर्जुनने दक्षिणीय पक्षको और भीमसेनने उत्तरीय पक्षको रक्षितकिया और बड़ी बाणोंकी बर्षा द्रोणाचार्यपर करी १३ उसीप्रकार बड़े तेजस्वी सृञ्जय पांचाल मत्स्य और सोमकलोग उन दोनोंके पीछेचले १४ हे राजा उसीप्रकार आपके पुत्रके बड़े रथी जो कि प्रहारोंके करनेवालेथे बड़ी सेनाओं समेत द्रोणाचार्य्यके रथके समीपगये १५ उसके पीछे अर्ज्जुनके हाथसे घायल वह भरतबंशियों की सेना अंधेरे और निद्रासे फिर इधर उधरको हुये १६ हे महाराज तब आप द्रोणाचार्य्य और आपके पुत्रसे रोकेहुये वह शूरवीर न रुकसके १७ अन्धकारसे युक्त संसारके होनेपर पाण्डव अर्ज्जुनके बाणोंसे इधर उधर होजानेवाली वह बड़ी सेना सब ओरको मुख फेर करके भागी १८ वहां कितनेही राजा तो अपनी सैकड़ों सवारियों को भी छोड़कर भयभीत होकर चारोंओरसे भागे १९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसंकुलयुद्धेशतोपरिएकषष्टितमोऽध्याय. १६१ ॥

एकसौबासठका अध्याय॥

संजय बोले कि फिर सात्यकी बड़े धनुष के चलायमान करनेवाले सोमदत्त को देखकर सारथी से बोला कि मुझको सोमदत्त के सम्मुख लेचल १ हे सूत मैं कौरवों में नीच अपने शत्रु बाह्लीक को बिना मारेहुये युद्धभूमिसे नहीं लौटूंगा यह मेरा सत्य २ कथनहै २ उसके पीछे सारथीने मनके समान शीघ्रगामी और

युद्ध में सब शस्त्रों को उल्लंघनकरके चलनेवाले शंखवर्ण सिन्धुदेशी घोड़ों को युद्धभूमि में पहुंचाया ३ हे राजा मन और बायुके समान शीघ्रगामी वह घोड़े सात्यकीको ऐसे लेचले जैसे कि पूर्व्वसमयमें हरीजातिके घोड़े दैत्योंके मारने में सन्नद्ध इन्द्रको लेचले थे ४ युद्धमें आतेहुये उस वेगवान् यादवको देखकर महाबाहु सोमदत्तजी बिना ब्याकुलताके लौटे ५ बादलके समान बाणोंकी बर्षाको करते सोमदत्तने सात्यकीको ऐसे ढकदिया जैसे कि बादल सूर्य्यको ढक देते हैं हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ फिर व्याकुलतासे रहित सात्यकी ने भी कौरवों में श्रेष्ठ सोमदत्त को बाणोंके समूहोंसे युद्धमें चारोंओरसे ढकदिया ६।७ फिर सोमदत्तने उस माधव सात्यकीको साठबाणोंसे छातीपर घायलकिया हे राजा फिर सात्यकी ने भी तीक्ष्ण बाणोंसे उसको छेदा वह दोनों परस्पर बाणोंसे घायल ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि फूलोंकी ऋतुमें सुन्दर फूल रखनेवाले फूलेहुये किंशुकके बृक्षहोते हैं ८।९ रुधिरसे लिप्त सब देह और कौरव वा वृष्णियोंका यश उत्पन्नकरनेवाले नेत्रों से भस्म करनेवाले उन दोनोंने परस्पर देखा १० रथमण्डल मार्गों में घूमनेवाले वह दोनों शत्रुओं के मर्द्दन करनेवाले ऐसे घोररूपहुये जैसे कि बर्षा करनेवाले दो बादल होते हैं ११ हे राजेन्द्र बाणोंसे टूटे अंग और सब ओर से कटेहुये बाणों से घायल वह दोनों चमत्कारी अचंभेके समान बिदितहुये १२ अर्थात् वह दोनों सुनहरी पुंखवाले बाणोंसे छिदेहुये ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि वर्षाऋतुमें पटबीजनों से युक्त वनस्पति शोभित होती है शायकों से ज्वलित रूप सर्वाङ्ग और युद्धमें क्रोधयुक्त वह दोनों महारथी ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि उल्काओंसे ज्वलितरूप दो हाथी होते हैं १३।१४ हे महाराज इसके पीछे महारथी सोमदत्तने युद्ध में अर्द्धचन्द्रनाम बाणसे माधवके बड़े धनुषको काटा १५ और उसको भी बीस शायकों से घायल किया और शीघ्रता के समय तीव्रता करनेवाले ने फिर दशबाणों से छेदा १६ इसके पीछे सात्यकी ने दूसरे वेगवान् धनुष को लेकर पांचशायकोंसे सोमदत्तको छेदा १७ तदनन्तर हँसतेहुये सात्यकीने युद्धमें दूसरे भल्लसे बाह्लीककी सुनहरी ध्वजाको काटा १८ फिर व्याकुलतासे रहित सोमदत्तने गिराई हुई ध्वजाको देखकर पचीस शायकों से सात्यकी को घायल किया १९ युद्धमें क्रोधयुक्त यादव सात्यकीने भी धनुषधारी सोमदत्त की ध्वजा को क्षुरप्रनाम तीक्ष्ण भल्लसे काटा २० हे राजा इसके पीछे टेढ़े पर्व्व

और सुनहरी पुंखवाले बाणों के एक सैकड़ेसे उसको अनेकप्रकारसे ऐसे घायल किया जैसे कि टूटी डाढ़वाले हाथी को घायल करते हैं २१ इसके पीछे महाबली महारथी सोमदत्तने दूसरे धनुषको लेकर बाणोंकी वर्षासे सात्यकीको ढकदिया २२ फिर क्रोधयुक्त सात्यकी ने युद्धमें उस सोमदत्त को घायल किया और सोमदत्त नेभी सात्यकी को बाणोंके जालोंसे पीड़ित किया २३ भीमसेनने यादव सात्यकी के निमित्त दश बाणोंसे बाह्लीकके पुत्रको घायल किया और व्याकुलता से रहित सोमदत्त नेभी सौ बाणों से भीमसेन को घायल किया २४ फिर उसके पीछे भीमसेन ने यादवके निमित्त नवीन और दृढ़ घोर परिघ को सोमदत्त की छातीपर छोड़ा २५ हँसतेहुये कौरवने युद्धमें उसवेगसे आतीहुई घोर दर्शनवाली परिघको दोटुकड़े करदिया २६ वह बड़ी परिघ लोहेकी दोखण्ड होकर ऐसे गिरपड़ी जैसे कि वज्रसे टूटा पर्व्वत का बड़ा शिखर होता है २७ हे राजा उसके पीछे सात्यकी ने युद्धमें सोमदत्त के धनुषको भल्लसे और हस्तत्राण को पांच बाणोंसे काटा २८ हे भरतवंशी उसके पीछे चार बाणोंसे उन उत्तम घोड़ोंको यमराजके पास पहुंचाया २९ हे नरोत्तम फिर हँसतेहुये सात्यकी ने टेढ़े पर्व्ववाले भल्लसे सारथी के शिरको शरीरसे पृथक् कर दिया ३० हे राजा इसके अनन्तर यादव सात्यकी ने अग्नि के समान ज्वलित सुनहरी पुङ्ख तीक्ष्णधार महाघोर बाणको छोड़ा ३१ पराक्रमी सात्यकी के हाथसे छोड़ाहुआ वह घोर उत्तम बाण शीघ्रतासे उसकी छातीपर गिरा ३२ हे महाराज यादव के हाथसे अत्यन्त घायल महाबाहु महारथी सोमदत्त रथसेगिरा और मरगया ३३ महारथी लोग वहां उस मरेहुये सोमदत्त को देखकर बड़ी बाणोंकी वर्षा करते सात्यकी के सम्मुख गये ३४ हे महाराज बाणों से ढकेहुये सात्यकी को देखकर युधिष्ठिरादि सबपाण्डव और सब प्रभद्रक बड़ी सेना को साथ लिये द्रोणाचार्य्य की सेनाकी ओर दौड़े ३५ उसके पीछे क्रोधयुक्त युधिष्ठिरने द्रोणाचार्य्य के देखतेहुये आपके पुत्रोंकी बड़ी सेनाको बाणों से भगाया ३६ सेनाओं के भगानेवाले युधिष्ठिर को देखकर क्रोधसे रक्तनेत्र द्रोणाचार्य्य जी बड़े वेगसे सम्मुख गये ३७ इसके पीछे अत्यन्त तीक्ष्णधार सात बाणों से युधिष्ठिर को घायल किया फिर बड़ेक्रोधयुक्त युधिष्ठिर नेभी पांच बाणों से घायलकिया ३८ होठों को चाटते अत्यन्त घायल महाबाहु द्रोणाचार्य्य ने युधिष्ठिरकी ध्वजा और धनुष को काटा ३९ उस टूटेध-

नुष और रथसे रहित उत्तम राजाने शीघ्रताके समयपर युद्ध में दूसरे दृढ़ धनुष को वेगसे लिया ४० इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ने हजार बाणों से घोड़े ध्वजा सारथी और रथ समेत द्रोणाचार्य्यको घायल किया वह आश्चर्य्यसा हुआ ४१ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ फिर बाणोंकी वर्षासे अत्यन्त पीड़ावान् द्रोणाचार्य्य एक मुहूर्त्त तक रथके बैठने के स्थानपर बैठगये ४२ इसके पीछे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य ने एक मुहूर्त्तही में सचेत होकर बड़े क्रोधमें पूरित होकर वायुअस्त्र को छोड़ा ४३ तब व्याकुलतासे रहित पराक्रमी युधिष्ठिर ने धनुषको खैंचकर उनके अस्त्रको अपने अस्त्रसे रोक दिया ४४ और बड़ी शीघ्रतासे उनकेधनुषको काटा हे कौरव्य धृतराष्ट्र इसके पीछे क्षत्रियों के मर्द्दन करनेवाले द्रोणाचार्य्य ने उस के उस धनुषको भी तीक्ष्ण भल्लों से काटा ४५ फिर वासुदेव जी कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर से बोले हे महाबाहु युधिष्ठिर जो मैं तुमसे कहताहूं उसको सुनो ४६ हे भरतर्षभ तुम द्रोणाचार्य्यके युद्धसे हाथ खैंचो द्रोणाचार्य्य सदैव युद्धमें आप के पकड़ने को चाहते हैं ४७ मैं उसके साथ आपका युद्ध अयोग्य मानताहूं सुनो जो पुरुष उनके नाश करनेको उत्पन्न हुआहै वही उनको मारेगा ४८ गुरू को त्याग करके अब तुम वहां जाओ जहां पर राजा दुर्य्योधन है राजाको राजाही के साथ युद्ध करना योग्यहै राजाको अन्य से युद्ध करनेका अभिलाष नहीं होनाचाहिये ४९ हे युधिष्ठिर तुम हाथी घोड़े और रथोंसे संयुक्तहोकर तबतक वहीं जावो जबतक कि मुझको साथमें रखनेवाला अर्ज्जुन ५० और रथियों में श्रेष्ठ भीमसेन दोनों कौरवों के साथ युद्ध करते हैं धर्म्मराज युधिष्ठिर वासुदेवजीके बचनको सुनकर ५१ एकमुहूर्त्त चिन्ताकरके फिर शीघ्रही कठिन युद्धमें वहांगया जहांपर कि शत्रुओंका मारनेवाला भीमसेन नियतथा ५२ कालके समान मुख फाड़ेहुये आपके शूरवीरों को मारते और रथके बड़े शब्द से पृथ्वीको शब्दायमान करते ५३ वर्षाऋतु के बादलके समान दशोंदिशाओंको भी शब्दोंसे पूरित करते पाण्डव युधिष्ठिरने शत्रुओंके मारनेवाले भीमसेनके पार्श्ववर्त्तीपनेके स्वीकार किया ५४ फिर रात्रिके समय द्रोणाचार्य्य ने भी पाण्डव और पांचालों को छिन्नभिन्न किया ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिघोररात्रियुद्धेशतोपरिद्विषष्टितमोऽध्यायः १६२ ॥

एकसौतरेसठका अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि हे राजा इसप्रकार घोररूप भयकारी युद्ध के वर्त्तमान होने अन्धकार समेत धूलसे लोकके भरजानेपर १ युद्ध में नियतहुये शूरवीरोंने एक दूसरेको नहीं देखा अनुमान और नामोंके द्वारा वह बड़ाभारी युद्ध वढ़गया २ जो कि मनुष्य घोड़े और हाथियोंके मथनेवाले और बड़े रोमहर्षण करनेवालेथे हे राजाओंमें श्रेष्ठ उन भीमसेन, धृष्टद्युम्न, सात्यकी और द्रोणाचार्य्य, कर्ण और कृपाचार्य्य इन सब वीरों ने ३ परस्पर व्याकुल किया उन महारथियों के हाथसे चारों ओरसे घायलहुई सेना ४ अंधेरे और धूलसे सब ओरको भागी सब ओर से भागनेवाले अचेत युद्धमें दौड़नेवाले उन शूरवीरोंने प्रहारकिये और हजारों महारथियों ने युद्धमें परस्पर एकने दूसरे को मारा ५।६ आपके पुत्रकी सलाहसे रात्रि के अपराधों और उपद्रवों में सब अज्ञानहुये हे भरतवंशी इसके पीछे उस युद्ध में अन्धेरेसे संयुक्त होनेपर सब सेनाके मनुष्य और अफसर लोग अत्यन्त मोहितहुये ७ धृतराष्ट्र बोले तब पाण्डवोंसे व्याकुल और पराक्रमसे हीन कठिन अपराधोंमें डूबेहुये उन लोगोंकी कौन गतिहुई ८ हे संजय इसप्रकार अन्धेरेसे संसार के ढकजानेपर उन पाण्डवों का और मेरी सेनाका प्रकाश कैसे हुआ ९ संजय बोले फिर उस सब सेनाने जो कि मरनेसे बाकी बचीथी सेनाके अफ्सरोंसे कहकर फिर व्यूहको रचा १० हे राजा द्रोणाचार्य्य आगे और शल्य अश्वत्थामा कृतवर्मा और शल पीछेके भागमें नियतहुये और आप राजा रात्रिके समय सब सेनाको घूमताहुआ देख ११ सब पदातियोंके समूहोंसे यह मधुरतासे बचन बोला कि तुम सब उत्तम शस्त्रोंको छोड़कर हाथोंसे प्रकाशित मशालोंको पकड़ो १२ इसके पीछे राजा दुर्य्योधनकी आज्ञानुसार प्रसन्नचित्त उन लोगोंने मशालोंको लिया और स्वर्गमें नियत प्रसन्नचित्त देवऋषि गंधर्व्व देवता ऋषियों के समूह विद्याधर अप्सराओं के समूह १३ नाग यक्ष उरग और किन्नरों ने भी मशालोंको हाथमें लिया सुगन्धित तेलोंसे पूर्ण मशालोंको देखकर वहांपर दिशाओं के देवता लोग आये अधिकतर कौरव पाण्डवों के निमित्त नारद और पर्वत ऋषिके कहनेसे उन देवताआदिकोंने प्रकाश प्रकटकिया फिर वही विभाषित सेना रात्रिमें अग्निके प्रकाशों से शोभायमानहुई १४।१५ और गिरतेहुये

वहुमूल्य दिव्य भूपणादि और प्रकाशित अस्त्रोंसे भी प्रकाशितहुये उस सेनामें एक २ रथपर पांचमशाल और प्रत्येक हाथीके साथ तीन २ मशाल और घोड़े घोड़े प्रति एक बड़ी मशाल पाण्डव और कौरवों की ओरसे जलाईगई वह सव मशाल एकक्षणमेंही प्रकाशितहुई और शीघ्रही आपकी सेनाको भी प्रकाशित किया १६।१७ तेज और मशाल हाथ में रखनेवाले पदातियों के द्वारा अत्यन्त प्रकाशित और शोभायमान सेना रात्रिके समय ऐसी दिखाई पड़ी जैसे कि अन्तरिक्षमें बिजलियों समेत वादल शोभित होते हैं १८ इसके पीछे सेनाके प्रकाशित होनेपर अग्नि की समान स्वर्णमयी कवचधारी द्रोणाचार्य्य चारों ओरसे शत्रुओंको तपातेहुये ऐसे शोभायमानहुये जैसे मध्याह्नके समय किरणसमूह रखनेवाला सूर्य्य होताहै १९ इसके पीछे वहांपर सुवर्णके आभूपणादि शुद्धनिष्क धनुष और शस्त्रोंपर अग्निके प्रकाशसे प्रकट होनेवाला प्रकाश उत्पन्नहुआ २० शैक्यमें रहनेवाली गदा उज्ज्वल परिघ और रथोंमें आवागमन करनेवाली शक्तियां प्रतिबिम्बित प्रकाशों से बारम्बार दीपकों को उत्पन्न करतीथीं २१ हे राजा तव वहां शूरवीरोंके छत्र, बाण, व्यजन, खड्ग और प्रकाशमान बड़ी मशालें और बहुत चञ्चल सुवर्णकी माला शोभायमान हुई २२ उस समय वह सेना शस्त्रोंके प्रकाश से शोभायमान दीपकों के तेजसे शोभित भूषणोंके प्रकाशोंसे प्रकाशित अत्यन्त ज्वलित अग्निके समान प्रकाशित हुई २३ वीरोंके छोड़ेहुये विषसे भरे रुधिर स आर्द्र शरीर के छेदनेवाले शस्त्रों ने वहांपर बड़े भारी प्रकाश को ऐसे उत्पन्न किया जैसे कि वर्षाके प्रारम्भ में अन्तरिक्षमें चमकतीहुई बिजली होती है २४ प्रहारोंकी तीव्रता से अत्यन्त कम्पित घायल और गिरतेहुये मनुष्योंके शिर ऐसे प्रकाशमान हुये जैसे कि बायु से चलायमान बड़े बादल २५ हे भरतवंशी जैसे कि लकड़ियोंसे पूर्ण जलतेहुये बड़े बनमें सूर्य्यका प्रकाशभी नाश को पाताहै उसी प्रकारसे वह बड़ी भयकारी भयानकरूप सेनाभी अत्यन्त प्रकाशमान हुई २६ तुम्हारी उस सेनाको अत्यन्त प्रकाशमान देखकर पाण्डवों ने शीघ्रही उसी प्रकारसे सव सेनाओं में पदातियों को आज्ञादी उन्होंने भी मशालों को प्रकाशित किया २७ हरएक हाथी के साथ सात सात मशालें और प्रत्येक रथके साथ दश दश मशालें और घोड़े घोड़े के पीछे दो दो और दोनों पक्ष ध्वजा और पीछे के स्थान पर दूसरी मशालें प्रकाशित हुईं २८ सव सेना-

ओंके मध्यमें पक्षों में आगे पीछे और चारोंओर उसी प्रकार सेनाके मध्यमें दूसरीमशालें हाथमें लेनेवाले पदातियों ने पाण्डवी सेनाको प्रकाशित किया२६ इस प्रकारसे दोनों सेनाओं के मध्यमें जलतीहुई मशालें हाथ में लेकर मनुष्य घूमने लगे सब सेनाओं में पदातियों के समूह हाथी घोड़े और रथों के समूहोंसे मिलगये ३० उन मशालों ने आपकी सेनाको और पाण्डवोंकी रक्षित सेनाको भी अत्यन्त प्रकाशित किया इस रीतिसे अत्यन्त प्रकाशित उस सेना से आप की सेना ऐसे अत्यन्त प्रकाशमान हुई ३१ जैसे कि प्रकाशमान सूर्य्य ग्रहों से प्रकाशित होताहै उन दोनोंका प्रकाश पृथ्वी अन्तरिक्ष और दिशाओंको उल्लङ्घन करके वृद्धियुक्त हुआ ३२ हे राजा उन्होंकी और आपकी सेना उस प्रकाश से अत्यन्त प्रकाशित हुई आकाशमें पहुंचनेवाले उस प्रकाशसे देवता लोगोंके समूहभी खबरदार हुये ३३ गन्धर्व्व यक्ष असुर और सिद्धों के समूहों समेत सब अप्सरा आपहुंचीं देवता गन्धर्व्व यक्ष असुरों के राजा अप्सराओं के समूह ३४ और मरकर स्वर्ग में चढ़नेवाले शूरों से घिरीहुई वह युद्धभूमि दिव्यरूपहुई रथ हाथी और घोड़ों के समूहोंकी मशालों से बड़ी प्रकाशमान और क्रोधयुक्त बीर मृतक और भागेहुये घोड़े रखनेवाली ३५ बड़ीसेना जिसके रथ घोड़े और हाथी क्रमपूर्व्वक नियतथे देवासुरों के व्यूहकी समान हुये शक्तियों के समूहरूप कठोर बायु बड़े रथरूप बादल रखनेवाला हाथी घोड़ों से शब्दायमान ३६ शस्त्रोंके समूहरूप बर्षा रुधिररूप जलधारा रखनेवाला रथीरूप दुर्दिन बिना ऋतुके वर्षा करनेवाला दिन रात्रिमें बर्त्तमान हुआ उसमें महा अग्निरूप ब्राह्मणों में श्रेष्ठ महात्मा द्रोणाचार्य्य पाण्डवों को तपातेहुये ऐसे प्रकार के हुये हे राजेन्द्र जैसे कि वर्षा ऋतु के अन्त पर मध्याह्न के समय अपनी किरणों से तपाताहुआ सूर्य्य होता है ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिदीपोद्योतनेशतोपरित्रिषष्टितमोऽध्यायः १६३ ॥

एकसौचौंसठका अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि तब धूल और अन्धकार से युक्त संसारके अप्रकाशित होनेपर परस्पर मारने के अभिलाषी शूरवीर सम्मुख हुये १ हे राजा शस्त्र प्रास खड्ग

और तलवार धारण करनेवाले और परस्पर अपराधी उनलोगोंने युद्धमें सम्मुख होकर एकने दूसरेको देखा २ तब रत्नजटित सुनहरी दण्ड रखनेवाली सुगन्धित तेलोंसे सींची हुई देवता और गन्धर्व्वों के दीपकादि के प्रकाशादि से अत्यन्त प्रकाशमान चारोंओर से चमकनेवालीं हजारों मशालोंसे पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई हे भरतवंशी जैसे कि ग्रहों से आकाश शोभित होताहै ३।४ युद्धभूमि ज्वलित अग्निरूप हजारों उल्काओंसे ऐसी अत्यन्त शोभायमान हुई जैसे कि सृष्टिके प्रलय होनेके समय जलती हुई पृथ्वी होती है ५ सब दिशा चारोंओरसे उन प्रकाशोंसे ऐसे अत्यन्त प्रकाशित हुईं जैसे कि वर्षाऋतुके प्रदोषकालमें पटबीजनोंसे संयुक्त वृक्ष प्रकाशमान होते हैं ६ इसके पीछे हरएक वीर दूसरेवीरों से जुदे २ होकर भिड़े हाथी हाथियोंकेसाथ घोड़े घोड़ोंके साथ सम्मुखहुये ७ और बड़ी प्रसन्नतासे उत्तम रथी दूसरे रथियोंके सम्मुखहुये उस घोररात्रिमें आपके पुत्रकी आज्ञासे ८ चतुरंगिणी सेनाकी बहुतबड़ी चढ़ाईहुई हे महाराज इसकेपीछे शीघ्रतासे युक्त सब राजाओंको प्रेरणाकरते अर्जुनने कौरवीय सेनाको तिर्रविर्र किया ९।१० धृतराष्ट्रबोले कि मेरेपुत्रकी उससेनामें उसक्रोधयुक्त अशान्त और अजेय अर्जुनके प्रवेश करनेपर तुम्हारा चित्त कैसाहुआ ११ शत्रुके पीड़ा देनेवाले अर्जुनके प्रवेशित होनेपर सेनाके लोगोंने क्या किया और दुर्य्योधनने समयके अनुसार किस कर्मको माना अर्जुनके प्रवेश होनेपर कौनसा शत्रु विजयी पुरुष उसवीरके सम्मुखगया और कौन २ से वीरोंने द्रोणाचार्य्यको श्रेष्ठ रीतिसे रक्षित किया १२।१३ किन वीरोंने शत्रुहन्ता द्रोणाचार्य्यके दक्षिणपक्षकी रक्षाकरी और कौन २ बायेंपक्ष और पृष्ठभाग पर रक्षाकरनेवाले हुये १४ युद्धमें शत्रु लोगोंको मारतेहुये कौन २ से वीर आगेचले जो बड़े धनुषधारी अजेय द्रोणाचार्य्य पांचालोंकी सेनामें गये १५ रथमार्गों में नाचते जिस पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने बाणोंसे पांचालों के रथसमूहोंको भस्मीभूत किया १६ उस अग्नि के समान क्रोधयुक्तने किसप्रकारसे मृत्युकोपाया तुम दूसरोंको व्याकुलतासे पृथक् और अजेय कहतेहो १७ और युद्धमें बड़ी प्रसन्नताभी उन्हींकी कहतेहो हे सूत उसप्रकारसे मेरे पुत्रोंको नहीं कहतेहो किन्तु उनको मृतक घायल और छिन्न भिन्न होनेवाला कहतेहो १८ मेरे रथियोंको युद्धोंमें रथसे रहित और मारेहुये वा मरेहुये कहते हो १९ संजयबोले कि हे महाराज दुर्य्योधन उसरात्रि में युद्धाभि-

लाषी द्रोणाचार्य्यके बिचारको जानकर अपने आज्ञाकारी इनभाइयोंसेबोला २० बिकर्ण, चित्रसेन, महाबाहु कौरव, दुर्द्धर्ष, दीर्घबाहु और जो २ उनके पीछे चलनेवालेथे २१ इनसे यह बचन कहा कि उपाय और पराक्रम करनेवाले तुम सब द्रोणाचार्य्य की पीछे से रक्षाकरो कृतबर्मा दक्षिणीयचक्रको और शल्य उत्तरचक्रको रक्षाकरो २२ और त्रिगर्त्तदेशियों के जो शूर महारथी मरनेसे शेषरहेथे उन सबको आपके पुत्रने प्रेरणाकरी कि द्रोणाचार्य्यको आगेसे रक्षितकरो २३ आचार्य्यजी अत्यन्त उपाय करनेवाले हैं और पांडवभी अत्यन्तउपाय करनेवाले हैं सोतुम अच्छे उद्योग करनेवाले होकर युद्धमें शत्रुओंके मारनेवाले द्रोणाचार्य्यजी की रक्षाकरो २४ पराक्रमी और प्रतापी द्रोणाचार्य्य युद्धमें बड़े हस्तलाघवीहैं वह युद्धमें देवताओंको भी बिजय करसक्ते हैं फिर सोमकों समेत पांडवों का बिजयकरना उनको कितनी बातहै २५ सदैव उपायकरनेवाले तुम महारथी लोग एकसाथही पांचालदेशी महारथी धृष्टद्युम्नसे द्रोणाचार्य्यकी रक्षाकरो पांडवोंकी सेनामें धृष्टद्युम्नके सिवाय और किसी राजाको नहीं देखते हैं जो युद्धमें द्रोणाचार्य्यके सम्मुख युद्धकरसके २६ इसहेतुसे सर्वात्मभावसे मैं द्रोणाचार्य्य की रक्षाको मानताहूं अच्छे रक्षित होकर द्रोणाचार्य्य जी सृञ्जी और सोमकों समेत पांडवोंको मारेंगे २७ सेनाके मुखपर सब सृञ्जियों के मारेजाने पर अश्वत्थामा युद्धमें अवश्य धृष्टद्युम्नको मारेगा इसमें सन्देह नहीं २८ और इसीप्रकार महारथी कर्णभी अर्जुनको मारेगा और युद्धमें दीक्षितहुआ मैंभी भीमसेनको बिजय करूंगा २९ और मेरे शेष शूरबीर अपने पराक्रमसे बाकी बचेहुये पांडवोंको जबरदस्ती से मारेंगे प्रकटहै कि यह मेरी बिजय बहुत समयतक होगी ३० इसकारणसे युद्धमें महारथी द्रोणाचार्य्यही की रक्षाकरो हे भरतर्षभ आपके पुत्र दुर्य्योधनने यह कहकर ३१ उसमहाकठिन अन्धकारमें अपनी सेनाको आज्ञादी और फिर रात्रिमें युद्धहोना जारीहुआ ३२ परस्पर बिजय करनेकी इच्छासे दोनों सेनाओं का घोर संग्राम जारीहुआ अर्जुनने कौरवीय सेनाको और कौरवोंने भी अर्जुनको ३३ नानाप्रकारके शस्त्रोंके समूहों से परस्पर पीड़ावान् किया अश्वत्थामाने राजा द्रुपदको द्रोणाचार्य्यने सृञ्जियोंको ३४ युद्धमें टेढ़े पर्व्ववाले बाणों से ढकदिया हे भरतवंशी परस्पर मारनेवाले पांडवीय पांचालदेशी और कौरवों की ३५ सेनाओंके महाघोर शब्दहुये हमलोगोंने और आगेके वृद्धोंने भी उस

प्रकारके युद्धको पूर्वमें कभी देखाथा न सुनाथा जैसा कि यह रौद्र भयानक युद्ध हुआ था ३६ । ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसंकुलयुद्धेशनोपरिचतुष्पष्टितमोऽध्यायः १६४ ॥

एकसौपैंसठका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा तब उस रुद्र और सब जीवोंके नाश करनेवाले रात्रिके युद्ध बर्त्तमान होनेपर धर्मका पुत्र युधिष्ठिर १ मनुष्य रथ और हाथियोंके नाशके अर्थ पाण्डव पांचाल और सोमकों से बोला २ अर्थात् राजा युधिष्ठिर ने अपने शूरबीरोंसे कहा कि मारने की इच्छासे दौड़कर द्रोणाचार्य्यके सम्मुख जावो ३ फिर वह पांचाल और सृञ्जय राजाके वचनसे भयानक शब्दोंको करते और गर्जते द्रोणाचार्य्यके सम्मुख वर्त्तमानहुये ४ अर्थात् वह क्रोधयुक्त और सम्मुख गर्जनेवाले युद्ध में बल पराक्रम और साहसके अनुसार सम्मुख गये ५ जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथीके सम्मुखजाताहै उसी प्रकार द्रोणाचार्य्य की ओर को आनेवाले युधिष्ठिरके सम्मुख हार्दिक्यका पुत्र कृतवर्मा गया ६ हे राजा कौरव भूरियुद्धके मुखपर चारों ओरसे बाणवृष्टी करनेवाले सात्यकी के सम्मुखगया ७ फिर सूर्य्यके पुत्र कर्णने द्रोणाचार्य्यको सम्मुख चाहनेवाले आते हुये महारथी पाण्डव सहदेवको रोका ८ इसके पीछे कालके समान फैलेमुख मृत्युरूप भीमसेनके सम्मुख आप राजा दुर्य्योधन गया ९ हे राजा शीघ्रता करने वाले सौबलके पुत्र शूरबीरों में श्रेष्ठ सब युद्धों में कुशलने नकुलको रोका १० तदनन्तर शारद्वत कृपाचार्य्यने रथकी सवारीसे आतेहुये रथियोंमें श्रेष्ठ शिखंडी को युद्ध में रोका ११ हे महाराज फिर उपाय करनेवाले दुश्शासन ने मोरवर्ण घोड़ों की सवारी से आनेवाले उपाय करनेवाले प्रतिबिन्ध्य को रोका १२ इसके पीछे अश्वत्थामाने सैकड़ों माया में कुशल आतेहुये घटोत्कच राक्षसको रोका १३ फिर वृषसेनने द्रोणाचार्य्य को चाहनेवाले महारथी द्रुपदको सेना और पीछे चलनेवालों समेत रोका १४ हे भरतवंशी फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त शल्यने द्रोणाचार्य्यके मारनेको शीघ्र आनेवाले विराटको रोका १५ चित्रसेनने द्रोणाचार्य्यकी इच्छासे युद्धमें वेगवान् आतेहुये नकुलके पुत्र सतानीकको बाणोंके द्वारा शीघ्रही रोका १६ हे महाराज राक्षसोंके राजा अलंबुषने शूरबीरोंमें श्रेष्ठ शीघ्र आ-

तेहुये महारथी अर्ज्जुन को रोका १७ इसी प्रकार पांचालदेशी धृष्टद्युम्नने शत्रु-
ओंके मनुष्यों के मारनेवाले युद्ध में प्रसन्न मूर्त्ति बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्य को
रोका १८ उसके पीछे आपके रथियों ने वेगसे पाण्डवों के दूसरे महारथी सम्मुख
आनेवालों को रोका १९ हे राजा उस बड़े युद्ध में सैकड़ों और हजारों हाथी के
सवारोंसे हाथियों समेत शीघ्र भिड़कर युद्धकर्त्ता और मर्द्दनकर्त्ता रात्रिके समय
परस्पर घोड़ोंको भगाते वेगसे सपक्ष पर्व्वतोंके समान दिखाईदिये २०।२१ और
प्रास शक्ति और दुधारा खड्ग हाथमें रखनेवाले गर्जना करते अश्वसवारों समेत
पृथक् पृथक् सम्मुख हुये २२ फिर वहां बहुत मनुष्य गदा मूसल और नानाप्र-
कारके शस्त्रोंसे युद्ध में परस्पर सम्मुखहुये २३ अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतबर्मा हार्दि-
क्यके पुत्रने धर्मपुत्र युधिष्ठिर को ऐसे रोका जैसे कि उठेहुये समुद्रको मर्य्यादा
रोकती है २४ फिर युधिष्ठिरने शीघ्रही पांचबाणों से कृतबर्मा को घायल किया
फिर बीसबाणसे पीड़ितकरके तिष्ठ तिष्ठ बचन कहा २५ हे राजा फिर अत्यन्त
क्रोधयुक्त कृतबर्मा ने भल्ल से युधिष्ठिर के धनुषको काटा और सातबाण से पी-
ड़ावान् किया इसके पीछे महारथी युधिष्ठिर ने दूसरे धनुष को लेकर दशबाणों
से कृतवर्मा को भुजा और छातीपर घायल किया २६ । २७ हे श्रेष्ठ युद्ध में
धर्मपुत्र के हाथसे घायल माधव कृतबर्मा क्रोधसे कम्पायमान हुआ और सात
बाणोंसे युधिष्ठिर को पीड़ावान् किया २८ युधिष्ठिरने उसके धनुषको तोड़ ह-
स्तत्राणों को काटकर तीक्ष्णधारवाले पांचबाणों को चलाया २९ वह बाण उस
के सुवर्णमय बहुमूल्य कवच को काटकर और छेदकरके पृथ्वी में ऐसे समागये
जैसे कि बामी में सर्प्प समा जाते हैं ३० उसने पलमात्र मेंही दूसरे धनुष को
लेकर पाण्डव को छः बाण से और सारथी को नौ बाणों से घायल किया ३१
हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र उस बड़े साहसी युधिष्ठिर ने बड़े धनुषको रथपर रखकर
सर्प्पके समान शक्तिको फेंका ३२ वह युधिष्ठिरकी भेजीहुई स्वर्णमय चिह्न रख-
नेवाली बड़ी शक्ति दाहिनी भुजाको छेदकर पृथ्वी में समागई ३३ फिर उसी स-
मय युधिष्ठिर ने धनुष को लेकर टेढ़े पर्व्ववाले बाणों से कृतवर्म्मा को ढक दिया
३४ इसके पीछे बड़े महारथी कृतवर्म्मा ने आधेही पलमें युधिष्ठिर को घोड़े सा-
रथी और रथसे बिरथ किया ३५ तब बड़े पाण्डव ने ढाल और तलवारको लिया
फिर माधव कृतवर्म्मा ने उसकी उस ढाल तलवार कोभी तीक्ष्ण बाणों से टुकड़े

टुकड़े किया ३६ इसके पीछे युधिष्ठिर ने सुनहरी दण्डवाले कठिनतासे सहनेके योग्य तोमर को लेकर युद्धमें शीघ्रही कृतवर्म्मा के ऊपर फेंका ३७ फिर मन्दमुसकान करते हस्तलाघवी कृतवर्म्मा ने धर्म्मराज की भुजासे फेंकेहुये अकस्मात् आतेहुये उस तोमरके दो खण्ड किये ३८ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्तने युद्धभूमिमें सौ बाणोंसे युधिष्ठिर को ढकदिया और उसके कवच कोभी तीक्ष्णबाणों से तोड़ा ३९ हे राजा युद्धमें कृतवर्म्मा के बाणों से टूटाहुआ बहुमूल्य कवच ऐसे गिरा जैसे कि आकाशसे ताराजाल गिरता है ४० वह टूटेधनुप रथसे रहित गिराहुआ कवच बाणों से पीड़ित धर्म्मका पुत्र युधिष्ठिर शीघ्रही युद्धसे हटगया ४१ फिर कृतवर्म्मा ने धर्म्मात्मा युधिष्ठिर को विजय करके महात्मा द्रोणाचार्य्य की सेनाको रक्षित किया ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणियुधिष्ठिरायमानन्नामशतोपरिपञ्चषष्टितमोऽध्यायः १६५ ॥

एकसौछांछठका अध्याय ॥

सञ्जय बोले फिर भूरिने युद्ध में रथियों में श्रेष्ठ आतेहुये सात्यकी को ऐसे रोका जैसे कि गर्त्तके द्वारा हाथीको रोकते हैं १ उसके पीछे क्रोधयुक्त भूरिने शीघ्रही तीक्ष्ण धारवाले पांच बाणों से सात्यकीको हृदयपर घायल किया तब उस का रुधिर बहुतसा गिरा २ उसी प्रकार उस फिर कौरव भूरिने युद्ध में तीक्ष्णधार वाले दश बाणों से दुर्म्मद सात्यकी को भुजाके मध्यमें छेदा ३ हे महाराज क्रोधसे रक्तनेत्र उन दोनों ने क्रोधसे धनुषों को चलायमान करके बाणों से अत्यन्त घायल किया ४ उन क्रोधयुक्त शायकोंके छोड़नेवाले यमराज और कालरूप दोनोंके शस्त्रों की वर्षा अत्यन्त भयकारी हुई ५ फिर वह दोनों परस्पर बाणों से ढकेहुये अच्छी रीतिसे नियत हुये और वह युद्ध एक मुहूर्त्त तक एकसा हुआ ६ इसके अनन्तर क्रोधयुक्त अत्यन्त हँसतेहुये सात्यकी ने युद्धमें महात्मा कौरव के धनुषको काटा ७ फिर इस टूटे धनुषवालेको तीक्ष्ण धारके नौ बाणोंसे शीघ्र हृदयपर छेदा और तिष्ठतिष्ठ वचनकहा ८ पराक्रमी शत्रुके बाणोंसे अत्यन्त छिदेहुये उस शत्रुसन्तापी ने दूसरे धनुप को लेकर यादव सात्यकी को छेदा ९ हे राजा फिर उस हँसतेहुये भूरिने तीन बाणोंसे यादव को घायलकरके अत्यन्त तीक्ष्ण भल्लसे धनुपको काटा १० फिर उस टूटेधनुप क्रोधसे मूर्च्छावान् सात्यकीने बड़ी

वेगवान् शक्ति को उसकी बड़ी छाती पर मारा ११ फिर शक्ति से टूटे अङ्ग भूरि अपने उत्तम रथ से ऐसे गिर पड़ा जैसे कि दैवइच्छा से प्रकाशमान किरण वाला मंगल नक्षत्र आकाशसे गिरता है १२ महारथी अश्वत्थामाजी उस शूर को मराहुआ देखकर युद्ध में वेगसे सात्यकी के सम्मुख दौड़े १३ हे राजा अश्वत्थामाजी सात्यकीसे तिष्ठ तिष्ठ वचन कहकर बाणोंकी ऐसी बर्षा करनेलगे जैसे कि बादल अपनी जलधाराओंसे पर्व्वतको ढकताहै १४ फिर महारथी घटोत्कच सात्यकी के रथपर आतेहुये उस क्रोधयुक्त अश्वत्थामाजीसे बोला १५ कि हे द्रोणाचार्य्यके पुत्र खड़ाहो २ मेरे हाथसे बचकर न जायगा तुझको मैं ऐसे मारूंगा जैसे कि शरभ भैंसेको मारताहै १६ और मैं युद्धभूमिमें तेरे युद्धकी श्रद्धा को नाशकरूंगा क्रोधसे रक्तनेत्र शत्रुओंके वीरों का मारनेवाला राक्षस यह कह कर १७ अश्वत्थामाके सम्मुख ऐसे गया जैसे कि क्रोधयुक्त केशरी गजराजके सम्मुख जाताहै घटोत्कच अक्षरथके समान बाणोंसे रथियोंमें श्रेष्ठ अश्वत्थामाजीके ऊपर ऐसे बर्षा करनेलगा १८ जैसे कि बादल जलधाराओंसे बर्षा करताहै फिर मन्दमुसकान करते अश्वत्थामाने वेगसे युद्धमें बिषैले सर्प्पकी समान बाणों से उस प्रकट होनेवाली बाणों की बर्षाका नाश किया १९ इसके पीछे मर्मभेदी शीघ्रगामी तीक्ष्ण सैकड़ों बाणोंसे उस शत्रुबिजयी राक्षसोंके राजा घटोत्कचको ढकदिया २० हे महाराज उनके बाणोंसे छिदाहुआ वह राक्षस युद्धभूमि में ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि श्वाविनृशिलों से चिताहुआ होता है २१ उसके पीछे क्रोधसे पूर्ण प्रतापवान् घटोत्कचने भयानक और रुद्रबज्रके समान बाणोंसे अश्वत्थामाको घायलकिया २२ क्षुरप्र,अर्द्धचन्द्र,नाराच,शिलीमुख, बाराह,कर्ण, नालीक और बिकर्ण नाम बाणोंसे बर्षा करनेलगा २३ पीड़ासे रहित सावधान रूप तेजस्वी अश्वत्थामाने उस असंख्य बज्र और बिजलीके समान शब्दायमान ऊपर पड़नेवाली उस बाणवृष्टिको २४ बड़े दुःखसे सहनेके योग्य दिव्यअस्त्र के मन्त्रोंसे अभिमंत्रित घोर बाणोंसे ऐसे इधर उधरकिया जैसे कि वायु बड़े बादलोंको तिरबिर करताहै हे महाराज इसके पीछे अन्तरिक्षमें दूसरा घोररूप युद्ध शूरबीरोंके आनन्द का बढ़ानेवाला हुआ २५।२६ उससमय आकाश अस्त्रोंकी घिसावटसे फुलिङ्गों समेत उत्पन्न होनेवाली अग्निसे रात्रि के समय चारोंओरसे पट्वीजनों से संयुक्त के समान शोभायमान हुआ २७ उस अश्वत्थामाने सब

ओरसे दिशाओं को वाणोंके समूहोंसे ढककर आपके पुत्रोंके हितार्थ राक्षसको अच्छा ढका २८ उसके पीछे गहन रात्रिके मध्य युद्धमें अश्वत्थामा और राक्षस का युद्ध ऐसे जारीहुआ जैसे कि इन्द्र और प्रह्लादका हुआथा २९ तव अत्यन्त क्रोधयुक्त घटोत्कचने युद्ध में कालाग्नि के समान दशवाणोंसे अश्वत्थामा को छातीपर घायल किया ३० उस राक्षस के मारेहुये वाणों से घायल वह महावली अश्वत्थामा युद्ध में ऐसे कम्पायमान हुये जैसे कि वायुसे आघातित वृक्ष होता है ३१ और अचेत होनेवाले अश्वत्थामा ध्वजाकी यष्टी से आश्रितहुये ३२ हे राजा इसके पीछे आपकी सव सेना हाहाकार करनेलगी और आपके सव शूर-वीरोंने उसको मृतकरूप माना ३३ पांचाल और सृंजियोंने युद्धमें उस दशावा-ले अश्वत्थामाको देखकर सिंहनादकिये ३४ इसके पीछे शत्रुओंके विजय कर-नेवाले महावली अश्वत्थामाने सचेततासे अपने वामहस्तसे धनुप को दवाकर ३५ शीघ्रही घटोत्कचको लक्ष्य वनाकर कानतक खैंचेहुये उस धनुपसे घोर और श्रेष्ठ उस वाणको जो कि यमदण्डके समान था छोड़ा ३६ हे राजा वह सुन्दर पुंख भयकारी उत्तम वाण उस राक्षसके हृदय को छेदकर पृथ्वी में घुसगया ३७ उसके आघातसे युद्ध में शोभा पानेवाले अश्वत्थामाके हाथसे अत्यन्त घायल वह वड़ा पराक्रमी राक्षसाधिप रथकी उपस्थपर वैठगया ३८ भयसे व्याकुल शी-घ्रतायुक्त सारथी उस घटोत्कचको अश्वत्थामाके हाथसे अचेत देखकर युद्धभूमि से दूरलेगया ३९ महारथी अश्वत्थामा युद्धमें राक्षसाधिप घटोत्कचको इसप्रकार से घायलकरके वहुत वड़े शब्दको गर्जा ४० हे भरतवंशी आपके पुत्र और सव शूरवीरों से स्तुतिमान वह अश्वत्थामा शरीर से ऐसे अत्यन्त प्रकाशित हुआ जैसे कि मध्याह्नके समय सूर्य्य होताहै ४१ आप राजा दुर्य्योधनने द्रोणाचार्य्यके रथके पास युद्ध करनेवाले भीमसेनको तीक्ष्ण वाणोंसे छेदा ४२ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र फिर भीमसेनने उसको दशवाणोंसे छेदा दुर्य्योधनने वीस वाणसे छेदा ४३ वह युद्धभूमिमें शायकोंसे ढकेहुये ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि आकाशमें मेघजालोंसे ढकेहुये सूर्य्य और चन्द्रमा होते हैं ४४ हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ उसके पीछे राजा दुर्योधनने भीमसेनको पांचवाणोंसे घायलकरके तिष्ठ तिष्ठ वचन कहा ४५ भीम-सेनने दशवाणोंसे उसके धनुप और ध्वजाको काटकर टेढ़े पर्ववाले नव्वे वाणोंसे उस कौरवोंके राजाको घायलकिया ४६ इसके अनन्तर हे भरतर्पभ क्रोधयुक्त दु-

र्योधनने दूसरे बड़े धनुषको लेकर युद्धके शिरपर सब धनुर्धारियोंके देखतेहुये भीमसेनको तीक्ष्ण बाणोंसे पीड़ितकिया ४७ भीमसेनने दुर्योधनके धनुषसे निकले हुये उन बाणोंको काटकर कौरवको पच्चीस बाणों से घायल किया ४८ हे श्रेष्ठ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने क्षुरप्रनाम बाणसे भीमसेनके धनुषको काटकर दशबाणोंसे छेदा ४९ फिर महाबली भीमसेनने दूसरे धनुषको लेकर शीघ्रही तेज धारवालेसात बाणोंसे राजाको घायलकिया ५० हे महाराज हस्तलाघवीके समान दुर्योधनने शीघ्रही उसके उस धनुषको किन्तु हाथमें लियेहुये दूसरे तीसरे चौथे और पांचवें धनुषको भी काटा अर्थात् बिजय से शोभा पानेवाले मतवाले आपके पुत्रने भीमसेन के अनेक धनुषोंको काटा ५१। ५२ इसप्रकार बारम्बार धनुषों के तोड़ने पर उस भीमसेनने युद्धमें अत्यन्त लोहमयी उस शुभ शक्तिको दुर्य्योधनपर छोड़ा ५३ जो कि सदैव कालकी समान प्रकाशित किरण और अग्नि के समान प्रकाशमान आकाश के सीमन्त को उत्पन्न करनेवालीथी ५४ कौरव ने सब लोक और महात्मा भीमसेन के देखते उस शक्तिको बीचही में तीनटुकड़े किया ५५ हे महाराज इसके पीछे भीमसेनने बड़ी प्रकाशमान उस भारीगदा को बेगसे घुमाकर दुर्य्योधनके रथपर फेंका ५६ हे भरतर्षभ उसके पीछे उस भारी गदाने युद्धमें आपके पुत्रके घोड़े औरसारथीको मर्द्दनकिया ५७ हे राजेन्द्र फिर आपका पुत्र स्वर्णजटित रथ से उतरकर अकस्मात् महात्मा नन्दक के रथपर सवार हुआ ५८ तब रात्रि में कौरवों को घुड़कते भीमसेन ने आपके पुत्र महारथी को मृतक हुआ मानकर बड़ा सिंहनाद किया ५९ और आपके सेनाके लोगों नेभी उस राजाको मृतक माना उसके पीछे वह सब चारोंओर से हाय हाय पुकारे ६० हे राजा उन सब भयभीतों के शब्दोंको सुनकर और महात्मा भीमसेन केभी शब्दको सुनकर राजा युधिष्ठिर दुर्य्योधन को मराहुआ मानकर शीघ्रता से वहां आकर वर्त्तमान हुये जहां पर कि पाण्डव भीमसेन था ६१।६२ हे राजा पांचाल, केकय, मत्स्य, सृञ्जयदेशी शूरवीर सब उपायोंसमेत युद्ध की अभिलाषा से द्रोणाचार्य्य के सम्मुख हुये ६३ वहांपर द्रोणाचार्य्य का महाभारी युद्ध दूसरे लोगों से हुआ और घोर अन्धकार में डूबेहुये परस्पर मारनेवाले शूरवीरों का भी युद्ध हुआ ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिरात्रियुद्धेषट्षष्टितमोऽध्यायः १६६ ॥

एकसौसरसठका अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि हे भरतबंशी राजा धृतराष्ट्र सूर्य्य के पुत्रने द्रोणाचार्य्य के युद्धमें चाहनेवाले सहदेव को रोका १ फिर सहदेव ने नौ बाणों से कर्णको छेद कर टेढ़े पर्व्ववाले विशिखों से पीड़ित किया २ कर्णने टेढ़े पर्व्ववाले सौबाणोंसे उसको घायल किया और हस्तलाघवता के समान उसके धनुषको काटा ३ उस के पीछे प्रतापवान् सहदेवने दूसरे धनुष को लेकर कर्णको बीस बाणसे घायल किया यह आश्चर्य्यसा हुआ ४ कर्ण ने टेढ़े पर्व्ववाले बाणोंसे उसके घोड़ोंको मारकर उसके सारथी कोभी शीघ्रही भल्लसे यमलोक पहुंचाया फिर रथसे रहित सहदेवने ढाल तलवार को हाथ में लिया हँसतेहुये कर्ण ने उसकी उस ढाल त-लवार कोभी खण्ड खण्ड करदिया ५।६ उसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त सहदेवने बड़ी घोर सुबर्णजटित बड़ी भारी गदाको कर्णके रथपर फेंका ७ कर्ण ने सहदेव की फेंकीहुई अकस्मात् आतीहुई गदाको बाणों से रोककर पृथ्वीपर गिराया ८ शीघ्रतायुक्त सहदेव ने गदाको निष्फल देखकर कर्णके लिये शक्तिको फेंका उस ने उस शक्तिको भी बाणसे काटा ९ हे महाराज इसके पीछे सहदेव ने व्याकुल-तासे युक्त शीघ्रही रथसे कूदकर कर्णको सम्मुख देख रथके चक्रको लेकर युद्ध-भूमि में कर्ण के ऊपर छोड़ा तब कालचक्र के समान उठाहुआ वह चक्र अक-स्मात् आकर गिरा १०।११ सूतनन्दन कर्णने हज़ारों बाणोंसे उसको काटा महा-त्मा कर्णके हाथसे उस चक्र के टूटने पर १२ ईषादण्ड, योक्त्र और नाना प्रकार के युग हाथियों के अङ्ग घोड़े और मृतक मनुष्यो कोभी कर्णको लक्ष्य बनाकर फेंका कर्ण ने बाणों सेही उनको हटाया उस सहदेव ने अपने को अशस्त्र जान कर विशिख नाम बाणोंसे रुकेहुये ने युद्धको त्यागा हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ हँस-तेहुये कर्णने एकक्षणभरमें उसके सम्मुख जाकर १३।१५ सहदेवसे यह वचनकहा कि हे पराक्रमी युद्धमें उत्तम रथियों के साथ तू युद्ध मतकर १६ हे माद्री के पुत्र सदैव अपने बराबरवाले से युद्धकर मेरे वचनपर सन्देह मतकर और फिर धनुष की नोकसे पीड़ित करताहुआ फिर यह बोला कि यह अर्जुन जो कौरवोंकेसाथ लड़ताहै हे माद्रीके पुत्र शीघ्र वहां जाओ अथवा घरकोजाओ जो मुझको मानते हो। रथियों में श्रेष्ठ कर्ण उसको उस प्रकारसे कहकर अपने रथके द्वारा १७ पां-

चाल और पांडवोंकी सेनाको भस्मकरता हुआ चला शत्रुके मारनेवाले कर्णने मारने के स्थानपर वर्त्तमानहुये सहदेवको नहींमारा १८ हे राजा सत्यप्रतिज्ञ बड़े यशस्वी कर्णने कुन्तीके बचनको स्मरणकरके ऐसाकिया इसकेपीछे उदासमन और बाणोंसे पीड़ित १९ और कर्णके बाणरूपी बचनोंसे दुःखी सहदेव जीवन से युक्तहुआ और शीघ्रता समेत वह महारथी युद्ध में पांचालदेशी महात्मा जनमेजयके रथपर सवार हुआ २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिघोरयुद्धेशतोपरिसप्तषष्टितमोऽध्यायः १६७ ॥

एकसौअरसठका अध्याय ॥

संजय बोले कि फिर मद्रके राजा शल्यने द्रोणाचार्य्य की ओर सेना समेत शीघ्रतासे आनेवाले धनुषधारी बिराटको बाणोंके समूहसे ढकदिया १ उनदोनों दृढ़ धनुषधारियों का युद्ध युद्धभूमि में ऐसा हुआ जैसा कि पूर्व्व समयमें जंभ और इन्द्रकाहुआ था २ हे महाराज शीघ्रता करनेवाले शल्यने शीघ्रही सौ बाणोंसे बाहिनीपति राजा बिराटको घायल किया ३ और तीक्ष्ण धारवाले नौ बाणोंसे फिर उसको घायल किया फिर तीसरी बार तिहत्तर बाणोंसे इसके पीछे चौथीबार सौबाणोंसे घायलकिया तदनन्तर राजा शल्यने उसके चारों घोड़ोंको मारकर युद्धमें बाणों से सारथी और ध्वजाको गिराया ४।५ वह महारथी मृतक घोड़ेवाले रथसे शीघ्रही उतरकर धनुषको चलायमान करता और तेजबाणोंको छोड़ता नियतहुआ ६ इसके पीछे सतानीक भाईको बिरथ देखकर सब लोकके देखतेशीघ्र रथकी सवारीसे सम्मुख आया ७ फिर शल्यने आतेहुये सतानीकको बड़े युद्धमें बिशिख नाम बहुत बाणोंसे छेदकर यमलोकमें पहुंचाया ८ उस बीरके मरनेपर रथियोंमें श्रेष्ठ बिराट उस ध्वजाओंकी माला रखनेवाले रथपर शीघ्रही सवारहुआ ९ उसके पीछे क्रोधसे द्विगुणितबलवाले बिराटने दोनों नेत्रोंको चलायमान करके शीघ्रही बाणोंसे शल्यके रथको बाणोंसे ढकदिया १० इसके पीछेक्रोध युक्त राजा शल्यने टेढ़े पर्ववाले बाणसे बाहिनीपति राजा बिराटको छातीपर कठिन घायल किया ११ फिर वह अत्यन्त घायल बिराट रथके पृष्ठपर बैठगया और बड़ा मूर्च्छितहुआ १२ युद्धमें बिराटको कठिन घायल देखकर सारथी दूरहटालेगया हे भरतबंशी फिर वह बड़ीसेना रात्रिमें भागी १३ जो कि युद्धको शोभा

देनेवाली शल्यके सैकड़ों बाणोंसे घायलथी हे राजेन्द्र फिर अर्जुन और वासुदेवजी उस भागीहुई सेनाको देखकर वहांगये जहां राजा शल्य नियत था १४ और राक्षसोंका राजा अलंबुष आठ चक्रवाले उत्तम रथपर सवारहोकर उन दोनोंके सम्मुखगया १५ जो कि घोरदर्शन पिशाचरूप उत्तम घोड़ोंसे युक्त रक्तपताका रखनेवाला रक्तही मालाओंसे अलंकृत १६ कार्ष्ण नाम लोहेकाबना घोर रीछोंके चमड़ेसे मढ़ाहुआ और रौद्रअपूर्व्वपक्ष और बड़ेनेत्र शब्दकरनेवाले १७ गृद्धराजकी मूर्त्तिसे शोभायमान ऊंचे दण्डकी ध्वजावालाथा हे राजा वह राक्षस चूर्ण जन समूहके समान शोभायमानहुआ १८ अर्ज़ुनके शिरपर सैकड़ों बाण समूहोंको फैलातेहुये उसने आतेहुये अर्जुनको ऐसे रोका जैसे कि प्रभंजनको गिरिराजरोकताहै १९ हे भरतर्पभ तब वहां नर और राक्षसका अत्यन्त कठिनयुद्ध सब देखनेवालोंको प्रसन्नता देनेवाला २० गृद्ध काक बलाक उलूक और शृगालोंका प्रसन्न करनेवाला हुआ अर्जुनने सौ बाणों से उसको घायल किया २१ और नौ तीक्ष्ण बाणोंसे ध्वजाकोकाटा और तीन २ बाणसे सारथी त्रिवेणुकको २२ एक बाणसे धनुप को काटकर चारबाणोंसे चारों घोड़ों को मारा फिर उसने दूसरा धनुप सन्नद्ध किया उस धनुपके भी दो खण्ड किये २३ हे भरतर्पभ इसके पीछे अर्जुनने तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे उस राक्षसाधिपको छेदा तब घायल और भयभीत होकर भागा २४ अर्ज्जुन उसको शीघ्र विजयकरके मनुष्य हाथी और घोड़ोंपर बाणों को फैलता द्रोणाचार्य्य के सम्मुख गया २५ हे महाराज यशस्वी अर्ज्जुनके हाथसे घायल सेना पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ी जैसे कि वायुसे टूटेहुये वृक्ष गिरते हैं २६ महात्मा अर्ज्जुन के हाथसे उन सेनाओं के नाश होनेपर आपके पुत्रोंकी सब सेना भागी २७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिअष्टषष्टितमोऽध्यायः १६८॥

एकसौउनहत्तरका अध्याय॥

संजय बोले हे भरतवंशी आपके पुत्र चित्रसेनने आपकी सेना को बाणों से भस्म करनेवाले सतानीकको रोका १ और उस नकुलके पुत्र सतानीकने चित्रसेनको पांचबाणोंसे छेदकर उसको तीक्ष्णधारवाले दशबाणोंसे फिर छेदा २ हे महाराज फिर चित्रसेनने युद्धमें सतानीकको तीक्ष्णधारवाले नौबाणोंसे छातीपर

छेदा ३ तब नकुलके पुत्रने टेढ़ेपर्ववाले विशिखोंसे उसके कवचको शरीरसे गिराया वह आश्चर्य्यसा हुआ ४ हे राजा धृतराष्ट्र वह कवचसे रहित आपका पुत्र ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि समय पाकर कांचलीसे छूटाहुआ सर्प होताहै ५ इसके पीछे नकुल के पुत्रने युद्धमें उपाय करनेवाले इस चित्रसेन की ध्वजा और धनुप को तीक्ष्ण बाणोंसे काटा ६ हे महाराज युद्ध में उस टूटे धनुष कवचसे रहित महारथीने शत्रुके मारनेवाले दूसरे धनुपको हाथ में लिया ७ इसके पीछे क्रोधयुक्त चित्रसेनने नकुलके पुत्रको नौबाणोंसे शीघ्रही घायलकिया ८ हे श्रेष्ठ फिर नरोत्तम सतानीक ने चित्रसेन के सारथी समेत चारों घोड़ों को मारा ९ बलवान् महारथी चित्रसेनने उस रथसे उतरकर नकुलके पुत्रको पचीस बाणों से पीड़ित किया १० नकुलके पुत्रने उस कर्म्म के करनेवाले चित्रसेनके रत्नजटित धनुपको अर्द्धचन्द्र बाणसे काटा ११ वह टूटे धनुष विरथ मृतक सारथी समेत घोड़ेवाला चित्रसेन शीघ्रही महात्मा कृतबर्मा के रथपर सवार हुआ १२ तब सैकड़ों बाणों से ढकता हुआ वृपसेन शीघ्रही उस महारथी द्रुपदके सम्मुख गया जो कि सेना समेत द्रोणाचार्य्य की सम्मुखता करनेका अभिलाषी था १३ हे निष्पाप धृतराष्ट्र द्रुपदने कर्णके पुत्र महारथीको साठबाणोंसे छाती और भुजापर छेदा १४ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त रथपर चढ़हुये वृषसेनने द्रुपदको तीक्ष्ण शायकोंसे छातीपर घायलकिया १५ हे महाराज बाणोंसे घायल अंग बाणरूप कांटोंसे संयुक्त वह दोनों युद्धमें ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि स्वाविध शललों से शोभित होताहै १६ वह दोनों बड़े युद्धमें सुनहरी पुंखसाफनोकवाले बाणोंसे टूटे कवच शरीर रुधिर समूहसे आर्द्र देह महाशोभायमान हुये १७ अर्थात् वह दोनों युद्धभूमिमें सुबर्णरूप कल्पवृक्षके समान फूलेहुये किंशुक वृक्षके सदृश शोभायमानहुये १८ हे राजा इसके पीछे वृषसेन ने द्रुपद को नौबाणोंसे छेदकर फिर सत्तरबाणोंसे घायलकिया इसके पीछे भी तीन२ दूसरे बाणोंसे १९ इसीप्रकार वह कर्णका पुत्र बर्षा करनेवाले बादलकी समान हजारोंबाणोंको छोड़ता शोभायमानहुआ २० तब क्रोधयुक्त द्रुपदने तीक्ष्णधार पीतरंगवाले भल्ल से वृपसेनके धनुपके दोखंडकिये २१ उसने सुबर्णजटित नवीन दृढ़ दूसरे धनुपको लेकर और तूणीरसे साफ तीक्ष्ण दृढ़ पीतरंगवाले भल्लको खैंच २२ धनुप में लगाकर और उस द्रुपदको देखकर सब सोमकों को भयभीत करतेहुये उस कानतक खैंचेहुये

भल्लको छोड़ा २३ वह भल्ल उसके हृदयको छेदकर पृथ्वीमें गया वृषसेनके वाण से घायल राजा द्रुपद मूर्च्छायुक्त हुआ २४ फिर सारथी अपने कर्म्म को स्मरण करता उसको दूर लेगया हे राजेंद्र उस पांचालोंके महारथी द्रुपदके पराजय होने पर २५ वाणोंसे टूटे कवचवाली द्रुपदकी सेना उसभयानक रात्रिके होनेमें भागी २६उससमय उन जलतीहुई चारोंओरसे प्रज्वलित मशालोंसे लोग ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि वादलों के विना नक्षत्रोंसे आकाश शोभित होताहै २७ इस प्रकारसे गिरे हुये रत्नजटित बाजूबन्दों से पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि वर्षाऋतुमें विजलियोंसे आकाश शोभित होताहै २८ इसके पीछे कर्णके पुत्रसे भयभीत सोमक ऐसे भागे जैसे कि तारा सम्बन्धी युद्धमें इन्द्रकेभयसे भयातुर दानव लोग भागते हैं २९ हे महाराज युद्धमें उसके हाथसे पीड़ावान् भागते और मशालोंसे प्रकाशित वहसोमक शोभायमानहुये ३० हे भरतबंशी कर्णका पुत्रभी युद्धमें उनको विजय करके ऐसा शोभित हुआ जैसे कि मध्याह्नके समय वर्त्तमान उष्ण किरणवाला सूर्य्य शोभित होताहै ३१ आपके अन्य उन हजारों राजाओंके मध्यमें प्रतापवान् वृषसेन अकेलाही सबको तपाताहुआ नियत हुआ ३२ वह वृषसेन युद्धमें सोमकों के शूर महारथियोंको विजय करके शीघ्रही वहां गया जहांपर कि राजा युधिष्ठिरथे ३३ इसके पीछे आपकापुत्र महारथी दुश्शासन उस क्रोधयुक्त युद्धमें शत्रुओं के नाश करनेवाले प्रतिविन्ध्य के सम्मुखगया ३४ हे राजा उन दोनोंका वह समागम ऐसा आश्चर्य्यकारी हुआ जैसे कि वादलों से रहित आकाश में बुध और सूर्य्यका संयोग होता है ३५ दुश्शासन ने युद्धमें कठिन कर्म्म करनेवाले प्रतिविन्ध्य को तीन वाणोंसे ललाटपर छेदा ३६ आपके अत्यन्त पराक्रमी धनुषधारी पुत्रके हाथ से अत्यन्त घायल महाबाहु प्रतिविन्ध्य शिखरधारी पर्व्वत के समान शोभायमान हुआ ३७ महारथी प्रतिविन्ध्यने युद्धमें दुश्शासन को नौ शायकों से छेदकर फिर सात वाणों से घायल किया ३८ हे भरतबंशी आपके पुत्रने वह कठिन कर्म्म किया कि प्रतिविन्ध्य के घोड़ों को अपने उग्रवाणों से गिराकर ३९ उस धनुषधारी की सारथी समेत ध्वजाको भी गिराया और रथको तिलों के समान खण्ड खण्ड किया ४० हे प्रभु इसके पीछे भी उस क्रोधयुक्त ने टेढ़े पर्व्ववाले वाणोंसे पताका, तूणीर, वागडोर और पोतरों को तिलके समान खण्ड खण्ड करके काटा ४१ फिर रथ से रहित

धनुष हाथमें लिये धर्मात्मा हजारों बाणोंको फैलाताहुआ आपके पुत्रसे युद्ध करने लगा ४२ आपके पुत्रने क्षुरप्रनाम बाणसे उसके धनुषको काटकर उस टूटे धनुषवाले को दश बाणों से पीड़ावान् किया ४३ फिर उसको रथसे रहित देखकर उसके महारथी भाई बड़े वेगसे उसके पीछे सेना समेत वर्त्तमान हुये ४४ हे महाराज उसके पीछे वह प्रतिविन्ध्य सुत सोमके प्रकाशमान रथपर सवारहुआ और धनुष को लेकर आपके पुत्रको घायल किया ४५ उस समय बड़ी सेनासमेत आपके सब शूरवीर आपके पुत्रको मध्यवर्त्ती करके युद्धमें सम्मुख वर्त्तमानहुये तदनन्तर भयकारी रात्रिके समय आपके शूरवीरों से और पाण्डवोंसे वह युद्ध जारीहुआ जो कि यमराज के पुरकी वृद्धि करनेवाला था ४६ । ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिघोररात्रियुद्धेशतोपरिएकोनसप्ततितमोऽध्यायः १६९ ॥

एकसौसत्तरका अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि क्रोधयुक्त शकुनी उस वेगवान् युद्ध में आपकी सेना के मारनेवाले नकुल के सम्मुख गया और तिष्ठ तिष्ठ शब्दको उच्चारण किया १ शत्रुता करनेवाले परस्पर मारनेके अभिलाषी उन दोनों बीरों ने कानतक खैंचकर छोड़ेहुये बाणोंसे परस्परमें घायल किया २ हे राजा जैसे कि नकुलने बाणों की वर्षा करी उसी प्रकार शकुनी नेभी गुरुकी शिक्षाको दिखलाया ३ हे महाराज तब युद्धमें बाणरूप कांटों से संयुक्त देह वह दोनों शूर ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि श्वाविध शललों से व्याप्त होकर शोभित होते हैं ४ अर्थात् सुनहरी पुङ्ख और सीधे चलनेवाले बाणों से टूटे कवच रुधिरसमूह से लिप्त वह दोनों बड़े युद्धमें शोभित हुये ५ सुवर्ण वर्ण और कल्पवृक्ष के तुल्य प्रफुल्लित किंशुकवृक्षके समान युद्धभूमिमें प्रकाशमान हुये ६ हे महाराज बहुत बाणोंसे भिदेहुये वहदोनों शूर युद्धमें ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि कांटोंसे युक्त शाल्मली वृक्षहोताहै ७ तदनन्तर अत्यन्य कुटिल दृष्टि खुलेहुये विस्तृत नेत्र क्रोधसे अत्यंत रक्तवर्ण परस्पर नाश करनेवाले दिखाई पड़े ८ अत्यन्त क्रोधयुक्त हँसतेहुये आपके सालेने अत्यन्त तीक्ष्णधार करणी नाम बाणसे माद्रीके पुत्र नकुलको हृदय पर छेदा ९ फिर आपके धनुषधारी सालेके हाथसे अत्यन्त घायल नकुल रथकी पृष्ठपर बैठगया और मूर्च्छितभी हुआ १० हे राजा शकुनी अत्यन्त शत्रुता कर-

नेवाले शत्रुको उस दशावाला देखकर ऐसे गर्जा जैसे कि वर्षाके प्रारंभमें बादल गर्जता है ११ उसके पीछे पाण्डवनन्दन नकुल सचेत होकर कालके समान मुखको चौड़ाकिये फिर शकुनीके सम्मुखगया १२ हे भरतर्षभ उस क्रोधयुक्त नकुलने शकुनीको साठबाणसे घायलकिया फिर उसको नाराच नाम सौबाणोंसे छातीपर छेदा १३ और उसके बाण समेत धनुषको मुष्टिकाके स्थानपर काट शीघ्रही ध्वजाको काटकर रथसे पृथ्वीपर गिराया १४ पाण्डवनन्दन नकुलने तीक्ष्ण तीव्रधार पीतरंग के बिशिख नाम एकबाण से दोनों जंघाओं को छेद कर १५ उस को ऐसे गिराया जैसे कि व्याधाके हाथसे सपक्ष बाज पक्षी गिराया जाता है हे महाराज तब अत्यन्त घायल वह शकुनी ध्वजा की लाठीको पकड़कर रथ के उपस्थपर ऐसे बैठगया जैसे कि कामी मनुष्य स्त्रीको पकड़ कर बैठता है १६ हे निष्पाप धृतराष्ट्र सारथी उस आपके सालेको अचेत और गिरा हुआ देखकर शीघ्रही रथकी सवारी से सेनामुख से दूर लेगया १७ उसके पीछे नकुल और जो उसके पीछे चलनेवाले थे धन्य धन्य शब्द को पुकारे शत्रुसंतापी नकुल युद्ध में शत्रुको विजयकरके क्रोधयुक्त होकर सारथी से बोला कि मुझको द्रोणाचार्य्य की सेनाके सम्मुख लेचल १८ हे राजा तब सारथी उस बुद्धिमान् नकुलके वचनको सुनकर उस स्थानको चला जहांपर कि द्रोणाचार्य्य जी वर्त्तमान थे १९ तब वह उपाय करनेवाले शारद्वत द्रोणाचार्य्य वेगसे युद्ध में अपने को चाहनेवाले शिखण्डी के सम्मुखगये २० हँसते हुये शिखण्डी ने द्रोणाचार्य्यकी सेना में आनेवाले शत्रुविजयी कृपाचार्य्य को नौभल्लों से छेदा २१ हे महाराज आपके पुत्रोंका हित करनेवाले कृपाचार्य्यने उसको पांचबाणोंसे छेदकर फिर बीसबाणोंसे छेदा २२ फिर उन दोनोंका युद्ध घोररूप और ऐसा भयानकहुआ जैसे कि देवासुरोंके युद्ध में शबर और देवराजका हुआ था २३ युद्ध में दुर्म्मद वीर महारथीने आकाश को बाणजालों से ऐसा व्याप्तकिया जैसे कि वर्षाऋतु में दो बादल करते हैं २४ फिर वह युद्ध स्वाभाविकही अत्यन्त घोररूप होगया युद्ध में शोभापानेवाले शूरवीरों की रात्रि कालरात्रि के समान घोररूप और भयानक हुई २५ हे महाराज फिर शिखण्डी ने गौतम कृपाचार्य्यके तैयार कियेहुये बड़े धनुषको विशिख नाम बाण समेत अर्द्धचन्द्रनाम बाणसे काटा २६ तब क्रोधयुक्त कृपाचार्य्यने भयानक और साफनोक तीक्ष्णधार कारीगरसे साफ

कीहुई शक्तिको उसके ऊपर फेंका २७ शिखण्डीने उस आतीहुई शक्तीको बहुत बाणोंसे काटा फिर वह प्रकाशित और चमकदार शक्ति प्रकाश करतीहुई पृथ्वी पर गिरपड़ी २८ रथियोंमें श्रेष्ठ कृपाचार्य्यने दूसरे धनुषको लेकर तीक्ष्ण बाणोंसे शिखण्डी को ढकदिया २९ उस यशस्वी कृपाचार्य्यके हाथसे युद्ध में ढकाहुआ वह रथियोंमें श्रेष्ठ शिखण्डी रथकी उपस्थपर बैठगया ३० हे भरतबंशी फिर शारद्वत कृपाचार्य्यने युद्ध में उसको पीड़ावान् देखकर मारने की अभिलाषा करते हुये बहुत बाणोंसे घायलकिया ३१ पांचाल और सोमकोंने द्रुपदके पुत्र महारथी को युद्धमें मुख फेरनेवाला देखकर चारों ओरसे मध्यवर्त्ती किया ३२ उसी प्रकार आपके पुत्रोंने बड़ी सेना समेत ब्राह्मणों में श्रेष्ठ कृपाचार्य्य को मध्यवर्त्ती किया इसके पीछे युद्ध जारीहुआ ३३ हे राजा युद्धमें परस्पर सम्मुख लड़नेवाले रथियोंका कठिन शब्द ऐसा हुआ जैसे कि गर्जनेवाले बादलों का शब्द होता है ३४ परस्पर सम्मुख दौड़नेवाले अश्वसवार और हाथियों की संग्राम भूमि बड़ी कठिन दिखाई पड़ी ३५ और दौड़नेवाले पत्तियों के चरणाघात से पृथ्वी ऐसी कंपित हुई जैसे कि भयसे पीड़ावान् स्त्री कंपायमान होती है ३६ हे राजा रथ रथियों को पाकर बड़े वेग से दौड़े और बहुतों ने ऐसे पकड़ लिया जैसे कि काक शलभानाम पक्षी को पकड़लेता है ३७ हे भरतबंशी इसी प्रकार उस युद्धमें प्रवृत्त मदोन्मत्त बड़ेहाथियोंने भी बड़े २ मतवाले हाथियोंको पकड़ लिया ३८ अश्वसवार ने अश्वसवार को और पत्तीने पदातीको परस्पर पाकर क्रोधसे एकको एकने जानेनहीं दिया ३९ उसरात्रिमें दौड़ते चलते और फिर लौटतेहुये सेनाओं के कठिन शब्दहुये ४० हे महाराज रथ हाथी और घोड़ोंके मध्यमें वह प्रकाशित मशालें ऐसी दिखाई पड़ीं जैसे कि आकाशसे गिरीहुई उल्का होती हैं ४१ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ राजा वह रात्रि युद्धके शिरपर मशालों से प्रकाशित दिनकेरूप होगई ४२ जैसे कि लोकका वर्त्तमान अन्धकार सूर्य्यकी किरणोंसे नाशको पाताहै उसीप्रकार जहां तहां प्रकाशित मशालोंसे भी बहुतसा अन्धकार दूरहोगया ४३ धूल और अन्धकारसे पूरितआकाश पृथ्वी दिशा और विदिशा प्रकाशसे फिर प्रकाशित हुई ४४ अस्त्र कवच और बड़ी मणियोंके सब प्रकाश उन मशालोंके प्रकाशसे अन्तर्हित प्रभाहोकर गुप्त होगये ४५ हे भरतवंशी रात्रिके समय उस युद्धके कोलाहल वर्त्तमान होनेपर

किसीने अपनेको भी। यह न जाना कि मैं कौनहूं ४६ आशय यहहै कि उसयुद्ध में मोहसे पिताने पुत्रको पुत्रने पिताको और इसीप्रकार मित्रने मित्रको भी मारा ४७ मामाने भानजे को भानजे ने मामाको जमाईने श्वशुर श्वशुरने जमाई और इतरने इतरको मारा ४८ रात्रि के समय वह युद्ध मर्य्यादासे रहित होकर भयभीतों के भयका उत्पन्न करनेवाला हुआ ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिघोररात्रिसंकुलयुद्धेशतोपरिसप्ततितमोऽध्यायः १७० ॥

एकसौइकहत्तरका अध्याय ॥

संजयबोले हे महाराज उस भयानक तुमुल युद्धके वर्त्तमान होनेपर धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यके सम्मुख वर्त्तमान हुआ १ उत्तम धनुषको चढ़ाता और वारंवार प्रत्यंचाको खैंचता हुआ द्रोणाचार्य्य के उस रथकी ओर दौड़ा जो कि सुवर्ण से अलंकृत था २ हे महाराज इसकेसाथी पांडवोंसमेत पांचालोंने द्रोणाचार्य्यके नाश करनेकी अभिलाषा से जातेहुये धृष्टद्युम्नको मध्यवर्त्ती करके द्रोणाचार्य्यको घेर लिया ३ आचार्य्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य को उसप्रकार से घिराहुआ देखकर सब ओरसे उपाय करनेवाले आपके पुत्रोंने युद्ध में द्रोणाचार्य्य को रक्षित किया ४ इसके पीछे वह दोनों सेनासागर रात्रिमें ऐसे भिड़गये जैसे कि वायुसे उठाये और व्याकुल जीववाले भयके उत्पन्न करनेवाले दो समुद्र होते हैं ५ इसके अनन्तर धृष्टद्युम्न शीघ्रही पांचबाणों से द्रोणाचार्य्यको हृदय पर घायल करके सिंहनादको गर्जा ६ हे राजा फिर द्रोणाचार्य्यने युद्धमें उसको पचीस बाणोंसे छेदकर दूसरे भल्लसे उसके बड़े शब्दवाले धनुषको काटा ७ हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यके हाथ से घायल धृष्टद्युम्नने दशनच्छदोंको काटकर शीघ्रही धनुषको त्यागकिया ८ उससमय क्रोधयुक्त प्रतापवान् धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यके नाश करनेकी इच्छासे दूसरे उत्तम धनुषको लिया ९ और शत्रुओं के वीरोंको मारनेवालेने अपने सुवर्णजटित धनुषको कानतक खैंचकर उसके द्वारा द्रोणाचार्य्यके नाशकरनेवाले घोर शायकको छोड़ा १० बड़े युद्धमें पराक्रमीके हाथसे छोड़ेहुये उस घोर बाणने उदयरूपी सूर्य्य के समान उस सेनाको प्रकाशित किया ११ हे राजा फिर देवता गन्धर्व और मनुष्योंने उस घोरबाण को देखकर युद्धमें इसवचनको कहा कि द्रोणाचार्य्य का कल्याण हो १२ फिर कर्णने हस्तलाघवता के

समान आचार्य्य जीके रथपर आतेहुये उस शायकको दश टुकड़े किया १३ हे राजा धनुषधारी कर्णके हाथसे बहुत प्रकारसे कटाहुआ वह बाण शीघ्रतासे ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बिनाविषवाला सर्पगिरताहै १४ इसकेपीछे कर्णने धृष्टद्युम्नको दशबाणोंसे अश्वत्थामाने पांचबाणों से और आप द्रोणाचार्य्यने सातबाणों से और उसीप्रकार दुश्शासनने तीनबाणोंसे घायलकिया १५ दुर्य्योधनने बीसबाणसे शकुनीनेपांचबाणसे तात्पर्य्य यहहै कि सब महारथियों ने शीघ्रता से धृष्टद्युम्नको छेदा १६हे राजा बड़े युद्ध में द्रोणाचार्य्य के निमित्त सात घोर बाणोंसे घायल उस धृष्टद्युम्नने वड़ी असम्भ्रमता अर्थात् सावधानीसे सबको तीन तीन बाणों से छेदा १७ अर्थात् द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा कर्ण और आपके पुत्र को घायलकिया उस धनुषधारी के हाथसे घायल उन रथियों में श्रेष्ठ हरएकने युद्ध में धृष्टद्युम्नको पांच पांच बाणों से घायल किया १८ हे राजा अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रुमसेनने एक बाणसे छेदकर शीघ्रही दूसरे तीन बाणों से भी छेदा और तिष्ठ तिष्ठ शब्दभी किया फिर धृष्टद्युम्नने उसी युद्धमें सीधे चलनेवाले तीक्ष्ण १९ सुनहरी पुङ्ख साफ प्राणोंके नाशक तीनबाणों से छेदकर बड़े पराक्रमी ने दूसरे भल्लसे सुबर्ण के कुण्डलधारी २० द्रुमसेनके शिरको शरीरसे काटा तब युद्ध में वह दोनों होठोंका काटनेवाला शिर पृथ्वीमें ऐसेगिरा २१ जैसे कि बड़े भारी बायु के वेगसे उखाड़ाहुआ ताल बृक्षका पक्काफल गिरताहै फिर उसबीरने तीक्ष्णधार वाले बाणों से उन शूरवीरों को छेदकर २२ अपूर्व युद्धकरनेवाले कर्णके धनुष को भल्लों से काटा कर्णनेभी उस प्रकार धनुष के टूटने को ऐसे नहीं सहा जैसे कि श्रीहनुमान्जीने लांगूल के अत्यन्त खण्डित होनेको नहीं सहाथा क्रोधसे रक्तनेत्र श्वास लेताहुआ वह कर्ण दूसरे धनुष को लेकर २३ । २४ बहुत से बाणोंसमेत उस महावली धृष्टद्युम्न के सम्मुखगया फिर उन रथियोंमें श्रेष्ठ छःशूरों ने कर्ण को क्रोधयुक्त देखकर शीघ्र मारने की इच्छा से धृष्टद्युम्न को घेरलिया २५ शूरों में बड़े बीर आपके छःशूरबीरों के आगे कियेहुये उस धृष्टद्युम्न को कालके मुखमें बर्त्तमान माना २६ फिर उसी समय यादव सात्यकी बाणोंको फैलाता पराक्रमी धृष्टद्युम्न के पास बर्त्तमान हुआ २७ उस बड़े धनुषधारी और युद्धमें दुर्म्मद आयेहुये सात्यकीको कर्ण ने सीधे चलनेवाले दश बाणोंसे छेदा २८ हे महाराज सात्यकी ने सब बीरोंके देखतेहुये उसको दश बाणों से छेदकर

चलाजा मत खड़ारह यह शब्द भी कहा २९ हे राजापराक्रमी सात्यकी और महात्मा कर्णका ऐसा युद्ध हुआ जैसे कि राजा बलि और देवराज इन्द्रका हुआथा ३० रथके शब्दसे क्षत्रियोंको भयभीत करनेवाले क्षत्रियों में श्रेष्ठ सात्यकीने कमल के समान मुख रखनेवाले कर्णको बाणोंसे छेदा ३१ हे महाराज वह पराक्रमी कर्ण धनुष के शब्दों से पृथ्वी को कम्पाताहुआ सात्यकी से युद्ध करनेलगा ३२ कर्ण ने विपाट, करणी, नाराच, बत्सदन्त, क्षुरप्र और अन्य नानाप्रकार के बाणों सेभी सात्यकी को छेदा ३३ उसी प्रकार वृष्णियों में अत्यन्त श्रेष्ठ युद्ध करनेवाले सात्यकी नेभी बाणों से कर्ण के ऊपर बर्षा करी वह दोनों का युद्ध समान हुआ ३४ इसके पीछे आपके पुत्रों ने और कवचधारी कर्ण के पुत्रने शीघ्रही चारोंओर से तीच्ण बाणों के द्वारा सात्यकी को छेदा ३५ हे समर्थ क्रोधयुक्त सात्यकी ने उन्होंके और कर्णके अस्त्रोंको अपने अस्त्रों से रोककर वृषसेन को छातीपर घायल किया ३६ हे राजा उस बाणसे घायल पराक्रमी वृषसेन धनुष को डालकर अचेतता से रथपर गिरपड़ा ३७ इसके पीछे पुत्रके शोकसे दुःखी कर्ण ने महारथी वृषसेन को मृतक जानकर सात्यकी को पीड़ावान् किया ३८ कर्णके हाथसे पीड़ित शीघ्रताकरनेवाले महारथी सात्यकीने कर्णको बहुतबाणोंसे बारंबार छेदा ३९ उसयादवने कर्णको दशबाणोंसे और वृषसेनको सात बाणों से छेदकर उन दोनोंके धनुषोंको हस्तत्राण समेत काटा ४० शत्रुके भयको उत्पन्न करनेवाले उन दोनों ने दूसरे धनुषको तैयार करके सात्यकी को तीच्ण धारवाले बाणों से सब ओरको छेदा ४१ हे राजा फिर उत्तम बीरोंके नाशकरने वाले उस युद्ध के वर्त्तमान होनेपर गाण्डीव धनुष का बड़ा शब्द सुना गया ४२ हे राजा उस रथके और गाण्डीव धनुष के शब्द को सुनकर कर्ण दुर्य्योधन से यह वचन बोला ४३ कि फिर बड़ा धनुषधारी अर्ज्जुन सब सेना को और उत्तम नरोत्तम पौरवों को मारकर उत्तम धनुषको फटकारता हुआ ४४ विजय करता है क्योंकि गाण्डीव धनुष के बड़े शब्द और रथ के शब्द ऐसे सुने जाते हैं जिस प्रकार गर्ज्जतेहुये इन्द्रकेशब्द होते हैं ४५ प्रत्यक्षमें अर्जुन अपने योग्य कर्म्मको करताहै हे राजा यह भरतवंशियोंकी सेना अनेकप्रकारसे छिन्न भिन्न कीजाती है ४६ बहुतसी छिन्नभिन्न सेना ऐसे नियत नहीं होतीहैं जैसेकि वायुसे कम्पायाहुआ बादलोंका जाल फटजाताहै और जिस प्रकार महासागरमें

टूटीहुई नौका नहीं नियत होती उसी प्रकार अर्ज्जुन को पाकर ४७ भागती है और गाण्डीव धनुषके भेदेहुये सैकड़ों बड़े २ शूरबीर लोगोंके बृहत शब्द सुने जाते हैं ४८ हे राजाओं में श्रेष्ठ दुर्य्योधन रात्रिमें अर्जुनके रथके पास हाहाकार का शब्द सिंहनाद और बहुत प्रकारके शब्दोंको सुनो ४९।५० और यह यादवों में श्रेष्ठ सात्यकी हमारे मध्यमें नियत है जो यह लक्ष्य माराजाता है अर्थात् सात्यकी स्वाधीन कियाजाताहै तो भी सब शत्रुओंको बिजयकरेंगे ५१ यह राजा द्रुपदका पुत्र सब ओरको रथियों में शूरबीरों से संवृत द्रोणाचार्य्य के साथ भिड़ा हुआहै ५२ जो हम सात्यकी को और पर्षतके पौत्र धृष्टद्युम्नके मारनेको समर्थ होयँ तो हमारी अवश्य बिजयहोय ५३ हे महाराज इनदोनों बीर और महारथी वृष्णी और पर्षदबंशियोंमें श्रेष्ठको अभिमन्युके समान घेरकर मारनेका उपायकरें ५४ हे भरतबंशी वह अर्ज्जुन सात्यकी को बहुतसे उत्तम कौरवोंके साथ भिड़ा हुआ जानकर द्रोणाचार्य्यके सम्मुख आताहै ५५ तबतक रथियोंमें श्रेष्ठ अत्यन्त उत्तम उत्तम शूरबीर लोग वहां जावो जबतक कि अर्ज्जुन बहुत योद्धाओं से घिराहुआ सात्यकी को न जाने ५६ और यह शूरबीर अति शीघ्रतासे बाणोंके छोड़ने में बिलम्ब न करें जिससे कि यहां यह माधव सात्यकी परलोकको जाय ५७ हे महाराज अच्छी रीतिसे कीहुई श्रेष्ठ नीतिको इसीप्रकारसे करो तब आप के पुत्रने कर्णके मतमें एकमत होकर शकुनीसे ऐसे कहा ५८ हे राजा जैसे कि इन्द्रनेयुद्धमें यशवान् बिष्णुसेकहाथा इससे मुख न फेरनेवाले दशहजार हाथियोंसे ५९ और दशीहजार रथियोंसे संवृतहोकर तुम बड़ी शीघ्रतासे अर्ज्जुनके सम्मुख जावो दुश्शासन,दुर्विषह,सुबाहु,दुःप्रधर्षण ६० यह सबलोग बहुतसे पतियों समेत आपके पीछे जायँगे हे महाबाहु मामाजी आप श्रीकृष्ण समेत अर्ज्जुन और धर्म्मराजको मारो और फिर इसी प्रकार भीमसेन समेत नकुल और सहदेव को भी मारो ६१ मेरी विजयकी आशा तुम्हीं में ऐसे नियतहै जैसे कि देवताओंकी विजयकी आशा देवराज इन्द्रमें होती है ६२ हे मामाजी तुम कुन्तीके पुत्रों को ऐसे मारो जैसे कि स्वामिकार्त्तिकजी ने असुरों को मारा था आपके पुत्रके इस प्रकार कहनेपर शकुनी पाण्डवों के सम्मुख गया ६३ हे समर्थ वह शकुनी बड़ी सेना और आपके पुत्रोंके साथ आपके पुत्र दुर्य्योधनके हितार्थ पांडवोंके भस्मीभूत करनेका अभिलाषी हुआ ६४ हे राजा इसके पीछे पाण्डवोंकी सेनापर शा-

कुनीके चढ़ाई करने में आपके शूरवीरोंका और शत्रुओंका युद्ध जारीहुआ६५ बड़ी सेनासे युक्त वह कर्ण युद्धमें हजारों बाणोंको छोड़ता शीघ्रही सात्यकी के सम्मुखगया ६६ और उसी प्रकार सब राजाओंने सात्यकी को संवृत किया उस के पीछे भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने धृष्टद्युम्नके रथपर जाकर ६७ चढ़ाईकरी हे भरतवं- शी तब वीर धृष्टद्युम्न और पांचालों समेत द्रोणाचार्य्यका युद्ध बड़ाभारीहुआ६८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकसप्ततितमोऽध्यायः १७१ ॥

एकसौबहत्तरका अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि तदनन्तर वह शीघ्रता करनेवाले युद्ध में दुर्म्मद अक्षमी क्रोधयुक्त होकर सब शूरवीर एक साथही सात्यकी के रथपर दौड़े १ हे राजा उ- न्होंने चांदी और सुवर्णसे अलंकृत तैयारहुये रथ अश्वसवार और हाथियों के द्वारा उसको चारों ओरसे घेरलिया २ फिर उन सब महारथियों ने उसको चारों ओरसे घेरकर सिंहनादों के साथ सात्यकी को घुड़का ३ वह शीघ्रता करनेवाले माधव सात्यकीके मारनेके इच्छावान् बड़े वीर अपने तीक्ष्ण बाणोंसे सत्यपराक्र- मी सात्यकीपर वर्षा करनेलगे शत्रुओंके वीरोंके मारनेवाले महारथी सात्यकी ने उन आतेहुओंको देखकर शीघ्रही उनको आड़े हाथों लिया और बहुत बाणोंको छोड़ा ४।५ वहांपर बड़े धनुषधारी और युद्धमें दुर्मद वीरसात्यकीने उदग्र और टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे शिरोंको काटा ६ माधवने क्षुरप्रनाम बाणों से आपके शस्त्र धारी शूरोंकी भुजा हाथियोंकी सूंड़ और घोड़ोंकी गर्द्दनोंको काटकर पृथ्वी को ढकदिया ७ हे भरतवंशी पड़ेहुये चामर और श्वेतछत्रों से हे प्रभु पृथ्वी ऐसी व्याप्तहुई जैसे कि नक्षत्रों से आकाश व्याप्त होताहै ८ युद्धमें सात्यकी के साथ लड़नेवाले उनवीरोंके ऐसे कठिन शब्दहुये जैसे कि प्रेतोंके क्रन्दित शब्दहोते हैं ९ उसबड़े शब्दसे पृथ्वी पूर्णहुई और रात्रिभी कठिन भयंकर रूप भयकी उ- त्पन्न करनेवालीहुई १० रोमहर्षण करनेवाली रात्रिमें सात्यकीके बाणोंसे घायल और छिन्नभिन्न सेनाको देखकर और बड़े शब्दको सुनकर ११ रथियों में श्रेष्ठ आपकापुत्र वारंवार सारथी से कहनेलगा कि जहांपर यह शब्दहै वहांपर घोड़ों को चलायमानकरो १२ उसकी आज्ञापाकर सारथी ने उन उत्तम घोड़ों को सात्यकीके रथपर चलायमान किया १३ इसके पीछे क्रोधयुक्त दृढ़ धनुषधारी हस्त-

लाघवी अपूर्व युद्धकरनेवाला दुर्योधन सात्यकीके सम्मुख दौड़ा १४ तिसपीछे माधव सात्यकीने खैंचकर छोड़ेहुये और रुधिरके भोजन करनेवाले बारहबाणसे दुर्योधनको छेदा १५ प्रथमही उसके बाणोंसे पीड़ावान् क्रोधयुक्त दुर्योधनने दश बाणोंसे सात्यकी को छेदा १६ हे भरतर्षभ इसके पीछे सब पांचालोंका और भरतवंशियों का बहुत उत्तम समान युद्धहुआ १७ युद्ध में क्रोधयुक्त सात्यकी नें आपके पुत्र महारथीको अस्सी शायकोंसे छातीपर व्यथितकिया १८ और युद्ध में अपने बाणों से उसके घोड़ों को यमलोक में पहुंचाया और शीघ्रही बाणसे सारथीको भी रथसे गिराया १९ हे राजा मृतक घोड़ेवाले रथपर नियत आपके पुत्रने तीक्ष्णधारवाले बाणोंको सात्यकीके रथपर छोड़ा २० तब सात्यकीने युद्ध में आपके पुत्रके फेंकेहुये उन पचास बाणोंको हस्तलाघवताके समानकाटा २१ फिर वेगवान् माधवने युद्धमें आपके पुत्रके बड़े धनुषको अपने भल्लसे मुष्टिका के स्थानपर काटा २२ वह सब प्रजाका स्वामी प्रभु रथ धनुषसे रहित होकर शीघ्रही कृतवर्मा के रथपर सवारहुआ २३ फिर रात्रिके मध्यमें दुर्य्योधनके मुखफेरने पर सात्यकीने बिशिखनाम बाणोंसे आपकी सेनाको घायलकिया २४ हे राजा शकुनी ने हजारों रथ हाथी और हजारों ही घोड़ोंसे अर्जुनको चारोंओरसे घेर कर नानाप्रकारके शस्त्रोंसे ढकदिया २५ उनकालके प्रेरित और अर्जुनके ऊपर सब अस्त्रों को छोड़नेवाले क्षत्रियों ने अर्जुन से युद्धकिया २६ बड़े नाशकर्त्ता दुःखपानेवाले अर्जुनने उन हजारों रथ हाथी और घोड़ोंको रोका २७ इसकेपीछे सौवलके पुत्र हँसतेहुये शूर शकुनीने तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे अर्जुनकोछेदा२८ और सौबाणसे उसके बड़े रथको रोका २९ हे भरतबंशी अर्जुनने उसको बीस बाणोंसे छेदा और अन्य २ बड़े २ धनुषधारियों को तीन तीन बाणों से घायल किया ३० उससमय अर्जुनने युद्धमें उन बाणोंके समूहोंको हटाकर आपके शूरबीरोंको ऐसे मारा जैसे कि बज्रधारी इन्द्र असुरों को मारता है ३१ फिर युद्ध में हाथीकी सूंड़ोंके समान टूटीहुई भुजाओं से आच्छादित पृथ्वी ऐसी प्रकाशित और शोभायमान हुई जैसे कि पांच मुख रखने वाले सर्पों से शोभित होती है ३२ मुकुट सुन्दरनाक सुन्दरकुंडल और घूरनेवाले नेत्रयुक्त दोनों होठोंके काटने वाले क्रोधयुक्त ३३ निष्क चूड़ामणिधारी प्यारे बचन बोलने वाले क्षत्रियों के शिरोंसे पृथ्वी ऐसी शोभित हुई जैसे कि कमलों से पूर्ण पहाड़ों से शोभायमान

होती है ३४ अर्जुन ने उस कठिन कर्म को करके फिर उग्र पराक्रम करने वाले शकुनी को पांचबाणोंसे छेदा ३५ और तीन बाणोंसे उलूकको छेदा और छिदे हुये उलूक ने वासुदेवजी को व्यथित किया ३६ और पृथ्वी को शब्दायमान करता बड़ेशब्द से गर्जा अर्जुन ने युद्धमें शकुनी के धनुषको शायकोंसे काटा ३७ और चारों घोड़ों को यमलोक में पहुंचाया हे भरतर्षभ फिर शकुनी रथसे उतरकर शीघ्र उलूक के रथपर सवार हुआ हे राजा वह दोनों महारथी पिता पुत्र एक रथपर सवारहुये ३८। ३९ फिर अर्ज्जुनको दोनोंने बाणोंसे ऐसा सींचा जैसे कि दो बादल जलोंसे पर्व्वत को सींचते हैं हे महाराज तब पाण्डव अर्ज्जुनने तीक्ष्णधार बाणोंसे उन दोनोंको घायलकरके ४० आपकी सेनाको भगादिया और बाणोंसे ऐसा छिन्नभिन्न किया जैसे कि हवासे बादल चारों ओरको तिरबिर होजाते हैं ४१ हे राजा इसप्रकारसे सेना इधर उधरहुई तब रात्रिके समय वह घायल सेना ४२ भयसे पीड़ित सब दिशाओंको देखतीहुई भागी युद्ध में कोई तो सवारियोंको छोड़कर कोई सवारियों को चलायमान करते ४३ उस कठिन अन्धकारमें भयसे महाव्याकुल चारों ओरको दौड़े हे भरतर्षभ युद्धमें आपके शूरवीरोंको विजयकरके ४४ प्रसन्नचित्त अर्ज्जुन और वासुदेवजी ने शंखों को बजाया और धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यको तीन बाणसे छेदकर ४५ शीघ्रही धनुषकी प्रत्यंचाको तीक्ष्ण बाणसे काटा क्षत्रियों के मर्द्दन करनेवाले शूर द्रोणाचार्य्य ने उस धनुषको पृथ्वीपर रखकर ४६ वेगवान् बलवान् दूसरे धनुषको लिया हे राजा उसके पीछे द्रोणाचार्य्यने धृष्टद्युम्नको सातबाणोंसे छेदकर ४७ युद्धमें पांचबाणों से सारथीको छेदा फिर महारथी धृष्टद्युम्नने शीघ्रही रथियों के द्वारा उनको हटा कर ४८ कौरवीय सेनाको ऐसे विजयकिया जैसे कि आसुरी सेनाको इन्द्र विजय करताहै हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र आपके पुत्रकी उस सेनाके घायल और मारे जाने पर ४९ घोर और रुधिरसमूहसे लहराती हुई वह नदीजारीहुई जो कि दोनोंसेनाओंके मध्यमें मनुष्य घोड़े और हाथियोंकी बहानेवालीथी ५० जैसे कि यमराजके पुरमें वैतरणी नदी है वैसीही वह भी नदी हुई फिर तेजस्वी प्रतापवान् धृष्टद्युम्न उससेनाको भगाकर ५१ ऐसे सम्मुख दौड़ा जैसे कि इन्द्र देवताके समूहों में दौड़ता है इसके पीछे धृष्टद्युम्न और शिखण्डीने महाशंखोंको बजाया ५२ नकुल, सहदेव, सात्यकी, पांडव भीमसेन इन महारथियों ने आपके हजारों रथोंको विजय

करके ५३ विजयसे शोभा पानेवाले युद्धमें मतवाले पांडवोंने आपके पुत्र कर्ण शूर द्रोणाचार्य्य और अश्वत्थामाके देखते सिंहनाद किये ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिद्विसप्ततितमोऽध्यायः १७२॥

एकसौतिहत्तरका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा महात्माओं के हाथसे मारी हुई और भगी हुई अपनी सेनाको देखकर क्रोधसे पूर्ण आपका पुत्र १ अकस्मात् बुद्धिमानों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य और कर्णके पास जाकर क्रोधके बशीभूत वार्त्ताओंका जाननेवाला इसवचनको बोला २ यहां युद्धमें अर्जुन के हाथसे जयद्रथको मराहुआ देखकर क्रोधयुक्त आपके साथ लड़ाई जारीहुई ३ पांडवोंकी सेनासे मेरी सेनाका नाश देखकर उस सेनाके बिजयमें सामर्थ्यवान् होकर तुम सबलोग असामर्थों के समान दृष्टिगोचरहुये ४ जो मुझको आप त्यागने के ही योग्य जानते थे तो हे बड़ाई देनेवाले मैं इसबातके भी सुननेके योग्य न था कि हमदोनों युद्धमें पांडवोंको बिजय करेंगे ५ मैं तभी आप लोगोंसे स्वीकृत वचनों को सुनकर पांडवों के साथमें इस शूरबीरोंकी नाशकारी शत्रुताको नहीं करता ६ हे श्रेष्ठ पराक्रमी पुरुषोत्तमो जो मैं आपलोगों से त्यागने के योग्य नहींहूं तो अपनी योग्यता के पराक्रम से युद्धकरो ७ आपके पुत्रके वचनरूपी कोड़ेसे घायल सर्पोंके समान चलायमान उन दोनों वीरोंने युद्धको जारी किया ८ इसके पीछे रथियोंमें श्रेष्ठ लोकके धनुषधारी वह दोनों युद्धमें उन पांडवोंके सम्मुख दौड़े जिनमें कि मुख्य सात्यकी था ९ उसीप्रकार सेनासे युक्त पांडव भी उन एकसाथ वारंवार गर्जनेवाले दोनों बीरोंके सम्मुख वर्त्तमानहुये १० इसके पीछे बड़े धनुषधारी सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्यने दश बाणोंसे शीघ्रतापूर्वक सात्यकीको घायलकिया ११ कर्णने भी दशबाणोंसे आपकेपुत्रने सातबाणसे वृषसेनने दश बाणोंसे शकुनीने सात बाणों से १२ इनसबने दुर्य्योधनके रोने पीटनेसे सात्यकीको चारोंओरसे घायलकिया युद्धमें पांडवीसेनाके मारनेवाले द्रोणाचार्य्य को देखकर १३ सोमक लोग चारोंओर से बाणोंकी वर्षा से शीघ्र पीड़ावान्हुये हे राजा वहां द्रोणाचार्य्य ने क्षत्रियोंके प्राणोंको ऐसे हरा १४ जैसे कि किरणोंके द्वारा सूर्य्य देवता चारोंओर के अन्धकार को हरते हैं द्रोणाचार्य्य से घायल पर-

स्पर पुकारनेवाले पाञ्चालों के १५ बड़े शब्द सुनेगये कोई पुत्रोंको कोई पिता-ओंको कोई भाई मामाको १६ भानजों को समान अवस्थावालों को नातेदार और बान्धवों को छोड़ छोड़ कर जीवन के इच्छावान् होकर शीघ्रता से जातेथे १७ बहुत से मेहसे अचेत होकर उनके सम्मुख गये और पाण्डवों के बहुत से शूरवीर परलोककोगये १८ हे राजा इसप्रकार महात्माके हाथसे पीड़ावान् पांडवी सेनाके लोग रात्रिके समय हज़ारों मशालोंको छोड़कर १९ भीमसेन, अर्ज्जुन, श्रीकृष्ण,नकुल,सहदेव और युधिष्ठिर के देखतेहुयेभागे २० अन्धकार से लोक को व्याप्त होनेपर कुछनहीं जानागया कौरवों के प्रकाश से दूसरे कौरव दिखाई पड़ते थे २१ हे राजा बहुतशायकोंको फैलानेवाले महारथीकर्ण और द्रोणाचार्य्यने उस भगीहुई सेनाको देखकर पीछेकी ओरसे मारा २२ पाञ्चालोंके छिन्नभिन्नहोने और सब ओरसे बिनाशवान् होनेपर प्रसन्नचित्त श्रीकृष्ण जी अर्ज्जुन से बोले २३ कि बड़े धनुषधारी कर्ण और द्रोणाचार्य्यने एकसाथ इन धृष्टद्युम्न सात्यकी और पांचालों को शायकों से कठिन घायल किया २४ हे अर्ज्जुन इन दोनोंके बाणोंकी बर्षा से हमारे महारथी लोग इधर उधर होगये और रोकनेसे भी यह सेना नहीं रुकती है २५ अर्ज्जुन और केशवजी उस सेनाको भगीहुई देखकर बोले कि हे पाण्डव तुम भयभीत होकर मत भागो भयको त्याग करो २६ अच्छे प्रकार शस्त्रों के उठानेवाली सब अलंकृत सेना समेत हम दोनों उन द्रोणाचार्य्य और कर्णको और वहदोनों हमारे पीड़ा देनेको प्रवृत्तहैं २७ यह दोनों पराक्रमी शूर अस्त्रज्ञ विजयसे शोभा पानेवाले इस रात्रिमें आपकी सेनासे अलग होकर नाश करेंगे २८ उन दोनों के इस प्रकार वार्त्तालाप करते भयकारी कर्म्म करने-वाले महाबली उत्तम शूरवीर भीमसेन ने शीघ्रही सेनाको लौटाकर चढ़ाई करी २९ हे राजा वह श्रीकृष्ण जी आतेहुये भीमसेनको देखकर पाण्डव अर्ज्जुनको प्रसन्न करतेहुये फिर बोले ३० कि युद्धमें प्रशंसनीय यह भीमसेन सोमक और पाण्डवों को साथ लिये बड़े वेगसे महारथी कर्ण और द्रोणाचार्य्य के सम्मुख व-र्त्तमान हुआहै ३१ हे पाण्डवनन्दन अर्ज्जुन इसभीमसेन और महारथी पांचा-लोंके साथ तुमभी सब सेनाओं के विश्वास के निमित्त युद्धकरो ३२ उसकेपीछे वह दोनों पुरुषोत्तम माधव और पाण्डव द्रोणाचार्य्य और कर्ण को पाकर युद्ध के शिरपर नियत हुये ३३ सञ्जय बोले कि पीछेसे युधिष्ठिरकी वह बड़ी सेना

भी लौटआई फिर द्रोणाचार्य्य और कर्णने युद्धमें शत्रुओंको मर्द्दनकिया ३४ हे राजा रात्रिके समय वह बड़ा कठिन युद्ध ऐसा हुआ जैसे चन्द्रोदयके समय दो सागरोंका परस्पर सङ्घट्टन होताहै ३५ उसकेपीछे आपकी सेनाकेलोग बिक्षिप्तों के समान हाथों से मशालोंको छोड़कर पृथक् पृथक् पाण्डवों से युद्ध करने लगे ३६ धूल और अन्धकारसे युक्त अत्यन्त भयानक लोकके होनेपर बिजयके चाहनेवाले शूरबीर केवल नाम और गोत्रके द्वारा युद्ध करने लगे ३७ हे महाराज प्रहार करनेवाले राजाओं से सुनायेहुये नाम युद्धमें ऐसे सुनेगये जैसे कि स्वयम्बरमें सुनाये जाते हैं ३८ अकस्मात् सेनाका शब्द बन्द होगया फिर क्रोधयुक्त युद्धकर्त्ता बिजयवाले और पराजित लोगोंके भी बड़ेशब्द हुये ३९ हे कौरवों में श्रेष्ठ जहां जहां मशालें दिखाई पड़ीं वहां वहां शूरबीर लोग पतङ्गों के समान गिरे ४० हे राजेन्द्र इस प्रकारसे युद्ध करनेवाले पाण्डव और सब कौरवोंकी वह बड़ी रात्रि महादारुण हुई ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरित्रिसप्ततितमोऽध्यायः १७३ ॥

एकसौचौहत्तरका अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि इसके पीछे शत्रुओं के मारनेवाले कर्ण ने धृष्टद्युम्न को युद्धमें देखकर मर्म्मभेदी दश बाणोंसे छातीपर घायल किया १ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र फिर प्रसन्नचित्त धृष्टद्युम्नने भी शीघ्रही दशशायकों से उसको घायल किया और तिष्ठ तिष्ठ बचनभी कहा २ उन दोनों महारथियोंने युद्ध में बाणोंसे परस्पर ढककर फिर कानतक खैंचेहुये शायकों से घोड़े परस्पर छेदा ३ इसके अनन्तर कर्णने युद्धमें शायकोंसे पांचालदेशियों में श्रेष्ठ धृष्टद्युम्नके सारथी और चारों घोड़ों को छेदा ४ और तीक्ष्ण बाणों से अत्यन्त श्रेष्ठ धनुष को भी काटा और भल्लसे उसके सारथीको रथकी नीड़से गिरादिया ५ रथसे रहित मृतक घोड़े और सारथीवाले धृष्टद्युम्नने घोर परिघको लेकर कर्णके घोड़ोंको पीसडाला ६ इसके पीछे बिषैले सर्प्पके समान उसके वहुत बाणोंसे घायल पदाती होकर युधिष्ठिर की सेना में चलागया ७ हे श्रेष्ठ वहां जाकर वह सहदेव के रथपर सवारहुआ और कर्ण की ओरको जाने का अभिलाषी हुआ तब युधिष्ठिरने उसको वहां जानेसे रोका ८ फिर बड़े तेजस्वी कर्ण सिंहनादसे मिलेहुये धनुषके शब्द को

करके बड़े वेगसे शंखको बजाया ९ युद्धमें धृष्टद्युम्नको पराजित देखकर वह म-
हारथी पांचाल सोमकों समेत क्रोधयुक्त हुये १० वह सब कर्णके मारने के लिये
शस्त्रों को लेकर मृत्युका भय त्याग कर्णसे युद्धाभिलाषी होकर चले ११ सारथी
ने कर्णके रथ में दूसरे घोड़ोंको जोड़ा जो कि शंखवर्ण महावेगवान् और अच्छे
लोगोंके सवार करने के योग्य सिन्धुदेशी थे १२ घायल और लक्ष्यभेदी कर्णने
पांचालोंके महारथियों को वाणोंसे ऐसा पीड़ावान् किया जैसे कि बादल पर्व्वत
को करताहै १३ तब पांचालों की वह बड़ी सेना कर्णके हाथसे पीड़ित और अ-
त्यन्त भयभीत होकर ऐसे भागी जैसे कि सिंहसे पीड़ित और भयभीत मृग भा-
गते हैं १४ तब मनुष्य जहां तहां हाथी घोड़े और रथोंसे पृथ्वीपर पड़ेहुये शी-
घ्रतासे दिखाई पड़े १५ उस कर्णने बड़े युद्धमें क्षुरप्रनाम बाणोंसे दौड़तेहुये शूर-
वीरोंकी भुजा और कुण्डलधारी शिरोंको काटा १६ हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र और
वहुतसे हाथी के सवार अश्वसवार और पदातियों की जंघाओं को काटा १७
युद्धमें दौड़तेहुये महारथियोंने अपने अंग और सवारियोंका टूटना नहीं जाना
१८ युद्ध में घायल पांचालों ने सृंजियों समेत बनस्पतिके हिलनेसे भी कर्णको
माना १९ और युद्ध में दौड़ते और अचेत अपने शूरवीरोंको भी कर्णही माना
अर्थात् उससे भयभीत होकर वह भागे २० हे भरतवंशी कर्ण बड़ी शीघ्रतासे उन
वाणोंको छोड़ता पृथक् और भागीहुई सेनाके पीछे दौड़ा २१ महात्मा कर्ण से
पृथक्हुये और परस्पर देखनेवाले अचेत होकर वहलोग खड़े होनेको भी समर्थ
नहींहुये २२ हे राजा कर्ण और द्रोणाचार्य्यके उत्तम वाणोंसे घायल पांचाललोग
सब दिशाओंको भागे २३ उसके पीछे राजा युधिष्ठिर अपनी सेनाको भगाहुआ
देखकर और हटजानेका विचार करके अर्ज्जुनसे यह वचन बोला २४ कि धनु-
षधारी रात्रिके समय सूर्य्यके समान तपानेवाले बड़े पराक्रमी कर्णको देखो २५
हे अर्जुन कर्णके शायकोंसे घायल अनाथोंके समान पुकारनेवाले तेरे बान्धवों
के यह शब्द वारम्वार सुनेजातेहैं २६ हे अर्जुन जो कि वाणोंके चढ़ाते और छो-
ड़तेहुये इसकर्णके अन्तरको नहीं देखताहूं इससे निश्चयकरके यह हमारा विना-
शकरेगा २७ जो यहां समयके अनुसार देखकरना देखतेहो हे अर्जुन अव कर्णके
निमित्त जो करना उचितहै उसको अवश्यकरो २८ हे महाराज इसप्रकार युधि-
ष्ठिरके वचनों को सुनकर अर्ज्जुन श्रीकृष्णजीसे वोले कि अव राजा युधिष्ठिर

कर्णके पराक्रमसे भयभीत हैं २९ ऐसी दशामें आप शीघ्रही समयके अनुसार कर्णकी सेनामें बारम्बार निश्चयकरो अपनी सेना भागीजाती है ३० हे भरतवंशी द्रोणाचार्य्यके शायकोंसे घायल और पृथक्होकर कर्णसे भयभीत सेनाके लोगोंका नियतहोना वर्त्तमान नहीं है ३१ उसी प्रकार निर्भयके समान घूमते और घायल महारथियोंको तीक्ष्णधार बाणोंसे हटानेवाले कर्णको देखताहूं ३२ हे वृष्णियों में श्रेष्ठ प्रत्यक्षमें इस युद्धके मुख्य भागमें घूमनेवाले कर्णके सहनेको मैं ऐसे समर्थ नहीं होताहूं जैसे कि चरणके स्पर्शसे सर्पके सहनेको समर्थ नहीं होसक्ते ३३ सो आप शीघ्रही वहां चलो जहांपर महारथी कर्णहै हे मधुसूदनजी मैं उसको मारूंगा अथवा वही मुझको मारेगा ३४ श्रीवासुदेवजी बोले कि हे अर्जुन मैं बुद्धिसे परे पराक्रमी नरोत्तम युद्धमें घूमनेवाले कर्णको देवराज इन्द्रके समान देखताहूं ३५ हे पुरुषोत्तम अर्ज्जुन तेरे और साक्षात् घटोत्कच के सिवाय युद्धमें इससे सम्मुखता करनेवाला दूसरा कोई पुरुष नहीं है ३६ हे निष्पाप महाबाहु मैं युद्धमें तब तक तेरी सम्मुखता कर्ण के साथ समय के अनुसार नहीं मानताहूं ३७ जबतक कि बड़ी उल्काके समान प्रकाशमान इन्द्रकी शक्ती उसके पास नियतहै हे महाबाहु यह शक्ती तेरे निमित्त युद्धमें कर्णकी ओरसे ३८ रक्षित कीजाती है और वह भयानक रूपको ध्यान करती है महाबली घटोत्कचही कर्णके सम्मुख जाय ३९ वह देवता के समान पराक्रमी महाबली भीमसेन से उत्पन्न हुआ है उसके पास दिव्य राक्षस असुर अस्त्रहैं ४० वह घटोत्कच सदैव तुमपर प्रीतिकरनेवाला और भला चाहनेवाला है और युद्धमें वह निस्सन्देह कर्णको विजय करेगा ४१ इस प्रकार श्रीकृष्णजी के वचनों को सुनकर महाबाहु कमललोचन अर्ज्जुनने उस राक्षस को बुलाया और वह आगे आकर प्रकट हुआ ४२ हे राजा फिर वह कवचधारी बाण खड्ग और धनुषहाथमें रखनेवाला घटोत्कच श्रीकृष्ण और पांडव अर्जुनको नमस्कार करके ४३ श्रीकृष्णजीसे बोला कि हे मधुसूदनजी मैं घटोत्कचहूं मुझको आज्ञादीजिये उसके पीछे हँसतेहुये श्रीकृष्णजी उस प्रकाशित मुख और कुंडलधारी घटोत्कच से बोले ४४ कि हे पुत्र घटोत्कच जो मैं तुझसे कहताहूं उसको तू समझ अब यह तेरे पराक्रम का समय आपहुँचा है दूसरेका नहीं है ४५ सो तुम डूबतेहुये पाण्डवों की नौकाहो तेरे अस्त्र अनेक प्रकारके हैं और तुझमें राक्षसी मायाहै ४६ हे हिडम्बाके पुत्र युद्ध के मुखपर कर्णके हाथसे

पृथक् होनेवाली पांडवोंकी सेनाको ऐसे देखो जैसे कि ग्वालियोंके हाथसे गौवें होती हैं ४७ यह बड़ा धनुषधारी बुद्धिमान् दृढ़ पराक्रमी कर्ण पाण्डवोंकी सेनाओंमें उत्तम २ क्षत्रियों को मारता है ४८ उस दृढ़ धनुपधारी के बाणों की बड़ी वर्षा होरही है और बाणों की किरणों से पीड़ित शूरवीर उसके सम्मुख खड़े होनेको भी समर्थ नहीं होसक्के हैं ४९ रात्रिके समय कर्णके बाणोंसे पीड़ावान् वह पाञ्चाल ऐसे भागते हैं जैसे कि सिंहसे पीड़ावान् मृग भागते हैं ५० हे भयानक पराक्रमी तेरे सिवाय दूसरा शूरवीर युद्ध में इस अत्यन्त वृद्धियुक्त कर्णका रोकनेवाला कोई वर्त्तमान नहीं है ५१ हे महाबाहु पुरुषोत्तम सो तुम यहां मामा और पिताके तेज बल और अपनेयोग्य तेज और अस्त्रबलके समान कामकरो ५२ हे घटोत्कच मनुष्य इसी निमित्त पुत्रको चाहते हैं वह पुत्र क्यों नहीं दुःखसे तारेगा इस हेतुसे तुम दुःखसे पाण्डवों को तारो ५३ हे घटोत्कच पितालोग अपने मनोरथ सिद्ध करने के निमित्त ऐसे अपने पुत्रको चाहते हैं जो कि प्रियकारी होकर इस लोकसे परलोक में तारते हैं ५४ हे भीमनन्दन तुझ पराक्रमपूर्व्वक लड़नेवाले का अस्त्र बल बड़ा भयानक है और तेरी मायाभी कठिनता से तरनेके योग्यहै ५५ हे शत्रुओं के तपानेवाले रात्रिमें कर्ण के शायकों से छिन्नभिन्न और धृतराष्ट्र के पुत्रों में डूबनेवाले पाण्डवों के तुमहीं पार पहुंचानेवाले हो ५६ और रात्रिमेंही राक्षस बड़े पराक्रमी बलवान् अजेय शूर और सिंहके समान चढ़ाई करनेवाले होतेहैं ५७ । ५८ रात्रिमें बड़ेधनुपधारी कर्णको अपनी माया से मारो और पांडवलोग जिनमें कि मुख्य धृष्टद्युम्न हैं वह द्रोणाचार्य्य को मारेंगे संजयबोले कि शत्रुविजयी वह कौरव अर्जुनभी केशवजीके वचनोंको सुनकर घटोत्कच राक्षससेबोला ५९ कि हे घटोत्कच तुम और लम्बी भुजावाला सात्यकी और पांडव भीमसेन सब सेनाओंमें मुझसे प्रशंसनीय और अंगीकृतहैं ६० सो तुम कर्णके सम्मुखहोकर रात्रिमें द्वैरथ युद्धकरो महारथी सात्यकी तेरा पृष्ठरक्षक होगा ६१ सात्यकीकी सहायता से तुम युद्धमें कर्णको ऐसे मारो जैसे कि पूर्व्व समय में इन्द्रने स्वामिकार्त्तिकजी की सहायतासे युद्धभूमि में तारकासुरको मारा था ६२ घटोत्कच बोला कि हे भरतवंशी मैं अकेलाही कर्णके मारने को समर्थहूं और द्रोणाचार्य्यके भी मारनेको बहुतहूं और अस्त्रज्ञ महात्मा अन्य शूरवीरों के लिये भी बहुतहूं ६३ अब मैं रात्रिमें कर्णसे वह युद्ध करूंगा जिसको मनुष्य तब

क वर्णनकरेंगे जबतक कि पृथ्वी नियत रहैगी ६४ राक्षसीधर्म में नियतहोकर मैं इस युद्धमें किसी शूरवीर को नहीं छोड़ूंगा न भयभीतों को न हाथ जोड़ने वालों को अर्थात् सवहीको विनामारे नहींछोड़ूंगा ६५ संजय बोले कि शत्रुओं के वीरोंका मारनेवाला महाबाहु घटोत्कच इसप्रकारसे कहकर आपकी सेनाको भयभीत करता तुमुलयुद्धमें कर्णके सम्मुख गया ६६ हँसतेहुये कर्ण ने उस अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रकाशितमुख प्रकाशमान केश रखनेवाले आतेहुये घटोत्कच को रोका ६७ हे नरोत्तम युद्धमें गर्जनेवाले उन दोनों राक्षस और कर्णका युद्ध ऐसाहुआ जैसा कि इन्द्र और प्रह्लादका हुआथा ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिचतुस्सप्ततितमोऽध्यायः १७४ ॥

एकसौपचहत्तरका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा इसप्रकार योग्य और कर्ण के मारने के अभिलाषी कर्णके रथपर आतेहुये घटोत्कचको देखकर १ वहां आपका पुत्र दुर्य्योधन दुश्शासनसे यह वचन बोला कि यह राक्षस युद्धमें कर्णके पराक्रम को देखकर २ शीघ्रता से कर्णके सम्मुख आताहै सो तुम शीघ्रही उस महारथीको रोको बड़ी सेनासे युक्तहोकर वहां जावो जहांपर महाबली ३ सूर्यकापुत्र कर्ण राक्षसके साथ युद्ध करताहै हे बड़ाई देनेवाले युद्धमें कुशल सेनाको साथ लेकर तुम कर्णकी रक्षाकरो ४ नहीं तो भूलसे घोर राक्षस कर्णका बिनाश करेगा हे राजा इसी अन्तर में जटासुरका बेटा पराक्रमी ५ प्रहारकर्त्ताओं में श्रेष्ठ दुर्योधन के पास आकर बोला कि हे दुर्य्योधन तेरी आज्ञापाकर मैं तेरे शत्रु पाण्डव जोकि प्रसिद्ध और युद्धमें दुर्मदहैं उनको उनके सबसाथियों समेत मारना चाहताहूं पूर्वसमय में मेरा पिता जटासुर नाम राक्षस ६।७ राक्षसों का मारनेवाला कर्म प्रकटकरके पाण्डवों के बाणों से गिरायागया शत्रुओं के रुधिर और मांसकी पूजासे उसका बदला चाहताहूं हे राजेन्द्र मुझको आज्ञादेने को योग्यहो ८ उसकेपीछे प्रसन्न और प्रीतिमान् होकर राजा दुर्योधन बारम्बार बोला कि मैं द्रोणाचार्य और कर्ण आदिके साथ शत्रुओं के मारनेमें पूराहूं ९ तुम मेरी आज्ञासे जाकर उस राक्षस और मनुष्यसे उत्पन्नहोनेवाले निर्दयकर्मी घटोत्कच राक्षसको मारो १० सदैव पाण्डवों के शुभचिंतक हाथी घोड़े और रथोंके मारनेवाले और आकाश में व-

समान राक्षसको युद्धमें यमलोक को पहुँचावो ११ उस बड़े शरीरवाले जटासुर के पुत्रने बहुत अच्छा कहकर भीमसेन के पुत्र घटोत्कच को बुलाकर नानाप्रकार के शस्त्रोंसे ढकदिया १२ अकेले घटोत्कच ने अलंबुष कर्ण और कठिनता से तरनेके योग्य कौरवी सेनाको ऐसे मथडाला जैसे कि बड़ी वायु बादलों को मथती है १३ उसकेपीछे अलंबुष ने राक्षसकी माया और बलको देखकर बड़े २ नानारूपवाले बाणसमूहों से घटोत्कच को घायल किया १४ महाबली राक्षसने घटोत्कचको बहुत बाणोंसे छेदकर पाण्डवोंकी सेनाको बाणोंकी वर्षासे भगाया १५ हे भरतबंशी उसके पीछे उस राक्षस के हाथसे भगीहुई पाण्डवीसेना रात्रि में ऐसे छिन्नभिन्न होगई जैसे कि बायुसे आघातित बादल इधरउधर होजाते हैं १६ हे राजा इसीप्रकार घटोत्कच के बाणों से घायल आपकी सेनाके लोग हजारों मशालों को छोड़कर रात्रिमें भागे १७ इसकेपीछे क्रोधयुक्त अलंबुपने घटोत्कच को बड़े युद्धमें दश बाणों से ऐसे घायलकिया जैसे कि अंकुश से बड़े हाथीको घायल करते हैं घटोत्कच ने उसके रथसारथी समेत सब शस्त्रोंको तिलके समान तोड़ा और अत्यन्त भयानक शब्दों से गर्जा इसके पीछे बाणोंके समूहोंसे कर्ण वा दूसरे हजारों कौरव और अलंबुषपर ऐसी वृष्टि करनेलगा जैसे कि मेरुपर्वत पर बादल बरसताहै १८।२० तब वो उस राक्षसके हाथसे पीड़ायुक्त कौरवीय सेना इधरउधर पृथक् होगई और परस्पर में पृथक् २ चतुरङ्गिणी सेनाका मर्द्दनकिया २१ हे महाराज युद्धमें क्रोधयुक्त रथ और सारथी से रहित अलंबुपने घटोत्कच को मुष्टिकाओंसे कठिन घायलकिया २२ उसकी मुष्टिकाओंसे घायल घटोत्कच ऐसे कंपित हुआ जैसे भूकम्प होने में गुल्मों के वृक्षोंका रखनेवाला पर्व्वत होता है २३ इसके पीछे उस क्रोधयुक्त घटोत्कचने परिघके समान शत्रुओंकी मारने वाली भुजाकी मुष्टिसे अलंबुप को अत्यन्त घायल २४ और मथन करके तीव्रतासे गिराया और इन्द्रध्वजा के समान रूपवाली दोनों भुजाओं से पृथ्वीपर मर्द्दन किया २५ अलंबुष ने भी युद्धमें घटोत्कच राक्षसको उठाया और गेरकर क्रोधसे पृथ्वीपर रगड़ा २६ उन बड़े शरीरवाले गर्जनेवाले घटोत्कच और अलंबुपका कठिनयुद्ध रोमहर्षण करनेवाला हुआ २७ परस्पर मारने के अभिलाषी मायाओं से पूर्ण बड़े पराक्रमी दोनों ऐसे युद्ध करनेलगे जैसे कि इन्द्र और बलिने किया था २८ अग्नि और जलके समूह होकर गरुड़ और तक्षकरूप हो

कर बादल और बड़ी वायुरूप होकर वज्र और पर्व्वत होकर २९ हाथी और शार्दूल होकर फिर राहु और सूर्य्य होकर युद्ध करनेलगे इसप्रकार से सैकड़ों माया करनेवाले परस्पर मारने के इच्छावान् ३० अलंबुष और घटोत्कच अत्यन्त युद्ध करनेवाले हुये परिघ गदा प्रास मुद्गर पट्टिश ३१ मूसल और पर्व्वतों के शिखरों से उन दोनोंने परस्पर घायल किया फिर पदाती रथ सवार बड़े मायावी राक्षसों में श्रेष्ठ वह दोनों घोड़े और हाथियों के साथ युद्ध करनेलगे हे राजा इस के पीछे घटोत्कच अलंबुष के मारनेकी इच्छासे ३२।३३ अत्यन्त क्रोधयुक्तहोकर उछला और बाजपक्षी के समान गिरकर बड़े शरीरवाले राक्षसाधिप अलंबुष को पकड़कर ३४ कुछ ऊंचा उठाकर पृथ्वीपर ऐसा मारा जैसे कि विष्णुने युद्ध में मयदैत्य को माराथा इसके पीछे बड़े पराक्रमी घटोत्कचने अपूर्व्बदर्शन खड्गको उठाकर उस फड़कते और युद्धमें गर्ज्जते रौद्र राक्षस के शरीरसे भयानक रूपवाले भयकारी शिरको ३५।३६ काटा हेमहाराज रुधिरलिप्त बालोंसमेत शत्रुके उस शिरको लेकर ३७ घटोत्कच शीघ्रही दुर्य्योधनके रथके समीप गया वहां मन्दमुसकान करता वह राक्षस पास जाकर ३८ भयानक मुख और बालों से युक्त शिर को उसके रथपर डालकर भयानक शब्दों से ऐसे गर्ज्जा जैसे कि वर्षाऋतुमें बादल गर्जता है ३९ और फिर दुर्य्योधन से यह बचन बोला कि यह तेरा बन्धु मरा और तुमने इसका पराक्रम देखा ४० अब तू कर्णकी और अपनी निष्ठाको देखेगा जो अपने धर्म्म अर्थ काम इन तीनोंको चाहता है ४१ खाली हाथ से राजा स्त्री और ब्राह्मणको नहीं देखना योग्य है तू तबतकही अत्यन्त प्रसन्नहोकर नियतरहै जबतक कि मैं कर्णको मारूं ४२ हे राजा वह घटोत्कच इसप्रकार से कहकर तीक्ष्णबाणों के समूहोंको फैलाता और कर्णके शिरपर छोड़ता कर्णके सम्मुख गया ४३ हे महाराज फिर युद्धभूमि में उस नर और राक्षस का युद्ध घोररूप महाभयानक आश्चर्य्यकारी हुआ ४४॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअलंबुषवधोनामशतोपरिपञ्चसप्ततितमोऽध्यायः १७५॥

एकसौछिहत्तरका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय सूर्य्य का पुत्र कर्ण और घटोत्कच राक्षस जो रात्रिमें भिड़े वह युद्ध कैसेप्रकार से हुआ १ उस राक्षसका कैसा रूपहुआ और

उसके घोड़े शस्त्र और रथ कैसे २ थे और उसके घोड़े रथ और ध्वजाओं का प्रमाण कितना २ था उसका कवच कैसाथा और आप कैसाथा हे संजय तुमसे मैं पूछताहूं तुम सावधानी से उसको वर्णनकरो ३ संजय बोले कि वह घटोत्कच रक्तनेत्र बड़ा शरीर लालमुख गम्भीर उदर खड़ेरोम शरीरका रंग पीत और पिंगलवर्ण हरितडाढ़ी मूंछ शंखके समान कान और बड़े २ नख रखनेवालाथा ४ कानतक फटाहुआ मुख तीक्ष्ण डाढ़ जिसके प्रत्येकभाग महाभयकारी थे बहुत बड़ी लालजिह्वा रक्तहोठ लंबी भृकुटी मोटीनाक ५ नीलाशरीर रक्तग्रीवा पर्व्वत के समान शरीरवाला बड़ाशरीर शिर और भुजाओंका रखनेवाला महाबली ६ मैला और कठोर शरीरका स्पर्शविकट बद्धपिंडक स्थूलस्फिग गम्भीरनाभि अत्यन्तस्थूल ७ बड़ामायावी बाजूबंदआदि हस्तभूषणवाला और जैसे कि पर्व्वत अग्निमाला को धारण करता है उसीप्रकार छातीपर निष्कको धारण करता ८ और उसका मुकुट स्वर्णमयी रत्नों से चित्रित अनेकरूपों से शोभित तोरणयुक्त नगरके बहिर्द्वाररूप उज्ज्वल मस्तककेऊपर शोभायमानथा ९ बालसूर्यकेसमान प्रकाशित दो कुंडल स्वर्णमयीमाला बड़ाप्रकाशित कांस्य कवचको धारणकियेथा १० सैकड़ों क्षुद्रघंटिकाओंसे शब्दायमान रक्तध्वजा पताकाओं से शोभित ऋक्षचर्म्म से मण्डित और अलंकृत अङ्ग और चारसौहाथ लम्बा महाविस्तृत बड़ा रथ ११ सब उत्तम शस्त्रोंसेयुक्त ध्वजाओंकी माला रखनेवाला आठचक्रों से शोभित बादलकेसमान गम्भीर शब्दवाला रथथा १२ और मतवाले हाथीकेसमान लालनेत्र भयकारी पराक्रमी यथेच्छाचारी वर्ण और वेगसेयुक्त सौघोड़े १३ घोर राक्षसको सवार करते थकावटसे रहित विपुलसटा नाम केशों से और स्कन्धों से युक्त वारम्बार हींसनेवाले थे उसकेसारथी प्रकाशित कुण्डलवाले विरूपाक्ष नाम राक्षस ने सूर्य्यकी किरणों के समान रस्सियों से युद्धमें घोड़ोंको पकड़ा १४ । १५ वह उसकेसाथ ऐसा नियतहुआ जैसे कि अरुण के साथ सूर्य्य और बड़ा पर्वत बड़े बादल से चिपटाहुआ होताहै १६ और रथपर सूर्य्यको स्पर्श करनेवाली बड़ी ध्वजा नियतथी रक्त और उत्तम अङ्गवाला कच्चामांस खानेवाला बड़ा भयानक गिद्ध उस ध्वजामें नियतथा १७ इन्द्रके वज्रकीसमान शब्दायमान दृढ़ प्रत्यंचा वाले और प्रत्यक्षमें बारहहाथ लम्बे धनुषको चलायमान करता १८ रथके अक्षके समान बाणोंसे सब दिशाओंको ढकता उसवीरोंकी नाशकरनेवाली रात्रिमें कर्ण

के सम्मुखगया उसरथमें नियत धनुषको चलायमान करनेवाले राक्षसके धनुषका शब्द ऐसा सुनागया जैसे कि वज्रका शब्दहोताहै १९।२० हे भरतवंशी उससे भयभीत आपकी सब सेना ऐसी अत्यन्त कम्पायमानहुई जैसे कि समुद्रकी बड़ी२ लहरें हिलती हैं २१ उस भयके करनेवाले भयानकनेत्र आतेहुये राक्षसको देख कर शीघ्रता करतेहुये मन्दमुसकानवाले कर्णने रोका २२ उसकेपीछे कर्ण बाणों को छोड़ता उसकेपास ऐसेगया जैसे कि यूथका यूथप हाथी श्रेष्ठ हाथीकेसम्मुख जाताहै २३ हे राजा उनदोनों कर्ण और राक्षसका वह युद्ध ऐसा कठिन हुआ जैसे कि इन्द्र और सम्बर दैत्यकाहुआ था बड़े बाणों से घायल उनदोनों ने बड़े बेगवान् और भयानक शब्दवाले धनुषोंको लेकर परस्पर बाणोंसे ढकदिया २४ । २५ इसकेपीछे कानतक खींचकर छोड़ेहुये टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे शरीर के कवचोंको काटकर परस्पर रोका २६ जैसे कि दो शार्दूल नखोंसे और दो बड़े हाथी दांतोंसे घायलकरते हैं उसीप्रकार उनदोनोंने रथ शक्ति और विशिखनाम बाणों से परस्पर घायलकिया २७ अङ्गोंके काटनेवाले शायकोंसे छेदनेवाले और बाण रूपी उल्काओं से भस्म करनेवाले वह दोनों कठिनतासे देखने के योग्यहुये २८ सब घायल अङ्ग रुधिरसेलिप्त वह दोनों ऐसे शोभितहुये जैसे कि धातुके रखने वाले और जलके छोड़नेवाले दो पर्वतहोते हैं २९ बाणोंकी नोकोंसे घायल अङ्ग परस्पर छेदनेवाले उपाय कर्त्ता बड़े तेजस्वी उनदोनों ने परस्पर कम्पायमान नहीं किया ३० हे राजा युद्धभूमिमें प्राणोंके जुआ खेलनेवाले कर्ण और राक्षस का वह जारीहुआ रात्रिका युद्ध बहुत बिलम्बतक समानहुआ ३१ तब तीक्ष्णबाणों को चढ़ाते और चढ़ेहुओंको छोड़ते उनदोनों के धनुषों के शब्दों से अपने और दूसरे सबलोग भयभीतहुये ३२ हे महाराज जब कर्ण घटोत्कचको नाश न कर सका इसकेपीछे उस अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ कर्ण ने दिव्यअस्त्रको प्रकटकिया ३३ पांडवनन्दन घटोत्कचने कर्णके चढ़ायेहुये दिव्यअस्त्रको देखकर महामाया राक्षसीको प्रकटकिया ३४ अर्थात् शूल मुद्गरधारी और पर्वत वृक्षोंको हाथमें रखनेवाले बहुत से घोररूप राक्षसोंकी सेनासे संयुक्तहुआ ३५ वह राजालोग उसबड़े धनुषको उठानेवाले उग्र कालदण्डके धारण करनेवाले यमराजकी समान आनेवाले घटोत्कचको देखकर पीड़ावान् हुये ३६ घटोत्कचके कियेहुये सिंहनादसे हाथियों ने मूत्रको छोड़ा और मनुष्य अत्यन्त पीड़ावान् हुये इसके पीछे चारों ओरसे महा

भयकारी पाषाणोंकी वर्षाहुई ३७ अर्द्धरात्रिकेसमय अधिक वल पराक्रमी होने वाले राक्षसोंकी सेनासे लोहेकेचक्र भुशुंडी शक्ति और तोमरछोड़ेगये और शूल शतघ्नी और पट्टिशोंके समूहभी गिरते थे हे राजा उस उग्र और बड़ेरुद्र युद्धको देखकर ३८ । ३९ आपके पुत्र और शूरवीर लोग पीड़ावान् होकर भागे वहांपर अस्त्रबलमें प्रशंसनीय महाअहंकारी एक कर्णही पीड़ावान् नहीं हुआ ४० फिर कर्णने घटोत्कचकी उत्पन्नकीहुई माया को बाणों के द्वारा दूरकिया फिर मायाके नाश होनेपर घटोत्कचने क्रोधसे ४१ घोर बाणोंको छोड़ा वह कर्ण के शरीरमें प्रवेश करगये अर्थात् उसबड़े युद्धमें कर्णको छेदकर रुधिरसे भरेहुये वहबाण ४२ अत्यन्त क्रोधयुक्त सर्पों के समान पृथ्वी में घुसगये फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त हस्तलाघवी प्रतापवान् कर्ण ने ४३ घटोत्कचको उल्लंघकर दशबाणोंसे छेदा कर्ण के हाथसे मर्मस्थलों पर अत्यन्त घायल ४४ बहुत पीड़ावान् घटोत्कचने हजार आरा रखनेवाले बड़े दिव्यनेमी के ऊपर क्षुरोंसे जटित बालसूर्य के समान प्रकाशित मणिरत्नोंसे अलंकृत चक्रको हाथमें लिया ४५ फिर क्रोधयुक्त भीमसेनके पुत्रने मारनेकी इच्छासे कर्णके ऊपरफेंका बड़ेवेगसे घुमाया और कर्ण के शायकोंसे हटायाहुआ ४६ वह चक्र निष्फलहोकर पृथ्वीपर ऐसे गिरा जैसे कि प्रारब्ध हीनके मनका विचार गिरताहै फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त घटोत्कचने चक्रको गिरायाहुआ देखकर ४७ कर्णको बाणों से ऐसे ढकदिया जैसे कि सूर्यको राहु ढकलेताहै भयजन्य व्याकुलतासे रहित रुद्र इन्द्र और विष्णुके समान पराक्रमी कर्ण ने ४८ शीघ्रही घटोत्कचके रथको बाणों से ढकदिया तब क्रोधयुक्त घटोत्कच ने स्वर्णमयी बाजूबन्दवाली गदाको ४९ घुमाकर फेंका वह भी कर्ण के बाणों से आघातित होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी इसके पीछे बड़ा शरीरधारी घटोत्कच काल मेघके समान गर्जता ५० अन्तरिक्षको उछलकर आकाशसे वृक्षोंकी वर्षाकरने लगा तब कर्ण ने उस मायावी भीमसेन के पुत्र को आकाशकेही मध्य में ५१ बाणों से ऐसा छेदा जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों से बादल को छेदताहै कर्ण उसके सब घोड़ोंकोमार रथके सौ खंडकरके ५२ वर्षा करनेवाले बादलोंकी समान बाणोंकी वर्षा करनेलगा उसके शरीरमें बाणों से विनाघायल दो अंगुलका भी कोई स्थान बाकी नहीं रहा ५३ फिर वह एक मुहूर्त्तही में ऐसा दिखाईदिया जैसे कि शलल्लों से चिताहुआ श्वावित् होताहै हमने बाणों के समूहों से गुप्त युद्धमें

उसके न घोड़ोंको न रथको न ध्वजाको और न घटोत्कच को देखा फिर कर्ण के दिव्यअस्त्र को अपने अस्त्रसे काटता ५४। ५५ वह मायावी राक्षस मायायुद्ध के द्वारा कर्ण से लड़ा अर्थात् अपनी मायाकी तीव्रता से कर्ण से युद्ध करने वाला हुआ ५६ आकाशमें दिखाई न देनेवाले बाणों के जालगिरे हे भरतबंशी वह बड़ी मायाका जाननेवाला ५७ बड़े शरीरवाला घटोत्कच मायासे मोहित करता भ्रमण करनेलगा उसने भयानकरूप और मुखों को अशुभ करके ५८ मायासे कर्ण के दिव्यअस्त्रों को ग्रसा फिरभी बड़े शरीरवाला और युद्धमें अनेक प्रकारों से टूटेअंग ५९ बिनापराक्रम और साहसके आकाशसे गिराहुआ दिखाईपड़ा कौरवों में श्रेष्ठलोग उसको मृतकमानकर गर्जे ६० फिर दूसरे नवीन शरीरों से सब दिशाओं में दृष्टिगोचर हुआ तबभी महाबाहु बड़ाशरीर सौ शिर और सौही पेट रखनेवाला दिखाई दिया ६१ फिर मैनाक पर्वतके समान दिखाई पड़ा तदनन्तर वह राक्षस मनुष्यके अंगुष्ठ के समान होकर ६२ समुद्रकी लहरों के समान उठाहुआ तिरछा और ऊंचा बर्त्तमान हुआ और पृथ्वी को फाड़कर फिर जलों में डूबगया ६३ इसके पीछे जलमें तैरताहुआ दूसरेस्थान में दिखाई पड़ा और जलसे निकलकर सुबर्ण के दो रथों पर नियत हुआ ६४ वह कवच और कुंडलधारी पृथ्वी आकाश और दिशाओं की मालासे प्राप्तहोकर कर्ण के रथके पास जाके घूमनेलगा ६५ हे राजा फिर भयजन्य व्याकुलता से रहित होकर कर्ण से यह बचन बोला हे सूतके पुत्र नियतहो अब मेरे हाथसे जीवता कहां जायगा ६६ अब मैं युद्धभूमि में तेरे युद्ध के उत्साह को नाश करूंगा क्रोध से रक्तनेत्र कठिन पराक्रमी राक्षस यह कहकर ६७ अन्तरिक्ष में उछलकर बड़े वेग से हँसा और कर्ण को ऐसे घायल किया जैसे कि केशरी गजेन्द्र को करताहै ६८ वह घटोत्कच रथके अक्षकेसमान बाणोंसे रथियोंमें श्रेष्ठ कर्णपर ऐसे वर्षा करनेलगा जैसे कि बादल धाराओं से वर्षा करता है ६९ कर्ण ने उस प्रकट होनेवाली बाणवृष्टी को दूरही से काटा हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ इसके अनन्तर कर्ण से पृथक् की हुई मायाको देखकर ७० अन्तर्द्धान होनेवाले घटोत्कचने फिर मायाको उत्पन्नकिया अर्थात् वह ऐसा ऊंचा और वृक्षों से पूर्ण शिखर रखने वाला पर्व्वत होगया ७१ जो कि शूल प्रास खड्ग और मूसलरूपी बड़े जलके झिरनाओं का रखनेवाला था वह कर्ण उस कज्जल समूह के समान और प्रहारों

से भयानक शस्त्रों के सहनेवाले पर्व्वतको देखकर व्याकुल नहींहुआ इसकेपीछे मन्दमुसकान करते कर्ण ने दिव्य अस्त्रको प्रकट किया ७२। ७३ फिर अस्त्रसे घायल उस गिरिराजने नाशकोपाया फिर उस उग्ररूप ने इन्द्रधनुष रखनेवाला नीलाबादल होकर ७४ पाषाण की वृष्टी से कर्णको ढकदिया तब सूर्य्य के पुत्र अस्त्रज्ञ कर्णने वायुअस्त्र को धनुषपर चढ़ाकर ७५ उस कालमेघको छिन्न भिन्न किया हे महाराज उस कर्ण ने बाणजालों से सब दिशाओंको ढककर ७६ घटोत्कचके चलायेहुये अस्त्रको विनाश किया इसके पीछे भीमसेनके पुत्र महाबली ने युद्धमें अत्यन्त हँसकर ७७ महारथी कर्णके ऊपर बड़ी मायाको प्रकट किया उस रथियों में श्रेष्ठ व्याकुलता से रहित रथकी सवारी से फिर आतेहुये घटोत्कच को जो कि सिंह और शार्दूलके समान मतवाले हाथी के समान पराक्रमी हाथी के सवार रथसवार अश्वसवार और नानाप्रकारके शस्त्रधारी और अनेकभांतिके भूपणधारी निर्दयी बहुत से राक्षसों से ७८। ७९। ८० संयुक्तथा देखकर बड़े धनुषधारी कर्ण ने युद्धकिया ८१ इसके पीछे घटोत्कचने कर्ण को पांच बाणों से घायलकरके सब राजाओं को डराते और गर्जते हुये अंजुलिक नाम बाणों से बाण समूहों समेत कर्ण के हाथमें नियत धनुषको काटा ८२। ८३ तब कर्ण ने दृढ़भार सहनेवाले इन्द्रधनुषके समान ऊंचे बड़े धनुषको लेकर बलसे खैंचा ८४ और उस सुनहरी पुंख शत्रुहन्ता आकाशचारी शायकोंको राक्षसोंके ऊपर फेंका ८५ बड़े छातीवाले राक्षसों का वह समूह बाणोंसे ऐसा पीड़ावान् हुआ जैसे कि जङ्गली हाथियों का समूह सिंहसे पीड़ित और व्याकुल होताहै ८६ उस समर्थ ने बाणों से राक्षसों को घोड़े सारथी और हाथियों समेत ऐसे भस्म करदिया जैसे कि भगवान् अग्नि प्रलयकालमें जीवधारियों को भस्म करते हैं ८७ फिर वह सूतनन्दन कर्ण राक्षसों को मारकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पूर्वसमयमें देवता महेश्वरजी त्रिपुर को भस्मीभूत करके स्वर्ग में शोभित हुयेथे ८८ हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र उन हजारों राजा और पांडवों के मध्यमें कोई भी इस कर्ण के देखने को समर्थ नहीं हुआ ८९ हे राजा महाबली भयानक और पराक्रमयुक्त यमराजके समान क्रोधयुक्त राक्षसों के राजा घटोत्कच के सिवाय कोई भी देखने को समर्थ नहीं हुआ ९० उससमय उस क्रोधयुक्त के नेत्रों से ऐसे अग्नि उत्पन्न हुई जैसे कि बड़ी मशालोंसे ज्वलितरूप तेलकी बूंदें उत्पन्न होती हैं हथेली को

हथेली से मसलकर दांतोंकी पंक्तिको काटकर ९१ हाथीके समान पिशाचों के-से मुख रखनेवाले खच्चरों से युक्त मायासे रचेहुये रथपर सवारहोकर ९२ क्रोधयुक्त घटोत्कच सारथी से यह बचन बोला कि मुझको कर्णकेसम्मुख लेचल उस रथियों में श्रेष्ठने घोररूप रथकी सवारी से ९३ कर्ण के साथ फिर द्वैरथ युद्धको किया हे राजा फिर क्रोधयुक्त राक्षसने उस महाअशनि नामको कर्ण के ऊपर फेंका ९४ जोकि आठचक्र रखनेवाले शिवजी से उत्पन्न दो योजन ऊंची और एकयोजन लम्बी चौड़ी ९५ लोहेकी बनी शूलों से ऐसी जटितथी जैसे कि केसरों से कदम्बका वृक्ष होताहै कर्ण ने बड़े धनुषको रख रथसे उतरकर अशनी को पकड़कर ९६ उलटाकर उसके ऊपर छोड़ा उसको उलटाआता देखकर वह राक्षस रथ से उतरगया तब वह बड़ी प्रकाशित अशनी घोड़े सारथी और ध्वजासमेत रथको धूलमें मिलाकर ९७ पृथ्वीको छेदकर प्रवेशकरगई वहां देवताओंने बड़े आश्चर्यको पाया फिर सब जीवों ने शीघ्रतासे कर्णको पूजा ९८ जो रथसे उतरकर देवताकी रचीहुई महाअशनिको पकड़लिया कर्ण युद्धमें इसप्रकारके कर्मको करके फिर रथपर सवारहुआ ९९ हे बड़ाई देनेवाले फिर शत्रुसंतापी कर्णने नाराचों को छोड़ा हे राजा कर्ण ने सब जीवधारियों के मध्यमें दूसरे से असम्भव और करनेके अयोग्य कर्मको १०० उस भयानक दर्शनवाले युद्धमें किया जैसे कि पर्वत धाराओं से घायलहोताहै उसीप्रकार बाणोंसे घायल १०१ गन्धर्व नगर के रूप वह राक्षस फिर अन्तर्द्धान होगया इसप्रकार उसशत्रु के मारनेवाले राक्षस की मायासे अस्त्रोंके नाशवान् होनेपर १०२। १०३ व्याकुलतासे रहित कर्ण उस राक्षससे युद्ध करनेलगा हे महाराज इसकेपीछे क्रोधयुक्त महाबली १०४ महारथियों के मारनेवाले घटोत्कचने अपनेको अनेक रूपवाला किया फिर दिशाओं से सिंह व्याघ्र और तरक्षुरूपों से दौड़ा १०५ अग्निकी समान जिह्वा रखनेवाले सर्प और लोहेके मुखवाले पक्षीभी कर्ण के धनुपसे गिरेहुये विशिखों करके कीर्यमाण १०६ नागराजके समान कठिनतासे देखनेके योग्य राक्षस उसी स्थानपर अन्तर्द्धान होगया राक्षस पिशाच यातुधान १०७ और भयानकमुख बहुतसे वन्दर शृगाल भेड़िये आदिक सबजीव कर्णके मारनेके इच्छावान् सब ओरसे सम्मुख दौड़े १०८ तब भयानक वचन रुधिरसेतर घोररूप बहुतसे उठायेहुये शस्त्रों से भी उसको भयभीत किया १०९ कर्ण ने उन्हों के मध्यमें प्रत्येकको बहुत शायकोंसे

घायलकिया फिर दिव्यअस्त्रसे उस राक्षसी मायाको दूर करके ११० टेढ़े पर्व्ववाले बाणोंसे उसके घोड़ोंकोमारा शायकोंसे घायल टूटेअंग पृष्ठवाले वह घोड़े १११ उसराक्षसके देखतेहुये पृथ्वीपर गिरपड़े तब नाशहुई मायावाला घटोत्कच सूर्यके पुत्र कर्णसे यहबात कहकर कि तेरी मृत्यु उत्पन्न करताहूं अन्तर्द्धानहोगया ११२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषट्सप्ततितमोऽध्याय. १७६ ॥

एकसौसतहत्तरका अध्याय ॥

संजय बोले कि इसप्रकार उस राक्षस और कर्णके युद्ध बर्त्तमान होनेपर अलायुध नाम महापराक्रमी राक्षसोंका राजा १ भयङ्कर रूपवाले हजारों राक्षसोंसे युक्त बड़ी सेनासमेत आया २ नानाप्रकार के रूप धारण करनेवाले बीरों समेत पूर्वकी शत्रुता को याद करताहुआ दुर्योधन के पास आया उसकी जातिवाला पराक्रमी ब्राह्मणों का भोजन करनेवाला बक नाम राक्षस मारागया ३ तब बड़ा तेजस्वी किर्मीर और हिडम्बभी मारागया सो बहुतकालसे मनमें पुरानी शत्रुता को स्मरण करता ४ और इस रात्रिके युद्धको जानकर युद्धमें भीमसेन को मारनेका अभिलाषी हाथी के समान मतवाला सर्प्प के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त वह राक्षस ५ युद्धोत्सुक होकर दुर्योधन से यह वचन बोला कि हे महाराज तुम को विदितहै कि जिसप्रकार भीमसेन के हाथसे हिडम्ब, बक और किर्मीर नाम तीनों मेरे बांधव राक्षस मारेगये और पूर्व्वसमय में हिडम्बानाम कन्याको हरण किया फिर ६ । ७ हमको और अन्य राक्षसों को तिरस्कार करके दूसरीबात क्या कहें हे राजा मैं आप उस हिडम्बाके पुत्र घटोत्कच को हाथी घोड़े रथ और मंत्रियों समेत मारनेको आयाहूं अब मैं कुन्ती के सबपुत्र जिनमें अग्रगामी वासुदेवजी हैं ८ । ९ उनको मारकर उनके सब पीछे चलनेवालोंको भी भक्षणकरूंगा सब सेनाको रोक दो हम पाण्डवों से लड़ेंगे १० उसके इस वचनको सुनकर प्रसन्नचित्त भाइयोंसमेत दुर्य्योधन उसको अंगीकार करके यह वचन बोला ११ कि हम तुझको आगे करके सब सेनासमेत शत्रुओं से युद्ध करेंगे शत्रुताकी नगामी में प्रवृत्तचित्त मेरे सेनाके लोग नियत नहीं होंगे १२ ऐसाही होय ऐसा राजासे कहकर वह राक्षसोंमें श्रेष्ठ अलायुध शीघ्रही मनुष्योंके भक्षण करनेवाले राक्षसोंको साथमें लेकर घटोत्कचसे लड़नेको १३ उसप्रकारके प्रकाशित अग्नि

के समान तेजस्वी रथकी सवारी से घटोत्कचके सम्मुखगया हे राजा जैसी सवारी से कि घटोत्कच युद्धभूमि में वर्त्तमान था १४ वैसाही उसका भी बड़ारथ बड़े शब्दवाला बहुतसी तोरणोंसे चित्रित रीछके चर्मसे अलंकृतअंग और चारसौ हाथ का लम्बाथा १५ उसके घोड़ेभी शीघ्रगामी हाथी के समान शरीर गधे के समान शब्दवाले मांस रुधिरके भोजन करनेवाले बड़े शरीरों से युक्त संख्यामें सौ रथमें वर्त्तमानथे १६ उसके रथका शब्द बड़े बादलकेसमान और बड़ाधनुष दृढ़ प्रत्यंचावाला सुवर्णसे जटित था १७ वाण भी उसके रथ के अक्षकी समान सुनहरी पुंखयुक्त तीक्ष्णधारथे वह वीर सबप्रकार से उस वीर महाबाहु घटोत्कचकेही समानथा १८ उसकी भी ध्वजा अग्नि सूर्यके समान शृगालोंके समूहोंसे रक्षित थी वह भी घटोत्कचके रूपसे अधिक शोभायमान महाविस्तृत प्रकाशमान मुखवाला था १९ प्रकाशमान बाजू मुकुट और मालाधारी वेष्टनयुक्त खड्ग गदा भुशुंडी मूसल हल और धनुषका रखनेवाला होकर हाथी के समान शरीरवाला था २० तब वह उस अग्निके समान प्रकाशित अपने रथकी सवारी से उस पांडवी सेना को भगाता युद्धमें वर्त्तमान होकर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि बिजलियों की माला रखनेवाला बादल अन्तरिक्ष में शोभित होताहै २१ हे राजा सब में अत्यन्त श्रेष्ठ महाबली कवचधारी ढाल बांधेहुये प्रसन्नचित्त वह शूरवीरभी सब ओरसे उसके साथ युद्ध करनेलगे २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिसप्तसप्ततितमोऽध्यायः १७७ ॥

एकसौअठहत्तरका अध्याय ॥

संजयबोले कि सब कौरवोंने उस भयानककर्म्मी युद्ध में आतेहुये राक्षस को देखकर बड़ी प्रसन्नता प्राप्तकी १ इसी प्रकार दुर्य्योधन जिनमें मुख्य है वह आपके पुत्र नौकासे रहित के समान फिर नौका को पाकर समुद्र को तरने के अभिलाषी हुये २ अपने को द्वितीय जन्म पानेवाला मानकर उन पुरुषोत्तमों ने राक्षसों के राजा अलायुध को बड़ी श्लाघाओं के वचनों से पूजा ३ उस बड़े भयानक बुद्धिसे बाहर युद्धके वर्त्तमान होनेपर कर्ण और राक्षसके रात्रिके भयकारी युद्धको ४ आश्चर्य्य करनेवाले पांचालोंने अन्य राजाओं समेत देखा और इसीप्रकार आपके अश्वत्थामा द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य आदिक शूरवीरभी युद्ध-

भूमिमें उस घटोत्कचके कर्मको देखकर पुकारे और भयसे महाव्याकुलहुये ५।६ हे महाराज आपकी सब सेनाके लोग व्याकुल हाहाकाररूप और अचेत होकर कर्णके जीवनमें निराशहुये ७ फिर दुर्योधन बड़ी पीड़ापानेवाले कर्णको देखकर राक्षसों के राजा अलायुध को बुलाकर यहवचन बोला ८ कि यह सूर्य्यका पुत्रकर्ण हिडम्बाके पुत्र घटोत्कच के साथ भिड़ाहुआ युद्धमें उस बड़े कर्मको करताहै जोकि इसके योग्यहै ९ घटोत्कचके हाथसे मारेहुये और नाना प्रकारके शस्त्रोंसे घायल शूर राजाओं को ऐसे देखो जैसे कि हाथीसे उखाड़ेहुये वृक्षोंको देखते हैं मैंने युद्धमें राजाओं के मध्यमें तेरे विचारसे तेराहीभाग विचार कियाहै तुम पराक्रमकरके उसकोमारो १०।११ हे शत्रुविजयी अलायुध यहपापी घटोत्कच मायाके बलमें आश्रित होकर सूर्य्यके पुत्र कर्णको सबके आगे पराजित करता है १२ राजाके इस बचनको सुनकर वह भयभीत पराक्रमी महाबाहु राक्षस उसके वचनको स्वीकार करके घटोत्कच के सम्मुख गया १३ हे प्रभु उसकेपीछे भीमसेनकेपुत्र घटोत्कचने भी कर्णको छोड़कर सम्मुख आतेहुये शत्रुको बाणोंसे मर्द्दन किया १४ फिर उन दोनों राक्षसाधिपों का ऐसा उत्तम भयकारी युद्धहुआ जैसे कि हथिनीके लिये दो मतवाले हाथियोंका युद्ध होताहै १५ राक्षससे छुटाहुआ रथियोंमेंश्रेष्ठ कर्णभी सूर्यकेसमान प्रकाशित रथकी सवारी से भीमसेनके सम्मुख गया १६ जैसे कि सिंह बैलको अपने वशीभूत करताहै उसीप्रकार अलायुधसे ग्रसेहुये घटोत्कचको देखकर उस आतेहुये कर्णको उल्लंघनकरके १७ प्रहार करने वालों में श्रेष्ठ भीमसेन सूर्य्यकेसमान प्रकाशित रथकी सवारीसे बाण समूहों को फेंकता अलायुधके रथकेसमीपगया १८ हे प्रभु तब उस अलायुधने उस आतेहुये को देखके घटोत्कच को छोड़कर भीमसेनको बुलाया १९ फिर राक्षसों के नाश करनेवाले भीमसेनने अकस्मात् सम्मुखजाकर उस राक्षसोंके राजाको उसके सब साथी और सेनासमेत बाणोंकी वर्षा से ढकदिया २० हे शत्रुविजयी राजा उसी प्रकार अलायुध भी साफ और सीधे चलनेवाले बाणों से भीमसेन के ऊपर बारंबार वर्षा करनेलगा २१ उसीप्रकार नानाप्रकार के प्रहार करनेवाले भयानकरूप और आपके पुत्रोंकी विजय चाहनेवाले वह सब राक्षसभी भीमसेन के सम्मुख गये २२ बहुत बाणों से घायल उस महाबली भीमसेनने पांच२ तीक्ष्णबाणों से उन सबको छेदा २३ भीमसेन के हाथसे घायल वह निर्द्दय बुद्धी राक्षस कठिन

शब्दों से गर्जना करतेहुये दशोंदिशाओं को भागे २४ भीमसेनसे भयभीत उस बड़ी सेनाको देखकर राक्षसने बड़ेवेगसे सम्मुख जाकर बाणोंसे भीमसेनको ढक-दिया २५ भीमसेनने फिर उस राक्षसको तीक्ष्ण नोकवाले बाणों से घायलकिया फिर अलायुधने उन भीमसेनके चलायेहुये कितनेही विशिखोंको युद्धमें काटा २६ और युद्धमें बड़ी शीघ्रतासेही कितनोंहीको पकड़लिया भयानक पराक्रमी भीमसेनने उस राक्षसों के राजाको देखकर २७ वज्रके समान गिरनेवाली गदा को फेंका उस ज्वालायुक्त बेगसे आतीहुई गदाको उसने गदासेही घातितकिया और वह गदा भीमसेनकेही ओर गई उस कुन्ती के पुत्र भीमसेनने राक्षसाधिप को बाणोंकी वर्षा से ढकदिया २८। २९ राक्षसने तीक्ष्णबाणों से उसके उन बाणों को भी निष्फल किया रात्रि में भयानकरूप सब राक्षसों ने भी ३० अपने राजा की आज्ञासे रथ और हाथियों को मारा राक्षसों से अत्यन्त पीड़ावान् पांचाल सृंजीघोड़े और हाथियों ने ३१ वहां शान्ती को नहीं पाया फिर उस महाघोर बड़ेभारी युद्धको देखकर ३२ कमललोचन श्रीकृष्णजी अर्जुनसे यहबचन बोले कि राक्षसों के राजाके आधीनहुये भीमसेन को देखो ३३ हे पांडव अर्जुन तुम इसके पीछे चलो बिचार न करो धृष्टद्युम्न शिखंडी युधामन्यु उत्तमौजस ३४ और द्रौपदी के पुत्र सब महारथी यह सब साथ होकर कर्ण के सम्मुखजावो पराक्रमी सात्यकी नकुल और सहदेव ३५ तेरी आज्ञा से अन्य राक्षसों को मारें और हे महाबाहु नरोत्तम अर्जुन तुमभी इस सेनाको जिनके कि अग्रगामी द्रोणाचार्य्य हैं हटावो ३६ बड़ाभय उत्पन्नहुआ इसप्रकार श्रीकृष्णजी के कहनेपर आज्ञापाये हुये महारथी ३७ युद्धमें सूर्य्य के पुत्र कर्ण और उन राक्षसों के सम्मुख गये इसके पीछे प्रतापवान् राक्षसाधिपने कानतक खैंचेहुये और विषैले सर्पकी स-मान बाणों से ३८ भीमसेनके धनुष को काटकर उसके सारथीसमेत घोड़ों को भीमसेन के देखतेहुये युद्धमें तीक्ष्ण बाणों से मारा ३९ फिर मृतक घोड़े और सारथीवाले भीमसेनने रथसे उतरकर ४० गर्जनाकरके महाभारी घोर गदा को उसके ऊपर छोड़ा उस भयकारी शब्दवाली आतीहुई बड़ी गदा को ४१ उस घोर राक्षसने गदाहीसे ताड़ित किया और गर्जना करी राक्षसाधिपके उस घोर और भयकारी कर्मको देखकर ४२ प्रसन्नचित्त भीमसेनने शीघ्रही गदाको प-कड़ा तब गदाके आघातों से पृथ्वीको अत्यन्त कँपानेवाले उन नर और राक्षस

का महाघोर कठिन युद्ध हुआ फिर गदाको त्याग करनेवाले उन दोनों ने परस्पर सम्मुखहोकर ४३ । ४४ वज्रके समान शब्दायमान घूंसों से परस्पर घायल किया इसके पीछे उन दोनोंने महा क्रोधित होकर इन आगे लिखीहुई रथचक्र, युग, अक्ष और अधिष्ठान आदि समीप वर्त्तमान वस्तुओं से परस्पर सम्मुख होकर घायल किया फिर रुधिरको डालतेहुये उन दोनों ने सम्मुख होकर ४५ । ४६ मतवाले हाथियों के समान वारम्वार परस्पर खैंचा पांडवोंकी वृद्धिके चाहनेवाले इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजी ने उसको देखा ४७ उन्होंने भीमसेनकी रक्षा के निमित्त घटोत्कचको प्रेरणा करी ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिअष्टसप्ततितमोऽध्यायः १७८ ॥

एकसौउनासीका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा युद्धमें राक्षससे ग्रसेहुये भीमसेनको समीप से देखकर श्रीकृष्णजी घटोत्कच से यह वचन बोले १ हे महाबाहु हे बड़े तेजस्वी सब सेनाके और अपने देखते युद्धमें राक्षससे ग्रसेहुये भीमसेनको देखो २ हे महाबाहु तुम कर्णको छोड़कर राक्षसों के राजा अलायुधको मारो इसके पीछे कर्णको मारोगे ३ वह पराक्रमी घटोत्कच वासुदेवजी के वचन को सुनकर कर्णको त्यागकर बकासुरके भाई राक्षसाधिपसे युद्ध करनेलगा ४ हे भरतवंशी उन दोनों अलायुध और घटोत्कच राक्षसों का युद्ध रात्रिमें अत्यन्त कठिन हुआ ५ अलायुध के शूरवीर राक्षस जोकि भयानक दर्शन शूर धनुषधारी वेग से आये थे उनको ६ शस्त्रों के उठानेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त महारथी सात्यकी नकुल और सहदेवने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से छेदा ७ और सब ओरसे बाणों को छोड़ते मुकुटधारी अर्ज्जुनने सब उत्तम २ क्षत्रियों को युद्धमें से हटाया ८ हे राजा कर्ण ने युद्धमें धृष्टद्युम्न और शिखण्डी आदिक पांचालों के महारथियों को अन्य राजाओं समेत भगाया ९ भयानक पराक्रमी भीमसेन उन घायलों को देखकर युद्धमें विशिखनाम बाणों को छोड़ता शीघ्रही कर्ण के सम्मुख गया १० उसके पीछे वह महारथी नकुल सहदेव और सात्यकी भी राक्षसोंको मारकर वहांआये जहांपर कि कर्ण था ११ उन्होंने कर्ण से युद्धकिया और पांचालों ने द्रोणाचार्य से किया अत्यन्त क्रोधयुक्त अलायुधने शत्रुविजयी घटोत्कच को बहुत बड़ी प-

रिघसे मस्तकपर घायल किया १२ फिर उस पराक्रमी महाबली घटोत्कचने उस प्रहारसे थोड़ी मूर्च्छा में होकर अपने शरीरको नियतकिया १३ और प्रकाशित अग्निके समान सौ घंटे रखनेवाली सुवर्ण जटित अलंकृत गदाको युद्धमें उस के ऊपर फेंका १४ भयानककर्मी राक्षस के हाथसे छुटीहुई बड़े शब्दवाली उस गदाने वेगसे उसके रथ सारथी और घोड़ों को चूर्ण किया १५ फिर वह राक्षसी माया में नियत होकर उस मृतक सारथी घोड़े और टूटे अक्ष ध्वजा चक्रवाले रथसे शीघ्रही उछला १६ और माया में प्रवृत्तहोकर बहुत रुधिर बरसाया तब आकाश बिजली से प्रकाशित और सघन बादलों से पूर्ण होगया १७ इसके अनन्तर बिजली समेत वज्रका गिरना और बिजली के साथ गर्जना उत्पन्नहोना और बड़ा चट चटाकार शब्दहुआ १८ हिडम्बाके पुत्र घटोत्कच ने उस राक्षस की प्रबल मायाको देखकर पृथ्वी से आकाश में उछलकर उस मायाको मायाही से नाशकिया १६ उस मायावी राक्षसने अपनी मायाको मायाही से नाश हुआ देखकर अत्यन्त कठोर पाषाणोंकी बर्षाको घटोत्कचके ऊपरकिया २० उस पराक्रमी ने उस घोर पाषाण बर्षा को बर्षाही से नाश किया वह आश्चर्य्यसा हुआ २१ इसके पीछे नानाप्रकारके शस्त्रों से एकने दूसरोंपर बर्षाकरी लोहे की परिघ, शूल, गदा, मूसल, मुद्गर २२ पिनाक, करबाल, तोमर, प्रास, कंपन, तीक्ष्णधार नाराच, भल्ल, चक्र, फरसे, अयोगुढ़, भिण्डिपाल, गोशीर्ष, उलूखल २३ और उखाड़ेहुये बड़ी शाखावाले नानावृक्ष शमी, पीलु, कदंब, चम्पक २४ अंगुद, बदरी, कोविदार, फूलेहुये पलाश, अरिमेद, प्लक्ष, न्यग्रोध, पिप्पल इन बड़े बड़े वृक्षों से भी युद्ध में परस्पर घायल किया और नानाप्रकार की धातुओं से चितेहुये बड़े२ शिखरोंसे परस्पर घायलकिया २५। २६ हे राजा उनके ऐसे महा शब्दहुये जैसे कि टूटनेवाले वज्रों के शब्दहोते हैं उस घटोत्कच और अलायुध का ऐसा घोरयुद्ध हुआ २७ जैसे कि पूर्व्वसमयमें बानरों के महाराजबालि और सुग्रीवका युद्ध हुआथा वह दोनों नानाप्रकारके घोरशस्त्र और विशिखों से युद्ध करके तीक्ष्णखड्गोंको लेकर परस्पर सम्मुखहुये २८ उन बड़ेबलवान् और बड़ेशरीरवालोंने परस्परमें सम्मुख जाकर भुजाओंसे शिरके बालोंको पकड़ा २६ हे राजा उन ऊष्माभरे शरीरसे दोनोंने पसीना और रुधिरको ऐसेगिराया जैसे कि कठिन वर्षा करनेवाले दो बादल बर्षाकरते हैं ३० इसकेपीछे घटोत्कचने वेग से गेरकर

उस राक्षसको अत्यन्त घुमाकर बलसे पृथ्वीपर पटककर उसके बड़ेशिरको काटा ३१ तब वह बड़ा पराक्रमी कुंडलों से अलंकृत उसके शिरको लेकर कठिन शब्द को गर्जा ३२ पांचालदेशी और पांडव उस शत्रुविजयी घटोत्कच से वकासुर के जातिवाले बड़े शरीरवाले राक्षसको मराहुआ देखकर सिंहनादोंको गर्जे ३३ इसके पीछे युद्धमें राक्षसके मरनेपर पांडवी शूरवीरों ने हजारों भेरी और अयुतो शंखों को बजाया उन्हों की वह रात्रि चारोंओर से दीपमाला रखनेवाली अत्यन्त प्रकाशमान बिजयकी देनेवाली महाशोभायमान हुई ३४ । ३५ फिर महाबली घटोत्कचने निर्जीव अलायुध के शिरको दुर्य्योधनके सम्मुख फेंका ३६ हे भरतबंशी राजा दुर्य्योधन अलायुधको मराहुआ देखकर सेनासमेत अत्यन्त व्याकुल हुआ ३७ बड़ी शत्रुताको स्मरणकरके उस राक्षसने अपने आप आकर उसके साथ प्रतिज्ञा करीथी कि मैं भीमसेन को मारूंगा ३८ और राजादुर्य्योधनने यह मानाथा कि इसके हाथसे अवश्य भीमसेन मारनेके योग्यहै और भाइयों के जीवनको भी बहुत कालतक माना ३९ उसने भीमसेनके पुत्रके हाथ से निश्चय मराहुआ देखकर भीमसेन की प्रतिज्ञाको पूर्णहोना माना ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकोनाशीतितमोऽध्यायः १७९ ॥

एकसौअस्सीका अध्याय ॥

संजय बोले कि अत्यन्त प्रसन्नमन घटोत्कच अलायुध राक्षस को मारकर आपकी सेनाके समक्ष में नानाप्रकार के शब्दों को गर्जा १ हे महाराज उस के उस कठोर शब्द को जोकि हाथियों को भी कंपायमान करनेवाला था सुनकर आपके शूरवीरों को बड़ा कठिन भय उत्पन्नहुआ २ महाबाहु कर्ण अलायुध से भिड़ेहुये महाबली घटोत्कच को देखकर पांचालों के सम्मुख गया ३ और दृढ़ टेढ़े पर्व्ववाले कानतक खैंचेहुये दश बाणोंसे धृष्टद्युम्न और शिखण्डीको छेदा ४ इसके पीछे नाराचनाम उत्तमबाणोंसे महारथी सात्यकी युधामन्यु और उत्तमौजसको कंपायमान किया ५ हे राजा युद्धमें उन सब धनुषधारियों के दाहिने और बायें धनुषमंडल दिखाईदिये ६ रात्रि में उन्हों की प्रत्यंचा तल और रथनेमियों के शब्द ऐसे कठोरहुये जैसे कि वर्षाऋतुमें बादलों के शब्द होते हैं ७ उससमय जीवाधनुष और रथकी नेमियों के शब्दरूप गर्जनायुक्त बादल धनुष

रूप बिद्युन्मण्डल पताकारूप सुन्दर रंगवाला समूह बाणसमूहरूपी वर्षाका बरसनेवाला युद्धरूपी बादल प्रकटहुआ ८ हे महाराज शत्रुओं के समूहों के मर्द्दन करनेवाले बड़े पर्व्वतके समान पराक्रमी कर्णने उस अपूर्व्व पर्वतके समान अकंपित होकर वर्षाका नाश किया ९ इसके पीछे आपके पुत्रकी वृद्धि में प्रवृत्त महात्मा कर्ण ने युद्ध में बज्रपातके समान सुनहरी और अद्भुत पुंख रखनेवाले बड़े तीक्ष्ण बाणोंसे शत्रुओंको घायल किया १० कर्णके हाथसे कितनेही टूटी ध्वजा कितनेही बाणों से पीड़ित घायल शरीरवाले और कितनेही सारथी और घोड़ों से रहित होगये ११ इसके पीछे युद्धमें कल्याणको न पानेवाले वह लोग युधिष्ठिरकी सेनामें चलेगये घटोत्कचने उनको छिन्नभिन्न और मुख फेरनेवाला देखकर अत्यन्त क्रोधकिया १२ अर्थात् उस सुवर्ण और रत्नों से जटित उत्तम रथपर सवारहोकर सिंहके समान गर्जा और सूर्य्य के पुत्र कर्णको सम्मुखहोकर बज्रकी समान बाणों से घायल किया १३ उन दोनों ने करणी, नाराच, शिलीमुख, नालीक, दंडासन, वत्सदन्त, बराहकर्ण, विपाट, शृंग और क्षुरप्रकी वर्षाओं से आकाशको शब्दायमान किया १४ बाणोंकी वर्षा से पूर्ण और तिरछे चलने वाले सुनहरी पुंख ज्वालारूप प्रकाशवाले अपूर्व्व फूल रखनेवाले बाणों से पूर्ण अन्तरिक्ष ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि सृष्टिके जीवों से होताहै १५ उनदोनों सावधान और अनुपम प्रभाववालोंने उत्तम अस्त्रों से परस्पर घायल किया उन दोनों उत्तम वीरोंकी मुख्यताको उसयुद्धमें किसीने भी नहीं देखा १६ उन सूर्यके और भीमसेनके पुत्रोंका युद्ध अत्यन्त अपूर्व अनुपम व्याकुलता पूर्व्वक शस्त्रों के गिरनेका ऐसाहुआ जैसे कि स्वर्गमें राहु और सूर्य्यका युद्ध कठिन गरमी से संयुक्त होताहै १७ सञ्जय बोले कि हे राजा जब घटोत्कचको कर्ण नहीं मारसका तब उस महाअस्त्रज्ञ ने उग्रअस्त्रको प्रकटकिया १८ उस अस्त्रसे उसके रथसारथी और घोड़ोंको मारा रथसेरहित घटोत्कचभी शीघ्र अन्तर्द्धान हुआ १९ धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय उस कठोरकर्मी शूर राक्षसके शीघ्र अन्तर्द्धान होनेपर मेरे शूरोंने जो २ विचारकिये उनको मुझसे कहो २० सञ्जय बोले कि सब कौरव और कर्ण अन्तर्द्धान होनेवाले राक्षसोंके राजाको जानकर पुकारे कि यह कठिन शूरवीर राक्षस दृष्टिसे गुप्तहोकर युद्धमें कैसे कर्ण को नहीं मारेगा २१ इसकेपीछे तीक्ष्ण और अद्भुत अस्त्रोंसे लड़नेवाले कर्णने बाणजालोंसे सब दिशाओंको ढकदिया

शायकों से अन्तरिक्ष के अन्धकाररूप होनेपर कोई जीवमात्र दिखाई नहीं पड़ा २२ बाणों से सब अन्तरिक्ष को ढकता सूर्य्यका पुत्र कर्ण हस्तलाघवतासे बाणों को लेता चढ़ाता और हाथोंके अग्रभागसे तरकसोंको स्पर्श करताहुआ दिखाई नहीं पड़ा २३ इसकेपीछे हमने अन्तरिक्ष में राक्षसकी रचीहुई भयानक घोरकठिन और रक्त बादलकेरूप प्रकाशित ज्वलित अग्निके समान उग्रमायाको देखा २४ हे कौरवेन्द्र उसमें बिजलियां और ज्वलित उल्काभी दिखाईपड़ीं २५ इसके पीछे सुनहरी पुंखबाण, शक्ति, दुधारे खड्ग, प्रास, मूसल आदिशस्त्र और तेलसे साफफरसे, खड्ग, प्रकाशित नोकके तोमर और पट्टिश यह सबशस्त्र गिरे २६ प्रकाशित अथवा शोभायमान परिघ लोहेसे मढ़ीहुई गदा, अपूर्व्व तीक्ष्णधार शूल, सुवर्णवस्त्र से मढ़ीहुई भारीगदा और शतघ्नी चारोंओर से प्रकट हुई २७ जहांतहां बड़ी शिला और बिजलियों समेत हजारों वज्र और हजारोंछुरे रखनेवाले चक्र जो कि अग्निके समान प्रकाशितथे प्रकटहुये २८ कर्ण अपने बाणों के समूहों से उस शक्ति, पाषाण, फरसा, प्रास, खड्ग, वज्र, बिजली और मुद्गरोंकी गिरनेवाली वर्षाको जोकि ज्वलितरूप बहुत बड़ीथी नाशकरने को समर्थ नहीं हुआ २९ बाणोंसे घायल गिरतेहुये घोड़े बज्रसे घायल हाथी और शिलाओं से घातित गिरतेहुये रथोंके बड़े शब्दहुये ३० अत्यन्त भयानक और नानाप्रकार के शस्त्रों के संपात से दुर्य्योधन की वह सेना घटोत्कचके हाथसे चारोंओर को घायलहुई और महापीड़ितहोकर चक्रके समान घूमती दिखाई पड़ी ३१ हाहाकार करनेवाले चारोंओर से घूमनेवाले गुप्त होनेवाले ब्याकुलरूप हुये तब वह पुरुषों में बड़ेवीर अपनी प्रतिष्ठासे मुख फेरनेवाले नहींहुये ३२ उस भयानकरूप बड़ेघोर बड़े शस्त्रोंसे गिरनेवाली वर्षाको और सेना के समूहोंको गिराया हुआ देखकर आपके पुत्रों ने बड़ा भयमाना ३३ राजादुर्य्योधन के शूरवीर अग्नि के समान प्रकाशित जिह्वा और भयानक शब्दवाले सैकड़ों शृगालोंको और गर्जनेवाले राक्षसों के समूहों को भी देखकर पीड़ावान् हुये ३४ और अग्नि के समान प्रकाशित जिह्वा तीक्ष्णधार भयकारी पर्व्वताकार शरीरवाले आकाशमें वर्त्तमान हाथमें शक्ति रखनेवाले राक्षसोंने ऐसे बाणोंकी वर्षाकरी जैसे कि बड़े उग्र वर्षाको बादल करताहै ३५ उन बाणशक्ति, शूल, उग्रगदा, प्रकाशित परिघ, बज्र, पिनाक, अशनिप्रहार शतघ्नी और चक्रोंसे मथेहुये वह लोग गिरपड़े ३६

उन शूल, भुशुण्डी, अगुड, लोहेकीशतघ्नी और चादरसे मढ़ेहुये बड़ेशस्त्रों ने आपके पुत्रकी सेनाको ढकदिया उससे महाभयकारी मूर्च्छा जारीहुई ३७ वहां गिरीहुई आंत और टूटे अङ्गवाले शूर कटेहुये शिरों समेत सोगये घोड़े हाथी मारेगये और रथ शिलाओंसे चूर्णहोगये ३८ वह भयानकरूप राक्षस इसप्रकार पृथ्वीपर शस्त्रोंकी बड़ीवर्षा करनेवाले हुये वहां घटोत्कचकी उत्पन्नकीहुई माया ने न प्रार्थना करनेवाले को छोड़ा और न भयभीतों को छोड़ा ३९ कुरुबीरों की उस घोरपीड़ा और काल से उत्सृष्ट क्षत्रियों के बिनाश में वह सब कौरव लोग पुकारते हुये अकस्मात् छिन्नभिन्नहोकर भागे ४० हे कौरवलोगो भागो यह घटोत्कच नहीं है यह इन्द्रसमेत देवतालोग पाण्डवों के निमित्त हमको मारे-डालते हैं उस युद्धरूपी समुद्र में इसरीति से डूबनेवाले उन भरतबंशियों का आश्रयरूप द्वीप कर्ण हुआ ४१ उस कठिन रोने पीटने के बर्त्तमान होने वा कौरवों की सेना को छिन्नभिन्न होकर गुप्त होने और सेनाओं के भाग प्रकट होनेपर न कौरव जानेगये न दूसरे ४२ हे राजा बेमर्य्याद और घोररूप सेनाके भागनेपर सबदिशाओंको खाली देखनेवालोंने उसबाणोंकी वर्षाके मँझानेवाले केवल अकेले कर्णही को देखा उसकेपीछे राक्षसकी दिव्यमायासे युद्धकरते ल-ज्जावान् कर्णने बाणोंसे अन्तरिक्षको ढकदिया और कठिनता से करनेके योग्य उत्तम कर्मको करताहुआ सूतकापुत्र युद्धमें मोहित नहींहुआ ४३।४४ हे राजा उसके पीछे युद्धमें उस चैतन्यताकी प्रशंसा करते और राक्षसकी बिजय को दे-खते भयभीत हुये सब बाह्लीकदेशी और सिंधुदेशियों ने कर्ण को देखा उसके छोड़हुये चक्रसे संयुक्त शतघ्नीने एकसाथ चारोंघोड़ोंको मारा तब वह घोड़े दांत आंख और जिह्वासे रहित मृतकहोकर घुटनोंके बलसे पृथ्वीपर गिरपड़े ४५।४६ उसके पीछे मृतक घोड़ेवाले रथसे उतरकर भागनेवाले घोड़ों में जाकर नियत हुआ और मायासे दिव्यअस्त्र के नाशहोनेपर मोहित नहींहुआ कालको वर्त्त-मान हुआ जाना तदनन्तर सबकौरव घोररूप मायाको देखकर कर्णसे बोले कि हे कर्ण अब शीघ्रही उसशक्तीसे राक्षसको मारो नहीं तो यहकौरव और धृतराष्ट्र के पुत्र नाशहुयेजाते हैं ४७।४८ भीमसेन और अर्जुन हमारा क्या करसक्ते हैं तुम इसतपानेवाले पापीको मारो हमलोगोंमें से जोमनुष्य घोररूप युद्धसे छूटेंगे वह हमारे बीचमें सेना रखनेवाले पाण्डवों से युद्ध करेंगे ४९ इसहेतुसे तुम उस

इन्द्रकी घोरशक्तिके द्वारा इसराक्षसको मारो हे कर्ण इन्द्रके समान सब कौरव शूर-वीरों समेत रात्रिके युद्धमें विनाशको न पावें ५० रात्रिके समय राक्षसके न मरने पर सेनाको भयभीत देखके और कौरवों के बड़े शब्दोंको सुनकर कर्णने शक्ति छोड़नेका विचार किया ५१ उस क्रोधयुक्त सिंहके समान असह्यने युद्धमें अपने ऊपर प्रहारों को नहीं सहा और उसके मारने के अभिलाषीने असह्य बैजयन्ती नाम उत्तम शक्तीको हाथमें लिया ५२ हे राजा जो वह प्रतिष्ठावान् शक्ती युद्ध-भूमि में अर्जुनके मारनेके निमित्त बहुत वर्षोंतक रक्खी और इन्द्रने कुण्डलोंके लेनेके लिये जिसश्रेष्ठ शक्तिको कर्णको दीथी ५३ कर्णने उस चाटनेवाली अ-त्यन्त प्रकाशमान पाशोंसे युक्त यमराजकी एकरात्रि और मृत्युके समान उल्का के समान प्रकाशित शक्तीको राक्षसके लिये भेजा ५४ हे राजा उस उत्तम और शत्रुके शरीरको नाश करनेवाली भुजापर नियत ज्वलितरूप अग्निको देखकर भयसे पीड़ित राक्षस शरीरको विन्ध्याचल पर्वतके समान बड़ा करके भागा ५५ हे महाराज कर्णकी भुजाके मध्य में शक्तिको देखकर अन्तरिक्ष में सबजीवों ने शब्दकिया कठिनबायुचलीं और परस्पर वायुके संघट्टसे विजलीभी पृथ्वीपरगिरी ५६ वह ज्वलितरूप शक्ति उस मायाको भस्मकरके राक्षसके कठिन हृदयको वे-धकर प्रकाश करतीहुई ऊपरकोगई और रात्रिकेसमय नक्षत्रोंके लोकोंमें पहुँची ५७ और वह राक्षस नानाप्रकारके दिव्य नाग मनुष्योंके अस्त्रोंके समूहोंसे वि-दीर्ण नानाप्रकार के भयानक शब्दों को गर्जना करताहुआ इन्द्रकी शक्ती के द्वारा अपने प्यारे प्राणोंका त्यागनेवाला हुआ ५८ उसने शत्रुके नाशकेलिये उस और दूसरे अपूर्व्व अद्भुत कर्म्मको किया उससमय पर शक्तिसे भिदेहुये म-र्मस्थल पर्वत और बादलकी सूरतहोकर वह राक्षस शोभायमानहुआ ५९ उसके पीछे वह राक्षसाधिप घटोत्कच बड़े रूपमें नियत होकर औंधाशिर खड़ा शरीर जिह्वा विना निर्जीव और कटाशरीर होकर अन्तरिक्षसे पृथ्वीपर गिरा ६० अ-र्थात् वह भयानककर्म्मी भीमसेन का पुत्र उस रूपको भयानकरूप करके गिरा जिससे उस इसप्रकार के मृतकने भी अपने शरीरसे तेरी सेनाके एकस्थान को विनाशकिया ६१ शीघ्र बड़े लंबे चौड़े अत्यन्त वर्द्धमान शरीरसमेत गिरते और पांडवोंका हितकरते निर्जीव राक्षसने आपकी एक अक्षौहिणी सेनाकोमारा ६२ इसकेपीछे सिंहनादोंसमेत भेरी शङ्ख मुर्जा और ढोलोंके महान् शब्द हुये और

मायाको भस्मकरके राक्षसको मृतकहुआ देखकर बड़ेप्रसन्न मनहोकर कौरवलोग अत्यन्तगर्जे ६३ तदनंतर कर्णको कौरवोंने ऐसापूजा जैसे कि वृत्रासुर में इन्द्रको देवताओं ने पूजाथा आपके पुत्रके रथपर चढ़ाहुआ वह प्रसन्नचित्त कर्णभी आपकी उस सेनामें पहुँचा ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिइन्द्रदत्तकर्णशक्तिद्वाराघटोत्कचवधेशतोपरिअशीतितमोऽध्यायः १८०

एकसौइक्यासीका अध्याय ॥

संजयबोले कि पर्व्वताकार गिरे और मरेहुये घटोत्कच को देखकर सब पांडव लोग शोकके अश्रुपातों से व्याकुल हुये १ फिर बड़ी प्रसन्नता पूर्व्वक बासुदेवजी सिंहनादको गर्जे और अर्जुनको अपने हृदयसे लगाया २ वह श्रीकृष्ण जी बड़े शब्दको गर्जकर और बागडोरों को स्वाधीनकरके प्रसन्नतासे पूर्ण ऐसे नृत्य करनेलगे जैसे कि बायुसे कंपायमानवृक्ष घूमताहै ३ इसके अनन्तर बुद्धिमान् और अजेय बासुदेवजी रथके स्थितिस्थान में बर्त्तमान अर्ज्जुन को अपने समक्ष करके बारंबार भुजाओं के शब्दकरके गर्जे ४ हे राजा इसके पीछे महाबली अर्जुन जो कि अत्यन्त प्रसन्नचित्त नहीं था बासुदेवजी को अत्यन्तप्रसन्न जानकर बोला हे मधुसूदनजी घटोत्कचके मरनेसे शोकका स्थान वर्त्तमान होने पर यह आपकी बड़ी प्रसन्नता अयोग्य है ५ । ६ यहां घटोत्कच को मृतक देखकर आपकी ओर की सब सेना मुखफेररही है और हम सब लोग भी घटोत्कच के मारेजाने से अत्यन्त व्याकुलहैं ७ हे जनार्द्दनजी इसका कारण मिथ्या नहीं बिदित होताहै सो हे सत्यवक्ताओं में श्रेष्ठ आप मेरे पूछनेपर सत्य २ कहो ८ हे शत्रुंजय जो यह बात आपको गुप्त करने के योग्य नहीं है तो इसको यथार्थतासे मुझसे कहनेको योग्यहो हे मधुसूदनजी अब आप धैर्य्यके रूपान्तरहोने का कारण कहो ९ हे जनार्द्दनजी जैसे कि समुद्रका सूखजाना और मेरुका चलायमान होना होताहै अब उसी प्रकारसे इस आपके कर्मको मैं मानता हूं १० श्रीबासुदेवजी बोले कि हे अर्जुन इस बड़ी प्रसन्नता प्राप्तहोने को कारण समेत मुझसे सुनो जोकि शीघ्रही चित्तको स्वस्थ करनेवाला और उत्तमहै ११ हे बड़े तेजस्वी अर्ज्जुन घटोत्कचके द्वारा इस शक्ती को छोड़कर युद्धभूमि में शीघ्रही कर्णको मराहुआ जानो १२ लोक में ऐसा कौन पुरुषहै जोकि युद्ध में इसका-

त्तिकेयके समान शक्ति हाथमें लिये कर्णके सम्मुख नियत होसक्ताहै १३ यहकर्ण प्रारब्धही से कवच रहितहुआ प्रारब्धही से कुंडलों करके विहीनहुआ प्रारब्धसे ही यह अमोघ शक्ती इस घटोत्कचपर छोड़ीगई १४ जो कदाचित् यहकर्ण अपने कवच और कुंडलोंसमेत होता तो अकेलाही देवताओं समेत तीनोंलोकों को बिजय करसक्ताथा १५ इन्द्र, कुवेर, राजावलि और यमराज भी युद्ध में कर्ण के सम्मुख होनेको उत्साह नहीं करसक्ते १६ आप गांडीव धनुषको उठाकर और मैं सुदर्शनचक्रको लेकर उसप्रकार कवच कुंडलों से युक्त नरोत्तम कर्णके बिजय करने को समर्थ नहीं थे इन्द्रने तेरी वृद्धिके लिये अपनी माया से इस शत्रुओं के बिजय करनेवाले कर्णको कवच और कुंडलों से रहित किया जिसहेतुसे कि कर्णने अपने कवच और निर्मल कुंडलों को उखाड़कर इन्द्रके अर्थ दिया उसी हेतुसेही यहकर्ण वैकर्त्तन नामसे बिख्यातहुआ १७।१८ जो कर्ण बिषैले सर्प की समान क्रोधयुक्त और मन्त्रके तेजसे जंभाई लेनेवालाथा वह कर्ण अब मुझको शान्त अग्निके समान दिखाई देताहै २० हे महाबाहो जब से कि महात्मा इन्द्र ने कर्णके अर्थ इस शक्तिको जोकि घटोत्कचके ऊपर उसने फेंकी २१ दिया था तभी से दोनों कुंडल और दिव्य कवच से ठगेहुये कर्णने उस शक्ति को पाकर सबप्रकार से युद्ध में तुमको माराहुआ मानाथा २२ हे निष्पाप पुरुषोत्तम इस दशावालाभी कर्ण तेरे सिवाय और किसी से मारनेके योग्य नहीं है २३ वह वेदब्राह्मण और ईश्वरका भक्त सत्यवक्ता तपस्वी व्रतमें सावधान होकर शत्रुओं पर दयावान्है उसहेतु से कर्ण वृषनाम से विख्यातहुआ २४ युद्धमें सावधान महावाहु सदैव सन्नद्धहुये धनुषों के वनमें केशरी के समान गर्जता युद्धके शिर पर उत्तम रथियों के मदको ऐसे झाड़ताहै जैसे कि यूथप हाथियों के झुण्ड के मदोंको झाड़ता है जोकि दिवस के मध्याह्नकालीन सूर्य्य के समान २५।२६ तेरे महात्मा और उत्तम शूरवीरों से देखने के भी योग्य नहीं है वह वाणजालों से शरदऋतुके सहस्रांशु सूर्य्य के समान २७ वर्षाऋतुके वादलके समान अविच्छिन्न वाणधाराओं को छोड़ता दिव्य अस्त्रों से वादल की समान वर्षा करने वालाहै २८ वह कर्ण चारोंओर से वाणवृष्टियों के करनेवाले रुधिर मांसके जारी करनेवाले देवताओं से भी विजयकरने के योग्य नहीं है २९ हे पांडव अब कवच और दोनों कुंडलों से रहित वह कर्ण नरभावको प्राप्तहुआ और इन्द्रकी दी

हुई शक्ती ने भी उसको त्यागा ३० इसके मारने के निमित्त एकही योग होगा उसी अवकाशमें तुम सावधानी से इस अचेत और मोहित को समयपर मारो अर्थात् तुम प्रथम इस इंगितको विचारकर आपत्ति में फँसेहुये और रथके चक्र के निकासने में प्रवृत्त होनेवालेको मारना ३१ वलिका मारनेवाला एक वज्रधारी बीर भी उस अजेय और अस्त्र उठानेवाले कर्ण को नहीं मारसक्ता है जरासन्ध महात्मा शिशुपाल और महावाहु एकलव्य नाम निषाद यह सब जुदे २ योगों से तेरे हितके लिये मैंने मारे फिर अन्य राक्षसाधिप जिनमें हिडम्ब किर्मीर और वक यह बड़े श्रेष्ठथे उनको भी भीमसेन के द्वारा मारा और शत्रुकी सेनाका मारनेवाला अलायुध और उग्रकर्मी वेगवान् घटोत्कच मारागया ३२ । ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिशतोपरिएकाशीतितमोऽध्यायः १८१ ॥

एकसौबयासीका अध्याय ॥

अर्जुन बोले कि हे जनार्द्दनजी तुमने कौनसी इच्छाओं से हमारी वृद्धि के लिये बड़े २ जरासन्धादिक संसारके राजाओं को मारा १ बासुदेवजी बोले कि जो जरासन्ध शिशुपाल और महावली एकलव्य प्रथमकाल में न मारेजाते तो महाभयकारी होते २ और दुर्योधन उन उत्तम रथियोंको अवश्य बुलवाता और वह हमलोगों पर सदैव शत्रुता करनेवाले होकर कौरवों में संयुक्त होते ३ वह बड़े धनुषधारी अस्त्रज्ञ और दृढ़युद्ध करनेवाले बीर देवताओं के समान दुर्योधन की सब सेनाओंकी रक्षा करते ४ कर्ण जरासन्ध शिशुपाल और निषादके पुत्र यह सब दुर्योधनसे संयुक्तहोकर इस सब पृथ्वीको बिजय करसक्ते थे ५ वह लोग जिन २ योगों से मारेगये हे अर्जुन उसको भी सुनो कि वह युद्धमें बिना योग के देवताओं से भी बिजय करने के योग्य न थे ६ हे अर्जुन उनमें प्रत्येक पृथक् २ युद्ध में देवताओं से रक्षित देवसेना से भी युद्ध करनेवाले थे ७ बलदेवजी से बिजय कियेहुये क्रोधयुक्त जरासन्धने हमारे मारने के निमित्त नाश करनेवाली उस कालगदाको फेंका ८ जोकि अग्निके समान प्रकाशित और आकाशको सीमन्तके समान करनेवाली थी वह गिरतीहुई ऐसी दिखाई पड़ी जैसे कि इन्द्र का छोड़ाहुआ वज्र होताहै ९ रोहिणीनन्दन बलदेवजी ने उस आतीहुई गदा को देखकर उसके नाशके अर्थ स्तूणाकरण अस्त्रको छोड़ा १० अस्त्रके वेग से

घायल वह गदा पृथ्वी देवीको फाड़ती और पर्व्वतों को कम्पायमान करतीहुई पृथ्वीपर गिरपड़ी ११ जब कि वह जरासन्ध अपनी दो माताओं से आधा२अंग होकर उत्पन्न हुआ और निरर्थक जानकर उसको बाहर फेंक दियाथा उससमय वहां घोर पराक्रमी जरानाम राक्षसी ने उस खंड २ उत्पन्न होनेवाले शत्रुविजयी जरासन्धको उठाकर १२ जोड़दिया तब सुन्दर रूपवाला होगया उस जराने जो सन्धि मिलाकर जोड़ा इसी से इसका नाम जरासन्ध विख्यातहुआ १३ हे अर्जुन पृथ्वीपर बर्त्तमान वह राक्षसी अपने पुत्र बांधवोंसमेत उस गदा और स्थूणाकरण अस्त्रसे मारीगई १४ गदासे रहित वह जरासन्ध युद्धभूमि में तेरे देखते हुये भीमसेन के हाथ से मारागया १५ जोप्रतापवान् जरासन्ध उस गदा को हाथ में रखनेवाला होता तो हे नरोत्तम इन्द्र समेत सब देवता भी युद्ध में उसके बिजय करनेको समर्थ नहीं होसक्ते १६ द्रोणाचार्य्य ने तेरी वृद्धिकेलिये आचार्य्य दक्षिणाका उपदेशकरके कपटपूर्वक अंगुष्ठसे सत्यपराक्रमी एकलव्य जुदाकिया १७ वह अंगुलित्राण का धारण करनेवाला दृढ़ सत्य पराक्रमी बड़ा अहंकारी एकलव्य दूसरे रामचन्द्रजी के समान बनचारी होकर शोभायमान हुआ १८ हे अर्ज्जुन देवता दानव राक्षस और उरगों समेत युद्धके मध्यमें किसी दशा में उस अंगुष्ठ रखनेवाले एकलव्यके विजय करने को समर्थ नहीं होसक्ते १९ वह दृढ़ मुष्टिक सदैव अहर्निश धनुष बाणोंका अभ्यासी मनुष्यों से सम्मुख देखने को भी कठिनथा उसको भी मैंने तेरी वृद्धिके अर्थ युद्धके शिरपर अपने हाथसे मारा और पराक्रमी शिशुपाल तेरे नेत्रों के सम्मुख मारा २०।२१ उसका भी युद्ध में सब देवता और असुरों से मारना असंभव था मैं उसके और अन्य २ वहुतसे असुरों के मारने को प्रकट हुआहूं २२ हे नरोत्तम तुझको साथ रखने वाले मैंने लोकों के अभ्युदयकी इच्छासे प्रकटहोकर उन हिडम्ब,वक और किर्मीर नाम राक्षसोंको भीमसेनके हाथसे गिराया २३ जोकि रावणके समानवली और ब्रह्मयज्ञों के नाश करनेवाले थे इसीप्रकार मायावी अलायुध भी घटोत्कच के हाथसे मारागया २४ और घटोत्कच भी उपायके द्वारा कर्णकी शक्ती से मारा गया जो कदाचित् कर्ण उसको बड़े युद्ध में नहीं मारता २५ तो वह भीमसेन का पुत्र घटोत्कच मेरे हाथसे मारने के योग्यहोता मैंने पूर्वसमयमें तुम्हारे प्रिय करनेकी इच्छासे यह नहीं माराथा निश्चयकरके यह राक्षस ब्राह्मण और यज्ञों से

शत्रुता करनेवाला धर्मका गुप्त करनेवाला पापात्मा था इसी हेतुसे यह मारागया २६ । २७ हे निष्पाप पाण्डव इन्द्रकी दीहुई शक्तिको भी मैंनेही उपायसे चलवाई जो धर्म्म के लोप करनेवाले हैं वह सब मुझसे वध्यहैं २८ मैंने धर्म्म की स्थिरताके लियेही यह अविनाशी प्रतिज्ञा करी है कि वेद तप ब्राह्मण सत्यता इन्द्रियों का जीतना बाह्याभ्यन्तरकी पवित्रता धर्म ह्री श्री धृति और क्षमा २९ यह सब जिसस्थानपरहैं वहां मैं सदैव रहताहूं मैं सत्य २ तेरी शपथ खाताहूं कि सूर्य्य के पुत्र कर्ण के विषय में तुझको व्याकुलता नहीं करनी उचित है ३० मैं तुझको उपाय पूर्वक बतलाताहूं जिसके द्वारा तू उसको सहैगा भीमसेन भी युद्ध में दुर्योधनको मारेगा ३१ हे अर्जुन उसके भी मारनेका तुझसे कहताहूं यह शत्रुओंकी सेनामें कठोर शब्दकी आधिक्यता होरही है ३२ और तेरी सेना दूसरी दिशाओंको भागती हैं लक्ष्यभेदी कौरवलोग तेरी सेनाको छिन्नभिन्न करते हैं ३३ और यह प्रहारकर्त्ताओं में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य तेरी सेनाको भस्म करेडालते हैं ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिद्व्यशीतितमोऽध्यायः १८२ ॥

एकसौतिरासीका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि जब कर्ण के पास ऐसी शक्तिथी कि एकही वीरके मारने में फिर निष्फल होजाय तो किसकारण उसने सबको छोड़कर उस शक्ति को अर्जुन के ऊपर नहीं छोड़ा क्योंकि उसके मरनेपर सब सृञ्जयसमेत पांडवलोग मृतकरूप होजाते किसहेतुसे युद्धमें एकही वीरके मारने में विजयको नहीं प्राप्त किया १ । २ क्योंकि अर्जुनका तो यह सत्यव्रतथा कि बुलायाहुआ कभी नहीं लौटसक्ता था उस अर्जुन को कर्ण आप खोजकरलेता ३ इसके विशेष कर्ण ने द्वैरथ युद्धको प्राप्तकरके किस निमित्तसे अर्जुन को इन्द्रकी दीहुई शक्तिसे नहीं मारा हे सञ्जय यह मुझसे समझाकर कहो ४ निश्चयकरके मेरापुत्र बुद्धिसे और सहायता से रहितहोकर पापी शत्रुओं से ठगागयाहै वह कैसे शत्रुओं को विजय करसक्ता है ५ जो उसकी उत्तम शक्ती महाविजयका स्थानथी वह शक्ति वासुदेवजी ने घटोत्कचके ऊपर छुड़वादी ६ जैसे कि निर्बल के हाथका वर्त्तमान फल बलवान् हरलेताहै उसीप्रकार वह अमोघशक्ति घटोत्कच के ऊपर निष्फल हुई ७ मैं मानताहूं कि जिसप्रकार वराह और कुत्तेके युद्ध करतेहुये उन दोनोंके

नाशहोने में चांडालका लाभहोताहै हे विद्वान् उसीप्रकार कर्ण और घटोत्कच के युद्धमें बासुदेवजी का लाभहुआ ८ जो घटोत्कच कर्णकोही मारदेता तोभी पांडवोंका बड़ा लाभथा अथवा कर्णने भी जो उसको मारा तो भी शक्तीके नाश होजाने से करने के योग्य कियाहुआ कर्म्म होगया ९ पांडवों के हितकारी और सदैव उनकी वृद्धि चाहनेवाले बासुदेवजी ने बुद्धिसे उसको बिचारकर युद्ध में कर्ण के हाथसे घटोत्कचको मरवाया १० सञ्जय बोले कि मधुसूदनजी ने कर्णके उसकर्म करने की इच्छाको जानकर द्वैरथ युद्धमें राक्षसों के राजा घटोत्कच को प्रवृत्तकिया ११ हे राजा आप के दुर्मन्त्र करने पर बड़े बुद्धिमान् जनार्द्दनजी ने अमोघशक्ती के नाशकेअर्थ बड़े पराक्रमी घटोत्कचको आज्ञाकरी १२ हे कुरुद्वह हमलोग तभी कृतकार्य्य अर्थात् मनोरथ सिद्ध करनेवाले होसक्ते हैं जब कि श्री- कृष्ण उस पांडव अर्जुनको महारथी कर्णसे रक्षा नहीं करैं १३ हे धृतराष्ट्र योगेश्वर प्रभु जनार्द्दनजी के न होनेपर वह अर्जुन युद्धमें घोड़े ध्वजा और सारथीसमेत पृथ्वीपर गिरपड़े १४ श्रीकृष्णजीसेही अनेक प्रकारोंके उपायोंसे वह रक्षितकिया हुआ अर्जुन सम्मुखहोकर शत्रुओंको बिजय करताहै १५ वह श्रीकृष्णजी अ- मोघशक्तीसे भी अधिकहैं कि जिन्होंने पांडव अर्जुनको रक्षितकिया नहीं तो वह शक्ती अर्जुनको ऐसे शीघ्र मारडालती जैसे कि बिजली वृक्षको तत्क्षण मारती है १६ धृतराष्ट्र बोले मेरापुत्र बिरोधी कुमन्त्री अप्राज्ञ अहंकारी और निर्बुद्धी है जिसका कि यह अर्जुनके मारनेका सिद्ध उपाय हाथसे निष्फलहोकर गया १७ हे सूत उस बड़ेबुद्धिमान् सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ कर्ण ने उस अमोघशक्ती को अर्जुनके ऊपर क्यों न छोड़ा १८ हे सञ्जय यहबात तुझको भी किसहेतु से स्म- रण नहींरही इस भूलजानेका क्या कारणथा जिससे कि तुमने भी इस प्रयोजन को नहीं सुझाया १९ सञ्जयबोले कि सदैव हररात्रि को मेरी दुर्योधनकी शकुनी की और दुश्शासनकी यह सलाहहोती थी और सब मिलकर कर्ण से कहते थे कि हे कर्ण कल तुम सब सेनाओं को छोड़कर अर्जुनको मारो उसके पीछे हम पांडव और पाचालों को दासों के समान करके उनको अपना सेवकबनावेंगे २० । २१ अथवा अर्जुन के मरनेपर जो श्रीकृष्णजी दूसरे पांडव को नियतकरें इसकारणसे श्रीकृष्णहीको मारो २२ श्रीकृष्णजी पांडवों के मूलहैं अर्जुन स्कन्ध हैं और दूसरे पांडव डालियोंके समानहैं और पांचाल पत्तोंके समानहैं सबपांडव

श्रीकृष्णजीकेही आश्रित श्रीकृष्णजी काही बल रखनेवाले और श्रीकृष्णहीको अपना स्वामी माननेवाले हैं श्रीकृष्णजी भी इनके ऐसे रक्षाश्रयहैं जैसे कि नक्षत्रोंके चन्द्रमा रक्षाश्रय हैं २३ । २४ हे कर्ण इसकारणसे पत्र शाखा और स्कन्धको छोड़कर सर्बत्र सर्बदा श्रीकृष्णही को पांडवों का मूलजानो २५ हे राजा जो कर्ण कहीं यादवनन्दन श्रीकृष्णजीको मारे तो सम्पूर्ण पृथ्वी तेरे आधीन होजाय २६ जो वह यादवबंशी पांडवों के प्रसन्न करनेवाले महात्मा श्रीकृष्णजी मृतकहोकर पृथ्वीपर सोवें तो हे महाराज अवश्यही यहपृथ्वी पर्बत समुद्रोंसमेत तेरेआधीन बर्त्तमान होजाय २७ जाग्रत अवस्थामें देवेश्वर इन्द्रियोंके स्वामी अप्रमेय श्रीकृष्णजी के बिषयमें इसप्रकारकी हुई उस बुद्धिने युद्धके समय मोह को पाया २८ केशवजी भी सदैव अर्ज्जुनको कर्णसे रक्षाकरते थे और युद्ध में भी उसको कर्ण के सम्मुख नियत करना नहीं चाहा २९ हे प्रभु उस अबिनाशी ने यह शोचकर कि इस अमोघशक्तीको किसीप्रकारसे निष्फल करदूं इसनिमित्त दूसरेही महारथियोंको उसके सम्मुख नियत किया ३० हे राजा जो बड़े साहसी श्रीकृष्णजी इसप्रकार से अर्जुनकी रक्षाकरते हैं तो वह पुरुषोत्तम अपनी क्यों नहीं रक्षाकरेगा ३१ शत्रुबिजयी चक्रधारी श्रीकृष्णजी को मैं अच्छीरीतिसे बिचारकर देखता हूं कि वह पुरुष तीनोंलोकों में भी नहीं हैं जो जनार्द्दनजी को बिजयकरसके ३२ इसकेपीछे सत्य पराक्रमी रथियों में श्रेष्ठ महारथी सात्यकी ने कर्ण के बिषय में महाबाहु श्रीकृष्णजी से पूछा ३३ कि हे अतुल पराक्रमी यह शक्ती कर्ण के पास बड़ी बिश्वसितथी उसको कर्णने किसहेतुसे अर्जुन के ऊपर नहीं छोड़ा ३४ श्रीबासुदेवजी ने कहा दुश्शासन कर्ण शकुनि और जयद्रथ ने जिनमें मुख्य दुर्योधनथा वारम्बार सलाहकरी ३५ कि हे बड़ेधनुषधारी युद्धमें अमित पराक्रमी बिजयी पुरुषोंमें श्रेष्ठ कर्ण कुन्तीके पुत्र महारथी अर्जुनके सिवाय इस शक्तिको दूसरे किसी के भी ऊपर छोड़ना योग्य नहीं है ३६ वही इन सब पांडवों में ऐसा बड़ा यशस्वी है जैसे कि देवताओं में इन्द्र अर्जुन के मरने पर सब सृञ्जियोंसमेत पाण्डव ऐसे मनसे उदास होजायँगे जैसे कि अग्निसे रहित देवता होते हैं ३७ हे शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी कर्ण ने प्रतिज्ञा करी कि ऐसाही होगा और सदैव कर्ण के हृदयमें अर्जुनका मारना बना रहताथा ३८ हे युद्धोंमें श्रेष्ठ मैंही कर्णको अचेत और मोहित करे रहताहूं इसी कारण से उसने पांडव

अर्जुन पर उस शक्तीको नहीं छोड़ा ३९ हे शूरवीरों में श्रेष्ठ यह शोचतेहुये कि वह शक्ती अर्जुन का कालहै,मुझको न रात्रि में निद्रा आतीथी न दिनमें मन को प्रसन्नताथी ४० हे शूरसात्यकी अबमैं उस शक्तिको घटोत्कचके ऊपर छोड़ी हुई देखकर अर्जुन को कालके मुखसे बचाहुआ देखताहूं ४१ मेरे माता पिता और तुम सब भाइयों समेत अपने प्राणभी वैसे मुझको नहीं प्यारे हैं जैसे कि युद्धमें अर्जुन मुझको रक्षाकरने के योग्यहै ४२ हे यादव तीनोंलोकों के राजासे भी जो कुछ पदार्थ अलभ्य और दुर्लभहै मैं पांडव अर्जुनके सिवाय उसको भी नहीं चाहताहूं ४३ हे सात्यकी अब इसहेतु से मरकर लौटेहुये के समान पांडव अर्ज्जुनको देखकर मुझको बड़ी प्रसन्नता हुई है ४४ इसी हेतुसे युद्धमें मैंनेही उस राक्षस को कर्ण के पास भेजाथा क्योंकि रात्रि के युद्ध में कोई अन्य पुरुष कर्ण के पीड़ादेने को समर्थ न था ४५ संजयबोले कि अर्जुनकी वृद्धि में प्रवृत्त उसके हितही में सदैव प्रीतिमान् देवकीनन्दनजी ने सात्यकीसे यह कहा ४६॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरित्र्यशीतितमोऽध्यायः १८३ ॥

एकसौचौरासीका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे तात कर्ण दुर्य्योधन शकुनी और सौबलके पुत्रादिकी बड़ी विद्या और अधिकतर तेरी १ जो तुम युद्धमें शक्तिको सदैव एककी मारनेवाली हटाने के अयोग्य और इन्द्रसमेत सब देवताओं से भी असह्य मानते थे २ तो हे संजय प्रथम युद्ध जारी होनेपर कर्ण ने वह शक्ती किस निमित्त श्रीकृष्ण अ-थवा अर्जुनके ऊपर नहीं छोड़ी ३ संजयबोले हे कौरवकुलमें श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र सायंकालके समय युद्धसे लौटकर आनेवाले हम सबकी यह सलाहहुई ४ कि हे कर्ण कल प्रातःकाल के समय इस शक्ती को अर्जुन अथवा श्रीकृष्णजी के ऊपर छोड़ना अवश्य योग्यहै यह सदैव विचार होताथा ५ हे राजा इसके पीछे प्रातःकाल के समय देवताओं के कारणसे कर्णकी और दूसरे शूरवीरोंकी बुद्धि विनाशवान् होतीथी ६ मैं दैवको उत्तम मानता हूं जो कर्ण ने अपने हाथकी नियत शक्ती से युद्ध में अर्जुन को अथवा देवकीनन्दन श्रीकृष्णजी को नहीं मारा ७ कालरात्रि के समान उठाईहुई वह शक्ती उसके हाथमें नियतथी तबभी कर्ण ने दैवयोग से बुद्धिभ्रंश होनेसे उसको नहीं छोड़ा ८ हे प्रभु दैवकी माया

से मोहित कर्ण ने उस इन्द्रकी शक्तीको मारने के निमित्त देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण जी पर अथवा इन्द्रके समान बली अर्जुनपर नहीं छोड़ा ६ धृतराष्ट्र बोले कि तुम दैव और केशवजीकी निज बुद्धिसे हतेहुयेहो और इन्द्रकीशक्ति तृणरूप घटोत्कचको मारकर चलीगई १० कर्ण वा मेरे पुत्र और अन्य सब राजालोग उस कठिनतासे जानने के योग्य श्रीकृष्ण के कारण से यमलोक में गयेहुये विदित होते हैं ११ अब उसको फिर मुझसे कहो जैसे घटोत्कच के मरनेपर कौरव और पांडवोंका युद्ध जारीहुआ १२ जो वह प्रहार करनेवाली अलंकृत सेना संजय और पांचालोंसमेत द्रोणाचार्य्य के सम्मुख गई उन्होंने किसप्रकारसे युद्ध किया १३ पांडव और सृंजीलोग उन भूरिश्रवा और जयद्रथ को मारकर आनेवाले और जीवन को त्यागकरके सेनाके मँझानेवाले १४ व्याघ्र के समान जँभाई लेनेवाले कालके समान खुलेमुख धनुषसे बाणों के प्रहार करनेवाले द्रोणाचार्य्य के सम्मुख कैसे गये १५ हे तात जिन अश्वत्थामा, कर्ण और कृपाचार्य्य ने जिन में कि मुख्य दुर्य्योधन था द्रोणाचार्य्य को रक्षित किया उन्हों ने युद्धमें कौनसा कर्म किया १६ भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के मारने के अभिलाषी भीमसेन और अर्जुनने युद्धमें मेरे बीरोंको कैसे २ रोका हे संजय उस वृत्तान्तको मुझसे कहो १७ जयद्रथ और घटोत्कचके मरनेसे सहन न करनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त इनकौरव और पांडवों ने रात्रिके समय में कैसे युद्धकिया १८ संजयबोले हे राजा रात्रि के समय कर्णके हाथसे घटोत्कचके मरने और युद्धाभिलाषी प्रसन्नमन आपके शूरबीरों के गर्जने १९ सेनाके मरने और वेगसे चढ़ाई करनेपर घनघोर रात्रिमें राजायुधिष्ठिर ने बड़े कष्टको पाकर २० और दुःखितचित्त होकर महाबाहु भीमसेनसे यहबचन कहा कि हे महाबाहु भीमसेन दुर्योधनकी सेनाको रोको २१ घटोत्कचके मरनेसे मुझमें बड़ामोह उत्पन्न होगयाहै इसप्रकार भीमसेनको आज्ञा देकर अपने रथपर सवारहुआ २२ अश्रुपातों से भरा मुख वारम्वार श्वासलेता हुआ राजायुधिष्ठिर कर्णके पराक्रम को देखकर घोर मोहमें प्रवृत्तहुआ २३ तव उसप्रकार से राजा को पीड़ित देखकर श्रीकृष्णजी यह वचन बोले हे युधिष्ठिर शोक मतकरो यह व्याकुलता तुमको करना उचित नहींहै हे भरतवंशी व्यामोहता साधारण मनुष्यों में होती है आपमें नहीं होनी चाहिये २४ हे समर्थ राजा युधिष्ठिर उठो युद्धकरो और भारी धुरको उठाओ आपके अधैर्य होनेसे विजयमें

सन्देह होगा धर्मराज युधिष्ठिर श्रीकृष्णके वचनको सुनकर और हाथोंसे दोनों नेत्रोंको पोंछकर श्रीकृष्णजीसे यह वचन बोले २५ । २६ कि हे माधवजी धर्मोंकी परम गतिको मैं जानताहूं और जो उपकारको नहीं मानताहै उसका फल ब्रह्महत्याहै २७ हे जनार्दनजी उस महात्मा पुत्र सत्पुरुष घटोत्कचने भी वनवास में हमलोगोंकी सहायता करी २८ हे श्रीकृष्णजी अस्त्रोंके निमित्त यात्राकरनेवाले पाण्डव अर्जुनको जानकर यह बड़ा धनुषधारी घटोत्कच काम्यकवनमें मेरेपास आकर वर्त्तमान हुआ २९ जबतक अर्जुन नहीं आया तबतक हमारेही साथमे निवास करतारहा और गन्धमादन पर्व्वत की यात्रा में दुर्गम्य स्थानों से इसने हमको पारकिया ३० इस महात्माने थकीहुई द्रौपदी को अपनी पीठपर सवार किया हे प्रभु उसने मेरे निमित्त युद्धोंको प्रारम्भकिया और बड़ेयुद्धोंमें कठिन २ कर्मकिये ३१ हे जनार्दनजी जो मेरी प्रीति सहदेवमें है वही मेरी बड़ी प्रीति राक्षसोंके राजा घटोत्कचमें थी ३२ वह महाबाहु मेरा भक्तहोकर मेरा प्यारा और मैं उसको प्यारा था हे श्रीकृष्णजी मैं शोकसे संतप्तहोकर मूर्च्छाको पाताहूं ३३ हे यादवजी कौरवों से भगाईहुई सेनाओंको देखो और अच्छे उपाय करनेवाले महारथी द्रोणाचार्य और कर्णको देखो ३४ रात्रिके समय इन दोनोंसे मर्दनकी हुई पाण्डवी सेनाको ऐसे देखे जैसे कि दो मतवाले हाथियों से कमलका वन मर्दित होताहै ३५ हे माधवजी कौरवोंने भीमसेनके भुज बलको और अर्जुनके अद्भुत अस्त्रोंको अनादर करके अपना पराक्रमकिया ३६ युद्धभूमिमें यह द्रोणाचार्य्य कर्ण और राजा दुर्य्योधन युद्धमें घटोत्कच राक्षसको मारकर प्रसन्नचित्त होकर गर्जते हैं ३७ हे जनार्दनजी हमारे और आपके जीतेजी कर्णसे भिड़हुये घटोत्कचने कैसे मृत्युकोपाया ३८ हे श्रीकृष्णजी अर्जुनके देखतेहुये हम सबको अनादर करके महाबली भीमसेन के पुत्र राक्षसको मारा ३९ हे श्रीकृष्णजी जब धृतराष्ट्रके दुरात्मा पुत्रोंने अभिमन्युकोमारा तब उस युद्धमें महारथी अर्जुन नहीं था हमसब दुरात्मा जयद्रथसे रोकेगयेथे उस कर्ममें अपने पुत्रसमेत द्रोणाचार्यही कारणरूपहुये ४० । ४१ आप गुरुजीने उसके मारनेका उपाय कर्णको सिखाया और उसखड्ग खैंचनेवालेके खड्गको खड्गसेही दोखण्डकिया ४२ कृतवर्माने निर्दयताके समान उस आपत्तिमें वर्त्तमान अभिमन्युके घोड़ोंको और आगे पीछेवाले सारथियोंको अकस्मात् मारा इसीप्रकार अन्य २ बड़े धनुषधारियोंने युद्धमें अभि-

मन्युको गिराया ४३ हे यादववर श्रीकृष्णजी गांडीव धनुषधारी ने छोटेसे कारण से जयद्रथको मारा वह मेरा बड़ाप्रिय कर्म नहींहुआ ४४ जो पांडवोंकी ओरसे शत्रुओंका मारना न्यायपूर्वक होय तो प्रथम युद्धमें कर्ण और द्रोणाचार्य काही मारनायोग्यहै यह मेरा अभीष्टहै ४५ हे पुरुषोत्तम यह दोनों हमारे कष्टोंके मूलहैं दुर्योधन इन दोनोंको पाकर विश्वासयुक्तहै ४६ इसस्थानपर द्रोणाचार्य और कर्ण पीछे चलनेवालों समेत मारनेके योग्यथे वहां महाबाहु अर्जुनने दूरदेश निवासी जयद्रथको मारा अब मुझको कर्णका मारना अत्यन्त योग्यहै हे बीर इसहेतुसे मैं आपही कर्णके मारनेकी इच्छासे जाऊंगा ४७।४८ महाबाहु भीमसेन द्रोणाचार्य की सेनासे भिड़ाहुआहै शीघ्रता करनेवाला युधिष्ठिर इसप्रकारसे कहकर शीघ्र-ही चलदिया ४९ वह युधिष्ठिर बड़े धनुषको चलायमान करके भेरी शंखोंको ब-जाकर सम्मुखहुआ उसकेपीछे शिखण्डी हजाररथ और तीनसौहाथी पांचहजार घोड़े और पांचालों समेत प्रभद्रकोंसे युक्त होकर शीघ्रही राजाकेपीछे चला ५०। ५१ इसके पीछे कवचधारी पांचालों समेत पांडवों ने जिनमें अग्रगामी युधिष्ठिर था भेरी और शंखों को बजाया ५२ उस समय महाबाहु वासुदेवजी अर्ज्जुन से बोले ५३ कि यह क्रोधसे भराहुआ युधिष्ठिर कर्ण के मारने की इच्छा से शीघ्र जाताहै इसका त्यागना उचित नहीं है ५४ इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजीने इस प्रकारसे कहकर शीघ्र घोड़ों को चलायमान किया और दूर पहुँचेहुये राजाके पास पहुँचे ५५ कर्णके मारनेकी इच्छासे अकस्मात् जानेवाले शोकसे विदीर्ण और अग्निसे भस्महुये के समान धर्म के पुत्र युधिष्ठिरको देखकर ५६ समीपमें जाकर व्यासजी यह वचन बोले ५७ कि अर्जुन युद्धमें कर्ण को सम्मुखपाकर प्रारब्धसेही जीवताहै अर्जुनके मारने के अभिलाषी कर्ण ने उस शक्तिकी बड़ी रक्षाकरीथी अर्जुनने प्रारब्धसे उसकेसाथ द्वैरथ युद्धको नहीं प्राप्तकिया यह दोनों ईर्षा करनेवाले सब दिव्य अस्त्रों को छोड़ते ५८।५९ हे युधिष्ठिर युद्धमें अस्त्रों के निष्फल होनेपर पीड़ावान् कर्ण अवश्य इन्द्र की शक्ती को छोड़ता ६० हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ उससे तुमको बड़ाघोर दुःखहोता हे बड़ाई देनेवाले प्रारब्धही से कर्ण के हाथसे राक्षस मारागया ६१ यह इन्द्रकी शक्तीके बहाने से कालकरके ही मारागया हे तात वह राक्षस युद्धमें तेरे कारणसेही मारागया ६२ हे भरतवं-शियों में श्रेष्ठ क्रोधको त्यागकर शोकग्रस्त चित्तको मतकर युधिष्ठिर इसलोक

में सब जीवधारियों की यही दशाहै ६३ हे राजा युधिष्ठिर सब भाइयों और म-हात्मा राजाओं समेत युद्धकरो ६४ हे पुत्र पांचवेंदिन यह सब पृथ्वी तेरी होगी हे पुरुषोत्तम तुम सदैव धर्म्महीको विचारो ६५ हे पाण्डव अत्यन्त प्रसन्न मन होकर तुम तप दान क्षमा और सत्यताकोही सेवन करो जिधर धर्म्म है उधरही विजयहै ६६ व्यासजी पाण्डवोंसे यह कहकर उसीस्थानपर अन्तर्द्धानहोगये६७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणियुधिष्ठिरमतिव्यासशिक्षावर्णनेशतोपरिचतुरशीतितमोऽध्यायः १८४

एकसौपच्चासीका अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि हे भरतर्षभ व्यासजी से इसप्रकार समझाया हुआ धर्मराज युधिष्ठिर आप अपने से कर्ण के मारने में निवृत्तहुआ १ उस रात्रिमें कर्ण के हाथसे घटोत्कचके मारे जानेपर दुःख और क्रोध से वशीभूत होकर धर्मराज युधिष्ठिर २ भीमसेनसे हटाई हुई आपकी सेनाको देखकर धृष्टद्युम्न से यह वचन बोले कि द्रोणाचार्य्य को हटाओ ३ हे शत्रुओं के संतप्त करनेवाले तुम द्रोणाचार्य्यकेही नाशके अर्थ बाण कवच खड्ग और धनुषसमेत अग्निसे उत्पन्न हुये हो ४ युद्धमें प्रसन्न मन होकर सम्मुख दौड़ो तुझको किसीप्रकार भी भय नहीं होगा अत्यन्त प्रसन्नचित्त जन्मेजय, शिखण्डी, दौर्मुखि, यशोधर ५ तुम सब चारोंओरसे द्रोणाचार्य्य के सम्मुख जाओ नकुल, सहदेव, द्रौपदी के पुत्र, प्रभद्रक ६ द्रुपद, बिराट, अपने पुत्र भाइयों से संयुक्त सात्यकी, केकय और पांडव अर्जुन ७ द्रोणाचार्य्य के मारनेकी इच्छासे बड़े वेगसे सम्मुखजाओ और उसी प्रकार सब रथी और जो कुछ हाथी घोड़े हैं ८ वह सब और पदाती लोग युद्ध में महारथी द्रोणाचार्य्य को गिराओ फिर उस महात्मा युधिष्ठिरकी आज्ञा पाकर वह सब ९ द्रोणाचार्य्य के मारनेकी इच्छासे वेगसे सम्मुख दौड़े शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य ने उन आतेहुये पाण्डवों को सब उपायों से युद्ध में रोका १० इसके पीछे द्रोणाचार्य्य के जीवनको चाहता अत्यन्त क्रोधयुक्त राजा दुर्य्योधन सब उपायों से पांडवों के सम्मुख दौड़ा ११ तदनन्तर परस्पर गर्जनेवाले पांडव और कौरवोंका वह युद्ध जिसमें सवारियों समेत सेनाके लोग थकगये थे जारी हुआ १२ हे महाराज उन नींदों से उनींदे और युद्धमें थकेहुये महारथियों ने किसी चेष्टाको नहीं पाया १३ यह तीनपहररात्रि महाघोररूप भयानक प्राणोंकी

लेनेवाली हजार पहरके बराबर होगई १४ उन घायल और अत्यंत नींदसे अन्धे शूरबीरोंकी आधीरात्रि ब्यतीतहुई और सब क्षत्रिय दुःखीमन होकर उत्साहसे र-हितहुये १५ आपके और दूसरोंके शूरबीर अस्त्र और बाणोंसे रहितहुये तब युद्ध ब्रतको समाप्त करनेवाले और अत्यन्त लज्जावान् निजधर्म्मके देखनेवाले उन लोगों ने अपनी सेना को नहीं त्यागकिया दूसरे मनुष्य नींदसे अंधे अस्त्रोंको छोड़कर सोगये १६।१७ हे राजा कोई रथोंपर कोई हाथियोंपर और कोई घोड़ोंही- पर सोगये नींद से अन्धों ने किसी भी चेष्टाको नहीं जाना १८ बहुतसे शूरों ने युद्धमें उनको यमलोकमें पहुँचाया और कितनेही अत्यंतअचेत चित्तोंने सोते हुये शत्रुओंको भी मारा १९ युद्धमें कितनोहीं ने अपनाही अपघात किया और उस बड़े युद्धमें नानाप्रकारके बचनोंको कहते उन निद्रांध लोगोंने अपने शूर-बीरोंको और शत्रुओंको मारा २० हे महाराज हमारे बहुतसे मनुष्य यह समझकर कि शत्रुओंके साथ अवश्य युद्धकरना उचितहै नियतहोकर नींदसे लाललाल नेत्रवाले होकर २१ उस कठिन अन्धकारमें चेष्टा करतेथे और कुछ नींदसे अन्धे शूरबीरों ने युद्धमें अन्य शूरबीरोंको भी मारा २२ और निद्रासे अत्यन्त अचेत बहुत आदमियोंने युद्धमें शत्रुओंसे अपनेको घायल नहींजाना २३ पुरुषोत्तम अर्जुन उन्होंकी ऐसी चेष्टाको जानकर बड़े उच्चस्वरसे दिशाओंको शब्दायमान करता यहबचन बोला २४ कि बहुत धूल और अन्धकारसे सेनाके प्रवृत्त होनेपर आप सब सवारियों समेत नींदसे अंधे और श्रमित होगये २५ हे सेनाके लोगो जो तुममानो तो विश्रामकरो और यहां युद्धभूमिमें एकमुहूर्त पलक बंदकरो २६ हे कौरव पांडव लोगो फिर तुम चंद्रमाके उदय होनेपर नींदसे रहित आनंदयुक्त होकर परस्पर युद्धकरोगे २७ हे राजा सब धर्म्मों की जाननेवाली सेनाओं ने उस धार्म्मिक अर्ज्जुन के उसबचन को स्वीकार किया और उसीप्रकार परस्पर वार्त्तालापकरी २८ और पुकारे कि हे कर्ण हे कर्ण हे दुर्योधन यहकहकर पांडवों की सेना रथों से उतरकर युद्धको त्यागनेवाली हुई २९ हे भरतवंशी उसीप्रकार जहां तहां अर्जुनके पुकारते पांडवोंकी और आपकी सेनाने युद्धसे हाथको खेंचा ३० इस महात्माके उस वचनको देवताओं समेत ऋषियोंने और प्रसन्नचित्त सब सेनाओं के श्रेष्ठ लोगोंने प्रशंसा करी ३१ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र थकेहुये सब सेनाके मनुष्य उसदयासेयुक्त अर्ज्जुन के उस बचनकी प्रशंसा कर

के एक मुहूर्त्त तक सोये ३२ हे भरतवंशी फिर वह आपकी सेना विश्रामको पा-
कर सुखपानेवाली हुई और वीर अर्ज्जुनकी सबने ऐसे प्रशंसा करी ३३ कि हे
निष्पाप महाबाहु अर्ज्जुन तुझी में वेदहैं अस्त्रहैं बुद्धिहै पराक्रमहै तुझी में धर्म
है और जीवोंपर तेरीदयाहै ३४ हम सब आनन्दपूर्व्वक विश्राम करनेवाले तेरे
यश और कल्याणको चाहते हैं हे अर्ज्जुन तेरा कल्याणहोय हे श्रेष्ठ वीर तू अ-
पने चित्तके अभीष्टों को शीघ्र प्राप्तकर ३५ हे राजा वे महारथी इसप्रकार से उस
नरोत्तम अर्ज्जुनकी प्रशंसा करतेहुये निद्रासे युद्धभूमिमें पड़ेहुये मौनहोगये३६
कोई घोड़ोंकी पीठपर कोई रथोंकी नीढ़कर कोईहाथियों के कन्धोंपर और कोई
पृथ्वीपर सोगये ३७ कोई मनुष्य शस्त्र, बाजूबन्द, खड्ग, फर्सा, प्रास और कवच
समेत पृथक् २ होगये ३८ निद्रासे अन्धे उन हाथियों ने सर्पके फणोंकेरूप पृथ्वी
की धूलसे लिप्तहुई अपनी सूंड़ोंसे पृथ्वीको नाककी श्वासोंसे शीतलकिया ३९
वहां पृथ्वी तलपर श्वासायुक्त सोनेवाले लोग ऐसे शोभायमानहुये जैसे श्वास
लेनेवाले बड़े सर्पोंसेयुक्त पर्वत होतेहैं ४० उनस्वर्णमयी योक्त्रवाले घोड़ोंने बागों
पर चिपटेहुये युगसमेत खुरोंकी नोकोंसे समभूमिको विषमभूमि करदिया ४१ हे
महाराज वहां सब प्रकारकी सवारियों पर नियतहोकर सोगये अर्थात् इसप्रकार
बड़े कष्टसेयुक्त घोड़े हाथी और शूरवीर युद्धसे निवृत्तहोकर सोगये ४२ इसीप्रकार
निद्रामें डूबीहुई वहसेना ऐसे अचेतहोकर सोगई जैसे कि सावधान चित्रकारोंसे
कपड़ेपर काढ़ीहुई अपूर्व मूर्त्तियां होती हैं ४३ वह कुण्डलधारी शूरवीर परस्पर
शायकोंसे घायल अंगवाले क्षत्रिय हाथियों के कुम्भोंसे चिपटेहुये ऐसे सोगये
जैसे कि स्त्रियोंके कुचोंसे चिपटेहुये कामीपुरुष सोते हैं ४४ इसकेपीछे कुमुदनाम
कमलके स्वामी स्त्रियोंके कपोलोंके समान पीतरंग नेत्रोंको आनन्द करनेवाले
चन्द्रमासे पूर्वदिशा शोभितहोकर अलंकृतहुई ४५ वह उदयाचलकेसरी किरणों
से पीतरंग तिमिररूपी हाथियों का विनाश करनेवाला चन्द्रमा तारागणों स-
मेत दिशारूपी कन्दरासे उदयहुआ ४६ नन्दीगणके शरीरके समान प्रकाश-
मान और कामदेवके पूर्ण धनुषके समान प्रकाशित नवीनवधूके मंद मुसकान
के समान सुन्दर मनोहर चन्द्रमा कुमुदिनियोंको प्रफुल्लित करताहुआ फैला ४७
इसकेपीछे नक्षत्रों के प्रकाशोंको मंदकरते प्रभु भगवान् चन्द्रमाने एकमुहूर्त्तमेंही
पूर्व्वदिशामें अरुणको दिखलाया ४८ वह चन्द्रमाकी किरणें अपने प्रकाशसे

अन्धकारको हटातीहुई धीरे २ सबदिशाओं समेत आकाश और पृथ्वीपर फैल गई ४६ । ५० तदनन्तर वह भवन एकमुहूर्त्तमेंही ज्योतिरूप होगया और अंधकार शीघ्रतासेही गुप्तहोगया ५१ हे राजा चन्द्रमाके उदयमें लोकके प्रकाशित होनेपर रात्रि में घूमनेवाले राक्षसादिक घूमनेवाले हुये और नहीं भी हुये ५२ चन्द्रमाकी किरणोंसे सचेत और सावधान होनेवाली वह सब सेना ऐसे जागी जैसे कि सूर्य्यकी किरणों से कमलोंका बन प्रफुल्लितहोताहै ५३ जैसे कि उदय हुये चन्द्रमा में कम्पायमान और व्याकुल समुद्र होताहै उसीप्रकार चन्द्रमा के उदय होनेसे वह सेनारूपी समुद्र कम्पायमान होकर चेष्टा करनेवाला होगया ५४ इसके पीछे हे राजा संसारके नाशके लिये परलोक चाहनेवालोंका वह युद्ध फिरजारी हुआ ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिपंचाशीतितमोऽध्यायः १८५ ॥

एकसौछियासीका अध्याय ॥

संजय बोले कि फिर क्रोधके स्वाधीन वर्त्तमान दुर्योधन द्रोणाचार्य्य के पास [illegible]कर प्रसन्नता और पराक्रमको उत्पन्न करताहुआ यहबचन बोला १ कि युद्धमें [illegible]मर्षपूरित चित्त और अधिकतर लक्ष्य भेदन करनेवाले थके और विश्रामपाने[illegible]ले शत्रु क्षमाकरनेके योग्य नहीं हैं २ हमने आपके हितकी इच्छासे उसको [illegible]हलिया परन्तु वह विश्राम करनेवाले पाण्डव अधिकतर पराक्रमी हैं ३ और [illegible]मलोग सबप्रकार से तेज और बलोंसे रहितहैं आपके पोषण और कृपासे वह [illegible]ोग वारम्बार वृद्धिको पाते हैं ४ जो ब्राह्मय आदिक सबदिव्य अस्त्रहैं वह आ[illegible]के पास अधिकतर नियतहैं ५ पाण्डव हम और अन्य सब धनुषधारी लोग [illegible]ापके समान धनुषधारी और युद्धकरनेवाले नही हैं यहमैं आपसे सत्यसत्यही [illegible]हताहूं ६ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ सबअस्त्रोंके ज्ञाता आप अपने दिव्य अस्त्रोंसे इन [illegible]ोगोंको देवता असुर और गन्धर्वों समेत भी निस्सन्देह मारसक्तेहैं ७ सो आप [illegible]शिष्यता अथवा मेरी अभाग्यताको आगे करके इन अपनेसे अधिक भयभीतोंके [illegible]ऊपर क्षमाकरतेहो ८ संजय बोले हे राजा इसप्रकार के आपके पुत्रके बचनों से अप्रसन्न और क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य बड़े क्रोधितहोकर दुर्योधन से यह बचनबोले ९ हे दुर्योधन मैं वृद्धहोकर भी युद्धमे बड़ी सामर्थ्य से उपायकरताहूं इसकेपीछे

मुझ विजयाभिलाषी से नीचकर्म करनेके योग्यहै १० यह अस्त्रज्ञतासे रहित सब मनुष्यों का समूह मुझ अस्त्रज्ञसे मारनेके योग्यहै ११ जो आपभी मानते हैं वह अच्छाहोय वा बुरा हे कौरव मैं तेरे वचनसे उसकोभी करूंगा इसमें विपरीतता नहीहोगी १२ हे राजा मैं युद्धमें पराक्रमकरके सब पांचालों को मारकेही अपने कवचको उतारूंगा मैं सत्यतासे शस्त्रोंकी शपथ खाताहूं १३ हे महाबाहो जो तुम कुंती के पुत्र अर्जुनको युद्धमें थकाहुआ मानतेहो सो हे कौरव सत्यतापूर्वक उस के पराक्रमको सुनो १४ उस क्रोधयुक्त अर्जुनको युद्धमें देवता गंधर्व यक्ष और राक्षसभी विजय करनेको उत्साह नहीं करते हैं १५ देवराज भगवान् इन्द्रभी खां-डवबनमें जिसके साथ सम्मुखहुआ और वर्षा करताहुआभी महात्माके बाणोंसे रोकागया १६ और जिस नरोत्तमने घोषयात्रामें गन्धर्वमारे और चित्रसेनादिक विजय किये वह भी तुझको विदितहै १७ और उन गन्धर्वोंसे हरणकियेहुये तुम उस दृढ़धनुषधारी अर्जुनकेही द्वारा छूटे इसीप्रकार देवताओंके शत्रु निवात क-वच भी १८ जोकि युद्धमें देवताओंसे भी अबध्यथे उनको भी इसी वीरने विजय किया इसी पुरुषोत्तमने हिरण्यपुरवासी दानवों के हजारों समूहों को १९ विजय किया वह मनुष्योंसे कैसे पराजय होनेके योग्यहै हे राजा सब तेरे नेत्रोंके प्रत्यक्ष है कि जिसप्रकार तेरी यहसेना हमारे उपाय करतेहुये भी अर्जुनके हाथसे मारी गई २० संजय बोले हे राजा तब आपका पुत्र क्रोधयुक्त दुर्योधन उस अर्जुनकी प्रशंसा करनेवाले द्रोणाचार्य्यसे फिर यह बचन बोला २१ कि अब मैं दुश्शासन कर्ण और मेरा मामा शकुनी आदिक सब मिलकर सेनाके दो भागकरके युद्ध में अर्ज्जुनको मारेंगे २२ उसके उस वचनको सुनकर हँसतेहुये द्रोणाचार्य्य ने उसको अंगीकार किया और कहा कि तेरा कल्याणहो २३ कौनसा क्षत्रिय उस तेजसे ज्वलितरूप क्षत्रियों में श्रेष्ठ अविनाशी गांडीवधनुषधारी का नाश कर सक्ताहै २४ उस शस्त्रधारी को कुबेर इन्द्र यमराज जल का स्वामी वरुण असुर सर्प्प और राक्षस भी विजय नहीं करसक्के २५ और हे भरतवंशी तुमने जो २ बातें कहीं उन बातोंको जो कोई कहते हैं वह अज्ञानहैं युद्धमें अर्जुनको सम्मुख पाकर कौन कुशलता से घरको जासक्ताहै २६ इसके विशेष तू सबपर सन्देह करनेवाला कठोरचित्त और पापका निश्चय करनेवाला है और अपनी वृद्धि और कल्याण में प्रवृत्त पुरुषों को तू ऐसे २ कठोर वचनों को कहा करताहै २७

अब तुम जाकर अपने अर्थ अर्जुन को मारो बिलम्ब मतकरो तुम भी लड़ना चाहते हो क्योंकि कुलीन क्षत्रिय हो २८ इन निरपराधी सब क्षत्रियों को क्यों बिनाश करवाताहै तूही इस शत्रुताका मूलहै इसकारण अब शीघ्रतासे अर्जुन के सम्मुख हो २९ हे गांधारी के पुत्र यह तेरा मामा बुद्धिमान् क्षत्रिय धर्म्म पर चलनेवाला दुर्मति द्यूतकर्मी भी युद्धमें अर्जुन के सम्मुखजाय ३० यह पाशेकी विद्यामें कुशल कुटिल प्रकृति ज्वारी छली शठ खिलाड़ी छलबुद्धी शकुनी पांडवों को विजय करेगा ३१ तुमने कर्ण समेत प्रसन्नचित्त निर्बुद्धियों के समान मोहसे धृतराष्ट्र के सुनतेहुये बारम्बार यह बचन कहाहै ३२ कि हे पिता मैं और कर्ण और मेराभाई दुश्शासन तीनोंसाथ होकर युद्धमें पाण्डवों को मारेंगे ३३ प्रत्येक सभामें तुम्ह कहनेवाले का यही बचन बारम्बार सुनागया उस प्रतिज्ञा में नियतहो और उनकेसाथ में सत्यवक्ताहो ३४ यह तेराशत्रु पाण्डव निस्सन्देह आगे नियतहै क्षत्रिय धर्म्म को विचारकर तेरा मरना विजय होनेसे भी अधिक प्रशंसाके योग्यहै ३५ दानकिया भोगकिया जपकिया और यथेच्छित ऐश्वर्यको पाया सब ऋणोंसे निवृत्त अर्थात् देवऋषि और पितरों के तीनोंऋणोंसे अऋण है अब भय न कर पाण्डवों से युद्धकर ३६ द्रोणाचार्य्यजी ऐसा कहकर युद्धमें उधरको लौटे जिधरको कि शत्रुलोगथे इसके अनन्तर सेनाके दो विभागकरके अच्छे प्रकार से युद्धहुआ ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषटशीतितमोऽध्यायः १८६ ॥

एकसौसत्तासीका अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा रात्रिका तीसराभाग शेष रहनेपर अत्यन्त प्रसन्नचित्त कौरव और पांडवों का युद्ध जारीहुआ १ तदनन्तर चन्द्रमा के प्रकाश को म्लान करते आकाश को रक्तवर्ण करते सूर्य्य के अग्रगामी अरुण का उदयहुआ २ पूर्व दिशामें सूर्य्य के सारथी अरुण से आरक्त वर्णकियाहुआ सूर्यमंडल सुनहरी चक्र के समान शोभायमानहुआ ३ तब कौरव और पांडवों के सब शूरवीर-रथ घोड़े मनुष्य और सवारियों को छोड़कर सूर्य्यके सम्मुख जपकरते संध्यामें प्रवृत्तहोकर हाथोंको जोड़नेलगे ४ तदन्तर सेनाके दो भागकरनेपर वह द्रोणाचार्य जिनका अग्रगामी दुर्य्योधनथा सोमक पाण्डव और पांचालों के सम्मुखगये ५ माधवजी

दोभाग कियेहुये कौरवोंको देखकर अर्ज्जुन से बोले कि शत्रुओंको वामकरके इनको दाहिने करो ६ अर्जुन माधवजी से यह कहकर कि करिये बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्य और कर्ण के बाईओरको वर्त्तमानहुआ ७ शत्रुओं के पुरोंका विजय करनेवाला भीमसेन श्रीकृष्णजी के चित्तके विचारको जानकर युद्धभूमि में अर्ज्जुन से बोला ८ कि हे अर्ज्जुन मेरे वचन को सुन ईश्वरने क्षत्रियों को जिस निमित्त उत्पन्नकियाहै उसका यह समय आगयाहै ९ इस समयके वर्त्तमान होने पर भी जो कल्याण को नहींपाओ तो तुम अपने अभीष्टोंको न प्राप्त होकर बड़े निर्द्दय कर्मको करोगे १० पराक्रम से सत्यता लक्ष्मी धर्म्म और यशकी अयोग्यताको पाओगे हे शूरवीरों में श्रेष्ठ सेनाको तोड़ो और इनको दाहिने करो ११ संजय बोले कि श्रीकृष्णजी और भीमसेनकी आज्ञापाकर अर्ज्जुनने कर्ण और द्रोणाचार्य्य को उल्लंघनकर चारोंओरसे घेरा १२ इसकेपीछे क्षत्रियों में श्रेष्ठलोग उस युद्धके शिरपर आनेवाले उत्तम क्षत्रियों के भस्म करनेवाले पराक्रम के द्वारा चढ़ाई करनेवाले १३ अग्नि के समान वृद्धियुक्त अर्ज्जुन के रोकने को समर्थ नहीहुये फिर दुर्योधन कर्ण और सौबलका पुत्र शकुनी यह सब १४ बाणसमूहों से कुन्ती के पुत्र अर्ज्जुन पर वर्षा करनेलगे हे राजेन्द्र उस श्रेष्ठ अस्त्रज्ञों में भी बड़े श्रेष्ठतम अर्ज्जुनने उन्होंके सब अस्त्रोंको निष्फलकरके बाणोंकी वर्षासे आच्छादित करदिया १५ हस्तलाघवी जितेन्द्रिय अर्ज्जुनने अस्त्रोंसे अस्त्रोंको हटाकर सबको तीक्ष्णधारवाले दशदश बाणोंसे छेदा १६ धूलकी अतिवर्षाहुई और बाणोंकी अति वृष्टिहुई उससमय घोर अन्धकार और महाशब्द हुआ उसदशा में न आकाश जानागया न दिशाओंसमेत पृथ्वी जानीगई १७ हे राजा सेना की धूलसे सब संसार मूढ़ और अन्धेके समान होगया उससमय उन्होंने और हमने परस्पर नहीं पहचाना राजालोग उस वार्त्तालाप के द्वारा अच्छीरीति से लड़े १८ हे राजा रथसवार रथसे रहितहो परस्पर सम्मुखपाकर शिरों के बाल कवच और भुजाओंपर चिपटगये १९ वह रथी जिनके घोड़े सारथी मारेगये वह चेष्टासे रहित होकर मारेगये और जीवतेहुये शूरवीर रुधिर से पीड़ावान् दिखाई पड़े २० इसरीतिसे घोड़े सवारों समेत पर्व्वतों के समान मृतक हाथियों से चिपटकर बिना पराक्रम के समान दृष्टि गोचरहुये २१ उसकेपीछे द्रोणाचार्य्य संग्राम से उत्तर दिशामें जाकर निर्धूम अग्निके समान प्रज्वलितरूप युद्धमें नियतहुये

२२ हे राजा पाण्डवों की सेना उसयुद्धके शिरोभागसे एकान्त में हटजानेवाले द्रोणाचार्य्यको देखकर अत्यन्त कंपायमानहुई २३ हे भरतबंशी दूसरी ओरवाले लोग उसप्रकाशमान शोभासंयुक्त तेजसे ज्वलितरूप द्रोणाचार्य्यको देखकर भयभीतहुये और घूम २ कर मृतक प्रायहोगये २४ शत्रुकी सेना के बुलानेवाले मतवाले हाथीकेसमान इन द्रोणाचार्य्य के विजय करने को ऐसे आशानहीं करी जैसे कि दानव लोगोंने इन्द्र के विजय करने की आशाको त्यागाथा २५ कितनेही उत्साह से रहितहुये कितनेहीं साहसी चित्तसे क्रोधयुक्त हुये कोई आश्चर्य युक्त और कोई असहन शीलहुये २६ किसी २ राजाओं ने हाथोंसे हाथोंके अग्र भागको मर्द्दन किया और कितनेही क्रोधसे मूर्च्छामानों ने दांतों से ओठोंको काटा २७ बहुतों ने शस्त्रोंको फेंका अनेकों ने भुजाओं को मर्द्दनकिया शरीर से प्रीतिकरनेवाले बड़े साहसी कितनेहीं लोग उग्र तेजस्वी द्रोणाचार्य्यके सम्मुख गिरे २८ हे राजेन्द्र फिर द्रोणाचार्य्य के शायकों से अधिकतर पीड़ावान् और युद्धमें अत्यन्त दुःखी पांचाल लोग अच्छेप्रकार से भिड़े २९ इसके पीछे राजा बिराट द्रुपद युद्ध में उसप्रकार घूमनेवाले युद्ध में कठिनता से विजय होनेवाले द्रोणाचार्य्य के सम्मुखगये ३० और राजाद्रुपदके तीन पोते और बड़े धनुषधारी [चं]देरी देशी द्रोणाचार्य्य के सम्मुख गये ३१ द्रोणाचार्य्य ने तीक्ष्णधारवाले तीन [ब]ाणों से उन तीनों द्रुपद के पौत्रों के प्राणोंकोहरा और वह मृतक होकर पृथ्वी [प]र गिरपड़े ३२ फिर भारद्वाज द्रोणाचार्य्य ने युद्धमें चंदेरी केकय सृञ्जय और [म]त्स्यदेशी सब महारथियों को विजयकिया ३३ हे महाराज इसकेपीछे राजाद्रु[प]द और विराटने युद्धमें क्रोधकरके द्रोणाचार्य्य के ऊपर बाणोंकी वर्षाकरी ३४ [क्ष]त्रियों के मर्द्दन करनेवाले द्रोणाचार्य्य ने उस बाणवृष्टी को काटकर उन दोनों [व]िराट और द्रुपदको बाणोंसे ढकदिया ३५ फिर युद्धमें द्रोणाचार्य्यसे ढकेहुये क्रोध युक्त महाक्रोधमें नियत उन दोनोंने द्रोणाचार्य्यको बाणोंसे घायलकिया ३६ तब क्रोध और असहन शीलतासे युक्त द्रोणाचार्य्य ने अत्यन्त तीक्ष्ण दो भल्लोंसे उन दोनोंके धनुषोंको काटा ३७ फिर द्रोणाचार्य के मारनेकी इच्छासे क्रोधयुक्त विराटने युद्धमें दशतोमर और दशबाणोंकोछोड़ा ३८ और क्रोधसे पूर्ण द्रुपदने घोररूप सुवर्णसे शोभित सर्पराजके आकृतिवाली लोहेकी शक्तीको द्रोणाचार्य्य के रथपर फेंका ३९ फिर द्रोणाचार्य ने अत्यन्त तीक्ष्णधार भल्लोंसे उनदशतोमरों

को काटकर सुवर्ण और वैडूर्य्यसे जटित शक्तीको भी शायकोंसे काटा ४० हे शत्रु मर्द्दन करनेवाले उसके पीछे द्रोणाचार्य्य ने पीतरंगवाले दो भल्लोंसे द्रुपद और विराटको यमपुरमें भेजा ४१ विराटद्रुपद और इसीप्रकार केकयचंदेरी मत्स्य और पांचाल देशियोंके नाशमानहोने ४२ और राजा द्रुपदके तीनों वीरपौत्रोंकेमरने पर द्रोणाचार्य्य के उस कर्मको देखकर क्रोध और दुःखसे युक्त ४३ बड़े साहसी धृष्टद्युम्नने रथियोंके मध्यमें शापदिया कि वहपुरुष यज्ञोंके फल और वापीआदि वनानेके पुण्य क्षत्रिय धर्म्म और वेद ब्राह्मणों की भक्तीसे रहितहोजाय ४४ जो अपने शत्रु द्रोणाचार्यको अवजीता छोड़े अथवा उसको द्रोणाचार्यही पराजय करें उन सब धनुषधारियों के मध्यमें यह प्रतिज्ञाकरके ४५ शत्रुओंके वीरों का मारनेवाला धृष्टद्युम्न सेनासमेत द्रोणाचार्य्य के सम्मुखगया और पाण्डवों समेत पांचालोंने एकओरसे द्रोणाचार्य को घायलकिया ४६ दुर्योधन कर्ण सौवलका पुत्र शकुनी और दुर्योधनके मुख्य२ सगे भाइयोंने युद्धमें द्रोणाचार्य्यको रक्षित किया ४७ फिर उपाय करनेवाले पांचाल उसप्रकार बड़े२ उन महारथियोंसे रक्षित द्रोणाचार्य्यके देखनेको भी समर्थ नहींहुये ४८ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र वहां भीमसेन धृष्टद्युम्नके ऊपर क्रोधयुक्त हुआ उस पुरुषोत्तमने उसको उग्र वचनोंसे घायलकिया ४९ भीमसेन बोले कि द्रुपदके कुलमें उत्पन्न और अस्त्रों में अच्छेकुशल अपने को क्षत्रिय माननेवाला कौन पुरुष सम्मुख नियतहुये शत्रुको देखसक्ता है ५० कौन पुरुष पिता और पुत्रोंके मरनेको प्राप्तकरके अधिकतर राजसभामें शपथ को खाकर भी फिर क्षमाकरे ५१ यह वाण और धनुषरूपी ईंधन रखनेवाला और अपने तेजसे अग्निके समान वृद्धि पानेवाला द्रोणाचार्य्य तेजसे क्षत्रियोंके समूहोंको भस्मकरताहै ५२ आगेसे पाण्डवों की सेनाको नाशकरताहै तुम नियत होकर अब मेरे कर्मको देखो मैं द्रोणाचार्य के सम्मुख जाताहूं ५३ क्रोधयुक्त भीमसेन यह कहकर कानतक खैंचेहुये वाणोंसे आपकी सेनाको भगाताहुआ द्रोणाचार्य्यकी सेनामें प्रविष्टहुआ ५४ पांचालदेशी धृष्टद्युम्नने भी वड़ी सेनामें प्रवेश करके युद्धमें द्रोणाचार्य्य को सम्मुख पाया तव वहां वड़ा तुमुल युद्धहुआ ५५ हमने वैसा युद्ध न देखाथा न कभी सुनाथा हे राजा जैसे कि सूर्य के उदयहोने पर वह महाभयङ्कर युद्धहुआ ५६ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र रथों के समूह परस्पर भिड़ेहुये दिखाई पड़े और शरीर धारियों के मृतकशरीर पड़ेहुये दीखे ५७ दूसरे स्थानमें

जानेवाले कोई शूरवीर मार्ग में अन्य शूरों से सम्मुखता कियेगये कोई पीठकी ओरसे मुख फेरनेवाले और कोई इधरउधरसे घायल कियेगये ५८ इसप्रकार वह कठिन युद्ध अत्यन्त भयानकहुआ इसकेपीछे एकक्षणभरमेंही सूर्य संध्यामें वर्त्तमान होताहुआ दिखाई दिया ५९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिसप्ताशीतितमोऽध्यायः १८७ ॥

एकसौअट्ठासीका अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज युद्धभूमिमें उन कवचधारी वीरोंने संध्यामें वर्त्तमान हजारकिरणों के स्वामी सूर्यनारायण का उपस्थान किया १ फिर संतप्तकियेहुये सुवर्णके समान प्रकाशमान सूर्यके उदयहोने और संसारके प्रत्यक्षहोनेपर फिर युद्ध जारीहुआ २ वहां सूर्य्योदयसे पूर्व्वही जो द्वन्द्वयुद्ध जारीहुये हे भरतवंशी सूर्यके उदयहोनेपर भी वही अच्छीरीतिसे भिड़े ३ रथोंकेसाथ घोड़े घोड़ोंकेसाथ हाथी पदातियोंके साथभी हाथी घोड़ोंके साथ घोड़े और पदातियोंके साथ पदाती युद्ध करनेलगे ४ भिड़ेहुये और विनाभिड़ेहुये शूरवीर युद्धमें दौड़े रात्रिमें युद्धकरनेवाले कर्मकर्त्ताथके और सूर्यकेतेजसे ५ क्षुधातृपासेयुक्त शरीरवाले वहुत से मनुष्य अचेतहोकर सोगये शङ्ख भेरी मृदंगोंके गर्जनेवाले हाथियोंके ६ और मण्डलरूप खिंचेशब्दायमान धनुषोंके वड़े शब्द स्वर्गको स्पर्शकरनेवाले हुये ७ हे भरतर्षभ चलनेवाले पदाती और गिरनेवालेशस्त्र हींसनेवाले घोड़े लौटनेवाले रथ ८ और पुकारते और गर्जते सेनाके लोगोंके वड़े कठोर शब्दहुये तव उस अत्यन्त वृद्धियुक्त कठोर शब्दने स्वर्गको प्राप्तकिया ९ नानाप्रकार के शस्त्रोंसे टूटेअंग पृथ्वीपर चेष्टा करनेवालों के महान्शब्द कठिन दुःखसे सुनेगये तव गिरे हुये गिरनेवाले पत्ति घोड़े रथ और हाथियोंका वड़ा दुःख वर्त्तमानहुआ उनसव भिड़ीहुई सेनाओंके मध्यमें १० । ११ अपनों ने अपनों को दूसरों ने अपनों को और अन्योंने अन्यों को भी मारा वीरोंकी भुजासे शूरवीरों पर और हाथियोंपर छोड़ेहुये १२ खड्गोंके समूह इसप्रकार दिखाईपड़े जैसे कि धोवियोंके पास कपड़ों के ढेर होते हैं वीरोंकी भुजाओंने उठाकर परस्पर मारेहुये खड्गोंके १३ शब्द भी ऐसे प्रकारके हुये जैसे कि धुलतेहुये वस्त्रोंके शब्द होते हैं अङ्कुश [illegible] तोमर और फरसोंसे १४ समीपी युद्ध वड़ाकठिन और भयङ्करहुआ वीरोंने हाथी घोड़ों

के शरीरोंसे और राजाओंसे प्रवाहन युक्त १५ शस्त्ररूपी मछलियोंसे पूर्ण रुधिर मांसरूप कीच रखनेवाली १६ पीड़ाके शब्दों से शब्दायमान पताका शस्त्रों से फेनयुक्त परलोककी ओरको वहनेवाली नदीको जारीकिया १७ वाण शक्तियोंसे पीड़ित थके और रात्रिमें अचेत निर्बुद्धी हाथी और घोड़े सबअङ्गोंको अचेष्टकरके नियतहुये १८ भुजा और चित्रित कवचोंसे शोभित सुन्दर कुंडलधारी शिर और युद्धके अन्य २ सामानोंसे जहां तहां सुशोभित और प्रकाशमानहुये १९ वहां कच्चे मांसाहारी जीवोंके समूहोंसे और मरे अधमरे शूरवीरों से आच्छादित सब युद्धभूमिमें रथोंका मार्ग नहीं रहा २० वह वड़ेघोड़े रथचक्रों के डूबजाने से थके कांपते वाणोंसे पीड़ावान् पराक्रम में नियतहोकर वड़े२ उपायोंसे रथोंको लेचले २१ जोकि श्रेष्ठ जातिके वल पराक्रमसे युक्त हाथियोंके समानथे हे भरतवंशी तब सब सेना द्रोणाचार्य्य और अर्जुन के सिवाय व्याकुल भ्रान्ती से युक्त भयभीत और दुःखी होगई और वह दोनों रक्षाश्रय पीड़ावान् लोगोंके रक्षाके स्थानहुये २२।२३ दूसरे शूरवीर उन दोनोंको पाकर यमलोक को गये घोड़ोंकी सब वड़ी सेना महाव्याकुल हुई २४ और भिड़ेहुये पांचालोंकी सेनाभी व्याकुलहुई कुछ नहीं जानागया पृथ्वी पर राजाओं का घोर नाश प्रकट होनेपर वह युद्धभूमि यमराज के क्रीड़ास्थान के समान भयभीतों के भयको वढ़ानेवाली होगई हे राजा वहां हमने सेनाकी धूलसे ढके और भिड़ेहुये कर्ण को नहीं देखा न द्रोणाचार्यको न अर्जुनको न युधिष्ठिरको २५।२६ न भीमसेन नकुल सहदेवको न धृष्टद्युम्न सात्यकी दुश्शासन अश्वत्थामाको और न दुर्योधन समेत शकुनीको देखा २७ कृपाचार्य शल्य कृतवर्माको न दूसरोंको न अपनेको न पृथ्वीको और न दिशाओं को देखा २८ धूलरूप वादलके उठने पर घोर और कठिन भ्रान्तीमें २९ हमलोगों ने दूसरी रात्रिकोही वर्त्तमान जाना न कौरव न पांचाल और न पाण्डवलोग जानेगये ३० न दिशा आकाश पृथ्वी और न धरतीकी सम विषमता जानीगई तब हाथके स्पर्शोंसे ज्ञातहोनेवाले अपने वा दूसरोंके शूरवीरोंको ३१ क्रोधयुक्त इच्छावान् मनुष्यों ने एकने एकको गिराया धूलके कठिन उठने और रुधिर के छिड़कावसे ३२ अथवा वायुकी शीघ्रगामितासे पृथ्वी की धूल शान्त होगई वहां हाथी घोड़े और शूरवीर रथी पदाती ३३ रुधिरमें लिप्त पारिजातक वृक्षोंके वनोंके समान शोभायमानहुये उसकेपीछे दुर्य्योधन कर्ण द्रोणा-

चार्य्य दुश्शासन ३४ यह चारोंरथी चारों पाण्डवों के साथ भिड़े दुर्य्योधन अपने भाई समेत नकुल और सहदेव से भिड़ा ३५ कर्ण भीमसेन के साथ और अर्जुन द्रोणाचार्य्य के साथ युद्ध करनेलगा सब लोगोंने सब ओरसे उसघोर और बड़े भारी युद्धको देखा रथियों में श्रेष्ठ उन उग्र पुरुषों का युद्ध दिव्य और बिचित्र रथोंसे व्याकुल रथके विचित्र मार्गोंसमेत हुआ ३६ । ३७ उपाय पूर्व्वक अपूर्व्व युद्ध करनेवाले परस्पर बिजयाभिलाषी रथियों ने अपूर्व्व युद्धकर्त्ताओं के उस अद्भुत और बिचित्र युद्धको देखा ३८ सूर्य्य के समान रथोंपर चढ़ेहुये उन पुरुषोत्तमों ने बाणोंकी बर्षा से ऐसा ढकदिया जैसे कि बर्षाऋतुमें बादल आच्छादित करदेताहै ३९ हे महाराज फिर क्रोध और असहिष्णुता से युक्त वह युद्धकर्त्ता ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि चलायमान बिजली से युक्त शरदऋतु के बादलहोते हैं ४० इसीप्रकार वह ईर्षा करनेवाले धनुषधारी और उपाय करनेवाले शूरबीर ऐसे परस्पर में भिड़े जैसे कि मतवाले हाथी भिड़ते हैं ४१ हे राजा निश्चयकरके समय आये बिना शरीर त्यागनहीं होताहै जिस स्थानपर सब महारथी एकसाथही शरीरों के छोड़नेवाले नहींहुये ४२ अर्थात् कटेहुये भी जीव युक्त थे तब युद्धभूमि में कटेहुये भुज चरण कुण्डलधारी शिर धनुष बिशिख फरसे खड्ग प्रास ४३ नालीक क्षुद्रनाराच नखर शक्ति तोमर और कारीगरों के साफ कियेहुये नानाप्रकार के अन्य उत्तम शस्त्र ४४ नानारूप के बिचित्र कवच टूटेबिचित्र रथ मरेहुये हाथी घोड़े ४५ और जिनके शूरबीर मारेगये ध्वजा टूटगई उन पर्व्वतके समान रथ और मनुष्यों से रहित जहां तहां खैंचते भयानक घोड़ों से ४६ और जिनके बीरमारेगये उन बायुकेसमान बारम्बार दौड़नेवाले अलंकृत घोड़े व्यजन कुण्डल और गिरीध्वजा ४७ छत्र भूषण बस्त्र सुगंधित माला हार किरीट मुकुट पगड़ी क्षुद्रघंटिकाओं के समूह ४८ और हृदय पर बिराजमान मणिमाणिकादि से जटित चूड़ामणियों से ऐसी शोभायमानहुई जैसे नक्षत्रों के समूहों से आकाश शोभित होताहै ४९ इसकेपीछे क्रोधयुक्त असहनशील राजा दुर्योधनकी सम्मुखता अक्षम नकुल के साथहुई ५० फिर सैकड़ों बाणोंको छोड़तेहुये नकुल ने आपके पुत्रको दाहिना किया वहां बड़ेशब्दहुये ५१ अत्यन्त क्रोधयुक्त युद्ध में शत्रु से दाहिने कियेहुये अपने को नहींसहा और उसको भी इसने दाहिना किया ५२ हे महाराज आपके पुत्र दुर्य्योधन ने शीघ्रतासेही ऐसा किया इसके

अनन्तर बदला करने के अभिलाषी आपके पुत्रको ५३ चित्रमार्ग्ग के ज्ञाता तेजस्वी नकुल ने रोका फिर बाणजालों से पीड़ावान् करते उस दुर्य्योधन ने इस नकुलको सब ओरसे हटाकर ५४ मुखफेरनेवाला किया उससमय सेनाके लोगों ने उसकी प्रशंसाकरी फिर नकुल पिछले सब दुःखोंको और आपके कुमन्त्रोंको स्मरण करके आपके पुत्रसे तिष्ठतिष्ठ शब्दोंको बोला ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिअष्टाशीतितमोऽध्यायः १८८ ॥

एकसौनवासीका अध्याय ॥

संजय बोले कि फिर क्रोधयुक्त दुश्शासन रथकी कठिन तीव्रता से पृथ्वी को कंपायमान करता सहदेव के सम्मुखगया १ शत्रुओं के विजय करनेवाले सहदेव ने शीघ्रही उस आतेहुये दुश्शासन के सारथी के शिरको भल्लसे काटा २ दुश्शासन और अन्य किसी सेनाके मनुष्यों ने भी सहदेव के हाथ से इस सारथी के शिरकटने को नहीं जाना ३ फिर जब न पकड़ने से घोड़े स्वेच्छाचारी चलने लगे तव दुश्शासन ने सारथीको मराहुआ जाना ४ वह घोड़ोंकी विद्यामें कुशल रथियोंमें श्रेष्ठ दुश्शासन युद्धभूमिमें आपही घोड़ोंको पकड़कर युद्ध करनेलगा वह युद्धभी वड़ी तीव्रतासे अपूर्व्व और उत्तमहुआ अपने और दूसरों के शूरवीरों ने युद्धमें उसके उस कर्म्मकी भी प्रशंसा करी ५ जो कि सारथी से रहित रथ की सवारी से निर्भय के समान युद्धभूमिमें घूमा फिर सहदेव ने तीक्ष्णबाणों से उन घोड़ोंको ढकदिया ६ बाणों से पीड़ावान् वह घोड़े शीघ्रही इधर उधरको भागे और उसने वागडोरों में प्रवृत्त होनेसे धनुषको रखदिया और फिर धनुषसे कर्म करनेवालेने वागडोरोंको छोड़ा माद्रीनन्दनने इन २ अवकाशों पर उसको बाणों से घायलकिया ७।८ कर्ण आपके पुत्रको चाहता उसस्थानपर आया उसकेपीछे सावधान भीमसेन ने कर्णको ९ कानतक खैंचेहुये तीनभल्लोंसे भुजाओं समेत छातीपर छेदा फिर कर्ण मलेहुये सर्पकी समान लौटा १० और तीक्ष्ण बाणोंसे भीमसेन को रोका तव भीमसेन और कर्णका वह युद्धभी वड़ा कठिनहुआ ११ बैलोंके समान गर्जनेवाले खुलेनेत्र क्रोधयुक्त वहदोनों वड़ी तीव्रतासे परस्पर सम्मुख दौड़े १२ वहां बाणजालके कटजानेसे उन युद्धमें कुशल भिड़ेहुये भीमसेन और कर्णका गदायुद्ध वर्त्तमानहुआ १३ हे राजा फिर भीमसेनने गदासे कर्णके

रथ कूबरको सौटुकड़े किया यह आश्चर्य्यसा हुआ १४ इसकेपीछे पराक्रमी कर्ण ने भीमसेन की गदाको घुमाकर भीमसेनही के रथपर छोड़ा और गदासे गदा को तोड़ा १५ फिर भीमसेन ने अपनी प्रिय गदाको कर्ण के ऊपर फेंका कर्ण ने सुन्दर पुंख बड़े बेगवान् अन्य बहुत बाणोंसे उसगदाको फिर खण्डितकिया वह कर्ण के बाणों से हटाई हुई मंत्रसे कीलित सर्पों के समान गदा फिर भीमसेन के पास आई १६ । १७ तदनन्तर उसके आघातसे भीमसेनकी बड़ीध्वजा गिरपड़ी और गदासे घायल होकर इसका सारथी अचेतहुआ १८ उस क्रोधसे मूर्च्छा-वान् ने कर्ण के ऊपर आठ शायकों को छोड़ा हे भरतबंशी शत्रुओं के बीरों के मारनेवाले हँसतेहुये महारथी भीमसेन ने उनतीक्ष्णधार तीक्ष्णबाणों से उसके ध्वजा धनुष और तूणीरको काटा १९ । २० इसपीछे राधाकेपुत्र कर्णनेभी सुबर्ण-पृष्ठी कठिनता से चढ़ाने के योग्य दूसरे धनुप को लेकर बाणोंसे उसके रीछबर्ण घोड़ोंको और दोनों आगे पीछेवाले सारथियों को मारा २१ वह रथसे रहित भी-मसेन नकुल के रथपर ऐसे गया जैसे कि शत्रुओं के बिजय करनेवाले हनुमान् जी पर्व्वत के शिखर को उल्लंघकर गये थे २२ हे राजेन्द्र इसप्रकार युद्धमें प्रहार करनेवाले महारथी द्रोणाचार्य्य और अर्ज्जुन दोनों गुरू और शिष्यने भी अपूर्व युद्धकिया २३ तेजी से बाणको धनुष पर चढ़ाना और रथोंका घुमाना इन दोनों कर्मों से मनुष्यों के नेत्र और चित्तोंको मोहित किया २४ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ वह सब युद्ध करनेवाले गुरू शिष्यके उस युद्धको जिसके समान पूर्व्व में कभी नहीं देखाथा देखकर युद्ध करनेसे बन्दहोगये तब उन दोनों बीरोंने सेनाके मध्य में सब्य अपसब्य रथों के मार्ग्गोंको करके परस्पर दक्षिण करना चाहा २५ अ-त्यन्त आश्चर्य्यित उन शूरबीरों ने उन दोनोंके पराक्रमको देखा उनदोनों द्रोणा-चार्य्य और अर्ज्जुनका युद्ध ऐसा बड़ाभारी हुआ २६ जैसे कि आकाशमें मांस के निमित्त दो बाजपक्षियों का होताहै फिर द्रोणाचार्य्य ने अर्ज्जुन को विजय करने की इच्छासे जो २ कर्म्म किये २७ उन २ घातोंको हँसतेहुये अर्ज्जुन ने शीघ्रही निष्फलकिया जब द्रोणाचार्य्यजी अर्ज्जुनके मारनेको समर्थ नहींहुये तब अस्त्रमार्ग्गोंमें अतिप्रवीणने अस्त्रको प्रकटकिया २८ ऐन्द्र, पाशुपत, त्वाष्ट्र और वायव्य नाम अस्त्र जो द्रोणाचार्य्यके धनुपसे छोड़ेगये उन छोड़ेहुये अस्त्रों को अर्ज्जुन ने निष्फल करदिया २९ जब पाण्डव ने उनके अस्त्रों को अपने

अस्त्रों से विधिके अनुसार दूरकिया तव द्रोणाचार्य्य ने वड़े दिव्य अस्त्रोंसे अर्जुन को ढका ३० उन द्रोणाचार्य्य ने विजय करने की इच्छासे जिस अस्त्रको अर्जुन के लिये प्रकटकिया अर्ज्जुनने उस अस्त्रके नाशके निमित्त उसी अस्त्रको प्रकट किया ३१ विधिके अनुसार अर्जुन की ओरसे दिव्य अस्त्रों के निष्फल होने से द्रोणाचार्य्य ने मनसे अर्ज्जुन की प्रशंसाकरी ३२ हे भरतवंशी उस शत्रुसंतापी शिष्यकेसाथ अपने को इस पृथ्वी के सब शस्त्रज्ञों के मध्यमें अधिकतर माना ३३ उन महात्माओं के मध्यमें अर्ज्जुन से हटायेहुये आश्चर्य्ययुक्त उपाय करनेवाले द्रोणाचार्य्यने अर्जुनको प्रीति पूर्वक रोका ३४ इसके पीछे अंतरिक्षमें हजारों देव गंधर्व ३५ ऋषि और सिद्धों के समूह देखनेकी इच्छासे नियतहुये अप्सराओं से पूर्ण यक्ष और गन्धर्वोंसे संकुलित ३६ वहआकाश फिर ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि बादलों से युक्त होकर शोभितहोताहै हे राजा वहां जो गुप्तवचन प्रकट हुये ३७ वहबचन द्रोणाचार्य्य और अर्जुनकी प्रशंसासे संयुक्त सुनेगये अस्त्रोंके छोड़नेमें दिशाओंको प्रज्वलितरूप किया ३८ वहां इकट्ठे होनेवाले सिद्ध और ऋषिलोगोंने कहा कि यहयुद्ध न मानुषी आसुरी और राक्षसीहै ३९ न दैव गान्धर्व और ब्राह्म्यहै निश्चय करके यह युद्ध अत्यन्त विचित्र और अद्भुतहै ऐसा युद्ध हमने देखाहै न सुनाहै ४० आचार्यजी पांडव अर्जुनसे अधिकहैं और पांडव अर्जुन द्रोणाचार्यसे बहुत अधिकहैं इन दोनोंके अन्तर जाननेकी अन्यकिसी मनुष्यकी सामर्थ्य नहींहै ४१ जो शिवजी अपने दोरूपकरके अपनेसाथ आप ही युद्धकरें तव उनकी समानता करना संभवहै उनके सिवाय इनकी समताका दूसरा कोई नहींहै ४२ आचार्य्यजी में केवल एक ज्ञानही नियत है पाण्डव में ज्ञान योग दोनोंनियतहैं आचार्य्यजी में केवल एकशूरता नियतहै और पांडवमें पराक्रम शूरता दोनों वर्त्तमानहैं ४३ यहदोनों वड़े धनुषधारी युद्धमें शत्रुओं के हाथसे विजय करने के योग्य नहीं यह दोनों जो इच्छाकरें तो देवताओं समेत संसारका नाशकरडालें ४४ हे महाराज इनदोनों पुरुषोत्तमोंको देखकर गुप्तजीवधारी वातोंको कहतेहुये अनेकप्रकारसे प्रकटहुये ४५ इसकेपीछे युद्धमें पांडवको और गुप्तजीवोंको अच्छीरीतिसे तपाते वड़े बुद्धिमान् द्रोणाचार्यने ब्राह्म्य अस्त्र को प्रकटकिया ४६ तव वृक्ष पर्वतोंसमेत पृथ्वी कम्पायमान हुई और वड़ी कठोर वायुचली और समुद्र उथल पुथलहुये ४७ उस महात्मा के अस्त्र प्रकट होनेप

कौरवीय और पाण्डवीय सेनाओं समेत सब जीवमात्रोंको भय उत्पन्नहुआ ४८ हे राजेन्द्र इसकेपीछे ब्याकुलतासे रहित अर्जुनने भी ब्रह्मअस्त्रके द्वारा उसअस्त्र को हटाया और उसीसे सब शान्तहोगया ४९ जब उनदोनोंने एकके पारको नहीं पाया तब संकुल युद्धके द्वारा वहयुद्ध महाब्याकुलरूप हुआ ५० इसके अनन्तर फिर भी युद्धभूमिमें द्रोणाचार्य्य और पांडव अर्जुनके कठिन युद्धजारी होनेपर कुछ नहीं जानागया ५१ बादलोंके जालसे संयुक्तके समान बाणों के जालोंसे आकाशके पूर्णहोनेपर अन्तरिक्षचारी कोई जीव वहां नहीं आया ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकोननवतितमोऽध्यायः १८९ ॥

एकसौनब्बेका अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज इसप्रकारसे हाथी घोड़े और मनुष्यों के बिनाश बर्त्तमानहोनेपर दुश्शासनने धृष्टद्युम्न से युद्धकिया १ स्वर्णमयी रथपर सवार और दुश्शासन के बाणोंसे पीड़ावान् उस धृष्टद्युम्न ने क्रोधसे आपके पुत्रके घोड़ोंको बाणोंसे ढकदिया २ हे महाराज उसका वह रथभी ध्वजा सारथीसमेत एकक्षणही में धृष्टद्युम्न के बाणोंसे चिताहुआ दृष्टिसे गुप्तहोगया ३ महात्मा धृष्टद्युम्नके बाणजालों से अत्यन्त पीड़ावान् होकर आपका पुत्र उसके सम्मुख नियत होनेको समर्थ नहींहुआ ४ फिर वह धृष्टद्युम्न बाणोंसे दुश्शासनको बिमुख करके हजारों बाणोंको फैलाता युद्धमें द्रोणाचार्य्य के सम्मुखगया ५ उसीसमय हार्दिक्यका पुत्र कृतवर्मा अपने सगे तीनभाइयों समेत मिलकर सम्मुखहुआ उन्होंने उसको रोका ६ वह दोनों पुरुषोत्तम नकुल सहदेव उस प्रज्वलित अग्निके समान द्रोणाचार्य्यके सम्मुख जानेवाले धृष्टद्युम्नके पीछेचले ७ उनसब महारथी क्रोधयुक्त पराक्रमी शुद्ध अन्तःकरण शुद्धचलन स्वर्गको आगे करनेवाले परस्पर बिजयाभिलाषी श्रेष्ठ युद्धकरते महारथियों ने उत्तम लोगोंके समान युद्धकिया ८ । ९ हे राजा पवित्र कुल कर्म्मवाले बुद्धिमान् उत्तम गतिके अभिलाषी उनलोगों ने धर्मयुद्ध किया १० वहां अधर्मयुद्धसेयुक्त बिनाशस्त्रवाले नहींहुये न कर्णी, नालीक, लिप्त,वस्तिक ११ सूची,कपिश,गवास्थि और गजास्थिक नाम बाण और संश्लिष्ट पूति जिह्मग नामबाण जोकि कंटकादि युक्तहोते हैं वह कोई नहींथे १२ उत्तम सीधे युद्धसे ऊपरके लोकोंके और कीर्त्तिको चाहतेहुये उनसबने सीधे और

शुद्ध शस्त्रोंको धारणकिया १३ तब आपके चारों शूरवीरोंका युद्ध तीनों पाण्डवों के साथ कठिन और सबदोषों से रहितहुआ १४ हे राजा शीघ्र अस्त्र चलानेवाला धृष्टद्युम्न नकुल सहदेवसे रोकेहुये उन रथियोंमें श्रेष्ठ बीरोंको देखकर द्रोणाचार्य के सम्मुखगय १५ फिर रोकेहुये वह चारोंबीर उनदोनों पुरुषोत्तमोंसे ऐसे अच्छे भिड़े जैसे कि दो पर्वतों के मध्य में बायु टक्कर खाती हैं १६ रथियों में श्रेष्ठ नकुल और सहदेव दो२ रथियोंकेसाथ भिड़े इसकेपीछे धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्य के सम्मुख बर्त्तमानहुआ १७ द्रोणाचार्यकी ओर जानेवाले युद्धमें दुर्मद धृष्टद्युम्न को और नकुल सहदेवकेसाथ भिड़ेहुये चारोंरथियोंको देखकर १८ रुधिर पीनेवाले बाणों को फैलाताहुआ दुर्य्योधन उस स्थानपर सम्मुखगया सात्यकी फिरभी शीघ्रतासे उसके सम्मुख बर्त्तमानहुआ १९ वह दोनों नरोत्तम कौरव और माधव सम्मुख होकर निर्भयतासे युद्ध करनेलगे २० और प्रसन्नचित्त सब बाल्यावस्थाकी दशा के वृत्तान्तोंको स्मरणकरके बारम्बार मुसकान करनेवाले और परस्पर देखनेवाले हुये २१ इसकेपीछे राजादुर्य्योधन अपने चलन की निन्दा करता बारम्बार प्यारे मित्र सात्यकी को बोला २२ हे मित्र क्रोधको धिक्कार लोभको धिक्कार मोह और अमर्षताको धिक्कार क्षत्रियों के आचारको धिक्कार और बल पराक्रम को धिक्कार हो २३ हे शिनियों में श्रेष्ठ जिस स्थानपर तुम मुझको लक्ष्य करते हो और मैं तुमको करताहूं तुम सदैव से मेरे प्राणोंसे भी प्रियतमथे और इसीप्रकार तुम्हारा मैंभी था २४ मैं उन सब बाल्यावस्था के वृत्तान्तों को स्मरण करताहूं कि अब इस युद्धभूमि में हमारे वह सब व्यवहार प्राचीन होगये २५ हे यादव क्रोध और लोभसे निकृष्ट दूसरी कौनसी बातहै अब युद्धजारी है बड़े अस्त्रोंका जाननेवाला हँसताहुआ सात्यकी तीक्ष्ण विशिखों को उठाकर उस प्रकारकी बातें करनेवाले दुर्य्योधनसे बोला हे राजकुमार यह सभा नहीं है न गुरूका स्थानहै २६।२७ जहांपर कि इकट्ठे होनेवाले हमलोगोंने क्रीड़ाकरी थी २८ दुर्य्योधन बोला हे शिनियोंमें श्रेष्ठ बाल्यावस्थामें जो हमारी क्रीड़ाथी वह कहांगई और फिर यहयुद्ध कहां समय कठिनतासे उल्लंघन के योग्यहै २९ धनकी इच्छा और धनसे हमारा कौनसा कर्म वर्त्तमानहै जहां कि धनकेलोभसे इकट्ठे होनेवाले हम सब लड़ते हैं ३० वहां माधव सात्यकी उसप्रकारकी वार्त्ता करनेवाले उस राजासे बोला क्षत्रियों का वंश सदैवसे ऐसेही चलनवालाहै इसलोक में गुरुओंसे भी लड़ते हैं ३१

हे राजा जो मैं तेरा प्याराहूं तो मुझको मारो विलम्ब मत करो हे भरतर्षभ तेरे कारण उत्तमकर्म से मिलनेवाले लोकों को पाऊं ३२ जो तेरीशक्ति और पराक्रम है उसको शीघ्र मुझपर दिखला मैं दूसरोंके उस बड़ेदुःखको देखा नहीं चाहताहूं ३३ सात्यकी प्रत्यक्ष में इसप्रकार कहकर और उत्तर देकर सावधानी से शीघ्र सम्मुख गया और आत्मापर दया नहीं की ३४ हे राजा आपके पुत्रने उस आते हुये महाबाहु सात्यकी को रोका और बाणों से ढकदिया ३५ इसकेपीछे कौरव और माधवोंमें श्रेष्ठ दुर्य्योधन और सात्यकी का युद्ध ऐसा जारीहुआ जैसे कि परस्पर क्रोधयुक्त दोउत्तम हाथियों का घोरयुद्ध होताहै ३६ क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने युद्धमें दुर्मद सात्यकीको कानतक खैंचकर छोड़ेहुये दशबाणों से घायलकिया ३७ उसीप्रकार सात्यकीने भी उसका युद्धभूमि में प्रथम पचासबाणसे फिर तीस से और फिर दशबाणों से ढकदिया ३८ हे राजा हँसतेहुये आपके पुत्रने युद्ध में कानतक खैंचे हुये तीक्ष्णधार तीसबाणों से सात्यकी को घायल किया ३९ इसके पीछे क्षुरप्र से इसके बाणसमेत धनुष के दोखण्ड करदिये तदनन्तर उस हस्तलाघवी सात्यकीने दूसरे दृढ़धनुष को लेकर ४० आपके पुत्रपर बाणधारा को छोड़ा मारने की इच्छासे उस अकस्मात् आती हुई बाणधाराको ४१ राजा दुर्य्योधन ने बहुत प्रकारसे काटा इसके पीछे मनुष्य पुकारे और वेगसे सात्यकी को ऐसे तिहत्तरबाण से पीड़ित किया ४२ जोकि सुनहरी पुंख साफ कानतक खींचकर शीघ्र छोड़े थे सात्यकी ने धनुषपर बाणों के चढ़ानेवाले उस दुर्य्योधनके बाण संयुक्त धनुषको काटा ४३ और शीघ्रही बाणों से भी घायल किया हे महाराज वह कठिन घायल दुखी सात्यकी के बाणों से पीड़ावान् दुर्य्योधन रथ के भीतर बैठगया कुछ कालतक बिश्रामलेकर फिर आपका पुत्र सात्यकी के सम्मुख गया ४४ । ४५ और सात्यकी के रथपर बाणजालों को छोड़तागया उसीप्रकार सात्यकी ने भी बाणों को दुर्योधन के रथपर बारम्बार फेंका और वह संकुल युद्ध बर्त्तमान हुआ ४६ वहां फेंकेहुये और शरीरोंपर गिरतेहुये बाणों से ऐसे बड़े शब्दहुये जैसे कि सूखेहुये महाबन में अग्निके शब्द होते हैं ४७ उन दोनों के हजारों बाणों से पृथ्वी ढकगई और आकाश महादुर्गम्यरूप हुआ ४८ उस स्थानपर भी आपके पुत्रको चाहताहुआ कर्ण रथियों में श्रेष्ठ सात्यकी को अधिक जानकर शीघ्र सम्मुख आया ४९ फिर महाबली भीमसेन ने उस को

नहीं सहा और बहुत शीघ्र शायकोंको छोड़कर कर्ण के सम्मुख गया ५० हँसते हुये कर्ण ने उसके तीक्ष्ण बाणोंको काटकर बाणों से ही उसके धनुषसमेत बाणों को काटकर सारथीको मार ५१ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त पांडव भीमसेनने गदाको लेकर युद्धमें शत्रुकी ध्वजा धनुष और सारथीको मर्द्दनकिया ५२ इसके सिवाय उस महाबली ने कर्ण के रथके चक्रको तोड़ा पर्व्वत के समान कम्पायमान कर्ण टूटेचक्रवाले रथपर नियतहुआ ५३ घोड़ों ने एक चक्र रखनेवाले रथको बहुत विलम्बतक ऐसे चलाया जैसे सप्तऋषि रूपी घोड़े सूर्य्य के एक चक्रवाले रथको लेचले थे ५४ फिर असह्य कर्ण युद्धमें नानाप्रकार के बाणजाल और बहुतप्रकारके शस्त्रों के द्वारा भीमसेन से युद्ध करनेलगा ५५ भीमसेनने कर्ण से युद्ध किया इसप्रकार उस युद्धके वर्त्तमान होनेपर क्रोधसे पूर्ण युधिष्ठिर ५६ नरोत्तम पांचाल और पुरुषोत्तम मत्स्यदेशियों से बोला कि जो हमारे प्राण और शिर हैं और जो हमारे महारथी शूरवीर हैं ५७ वह सब पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र के पुत्रों से भिड़ेहुये हैं तुम सब अचेत और अज्ञानों के समान क्यों नियतहो ५८ अब तुम वहां चलो जहां गतज्वर होकर मेरे यह सब रथी क्षत्रियधर्मको आगेकरके लड़ रहे हैं ५९ विजय करनेवाले और मरनेवाले होकर तुम सबलोग अभीष्टगति को पाओगे अथवा विजयकरके बड़ी दक्षिणावाले बहुत यज्ञों से पूजन करोगे ६० अथवा शरीर त्यागनेवाले तुम देवरूपहोकर श्रेष्ठलोकों को पाओगे राजा की आज्ञापाकर वह युद्धाभिलाषी महारथीलोग भी ६१ क्षत्रियधर्म्म को आगेकरके शीघ्रही द्रोणाचार्य्य के सम्मुखगये पांचालोंने एक ओर से द्रोणाचार्य्यको तीक्ष्णधारवाले बाणों से घायल किया ६२ और भीमसेन जिनमें मुख्यहै उन सब लोगोंने भी एक ओरसे घेरलिया पांडवों के तीन महारथी सीधे चलनेवाले हुये ६३ उन नकुल सहदेव और भीमसेनने अर्जुनको पुकारा कि हे अर्जुन शीघ्र दौड़ो कौरवोंको द्रोणाचार्य्य से पृथक्करो ६४ तदनन्तर पांचालदेशी इन अरक्षित आचार्य्यजी को मारेंगे तब अर्जुन अकस्मात् कौरवों के सम्मुख दौड़ा ६५ हे भरतवंशी फिर द्रोणाचार्य्य उन पांचालों के जिनमें कि अग्रगामी धृष्टद्युम्न था सम्मुखहुये सब वीरों ने पांचवेंदिन द्रोणाचार्य्यको मर्द्दन किया ६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्रोणोपरिनवनिनमोऽध्यायः १९० ॥

एकसौइक्यानवेका अध्याय ॥

संजयबोले कि इसके पीछे द्रोणाचार्य्य ने पांचालों का ऐसा बिनाश किया जैसे कि पूर्व्वकाल में क्रोधयुक्त इन्द्रने दानवों का नाश कियाथा १ हे महाराज युद्धमें द्रोणाचार्य्य के अस्त्र से घायल पराक्रमी महारथी भयभीत नहीं हुये २ और लड़तेलड़ाते महारथी पांचाल और संजय युद्धमें द्रोणाचार्य्य के ही सम्मुख गये ३ बाणों को बर्षाकरके चारोंओर से घायल और ढकेहुये उन पांचालों के शब्द भयके उत्पन्न करनेवाले हुये ४ महात्मा द्रोणाचार्य्य का अस्त्र प्रकटहोने और युद्ध में पांचालों के घायल और मरनेपर पांडवों में भय प्रवृत्त हुआ ५ हे महाराज तब पाण्डवोंने युद्धमें घोड़े और मनुष्यों के बड़े बिनाशको देखकर बिजयकी आशाको त्यागकर ऐसा भयकिया ६ कि कहीं परम अस्त्रज्ञ द्रोणाचार्य्य हम सबको ऐसे नाश नहीं करदें जैसे कि चैत्र और बैशाखके महीने में भिड़ाहुआ अग्नि सूखे बनको भस्म करदेताहै ७ युद्धमें युद्ध करना तो क्या उनके देखनेको भी समर्थ नहीं और धर्म्मका जाननेवाला अर्ज्जुन कभी इनके साथमें लड़ेगा नहीं ८ बृद्धिमें प्रवृत्त बुद्धिमान् केशवजी द्रोणाचार्य्यके शायकों से पीड़ित और भयभीत पाण्डवोंको देखकर अर्जुनसे बोले ९ कि यह धनुषधारियों में श्रेष्ठ संग्रामभूमि में धनुषका रखनेवाला किसीदशामें भी युद्धकेद्वारा इन्द्र समेत देवताओंसे भी बिजय करनेके योग्य नहीं है १० युद्धमें शस्त्रोंके त्यागनेवालेही होकर यह द्रोणाचार्य्य मनुष्यों से मारने के योग्य होसक्ते हैं और शस्त्रों समेत इनके मारनेको किसी मनुष्य की सामर्थ्य नहीं है इसहेतुसे हे पाण्डव धर्म को छोड़कर बिजय में ऐसा उद्योगकरो ११ जिससे कि यह सुवर्णमय रथवाले द्रोणाचार्य्य युद्धमें सबको नहीं मारें यह द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामाके मरनेपर युद्ध नहीं करेंगे यह मेरा सम्मतहै १२ कोई मनुष्य युद्धमें इस अश्वत्थामा का मरना द्रोणाचार्य्य से कहै यह सुनकर कुन्ती के पुत्र अर्ज्जुनने इस बातको अंगीकार नहीं किया १३ परन्तु अन्य सब लोगोंने स्वीकार किया और युधिष्ठिरने भी बड़े दुःखसे स्वीकार किया हे राजा इसके पीछे महाबाहु भीमसेनने अपनी सेना में शत्रुओंके मारनेवाले घोररूप अश्वत्थामा नाम मालवदेशके राजा इन्द्रवर्माका हाथी था उसको गदासेमारा १४ । १५ तब भीमसेनने लज्जायुक्त युद्धमें द्रोणा-

चार्य्य के पास जाकर उच्चस्वर से शब्द किया कि अश्वत्थामा मारागया १६ अर्थात् अश्वत्थामा नाम से प्रसिद्ध हाथीके मारेजाने के वहाने से भीमसेनने चित्तमें छलको करके उस वातको मिथ्याकहा १७ द्रोणाचार्य्य भीमसेन के उस अत्यन्त अप्रिय बचनको सुनकर चित्तसे ऐसे निरुपायहुये जैसे कि जलमें वालू का किनारा निरुपाय होताहै १८ अपने पुत्रके पराक्रम जाननेवाले द्रोणाचार्य जी यह बात सत्यहै व असत्यहै इसको ध्यान करतेहुये वह मरगया इस बातको सुनकर धैर्य्य से कम्पायमान नहीं हुये १९ फिर वह द्रोणाचार्य्य एक क्षणमेंही सचेतहोकर और पुत्रको शत्रुओं से न सहने के योग्य समझकर विश्वासयुक्त हुये २० उस मारने के अभिलाषी ने अपने कालरूप धृष्टद्युम्नको सम्मुख होकर एक हजार तीक्ष्ण बाणों से ढकदिया २१ फिर अंगिराऋषि के दियेहुये दूसरे दिव्य धनुषको और ब्रह्मदण्ड के समान बाणोंको लेकर धृष्टद्युम्न से युद्धकिया २२ अर्थात् उसको वड़ी बाणों की बर्षा से ढकदिया और बड़े क्रोधयुक्त होकर धृष्टद्युम्नको घायल किया २३ अर्थात् द्रोणाचार्य्य ने शायकों से उसके बाणों के सैकड़ों खण्ड करदिये और तीक्ष्णधार वाणों से ध्वजा धनुष और सारथीको भी मारा २४ धृष्टद्युम्न ने हँसकर दूसरे धनुषको लेकर उनको तीक्ष्ण बाणों से छाती पर घायलकिया युद्धमें व्याकुलतासे रहित अत्यंत घायल उसबड़े धनुषधारीने तीक्ष्णधार भल्लसे फिर उसके धनुषको काटा २५।२६ फिर अजेय द्रोणाचार्य्य ने सिवाय गदा और खड्गके धनुषसमेत जो उसके बाणों के लक्ष्यहुये उन सबको काटा २७ हे शत्रुसन्तापी धृतराष्ट्र क्रोधयुक्त महाउग्ररूप जीवनके नाश करने वाले द्रोणाचार्य्यने तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे घायलकिया २८ ब्रह्मअस्त्रके मंत्रको पढ़नेवाले वड़े साहसी महारथी धृष्टद्युम्नने उसके रथके घोड़ों को अपने रथके घोड़ों से मिलादिया २९ हे भरतर्षभ वेगवान् और वायुके समान शीघ्रगामी वह कपोतवर्ण आरक्त घोड़े वहुत शोभायमानहुये ३० जैसे कि वर्षाऋतुमें बिजली समेत गर्जते वादल होते हैं हे महाराज उसी प्रकार युद्धके शिरपर मिले हुये घोड़ेभी शोभायमानहुये ३१ उस वड़े साहसी ब्राह्मणने धृष्टद्युम्नके ईशाबन्ध रथबन्ध और चक्रबन्धको विनाशकिया ३२ उस टूटे धनुष ध्वजा और मृतक सारथी वाले वीर धृष्टद्युम्नने वड़ी आपत्तिको प्राप्तहोकर गदाको हाथमें लिया ३३ क्रोधयुक्त सत्यपराक्रमी महारथी द्रोणाचार्य ने विशिखनाम तीक्ष्ण बाणों से उसकी फेंकी

हुई उस गदाको तोड़डाला ३४ फिर नरोत्तम धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यके बाणों से टूटीहुई उस गदाको देखकर निर्म्मल खड्गको और सौचन्द्रमा रखनेवाली ढाल को हाथमें लिया ३५ उस दशावाले धृष्टद्युम्न ने समयके वर्त्तमान होनेपर आचार्य्यों में श्रेष्ठ महात्मा द्रोणाचार्य्य के मारने को निस्सन्देह अच्छा माना ३६ तदनन्तर अपने रथकी नीढ़पर नियत धृष्टद्युम्न मारकी ने इच्छासे खड्गको और सौ चन्द्रमा रखनेवाली ढाल को उठाकर गया ३७ कठिनता से करने के योग्य कर्म्म को करना चाहतेहुये महारथी धृष्टद्युम्नने युद्धमें भारद्वाज द्रोणाचार्य्यकी छातीको छेदना चाहा ३८ और युगके मध्य युगके बन्धन और घोड़ोंकी जंघार्ध के मध्यमें नियतहुआ उससमय सेनाके लोगों ने उसकी प्रशंसाकरी ३९ युग के कोट और रक्त घोड़ोंके ऊपर नियतहुये उस धृष्टद्युम्नका अवकाश द्रोणाचार्य ने नहीं देखा वह आश्चर्य्यसा हुआ ४० युद्धमें द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नका युद्ध ऐसे प्रकारका हुआ जैसे कि मांसके अभिलाषी शीघ्र घूमनेवाले बाजका होता है ४१ रक्त घोड़ोंको बचातेहुये द्रोणाचार्य्य ने रथ शक्ती से उसके उन सब प्रत्येक कपोत बर्ण घोड़ों को मारा ४२ हे राजा धृष्टद्युम्न के वह मरेहुये घोड़े पृथ्वीपर गिरपड़े तब रक्तबर्ण घोड़े उस रथ बन्धनसे छूटे ४३ उस शूरबीरों में श्रेष्ठ द्रुपदके पुत्र महारथी धृष्टद्युम्न ने उत्तम ब्राह्मणके हाथसे मारेहुये उन घोड़ों को देखकर क्षमा नहीं की ४४ हे राजा वह खड्गधारियों में श्रेष्ठ रथसे विहीन खड्गको लेकर द्रोणाचार्य के सम्मुख ऐसे आनकर टूटा जैसे कि सर्प के सम्मुख गरुड़ आनकर टूटताहै ४५ हे राजा भारद्वाजके मारने के अभिलाषी धृष्टद्युम्नका रूप ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पूर्व्वसमयमें हिरण्यकश्यपके मारने में नृसिंह अवतार विष्णुका रूपथा ४६ हे कौरव्य तब युद्धमें घूमतेहुये उस धृष्टद्युम्नने नानाप्रकारसे अत्यन्त उत्तम इक्कीस मार्गोंको दिखलाया ४७।४८ खड्ग और ढाल धारण करनेवाले उस धृष्टद्युम्न ने भ्रान्त, उद्भ्रान्त, आविद्ध, आप्लुत, प्रसृत, सृत, परिवृत्त, निवृत्त, संपात, समुदीर्ण, नाम मार्गों को दिखलाया ४९ द्रोणाचार्य्य के नाशकी इच्छासे युद्धमें मार्गों को दिखलाता घूमा उस खड्गधारी धृष्टद्युम्नके उन विचित्र मार्गों को घूमतेहुये ५० आकाशमें इकट्ठे होनेवाले देवताओं ने और युद्ध में शूरबीरों ने आश्चर्य्य माना इसके पीछे द्रोणाचार्य्य ने हजार बाणों से ढाल और खड्गको गिराया ५१ धृष्टद्युम्नके ढाल और खड्गके टूटनेपर उस ब्राह्मण

ने समीपसे साधारण युद्ध करनेके योग्य वैतस्तिकनाम बाण ५२ जो कृपाचार्य, द्रोणाचार्य्य, अर्जुन, कर्ण, प्रद्युम्न, सात्यकी और अभिमन्युके सिवाय दूसरों के पास नहीं थे उसप्रकारके दृढ़ और बड़े बाणोंको लेकर धनुषपरं चढ़ाया ५३।५४ और सम्मुख वर्त्तमान् पुत्रके समान धृष्टद्युम्नके मारनेके इच्छावान आचार्य्य ने उस बाणको छोड़नाचाहा सात्यकी ने दश तीक्ष्णबाणों से उसको काटकर ५५ आपके पुत्र और महात्माओं के देखते आचार्य्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यजी से ग्रसे हुये धृष्टद्युम्नको छुड़ाया ५६ हे भरतवंशी द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य और कर्ण के मध्य में वर्त्तमान् और रथ मार्गों में घूमनेवाले सत्यपराक्रमी सात्यकी को ५७ महात्मा अर्ज्जुन और श्रीकृष्णजी ने देखा और बहुतश्रेष्ठ धन्यहै धन्यहै ऐसा कहकर उन दोनोंने उस दिव्य अस्त्रोंके दूर करनेवाले अजेय सात्यकीकी प्रशंसाकरी ५८।५९ इसकेपीछे अर्जुन और श्रीकृष्णजी दोनों द्रोणाचार्य्य के पास गये और वहां पहुँचकर अर्ज्जुनने श्रीकृष्णजी से कहा हे केशवजी देखो कि गुरूजी के उत्तम रथों के मध्य में क्रीड़ा करता ६० शत्रुके बीरों का मारनेवाला माधव सात्यकी मुझको फिर प्रसन्न करताहै माद्रीके पुत्र नकुल सहदेव भीमसेन और युधिष्ठिरको भी प्रसन्न करताहै ६१ जो वृष्णियों की कीर्त्तिका बढ़ानेवाला युद्धकी शिक्षा में पूर्ण महारथियों के पास क्रीड़ा करताहुआ घूमताहै ६२ उस सात्यकीको यह आश्चर्य्य युक्त सिद्ध और सेनाके लोग युद्धमें अजेय देखकर धन्य २ शब्दों से उसको प्रसन्न करते हैं और सब शूरवीरों ने भी दोनों ओरसे कर्मों के वर्णन द्वारा बड़ी प्रशंसा करी ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकनवतितमोऽध्यायः १९१ ॥

एकसौबानवेका अध्याय ॥

संजय बोले कि क्रोधयुक्त दुर्य्योधनादिकने यादव सात्यकी के उस कर्म्मको देखकर सब ओरसे शीघ्रही सात्यकी को रोका १ हे श्रेष्ठ कृपाचार्य्य कर्ण और आपके पुत्रोंने युद्ध में शीघ्रतासे सात्यकी को सम्मुख जाकर तीक्ष्णधार बाणों से घायल किया २ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर नकुल सहदेव और पराक्रमी भीमसेनने सात्यकीको चारों ओरसे रक्षित किया ३ कर्ण महारथी कृपाचार्य्य और उन दुर्योधनादिकने बाणों की वर्षाके द्वारा सात्यकी को चारोंओर से रोका ४

उन महारथियों से युद्ध करते सात्यकी ने उसघोररूप उठीहुई वर्षा को अकस्मात् रोका ५ महात्माओं के चलायेहुये उन दिव्य अस्त्रोंको बड़े युद्धमें विधिके अनुसार अपने दिव्य अस्त्रोंसे रोका ६ उस राजाओं के युद्ध में वह संग्रामभूमि ऐसी कठिन विदितहुई जैसे कि पूर्व्व समय में उन पशुओंके मारनेवाले क्रोध युक्त रुद्रदेवताकी भूमि कठिन होतीहै ७ हाथ शिर धनुष और धनुषसे काटेहुये छत्र और चामरों के समूहों से ८ और टूटे चक्रवाले रथ गिरी हुई बड़ी ध्वजा और मृतक शूरबीर सवारों से पृथ्वी आच्छादित होगई ६ हे कौरवों में श्रेष्ठ धृतराष्ट्र बाणों के पात से मरेहुये वह शूरबीर अपूर्व्व युद्ध में अनेक प्रकार की चेष्टाओं को करतेहुये दिखाई पड़े १० वहां इस प्रकार देवासुरसंग्राम के समान घोर युद्धके वर्त्तमान होनेपर धर्म्मराज युधिष्ठिर क्षत्रियों से बोले ११ हे सावधान महारथियो द्रोणाचार्य्य के सम्मुख जावो यह वीर धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्य के साथ भिड़ाहुआहै १२ और सामर्थ्य के अनुसार भारद्वाजके मारने में उपाय करताहै इस बड़े युद्धमें हमको ऐसे लक्षण दिखाई देते हैं १३ कि अब क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न युद्ध में द्रोणाचार्य्यको मारेगा तुम और वह सब साथहोकर द्रोणाचार्य्य से युद्धकरो १४ युधिष्ठिरकी आज्ञापाकर सृंजियों के सावधान महारथी द्रोणाचार्य के मारनेकी इच्छा से सम्मुखगये १५ मरना अवश्य है ऐसा निश्चय करनेवाले महारथी द्रोणाचार्य्य बेगसे उन सब आनेवाले महारथियों के सम्मुख वर्त्तमान हुये १६ उस सत्यप्रतिज्ञ के चढ़ाई करनेपर पृथ्वी कम्पायमान हुई और सेना को भयभीत करनेवाली बायु निर्घातों समेतचलीं १७ और सूर्य्य से निकलने वाली बड़ी उल्का दोनों सेनाओं को प्रकाशकरती महाभयों को प्रकट करती गिरीं १८ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र द्रोणाचार्य्य के शस्त्र अग्निरूप हुये रथों ने अत्यन्त शब्द किये और घोड़ों ने अश्रुपातों को छोड़ा १९ महारथी द्रोणाचार्य्यभी तेज से रहित मुख हुये और उनके वामनेत्र और भुजभी फड़के २० और धृष्टद्युम्न को युद्धमें आगे देखकर उदास चित्तहुये और ब्रह्मवादी ऋषियों का स्वर्ग मिलने के लिये २१ अच्छे युद्धसे प्राणों को छोड़नाचाहा तदनन्तर द्रुपदकी सेनाओं से चारोंओर को घिरेहुये २२ द्रोणाचार्य्य क्षत्रियों के समूहोंको भस्मकरते युद्धमें घूमनेलगे उस शत्रुओं के मर्द्दन करनेवाले द्रोणाचार्य्य ने बीसहजार क्षत्रियों को मारकर २३ तीक्ष्ण विशिखों से एकलाख हाथियोंको मारा और बड़ी

सावधानी से निर्धूम अग्निके समान युद्ध में नियतहोकर २४ क्षत्रियों के नाश के अर्थ परमअस्त्र के प्रयोग में प्रवृत्तहुये फिर पराक्रमी भीमसेन शीघ्रही उस विरथ और टूटे बड़े अस्त्रवाले अत्यन्त व्याकुल महात्मा धृष्टद्युम्नके पास गया उसके पीछे शत्रुमर्द्दन करनेवाला भीमसेन धृष्टद्युम्न को अपने रथपर सवारक-रके २५।२६ वाण प्रहारी द्रोणाचार्य्यको समीप देखकर बोला कि यहां तेरेसि-वाय दूसरा महापुरुष आचार्य्यजी से लड़नेको उत्साह नहीं करता है २७ इनके मारने में शीघ्रताकरो यह तुझपर भार रक्खाहुआ है इस प्रकारके वचनको सुन कर उस महाबाहुने सब भारके उठानेवाले २८ शस्त्रों में श्रेष्ठ अत्यन्त दृढ़ धनुष को शीघ्र दौड़कर लिया क्रोधयुक्त और युद्धमें दुःखसे हटानेके योग्य द्रोणाचार्य के रोकनेके अभिलाषी वाणों को चलाते धृष्टद्युम्नने वाणोंकी वर्षा से ढकदिया उनश्रेष्ठ और युद्धको शोभा देनेवाले क्रोधयुक्त दोनों ने परस्पर रोका २९।३० और ब्राह्म्य आदिक नानाप्रकार के दिव्यअस्त्रों को प्रकट किया हे महाराज उसने युद्धमें बड़े अस्त्रों से द्रोणाचार्य्यको ढकदिया ३१ धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्य के सब अस्त्रोंको दूरकरके वशाती शिवी बाह्लीक और कौरव ३२ इन सब रक्षकों समेत द्रोणाचार्य्य को युद्धमें घायलकिया हे राजा इसप्रकारसे वह अजेय धृष्ट-द्युम्न चारोंओर को वाणों के जालों से दिशाओं को ढकता ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि किरणों से सूर्य्य शोभित होताहै द्रोणाचार्य्य ने फिर उसके धनुष को काट शिलीमुख वाणों से उसको छेदकर ३३।३४ मर्मोंको घायल किया तब उसने बड़ी पीड़ाको पाया ३५ पांचालों के बीसहजार नरोत्तमों ने उस रीति से युद्धमें घूमनेवाले द्रोणाचार्य्यको सबओरसे वाणोंकरके ढका हमने उन वाणोंसे चितेहुये महारथी द्रोणाचार्यको ऐसे नहींदेखा ३६ जैसे कि वर्षाऋतुमें बादलोंसे ढकेहुये सूर्यको नहीं देखते हैं इसकेपीछे शत्रुसंतापी महारथी द्रोणाचार्य ने पांचा-लदेशियोंके उनवाण समूहोंको इधर उधरकरके उन पांचालदेशी शूरोंके मारनेके अर्थ ब्रह्मअस्त्रको प्रकटकिया ३७।३८ फिर द्रोणाचार्यजी सबसेनाके मनुष्यों को मारते शोभायमानहुये और उस बड़े युद्धमें पांचालों के भी वीरोंको गिराया ३९ इसीप्रकार परिघाओंके रूप सुवर्णसे अलंकृत भुजाओंको गिराया युद्धमें द्रोणा-चार्यके हाथसे मारेहुये वह राजालोग ४० पृथ्वीपर ऐसे गिरे जैसे कि वायुसे ता-ड़ित वृक्ष गिरते हैं हे भरतवंशी गिरतेहुये हाथी और घोड़ोंसे ४१ पृथ्वी महादुर्गम

मांस और रुधिरकी कीचरखनेवालीहुई पांचालदेशियोंके बीसहजार रथसमूहोंको मारकर ४२ निर्धूम अग्नि के समान प्रकाशित द्रोणाचार्य्यजी युद्धमें नियतहुये फिर उसीप्रकार क्रोधयुक्त प्रतापवान् द्रोणाचार्यने ४३ भल्लसे वसुदान के शिरको शरीरसे जुदाकिया फिर पांचसौमत्स्यदेशियों को और छःहजार सृञ्जियोंको ४४ और दशहजार हाथियोंको मारकर दशहजार घोड़ोंको भी मारा क्षत्रियोंके नाश के अर्थ द्रोणाचार्य्यको नियत देखकर शीघ्रही वह ऋषिलोग पासआये जिनके अग्रगामी अग्निदेवताथे अर्थात् विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गौतम ४५।४६ वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि यह सब ब्रह्मलोकमें लेजानेके इच्छावान् सिकिता,पृष्णी, गर्ग कुलवाले और सूर्य्यकी किरणों के पानकरनेवाले बालखिल्यऋषि ४७ भृगु और अङ्गिरावंशी ऋषि और जो अन्य २ पवित्रात्माऋषि और महर्षी हैं वह सब आकर इनयुद्धके शोभा देनेवाले द्रोणाचार्यसे बोले ४८ कि तुमने अधर्मसे युद्ध किया तुम्हारे मरणका समयहै हे द्रोणाचार्य्य युद्धमें शस्त्रोंको रखकर सम्मुख नियतहुये हमलोगों को देखो इससे आगे फिर निर्दय कर्म करनेके योग्य नहीं हो मुख्यकरके वेद और वेदाङ्गके जाननेवाले सच्चे धर्ममें प्रीति रखनेवाले ४९।५० तुझ ब्राह्मणका यह कर्म्म योग्य नहीं है हे सफल बाणवाले शस्त्रोंको त्यागकर सनातन मार्ग्गपर नियतहो ५१ अब नरलोकमें तेरे रहनेका समय समाप्तहुआ तुमने पृथ्वीपर अस्त्रों के न जाननेवाले मनुष्योंको ब्रह्मअस्त्रसे भस्मीभूत किया ५२ हे ब्राह्मण जो तुमने ऐसा कर्म्म किया वह अच्छा नहीं किया हे द्रोणाचार्य्य ब्राह्मण युद्धमें शस्त्रको त्यागकरो बिलम्ब न करो ५३ हे द्विजवर्य्य तुम फिर पाप कर्मको नहीं करोगे वह द्रोणाचार्य उन ऋषियों के उस बचनको और भीमसेनके कहेहुये बचनको सुनकर ५४ युद्धमें धृष्टद्युम्नको देखकर उदासहुये फिर व्यथित और दह्यमान होकर द्रोणाचार्य ने कुंतीके पुत्र युधिष्ठिरसे ५५ अपने पुत्रके जीवने और मरने के वृत्तान्त को पूछा द्रोणाचार्य्य की बुद्धिमें यह दृढ़ विश्वासथा कि युधिष्ठिर ५६ किसी दशामें त्रिलोकीके भी राज्य के निमित्त मिथ्यानहीं बोलेगा इसी हेतुसे उस द्विजवर्य्य ने उसी से पूछा दूसरेसे नहीं पूछा ५७ बाल्यावस्थासे लेकर इससमय तक उसपाण्डव युधिष्ठिरमें सत्य बोलनेकी आशारही इसकेपीछे पृथ्वीसे पाण्डवोंको रहित करने के अभिलाषी शूरवीरोंके स्वामी ५८ द्रोणाचार्य को पीड़ावान् जानकर गोविन्दजी धर्मराजसे बोले कि जो क्रोधयुक्त

द्रोणाचार्य आधेदिनभी युद्धकरेगा तो मैं सत्य२ कहताहूं कि तेरी सबसेना नाश होजायगी सो आप हम सबलोगोंको द्रोणाचार्यसे रक्षित करो इसस्थानपर सत्य से मिथ्या वचनही श्रेष्ठहै ५९ । ६० जीवनके निमित्त मिथ्या बोलना मिथ्याके पापोंसे स्पर्श नहीं कियाजाताहै स्त्रियों में विवाहों में और गौवोंके भोजनों में और ब्राह्मणों के प्रियकरने में मिथ्या कहने का पातक नहीं है उन दोनोंके इसप्रकार वार्त्तालाप करनेपर भीमसेन महात्मा द्रोणाचार्य्य के मारने के उपायको सुनकर इस वचनको बोले हे महाराज तेरी सेनाके मथनेवाले मालवेन्द्र राजाका हाथी ६१।६२ जोकि ऐरावतके समान अश्वत्थामा नामसे प्रसिद्ध था वह युद्धमें परा· क्रमकरके मारागया था तब मैंने द्रोणाचार्यसे कहाथा कि हे ब्राह्मण अश्वत्थामा मारागयाहै इससे तुमभी युद्धसे लौटो परन्तु उस पुरुषोत्तमने मेरे कहनेपर श्रद्धा और विश्वास नहीं किया ६३ । ६४ सो तुम विजयाभिलाषी होकर गोविन्दजी के वचनोंको अंगीकार करो हे राजा आप द्रोणाचार्य्य से अश्वत्थामा को मराहुआ कहौ ६५ वह उत्तम ब्राह्मण तुम्हारे इसवचनके कहनेपर फिर कदापि युद्ध नहीं करेंगे हे राजा आप इसलोकमें सत्यवक्ता प्रसिद्धहो ६६ हे महाराज उसके उस वचनको सुनकर और श्रीकृष्णजी के वचनों से चलायमान होकर होतव्यताके वशीभूतहोकर कहना आरम्भकिया ६७ मिथ्यापनेके वचनों में डूबे विजयमें प्र· वृत्तचित्त युधिष्ठिर हाथी के शब्दको गुप्तकरके अश्वत्थामा हाथी मारागया यह शब्द बोला प्रथम उसका रथ पृथ्वी से चारउंगल ऊंचा रहताथा उस वचनके क· हनेही उसके घोड़ोंने पृथ्वीको स्पर्शकिया ६८ । ६९ महारथी द्रोणाचार्य युधिष्ठिर के उसवचनको सुनकर पुत्रके शोकसे दुःखी जीवनसे निराशहुये ७० ऋषियों के वचनोंसे अपनेको महात्मा पाण्डवोंका अपराधी मानतेहुये द्रोणाचार्य अपने पुत्रको मराहुआ सुनकर और धृष्टद्युम्नको देखकर व्याकुल और अत्यन्त अचेत होगये हे शत्रुविजयी राजाधृतराष्ट्र फिर पूर्वकेसमान युद्ध नहींकरसके ७१।७२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिद्विनवतितमोऽध्याय. १९२ ॥

एकसौतिरानबेका अध्याय ॥

संजय बोले कि राजा पांचालका पुत्र धृष्टद्युम्न उन द्रोणाचार्य को अत्यन्त व्याकुल और शोकसे खिन्न चित्त देखकर दौड़ा १ जोकि राजाद्रुपदने बड़ेयज्ञमें

पूजनकरके द्रोणाचार्य्यके नाशके निमित्त ज्वलितरूप अग्निसे प्राप्त कियाथा २ द्रोणाचार्य के मारने के अभिलाषी बड़ी अग्निके समान प्रज्वलित उस धृष्टद्युम्न ने बादलके समान शब्दायमान घोर और दृढ़ प्रत्यञ्चावाले अजर दिव्य और विजय करनेवाले धनुषको और विषैले सर्पकी समान अग्निरूप बाणको लेकर उसधनुषपर चढ़ाया ३।४ धनुषके मण्डल और प्रत्यंचाके मध्यमें उस बाणका रूप ऐसे प्रकारका हुआ जैसे कि मण्डल रखनेवाले प्रकाशमान सूर्यकारूप बादलों के मध्यमें होताहै ५ सेनाके लोगोंने धृष्टद्युम्न के उठायेहुये उस ज्वलितरूप धनुष को देखकर समयका अन्त होनाजाना ६ प्रतापवान् भारद्वाज द्रोणाचार्य ने उसके चढ़ायेहुये उस बाणको देखकर शरीरके अन्तसमयको जाना ७ हे राजेन्द्र इसके पीछे आचार्य्यजी उस बाणके हटानेकेलिये बड़े उपायमें नियतहुये परन्तु इन महात्माजी के अस्त्र प्रकटनहीं हुये ८ बाणोंको छोड़तेहुये उनके चार दिन और एकरात्रि व्यतीतहुये और दिनके तीसरे पहरमें उन के बाणोंकी नष्टताहोगई ९ पुत्रके शोकसे पीड़ावान् वह आचार्य्यजी बाणोंकी बिनाशताको पाकर नानाप्रकारके दिव्यअस्त्रों की अप्रसन्नतासे १० और ऋषियोंके वचनोंकी प्रेरणासे अस्त्रोंके त्यागनेको उत्सुकहुये और पूर्वके समान क्रोधयुक्तहोकर नहीं लड़े ११ हे राजा इसके अनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन द्रोणाचार्य के रथको पकड़ कर धीरेपने से यह बचनबोले १२ कि प्रत्यक्षहै कि अपनेही कर्ममें संतोष न करने वाले शिक्षायुक्त ब्रह्मबन्धु आप जो युद्ध नहीं करते तो क्षत्रियोंके समूहोंका नाश नहीं होता १३ सब जीवोंके मध्यमें किसीको दुःख न देनाही धर्म्म कहाहै उसके मूलरूप ब्राह्मणहैं और आप तो ब्रह्मज्ञानियोंमें श्रेष्ठहैं १४ हे ब्राह्मणके पुत्र और धनकी इच्छासे चांडाल और अज्ञानी के समान अपनी अज्ञानतासे म्लेच्छों के समूह और अन्य२प्रकारके क्षत्रियसमूहोंको मारकर १५ धर्म्म न जाननेवाले के समान दुष्टकर्ममें प्रवृत्तहोकर तुम एकपुत्रके निमित्त अपने कर्म पर नियत बहुत क्षत्रियोंको मारकर क्योंनहीं लज्जायुक्त होतेहो १६ जिसके अर्थ अस्त्रोंको लेकर और जिसको निमित्त मानकर जीवतेहो अब पीछे की ओरसे नहीं जानाहुआ वह आपका पुत्र पृथ्वीपर पड़ा सोताहै धर्मराजका वह वचन मिथ्या और संदिग्ध मानने के योग्य नहीं है भीमसेन के इन वचनों को सुनकर धर्म्मात्मा द्रोणाचार्य उसधनुषको छोड़कर सब अस्त्रों के त्यागने की इच्छासे बोले हे बड़े धनुषधारी

कर्ण कृपाचार्य दुर्योधन १७।१९ युद्धमें उपायकरो यही मैं बारम्बार कहताहूं पांडवों से तुम्हारा कल्याण होय मैं अब शस्त्रोंको त्यागकरताहूं २० हे महाराज वहां अश्वत्थामा को भी पुकारा और युद्ध में शस्त्रों को रथ के उपस्थ पर रखकर २१ सब जीवमात्रको अभयता दी और योगमें प्राप्तहुये उसकेपीछे प्रतापवान् धृष्टद्युम्न ने इनके उस अवकाश को जानकर २२ उस घोर धनुषको बाण समेत रथपर रखकर खड्गको ले अपने रथसे कूदकर अकस्मात् द्रोणाचार्य्य के पासगया २३ धृष्टद्युम्न के आधीनता में वर्त्तमान उसदशावाले द्रोणाचार्यको देखकर सब संसार के गुप्त और प्रकटजीव हाहाकार करनेवाले हुये २४ उन्होंने बड़ा हाहाकार करके कहा कि आश्चर्य्य और धिक्कारहै कि द्रोणाचार्य भी शस्त्रोंको रखकर समुद्रसे प्रवाहमें प्रविष्ट हुये २५ बड़े तपस्वी ज्योतिरूप द्रोणाचार्य्य ने भी इसप्रकार कहकर और योगमें नियत होकर प्राचीन पुरुष शरीररूपी पुरी में निवास करनेवाले परब्रह्म को मनसे प्राप्तकिया २६ मुखको कुछ ऊंचाकर छातीको आगे से रोक नेत्रों को बन्दकर सतोगुणमें नियत हृदयमें धारणाको धारण करके २७ ज्योतिरूप महातपस्वी ओम् इस अविनाशी और श्रेष्ठतर एकाक्षर प्रभु देवताओं के ईश्वर को ध्यानकरके २८ वह आचार्य्यजी साक्षात् सत्पुरुषों से दुष्प्राप्य स्वर्गको चढ़े उस दशावाले द्रोणाचार्य्य के होनेपर हमारी बुद्धिमेंआया कि दो सूर्य्य हैं २९ प्रकाशों से पूर्ण आकाश एकसे रूपका हुआ और भारद्वाजरूपी सूर्य उस सूर्य्य के प्रकाश में प्राप्तहुआ ३० फिर वह ज्योति पलमात्रमेंही गुप्तहोगई तब अत्यन्त प्रसन्नमन देवताओं के किलकिला शब्दहुये ३१ ब्रह्मलोकमें द्रोणाचार्य के जाने और धृष्टद्युम्नके प्रसन्न होनेपर हम पांच मनुष्ययोनियों ने ३२ उसपरमगति पाने वाले योगी महात्मा को देखा मैं, पाण्डव अर्ज्जुन, भारद्वाजकापुत्र अश्वत्थामा, यादव वासुदेवजी, और धर्म पुत्र युधिष्ठिर इन पांचों के सिवाय अन्य सब लोगों में से किसीने भी उन बुद्धिमान् योगसेयुक्त जातेहुये भारद्वाजजीकी महिमा को नही जाना वह ब्रह्मलोक बड़ादिव्य देवताओं से भी गुप्त और सबसे परेहै३३।३५ परमगति प्राप्त करनेवाले और उत्तम ऋषियों समेत योग में नियत होकर ब्रह्मलोक को जाने उन शत्रुविजयी द्रोणाचार्य्यजी को अज्ञानी लोगोंने नहीं देखा फिर सब जीवों से धिक्कारी पायेहुये धृष्टद्युम्नने उस शस्त्रत्यागी और बाण समूहों से पीड़ित अङ्ग रुधिर डालनेवाले द्रोणाचार्य्य के शरीरको ३६।३७ पकड़लिया

उस निर्जीव देह और कुछ न बोलनेवाले के शिरसमेत मस्तकको पकड़कर ३८ खड्गकेद्वारा शरीरसे पृथक् किया भारद्वाज के गिराने पर बड़ी प्रसन्नतामें युक्त ३९ खड्गको घुमाते धृष्टद्युम्नने सिंहनाद किया वह द्रोणाचार्यजी कानतक श्वेत बाल युक्त अवस्थामें पचासी वर्ष और प्रत्यक्षमें सोलहवर्ष के से विदित होतेथे ४० हे राजा वह तेरेही कारण से युद्धमें सोलहवर्ष की अवस्थावाले के समान युद्धमें घूमनेवालेहुये उनके मारनेके समय महाबाहु कुंतीका पुत्र अर्ज्जुनबोला ४१ हे द्रुपदके पुत्र इस जीवतेहुये आचार्य्यको मतमारो और सबसेनाके लोगभी पुकारे कि अवध्यहैं अवध्यहैं ४२ और दयावान् अर्जुन पुकारकर उसकीओरको चला अर्जुनके और उन सब राजाओं के पुकारनेपर ४३ धृष्टद्युम्नने नरोत्तम द्रोणाचार्य को रथशय्यापरमारा फिर रुधिरसेभरे गात्र वह द्रोणाचार्य्य रथसे पृथ्वीपर गिरपड़े ४४ और फिर वह अजेय रक्तवर्णवाले सूर्य्य के समान वर्त्तमान हुये इसप्रकार सेनाके लोगों ने युद्धमें उस मृतकको देखा ४५ हे राजा फिर बड़े धनुषधारी धृ-ष्टद्युम्नने भारद्वाजके शिरको लेकर आपके पुत्रों के सम्मुख फेंकदिया ४६ आपके शूरवीर भारद्वाज के शिरको देखकर भागने में प्रवृत्तचित्त होकर सब दिशाओं को भागे ४७ हे राजा जब द्रोणाचार्य्य स्वर्ग में नियतहोकर नक्षत्रमार्ग में प्र-वेशकरगये तब मैंने द्रोणाचार्य्यको मराहुआ देखा ४८ सत्यवती के पुत्र व्यास ऋषिकी क्रियासे ज्वलितरूप निर्धूम अग्निके समान ४९ स्वर्गको प्राप्त करके जानेवाले बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य्य को देखा द्रोणाचार्य्य के मरनेपर उत्साह से रहित कौरव पाण्डव और संजय ५० बड़े बेगसे दौड़े तब सेना छिन्नभिन्न होगई जिनके कि बहुतसे मनुष्य मारेगयेथे वह तीक्ष्ण धारवाले बाणों से नाशहुये ५१ और आपके शूरवीर द्रोणाचार्य्य के मरनेपर पराजय और परलोकके बड़े भारी भयको पाकर निर्जीवों के समानहुये ५२ दोनों लोकों से रहित और भारद्वाज के शरीरको चाहते राजाओं ने मनसे धैर्यको नहीं पाया ५३ परन्तु असंख्य धड़ों से पूरित युद्धभूमि में न जासके हे महाराज फिर पाण्डवों ने विजय को पाकर और परलोकमें बड़े यशको प्राप्त करके ५४ बाण शंखों के शब्दोंसमेत बड़े सिं-हनादोंको किया इसकेपीछे भीमसेन और धृष्टद्युम्न ५५ परस्पर मिलकर सेनामें दिखाईपड़े तब भीमसेन शत्रुसन्तापी धृष्टद्युम्न से बोले कि ५६ हे पर्षतके पौत्र युद्धमें पापी कर्ण और दुर्योधनके मरनेपर फिर मैं तुझ विजयी से मिलूंगा ५७

बड़ी प्रसन्नता से युक्त पाण्डव भीमसेन ने इतना कहकर भुजाओं के शब्दों से पृथ्वी को कम्पित किया ५८ युद्धमें उसके शब्द से भयभीत और भागने में प्रवृत्तचित्त आप के शूरवीर क्षत्रिय धर्मको छोड़कर भागे ५६ हे राजा तब पाण्डवलोग विजयको पाकर प्रसन्नहुये और युद्धमें शत्रुओंका नाश करके बड़ा आनन्द पाया ६० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्रोणवधेशतोपरित्रिनवतितमोऽध्यायः १९३ ॥

एकसौचौरानवेका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा द्रोणाचार्य्य के मरनेपर कौरवलोग शस्त्रों से पीड़ावान् और जिनके बड़े वीर मारेगये पृथ्वीपर पड़ेहुये शोकसे पूर्णहुये १ और शत्रुओं को उदीर्ण अर्थात् उत्साहयुक्त जानकर बारम्बार कम्पायमान अश्रुपातोंसे पूर्णनेत्र भयभीत होकर दुखीहुये २ फिर उत्साहसे रहित मूर्च्छासे म्लान लोगों ने बड़े पीड़ित शब्द के साथ आप के पुत्रको ऐसे मध्यवर्त्ती किया ३ जैसे कि पूर्व्व समय में हिरण्याक्ष के मरनेपर कम्पायमान रजस्वला दशों दिशाओं को देखनेवाली अश्रुपातों से पूर्ण दैत्योंकी स्त्रियों ने कियाथा ४ नीच मृगके समान भयभीत औरउन लोगोंसे संयुक्त वह आपका पुत्र राजा दुर्योधन नियत होनेको समर्थ नहीं हुआ ५ हे भरतवंशी क्षुधा तृपासे पीड़ित और म्लानचित्त वह आपके शूरवीर ऐसे उदास होगये जैसे कि सूर्य्य से अत्यन्त तप्तहुये मनुष्य होते हैं ६ जैसे कि सूर्य्यका गिरना समुद्रका सूखना मेरुपर्व्वतका चलायमान होना और इन्द्रका पराजय होना होय ७ उसीप्रकार भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के उस असह्य मरकर गिरनेको देखकर अत्यन्त भयभीत कौरवलोग भयकरके भागे ८ भयसे पूर्ण गान्धारका राजा शकुनी स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य्य को मराहुआ सुनकर भयभीत रथियों समेत भागा ९ सूतका पुत्र कर्ण भी उस वेगवान् भागीहुई पताकाधारी बड़ी सेनाको साथलेकर भयसेहटगया १० मद्रदेशियोंका स्वामी शल्यभी रथ हाथी और घोड़ोंसे पूर्ण अपनी सेनाको आगे करके देखता हुआ हटगया ११ और जिसके बहुतसे बड़े बड़े शूरवीर मारेगये उस सेनासे युक्त कृपाचार्य्य जी बड़ा खेदहै बड़ा खेदहै यह कहतेहुये चलेगये १२ हे राजा शेष बचेहुये भोजवंशी कलिङ्गदेशी आरट्टदेशी और वाह्लिकोंकी

सेनासे युक्त कृतवर्मा अत्यन्त शीघ्रगामी घोड़ोंकी सवारी से चलेगये १३ और पदातियों के समूहों से युक्त भयभीत और भयसे पीड़ित उलूकभी वहां गिराये हुये द्रोणाचार्य्य को देखकर भागा १४ दर्शनीय तरुण अवस्था युवराजपने का चिह्न रखनेवाला दुश्शासन भी हाथियों समेत भागा १५ वृषसेन गिरायेहुये द्रोणाचार्य्य को देखकर दशहजार रथ और तीनहजार हाथीको साथलेकर शीघ्रता से चला १६ हे महाराज हाथी घोड़े और रथोंसे युक्त पदातियों से वेष्टित महारथी दुर्योधन चलदिया १७ सुशर्मा गिरायेहुये द्रोणाचार्य्य को देखकर अर्ज्जुन के मारनेसे बाकी बचेहुये संसप्तकों के समूहोंको लेकर भागा १८ और सेनाके लोग स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य्य को मृतकहुआ देखकर हाथी और रथोंपर सवार होकर घोड़ोंको छोड़२कर सबओरसे भागे १९ उस समय कौरवलोगोंमें कोई पिता कोई भाई मामा पुत्र और बराबरवालों को शीघ्रगामी करते हुये भागे २० उसी प्रकार कोई २ सेनाओंको भानजोंको और नातेदार आदिक मनुष्यों को चलायमान करते दशोंदिशाओंको भागे २१ कोई बिखरेहुये केश गिरते पड़ते पृथक्२ साथ दौड़नेवाले और यह सेना नहीं है यह मानते उत्साह और पराक्रमों से रहितहुये २२ और हे समर्थ बहुतसे आपके शूरबीर कवचों को भी त्याग २ कर भागे और सबसेनाके लोगोंको परस्पर में पुकारा २३ कि ठहरो ठहरो परन्तु आप वहां नियत नहीं हुये किसी २ ने जिसका सारथी मारागया उस रथसे अच्छे २ अलंकृत घोड़ोंको खोलकर उनपर सवारहो शीघ्रही घोड़ोंको चलायमान किया २४ उसप्रकार भयभीत रूप पराक्रमसे रहित सेना के भागजाने पर विरोधी ग्राह के समान अश्वत्थामा शत्रुओं के सम्मुखगया २५ शिखण्डी आदिक प्रभद्रक, पाञ्चाल चन्देरीदेशी और केकयों के साथ उसका बड़ाभारी युद्धहुआ २६ और युद्धमें दुर्म्मद मतवाले हाथी के समान पराक्रमी और कुछेक संकट से रहित अश्वत्थामा पांडवों की बहुत प्रकारकी सेनाओं को मारकर २७ भागने में प्रवृत्त दौड़ती गिरतीहुई सेनाको देखकर दुर्योधन से यहवचन बोले २८ हे भरतवंशी यह सेना भयभीतोंके समान क्यों भागती है हेराजेन्द्र इस भागनेवाली सेनाको युद्ध में नियत नहीं करतेहो २९ और पूर्व्व के समान तुम अपने स्वभावमें भी नियत नहीहो और हेराजा यह कर्ण आदिक भी नहीं भिड़तेहैं ३० कभी किसी पहले युद्धमें सेना नही भागी हे भरतवंशी महाबाहु क्या तेरी सेनाकी कुशल

है ३१ हे कौरव राजादुर्य्योधन किसके मरनेपर आपके उत्तम रथियोंकी इस सेना ने ऐसी दशा को पाया है यह सब मुझसे कहो ३२ तब वह राजाओं में उत्तम दुर्य्योधन अश्वत्थामाके इन वचनोंको सुनकर घोर और अप्रिय वृत्तान्तके कहने को समर्थ नहीं हुआ ३३ टूटीहुई नौकाके समान शोकसमुद्र में डूबाहुआ अश्रुपातों से आर्द्र शरीर आपका पुत्र रथपर चढ़ेहुये अश्वत्थामा को देखकर ३४ लज्जासेयुक्त होकर कृपाचार्य्य से यहवचन बोला कि आपका कल्याणहोय आपही यहां के उस सब वृत्तान्तको कहिये जैसे कि यह सबसेना भागी है ३५ हे राजा इसकेपीछे वारम्बार पीड़ित होतेहुये कृपाचार्य्य ने अश्वत्थामासे वह सब वृत्तान्त कहा जैसे कि द्रोणाचार्य्य गिरायेगये थे ३६ कृपाचार्य्य बोले कि हमने पृथ्वीपर अत्यन्त उत्तमरथी द्रोणाचार्य्यको आगेकरके केवल पांचालोंकेही साथ में युद्धको जारीकिया ३७ उसकेपीछे जारी होनेवाले युद्धमें कौरव और सोमक लोग मिलगये और परस्पर सम्मुख गर्जनेवालों ने शस्त्रों से शरीरों को गिराया ३८ इसप्रकार युद्धके जारीहोने और युद्धमें धृतराष्ट्रके पुत्रों के विनाशवान् होने पर अत्यन्त क्रोधयुक्त तेरे पिताने अस्त्रको प्रकटकिया ३९ फिर ब्रह्मअस्त्रके जारी करनेवाले नरोत्तम द्रोणाचार्यने भल्लोंसे हजारों सेनाके लोगोंकोमारा ४० काल से प्रेरित पांडव, केकय, मत्स्य और पांचालों की सेना युद्धमें द्रोणाचार्य्य के रथ को पाकर अधिकतम नाशयुक्त हुई ४१ द्रोणाचार्य्यने ब्रह्मअस्त्रके योगसे हजार शूरवीर और दोहजार हाथियोंको मृत्यु बशकिया ४२ कानतक श्वेतबाल श्याम वर्ण अवस्थामें पचासीबर्ष के वृद्ध द्रोणाचार्य्यजी सोलहवर्षवाले की अवस्थाके समान युद्धमें घूमनेलगे ४३ सेनाके पीड़ावान् होने और राजाओं के मरनेपर क्रोधके वशीभूत पांचालों ने मुखोंको फेरा ४४ उनके कुछेक पृथक् २ होकर मुखों के फेरनेपर वह शत्रुओं के विजय करनेवाले द्रोणाचार्य्य दिव्य अस्त्रों को प्रकट करते उदयहुये सूर्य्य के समान होगये ४५ वह बाणरूपी किरण रखनेवाले आप के पिता प्रतापी द्रोणाचार्य्य पांडवों के मध्यको पाकर मध्याह्नके सूर्य्य के समान दुःखसे देखने के योग्य हुये ४६ सूर्य्य के समान शोभायमान द्रोणाचार्य्य से भस्म होतेहुये वह सब वीर पराक्रम से हीन निरुत्साह और अचेतहुये ४७ पांडवों के विजयाभिलाषी मधुसूदन जी द्रोणाचार्य्य के बाणों से पीड़ावान् सबलोगों को देखकर यह वचन बोले कि ४८ यह शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ महारथी द्रोणाचार्य

नुष्य तो क्या किन्तु इंद्रसे भी बिजयकरनेको योग्य नहीं है ४६ सो हे पांडव तुम र्म्मको छोड़कर बिजयकी रक्षाकरो और वह उपायकरो जिससे कि यह स्वर्ण-यी रथवाले द्रोणाचार्य्य तुम सबको युद्धमें न मारें ५० यह मेरी बुद्धिमें आताहै कि यह अश्वत्थामा के मरनेपर कभी युद्ध नहीं करेंगे इसहेतु से सेना का कोई मनुष्य युद्धमें अश्वत्थामाके मरणको कहे ५१ कुन्ती के पुत्र अर्जुनने इसबातको अंगीकार नहीं किया अन्य सबलोगों ने इसको स्वीकार किया और युधिष्ठिरने सबके कहनेसे बड़ेकष्ट और खेदसे स्वीकार किया ५२ और भीमसेन लज्जायुक्त होकर आपके पितासे बोले कि अश्वत्थामा मारागया तेरे पिताने उसका विश्वास नहीं किया ५३ उस बातको मिथ्या और अपने पुत्रको प्रिय माननेवाले पिताने तेरे मरने और जीवनेको युद्धभूमि में राजायुधिष्ठिरसे पूछा ५४ मिथ्याके भयमें डूबे और बिजयमें प्रवृत्त चित्त युधिष्ठिरने भीमसेनके हाथसे युद्धभूमि में मारेहुये उस अश्वत्थामा नाम बड़ेहाथी को ५५ जोकि पर्व्वत के समान शरीर मालवीय क्षत्रियका हाथीथा देखकर उच्चस्वरसे उन द्रोणाचार्य्य से यह कहा कि ५६ जिस के निमित्त हाथमें शस्त्रको लेतेहो और जिसको देखकर जीवतेहो वह अश्वत्थामा सदैव प्यारा पुत्र युद्धमें गिराया गया ५७ और माराहुआ पृथ्वीपर ऐसे सोताहै जैसे कि बनमें सिंहकाबच्चा होताहै वह राजा मिथ्याके दोषोंको जानताहुआ भी प्रत्यक्षमें उनसे बोला कि हाथी मारागया ५८। ५६ वह द्रोणाचार्य्य युद्धमें तुझ को माराहुआ सुनकर दुखित और पीड़ितहोकर दिव्यअस्त्रोंका चलाना बन्दकर-के पूर्व्व के समान नहीं लड़े ६० राजाद्रुपद का निर्द्दयकर्म्मी पुत्र उस अत्यन्त ब्याकुल और शोक में मग्न अचेतहुये द्रोणाचार्य्य को देखकर दौड़ा ६१ फिर सिद्धान्तमें सावधान वह द्रोणाचार्य्य लोकमें बिहित और योग्य मृत्युको देखकर दिव्य अस्त्रोंको त्यागकर युद्धभूमि में शरीरके त्यागनेको बैठगये ६२ इसके पीछे धृष्टद्युम्नने वामहस्तसे उनके बालोंको पकड़कर सब बीरों के पुकारतेहुये भी उनके शिरको काटा ६३ सबओरसे बीरोंने कहा कि यह मारने के योग्य नहीं है और धर्मज्ञ अर्जुनभी रथसेउतर शीघ्रभुजाको उठायेहुये बारम्बार यहबात कहताहुआ दौड़ा कि गुरूजीको मारनामत सजीव लेआओ ६४। ६५ हे नरोत्तम इसरीति से कौरवों के और अर्जुनके निषेध करनेपरभी उस निर्द्दयी ने आपके पिताको मारा ६६ इसके पीछे भयसे पीड़ावान् सब सेनाकेलोग भागे और हे निष्पाप

हमभी तेरे पिताके मरनेपर उत्साहसे रहितहुये ६७ संजयबोले कि अश्वत्थामा ने युद्धमें पिताके उस मरण को सुनकर चरण से घायल सर्प के समान कठिन क्रोधकिया ६८ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछे क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ऐसे अत्यन्त क्रोधसे पूर्णहुआ जैसे कि बहुत से इन्धन को पाकर अग्नि प्रज्वलित होतीहै ६९ तब हथेली से हथेली को और दांतों से दांतों को घायलकरके दबाया और सर्पके समान श्वास लेताहुआ रक्तवर्ण नेत्रों से क्रुद्धहुआ ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिचतुर्नवतितमोऽध्यायः १९४ ॥

एकसौपंचानवेका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय अधर्म्म से धृष्टद्युम्न के हाथ से मारे हुये वृद्धब्राह्मण पिता को देखकर अश्वत्थामा ने क्या कहा १ जिसके पास वायव्य, वारुण, आग्नेय, पराक्रमी ब्रह्मास्त्र, ऐन्द्र और नारायणास्त्र यह सब सदैव वर्त्तमान थे २ अधर्म से युद्धमें धृष्टद्युम्न के हाथसे मारेहुये उस धर्मके अभ्यासी आचार्य्य जी को सुनकर अश्वत्थामा ने क्या कहा ३ जिसने इसलोक में महात्मा परशुराम जी से धनुष और वेद को पाकर गुणग्राहक ने अपने दिव्य अस्त्रों को पुत्र के अर्थ उपदेश किया ४ इस लोक में मनुष्य एक अपने ही पुत्र को अपने से अधिक गुणवान् चाहते हैं और दूसरे को किसी दशामें भी नहीं चाहते ५ महात्मा आचार्य्यों के पास गुप्त विद्या होती हैं वह सब विद्या भी वह अपने पुत्र केही निमित्त देते हैं अथवा आज्ञाकारी शिष्यको देते हैं ६ हे संजय वह शिष्य शूरवीर अश्वत्थामा उस सब विद्याको मुख्य २ बातों समेत प्राप्तकर के युद्ध में द्रोणाचार्य्य के समान हुआ ७ शस्त्रविद्या में परशुरामजी के समान युद्ध में इन्द्रके तुल्य पराक्रम में सहस्रबाहु के समान बुद्धिमें बृहस्पति जी के समतुल्य ८ बुद्धिकी स्थिरतामें पर्व्वत के समान तेजमें अग्निके सदृश तरुणता पूर्व्वक गंभीरतामें समुद्रके समान और क्रोधमें विषधर सर्पके समानहै ९ वह इस संसार में सबसे श्रेष्ठरथी दृढ़ धनुषधारी श्रम से रहित युद्धमें घूमताहुआ वायुके समान शीघ्रगामी और यमराजके समान क्रोधयुक्त है १० जिस धनुषधारीने बाणोंकी वर्षासे पृथ्वी को पीड़ित किया और सत्यपराक्रमी होकर युद्ध में पीड़ाको नहीं पाया ११ वेदव्रत से स्नान किया हुआ धनुर्वेदका पारगामी महासमुद्रके समान

ऐसे व्याकुलता से रहितहै जैसे कि दशरथजी के पुत्र श्रीरामचन्द्र जीथे १२ अ-
धर्मसे युद्धमें धृष्टद्युम्न के हाथसे मारेहुये उस धर्माभ्यासी आचार्य्यको सुनकर
अश्वत्थामाने क्या कहा १३ जैसे कि धृष्टद्युम्नका कालरूप यज्ञसेनका सुतहुआ
उसीप्रकार द्रोणाचार्य्यका कालरूप द्रुपदका पुत्र धृष्टद्युम्न हुआ १४ उस निर्दय
पापी क्रूर अदीर्घदर्शी धृष्टद्युम्न के हाथसे मारेहुये उन तेजस्वी आचार्य्यजी को
सुनकर अश्वत्थामाने क्या कहा १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिपंचनवतितमोऽध्यायः १९५ ॥

एकसौछियानबेका अध्याय ॥

संजय बोले कि वह नरोत्तम अश्वत्थामा छलसे पापकर्मी धृष्टद्युम्न के हाथ
से मारे हुये पिताको सुनकर क्रोधसे और अश्रुपातों से पूर्ण मुखवाला हुआ १
हे राजेन्द्र उस क्रोधयुक्त का मुख ऐसा प्रकाशमान दिखाई पड़ा जैसे कि प्रलय
के समय जीवधारियों के मारने के अभिलाषी कालका मुख होताहै २ फिर अ-
श्रुपातों से युक्त दोनों नेत्रोंको बारंबार पोंछ और साफ करके क्रोधसे श्वासाओं
को लेताहुआ दुर्योधनसे यहवचन बोला कि ३ जिस प्रकार से शस्त्रोंके त्यागने
वाले मेरे पिता नीचके हाथसे मारेगये और धर्म ध्वजाधारी युधिष्ठिरने जो पाप
किया वह मेरा जानाहुआ है ४ मैंने धर्मपुत्र के दुष्कर्म युक्त निर्दयताको सुना
यद्यपि युद्ध में प्रवृत्त बीरोंकी बिजय और पराजय दोनों अवश्य होती हैं ५ हे
राजा इन दोनोंमें से जो युद्धमें न्यायके अनुसार युद्धकर्त्ताओं का मारनाहोता
है उसीकी अधिक प्रशंसा कीजाती है वह दुखदायी नहीं जानपड़ता है जैसे कि
उत्तम ब्राह्मणोंसे देखागयाहै वह मेरापिता निस्सन्देह बीरोंके लोकोंमें गया ६।७
हे पुरुषोत्तम वह शोचके योग्यनहीं समझाजाता है जिसने कि धर्म में प्रवृत्त
होकर विनाशको पाया और जो कि सब सेनाओंके देखतेहुये उनके केशों का
पकड़ना हुआ है ८ यहबात मेरे मर्मोंको भेदन कर रही है हाय धिक्कार है मुझ
को जो मेरे जीवतेहुये मेरे पिताके केश पकड़े गये ९ अब कौनसे संतानवाले
लोग अपने पुत्रोंकी अभिलाषा करेंगे १० जो कामसे क्रोध से अविज्ञानसे दर्प
से लड़कपन से धर्म के विपरीत बातोंको करते हैं वह पराजित होते हैं सो इस
स्थानपर धृष्टद्युम्नने यह अधर्म से कर्म कियाहै ११ उस निर्दयी धृष्टद्युम्नने नि-

श्चय करके मेरा अनादर करके ऐसा कर्म किया इस हेतु से धृष्टद्युम्न उसके भयानक फलको देखेगा १२ और मिथ्यावादी पांडव युधिष्ठिरने भी वहुतवुरा निन्दित कर्म किया जो आचार्य्यजी को शस्त्रों से रहित किया १३ अव उस धर्मराजके रुधिरको पृथ्वी पान करेगी हे कौरव मैं सत्य यज्ञ और वापी आदिक के फलकी शपथ खाताहूं १४ मैं पांचालों को विनामारे हुये अपने जीवनको नहीं चाहता मैं सव उपायों से पांचालों के मारने में उद्योग करूंगा १५ और युद्ध में पापकर्मी धृष्टद्युम्न को किसी कर्म करके अवश्य मारूंगा १६ जव पांचालों को मारलूंगा तभीशान्तीको पाऊंगा हे पुरुषोत्तम कौरव मनुष्य अपने पुत्रको जिस निमित्त चाहते हैं १७ वह बुद्धीसे प्राप्त होनेवाले पुत्र इस लोक और परलोकमें वड़े भयसे रक्षा करते हैं बांधवोंसे रहित के समान मेरे पिताने इस दशाको पाया १८ कि मुझ सरीके पर्व्वत के समान पुत्र और शिष्य के जीवते हुये युद्धभूमि में उस दशाको पाया मेरे दिव्य अस्त्रोंको धिकार भुजाओंको धिकार और पराक्रम को भी वहुत धिकारहै १९ कि मुझ सरीके पुत्रको पाकर भी जिस के वाल पकड़ें गये हे भरतर्षभ मैं वैसाही कर्म करूंगा २० जिस से कि परलोकगामी अपने पिताके ऋण से उऋण हूंगा यद्यपि उत्तम पुरुषको अपनी प्रशंसा करनी योग्य नहीं है २१ तथापि अब मैं सत्य २ अपने पिताके मारनेको न सहकर अपने पुरुषार्थ को दिखलाऊंगा और श्रीकृष्णजी समेत सव पांडवलोग मुझ सव सेनाओंके मर्दन करनेवाले और प्रलय करनेवालेके पराक्रमको देखेंगे अव देवता गन्धर्व असुर राक्षस २२ । २३ और उत्तम मनुष्यभी युद्ध में मुझ रथसवार के विजय करनेको समर्थ नही हैं इसलोक में मेरे और अर्जुनके सिवाय दूसरा अस्त्रज्ञ कहींनहीं है २४ सेना के मध्यवर्ती होकर मैंही देवसृष्टी लोगों से प्रयुक्त अस्त्रोंका प्रकट करनेवाला ऐसाहूं जैसे कि प्रकाशित ज्वलित अग्नियोंके मध्य में सूर्य्य होताहै २५ अव इस वड़े युद्धमें धनुष से वारम्वार चलायेहुये वाण मेरे पराक्रम को दिखलातेहुये पाण्डवों को मथन करेंगे २६ हे राजा आप इस युद्धभूमिमें मेरे तीक्ष्ण वाणोंसे पूर्ण सव दिशाओं को धाराओं से संयुक्त के समान देखेंगे २७ सव ओरसे भयानक शब्द करनेवाले वाणजालों को फैलाता शत्रुओंको ऐसे गिराऊंगा जैसे कि वड़ेवड़े वृक्षोंको वायु गिराताहै २८ हे कौरव जो यह अस्त्रविधान संहार समेत मेरे पास है उस अस्त्र को न अर्ज्जुन श्रीकृष्ण

भीमसेन नकुल सहदेव राजा युधिष्ठिर २९ शिखण्डी सात्यकी और न वह दु-
रात्मा धृष्टद्युम्न जानता है ३० पूर्व्वसमय में सम्मुख नियत होकर मेरे पिताने
विधिके अनुसार ब्राह्मण रूप श्रीनारायणजीके अर्थ भेट निवेदन करी ३१ फिर
उस भगवान् ने आप उस भेटको अङ्गीकार करके बरप्रदान मांगने की आज्ञा
करी तब मेरे पिताने नारायण नाम अस्त्रको मांगा ३२ हे राजा इसके पीछे वह
देवताओं में श्रेष्ठ भगवान् मेरे पितासे बोले कि युद्धमें तेरे समान दूसरा कोई
मनुष्य कहीं नहीं होगा ३३ हे ब्रह्मन् यह अस्त्र बिना बिचारके किसी दशा में
भी छोड़ना न चाहिये यह अस्त्र शत्रुको विना मारेहुये कभी लौटकर नहींआता
है ३४ हे ब्रह्मन् यह बात जानने के योग्य नहीं है कि कैसे मारना चाहिये नि-
श्चय करके यह अस्त्र न मारने के योग्यको भी मारसक्ता है इसहेतु से इस अ-
स्त्रका प्रयोग सहसा नहीं करे ३५ फिर युद्ध में रथ और शस्त्रोंका त्याग करना
और प्रार्थना करके शत्रुओं का शरण में होना ३६ यह योग महाअस्त्रकी शा-
न्ती में संयुक्त है हे शत्रुओं के तपानेवाले सब रीति से चलायाहुआ यह अस्त्र
युद्धमें पीड़ा देताहुआ अबध्योंको भी मारताहै ३७ मेरे पिताने उस अस्त्रको ले-
लिया तब प्रभु नारायणजीने मेरेपितासे कहा कि तुम अनेक प्रकारकी सब शस्त्रों
की बर्षाको ३८ इस अस्त्रके द्वारा काटोगे और युद्धमें तेजसे प्रज्वलित अग्निके
समान होगे ऐसा कहकर वह भगवान् प्रभु अपने स्वर्गको चलेगये ३९ यह ना-
रायण नाम अस्त्र नारायणजीसे मिला और पिताको प्रसन्न रखने से उसको मैं
ने पाया मैं उस अस्त्रसे पाण्डव पाञ्चाल मत्स्यदेशी और केकय लोगों को
युद्ध में ऐसे भगाऊंगा जैसे कि शचीपति इन्द्र असुरों को भगाता है मैं जैसे
जैसे चाहूंगा वैसेही वैसे प्रकार के मेरे बाण होकर ४० । ४१ पराक्रमी शत्रुओं
पर गिरेंगे हे भरतवंशी युद्धमें वर्त्तमान होकर मैं अपनी इच्छानुसार पाषाणों की
भी वर्षा को बरसाऊंगा ४२ मैं लोहे के मुखवाले बाणोंसे महारथियों को भगाऊं-
गा और तीक्ष्ण बाणों की वर्षाको बरसाऊंगा ४३ मैं शत्रुओं का तपाने वाला
होकर पाण्डवों को अनादर करके महानारायण अस्त्रसे शत्रुओंको मारूंगा ४४
अब मित्र ब्राह्मण और गुरूसे शत्रुता करनेवाला अज्ञानी दुष्ट पांचालों में नीच
धृष्टद्युम्न मेरे हाथसे जीवता हुआ नहीं बचसक्ता है ४५ अश्वत्थामाके उसबचन
को सुनकर सेनाने चारों ओर से मध्यवर्त्ती किया फिर सब पुरुषोत्तमों ने महा

शंखों को बजाया ४६ और प्रसन्नचित्त होकर हजारों दुन्दुभी समेत भेरियों को बजाया इसीप्रकार खुर और नेमियों से अत्यन्त पीड़ावान् पृथ्वी अत्यन्त शब्दायमान हुई ४७ उस कठोर शब्दने आकाश स्वर्ग और पृथ्वीको शब्दायमान किया तब बादलों के समान उस शब्दको सुनकर ४८ रथियों में श्रेष्ठ पाण्डवोंने मिलकर और इकट्ठे होके विचार किया और अश्वत्थामा ने उस प्रकार की बातों को कहके आचमन को करके ४९ उस दिव्य नारायण अस्त्र को प्रकट किया ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषण्णवतितमोऽध्यायः १९६ ॥

एकसौसत्तानबेका अध्याय ॥

संजय बोले हे प्रभु फिर उस नारायण अस्त्रके प्रकट होने पर पीछे की ओर से बायु चली और बिनाही बादलोंके गर्जना हुई १ पृथ्वी कम्पायमान हुई महा समुद्र व्याकुल हुआ और समुद्रमें मिलनेवाले झिरने नदी आदिक उलटे फिरने लगे २ पर्व्वतोंके शिखर गिरपड़े और मृगों ने पाण्डवी सेनाको बाम किया ३ सेना अन्धकार से व्याप्त हुई सूर्य्य प्रकाश से रहित हुआ और कच्चे मांस खाने वाले जीव अत्यन्त प्रसन्नके समान आपहुंचे ४ हे राजा देवता दानव और गन्धर्व भी भयभीत हुये उस बड़ी व्याकुलता को देखकर परस्पर वार्त्तालापें हुईं ५ सब राजालोग अश्वत्थामा के उस घोररूप भयानक अस्त्रको देखकर बड़े पीड़ावान् और भयभीत हुये ६ धृतराष्ट्र बोले कि युद्धमें शोकसे अत्यन्त दुखी और पिताके मरने को न सहनेवाले अश्वत्थामाके साथ सेनाओंके लौटनेपर ७ आते हुये कौरवोंको देखकर पाण्डवों के मध्यमें धृष्टद्युम्न की रक्षाके निमित्त कौनसा विचार हुआ हे संजय उसको मुझे समझाकर कहो ८ युधिष्ठिरने अस्त्रके छोड़ने से पूर्व्वही धृष्टद्युम्नके पुत्रों को व्यथासे घायल देखकर और फिर कठोर शब्दको सुनकर अर्जुनसे कहा कि ९ हे अर्जुन जैसे वज्रधारी इन्द्रके हाथसे वृत्रासुर मारा गयाथा उसी प्रकार युद्धमें धृष्टद्युम्नके हाथसे द्रोणाचार्य्यके मरनेपर युद्धमें बिजयकी आशा न करनेवाले दुखीचित्त कौरवलोग अपनी रक्षामें एकमत करके युद्धसे भागे १० । ११ कोई कोई व्याकुल राजालोग उन रथोंसे जो कि घूमतेथे और जिनके पर्ष्णि यंत्र टूटे और सारथी मारेगये व पताका ध्वजा छत्रोंसे रहित

हुये और जिनके कूबर गिरपड़े १२ नीड़ टूटे उनरथोंसे दूसरे रथोंपर चढ़कर कोई भयसे विह्वल पदाती और आपही रथोंको शीघ्र चलाते टूटे अक्ष युग रथ चक्र वाले रथोंके द्वारा चारोंओरसे खैंचे जातेथे १३ कोई टूटे रथोंको छोड़कर पैदलही भागे और कोई घोड़ोंकी पीठपर ऐसे सवारथे कि जिनका आधा आसन लटक रहाथा खिंचेहुये चले जाते थे १४ हाथियों के कन्धोंपर चिपटे हुये नाराचोंसे चलायमान आसन कितनेही शूरवीर बाणों से पीड़ित भागे हुये हाथियों के कारण से दशोंदिशाओं को शीघ्रता से गये १५ और कितनेही वीर शस्त्र वर्मों से रहित सवारियों से पृथ्वी पर पड़े हुये और कितनेही युद्धकर्त्ता टूटे नीबीवाले रथ घोड़े और हाथियों से मर्दन किये हुये १६ और बहुतसे शूरवीर हे पिता हे पुत्र इस रीतिसे पुकारते हुये भयभीत होकर भागे १७ मूर्च्छा से नाशवान् बलवाले योद्धाओंने परस्पर नहीं पहचाना और कितनेही वीर अत्यन्त घायलहुये अपने पुत्र पिता मित्र और भाइयों को सवारियों पर बैठाकर कवचों को उतार के जलसे धोते थे १८ द्रोणाचार्य्य के मरने पर सेना ऐसी दशाको प्राप्त होकर भागी धृतराष्ट्र बोले हे संजय फिर वह सेना किस कारण से लौटी इसको तुम जानतेहो तो मुझसे कहो १९ वहां हींसते घोड़े और चिंघाड़ते बड़ेहाथियों के शब्द रथकी नेमियों के शब्दों से युक्त सुनेजाते हैं २० यह अत्यन्त कठोरशब्द कौरवसागर में बारंबार वर्त्तमान होकर कियाजाता है और मेरे शूरवीरों को भी कंपायमान करताहै २१ जो यह महाकठोर रोमांचको खड़ा करनेवाला शब्द सुनाजाताहै वह इन्द्रसमेत तीनोंलोकोंको भी पराजय करेगा यह मेरामतहै २२ मैं मानताहूं कि यह भय उत्पन्न करनेवाला शब्द वज्रधारी इन्द्रकाही है द्रोणाचार्य्य के मरने पर साक्षात् इन्द्रही कौरवों के अर्थ सम्मुख आता है २३ युधिष्ठिरने कहा हे अर्जुन गुरुको मृतक सुनकर उत्तम रथी अत्यन्त खड़ेहुये रोमकूप और व्याकुलहैं यह बड़ा भयकारी शब्द होताहै कौरवों में अब कौनसा महारथी उन भागे और छिन्नभिन्न कौरवों को नियत करके युद्धके निमित्त ऐसे लौटा रहाहै जैसे कि युद्धमें देवताओंका इन्द्र अपनी भागीहुई सेनाको लौटाताहै २४। २५ अर्जुन बोले कि जिसके पराक्रमके आश्रित और पराक्रममें नियत कौरवलोग उग्रकर्म के निमित्त आत्माको प्रवृत्त करके शंखोंको बजाते हैं २६ हेराजा तुमको जो यह सन्देहहै कि शस्त्र त्यागनेवाले गुरुजीके मरने पर यह कौन पुरुष धृत-

राष्ट्रके भागे हुये पुत्रों को नियत करके गर्जना करता है २७ उस लज्जावान् महाबाहु मतवाले हाथीकेसमान चलनेवाले व्याघ्रसदृश मुख उग्रकर्मी कौरवोंको निर्भयता उत्पन्न करने वाले २८ को जिसके कि उत्पन्नहोनेपर द्रोणाचार्यने एक हजार गौवें बड़ेयोग्य ब्राह्मणों के अर्थ दानकी थीं वही अश्वत्थामा इसगर्जना को करताहै २९ जिस वीरने उत्पन्न होतेही उच्चैःश्रवानाम घोड़े के समान शब्द किया और उस शब्दसे पृथ्वी समेत तीनोंलोक कंपायमान हुये ३० और उसी शब्दको सुनकर गुप्त जीवधारियोंने उसका नाम अश्वत्थामा रक्खा हे पांडव धर्मराज अब वहीशूरबीर गर्जरहाहै ३१ धृष्टद्युम्नने बड़े नीचकर्मको करके बड़े पराक्रमसे जो द्रोणाचार्य्यको अनाथके समान माराहै सो वह उसका नाथ सम्मुख नियतहै ३२ जो कि धृष्टद्युम्नने मेरे गुरूके बालोंको पकड़ाहै इससे उसकी वीरताको जानतेहुये अश्वत्थामाजी कभी उसको नहींसहसकेंगे ३३ और आपने भी राज्य के निमित्त द्रोणाचार्य्यसे मिथ्यावचन कहाहै यह आप सरीखे धर्मज्ञ पुरुषसे महा अधर्म हुआहै ३४ द्रोणाचार्य्य के गिरानेपर स्थावर जंगम जीवों समेत तीनों लोकोंमें आपकी अपकीर्त्ति बहुत कालतक वैसीही जारीहोगी जैसी कि बालिके मारनेसे श्रीरामचन्द्रजी की अपकीर्त्ति विख्यात हुई उन द्रोणाचार्य्यने आपके ऊपर ऐसा बिश्वास कियाथा कि यह पांडवयुधिष्ठिर धर्मसेयुक्त मेराशिष्यहै कभी मिथ्या नहींबोलेगा ३५ । ३६ सो सत्यरूपी कवच धारण करनेवाले आपने गुरूजीसे मिथ्या कहा कि हाथी मारागया ३७ इसके पीछे वह शस्त्रोंको त्यागकर अपमान रहित ममता और चैतन्यतासे रहित होकर ऐसे व्याकुल होगये जैसे कि उन समर्थको तुमने देखा ३८ फिर सनातन धर्म को छोड़कर उन शोकसे पूर्ण मुखके फेरनेवाले और पुत्रको प्यारा जाननेवाले गुरूजीको शस्त्र से मारा ३९ आपने शस्त्र त्यागनेवाले गुरूजीको अधर्म से मारा अब जो आप समर्थहैं तो अपने मंत्रियों समेत नाशवान् पितावाले क्रोधयुक्त आचार्य्य के पुत्र अश्वत्थामासे ग्रसेहुये धृष्टद्युम्नकी रक्षाकरो ४० अब हम सब धृष्टद्युम्नकी रक्षा करने को समर्थ नहीं हैं जो उत्तम पुरुष सब जीवों पर बड़ी कृपा और प्रीति करताहै अब वह पिताको शिरके बालोंका पकड़ना सुनकर युद्धमें हमको भस्म करेगा ४१ मुझ गुरूके चाहने वालेके अत्यन्त पुकारने परभी धर्मको त्यागकर अपने शिष्यके हाथसे गुरूजी मारेगये ४२ हमारी अवस्था बहुत व्यतीत होगई और बहुत

थोड़ी बाकी रहीहै अब उस शेष अवस्था का यह विकाररूप विपरीत भावहै जो आपने ऐसा अधर्म्म किया ४३ जो गुरूजी सदैव प्रीति करने से और धर्म्म से भी पिताके समान थे वह थोड़े दिन के राज्यके कारण से मरवाये ४४ हे राजा धृतराष्ट्र ने सम्पूर्ण पृथ्वी को राज्य में प्रवृत्त चित्तवाले पुत्रों समेत भीष्म और द्रोणाचार्य्य के अर्थ अर्पण करी ४५ उस प्रकारकी आजीविकाको पाकर सदैव प्रतिष्ठा पानेवाले सबके पूज्य गुरूजी ने सदैव मुझको अपने पुत्रसे भी अधिक माना ४६ वह शस्त्र त्यागनेवाले गुरूजी तुम्हारे और मेरे देखते अथवा तुमको और मुझको देखते हुये युद्धमें मारेगये निश्चय करके इन युद्ध करनेवाले गुरूजी को इन्द्र भी नहीं मारसक्ता था ४७ राज्यके अर्थ लोभ में लिप्तबुद्धि हमनीच लोगों ने उन सदैव उपकार करनेवाले वृद्धआचार्य्यजी के साथ शत्रुताकरी ४८ बड़े खेदकी बात है कि हमलोगों ने वह महाभयानक पापकर्म्म किया जो उन साधुरूप द्रोणाचार्य्यको राज्यके सुखके लोभसे मारा ४९ मेरे गुरूजी सदैव ऐसा जानते थे कि यह इन्द्रका पुत्र मेरी प्रीतिसे पुत्र भाई पिता ताऊआदि स्त्री समेत जीवन और सब सामान को भी त्यागकरसक्ता है ५० वह मारे जानेवाले गुरूजी मुझ राज्य के अभिलाषी करके त्याग कियेगये हे प्रभु राजा युधिष्ठर इस कारणसे हमलोग औंधे शिरहोकर नरकमें पड़ेंगे ५१ अबराज्यके निमित्त शस्त्र के त्यागनेवाले वृद्ध ब्राह्मण आचार्य्य महामुनिको मारकर इस जीवने से मरजानाही अच्छाहै ५२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिसप्तनवतितमोऽध्यायः १९७॥

एकसौअट्ठानबेका अध्याय॥

संजयबोले हे महाराज वहां अर्जुनके वचनको सुनकर सब महारथी अच्छी बुरी बातोंमें से कोई भी कुछनहीं बोले १ हे भरतर्षभ इसके पीछे क्रोधयुक्त महाबाहु भीमसेन पांडव अर्जुन की निन्दा करते बोले २ कि हे अर्जुन तुम धर्मसे संयुक्त ऐसे वचनोंको कहते हो जैसे कि वनमें वर्त्तमान सबधर्मों से निवृत्तवृत्तमें निष्ठावान् मुनि और ब्राह्मणलोग कहते हैं ३ दुखियोंकी रक्षाकरनेवाला शत्रुओं के मारने से अपनी जीविका करनेवाला स्त्री और साधुओं में क्षमा करनेवाला क्षत्रिय शीघ्रही पृथ्वी धर्म यश और लक्ष्मीको पाताहै ४ सो क्षत्रियों के सबगु-

णोंसे युक्त और कुलीन होकर आप अज्ञानोंके समान वचनोंके कहतेहुये शोभा को नहीं पातेहो ५ हे अर्जुन तेरा पराक्रम शचीपति इन्द्रके समानहै तुम धर्मको उल्लंघनकर ऐसे कर्म नही करते हो जैसे कि महासमुद्र अपनी मर्य्यादाको नहीं उल्लंघन करताहै ६ अब तुम्हारी प्रशंसा कौन नही करेगा जो तेरहवर्ष के अमर्ष को भी त्यागकर धर्मकोही चाहतेहो ७ हे भाई अब तेरा चित्त प्रारब्धसे अपने धर्ममें नियत है और हे अविनाशी तेरी बुद्धिमें सदैव दया रहती है ८ फिर जो धर्ममें प्रवृत्त युधिष्ठिरका राज्य अधर्मसे हरणकिया और द्रौपदीको सभामें लाकर शत्रुओं ने खैंचा ९ अत्यन्त मृगचर्म की पोशाक को धारण करनेवाले हम लोगोंको जो कि उसदशाके योग्य न थे शत्रुओंने तेरहवर्षतक वनवासी किया १० हे निष्पाप मैंने इन सब क्रोधके स्थानों में क्षमाकरके सहनकिया और क्षत्रिय धर्म में प्रवृत्तहोकर हमलोगों ने यह सब वनवासादिक व्यतीत किये ११ अब मैं उस दूर हटायेहुये अधर्म को स्मरण करके तेरी सहायता पाकर उन राज्यहरण करनेवाले नीचों को उनके साथियों समेत मारूंगा १२ प्रथम तुमने कहाथा कि युद्धके निमित्त सम्मुख होनेवाले हम सबलोग सामर्थ्य के अनुसार उपाय करेंगे सो तुमहीं अब हमारी निन्दाकरतेहो १३ तुम धर्मको जाना चाहतेहो तेरावचन मिथ्याहै भयसे पीड़ावान् हमलोगों के मर्मनाम अङ्गों को अपने वचनों से काटतेहो १४ हे शत्रुओं के विजय करनेवाले तुम हम सब घायलों के घावपर निमक डालकर पीड़ादेतेहो तेरे बचनरूपी भालेसे पीड़ितहोकर मेराहृदय फटाजाता है १५ हे भाई धर्मका अभ्यासीहोकर भी तू उस बड़े अधर्मको नहीं जानताहै जो तू प्रशंसाके योग्य अपनी और हमारी प्रशंसा नही करताहै १६ और बासुदेवजीके नियत होनेपर उस अश्वत्थामाकी प्रशंसाको करताहै जोकि हे अर्जुन तेरी सोलहवीं पूर्णकलाके भी योग्य नही है १७ आप अपनेदोषोंको कहतेहुये क्यों नही लज्जायुक्त होतेहो मैं क्रोधसे पृथ्वीको चीरडालूं और पर्वतोंको गेरदूं १८ और इस भयानक सुनहरीमाला रखनेवाली भारी गदाको घुमाकर पर्व्वतोंके समान वृक्षों को ऐसे तोड़डालूं जैसे कि वायु तोड़डालताहै १९ और सम्मुख आनेवाले इन्द्र के समेत देवता राक्षसगण असुर सर्प्प और मनुष्योंकोभी भगासक्ताहूं २० हे बड़े पराक्रमी नरोत्तम सो मुझ भाईको इसप्रकार का जाननेवाले होकर तुम अश्वत्थामासे भयकरने के योग्य नहींहो २१ हे अर्ज्जुन तुम सब सगेभाइयों समेत

कुतूहल देखो मैं अकेलाही हाथमें गदा लेकर युद्धमें इसको विजय करूंगा २२ इसके पीछे द्रुपदका पुत्र धृष्टद्युम्न अर्ज्जुनसे ऐसे बोला जैसे कि अत्यन्त क्रोध युक्त और गर्जना करनेवाले नृसिंहजी से हिरण्यकशिपु दैत्य बोलाथा २३ धृष्टद्युम्न बोले कि हे अर्ज्जुन बुद्धिमानोंके ब्रह्मकर्मोंको तुम जानतेहो यज्ञकराना पढ़ाना दान देना यज्ञ करना दान लेना २४ छठा पढ़ना इन सब कर्म्मों में से किसीभी कर्म्ममें नियत न थे इसीसे द्रोणाचार्य मेरे हाथसे मारेगये हे अर्ज्जुन तुम मेरी निन्दा क्यों करतेहो २५ अपने धर्म्म से पृथक् क्षत्रियधर्म्म में आश्रित नीचकर्म करनेवाले द्रोणाचार्यजी दिव्य अस्त्रोंसे हम लोगोंको मारतेथे २६ और इसीप्रकार मायाको प्रकट करनेवाले क्षमा शान्तीसे रहित नाममात्र अपने को ब्राह्मण कहने और माननेवाले द्रोणाचार्य्य को जो पुरुष मायासेही मारे उसमें हे अर्ज्जुन कौनसी बातकी अयोग्यताहै २७ इस रीति करके मेरे हाथसे उनके मरनेपर जो द्रोणाचार्य का पुत्र क्रोधसे महाभयकारी शब्दों को करताहै इससे मेरी क्या हानि होसक्ती है २८ मैं इसको अपूर्व नहीं मानताहूं क्योंकि यह अश्वत्थामा युद्धके मिस करके कौरवों का विध्वंस करवावेगा २९ जो तुम धर्म्मके अभ्यासी होकर मुझको गुरूका मारनेवाला कहतेहो इसका यह वृत्तान्त है कि मैं द्रुपदका पुत्र होकर उन्हींके मारनेके अर्थ अग्निसे उत्पन्न हुआहूं ३० हे अर्ज्जुन युद्ध में जिस युद्ध करनेवाले का कार्य्याकार्य्य समान होय उसको कैसे ब्राह्मण वा क्षत्रिय कहनायोग्यहै ३१ जो क्रोधसे मूर्च्छावान् ब्रह्मास्त्रके द्वारा अस्त्र न जाननेवालों को मारे वह पुरुषोत्तम किसप्रकार से सब उपायोंके द्वारा मारने के योग्य नहींहै ३२ हे धर्म्मके मूल जाननेवाले अर्जुन उस विपरीत धर्म्मवाले और उन पूर्वधर्म्म जाननेवालों के बिषके समान द्रोणाचार्य्य को जानबूझकर मेरी निन्दा क्यों करताहै ३३ और मैंने निरादरकरके उस निर्दय रथीको गिरायाहै इसके बदले में हे अर्जुन मेरी प्रशंसा करके क्यों नहीं मुझको प्रसन्न करते हो ३४ हे अर्जुन मेरे हाथसे उस कालाग्निके समान अथवा अग्नि सूर्य्य और विषके समतुल्य द्रोणाचार्य्य के काटेहुये भयानक शिरको क्यों नहीं प्रशंसाकरते हो ३५ जिसने युद्धमें मेरे बांधवों को मारा दूसरे के बांधवोंको नहीं मारा उसके मस्तकको काटकर मुझको भी विगतज्वरहोना अवश्य योग्यहै इसीसे मैं उसके ज्वरसे रहितहुआ ३६ परन्तु एक वहबात मेरे मर्मस्थलों को काटरही है अर्थात्

पश्चात्ताप होरहाहै कि जो मैंने उनके शिरको निषाददेशमें उसप्रकारसे नहीं फेंका जैसे कि जयद्रथका शिर फेंकागयाथा ३७ हे अर्जुन जो शत्रुका मारना अधर्म सुनाजाताहै तो मारना अथवा माराजाना यह क्षत्रियोंकेही धर्म हैं ३८ हे पांडव वह शत्रु धर्म्मसंयुक्त मेरे हाथसे युद्धमें ऐसे मारागया है जैसे कि पिताका मित्र शूरवीर भगदत्त तेरे हाथसे मारागयाहै ३९ तुम भीष्मपितामह को मारकर युद्ध में अपना धर्म्म मानतेहो और मेरे हाथसे पापीशत्रु के मारेजाने पर किसकारण से अधर्म मानतेहो ४० हे अर्जुन मैं नातेदारी से झुकाहुआहूं तुम मुझ झुकेहुये नातेदारसे इसप्रकार कहने के योग्य नहींहो जैसे कि अपने शरीरसे सोपान बनानेवाले बैठेहुये व्याकुल हाथीसे कोईबात कहना अयोग्यहै ४१ और मैं द्रौपदी और द्रौपदी के पुत्रोंके कारणसे तेरे सब विपरीत वचनोंको सहताहूं ४२ मेरेकुल की परम्परासे इन आचार्य्यजी के साथ मेरीशत्रुता चलीआती थी और प्रसिद्ध थी और संसार जानताहै क्या तुम नहीं जानतेहो ४३ और हे अर्जुन बड़ापांडव भी मिथ्यावादी नहीं है और मैंभी अधर्मका करनेवाला नहीं हूं शिष्यों का पापी शत्रु मारागया युद्धकरो अब सब तरह से तेरी विजयहै ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिअष्टनवतितमोऽध्यायः १९८ ॥

एकसौनिन्नानवेका अध्याय ॥

धृतराष्ट्रबोले कि जिस बुद्धिमान् महात्माने अंगों समेत चारों वेदोंको न्याय के अनुसारपढ़ा और जिस लज्जावान् में साक्षात् धनुर्वेद नियतहै १ उसीप्रकार जिस महर्षी के पुत्र द्रोणाचार्य्य के पुकारने पर भी नीचबुद्धि निर्दयी क्षुद्रबुद्धी गुरुघाती धृष्टद्युम्नने प्रहार किया २ जिस पुरुषोत्तमकी कृपासे युद्धमें उन दिव्य कर्मोंको करते हैं जोकि देवताओं से भी होने कठिनहैं उस द्रोणाचार्य्यके पुकारनेपर नेत्रों के समक्ष पापकर्मी धृष्टद्युम्न ने मारडाला ऐसे स्थानपर क्रोध नहीं करनाहोताहै इसी से इस क्षत्रियधर्म्मको और क्रोधको धिक्कारहै ३।४ सब पांडव वा राजालोग और पृथ्वीपर जो धनुषधारी हैं उन्होंने इसबात को सुनकर धृष्टद्युम्नसे क्या कहा हे संजय वह मुझसे कहो ५ संजय बोले हे राजा उस निर्दयकर्म्मी द्रुपदके पुत्रके उन वचनोंको सुनकर सब राजालोग मौनहोगये ६ फिर अर्जुन तिरछी आंखसे धृष्टद्युम्नको तिरछा देखकर अश्रुपातोंसमेत बड़ी श्वासा-

ओंको लेकर धिक्कार है धिक्कार है ऐसा वचनबोला ७ हे राजायुधिष्ठिर भीमसेन नकुल सहदेव श्रीकृष्ण और अन्य २ लोगभी अत्यन्त लज्जायुक्तहुये तब सात्यकी यह वचन बोला ८ कि यहां कोई पुरुष नहीं है जो इस पापपुरुष नरों में नीच अकल्याण वचन कहनेवाले को शीघ्रमारे ९ यह सब पाण्डव उसपापकर्म के कारणसे निन्दा पूर्व्वक तुझको ऐसा बुराकहते हैं जैसे कि ब्राह्मणलोग चांडालको बुराकहते हैं १० इस बड़े पापकोकरके शोभायमान सभामें प्राप्त सब साधुओंसे निन्दितहोकर बात करने में किसीप्रकारसेभी लज्जाको प्राप्तनहीं होताहै ११ हे नीच क्यों नहीं तेरीजिह्वा सौटुकड़े होती है और मस्तक नहीं फटताहै जो पुकारतेहुये गुरूकी अधर्म्मसे रक्षा नहीं की १२ तू पाण्डव और सब अन्धक वृष्णियों से कहनेको योग्यहै जो पापकर्म्म को करके सब जनसमूहों में अपनी प्रशंसाको करताहै १३ इसप्रकारके अकार्यको करके गुरूकी निन्दा करताहुआ तू मरनेके योग्यहै एकमुहूर्त्त भी तेरे जीवनसे प्रयोजन नहीं है १४ तेरे सिवाय कौनसा उत्तम अथवा नीच पुरुषहोगा जो धर्म्मात्मा सत्पुरुष गुरूके शिरको पकड़कर मारनेको निश्चयकरे १५ तेरे सातपुरुष आगेके और सात पीछेके तुझ कुलकलंकी को पाकर अपकीर्त्ति के साथ नरकमें डूबे १६ और जो तैंने नरोत्तम भीष्मजी के बिषयमें अर्जुनसे कहा वह तेराकहना वृथाहै क्योंकि उसमहात्माने अपने आप अपना नाशनियत कियाथा १७ उसका भी मारनेवाला वह तेराही सगाभाई है जो बड़ा पाप करनेवाला है राजा पांचालों के पुत्रों के सिवाय इस पृथ्वीपर दूसरा पाप करनेवाला नहीं है १८ निश्चय करके भीष्मकाभी नाशकरनेवाला तेरेही पितासे उत्पन्नहुआहै जिस निमित्तसे कि वह शिखण्डी रक्षितकिया था इसीसे वह उस महात्मा का मृत्युरूप हुआ १९ सब साधुओं से धिक्कार युक्त तुझको तेरे सगेभाइयों समेत पाकर मित्र और गुरूसे शत्रुता करनेवाले नीच पांचाल धर्म्मसे रहितहुये २० फिर इसप्रकारके बचनको जो मेरे सम्मुख कहैगा तो बज्रके समान गदासे तेरे शिरको तोड़ूंगा २१ मनुष्य तुझ ब्रह्महत्या करनेवाले को देखकर सूर्य्यका दर्शन करते हैं हे पापी तेरी ब्रह्महत्या प्रायश्चित्तके निमित्तहै २२ हे अत्यन्त दुराचारी पांचाल मेरे आगे मेरे गुरूकी और गुरूके भी गुरूजीकी निन्दा करताहुआ तू लज्जाको नहीं प्राप्तहोताहै २३ ठहरो ठहरो मेरी गदाके इस एकप्रहारको सहो फिर मैंभी तेरी गदाके बहुत प्रहारोंको सहूंगा २४

यादव सात्यकी के इसप्रकार कठोर अक्षर और शब्दवाले वचनों से निन्दायुक्त होकर अत्यन्त क्रोधसे पूर्ण हँसताहुआ धृष्टद्युम्न उस क्रोध भरे सात्यकीसे बोला २५ हे माधव हम सुनते हैं और क्षमाभी करते हैं सदैव अनार्य नीचपुरुष तू साधु पुरुषकी निन्दाकिया चाहताहै २६ इस संसारमें क्षमा करनाही उत्तम कहाजाता है परन्तु पापी पुरुष क्षमा करने के योग्य नहीं होताहै पापात्मा पुरुष क्षमावान् पुरुषको ऐसा मानलेताहै कि मैंने इसको विजय करलिया २७ सो नीचचलन नीच बुद्धि पापका निश्चय करनेवाला तू केशके अग्रभागसे नखके अग्रभागतक कहनेके अयोग्य होनेपर कहना चाहताहै २८ जो खण्डित ध्वजा और शरीरके त्यागनेकेअर्थ युद्धभूमि में बैठाहुआ वह भूरिश्रवा तुझ निषेध कियेहुये के हाथ से मारागया उससे अधिक पाप कौनसा होसक्ताहै २९ मैंने युद्धमें दिव्यअस्त्रोंसे मारनेवाले और उत्तमशस्त्रवाले द्रोणाचार्यजीको माराहै इसमें कौनसापापकिया है ३० हे सात्यकी जो पुरुष युद्धभूमिमें न लड़नेवाले शरीरत्यागनेको आसनपर बैठेहुये शत्रुओंके हाथसे टूटीभुजावाले मुनिकोमारे वह कैसे वार्तालाप करसक्ता है ३१ जब उसपराक्रमीने चरणोंसे पृथ्वीपर डालकर खैंचा तब बड़ेपुरुषार्थी और पुरुषोत्तम होकर उसको क्यों नहीं मारा ३२ जब पूर्व्व में अर्ज्जुनने विजय कर लिया उसकेपीछे तुझनीचने उस प्रतापी शूरवीर भूरिश्रवाको मारा ३३ और द्रोणाचार्यजी जहां २ पाण्डवी सेनाको भगातेथे वहां २ मैंभी हजारों बाणोंको फैलाता जाताथा ३४ सो तुम आप चाण्डालकेसमान इसप्रकारके कर्मको करके और कहने के अयोग्य होकर किसकारणसे कठोर वचनों के कहनेको योग्यहो ३५ हे वृष्णियों के कुलमें नीच तुम्हीं इसकर्म के करनेवाले हो और इसपृथ्वीपर पापकर्मोंके उत्पत्तिस्थान होकर फिर कहौ ३६ अथवा मौनरहो अब कभी तुम इस अयोग्य विपरीत बातके कहनेको योग्य नहीं हो ३७ जो फिर कभी अपनी निर्बुद्धितासे ऐसे कठोरवचन मुझसेकहोगे तो मैं बाणों से तुझको यमलोकमें पहुँचाऊंगा ३८ हे मूर्ख केवल धर्महीसे विजयकरना संभव नहीं है अब उन्हों का भी अधर्म से कियाहुआ कर्म जैसे प्रकारहै उसको भी सुनो ३९ हे सात्यकी प्रथम पाण्डव युधिष्ठिरको अधर्म से ठगा और अधर्मही से द्रौपदी को दुःखदिया ४० हे अज्ञानी उसीप्रकार से द्रौपदी समेत सब पाण्डवों को अधर्मसेही बनवासी किया और सम्पूर्ण धनको हरलिया ४१ और दूसरेसे प्रेरणा कियाहुआ मद्रदेश

काराजा शल्य अधर्मसेही अपनी ओर को बुलालिया और बालक अभिमन्यु को भी अधर्मही से मारा ४२ और इस ओरसे भी शत्रुओंके पुरों के विजय करनेवाले भीष्मजी भी अधर्मही से मारेगये और तुझ धर्मज्ञके हाथ से भूरिश्रवा क्षत्रिय भी अधर्म्म करकेही मारागया ४३ हे यादव इसप्रकार विजय की रक्षा करनेवाले धर्मके भी ज्ञाता वीर पाण्डवों से और अन्य २ लोगोंसे भी युद्धमें ऐसे २ कर्म कियेगये ४४ वह उत्तमधर्म्म बड़ी कठिनतासे जानने के योग्यहै और अधर्म भी बड़े कष्टसे जानने के योग्यहै कौरवों के साथ युद्धकरो और पितृलोक में मत जावो ४५ संजय बोले कि इसप्रकार कठोर रूक्ष बचनों को सुनकर श्रीमान् सात्यकी कंपायमानों के समानहुआ ४६ उसके बचनों को सुनकर क्रोध से रक्तनेत्र सात्यकी ने सर्प के समान श्वासलेकर रथपर धनुषधर हाथमें गदाको लिया ४७ और धृष्टद्युम्न के पास जाकर क्रोध से यह वचन बोला कि तुझको कठोर बचन नहीं कहूंगा किन्तु तुझ बधके योग्यको बधही करूंगा ४८ उस बड़े पराक्रमी और अत्यन्त क्रोधयुक्त यमराजके समान नाश करनेवाले अकस्मात् धृष्टद्युम्नके सम्मुख आतेहुये सात्यकी को ४९ बासुदेवजी की आज्ञासे महाबली भीमसेनने शीघ्रही रथ से कूदकर अपनी भुजाओं से रोका ५० बड़ा पराक्रमी पाण्डव भीमसेन उसप्रकार क्रोध में पूर्ण भागतेहुये वेगवान् सात्यकी को बड़े बलसे पकड़कर चला ५१ उस भीमसेनने दोनों चरणोंको पकड़के नियतहोकर उस पराक्रमियों में श्रेष्ठ सात्यकीको बड़े बलसे छठवें चरणपर पकड़ा ५२ हे राजा तब सहदेव शीघ्रही रथसे उतरकर पराक्रमी से पकड़ेहुये सात्यकी से बड़ी मधुर वाणी से यह बचन बोला ५३ कि हे श्रेष्ठ पुरुषोत्तम अंधक वृष्णी और पांचालों से श्रेष्ठ हमारा दूसरा कोई उत्तम मित्र नहीं है ५४ उसीप्रकार अन्धक वृष्णी और मुख्यकर श्रीकृष्णजीका मित्र हमारे सिवाय दूसरा नहीं विद्यमानहै ५५ हे सात्यकी समुद्रके अन्त पर्य्यन्त खोजना करनेसे भी पांचालोंका ऐसा उत्तम दूसरा मित्र नहीं है जैसे कि पाण्डव और वृष्णी हैं ५६ सो आप ऐसे मित्रहैं उसीप्रकार मत्स्यदेशों में आपके इसप्रकार मित्रहैं जैसे कि आप हमारे हैं उसीप्रकार हम आपके हैं ५७ आप सब धर्मों के ज्ञाताहोकर हे सात्यकी तुम मित्रधर्म्म को विचार करके इस धृष्टद्युम्न से क्रोधको दूरकरके शान्त होजावो ५८ तुम इस धृष्टद्युम्नके कहनेको क्षमाकरो और धृष्टद्युम्न तुम्हारे कहने को क्षमा करे और हमभी

क्षमाकरनेवाले हैं जितेन्द्रिय क्षमावान् होनेके सिवाय दूसरी कोईवात उत्तम नहीं होती ५९ हे श्रेष्ठ सहदेव के समझाने से सात्यकी के शान्त होजाने पर राजा पाञ्चालका पुत्र धृष्टद्युम्न यह वचन बोला ६० हे भीमसेन इस युद्धके मदसे संयुक्त इस सात्यकी को छोड़दो यह मुझको ऐसे पावेगा जैसे कि वायु पर्वतको पाता है ६१ जबतक मैं युद्धमें तीक्ष्ण बाणों से इसके क्रोध वा युद्ध को उत्साह औ जीवन को दूर करदूं ६२ फिर मुझको क्या करना योग्यहै जो यह पाण्डवों का बड़ाकर्म्म वर्त्तमान हुआ और यह कौरव आते हैं ६३ इन सबको तो युद्धमें अ- र्ज्जुन रोकेगा और मैं शायकों से इसके मस्तकको गिराऊंगा ६४ यह मुझको युद्धमें टूटे भुजवाला भूरिश्रवा मानताहै इसको छोड़दो कैतो मैं इसको अथवा यह मुझको मारेगा ६५ धृष्टद्युम्न के वचनोंको सुनता और सर्प्पके समान श्वास लेता भीमसेनकी भुजाओंके मध्यमें लगाहुआ पराक्रमी सात्यकी वारम्वार नि- कलनेकी चेष्टा करताथा ६६ वह दोनों बलवान् महापराक्रमी भुजाओंसे शोभा- यमान होकर बैलोंके समान गर्जनेवाले हुये हे श्रेष्ठ फिर वासुदेवजी और धर्म्म- राजने शीघ्रतासे ६७ बड़े उपाय पूर्वक दोनों वीरोंको थांभा हे क्षत्रियर्षभ फि उन क्रोधसे रक्तनेत्रवाले बड़े धनुषधारियोंको रोककर युद्धमें दूसरे युद्धाभिलाषी शूरवीरोंके सम्मुख गये ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिनवनवतितमोऽध्याय १९९ ॥

दोसौका अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि फिर द्रोणनन्दन अश्वत्थामाने ऐसे शत्रुओंका नाश किय जैसे कि प्रलयकालमें काल पुरुषसे संयुक्त मृत्यु जीवोंका नाशकरती है १ उस भल्लोंसे शत्रुओं के मनुष्यों को मारकर शरीरों का ऐसा पर्व्वत लगादिया ज ध्वजा वृक्ष शस्त्र शिखर और मरेहुये हाथीही पाषाणरूप घोड़े रूप किंपुरुषों पूर्ण धनुषरूपी लतामे संयुक्त मांसभक्षी राक्षस और पक्षियोंसे शब्दायमान भूत और यक्षोंके समूहों से व्याकुलथा २ । ३ तदनन्तर उस नरोत्तम अश्वत्थामा ने बड़े वेगसे गर्जकर अपनी प्रतिज्ञा को फिर आपके पुत्रोंको सुनाया ४ कि जो धर्म्मरूप कवचमें नियत कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरने युद्ध करनेवाले आचार्यसे कहा था कि शस्त्रोंको त्यागदो ५ इसके प्रतीकारमें उस युधिष्ठिरके देखतेहुये उसकी

सेनाको भगाऊंगा और सबको भगाकर उस मूर्ख धृष्टद्युम्नको मारूंगा ६ यह मैं तुमसे सत्य प्रतिज्ञा करताहूं कि जो मुझसे युद्ध करेंगे मैं उनको युद्धमें मारूंगा अब तुम अपनी सेनाको लौटावो ७ फिर आपके पुत्रने उस वचनको सुनकर बड़े भय को त्यागकर बड़े सिंहनादों समेत सेना को लौटाया ८ हे राजा फिर कौरवीय और पाण्डवीय सेनाकी ऐसी बड़ी कठिन चढ़ाईहुई जैसे कि दो पूर्ण सागरोंकी होती है ९ क्रोधयुक्त कौरवलोग अश्वत्थामाके साथ नियतरूपथे और द्रोणाचार्य्य के मारने से कौरव और पाञ्चाल बड़े उत्साहयुक्त उदग्ररूप थे १० हे राजा उन अत्यन्त प्रसन्नचित्त अपने विषय में बिजय देखनेवाले क्रोध से पूर्ण लोगोंका महाबेग उत्पन्न हुआ ११ जैसे कि पहाड़ पहाड़ से और सागर सागर से टक्कर खाते हैं वैसेही कौरव और पाण्डवहुये १२ तदनन्तर कौरव और पांडवों के अत्यन्त प्रसन्न सेनाके लोगों ने हजारों शङ्ख और भेरियों को बजाया १३ जैसे कि मथेहुये समुद्रका शब्द होताहै उसीप्रकार आपकी सेनाका बड़ा शब्द अपूर्व हुआ १४ इसके पीछे अश्वत्थामा ने पाण्डव और पाञ्चालों की सेनाको लक्ष्य बनाकर नारायणास्त्रको प्रकट किया १५ इसके पीछे आकाशमें प्रकाशित नोक मुखवाले सर्पोंके समान हजारों बाण पाण्डवोंको चलायमान करते प्रकट हुये १६ हे राजा उन्हों ने एक मुहूर्त्त के मध्य में दिशा आकाश और सेनाको ऐसे ढकदिया जैसे कि लोकभर को सूर्य्य की किरणें व्याप्त करलेती हैं १७ हे महाराज इसी प्रकार निर्म्मल आकाश के मध्य में दूसरी प्रकाशित ज्योतियां प्रकटहुईं और काष्णनाम लोहेके गुड़क अथवा चारचक्र और दोचक्र रखनेवाली शक्ति बहुतसीगदा आरोंपर छुरे रखनेवाले प्रकाशित मण्डलवाले चक्र १८। १९ और शस्त्ररूप अस्त्रोंसे अत्यन्त व्याप्त अन्तरिक्षको देखकर पांडव सृञ्जी और सब पांचाललोग व्याकुलहुये २० हे राजा जैसे २ कि पांडवों के महारथी युद्धकरने वालेहुये उसी उसीप्रकार वह अस्त्र अधिक वृद्धियुक्त हुआ २१ तब युद्ध में उस नारायणास्त्र से घायल वह महारथी अग्निसे भस्महोने के समान सब ओर से पीड़ावान्हुये २२ हे प्रभु जिसप्रकार शिशिरऋतु के अन्तमें सूखेवनको अग्नि भस्म करताहै उसीप्रकार उस अस्त्रने पांडवों की सेनाको भस्म करदिया २३ हे प्रभु अस्त्रके तेजसे पूर्ण सेनाके नाशवान् होनेपर धर्मके पुत्र युधिष्ठिरने बड़ेभय को पाया २४ उस सेनाको भगाहुआ अचेततासेयुक्त और अर्जुनकी दोनोंओर

की स्थितिको देखकर धर्मपुत्र यह वचनबोला २५ कि हे धृष्टद्युम्न पांचालदेशी सेनासमेत भागो और हे सात्यकी तुमभी वृष्णी और अन्धकवंशी क्षत्रियों से युक्त जाओ २६ धर्म्मात्मा वासुदेवजी भी अपने योग्य कर्म्म को करेंगे यह सब लोकों के कल्याणको करते हैं अपने कल्याणको कैसे नहीं करेंगे २७ मैं तुम सब सेनाके लोगोंसे कहताहूं युद्ध न करना चाहिये और मैं अपने सगेभाइयोंसमेत अग्निमें प्रवेशकरूंगा २८ मैं भयभीतोंसे कठिनता पूर्वक पारहोने के योग्य युद्ध में भीष्म और द्रोणाचार्य्यरूपी समुद्रको तरकर अपने सब समूहों समेत अश्व-त्थामारूपी गोपद जलमेंडूबूंगा २९ अब राजादुर्य्योधन की अभिलाषा प्राप्तहोय मेरेही कारणसे कल्याणवृत्तीवाले आचार्यजी युद्धमें गिरायेगये ३० और जिस कारणसे युद्धोंमें अनभिज्ञ वह बालक अभिमन्यु उन समर्थ और निर्दयी बहुत से महारथियों के हाथसे मारागया और रक्षित नहीं हुआ ३१ और जिसहेतुसे प्रार्थना करतीहुई वितापयुक्त द्रौपदी सभामें गई और दासभाव को प्राप्तहोकर पुत्रसमेत धृतराष्ट्र ने जिसको त्यागकिया ३२ और जिसके कारणसे उसप्रकार कवच से रक्षित दुर्य्योधन घोड़ों के थकजानेपर जयद्रथकी रक्षाके निमित्त अर्जुन को मारनेका अभिलाषीहुआ ३३ अब मेरी विजयमें उपाय करनेवाले सतजित आदिक पांचाल जिस ब्रह्मअस्त्र जाननेवाले के हाथसे मूलसमेत गिरायेगये ३४ अधर्म से राज्यहीन हमलोगों को जिस द्रोणाचार्यने रोका परन्तु उसके वचनके अभिलाषी हमलोग उसके आज्ञावर्त्ती नहींहुये ३५ जो वह हमपर अत्यन्त प्री-ति करनेवाला मारागया मैं भी बांधवों समेत उसके निमित्त मरणको पाऊंगा ३६ इसप्रकार युधिष्ठिर के कहनेपर श्रीकृष्णजी शीघ्रही अपनी भुजाओं से सेनाको रोककर यह वचनबोले ३७ कि शीघ्रही शस्त्रोंको त्यागकर सवारियोंसे उतरपड़ो महात्माकी ओरसे इस अस्त्र के रोकने में यहलोक रचागयाहै ३८ तुम सबहाथी घोड़ और रथों से शीघ्र उतरपड़ो इसप्रकार से इस पृथ्वीपर शस्त्र त्यागनेवाले तुम लोगोंको यह अस्त्र नहीं मारेगा ३९ जिस २ प्रकारसे शूरवीर इस अस्त्र के सम्मुख युद्धकरते हैं उसी उसीप्रकार से यह कौरव अधिकतर बलिष्ट होतेजाते हैं ४० जो पुरुष सवारियों से उतरकर शस्त्रोंको रखदेंगे उन मनुष्यों को युद्धमें यह शस्त्र नहीं मारेगा ४१ और जो कोई चित्तसे भी इस अस्त्र के सम्मुख लड़ने की इच्छा करेंगे उन सबको यह अस्त्र मारकर रसातल को भेजेगा ४२ हे भरतवंशी

वह सबलोग वासुदेवजी के उन वचनों को सुनकर देह और मनके द्वारा शस्त्रों के त्यागने में उत्सुकहुये ४३ इसके अनन्तर पाण्डव भीमसेन उन सबवीरों को अस्त्रों के त्यागने में इच्छावान् देखकर प्रसन्न करताहुआ यह वचन बोला ४४ कि यहां किसी दशामें भी किसी को अस्त्रों का त्यागना योग्य नहीं है मैं बाणों से अश्वत्थामा के अस्त्रको रोकूंगा ४५ अथवा अपनी इस सुवर्ण जटित भारी गदा से अश्वत्थामा के अस्त्रको तोड़ताहुआ कालके समान प्रहार करूंगा ४६ यहां मेरे पराक्रम के समान कोई पुरुष इसप्रकार से नहीं है जैसे कि सूर्य्य के समान दूसरीज्योति वर्त्तमान नहीं है ४७ गजराजकी सूंड़ के समान और शैशिरनाम पर्व्वतके गिराने में समर्थ मेरीभुजाओंको देखो ४८ मैं अकेलाही इस लोकमें दशहजार हाथी के समान ऐसा बलवान्हूं जैसे कि स्वर्ग में देवताओं के मध्यमें अपनी समानता न रखनेवाला इन्द्र विख्यातहै ४९ अब युद्धमें अश्वत्थामाके प्रकाशित और अग्निरूप ज्वलित अस्त्रके हटानेमें मोटे स्कन्ध रखनेवाली मेरी भुजाओं के बल पराक्रमको देखो ५० जो नारायणास्त्रके सम्मुख युद्ध करनेवाला कोई वर्त्तमान नहीं है तो अब पांडव और कौरवों के देखतेहुये इस अस्त्रके सम्मुख मैंही युद्धकरूंगा ५१ हे अर्जुन तेरे हाथसे गांडीव धनुषका त्याग करना नहीं उचित है यह अयशरूपी कीच तुम चन्द्रमाके समान रूपवाले की निर्मलता को बिगाड़ेगी ५२ अर्जुन बोले हे भीमसेन नारायणअस्त्र और गौ ब्राह्मणों में गांडीवधनुष मुझसे त्यागकरने केही योग्य है यही मेरा उत्तमव्रत है ५३ इसवचन को सुनकर भीमसेन बादलके समान शब्दायमान और सूर्य्य के समान प्रकाशित रथकीसवारी से उस शत्रुविजयी अश्वत्थामाके सम्मुखगया ५४ और शीघ्रपराक्रम करनेवाले भीमसेनने इसको पाकर हस्तलाघवता से पलमात्र मेंही बाणों के जालसे ढकदिया ५५ तब अश्वत्थामाने हँसकर और कहकर उस प्रकाशितनोक और मंत्र पढ़ेहुये बाणों से इस सम्मुख दौड़नेवाले भीमसेन को भी आच्छादित करदिया ५६ वह भीमसेन युद्धमें अग्नि को उल्लंघनेवाले प्रकाशितमुख सर्पों के समान बाणोंसे ऐसा ढकगया जैसे कि स्फुलिंगों से सुवर्ण ढक जाताहै ५७ हे राजा उस भीमसेनका रूप ऐसे प्रकारका हुआ जैसे कि रात्रि के समय पटबीजनों से संयुक्त पहाड़कारूप होजाताहै ५८ हे महाराज उसकेऊपर चलाने में वह अश्वत्थामाका अस्त्र ऐसाबढ़ा जैसे कि वायुसे उठायाहुआ अग्नि

होताहै ५९ उस भयानक पराक्रमवाले भयके बढ़ानेवाले अस्त्रको देखकर एक भीमसेनके सिवाय सब पांडवी सेनामें महाभय उत्पन्न हुआ ६० इसके पीछे वह सबलोग शस्त्रोंको पृथ्वीपर छोड़कर रथ हाथी घोड़ेआदि सब सवारियों से उतर पड़े ६१ उन सब के शस्त्र त्यागने और सवारियों से उतरजाने पर उस अस्त्र का बड़ा वेग भीमसेन के मस्तकपर गिरा ६२ सब जीवमात्रों ने और विशेष करके पांडवों ने हाहाकार किया और भीमसेनको उसीप्रकार तेजसे ढकाहुआ देखा ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विशततमोऽध्यायः २०० ॥

दोसौएकका अध्याय ॥

संजयबोले कि अर्जुनने अस्त्रसे ढकेहुये भीमसेनको देखकर तेजके नाशके लिये बारुणास्त्रसे आच्छादित करदिया १ फिर अर्जुनके हस्तलाघव और अस्त्र के तेजके व्याप्तहोनेसे किसीने भी बारुणास्त्र से युक्त भीमसेनको नहीं देखा २ घोड़े रथ और सारथीसमेत भीमसेन अश्वत्थामाके हाथसे ढकाहुआ होकर ज्वालाओंकी माला रखनेवाला बड़ी कठिनतासे देखने के योग्य अग्नि के मध्य में रक्खीहुई अग्निके समान दिखाई पड़ा ३ हे राजा जैसे कि रात्रि के अन्तहोनेपर नक्षत्रादिक अस्ताचल पर प्राप्तहोते हैं उसी प्रकार भीमसेन के रथपर बाणों के समूह गिरे ४ हे श्रेष्ठ वह भीमसेन और उसके घोड़े और सारथी समेत रथ अश्वत्थामाके अस्त्रसे ढकाहुआ अग्निके मध्यमें वर्त्तमान हुआ ५ जैसे कि प्रलय कालमें सब स्थावर जंगम जीवों समेत सब जगत् को अग्निदेवता भस्मकरके ईश्वरके मुखमें प्राप्त होते हैं उसीप्रकारसे अस्त्रनेभी अनेकों को मारकर भीमसेन को ढकदिया ६ जैसे कि अग्नि सूर्य्य में और सूर्य्य अग्निमें प्रवेशकरे उसीप्रकार वह तेजभी प्रवेशकरगया और वह पांडव नहींजानागया ७ उसप्रकारसे भीमसेन के रथपर फैलेहुये उस अस्त्रको देखकर और युद्ध में अपनी समान किसीको न देखनेवाले चेष्टाकरनेवाले अश्वत्थामाको देखकर ८ और उन युधिष्ठिरादिक महारथियोंको विमुख हुये देखकर शस्त्रोंको त्यागनेवाली सब पांडवीसेना अचेतरूप होगई ९ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले बड़े तेजस्वी वीर अर्जुन और वासुदेवजी रथसे कूदकर भीमसेनकीओर दौड़े १० तदनन्तर वह दोनों बड़े पराक्रमी अश्व-

त्थामा के अस्त्रबलसे उत्पन्न होनेवाले तेजको मँझाकर उसीप्रकार मायामें प्रवेश करगये ११ तब बारुणास्त्रके प्रयोग और दोनों कृष्णों के बल पराक्रम द्वारा उस अस्त्रसे उत्पन्न होनेवाली अग्निने उन शस्त्रके त्यागनेवाले श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनको भस्म नहीं किया १२ इसके पीछे उन दोनों नर नारायण ने अस्त्रकी शान्ती के अर्थ बलसे भीमसेनको खेंचा और सब शस्त्रादिकों को पृथक् करदिया १३ उस समय वह खेंचाहुआ भीमसेन बड़ेशब्दसे गर्जताथा और उसकी गर्जना से अश्वत्थामाका वह घोर और कठिनतासे बिजय होनेवाला अस्त्र और भी वृद्धिको पाताथा १४ तब बासुदेवजी उससे बोले कि हे पांडुनन्दन यह क्या बात है जो निषेध कियाहुआ भी युद्धसे नहीं लौटताहै १५ जो यह कौरवनन्दन युद्ध से बिजयहोजाय तो हम और यह सब राजालोग भी युद्धको करें १६ हम सब तुम्हारे पक्षवाले रथोंसे उतरे हैं हे भीमसेन इस हेतुसे तुमभी शीघ्र रथसे उतरो १७ ऐसा कहकर श्रीकृष्णजी ने उस क्रोधसे रक्त नेत्र सर्प के समान श्वास लेनेवाले भीमसेन को रथसे पृथ्वीपर खड़ाकिया १८ जब वह रथसे पृथक् किया और शस्त्र पृथ्वीपर रखवादिये उसी समय वह शत्रुओं का तपानेवाला नारायणास्त्र अत्यंत शान्त होगया १९ संजय बोले कि इस रीतिसे उस कठिनतासे सहने के योग्य तेजके अत्यन्त शान्त होजाने पर सबदिशा और विदिशा शुद्ध होगईं २० आनन्दरूपी वायु चलीं पशु पक्षी आदिक जीव शान्तरूपहुये और सब सवारियां भी प्रसन्नहुईं २१ हे भरतवंशी इसकेपीछे उस घोर तेजके शान्तहोने पर वह बुद्धिमान् भीमसेन ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि प्रातःकाल के समय उदयहुआ सूर्य्य होताहै २२ फिर मरने से शेष बचीहुई पाण्डवों की सेना अस्त्रकी शान्तीसे प्रसन्न आपके पुत्रके मारने की इच्छासे नियत हुई २३ हे महाराज उस सेनाके नियत होने और उसप्रकार अस्त्रके निष्फल होनेपर दुर्योधन अश्वत्थामाजी से बोला २४ कि हे अश्वत्थामा अब फिर आप उस अस्त्रको शीघ्र चलाओ क्योंकि विजय के अभिलाषी यह पांचाल फिर सम्मुख आकर नियतहुये २५ हे धृतराष्ट्र आपके पुत्रके वचनको सुनकर अश्वत्थामाजी वड़े दुःखी के समान श्वास लेकर उस राजासे यह वचन बोले २६ हे राजा यह अस्त्र दुबारा नहीं प्रकट होताहै न प्राप्त होताहै और बारम्बार चलाहुआ चलानेवालेही पर निस्संदेह लौटकर आताहै २७ इस अस्त्रका निष्फल करना बासुदेवजी ने प्रकट करदिया हे राजा अब अन्य

दशामें शत्रुका मारना नियत किया जायगा २८ विजय होय अथवा मृत्युहोय इन दोनों में से विजयकी अपेक्षा मृत्यु काही होना श्रेष्ठ है यह मृतकों के समान शत्रु शस्त्रों के त्याग करने से विजय कियेगये २९ दुर्य्योधन बोले हे अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ गुरूजीकेपुत्र जो यह अस्त्र दुबारा नहीं चलताहै तो दूसरे और किसी अस्त्र सेही गुरुके मारनेवालों को मारो ३० आपकेपास ऐसे दिव्य अस्त्र हैं जैसे कि बड़े तेजस्वी शिवजी के पास हैं अत्यन्त क्रोधयुक्त इन्द्रभी तुझ अभिलाषी के हाथसे नहीं बचसक्ताहै ३१ धृतराष्ट्र बोले कि उपाधिसे द्रोणाचार्य्य के मरने और उस अस्त्रके निष्फल होनेपर दुर्योधन से उसप्रकार कहेहुये अश्वत्थामा ने फिर कौनसा कामकिया ३२ नारायणास्त्र से छूटे सेनामुख पर घूमनेवाले और युद्धके निमित्त सम्मुख नियत पांडवों को युद्धमें देखकर क्याकिया ३३ संजय बोले कि वह सिंहलांगूल ध्वजाधारी पिताके मरणको जानता क्रोधसेयुक्त निर्भय होकर धृष्टद्युम्न के सम्मुखगया ३४ हे नरोत्तम उस पुरुषोत्तमने सम्मुख जाकर क्षुद्रकनाम बीस बाणों से और फिर बड़े वेगवाले पांच बाणों से घायल किया ३५ हे राजा इसकेपीछे धृष्टद्युम्नने अग्नि के समान ज्वलितरूप अश्वत्थामाको तिरसठ बाणों से घायलकिया ३६ और सुनहरीपुंख तीक्ष्णधारवाले बीसबाणों से उसके सारथी को और तेजधार चारबाणों से चारों घोड़ोंको ३७ छेद छेदकर पृथ्वीको कंपाय मान करता अश्वत्थामाके ऊपर ऐसागर्जा मानों उस बड़ेयुद्धमें सबलोकके प्राणों को हरणकरलेगा ३८ हे राजा फिर अस्त्रज्ञ और निश्चयकरनेवाला धृष्टद्युम्न मृत्युको निवृत्त करके अश्वत्थामा के सम्मुख दौड़ा ३९ तिसकेपीछे रथियोंमें श्रेष्ठ बड़े साहसी धृष्टद्युम्नने अश्वत्थामाके शिरपर बाणोंकी बर्षाकरी ४० तबतो पिताके मरण को यादकरतेहुये अश्वत्थामाने युद्धमें उसक्रोधयुक्तको बाणोंसे ढककर दशबाणों से उसको भी छेदा ४१ अश्वत्थामाने अच्छीरीतिसे छोड़ेहुये क्षुरनाम दो बाणों से उसकी ध्वजा धनुषको काटकर अन्यबाणोंसे धृष्टद्युम्नको पीड़ावान् करके ४२ युद्धमें उसको घोड़े सारथी और रथसे रहित भी करदिया और फिर क्रोधपूर्व्वक बाणोंके प्रहारोंसे उसके सब पीछे चलनेवालोंको घायलकिया ४३ हे राजा इस केपीछे पांचालों की वह सेना भागी और भ्रान्ती से युक्तरूप महापीड़ावानों ने परस्पर देखा ४४ फिर सात्यकीने शूरवीरोंको विमुख और धृष्टद्युम्नको पीड़ावान् देखकर शीघ्रही अपने रथको अश्वत्थामा के रथपर चलामान किया ४५ और

क्रोधयुक्त ने तीक्ष्णधारवाले आठ बाणोंसे अश्वत्थामा को पीड़ावान् किया फिर नानाप्रकार के रूपवाले बीस बाणोंसे घायल करके ४६ उसको और उसके सारथीको घायलकिया और चारबाणोंसे घोड़ोंको छेदा सात्यकीके नानाप्रकार के बाणों से अत्यन्त घायल बड़ा धनुषधारी ४७ वह अश्वत्थामा हँसताहुआ इस वचनको बोला हे सात्यकी इसगुरुके मारनेवाले में तेरीभी संयुक्तता जानीजाती है ४८ अब तू मुझसे उस ऐसेहुये को और अपनेको रक्षित नहीं करसकेगा हे सात्यकी मैं अपने सत्य और तपकी शपथ खाताहूं ४९ कि जबतक मैं पाण्डवों के और वृष्णियों के बल पराक्रमरूप सबपांचालोंको न मारलूंगा तबतक शांती को नहीं पाऊंगा ५० उनसबको यहां इकट्ठे करो मैं सोमकों को मारूंगा अश्वत्थामाने ऐसाकहकर सूर्यकी किरणरूप अत्यन्त तीक्ष्ण और उत्तम उसबाणको ५१ यादवके ऊपर ऐसे छोड़ा जैसे कि हरिने वृत्रासुरके ऊपर वज्रको छोड़ा था उसका चलायाहुआ वह शायक उसको कवच समेत छेदके ५२ पृथ्वीको चीरकर ऐसे प्रवेश करगया जैसे कि श्वास लेताहुआ सर्प बिलमें प्रवेशकरताहै वह टूटे कवचवाला शूर अंकुशसे पीड़ितहुये हाथीके समान ५३ घावसे बहुत रुधिर को डालनेवाला धनुष बाणको छोड़कर रुधिरमें लिप्त घायलहोकर रथकी उपस्थ पर बैठगया ५४ और सारथीके द्वारा अश्वत्थामाके सम्मुखसे शीघ्रही दूसरे रथपर पहुँचायागया फिर शत्रुसंतापी अश्वत्थामाने सुन्दर पुंख और टेढ़ेपर्ववाले दूसरे बाणसे ५५ धृष्टद्युम्न को भृकुटी के मध्यमें घायलकिया प्रथम अत्यन्त घायल और पीछे अत्यन्त घायल और पीड़ावान् ५६ उस धृष्टद्युम्न ने निश्चलताको पाकर ध्वजाका सहारालिया हे राजा जैसे कि सिंहसे पीड़ावान् हाथी होताहै उसी प्रकार बाणसे पीड़ावान् उस धृष्टद्युम्नको देखकर ५७ पाण्डवोंकी ओरसे यहपांच शूरवीर रथी बड़े वेग से उसके सम्मुख दौड़े अर्जुन, भीमसेन, पौरववृद्धक्षत्र, चँदेरीदेशियोंका युवराज,और मालवसुदर्शन,इन हाहाकार करनेवाले सबधनुषधारी वीरों ने ५८।५९ वीर अश्वत्थामाको सब ओरसे घेरलिया बीस पदोंपर उन सावधान वीरों ने उस क्रोधयुक्त गुरुपुत्र को सबओरसे एकसाथही घायलकिया अश्वत्थामाने विषैले सर्प के रूप तेजधार पच्चीस बाणों से ६०।६१ एकही बाणमें पच्चीस शायकों को काटा और फिर सात्ततीक्ष्ण बाणों से पुरुरवाको पीड़ावान् किया ६२ तीन बाणसे मालवको एक बाणसे अर्जुनको और छःबाणों से भी-

मसेन को घायल किया हे राजा उसके पीछे उनसब महारथियों,ने सुनहरीपुंख तेजधार वाणों से एक समयपर और पृथक् २ भी छेदा युवराज ने बीसवाणों से ६३ । ६४ अर्जुन ने आठ वाणोंसे और बाकी सबोंने तीन २ वाणों से अश्वत्थामा को व्यथित किया फिर अश्वत्थामा ने छःवाणों से अर्जुनको दशवाणसे वासुदेव जीको पांचसे भीमसेन को चारसे युवराजको और दोदो वाणों से मालव और पुरूरवा को घायल किया ६५ अश्वत्थामा ने छः वाणों से भीमसेन के सारथी को दो वाणों से धनुष और ध्वजाको छेदकर अर्ज्जुनको पांच बाणों से घायल करके घोरसिंहनादसे गर्ज्जनाकरी ६६ आगे पीछे से अश्वत्थामा के चलायेहुये उन तेज विषभरे घोरवाणों से पृथ्वी आकाश स्वर्ग दिशा और विदिशा ढक गईं ६७ बड़े तेजस्वी इन्द्रके समान पराक्रमी अश्वत्थामाने अपने रथपर बैठेहुये सुदर्शनकी उन दोनोंभुजाओंको जोकि इन्द्रकी ध्वजाके समानथीं और शिरको तीन वाणोंसे एकही समयमें काटा ६८ और पौरवको रथशक्ति से घायलकरके उसके रथको वाणोंसे तिलतिल के समान काट श्रेष्ठ चंदनसे लिप्त भुजाओं को काटकर भल्लके द्वारा उसके शिरको भी शरीर से जुदाकिया ६९ फिर शीघ्रता करनेवाले ने हटकर कमल मालाके वर्ण चँदेरीदेश के स्वामी तरुण युवराजको अत्यन्त अग्निरूप प्रज्वलित वाणों से घोड़े सारथी समेत छेदकर मृत्यु के वशीभूत किया ७० नेत्रोंके सम्मुख अश्वत्थामाके हाथसे मारेहुये मालवपौरव और चन्देरीके राजा युवराजको देखकर ७१ महाबाहु पाण्डव भीमसेन ने बड़ा क्रोधकिया और शत्रुसंतापी ने बड़ेक्रोधमें भरकर विषधर सर्प के समान सैकड़ों तीक्ष्ण वाणोंसे ७२ युद्धमें अश्वत्थामा को आच्छादित करदिया फिर बड़े तेजस्वी क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने उस वाणवृष्टि को काटकर ७३ तेजधार वाणों से भीमसेनको घायल किया उसके पीछे महाबाहु महाबली भीमसेनने अश्वत्थामा के ७४ धनुष को क्षुरप्रसे काटकर उसकोभी वाणों से घायल किया फिर बड़े साहसी अश्वत्थामाने उस टूटे धनुषको डालकर ७५ दूसरे धनुषको लेकर वाणों से भीमसेन को व्यथित किया युद्धमें पराक्रम करनेवाले उन दोनों भीमसेन और अश्वत्थामाने ७६ वर्षाकरनेवाले दो बादलोंके समान वाणोंकी वर्षाको बरसाया भीमसेन के नामसे चिह्नित सुनहरीपुंख तेजधार वाणों ने ७७ अश्वत्थामा को ऐसे ढकदिया जैसे कि बादलों के समूह सूर्य्यको ढकदेते हैं और उसीप्रकार वह

भीमसेनभी अश्वत्थामाके छोड़ेहुये टेढ़े पर्व्ववाले हजारों बाणों से शीघ्र ढकगया युद्धमें शोभा पानेवाले अश्वत्थामा से युद्धमें ढकाहुआ ७८ । ७६ भीमसेन पीड़ावान् नहीं हुआ हे महाराज वह आश्चर्य्यसा हुआ फिर महाबाहु भीमसेनने सुवर्ण से अलंकृत ८० यमराजके दण्डकी समान तीक्ष्ण दशनाराचों को छोड़ा हे राजा वह बाण अश्वत्थामा के शत्रुस्थान को ८१ घायलकरके पृथ्वी में ऐसे प्रवेश करगये जैसे बामी में सर्प्प घुसजाते हैं महात्मा पाण्डवके हाथसे अत्यन्त घायल उन अश्वत्थामाजी ने ८२ ध्वजाकी लाठी को पकड़कर दोनों नेत्रों को बन्दकर लिया हे राजा फिर वह अश्वत्थामा एक मुहूर्त्त में सचेत होकर ८३ युद्ध में रुधिरसे लिप्त बड़े क्रोधमें नियतहुये उस महात्मा पाण्डव से अत्यन्त घायल ८४ उस महाबाहुने भीमसेनके रथपर वेगकिया फिर कानतक खैंचेहुये बड़े प्रकाशित ८५ विषैले सर्प्प के रूप सौबाण उसके ऊपर फेंके फिर युद्धमें प्रशंसनीय उसके पराक्रम को साधारण माननेवाले पाण्डव भीमसेनने भी ८६ शीघ्र उग्र बाणोंकी बर्षाकरी इसके पीछे क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने विशिखनाम बाणोंसे उस के धनुषको काटकर ८७ तेजधार बाणों से पाण्डवको छातीपर घायल किया फिर क्रोधयुक्त भीमसेनने धनुष को लेकर ८८ युद्धमें तेजधार पांच बाणों से अश्वत्थामाको घायलकिया वर्षाऋतुमें बादलों के समान बाणवृष्टियों के बरसानेवाले ८६ क्रोधसे रक्तनेत्र उनदोनोंने युद्धमें परस्पर ढकदिया फिर तालों के घोरशब्दों से परस्पर डरानेवाले ६० अत्यन्त क्रोधयुक्तकर्मपर कर्मकरनेकी इच्छासे युद्धकरने लगे अश्वत्थामाने सुवर्ण जटित बड़े धनुषको चलायमान करके ६१ सम्मुख से बाण चलानेवाले भीमसेनको ऐसे देखा जैसेकि शरदऋतुमें मध्याह्नकेसमय प्रकाशित किरणोंके स्वामी सूर्य्यहोते हैं ६२ विशिखोंके लेनेवाले बाणोंके चढ़ानेवाले और खैंचकर छोड़नेवाले अश्वत्थामाका अंतर मनुष्योंने नहींदेखा ६३ हे महाराज तबबाणोंके छोड़नेवाले उन अश्वत्थामाजीका धनुषमंडल आलातचक्रके स्वरूपहोगया उसके धनुषसे गिरेहुये सैकड़ों हजारोंबाण आकाशमें ऐसेदिखाई पड़े जैसे कि टीड़ियों के समूह दिखाई देते हैं ६४ । ६५ फिर अश्वत्थामाके छोड़े हुये सुवर्ण से अलंकृत वह घोरबाण लगातार भीमसेनके रथपर फैले ६६ हे भरतवंशी वहां हमने भीमसेनके बड़े अद्भुत पराक्रम बल सामर्थ्य प्रभाव और निश्चयको देखा ६७ जैसे कि वर्षाऋतुमें बड़ीघोर वृष्टीहोती है उसीप्रकार चारोंओर

से बुद्धिमान अश्वत्थामाकी प्रकटकीहुई उस बाणवृष्टिको ध्यान न करते उस ९८ भयानक पराक्रमी अश्वत्थामाके मारनेको इच्छाकरते भीमसेनने बाणोंकी ऐसी वर्षाकरी जैसे कि वर्षाऋतुमें बादल करताहै ९९ बड़े युद्धमें भीमसेन का सुवर्ण पृष्ठी खैंचाहुआ धनुष द्वितीय इन्द्रधनुष के समान शोभायमान हुआ १०० उस धनुषसे युद्धमें सैकड़ों हजारोंबाण उस युद्ध के शोभादेनेवाले अश्वत्थामा को ढकते प्रकटहुये १०१ हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र इसप्रकार बाणजालों को उन दोनों के छोड़तेमें मध्यकी वायुभी समीपजाने को समर्थ नहींहुई १०२ हे महाराज जिस प्रकार अश्वत्थामा ने भीमसेन के मारनेकी इच्छासे सुवर्ण से अलंकृत तेलमले साफनोकवाले बाणों को चलाया १०३ उसीप्रकार अश्वत्थामाको मारना चाहते भीमसेनने भी उनबाणोंके विशिखोंसे अन्तरिक्षमें तीन २ खण्डकरदिये १०४ फिर बलवान् क्रोधयुक्त पांडव भीमसेनने अश्वत्थामाके मारने की इच्छासे घोर और उग्रबाणों को बरसाया १०५ इसके पीछे महाअस्त्रज्ञ अश्वत्थामाने उस बाणवृष्टि को अपनी अस्त्रमायासे रोककर शीघ्रही भीमसेन के धनुषको काटा १०६ और क्रोधभरे नेत्र बहुतसे बाणोंसे उसको भी छेदा उस टूटेधनुषवाले पराक्रमी भीम- सेनने बड़ी भयानक रथशक्तीको १०७ वेगसे घुमाकर अश्वत्थामाके रथपरफेंका युद्धमें हस्तलाघवताको दिखलाते अश्वत्थामाने उस बड़ी उल्कारूप अकस्मात आनीहुई रथशक्ती को तेजबाणोंसे काटा इसीअन्तरमें मन्दमुसकान करते भीम- सेनने दृढ़धनुषको लेकर १०८ । १०९ विशिखों से अश्वत्थामाको घायलकिया हे महाराज फिर उस अश्वत्थामाने भीमसेनके सारथीको ११० टेढ़ेपर्ववाले बाण से ललाटपर घायलकिया हे राजा फिर बलवान् अश्वत्थामा के हाथसे अत्यन्त घायल उससारथीने १११ घोड़ोंकी बागडोरोंको छोड़कर बड़ी अचेतनाको पाया फिर रथ सारथी के अचेत होनेपर घोड़ेभागे ११२ हे राजेन्द्र सब धनुषधारियों के देखते भीमसेन के घोड़ेभागे भागहुये घोड़ों के कारणसे युद्धभूमि से हटायेहुये उस भीमसेनको देखकर ११३ अत्यन्त प्रसन्नचित्त अजेय अश्वत्थामाने बड़ेशंख को बजाया फिर सब पांचाल और पांडव भीमसेन ११४ भयसे पूर्ण धृष्टद्युम्न के रथको छोड़कर दिशाओंको भागे तब अश्वत्थामाजी उन छिन्नभिन्नों को पीछे की ओरसे बाणोंकरके [illegible] वेगसे पांडवीसेना को चलायमान करते स- म्मुख वर्त्तमानहुये ११५ हे राजा युद्ध में अश्वत्थामा के हाथ से घायलहुये उन

राज़ाओं ने उस द्रोणपुत्र के भय से सब दिशाओं को सेवन किया ११६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विशतोपरिएकतमोऽध्यायः २०१ ॥

दोसौदोका अध्याय ॥

संजय बोले कि उस इधर उधर होनेवाली सेनाको देखकर कुन्ती के पुत्र बड़े साहसी अर्ज्जुनने अश्वत्थामा के विजय करनेकी इच्छासे सेनाको रोका १ तब गोविंदजी और अर्ज्जुन के बड़ेउपायसे नियत कियेहुये वह सेनाके लोग वहां नियत नहींहुये २ अकेला अर्जुनही सोमक मत्स्य देशीय और अन्य वीरोंसमेत कौरवों के सम्मुख वर्त्तमान हुआ ३ फिर बड़ा धनुषधारी अर्ज्जुन शीघ्र दौड़कर सिंहलांगूल ध्वजाधारी अश्वत्थामासे बोला ४ कि हे अश्वत्थामा आप अपनी बुद्धि सामर्थ्य बल वीरता और धृतराष्ट्रके पुत्रों में जो प्रीतिपूर्व्वक हमारे साथमें जो शत्रुता है ५ और जो आपमें तेजहै उस सबको मुझपर दिखलावो और द्रोणाचार्य्यका मारनेवाला वह धृष्टद्युम्नही आपके अभिमानको दूरकरेगा ६ कालाग्नि के समान प्रसिद्ध शत्रुओं की मृत्युरूप धृष्टद्युम्न के और केशवजी समेत मेरे भी सम्मुखहो ७।८ अब युद्धमें तुझ दुर्वृत्तके अहंकारको नाशकरूंगा धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय आचार्य्यका पुत्र पराक्रमी प्रतिष्ठाके योग्यहै उसकी प्रीति अर्जुन के साथहै और वह महात्मा-अर्जुन का प्यारा है प्रथम अर्जुन का ऐसा कठोर बचन नहींहुआ फिर अर्जुनने किसहेतुसे अपने मित्रसे रूखे बचन कहे ९ संजय बोले कि बाण और अस्त्रकी रीतिके ज्ञाता माधव सुदर्शन युवराज और पौरव वृद्धक्षत्र के मरने पर १० धृष्टद्युम्न सात्यकी और भीमसेन के पराजय होने और उन बचनों से युधिष्ठिर के मर्मस्थलों के चलायमान होने ११ और दुःखको स्मरण कर हृदय की व्याकुलता उत्पन्न होनेपर अर्ज्जुन का क्रोध जैसा पहिले नहींहुआ था उससे अधिक उत्पन्नहुआ १२ उस कारण से नीच पुरुष के समान होकर प्रतिष्ठा के योग्य आचार्य के पुत्र अश्वत्थामासे अयोग्य अप्रिय निन्दित और रूखे बचनकहे १३ हे राजा सबमर्मों के छेदनेवाले अर्ज्जुन के बचनों से इस प्रकार कठोर बचन सुननेवाले क्रोध से श्वासलेते बड़े धनुषधारी १४ सावधान अश्वत्थामाजी ने अधिकतर श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनपर क्रोधकरके युद्धमें नियत होकर पवित्रता से आचमनकर ५१ देवताओं से भी अजेय आग्नेय अस्त्र

को धारणकिया और दृष्टिके सम्मुख आनेवाले शत्रुओं के समूहोंको लक्ष्यबना कर १६ निर्धूम ज्वलित अग्नि के समान प्रकाशित बाणको परममन्त्र पढ़कर बड़े क्रोधमें प्रवृत्त होकर फेंका १७ फिर आकाशमें बाणोंकी कठिन वर्षाहुई अग्नि की ज्वालाओं से पूर्ण उस बाणोंकी वर्षा ने अर्ज्जुन को चलायमान किया १८ आकाश से उल्कापातहुये दिशा अविदितहुईं भयकारी अन्धकारसे अकस्मात वह सब सेना व्याप्त होगई १९ और इकट्ठे होनेवाले राक्षस और पिशाच अत्यन्त शब्द करनेलगे अशुभ वायुचलीं सूर्य्य अप्रकाशित हुये और सब दिशाओं में काक भयानकशब्द करनेलगे और रुधिरकीवर्षा करनेवाले बादल भी आकाश में गर्जनेलगे २०।२१ पशुपक्षी गौ योगी और सुन्दर व्रतवाले मुनियों ने भी बड़ी अशान्ती को पाया २२ जिसमें सूर्य्य समेत सब जीवधारी घूमते दिखाई पड़तेथे वह त्रिलोकी चारोंओरसे दुखी और तापों से व्याप्तहोगई २३ इसीप्रकार अस्त्रके तेजसे अत्यन्त संतप्त पृथ्वी में रहनेवाले सर्पादिक भी श्वासलेते हुये घोर तेजके देखनेकी इच्छासे ऊपरआये २४ हेभरतवंशी जलके स्थानोंके गरम होनेसे जलते हुये जलजीवोंने भी बड़ी व्याकुलताको पाया २५ बाणोंकी छोटीबड़ी वर्षा जोकि गरुड़ और वायु के समान वेगवान्थीं दिशा विदिशा आकाश पृथ्वी और सब ओरसे हुईं २६ वज्र के समान वेगवान् अश्वत्थामाजी के बाणों से घायल और अत्यंत भस्मीभूत शत्रु ऐसे गिरपड़े जैसे कि अग्निके जलायेहुये वृक्ष गिरपड़ते हैं २७ जलतेहुये बड़े हाथी बादल के शब्द के समान भयानक शब्दोंको गर्जते चारों ओरसे पृथ्वीपर गिरपड़े २८ हे राजा भयसे भयभीत हुये अन्य हाथी दिशाओं को भागे और ऐसे शब्द करनेलगे जैसे कि पूर्व समयमें वनके मध्यमें दावानल नाम अग्निसे घिरेहुये २९ पुकारते हैं हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र जैसे दावानल अग्नि से जलीहुई वृक्षोंकी चोटियां होती हैं उसीप्रकार घोड़े और रथों के समूह दृष्टिगोचर हुये ३० और जहां तहां रथों के हजारों समूह भी गिरपड़े हे राजा उस भयसे व्याकुल सेनाको युद्धमें ऐसे भस्म करदिया ३१ जैसे कि प्रलय कालमें सम्वर्त्तक नाम अग्नि सब जीवोंको भस्मकर देताहै फिर युद्धमें जलती पांडवी सेनाको देखकर ३२ अत्यन्त प्रसन्नचित्त आपके शूरवीरोंने सिंहनादोंको किया इसकेपीछे नानाप्रकारके रूपवाले हजारों बाजोंको भी ३३ विजयसे शोभायमान और प्रसन्न चित्त आपकी सेनाके लोगोंने शीघ्र बजाया हे राजा अंधेरे

१ लोकके ढकजानेपर सब अक्षौहिणीसमेत पांडव अर्जुन ३४ बड़े युद्धमें दिखाई नहींपड़े उसप्रकार का अस्त्र प्रथम हमने देखाथा न सुनाथा ३५ जैसा कि क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने प्रकटकिया हे महाराज फिर अर्जुन ने उस ब्रह्मास्त्रको प्रकटकिया ३६ जोकि ब्रह्माजी ने सब अस्त्रोंके दूरकरनेको प्रकट किया था तदनंतर एकमुहूर्त्त मेंही वह अंधकार दूरहोगया ३७ शीतलवायुचली निर्मल दिशा शोभायमानहुई उससमय वहांपर हमने सम्पूर्ण अक्षौहिणीको अपूर्वरूपसे मृतक ३८ और अस्त्रके तेजसे ऐसा भस्महुआ देखा कि जिनकारूप नहीं जानाजाताथा उसकेपीछे बड़े धनुषधारी बीर अर्जुन और केशवजी अस्त्रसे छुटेहुये ३९ एकसाथही ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि आकाश में दो सूर्य्यहोते हैं फिर गांडीवधनुषधारी और केशवजी दोनों अजेय दिखाईपड़े ४० और आपके शूरवीरोंका भय उत्पन्न करनेवाला जुड़ा हुआ वह रथ पताका ध्वजा अनुकर्ष घोड़े और उत्तम शस्त्रोंसमेत शोभायमान हुआ ४१ इसकेपीछे एकक्षणभरमेंही अत्यन्त प्रसन्न पांडवों के किलकिला शब्द शंख भेरी आदिक बाजोंसमेत उत्पन्नहुये ४२ वहां बेगसे साथ आनेवाले केशव जी और अर्जुनको देखकर दोनोंसेनाओंका यह विचारहुआथा कि मारेगये ४३ फिर उन विनाघायल और अत्यन्त प्रसन्नचित्तोंने उत्तम शङ्खोंको बजाया आपके सब पुत्र पाण्डवों को अत्यन्त प्रसन्न देखकर पीड़ावान्हुये ४४ हे श्रेष्ठ बड़े दुःखी अश्वत्थामाने दोनों महात्माओं को छुटाहुआ देखकर एकमुहूर्त्तभर चिंता करी कि यह क्याबातहै ४५ हे राजेन्द्र इसकेपीछे ध्यान और शोकमें नियत अश्वत्थामाजी चिन्ताकरके उष्ण और लम्बी श्वासा लेते चित्तसे उदासहुये ४६ और धनुषको त्याग शीघ्र रथसे कूद यहसब मिथ्याहै इस शब्दको बड़ी धिकारी के साथ कहतेहुये युद्धसे हटगये ४७ फिर स्वच्छ बादलके रूप पापोंसे रहित साक्षात् धर्मके समान आगे बर्त्तमान वेदव्यासजीको देखा ४८ अश्वत्थामाजी उस कौरवकुलके तारनेवाले व्यासजीको आगे नियतदेखकर रुकेहुये कंठ औरमहादुःखी के समान नमस्कार करके इसवचनको बोले ४९ कि हे व्यासजी नाशयुक्त का अविनाशीपन के साथ दर्शनहोना और अस्त्रका नियम से रहितहोना हम इसको नहींजानतेहैं कि इसमें क्या व्यतिक्रमहै यहमेरा अस्त्र कैसे निष्फलहुआ इसमें मेरा कौनसा विपरीत कर्म है ५० अथवा यह लोकोंका पराजय न होनाही विपरीतहै जो यह दोनों कृष्णजीवते हैं निश्चय काल दुःखसे उल्लंघन होनेवालाहै

५१ असुर, गन्धर्व, राक्षस, पिशाच, सर्प, यक्ष, पक्षी और मनुष्य किसी दशामें भी ५२ मेरे चलायेहुये अस्त्रको निष्फल नहीं करसक्ते हैं सो यह ज्वालारूप अस्त्र सेनाको मारकर शान्तहोगया ५३ मैंने सबका मारनेवाला बड़ा भयानक अस्त्र छोड़ा इस अस्त्रने इन मरणधर्मा केशवजी और अर्जुनको कैसे नहीं मारा ५४ हे भगवान् इस मेरे पूछते हुये मेरे सन्देह को शीघ्र निवृत्तकरके सब ब्योरे समेत वृत्तांत कहिये हे महामुनि मैं उस सब वृत्तान्तको मूलसमेत सुनना चाहताहूं ५५ व्यास जी बोले कि यह बड़ाभारी प्रयोजनहै जिसको कि तुमने बड़े आश्चर्य-पूर्व्वक मुझसे पूछा है मैं उस सबको मूलसमेत तुम से कहता हूं तुम चित्तको सावधान करके सुनो ५६ जो यह विश्वका उत्पन्न करनेवाला प्राचीनों का भी प्राचीन कार्यकरनेके अर्थ धर्मका पुत्र नारायणनाम उत्पन्नहुआ है ५७ वह बड़े तेजस्वी अग्नि और सूर्य्य के समान हिमालय पर्व्वतपर स्थित ऊर्ध्वबाहु होकर तेज व्रतमें नियतहुआ ५८ तब वायु भक्षण करनेवाले कमललोचन ने छास-ठिहजार वर्षतक अपने शरीर को सुखाया ५९ फिर दूसरी तपस्या करके तीसरे तपको भी तपकर उससे भी द्विगुणित तपस्या को करके इसमें पृथ्वी और आ-काश के मध्यभाग को अपने तेजसे भरदिया ६० हे तात जब वह उस तपसे अत्यन्त निवृत्तहुये तब बिश्वके ईश्वर विश्वके उत्पत्तिस्थान जगत् के प्रभु ६१ अत्यन्त अजेय और सब देवताओं से स्तूयमान उन शिवजी महाराजको देखा जो कि छोटों से भी छोटा अर्थात् महासूक्ष्म और स्थूलों से भी महास्थूल ६२ रुद्र ईशान श्रेष्ठ हर शम्भु जटाजूटधारी सबके चैतन्य करनेवाले स्थावर जङ्गम-मात्र के बड़े उत्पत्तिस्थान ६३ दुर्वारण अर्थात् कठिनतासे हटानेके योग्य दुर्धर अर्थात् विरूपाक्ष अथवा दुःखसे धारण करनेके योग्य दुष्टोंपर कठिन क्रोध करने वाले महात्मा और सबके नाशकरनेवाले साधुलोगोंपर उदारता करनेवाले दिव्य धनुष तूणीरके धारण करनेवाले सुवर्णकवची अपार बल पराक्रमवाले पिनाक, वज्र, प्रकाशित शूल, फरसा, गदा और बड़े खड्ग के रखनेवाले श्वेतवर्ण जटा मूसलधारी चन्द्रमौलि और व्याघ्रचर्म्म के धारणकरनेवाले दण्डधारी ६४।६५ शुभ बाजूबन्दों समेत नागोंकाही यज्ञोपवीत धारण करनेवाले विश्वेदेवताओं के गण और जीवसमूहों से शोभायमान अपना पराया न रखनेवाले तपों के रक्षाश्रय वृद्धों के प्रिय वचनों से स्तुतिमान ६६ जल दिशा आकाश पृथ्वी चन्द्रमा सूर्य्य

बायु और अग्निरूप कालस्वरूप दुराचारी पुरुप जिनके दर्शन को नहीं कर
और वेद ब्राह्मणों के शत्रुओं के मारनेवाले होकर मोक्षका कारणरूपहैं ६७
त्यन्त प्रसन्नचित्त बासुदेवजी उनका दर्शन करके मन बाणी बचन और ७
समेत प्रसन्नहुये और जिसको सदाचारी शोकसे रहित अन्तःकरणवाले
पापों से रहितहोकर देखते हैं उन धर्मरूप प्रशंसनीय विश्वरूप शिवजी का
बासुदेवजी ने अपने तपके द्वारा आताहुआ देखा ६८ इसके पीछे ।र
ने रुद्राक्षकी मालासे संयुक्त शरीर प्रकाशों के समूह विश्वके उत्पत्तिस्थान
जी महाराज को दण्डवत्करी ६९ भक्तिमान् कमललोचन नारायणजी ने
बरदाता प्रभु क्रीड़ा करनेवाले जीवों के समूहों से युक्त अजन्मा ईशान
सर्वेश्वर गुप्त, कारण आत्मा, अविनाशी, अन्धकके मारनेवाले विरूपाक्ष ०
को पार्वतीजी समेत दण्डवत्करके स्तुतिकी ७० । ७१ श्रीनारायणजी बोले
हे मोक्षके अभिलाषी पुरुषों के प्राप्यरूप आदिदेव वह सब प्रजापति तुमसे ७
न्नहुये जोकि इस भवन के रक्षकहैं हे देवता जिन्हों ने इस पृथ्वीपर आकर
समय में आपकी उत्पन्न की हुई इस प्राचीन सृष्टिकी रक्षाकरी ७२ मैं
असुर, नाग, राक्षस, पिशाच, मनुष्य, गरुड़, गन्धर्व, यक्ष और पृथक् २ प्रका
जीवसमूहों को तुमसेही उत्पन्नहुआ जानताहूं ७३ इन्द्र, यम, कुबेर, बरुण,
और पितृसम्बन्धी शुभकर्म्म आपकेही निमित्तहैं अर्थात् सब देवताओं
आपही तृप्त करने के योग्यहो रूप, तेज, शब्द, आकाश, बायु, स्वादयुक्त ज
गन्ध, पृथ्वी, ७४ काल, ब्रह्मा, वेद, ब्राह्मण और सब जड़ चैतन्यात्मक ज
तुमसेही उत्पन्न होनेवालाहै जैसे कि समुद्रसे अम्बुकण पृथक् २ होजाते हैं
फिर अन्तसमय पर उन समुद्रों के साथ ऐक्यताको पाते हैं ७५ इसीप्रकार ज्ञा
पुरुष जीवोंकी उत्पत्ति और नाश को मानकर आपकी सायुज्यता को
हृदयाकाश में प्रकट होनेवाले मायारूप विद्या अविद्यासे संयुक्त महत्तत्त्व अ
कार पञ्चतन्मात्रा नाम मानसी प्रकृति से संयुक्त जीव ईश्वरनाम दोपक्षी हैं
के रात्रि के निवासस्थान अश्वत्थवृक्षहैं जोकि मानसी प्रकृति और दशोंइन्द्रि
के रक्षकहैं जो पुट कि पञ्चतत्त्वात्मक शरीरके धारण करनेवाले हैं वह सब आप
से उत्पन्नहैं तुम इनसे श्रेष्ठ और पृथक्हो अर्थात् छब्बीसों तत्त्वादिसे तुम पर
त्मारूप सत्ताईसवेंहो भूत भविष्य वर्त्तमान काल ईश्वर और सब विश्वसम्ब

५१ असुर, गन्धर्व, राक्षस, पिशाच, सर्प, यक्ष, पक्षी और मनुष्य किसी दशामें भी ५२ मेरे चलायेहुये अस्त्रको निष्फल नहीं करसक्ते हैं सो यह ज्वालारूप अस्त्र सेनाको मारकर शान्तहोगया ५३ मैंने सबका मारनेवाला बड़ा भयानक अस्त्र छोड़ा इस अस्त्रने इन मरणधर्मा केशवजी और अर्जुनको कैसे नहीं मारा ५४ हे भगवान् इस मेरे पूछते हुये मेरे सन्देह को शीघ्र निवृत्तकरके सब ब्योरे समेत वृत्तांत कहिये हे महामुनि मैं उस सब वृत्तान्तको मूलसमेत सुनना चाहताहूं ५५ व्यास जी बोले कि यह बड़ाभारी प्रयोजनहै जिसको कि तुमने बड़े आश्चर्य-पूर्व्वक मुझसे पूछा है मैं उस सबको मूलसमेत तुम से कहता हूं तुम चित्तको सावधान करके सुनो ५६ जो यह विश्वका उत्पन्न करनेवाला प्राचीनों का भी प्राचीन कार्यकरनेके अर्थ धर्मका पुत्र नारायणनाम उत्पन्नहुआ है ५७ वह बड़े तेजस्वी अग्नि और सूर्य्य के समान हिमालय पर्व्वतपर स्थित ऊर्ध्वबाहु होकर तेज ब्रतमें नियतहुआ ५८ तब वायु भक्षण करनेवाले कमललोचन ने छास-ठिहजार वर्षतक अपने शरीर को सुखाया ५९ फिर दूसरी तपस्या करके तीसरे तपको भी तपकर उससे भी द्विगुणित तपस्या को करके इसमें पृथ्वी और आ-काश के मध्यभाग को अपने तेजसे भरदिया ६० हे तात जब वह उस तपसे अत्यन्त निवृत्तहुये तब विश्वके ईश्वर विश्वके उत्पत्तिस्थान जगत् के प्रभु ६१ अत्यन्त अजेय और सब देवताओं से स्तूयमान उन शिवजी महाराजको देखा जो कि छोटों से भी छोटा अर्थात् महासूक्ष्म और स्थूलों से भी महास्थूल ६२ रुद्र ईशान श्रेष्ठ हर शम्भु जटाजूटधारी सबके चैतन्य करनेवाले स्थावर जङ्गम-मात्र के बड़े उत्पत्तिस्थान ६३ दुर्वारण अर्थात् कठिनतासे हटानेके योग्य दुर्धर अर्थात् विरूपाक्ष अथवा दुःखसे धारण करनेके योग्य दुष्टोंपर कठिन क्रोध करने वाले महात्मा और सबके नाशकरनेवाले साधुलोगोंपर उदारता करनेवाले दिव्य धनुष तूणीरके धारण करनेवाले सुवर्णकवची अपार बल पराक्रमवाले पिनाक, वज्र, प्रकाशित शूल, फरसा, गदा और बड़े खड्ग के रखनेवाले श्वेतवर्ण जटा मूसलधारी चन्द्रमौलि और व्याघ्रचर्म्म के धारणकरनेवाले दण्डधारी ६४।६५ शुभ बाजूबन्दों समेत नागोंकाही यज्ञोपवीत धारण करनेवाले विश्वेदेवताओं के गण और जीवसमूहों से शोभायमान अपना पराया न रखनेवाले तपों के रक्षाश्रय वृद्धों के प्रिय वचनों से स्तुतिमान ६६ जल दिशा आकाश पृथ्वी चन्द्रमा सूर्य्य

बायु और अग्निरूप कालस्वरूप दुराचारी पुरुष जिनके दर्शन को नहीं करसक्के और वेद ब्राह्मणों के शत्रुओं के मारनेवाले होकर मोक्षका कारणरूपहैं ६७ अत्यन्त प्रसन्नचित्त बासुदेवजी उनका दर्शन करके मन बाणी बचन और बुद्धिसमेत प्रसन्नहुये और जिसको सदाचारी शोकसे रहित अन्तःकरणवाले ब्राह्मण पापों से रहितहोकर देखते हैं उन धर्मरूप प्रशंसनीय विश्वरूप शिवजी का भक्त बासुदेवजी ने अपने तपके द्वारा आताहुआ देखा ६८ इसके पीछे नारायणजी ने रुद्राक्षकी मालासे संयुक्त शरीर प्रकाशों के समूह विश्वके उत्पत्तिस्थान शिवजी महाराज को दण्डवत्करी ६९ भक्तिमान् कमललोचन नारायणजी ने उस बरदाता प्रभु क्रीड़ा करनेवाले जीवों के समूहों से युक्त अजन्मा ईशान अर्थात् सर्वेश्वर गुप्त, कारण आत्मा, अविनाशी, अन्धकके मारनेवाले विरूपाक्ष रुद्रजी को पार्वतीजी समेत दण्डवत्करके स्तुतिकी ७० । ७१ श्रीनारायणजी बोले कि हे मोक्षके अभिलाषी पुरुषों के प्राप्यरूप आदिदेव वह सब प्रजापति तुमसे उत्पन्नहुये जोकि इस भवन के रक्षकहैं हे देवता जिन्हों ने इस पृथ्वीपर आकर पूर्व्व समय में आपकी उत्पन्न की हुई इस प्राचीन सृष्टिकी रक्षाकरी ७२ मैं देवता, असुर, नाग, राक्षस, पिशाच, मनुष्य, गरुड़, गन्धर्व, यक्ष और पृथक् २ प्रकार के जीवसमूहों को तुमसेही उत्पन्नहुआ जानताहूं ७३ इन्द्र, यम, कुबेर, बरुण, त्वष्टा और पितृसम्बन्धी शुभकर्म्म आपकेही निमित्तहैं अर्थात् सब देवताओं करके आपही तृप्त करने के योग्यहो रूप, तेज, शब्द, आकाश, बायु, स्वादयुक्त जल, गन्ध, पृथ्वी, ७४ काल, ब्रह्मा, वेद, ब्राह्मण और सब जड़ चैतन्यात्मक जगत् तुमसेही उत्पन्न होनेवालाहै जैसे कि समुद्रसे अम्बुकण पृथक् २ होजाते हैं और फिर अन्तसमय पर उन समुद्रों के साथ ऐक्यताको पाते हैं ७५ इसीप्रकार ज्ञानी पुरुष जीवोंकी उत्पत्ति और नाश को मानकर आपकी सायुज्यता को पाताहै हृदयाकाश में प्रकट होनेवाले मायारूप विद्या अविद्यासे संयुक्त महत्तत्त्व अहंकार पञ्चतन्मात्रा नाम मानसी प्रकृति से संयुक्त जीव ईश्वरनाम दोपक्षी हैं उनके रात्रि के निवासस्थान अश्वत्थवृक्षहैं जोकि मानसी प्रकृति और दशोंइन्द्रियों के रक्षकहैं जो पुट कि पञ्चतत्त्वात्मक शरीरके धारण करनेवाले हैं वह सब आपही से उत्पन्नहैं तुम इनसे श्रेष्ठ और पृथक्हो अर्थात् छब्बीसों तत्त्वादिसे तुम परमात्मारूप सत्ताईसवेंहो भूत भविष्य वर्त्तमान काल ईश्वर और सब विश्वसम्बन्धी

भवन आपसे उत्पन्नहैं ७६ । ७७ मुझ भजनेवाले भक्तपर कृपाकरो अर्थात् पालन पोषणकरो मेरे अप्रिय कर्मको मेरे चित्तमें प्रवेश करनेसे मुझको मतमारो अहंकार आदिकसे पृथक् जीवात्माकी निरुपाधिस्वरूप मायासे रहित तुझ ब्रह्म को इसप्रकार जानकर ज्ञानी प्राप्त होताहै ७८ हे देवताओं में श्रेष्ठ तुझ सर्वरूपके पूजनको करनाचाहते और तलाशकरते मैंने तुझ प्रशंसनीयकी स्तुतिकरी तुम मुझसे स्तूयमान होकर मेरेप्रिय और कठिनतासे पाने के योग्य वरोंको दो तुमने मायाको बहुतरूप से प्रकट कियाहै उस मायाको मेरे ऊपर कभी प्रकट न करो ७९ व्यासजीबोले कि नारायण ऋषि से स्तूयमान अचिन्त्यात्मा पिनाकधनुषधारी नीलकण्ठजी ने उस देवताओं में श्रेष्ठ और योग्य नारायणजी के अर्थ वरदिया ८० श्रीभगवान् शिवजी बोले कि हे नारायण तुम मेरी कृपासे मनुष्य देवता और गन्धर्वों में बड़े पराक्रमी और बुद्धिमान् होगे ८१ और देवता असुर महासर्प्प पिशाच गन्धर्व्व और यक्ष राक्षसभी तुमको नहीं सहसकेंगे ८२ और गरुड़ नाग सिंह और व्याघ्रादिक भी तुम्हारे तेजको नही सहसकेंगे और कोई देवताभी तुमको युद्धमें विजय नहीं करसकेगा ८३ और मेरीकृपासे कोई किसी दशामें भी वज्र वायु शस्त्र अग्नि शुष्कता आर्द्रता सब स्थावर जंगमों के द्वारा तुम्हारी पीड़ा को नहीं करसकेगा और युद्ध में जाकर मुझसे भी अधिक होगे ८४ । ८५ प्रथमही से श्रीकृष्णजी ने इन वरों को पाया है वही यह कृष्णदेवता अपनी मायासे मोहित होकर इस जगत्में घूमता है ८६ उसके तपसे नरनाम महामुनि उत्पन्न हुआ उस नरनाम अर्ज्जुनको सदैव इस श्रीकृष्ण देवताहीके समान जानो ८७ वही यह देवताओं के आदि नर नारायणऋषि बड़ेतपों से युक्त लोकयात्रा विधान के अर्थ युग युगमें उत्पन्न होते हैं ८८ हे बड़े बुद्धिमान् उसीप्रकार तुम भी शीघ्र अपने कर्म्म और बड़े तपके द्वारा तेज और क्रोधको धारण करते रुद्रस्वरूप उत्पन्नहुये ८९ सो नारायण देवता के समान ज्ञानी आपने संसारको शम्भुरूप जानकर उसके प्रिय करने की इच्छा से शरीर को नियमों के द्वारा अत्यन्त दुर्व्वलकिया ९० हे बड़ाई देनेवाले आपने प्रकाशमान मंत्रको करके जप होम और उपहारों के द्वारा महापुरुष स्वरूपको पूजन किया ९१ हे पण्डित इसीप्रकार पूर्व्वदेहों में तुम से पूजेहुये वह शिवजी प्रसन्न हुये और तुम्हारे हृदयके बहुत वरों को दिया ९२ तेरे और उनदोनों नर नारायणों

के जन्म कर्म्म तप और योग श्रेष्ठहैं प्रत्येक युगमें उनदोनों नर नारायण रूप सूक्ष्मशरीरवाले सगुणरूप देवता में * ९३ जो पुरुष प्रभु शिवजी को सर्व्वरूप जानकर सूक्ष्मरूप में पूजन करता है निश्चय करके उस सूक्ष्मरूप में सनातन आत्मयोग और शास्त्रयोगहै ९४ इस प्रकार से पूजन करनेवाले देवता सिद्ध और महर्षिलोग परलोकमें अकेले शिवजी को चाहते हैं वह सबके उत्पन्न करने वाले हैं सनातन श्रीकृष्णजी यज्ञोंकेद्वारा पूजन करने के योग्यहैं ९५ । ९६ जो पुरुष सबजीवों के उत्पत्तिस्थान शिवजी को जानकर प्रभु के सूक्ष्मरूप का पूजन करताहै उसपर शिवजी बड़ी कृपाको करते हैं ९७ फिर महारथी अश्व-त्थामा ने उनके उस बचनको सुनकर रुद्रजीको नमस्कार करके श्रीकृष्णजीको बहुत माना ९८ खड़ेहुये रोमांच जितेन्द्रियरूप उस अश्वत्थामाने ब्यास महर्षि जी को दण्डवत् करके सेनाको देखकर बिश्रामको करवाया ९९ हे राजा युद्धमें द्रोणाचार्य्य के गिराने के पीछे पांडवों का और दुःखी कौरवों का बिश्राम हुआ १०० हे धृतराष्ट्र इसप्रकार से वेद के पारंगत होनेवाले द्रोणाचार्य्य ब्राह्मण पांच दिन युद्धकरके सेना मारकर ब्रह्मलोक में गये १०१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विशतोपरिद्वितीयोऽध्यायः २०२ ॥

दोसौतीनका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि धृष्टद्युम्न के हाथ से उस अतिरथी द्रोणाचार्य्य के मरने पर मेरेपुत्र और पांडवों ने क्याकिया १ संजय बोले कि धृष्टद्युम्नके हाथसे उस अति-रथी द्रोणाचार्य्य के मरने और कौरवों के छिन्नभिन्न होनेपर भरतबंशियों में श्रेष्ठ कुन्तीकेपुत्र अर्ज्जुनने २ अपनी बिजय प्रकट करनेवाले बड़े आश्चर्य्यको देखकर दैवइच्छा से आयेहुये ब्यासजी से पूछा ३ कि स्वच्छ शस्त्रों से युद्धमें शत्रुओं को मारते हुये मैंने आगे से जातेहुये अग्नि के समान प्रकाश भरेहुये पुरुष को

* इस स्मृति में लिखा है कि चारकी विद्यमानता में जलफल प्राप्तहोता है वह विनाशवान् है और दो की विद्यमानता में अविनाशी फल मिलताहै अब जो कि मूर्त्तिपूजन करने में पूजन करने वाले का चित्त, आत्मा, इन्द्रिय और विषय इन चारोंकी वर्त्तमानता होती है इसहेतुसे नर नारायण जी में सूक्ष्मरूप में शिवजी का पूजन किया क्योंकि उसमें केवल आत्मा और चित्तकीही वर्त्त-मानता होती है ९३ ॥

देखा ४ हे महामुनि वह ज्वालायमान पुरुष शूलको उठाकर जिस दिशामें प्राप्त होताहै उसी दिशामें मेरे सब शत्रु छिन्न भिन्न होजाते हैं ५ सबलोग उससे छिन्न भिन्न कियेहुये शत्रुओं को मेरे हाथसे भगाया और छिन्न भिन्न कियाहुआ मानते हैं मैं उसके पीछे की ओरसे उससे छिन्नभिन्न कियेहुये सेनाके लोगोंकेपीछे जाताहूं ६ हे भगवान् उनको आप वर्णन कीजिये कि वह पुरुषोत्तम कौनहैं जिस को कि मैंने शूल हाथमें लिये तेजसे सूर्य्य के समान देखा ७ वह चरणों से न पृथ्वीको स्पर्शकरताहै न शूलको छोड़ताहै उसके तेजके कारण शूलसे हजारों शूलगिरे ८ व्यासजी बोले कि हे अर्जुन तुमने प्रजापति के अर्थात् ब्रह्मा विष्णु रुद्रके आदि, चिन्मात्ररूप और शरीर रूप सब पुरियोंमें व्याप्त आदि, प्रभु,पृथ्वी अन्तरिक्ष स्वर्गरूप प्रकाशमान सबलोकों के ईश्वर समर्थ ९ महेश्वर, वरदाता, शङ्करजी को देखाहै उस वरदाता भुवनेश्वर देवता की शरणको प्राप्तहो १० जो कि महादेव, महात्मा, ईशान, जटाधारी, विभु, त्रिनेत्र,दीर्घबाहु, रुद्र, शिखाधारी, चीर वस्त्रोंसेयुक्त शरीर ११ महादेव,हरि, स्थाणु, वरदाता,भुवनेश्वर, जगत्प्रधान, अजेय, जगत्पति, ईश्वर से भी अधिक अर्थात् उपाधि से रहित चिन्मात्र १२ जगत्के माता पिता रूप, विजयी, जगद्गति, विश्वात्मा, विश्वके उत्पन्न करने वाले, विश्वमूर्त्ति, यशस्वी १३ विश्व, विश्वेश्वर, जगत् के आनन्द उत्पन्नकरने वाले, सबकर्म्मोंकेईश्वर, प्रभु,शम्भु, स्वयंभु अर्थात् अपनेआप उत्पन्न होनेवाले जीवमात्रों के स्वामी, भूत भविष्य वर्त्तमानके उत्पन्न करनेवाले १४ कर्मयोगरूप योगेश्वर, सर्वात्मा और जो सबलोकों के ईश्वरहैं उनके भी ईश्वर, सबसे श्रेष्ठ, जगत् से श्रेष्ठ, वृद्धतम, ब्रह्मारूप १५ तीनोंलोकों के रचनेवाले एक, तीनोंलोकों के रक्षाश्रय, शुद्धात्मा, भव, भयानकरूप, चन्द्रशेखर, १६ सनातन पृथ्वीके धारण करनेवाले देवता और जो सर्व्वप्राणियों का ईश्वर है उसके भी ईश्वर अनधिकारियों को कठिनतासे मिलनेके योग्य जरा जन्म मरणादिकोंसे रहित १७ ज्ञानस्वरूप, ज्ञान से मिलने के योग्य, ज्ञानमें श्रेष्ठ दुःखसे जाननेके योग्य और भक्तों को उनवरों के देनेवाले हैं जोकि उनकी कृपासे विचार कियेजायँ १८ उस समर्थ के पार्षद, दिव्य और नानाप्रकार के रूपों से वामन, जटिल, मुण्ड, छोटी ग्रीवा, बड़ाउदर १९ बड़ाशरीर, बड़ाउत्साह, इसीप्रकार बड़े २ श्रवण भी धारण करनेवाले हैं हे अर्ज्जुन वह महादेव महेश्वर इसप्रकार के भयानक मुख चरण

रूपान्तर पोशाक भूषणवाले पार्षदों से पूजित हैं हे तात वह तेजस्वी शिवजी अपनी कृपासे तेरे आगे चलते हैं २०। २१ हे अर्ज्जुन सदैव उसघोर और रोमांचोंके खड़े करनेवाले युद्धमें बड़े धनुषधारी प्रहार करनेवाले अश्वत्थामा कर्ण और कृपाचार्य से रक्षित २२ सेना को सिवाय भवरूपधारी बड़े धनुषधारी देवता महेश्वरके और कौनसा पुरुष मनकरके भी पराजय करसक्ताहै २३ उस ईश्वरके आगे नियत होनेपर कोई सम्मुख होनेको उत्साह नहीं करताहै तीनोंलोकों में उसके समान जीवधारी कोई बर्त्तमान नहीं है २४ युद्धमें उस क्रोधरूपकी गन्ध से भी वह शत्रुलोग अचेतहोकर कांपते हैं और गिरते हैं जिन के कि बहुत से आदमी मारेगये २५ देवतालोग उन शिवजीके अर्त्थ नमस्कार करते स्वर्ग में नियतहैं और लोकोंमें जो अन्य २ स्वर्ग के बिजय करनेवाले मनुष्यहैं वह २६ और जो भक्त सदैव अनन्यभावहैं उस वरदाता देवता शिव रुद्र उमापति सुरेश की उपासना करते हैं वह इसलोक में सुखको पाकर परमगतिको पाते हैं २७ हे कुन्ती के पुत्र तुम सदैव उस शान्तरूपके अर्त्थ नमस्कारकरो उस रुद्र नीलकण्ठ सूक्ष्मरूप बड़े सूक्ष्मरूप तेजस्वी २८ गङ्गाजल से पूर्ण जटाधारी कराल कुबेरको भी बरदेनेवाले मायाशवल, ब्रह्मवाल के समान जिसकी किरणहैं उस आनन्द उत्पन्न करनेवाले को नमस्कारकरो २९ सबका अभिलाषित पिंगलाक्ष स्थाणु और पुटीरूप शरीरों में बर्त्तमान होनेवाले पिंगलबर्ण केशधारी मुण्ड सूक्ष्म और संसारसागर के पारकरनेवाले के अर्थ नमस्कारकरो ३० सूर्य्यरूप संसारके प्रकाश करनेवाले शोभायमान बिभूतिवाले देवताओंके भी देवता भगवान् भवरूप नाशकर्त्ता और संसारकेप्यारे और प्रिय पोशाक ३१ वेष्टन बांधनेवाले शुभवस्त्रधारी सहस्राक्ष बर्षा करनेवाले पर्वत निवासी बड़ेशान्त बल्कलधारी स्वामी के निमित्त नमस्कारकरो ३२ सुवर्णमय भुजा राजारूप उग्रदिशाओंके स्वामी बादल और जीवों के स्वामीके अर्त्थ नमस्कारहै ३३ वृक्षोंके और गौओंके स्वामी वृक्षोंसेयुक्त शरीरवाले सेनापति अन्तर्य्यामी के अर्थ नमस्कार ३४ श्रुवा हाथ में रखनेवाले अध्वर्य्यु प्रकाशमान धनुषधारी और श्रीपरशुरामरूप के अर्थ नमस्कारहै भवरूप विश्वके स्वामी तपरूप बिस्तरधारी के अर्त्थ नमस्कारहै ३५ सहस्रशीर्ष सहस्राक्ष सहस्रभुज और सहस्रपादके अर्थ नमस्कार है ३६ हे कुन्तीके पुत्र उस वरदाता भुवनेश्वर विरूपाक्ष दक्षयज्ञविध्वंसी ३७ उमापतिकी शरणजाओ जोकि प्रजाओं

के स्वामी बड़े उग्रजीवोंके पति अविनाशी जटाजूटधारी ब्रह्मादिक उत्तम पुरुषों को माया से भ्रमानेवाले उत्तम नाभि रखनेवाले वृषभध्वज ३८ तीनों लोकों के नाशमें समर्थ अहङ्कार रखनेवाले धर्मकेस्वामी धर्म्महीको श्रेष्ठ माननेवाले वर्षा का अन्त और फल करनेवाले इन्द्रादिक देवताओंमें श्रेष्ठ धर्मसे प्रकाशमान पुरुषों को बड़ा फल देनेवाले धर्मसेही आत्माका साक्षात्कार करनेवाले धर्मसेही पानेके योग्य सुन्दर नेत्र ३९ उत्तम शस्त्रवाले विष्णुरूप बाण रखनेवाले धर्मरूप महेश्वर और करोड़ों ब्रह्माण्डों के आश्रय स्थानरूप उदर रखनेवाले ब्रह्माण्डरूप व्याघ्र- चर्म्मसे संयुक्त शरीर ४० लोकके ईश्वर वरदाता वेद ब्राह्मणों के स्वामी ब्राह्मण प्रिय हाथमें त्रिशूल खड्ग और ढालके रखनेवाले प्रभु ४१ पिनाक धनुषधारी लो- कोंके पति ईश्वर देवता शरण्य चीर विस्तरधारी की शरणको प्राप्तहोताहूं ४२ उस देवताओं के ईश्वरके अर्थ नमस्कार है जिसका सखा कुबेर देवताहै ऐसे सु- न्दर व्रत श्रेष्ठ पोशाकवाले के अर्थ नमस्कार है ४३ उग्रशस्त्रधारी देवताओं में श्रेष्ठ देवताके अर्थ नमस्कार भवरूप को नमस्कार बहुधन्वी के अर्त्थ नमस्कार स्थाणुके अर्थ सदैव नमस्कार धनुषधारी पार्षद रखनेवाले देवताको नमस्कार ४४ धनुषधारी धनुषधारियोंके प्यारे धनुषधारी देवताको नमस्कार और तुभ्य धन्वंतरि धनुपरूप धनुपधारियों के आचार्य्य के अर्त्थ नमस्कार ४५ त्रिपुरके मारनेवाले भगके नेत्र उखाड़नेवाले वनस्पतियों के पति और नरोंके स्वामी के अर्त्थ नम- स्कार माताओंके और गौओंके स्वामीके अर्थ नमस्कार ४६ गौओंके पति और सदैव यज्ञोंके स्वामी के अर्थ नमस्कार जलोंके और देवताओं के स्वामीके अर्थ नमस्कार ४७ पूषा देवताके दांत तोड़नेवाले और तीन नेत्र रखनेवाले वरदाता नीलकण्ठ पिंगलवर्ण सुवर्ण केशधारी के अर्थ नमस्कार ४८ ज्ञानी महादेवजी के जो दिव्य कर्म्म हैं उनको अपनी बुद्धिकी सामर्थ्य के अनुसार कहताहूं ४९ उन शिवजीके क्रोधयुक्त होनेपर पातालवर्त्ती देवता असुर गन्धर्व्व और राक्षस लोकमें सुखसे वृद्धि नहीं पाते हैं ५० पूर्वसमयमें क्रोधयुक्त महादेवजीने विधिसे रचेहुये दक्षके यज्ञको विध्वंस किया उससमय वह शिवजी दयासे रहितहोकर ५१ धनुपसे बाणको छोड़कर बड़ेशब्दसे गर्जे तब उन देवताओंने सुख व शान्तीको पाया ५२ अकस्मात् यज्ञ के विध्वंसहोने और महेश्वरजी के क्रोधयुक्त होने पर उस तल प्रत्यंचाके शब्दसे सबलोक महाव्याकुलहुये ५३ हे अर्जुन देवता और

असुरगिरपड़े और आधीनतामें वर्त्तमानहुये और सवसमुद्र व्याकुल होकर पृथ्वी भी कम्पायमानहुई ५४ पर्वत फटगये दिशाओंसमेत सर्प मोहितहुये कठिनअन्धकारसे पूर्ण लोक नहीं जानेगये ५५ सूर्य्यसमेत सब प्रकाशमानों के प्रकाशोंको अस्तकिया और वह सबभयसे व्याकुल अचेतहोगये इसीप्रकार ५६ सुख चाहने वाले ऋषियोंने अपनी और जीवधारियोंकी शांतीकोकिया और हँसतेहुये शिव जी पूषा देवताकी ओरदौड़े ५७ और पुरोडास भक्षण करनेवालेके दांतोंको उखाड़ा इसकेपीछे उन शिवजी से गुप्त होनेवाले कम्पायमान देवता उस यज्ञशाला से निकलगये ५८ फिर बुद्धिमान् शिवजी ने धुएं और पतंगों से युक्त बिजली वादलकेरूप तेजवाले देवताओंके बाणोंको धनुषपरचढ़ाया ५९ फिर सबदेवताओंने बाणों को देख महेश्वरजी को दण्डवत् करके रुद्रजी के उत्तम यज्ञभागको कल्पना किया ६० हे राजा देवता भयसे शरणमें आये तब क्रोधरहित शिवजी केही द्वारा वह यज्ञ पूर्णहुआ ६१ और भिन्नभिन्न देवता भी अबतक उनसे भयभीतहैं आकाशके मध्यमें बलवान् असुरोंके लोहमयी रजतमयी और स्वर्णमयी तीनपुर बहुत बड़ेथे स्वर्णमयी कमलाक्षका रजतमयी ताराक्षका ६२।६३ और तीसरा लोहमयी विद्युन्माली राक्षसका था इन्द्र अपने सबअस्त्रोंसे भी उनपुरोंके तोड़नेको समर्थ नहीं हुआ ६४ उसकेपीछे सब देवता पीड़ावान्होकर रुद्रजीकी शरणमेंगये और इन्द्रसमेत वह सब देवता रुद्रजीसे बोले ६५ कि यह त्रिपुरवासी घोर दैत्य ब्रह्माजीसे बरपाकर लोकोंको अधिक पीड़ादेते हैं और बरकेही पानेसे वह बड़ेअहंकारीहैं ६६ हे देवताओंके महेश्वर महादेवजी आपके सिवाय दूसरा कोई किसी प्रकारसे भी उनके मारनेको समर्थ नहीं है हे ईश्वर उन देवताओंसे शत्रुता करनेवालों को आप मारिये हे रुद्रजी सबकर्म्मों में पशु रुद्रहोंगे हे भूतेश्वर तुम इन असुरों को मारोगे ६७।६८ देवताओं के बचनोंको सुनकर उन हरने तथास्तु यह कहकर देवताओंके प्रियकी इच्छासे गन्धमादन और बिंध्याचलपर्वत को अपनी छोटीध्वजा बनाकर ६९ उन त्रिनेत्रधारी शङ्करजीने सागर बनसमेत पृथ्वीको रथबनाकर सर्पों के राजा शेषनागकोरथका अक्षबनाकर ७० चन्द्रमा और सूर्य्य को रथके पहिये बनाके और ऐलपुत्र और पुष्पदन्त को कमानी बनाकर ७१ मलयाचल को युगकरके तक्षकको त्रिवेणु बनाके सर्पोंसमेत पर्व्वतों को पोकच बनाकर चारों वेदों को चारों घोड़े बनाकर धनुर्वेद आदिक

उपवेदोंको लगाम वनाकर ७२।७३ सावित्री को रस्सी ओंकार को चाबुक वना कर और ब्रह्माजी को सारथी वनाकर ७४ उसी प्रकार मन्दराचल पर्व्वत को गांडीव और वासुकी सर्पको गणकरके विष्णुजीको उत्तम वाण और अग्निको भाल बनाकर ७५ वायुको बाणके पक्षोंमें यमराज को पुंख में बिजली को निश्राणबनाके और मेरुपहाड़को ध्वजाकरके ७६ फिर प्रहार करनेवालों में उत्तम और अचल शिवजी सब देवताओं के उस दिव्य रथपर सवार होकर त्रिपुर के मारने के निमित्त ७७ असुरों के नाशकर्त्ता बड़े पराक्रमी तपोधन ऋषि और देवताओंसे स्तुति कियेहुये श्रीमान् ७८ प्रभु शिवजी अपने से सम्बन्ध रखने वाली दिव्य और अनूपम सवारी को वनाकर अचलरूप हजार वर्षतक नियत हुये ७६ जब अन्तरिक्ष के मध्य में तीनोंपुर मिलगये तब उन शिवजी ने तीन पर्व्व और तीन भाल रखनेवाले वाणसे उन पुरोंको तोड़ा ८० दानवलोग उस कालाग्नि से युक्त विष्णु और चन्द्रमासे संयुक्त उस वाणकी ओर देखने को भी समर्थ नहीं हुये ८१ फिर देवीपार्वती आप पञ्चशिखाधारी वालक को गोदी में करके उन पुरों के भस्म करनेवाले शिवजी के देखनेको गई ८२ जाननेकी इच्छा करके उमादेवी देवताओं से वोली कि यह कौनहै तब सब लोकों के ईश्वर समर्थ प्रभु शिवजी ने हँसकर शीघ्रही उस क्रोधयुक्त और निन्दा करनेवाली और वज्र से प्रहार करनेवाली इन्द्रकी उस भुजाको वज्रसमेत रोकदिया ८३ । ८४ इसके पीछे वह अचल भुजावाला इन्द्र देवताओं के समूहों से युक्त शीघ्र अविनाशी प्रभु ब्रह्माजी के पासगया ८५ तब वह सब देवता उनको प्रणामकरके हाथजोड़ कर बोले कि हे ब्राह्मण पार्वतीजी की गोदी में वर्त्तमान अपूर्व्व जीवधारी कौन पुरुषथा ८६ वह बालरूपधारी हमसे नहीं देखागया इसहेतु से आपको पूछना चाहते हैं जिस युद्ध न करनेवाले वालककी लीलासेही इन्द्रसमेत हम सब देवता पराजित हुये तब ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ ब्रह्माजी उन देवताओं के वचनों को सुन कर ८७ । ८८ स्वयम्भू ब्रह्माजी उस बड़े तेजस्वी वालक को ध्यानकरके इन्द्रादिक देवताओं से बोले ८६ कि वह वालक भगवान् हर चराचर जगत्का प्रभुहै उस महेश्वर से दूसरा कोई बड़ा नही है जो महातेजस्वी उमादेवी के साथ तुमने देखाहै उन शिवजी ने पार्वतीजी के कारणसे वालरूपको धारणकिया तुमलोग मुझसमेत उसीको प्रासकरो ६० । ६१ वही भगवान् देवता सब लोकोंका ईश्वर प्रभु

है प्रजापतियोंसमेत उन सब देवताओं ने उस भुवनेश्वर बाल सूर्य्य के समान प्रकाशमान को नहींजाना इसके पीछे उन पितामह ब्रह्माजी ने पासजाकर महेश्वरजीको देखकर ९२।९३ उत्तम जानकर स्तुतिकरी ९४ ब्रह्माजी बोले कि तुम यज्ञ अर्थात् विष्णुरूपहो तुम्हीं इस भुवनके पालन करनेवाले हो तुम्हीं लयस्थानहो तुम्हीं उत्पत्तिके कारणहो हे महादेवजी तुम परमज्योतिरूप स्थानहो ९५ हे भगवान् हे भूत भविष्य वर्त्तमान के स्वामी लोकनाथ जगत्पति यह सब स्थावर जंगम संसार तुमसे व्याप्तहै ९६ आपके क्रोधसे पीड़ावान् होनेवाले इन्द्रके ऊपर कृपाकरो व्यासजी बोले कि ब्रह्माजी के इन बचनों को सुनकर प्रसन्नचित्त महेश्वरजी ने कृपापूर्व्वक सम्मुखहोकर अट्टाट्टहास किया ९७ फिर सब देवताओं ने उमादेवी समेत रुद्रजीको प्रसन्नकिया और इन्द्रकी भुजा फिर यथावस्थित होगई ९८ वह देवताओं में श्रेष्ठ दक्षयज्ञविध्वंसी भगवान् शिवजी उमादेवीसमेत उन देवताओं के ऊपर प्रसन्नहुये ९९ वही रुद्रहै वही शिवहै वही अग्निहै वही सर्व्वरूपहै वही सबका ज्ञाताहै वही इन्द्र बायु अश्विनीकुमार और वही बिजली है १०० वही उत्पत्तिका कारण बादल और वही महादेवहै वही सनातनहै वही चन्द्रमा वही ईशान और सूर्य्य है वही बरुणहै १०१ वही काल वही नाश करने वाली मृत्यु है वही यमराज है वही दिनरात है वही मास पक्ष ऋतु सन्ध्या और बर्ष है वही धाता बिधाता बिश्वात्मा और सृष्टिका उत्पन्न करनेवालाहै वही अशरीरी होकर सब देवताओं के शरीरों को धारण करताहै १०२ सब देवताओंसे स्तुतिमान् वह देवता एकप्रकार अनेक प्रकार अथवा हजारों लाखों प्रकार का और लाखों रूपोंका रखनेवालाहै १०३ वेदज्ञ ब्राह्मणोंने उस देवताके दो शरीर जाने हैं एक घोर दूसरा अघोर है फिर वह दोनों शरीर बहुत प्रकारके हैं १०४ उसका जो घोर शरीरहै वह अग्नि विष्णु और सूर्य्य है और उसका अघोर शरीर जल ज्योति अर्थात् नक्षत्र और चन्द्रमाहै १०५ वेद वेदांग उपनिषद् पुराण यह सब आत्मतत्त्व का निश्चय करनेवाले हैं जो इनमें बड़ा गुप्तहै वही निश्चय करके देवता महेश्वर है १०६ वह फिर अजन्मा भगवान् महादेवजी ऐसे हैं कि उनके गुणों का वर्णन मैं हजार वर्षतक भी नहीं करसक्ता हे पाण्डुनन्दन वह शरण्य अत्यन्त प्रसन्न शिवजी सब ग्रहोंके पंजेमें फँसेहुये सब पापोंसे युक्त शरणागत भक्तोंको मुक्त करते हैं १०७।१०८ वह शिवजी आयु नीरोगता ऐश्वर्य

धन और उत्तम कामनाओंको अपने भक्तोंको देते हैं फिर वही गिराताहै १०६ इन्द्रसमेत सब देवताओंमें उसीका ऐश्वर्य्य कहाजाताहै वही लोकमें मनुष्यों के शुभाशुभ कर्मोंका फलदेताहै ११० वह कामनाओं के ऐश्वर्य्य से ईश्वर और महेश्वरभी कहाजाताहै वह बड़े २ जीवोंकाभी ईश्वर है १११ निश्चयकरके वह अनेक प्रकारके असंख्य रूपों से विश्व को व्याप्त करताहै उस देवताका जो मुखहै वह समुद्रमें नियतहै ११२ वही बड़वानल नामसे विख्यात होकर हव्यको पानकरता है यही देवता श्मशानभूमियोंमें सदैव वास करताहै ११३ मनुष्य उस वीरस्थान पर इस ईश्वरको पूजते हैं इसके रूप प्रकाशमान और घोर अनेकहैं ११४ मनुष्य लोकमें इसके जिन रूपोंको पूजते और स्तुति करते हैं और लोकमें उसके सार्थक अनेक नामहैं ११५ प्रतिष्ठा और कर्मोंकी प्रसिद्धी से सदैव कहेजाते हैं और वेदमें उसकी शतरुद्री गाईजाती है और उस महात्माका उपस्थान अनन्त रुद्रनामहै ११६ वह देवता कामनाओं का प्रभुहै जो दिव्य और मानुषहै वह विभु और प्रभु बड़ा देवता विश्व को व्यापित करताहै ११७ ब्राह्मण और मुनिलोग उसको सबसे परे कहते हैं यही देवताओं का आदि है इसी के मुखसे अग्नि उत्पन्नहुई है ११८ जिस हेतुसे कि सबप्रकार करके जीवोंका पालन करताहै साथ रहताहै और उन्होंका बड़ा स्वामी है इसी से विश्वपति कहागया है ११९ जिस हेतुसे कि उसका लिङ्ग अविनाशी और ब्रह्मचर्य्य के साथ नियतहै और लोक का पालन करताहै उस हेतुसे महेश्वर कहागयाहै १२० ऋषि देवता गन्धर्व और अप्सराओंने उसके लिङ्गको पूजा वहभी सबसे परे नियतहै १२१ उस लिंगके पूजे जानेपर वह महेश्वरजी अत्यन्त प्रसन्न होते हैं और उस पूजासे वह सूक्ष्म शरीरसे भी बहुत सुखी होके सर्वानन्दको देते हैं १२२ जिसहेतुसे कि उसके बहुत प्रकारके जड़ चैतन्य नामरूप भूत भविष्य और वर्त्तमान तीनोंकालों में नियतहैं उसहेतुसे भवरूप कहेजाते हैं १२३ अग्निरूप एक नेत्र रखनेवाला और सबओर को नेत्र रखने से भी प्रकाशमानहै और जो क्रोधसे लोकों में व्याप्तहुआ इसहेतु से सर्वरूप कहागया १२४ और जो कि उसका धूम्ररूपहै इसी से धूर्जटी कहाजाता है और जो कि उसमें विश्वेदेवा तन्मयहैं इसी से वह विश्वरूप कहागया १२५ जब स्वर्ग जल पृथ्वीनाम यह तीनों देवी उस भुवनेश्वर को भजती हैं उसहेतु से त्र्यम्बक कहेजाते हैं १२६ जोकि वह सब कर्म्मों में मनुष्यों के कल्याण को

चाहताहै उसहेतुसे शिव कहाजाताहै १२७ और जो कि यह महापुरुष सहस्राक्ष अयुताक्ष और सबओरको नेत्रकरके विश्वका पोषण करताहै उसहेतुसे महादेव कहाजाताहै १२८ जोकि महत्तत्त्वसे पूर्व नियतहुआ और जिस हेतुसे प्राणकी उत्पत्ति स्थिति से भी पूर्वहुआ और सदैव अचल स्वरूपवालाहै उसहेतुसे स्थाणु कहाजाताहै १२९ लोकमें जो सूर्य्य चन्द्रमा और अग्निकी किरणें प्रकाश को करती हैं वह सूर्य्य चन्द्रमा और अग्निरूप नेत्र रखनेवाले शिवजी के केश संज्ञकनामहैं इसी हेतुसे व्योमकेश कहेजाते हैं १३० जोकि तीनों कालों में उत्पन्न होनेवाला सब जगत् शिवरूप है इसहेतुसे वह तीनों कालोंका उत्पत्तिस्थान है १३१ शरीरों के मध्य में दशप्रकार के बिषम रूपों से नियतहै और इसलोक में आत्मारूप होने से सब जीवोंका समरूपहै वह बिषमतामें नियत जीवों के मध्य में प्राण और अपानरूप बायुहै १३२ जो कि उस महात्माके स्वरूप और लिंग कोभी पूजताहै वह लिंगका पूजन करनेवाला सदैव बड़ी लक्ष्मी को भोगता है १३३ दोनों जंघाओं से ऊपर शिवजी का शरीर अग्निरूप है अर्थात् भोगने वालाहै उसी से ब्राह्मण और क्षत्रिय उत्पन्न हुये और शिवजी का आधाशरीर चन्द्रमारूपहै अर्थात् भोजनरूपहै उसमें से बैश्य और शूद्र उत्पन्नहुये इसप्रकारसे शिवजी का आधाशरीर अग्नि और आधा चन्द्रमा कहाजाताहै १३४ उसका बड़ा शरीर देवताओं से भी अधिक तेजस्वी और प्रकाशमान है और नरलोकों के मध्यमें उसका प्रकाशमान घोरशरीर अग्निरूप कहाजाताहै १३५ इसीप्रकार जो उसका शिवनाम शरीर है वह ब्रह्मचर्य्य को करताहै और जो उसका बड़ा घोररूपहै वह ईश्वररूप सबका भक्षण करताहै १३६ जोकि अग्निके समान भस्म करताहै और शस्त्रके समान तीक्ष्णहै और यमराजके समान उग्रहै और कालके समान प्रतापवान् है और मांस रुधिर और मज्जाका भक्षण करनेवाला है इन सब कारणों से रुद्र कहाजाताहै १३७ कपि शब्द श्रेष्ठका वाची है और वृष धर्म कहाजाताहै इसी हेतुसे वह देवताओं का भी देवता भगवान् वृषाकपि नाम कहाजाताहै १३८ और जोकि ब्रह्मा इन्द्र वरुण और कुबेरको अपने आधीन करता है इसहेतु से हरनाम कहाजाता है १३९ देवता महेश्वर ने बन्द कियेहुये नेत्रों समेत बलकरके अपने ललाट में तीसरे नेत्र को उत्पन्न किया उसी हेतुसे वह त्र्यक्ष कहाजाताहै १४० हे अर्जुन यह देवता महादेवहैं जो युद्धमें पिनाक धनुष-

धारी होकर तेरे आगे शत्रुओं के मनुष्यों को मारताहुआ तुझको दिखाई दिया १४१ हे निष्पाप जिसको कि तैंने जयद्रथके मारनेकी प्रतिज्ञाके समय स्वप्नावस्था में गिरिराजके ऊपर श्रीकृष्णजी के द्वारा देखा १४२ वही देवता युद्धमें तेरे आगे होकर अपनी भक्तवत्सलता से उपाय करताहै जिसने कि तुझको वह अस्त्र दिये जिन अस्त्रोंके द्वारा तुमने दानवों को मारा १४३ हे अर्जुन यह मैंने देवताओं के देवता शिवजी की शतरुद्री तुझसे कही यह शतरुद्री धन यश और आयु की देनेवाली पवित्र वेदों के समान १४४ सब मनोरथोंकी पूरी करनेवाली सब पापोंकी नाशक और भयोंकी निवारण करनेवाली है १४५ जो मनुष्य शुद्धतापूर्वक इस मोक्ष धन कीर्त्ति आदिके देनेवाले स्तोत्रको सदैव शुद्ध, यश, सूत्र, विराट इन चारोंप्रकारों से श्रद्धासे सुनताहै वह सब शत्रुओंको विजयकरके रुद्रलोकमें पूजितहोताहै १४६ यह युद्धसम्बन्धी महात्मा शिवजीका प्राचीन चरित्र मैंने कहा जो सावधान मनुष्य इस नरलोकमें इस शतरुद्रीको सदैव पढ़ता और सुनताहै १४७ वह पुरुष विष्णु ईश्वर देवताका भक्तहोकर शिवजीके प्रसन्नहोने पर उत्तम कामनाओंको पाताहै १४८ हे कुन्तीकेपुत्र जाओ युद्धकरो तेरीपराजय नहीं है जिसके कि मन्त्री रक्षक १४९ मित्र शुभचिन्तक बन्धुरूप और पार्श्ववर्त्ती श्रीकृष्णजी हैं उसकी पराजय कैसे होसक्ती है १५० संजय बोले कि हे भरतर्षभ शत्रुओंके विजय करनेवाले धृतराष्ट्र वह व्यासजी युद्ध में अर्जुन से ऐसा कह कर जैसे आयेथे वैसेही चलेगये १५१ हे राजा महाबली अद्भुतपराक्रमी ब्राह्मण द्रोणाचार्यजी पांचदिन घोर युद्ध करके मारेगये और ब्रह्मलोकको प्राप्तभये १५२ अच्छीरीति से वेदके पढ़ने में जो फलहै वह इसपर्व्व में है क्योंकि इसमें भयसे रहित क्षत्रियों का बड़ा यश संयुक्त है १५३ जो इस पर्व्वको पढ़ेगा या सदैव सुनेगा वह बड़े महापापों से और कियेहुये घोर कर्मोंसे छूटेगा १५४ इस घोरयुद्धमें सदैव ब्राह्मणको तो यज्ञका फल और क्षत्रियों को उत्तम यशका फल मिलताहै और शेष बचेहुये वैश्य और शूद्र वर्णोंको अभीष्ट फल मिलताहै इन फलोंके सिवाय चारों वर्णवाले अपने२ प्रिय पौत्रादि धन ऐश्वर्य्यको भी पाते हैं १५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विशतोपरितृतीयोऽध्यायः २०३ ॥

द्रोणपर्व्व समाप्तहुआ—शुभंभूयात् ॥

———

महाभारत सबलसिंहचौहान कृत १।-)॥

यह पुस्तक ऐसी उत्तम दोहा चौपाइयों में है कि सम्पूर्ण महाभारतकी कथा दोहे चौपाई आदि छन्दोंमें है यह पुस्तक ऐसी सरलहै कि कमपढ़ेहुये मनुष्यों कोभी भलीभांति समझमें आती है इसका आनन्द देखनेही से मालूम होगा ॥

इसके भी पर्व अलग २ मिल सक्ते हैं

१ आदिपर्व .... =)
२ सभापर्व .... =)
३ वनपर्व .... -)
४ विराटपर्व .... =)
५ उद्योगपर्व .... ≡)॥
६ भीष्म,द्रोण,कर्ण,शल्य,गदापर्व ।)॥
७ सौप्तिक, ऐषिकपर्व ....)।
८ स्त्रीपर्व ....)॥
९ शान्तिपर्व .... -)
१० अश्वमेधपर्व .... ≡)॥
११ आश्रमवासिक, मुशलपर्व -)
१२ स्वर्गारोहण ....)॥।

महाभारत बार्त्तिक भाषानुवाद २०)पु० ॥

यह तिलक बार्त्तिक महाभारत संस्कृतसे हुआहै कुछ भी आशय इसमें कम नहीं है श्लोकाङ्कभी इसीलिये दिये हुएहैं देखनेहीसे विदित होगा—इसके पर्व अलग २ भी मिल सक्ते हैं ॥

१ आदिपर्व .... १।=)पु०
२ सभापर्व .... ॥)पु०
३ वनपर्व .... २।=)पु०
४ विराटपर्व .... ॥)पु०
५ उद्योगपर्व.... .... १॥)पु०
६ भीष्मपर्व .... १।)पु०
७ द्रोणपर्व .... १॥।)पु०
८ कर्णपर्व .... १)पु०
९ शल्य, गदापर्व .... ॥।)पु०
१० सौप्तिक, स्त्री, ऐषिक और विशोकपर्व .... ।=)पु०
११ अनुशासनपर्व .... १॥)पु०
१२ शान्तिपर्व.... .... ३।)पु०
१३ अश्वमेधपर्व .... ॥≡)पु०
१४ आश्रमवासिक, मुशल, महाप्रस्थान और स्वर्गारोहणपर्व .... ।≡)पु०
१५ हरिवंशपर्व २)

भगवद्गीता नवलभाष्य ३॥) पु० ॥

प्रकटहो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगमपुराण स्मृति ख्यादि सारभूत परमरहस्य गीताशास्त्र का सर्व्व विद्यानिधान सौशील्य वि योदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादिगुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्ज्जुनको प अधिकारी जानके हृदयजनित मोहनाशार्थ सब प्रकार अपारसंसारनिस्ता भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्त भगवद्गीता वज्रवत् वेदान्त योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी बुद्धि से पार नहीं पासक्के तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करनेकी सा मर्थ्य है वह कब इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्के हैं—और यह प्रत्यक्षही है कि जबतक किसीपुस्तक अथवा किसी बस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धि न भासितहो तबतक आनन्द क्योंकर मिलै इस कारण सम्पूर्ण भारतनिवासि भगवद्भक्त पादाब्ज रसिकजनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्म्म धुरीण सकलकलाचातुरीण सर्व्व विद्याबिलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुंशी नवलकिशोरजी (सी, आई, ई) ने बहुतसा धन व्ययकर फ़र्रुखाबाद निवासि स्वर्गबासि पंडित उमादत्तजीसे इस मनोरञ्जन वेदवेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक के श्रीशंकराचार्य्य निर्म्मित भाष्यानुसार संस्कृतसे सरल देशभाषामें तिलक रच नवलभाष्य आख्यसे प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादियाहै कि जिस को भाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्के हैं ॥

जब छपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओं की सम्मतिसे यह विचार हुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व्व ग्रन्थकी भाष्यमें अधिकतर उत्तमता उससमय पर होगी कि इस शंकराचार्यकृत भाष्य भाषाके साथ और इस ग्रंथके टीकाकारोंकी टीकाभी जितनीमिलें शामिल कीजावें जिसमें उन टीकाकारों के अभिप्रायकाभी बोधहोवे इसकारणसे श्रीस्वामी शंकराचार्यजी की शंकरभाष्य का तिलक व श्रीआनन्दगिरिकृत तिलक अरु श्रीधरस्वामिकृत तिलकभी मूल श्लोकों सहित इस पुस्तकमें उपस्थितहै ॥

द० मनेजर अवध अखबार
लखनऊ मुहल्ला हज़रतगंज

महाभारत भाषा ॥

कर्णपर्व्व

जिसमें

व्यूहनिर्माण, क्षेमधूर्त्ति, विन्द, अनुविन्द, चित्र, दण्डधार, पांड्य
आदि वीरोंका पाण्डवों के हाथसे बध और अत्यन्त बलवान्
कर्णजीका सेनापति होकर दोदिन अर्जुनादिकों से महाघोर
संग्रामकर गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन के हाथसे बध
होना इत्यादि मनोहर कथा वर्णन कीगई हैं

जिसको

भार्गववंशावतंस सकल कलाचातुरीधुरीण मुंशीनवलकिशोर जी (सी, आई, ई)
ने अपने व्ययसे आगरापुर पीपलमंडी निवासि चौरासियागौड़वंशावतंस
पण्डित कालीचरणजी से संस्कृत महाभारत का यथातथ्य पूरे श्लोक
श्लोक का भाषानुवाद कराया ॥

दूसरीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छापा गया
फ़रवरी सन् १८९७ ई०

२० जुज ३ वर्क़

इश्तहार रामायणगुटका का ॥

लखनयोगसवहीलखिलीजे ॥

विदित हो कि कलिकलुप विध्वंसिनी काव्य भाषा मे जैसी रामभक्त शिरोमणि महात्मा तुलसीदासजी की है तैसी आजतक किसी कविकी हुई न होगी इसमें बहुत कथन कथनेकी आवश्यकताही नहीं अब ये गुटकारामायण जैसी कि इस यंत्रालयमें मुद्रित हुई है उनकी उत्तमताका प्रभाव तो अवश्यही कथन करने का प्रयोजन है क्योंकि सम्पूर्ण भारत निवासी अथवा और कोई खण्ड के रहनेवाले जबतक किसी पदार्थका गुण न जानेंगे तबतक उनकी रुचि उसमें होना सर्वथा असंभवही है इससे इस रामायणगुटका का गुण प्रथम तो एक यही बड़ाभारी है कि जैसी शुद्धता के साथ ये अब छपी है खरीदारों को ऐसी छोटी रामायण शुद्ध कभी प्राप्त न भई होगी कारण यह कि मालिक मतबा खुदही पहिले ही से अपने शोधकों को यह आज्ञा देरक्खी कि इसको यथा रुचिवे चार और पांचवार जहांतक अशुद्धताकी सम्भावनाहो तहांतक शुद्धपढ़के छपवाइये दूसरे यह कि सातकाण्ड तो सबही रामायण में होतेहै इसमें आठवां लवकुशकाण्डभी युक्त है तिसपर भी एक यंत्री क्या मानो रामायणकी मंत्रीही है जो कि श्री सच्चिदानन्द आनन्दकन्द दशरथनन्दनकी आदिसे अन्त तक प्रथ तिथियों के सर्व रामायण ही को ज्ञात कराती है सो भी इसी में युक्त है तिसपर भी कागज सचिक्कण श्वेत जैसी बम्बई की पसन्दकी जाती है इस रामायण गुटका में यह सब मौजूदहै लेकिन बहुत थोड़ी छापी गई है अफसोसहै कि जो शीघ्रता न करेंगे उनको यह प्राप्तहोना बड़ाही दुष्करहै अथवा गुटका रामायण अबकी छपी मिलेहीगी क्यों कारण यह कि ऐसी मनोहर अल्प मोलपर बिकैगी तो जो एक खरीदैगा वो चार रख छोड़ने को जरूरही लेलेगा

श्रीगीतगोविन्दकाव्यम् ॥

वनमाली भट्ट कृत संजीविनी टीकोपेतम् ॥

यह गीतगोविन्द काव्य पण्डित जयदेव कृत वही है जो कि अतीव उत्तम होने के कारण इस संसार में प्रसिद्धहै प्रायः पण्डित लोग इसको अच्छी भाति जानतेहै संस्कृत पढ़नेवाले विद्यार्थियों को तो यह काव्य बहुतही लाभकारी है क्योंकि इसका तिलक वनमाली भट्टजी कृत जिसका कि संजीविनी नाम है अर्थात् इस तिलक का जैसा नामहै वैसाही गुणहै जो विद्यार्थी थोड़ी भी व्याकरण जानते है इस तिलक के द्वारा पूर्ण अर्थ मूल का लगासक्ते है पण्डित लोगोंकी रुचि संस्कृत पुस्तकों में अक्सर बम्बई की छपी हुई में अधिक होती है क्योंकि उम्दा कागज और अधिक शुद्ध छपाई यह सब उन पुस्तकोंमें मिलती है यद्यपि वहांसे यहांतक माल आनेमे खर्च महसूल आदि हो

अथ महाभारतभाषा कर्णपर्व्वका सूचीपत्र ॥

कर्णपर्व्वका सूचीपत्र ।

इति कर्णपर्व्वसूचीपत्रंसमाप्तम् ॥

अथ भाषा महाभारते कर्णपर्वणि ॥

मङ्गलाचरणम् ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनं सान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वाराणम स्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववादयन्ती महाक वीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभानःप्रतिभांव्यनक्तु २ पण्डवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतंयेन तंवन्देवादराय णम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं वन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ बिप्राग्रणीगोकुलचन्द्रपुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधा नः ॥ कथानुगंमंजुलकर्णपर्व भाषानुवादंविदधातिसम्यक् ५ ॥

अथ कर्णपर्व्वणिभाषावार्त्तिक प्रारम्भ ॥

वैशंपायन बोले कि हे राजा इसके अनन्तर द्रोणाचार्य्य के मरनेसे अत्यन्त व्याकुलचित्त दुर्य्योधनादिक राजालोग अश्वत्थामाजी के पासगये १ । २ फिर द्रोणाचार्य्य के शोचकरनेवाले मूर्च्छावान् महाघायल पराक्रमों से थकेहुये शोक से पीड़ितहोकर वह सब राजालोग अश्वत्थात्माजी के चारोंओर बैठगये ३ फिर एकमहूर्त्ततक शास्त्रके अनुसार अनेक हेतुओं से अश्वत्थामाजी को समाश्वा- सन करके सब राजालोग सायंकालके समय अपने २ डेरोंको गये ४ हे कौरव फिर दुःखशोक में भरे कठिननाश को शोचतेहुये उन राजाओं ने डेरों में भी जाकर सुख नहीं पाया ५ विशेष करके कर्ण वा राजादुर्य्योधन वा दुश्शासन

और सौबलके पुत्र महाबली शकुनिने महाखेदकिया ६ यहसब राजालोग महात्मा पाण्डवोंके कष्टोंकी चिन्ता करतेहुये रात्रिको दुर्य्योधनकेही डेरेमें निवासकरनेवालेहुये ७ जो द्रौपदी को द्यूत में कष्ट दियागया और सभामेंभी लाई गई उसको स्मरणकरते और शोचतेहुये अत्यन्त व्याकुल चित्तहुये ८ हे राजा इसप्रकार द्यूतमें प्रत्यक्षहोनेवाले उन दुःखोंको चिन्ता करनेवाले उनलोगों की रात्रि सैकड़ों वर्षके समान व्यतीतहुई ९ उसकेपीछे निर्मल प्रभातके होतेही वेदोक्तरीतिके अनुसार आवश्यक नित्यकर्म्मोंको करके दैवकी आज्ञामें नियत हुये १० अर्थात् आवश्यक कर्मोंसे निवृत्तहोकर बड़ी सावधानीसे सेनाको तैयारहोजानेकी आज्ञादी और युद्धकरनेके निमित्त बाहर निकले ११ मंगल कौतुककरनेवाले कर्णको अपना सेनापतिकरके दधिपात्र घृतआदि पदार्थोंसे १२ और सुवर्णमाला युक्त उत्तम वस्त्रादिकों से उत्तम २ ब्राह्मणोंको पूजनकरते हुये सूत मागध बन्दीजन आदिसेभी स्तूयमानहुये १३ और हे राजा इसीप्रकार से प्रातःकालके कर्मकरनेवाले युद्धमें निश्चयकरनेवाले पाण्डवलोग भी शीघ्र अपने डेरोंसे तैयारहोकर बाहर निकले १४ इसके पीछे परस्परमें विजयाभिलाषी कौरव और पाण्डवोंका महा रोमहर्षण युद्ध प्रारम्भहुआ १५ हे राजा कर्ण के सेनापतिहोनेसे उस कौरवी और पाण्डवी सेनाओंका देखने के योग्य दो दिन तक अपूर्व्व युद्धहुआ १६ इसकेपीछे हज़ारों शत्रुओंको मारकर कर्ण वा धृतराष्ट्रके पुत्रोंके देखतेहीदेखते अर्जुनके हाथसे मारागया १७ फिर शीघ्रही हस्तिनापुर जाकर यह सबवृत्तान्त लोगोंने धृतराष्ट्रसेकहा वह वृत्तान्त कौरव जांगल देशोंमें प्रसिद्ध हुआ १८ जन्मेजय बोले कि श्रीगंगाजीके पुत्र भीष्मपितामहको और महारथी द्रोणाचार्य्यजी कोभी मृतकहुआ सुनकर अंबिकाके पुत्र वृद्ध राजाधृतराष्ट्रने बड़ा खेदकिया १९ हे ब्राह्मण फिर उसदुःखी धृतराष्ट्र ने दुर्य्योधन के हितकारी कर्ण कोभी मराहुआ सुनकर कैसे अपने प्राणों को धारणकिया २० जिसने कि अपने पुत्रों के विजयकी इसी कर्णमें आशा निश्चय करके कररक्खी थी ऐसे कर्ण के मरने पर इस कौरव ने कैसे अपने जीवनको रक्खा २१ ऐसे स्थानमें कर्णको मृतक सुनकर जो राजाने अपने प्राणोंका त्याग नहीं किया इससे मैं निश्चय जानताहूं कि दुःखमें वर्त्तमान मनुष्य बड़ी कठिनतासे मरताहै २२ हे राजा इसीप्रकार वृद्धभीष्म वाह्लीक द्रोणाचार्य्य सोमदत्त

और भूरिश्रवाको २३ और अन्य मित्रोंसमेत गिरायेहुये पुत्र और पौत्रोंको भी सुनकर जो प्राणोंका त्याग नहीं किया इसीसे हे ब्राह्मण मैं उसको महा कठिन मानताहूं २४ हे महामुनि इससब वृत्तान्तको आप मूलसमेत वर्णन कीजिये मैं अपने प्राचीन वृद्ध लोगों के चरित्रों के सुनने से तृप्त नहीं होताहूं २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले हे महाराज कर्ण के मृतक होने से महादुःखी संजय सायं-कालके समय वायुकेसमान शीघ्रगामी घोड़ोंकी सवारी से हस्तिनापुरको गया १ और बड़ीव्याकुलतासे हस्तिनापुरमें पहुंचकर उस धृतराष्ट्रके स्थानकोगया जो बांधवों का नाशकारी था २ वहां मूर्च्छा से शोभाहीन राजाको देखकर बड़ी नम्रतापूर्व्वक हाथजोड़ मस्तकसे चरणों में दण्डवत् करके ३ न्यायके द्वारा राजा धृतराष्ट्रको पूजके हाय बड़ाखेदहै ऐसा बचन कहकर वार्त्तालाप करना प्रारम्भ किया ४ और कहनेलगा कि हे राजा मैं संजयहूं क्या आप प्रसन्नता से हैं और आपत्तिपाकर अपने अपराधों से आप विस्मरण तो नहीं होतेहो ५ विदुर द्रोणाचार्य्य भीष्मपितामह और केशवजी के महाउपकारी वा हितकारि बचनों को जो तुमने अंगीकार नहीं किया उनको स्मरण कर २ तो आप पी-ड़ित नहीं होतेहो ६ सभाके मध्यमें परशुराम नारद और कण्वादिक मुनियों के हितकारी बचनोंको भी स्वीकार नहीं किया उसको स्मरणकरके तो तुम दुःखी नहींहोतेहो ७ आपके हितकरने में प्रवृत्त भीष्म द्रोणाचार्य्य आदि मित्रों को युद्धमें शत्रुओं के हाथसे मरेहुये स्मरणकरके तो खेद नहीं करते हो ८ तबतो दुःख से महापीड़ित राजाधृतराष्ट्र बहुत लम्बी श्वास लेलेकर इसप्रकारसे कहने वाले संजयसे बोले ९ कि हे संजय दिव्यअस्त्रों के ज्ञाता भीष्मपितामह और बड़े बाणप्रहारी द्रोणाचार्य्य के मरनेपर मेराचित्त अत्यंत पीड़ित है १० और वसुदे-वताओंके अंशसे उत्पन्नहोनेवाले महातेजस्वी पितामहने प्रतिदिन दशहज़ार शस्त्रधारी रथियों को मारा ११ पाण्डव अर्ज्जुनसे रक्षित द्रुपदके पुत्र शिखण्डी के हाथ से मरेहुये उस भीष्मपितामहको सुनकर मेरा चित्त पीड़ामानहुआ १२ जिसके लिये भार्गव परशुरामजी ने महायुद्धमें परम अस्त्रदिया और बाल्यावस्था

में उन्हीं साक्षात् परशुरामजी ने अपने शिष्य करने के लिये अंगीकार किया १३ और जिसकी कृपासे महारथी राजपुत्र पांडवों ने और अन्य राजाओं ने महारथीपने को पाया १४ उस सत्यसंकल्प महाधनुर्बाणधारी द्रोणाचार्य्यको धृष्टद्युम्न के हाथसे मराहुआ सुनकर मेराचित्त अत्यन्त पीड़ित होरहाहै १५ इस लोक में चारों प्रकारकी विद्या और अस्त्रविद्या भीष्म और द्रोणाचार्य्य के सिवाय और किसीमें नहीं है उन दोनों महात्माओं के मरने से मैं महा खेदितहूं १६ तीनोंलोकों में अस्त्रविद्या का ज्ञाता जिसके समान कोई नहीं ऐसे महात्मा द्रोणाचार्य्य को मृतक सुनकर मेरे पुत्रों ने क्या २ किया १७ महात्मा अर्ज्जुन ने पराक्रमकरके संसप्तकों की सेनाको मारकर यमलोक में पहुंचाया १८ बुद्धिमान् अश्वत्थामा के नारायणास्त्रके निष्फलहोने और सेनाके भागनेपर मेरे पुत्रों ने क्या क्या कामकिया १९ मैं द्रोणाचार्य्य के मरनेपर सबको भगाहुआ वा शोकसमुद्र में डूबाहुआ जीवनकी आशासे ऐसा चेष्टा करनेवाला देखताहूं जैसेकि समुद्र में नौकाके टूटजानेपर उसपर चढ़ेहुये मनुष्यों की चेष्टाहोती है २० हे संजय सेना के भागजानेपर दुर्य्योधन कर्ण भोजबंशी कृतवर्म्मा मद्रदेशका राजा शल्य द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य और मेरे शेष बचेहुये पुत्रादि और समेत अन्यलोगों के मुखका वर्ण कैसा होगया २१।२२ हे संजय इस वृत्तान्तको और पाण्डव वा मेरे पुत्रों के पराक्रमको यथार्थ जैसाहुआ वैसा मुझसे वर्णनकरो २३ संजय बोले हे श्रेष्ठ कौरव लोगों में आपके अपराधसे जो देखने में आया उसको सुनकर तुम खेद मतकरो क्योंकि बुद्धिमान मनुष्य होनहार विषय में दुखी नहीं होते हैं २४ जैसा कि मनुष्यमें सुखदुख संबंधी प्रयोजन होताहै उसकी प्राप्ति वा अप्राप्ति में कोई बुद्धिमान दुखी नहीं होताहै २५ धृतराष्ट्र ने कहा कि हे संजय इससे अधिक मुझको कोई पीड़ा नहीं है मैं उसको प्राचीनहोनहार मानताहूं इससे तुम अपनी इच्छाके अनुसार वर्णन करो २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

संजय बोले कि बड़े बाणप्रहारी महातेजस्वी द्रोणाचार्य्य के मरनेपर आपके महारथी पुत्रों के मुख शोभा से रहित हुये और चित्त से व्याकुल होकर वह

सब अचेत भी होगये १ हे राजा उस समय सब नीचामुख करनेवाले शोचग्रस्त महापीड़ित उन शस्त्रधारियों ने परस्पर में बार्त्तालाप भी नहीं करी २ अनेक प्रकारसे दुःखसे पीड़ित आपकी सेनाओं को और उनलोगों को ब्याकुल चित्त देखकर सबने स्वर्ग जानेकाही बिचार किया ३ हे राजेन्द्र फिर युद्ध में द्रोणाचार्य्य को मराहुआ देखकर इन सबलोगों के रुधिर से भरेहुये शस्त्र हाथों से गिरपड़े ४ उससमय वह बँधे लटके और गिरेहुये शस्त्र ऐसे देखने में आये जैसे कि आकाश में नक्षत्र दिखाई देते हैं ५ इसके पीछे उस आपकी सेनाको हटाहुआ पराक्रमहीन देखकर राजा दुर्य्योधन बोला ६ कि मैंने आप लोगोंके पराक्रम में रक्षितहोकर पाण्डवों से युद्धकरना प्रारम्भकिया ७ अब द्रोणाचार्य्य के मरने से वह सब सेना ब्याकुलहुईसी दिखाई देती है और युद्धमें युद्धकर्त्तालोग सबप्रकार से मरते हैं ८ युद्धमें युद्ध करनेवाले की विजय और पराजय दोनों होती हैं इसमें क्या आश्चर्य्य है आपलोग सब ओरको मुखकरके युद्धकरो ९ बाणविद्यामें अद्वितीय दिब्य अस्त्रों के ज्ञाता महाबली सूर्य्य के पुत्र महात्मा कर्ण को देखो १० कि युद्धमें जिसके पराक्रम को देखकर कुन्तीका पुत्र अल्पबुद्धी अर्ज्जुन ऐसे भाग जाताहै जैसे कि सिंह को देख छोटा मृग भगजाता है ११ जिसने दशहजार हाथी के समान बली भीमसेन को मानुषी युद्ध करके परास्त किया १२ और उसी कर्ण ने दिब्य अस्त्रों के जाननेवाले शूर मायावी भयानक गर्जना करनेवाले घटोत्कचको अपनी अमोघ शक्तीसे युद्धमेंमारा१३ अब युद्धमें उस दुर्जय पराक्रमी सत्यसंकल्पी महाबुद्धिमानके भुजाओं के बल को देखोगे १४ बिष्णु के वा इन्द्रके समान अश्वत्थामा और कर्ण इन दोनों के पराक्रमको पाण्डवलोग देखेंगे १५ तुम सबलोग युद्धमें सब सेना समेतपांडवों के मारने को समर्थ हो फिर सबके साथ मिलकर कैसे समर्थ नहोगे अव पराक्रमी और अस्त्रज्ञ तुमलोग परस्पर में देखोगे १६ संजय बोले कि हे निष्पाप आपके महाबली पुत्रने अपने भाइयों को इसप्रकारसे समझाकर कर्णको सेनापति बनाया १७ हे राजा युद्धदुर्मद महाबली कर्ण ने सेनापति होकर बड़ेशब्दसे सिंहनादोंको कर करके युद्ध करना प्रारंभ किया १८ और सब सृंजय पाञ्चाल विदेह और केकय लोगोंको बिध्वंस करके युद्ध में अपने धनुष से ऐसी बाणों की वर्षा करी कि सबको ब्याकुल करादिया १९। २० फिर वह वेगवान पाण्डव

और पांचाल लोगोंको पीड़ित करता युद्धमें अर्जुन के हाथसे मारागया २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंजयवाक्यवर्णनेतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले हे महाराज अम्बिका का पुत्र धृतराष्ट्र यह सुनकर दुर्य्योधनको मृतककेही समान मानताहुआ १ महाव्याकुलता से अचेत होकर हाथी के समान पृथ्वीपर गिरपड़ा उस राजाको अचेत होकर पृथ्वीपर गिरने से २ रणवासमें से स्त्रियोंका बड़ा शोककारी शब्दहुआ उसशब्द से सम्पूर्ण पृथ्वी व्याप्त होगई ३ दुःख शोक से पीड़ित अत्यन्त व्याकुलचित्त भरतवंशियों की स्त्रियां महाघोर शोकसागर में डूबकर रुदन करने लगीं ४ । ५ इसके पीछे संजय ने उन शोकसे मूर्छित नेत्रों से अश्रुपात डालनेवाली स्त्रियोंको विश्वास देकर समझाया ६ जैसे कि केलेके वृक्ष चारोंओरकी वायुसे कंपायमान होते हैं इसी प्रकार वारंवार कंपतीहुई वह सब स्त्रियां विश्वास युक्त हुई ७ तब जलसे कौरवों के सींचनेवाले विदुरजीने भी उस बुद्धिरूपी नेत्र रखनेवाले राजाधृतराष्ट्र को विश्वास कराया ८ हे राजेन्द्र उनके वचनोंसे वह राजाधृतराष्ट्र वड़े धीरेपने से सचेतहोकर उनस्त्रियोंको देखके उन्मत्तके समान फिर मौनहोगया ९ फिर वारंवार श्वास लेतेहुये धृतराष्ट्र ने वहुतसमयतक ध्यानकरके अपने पुत्रोंकी निन्दा करी और पाण्डवोंकी प्रशंसा करी १० फिर अपने और सौवलके पुत्र शकुनी की बुद्धिकी निंदा करताहुआ वारंवार कांपकर ध्यानको करके ११ मनको थांभकर धैर्य्यतासे धृतराष्ट्रने संजयसे पूछा कि १२ हे संजय तुमने जो वचन कहा वह तो मैंने सुना परन्तु यह तो वताओ कि दुर्य्योधन तो यमपुर नहीं गया १३ सदैव विजयाभिलाषी मेरापुत्र विजयसे निराश होगयाहै हे संजय इस कहीहुई कथाको फिर भी मुख्यतासे वर्णनकरो १४ हे जन्मेजय धृतराष्ट्र के इस वचनको सुनकर संजय वोले हे राजा सूर्य्यका पुत्र महारथी कर्ण वड़े वाणप्रहारी शरीरके त्यागनेवाले सूतका पुत्र अपने सब भाइयोंसमेत मारागया और यशस्वी पाण्डवके हाथ से आपकापुत्र दुश्शासन भी मारागया और उसी युद्धमें भीमसेनने उसके रुधिर को भी पान किया १५ । १६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिधृतराष्ट्रशोकवर्णनेचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

बैशम्पायन बोले कि हे जन्मेजय शोकसे महाव्याकुल अम्बिकाकापुत्र धृत-राष्ट्र इस बातको सुनकर संजयसे बोला १ हे तात थोड़ेजीवनवाले मेरे पुत्रकी दुर्बुद्धिसे कर्ण के मरणको सुनकर मेरा प्रबल शोक मेरे अङ्गोंको काटेडालताहै सो हे सूत मुझ दुःखसे पारहोनेके इच्छावान् के सन्देहोंको निवृत्तकरो २ अब कौरव और सृंजियों में कौन २ जीवते बाकी हैं और कौन २ मरगये ३ संजय बोले हे राजा महाप्रतापी अजेय भीष्मजी दश दिनमें पाण्डवों के एक अरब शूरबीरों को मारकर मारेगये ४ इसीप्रकार बड़े धनुर्धारी दुराधर्ष सुवर्ण के रथपर चढ़नेवाले द्रोणाचार्य्य युद्धमें पांचालों के असंख्य रथ समूहोंको मारकर आप भी मारेगये ५ महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य्य के मरने से शेष बचीहुई सेना के अर्धभागको मारकर सूर्य्यकापुत्र कर्णभी मारागया ६ और महाबली राजपुत्र विविंशति भी आनर्त्तदेशी सैकड़ों शूरबीरोंको मारकर युद्धमें मारागया ७ इसी प्रकार आपकापुत्र महाबली विकर्णभी घोड़े और शस्त्रोंके नाश होजाने से क्षत्री वर्णको स्मरणकरता शत्रुओं के सन्मुख नियत हुआ ८ दुर्य्योधनके किये हुये घोररूप अनेक क्लेशोंको और अपनी प्रतिज्ञाके स्मरण करनेवाले भीमसेन को स्मरण करताहुआ उसी भीमसेनके हाथसे युद्धमें मारागया ९ और अवन्ति देशके राजा राजकुमार बिन्द अनुबिन्द बड़े २ कठिनकर्म्मोंको करके यमलोक को गये १० सिन्धके देशों में बड़ेउत्तम जो दशदेश वीरजयद्रथके स्वाधीन हैं और वह जयद्रथ आपके आधीनहोकर आपका आज्ञावर्त्तीथा ११ वह महापरा-क्रमी जयद्रथ अर्जुनके हाथसे विजयहुआ तीक्ष्णबाणों से ग्यारह अक्षौहिणी सेनाओंको विजय करके और इसीप्रकार दुर्य्योधनकापुत्र महावेगवान युद्धमें वीरोंका मर्द्दन करनेवाला और पिनाकीशास्त्र का ज्ञाता राजकुमार लक्ष्मण अ-भिमन्युके हाथसे मारागया १२।१३ इसीप्रकार दुश्शासनका पुत्र बाहुशाली रण में उसीउत्कृष्ट अभिमन्युके साथ लड़कर मृत्युके वशहुआ १४ सागर और अनु-पदेशवासी किरातोंका राजाधर्मात्मा देवराज इन्द्रका प्यारा और अङ्गीकार किया हुआ मित्र १५ सदैव क्षत्री धर्म में प्रीति रखनेवाला राजा भगदत्त अर्जुनके परा-क्रमसे यमलोकमें पहुँचायागया १६ हे राजा इसीप्रकार कौरववंशी बड़ायशी शूर

बीर भूरिश्रवा युद्धमें सात्वकी के हाथ से मारागया १७ और क्षत्रियों के भारके धारण करनेवाले श्रुतायु और अम्बष्ट भी युद्धमें निर्भयतासे घूमतेहुये अर्जुन के हाथ से मारेगये १८ हे महाराज सदैव क्रोधरूप अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्मद आपका पुत्र दुश्शासन भीमसेनके हाथसे मारागया १९ और जिसकी हाथियों की सेना अपूर्व्व और असंख्यथी वह सुदक्षिण खड्गके युद्ध में अर्जुनके हाथसे मारागया २० कोशल देशियों का राजा बड़े २ अंगीकृत शत्रुओं को मारकर अभिमन्यु से महापराक्रम करने के द्वारा यमलोकवासी हुआ २१ शत्रुओं के भयको बढ़ाने वाला महाशूर जयद्रथका पुत्र पृथ्वीपर ढाल तरवारका रखनेवाला श्रीमान अर्जुनके हाथसे मारागया २२ और आपका पुत्र चित्रसेन महारथी भीमसेन से अच्छी रीतिसे युद्धको करके उसीके हाथसे मारागया २३ युद्धमें कर्णकी समान बड़ा तेजस्वी अस्त्रोंको शीघ्रता से चलानेवाला दृढ़ पराक्रमी वृषसेन २४ बड़ा पराक्रम करके अर्ज्जुन के हाथ से कालवश हुआ अभिमन्यु के बधको सुनकर अपनी प्रतिज्ञाको करके जो राजा सदैव पाण्डवोंसे शत्रुता करताथा वह श्रुतायु शत्रुताको सुनाकर अर्जुनके हाथसे मारागया २५ हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र सहदेव ने अपने मामा शल्यके पुत्र पराक्रमी भाई रुक्मरथ नामको युद्धमें मारा २६।२७ वृद्ध राजा भगीरथ और वृहच्छत्र केकय यह दोनों बड़े बली महाप्रतापी भी मारेगये २८ हे राजा बड़ा पराक्रमी बुद्धिमान भगदत्तका पुत्र युद्धमें बाजकी समान घूमनेवाले नकुल के हाथसे मारागया २९ इसीप्रकार महाबली शस्त्रधारी आपके पितामह बाह्लीक अपने बाह्लीक लोगों समेत भीमसेन के हाथ से मृत्यु वश कियेगये ३० और जरासन्धका पुत्र महाबली जयत्सेन मगधका राजा युद्धमें महात्मा अभिमन्युके हाथसे मारागया ३१ हे राजा आपके पुत्र महारथी दुर्मुख और दुस्सह शूरोंमें प्रशंसनीय भीमसेनकी गदासे मारेगये ३२ और महारथी दुर्मर्षण दुर्विष और महारथी दुर्जय यह तीनों कठिनकर्मों को करके यम के स्थानको गये ३३ और युद्ध में दुर्मद कलिंग और वृषक दोनोंभाई कठिनकर्मी होकर यमलोक को सिधारे ३४ आपका शूरबीर पराक्रमी मन्त्री बृषबर्मा भीमसेन के हाथसे कालके बसीभूत हुआ ३५ इसीप्रकार दशहजार हाथी के समान पराक्रमी महाराज पौरव युद्धमें बड़ेपराक्रमी अर्जुनके हाथसे मारागया ३६ और प्रहार करनेवाले दो हजार बशातय और पराक्रमी शूरसेन यहसब युद्धमें

मारेगये ३७ कवचधारी प्रहारकरनेवाले युद्ध में उद्भट महारथी अभीषाह शिवय यह दोनों कलिंग देशियों समेत मारेगये ३८ जो कि गोकुलमें सदैव बड़ेहुये युद्धमें महाक्रुद्धरूप युद्धसे मुख न मोड़नेवाले वीरथे वहभी अर्जुन के हाथ से मारेगये ३९ हजारों संसप्तकों समेत घूमनेवाले जो गोपालथे वह सब भी अर्जुनके हाथसे यमलोकको गये ४० हे महाराज आपके निमित्त बड़ा पराक्रम करनेवाले आपके साले बृषक और अचल भी अर्जुनके हाथसे मारेगये ४१ इसीरीतिसे नाम और कर्मसे उग्रकर्मी बड़ा धनुर्धारी महाबाहु राजा शाल्व भीमसेनके हाथसे मारागया ४२ हे राजा मित्रके निमित्त युद्धमें पराक्रम करनेवाले ओघवान और बृहन्त दोनों एकसाथही यमलोकको गये ४३ इसीरीति से महा धनुर्धर रथियों में श्रेष्ठ क्षेमधूर्त्तीभी युद्धमें भीमसेनके हाथकी गदासे मारेगये ४४ ऐसेही बड़ाधनुषधारी महाबली जलसन्ध युद्धमें कठिन कर्मोंको करके बड़ेशब्दों को करताहुआ सात्विकीके हाथसे मारागया ४५ गधोंका रथ रखनेवाला राक्षसों का राजाअलंबुष पराक्रमकरके घटोत्कचके हाथसे यमलोकको पहुँचा ४६ कर्ण के पुत्र और भाई महारथी और सब केकयलोगभी अर्जुनके हाथसे मारेगये ४७ बड़े कठिन कर्मी मालव मद्रक और द्रविड़ यौधेय ललित्थ क्षुद्रक उशीनर ४८ मावेल्लकतुंडिकेर सावित्री के पुत्र और पश्चिमोत्तरीय वा पूर्वीय दाक्षिणीय राजा लोग ४९ पतियोंके और घोड़ोंके लाखों समूह रथ हाथियोंके झुंडोंसमेत मारडाले ५० ध्वजा शस्त्र कवच और वस्त्रोंसे अलंकृत शूरबीर जो बहुतकालसे बुद्धिमान लोगोंके द्वारा सर्वबातोंमें कुशल और पोषणकियेगये ५१ वह सुगमकर्मी युद्धमें अर्जुन के हाथ से मारेगये इसी प्रकार अन्य सेनाके लोग जो परस्पर मारनेकी इच्छा रखतेथे मारेगये ५२ हे राजा इनके बिशेष बहुतसे अन्य हजारों राजालोग अपनी सेनाओं समेत युद्ध में मारेगये ५३ इस रीतिसे कर्ण और अर्ज्जुनकी सन्मुखता में यह ऐसा घोर नाशहुआ जैसे कि इन्द्रके हाथ बृत्रासुर और श्री रामचन्द्रजी के हाथसे रावण मारागया ५४ और जैसे श्री कृष्णजी के हाथसे नरक और मुरनाम दैत्य युद्धमें मारेगये और जैसे श्री भार्गव परशुरामजी के हाथसे राजा कार्त्तवीर्य्य अर्थात् सहस्राबाहु मारागया ५५ इसीप्रकार वह युद्धमें दुर्मद शूरबीर कर्ण अपनी जाति और बांधवोंसमेत युद्धमें तीनोंलोकों के मोहन करनेवाले महाघोर संग्राम को करके मारागया ५६ जैसे स्वामिकार्त्तिक जी ने

महिषको रुद्रजी ने अन्धकको माराथा उसीप्रकार युद्धमें दुर्मद प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ द्वैरथकर्ण अर्जुनके साथ युद्ध करके मन्त्री और बांधवों समेत मारागया जिससे धृतराष्ट्र के पुत्रोंकी विजयकी आशा और शत्रुताका मुख उत्पन्न हुआ था ५७ । ५८ हे राजा पाण्डव लोग उसदोष से निवृत्तहुये जो पूर्व्व समय में भलाई चाहनेवाले बांधवों के समझाने से तुमनही समझे ५९ इसीकारण राज्य के चाहनेवाले पुत्रोंकी वृद्धिके चाहनेवाले तुमने वड़ानाशकारी यह महाघोर दुःखपाया और जो दुष्कर्मकिये उनका यहयोग्य फल पाया ६० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे तात संजय युद्धमें पाण्डवों के हाथसे मारेहुये मेरे शूरवीर लोग और हमारे वर्णनकियेहुये शूरवीरों के हाथसे मरेहुये पाण्डवों के शूरवीरों का वर्णनकरो १ संजय बोले युद्धमें वड़े पराक्रमी वलवान कुंतदेशी मन्त्री और बांधवों समेत श्री गांगेय भीष्मजी के हाथसेमारेगये २ और नारायण वा वाल-भद्रनाम अन्य शूरवीरलोग जो वड़े भगवद्भक्त थे युद्धमें वह सवभी वीर भीष्म के हाथसे मारेगये ३ और वह सत्यजित जोकि वड़ावली युद्ध में सत्य संकल्प अर्जुन के समान था लड़ाई में द्रोणाचार्य्य के हाथसे मारागया ४ और युद्धमें कुशल वड़ेधनुषधारी सव पांचाल देशीलोग युद्ध में सन्मुख होकर द्रोणाचार्य्य के हाथसे यमलोकको गये ५ इसीप्रकार मित्रके लिये पराक्रम करनेवाले राजा विराट और द्रुपद दोनों वृद्धभी युद्ध में द्रोणाचार्य्य के हाथ से मारेगये ६ हेस-मर्थ धृतराष्ट्र जो अर्जुन केशव जी और वलदेवजी से भी अजेय महारथियों में श्रेष्ठ मन्दमुसकान करनेवाला वालक अभिमन्यु शत्रुओं के वड़ेभारी नाशको करकेमुख्य उत्तमरथी जो अर्ज्जुन के पराजय करने में असमर्थ थे उन छःमहा-रथियों ने घेरकर मारडाला हे महाराज क्षत्रीधर्म में वर्त्तमान रथ से हीन शत्रु-हन्ता वीर अभिमन्यु को युद्ध में दुश्शासन के पुत्रनेमारा शत्रु हननेवाली सेना संयुक्त राजाअम्वष्ट का पुत्र श्रीमान मित्रके निमित्त पराक्रम करताहुआ युद्धमें दुर्य्योधनके पुत्र वीर लक्ष्मणको पाकर ७ । ११ और वड़े भारी नाशको करके यमलोक को गया वड़ाधनुषधारी अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्म्मद वृहन्त दुश्शासन

के साथ पराक्रम करके यमलोक को सिधारा और युद्ध में दुर्म्मद राजा मणिमान और दण्डधार १२ यह दोनों मित्रके निमित्त पराक्रम करनेवाले युद्ध में द्रोणाचार्यके हाथसे मारेगये और महारथी अंशुमान और भोजराज सेना समेत १३।१४ पराक्रम करके द्रोणाचार्य्य के हाथसे कालवशहुये और पुत्रसमेत१५ सामुद्र और चित्रसेन समुद्रसेन के पराक्रम से यमलोक को पहुँचाया गया अनूपवासी राजा नील और पराक्रमी व्याघ्रदत्त १६ यह दोनों अश्वत्थामा और विकर्ण के हाथसे यमपुरकोगये चित्रायुध चित्रयोधी यह दोनों भी बड़े नाशको करके १७ और चित्रमार्ग से पराक्रम करतेहुये युद्ध में कर्णके हाथसे मारेगये युद्ध में भीमसेन के समान और केकयदेशी शूरबीरों से संयुक्त १८ महापराक्रम करके अपने भाई केकेय के हाथसे मारागया हे महाराज गदासेयुद्ध करनेवाला पर्वत निवासी महाप्रतापवान तेजस्वी १९ आपके पुत्र दुर्मुखके हाथसे मारागया ग्रहों के समान प्रकाशित नरोत्तम रोचमान नाम दोनों भाई २० एकबार में द्रोणाचार्य्य के बाणों से स्वर्ग को पठायेगये हे राजा सन्मुख युद्धकरनेवाले पराक्रमी राजालोग २१ कठिनकर्मको करके यमकेलोकोंको सिधारे हे राजा सन्मुख युद्ध करनेवाले सव्यसाची अर्ज्जुन के मामा पुरजित और कुन्तभोज युद्ध में पराजयहोकर द्रोणाचार्य्य के बाणों से यमके लोकोंको प्राप्तहुये २२ अभिभूनाम काशीकाराजा काशीके अनेक शूर बीरों समेत युद्धमें बसुदान के पुत्रके हाथसे मारागया और बड़ा तेजस्वी युधामन्यु और महापराक्रमी उत्तमौजा २३ । २४ युद्धमें सैकड़ों शूरबीरों को मारकर हमारे बीरों के हाथसे मारेगये और पांचाल देशी मित्रवर्मा और क्षत्रवर्मा यह दोनों महाधनुषधारी द्रोणाचार्य के हाथसे यमलोकको भेजेगये २५ । २६ शूरबीरों में प्रधान शिखंडी का पुत्र क्षत्रदेव आपके पौत्र लक्ष्मणके हाथसे मारागया चित्रवर्मा और सुचित्र महारथी महाबली दोनों पिता पुत्र युद्धमें घूमतेहुये महावीर द्रोणाचार्य के हाथसे मारेगये २७ हे महाराज जैसे कि पर्व में समुद्र शांती को पाता है उसीप्रकार वार्धक्षेमी ने शस्त्रों के नाश होनेपर परमशांती को पाया २८ हे राजा शस्त्रधारी युद्ध में श्रेष्ठ सेनाविन्दुका पुत्र कौरवेन्द्र बाह्लीकके हाथ से मारागया और चंदेरीदेशियों में अत्यन्त उत्तम रथी धृष्टकेतु २९ । ३० कठिन कर्मको करके यमलोकको गया इसीप्रकार बड़ा बीर सत्यधृती युद्धमें बहुतोंको नष्टकरके ३१ पांडवों के निमित्त पराक्रम करने-

वाला यमके लोकको गया वह कौरवों में श्रेष्ठ सेनाविन्दुभी युद्धमें अनेकों को मारकर कालवशहुआ ३२ फिर शिशुपालका पुत्र राजासुकेतु युद्धमें कठिन कर्मी होकर द्रोणाचार्य्य के हाथसे मारागया ३३ इसरीति से पराक्रमी सत्यधृती वीर मदिराश्व और महाबली सूर्य्यदत्त द्रोणाचार्य्य के शायकों से मारेगये ३४ और युद्धकर्त्ता पराक्रमी श्रेणीमान् कठिन कर्म करके मारागया ३५ इसीप्रकार युद्ध में पराक्रमी परमअस्त्रज्ञ राजा मगधभी भीष्मजी के हाथसे मारागया और वह शत्रुहन्ता अब पड़ाहुआ सोताहै ३६ और विराटके पुत्र महारथी शंख और उत्तर दोनों बड़े कर्मको करके यमलोकको सिधारे ३७ और वसुवान् युद्धमें कठिन कर्मको करताहुआ पराक्रम करके द्रोणाचार्य्य के हाथसे मारागया ३८ हे राजा जिसको तुम पूछतेहो उस द्रोणाचार्य्य ने पराक्रम करके पाण्डवों के अनेक महारथीमारे ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय प्रधान पुरुषों का नाश होजाने से उस मरने से शेष बचीहुई अपनी सेनाको नहीं देखताहूं १ मेरे प्रयोजन से मरनेवाले उन दोनों महाधनुषधारी अतुलपराक्रमी कौरवों में श्रेष्ठ भीष्म और द्रोणाचार्य्यको सुनकर जीवनको मैं नहीं चाहताहूं २ मैं युद्धको शोभित करनेवाले मरेहुये कर्णको नहीं शोचताहूं जिसकी भुजाओंका पराक्रम दशहजार हाथीका था ३ हे संजय इस हेतुसे जैसे कि मेरी सेनाके मरेहुओंका तुमने वर्णन किया वैसेही यहभी कहो कि मेरी सेनामें कौन २ जीवताहै ४ अब आपके वर्णन कियेहुये इन बड़े २ शूरवीरों के मरजाने से शेष बचेहुये भी मरों के सदृश मुझको जानपड़ते हैं ५ संजय बोले हे राजा ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य ने जिसको अपने उत्तम दिव्य अस्त्र समर्पण करदिये ६ वह महारथी कर्मकर्त्ता हस्त लाघव करनेवाला दृढ़धनुष बाणों से युक्त पराक्रमी वेगवान् तेरे निमित्त युद्धाभिलाषी अश्वत्थामा अचल होकर विद्यमान है ७ यह आनर्त्त देश वासी हृदिक का पुत्र यादवों में श्रेष्ठ महारथी भोजवंशी कृतवर्म्मा आपकेही निमित्त युद्धकी इच्छा करनेवाला अभी विद्यमानहै ८ युद्ध में दुराधर्ष आपके पुत्रोंका पूर्व्व सेनापति शल्य जो अपना

बचन सत्य करने को अपने भानजे पाण्डवों को त्यागकर ६ जिसने युधिष्ठिर के आगे युद्धमें कर्ण के पराक्रम के नाश करने की प्रतिज्ञा को पूर्ण किया वह अजेय इन्द्र के समान पराक्रमी आपके निमित्त लड़ने की इच्छा करनेवाला नियत है १० और अपने कुल समेत राजा गान्धार, आजानेय, सिन्धदेशी, पर्वती काम्बोजदेशी सिंधी वनायुजनर्दीज इत्यादि ११ अनेकप्रकार के घोड़ों समेत तेरे लिये युद्धाकांक्षी बर्त्तमानहै १२ हे कौरवेन्द्र राजा कैकेयका पुत्र महारथी उत्तम घोड़ों समेत पताका युक्त रथपर चढ़कर आपके निमित्त युद्धका अभिलाषी अभी बर्त्तमान है १३ इसीप्रकार कौरवों में बड़ाबीर पुरमित्रनाम आप का पुत्र अग्नि और सूर्य्यकेवर्ण रथपर सवार होकर ऐसा बर्त्तमान है जैसे कि बादलों से रहित स्वच्छ आकाश में सूर्य्य प्रकाशमान होता है १४ भाइयों में नियत दुर्य्योधन सिंहकेसमान स्वभाववाला युद्धाभिलाषी सुवर्ण जटित रथकी सवारी में नियतहै १५ वह पुरुषों में बड़ाबीर सुवर्ण जटित कवचधारी कमल के समान प्रकाशित निर्धूम अग्नि के समान तुल्य राजाओं में ऐसा शोभायमान हुआ १६ जैसे कि बादलों में सूर्य्यका प्रकाश होताहै इसीप्रकार प्रसन्न चित्त युद्धाभिलाषी ढाल तलवार धारणकिये आपकेपुत्र सुषेण, चित्रसेन और सत्यसेन यह तीनों नियतहैं १७ हे भरतर्षभ शीलवान् उग्रशस्त्रधारी शीघ्रभोजी राजकुमार जरासन्धका प्रथमपुत्र अदृढ़ चित्रायुध श्रुतवर्मा जय शल्य सत्यव्रत दुःशल यह सब नरोत्तम सेनासमेत नियतहैं १८ और प्रत्येक युद्धमें शत्रुओं का हन्ता शूरों में प्रतिष्ठित कैतवोंका राजा राजकुमार रथ घुड़चढ़े हाथी और पत्तियों समेत चढ़ाई करनेवाले १९ और आपके निमित्त युद्धाभिलाषी बीर श्रुतायु धृतायु चित्रांगद और चित्रसेन भी अभी युद्धमें नियत हैं २० यह सब युद्धाभिलाषी प्रहारकर्त्ता प्रतिष्ठावान् सत्यप्रतिज्ञ नरोत्तम नियतहैं और कर्णकापुत्र सत्यप्रतिज्ञ युद्ध करने का उत्सुकभी अभी नियतहै २१ और कर्णकेदूसरे दो पुत्र उत्तम शस्त्रधारी हस्त लाघवी महाबली हैं वह आपके निमित्त युद्धाभिलाषी बीरोंके बँधेहुये व्यूहमें बर्त्तमानहैं वह भी साधारण अल्प पराक्रमियों से कठिनता पूर्व्वक विजय होनेवाले हैं २२ हे राजा इन अनेक असंख्य प्रभाववाले मुख्य २ बीरों से संयुक्त कौरवों का राजा दुर्य्योधन हाथियोंके समूहों के बीच महेन्द्रके समान विजय करने के निमित्त उपस्थितहै २३ धृतराष्ट्र बोले कि हमारे और पाण्डवों के जो शूर

वीर शेष बचेहुये जीवते हैं उनका तुमने वर्णनकिया इसको सुनकर मुझको बड़ा शोक होताहै परन्तु जो होनहारहै वह मिट नहींसक्ती २४ वैशम्पायन बोले कि इसरीति से वचनों को कहताहुआ अम्बिका का पुत्र धृतराष्ट्र अपनी उस सेना को जिसके बड़े २ वीर मारेगये और नाशको प्राप्तहुये उसमें से कुछ शेष बचेहुये सुनकर २५ दुःखसे व्याकुल होकर महामोहके वशीभूतहुआ और मोहितहोकर बोला कि हे संजय एक मुहूर्त्तठहरो २६ हे तात इस बड़ी अप्रिय वार्त्ताको सुनकर मेरा चित्त व्याकुलहै और मैं अंगोंसे भी शिथिल होगया हूं २७ वह अम्बिका सुत धृतराष्ट्र ऐसे वचन को कहकर भ्रान्तिसे युक्त होगया २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ वैशम्पायनजी युद्धमें कर्णको मृतक और पुत्रोंको नियत वर्त्तमान सुनकर उस महाव्याकुल राजा धृतराष्ट्रने क्या कहा १ पुत्रकी आपत्तियोंसे उत्पन्न होनेवाले महाकष्टको प्राप्तहोकर जो २ वर्णनकिया उसको मुझसे ब्यौरेवार कहिये २ वैशम्पायन बोले हे महाराज उसकर्णके मरनेको सुनकर जो कि श्रद्धा के अयोग्य और जीवोंके अपूर्व मोहका करनेवाला महाभयानक था जिसप्रकार कि मेरुपर्व्वतका चलायमान होना ३ और जैसे भार्गव परशुरामजी का अनुचित मोह और जैसे कि शत्रुओं के भयकारी इन्द्र देवताकी पराजय ४ और जैसे महातेजस्वी सूर्य्यका स्वर्गसे पृथ्वीपर गिरना और जैसे अविनाशी समुद्रकाजल सूखजाना बुद्धिसे बाहर अर्थात् असंभवहै ५ और जैसे पृथ्वी और आकाशकी नाशकारक अपूर्व्व वायु और जैसे शुभाशुभ दोनों कर्मोंकी निष्फलता होय ६ उसीप्रकार राजाधृतराष्ट्र युद्धमें कर्णके मरजानेको बुद्धिसे विचारकर और सेना नहीं है यह निश्चय करके ७ दूसरे जीवोंका भी नाशहोगा यह शोचकर शोकाग्निसे जलताहुआ ८ चित्तसे कम्पायमान ढीले अंग महादुःखी लम्बी दुःख की श्वासालेनेवाला होकर हाय हाय शब्दको कहता विलाप करनेलगा ९ धृतराष्ट्र बोले हे संजय सिंह और हाथी के समान पराक्रमी वृषभ के से स्कन्धवाला शीघ्रगामी महातेजस्वी शूरवीर कर्ण घूमने लगा १० जो उत्तम वज्र के समान दृढ़ देह महानरूप अपनेशत्रु महाइन्द्रके भी युद्धमें बली वर्द्धके समान

नहीं लौटता ११ और युद्धमें जिसके धनुषकी टंकारको सुनकर और बाणोंकी बर्षाको देखकर युद्धमें रथ घोड़े हाथी और मनुष्य नहीं ठहरसक्तेथे १२ और दुर्य्योधनने शत्रुओंके विजयकी इच्छासे जिस महाबाहुकी शरणलेकर पाण्डवों से शत्रुताकरी १३ वह असह्य पराक्रमी रथियोंमें श्रेष्ठ पुरुषोत्तमकर्ण युद्धमें अर्जुनके हाथसे कैसे मारागया १४ जिसअहंकारीने अपनेही भुजबलसे श्रीकृष्ण अर्जुन वा यादव और अन्य किसी क्षत्री को ध्यान नहीं किया अर्थात् किसी को कुछमाल नहींजाना १५ अर्थात् यही कहताथा कि मैं अकेलाही युद्धमें उन अजेय शार्ङ्ग धन्वा और गांडीव धनुषधारीको एक साथही उनको दिव्य रथसे गिराऊंगा यह अपनी प्रतिज्ञा उस लोभ से बिस्मर्णचिन्तासे अधोमुख राज्य के लोभी रोगग्रस्त दुर्य्योधनसे बारम्बार बर्णनकरी १६। १७ और उस कर्णने पूर्व्व समय में काम्बोज देशी अवन्तदेशी कैकयदेशी गान्धार मद्रक मत्स्य त्रिगर्त्तगण १८ शक पाञ्चाल बिदेह काशी कोशल सुम्हल अंग बंग निषाद पुण्ड्र चारक १९ वत्स, कलिंग, तरलअश्मक और ऋषिक देशियों को भी युद्ध में जीतकर बलिभृत् अर्थात् कर देनेवाला करदिया २० वह रथियों में श्रेष्ठ दिव्य अस्त्रोंकाज्ञाता महातेजस्वी धर्मरूप परम अस्त्रज्ञ अत्यन्त तीक्ष्णधार कंकपक्षसे युक्त सैकड़ों बाणोंकी बर्षासे दुर्य्योधनकी वृद्धिकेलिये सेनाका रक्षक सूर्य्यका पुत्र कर्ण कैसे २ युद्धोंको करके पाण्डव अर्जुनके हाथसे मारागया २१। २२ और जैसे कि देवताओं में इन्द्र बर्षा करनेवाला है उसीप्रकार कर्ण भी धनकी वृष्टिसे मनुष्यों पर बर्षा करनेवाला है इनदोनों के सिवाय लोकमें किसी तीसरे बर्षा करनेवालेको नहीं सुनते हैं जैसे घोड़ोंमें उच्चैश्श्रवा राजाओंमें कुबेर २३।२४ देवताओं में महाइन्द्र उत्तम है इसीप्रकार शस्त्र प्रहार करने में पृथ्वीपर कर्ण सब से उत्तमहै ऐसेसमर्थ पराक्रमसे शोभित शूरबीर राजाओं से अजेयकर्णने २५ दुर्य्योधनकी वृद्धिकेलिये संपूर्णपृथ्वीको विजय किया २६ और जिसको प्राप्तहोकर मगधके राजा जरासंधने यादव और कौरवों के सिवाय अन्य सब राजाओं को आधीनकरलिया उसकर्णको द्वैरथ युद्धमें अर्जुनके हाथसे मराहुआ सुनकर मैं शोकसमुद्रमें ऐसे डूबरहाहूं जैसे कि समुद्रमें टूटीनौका डूबती है २७ उसधनकी वृष्टि करनेवाले और रथियोंमें श्रेष्ठ कर्णको द्वैरथ युद्धमें मराहुआ सुनकर २८ मैं शोकसमुद्रमें ऐसे डूबनेको होरहाहूं जैसे कि समुद्रमें विना नौकाके मनुष्य होताहै

हेसंजय जो मैं ऐसे २ दुःखोंसेभी नहींमरूंगा २९ तो निश्चय करके मेरा हृदय वज्रसे भी कठोर शोकचिन्तासे फटजाने के योग्यहै और हे सूत संजय ज्ञातवाले और मित्रोंकी इस पराजयको सुनकर ३० मेरेसिवाय कौन सा पुरुषहै जो प्राणों को नहीं त्यागकरे मैं विषखाना अग्निमें प्रवेशहोना वा पर्व्वतके ऊपरसे गिरना चाहताहूं परन्तु मैं इन कठिन दुःखों के सहनेको समर्थ नहीं होसक्ता ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिधृतराष्ट्रवाक्येअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

संजय बोले कि अब सन्तलोग तुमको लक्ष्मीसे कुलसे यशसे तपसे और शास्त्रज्ञतासे नहुषके पुत्र ययातिके समान मानते हैं १ हे राजा शास्त्र में तुम महर्षि के समान कृतकृत्यहो आप अपनेको सावधान करो और व्याकुलताको त्यागो २ धृतराष्ट्र बोले मैं दैवको श्रेष्ठ मानताहूं निरर्थक उपायकरने को धिक्कार है जहां कि शालबृक्षके समान उन्नत महाबली कर्ण युद्ध में मारागया ३ वह महारथी युधिष्ठिर की सेना और पाञ्चालोंके रथसमूहों को मारकर और बाणों की वर्षा से सब दिशाओं को सन्तप्त करताहुआ ४ जैसे कि वज्रधारी इन्द्र असुरों को मोहित करता है उसीप्रकार युद्ध में पाण्डवों को मोहितकरके इस प्रकार से मृतक होकर सोता है जैसे कि वायुसे टूटाहुआ बृक्ष पृथ्वीपर पड़ा होता है ५ मैं शोक समुद्र के अन्त को नहीं देखता हूं मेरी चिन्ता की वृद्धि और मरने की इच्छाभी उत्पन्न होती है ६ हे संजय मैं कर्ण के मरने को और अर्ज्जुनकी विजयको सुनकर कर्ण के मारेजाने को श्रद्धा विश्वाससे अयोग्य जानताहूं ७ निश्चयकरके मेराहृदय वज्रके समान दुःखसे फटनेवाला है जो पुरुषोत्तम कर्णको मृतक सुनकर भी नहीं फटता है ८ पूर्व्वसमयमें देवताओं ने मेरी आयु बहुतबड़ी विचारकरी है इसहेतुसे कि कर्णको भी मृतक सुनकर अभी पृथ्वीपर महादुःखी जीवताहुआ वर्त्तमानहूं ९ हे संजय मुझ सुहृदजनोंसे रहित के इस जीवनको धिक्कारहै जिससे कि मैंने इस दुर्द्दशाको पाया १० मैं निर्बुद्धी सबके शोच के योग्य होकर दुःखी रहूंगा और पूर्व्वकाल में सबलोक में मान्य होकर ११ शत्रुओं से तुच्छ कियाहुआ मैं कैसे जीवनको समर्थहूंगा हे सूत संजय मैंने भीष्म द्रोणाचार्य्य के मरणसे उत्पन्न होनेवाले शोकसे महादुःखदायी

आपत्तिको पायाहै १२ युद्धमें कर्ण के मरनेपर भीष्म द्रोणाचार्य्य और महात्मा कर्ण के मरने से मैं शेष बचीहुई सेनाको नहीं देखताहूं १३ क्योंकि वह शूरबीर कर्ण मेरे पुत्रोंको युद्धरूपी नदी में नौकारूप होकर बीरोंकी लड़ाई में अनेक शायकों को बरसाताहुआ मारागया १४ उस पुरुषोत्तमके बिना मेरा जीवन वृथाहै निश्चयकरके शायकों से पीड़ित होकर अतिरथी कर्ण रथसे ऐसे गिर पड़ा १५ जैसे कि बज्रके पातसे पर्व्वतका टूटाहुआ शिखर पृथ्वीपर गिरता है निश्चयकरके वह रुधिर में भराहुआ पृथ्वीको शोभितकरके ऐसा सोता है जैसे कि मतवाले हाथी से गिरायाहुआ हाथी होताहै यही धृतराष्ट्रके पुत्रका बलथा जिससे कि पाण्डवों को बड़ा भयथा १६ । १७ वह धनुषधारियों का ध्वजारूप कर्ण अर्ज्जुन के हाथसे मारागया हाय वह धनुषधारी मित्रोंका निर्भय करने-वाला बीर कर्ण मराहुआ ऐसा सोताहै १८ जैसे कि देवताओं के इन्द्रका घात कियाहुआ पर्व्वत होता है जैसे कि पंगु मनुष्यका मार्ग चलना और कंगाल निर्द्धनकी धनकी इच्छा करना वृथाहै १९ इसीप्रकार दुर्य्योधन के मनकी इच्छा कठिनतासे प्राप्तहोने के योग्यहै जैसे कि जलके अंबुकण श्वासके दुःखसे उल्लं-घनके योग्यहै अहंकारी नीच दुःखी मन और पराक्रमहीन २० । २१ क्या मेरा पुत्र दुश्शासन भी मारागया हे तात क्या उसने युद्धमें भयकारी कर्म्मोंको नहीं किया २२ जैसे कि अन्य क्षत्रिय मारेगये उसीप्रकार कहीं शूरबीर दुर्य्योधन तो नहीं मारागया युधिष्ठिर सदैव कहतारहा कि युद्ध मतकरो २३ परन्तु दुर्य्योधन ने उसको ऐसे नहीं स्वीकार किया जैसे कि अज्ञान मनुष्य नीरोग करनेवाली औषधीको नहीं अंगीकार करताहै बाणशय्यापर सोनेवाले महात्मा भीष्मजी ने जलकी इच्छाकरी २४ तब उस अर्ज्जुन ने पृथ्वी के तलको तोड़ा उस अ-र्ज्जुनके हाथसे उत्पन्नहुई जलधाराको देखकर २५ उस महाबाहुने कहा कि हे तात पाण्डवों के साथ सन्धिकर निश्चयकरके सन्धिसे सुखहोगा और तुम्हारा युद्ध मेरेही अन्ततकहोय २६ तुम सजातियों समेत प्रीतिपूर्व्वक पृथ्वीकोभोगो परन्तु उसने न माना और उसके वचनको शोचताहै २७ हे संजय वह दूरंदेशी वचन अब आगे दिखाई देते हैं और मैं मन्त्री वा पुत्रों से रहितहुआ २८ और द्यूतखेलने से ऐसे बन्धन में पड़ा जैसे कि परकेंच पक्षी होताहै हे संजय जैसे कि अत्यन्त प्रसन्न बालक पक्षीको पकड़कर पक्षकाटकर २९ मारतेहुये छोड़देते हैं

और वह अपने पक्ष टूटजाने से चल नहीं सक्ताहै ३० इसीप्रकार सब मनोरथों से रहित और बांधवआदि से पृथक् मैंभी टूटेपक्षवाले पक्षी के समान वर्त्तमान हूं ३१ महादुःखी शत्रुके आधीन होकर मैं किस दशाको पहुँचूंगा ३२॥

इतिश्रीमन्महाभारतेकर्णपर्व्वणिधृतराष्ट्रशोकेनवमोऽध्यायः ९॥

दशवां अध्याय॥

वैशंपायनबोले कि इसरीतिसे महादुःखी व्याकुल चित्त धृतराष्ट्र इसरीतिसे विलापकरके फिर संजयसे कहनेलगे १ कि जिसने सब काम्बोज अंबष्ट गांधार और विदेहोंको कैकंयलोगोंसमेत विजयकिया और युद्धमें प्रयोजनके निमित्त विजयकराके २ जिसने दुर्य्योधन के लिये पृथ्वी को विजयकिया वह बाहुशाली शूरवीरशल्य युद्धमें पाण्डवों के हाथसे विजय कियागया ३ हे संजय उसबड़ेधनुष सन्तोपही के अर्थ होते हैं उसीप्रकार दूसरे प्रकारसे विचार कियाहुआ कर्म और ही प्रकारसे होताहै दैव बड़ा बलवान्है और कालधारी कर्णके मरनेके पीछे युद्ध में कौन २ से बीर सन्मुखहुये वह मुझ से कहौ ४ कहीं अकेलाही युद्ध करता हुआ पाण्डवोंके हाथसे तो नहीं मारागया हे तात जैसे वह बीर मारागया उसका वृत्तान्त तुमने प्रथमही कहा सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ शिखण्डी ने अपने सन्मुख न होनेवाले भीष्मपितामहको युद्धमें उत्तम २ बाणोंसे मारा ५। ६ इसीप्रकार धृष्टद्युम्नने युद्धमें शस्त्र त्यागनेवाले महाधनुषधारी योगाभ्यासमें नियत द्रोणाचार्य्यको बहुत बाणोंसे घायलकिया ७ हे संजय वह द्रोणाचार्य्य खड्गकेद्वारा धृष्टद्युम्नके हाथसे मारेगये यह दोनों बीर समयपाकर छलसेही मारेगये ८ मैंने इन गिरायेहुये भीष्मको सुना मैं निश्चय जानताहूं कि आप वज्रधारी इन्द्रभी युद्ध में भीष्म और द्रोणाचार्य्यको नही मारसक्ताथा जब कि यह दोनों न्यायके अनुसार युद्धकरें मैं इसबात को सत्य २ कहता हूं कि युद्ध में बड़ेदिव्य अस्त्रों के छोड़नेवाले इन्द्रके समान बीर कर्णको कैसे बहुतोंने पकड़ा इन्द्रने बिजली के समान प्रकाशित दिव्य सुवर्णसे अलंकृत ९। १०। ११ शत्रुओंके मारनेवाली शक्ती जिसको कुंडलों के बदले में दी और जिसका बाण सर्पमुख दिव्य और सुवर्णसे जटित १२ शत्रुओंका मारनेवालाथा वह चंदनसे चर्चितहोकर पृथ्वीपर सोताहै जिसने भीष्म द्रोणाचार्य आदि बड़े २ बीर महारथियोंका भी अपमान

किया और श्रीपरशुरामजी से महाघोर ब्रह्मास्त्रको सीखा और जिस महाबाहु ने द्रोणाचार्य्य आदिको मुख मुड़ाहुआ बाणों से पीड़ित देखकर १३ । १४ अभिमन्युके धनुषको अपने तीक्ष्णबाणोंसे काटा और जिसप्रकार दशहजार हाथी के १५ समानबली वज्रके समान बेगवान् दुराधर्ष भीमसेनको अकस्मात् रथसे बिरथकरके हँसताहुआ गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से सहदेव को विजयकरके १६ धर्म और कृपालुताके ध्यान से बिरथकरके नहीं मारा जिसने बिजयाभिलाषी महामायावी १७ राक्षसोंके राजा घटोत्कचको इन्द्रकी शक्ती से मारा इतने दिनतक उससे भयभीत अर्जुनने १८ युद्धमें जिसके द्वैरथ संग्रामको प्राप्त नहीं किया वह वीरपुरुष कैसे युद्धमें मारागया जिसका न रथटूटा न धनुषटूटा और अस्त्रोंका भी नाश न हुआ वह कर्ण शत्रुओं के हाथसे कैसे मारागया उस बड़े धनुष के चढ़ानेवाले घोरबाण और दिव्यअस्त्रोंको युद्धमें छोड़नेवाले सिंहकेसमान बेगवान् पुरुषोत्तम कर्ण के बिजय करनेको कौन समर्थ है १६ । २० । २१ उसका धनुष अवश्य टूटा वा रथ पृथ्वीपर गिरा अथवा शस्त्रों का नाश होगयाथा जिससे कि उसको मराहुआ मुझसे बर्णन करताहै २२ उसके नाश होनेसे मैं अन्य सबको भी नाशमान देखता हूं उसका प्रणथा कि जबतक अर्जुनको नहींमारलूंगा तब तक नतो अपने चरणोंको धोऊंगा न युद्धमें पैदलहोकर चलूंगा जिसमहात्मा का यह महाघोर प्रणथा कि जिसके भयसे भयभीत धर्मराज पुरुषोत्तम युधिष्ठिर ने २३ । २४ तेरहवर्षतक सदैव आनन्दसे जीवनको नहीं पाया जिस पराक्रमी महात्माके पराक्रममें मेरेपुत्रने आश्रयलेकर पांडवोंकी स्त्री द्रौपदीको बड़ेबलसे सभामें बुलाया वहांभी सभाके मध्यमें पांडवोंके देखतेहुये २५ । २६ कौरवों के सन्मुख द्रौपदी से बोला हे दासकी भार्या कृष्णा तेरे पति नहीं हैं किन्तु सबके सब षंढतिल अर्थात् थोथे तिलके समानहैं २७ हे सुन्दरी तू दूसरेपतिकेपास वर्त्तमानहो जिस कर्णने सभाके मध्यमें ऐसे २ असभ्य और रूखे दुर्बचन द्रौपदी से कहे वह शत्रुओं के हाथसे कैसे मारागया २८ उसने यहभी कहाथा कि हे दुर्योधन जो युद्धमें प्रशंसनीय भीष्म और युद्धदुर्म्मद द्रोणाचार्य पक्षपात करके कुन्तीके पुत्रोंको नहीं मारेंगे तो मैं सबको मारडालूंगा तू अपने मनकी चिन्ताको दूरकरदे २६।३० गांडीव धनुष और अविनाशी दोनों तूणीर इस उत्तमचन्दनसे लिप्त सन्मुखदौड़नेवाले मेरे बाणका क्या करसक्तेहै ३१ वह महादोषयुक्त कर्ण नि-

श्रयकरके अर्जुनके हाथसे कैसे मारागया गांडीवधनुषसे छूटेहुये बाणों के उदग्र-स्पर्शकी चिन्तारहित द्रौपदी से यहकहतेहुये कि हे कृष्णा तू विनापतिकी है जिस कर्ण ने पांडवों को देखा और अपने भुजाका आश्रयलेकर जिसको श्रीसमेत सपुत्र पाण्डवोंसे जराभी भयनहींहुआ हे संजय उसका मारना देवताओं समेत इंद्रसेभी कठिनथा ३२।३३।३४ हे तात उसको सन्मुख दौड़नेवाले पाण्डवलोग कैसे मारसक्तेहैं धनुषज्याके स्पर्श करनेवाले अथवा हस्तत्राणकेद्वारा पकड़नेवाले कोई धनुषधारी मनुष्य कर्ण के सन्मुख होने को समर्थ नही हैं पृथ्वी चन्द्र और सूर्य्य चाहौ अपनी किरणों से रहितहोजायँ ३५।३६ परन्तु युद्धमें मुख न मोड़ने वाले पुरुषोत्तमका मरण नहीं है जिसके कारण प्रारब्धहीन दुर्बुद्धी दुर्योधन ने सदैव भाई दुश्शासन समेत ३७ वासुदेवजी के उत्तरहीको अंगीकार किया मैं यह जानताहूं कि वह मेरा पुत्र दुर्योधन बड़े दोषयुक्त कर्णको पराजय और दु-श्शासनको मराहुआ ३८ देखकर शोचको करताहै हे संजय द्वैरथ युद्धमें अ-र्जुनके हाथसे कर्णको मराहुआ सुनकर ३९ और बिजय करनेवाले पाण्डवोंको देखकर दुर्योधनने क्याकहा वा दुर्मर्षण और वृषसेनको युद्धमें मृतकदेखकर ४० और अपनीसेनाको महारथियोंसे घायलहोकर भागतीहुई देखकर और भागनेकी इच्छावान् मुखमोड़नेवाले राजाओं और रथियों को घायल देखकर शोचकरता है ४१ अथवा दुर्योधनने उस शासनाके अयोग्यपलायमान इन्द्रियों के वशीभूत ४२ सेनाको उत्साहसे रहित देखकर क्या कहा और जिनके बहुत मनुष्य मारेगये उन राजाओं से घिरेहुये आप शत्रुता करनेवाले दुर्योधनने क्याकहा और युद्ध में रुधिर पीनेवाले भीमसेनके हाथसे मरेहुये भाई दुश्शासनको देखकर क्याकहा और सभामें जो राजागान्धारके सन्मुख कहाथा कि कर्ण युद्धमें अर्जुनको अवश्य मारेगा उस कर्णके मरनेपर क्या कहा ४३।४४।४५ पूर्व्वसमयमें सौबलके पुत्र शकुनीने द्यूतरचकर पाण्डवोंको ठगकर ४६ कर्णके मरनेपर क्या कहा यादवोंमें महारथी हार्दिक्यकेपुत्र बड़े धनुषधारी कृतवर्माने ४७ कर्णको मृतक देखकर क्या कहा क्षत्रिय वैश्य धनुर्वेदके जाननेके आकांक्षी जिस बुद्धिमान् अश्वत्थामाकी शिक्षाको प्राप्तकरते हैं उस बड़े प्रतापी यशस्वी तरुण बयवाले धनुर्द्धारी अश्व-त्थामा ने कर्ण के मरनेपर क्या कहा ४८।४९ जो गौतमकेपुत्र महाधनुर्द्धारी धनुर्वेद के आचार्य्य कृपाचार्य्य हैं हे तात उन्होंने कर्ण के मरनेपर क्या कहा

और रथियों में श्रेष्ठ मद्रदेशाधिपति पराक्रमी युद्धमें शोभायमान राजा शल्यने अपने सारथीपने में कर्णको मृतक देखकर क्याकहा ५०। ५१। ५२ इनके सिवाय और सब दुराधर्ष धनुषधारी राजाओं ने युद्ध में कर्णको मरा देखकर क्या कहा और जो २ इसपृथ्वी के राजा यहां युद्धकरने को आये उन सबोंने ५३ कर्णको मराहुआ देखकर कौन २ से बचनकहे हे संजय उस रथियों में श्रेष्ठ नरोत्तमबीर कर्ण के मरनेपर ५४ कौन २ सेनाके सेनाध्यक्ष हुये और रथियोंमें श्रेष्ठ मद्रदेश का राजा शल्य कर्णके सारथ्य कर्ममें कैसे नियत कियागया यह सब वृत्तान्त मुझसे ब्योरे समेत वर्णनकरो ५५ युद्धकरनेवाले कर्णके दाहिने रथके चक्रकी किसने रक्षाकरी और बायें चक्रकी और पृष्ठभागकी किस २ ने रक्षाकरी ५६ किसने कर्ण का संग न छोड़ा और कौनसे नीच भागगये और तुम्हारे भाग जाने से महारथी कर्ण कैसे मारागया ५७ और जिसप्रकार बादलों से जल की धारा गिरती हैं उसीप्रकार बाणोंकी बर्षाकरते हुये महारथी शूरबीर पाण्डव कैसे सन्मुखहुये ५८ हे संजय उसयुद्धमें बाणोंमें श्रेष्ठ कर्णका वहदिव्यबाण कैसे निष्फलहुआ उसको मुझसे कहो ५९ प्रधान पुरुषके न होनेसे मैं अपनी शेष बचीहुई सेनाको नहीं देखता हूं ६० उन बीर धनुर्धारी मेरेलिये जीवनके त्यागने-वाले भीष्म और द्रोणाचार्य्यको मृतक देखकर अब मेरा जीवना निरर्थकहै ६१ मैं पाण्डवों के हाथसे मरेहुये कर्णको बारम्बार स्मरण करके शान्तीको नहींपाता हूं जिसकी कि भुजाओंका बल दशहजार हाथियों के समान था ६२ हे संजय द्रोणाचार्य्य के मरनेपर युद्धमें शत्रुओं के हाथसे नरोत्तम कौरवोंका जो वृत्तांत हुआ वह मुझसेकहो ६३ और जैसे कर्ण कुन्तीके पुत्रोंसे युद्ध करने को प्रवृत्त हुआ और युद्धमें जैसे मारागया उसको भी ठीक २ कहो ६४॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिधृतराष्ट्रप्रश्नेदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले हे भरतवंशी महाराज उस दिन बड़े धनुर्धारी द्रोणाचार्य्य के मरने और महारथी अश्वत्थामा के निष्फल संकल्प करने १ और कौरवों की समुद्ररूपी सेनाके भागनेपर अर्जुन अपनी सेनाको व्यूहित करके भाइयोंसमेत युद्ध में नियतहुआ २ उस समय आपके पुत्र ने उस सन्मुख नियत होनेवाले

अर्जुनको जानकर अपनी भागतीहुई सेनाको भागने से रोंका ३ और अपने भुजबल से सेनाको रोंककर दुर्य्योधन पाण्डवों के साथ विलम्बतक युद्ध करके ४ संध्यासमय जानकर विजयी और विलम्बतक विचारनेवाले शत्रुओंसमेत अपनी सेनाको विश्राम कराया ५ सेनाके विश्रामको कर अपने डेरे में पहुँचकर कौरवों ने परस्परकी निर्विघ्नता का विचार किया ६ वहुमूल्य आस्तर्ण वा शय्या और आसनों पर बैठेहुये उन लोगों ने ऐसे सलाहकरी जैसे कि देवता लोग सुखशय्याओं पर ७ बैठेहुये सलाहों को करते हैं इसकेपीछे राजादुर्य्योधन प्यार और मृदुभाषणसे उन धनुषधारियों के सन्मुखहोकर समयके अनुसार इन वचनों को बोला कि हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ तुम सव अपनी २ राय को शीघ्रता से कहौ विलम्ब मतकरो हे राजालोगो ऐसी दशा में क्या करना उचित है और कौनसी वात अवश्यकरने के योग्यहै ८ । ९ संजयनेकहा कि इसप्रकार महाराज दुर्य्योधन के कहने पर सिंहासनों पर वर्त्तमान युद्धाभिलाषी नरोत्तमों ने अनेक प्रकारकी चेष्टाओं को किया १० युद्ध में प्राणों के होमकरने के अभिलाषी उन लोगोंकी चेष्टाओंको देखकर और वालसूर्यके समान तेजस्वी राजाके स्वरूपको देखकर ११ शास्त्रों के ज्ञाता बुद्धिके स्वामी वार्त्तालापके जाननेवाले अश्वत्थामाजी ने वर्णनकरना प्रारंभकिया कि स्वामीकी भक्ति और देश कालका पहिचानना और वल वा नीति से प्रयोजन की सिद्ध करनेवाले १२ उपाय पण्डितों ने कहे हैं वह उपाय दैवके आधीन हैं हमारे जो महारथी वीर देवताओं के समान १३ नीतिमान भक्तिमान और सावधानता में योग्यथे वह तो मारेगये परन्तु हमलोगोंको विजय से निराश होना भी न चाहिये १४ इस लोक में अच्छी रीति से कियेहुये नीति आदि सव अर्थों से दैव भी अनुकूल किया जाता है हे राजा वह लोग हम सबों में अत्यन्त श्रेष्ठ गुणों से भरेहुये १५ कर्णकोही सेनापति के अधिकार पर अभिषेक करावेंगे और कर्ण को सेनापति करके शत्रुओं को मारेंगे १६ निश्चय करके यह बड़ा पराक्रमी शूर वीर अस्त्रज्ञ युद्ध में दुर्म्मद यमराज के समान असह्य लड़ाई में शत्रुओं के विजय करनेको इन्द्रकेही समानहै १७ हे राजा अश्वत्थामाके इस वचनको सुनकर आपके पुत्रने कर्णमें यह बड़ा भरोसा किया १८ कि भीष्म और द्रोणाचार्य के मरनेपर यही पाण्डवोंको मारेगा इस आशा को हृदय में धारण करके बड़ा

विश्वासयुक्त होकर १६ प्रसन्नचित्त दुर्योधन उस प्रीति सत्कारसे युक्त प्रियतम अपनी वृद्धि करनेवाले बचनको सुनकर २० अपने मनको अच्छीरीतिसे दृढ़करके अपनी भुजाओं के वल में रक्षितहोकर कर्ण से यह बचनबोला २१ कि हे कर्ण मैं तेरे पराक्रम को और अपने ऊपर जो तेरी प्रीति है उसको अच्छी रीति से जानताहूं हे महाबाहो मैंभी तुमसे सुन्दर फलयुक्त बचनकहूंगा २२ मेरे सेनापति अतिरथी भीष्म और द्रोणाचार्य्य मारेगये उनसे भी अधिक आप पराक्रमीहोकर सेनापति हूजिये २३। २४ वह दोनों वृद्ध महाधनुषधारी अर्जुन से मेलरखते थे हे कर्ण मैंने तेरेकहने से दोनोंकी बड़ीप्रतिष्ठा करीथी २५ हेतात भीष्मजी ने अपनेको बाबा समझकर बड़ेयुद्ध में दशों दिनतक पाण्डवोंकी रक्षाकरी २६ आपके शस्त्ररहित होने पर शिखण्डी को आगेकरके अर्जुन के हाथसे भीष्मपितामह मारेगये २७ हे पुरुषोत्तम उस पुरुषसिंह के मरने और शरसय्यापरबिराजमान होनेपर तेरे कहने से द्रोणाचार्य्य संग्राम में सन्मुख हुये २८ उन्होंने भी अपना शिष्य जानकर पाण्डवों की रक्षाकरी वह बृद्धभी शीघ्रतासेही धृष्टद्युम्न के हाथसे मारेगये २६ इन दोनों प्रधान पुरुषों के मरनेसे चिन्तायुक्तहोकर मैं तुझबड़े पराक्रमी के समान किसी शूरबीरको नहीं देखताहूं हमलोगों के बीचमें आपही आदि मध्य और अन्तमें विजय करनेको समर्थहो और जिसरीति आपने सदैव मेरा हितकियाहै ३०। ३१ उसीप्रकार आप बैलकेसमान धुरके उठाने के योग्यहो मैं आपको सेनापतिके अधिकारपर अभिषेक करूंगा ३२ जैसे कि देवताओं के सेनापति प्रभु अविनाशी स्वामिकार्त्तिकजी हैं उसीप्रकार आप मेरी सेनाकी रक्षाकरो ३३ जैसे कि महाइन्द्र युद्धमें दानवों को मारताहै उसीप्रकार आपभी हमारे शत्रुओंको मारिये तुमको सन्मुख देखकर महारथी पाण्डव और पांचाललोग ऐसे युद्ध में से भागेंगे जैसे कि विष्णुजी को देखकर दानव भागते हैं इसहेतुसे हे पुरुषोत्तम तुम इस बड़ीसेनाको अपनी रक्षा में करो ३४। ३५ आपको युद्धमें उपाय करताहुआ देखकर मंत्रियों समेत पांडव सृंजय और पांचालदेशी यह सब भागेंगे ३६ जैसे उदयहुआ सूर्य्य अपने तेजसे तपाताहुआ महाघोर अन्धकारको विध्वंस करताहै उसीप्रकार तुमभी शत्रुओंको तपाओ ३७ संजयबोले हे राजा आपके पुत्रकी यही आशा प्रबलहुई कि भीष्म और द्रोण के मरनेपर यह कर्ण पाण्डवों को अवश्य मारेगा ३८ इस आशाको हृदय में

धरकर इसप्रकार कर्ण से बोला हे कर्ण वह अर्ज्जुन तेरे सन्मुख युद्ध करनेकी इच्छा नहींकरताहै ३९ कर्णबोला हेगांधारी के पुत्र मैंने प्रथमही यह तुझसे कहा है कि मैं पुत्र पौत्र और श्रीकृष्णजीसमेत सबपांडवोंको विजयकरूंगा ४० मैं निस्सं-देह तेरा सेनापति बनूंगा हेमहाराज आप तय्यार हूजिये और पाण्डवोंको विजय कियाजानो ४१ संजय बोले हे महाराज इसबातके सुनतेही राजादुर्य्योधन अपने राजाओं समेत ऐसा उठा जिसप्रकार देवताओं समेत इन्द्र उठता है ४२ अर्थात सेनापति बनाने के लिये कर्ण के सत्कार करनेको ऐसा उठा जैसे कि स्वामिका-र्त्तिकके अभिषेक कराने को देवताओं समेत इन्द्र उठाथा इसके पीछे विजया-भिलाषी उन सब राजाओं ने जिनका अग्रगामी दुर्य्योधन था सुवर्ण के कलश और अभिमंत्रित मृण्मयपात्र हाथी के दांतके पात्र गैंड़ेके सींगके पात्र वा अन्य यज्ञपशुओं के दांतों के पात्र मणि मोतियोंसे आच्छादित वा बहुतसी सुगन्धित द्रव्यों से युक्त जलपूरित पात्र और गंधाक्षत आदि अभिषेक की वस्तुओं से बेदोक्त मन्त्रों के द्वारा कर्णका अभिषेक कराया ४३ । ४४ । ४५ ब्राह्मण क्षत्री बैश्य और अंगीकार कियेहुये शूद्रों ने भी उस महात्मा कर्णको प्रसन्न किया जो कि शास्त्रोक्त वुद्धिकी श्रेष्ठरीतिसे इकट्ठे कियेहुये सामानों समेत स्नान कियेहुये रेशमी बस्त्रों के बिछौनों से युक्त तांबेके उत्तम आसनपर बिराजमानथा ४६।४७ हे राजेन्द्र फिर अभिषेक होजानेपर शत्रुहन्ता कर्ण ने निष्क और गोधन देकर ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन कराया ४८ उससमय बन्दीजन और ब्राह्मणों ने उस पुरुषोत्तमसे यह कहा कि तुम गोविन्दजी आदि सब साथियों समेत पाण्डवों को विजयकरो ४९ हे कर्ण तुम हमारी बिजयके निमित्त पांचालोंसमेत सब पा-ण्डवों को ऐसेमारो जैसे कि सदैव होनेवाला सूर्य्य बड़े अन्धकारको दूर करता है ५० आपके बाणोंको केशवजी समेत पाण्डवलोग देखनेको भी ऐसे समर्थ न होंगे जैसे कि सूर्य्यकी प्रकाशित किरणों के देखनेको उलूक पक्षी नहीं समर्थ होसक्ताहै ५१ युद्धमें तुझ शस्त्रधारी के सन्मुख पाण्डव नियतहोनेको ऐसेसमर्थ नहीं हैं जैसे कि महाइन्द्र के सन्मुख दैत्य दानव नियत नही होसक्ते ५२ अभि-षेक कियाहुआ वह कर्ण बड़े तेजसे दूसरे सूर्य्य के समान प्रकाशमानहुआ ५३ तब काल से प्रेरित आपके पुत्र ने कर्ण को सेनापति के अधिकार पर अभिषेक कराके अपनेको सिद्धमनोरथ समझा ५४ हे राजा बिजयी कर्णनेभी सेनापति

होकर सूर्य्योदयके समय सेनाके तय्यार होनेको आज्ञादी ५५ फिर वहां आपके पुत्रों समेत वह कर्ण ऐसा शोभितहुआ जैसे कि तारकासुर के युद्धमें देवताओं समेत स्वामिकार्त्तिकजी शोभित हुयेथे ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णाभिषेकेएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि जब सूर्य्य के पुत्र कर्ण ने सेनापति पदवीको पाकर राजा दुर्य्योधन से भाई के समान मृदुभाषणको सुनके १ सूर्य्योदय के समय असंख्य सेनाकी तैयारीकेलिये आज्ञादेकर क्या कामकिया हे संजय उसको मुझे समझा-के कहो २ संजयबोले हे भरतर्षभ आपके पुत्रोंने कर्णके अभिप्रायको जानकर सेनाकी तैयारी के लिये आज्ञा करी जिसमें आनन्दमंगल सूचक बाजे आगे चले ३ और पिछलीरात्रि में अकस्मात् आपकी सेनामें तैयारी करनेका शब्द आधिक्यतासे हुआ ४ इसकेपीछे अलंकृत उत्तम हाथी रथ मनुष्य पदाती घोड़े ५ और शीघ्रता करनेवाले और परस्परमें बोलनेवाले शूरबीरों के महाकठिन शब्द आकाशतक व्याप्तहुये ६ इसके पीछे श्वेतपताका और हंसके वर्ण घोड़े सुवर्ण पृष्ठी धनुष नागकुक्षीध्वजा ७ सैकड़ों तूणीरों से युक्त बाजूबन्द और कवचों को धारणकरनेवाले शतघ्नी किंकिणी शक्ति शूल और तोमरोंसे भरेहुये धनुषोंसे युक्त निर्मल सूर्य के समान प्रकाशमान बायु के विपरीत होने से सन्मुख पताका वाले रथकी सवारियोंसे ८ । ९ और स्वर्णमयी जालोंसे अलंकृत शंखको बजा-ता स्वर्णमयी धनुषको हिलाताहुआ कर्णचला हे श्रेष्ठ नरोत्तम वहां कौरवोंने उसबड़े धनुषधारी रथारूढ़ सूर्य्यके समान प्रकाशित असह्य तेजसे अन्धकारको दूरकरतेहुये १० । ११ कर्णको देखकर किसीनेभी भीष्म द्रोणाचार्य्य और अन्य २ बीरोंके दुःखोंको नहीं माना १२ इसके पीछे शंखध्वनि के द्वारा शूरवीरों को चै-तन्य करतेहुये कर्णने कौरवोंकी बड़ीसेना को आकर्षण किया १३ इसरीति से महाधनुषधारी शत्रुसंतापी कर्ण मकरव्यूह को रचकर पाण्डवों के विजय की इच्छासे सन्मुखचला १४ हे राजा उस मकरव्यूह के मुखपर तो कर्ण नियतहुआ नेत्रों के समीप महारथी शकुनी और शूरवीर उलूक नियतहुये शिरपर अश्व-त्थामा और ग्रीवापर सब सगेभाई और कटिभागपर बड़ी सेनासमेत आप राजा

दुर्य्योधन नियतहुआ १५ । १६ और बामपादपर नारायण और गोपालनाम सेनासे युक्त दुर्मद कृतवर्मा नियतहुआ और बड़े धनुषधारी त्रिगर्त्तदेशी सत्यपराक्रमी कृपाचार्य जी दक्षिण चरणके समीप नियतहुये १७ । १८ और मद्रदेशी बड़ी सेनासमेत राजा शल्य बांयें चरण के पीछे और हजाररथ और तीनसौ हाथियों समेत सत्यसंकल्प सुषेण दक्षिण चरणके पीछेहुआ १९ । २० बड़ी सेना समेत बड़े पराक्रमी दोनों भाई राजाचित्र और चित्रसेन पुच्छपर नियतहुये २१ हे राजेन्द्र इसरीति से नरोत्तम कर्ण के चलनेपर धर्मराज युधिष्ठिर अर्जुनकी ओर देखकर यहबोले २२ कि हे बीर अर्जुन देखो जैसे जैसे इसयुद्धमें शूरवीर महारथियों से रक्षित दुर्योधनकी सेना कर्णने अलंकृतकरी २३ वह दुर्योधनकी बड़ी सेना वही है जिसके बड़े २ बीर मारेगये हे महाबाहो यहशेष वचीहुई है आशय यह है कि यह सेना मेरी बुद्धिसे तृणोंकी समानहै २४ इस सेना भरमें अकेला धनुषधारी कर्णही प्रकाशितहै यह रथियों में श्रेष्ठ कर्ण देवता असुर किन्नर गंधर्व नाग पिशाच और २५ तीनों लोकोंके स्थावर जंगमों से महादुर्जयहै हे महाबाहु अर्जुन अब इसकेही मारनेपर तेरी पूर्ण विजयहै २६ इसके मरनेपर बारहवर्षका मेरा कंटक उखड़जायगा हे महाबाहु ऐसा जान और समझकर ब्यूहको जैसा चाहो वैसा तैयार करो २७ पाण्डव अर्जुनने भाई के उस बचनको सुनकर अपनी सेनाको अर्द्धचन्द्र ब्यूहसे अलंकृतकिया २८ उसके बामभागपर भीमसेन और दाहिने भागपर बड़ा धनुषधारी धृष्टद्युम्न वर्त्तमान हुआ २९ और ब्यूह के मध्यमें राजा युधिष्ठिर और अर्जुन नियत हुये और धर्मराज के पीछे नकुल सहदेव हुये ३० और पांचाल देशी उत्तमौजा और युधामन्यु रथके पहियों के रक्षकहुये अर्जुनसे रक्षित उन दोनोंनेभी युद्धमें अर्जुन को नहीं त्यागा ३१ हे राजा शेष शूरबीर राजा लोग शस्त्रादि से अलंकृत अपनी २ युक्ति के अनुसार ब्यूहमें नियतहुये ३२ पांडव और अन्य शूरवीरों ने इसरीति से अपने ब्यूह को रचकर तैयार किया हे राजा इसरीतिसे पांडव और आपके पुत्रोंने अपने २ ब्यूह को रचकर युद्ध करने को उत्साह किया ३३ दुर्य्योधन ने कर्णकी रचितकी हुई अपनी सेनाको युद्धमें देखकर भाई बन्धुओं समेत पांडवोंको मृतक रूप जाना ३४ उसी प्रकार राजा युधिष्ठिर ने भी अपनी पांडवी सेनाको अलंकृत देखकर कर्ण समेत धृतराष्ट्र के पुत्रोंको मृतक रूपमाना ३५ इसके पीछे शंख भेरी ढोल

दुन्दुभी डिमडिम आदि बाजेभी चारों ओरसे बजे ३६ हेराजा उस समय दोनों सेनाओंमें बड़े शब्दायमान बाजे गाजे बजे और युद्धाभिलाषी शत्रुहन्ता शूर वीरों के भी महासिंहनाद हुये ३७ हे राजा घोड़ों के हींसने और हाथियों के चिग्घाड़ने के और रथकी नेमियोंके महाकठोर शब्द उत्पन्न हुये ३८ फिर व्यूह के मुखपर नियत बड़े धनुषधारी कर्ण को देखकर किसी ने भी द्रोणाचार्य्य के दुःखकोनहीं जाना ३९ उस समय अत्यन्त उत्तम मनुष्यों से भरीहुई युद्धाभिलाषी दोनों सेना पराक्रम से परस्पर मारने को नियत हुई ४० वहां पर सावधान और क्रोध से भरे हुये एक दूसरे को नियत देखकर कर्ण और पाण्डव अर्जुन सेना के मध्यमें फिरने लगे फिर वह दोनों सेना नाचती हुई सी परस्पर में भिड़ गईं उनके भाग वा विभाग कोणोंसे युद्धाभिलाषी लोग सेनासे बाहर निकले इसके अनन्तर परस्परमें युद्धकर्त्ता लोग हाथी घोड़े और रथोंके साथ युद्धमें प्रवृत्त हुये ४१ । ४२ । ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिव्यूहनिर्माणेद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

संजयबोले कि अत्यन्त प्रसन्नचित्त घोड़े हाथी और मनुष्योंवाली उनदोनों सेनाओंने जो कि देवता और असुरोंकी सेनाके समान प्रकाशमानथीं परस्पर में एकने एकको सन्मुख पाकर अत्यन्त प्रहार किये १ इसके पीछे बड़े पराक्रमी मनुष्य रथ घोड़े हाथी और सेनाके पतियोंने शरीर और प्राणोंके नाशकरनेवाले अनेक प्रहार किये २ और चन्द्रमा सूर्य और कमलोंके समान प्रकाशमान सुगन्धि से भरे नृसिंहोंके शिरोंसे पृथ्वीको आच्छादित करदिया ३ अर्द्धचन्द्र भल्ल क्षुरप्र खड्ग पट्टिश और परश्वधोंसे युद्धकरनेवालोंके शिरोंको काटा ४ तब लम्बी स्थूल बाजूआदिसे अलंकृत शस्त्रधारी भुजाओंसे बड़े २ दीर्घ भुजवाले शूरवीरोंकी भुजा पृथ्वीपर पड़ीहुई शोभायमानहुई ५ रक्तअंगुष्ठ और हथेलीसमेत फड़कतीहुई उन भुजाओं से पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि गरुड़जीके छोड़े हुये उग्र पंचमुखवाले सर्पोंसे शोभित होती है ६ शत्रुओंके हाथसे मारेहुये वीर हाथी घोड़े और रथोंसे ऐसेगिरे जैसे कि क्षीण पुण्य होनेसे स्वर्गवासी जीव अपने अपने विमानों से गिरते हैं ७ युद्धमें बड़े बड़े वीरों की भारी गदा परिघ

और मूसलोंसे भी मारेहुये अन्य हजारों वीर पृथ्वीपर गिरे ८ रथी रथियोंसे मतवाले हाथी मतवाले हाथियोंसे अश्वारूढ़ अश्वारूढ़ोंसे उसकठिन युद्धमें मर्द्दित कियेगये ९ रथोंसे मनुष्य और हाथियोंसे रथ वा पतियों से रथी और हाथियोंसे रथपति घोड़े और सवार और हाथी दोनों रथोंसे मथेगये १० । ११ मनुष्य घोड़े हाथी और रथियोंने हाथ पांव शस्त्र और रथोंसे रथ घोड़े हाथी और मनुष्योंका बड़ा विनाशकिया १२ इसरीतिसे शूरवीरोंके हाथसे सेनाके घायल और मारे जानेसे वह पांडव जिनमें अग्रगामी भीमसेनथा हमारे सन्मुख आये १३ धृष्टद्युम्न शिखण्डी द्रौपदीके पुत्र प्रभद्रक नामक्षत्री सात्यकी चेकितान द्रविड़ देशी सेनासमेत १४ बड़े व्यूहसे युक्त और बड़े वक्षस्स्थल लम्बीभुजा दीर्घनेत्री वेगवान् आभूषणोंसे अलंकृत १५ रक्तदंत मतवाले हाथीके समान पराक्रमी नाना प्रकारके रंगोंकी पोशाकों से भूषित चन्दनादि से चर्चित देहवाले खड्ग भिंदिपालोंको हाथमें लिये हाथियोंके हटानेवाले एकसी मृत्युवाले पांड्य चौल और केरल लोगोंने परस्परमें त्याग नहीं किया १६ । १७ तूणीर धनुष भिंदि हाथमें लिये लम्बेकेश रखनेवाले प्रियभाषी घोर पराक्रमवाले अन्य पति और अश्वारूढ़ोंने भी परस्परमें त्याग नहींकिया इसके पीछे दूसरे शूर चन्देर पांचाल केकय कारूप कौशल कांच्य और मगधशूरवीर सन्मुखदौड़े १८ । १९ उन्हों के रथघोड़े हाथी और अत्यन्त भयानक पतिलोग नानाप्रकारके बाजे बजानेवालोंके साथमें बड़े प्रसन्न चित्त हँसते नाचते और गातेथे २० अत्यन्त उत्तम रथोंसे युक्त हाथीके कन्धोंपर सवार भीमसेन बड़ी सेनाके मध्यमें आपके शूरवीरों के सन्मुख गये २१ अत्यन्त उत्तम महाभयानक बुद्धिके अनुसार अलंकृत कियाहुआ वह हाथी ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि सूर्योदयवाला उदयाचलका भवन शोभायमान होताहै २२ उसका लोहमयी रत्नोंसे जटित कियाहुआ कवच इसप्रकारका प्रकाशमान था जैसे कि नक्षत्रों समेत शरद ऋतुका आकाश शोभित होताहै तोमर संयुक्त चपलभुज और सुन्दर मुकुटधारण कियेहुये महाअलंकृत सूर्य्यके समान प्रकाशमान वहभीमसेन अपने तेजसे शत्रुओंको भस्मकरताहुआ युद्धमें नियतहुआ २३ । २४ वहां हाथीपर चढ़ाहुआ क्षेमधूर्त्ति दूरसे उसहाथीपर सवार बड़े साहसी भीमसेनको देखकर पुकारता और बुलाताहुआ सन्मुखगया २५ प्रथम तो इनदोनोंके हाथियोंमेंही परस्पर ऐसायुद्ध हुआ जैसे कि दैवइच्छासेवृक्षों

समेत दो पर्व्वतोंका युद्धहोताहै २६ उनहाथियोंके बड़े युद्ध होनेके पीछे वहदोनों वीर सूर्य्यकी किरणरूप तोमरों से परस्पर एकएकको घायल करतेहुये बड़े वेगसे गर्जे २७ फिर वहदोनों हाथियोंकेद्वारा हटकरके मण्डलोंमें घूमे और धनुषोंको पकड़कर परस्परमें एकने दूसरे को घायलकिया २८ फिर उनदोनों ने भुजा और बाणोंके शब्दोंसे मनुष्योंको प्रसन्नकरके बड़े२ सिंहनादोंको किया २६ और फिर वहदोनों महाबली ऊंची सूंडवाले हाथियों और वायुसे उड़तीहुई पताकाओं समेत युद्ध करनेलगे ३० उनदोनोंने परस्पर में एकने दूसरे के धनुष को काटकर शक्ति और तोमरों की वर्षासे परस्परमें ऐसे घायलकिया ३१ जैसे कि वर्षाऋतु में बादल जलोंसे व्यथित करतेहैं उससमय महागर्जना करतेहुये क्षेमधूर्त्तीने अत्यन्त वेगवान् दूसरे छः तोमरों से भीमसेन को छातीपर घायलकिया ३२ क्रोध से भराहुआ भीमसेन शरीर में लगेहुये तोमरों से ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि बादलों से सूर्य्य शोभितहोता है ३३ इसके अनन्तर उपाय करनेवाले भीमसेनने सूर्य्यकेसमान प्रकाशित सीधा चलनेवाला लोहेका तोमर उसशत्रुके ऊपर फेंका ३४ फिर राजा कुलूतने धनुषको नवाकर दशबाणोंसे तोमरको काटकर भीमसेनको घायलकिया ३५ इसके अनन्तर गर्जना करते भीमसेनने बादलके समान शब्दायमान धनुषको लेकर बाणोंसे शत्रुके हाथीको घायल और पीड़ित किया ३६ युद्धमें भीमसेनके बाणोंसे वह हाथी पीड़ितहोकर थँभाहुआ भी ऐसे नहीं ठहरसका जैसे कि बायुसे उड़ाहुआ बादल नहीं ठहरसक्ता है ३७ और भीमसेनका गजराज हाथी उसहाथीपर ऐसा दौड़ा जैसे कि बायुसे उड़ाहुआ बादल बड़ीबायुसे उड़ेहुये बादलके पीछे दौड़ता है ३८ फिर प्रतापी क्षेमधूर्त्तीने अपने हाथीको अच्छी रीतिसे रोककर शीघ्रही अपने बाणोंसे भीमसेनके हाथी को घायलकिया इसके पीछे अच्छे प्रकार से छोड़ेहुये टेढ़ेपक्षवाले क्षुरप्रसे शत्रुके धनुषको काटकर प्रतिपक्षवाले शत्रुको पीड़ामानकिया ३६। ४० इसके अनन्तर क्रोधयुक्त क्षेमधूर्त्तीने भीमसेनको घायल करके उसके हाथीको सब मर्मोंमें अपने नाराचोंसे घायलकिया ४१ हे भरतवंशी उसघायल करने से वह भीमसेनका हाथी पृथ्वीपर गिरपड़ा और भीमसेन हाथीके गिरनेसे पूर्व्वही हाथी से कूदकर पृथ्वी पर नियतहुआ ४२ फिर भीमसेनने भी उसके हाथीको गदासे मारा तव उस गदासे मथेहुये हाथीसे उतरेहुये ४३ और शस्त्र उठाकर आनेवाले क्षेमधूर्त्ती को

भीमसेनने गदासे मारा और गदाकेलगतेही मृतकहोकर खड्गसमेत पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा ४४ जैसे कि बज्रसे टूटाहुआ पर्व्वत वा बज्रसे माराहुआ सिंह पृथ्वीपर गिरताहै हे भरतर्षभ उसकुलूतों के यशस्वी राजाको मृतकहुआ देखकर आपकी सेना भयभीत और पीड़ितहोकर भागी ४५ । ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिक्षेमधूर्त्तिवधेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके पीछे बड़े धनुषधारी शूरवीर कर्णने टेढ़ेपक्षवाले बाणों से युद्धमें पांडवोंकी सेनाको मारा १ हे राजा उसीप्रकार क्रोधयुक्त उनपांडवों के महारथियोंने कर्णके देखतेहुये आपकेपुत्रकी सेनाको मारा २ हे राजा फिर कर्ण नेभी सूर्यकी किरण के समान प्रकाशित चतुरकारीगरोंके साफ कियेहुये नाराचोंसे उस युद्धमें पांडवी सेनाको मारा ३ तवतो कर्णके नाराचों से घायलहुये हाथी चिग्घारें मारनेलगे और महापीड़ित होकर दशोंदिशाओंमें घूमनेलगे ४ हेश्रेष्ठ कर्णके हाथसे उससेनाके घायल होनेपर शीघ्रही नकुल उस युद्धमें कर्ण के सन्मुखगया ५ उसीप्रकार भीमसेन ने कठिन कर्म्म करनेवाले अश्वत्थामा को और सात्यकीने बिन्द अनुबिन्दनाम केकयों को रोका ६ और राजा चित्रसेनने आतेहुये श्रुतकर्माको और प्रतिविन्ध्यने अपूर्व्वध्वजाधारी राजाचित्रको रोका फिर राजा दुर्य्योधनने धर्मपुत्र युधिष्ठिरको रोका और क्रोधयुक्त अर्जुनने संसप्तक गणोंको जा रोका ७ । ८ उसउत्तम वीरों के नाशमें धृष्टद्युम्न कृपाचार्य्य से लड़नेलगा और शिखण्डी के सन्मुख अजेय कृतवर्मा नियत हुआ ९ हे महाराज इसीप्रकार श्रुतकीर्त्तिने शल्यको और माद्रीकेपुत्र सहदेवने आपके पुत्र दुश्शासनको रोका १० दोनों कैकेयोंने युद्धमें प्रकाशित बाणोंकी वर्षासे सात्यकीको आघेरा सात्यकी ने बाणों से केकयों को ढक दिया ११ हे भरतवंशी उन दोनों वीर भाइयों ने उसको हृदय पर ऐसा कठिन घायल किया जैसे कि वनमें सन्मुख आनेवाले दो हाथी अकेले हाथीको अपने दांतों से घायल करते हैं १२ हे राजा बाणों से टूटेहुये कवचवाले सात्यकी को दोनों भाइयों ने बड़ा घायल किया १३ फिर सात्यकी ने हँसते हुये बाणों की वर्षा करके उन दोनों को सब ओरसे रोका १४ इसके पीछे सात्यकी के बाणों से रुके हुये उनदोनों ने शीघ्रही

बाणों से सात्यकी के रथको ढक दिया १५ फिर इस बड़े यशस्वी सूरबंशी सात्य की ने उन दोनों के छत्र और धनुषों को काटकर उन दोनों को अपने तीक्ष्ण शायकों से रोका १६ तबतो उनदोनों ने दूसरे छत्र और बाणोंको लेकर सात्यकी को ढकदिया और बहुत शीघ्रही शोभायुक्त होकर फिरनेलगे १७ और कंक और मोरपक्षों से शोभित दोनों के छोड़ेहुये प्रकाशित बाण सब ओरको गिरे १८ हे राजा उस महाभारी युद्ध में उनदोनों के बाणों से अन्धकार सा छागया उससमय उन महारथियोंने परस्पर में एकने दूसरे के धनुषको काटा १९ इसके पीछे क्रोधभरे युद्धमें दुर्मदसात्यकी ने दूसरे धनुषको लेकर और तय्यारी करके युद्धमें बड़े तीक्ष्णक्षुरप्र से अनुविन्दके शिरको काटा हे राजा वह कुंडलों से अलंकृत महाभारी शिर २० । २१ बड़े युद्धमें मरेहुये सम्बर के शिरके समान सब कैकेय लोगोंको शोचताहुआ पृथ्वीपर गिरा २२ उस शूरबीरको मृतक देखकर उसके भाई महारथी ने दूसरे धनुष को तैयार करके सात्यकी को रोका २३ वह सुनहरी पुंख और तीक्ष्णधारवाले साठबाणों से सात्यकी को घायल करके तिष्ठ तिष्ठ बचनके साथ बड़े वेगसे गर्जा २४ इसके पीछे कैकेयों के महारथी ने हजारों बाणोंसे बहुत शीघ्रता पूर्व्वक भुजा और छातीपर घायल किया २५ हे राजा बाणों से बिदीर्ण सर्वांग सात्यकी युद्धमें ऐसा शोभितहुआ जैसे कि फूलाहुआ किंशुकका बृक्ष होताहै २६ युद्धमें महात्मा कैकेय के हाथ से घायल और हँसते हुये सात्यकी ने कैकेयको पचीस बाणों से घायल किया २७ वह रथियों में श्रेष्ठ युद्धमें एक दूसरे के शुभ धनुषको काटकर बड़ी शीघ्रतासे घोड़े और सारथियों को मारकर २८ रथसे उतरकर युद्धमें खड्गों से प्रहार करने के लिये सन्मुख हुये वह सुन्दर भुजा और उत्तम खड्ग धारण करनेवाले दोनों शूरबीर चन्द्रसूर्य्य के चित्रवाली ढालोंको लेकर उसमहायुद्धमें ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि देवासुर युद्धमें महाबली इंद्र और जंभशोभित हुयेथे २९ । ३० इसके पीछे युद्धमें मंडलों को घूमते शीघ्रही परस्पर में सन्मुख हुये ३१ और एक २ ने दूसरे के मारने में बड़े २ उपायकिये इसके पीछे सात्यकी ने कैकेयकी ढालके दो खंडकिये ३२ इसी प्रकार वह राजाभी सात्यकीकी सैकड़ों नक्षत्रों से चिह्नित ढालको काटकर ३३ दाहिने और बांये मंडलोंसे घूमा फिर सात्यकीने उस बड़ेयुद्धमें शीघ्रतासे घूमने वाले कैकेयको तिरछेहाथसे मारडाला हे राजा वह कैकेय उस घोरयुद्धमें कवच

समेत दो खंड होकर ऐसे पृथ्वी में गिरपड़ा ३४।३५ जैसे कि वज्रसेघायल पर्व्वत गिरताहै इसरीतिसे रथियोंमें श्रेष्ठ शूरबीर सात्विकीने उसयुद्धमें उसकोमारा ३६ फिर वह शत्रुहन्ता शीघ्रही युधामन्यु के रथपर सवार हुआ और थोड़े समय पीछे सात्विकी ने बुद्धिके अनुसार अलंकृत दूसरे रथपर सवार होकर बाणोंसे कैकेयों की बड़ी सेनाको मारा युद्ध में वह कैकेयों की बड़ी सेना महाघायल होकर उस सात्विकी को छोड़कर दशोंदिशाओं को भागी ३७ । ३८ । ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिविन्दअनुविन्दवधोनामचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा इसके पीछे युद्ध में क्रोधभरे श्रुतिवर्मा ने राजाचित्रसेन को पचास बाणों से घायल किया १ फिर चित्रसेन ने टेढ़े पुंखवाले नौ बाणों से श्रुतिवर्मा को घायल करके पांच बाणों से उसके सारथी को घायल किया २ इसके अनन्तर सेनामुखपर क्रोधयुक्त श्रुतिकर्मा ने चित्रसेनको अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से मर्मस्थल में घायल किया ३ हे महाराज उस महात्मा के नाराचसे अत्यन्त घायल होकर वह वीर मूर्च्छायुक्त होकर निश्चेष्ट होगया ४ इसी अन्तरमें बड़े यशस्वी श्रुतिकीर्त्ति ने नव्वे ९० बाणों से इस राजाको भी ढक दिया ५ इसके पीछे महारथी चित्रसेनने सावधान होकर भल्लसे उसके धनुषको काटकर सातबाणों से उसको घायल किया ६ फिर उसने वेगके नाशकरनेवाले स्वर्ण से भूषित सोम धनुषको लेकर बाणोंकी तरंगों से चित्रसेनको विचित्ररूपधारी किया ७ वह युवावस्थायुक्त बाणों से वेधित होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि गौशालामें अच्छा अलंकृत बड़ा बैलहोताहै ८ फिर उस शूरने वेगसे श्रुतिकर्माको नाराचसे छातीपर विदीर्णकर तिष्ठतिष्ठ शब्द उच्चारणकिया ९ वहां नाराचसे घायल होकर श्रुतिकर्मा ने भी युद्ध में रुधिरको ऐसे गिराया जैसे कि पर्वतीय धातुओं से संयुक्त पर्व्वत रक्तवर्ण के जलको डालताहै १० इसकेपीछे वह रुधिरसे भरे शोभाहीन शरीरसे युद्ध में ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि फूलाहुआ किंशुकका वृक्षहोताहै ११ इसके पीछे शत्रुसे अघात पानेवाले क्रोधयुक्त श्रुतिकर्मा ने शत्रुके हटानेवाले धनुषके दश खण्डकिये १२ तदनन्तर हे राजा इसटूटे धनुषवाले को श्रुतिकर्मा ने सुन्दर पक्षवाले तीनसौ नाराचों से

घायलकर बड़े तीक्ष्ण धारवाले १३ भल्लसे उसके शिरसमेत धड़कोकाटा १४ तब चित्रसेनका वह प्रकाशमान शिर पृथ्वी पर ऐसे गिरा मानों दैवइच्छा से स्वर्ग से पतितहोकर चन्द्रमा गिरताहै १५ हे श्रेष्ठ चित्रसेनकी सेनाके सबलोग उस अभयसारदेश के राजा को मृतक देखकर बड़ी तीव्रता से सन्मुख दौड़े १६ इसके पीछे वह क्रोधयुक्त महाधनुषधारी बाणोंकी वर्षा करताहुआ उस सेनापर ऐसे दौड़ा जैसे कि प्रलयकाल में सब जीवोंपर क्रोधभरे यमराज दौड़ते हैं १७ अग्निसे भस्मीभूत वृक्षों के समान युद्ध में आपके पौत्र उस धनुषधारी से घायलहोकर चारों ओरको भागे १८ शत्रुके जीतने में असाहसी और भागनेवाले उनलोगों को देखकर श्रुतिकर्मा तीक्ष्णवाणों से उनको भगाताहुआ अत्यन्त शोभायमान हुआ १९ इसके पीछे प्रतिबिन्ध्य ने पांच बाणों से चित्रको तीन बाणों से सारथी को घायल करके एक बाणसे ध्वजाकोभी खंडित करदिया २० और चित्रसेन ने सुनहरे पक्ष तीक्ष्ण नोक कंक और मोरके पक्षों से जटित नौ भल्लोंसे उसकी दोनों भुजा और छातीपर घायल किया २१ हे भरतवंशी प्रतिबिन्ध्य ने शायकों से उसके धनुष को काटकर उसको तीक्ष्ण पांचबाणों से घायल किया २२ इसके पीछे सुनहरी घण्टे रखनेवाली महाअसह्य अग्नि की शिखा के समान प्रकाशमान शत्रु को आप के पोते पर फेंका २३ तब हँसते हुये प्रतिबिन्ध्य ने उस उल्कारूप अकस्मात् आतीहुई शक्ति को देखकर युद्ध में दो खण्ड किये २४ प्रतिबिन्ध्य के तीक्ष्ण बाणों से टुकड़े टुकड़े होकर वह शक्ति ऐसे गिरपड़ी जैसे प्रलय के समय सबजीवों की भयकी करनेवाली अशिवनी होती है २५ चित्रने उस शक्ती को कटाहुआ देख बड़ी गदालेकर प्रतिबिन्ध्य के ऊपर फेंका २६ उस गदा के आघात से उसके सारथी समेत घोड़े मारेगये और बड़ी तीव्रता से रथको मर्दन करके पृथ्वी पर गिरपड़े २७ हे भरतवंशी उससमय उसने रथ से उतरकर सुनहरी दण्डवाली सुनहरी शक्ति को चित्रके ऊपर फेंका २८ फिर उस महासाहसी चित्रने उस आतीहुई शक्ति को पकड़लिया और उसी शक्ति को प्रतिबिन्ध्य के ऊपर फेंका २९ वह बड़ी प्रकाशमान शक्ति युद्धमें शूर प्रतिबिन्ध्य को पाके दक्षिणभुजा को घायलकर के पृथ्वीपर गिरपड़ी ३० अशिवनीके समान घिरीहुई उस शक्तिने उस स्थानको प्रकाशितकिया इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रतिबिंध्यने ३१ सुवर्ण से मंडित

तोमरको चित्रके मारने को चलाया वह तोमर उसके कवच और हृदयको छेद कर ३२ पृथ्वी में ऐसे समागया जैसे बड़ाभारी सर्प विलमें समाजाताहै उस तोमरसे घायल वह राजा ३३ परिघके समान बड़ी और मोटीभुजाओंको फैलाकर पृथ्वी में गिरपड़ा तब चित्रसेनको मराहुआ देखकर आपकी शोभायमान सेना वेगसे प्रतिविन्ध्य के चारोंओर सन्मुखताके लिये गई ३४ और वहां जाकर नानाप्रकारके बाण और शक्तियोंकी वर्षासे प्रतिविन्ध्य को ऐसाढकदिया जैसे कि वादलों के समूह सूर्य्यको ढकलेतेहैं ३५ फिर उस महाबाहुने बाणों से उन सब को पृथक् २ करके आपकी सेनाको ऐसे भगाया जैसे कि वज्रधारी इन्द्र असुरों की सेनाको भगाताहै ३६ हे राजा युद्ध में पाण्डवों के हाथ से घायल शूरवीर अकस्मात् ऐसे छिन्न भिन्न होगये जैसे कि हवासे हटायेहुये वादल तिर्रविर्र हो जातेहैं ३७ उस सेनाको चारोंओरसे घायलहोकर भागजानेपर अकेले अश्वत्थामाजी शीघ्रही महाबली भीमसेनके सन्मुख गये ३८ इसके पीछे अकस्मात् उन दोनोंका परस्परमें भिड़ना ऐसा महाभयकारी हुआ जैसा कि देवासुरों के युद्धमें वृत्रासुर और इन्द्रका हुआथा ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिचित्रवधेपंचदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा इसके पीछे बड़ी शीघ्रतायुक्त अस्त्रोंकी तीव्रता दिखाते हुये अश्वत्थामाने बाणसे भीमसेनको घायल किया १ फिर मर्मज्ञ हस्तलाघवी अश्वत्थामा ने सबमर्मों को जानकर तीक्ष्ण धारवाले नव्वे बाणों से भीमसेन को घायलकिया २ हे राजा अश्वत्थामाके तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे छिदाहुआ भीमसेन युद्धमें अंशुमान् सूर्यके समान शोभायमान हुआ ३ इसके पीछे भीमसेनने अच्छीरीति से फेंकेहुये हजारबाणोंसे अश्वत्थामाको ढककर बड़ाभारी सिंहनादकिया ४ इसके अनन्तर मंदमुसकान करतेहुये अश्वत्थामाने बाणोंको रोककर भीमसेनको नाराचों से ललाटपर घायलकिया ५ तब भीमसेनने ललाट पर वर्त्तमान बाणोंको ऐसे धारणकिया जैसे कि गेंडकनाम अहंकारी पशुसिंह को धारणकरताहै ६ फिर मन्दमुसकान करते पराक्रमी भीमसेनने युद्धमें उपाय करनेवाले अश्वत्थामाको तीननाराचोंसे ललाटपर वेधा ७ तब यह ब्राह्मण ललाट

पर नियतहुये बाणोंसे ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि जलसे सींचाहुआ तीन शिखर रखनेवाला उत्तम पर्व्वत होता है ८ इसके पीछे अश्वत्थामा ने सैकड़ों बाणोंसे भीमसेन को पीड़ित किया परन्तु उसको ऐसे कम्पायमान न करसका जैसे कि बायु पर्व्वत को नहीं कंपासक्ती ९ फिर अत्यन्त प्रसन्न पांडुनन्दन भीमसेनने भी इसको ऐसे कंपायमान नहीं किया जैसे कि जलका समूह पर्व्वत को कंपायमान नहीं करसक्ता १० परस्पर घोरबाणों से ढकतेहुये उत्तम रथोंपर सवार पराक्रमसे मतवाले वह दोनों महारथी शूरबीर महाशोभायमानहुये ११ फिर वह दोनों सूर्य्यके समान प्रकाशित लोकके नाशक अपने तेजों समेत उत्तम २ बाणों से परस्पर संतप्त करनेवालेहुये १२ इसके पीछे वह दोनों युद्धमें अशंक के समान बदलालेने में उपाय करनेवाले हुये १३ वह दोनों नरोत्तम युद्धमें व्याघ्रों के समान भ्रमण करनेवाले हुये बाणरूप जिनकी डाढ़ें और भयानक धनुषही जिनका मुखथा १४ वह दोनों बाणोंके जालसे सबओरसे ऐसे गुप्तहोगये जैसे कि बादलके जालों से ढकेहुये आकाशमें चन्द्रमा और सूर्य्य होते हैं १५ इसके पीछे वह शत्रुहंता दोनों एकमुहूर्त्तमेंही ऐसे प्रकाशमानहुये जैसे कि बादलों के जालसे निकलेहुये मंगल और बुध होते हैं १६ इसकेपीछे अत्यंत भयकारी युद्धजारी होने पर वहां अश्वत्थामा ने भीमसेन को सैकड़ों उग्रबाणों से ऐसे ढकदिया १७ जैसे कि धाराओं से बादल पर्व्वतको ढकदेताहै फिर भीमसेनने भी शत्रुके उस बिजय के लक्षण को नहीं सहा १८ इसके पीछे पाण्डवने भी दाहिने और बायें मंडलों के भागों में जाना आनाकिया १९ और दोनों पुरुषसिंहों में बड़ातुमुल युद्ध हुआ २० फिर हरएक ने कानतक खैंचेहुये बाणों से परस्परमें एकने दूसरे को घायल किया और एकने दूसरे के मारने में वड़े २ उत्तम उपाय किये २१ युद्धमें एकने दूसरेको बिरथकरना चाहा इसके पीछे महारथी अश्वत्थामाने युद्ध में महाअस्त्रों को प्रकट किया २२ पाण्डवने उन अस्त्रों को अपने अस्त्रों सेही दूरकिया इसके पीछे अस्त्रोंका ऐसा घोरयुद्ध जारीहुआ जैसे कि जीवोंकी प्रलय में ग्रहोंका घोरयुद्ध हुआथा २३ हे भरतवंशी उन दोनों के छोड़ेहुये वह बाण चारोंओर से सब दिशा और आपकी सेनाको अच्छे प्रकारसे प्रकाशित करने लगे और बाण समूहों से व्याप्त आकाश महाभयानक रूपहुआ २४ । २५ हे राजा जैसे जीवों के प्रलयमें उल्कापातोंसे संयुक्त युद्धहुआथा वैसेही वहां बाणों

के आघात से ऐसी अग्नि उत्पन्न हुई जैसे कि फुलिंगरखनेवाली प्रकाशमान अग्नि की ज्वाला होती है २६ फिर अग्नि ने दोनों सेनाओं को भस्म किया तब वहां सिद्धलोग आकर कहनेलगे २७ कि सबयुद्धों में यहभी युद्ध बड़ा है और सबयुद्ध इसयुद्धके षोड़शांश कलाकेभी समान नहीं हैं २८ ऐसा युद्ध फिर कभी न होगा बड़ा आश्चर्य्य है कि यह ब्राह्मण और क्षत्री दोनों पूर्णहैं २९ यह दोनों पराक्रमी अपनी २ उग्रशूरताओं से संयुक्तहैं और भीमसेन भयानक पराक्रमी है और इसकी अस्त्रज्ञताभी पूर्ण है ३० इन दोनों की प्रतिष्ठा और बड़े २ साहस अपूर्व्वहैं यहकाल और मृत्युकेसमान दोनों युद्धमें नियतहैं ३१ यह दोनों रुद्रकेसमान प्रकटहुये दोनों सूर्य्यके समान हैं अथवा दोनों पुरुषोत्तम घोररूप यमराजके रूप हैं ३२ यह सिद्धोंके वचन वारंवार सुनेगये और भागनेवाले देवताओं के सिंहनाद प्रारंभहुये ३३ युद्धमें उन दोनोंके अपूर्व्व बुद्धिसे बाहर कर्म को देखकर सिद्ध और चारण लोगों के समूहको बड़ा आश्चर्य्य हुआ ३४ तब देवता सिद्ध और परमऋषियों ने प्रशंसाकरी कि हे महाबाहु अश्वत्थामा और हे महाबाहु भीमसेन तुम दोनोंको धन्यहै ३५ हे राजा परस्पर अपराध करनेवाले उन दोनों शूरोंने युद्ध में क्रोध से आंखों को फाड़कर परस्पर में देखा ३६ वह दोनों क्रोधसे रक्त नेत्रहो क्रोधसेही ओठोंके चाबनेवाले होकर दांतों के किटकिटानेवाले हुये ३७ बाणरूप जलधारा और शस्त्ररूप बिजली से प्रकाश करनेवाले दोनों महारथियों ने बाणोंकी वर्षा से परस्पर में ढकदिया ३८ फिर उन दोनों ने परस्पर की ध्वजा और सारथीको वेधकर प्रत्येकने दूसरे के घोड़ोंको घायल करके परस्परमें घायल किया ३९ हे महाराज इसके पीछे परस्पर मारने के इच्छावान् क्रोध भरेहुये उन दोनों ने युद्ध में बाण को लेकर शीघ्रही एकने दूसरे के ऊपर फेंका ४० उन वज्रके समान वेगमान विजयी और सेनामुखपर प्रकाशमान दोनों ने सन्मुख पाकर परस्पर में शायकों से घायल किया ४१ तब परस्परकी तीव्रता और बाणों से घायल बड़े पराक्रमी वह दोनों रथोंके बैठने के स्थानों में गिरपड़े ४२ इसके अनन्तर सारथी अश्वत्थामा को अचेत जानकर सब सेनाके देखते हुये युद्धसे दूर लेगया ४३ हे राजा इसीप्रकार भीमसेनका सारथी भी उस वारंवार शत्रुओं के नपानेवाले पाण्डव भीमसेनको युद्धमें रथकेद्वारा दूरलेगया ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअश्वत्थामाभीमसेनयुद्धेषोड़शोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले जिसप्रकार अर्जुनका युद्ध संसप्तक लोगोंकेसाथ और अन्य राजाओंका युद्ध पांडवोंके साथहुआ उसको मुझसेकहो १ हे संजय अश्वत्थामा और अर्जुनका जो युद्धहै और पांडवोंकेसाथ जो अन्य २ राजाओंका युद्धहै वह सब मुझसेकहो २ संजय बोले हे राजा मैं कहताहूं आप सुनिये जिसप्रकार प्राणों का नाशकारक शत्रुओंसे बीरोंका युद्धजारीहुआ ३ शत्रुओंके मारनेवाले अर्जुन ने समुद्र के समान संसप्तकों की सेनाओं में घुसकर ऐसे छिन्नभिन्न करदिया ४ जैसे कि तीव्र बायु समुद्र को उथल पुथल करदेता है अर्ज्जुन ने अपने तीक्ष्ण भल्लों से पूर्ण चन्द्रमासे प्रकाशित ५ सुन्दरमुख नेत्र भृकुटी और दांतरखनेवाले बीरों के शिरोंको काटकर शीघ्रता पूर्व्वक ऐसे पृथ्वीको आच्छादित करदिया ६ जैसे कि कमलनालसे कमलों को काटकर हाथी सरोवरको आच्छादित करता है अर्जुन ने युद्ध में बड़ेलम्बे मोटे चन्दन अगरसे लिप्त शस्त्र और हस्तत्राण-धारी पांच मुखधारी सर्पोंके समान शत्रुओं की भुजाओं को क्षुरप्रों से काटा ७ और घोड़े घोड़ेके सवार और सारथीलोगों के ध्वजा धनुष शायक और अँगूठी धारण किये बीरों के हाथोंको भी बारम्बार भल्लों से काटा ८ हे राजा इसीप्रकार से अर्ज्जुन ने युद्ध में अपने हजारोंबाणों से रथ हाथी और घोड़ों को उनके सवारों समेत यमलोक में पहुँचाया ९ जैसे कि मदसे मतवाले गर्जनेवाले बैल गौके निमित्त सिंहों के सन्मुख जाकर प्रहार करें उसीप्रकार उन क्रोधसे भरे बड़े २ शूरबीरों ने उस क्रोधयुक्त और प्रहार करनेवाले को बाणों से घायल किया उ-सका और सबलोगोंका वह घोरयुद्ध ऐसा रोमहर्षण करनेवाला हुआ १०।११ जैसे कि तीनोंलोकों के बिजयके लिये दैत्योंका युद्ध इन्द्रके साथ हुआथा उस अर्जुन ने अपने अस्त्रों से शत्रुओं के अस्त्रों को रोककर बहुत शीघ्र बाणों से बिदीर्ण करके १२ प्राणोंका हरणकिया जिनके तूणीर चक्र और रथके अंग टूट गये और सारथियों समेत घोड़े भी मारेगये १३ और धनुष वा ध्वजाटूटीं और रथकी बागडोरें टूटीं रथसे कूबर जुदेहुये १४ और स्यन्दनों के जुयें पहिये आदि भी गिरपड़े उन रथोंको खण्ड२ करताहुआ ऐसे चला जैसे कि बड़े२ बादलोंको खण्ड २ करता बायुचलताहै १५ आश्चर्य्य उत्पन्न करानेवाले अर्जुनने शत्रुओं

को भय करनेवाले दर्शनीय हजारों महारथियों के समान बल किया १६ सिद्ध देवर्षि और चारण लोगों ने भी इसकी प्रशंसाकरी देवताओंने दुन्दुभी बजाकर पुष्पों की वर्षाकरी १७ वह पुष्प श्रीकृष्ण और अर्जुन के मस्तकपर गिरे और आकाशवाणी ने सदैव चन्द्रमा वायु अग्नि और सूर्य्यकी कान्ति और तेजको पुष्टकिया १८ वह ब्रह्मा और शिवजी के समान श्रीकृष्ण और अर्जुन एक रथ पर नियत सबजीवों में श्रेष्ठ दोनों नर नारायण रूप वीरहैं १६ हे भरतवंशी इस बड़े आश्चर्य्यको देखकर बड़े सावधान अश्वत्थामाजी युद्धमें श्रीकृष्णजी के सन्मुखगये २० फिर जिनकी नोकें शत्रुओं के मारनेवालीथीं उन बाणोंके चलाने वाले पांडव अर्जुन से बाण पकड़नेवाले हाथकेद्वारा बुलाकर २१ यह वचन बोले हे वीर जो यहां वर्त्तमान मुझ अतिथि रूपको पूजनके योग्य मानताहै २२ तो तुम सब आत्मासे युद्धरूप अतिथि मुझको जानो इसप्रकार युद्धाभिलाषी आचार्य्यके पुत्रसे बुलायेहुये अर्जुनने अपने को बहुत कुछ माना २३ और श्रीकृष्णजी से कहा कि मैं संसप्तकों को मारसक्ताहूं और अश्वत्थामाजी मुझको बुलाते हैं २४ इस स्थानपर जो उचितहोय वह आप मुझसे कहिये जो आप मानतेहैं तो उठकर अतिथिकर्म कीजिये २५ ऐसे कहेहुये श्रीकृष्णजी ने बुद्धि के अनुसार बुलाये हुये अर्जुनको बिजयी रथकी सवारी के द्वारा अश्वत्थामा के समीप ऐसे पहुँचाया जैसे कि वायु इन्द्रको यज्ञमें पहुँचाताहै २६ केशवजी उस एक चित्त अश्वत्थामा को सम्बोधन करके बोले कि हे अश्वत्थामा शीघ्र नियत होकर घात करो और क्षमा करो २७ स्वामी के अर्थ निमकहलाली करनेका यह समयहै ब्राह्मणों का सम्वाद बड़ा सूक्ष्महै और क्षत्री सम्बन्धी विजय और पराजययोग्यहै २८ तुम अज्ञानतासे अर्जुनके जिस दिव्य और उत्तमकर्म को चाहतेहो अब उसके अभिलाषी होकर तुम नियत होकर पाण्डवों से युद्ध करो २६ श्रीकृष्णजी के इसप्रकारके वचनों को सुनकर अश्वत्थामाजी ने बहुत अच्छा कहकर आठ नाराचों से केशवजी को और तीन बाणों से अर्जुनको घायल किया ३० फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुनने उसके धनुष को तीनबाणों से काटा ३१ तब अश्वत्थामाने बड़े घोर दूसरे धनुपको लिया और क्षणभरमेंही श्रीकृष्ण और अर्जुनको घायल किया तीनसै बाणोंसे वासुदेवजीको और हजार बाणोंसे अर्जुन को घायलकिया ३२ इसके पीछे उपाय करनेवाले अश्वत्थामा

ने युद्धमें अर्जुनको रोककर हजारों बाणोंकी बर्षाकरी ३३ हे श्रेष्ठ उस ब्रह्मबादी अश्वत्थामाके तूणीर धनुष कवच ध्वजा हाथ छाती ३४ नाक मुख नेत्र कान शिर और अंग देहकेरोम और रथसे बहुतसे बाण निकले ३५ प्रसन्नचित्त बीर अश्वत्थामा बाण समूहोंसे अर्जुन और श्रीकृष्णजीको घायल करके बड़े बादलों के समान शब्दों से गर्जा ३६ उसके शब्दको सुनकर अर्जुन श्रीकृष्ण जी से बोले कि हे माधवजी गुरुपुत्र के आन्तरीयद्वेषको मेरेऊपर देखो ३७ यह हम दोनोंको बाण पिंजरमें प्रविष्ट करके मराहुआ जानताहै मैं इसके बाण पिंजरको अपने पराक्रमसे नाश करूंगा ३८ फिर उस भरतर्षभने अश्वत्थामा के चलायेहुये बाणोंको छःछः खण्डकरके इधर उधर करदिया ३९ इसकेपीछे अर्जुनने उग्रबाणोंसे घोड़े सारथी रथ हाथी ध्वजा और पतियों समेत संसप्तकों को घायलकिया ४० उससमय जिस २ रूपके जो २ मनुष्य वहां दिखाई दिये वहां उन्होंने अपनेको बाणों से घायलमाना ४१ और युद्धमें गांडीवधनुषसे छूटे हुये वह नानाप्रकारके बाण एककोस से अधिक दूरपर वर्त्तमान हाथी और मनुष्यों को भी मारतेथे ४२ मदोन्मत्त हाथियों की सूंड़ भल्लोंसे कटकर ऐसे गिर पड़ी जैसे कि फरसोंसे कटेहुये बनके बड़े २ वृक्ष होते हैं ४३ इसकेपीछे सवारों समेत वह हाथी ऐसे गिरपड़े जैसे कि इन्द्रके बज्रसे कटेहुये पर्वतोंके समूह गिरपड़ते हैं ४४ युद्धमें दुर्मद अर्जुन गन्धर्व नगरके समान अच्छे अलंकृत शीघ्रगामी सुशिक्षित घोड़ोंसे युक्त रथपर नियतहोकर ४५ बाणोंकी बर्षा करताहुआ शत्रुओंके सन्मुखगया वहांजाकर अर्जुनने अश्वारूढ़ोंको और पतियोंको मारा ४६ अर्जुनरूपी प्रलयकालीन सूर्यने कठिनतासे सूखनेवाले संसप्तक रूप समुद्रको अपने तीक्ष्ण बाणों से अत्यन्त शोषण किया फिर बड़ी शीघ्रता करनेवालेने अश्वत्थामाको बड़ेबज्रके समान वेगवान् बाणोंसे घायलकिया ४७। ४८ क्रोध युक्त युद्धाभिलाषी आचार्यके पुत्र अश्वत्थामाजी बाणोंके द्वारा घोड़े और सारथी समेत अर्ज्जुनसे लड़नेको आये अर्ज्जुन ने उनके बाणों को काटा ४९ इसके पीछे बड़े क्रोधसे भरे अश्वत्थामाने अर्ज्जुनके ऊपर अस्त्रोंको ऐसे छोड़ा जैसे कि अतिथि के लिये शिष्टाचारी करीजाय फिर अर्ज्जुन संसप्तकों को छोड़कर अश्वत्थामाके सन्मुख ऐसे गये जिसप्रकार दान करनेवाला मनुष्य पंक्तिके अयोग्य लोगोंको छोड़कर पंक्तिके योग्य मनुष्योंके पास जाता है ५० । ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअश्वत्थामाअर्ज्जुनयुद्धेसप्तदशोऽध्यायः १७॥

अठारहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके पीछे शुक्र और वृहस्पतिजी के समान तेजस्वी उन दोनोंका युद्ध ऐसे अच्छेप्रकारसे हुआ जैसे कि नक्षत्रमंडलके पास आकाशमें शुक्र और वृहस्पतिका युद्धहुआथा १ एकने दूसरेको प्रकाशित बाणोंकी किरणों से अच्छीरीति से संतप्त किया और अपने मार्ग से हटकर चलनेवाले ग्रहों की समान लोकोंका भय उत्पन्न करनेवालेहुये २ उसके पीछे अर्जुनने नाराचसे दोनों भृकुटियों के मध्य कठिन घायल किया वह अश्वत्थामाजी उस घाव से ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि ऊपरकी ओर किरण रखनेवाला सूर्य्य होताहै ३ इसके अनन्तर अश्वत्थामा के सैकड़ों बाणों से अत्यन्त पीड़ामान् श्रीकृष्ण और अर्जुन भी ऐसे प्रकाशमान हुये जिसप्रकार अपनी किरणों से प्रकाशित प्रलयकाल के दो सूर्य होते हैं ४ तदनन्तर वासुदेवजी के व्याकुल होने से अर्जुन ने सब ओर से अस्त्रों की धाराओं को छोड़ा वज्र अग्नि और यमराज के दण्ड की समान बाणों से अश्वत्थामा को घायल किया ५ उस बड़े तेजस्वी और भयानककर्मी अश्वत्थामाजीने अच्छेप्रकारसे चलाये महाकठोर और वेगवान् बाणोंसे अर्जुन और केशवजी को मर्मस्थलों पर घायलकिया वह ऐसे बाणथे जिनकेमारे मृत्युभी व्याकुल होजाय ६ फिर अर्जुन उस उपाय करनेवाले अश्वत्थामा के उन बाणों को उससे द्विगुणित अपने बाणोंसे अच्छीरीति से रोककर उस बड़े मुख्य वीरको घोड़े सारथी और ध्वजा समेत अपने सुंदर पुंखवाले दूने बाणों से ढककर संसप्तकोंकी सेनाके सन्मुखगया ७ अर्जुनने अच्छीरीतिसे चलायेहुये बाणों से मुख न मोड़नेवाले सन्मुखतामें नियत शत्रुओं के धनुष बाण तूणीर और कवच हाथ भुजा व हस्तगतशस्त्र और शस्त्र ध्वजा घोड़े और रथ और अनेक वस्त्रादिक वस्तु माला भूषणों समेत मर्मस्थल और चित्तरोचक प्यारेकवच और अनेक प्रिय वस्तुओं समेत शिरों को काटा और उपाय करनेवाले नरोत्तमों समेत अच्छीरीति से रथ घोड़े और हाथियों समेत नियत और अलंकृत सैकड़ों शूरवीरोंको भी अर्जुनने सैकड़ोंबाणों से गिराया तब उनके साथ बड़े २ उत्तम मनुष्यभी गिरपड़े ८। ९। १० कमल सूर्य और पूर्णचन्द्रमा के समान विशाल मुख मुकुटमाला और आभूषणों से प्रकाशमान शिर और भल्ल अर्द्धचंद्र

और क्षुरप्र नाम बाणों से घायल मनुष्यों के भी शिर वारंवार पृथ्वीपर गिरे ११ फिर कलिंग अंगबंगदेशी निषाद जातिके असुरों के गर्भ प्रहारी बीरलोग जो बड़े उग्ररूप अर्जुन के मारने के अभिलाषीथे उनके गज और असुरों के समान हाथियों के कवच सूंड़ सारथी ध्वजा और पताकाओं को काटा इस के पीछे वह ऐसे गिरपड़े जैसे कि वज्रके प्रहार से पर्व्वतों के शिखर गिरते हैं १२ । १३ उनके पराजय और छिन्न भिन्न होने पर अर्जुन ने सूर्य वर्ण के बाणजालों से गुरू के पुत्रको ऐसा ढकदिया जैसे कि बड़े बादलों के जालोंसे वायु उदय हुये सूर्य को ढकता है १४ इसके पीछे अश्वत्थामाजी अपने बाणों से अर्जुनके बाणोंको काटकर बड़े तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन और श्रीकृष्णजीको ढककर ऐसे गर्जे जैसे कि वर्षाऋतु में चन्द्रमा और सूर्य्यको ढक्कर बादलगर्जताहै १५ फिर अर्ज्जुन ने भी अश्वत्थामाजी को और अन्यलोगों को ढककर शस्त्रों से घायलहुये ने समीप जाकर शीघ्रही बाणों के अन्धकार को दूरकर सुन्दर पुङ्खवाले बाणों से सबको घायल किया १६ फिर अर्ज्जुन रथ के ऊपर बाणों को लेता चढ़ाता और मारता हुआ भी युद्धमें दृष्ट न पड़ा फिर बाणोंसे छिदेहुये रथ हाथी घोड़े और पदातियों को अर्जुन ने मृतक देखा १७ तब शीघ्रता करनेवाले अश्वत्थामा नेशीघ्रही दश उत्तम नाराचों को चढ़ाकर एकहीके समान छोड़ा उनमें से पांच उत्तम बाणों ने श्रीकृष्णजी को और पांचने अर्जुनको घायलकिया १८ अन्यमनुष्यों ने ऐसे धनुर्वेदके ज्ञाता अश्वत्थामाजी से पराजित और रुधिर डालनेवाले नरोत्तम इंद्रके समान श्रीकृष्ण और अर्जुनको युद्धमें मृतकसमझा १९ इसके पीछे श्रीकृष्णजी अर्जुनसे बोले कि क्या भूलमें पड़ाहै इस युद्धकर्त्ताको मार नहींतो यह बीर अपूर्व दोषको उत्पन्नकरेगा और इसका बदला न लेने वाला शूरबीर कठिन रोगीके समानहोगा २० फिर सावधान अर्जुनने श्रीकृष्ण जी से बहुतअच्छा यह शब्द कहकर बड़े उपायके साथ अश्वत्थामाको घायल किया चंदनकेसारसे पीठ भुजा छाती शिर और जंघावोंको २१ क्रोधयुक्त अर्जुनने गांडीवधनुष से छोड़ेहुये विकर्णनाम बाणों से घायलकिया और बागडोरों को काटकर उसके घोड़ोंको भी घायलकिया फिर वहघोड़े व्याकुलहोकर उसको युद्धसे दूरलेगये २२ उनवायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंसे हटायेहुये और अर्जुन के बाणोंसे पराजित बुद्धिमान् अश्वत्थामाजी ने विचार कर फिर लौटकर अ-

र्जुनके साथ लड़नानहींचाहा २३ अर्जुन और श्रीकृष्णजीकी निश्चय विजय को जानतेहुये वह बेगवान् उत्साहसे भ्रष्ट नाशमान बाण और अस्त्र योगवाले अंगिरा वंशियों में श्रेष्ठ अश्वत्थामाजी कर्ण की सेना में गये २४ अर्थात् वह अश्वत्थामाजी घोड़ों को स्वाधीन करके बहुत विश्वासित कर रथ घोड़े और मनुष्यों से पूर्ण होकर कर्णकी सेनामें जापहुंचे २५ जैसे कि मंत्र वा औषधी वा कर्मके करनेसे रोग शरीरसे जाता रहताहै उसीप्रकार घोड़ों के द्वारा उस विरोधी अश्वत्थामाके हटजानेपर २६ अर्जुन और श्रीकृष्णजी वायुसे उड़ाईहुई पताका और बादलके समान गर्जतेहुये रथकी सवारीसे संसप्तकों के सन्मुख गये २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअश्वत्थामापराजयोनामअष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

संजय बोले इसके पीछे पाण्डवोंकी सेनामें उत्तर दिशाकी ओर दण्डधार के हाथसे घायल रथी हाथी घोड़े और पतियों के शब्द उठे १ तव गरुड़ और वायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंको चलाते केशवजी रथको लौटाकर अर्जुनसे बोले २ कि वल और शिक्षामें भगदत्त के समान मगध देशी दण्डधार भी नाश करने वाले हाथी समेत कठिन युद्ध करनेवालाहै ३ इसको मारकर तू फिर संसप्तकोंके मारेगा श्रीकृष्णजीने यह कहकर अर्जुनको दण्डधारके समीप पहुंचाया ४ व मगधदेशियों के मध्यमें अंकुश धारण हाथियों के युद्धमें ऐसा अत्यन्त उत्त और असह्यथा जैसे कि ग्रहोंकेमध्यमें धूम्रकेतु ग्रहहोताहै उस भयानकरूपने श की सेनाको ऐसा मर्द्दनकिया जैसे कि धूम्रकेतु उपग्रह सम्पूर्ण पृथ्वीको मर्द्द करताहै ५ फिर वह राजा अच्छेप्रकार से अलंकृत गजासुरके समान बड़े बाद की समान शब्द करनेवाले शत्रुहन्ता हाथीपर सवार बाणोंसे हजारों हाथी घो और रथोंके समूहों को मारताहै ६ वह श्रेष्ठ हाथी घोड़े सारथी मनुष्य और र को दबाकर चरणों से हाथियों को मलता सूंड़से मारताहुआ चक्रकेसमान भ्र मण करनेलगा ७ फिर उसने उसबली पराक्रमी उत्तम हाथीकेद्वारा लोहेके व चोंसे अलंकृत मनुष्यों को और पतियों समेत घोड़ोंकोभी गर्जना पूर्व्वक ऐ शब्दायमान स्थूल नर्सलके समान गेरकर मारा ८ इसके पीछे अर्जुन धनुष मन्यंचाके शब्द मृदंग भेरी और बहुत से शंखोंसे शब्दायमान हजारों घोड़े

और हाथियों से संकुलित युद्धभूमिमें उत्तम रथकी सवारी से उत्तम हाथी के सन्मुखगये ९ वहां उस दण्डधारने अर्जुनको दश उत्तमबाणों से और श्रीकृष्ण जीको सोलह बाणोंसे व्यथित करके तीन२ बाणोंसे घोड़ोंको घायलकिया इनको घायल करके बड़े शब्दको करके बारंबार हँसा और गर्जा १० इसके पीछे अर्जुनने भल्लोंसे प्रत्यंचा समेत उसके धनुषको काटकर उसकी अलंकृत भुजाको भी काटा फिर रक्षकों समेत सारथियों को मारा इसकारण वह महा क्रोधितहुआ इसके अनन्तर उस मतवाले घातक वायुकेसमान तेजस्वी हाथीकेद्वारा अत्यन्त व्याकुल करने के अभिलाषी उस राजाने तोमरों से अर्जुन और श्रीकृष्णजीको घायलकिया ११ । १२ इसकेपीछे इसकी हाथकी सूंड़केसमान भुजाओंको और पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखको तीनक्षुरप्रसे एकबारमें छेदा और सैकड़ों बाणोंसे हाथीको घायल किया १३ स्वर्णमयी अर्जुन के बाणोंसे संयुक्त वह स्वर्णमयी कवचधारी हाथी सायंकाल के समय ऐसा प्रकाशमानहुआ जैसे कि दावानल अग्निसे ज्वलित औषधियों समेत वृक्षोंवाला पर्व्वत प्रकाशित होताहै वह बादलके समान गर्जता चलता घूमता दुःखसे पीड़ित चलते २ सवार समेत ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वज्रसे टूटाहुआ पर्व्वत गिरपड़ताहै १४ । १५ उसके मरने के पीछे उसका दूसरा भाई द्वन्द युद्धमें भाई के मरनेपर श्रीकृष्ण अर्जुन के मारने का अभिलाषी स्वर्णमयी मालाधारी हिमाचलके शिखर के समान हाथी की सवारीसे सन्मुखआया १६ वह सूर्य्यकी किरणके समान प्रकाशित तीक्ष्ण तीन तोमरों से श्रीकृष्णजीको और पांचसे अर्जुनको घायल करताहुआ गर्जा इसके अनन्तर अर्जुनने उसकी भुजाओं को काटा १७ सुन्दर तोमर और बाजूबंद रखनेवाले चन्दन से चर्चित और क्षुरप्रबाण से कटीहुई दोनों भुजा हाथीपर से गिरतीहुई ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि अत्यन्त सुन्दर दो बड़े सर्प पर्व्वतसे गिरतेहोयँ १८ इसीप्रकार अर्जुनके अर्द्धचन्द्र बाणसे कटाहुआ दंडका शिर हाथी के ऊपरसे पृथ्वीपर गिरते समय ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि सूर्य्य अस्ताचलसे पश्चिम दिशामें गिरता है १९ इसके पीछे अर्जुनने सूर्य्यकी किरणरूप उत्तम बाणोंसे उसके श्वेत हाथीको भी छेदा वहभी शब्द करताहुआ ऐसे गिरा जैसे वज्रसे टूटा हिमाचलका शिखर गिरता है २० उसके सिवाय उसीके समान अन्य उत्तम २ हाथी विजयाभिलाषी हुये और वह भी उसीप्रकार से अर्जुन के

हाथसे मरे जैसे कि वह दोनों हाथी मारेगये थे इसकेपीछे शत्रुओंकी बड़ीभारी सेना छिन्नभिन्न होगई २१ युद्धमें परस्पर मारनेवाले हाथी घोड़े और मनुष्यों के समूह चारोंओरसे परस्परमें अत्यन्त घायलहोकर गिरपड़े और बहुतसे अत्यन्त बकनेवाले मनुष्यभी मारेगये २२ इसकेपीछे पाण्डवी सेनाके मनुष्य अर्जुनको घेरकर ऐसे बोले जैसे कि देवताओं के समूह इन्द्रको घेरकर बोलेथे कि हे वीर अर्जुन हमलोग जिससे कि मृत्युके समान भयभीत थे वह शत्रु प्रारब्धसे तुम्हारे हाथसे मारागया २३ जो इसप्रकार पराक्रमी शत्रुओंसे पीड़ामान इनमनुष्योंकी तुम रक्षानहीं करते तौ शत्रुओं की वैसीही प्रसन्नता होती जैसी कि हम लोगों को हुईहै २४ इसके अनन्तर शुभचिन्तकों के इन बचनों को सुनकर वह प्रसन्न चित्त संसप्तकों का मारनेवाला अर्जुन प्रत्येक को उनकी योग्यता के अनुसार प्रसन्न करके चलदिया २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिदंडधारवधेएकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥

बीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके पीछे अर्जुन ने वहां से लौटकर मंगल ग्रहके समान वक्र और अतिवक्र गतियों से हजारों संसप्तकों को मारा १ हे भरतबंशी अर्जुन के बाणों से घायल मनुष्य घोड़े रथ हाथी सब के सब इधर को तितिर बितिरहोकर घूमनेलगे और घूम २ कर गिरे और मृतक होकर नष्ट होगये २ युद्ध में सन्मुख लड़नेवाले वीरों के उत्तम घोड़े रथ हाथी रथी ध्वजा धनुष शायक हाथ वा हाथ में लिये शस्त्र भुजा और शिरोंको अर्जुन ने अपने भल्ल क्षुरप्र अर्द्धचन्द्र और वत्सदन्तनाम बाणों से काटा ३ । ४ जैसे कि गौके निमित्त युद्धाभिलाषी अनेक बैल दूसरे बैलके सन्मुख जाते हैं उसी प्रकार हजारों शूरवीर अर्जुन के ऊपर गिरते थे ५ उन सब वीरोंके साथ अर्जुनका युद्ध ऐसा बड़ाभयकारी रोम हर्षण करनेवाला हुआ जैसे कि तीनोंलोकों की विजय के वास्ते दैत्योंका युद्ध इन्द्रके साथ में हुआ था ६ उग्रायुधके पुत्रने सर्पों के समान तीन बाणों से उस अर्जुन को घायल किया और अर्जुन ने उसके शिरको धड़से जुदा किया ७ फिर क्रोधित होकर उन लोगों ने सब ओर से अर्जुन के ऊपर नानाप्रकार के शस्त्रों की ऐसी वर्षाकरी जैसे कि वर्षा ऋतुमें मरुत् देवता के प्रेरित किये हुये

बादल हिमालयपर जलकी वृष्टिको करते हैं ८ अर्जुनने शत्रुओं के अस्त्रों को सब ओरसे अपने अस्त्रों से रोककर अच्छी रीतिसे चलायेहुये बाणों से अनेक शत्रुओं को मारा ९ और उनके रथोंको भी बाणों से रथियों समेत ऐसीदशाका करदिया कि जिनके घोड़े और सारथी मरजाने से हाथों से तरकस और ध्वजा पताका गिरपड़ीं बागडोर हाथसे छूटगई पहिये टूटे दांतुये और जुये और शरीर के कवच भी टूटे १० । ११ वहां टूटेहुये बहुमूल्य रथ ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि अग्नि वायु और जलसे टूटेहुये धनीलोगों के घर होते हैं १२ फिर वज्र और बिजली के समान बाणों से टूटेहुये हाथियों के कवच ऐसे टूटपड़े जिसप्रकार वज्रपात और अग्निसे पर्व्वतों के शिखर गिरपड़ते हैं १३ फिर अर्जुन के हाथसे घायल होकर बहुत से घोड़े सवारों समेत गिरपड़े उन घोड़ों की जीभ और नेत्र निकल पड़े थे इसहेतु से वह पृथ्वी पर पड़ेहुये रुधिर से लिप्त देखने के अयोग्य मालूम होते थे १४ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र अर्जुन के नाराचों से छिदे हुये मनुष्य घोड़े और हाथी गर्ज २ कर घूमते और मलिन मन हो २ कर पृथ्वी पर गिरपड़े १५ अर्जुन ने बड़े स्वच्छ बिजली और बिष के समान बहुतसे बाणों से उनको ऐसे मारा जैसे कि महाइन्द्र दानवों को मारताहै १६ अर्जुनके हाथसे मरेहुये जो बीर रथ और ध्वजाओं समेत पृथ्वी पर शयन करनेवाले हुये वह बीर बड़े मूल्य के कवच भूषण और नाना प्रकारकी पोशाकों समेत शस्त्रों के धारण करनेवाले थे १७ वह पवित्रकर्मी वा उत्तम कुलीन शास्त्रज्ञ युद्धकर्त्ता अर्जुनके बाणों से पराजय होकर पृथ्वी पर गिरपड़े और अपने उत्तम कर्म के द्वारा स्वर्ग को गये १८ इसके पीछे भिन्न २ देशों के स्वामी क्रोधयुक्त शूरवीर आपके युद्धकर्त्ता अपने समूहों समेत रथियोंमें श्रेष्ठ अर्जुनके सन्मुख गये १९ रथ घोड़े और हाथियों पर सवार मारने के अभिलाषी वह पतिलोग भी नाना प्रकार के शस्त्रों को चलातेहुये शीघ्र सन्मुख दौड़े २० जिनको अर्जुनरूपी वायु ने शीघ्रता पूर्व्वक छोड़ेहुये बाणों से उस शस्त्ररूपी बड़ी वर्षा को जो कि युद्धकर्त्ता रूपी बड़े २ बादलों से छोड़ी हुईथी पृथक् २ करदियाथा २१ वह घोड़े हाथी और पतियों से युक्त बड़े २ शस्त्रों से पूर्ण अर्ज्जुन के शस्त्र और अस्त्र रूपी पुलसे हटकर साथमें पार होने के अभिलाषी थे २२ इसके अनन्तर बासुदेवजी ने कहा कि हे निष्पाप अर्जुन क्या खेल करता है इन संसप्तकों को मार

कर फिर कर्ण के मारनेका उपाय शीघ्रता से कर २३ तब अर्जुनने श्रीकृष्णजी से बहुत अच्छा यह शब्द कहकर श्रेष्ठ संसप्तकोंको तुच्छ करके शस्त्रों के बल से ऐसामारा जैसे कि दैत्योंको इन्द्रमारताहै २४ अर्जुन बाणों को लेता चढ़ाता और मारताहुआ किसी को दिखाई नहीं दिया और सावधान वीरों ने उसको शीघ्रतासे बाणोंको छोड़ताहुआ भी देखा २५ हे भरतवंशी उन श्रीकृष्णजीने बड़ा आश्चर्य्य किया कि हंसोंकेसमान उज्ज्वल वह बाण सेनामें ऐसे पहुँचे जैसे कि सरोवर में हंसपक्षी पहुँचते हैं २६ इसके अनन्तर मनुष्यों की प्रलय वर्त्तमान होनेपर युद्धभूमिको देखकर श्रीकृष्णजी अर्जुनसे बोले २७ हे अर्जुन दुर्य्योधन के कारणसे यह भरतवंशी और अन्य राजाओं की प्रलय पृथ्वी पर वर्त्तमानहै २८ हे भरतवंशी बड़े धनुषधारियों के सुवर्णपृष्ठवाले धनुषधारियोंको वा आभूषणों समेत तूणीरोंको टूटाहुआ देखो २९ और टेढ़े पर्व्व और सुनहरी पुंखवाले तेलसे सचिक्कण कांचलीसे छुटे सर्पों के समान नाराचनाम बाणोंको देखो ३० हे भरतवंशी सुवर्ण से अलंकृत चित्रविचित्र तोमरोंको भी देखो और धनुषसे टूटेहुये सुवर्ण पुंखवाले बाणोंको देखो ३१ सुवर्ण से अलंकृत बाण वा कंचनसे शोभित शक्तियोंको वा सुनहरी बस्त्रोंसे मढ़ीहुई गदाओंको देखो ३२ सुनहरी दुधारे खड्ग पट्टिश और डंडोंसमेत कटेहुये फरसों को देखो ३३ और बहुमूल्यके पड़ेहुये परिघ भिन्दिपाल भुशुंडी कुणप और अपरकुन्तोंको देखो ३४ विजयाभिलाषी वेगमान शूरवीर नानाप्रकार के शस्त्रोंको लेकर निर्जीवहोकर जीवतेसे दिखाई देतेहैं ३५ गदाओं से मथित अंगवाले हाथी घोड़े और रथों समेत मूशलोंसे कूटेहुये मस्तकवाले हजारों युद्धकर्त्ताओंको देखो ३६ हे शत्रुहन्ता बाण शक्ति दुधारे खड्ग तोमर पट्टिश प्रास नखरल गुड़आदि अनेक शस्त्रोंसे अत्यन्त घायल मनुष्य हाथी घोड़ोंके समूह रुधिरमें भरेहुये निर्जीव देहों से पड़े युद्धभूमि में वर्त्तमानहैं ३७ । ३८ और बाजूबंद आदि शुभभूषण हस्तत्राण और केयूरको धारण करनेवाली चन्दनसेलिप्त भुजाओंसे पृथ्वीशोभायमानहै ३९ और वेगवान् शूरवीरोंकी टूटीहुई उत्तम भुजाओंसे वा हाथीकी सूंड़के समान टूटीहुई जंघाओंसे और उत्तम चूड़ा बांधनेवाले कुंडलधारी शिरोंसे युद्धभूमि अत्यन्त शोभादेरही है सुनहरी घंटे रखनेवाले उत्तम रथोंको भी अनेक प्रकारसे टूटाहुआ देखो ४० । ४१ और रुधिरमें भरेहुये बहुतसे घोड़ोंको

देखो वा अनुकर्ष उपासंग पताका और नानाप्रकारकी ध्वजाओंको देखो ४२ युद्धकर्त्ताओं के फैलेहुये श्वेतरंग के महाशंखों को और जिह्वा निकले पर्व्वत के समान पड़े सोतेहुये हाथियोंको देखो ४३ बैजयन्तीनाम बिचित्र मालाओं से और मरेहुये हाथियों के सवार और अनेक कालेकंमलों से युक्त परिस्तोमों से ४४ अच्छी कृष्ण और बिचित्र अद्भुतरूप कुथाओंसे और हाथियोंसे टूटकर गिरेहुये घंटाओंके चूर्णोंको देखो ४५ बैदूर्य्य मणिके दण्डवाले पृथ्वीपर पड़ेहुये अंकुशोंको और घोड़ों के जुये पीठ और रत्नजटित छिद्रों को देखो ४६ सवारों की ध्वजाओं की नोकापर टूटेहुये सुवर्ण से चित्रित घंटाओं को और बिचित्र मणियों से जटित सुवर्ण अलंकृत ४७ पृथ्वीपर पड़ेहुये मृगचर्मसे बनेहुये घोड़ों के जीनपोशों को और राजाओंकी चूड़ामणि और सुनहरी बिचित्र मालाओंको देखो ४८ धनुषसे छिदेहुये छत्र चामर और बैजयन्तियोंको देखो चन्द्रमा और नक्षत्रों के समान प्रकाशित सुन्दर कुंडलधारी ४९ अलंकार युक्त डाढ़ी मूछोंसे संयुक्त पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखों से बिछीहुई पृथ्वीको देखो ५० इसी प्रकार कुमुद उत्पल नाम कमलों के समान रूपी राजाओं के मुखों से इस पृथ्वी को नक्षत्र समूहों समेत निर्मल चन्द्रमा से शोभित आकाश के समान सदैव बाणरूप नक्षत्रोंकी मालाओं के रखनेवाली को देखो हे अर्ज्जुन इस महायुद्ध में यह कर्म तेरेही योग्यहै ५१ । ५२ चाहै वह कर्म जो तुमने स्वर्ग के युद्धमें इन्द्र का किया इसरीति से वह युद्धभूमि अर्ज्जुन को दिखाते ५३ और चलतेहुये श्रीकृष्णजी ने दुर्य्योधनकी सेनामें शंख दुन्दुभी भेरी और पणवों के बड़े शब्दों को सुना ५४ और रथ घोड़े हाथी और शस्त्रों के भयानक शब्दोंको भी सुना फिर श्रीकृष्णजी ने बायुके समान घोड़ों के द्वारा उस सेना में प्रवेशकरके ५५ राजा पाण्ड्यके हाथसे आपकी सेनाको पीड़ित देखकर बड़ा आश्चर्य्य किया बाण और अस्त्रविद्या में अत्यन्त श्रेष्ठ उस पांड्यने युद्धमें अनेक प्रकारके बाणों से ५६ शत्रुओं के समूहों को ऐसे मारा जैसे कि मृत्यु निर्जीव मनुष्योंको मारती है घात करनेवालों में श्रेष्ठ पांड्यने तीक्ष्ण बाणों के द्वारा हाथी घोड़े और मनुष्यों के शरीरों को ५७ छेदकर उन निर्जीवोंको गिराया फिर पाण्डवों ने शत्रुओं के चलाये अस्त्र और नानाप्रकार के शस्त्रों को शायकों से काटकर उन शत्रुओं को ऐसे मारा जैसे कि इन्द्र असुरोंको मारता है ५८ । ५९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेविंशोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय तुमने प्रथमही लोक में विख्यात पाण्ड्य बड़ा वीर वर्णन किया परन्तु तुमने युद्धमें इसके कर्म को वर्णन नहीं किया १ अब उस बड़े वीरके पराक्रम और शिक्षाके प्रभाव बल बड़प्पन और अहंकारको ब्यौरेवार कहो २ संजय बोले कि तुम भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य अश्वत्थामा कर्ण अर्ज्जुन और श्रीकृष्ण आदि जिन रथियों को सर्व्वविद्या सम्पन्न और धनुष विद्या में सबसे श्रेष्ठ मानतेहो और जो इन सब महारथियों को भी अपने पराक्रमसे तुच्छ समझताहै जिसने अन्य किसी राजाको अपने समान नहीं माना ३।४ और जो भीष्म द्रोणाचार्य्य के साथमें अपनी समानताको भी नहीं सहता है और जिसने अपने को बासुदेवजी और अर्जुन से कम नहीं जाना ५ उस राजाओं में और सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ राजापाण्ड्यने अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर यमराजके समान कर्णकी बड़ी सेनाको मारा ६ बड़े रथ घोड़ों समेत अत्यंत उत्तम पतियों से व्याप्त और पांड्यके पराक्रमसे घायल होकर वह सेना कुम्हार के चक्रके समान घूमतीहुई इधर उधर फिरनेलगी ७ पांड्यने घोड़े ध्वजा और सारथियों से रहित रथोंको और कठिन युद्धसे मारेहुये हाथियों को अच्छीरीति से चलाये बाणों से ऐसे हटादिया जैसे कि वायु बादलोंको हटाता है ८ पताका ध्वजा और शस्त्रों से रहित हाथियों को हाथियों के सवारों समेत पीछे के रक्षकों को ऐसे मारा जैसे कि शत्रुहन्ता इंद्र अपने वज्रसे पर्व्वतोंको विदीर्ण करताहै ९ उसने शक्ति प्रास और तूणीरों समेत अश्वारूढ़ और घोड़ों को भी मारकर पुलिंद, खस, बाह्लीक, निषाद अंधककुंतल १० दक्षिणात्य और भोजोंको और युद्धमें निर्द्दयी शूरोंको बाणोंके द्वारा शस्त्र और कवचों से रहित करके निर्जीव किया ११ युद्ध में बाणों से मारनेवाले रुधिर से उत्पन्न होनेवाले व्याकुलता से पृथक् पाण्ड्य को देखकर अश्वत्थामाजी भय से उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित चतुरंगिणी सेना समेत उसके सन्मुख गये १२ वहां प्रहारकर्त्ताओं में श्रेष्ठ अश्वत्थामाजी ने निर्भयता के समान इसको मीठे वचनों से समझाकर कहा १३ और बड़ी मंद मुसकान समेत युद्धके निमित्त बुलाया और कहा कि हे कमलदललोचन उत्तम कुलीन शास्त्रज्ञ वज्रके समान दृढ़ शरीर और बल

में विख्यात राजापाण्ड्य १४ आपके धनुष की प्रत्यञ्चा पृष्ठस्थान में चिपटीहुई दिखाईदेती है और बड़े भुजदण्डों से बहुत बड़े धनुषको बड़े बादल के समान कठिन टंकारतेहुये दृष्टि पड़तेहो १५ बड़े वेगवान् बाणों की वर्षा से शत्रुओं के सन्मुख मुझ बाणवर्षा करनेवाले के सिवाय आपके सन्मुख होनेवाला शूरवीर युद्धमें नहीं देखताहूं १६ तुम अकेलेही बहुतसे हाथी घोड़े रथ और पतिलोगों को ऐसे मथतेहो जैसे कि निर्भय और भयानकरूप पराक्रमी सिंह बनमें मृगों के समूहों को मथन करताहै १७ हे राजा रथके बड़े शब्दसे पृथ्वी और आकाशको शब्दायमान करतेहुये ऐसे दिखाई देतेहो जैसे कि वर्षाके अन्तमें खेती का हानि करनेवाला गर्जताहुआ बादल होताहै १८ विषैले सर्पकी समान तीक्ष्ण बाणोंको तूणीरसे निकाल २ कर मुझ अकेले से ऐसे युद्धकरो जैसे कि अन्धकने शिवजीके साथ युद्धकियाथा १९ प्रहार करो ऐसे कहेहुये घायलहुये उस मलयध्वजपांड्यने बहुत अच्छा ऐसा शब्द कहकर करणीनाम बाणसे अश्वत्थामाको घायलकिया २० आचार्य्यों में श्रेष्ठ मन्द मुसकानकरते अश्वत्थामाने मर्मभेदी अत्यन्त उग्र अग्निशिखा के समान बाणों से पांड्यको घायल किया इसके पीछे अश्वत्थामाजी ने अत्यन्त तीक्ष्ण मर्मभेदी अन्य नाराचों कोभी फेंका२१।२२पांड्यने उन बाणोंको अपने तीक्ष्ण धारवाले नौबाणों से काटा और चार बाणोंसे घोड़ों को घायलकिया और घायल होतेही वह शीघ्र मरगये २३ इसकेपीछे सूर्य्य के समान तेजस्वी पांड्यने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे अश्वत्थामाके उन बाणोंको काटकर धनुषकी बड़ी प्रत्यंचाको काटा २४ इसकेपीछे शत्रुहन्ता ब्राह्मण अश्वत्थामाजी ने दिव्य धनुषको तैयार करके और शीघ्रही रथ में जुटेहुये दूसरे उत्तम घोड़ों को देखकर २५ उसमें बैठे हजारों बाणों को चलाया आकाश और दिशाओं को बाणों से व्याप्त करदिया २६ इसके पीछे बाण फेंकनेवाले अश्वत्थामा के उन सब बाणों को अबिनाशी जानकर उस पुरुषोत्तम पांड्य ने उनको काटकर गिराया २७ फिर पांड्य ने अश्वत्थामाजी के उन बाणों को काटकर युद्ध में अपने तीक्ष्णधार बाणों से उनके दोनों चक्र रक्षकों को मारा २८ इसके पीछे शत्रुकी हस्तलाघवता को देखकर धनुषको मण्डलरूप करनेवाले अश्वत्थामाजी ने ऐसे बाणों को छोड़ा जैसे कि पूषा का छोटा भाई पर्य्यन्य नाम जलकी बर्षाको छोड़ताहै २९ हे श्रेष्ठ जिन शस्त्रों को

आठ २ बैलवाले आठ छकड़े ले चलते हैं उनको अश्वत्थामाजी ने आधीघड़ी में चलाया ३० उस यमराज के समान क्रोधरूप और मृत्यु के सदृश को जिन्हों ने वहां देखाथा उनमें से बहुधा तो अचेत होगये ३१ जैसे कि वर्षाऋतु में बादलों के समूह पर्व्वत वृक्ष रखनेवाली पृथ्वीपर वर्षा करते हैं उसीप्रकार आचार्य्य के पुत्र अश्वत्थामा ने उस सम्पूर्ण सेनापर बाणों की वर्षा करी ३२ पांड्यरूपी वायु ने उस अश्वत्थामारूप बादल से छोड़ेहुये बड़े दुःख से सहने के योग्य उस बाणरूपी वर्षा को बड़ी प्रसन्नतासे अपने वायुरूप अस्त्रसे हटाकर नाश करदिया ३३ अश्वत्थामाजी ने उस गर्ज्जनेवाले पाण्ड्य की ध्वजा को जो कि चन्दन अगरसे चर्चित मलयाचलके स्वरूपथी काटकर चारों घोड़ोंको मारा ३४ फिर एक बाण से सारथी को मारकर और अर्धचन्द्र से बड़े बादलकी समान शब्दायमान धनुषको काटकर रथको टुकड़े२ करदिया ३५ अश्वत्थामा ने अस्त्रों को अस्त्रों से रोककर और सब शस्त्रों को काटकर आधीन होनेवाले शत्रुको युद्धाभिलाषी होकर युद्धमें नहीं मारा ३६ इसी अन्तरमें कर्ण हाथियों की सेनामें गया और वहां उसने जाकर पाण्डवोंकी बड़ी सेनाको भगाया ३७ हे भरतवंशी उसने टेढ़े पर्व्ववाले बहुतसे बाणों से रथियों को विरथ करके हाथी और घोड़ों को अचेत करदिया ३८ इसके पीछे बड़े धनुषधारी अश्वत्थामाने शत्रुहन्ता रथियोंमें श्रेष्ठ रथसे रहित पांड्यको युद्धकी इच्छाकरके नहींमारा ३९ अच्छा अलंकृत शीघ्रगामी शब्द पर चलनेवाला अश्वत्थामाके बाणोंसे घायल पराक्रमी हाथी जिसका कि स्वामी मारागयाथा वेगसे हाथियोंको मलता हुआ शीघ्र उस पांड्यकी ओर गया ४० हाथियों के युद्धमें कुशल मलयध्वज पांड्य बड़ी शीघ्रताको करताहुआ उस पर्वतके शिखरकी समान श्रेष्ठ हाथीपर ऐसे सवारहुआ जैसे कि गर्जताहुआ सिंह पर्वतके शिखरपर चढ़ताहै ४१ उस मलयाचलके स्वामी गर्जते और अंकुशसे हाथीको क्रोधयुक्त करवानेवाले पांड्य ने पराक्रम और अस्त्रचलानेके उपायजाननेके अभिमानसे शीघ्रही सूर्यकी किरणके समान तोमरको गुरुके पुत्रपर छोड़कर ४२ माराहै माराहै ऐसेआनंदपूर्वक शब्दों को करताहुआ बड़ेवेगसे गर्जा और अश्वत्थामा के उस मुकुटको तोमर से तोड़ा जो कि मणियों से जटित उत्तम हीरोंसे और सुवर्ण से शोभित बहुमूल्य के वस्त्र और मालाओं से अलंकृत था ४३ सूर्य चन्द्रमा ग्रह और अग्निकेसमान

प्रकाशित वह मुकुट कठिन आघात से ऐसे चूर्णहोकर गिरपड़ा जैसे कि इन्द्रके वज्रसे घात कियाहुआ बड़े शब्द युक्तहोकर पर्वतका शिखर पृथ्वीपर गिरे ४४ उसकेपीछे अश्वत्थामाजीने यमराजदण्डके समान शत्रुओं के पीड़ा करनेवाले चौदह बाणोंको हाथमेंलिया ४५ तब उस उत्तम तेजस्वीने हाथीके चारों पैर और सूंड़ पांच बाणों से राजाकी दोनों भुजा और शिरको तीनबाणों से और राजा पांड्यके पीछे चलनेवाले छः महारथियों को छः बाणोंसे मारडाला ४६ राजाकी दोनों भुजा जो बहुत लम्बी चन्दनसे चर्चित सुवर्ण मुक्ता हीरे और अन्य अन्य मणियों से अलंकृतथीं पृथ्वीपर गिरपड़ीं और गरुड़ से व्याकुल सर्पोंकी समान फड़फड़ानेलगीं ४७ वह पूर्णचन्द्रमाके समान प्रकाशमान और क्रोधसे बड़ी २ लाल आंख रखनेवाला कुण्डलधारी शिरभी पृथ्वीपर गिराहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि दोनों विशाखों के मध्यमें चन्द्रमा वर्त्तमान होताहै ४८ फिर वह हाथी पांच उत्तम बाणोंसे छःभाग कियागया और राजाभी तीनबाणोंसे चार खण्डकियागया उस सावधान युद्धकर्त्ता ने इसप्रकार से दशभाग किये जैसे कि दश देवताओं से संबंध रखनेवाला हव्यहोताहै ४९ वह पांड्य घोड़े हाथी और मनुष्योंको जो कि राक्षसों के भोजनथे टुकड़े २ कराके अश्वत्थामा के बाणोंसे ऐसे शांतहोगया जैसे कि पितरों की प्रिय अग्नि मृतकदेहरूप हव्यको पाकर जलप्रबाहसे शांत होजाती है ५० फिर सुहृदजनों समेत आपकेपुत्र राजा दुर्योधनने उस युद्ध कर्ममें विशारद और निवृत्त कर्म गुरूके पुत्रसे मिलकर प्रसन्नता से ऐसे उनका धन्यबादकिया जैसे कि देवताओं के ईश्वर इन्द्रने बलिके विजय होनेपर विष्णुको धन्यबाद दियाथा ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिपांड्यवधेएकविंशोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय पांड्यके मरने और एकवीर कर्णके हाथसे शत्रुओं के भागनेपर अर्जुनने युद्धमें क्याकिया १ वह विद्यामें पूर्ण पराक्रमी योग्य वीर अर्जुन महात्मा शंकरजीसे भी विजय नहीं कियागया २ उस शत्रुहन्ता अर्जुनसे बड़ाभारी कठिन भयहै उस अर्जुनने जो २ वहां कर्मकिये हे संजय उन सबको मेरे आगे वर्णनकरो ३ संजय बोले कि पांड्यके मरजानेपर शीघ्रता क-

रनेवाले श्रीकृष्णजीने अर्जुनसे यह हितकारी वचन कहा कि मैं राजा युधिष्ठिर को और हटेहुये पांडवों को नहीं देखताहूं ४ लौटेहुये पाण्डवसे शत्रुकी फिर बड़ी सेना पराजयहुई परन्तु अश्वत्थामाके संकल्पसे कर्णके हाथसे संजय मारेगये ५ इसप्रकारसे घोड़े हाथी और रथोंके नाश करनेवाले बड़ेवीर बासुदेवजीने अर्जुन से सब वृत्तान्तकहा ६ भाई युधिष्ठिरके उस बड़े भयको देख और सुनकर पाण्डव अर्जुनने श्रीकृष्णजीसे कहा कि शीघ्र घोड़ोंको चलाइये ७ इसके अनन्तर श्रीकृष्णजी रथकी सवारी के द्वारा उसके सन्मुख शीघ्रगये जिसका कि कोई सन्मुखता करनेवाला न था फिर बड़ी कठिन सन्मुखताहुई ८ तदनन्तर निर्भय कौरव पाण्डव अर्थात् कुन्तीकेपुत्र भीमसेन आदि और कर्णआदिक कौरव और हम सबलोग परस्परमें सन्मुखहुये हे राजाओं में श्रेष्ठ इसके पीछे कर्ण और पांडवों का युद्ध यमराज के देशका बढ़ानेवाला फिर जारीहुआ ९ । १० धनुषबाण परिघ खड्ग पट्टिश तोमर मूशल भुशुण्डी शक्ति दुधारा खड्ग फरसा ११ गदा प्रास तीक्ष्ण कुन्त भिन्दिपाल और बड़े बड़े अंकुशों को हाथ में लेकर परस्पर मारने की इच्छासे चढ़ाई करनेवाले हुये १२ बाण और धनुषों की प्रत्यञ्चा के शब्दों से दिशा विदिशाओं समेत पृथ्वी और आकाश को शब्दायमान करते हुये शत्रुओं के सन्मुख गये १३ बड़े शब्दों से अत्यन्त प्रसन्न युद्धसे पारहोने के अभिलाषी वीरों ने शत्रुओं के वीरों के साथ महाघोर युद्धकिया १४ तब धनुषकी प्रत्यञ्चा के शब्द और चिंघाड़ते हाथी और गिरतेहुये मनुष्यों का महाघोर शब्द हुआ १५ फिर वहां पर सेना के मनुष्य सन्मुख गर्ज्जते हुये शूरवीरों के नानाप्रकारों के शब्दों को सुनकर अत्यन्त भयभीत और अचेत होकर गिरपड़े १६ उनके गर्ज्जते और बाणों की वर्षा करतेहुये वीर कर्ण ने पाञ्चालदेशी वीरोंके वीसरथियों को घोड़े सारथी और ध्वजाओंसमेत अपनेबाणों से स्वर्गको पठाया १७ । १८ युद्धमें पाण्डवोंके बड़ेपराक्रमी उत्तम युद्धकर्त्ताओं ने शीघ्रता पूर्व्वक अस्त्रों के चलाने से आकाश को व्याप्तकरके कर्णको चारोंओर से घेर लिया १९ इसके पीछे कर्णने बाणों की वर्षासे शत्रुओं की सेनाको छिन्नभिन्न करके ऐसा व्यथित किया जैसे कि पक्षियों से व्याप्त कमलों के वनोंको गजराज मथन करताहै २० कर्णने शत्रुओं में घिरकर उत्तम धनुषकोले तीक्ष्णबाणों से उन शत्रुओंके शिरोंको काटकर दूर गिराया २१ तब मृतक वीरोंकी टूटीहुई ढालें

और कवच पृथ्वीपर गिरपड़ीं २२ धनुपसे छोड़ेहुये मर्म देह और प्राणोंके घातक बाणोंसे धनुपोंकी प्रत्यंचा और तूणीरोंको ऐसा घायलकिया जैसे कि चाबुकसे घोड़ोंको घायल करते हैं २३ कर्णने बाणके लक्षमें वर्त्तमान पांड्य सृंजय और पांचालों को बड़ेवेगसे ऐसे मर्द्दनकिया जैसे कि मृगोंके समूहोंको सिंह मर्द्दन करताहै २४ हे श्रेष्ठ इसके पीछे पांचाल और द्रौपदीके पुत्र नकुल और सहदेव सात्यकी समेत एक साथही कर्णके सन्मुखगये २५ उन कौरव पांचाल और पांडवोंके उपाय करनेपर युद्धमें बड़े २ युद्ध करनेवालोंने अपने प्रियप्राणोंको त्याग करके परस्परमें घायलकिया २६ अच्छे अलंकृत कवचधारी आभूषणोंसे युक्त [illegible]हावली कालदण्डके समान गदा मूशल और परिघोंको उठायेहुये गर्जते और [illegible]कएकको पुकारते शीघ्रसन्मुखगये २७।२८ इसके पीछे एकने एकको घायल [illegible]केया और घायलहो होकर गिरपड़े और कोई शूरबीर अङ्गोंसे रुधिर गेरते मस्त[illegible]क नेत्र और शस्त्रों से हीनहोकर २९ शस्त्रों से युक्त और दांतों से पूर्ण रुधिरमें [illegible]रेहुये अनारके वृक्षकी समान मुखों से जीवतेहुये से नियतहुये ३० इसीप्रकार [illegible]सरोंने फरसा पट्टिश खड्ग शक्ति भिंदिपाल प्रास और तोमरों से ३१ काटा छेदा और घायलकरके फेंका गिराया मारा और क्रोधयुक्त बीरों ने युद्धरूपी महासमु[illegible]में घायलकिया ३२ परस्पर में मारेहुये निर्जीव रुधिरसे भरेहुये सुन्दर रथवाले [illegible]धिरको गिरातेहुये ऐसे गिरपड़े जैसे कि चन्दनके कटेहुये वृक्ष गिराये जाते हैं ३३ रथोंसे रथीमारेगये हाथियोंसे हाथी मारेगये मनुष्योंसे मनुष्य और घोड़ों से मारेहुये हजारों घोड़े ३४ क्षुरप्र भल्ल और अर्द्धचन्द्रोंसे कटेहुये भुज शिर छत्र और हाथियों की सूंड़ोंसमेत मनुष्योंकी भुजा पृथ्वीपर गिरपड़ीं ३५ हाथियों ने रथोंसमेत घोड़े और मनुष्योंको मर्द्दनकिया अश्वारूढ़ोंके हाथसे शूरबीर मारे गये ३६ और पताका ध्वजाओंसमेत कटीहुई सूंड़ोंसमेत हाथी ऐसे गिरे जैसे टूटेहुये पर्व्वत गिरते हैं वह हाथी रथ पतियों के सन्मुख जाकर मरे और मरकर गिरपड़े ३७ और शीघ्रता करनेवाले अश्वसवार सन्मुखहोकर पतियों के हाथसे मारेगये ३८ और युद्धमें अश्वसवारोंके हाथसे मारेहुये पतियोंके समूह ऐसेनष्ट होगये जैसे कि मर्द्दन कियाहुआ कमल और मुरझाई हुई मालाहोयँ ३९ इसी प्रकार उस बड़े युद्धमें मृतकोंके मुख भंगहोगये और मनुष्यों के अत्यन्त प्रकाशमान रूप और हाथियोंने ऐसे कुरूपताको पाया जैसे कि म्लानवस्त्र होते हैं ४०॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेद्वाविंशोऽध्यायः २२॥

तेईसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि आपके पुत्रके कहने से हाथियोंके सवार अपने हाथियों के द्वारा मारनेके इच्छावान् पर्षतके पोते क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्नके सन्मुखगये १ हे भरत-बंशी अत्यन्त उत्तम हाथियों के सवार शूरबीर पूर्व दक्षिणकेवासी अंग बंग पुंड्र मागध ताम्र लिप्तक २ मेकल कोशल मद्र दशार्ण निषध कलिंगोंसमेत गजयुद्धमें कुशल ३ बाण तोमर और नाराचों से बादलकी समान बाण वृष्टि करनेवाले उन सबने पांचालदेशी सेनाको अपने बाणरूप वृष्टी से सींचा ४ एंड़ी अंगुष्ठ और अंकुशों से अत्यन्त तेज किये हुये उन हाथियों को मर्द्दन करनेका अभि-लाषी धृष्टद्युम्न बाण और नाराचों से बर्षा करनेवाला हुआ ५ हे भरतबंशी उन पर्व्वताकार हरएक हाथीको फेंके हुये दश छः और आठ बाणों से घायलकिया जैसे कि बादलों से सूर्य्य ढक जाताहै उस रीति से धृष्टद्युम्नको हाथियों से घिरा हुआ देखकर तीक्ष्ण शस्त्रधारी पाण्डव और पांचाल लोग गर्जतेहुये गये ६।७ प्रत्यंचा के शब्दों से शब्दायमान बाणों से हाथियों के सन्मुख बाण वृष्टि करने वाले नकुल और सहदेव और द्रौपदी के पुत्र वा प्रभद्रक ८ सात्यकी शिखंडी चेकितान नाम पराक्रमी बीरों ने चारों ओरसे ऐसे सींचा जैसे कि जलकी धा-राओं से बादल पर्वतोंको सींचताहै ९ बरछों से भिदेहुये उन अत्यन्त क्रोधयुक्त हाथियों ने मनुष्य घोड़े और रथों को भी सूंड़ों से पकड़ २ पटक पटक कर पैरों से मर्द्दनकिया और किसी २ को दांतोंकी नोकों से घायल कर करके घुमाकर दूर फेंकदिया और दांतों में चिपटेहुये अन्य भयानकरूप जीवभी गिरपड़े १०।११ सात्यकी ने सन्मुख वर्त्तमान राजा अंगके हाथीको उग्रवेगी नाराचसे मर्मस्थलों में छेदकर गिरादिया १२ फिर सात्यकी ने उन प्रहारों से बचेहुये शरीरवाले हाथी से उछलने के अभिलाषी राजा अंगकी छातीको नाराच से घायल किया तब वह पृथ्वी पर गिरपड़ा १३ सहदेव ने पुण्ड्र के राजा के हाथी को चलायमान पर्वत के समान आतेहुये को बड़े उपायसे चलाये हुये तीन नाराचों से घायल किया १४ सहदेव उस हाथीको पताका हाथीवान कवच और ध्वजा समेत मार कर राजा अंगके सन्मुखगया १५ फिर नकुल ने सहदेवको रोककर यमराज के दण्डके समान तीन नाराचोंसे हाथी को और सौसे उस राजा अंगको घायल

करके व्यथित किया १६ फिर राजा अंगने सूर्यकी किरणोंके समान प्रकाशित आठसौ तोमरों को नकुल के ऊपर फेंका तब नकुल ने प्रत्येक तोमरके तीन २ खंडकरदिये १७ और अर्द्धचंद्रसे उसके शिरको काटा तब वह मृतक होकर अपने हाथी समेत गिरपड़ा १८ फिर हाथीकी शिक्षामें कुशल इस अंगदेशी राजपुत्र के मरनेपर अत्यन्त क्रोध में भरेहुये अंगदेशी हाथी सवार अपने हाथियों समेत नकुलके सन्मुख गये १९ चलायमान सुन्दर मुख रखनेवाली पताका और सुवर्ण के कवचधारी हाथियों समेत नकुलके पीड़ा करने के अभिलाषी होकर अत्यंत प्रकाशमान पर्वतों के समान उसके सन्मुख गये २० फिर वह मारने के आकांक्षी मेकल उत्कल कलिंग निषद ताम्र लिप्तक देशी युद्धकर्त्ता बाण और तोमरोंकी वर्षा करतेहुये सन्मुखगये २१ जैसे बादल से सूर्य ढकजाताहै उसीप्रकार हाथियों से ढकेहुये नकुल को देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त पाण्डव पांचाल युद्ध करने को उपस्थित हुये २२ उसके पीछे हजारों तोमर और बाणोंकी बर्षा करनेवाले रथियोंका वह युद्ध हाथियों के साथहुआ २३ जिसमें अत्यंत घायल हाथियों के कुंभ और नानामर्मांग वा दांत वा आभूषणों को नाराचोंसे काटा २४ सहदेवने उन हाथियोंमेंसे बहुत बड़े २ हाथियों को मारा वह सब मरेहुये हाथी अपने २ सवारों समेत पृथ्वीपर गिरपड़े २५ फिर नकुल ने बड़े उपाय से उत्तम धनुषको चढ़ाकर सीधे चलनेवाले बाणों से हाथियों को मारा २६ इसके पीछे धृष्टद्युम्न द्रौपदी के पुत्र प्रभद्रक नाम क्षत्री और शिखंडी ने बाणोंकी बर्षा से बड़े २ हाथियोंको व्यथित किया २७ वह शत्रुओं के पर्वताकार हाथी पांडवी युद्धकर्त्ता रूपी बादलोंकी बाणरूप बर्षा से ऐसे गिरपड़े जैसे कि बज्रोंकी बर्षा से पर्वत गिरते हैं २८ इसप्रकारसे उन पाण्डवों के हाथी और रथियों ने आपके हाथियों को मारकर सेनाको ऐसे भागता देखा जैसे कि टूटा किनारा भागती हुई नदीको देखता है २९ पाण्डवों की सेनाके मनुष्य उस सेनाको छिन्नभिन्न करके कर्ण के सन्मुख गये ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिअन्योन्ययुद्धेत्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज भाई दुश्शासन उस आपकी सेना के नाश करने

वाले क्रोधयुक्त भाई सहदेव के सन्मुख गया १ वहां महायुद्ध में भिड़ेहुये उन दोनों को देखकर सिंहनाद किये और दुपट्टों को फिराया इसके पीछे क्रोधयुक्त आपके पुत्र के तीन बाणों से महाबली सहदेव छातीपर घायल हुआ २ । ३ हे राजा तबतो क्रोधकरके सहदेव ने नाराचसे आपके पुत्रको छेदकर सत्तरबाणों से पीड़ामान किया ४ और तीन बाणों से सारथी को हे राजा इसके पीछे दुश्शासन ने उस बड़े युद्ध में धनुषको काटकर सहदेव की दोनों भुजाओं को तिहत्तर बाणों से छाती समेत घायल किया ५ फिर अत्यंत क्रोधयुक्त सहदेवने उस महायुद्ध में खड्ग को लेकर अत्यंत शीघ्रतासे घुमाकर आपके पुत्रके ऊपर छोड़ा ६ वह बड़ा खड्ग उसके प्रत्यंचा समेत धनुषको काटकर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि आकाशसे सर्प गिरताहै ७ उसके पीछे प्रतापवान् सहदेवने दूसरे धनुषको लेकर फिर नाश करनेवाले बाणको दुश्शासन के ऊपर फेंका ८ तब उस कौरव दुश्शासन ने यमदंड के समान प्रकाशमान आतेहुये बाणको अपने तीक्ष्ण धारवाले खड्ग से दो टुकड़े करदिया इसके पीछे शीघ्रता करने वाले महापराक्रमी सहदेव ने उस तीक्ष्णधार खड्ग को घुमाकर और दूसरे धनुषको लेकर बाणको हाथमें लिया ९ । १० फिर युद्ध में हँसतेहुये सहदेवने उस अकस्मात् आतेहुये खड्गको तीक्ष्ण बाणों से गिराया ११ हे भरतवंशी इसके पीछे उस महायुद्ध में आपके पुत्रने शीघ्रही चौंसठ बाणों को सहदेव के रथपर चलाया १२ उन वेगसे आतेहुये बाणों को देखकर सहदेव ने पांच बाणों से काटा १३ फिर उसने आपके पुत्रके चलायेहुये वेगवान् बाणों को हटाकर युद्ध में उसके ऊपर बहुतसे बाणों की वर्षाकरी १४ आपका पुत्रभी उन प्रत्येक बाण को तीन बाणों से काटकर पृथ्वीको फाड़ता हुआ बड़े शब्दों से गर्जा १५ हे राजा इसके पीछे दुश्शासन ने युद्ध में सहदेव को घायलकरके उसके सारथीको नौ बाणों से घायल किया १६ हे महाराज इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापी सहदेव ने मृत्युकाल और कालदंड के समान घोर बाणको हाथमें लिया १७ और अपने पराक्रम से धनुषको खैंचकर आपके पुत्रपर फेंका वह बाण उसको छेद के कवचको काटकर पृथ्वी में ऐसे समागया १८ जैसे कि बामी में सर्प समाजाता है हे महाराज इसके पीछे आपका महारथी पुत्र अचेत होगया १९ अत्यंत भयानक तीक्ष्ण बाण से घायल रथको चलाता हुआ सारथी उसको

अचेत जानकर शीघ्रही दूर लेगया २० पांडुनन्दन ने इस कौरव को बिजयकरके और दुर्य्योधन की सेनाको देखकर चारों ओरसे मर्द्दन किया २१ हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र जैसे कि मनुष्य क्रोधयुक्त होकर चेंटियों की पंक्तियों को मर्द्दन करता है उसीप्रकार उसके हाथ वह कौरवी सेना मर्द्दन करीगई २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिदुश्शासनयुद्धोनामचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा सूर्य्यके पुत्र कर्णने क्रोधसे युद्धसे सेनाको भगानेवाले वेगवान् नकुलको रोका १ उसके पीछे हँसताहुआ नकुल कर्ण से यह बोला कि बड़े दुःखकी बातहै कि देवताओं ने बहुतकाल के पीछे मुझको अपनी कृपादृष्टि से देखा हे पापी युद्धमें नेत्रोंके सन्मुख आयेहुये मुझको देखा २ तूही शत्रुता उपद्रव और अनर्थोंका मूलहै ३ तेरेही अपराध से कौरव परस्पर सन्मुख होकर नाशवान् होगये अब मैं युद्धमें तुझको मारकर कृतकृत्यहोकर तपसे निवृत्तहूं इस प्रकारके वचनोंको सुनकर कर्णने नकुलको उत्तर दिया ४ कि अधिकतर धनुषधारी राजकुमारके योग्यहै हे बीर तू मुझपर प्रहार कर मैं तेरीबीरताको देखूंगा हे शूर प्रथम युद्धमें अपने शूरतारूपी कर्म को करके फिर अपनी प्रशंसा करने को योग्यहै ५।६ हे तात शूरबीर युद्धमें कुछ न कहकर सामर्थ्य से लड़ते हैं तू अपनी सामर्थ्य से मेरे संग युद्धकर मैं तेरे अभिमान को दूरकरूंगा ७ कर्णने यह कहकर शीघ्रही नकुल पर प्रहार किया अर्थात् युद्धमें इसको तिहत्तरबाणों से घायल किया ८ हे भरतवंशी इसके पीछे कर्ण के हाथ से घायल नकुलने सर्पके समान अस्सी बाणों से सूर्य्य के पुत्रको छेदा ९ कर्ण ने सुनहरी पुंख और तीक्ष्णधारवाले बाणों से उसके धनुष को काटकर तीस बाणों से नकुलको पीड़ित किया १० उन बाणों ने उसके कवच को काटकर रुधिर को ऐसे पान किया जैसे कि विषधर सर्प पृथ्वी को छेदकर जलको पीताहै ११ इसके पीछे नकुल ने सुवर्ण पृष्ठवाले असह्य दूसरे धनुष को लेकर कर्ण को सत्तर बाण से और सारथी को तीनबाण से घायल किया १२ फिर क्रोधयुक्त शत्रु के वीरों के मारनेवाले नकुल ने बड़े तीक्ष्ण क्षुरप्रसे कर्णके धनुषको काटा १३ फिर हँसतेहुये वीर नकुल ने इस टूटे धनुषवाले सब लोकके महारथी कर्ण को तीन सौ शायकों से घायल

किया १४ हे श्रेष्ठ तब तो नकुल के हाथ से पीड़ामान कर्णको देखकर रथियों ने देवताओं समेत बड़ा भारी आश्चर्य्य किया १५ तब सूर्य्य के पुत्र कर्ण ने दूसरे धनुषको लेकर नकुलको पांचबाणों से जत्रुस्थानपर घायलकिया १६ वहां जत्रुस्थानमें नियत होनेवाले बाणोंसे नकुल ऐसा शोभायमान हुआ १७ जैसे कि संसारमें प्रकाश करताहुआ सूर्य्य अपनी किरणों से शोभायमान होताहै हे श्रेष्ठ इसकेपीछे नकुलने शीघ्रगामी सातबाणोंसे कर्णको छेदकर फिर उसके धनुषकी कोटिकोकाटा १८ इसकेपीछे उसने बड़े वेगवान् दूसरे धनुषकोलेकर युद्धमें बाणों करके नकुलकी दिशाओं को ढकदिया १९ अकस्मात् कर्ण के बाणोंसे घिरेहुये उस महारथीने अपने बाणोंसे ही कर्णके बाणोंको काटा २० इसके पीछे आकाश में बाणोंका जाल फैलाहुआ ऐसा दिखाई दिया जिसप्रकार पटवीजनोंके समूहों से व्याप्त आकाश होताहै २१ हेराजा उन छोड़ेहुये सैकड़ों बाणों से नकुल ऐसा ढकगया जैसे कि शलभाओं के समूहों से कोई ढक जाताहै २२ वह सुवर्ण से चित्रित वारंवार गिरतेहुये पंक्तिरूप बाण ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि पंक्तिरूप क्रौंचनाम पक्षीहोते हैं २३ बाणजालसे आकाश को व्याप्त होजाने और सूर्य्यके ढकजाने से कोई अन्तरिक्षगामी जीव पृथ्वीपर नहींगिरा २४ बाणों के समूहों से चारों ओरके मार्गोंके रुकजानेपर दोनों महात्मा उदयमान काल सूर्य्यकेसमान शोभायमान हुये २५ हे राजेन्द्र कर्णके धनुषसे गिरेहुये बाणों के समूहों से घायल दुःखसे दुःखित और अत्यन्त पीड़ामान सब सोमक पृथक् २ होगये २६ इसीप्रकार नकुलके बाणोंसे घायल आपकी सेनाभी दिशाओं में ऐसे छिन्न भिन्न होगई जैसे कि वायुके वेगसे बादलों के समूह तिर्रबिर्रहोजाते हैं २७ तब उन दोनों के दिव्य और बड़े बाणोंसे घायल वहदोनों सेना बाणोंकी आधिक्यता को विचारकर चित्रलिखीसी खड़ी रहगई २८ कर्ण और नकुल के बाणोंसे उन मनुष्यों के समूहों के हटजानेपर उनदोनों महात्माओंने बाणोंकी वर्षा से परस्पर में घायल किया २९ परस्पर मारने के अभिलाषी वह दोनों अकस्मात् सेनाके मस्तकपर दिव्य शस्त्रोंके दिखानेवाले और सेनाओं के ढकनेवाले हुये ३० नकुल के छोड़े कंकपक्षसे जटितबाण कर्णको ढककर आकाश में नियतहुये ३१ इसीप्रकार कर्णके चलाये हुये बाण नकुलको ढककर आकाश में नियतहुये ३२ हे राजा बादलों से ढकेहुये सूर्य्य और चन्द्रमा के समान बाणपिंजरमें प्रविष्ट हो-

कर वहदोनों किसीको दिखाई नहींदिये ३३ इसके पीछे युद्धमें क्रोधयुक्त कर्ण ने शरीरको बड़ाघोर करके ३४ बाणोंकी वर्षासे नकुलको चारों ओरसे ढकदिया हे महाराज कर्णके बाणोंसे ढकेहुये उस नकुलने ऐसे पीड़ाको नहीं माना जैसे कि बादलों से ढकाहुआ सूर्य्य पीड़ाको नहीं मानताहै ३५ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछे कर्ण ने हँसकर युद्धमें हजारों बाणजालों को उत्पन्न किया ३६ उस महात्मा के बाणों से सब संसार छायामान हुआ और गिरते हुये उत्तम बाणों से अभ्र के समान छाया उत्पन्न होगई ३७ हेमहाराज इसके पीछे हँसतेहुये कर्ण ने महात्मा नकुलके धनुष को काटकर सारथी को रथकी नीड़से गिरादिया ३८ हे भरतवंशी इसके अनन्तर तीक्ष्णधार चार बाणों से उसके चारों घोड़ों को शीघ्र ही मारकर यमपुर को भेजा ३९ इस के पीछे फिर तीक्ष्ण बाणों से इसके उस दिव्यरथ पताका और चक्रके रक्षकों समेत गदा और खड्गको भी तिलके समान खंड २ करदिया ४० और सूर्य्य चन्द्रमा के चित्रवाली ढाल और अन्य सब प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंको भी काटडाला हे राजा वह रथ और कवचसे बिहीन शीघ्रही रथसे उतरकर ४१ परिघको लेकर नियतहुआ तब कर्ण ने उसके उठायेहुये उस महाघोर परिघ को ४२ अत्यन्त तीक्ष्ण भारवाहक बाणोंसे तोड़ डाला तबतो कर्णने उसको शस्त्रहीन देखकर टेढ़े पर्ववाले ४३ अनेकबाणों से उसको घायल किया परन्तु इसको अधिक पीड़ामान नहीं किया युद्धमें उस शस्त्रज्ञ पराक्रमी कर्णसे घायल ४४ होकर महाव्याकुल नकुल अकस्मात्भागा तबतो बारंबार हँसतेहुये कर्णने उसके पासजाकर ४५ अपनी प्रत्यंचा समेत धनुषको उसके कण्ठमें डालदिया इसकेपीछे वह नकुल कण्ठमें लगेहुये उस धनुषसे ऐसाशोभायमान हुआ ४६ जैसे कि आकाशमें चन्द्रमा अपने मण्डलसे युक्त होताहै और जैसे कि श्याममेघ इन्द्रधनुष से शोभित होताहै ४७ इसकेपीछे कर्णने कहाकि तुमने मिथ्या कहाथा अब बारंबार घायल हुये प्रसन्नचित्तहोकर फिर कहो ४८ हे पराक्रमी पाण्डव तुम कौरवों के साथ मतलड़ो हे तात अपने समानवालों से लड़ो हे पाण्डव लज्जा मतकरो ४९ हे माद्रीकेपुत्र घरकोजावो अथवा जहां श्रीकृष्ण और अर्जुनहैं वहां जावो हेमहाराज ऐसा कह कर उसको छोड़ दिया ५० तब उस धर्मज्ञ शूरबीरने मारनेके योग्यको नहीं मारा हेराजा कुन्तीके बचनको स्मरण करके उसको छोड़दिया ५१ फिर धनुषधारी कर्ण

से छोड़ाहुआ नकुल लज्जा युक्त शीघ्रही युधिष्ठिरके रथके पासगया ५२ कर्ण से अत्यन्त सन्तप्त कियाहुआ घटमें बन्दहुये सर्प के समान दुःखसे दुःखी वारं-वार श्वास लेताहुआ रथके ऊपरभी सवारहुआ ५३ कर्ण भी उसको बिजयकर के शीघ्रही बड़ा पताकावाले चन्द्रबर्ण घोड़े रखनेवाले रथकी सवारी से पांचा-लों के सन्मुखगया ५४ वहां पांचालों के रथ समूहों पर जातेहुये सेनापतिको देखकर पाण्डवों में बड़ा शब्दहुआ ५५ हे महाराज महाचक्रके समान घूमतेहुये कर्ण ने मध्याह्नके समय शूरबीरों का नाशकिया ५६ उससमय हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र वहांपर हमने टूटीहुई ध्वजा पताका फूटी आंखके मृतक घोड़े और सारथियों समेत कितनेही रथोंसे ५७ हटेहुये पांचालों के रथ समूहों को देखा वहां भ्रांति युक्त हाथी और रथ जहां तहां ऐसे घूमतेथे ५८ जैसे कि महाबनमें दावानलसे जलेहुये हाथी होते हैं टूटेहुये कुम्भ रुधिरसेभरे खण्डितहाथ ५६ अंगभंग आदि और कोईपूंछकटेहुये हाथी महात्माके हाथसे घायल टूटेहुये बादलों के समान गिरपड़े ६० नाराचबाण और तोमरों से भयभीत हाथी उसके सन्मुख ऐसे गये जैसे कि शलभानाम पक्षी अग्निके सन्मुख जाते हैं ६१ जल डालनेवाले पर्व्व-तोंकी समान अंगोंसे रुधिरकी रक्षा करतेहुये अन्य बड़े २ हाथी शब्द करते हुये दृष्टपड़े ६२ वहां हमने उरःछिदवाले बालबन्दों से बियुक्त घोड़ों को सुवर्ण चांदी और कांसे के भूषणों से पृथक् ६३ और अन्य २ भूषण और लगामों के विना चामर जीनपोश और गिरेहुये तूणीर ६४ और युद्धमें शोभादेनेवाले शूरवीर सवारों सहित युद्धभूमि में घूमते हुओंको देखा ६५ हे भरतवंशी हमने प्रास खड्ग और दुधारे खड्ग से रहित लोहे के कवच और दिस्तारों के धारण करनेवाले अश्वारूढ़ों को देखा ६६ और मरे वा मरनेवाले अथवा कांपते हुये नानाप्रकार के अंगोंसे रहित युद्ध करनेवालोंकोभी जहां तहां देखा ६७ हमने रथियों के मरनेपर सुवर्णसे जटित शीघ्रगामी घोड़ों से युक्त शीघ्रघूमतेहुये रथों को देखा ६८ हे भरतवंशी हमने अक्ष कूबर और पायेवाले पताका ध्वजा से रहित कितनेही अन्य रथों को देखा ६६ वहां कर्ण के तीक्ष्ण बाणों से घायल मृतकरूप जहां तहां दौड़नेवाले रथियों को देखा ७० इसीप्रकार शस्त्रों से खाली बाणरखनेवाले बहुतसे मृतकों को देखा और तारका जालों से ढकेहुये उत्तम कपड़ोंसे शोभायमान ७१ नानाप्रकारकी विचित्र पताकाओं से अलंकृत चारों

ओरसे दौड़नेवाले हाथियों को देखा ७२ इसीप्रकार चारोंओरको कर्ण के धनुषसे निकलेहुये बाणों से टूटेहुये शिर भुजा और जंघाओंको देखा ७३ कर्णके बाणों से घायल और तेजबाणों से लड़नेवाले युद्धकर्त्ताओं का बड़ा भयानक दुःख वर्त्तमानहुआ ७४ युद्धमें कर्ण के हाथसे घायल वह संजय उसके सन्मुख ऐसे जातेथे जैसे कि अग्निके सन्मुख पतंग जाते हैं ७५ प्रलयकालकी अग्नि के समान जहां तहां सेनाओं के भस्मकरनेवाले उस महारथी कर्णको क्षत्रियों ने त्यागकिया ७६ जो पांचालोंके महारथी बीरलोग मरनेसे बाकी रहे थे उन शीघ्रगामी पृथक् २ होनेवाले महारथियों के पीछेसे बाणोंको छोड़ताहुआ कर्ण सन्मुख दौड़ा ७७ उसमहाबली सूतपुत्रने उन टूटेकवच ध्वजावाले दुःखी बीरों को बाणोंसे ऐसे संतप्तकिया ७८ जैसे कि मध्याह्नके समय सूर्य्य जीवधारियों को तपाताहै ७९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णयुद्धेपंचविंशोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि आपके पुत्र युयुत्सूकी सेनाके भगानेवाले उलूकके सन्मुख गया और तिष्ठतिष्ठ इस बचनको कहा १ हे राजा उसके पीछे युयुत्सूने बज्रकी समान तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे महाबली उलूकको घायलकिया २ फिर क्रोध युक्त उलूकने युद्ध में आपके पुत्रके धनुषको क्षुरप्रसे काटकर करणीनाम बाण से उसको घायलकिया ३ फिर लालनेत्र करनेवाले युयुत्सूने उस टूटे धनुष को डालकर दूसरे बड़े वेगवान् उत्तम धनुषको हाथमें लिया ४ उसके पीछे शकुनि के पुत्रको सात बाणों से और तीनबाणों से सारथी को घायल करके बारम्बार छेदा ५ फिर उलूकने उसको सुवर्ण से चित्रित बीसबाणों से घायलकरके महा क्रोधमें भरकर उसकी सुनहरी ध्वजाको काटा ६ हे राजा वह टूटीहुई बड़ीभारी सुवर्ण की ध्वजा युयुत्सूके सन्मुख गिरपड़ी ७ फिर क्रोध से मूर्च्छित युयुत्सू ने ध्वजाको टूटीहुई देखकर पांच बाणों से उलूक को छाती पर घायल किया हे श्रेष्ठ राजा फिर उलूकने युद्धमें तेलसे स्वच्छ कियेहुये भल्लोंसे उसके सारथी के शिरको काटा ८ । ९ तब युयुत्सूके सारथी का वह कटाहुआ शिर पृथ्वीपर ऐसा गिरा जैसे अपूर्व्व तारा आकाशसे पृथ्वीपर गिरता है १० चारों घोड़ोंको

मारा और उसको पांचबाणोंसे भेदा फिर इस पराक्रमीके हाथसे घायल वह युयुत्सू दूसरे रथपर चलागया ११ हे राजा युद्धमें उलूक उसको विजय करके शीघ्रतासे तीक्ष्णबाणों को फेंकता पांचालों और सृंजियोंको मारताहुआ सृंजियों के सन्मुखगया १२ हेमहाराज भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलतासे रहित आपके पुत्र श्रुतकर्माने अर्द्धनिमेष मात्रमें ही शतानीकको घोड़े रथ और सारथी से रहित करदिया १३ फिर मृतक घोड़ेवाले रथपर नियत अत्यन्त क्रोध युक्त शतानीकने आपके पुत्रके ऊपर गदाको फेंका १४ वह गदा रथ घोड़े सारथी समेत रथको भस्मकर कवचको फाड़तीहुई शीघ्र पृथ्वीपर गिरपड़ी १५ रथसे विहीन परस्पर में देखनेवाले कौरवोंकी कीर्ति के बढ़ानेवाले दोनों वीर युद्धमें हटगये १६ फिर भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित आपका पुत्र रथ पर सवार हुआ और शीघ्रता करनेवाला शतानीक भी प्रतिविन्ध्य के रथपर गया १७ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त शकुनी ने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से सुतसोम को ऐसे कम्पायमान नहीं किया जैसे कि जलका समूह पर्व्वतको कंपित नहीं करसक्ता १८ हे भरतबंशी सुतसोमने पिताके बड़े शत्रु शकुनीको देखकर बहुत हजारों बाणोंसे ढकदिया १९ तेज अस्त्र और मित्रके अर्थ लड़नेवाले विजयसे शोभायमान शकुनीने शीघ्रही दूसरे बाणोंसे उनबाणोंको काटा २० और क्रोध युक्तहोकर युद्धमें उन बाणोंकोभी तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे रोककर तीन बाणों से सुतसोमको घायलकिया २१ हेमहाराज आपके सालेने बाणोंसे उसके घोड़े ध्वजा और सारथीको तिलके समान खण्ड खण्ड किया इस हेतुसे सब मनुष्य बड़े शब्दसे पुकारे २२ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र वह मृतक घोड़े और टूटी ध्वजावाला रथसे रहित होकर उत्तमरथको लेकर रथसे पृथ्वीपर खड़ाहुआ २३ सुनहरी पुंख वाले तीक्ष्ण धारवाले बाणोंको छोड़ताहुआ युद्धमें आपके साले के उसरथको ढकदिया २४ वह महारथी शकुनी शलभनाम पक्षी के समूहोंकी समान रथके समीप वर्त्तमान बाणों के समूहोंको देखकर पीड़ामान नहीं हुआ २५ और बड़े यशस्वी ने अपने बाणों के समूहों से उसके बाणों को मथडाला उस स्थानपर युद्ध करनेवाले आकाशवासी सिद्ध भी प्रसन्न हुये २६ सुतसोमके उस अद्भुत और श्रद्धाके योग्य कर्मको देखकर प्रसन्न हुये और बहुत से पदाती और रथ सवार शकुनी के साथ युद्ध करनेवाले हुये २७ हे राजा तीक्ष्ण वा बड़े वेगवान्

टेढ़ेपर्व्ववाले भल्लों से उसके धनुष और सब तूणीरोंको तोड़ा २८ फिर वह टूटे धनुष रथ से बिहीन वैडूर्य्य और नील कमलके बर्ण हाथीदांत के मूठ रखनेवाले खड्गको उठाकर बड़ी ध्वनिसे गर्जा २९ उसके पीछे बुद्धिमान् सुतसोमके घुमाये हुये निर्मल आकाशके समान उस खड्गको कालदण्डके समानसमझा ३० हे महाराज वह शिक्षायुक्त पराक्रमी खड्गधारी एकाएकी हजारों प्रकारसे चौदह मंडलोंको घूमा ३१ उनके नाम भ्रांत, उद्भ्रांत, आविद्ध, आप्लुत, बिप्लुत, सृतसंपात समुदीर्ण इन मंडलोंको युद्धमें दिखाया यह सातमंडल लोम विलोमके बिभागसे द्विगुणितहोकर चौदह होजाते हैं ३२ फिर उसके पीछे पराक्रमी शकुनी ने बाणों को उसके ऊपर फेंका उसने उन आतेहुये बाणों को उत्तम खड्गसे काटा ३३ हे महाराज इसके अनन्तर क्रोधयुक्त शकुनी ने फिरभी सर्पके बिषकेसमान बाणों को सुतसोमके ऊपर फेंका ३४ युद्धमें गरुड़जी के समान पराक्रमी सुतसोम ने अपनी हस्तलाघवताको दिखातेहुये खड्गकी शिक्षाके पराक्रमसे उन बाणोंको काटा ३५ हेराजा तब दायेंबायें मण्डलोंके घूमनेवाले उस सुतसोमके प्रकाशमान खड्गको बड़े तीक्ष्ण क्षुरप्रसे काटा और टूटाहुआ खड्ग एकबारही पृथ्वीपर पड़ा और उस श्रेष्ठ खड्गका आधाभाग उसके हाथमें नियतरहा ३६ । ३७ महारथी सुतसोमने खड्ग को टूटा जानकर और छः चरण हटकर फिर उस आधे खड्ग को प्रहार किया ३८ वह सुवर्ण और हीरों से अलंकृत खड्ग उस महात्माके डोरी समेत धनुषको काटकर शीघ्रही पृथ्वीपर गिरपड़ा ३९ फिर सुतसोम श्रुतिकीर्त्ति के बड़े रथपर चलागया और शकुनीभी बड़े कष्टसे बिजय होनेवाले दूसरे घोर धनुष को लेकर ४० शत्रुओं के बहुत से समूहों को मारताहुआ पाण्डवी सेना के सन्मुख गया हे राजा युद्ध में निर्भय के समान घूमनेवाले शकुनी को देख कर पाण्डवों के बड़े शब्द हुये महात्मा शकुनी के हाथ से वह अहंकारी शस्त्रों की धारण करनेवाली सेना भागतीहुई दृष्ट पड़ी जैसे कि देवराज इन्द्र ने दैत्यों की सेनाको मर्द्दन किया इसीप्रकार शकुनी ने भी पाण्डवों की सेना का नाश किया ४१ । ४२ । ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसुतसोमसौवलयुद्धेषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

संजयबोले हे राजा कृपाचार्य ने युद्धमें धृष्टद्युम्नको ऐसे रोका जैसे कि बन में हाथीको सिंह रोकताहै १ हे भरतबंशी वहां उसपराक्रमी गौतम कृपाचार्यजीसे रुकाहुआ धृष्टद्युम्न एकचरण चलनेकोभी समर्थ नहींहुआ २ कृपाचार्यके रथको धृष्टद्युम्न के रथके समीप देखकर सब जीवमात्र भयभीत होकर नाशको मानने लगे ३ वहांपर चित्तसे उदास होकर रथी और अश्वारूढ़ कहनेलगे कि निश्चय करके द्रोणाचार्य के मरने से द्विपादों में श्रेष्ठ ४ बड़े तेजस्वी दिव्यास्त्रों के जान- नेवाले बड़े बुद्धिमान् शार्दूलरूप कृपाचार्य अत्यन्त क्रोधयुक्तहैं अब कृपाचार्य्य के हाथसे धृष्टद्युम्नकी कुशल ५ और इस सब सेनाकाभी भयसे निवृत्त होना और हम सब भागने वालोंकाभी इस ब्राह्मणसे बचना कठिन बिदित होताहै ६ क्योंकि यह आचार्य्य रूप कालके समान दृष्ट पड़ताहै हे कृपाचार्य्य अब द्रोणा- चार्य्यके मार्गपर चलेंगे ७ यह कृपाचार्य्य सदैव हस्तलाघव करके युद्धमें बि- जयका पानेवाला अस्त्रज्ञ पराक्रमी होकर क्रोधयुक्त है ८ अब धृष्टद्युम्न युद्ध में मुखको फेरनेवाला दिखाई देता हे महाराज वहां उनदोनों के सन्मुख होने में आपके पुत्रों के नानाप्रकारके शब्द दूसरों के साथमें कहे हुये सुनेगये ९ इसके पीछे शार्दूल कृपाचार्य्य ने क्रोधसे बड़ी २ श्वासें लेकर १० सदैव चेष्टाकरनेवाले धृष्टद्युम्नको सबअंगों पर पीड़ामान किया फिर महात्मा कृपाचार्य्य से घायलहो- कर बड़े मोह में व्याकुल होके उसने युद्ध में ११ करने के योग्य कर्म को नहीं जाना इस के पीछे सारथी ने कहा हे धृष्टद्युम्न कुशल है १२ मैंने कहीं तेरे ऐसे समयको नहीं देखाथा दैवयोग से सब ओर में तेरे मर्म्मस्थलों को लक्ष करके इस उत्तम ब्राह्मणके फेंकेहुये बाण तेरे मर्म्मों के छेदने वाले मर्म्मों पर पड़े हैं जो तुमकहो तो रथको शीघ्रही ऐसे लौटाऊं जैसे कि समुद्र से नदीके वेग को हटाते हैं १३।१४मैं ब्राह्मणको अवध्य मानताहूं इसीसे तेरा पराक्रम नष्ट होगया है हे राजा यह सारथी के बचन को सुनकर धृष्टद्युम्न बड़े धीरेपनेसे यहवचन बोला १५ हे तात मेराचित्त अचेत होताहै और अंगोंपर पसीना उत्पन्न होताहै और शरीरमें कंप और रोमांच खड़े हैं १६ युद्धमें ब्राह्मणको त्यागकरके उधरको नेधीरे २ चल जहां कि अर्ज्जुन है हे सारथी अबयुद्धमें अर्ज्जुनको या भीम-

सेनको पाकर १७ कुशलहोगी यही मेरा दृढ़ बिश्वासहै हे महाराज इसके पीछे वह सारथी घोड़ों को मारता हुआ १८ बड़ी शीघ्रता से वहां गया जहां बड़ा धनुर्द्धर भीमसेन आपकी सेनाके मनुष्यों से युद्ध कररहाथा हे श्रेष्ठ तब गौतम कृपाचार्य्य धृष्टद्युम्न के रथको भागाहुआ देखकर १६ सैकड़ों बाणों को छोड़ते हुये उसके पीछे गये और शत्रु के बिजय करनेवाले ने बारम्बार शंखको बजाया २० और धृष्टद्युम्न को ऐसे भयभीत किया जैसे कि इन्द्रने नमुचिको भयभीत कियाथा फिर भीष्मजी के मृत्युरूप बिजयी शिखण्डीको २१ बारम्बार मंद मुसकान करतेहुये कृतबर्मा ने रोका तबतो शिखण्डी ने भी हार्द्दिक्यों के महारथी को पाकर तीक्ष्ण धारवाले पांचबाणों से जत्रुस्थानपर घायलकिया फिर हँसतेहुये महारथीकृतबर्मा ने साठबाणों से २२।२३ शिखण्डीको घायलकरके एकबाणसे उसके धनुषकोकाटा फिर पराक्रमी द्रुपदकेपुत्रने दूसरे धनुषको लेकर २४ अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर कृतवर्म्मासे तिष्ठ २ ऐसाबचनकहा हेराजा इसके अनन्तर सुनहरी पुंखवाले नौबाणोंको उसके ऊपर चलाया २५ वहबाण उसके कवचपर लगकर गिरपड़े उन निष्फल पृथ्वीपरगिरेहुये बाणोंको देखकर २६ अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्र से धनुषकोकाटा फिर टूटे धनुषवाले कृतबर्मा को २७ शिखण्डी ने क्रोधयुक्त होकर अस्सी बाणों से छाती और भुजापर घायल किया तब अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतबर्मा ने अंगों से ऐसे रुधिरको डाला जैसे कि मटके से जल डालाजाताहै फिर रुधिरसे भराहुआ कृतबर्मा ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि वर्षा से धातु रखने वाला पर्वतहोताहै इसकेपीछे प्रभुकृतबर्मा ने बाणसमेत धनुषको लेकर २८।२६।३० [illegible]णों के समूहों से शिखण्डी को स्कंधस्थान में घायल किया फिर शिखण्डी [illegible]कंधपर लगेहुये बाणों से ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि छोटी बड़ीशाखाओं [illegible] बड़ावृक्ष शोभित होताहै ३१ वह दोनों परस्परमें अत्यन्त घायल और रुधिर [illegible]में भरेहुये ऐसे शोभितहुये ३२ जैसे कि परस्पर सींगों से घायल दो बैल होते [illegible]हैं परस्परमें मारने की इच्छा करनेवाले वहदोनों महारथी ३३ वहां हजारों मंड[illegible]लोंको घूमे हे महाराज कृतवर्म्मा ने शिखण्डी को ३४ तीक्ष्णधार सुनहरी पुंख[illegible]वाले सत्तर बाणों से घायल किया इसके पीछे शीघ्रता युक्त युद्धकर्ताओं में श्रेष्ठ भोजबंशी कृतवर्मा ने युद्धमें ३५ मृत्युकारी घोरबाणको उसके ऊपर छोड़ा हे राजा वह शिखण्डी उस बाणसे घायल होकर शीघ्र मूर्च्छा युक्त होगया ३६

और मूर्च्छा से अचेत होकर अकस्मात् ध्वजा की यष्टीका आश्रयलिया और सारथी इस महारथी को शीघ्रही युद्धसे दूर लेगया ३७ इस शूरबीर शिखण्डीके परास्त होनेपर कृतवर्मा के वाणसे दुःखी बारम्बार श्वास लेनेवाली चारों ओरसे घायल वह पाण्डवी सेना भागी ३८। ३९॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसप्तविंशोऽध्यायः २७॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

सञ्जय बोले हे महाराज इसके पीछे अर्ज्जुन ने आपकी सेना को पाकर चारों ओरसे छिन्न भिन्न ऐसा करदिया जैसे कि बायु रुईको तिरे बिरे कर देताहै १ तब त्रिगर्त्त, शिवी, शाल्व, संसप्तक और कौरवों की नारायणी सेना उसके सन्मुख गई हे भरतवंशी सत्यसेन, चन्द्रदेव, मित्रदेव, शत्रुञ्जय, सौश्रुति, चित्रसेन, मित्रवर्म्मा और बड़े धनुर्द्धारी अपने पुत्र भाइयों समेत राजा त्रिगर्त्त ने २। ३। ४ वाणों के समूहों को छोड़ा और युद्ध में अर्ज्जुन पर एकाएकी वाणों की वर्षा करतेहुये सन्मुख वर्त्तमान होकर ऐसे बिलायमान होगये जैसे कि गरुड़ को देखकर सर्प बिलायमान होते हैं ५। ६ हे महाराज युद्ध में घायल उन युद्धकर्त्ताओं ने पाण्डवों को ऐसे त्याग नहीं किया जैसे कि घायलहुये शलभ अग्निको नही त्याग करते हैं ७ सुतसेन ने तीन वाणसे मित्रदेवने तिरेसठ वाणों से चन्द्रसेन ने सात वाणों से युद्धमें पाण्डवोंको घायल किया ८ मित्रवर्मा ने तिहत्तर वाणों से सौश्रुतिने सातवाणों से शत्रुंजयने बीस वाणोंसे सुशर्माने नौवाणों से ९ घायलकिया बहुतोंके हाथसे घायल उस अर्जुनने इसक्रमसे युद्धमें उन राजाओंको घायलकिया कि सौश्रुतिको सातवाणोंसे सुतसेनको तीन वाणों से शत्रुंजयको बीसवाणों से चन्द्रसेनको आठवाण से मित्रदेवको सौवाणसे श्रुतिसेनको तीन वाणसे १०। ११ मित्रवर्माको नौवाणों से सुशर्मा को आठवाण से घायलकिया और राजा शत्रुंजय को वाणों से मार कर १२ सौश्रुतिके शिरको धड़समेत शरीरसे जुदाकरदिया और शीघ्रही चन्द्रदेवको वाणोंके द्वारा यमलोकमें पहुंचाया १३ हे महाराज इसीप्रकार उपाय करनेवाले अन्य महारथियों कोभी पांच २ वाणोंसे रोका १४ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतिसेनने युद्धमें श्रीकृष्णजीको लक्ष्यकर उनके ऊपर बड़े तोमरको फेंक सिंह-

नादसे गर्जा वह सुवर्ण दण्डवाला लोहेका तोमर महात्मा माधवजी की बाम भुजाको छेदकर पृथ्वीपर गिरपड़ा १५ । १६ उससमय उस बड़ेयुद्ध में घायल माधवजीके हाथसे चाबुक और घोड़ोंकी रस्सियां छूटगईं १७ हे राजा तब कुंती के पुत्र अर्जुनने बासुदेवजी को अंगसे घायल देखकर बड़ा क्रोधकिया और श्रीकृष्णजी से कहनेलगा १८ हे महाबाहो प्रभु घोड़ोंको सुतसेन के पास पहुंचाओ मैं उसको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे यमलोकमें पहुंचाऊंगा १९ फिर श्रीकृष्णजीने पूर्व्वके समान दूसरेचाबुक और घोड़ोंकी डोरीको पकड़कर उनघोड़ों को सुतसेनके रथपरचलाया २० कुन्तीकेपुत्र महारथी अर्जुनने श्रीकृष्णको घायल देखकर तीक्ष्णबाणों से सुतसेन को रोककर २१ सेनाके मध्यमें अत्यन्त तीक्ष्णधारवाले भल्लों से उसराजाके कुण्डलोंसमेत बड़ेशिरको देहसे काटा २२ उसको मारकर तीक्ष्णबाणों से मित्रबर्माको और मत्स्यदंतनाम तीक्ष्णबाणों से उसके सारथीको मारा २३ हे श्रेष्ठ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त पराक्रमी अर्जुनने सैकड़ों बाणोंसे संसप्तकों के हजारों समूहोंको गिराया २४ हे राजा उसके पीछे उसमहारथीने सुवर्ण पुंखवाले क्षुरप्रसे महात्मा मित्रसेनके शिरकोकाटा २५ और अत्यन्त क्रोधसे सुशर्माको जत्रुस्थानपर घायलकिया इसके पीछे क्रोधमें भरे दशों दिशाओं को शब्दायमान करनेवाले सब संसप्तकों ने अर्जुनको घेर कर शस्त्रोंके समूहोंसे घायलकिया इन्द्रकी समान पराक्रमी बड़े साहसी संसप्तकोंसे पीड़ामान महारथी अर्ज्जुनने २६ । २७ ऐन्द्रअस्त्रको प्रकट किया हे राजा उस ऐन्द्रास्त्रसे हजारोंबाण प्रकटहुये हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र जहांतहां टूटीहुई ध्वजा धनुष और पताकासमेत रथवाजुओं के समेततूणीरोंके बड़े शब्दसुनेगये २८।२९ युद्ध में गिरनेवाले अक्ष चक्र बागडोर पोक्करबरूथ और पार्पदों के शब्द सुने गये ३० गिरतेहुये घोड़े प्रास दुधारा खड्ग गदा परिघ शक्ति तोमर और पट्टिशोंके भी बड़े २ शब्दसुनेगये ३१ चक्र शतघ्नी और जंघाओंसमेत भुजा कंठ सूत्र बाजूबन्द समेत केयूरों के शब्द सुनेगये ३२ हे भरतवंशी हार निष्क कवच छत्र ब्यजन और शिरोंके मुकुटोंसमेत जहांतहां बड़ाभारी शब्द सुनागया सुन्दर कुण्डल नेत्रवाले पूर्णचन्द्रमाके समान मुखोंसेयुक्त शिरोंके समूह पृथ्वी में गिरे हुये ऐसे शोभायमानथे जैसे कि आकाशमण्डल में तारागण चमकते हैं सुन्दर माला बस्त्रालंकार आदि चन्दनोंसे लिप्त ३३ । ३४ । ३५ मृतकोंके शरीर पृथ्वीपर

गिरेहुये दृष्टपड़े तब युद्धभूमि गंधर्व नगरके समान घोररूपहोगई ३६ वह सबपृथ्वी राजकुमार और महाबली क्षत्री और पड़ेहुये हाथी घोड़ों से ३७ युद्धमें ऐसीदुर्गम होगई जैसे कि पर्ब्बतोंके गिरनेसे होती है, वहां महात्मा पाण्डव अर्जुनके रथका मार्गनहींरहा ३८ इससे हे राजा भल्लों से शत्रुओंको और घोड़े हाथियोंको मारते हुये रथों के पाये बड़े पीड़ित होतेथे ३९ उन रुधिररूप कीच रखनेवाले युद्धमें उस घूमनेवाले अर्जुनके पीड़ामान पायोंको घोड़ों ने अच्छेप्रकारसे चलाया ४० मन और बायुके समान सदैव शीघ्रगामी वह घोड़े बहुत थकगये फिर धनुषधारी अर्जुनके हाथसे घायल वह सबसेना ४१ बहुधा मुखफेरकर सन्मुख नियत नहीं हुई तब वह कुन्तीनन्दन अर्जुन युद्धमें संसप्तकोंके बहुत समूहोंको विजय करके निर्द्धूम अग्निके समान प्रकाशमान होकर शोभायमान हुआ ४२ । ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिमहासंसप्तकयुद्धेअष्टविंशोऽध्यायः २८ ॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज निर्भय होनेवाले के समान आप राजा दुर्य्योधनने बहुत बाणोंके छोड़नेवाले युधिष्ठिर को रोका १ धर्मराजने उस अकस्मात् आते हुये आपके पुत्र महारथीको शीघ्र घायलकरके तिष्ठ तिष्ठ इसबचनको कहा २ फिर उसने तीक्ष्णधारवाले नौबाणोंसे उसको घायल किया और अत्यन्त क्रोध युक्त होकर उसने भल्लसे उसके सारथी को घायल किया ३ इसकेपीछे युधिष्ठिरने सुनहरी पुंखवाले तेरह बाणों को दुर्य्योधन के ऊपर फेंका ४ फिर महारथीने चारबाणों से उसके चारों घोड़ों को मारकर पांचवें बाणसे उसके सारथी का शिर शरीरसे जुदाकरदिया ५ फिर छठे बाण से राजाकी ध्वजाको सातवेंसे धनुषको और आठवें से खड्गको पृथ्वीपर गिराया फिर धर्मराजने पांचबाणोंसे राजा को अत्यन्त पीड़ित किया ६ तब वह उस मरेसारथी और घोड़ेवाले रथसे कूदकर बड़ी आपत्तियों में फँसाहुआ आपकापुत्र पृथ्वीपरही नियतहुआ फिर कर्ण अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य आदि उस आपत्ति में फँसेहुये राजाको देख कर ७ । ८ उसको चाहतेहुये अकस्मात् सन्मुख आनकर वर्त्तमान हुये फिर सब लोगोंने युधिष्ठिरको चारोंओरसे घेरकर युद्धमें पीछे २ चले हे राजा इसके पीछे युद्धजारीहुआ और उस महायुद्ध में हजारों बाजेबजे ९ । १० और कलकला

शब्द प्रकटहुआ जिसस्थानपर पांचाल कौरवों से युद्ध कररहे थे ११ वहां मनुष्य मनुष्यसे हाथी हाथीसे रथी रथियों से घोड़े घोड़ेसे अश्वसवार अश्वसवारसे १२ हे महाराज उसयुद्धमें देखनेके योग्य बुद्धिसे वाहर शस्त्रोंसे संयुक्त नानाप्रकार से उत्तम द्वन्द्वयुद्ध हुये १३ युद्धमें वड़े वेगवान् परस्पर मारने के इच्छावान् उन सब सवारोंने अपूर्व तीव्रता पूर्वक चित्तरोचक युद्धकिया १४ और युद्धकर्त्ता-ओंकी वृत्तिमें नियत होकर उन लोगोंने युद्धमें परस्पर शस्त्रोंके प्रहारकिये और किसी दशामें भी मुखको न मोड़ा १५ हे राजा वह युद्ध एकमुहूर्त्तपर्यन्त देखने में वड़ा प्यारा हुआ इसके अनन्तर उन्मत्तों के समान वेमर्याद युद्ध वर्त्तमान हुआ १६ तीक्ष्ण धारवाले बाणों से चीरते हुये रथी ने हाथी को पाकर टेढ़ेपर्व वाले बाणों से मारकर यमपुरको भेजा १७ युद्धमें वहुतसे युद्धकर्त्ताओं को फें-कते हुये हाथियों ने जहां तहां घोड़ों को सन्मुख पाकर अत्यन्त भयकारक दशासे चीरडाला १८ वहुतसे घोड़े रखनेवाले अश्वसवारों ने उत्तम घोड़ों को घेरकर इधर उधर दौड़कर तलके शब्द किये १९ इसकेपीछे अश्वसवारोंने उस दौड़ते और भागतेहुये हाथियोंको बगल और पीठकी ओरसे घायलकिया २० हे राजा मतवाले हाथी बहुतसे घोड़ोंको भगाकर किसीने दांतों से किसीने पैरों से मलकर मारा २१ और क्रोधयुक्त होकर सवारोंसमेत घोड़ोंको दांतोंसे घायल किया फिर दूसरे पराक्रमियों ने अत्यन्त वेग से एकने एकको पकड़कर फेंक दिया २२ पदातियों के हाथसे इन्द्रियोंपर घायल हाथियों ने चारोंओरसे पीड़ा के घोर शब्द किये और दशों दिशाओं को भागे २३ फिर उस महायुद्ध में एकाएकी छोड़कर भागनेवाले पदातियों के आभूषणों को झुककर उस युद्ध-भूमि में से उठालिया २४ विजय के चिह्न पानेवाले वड़ेवड़े हाथियों के सवारों ने हाथीको झुकाकर अपूर्व २ भूषणोंको लेलिया और उनको छेदा २५ वहां उन वड़े वेगवान् पराक्रमसे मदोन्मत्त पदातियों ने उन युद्ध करनेवाले हाथियों के सवारों को घेरकर मारा २६ वड़े युद्धमें अच्छे शिक्षित हाथियों की सूंड़ोंसे आ-काश को फेंकेहुये अन्य युद्धकर्त्ता पृथ्वीपर गिरतेहुये दांतोंकी नोकोंसे अत्यन्त घायलहुये २७ कितनेही अकस्मात् पकड़कर दांतोंसे मारेगये और कितनेही पदाती सेनाके मध्यको पाकर २८ वड़े हाथियों से वारम्वार उछालेहुये होकर घायलहुये और कितनेही युद्धमें पंखेकेसमान घुमा २ कर मारेगये २९ हे राजा

कोई २ मनुष्य जो हाथियों के सन्मुखथे उनके शरीर उस युद्धभूमि में जहां तहां अत्यन्त घायलहुये ३० और कितनेही हाथी प्रास तोमर और शक्तियों से दोनों दांतोंके मध्यमें कुंभ और दन्तवेष्ठोंपर कठिन घायलहुये ३१ वगलमें नियत वड़े भयानकरूप युद्धकर्त्ताओं के हाथसे घायलहोकर कितनेही हाथी रथ और रथके सवार वहां शरीर से घायल होकर गिरपड़े ३२ उस महायुद्धमें घोड़ोंसमेत सवारों ने ढाल वांधनेवाले पदातियों को वड़ी शीघ्रतासे अपने तोमरोंसे मर्द्दन किया ३३ हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र जहां तहां हाथियों ने आभूषणों से अलंकृत कितनेही रथियों को पाकर और पकड़कर ३४ अकस्मात् उस घोररूप युद्धमें फेंकदिया और नाराचों से घायल होकर वड़े २ पराक्रमी हाथी भी जहां तहां गिरपड़े ३५ युद्धमें शूरोंने शूरोंको पाकर मुष्टिकाओं से व्यथितकिया ३६ और परस्पर शिरके वालों को पकड़कर एकने दूसरे को गिरादिया और घायलकिया और किसीने ध्वजाओं को उठाके पृथ्वीपर गिराकर ३७ चरण से छातीको दवाकर फड़कते हुये शिरोंको काटा ३८ इसीप्रकार दूसरोंनेभी शस्त्रको जीवते शरीरमें प्रवेश करदिया हे भरतवंशी वहां युद्धकर्त्ताओं का मुष्टियुद्ध अच्छे प्रकार से हुआ ३९ इसी प्रकार शिरकेवालों का पकड़ना उग्रहुआ और भुजाओं का महायुद्ध वड़ा भयकारीहुआ इसीरीति से एक दूसरे से भिड़ेहुये युद्धमें नानाप्रकारके शस्त्रों से वहुतप्रकारसे एकने एकके प्राणोंको हरणकिया युद्धकर्त्ताओं के भिड़ने और संकुल युद्ध होनेपर ४० । ४१ हजारों कबंध अर्थात् धड़ उठखड़ेहुये और रुधिर से भरेहुये शस्त्र कवच ४२ ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि वड़े रंगोंसे रंगीनवस्त्र इन भयानक शस्त्रोंसे व्याकुल ४३ वड़े युद्ध में उन्मत्त गंगाकेसमान शब्दों से जगत्को पूर्ण किया वाणोंसे पीड़ामान अपने और दूसरोंके कुछनहीं जानेगये ४४ विजयके लोभी राजालोग युद्ध करनाचाहिये ऐसा समझकर युद्ध करते हैं हे महाराज भाइयों ने भाइयोंको और भिड़ेहुये शत्रुओं को भी मारा ४५ दोनों सेना वीरोंसे व्याकुल युद्धमें वर्त्तमानहुई हे राजा टूटेरथ और गिरायेहुये हाथियों से ४६ और वहांपर पड़ेहुये घोड़ों से वा गिरायेहुये मनुष्यों से वह पृथ्वी क्षण भरही में दुर्गम होगई ४७ हे राजा एकक्षणमेंही रुधिररूप जलकी वहनेवाली नदी होगई वहां कर्ण ने पांचालोंको और अर्जुनने त्रिगर्त्त देशियोंको मारा ४८ और भीमसेनने कौरवलोगोंको और हाथियों की सेनाको सवरीतिसे मारा इस

रीतिसे दिनके तीसरे भाग में सूर्य्य के होतेहुये बड़े यशकी चाहनेवाली कौरवी और पाण्डवी सेनाका यह बड़ा नाशहुआ ४९ । ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेएकोनत्रिंशत्तमोऽध्यायः २९ ॥

तीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मैंने बड़े असह्य और कठिन बहुतसे दुःखोंको और पुत्रोंके नाशको तुझसे सुना १ हे सूत जैसे कि तू मुझसे कहताहै और जैसे युद्ध वर्त्तमानहुआ वैसे नहीं है यह मुझको अपनी बुद्धिसे दृढ़ विश्वासहै २ वहां महारथी दुर्य्योधन विरथकियागया फिर धर्मपुत्रने किसरीतिसे उससे युद्धकिया ३ उसके पीछे फिर तीसरी बार रोमहर्षण करनेवाला युद्ध कैसेहुआ हे संजय उसको मूलसमेत मुझसे वर्णनकर ४ संजय बोला हे राजा सेनाके भिड़ने वा विभागियों के घायल होनेपर विषैलेसर्प के समान क्रोधयुक्त आपकेपुत्र दुर्योधनने दूसरेरथपर सवार होकर धर्मराजयुधिष्ठिरको देखकर सारथीसे कहा कि शीघ्रतापूर्वक मुझको वहींपहुँचा जहांपर पांडवलोगहैं ५।६।७ वहराजा युधिष्ठिर कवच और छत्रधारण कियेहुये शोभायमान है राजाकी आज्ञा पातेही सारथीने उसके उत्तम रथको ८ युद्ध में युधिष्ठिर के सन्मुख पहुँचाया उसके पीछे मतवाले हाथी की समान युधिष्ठिर ने सारथी को आज्ञाकरी कि जहां दुर्य्योधन है वहीं चल वह रथियों में श्रेष्ठ शूरवीर दोनों भाई परस्पर में सन्मुखहुये ९।१० उन क्रोधयुक्त युद्ध दुर्म्मद महाधनुषधारी दोनोंवीरोंने युद्धमें परस्पर बाणोंकी बर्षाकरी ११ तदनन्तर राजा दुर्य्योधनने युद्ध में तीक्ष्णधारवाले भल्लसे उस धर्माभ्यासी युधिष्ठिर के धनुष को काटा फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त युधिष्ठिरने उस अपने अपमानको नहींसहा इसहेतु से क्रोधयुक्त लालनेत्र होकर दूसरे धनुषको लेके सेना मुखपर दुर्य्योधन की ध्वजा और धनुष को काटा १२ । १३ । १४ फिर उसने भी दूसरे धनुषको लेकर युधिष्ठिर को बहुत घायल किया तब तो उन अत्यन्त क्रोधयुक्तों ने परस्परमें शस्त्रोंकी बर्षाकरी १५ सिंहोंके समान अत्यन्त क्रोधयुक्त बैलोंकी समान गर्जने वाले दोनों ने बिजयाभिलाषी होकर परस्पर में घायल किया १६ फिर वह दोनों महारथी अवकाशको ढूंढ़ते हुये फिरनेलगे इसके पीछे कर्ण पर्य्यन्त खेंचेहुये बाणोंसे घायल दोनों १७ ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि फूलेहुये

किंशुकके वृक्ष शोभित होते हैं इसके पीछे वारम्वार सिंहनादों को करते १८ उन दोनों नरोत्तमोंने उस वड़े युद्धमें तलधनुष और शंखोंके शब्दोंको किया १९ हे राजा उन दोनों ने परस्परमें एकने एकको वहुत पीड़ामान किया फिर क्रोधयुक्त युधिष्ठिर ने आपके पुत्र को २० वज्रके समान वेगवान महा असह्य तीनवाणों से छातीपर घायल किया फिर राजा दुर्य्योधनने सुनहरी पुंख युक्त तीक्ष्ण धारवाले पाचबाणोंसे शीघ्रही उसको घायलकिया २१ इसके पीछे राजा दुर्य्योधनने तीक्ष्ण वड़ीभारी उल्कारूप लोहेकीशक्ति को फेंका २२ उस अकस्मात आतीहुई शक्ति को देखकर धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर ने तीन तीक्ष्ण बाणों से काटा और उसको भी पांचवाणों से घायल किया २३ इसके पीछे सुनहरी दंड वाली महाशब्द करनेवाली वह शक्ति गिरपड़ी और अग्नि रूप वड़ी उल्काके समान गिरकर शोभायमान हुई २४ हे राजा फिर आपके पुत्रने शक्तिको टूटा हुआ देखकर तीक्ष्ण धारवाले नौ बाणों से युधिष्ठिरको घायलकिया २५ पराक्रमी शत्रुके हाथसे अत्यन्त घायल शत्रुहन्ता युधिष्ठिरने दुर्य्योधनको विचार करके शीघ्रही बाणको लिया २६ हे राजा उस क्रोधयुक्त महावली युधिष्ठिर ने उसबाणको धनुषमें चढ़ाकर छोड़ा २७ फिर उसवाणने आपके महारथी राजा को पाकर अचेतकिया और पृथ्वी को फाड़ा २८ इसके पीछे युद्धकी इतिश्री करने का अभिलाषी क्रोधयुक्त दुर्य्योधन शीघ्रतासे गदाको उठाकर धर्मराजके सन्मुख गया धर्मराजने यमराजके समान गदाउठानेवाले दुर्य्योधन को देखकर आपके पुत्रपर उस शक्तिको चलाया जो कि वड़ी वेगवान अग्निके समान देदीप्यमान उल्काके समानथी २९।३० उसगदासे कवच कटकर हृदयपर घायल रथपर सवार अत्यन्त अचेतहोकर गिरपड़ा और अचेतहोगया ३१ उसके पीछे अपनी प्रतिज्ञाको स्मरण करनेवाले भीमसेन ने उनसे कहा कि हे राजा यह आपके हाथसे नहीं माराजायगा यह सुनकर युधिष्ठिर लौटगये ३२ इसके पीछे कृतवर्मा ने शीघ्रआकर आपके पुत्र राजा दुर्य्योधन को आपत्तिके समुद्र में डूबाहुआ पाया ३३ और भीमसेनभी सुवर्ण वस्त्रोंसे अलंकृत गदाको लेकर युद्धमें वड़े वेगसे कृतवर्माके सन्मुखगया ३४ हे महाराज तीसरे पहर युद्धमें विजयाभिलाषी आपके पुत्रोंका युद्ध पाण्डवों के साथ इस रीतिसेहुआ ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिद्वन्दयुद्धेत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि इसकेपीछे युद्धमें दुर्मद आपके युद्ध कर्त्ताओं ने कर्णको आगे करके फिर भी लौटकर देवासुरों के युद्ध के समान युद्ध किया १ मनुष्य रथ हाथी घोड़े और शंखों के शब्दों से प्रसन्न नानाप्रकार के शस्त्रों की आधिक्यतासे क्रोधयुक्तहो उन हाथी रथी और सवारों के समूहों ने सन्मुख होकर प्रहार किये २ उत्तम पुरुषों के श्वेत फरसे खड्ग पट्टिश और नानाप्रकार के भल्लों से हाथी रथ और घोड़े उस महायुद्धमें मारेगये और अनेक २ प्रकारकी सवारियों से मनुष्य चूर्णहोगये ३ कमल सूर्य्य और चन्द्रमा के समान श्वेत दांत सुन्दर आंख नाक समेत मुख और अद्भुतकुण्डल मुकुटवाले मनुष्यों के कटेहुये शिरों से आच्छादित वह युद्धभूमि बड़ीही शोभायमान हुई ४ तब सैकड़ों परिघ मूशल शक्ति तोमर नखर भुशुंडी और गदाओं से घायल हजारों हाथी घोड़े मनुष्य रुधिरकी नदी के जारी करनेवाले हुये ५ मृतक घायल भयानक और अत्यन्त घायल रथ मनुष्य घोड़े हाथीवाली शत्रुओं से घायल वह सेना ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि संसारके नाश करनेमें यमराजकादेश होताहै ६ हे राजा इसके पीछे आपकी सेनाके मनुष्य और देवकुमारों के समान आपके पुत्रों समेत उत्तम कौरवलोग जिनके आगे चलनेवाली असंख्य सेनाथी सब मिलकर सात्विकी के सन्मुखगये ७ रुधिर से अत्यन्त भय उत्पन्न करनेवाले उत्तम पुरुष घोड़े रथ और हाथियों से व्याप्त और उठेहुये समुद्र की समान शब्दायमान वह सेना देवता और असुरोंकी सेनाके समान प्रकाशित होकर शोभायमानहुई ८ इसके पीछे इन्द्रके समान पराक्रमी युद्धमें बिष्णुके समान सूर्य्य के पुत्र कर्ण ने सूर्य्य की किरणों के समान प्रकाशित प्रषत्कनाम बामबाणों से शूरों में बड़ेबीर सात्विकी को घायल किया ९ तब शीघ्रता करनेवाले सात्विकी ने विषैले सर्पकी समान नानाप्रकारके बाणों से पुरुषोत्तम कर्णको रथ घोड़े और सारथी समेत ढक दिया १० आपके शुभचिन्तक अतिरथी हाथी रथ घोड़े और पदातियों समेत शीघ्रही उस रथियों में श्रेष्ठ सात्विकीके बाणोंसे पीड़ामान सुषेणके पास गये ११ बड़े शीघ्रगामी शत्रुओं से दबाई हुई समुद्र के रूप वह सेना भागी तब धृष्टद्युम्न आदिके हाथसे मनुष्य घोड़े रथ और हाथियों का बड़ा विनाश हुआ १२

इसके पीछे नित्यकर्म से निवृत्त होकर बुद्धि के अनुसार प्रभु शिवजी के पूजने-वाले और शत्रुओं के मारने में निश्चय करनेवाले पुरुपोत्तम अर्जुन और केश-वजी शीघ्रही आपकी सेनाके ऊपर चले १३ तब टूटेहुये चित्तवाले शत्रुओं ने बादल के समान शब्दायमान बायुसे कंपित पताका ध्वजावाले श्वेत घोड़ों से युक्त सन्मुख आनेवाले रथको देखा इसके पीछे रथपर नाचतेहुये अर्जुनने गां-डीवधनुषको टंकारकर आकाश और दिशा विदिशाओं को बाणों से आच्छा-दित किया १४।१५ और बिमानरूप रथोंको शस्त्र ध्वजा और सारथियों समेत बाणों से ऐसा मारा जैसे कि बायु बादलों को ताड़ित करता है १६ फिर उसने हाथी हाथीवान और वैजयन्ती शस्त्र ध्वजा अश्वारूढ़ और पत्तियोंको बाणों से यमलोक में पहुँचाया १७ सीधे बाणों से मारताहुआ अकेला दुर्य्योधन उस यमराज के समान क्रोधयुक्त मुख न मोड़नेवाले महारथी अर्ज्जुन के सन्मुख गया१८अर्ज्जुनने सातबाणोंसे उसके धनुष और ध्वजाको काटकर सारथी घोड़ों को मारकर एकबाणसे उसके छत्रको काटा १९ और प्राणों के नाशकरनेवाले उत्तम नवें बाणको धनुषपर चढ़ाकर दुर्य्योधनके ऊपर छोड़ा उस बाणके अश्व-त्थामाने आठ टुकड़े करडाले २० इसके पीछे अर्जुन ने बाणों से धनुषको काट रथके घोड़ोंको मारकर कृपाचार्य्य के उस उग्रधनुषको भी काटा २१ तब कृतवर्मा के धनुष और ध्वजाको काटकर घोड़ोंको मारा और दुश्शासनके धनुषको का-टकर कर्ण के सन्मुख गया २२ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले कर्ण ने सात्वकी को छोड़कर तीन बाणसे अर्जुनको और बीसबाणसे श्रीकृष्णको घायल करके फिर अर्जुनको बारंबार घायलकिया २३ युद्धमें बहुत शायकों को छोड़ते शत्रु-ओं को मारतेहुये कर्णकी ऐसी ग्लानि नहीं हुई जैसे कि क्रोधयुक्त इन्द्रकी हुई २४ इसके पीछे सात्विकी ने आकर तीक्ष्ण बाणों से कर्णको घायल करके एक सौनिन्नानवे उग्रबाणों से घायल किया २५ इसके पीछे पांडवों के इन सबवीरों ने कर्णको पीड़ामान किया जिनकेनाम युधामन्यु शिखंडी द्रौपदीके पुत्र प्रभद्रक २६ उत्तमौजा युयुत्सु नकुल सहदेव धृष्टद्युम्न चंदेर कारुष मत्स्य और कैकय देशियों की सेना २७ पराक्रमी चेकितान सुन्दर व्रतवाले धर्मराज युधिष्ठिर इनसबोंने उग्रपराक्रमी कर्ण को रथघोड़े हाथी और पत्तियों समेत घेरकर २८ युद्धमें नानाप्रकारके अस्त्रों और शस्त्रोंसे ढकदिया और उग्रवचनोंसे वार्त्तालाप

करतेहुये सब कर्णके मारनेमें प्रवृत्त चित्तहुये २९ कर्ण ने उस अस्त्रोंकी बर्षाको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे अनेकरीतिसे काटकर अस्त्रोंके बलसे ऐसे हटादिया जैसे कि बायुवृक्षको काटकर हटादेताहै ३० अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्णरथी और सवारों समेत हाथी घोड़े और अश्वसवारों समेत सहायकों के समूहों को मारताहुआ दिखाईदिया ३१ कर्णके अस्त्रोंसे घायल वह पाण्डवीसेना शस्त्र बाण शरीर और प्राणों से रहितहोकर बहुधालोग मुखोंको मोड़गये ३२ इसके पीछे मन्द मुस-कान करतेहुये अर्जुनने कर्णके अस्त्रको अपने अस्त्रसे दूरकरके दिशाबिदि-शाओंसमेत पृथ्वी और आकाशको बाणोंकी बर्षासे ढकदिया वह बाण फिर मुशल और परिघोंके समानगिरे कितनेही शतघ्नियोंके समान और कोई २ उग्रबज्रोंके समान आकाशसे पृथ्वीपर गिरे पति घोड़े रथ और हाथियोंसे संयुक्त वह सेना उन बाणोंसे घायल आंखोंको बंदकरनेवाली होकर बहुतघूमी ३३ । ३४ । ३५ तब घोड़े हाथी और मनुष्योंने उस युद्धको पाया जिसमें मरना नि-श्चय होगयाथा तब बाणोंसे घायल पीड़ामान और भयभीत होकर भागे ३६ युद्धमें प्रवृत्त बिजयाभिलाषी आपके युद्धकर्त्ताओंके बाणोंसे ऐसीदशाहुई और सूर्य्य अस्ताचलको प्राप्तहुआ ३७ हे महाराज फिर हमने अधिक अंधकार और धूलीके गुब्बारोंसे अँधेरेमें कुछ अच्छा बुरा नहीं देखा ३८ हे भरतबंशी रात्रिके युद्धसे भयभीत बड़े २ धनुषधारी बर्त्तमानलोग सब शूरबीरों समेत युद्धभूमिसे अलगहुये ३९ हे राजा दिनके समाप्तहोनेपर सायंकाल के समय कौरवोंके हट जानेपर प्रसन्नचित्त पाण्डव बिजयको पाकर अपने २ डेरोंकोगये ४० और नाना प्रकारके बाजे और सिंहनादों समेत गर्ज २ कर शत्रुओंका हास्यकरते अर्जुन और श्रीकृष्णजीकी प्रशंसा करते चलेगये ४१ उनबीरों के बिश्राम करनेपर उन सब सेनाके लोगोंने और राजाओं ने पाण्डवोंको अशीर्बाद दिया ४२ उसके पीछे वहां बिश्रामके करनेपर अत्यन्त प्रसन्नयुक्त होकर पाण्डव और अन्य राजा लोग रात्रिमें अपने २ डेरों में जाकर बिश्राम युक्तहुये ४३ इसके पीछे राक्षस पिशाच और भेड़िये आदि मांसाहारी पशुओं के समूह उस युद्धभूमि में गये जोकि रुद्रजीकी क्रीड़ाके स्थानरूप थी ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिप्रथमयुद्धेएकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि यह प्रत्यक्ष है कि अर्जुनने अपनी इच्छासे हम सबको मारा इसशस्त्रधारीके युद्धमें मृत्युभी मरनेसे न छूटे १ अकेले अर्जुनने सुभद्राको हरणकिया अकेलेनेही अग्निको तृप्तकिया और अब इसी अकेलेने इसभारी पृथ्वीको विजयकरके भेजदेनेवाली किया २ दिव्य धनुधारी अकेले ने किरात रूप धारी शिवजीसे युद्धकिया और निवात कवचोंको मारा ३ अकेलेनेही भरतवंशियों की रक्षाकरी अकेलेनेही शिवजीको प्रसन्न किया उस उग्रतेजवाले ने सब राजालोगोंको बिजयकिया ४ और हमारे शूरवीरभी निन्दाके योग्य नहीं हैं किंतु प्रशंसाके योग्यहैं जो उन्होंने किया उसको भी कहो हे सूत इसके पीछे दुर्य्योधनने क्याकिया ५ संजय बोले उन घायल और टूटे अंग सवारियोंसे गिरे हुये कवच शस्त्र और सवारियों से रहित दुःखित शब्दकरते शत्रुओं से कंपायमान पराजित अहंकारी उन कौरवोंने ६ फिर दूरन्देशी की सलाहकारी जोकि टूटी डाढ़ विपसे रहित पैरसे दबायेहुये सर्पों की समान थे ७ उसके पीछे सर्प की समान श्वास लेता हुआ आपके पुत्र को देखता क्रोधयुक्त कर्ण हाथ से हाथों को मलकर उनसे बोला कि अर्ज्जुन सदैव सावधान दृढ़पराक्रमी और धैर्य्यमानहै और श्रीकृष्णजीभी समयके अनुसार उसको समझादेते हैं ८ । ९ अब हम उसके अस्त्रोंके छोड़ने से अकस्मात् ठगेगये हेराजा अब कलके दिन में उसके सब संकल्पों को नाशकरूंगा १० यह कर्णके वचन सुनकर दुर्य्योधन ने बहुत अच्छा कहकर उत्तम राजाओं को आज्ञादी तब उसकी आज्ञापाकर सब राजालोग अपने डेरोंको गये ११ उस रात्रिमें सुखपूर्वक निवास करके प्रातःकाल बड़ी प्रसन्नता से युद्ध करने के लिये निकले उन्होंने कौरवों में श्रेष्ठ बृहस्पति और शुक्रजी के मतमें नियत धर्मराज के बड़े उपायसे रचेहुये कठिनतासे विजयहोनेवाले व्यूहको देखा १२ इसके पीछे शत्रुहन्ता दुर्य्योधनने उस शत्रुओं के मारनेवाले बड़े वीर पराक्रमी और उन्नत स्कन्धवाले कर्ण को स्मरण किया १३ जो कर्ण युद्ध में इन्द्र के समान पराक्रम में मरुद्गणों के सदृश बल में सहस्रबाहु के समान था उसकर्ण में राजा का चित्तगया १४ सब सेनाओं का चित्तभी उस बड़े धनुपधारी कर्ण में ऐसागया जैसे कि प्राणों के

संकट में मन बन्दहोकर एक ओरको जाताहै १५ धृतराष्ट्र बोले हे सूत इसके पीछे दुर्य्योधन ने क्या किया हे हीन प्रारब्धी लोगो जो तुम्हारा मन सूर्य्य के पुत्र कर्ण में गया १६ तो सेनाओं के विश्रामकरने के पीछे फिर युद्ध के जारी होने पर कर्णको ऐसेदेखा जैसे कि शीतसे पीड़ित मनुष्य सूर्यको देखताहै १७ वहां सूर्य का पुत्र कर्ण इस रीति से युद्ध में प्रवृत्तहुआ हे संजय फिर वहां सब पाण्डवों ने कर्ण से कैसे युद्ध किया १८ अकेलाही महाबाहु कर्ण सृंजियों स-मेत सब पाण्डवों को मारसक्ता है क्योंकि युद्धमें कर्ण की भुजाओं का पराक्रम इन्द्र और विष्णुके समान है १९ उस महारथी के पराक्रम संयुक्त शस्त्र बड़े घोर हैं युद्ध में कर्णका आश्रय लेकर राजा दुर्य्योधन मदोन्मत्त है २० इसके पीछे पाण्डवके हाथसे अत्यन्त पीड़ामान दुर्य्योधनको देखकर और पाण्डवों कोभी पराक्रम करनेवाला देखकर महारथी कर्ण ने क्या किया २१ फिर अभागा दु-र्य्योधन युद्धमें कर्णका आश्रय लेकर पाण्डवों को श्रीकृष्ण और उनके पुत्रों समेत बिजय करनेकी अभिलापा करताहै २२ यह महाशोककारी दुःखहै जिस स्थानपर कि वेगवान् कर्ण ने युद्ध में पाण्डवों को नहीं विजय किया इससे निश्चयकरके दैव बड़ाहै २३ यह द्यूतकी निष्ठा वर्त्तमान है और शोकका स्थान है मैं दुर्य्योधन के उत्पन्न कियेहुये भालेके समानघोर कठिन दुःखोंको सहरहाहूं हे तात संजय वह दुर्य्योधन शकुनी को नीतिज्ञ मानता है २४ । २५ और स-दैव राजाके आज्ञावर्त्ती वेगवान् कर्णको भी नीतिमान् मानता है हे संजय म-हाभारी युद्धों के वर्त्तमान होनेके कारण २६ मैंने सदैव अपने पुत्रोंको घायल और मृतकसुना और युद्धमें पाण्डवोंका कोई रोकनेवाला नहीं है २७ जैसे कि स्त्रियों के मध्यमें डोलते हैं उसीप्रकार सेनाकोभी मझाते हैं इससे दैव अधिक बलवान्है संजय बोले कि हे राजा पूर्व्व समयके धर्मसंबन्धी वार्त्ताओं को वि-चारो २८ जो मनुष्य असंभव कार्य्य को पीछेसे शोचता है उसका वह कार्य्य नहीं होता है किन्तु शोचसे नाशको पाता है २९ हे राजा मुझ बुद्धिमान् के पूर्वयोग्य विचारको जो तुमने नहीं किया इसीसे वह कार्य्य तुम्हारे हाथसेजा-तारहा ३० हे राजा सदैव मैंने समझाया था कि पाण्डवों से युद्ध मतकरो तु-मने अपनी अज्ञानता से उसवचनको नहीं माना ३१ तुमने पाण्डवोंके साथमें परस्पर मिलकर बड़े २ घोर पाप किये और आपही के कारणसे अच्छे अच्छे

हजारों राजाओं का नाश बर्त्तमान हुआ ३२ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ अब समय आगया शोचमतकरो हे अजेय जैसे कि यह घोर नाशहुआ उस सबको मुझ सेसुनो ३३ प्रातःकालके समय कर्ण राजा दुर्य्योधनके पासगया और मिलकर दुर्य्योधन से कहनेलगा ३४ कि हे राजा अब मैं यशस्वी पाण्डवों से युद्धकरूं-गा मैं कि तो उस बीर अर्ज्जुनको मारूंगा या वही मुझको मारेगा ३५ हे भर-तबंशी राजा दुर्य्योधन मेरे और अर्ज्जुन के कार्य्यों की आधिक्यता से मेरी और अर्ज्जुन की सम्मुखता नहीं हुई ३६ हे दुर्य्योधन मेरे इस बचन को तुम बुद्धि के अनुसार सुनो कि मैं युद्ध में अर्ज्जुन को मारकर न आऊंगा ३७ जिसके बड़े २ बीर मेरे बर्त्तमान होने पर युद्ध में मारेगये वह अर्ज्जुन मेरे स-न्मुख आवेगा जो कि मैं इन्द्रकी शक्तिसे पृथक्हूं ३८ हे राजा जो अपनी रक्षा करनेवाला है उसको तुम समझो कि मेरे और अर्ज्जुन के अस्त्रों का पराक्रम और प्रताप समानहै शत्रुके बड़े कार्य्यका नाश हस्तलाघवता बाणों का दूरफें-कना और अस्त्र गिरानेकी सावधानी में अर्जुन मेरे समान नहीं है३९।४०हे भरत बंशी देहकाबल वा मनकाबल वा अस्त्रोंकी शिक्षा वा पराक्रममें लक्षभेदन करने में भी अर्जुन मेरे समान नहीं हैं ४१ सब शस्त्रों में श्रेष्ठ विजयनाम धनुष इन्द्रके प्रिय होनेकी इच्छासे बिश्वकर्माजीने उत्पन्नकिया ४२ हेराजा निश्चयकरके इंद्र ने उसी धनुषकेद्वारा दैत्योंके समूहों को बिजयकिया और जिसके शब्द से दैत्यों की दशोंदिशा मोहित हुईं ४३ वह बड़ा उत्तम धनुष इन्द्रने भार्गवजीको दिया और भार्गवजी ने वह दिब्य धनुष प्रसन्नहोकर मुझकोदिया ४४ हे महाविजयी उसी धनुष के द्वारा मैं महाबाहु अर्जुन से लरूंगा वैसेही लरूंगा जैसे कि भागे हुये दैत्यों से इन्द्र लड़ाथा ४५ परशुरामजी का दियाहुआ घोर धनुष गाण्डीव धनुष से अधिकहै जिसके द्वारा यह पृथ्वी इकीसबार विजयकरीगई ४६ इस ध-नुषके घोरकर्मको भार्गव परशुरामजीने मुझसेकहा है उनके उस दियेहुये धनुष के द्वारा मैं पाण्डवों से लरूंगा ४७ हे दुर्य्योधन अब मैं बड़े विजयी बिख्यात अर्जुनको युद्धमें मारकर तुझको बांधवों समेत प्रसन्न करूंगा ४८ हे राजा अब पर्व्वत बन द्वीप और समुद्रों समेत यहसब पृथ्वी तेरीहोगी जिसके कि बीर मारे गये और पुत्र पौत्रों की प्रतिष्ठा है ४९ अब तेरे अभीष्ट के निमित्त मेरी कोई अच्छेप्रकार की विशेषता ऐसी नहींहै जैसे कि अच्छे धर्मपर प्रीति करनेवाले

मनुष्य की मोक्षहोती है ५० वह अर्जुन युद्धमें मेरे सहने को ऐसे समर्थ नहीं हो सक्ता जैसे कि वृक्ष अग्निको नहीं सहसक्ता मैं जिस हेतुसे कि अर्जुन से कमहूं उसको अब मुझे कहना अवश्यहै ५१ एक तो उसके धनुषकी प्रत्यंचा दिव्यहै और इसीप्रकार उसके दो तूणीर अक्षय हैं और उसके सारथी श्रीकृष्णजी हैं मेरा वैसा सारथी नहीं है ५२ उसका गाण्डीव धनुष दिव्य उत्तमहोकर युद्धमें सब से अजेयहै और मेरा विजयनाम धनुष भी दिव्य और उत्तमहै ५३ हे राजा वहां मैं उस धनुष के कारण से अर्जुन से अधिक हूं और जिनकारणों से कि बीर पांडव अर्जुन मुझसे अधिकहै उसको भी मुझसे सुनो ५४ प्रथम तो सबके पूज्य रूप श्रीकृष्णजी सारथी हैं और अग्नि देवताका दियाहुआ सुवर्ण जटित रथ भी दिव्यहै ५५ हे बीर वह सबप्रकारसे अजेयहै उसके घोड़ेभी चित्तके अनुसार शीघ्रगामी हैं और ध्वजा भी दिव्य प्रकाशमान है और उस ध्वजामें हनूमान् जी बड़े आश्चर्य्यकारी हैं ५६ और संसारके स्वामी श्रीकृष्णमहाराज उसके रथ की रक्षा करते हैं इन वस्तुओं से रहित होकर मैं अर्जुन से लड़ना चाहताहूं ५७ युद्धको शोभा देनेवाला यह राजाशल्य श्रीकृष्णजीके समानहै जो राजाशल्य मेरा सारथी बनजाय तो अवश्य तेरी विजय होय ५८ शत्रुओं के साथ कठिन कर्म करनेवाला शल्य मेरा सारथी होय और कंकपक्षवाले मेरे अनेक बाणों के बहुतसे छकड़े साथ में ले चलें ५९ हे भरतर्षभ राजेन्द्र उत्तम घोड़ों के रथमें बैठकर तुमभी मेरे साथही साथ चलो ६० मैं अपने गुणों से अर्जुन से अधिक होजाऊंगा शल्य भी श्रीकृष्णजी से अधिकहै और मैंभी अर्जुनसे अधिकहूं६१ जिस प्रकार शत्रुहन्ता श्रीकृष्णजी अश्वहृदय नाम विद्या के जाननेवाले हैं इसी प्रकार महारथी शल्य भी अश्वविद्या का ज्ञाताहै ६२ और भुजामें राजा शल्य के समान कोई नहीं है इसीप्रकार अस्त्रवेत्ता मेरे समान कोई नहीं है ६३ जो कि अश्वविद्या में शल्यके समान कोई नहीं है इसीसे यह मेरारथ अर्ज्जुन से भी अधिक होगा हे कौरवों में श्रेष्ठ ऐसा करने से मैं रथकी सवारी में अधिक होजाऊंगा और युद्ध में अर्जुन को विजय करूंगा ६४ । ६५ इन्द्र समेत देवता भी मेरे सन्मुखहोनेको समर्थ नहीं हैं हे शत्रुहन्ता महाराज दुर्य्योधन यह काम मैं तुमसे करवाया चाहताहूं ६६ यह मेरा मनोरथ पूर्ण करो इससमय को किसी प्रकार से उल्लंघन न करना चाहिये ऐसा करने से सब अभीष्ट सिद्धहोंगे ६७ हे

भरतबंशी इसके पीछे जैसा मैं युद्ध करूंगा उसको भी तुम देखोगे मैं सन्मुख आनेवाले पाण्डवों को सब प्रकार से विजय करूंगा ६८ सुर और असुर भी युद्धमें मेरे सन्मुख आनेको समर्थ होनेको समर्थ नहीं हैं हेराजा फिर मनुष्ययोनि पाण्डवलोग मेरी सन्मुखता क्या करेंगे ६९ संजय बोले कि कर्णके इन सब बचनों को सुनकर आपका पुत्र दुर्य्योधन अत्यन्त प्रसन्न होकर कर्णसे प्रशंसा पूर्व्वक यह बचन बोला ७० कि हे कर्ण जैसा तुम कहते हो मैं इन सब बातों को वैसाही करूंगा तूणीरों से भरेहुये रथ तुम्हारे पीछे २ चलेंगे ७१ कंकपक्षसे जटित तेरे बाणों के बहुतसे छकड़े लेचलूँगा और मुझ समेत सब राजालोग तेरे पीछे २ चलेंगे ७२ संजय बोले हे महाराज आपका प्रतापी पुत्र दुर्य्योधन इस प्रकारके बचन कहकर मद्रदेशके राजाशल्यके पास जाकर उससे यह बचन बोला ७३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णदुर्य्योधनविचारेद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

तेंतीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे महाराज आपका पुत्र बड़ी नम्रता समेत समीप जाकर महारथी शल्यसे यह बचन बोला १ हे सत्यव्रती महाबाहु शत्रु शोककारी मद्र देशके स्वामी युद्धमेंशूर और शत्रुकी सेना को भय उत्पन्न करनेवाले २ श्रेष्ठ-बक्ता आपने कर्णका वचन सुनाहै मैं सब श्रेष्ठ राजाओं में आपको उत्तम जान-ताहूँ ३ हे अनुपम पराक्रमी शत्रुपक्ष के नाशकारी राजा मद्र मैं नम्रता पूर्व्वक आपको शिरसे दण्डवत् करताहूं ४ हे रथियों में श्रेष्ठ आप अर्ज्जुन के नाश और मेरी वृद्धिके अर्थ न्याय से सारथ्य कर्म करने को योग्यहो ५ आपके सार-थी होनेसे कर्ण मेरे शत्रुओं को बिजयकरेगा कर्ण की बागडोरों का पकड़ने वाला दूसरा कोई पुरुष नहीं है ६ हे महाबाहु युद्धमें बासुदेवजी के समान तेरे सिवाय दूसरा मनुष्य नहीं है ७ आप सब प्रकार से कर्ण की ऐसी रक्षाकरिये जैसे कि ब्रह्माजी ने महेश्वरजी की और श्रीकृष्णने सब आपत्तियों में पाण्डवों की करी है और करते हैं हे महाराज उसीप्रकार आपभी कर्णकी रक्षा करिये ८ भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य कर्ण और पराक्रमी कृतवर्मा सौवलका पुत्र शकुनी अश्वत्थामा मैं और हमारी सब सेना ९ हे राजा इस रीति से यह नौ भागकिये

हैं परन्तु इन भागोंमें महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य्यका भाग नहीं है १० इन्हों-ने उन दोनोंभागों को उल्लंघन करके मेरे शत्रुओंको मारा वह दोनों वृद्ध बड़े धनुषधारी युद्धमें छलसे मारे गये ११ हे निष्पाप वह दोनों कठिन कर्मोंको करके यहांसे स्वर्गको गये और इसीप्रकार अन्य २ भी बहुतसे पुरुषोत्तम युद्धमें शत्रुओं के हाथसे मारेगये १२ हमारे अनेक शूरबीर युद्धमें बड़े २ पराक्रमों को करके प्राणों को त्याग कर स्वर्ग को गये १३ हे राजा यह मेरी बहुतसी सेना मारीगई पूर्व्वमें भी इन अत्यन्त थोड़े पाण्डवों से मेरे बहुतसे मनुष्य मारेगये अब कौनसी बात करनी उचित है १४ कुन्ती के पुत्र महाबली सत्य पराक्रमी हैं सो हे राजा जिस रीति से वह पाण्डवलोग मेरी शेष बची हुई सेना को न मारसकें वही उपाय आपको करना योग्य है १५ हे समर्थ यह सेना युद्ध में पाण्डवों के हाथसे मृतक हुये शूरबीरवाली है अर्थात् इसके युद्धकर्त्ता शूरबीर मारेगये अब हमारी वृद्धि चाहनेवाला एक महाबाहु पराक्रमी कर्ण और सब लोगों के महारथी पुरुषोत्तम आप हो हे शल्य अब कर्ण युद्ध में अर्ज्जुन के साथ लड़ना चाहता है १६ । १७ हे राजाशल्य उस कर्ण में मुझको बिजयकी बड़ी आशाहै इस पृथ्वीपर उसका उत्तम सारथी कोई नहीं है १८ जैसे कि युद्ध में अर्ज्जुन के सारथी श्रीकृष्णजी हैं उसीप्रकार आपभी कर्ण के रथपर सारथी हूजिये १९ हे राजा श्रीकृष्णजी से युक्त और रक्षित होकर जैसे कि वह अ-र्ज्जुन जिन जिन कर्म्मों को करता है वह सबके प्रत्यक्षहैं २० पूर्व्व में अर्ज्जुन ने युद्धमें हमारे शत्रुओंको मारा अब श्रीकृष्णको साथ रखनेवाले इस अर्ज्जुन का पराक्रम है २१ हे राजा मद्र अर्ज्जुन श्रीकृष्णजी के साथ हमारी बड़ी भारी सेनाको प्रतिदिन युद्धमें भगाताही हुआ दिखाई देताहै २२ हे बड़ेतेजस्वी कर्ण का और तुम्हारा भाग शेष रहगया है कर्ण समेत आप एकही भाग से उस पाण्डवी सेनाका नाशकरो जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों से अन्धकार को दूर करता है उसी प्रकार आपभी कर्णसमेत होकर युद्धमें अर्ज्जुनको मारो २३ । २४ सूर्य्यके समान उदय होनेवाले बालार्क के समान प्रकाशमान कर्ण और शल्य को देखकर युद्ध से सब महारथी ऐसे भागेंगे जैसे कि सूर्य्योदय में अरुणको देखकर अंधकार दूर होताहै २५ इसीप्रकार आपके युद्धमें प्रकाशमान होनेही पांचाल और सृंजियों समेत कुन्ती के पुत्र भी नाशको पावेंगे २६ कर्ण रथियों

में अत्यन्तश्रेष्ठहै और आपरथियोंमें असादृश्यहैं जैसा तुम दोनोंका योगहोगा वैसा संयोग न पूर्व्वमें हुआहै न आगे होगा २७ जैसे कि श्रीकृष्णजी सब दशाओं में पाण्डवोंकी रक्षा करते हैं उसीप्रकार आपभी सूर्य्यके पुत्र कर्णकी रक्षाकरो २८ यह कर्ण तुझसारथीके साथहोकर इन्द्रसमेत देवताओं से भी युद्ध में अजेयहोगा फिर पाण्डवोंके युद्धमें कैसे विजयी न होगा हे राजा तुम मेरे बचनोंमें सन्देह मतकरो २९ संजय बोले कि कुलीनता शास्त्रज्ञता अधिकार और पराक्रम से अजेय महाबाहु शल्य दुर्य्योधन के बचनको सुनकर क्रोध में भराहुआ बारम्बार हाथियोंको प्रेरणा करताहुआ भृकुटीको त्रिवलीकरके क्रोध से रक्तबर्ण नेत्रोंको खोलकर यह बचनबोला ३० । ३१ हे गांधारीके पुत्र निश्चय करके तू मेरा अपमान करता है और सन्देह करता है जो तू निस्सन्देह होकर मुझसे कहताहै कि सारथीपना करो ३२ और कर्णको मुझसे भी अधिक जान कर उसकी प्रशंसा करताहै मैं युद्धमें कर्णको अपनी समान नहीं समझताहूं ३३ हे राजा तुम मेरा अधिकतर भाग बिचारकरो मैं युद्धमें उसको बिजयकरके जहां से आयाहूं वहांको चलाजाऊं ३४ हे कौरवनन्दन चाहै मैंही अकेला युद्ध करूंगा अब तुम युद्धमें मुझ शत्रुहन्ताके पराक्रमको देखो ३५ जैसे कि मुझसा पुरुष उस अपमानको हृदयमें धारण करके फिर त्याग करने को कर्मकर्त्ता होजाय वैसेही तुमभी मुझमें सन्देह न करो ३६ अथवा युद्धमें भी मेरा अपमान किसीप्रकारसे न करना चाहिये मेरी बज्ररूपी मोटी २ भुजाओं को देखो ३७ और मेरे चित्र धनुष समेत विषवाले सर्पकेसमान बाणोंको देखो और बायुकेसमान वेगमान उत्तम घोड़ों से अलंकृत मेरे श्रेष्ठ रथको देखो ३८ हे गान्धारी के पुत्र सुवर्ण सूत्रोंसे वेष्टित मेरी गदाको देखो मैं संपूर्ण पृथ्वीको फाड़कर पर्व्वतों को भी तोड़सक्ताहूं ३९ और हे राजा अपने तेज से समुद्रको शोषण करसक्ताहूं मुझ शत्रुओं के विजय करने में समर्थ ऐसे सामर्थ्यवान् को ४० युद्धमें तू नीच अधिरथीके सारथीपने में क्यों संयुक्त करताहै हे राजा तुम मुझको नीचकर्म में संयुक्त करने को योग्य नहींहो ४१ मैं उत्तम होकर नीचजातिके सेवन करने को नहीं चाहताहूं जो कि प्रीतिसे समीप आया और स्वाधीनता में नियतहुआ ४२ उसको तू नीचजातिकी आधीनता में करताहै देखो छोटे बड़ोंका विपर्य्यय करना बड़ापापहै ब्रह्माजी ने मुखसे ब्राह्मण उत्पन्नकिये और भुजासे क्षत्रियों को

उत्पन्नकिया ४३ बैश्योंको जंघा से और शूद्रोंको चरणों से उत्पन्नकिया यह वेद का बचनहै इन चारोंबर्णोंसे अनुलोम प्रतिलोम लोगहुये हैं हे भरतबंशी चारों बर्णोंकी मिलावटसे उत्पन्न होनेवालों के क्षत्रीलोग रक्षक दण्ड देनेवाले और दान करनेवाले कहेहैं ४४।४५ और ब्राह्मणोंको ब्रह्माजीने यज्ञकरनेकराने दान देनेलेने और वेद पढ़ने और शुद्ध दानोंकेद्वारा लोक के अनुग्रह के निमित्त इस पृथ्वीपर नियत कियाहै ४६ बैश्यों का कर्म धर्म से खेतीकरना पशुपालन और दान करनाहै और शूद्रलोग ब्राह्मण क्षत्री और बैश्यों के सेवा करनेवाले वर्णन किये हैं ४७ और सूतलोग तो अवश्यही क्षत्री और ब्राह्मणों के सेवा करने वाले हैं क्षत्री किसी दशामें भी सूतोंका आज्ञावर्त्ती नहीं होसक्ता ४८ हे राजा मैं राजर्षियों के कुल में उत्पन्न मूर्द्धाभिषेक नाम से प्रसिद्ध इसरीति से बन्दीजनों का पूज्य और स्तूयमान हूं ४९ हे शत्रुसेनापहारी सो मैं ऐसा होकर सूत के सारथीपने को इच्छानहीं करताहूं ५० मैं अपमान युक्तहोकर फिर किसीप्रकार से भी युद्धनहीं करूंगा हे गान्धारी के पुत्र मैं तुझसे पूछकर अब अपने घरको जाऊंगा ५१ संजय बोले हे महाराज युद्ध में शोभा पानेवाला क्रोधयुक्त शल्य इसप्रकारसे कहकर राजाओं के मध्य में से शीघ्रही उठकर चलदिया ५२ आप का पुत्र बड़ी प्रतिष्ठा पूर्व्वक उसको पकड़कर सब प्रयोजनों के सिद्ध करनेवाले मीठे २ बचनों से बड़ी नम्रतापूर्ब्बक बोला ५३ हे शल्य जैसा आप जानतेहो और कहतेहो सो यथार्थहीहै इसमें किसीप्रकारका सन्देह नहींहै इसमें मेरा प्रयो-जनहै उसको आप कृपाकरके सुनिये ५४ हे राजा कर्ण आपसे अधिक नहीं है और न मैं आपपर सन्देहकरताहूँ आपमद्रदेशके राजाहैं जो मिथ्या समझे तो उस कामको न करियेगा ५५ हे पुरुषोत्तम तुम्हारे वृद्धलोगोंको रत अर्थात् स-त्यतायुक्त बोलते हैं उनकी सन्तानहोनेसे आप आर्तायन कहेजाते हैं यह मेरा मत है ५६ हे प्रतिष्ठा देनेवाले इसकारण से आप युद्धमें शत्रुओं के शल्यरूप अर्थात् भल्लरूपहो इसीहेतुसे पृथ्वीपर आपका नाम शल्य विख्यात है ५७ हे बड़े दक्षिणा देनेवाले आपने जो प्रथम कहाहै उसीको करो हे धर्मज्ञ मेरे निमित्त जो २ कहाजाताहै ५८ कर्णसमेत मैं भी आपसे अधिक पराक्रमी नहींहूँ परन्तु मैं युद्धमें आप को उत्तम घोड़ोंका सारथी चाहताहूँ ५९ हे शल्य मैं कर्णकोभी उत्तम गुणोंके द्वारा अर्जुनसे अधिक मानताहूँ और आपको वासुदेवजी से भी

अधिक मुझसमेत सबलोकमानते हैं ६० हे नरोत्तम कर्ण अस्त्रों में भी अर्जुनसे अधिकहै इसीप्रकार आपभी अश्वविद्या के जानने में और पराक्रममें श्रीकृष्ण से अधिकहो ६१ जैसे कि बड़ेसाहसी वासुदेवजी अश्वहृदयको जानते हैं उसी प्रकार उनसेभी द्विगुणित आप जानतेहो ६२ शल्य बोला हे गांधारीके पुत्र कौरव जो तुम सेनाके मध्यमें मुझको श्रीकृष्णजीसे अधिकमानते और कहते हो इसीसे मैं तुमपर प्रसन्नहूँ ६३ अब मैं अर्जुन के साथ युद्धकरनेवाले यशस्वी कर्णके साथ सारथीपनेमें नियतहोताहूँ हे वीर जैसे कि तुम मानकर चाहतेहो ६४ हे वीर कर्णके बिषयमें मेरा यह संकल्पहै अर्थात् प्रतिज्ञाहै कि मैं इसके सन्मुख श्रद्धाके समान कहूँगा ६५ संजय बोले हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र आपका पुत्र कर्ण समेत बोला कि जैसी राजा मद्रकी इच्छाहै वैसाही हो ६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिशल्यसारथ्येत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

दुर्य्योधन बोले हे राजा मद्र आपसे जो मैं कहताहूँ उसको फिर भी तुम सुनो हे समर्थ जैसे कि पूर्व्व देवासुरों के संग्राममें जो वृत्तान्तहुआ १ उसीको महर्षी मार्कण्डेयजीने जिसरीतिसे मेरे पितासे कहा हे राजऋषभ आप उसको मुझसे सुनिये और चित्तसे समझिये २ तुमका इसमें विचार न करनाचाहिये हे राजा परस्पर में बिजयकी इच्छासे देवता और असुरों का प्रथमयुद्ध ३ तारक संबंधीहुआ तब दैत्य देवताओं से हारगये यह हमने सुना ४ हे राजा दैत्यों के हारने पर तारकके तीन पुत्र ताराक्ष कमलाक्ष विद्युन्माली ५ उग्रतपी होकर बड़े भारी नियम में नियतहुये हे शत्रुसंतापी उन तीनों ने तपस्याओं से अपने २ शरीरों को दुर्ब्बल करदिया उनकी शान्तचित्तता तप नियम और समाधी से प्रसन्नहोकर बरदाता ब्रह्माजी ने उनको बरदान दिये ६।७ हे राजा उन सब मिले हुओं ने सब जीवमात्रके हाथ से मृत्युका न होना लोकके पितामह ब्रह्माजी से वरमांगा तब ब्रह्माजी ने उनसे कहा कि सबकी अविनाशिता नहीं है हे असुर लोगो इसविचारसे लौटो ८।९ और इसके सिवाय जो दूसरा वर चाहतेहो उसको मांगो हे राजा इसके पीछे वह सब मिलेहुये प्रभुका बारम्बार ध्यान करके १० और सर्वेश्वर को नमस्कार पूर्व्वक यह वचनबोले हे देवता पितामह हमको यह

वरदानदो ११ कि हम तीन पुरों में नियतहोकर आपकी कृपासे इसलोक में इस पृथ्वीपर घूमें १२ इसकेपीछे हजारवर्ष के अनंतर परस्परमें मिलेंगे हे निष्पाप यह तीनोंपुर एकहीरूप होजायँ १३ हे भगवान् उससमय जो देवता हमारे इस मिले हुये पुरको एकही बाणसे ढानेवालाहोगा उसीसे हमारी मृत्युहो १४ ब्रह्माजी तथास्तु कहकर स्वर्गमें चलेगये फिर वह तीनों वरप्रदानको पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुये १५ और तीन पुर बनाने के लिये असुरों के विश्वकर्म्मा अजर अमर और दैत्यों से पूजित जो मयनाम दैत्यहै उससे बोले १६ उसके पीछे उस बुद्धिमान् मयदैत्य ने अपने तपसे तीन पुरों को उत्पन्न किया उनमें एक सुवर्णका दूसरा चांदीका तीसरा लोहेकाथा १७ वह सुवर्णका पुरतो स्वर्गमें नियत हुआ चांदी का अंतरिक्षमें और लोहेकापुर इच्छाके अनुसार पृथ्वीपर चलनेवालाहुआ १८ उनमें प्रत्येकपुर सौयोजन बर्गात्मक गृहअट्टादिकों से युक्त प्राकार और तोरणों से शोभित अत्यन्त शोभित धामों से भराहुआ और खुलाहुआ निविड़ता से रहित बड़े २ चौड़े मार्गोंका रखनेवाला नानाप्रकारके हर्म्य और स्वच्छ द्वारोंसे शोभायमानथा १९।२० हे राजा उन तीनोंपुरों में जुदे २ राजाहुये सुवर्णका पुर तो महात्मा ताराक्षकाहुआ और चांदीवाला कमलाक्षकाहुआ और लोहेवाला विद्युन्माली का हुआ वह तीनों दैत्यों के राजा अस्त्रों के तेजों से तीनोंलोकों को जीतकर नियत हुये २१।२२ और कहनेलगे कि कौन प्रजापति है उन उत्तम बीर दैत्योंकी संख्या प्रयुत अर्बुदों थीं और किरोड़ों दैत्य जहां तहां से आये वह मांसभक्षी महाबली पूर्वसमयमें देवताओं से पराजित २३।२४ बड़े ऐश्वर्य के चाहनेवाले त्रिपुरनाम गढ़में आश्रितहुये फिर मय दैत्य इनके सब मनोरथों का पूरा करनेवाला हुआ २५ वह सब दैत्य उस मयकी रक्षा में होकर निर्भय रहतेथे त्रिपुरके राजाओं ने जिस जिस अभीष्टको मनसे ध्यानकिया २६ उस अभीष्टको उनके निमित्त मयदैत्य ने अपनी मायासे प्रकट किया तारताक्ष के पुत्र बीर पराक्रमी हरिनाम ने बड़ी घोर तपस्या करी २७ उस तपसे ब्रह्माजी प्रसन्नहुये तब ब्रह्माजी को प्रसन्न जानकर उसने यहवर मांगा कि हमारेपुर में एक ऐसी वापी अर्थात् बावड़ी उत्पन्नहो २८ जिसमें शस्त्रों से मृतकलोग उसमें डालने से सजीव होकर बलवान् होजायँ हे राजा उस तारकाक्ष के पुत्र हरि ने इस बरको पाकर २९ वहां मृतक संजीविनी बावड़ी को तैयार किया फिर मरे

हुये दैत्य जिस रूप और पोशाकथे उसमें डालेगये ३० वह उसी रूपको धारण किये पोशाक समेत उत्पन्न हुये उन्हों ने उस वावड़ी को पाकर फिर उन सव लोकों को पीड़ित किया ३१ वह सवदैत्य वड़े बड़े तपस्वी और सिद्धलोगों के भी भयके बढ़ानेवाले हुये हे राजा कभी उनकी युद्ध में पराजय नहीं हुई ३२ उसके पीछे लोभ मोहसे व्याप्त निर्बुद्धी निर्लज्जहोकर वह सवलोभ में फँसेहुये नियत हुये ३३ वरदान से अहंकारी होकर वह सव जहां तहां देवताओं के समूहों को भगाकर अपनी इच्छाके अनुसार घूमने लगे ३४ देवताओंके प्रियकारी सब क्रीड़ा स्थानों को वा ऋषियों के पवित्र आश्रमों को और अनेक सुन्दर सुन्दर देशोंको नाश करके उन दुष्टकर्मी दैत्यों ने मर्यादाओं को भी बिगाड़ा इसके पीछे सवके पीड़ित होनेपर मरुद्गणों समेत इन्द्रने ३५।३६ चारों ओरको बज्रों के प्रहारसे तीनोंपुरों से युद्ध किया जव इन्द्र उन वरदान पाने वालों के पुरों के तोड़ने और पराजय करने को समर्थ नहीं हुआ तव भयभीत होकर वह उन पुरोंको छोड़कर ३७। ३८ देवताओं को साथलेकर ब्रह्माजी के पासगया वहां जाकर उसने असुरों की प्रवलता ब्रह्माजीसे वर्णन करी ३९ फिर शिरों से दराडवत् करके उनका मूलवृत्तान्त वर्णन किया और उनके मारनेका उपाय ब्रह्माजी से पूछा भगवान् ब्रह्माजी इन्द्रके वचनको सुनकर देवताओं से बोले कि जो तुमसे शत्रुता करताहै वह मेरा भी शत्रुरूप और अपराधी है निश्चय करके वह देवताओं से विरोध करनेवाले निर्बुद्धी असुर जो तुमको पीड़ित करतेहैं इसीसे वह सदैव अपराधी हैं ४०।४२ मैं सव जीवमात्रको निस्सन्देह समान दृष्टिसे देखताहूं परन्तु धर्म के विरोधी जीवमारनेकेही योग्य हैं यहीमेरा नियतव्रत है ४३ मैं उन पुरोंको एकही वाणसे तोड़ूंगा इसमें मिथ्या न होगा उन पुरोंको एकही बाणसे शिवजी के सिवाय तोड़नेवाला दूसरा देवता कोई समर्थ नहीं है ४४ हे देवताओ तुम उस युद्धकरनेवाले अचल आदि ईश्वर शिवजी की शरणलो जिससे कि वह शिवजी उन असुरोंको मारे ४५ इन्द्रसमेत सव देवता ब्रह्माजी के वचनों को सुनकर ब्रह्माजी को आगे करके शिवजीकी शरणमें गये ४६ वह धर्मज्ञ देवता ऋषियों समेत तप और नियमों में नियत होकर सनातन वेदोंको पढ़तेहुये सर्वात्मारूप शिवजी के पासगये ४७ हे राजा उन्हों ने उससर्वात्मा निर्भयता देनेवाले जगदीश्वर शिवजीको उत्तम२ स्तुतियों

से प्रसन्न किया जिस आत्मारूपसे सब जगत व्याप्तहै ४८ और नानाप्रकारके मुख्यतपों से मनकेयोगवाली सब वृत्तियोंको रोकनेको जानताहै और जिसका चित्तभी सदैव अपने आधीनहै ४९ उसने उस सर्वशक्तिमान् षड़ैश्वर्य्यके स्वामी उपाधि रहित शिवजीको देखा ५० और उसी अद्वितीय ईश्वरकोही नानाप्रकार के रूपों का धारण करनेवाला कल्पनाकिया अर्थात् उस परमात्मा में अपने संकल्पके अनुसार अनेक रूपोंको ५१ और एकने दूसरेके रूपको देखा जिसने विष्णुरूपसे कल्पनाकिया उसको विष्णुरूप दृष्टपड़े और जिसने इन्द्ररूप ध्यान किया उसको इन्द्ररूप दिखाईदिये यह देखकर सब आश्चर्य्यित होकर उस जगत् के स्वामी अजन्माको सर्वरूप देखकर ५२ देवता और ब्रह्मऋषियों ने शिरोंको पृथ्वीमें धरकर प्रणामकिया फिर शिवजीने उठकर उनको स्वस्ति बचनसे पूजन किया ५३ फिर मन्द मुसकान करतेहुये भगवान्ने कहा कि कहौ किस निमित्त आयेहो तब तो शिवजीकी आज्ञापाकर वह सबदेवता नियत चित्ततासे तप नियमोंमें नियत होकर सनातन वेदको पढ़तेहुये शिवजीकी स्तुति करनेलगे ५४ (स्तोत्र) नमोनमोनमस्तेस्तुप्रभोइत्यब्रुवन्वचः । नमोदेवाधिदेवायधन्विने वनमालिने ५५ प्रजापतिमखघ्नायप्रजापातिभिरीज्यते । नमोस्तुतायस्तुत्याय स्तूयमानायशम्भवे ५६ विलोहितायरुद्रायनीलग्रीवायशूलिने । अमोघायमृगाक्षायप्रवरायुधयोधिने ५७ अर्हायचैवशुद्धायक्षयायक्राथनायच। दुर्वारणायक्राथायब्रह्मणेब्रह्मचारिणे ५८ ईशानायाप्रमेयायनियन्त्रेचर्मवाससे । तपोरत्तायपिंगायव्रत्तिनेकृतिवाससे ५९ कुमारपित्रेत्र्यक्षायप्रवरायुधयोधिने । प्रपन्नार्त्तिविनाशायब्रह्मद्विट्संघघातिने ६० वनस्पतीनांपतियेनराणांपतयेनमः । गवांचपतयेनित्यंयज्ञानांपतयेनमः ६१ नमोस्तुतेससैन्यायत्र्यंबकायामितौजसे । नमोवाकर्मभिर्द्देवत्वांप्रपन्नान्भजस्वनः ६२ ततःप्रसन्नोभगवान्स्वागतेनाभिनंद्यच ॥ प्रोबाचव्येतुवत्स्वासोब्रूतकिंकरवाणिच ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणित्रिपुराख्यानेचतुस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

दुर्य्योधन बोले कि पितृदेवता और ऋषियोंके समूहोंको शिवजीने निर्भयता दी उस निर्भयताके देनेपर ब्रह्माजी शिवजीकी प्रशंसाकरके यहलोकोंका हित-

कारी वचन बोले १ हे देवताओंकेईश्वर आपकेदियेहुये प्रजापतिके पदपर वर्त्त-
मानहोकर मैंने दैत्योंको बड़ाभारी वरदानदियाथा २ उनमर्य्यादा उल्लंघन करने-
वाले असुरोंके मारनेको आपके सिवाय किसीको सामर्थ्य नहीं है हे भूत भवि-
ष्यके स्वामी आपही उनके मारनेको विरोधी शत्रुहो ३ हे देवेश्वर शंकर देवता
तुम शरणागत आनेवाले और प्रार्थना करनेवाले देवताओं के ऊपर कृपाकरो
और दानव लोगोंकोमारो ४ हे बड़ाइ देनेवाले आपकी कृपासेही सब संसार वृद्धि
पाताहै हे लोकेश आपही रक्षाके स्थानहैं हम सब आपकी शरणहैं ५ शिवजी
ने कहा कि तुम्हारे सब शत्रु मारडालनेकेही योग्य हैं यह मेरा मत है परन्तु मैं
अकेला उनके मारनेको उत्साह नहीं करताहूं क्योंकि वह बहुतसे असुर बड़े २
पराक्रमी हैं ६ सो तुम सब बड़े २ पराक्रमी मेरे साथी होकर मेरे आधेतेजसे उन
शत्रुओंको युद्धमें विजय करो ७ देवता बोले कि हे विश्वनाथ जितना हमारा
पराक्रमहै उससे द्विगुणित उनका पराक्रम युद्धमें हममानते हैं क्योंकि उनका
तेजबल हमने देखा है वह वास्तव में हमसे द्विगुणित बलवान् हैं ८ श्रीभगवान्
बोले कि तुमसे शत्रुता करनेसे वह सब पापात्मा हैं इससे वधके अवश्य योग्य
हैं तुम उन शत्रुओंको मेरे आधेतेज और बलसे मारोगे ९ देवता बोले हे महे-
श्वरजी हम आपका आधातेज और बलधारण करनेको समर्थ नहीं हैं आपही
हमसबके आधेबलसे शत्रुओंको मारो १० श्रीभगवान् शिवजीने कहा जो मेरा
पराक्रम धारणकरने को तुम्हारी कोई सामर्थ्य नहीं है तो तुम्हारे आधे तेजसे
वृद्धिपानेवाला मैंहीं उनको मारूंगा ११ तब देवताओंने कहा बहुतअच्छा यह
देवताओंके वचनको सुनकर देवेश्वर शिवजी सबके आधेतेजको लेकर अधिक
होगये १२ अर्थात् शिवजी उनके आधेबलसे सबसे अधिक बलवान् होगये तभी
से शिवजीका महादेवनाम प्रसिद्धहुआ १३ इसके पीछे महादेवजी बोले कि हे
देवताओ मैं धनुषबाण धारीहूं और युद्ध भूमिमें रथकी सवारीके द्वारा तुम्हारे
उनशत्रुओं को मारूंगा १४ इसहेतुसे तुम मेरे रथ और धनुष बाणको विचारकरके
तबतक खोजो जबतक कि उनशत्रुओं को पृथ्वीपर न गिराऊं १५ देवता बोले
कि हे देवेश्वर हम जहां तहांसे तीनोंलोकोंका सबतेज इकट्ठा करके उससे आपके
प्रकाशमान रथको तैयार करेंगे १६ फिर जैसा कि बुद्धिके अनुसार बतायागया
वैसाही विश्वकर्माजीने शुभ और उत्तम रथको तैयारकिया तदनन्तर उन उत्तम

देवताओंने उस बनेहुये दिव्य रथको अच्छेप्रकारसे अलंकृतकिया १७ विष्णुजी चन्द्रमा और अग्निदेवता यहतीनों तो शिवजीके बाणमें कल्पितहुये अग्नि शृंगहुआ और चन्द्रमा भल्लहुआ १८ और विष्णुजी उस उत्तम बाणमें कुंतल हुये और बड़े २ पुरोंकी धारण करनेवाली धरा अर्थात् पृथ्वीदेवी शिवजी का रथ बनी वह पृथ्वी पर्वत वा द्वीपोंसे युक्तहोकर अखिलजीवोंकी धारण करनेवाली थी उससमय मन्दराचल पर्वत अक्षहुआ और उसकी जंघा महानदी हुई१९।२० तब दिशाविदिशा रथकेपरिवारहुये और नक्षत्रों के समूह ईशाहुये उस रथमें सतयुगजुआहुआ और सर्पोंमें श्रेष्ठ वासुकीसर्प रथका कूबरहुआ २१ हिमाचल और विंध्याचल यहदोनों रथके पहियों के उपस्करहुये उदयाचल और अस्ताचल पाये हुये २२ और दानवों का उत्तम स्थान समुद्र अक्षवना और सप्तऋषियों का मण्डल रथका पुरस्कर हुआ २३ गंगा सरस्वती सिन्धु और आकाश धुर हुआ और जलसमेत सबनदियां भी रथकी उपस्करहुई २४ दिनरात्रि और कलाकाष्ठा नाम समय और सब ऋतुओं समेत प्रकाशमान् ग्रह अनुकर्षहुये और नक्षत्र बरूथहुये २५ धर्म अर्थ काम से संयुक्त त्रिवेणु द्वार और बन्धनहुये औषधी वीरुध और फलफूल युक्त वृक्ष घंटेबने २६ उस महा उत्तमरथ में सूर्य्य और चन्द्रमा पूर्व और पश्चिमके पायेहुये और दिन वा रात्रि पूर्व्वापरनाम शुभपक्ष हुये २७ तब धृतराष्ट्र नाम नागपति को आदिलेकर दश नागपतियों को ईशाकिया और श्वासलेनेवाले बड़े २ सर्पोंको योक्तरकिया २८ सर्पको दूसरा जुआबनाया और संवर्त्तक वा बलाहक नाम बादलों का जुयेका चर्मबनाया कालपृष्ठ नहुष कर्कोटक धनंजय और अन्य २ सर्प घोड़ों के बालबन्धनहुये और दिशा विदिशा आदि घोड़ोंके मार्गहुये२९।३०संध्या पृथ्वी मेधा स्थिति सन्नति और नक्षत्रों से चित्रित आकाशको रथका चर्म्मकिया ३१ मद्यजल और प्रेतोंके स्वामी लोकेश्वरोंको घोड़ा बनाया पूर्व्व अमावास्या और पूर्व्वपूर्णिमा और उत्तर अमावास्या वा उत्तर पूर्णमासी इन सुन्दरव्रत वालियों को योक्त बनाया ३२ उस रथमें उस अमावास्या आदिके अधिष्ठाता पितरोंको इरावनकी कीलक बनाई उनकीलकों में धर्म सत्य और तपको रस्सियां बनाई ३३ उस रथका आधार मनहुआ और सरस्वती प्रचार मार्गहुई और नानाप्रकार के वर्णवाली विचित्र प्रेरणाही उत्तम पताकाहुई ३४ बिजली इन्द्रधनुषसे अलंकृत प्रकाशमान् रथको प्रका-

शितकिया वषट्कार मन्त्र चाबुक हुआ और गायत्रीशिरका बन्धनहुई ३५ पूर्व्वसमयमें यज्ञकेमध्यमें महात्मा महेश्वरजीका जो संवत्सरनाम धनुष नियत हुआथा वही धनुष ठहरायागया और बड़ी शब्दवाली सावित्रीजी प्रत्यंचावनी ३६ और दिव्यकवच वह नियतकिया जोकि बड़ोंके योग्यरत्नोंसे जटित खंडित न होनेवाला रजोगुण रहित कालचक्र से बाहरथा ३७ श्रीमान् सुवर्ण का मेरु पर्व्वत ध्वजाकी यष्टीहुआ और बिजलियोंसे अलंकृत बादल पताकाहुआ ३८ और अध्वरों के मध्यमें देदीप्य अग्नियां प्रकाशमानहुईं फिर देवतालोग उस अलंकृत रथको देखकर आश्चर्य्य युक्तहुये ३९ हे श्रेष्ठ इसके पीछे देवताओंने सबलोकोंके तेजको एक स्थानपर इकट्ठा देखकर उस सजेहुये रथको ४० उस महात्माके सन्मुख बर्त्तमानकरके बर्णनकिया हे महाराज नरोत्तम इसप्रकारसे देवताओंकीओरसे उसशत्रुओंके मारनेवाले उत्तमरथके तैयारहोनेपर४१शंकरजी ने अपनेअस्त्रशस्त्रोंको उस रथपर रक्खा और आकाशको ध्वजाकी यष्टीबनाके नन्दीगण को उसपर नियत किया ४२ ब्रह्मदण्ड कालदण्ड रुद्रदण्ड और तप यह चारों सब दिशाओं से युक्त रथ के ओर पासके रक्षकहुये ४३ अथर्वा और अङ्गिरस उस महात्मा के रथ चक्रों के रक्षक हुये ऋग्वेद सामवेद और पुराण यह सब आगे चलनेवाले हुये ४४ इतिहास और यजुर्वेद पीछे के रक्षक हुये और दिव्यवाणी और बिद्या यह रथके चारों ओर नियत हुये ४५ हे राजेन्द्र स्तोत्रादिक वषट्कार और प्रणव यह मुख में शोभा करनेवाले हुये ४६ और छओं ऋतुओं समेत वर्ष के अन्तको बिचित्र धनुप करके अपने सन्मुख अबिनाशी छायारूप सावित्रीको युद्धमें धनुषकी प्रत्यंचा बनाई ४७ वेगवान् रुद्रजी कालरूपहुये और उनका धनुष वर्षान्त रूप हुआ इस हेतुसे रौद्री कालरात्रीको धनुषकी प्रत्यंचा बनाया ४८ विष्णु अग्नि और चन्द्रमाभी बाणरूपहुये यह सब जगत् अग्निपोम नाम दो रूपवाला वैष्णव कहा जाताहै ४९ और बिष्णुजी उस भगवान् महातेजस्वी शिवजी की आत्मा हैं इस कारणसे उन्होंने शिव जीके धनुपकी प्रत्यंचाके स्पर्शको न सहा ५० ईश्वरने भृगु वा अंगिराऋषिके क्रोधसे उत्पन्न बड़ी कठिनतासे सहनेके योग्य तेजसंकल्पवाले असह्य क्रोधाग्नि को उसबाणमें लगाया ५१ और नीललोहित धूम्रवर्ण दिगम्बर भयकारी दशहजार सूर्य्य के समान प्रकाशों से संयुक्त ज्वलित तेजको ५२ कठिनतासे गिरने

के योग्य राक्षसों का संहार करनेवाला और ब्राह्मणों के मारनेवाले शत्रुओं का नाश करनेवाला सदैव धर्म में नियत मनुष्यों की रक्षा करनेवाला और अ-धर्मी लोगोंका संहारकर्त्ताथा ५३ शत्रुओं के मथन करनेवाले भयानक बल और रूपचित्तके समान शीघ्रगामी इन अपने गुणों से युक्त भगवान् शिवजी प्रकाशमान हुये ५४ यह जड़ चैतन्य रूप बिश्व उन शिवजी के अंगों में श-रणरूप होकर अपूर्व्व दर्शनवाला शोभायमान हुआ ५५ वह धनुषधारी शि-वजी उस तैयार हुये रथको देखकर और चन्द्रमा बिष्णु और अग्नि से उत्पन्न होनेवाले उसवाणको लेकर ५६ नियतहुये हे प्रभु राजा शल्य तब देवताओं ने उसके पीछे चलनेवाले देवताओंमें श्रेष्ठ बायुको पवित्र गन्धियोंका पहुँचा-नेवाला विचारकिया ५७ तब सावधान शिवजी देवताओंको भी भयभीत करते हुये पृथ्वी को कंपायमान करके उस रथपर सवार हुये ५८ उस रथपर सवार होनेके अभिलाषी देवताओं के ईश्वर शिवजी को परमऋषि गन्धर्व देवगण और अप्सराओं के गणों ने स्तुतिमान किया ५६ ब्रह्मऋषियों से स्तुतिमान और बन्दीजनों से प्रतिष्ठित और नृत्यविद्यामें कुशल नाचनेवाली अप्सराओं से शोभायमान ६० खड्ग बाण और धनुषधारी बरदाता शिवजी देवताओं से बोले कि हमारा सारथी कौनहोगा ६१ तब देवगणों ने कहा कि हे देवेश आप जिसको आज्ञा देंगे वही निस्सन्देह आपका सारथी होगा ६२ फिर शिवजीने कहा कि जो मुझसे श्रेष्ठतम होय उसको तुम अच्छीरीति से बिचारकर शीघ्र ही मेरा सारथी बनावो बिलम्ब न करो ६३ इसके पीछे शिवजी के इस वचन को सुनकर देवतालोग ब्रह्माजी के समीप पहुँच बहुत प्रसन्न करके यह वचन बोले ६४ कि हे देवता असुरों के मारने में जो २ आपने कहा वह सब हमने किया और शिवजी हमपर प्रसन्न हैं ६५ हमने बिचित्र शस्त्रों से युक्त रथ को तैयार किया है हम नहीं जानते हैं कि उस उत्तम रथमें सारथी कौन होगा ६६ हे देवोत्तम इसहेतु से आपही किसी सारथी को बिचार कीजिये हे समर्थ देवता हमारे इस बचनके सफलकरने को आपही समर्थ हैं ६७ हे भगवन् तुमने पूर्व्व समय में हम लोगों से ऐसा कहाहै कि मैं तुमलोगों का हित करूंगा उसको आप करने के योग्य हैं ६८ हे देव तब वह रथियों में श्रेष्ठ कठिनता से सहने के योग्य शत्रुलोगों का भगानेवाला पिनाक धनुषधारी हमारे अनुकूल युद्ध

करनेवाला बिचार कियागया वह दानवों को भयभीत करता हुआ वर्त्तमान है ६९ उसी प्रकार चारों वेद यही चारों उत्तम घोड़े हुये और पर्व्वतों समेत पृथ्वी रथ हुई नक्षत्रों समेत आकाश निवासस्थान और शिवजी युद्धकर्त्ता बने हैं परन्तु सारथी जानने के योग्यहै इन सबसे अधिक तेज बलवाला सारथी चाहिये हे देव रथ घोड़े समेत लड़नेवाला देवता नियत है ७० । ७१ और हे पितामहजी कवच धनुष और शस्त्र भी तैयार हैं परन्तु उनका सारथी आपके सिवाय दूसरा हम नहीं देखते हैं ७२ हे प्रभु आपही सब गुणों से सम्पन्न देवतासे अधिकहो सोतुम शीघ्रही उत्तमरथपर सवारहोकर घोड़ोंकी वाग पकड़ो ७३ आपको देवताओं के विजय और असुरोंके नाशके लिये ऐसा करना उचित है यह कहकर उन देवताओंने तीनोंलोकों के ईश्वर ब्रह्माजीको शिरसे दण्डवत्करी और उनको सारथी बनने के निमित्त प्रसन्नकिया ब्रह्माजी बोले हे देवताओ तुमसे जोकहाहै उसमें कुछभी मिथ्या नहीं है ७४ । ७५ अब मैं युद्धकर्त्ता शिवजी के घोड़ोंको थांभताहूं यहकहकर वहसंसारके स्वामी ब्रह्माजी ७६ देवताओं की प्रार्थना से सारथी नियत हुये उन लोकेश ब्रह्माजी के रथपर सवार होनेपर ७७ उनवायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंने शिरोंसे पृथ्वीको प्राप्त किया अपने तेजसेही प्रकाशमान भगवान् ७८ ब्रह्माजीने रथपर चढ़कर बागडोरों समेत चाबुकको हाथमें लिया उसके पीछे देवताओंमें श्रेष्ठ भगवान् ब्रह्माजी उन वायुके समान घोड़ोंको उठाकर ७९ शिवजीसे बोले कि रथपर सवार हूजिये इसके अनन्तर शिवजी विष्णु अग्नि और चन्द्रमा से उत्पन्न होनेवाले उसवाणको लेकर ८० धनुषसे शत्रुओं को कंपाते सवारहुये परम ऋषि गन्धर्व देवगण और अप्सराओं के गणोंने उस रथारूढ़ देवेशकी स्तुतिकरी वह शोभायमान खड्ग धनुषबाणधारी वरदाता ८१ । ८२ अपने तेजसे तीनोंलोकोंको अत्यन्त प्रकाश करतेहुये रथपर सवारहुये और इन्द्रादिक देवताओंसे फिर कहनेलगे ८३ कि यह तुमसन्देह न करना कि शत्रु नहींमारे जायँगे ८४ इसबाणसे तुम असुरोंको मराहुआही जानना उन देवताओं ने कहा कि सत्यहै असुर मारगये यह वचन जो आपके मुखसे निकलाहै वह मिथ्या नहीं है ८५ देवता लोग ऐसा विचारकर बड़े प्रसन्नहुये उसके पीछे सब देवगणों समेत देवेश शिवजी ८६ उस बड़ेरथमें बैठेहुये चले जिसके समान कोई नहीं वहबड़ा यशस्वी

देवता मांसभक्षी अजेय दौड़ते नाचते और चारों ओरसे धमकातेहुये अपने पार्षदोंसे शोभित था ८७ महाबाहु तपोमूर्त्ति बड़े गुणवान् सब ऋषि और देवगणोंने महादेवजी की विजयकी आशाकरी ८८ हे नरोत्तम इसरीति से लोकों को निर्भय करनेवाले लोकेशके चलनेपर सब संसारी जीवों समेत देवतालोग प्रसन्नहुये ८९ वहां ऋषिलोग बहुतसे स्तोत्रोंसे शिवजीकी स्तुतिको करतेहुये बारम्बार इनकेतेजकी वृद्धिकरनेवालेहुये ९० उनके यात्राकरनेपर प्रयुतों अर्बुदों गंधर्वोंने नानाप्रकारके बाजोंको बजाया ९१ इसकेपीछे वरदाता ब्रह्माजीके रथपर सवारहोने और असुरोंकी ओरको चलनेपर मन्द मुसकान करतेहुये शिवजी बोले कि धन्यहै धन्यहै ९२ हेदेवता उधरकोचलो जिधर दैत्यलोगहैं और सावधानहोकर तुम घोड़ोंको तेजकरो अब तुम मुझ शत्रुहन्ताके युद्ध में भुजबलको देखो ९३ हे राजा इसके पीछे मन और वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ोंको तीक्ष्ण किया और जिस ओर को दैत्य दानवोंसे संयुक्त वह त्रिपुरथा उधरकोही उनका मुखकिया ९४ भगवान् शिवजी देवताओंकी विजयके निमित्त लोकपूजित इन आकाशके पान करनेवाले घोड़ोंके द्वारा बड़ी शीघ्रता से चले ९५ शिवजीको रथपर सवार होकर त्रिपुरके सन्मुख चलनेकेसमय नन्दीगण दिशाओंको शब्दायमान करताहुआ बड़ेवेगसे गर्जा ९६ वहां देवताओंके शत्रु तारक दैत्य इस नन्दीगणके महाभयकारी शब्दको सुनकर नाशको प्राप्तहुये ९७ तब दूसरे असुरलोग वहां युद्धके निमित्त सन्मुखगये हे महाराज इसके पीछे त्रिशूलधारी शिवजी क्रोध में ज्वलितहुये ९८ तब सब जीवधारी और तीनों लोक भयभीतहुये और पृथ्वी कम्पायमान हुई और धनुषके चढ़ातेही बड़े२ शकुन हुये ९९ उस समय चन्द्रमा अग्नि विष्णु ब्रह्मा और रुद्र समेत जो धनुषथा उसके वेगसे वह रथ अत्यन्त पीड़ा को पाताथा १०० इसके पीछे नारायणजी उस बाणके भागमेंसे बाहर निकले और वृषभरूप होकर उसबड़े रथको उठा लिया १०१ रथ के पीड़ित होने और शत्रुओं के गर्जने पर उन महाबली शिव जीने भ्रांती से शब्द किया १०२ इसके पीछे बैल के मस्तक और घोड़ों के पीछे नियत होनेवाले रथ पर बैठकर उन शिवजी ने दानवों के पुर को देखा १०३ हे नरोत्तम तब बैल और घोड़ों पर नियत रुद्रजी ने उनके घोड़ों के स्तनों का नाशकरके खुरों के टुकड़े २ कर दिये १०४ हे राजन् शल्य आपका भलाहो

तभी से गौ और बैलों के पैर बीचमें से फटे और उसी समय से घोड़ों के स्तन नहीं हुये १०५ अद्भुतकर्मी महाबली रुद्रजी ने उनको पीड़ित कर अपने धनुष को संधान बाणको चढ़ाके पाशुपत अस्त्रसे संयुक्त करके त्रिपुरको अच्छेप्रकार से चिन्तायुक्त किया हेमहाराज उसधनुषधारी शिवजी के नियतहोने १०६।१०७ पर दैवकी प्रेरणा से समय के आने पर वह तीनों पुर एकत्वभाव को प्राप्तहुये फिर उन त्रिपुर नामकी एकदशा होनेपर देवताओं को बड़ी प्रसन्नताहुई १०८ इसके पीछे महेश्वरजी की स्तुति करतेहुये देवगण और सब सिद्ध महर्षियों ने यह शब्द किया कि विजयकरिये इसकेपीछे त्रिपुर और असुरों के मारनेवाले क्षमा न करनेवाले तेजस्वी देवता शिवजीके शरीरमें से एक महाउग्र रूपवाला दूसरारूप प्रकटहुआ फिर उस भगवान् लोकेश्वर ने अपने उस दिव्य धनुषको खैंचकर १०९ । ११० । १११ उस तीनों लोकके सारवान बाणको त्रिपुरके ऊपर मारा हे महाराज उस उत्तम बाण के छोड़नेपर ११२ पृथ्वी पर वह तीनोंपुरगिरपड़े और उनके पीड़ित शब्द बड़े भयकारी हुये उस बाण ने उन दैत्यगणों को नाशकरके पश्चिमी समुद्र में डालदिया ११३ इसप्रकार क्रोधयुक्त महेश्वर जीके हाथसे तीनों लोकोंका दुःखदायी त्रिपुर नाशको प्राप्त हुआ उनकानाश तीनों लोकोंकी वृद्धिका कारण हुआ और दैत्यभी सब मारेगये ११४ इसके पीछे बड़ा हाहाकार करके अपने क्रोधसे उत्पन्न होनेवाली उसप्रचंड अग्निको शान्तकिया और उसको रोककर शिवजी ने कहा कि तू संसार को भस्म मत कर ११५ इसके अनन्तर सब देवगण ऋषि और महर्षिलोग स्वस्थ चित्तहुये और उत्तम २ बचनों से शिवजी को प्रसन्न करके सबने स्तुतिकरी ११६ इन बातों के पीछे ब्रह्मादिक सब देवता शिवजी को प्रणामकर उनकी आज्ञा ले २ कर जहां २ से आयेथे वहां २ को चलेगये ११७ इसरीतिसे उससंसारके स्वामी देवऋषियों के पूज्य महेश्वरजी महाराज ने लोकों के कल्याणको किया ११८ जैसे कि सृष्टि के कर्त्ता भगवान् ब्रह्माजी ने वहां रुद्रजी के सारथ्य कर्म को किया ११९ उसीप्रकार आपभी शीघ्रतासे महात्मा कर्णके सारथी होकर घोड़ों की रस्सी पकड़िये १२० हे राजाओं में श्रेष्ठ आप श्रीकृष्ण कर्ण और अर्जुन से अधिक श्रेष्ठ हो यह निश्चय है कि यह कर्ण युद्धमें रुद्रजी के समानहै और आप नीति में ब्रह्माजी के बराबरहो इसकारणसे आप मेरे उन शत्रुओं के मा-

रने को वैसे समर्थ हो जैसे कि इन्द्र असुरों के मारने को समर्थ होताहै १२१।१२२ हे शल्य अब यह कर्ण श्रीकृष्ण सारथी समेत श्वेत घोड़ेवाले अर्ज्जुन को युद्धमें मथन करके जिस रीति से अर्ज्जुन को मारे वही प्रकार आपको करना उचित है १२३ हे मद्रदेशके स्वामी तुम्हारेही कारणसे हमको राज्य मिलने की और अपने जीवनकी आशा है अब मुझ कर्ण के मंत्रीकी विजय है अर्थात् तुम्हीं हमारे राज्यकी प्राप्ति और शत्रुओं के नाशके हेतुहो १२४।१२५ जिसको धर्मज्ञ ब्राह्मणने मेरे पिताके सन्मुख कहा हे शल्य इसकारण अर्थ और कर्म से युक्त अपूर्व्व वचनको सुनकर बड़े निश्चयके साथकर्मकरो इसमें किसी बातका विचार मतकरो १२६ भार्गववंश में बड़े यशस्वी जमदग्नि जी उत्पन्नहुये उनके पुत्र तेजगुण में पूर्ण परशुरामजी प्रसिद्धहुये १२७ उस प्रसन्नचित्त सावधान जितेन्द्री ने अस्त्रों के निमित्त उत्तम व्रतों को धारण करके शिवजी को प्रसन्न किया १२८ उसकी भक्ति और शान्त चित्तता से प्रसन्नहोकर शिवजी ने उनको दर्शन दिया १२९ और परशुराम से कहा हे परशुरामजी तुम्हारा कल्याणहो मैं प्रसन्न हूं और तुम्हारे चित्तकी इच्छा भी मुझ को विदित हुई तुम अपनी आत्माको पवित्रकरो सब अभीष्टोंको पावोगे १३० और जब तुम पवित्र होगे तभी तुमको अस्त्र दूंगा क्योंकि यह अस्त्र अपात्र और असमर्थ को भस्म करते हैं १३१ शिवजी के इसवचनको सुनकर परशुरामजी ने उत्तर दिया १३२ हे देवेश जब आपमुझको पवित्र और पात्र जानें तभी अस्त्र दीजियेगा १३३ दुर्य्योधनने कहा कि हे शल्य इसके पीछे तप शांति और नियम पूर्वक पूजा भेंट और बलिप्रदान होम और मुख्य मन्त्रों के द्वारा १३४ बहुतबर्षों तक शिव जी की आराधना करी तब उन महादेवजीने महात्मा भार्गवजी की १३५ प्रशंसा देवी पार्वतीजी के सन्मुख वर्णन करी कि यह दृढ़व्रत रखनेवाले परशुराम सदैव मुझमें भक्ति रखनेवाले हैं १३६ हे शत्रुहन्ता इसप्रकार से प्रसन्न होकर शिवजीने देवता और पितरों के सन्मुख उन परशुरामजी के बहुतसे गुणों का वर्णनकिया १३७ इसकेपीछे उसीसमय में दैत्यलोग बड़े पराक्रमीहुये और प्रबल और अहंकारी राक्षसों से देवतालोग पराजित होकर घायल हुये १३८ तब उनके मारने में निश्चय करनेवाले देवताओं ने इकट्ठेहोकर उन शत्रुओं के मारनेका उपायकिया परन्तु उनके मारने को समर्थ नहीं हुये १३९ इसके पीछे

देवताओं ने उमापति महेश्वरजीको भक्तिसे प्रसन्नकिया और प्रार्थनाकरी कि शत्रुओं के समूहोंको मारिये १४० इसके अनन्तर वह देवेश शिवजी देवसंतापी दैत्योंके नाश करनेका प्रणकरके भार्गव परशुरामजीको बुलाकर यह बचन बोले १४१ कि हे भार्गव देवताओं के सब आयेहुये शत्रुओं को हमारी प्रीति और लोकों के हितके अर्थ तुममारो १४२ यह बचन सुनकर परशुरामजी ने शिवजीसे प्रार्थनाकरी कि हे देवेश युद्धमें दुर्म्मद अस्त्रवेत्ता दानवों के मारने को अस्त्रों से अभिज्ञकैसे मारनेको समर्थ होसक्ताहै महेश्वरजी ने कहा कि मेरी आज्ञासे तुम वहांजावो शत्रुओं को मारोगे १४३ । १४४ और शत्रुओं के समूहों को बिजय करके बड़े गुणों को प्राप्त होगे इस बचनको सुनकर परशुरामजी सब बातोंको अंगीकार करके १४५ स्वस्तिबाचन पूर्व्वक दानवों की ओरचले वहां जाकर बड़े अहंकार और बलसे उनदानवों से बोले १४६ कि हे युद्धदुर्मद दैत्यलोगो मुझ से युद्ध करो हे महाअसुरलोगो मुझको महादेवजी ने तुम्हारे बिजय करनेको भेजाहै १४७ फिर भार्गवजी के इस बचनको सुनकर दैत्यों ने युद्ध किया उससमय उस भार्गवनन्दन ने बज्र और बिजली के समान स्पर्श वाले प्रहारों से युद्धमें उन दैत्योंको मारकर शिवजीका दर्शन किया फिर जमदग्निजी के पुत्र ब्राह्मणों में श्रेष्ठ परशुरामजी दानवों के हाथसे घायल शरीर शिवजी के हाथके स्पर्शसे घातजन्य पीड़ासे रहितहुये और शिवजी महाराज ने इनके उस कर्मसे अत्यन्त प्रसन्न १४८ । १४९ । १५० होकर इन महात्माभार्गवजीको बहुतसे बरदान दिये और उन प्रसन्नमूर्त्ति शिवजी ने परशुरामजी से कहा १५१ कि शस्त्रों के आघातसे यह तेरे शरीर में पीड़ा हुई उस पीड़ासे हे भृगुनन्दन तेरामानुषीकर्म नष्ट होकर दिव्यकर्म प्राप्तहुआ १५२ अब तुम अपनी इच्छानुसार मुझसे दिव्य अस्त्रोंको लो, दुर्य्योधनने कहाकि इसकेपीछे परशुरामजी सब अस्त्रों को और अनेक अभीष्ट बरोंको पाकर शिरसे दण्डवत् कर शिवजी की आज्ञा लेकर वहांसे चलेगये १५३ तब ऋषिने इसरीति से प्राचीन वृत्तान्त को बर्णन किया भार्गवजी ने भी अत्यन्त प्रसन्न अन्तःकारण के साथ दिव्य धनुर्वेद महात्मा कर्णको दिया हे पुरुषोत्तम राजा शल्य जो कर्णमें कुछ पापहोता तो भृगुनन्दनजी काहे को दिव्यअस्त्र उसको देते और मैं भी उसको सूतके वंशमें उत्पन्न नहीं समझता हूँ १५४ । १५५ । १५६ मैं इसको क्षत्रियों के

वंशमें उत्पन्न देवकुमार जानताहूँ और यहकुलके गुप्तकरने को आज्ञादियाहै यह मेरामतहै १५७ हे शल्ययह कर्ण सवप्रकारसे क्षत्री है और सूतके बंशमें नहीं उत्पन्न हुआहै कुण्डल और कवचधारी महाबाहु महारथी १५८ सूर्य्यके समान तेजस्वी सिंहको मृगी कैसे उत्पन्न करसक्ती है और जैसे कि इसके दोनों भुजा गजराजकी सूंड़के समान मोटी हैं १५६ उसीप्रकार हे शत्रुहन्ता इसकी बड़ी छाती को भी देखो यह सूर्य्य का पुत्र धर्म्मात्मा कर्ण कोई प्राकृतिपुरुष नहीं है १६० हे राजेन्द्र यह कर्ण महात्मा परशुरामजी का प्रतापवान् और महापराक्रमी शिष्य है १६१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिशल्यदुर्य्योधनसंवादेपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

दुर्य्योधनबोले कि इसरीतिसे वहां सब लोकोंके पितामह भगवान् ब्रह्माजीने सारथ्य कर्मकिया और श्रीरुद्रजी रथीहुये १ हेवीर रथी से अधिक रथ का सारथी करना योग्यहै हेपुरुषोत्तम इसहेतुसे तुम युद्धमें घोड़ोंको थांभो जैसे कि शिवजी के निमित्त देवगणोंने भगवान् ब्रह्माजीको सारथ्य कर्मकेलिये प्रार्थनाकरी उसी प्रकार हम लोगोंकी ओरसे कर्णसेभी अधिक आप प्रार्थनाकिये गयेहो २।३ जैसे कि देवताओंकी ओरसे शिवजी से बड़ेभी ब्रह्माजी प्रार्थना कियेगये हेमहाराज उसीप्रकार आपभी कर्णसे अधिक होनेके कारण प्रार्थनाकिये गये हैं जैसे कि ब्रह्माजीने रुद्रजीके घोड़ोंको थांभा ४ उसीप्रकार आपभी बड़े तेजस्वी कर्णके घोड़ों को थांभो शल्य बोले कि हे नरोत्तम मैंने भी इन नरोत्तम श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनके मुखसे कहीहुई इस उत्तम अद्भुतकथाको बहुधा सुनाहै जैसे कि ब्रह्माजीने शिवजीके सारथ्य कर्मको कियाहै ५ और जैसे कि शिवजीने एकही बाण से सब असुरोंको मारा हे भरतबंशी यह भूतकाल का वृत्तान्त श्रीकृष्णजी का भी जाना हुआहै ६ । ७ जैसे कि भगवान् ब्रह्माजी सारथी हुये उसीप्रकार श्रीकृष्णजी भी भूतभविष्य के वृत्तान्तोंको जानतेहैं ८ इसी हेतुसे जैसे कि जान बूझकर भगवान् ब्रह्माजीने शिवजी के सारथ्यकर्मको किया हे भरतवंशी उसी प्रकार श्रीकृष्णजीने अर्ज्जुनकी रथवानी अङ्गीकारकरी ६ जोकर्ण किसी दशा में भी अर्ज्जुनको मारडालेगा तो अर्ज्जुनके मरनेकेपीछे आप श्रीकृष्णजी युद्ध

करेंगे १० शङ्ख चक्र गदाके हाथमें धारण करनेवाले श्रीकृष्णजी तेरी सेनाको भस्मकरेंगे उससमय उन क्रोधयुक्त श्रीकृष्णजी के सन्मुख तेरी सेनामें से कोई भी युद्ध करनेको समर्थ न होगा ११ संजय बोले कि शत्रुओं का विजय करने वाला महासाहसी आपका पुत्र दुर्य्योधन ऐसे बचन कहनेवाले शल्यसे बोला हे महाबाहु तुम सूर्य्यके पुत्र महापराक्रमी कर्णका अपमान मतकरो १२।१३ जो कर्ण कि सब अस्त्रधारियों में श्रेष्ठ होकर सर्व शास्त्रोंका पारगामी है जिसके धनुषकी भयानक प्रत्यञ्चाके शब्दको सुनकर १४ पांडवी सेना दशोंदिशाओं को भागती है हे महाबाहु आपके नेत्रोंकेही सन्मुख हुआथा जैसे कि वह मायावी सैकड़ों मायाओंका प्रकट करनेवाला घटोत्कच मारागया और अर्ज्जुन किसी प्रकारसे भी सेनाके सन्मुख नहीं हुआ १५।१६ बड़ा भयभीत अर्ज्जुन इस सबदिनोंमें कभी सन्मुख नहींहुआ और पराक्रमी भीमसेन धनुषकी कोटि से प्रेरित किया गया १७ हेराजा बहुतसे लोगोंने कर्णसे कहाथा कि तू पेटपालन करने वालोंके समान अज्ञान है इसीप्रकार बड़ेयुद्धमें माद्रीके पुत्र शूरवीर नकुल और सहदेवको बिजय करके १८ किसी प्रयोजनसे युद्धमें नहीं मारा हे श्रेष्ठ जिस कर्णने वृष्णियों में बड़ाबीर और यादवोंमें श्रेष्ठ महापराक्रमी सात्यकी को १९ युद्धमें बिजयकरके रथसे विहीन करदिया और उसीमन्द मुसक्कान वालेने सृंजियोंको आदिलेकर अन्य सब योद्धाओंको जिनमें मुख्य धृष्टद्युम्न था उनको वारम्बार युद्धमें बिजय किया उस महारथी पराक्रमी कर्णको पाण्डव लोग युद्धमें कैसे बिजय करसक्तेहैं २०।२१ जोक्रोधयुक्त होकर युद्धमें बज्रधारी इन्द्रको भी मारसक्ताहै और आपसर्वबिद्या सम्पन्न महाअस्त्रज्ञ और पंडितहो २२ और पृथ्वीपर आपके भुजबलके समानभी कोई नहींहै तुम शत्रुओंके भल्लरूप होकर पराक्रममें भी अक्षयहो २३ हे शत्रुहन्ता राजा शल्य इसीहेतुसे आपका नाम विख्यात है आपके भुजबलको पाकर सब यादवलोग समर्थ नहींहुये २४ हे राजा श्रीकृष्णजी आपके भुजबलसे अधिकहैं जैसे कि अर्ज्जुन के मरनेपर श्रीकृष्णजी से सेना रक्षाके योग्यहै २५ उसीप्रकार कर्णके नाश होजानेपर सेनाके लोग आपसे रक्षाके योग्यहैं जैसे कि वासुदेवजी युद्धमें सेनाको रोकेंगे उसीप्रकार आपभी सेनाको अवश्यमारोगे २६ आपके कारणसे युद्धमें अत्रुण्णता प्राप्तकरना चाहताहूं और सब सगे भाई इष्ट मित्र और अन्य सब राजाओं

की अत्रणता चाहताहूं २७ शल्यबोला हे प्रशंसा करनेवाले दुर्य्योधन तुम सब सेनाके समक्ष जो कृष्णजीसेभी अधिक मुझको कहतेहो इस हेतुसे मैं तुझपर प्रसन्नहूं अब मैं प्रसन्नतासे अर्ज्जुनसे लड़नेवाले यशस्वी कर्णके साथ उसके रथपर इसप्रतिज्ञासे सारथी बनताहूं कि मैं जिससमय जो चाहूंगा वहकर्णके विषयमें कहूंगा उसका किसी प्रकारका मान नहीं करूंगा २८।३० संजय बोले हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र तब आपकापुत्र कर्णसमेत यह बोला कि ऐसाही होय यहकहकर सब क्षत्रियोंके समक्षमें३१शल्यके सारथी होनेसे विश्वासयुक्तहोकर दुर्य्योधन बड़ी प्रसन्नता से कर्णसे प्रीतिपूर्व्वक मिला३२औरबड़ी प्रशंसाकरके कहनेलगा कि युद्ध में तुम सब पाण्डवोंको ऐसे मारो जैसे कि महाइन्द्र सब दानवोंको मारता है ३३ इसके अनन्तर घोड़ोंके हांकनेपर शल्यके तैयारहोनेपर प्रसन्नचित्त होकर कर्ण ने दुर्य्योधनसे कहा ३४ यह मद्रदेशका राजा अत्यन्त प्रसन्नचित्त होकर बात नहीं करताहै हे राजा आप मीठेवचनोंसे फिरइसप्रकारसे कहौ ३५ तब महाज्ञानी सर्वशास्त्र औरअस्त्रोंका वेत्ता पराक्रमी राजा दुर्य्योधन मद्रदेशियों के महाराज से बोला ३६ हे शल्य अब कर्ण बादलके समान घिरेहुये शब्दयुक्त बाणों से युद्धभूमिको पूर्ण करना मानताहै कि अर्जुन के साथ युद्ध करना चाहिये ३७ हे पुरुपोत्तम आप युद्धमें उसके घोड़ोंको थांभो कर्ण आप सब योद्धाओं को मारकर फिर अर्जुनको मारना चाहताहै ३८ हे राजा मैं वारंवार आपको कर्णके सारथी बननेके निमित्त अपनी इच्छासे प्रार्थना करताहूं जैसे कि सारथियों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी अर्जुनके मन्त्री हैं उसी प्रकार आप भी कर्णकी सब ओरसे रक्षाकरो ३९। ४० संजय बोले इसके पीछे प्रसन्नचित्तहो राजाशल्य आप के पुत्र दुर्योधन से बड़े स्नेह से मिलाप करके यह वचन बोला ४१ हे गांधारी के पुत्र अपूर्वदर्शन राजा दुर्योधन जो तुम मुझको ऐसा मानतेहौ इस हेतु से तेरा जो अभीष्ट है उस सबको मैं करूंगा ४२ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ शत्रुसंतापी मैं जिस जिस कर्म के योग्यहूं और जहां जहां जैसा २ मैं करसक्ता हूं वहां २ अपने मन से सर्वात्मा से तेरेकर्म को करूंगा ४३ मैं वृद्धिका चाहने वाला होकर कर्णसे जो कुछ प्रियवार्त्ताकहूं उसवचनको आप और कर्णदोनों सब प्रकारसे सहनेके योग्यहैं ४४ कर्णबोला हे राजा मद्र जिसप्रकारसे ब्रह्माजी शिवजीके और श्रीकृष्णजी अर्ज्जुन के सारथीहुये उसीप्रकार तुमभी हमारी

वृद्धिमें प्रवृत्तहूजिये ४५ शल्यने कहा कि अपनी निन्दा और स्तुति और दूसरे की निन्दा और स्तुति यह चारप्रकार के कर्म अच्छेलोग नहीं करते हैं ४६ हे बुद्धिमान् फिरभी मैं तेरे निश्चयहोनेके लिये अपनी प्रशंसासे भरेहुये वचनको कहताहूं उसको तुम यथार्थही समझो हे प्रभु मैं मातलिके समान सावधानी व अश्वकी रथवानी अथवा आगे होनेवाले दोषके जानने और उसके दूरहोने के उपायके जानने से और दोषोंके दूर करने की सामर्थ्य रखनेसे इन्द्रके सारथी होनेके योग्यहूं ४७ । ४८ हे निष्पाप कर्ण इस हेतुसे युद्धमें अर्ज्जुनसे युद्धकरने वाले तुझ रथीके साथसारथी होकर तपसे पृथक् घोड़ोंको चलाऊंगा ४९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसारथ्यस्वीकारेषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

दुर्योधनबोला हे कर्ण यह राजा मद्र तेरा सारथी बनेगा यह तुम्हारा सारथी श्रीकृष्णजी से भी ऐसा अधिक है जिसप्रकार इन्द्रका सारथी मातलि १ जैसे कि मातलि हरित घोड़ोंके रथको चलाताहै उसी प्रकार यह शल्यभी तेरे रथके घोड़ोंको चलावेगा २ तुझ युद्धकर्त्ताके रथी होने और राजा मद्रके सारथी होने पर तुम्हाराही उत्तम रथ निश्चय करके पाण्डवोंको विजय करेगा ३ संजयबोले हे राजा इसके अनन्तर प्रातःकाल होजाने पर राजा दुर्योधनने उस वेगवान् राजा मद्रसे फिर कहा ४ कि हे राजा मद्र आप अब युद्धमें कर्णके उत्तम घोड़ों को थांभो तुम से रक्षित होकर यह कर्ण अर्जुन को अवश्य विजय करेगा ५ हे भरतवंशी यह वचन सुनकर शल्य ने रथपर नियत होकर कहा कि ऐसाही होगा तब प्रसन्नचित्त कर्ण अपने सारथी शल्य के पास आकर यह वचन बोला कि हे सूत आप मेरे रथको शीघ्र तैयार करो उसके पीछे सारथी शल्य ने कहा विजयकरो यह शब्द कहकर रथोंमें श्रेष्ठ गंधर्व नगर के समान ६ । ७ बुद्धि के अनुसार अलंकृत कल्याणरूप और विजयी रथको बड़ी शीघ्रता से तैयार करके वर्त्तमानकिया उस उत्तम रथको प्रथम तो महारथी कर्णने ब्रह्मज्ञानी अपने पुरोहित के द्वारा बुद्धि के अनुसार पूजके परिक्रमाकर विचारपूर्वक सूर्य का उपस्थान करके ८ । ९ सन्मुख वर्त्तमान हुये शल्यसेकहा कि आप सवार हूजिये इसकेपीछे वड़ा तेजस्वी शल्य कर्णके उस अत्यन्त उत्तम बड़े अजेय रथ

पर ऐसे चढ़ा १० जैसे कि पर्वतपर सिंह चढ़ताहै तदनन्तर कर्ण अपने उत्तम रथको शल्यके स्वाधीन देखकर ११ ऐसे सवार हुआ जैसे बिजली से भरेहुये बादलपर सूर्य्य सवार होताहै फिर वह सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशमान दोनों एक रथपर सवार होकर १२ ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि स्वर्ग के सूर्य्य और चन्द्रमा दोनों बादलों में शोभित होते हैं उससमय वह महात्मा बड़े तेजस्वी ऐसे दिखाई दिये १३ जैसे कि यज्ञमें ऋत्विज और सदस्यों से स्तुतिमान इन्द्र और अग्नि होते हैं फिर वहकर्ण रथपर नियत होगया जिसके घोड़ों को शल्यने पकड़रक्खाथा १४ बाणरूप किरणोंका रखनेवाला कर्ण घोर धनुष को टंकारता हुआ अपने उत्तम रथपर ऐसे नियत हुआ जिसप्रकार मण्डलयुक्त सूर्य्य नियत होताहै १५ वह पुरुषोत्तम ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि मन्दराचल पर्व्वतपर सूर्य्य नियत होताहै फिर शल्य उस महाबाहु रथपर चढ़े हुये तेजस्वी कर्णसे १६ यहवचन बोला कि हे वीर कर्ण युद्धमें द्रोणाचार्य्य और भीष्मजी से कठिन कर्म्म नहीं कियागया १७ तुम सब धनुषधारियों के समक्ष में उसको करो मेरे चित्तमें यह पूर्ण विश्वास था कि महारथी भीष्म और द्रोणाचार्य्य १८ अवश्य अर्जुन और भीमसेनको मारेंगे हे वीर उसमहायुद्धमें जो वीरताका कर्म्म उन दोनोंसे नहींहुआ १९ हे कर्ण तुम द्वितीय इन्द्रके समान होकर उसकर्मको करो तुम धर्मराजको बांधो अथवा अर्जुनको मारो २० हे कर्ण तुम भीमसेन समेत माद्रीकेपुत्र नकुल और सहदेवको भी मारो हे पुरुषोत्तम तुम यात्राकरो तुम्हारा कल्याण है और विजय होगी २१ वहां जाकर पाण्डवों की सबसेनाको भस्मकरो इसकेपीछे तूरी नामादि हजारों बाजे और भेरी बजाईं २२ उनका शब्द ऐसा सुन्दर विदितहुआ जैसे कि स्वर्ग में बादलों के शब्द होतेहैं फिर वह महारथी रथमें बैठाहुआ कर्ण उसके वचनको अंगीकार करके २३ उस युद्धमें अत्यन्त सावधान शल्य से बोला हे महाबाहु घोड़ों को तीक्ष्णकरो मैं अर्जुनको मारूंगा २४ और भीमसेन समेत दोनों नकुल सहदेव और राजा युधिष्ठिरको मारूंगा हे शल्य अब तुम अर्जुनको और मुझ हजारों बाण फेंकने वाले के भुजबलको देखो अब मैं बड़े प्रकाशित बाणों को २५ । २६ पांडवों के नाश और दुर्योधनकी विजयकेलिये फेंकताहूं शल्य बोला हे सूतकेपुत्र तुम इस रीतिसे पांडवोंका अपमान करते हो २७ वह पांडव सब अस्त्रशस्त्रों के ज्ञाता बड़े

धनुषधारी अतिबलीकभी मुख न मोड़नेवाले महाभाग अजेय और सत्यपराक्रमी हैं २८ जो साक्षात् इन्द्रकोभी भयके उत्पन्न करनेवाले हैं हेकर्ण जब वज्रके समान २९ गांडीव धनुषके शब्दको सुनोगे तब ऐसानही कहोगे अथवा जब कि भीमसेनके हाथसे ३० हाथियोंकी सेनाको खंडित दन्तहोकर मृतक देखोगे तब ऐसा नहीं कहोगे जब युद्ध में धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर वा नकुल सहदेवको देखोगे ३१ और जब तीक्ष्णबाणों से आकाशको आच्छादित करनेवाले बाणों के चलाने वाले हस्तलाघव करनेवाले अजेय शत्रुओं को अथवा अन्य २ बड़े २ प्रतापी राजाओं को देखोगे तब तुम ऐसे वचन नहीं कहोगे ३२ । ३३ संजय बोले कि इसके पीछे कर्ण राजा मद्रके कहेहुये वचनों को निन्दित करके उस वेगवान् राजा मद्रसे कहनेलगा कि अब चलो ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिशल्यसंवादेसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि प्रसन्नमूर्त्ति सब कौरव उस बड़े धनुषधारी युद्धाभिलाषी कर्ण को देखकर चारों ओरसे पुकारे १ इसके पीछे दुन्दुभी और नानाप्रकारके बाणों के घोड़ोंकी गर्जना समेत शब्दोंको करते आपके युद्धकरनेवाले २ युद्ध में मृत्युको लौटाकर निकले इसकेपीछे कर्ण समेत प्रसन्नचित्त युद्धकर्त्ताओं के चलनेपर ३ पृथ्वी कम्पायमान हुई और बड़ी दूरतक शब्दायमान होगई और सूर्य्यादि नवग्रह युद्ध के निमित्त निकलते हुये दृष्टपड़े ४ और उल्काओं का गिरना वा शुष्क विद्युत्पातन होना प्रारम्भहुआ और महाभयकारी वायु चली उस समय महाभयसूचक पशु और पक्षियों के समूह आपकी सेना को बहुधा दाहिने हुये और यात्रा करनेवाले कर्ण के घोड़े पृथ्वी परगिरे और अन्तरिक्षसे अस्थियोंकी महाभयकारी वर्षाहुई ५।७ अस्त्रशस्त्र अग्निरूपहुई ध्वजा कम्पायमानहुई और वाहनोंने अश्रुपात किया ८ ऐसे २ अनेक भय और अशुभसूचक उत्पात कौरवोंके नाश के लिये प्रकटहुये ९ परंतु दैवसे मोहितहुये उन सब राजाओंने इनभयकारी उत्पातोंको कुछ नहीं गिना और यात्रा करनेवाले कर्ण से कहने लगे कि विजय करो उस स्थानपर कौरवलोगों ने पाण्डवों को पराजय माना १० हेराजा इसके पीछे शत्रुओं के वीरोंका मारनेवाला रथियों में श्रेष्ठ यह

रथपर बैठाहुआ कर्ण बड़े पराक्रमी सूर्य और अग्निके समान प्रकाशमान भीष्म और द्रोणाचार्यको विचारकर ज्वलितरूप हुआ ११ अहंकार और क्रोधज्वलित रूप श्वासाओंको लेताहुआ कर्ण अर्जुन के अद्भुतकर्म को विचारकर शल्यको सन्मुख करके यहवचन बोला कि हे शल्य मैं शस्त्रधारी रथमें सवार होकर युद्धमें वज्रधारी इंद्रसे भी नहीं डरताहूँ भीष्महो जिनमें मुख्य गिनेजातेथे उनको पृथ्वी पर पड़ाहुआ देखकर मुख न मोड़ना यह जो प्रशंसा है वह मुझको त्यागकरती है १२ । १३ जब कि महाइन्द्र और विष्णुके रूपवाले निर्दोष अत्यन्त उत्तम रथ और घोड़ेवाले और हाथियों के संहार करनेवाले घायल न होने के समान भीष्म और द्रोणाचार्य्यजी शत्रुओं के हाथ से मारेगये इसहेतु से इस युद्ध में मुझ को भी भय नहीं है १४ बड़े अस्त्रज्ञ ब्राह्मणों में श्रेष्ठ गुरूजी ने सारथी वा हाथी और रथों समेत बड़े२ वीर पराक्रमी राजाओंको युद्धमें शत्रुओं के हाथसे मराहुआ देखकर किस कारणसे युद्ध में सब शत्रुओं को नहीं मारा १५ सो मैं इस प्रबल घोर युद्ध में द्रोणाचार्य्य को स्मरण करताहुआ सत्य २ कहताहूं हे कौरव तुम उसको समझो तुममें से मेरे सिवाय कौनसा दूसरा मनुष्य है जो उस मृत्यु के समान सन्मुख आनेवाले उग्ररूप अर्जुन से सन्मुख लड़े १६ द्रोणाचार्य्यजी में शिक्षाकरना वा बल धैर्य और महान् अस्त्रज्ञतापूर्व्वक नम्रताथी जो वह महात्मा मृत्युके वशीभूत हुये तौ मैं अब उसको आसन्नमृत्युही मानताहूं १७ मैं इसलोक में शोचताहुआ कर्म और दैवयोगसे सबको नाशमानही जानताहूं गुरूके गिराये जानेपर सूर्य्योदयके समय सन्देहसे रहित कौनमनुष्य अपने जीवनेकी आशा करसक्ताहै १८ निश्चय करके अस्त्र, बल,पराक्रम,कर्म, श्रेष्ठनीति और उत्तम शस्त्र मनुष्य के सुख के कर्म को नहीं करसक्ते हैं क्योंकि जब इस रीति से गुरूजी शत्रुओं के हाथसे मारे गये १९ तब कोई भी अस्त्रादिक उन असहिष्णु अग्नि वा सूर्य्य के समान तेजस्वी पराक्रम में इन्द्र और विष्णु के सदृश नीति में शुक्र और बृहस्पति के समान गुरूजीकी रक्षाकरने को समीपतामें नियत नहीं हुये २० स्त्री वा बालकोंको पीड़ित और रोदनकरने पर और दुर्य्योधन के उपायों के निष्फल होने पर मुझको कर्म करना उचित है यह मेरामतहै हे शल्य इसहेतुसे शत्रुओंकी उस सेनामें चलो २१ जहां सत्यसंकल्प राजा युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, वासुदेवजी, सात्यकी, सृंजय, नकुल

और सहदेव नियतहैं उनसे युद्धकरनेवाला मेरे सिवाय अन्य दूसरा कौनहै २२ इसहेतुसे हे राजा मद्र शीघ्र चलो मैं युद्धमें सन्मुख होकर उन पांचालों को वा सृंजियों समेत पाण्डवों को मारूँगा वा उनके हाथ से मरकर द्रोणाचार्य्य के समान यमराज के समीप जाऊँगा २३ हे शल्य यह बात नहीं है कि मैं भीष्मादि शूरों के समान न मरूँगा किंतु मरना अवश्य है परन्तु मुझसे मित्रके द्रोह करनेवाले नहीं सहेजाते इस हेतुसे उनसे पराक्रमपूर्व्वक लड़कर प्राणोंको त्यागकरके द्रोणाचार्य्य के पीछे जाऊंगा २४ जीवनके अन्त होनेपर मृत्युके चाहेहुये बुद्धिमान् और अबुद्धिमान् दोनों बच नहींसक्के हे बुद्धिमान् इसहेतु से मैं पाण्डवोंके सन्मुख जाऊंगा निश्चयकरके दैवके उल्लंघन करनेको कोई समर्थ नहीं है २५ राजा धृतराष्ट्र का पुत्र सदैवसे मेरा शुभचिन्तक और मित्ररहा है इस निमित्त मैं उसके अभीष्ट सिद्धहोनेके लिये प्रियभोग और कठिनतासे त्यागनेके योग्य अपने प्राणोंको भी त्यागकरूंगा२६ वह व्याघ्रचर्मसे मढ़ाहुआ रथ मुझको परशुरामजी ने दिया है जो शब्दरहित चक्र सुवर्णमय त्रिकोश और रजतमय त्रिवेणु और अत्यन्त उत्तम घोड़ोंसे संयुक्तहै २७ हे शल्य चित्रविचित्र धनुष ध्वजा गदा वा उग्ररूप शायक प्रकाशित खड्ग और उत्तम आयुधों समेत शब्दायमान उग्र उज्ज्वल शङ्खको देखो २८ मैं इसपताकाधारी वज्रके समान दृढ़ शब्दायमान श्वेत घोड़े और तूणीरों से शोभायमान रथोंमें श्रेष्ठ इसरथपर आरूढ़होकर युद्धमें अपने पराक्रमसे अर्ज्जुनको मारूंगा २९ जो युद्धभूमिमें सदैव सावधान सबका नाशकरनेवाला कालभी अर्जुनकी रक्षाकरे तो भी युद्धमें सन्मुखहोकर उसको अवश्य मारूंगा अथवा भीष्म के समक्ष यमराज के पास जाऊंगा ३० जो युद्धमें यमराज वरुण कुबेर इन्द्र अपने सबसमूहों समेत इकट्ठे होकर भी अर्जुनकी रक्षाकरें तबभी मैं उनसब समेत अर्जुनको विजय करूंगा बहुत बातोंके कहने से क्या प्रयोजनहै ३१ संजय बोले कि कर्णके वचनों को सुनकर पराक्रमी राजाशल्य उसका अपमान करके हँसा और निषेधकरके उत्तर दिया ३२ शल्यनेकहा हे कर्ण अपनी प्रशंसा मतकरो हे बड़े अहंकारी तुमबड़े बोल बोलतेहो बड़े आश्चर्य्यकी बातहै कि कहां तो नरोत्तम अर्जुन और कहां नराधम तुम ३३ अर्जुन के सिवाय कौनपुरुष विष्णुजी और इन्द्रसे रक्षित देवस्वरूप यदुभवनको विलोड़न करके श्रीकृष्णकी छोटीबहिन सुभद्राको हरणक

सक्ताथा ३४ और मृगवध कलहमें अर्थात् शूकरके शिकार करने में इन्द्रकेसमान पराक्रमवाले अर्जुन के सिवाय कौनसा पुरुष इसलोक में त्रिभुवन के स्वामी ईश्वरोंके भी ईश्वर शिवजीको युद्ध में बुलासक्ता है ३५ अर्ज्जुन ने अग्नि की गौरवतासे असुर, सुर, महाउरग, मनुष्य, गरुड़, पिशाच, यक्ष और राक्षसोंको अपने बाणों से विजयकिया और अग्निको यथेच्छ भोजनरूप हव्यदिया ३६ तुझको स्मरणहै कि जब युद्धमें कौरवोंसमेत तुम सबको पराजय करके गन्धर्वोंने इसधृतराष्ट्रकेपुत्र दुर्य्योधनको बांधलियाथा और तुमलोग भाग आयेथे उससमय इसीअकेले अर्ज्जुन ने सूर्य्यके समान प्रचंड शायकों से गन्धर्वोंको पराजय करके उसको छुटायाथा ३७। ३८ फिर गोहरणमें सेना वा सवारीसमेत चढ़ाई करनेवाले गुरू, गुरुपुत्र और भीष्मादिक तुम सब उस पुरुषोत्तमके हाथ से विजय कियेगयेथे उससमय तुमने क्यों नहीं अर्ज्जुनको विजयकिया ३९ संजय बोले कि इसरीतिसे शत्रुओंकी प्रशंसा बड़े साहसी शल्यके मुखसे होने पर कौरवी सेनाका सेनापति कर्ण अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर राजामद्रसे बोला ४० ऐसाहीहोगा ऐसाहीहोगा क्या अधिक वर्णनकरतेहो अबतो निश्चयकरके मेरा उसका युद्ध वर्त्तमानहै जो वह इसयुद्धमें मुझको विजय करलेगा तब तेरा यह कहना ठीक२ होगा ४१।४२ राजामद्रनेकहा ऐसाही होय यह कहकर उत्तर नहीं दिया तब युद्धकी इच्छाकरके कर्णने शल्यसेकहा कि हे शल्य सावधान होजाओ ४३ वह श्वेतघोड़ोंसेयुक्त शल्यको सारथी रखनेवाला युद्धमें शत्रुओंको मारताहुआ उन वीरशत्रुओं के सन्मुख ऐसे गया जैसे कि अन्धकारको दूरकरता हुआ सूर्य्य जाताहै उसके पीछे व्याघ्र चर्म से मढ़ेहुये श्वेतघोड़ों के रथके द्वारा वहां पहुंचकर सबपांडवी सेनाको देखकर बड़ीशीघ्रतासे अर्जुनकोपूछा ४४।४५॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसंवादेऽष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८॥

उनतालीसवां अध्याय॥

इसके अनन्तर यात्रा करने में आपकी सेना को प्रसन्न करतेहुये कर्ण ने युद्ध में प्रत्येक को देखकर पाण्डवों से कहा १ कि इस समय जो पुरुष महात्मा अर्ज्जुन को मुझे दिखावे उसको मुंह मांगा धन दूं २ और जो पुरुष अर्ज्जुन को मुझसे थोड़ा जाने उसको मैं रत्नों का भराहुआ एक शकट दूं ३

और जो अर्ज्जुन का बतलानेवाला पुरुष उसको भी थोड़ा माने तो मैं उस को भोजन और कांस्य दोहिनियों समेत सौ गौवें दूं ४ अर्ज्जुन के दिखलाने पर सौ उत्तम गांव दूं और खच्चरों समेत रथ भी दूं ५ अथवा इन सबको भी थोड़ाजाने तो मैं उसको कृष्ण केशों से शोभित स्त्रियोंको दूंगा जो अर्ज्जुन का दिखलानेवाला इसको भी साधारण जाने ६ तो उसको सुनहरी हाथी के समान छः बैलों से युक्त रथदूं और इसीप्रकार उसे ऐसी वस्त्रालंकारयुक्त स्त्रियों का एक सैकड़ादूंगा ७ जोकि निष्ककी माला धारणकिये गीतवाद्यमें कुशल श्यामांगी हों अथवा जो अर्ज्जुनका दिखलानेवाला उसको भी कमजाने उस को सौ हाथी सौ गांव सौ रथ और दशहजार सुवर्ण से युक्त ८ । ९ सुशिक्षित हृष्ट पुष्ट रथके लेचलने में समर्थ होंय ऐसे घोड़े दूंगा और सुवर्ण शृंगों से युक्त सवत्सा चारसौ गौवेंदूंगा १० जो अर्ज्जुन का दिखलानेवाला पुरुष इसको भी थोड़ा माने ११ उसके लिये दूसरावरदेकर ऐसे पांचसौ घोड़ेदूं जोकि श्वेतवर्ण और सुवर्ण से मंडित स्वच्छ मणियों के भूषणों से अलंकृतहों १२ इसके विशेष में अठारह अच्छे शिक्षित अन्य घोड़ोंकोभी दूंगा और अति उज्ज्वल सुवर्णसे अलंकृत कांबोजी भी घोड़ोंसे युक्तरथदूं १३ जो अर्जुनका दिखलानेवाला पुरुष उसको भी न्यूनसमझै १४ तो दूसरा दानदूं अर्थात् नानाप्रकार के स्वर्ण भूषणों से और मालाओं से अलंकृत पश्चिमीय कच्छदेशों में उत्पन्न और माल्यवान् हाथीवानों से शिक्षित सौहाथीदूं और जो इसको भी थोड़ामाने १५।१६ उसको बहुतवृद्धियुक्त धनसे पूर्ण वन जंगलवाले ऐसेचौदह गांवदूं जोनिर्भय औरअच्छे राजाओं के भोगनेके योग्यहोंय १७ इसीप्रकार निष्ककी मालाधारण करनेवाली मगधदेशी दासियों का एक सैकड़ादूं और जो अर्जुन का दिखलानेवाला पुरुष इसको भी थोड़ामाने तो जोवह मांगेवहदूं अर्थात् बेटी स्त्रीको आदिले जो मेरा प्रियधन होय उसको भी दूंगा इसके विशेष जो जो मेरा धनहै और वह चाहता है वह सब उसको देसक्ता हूं जो अर्ज्जुन को मुझे बतावे व दिखावै १८ । २० श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनको एक समयमेंही मारकर उनका सबधन उस को दूं जो अर्ज्जुन और श्रीकृष्णजी को मुझे दिखावे २१ युद्धमें ऐसे वचनों को कहतेहुये कर्ण ने समुद्रसे उत्पन्नहुये अपने शङ्खको बजाया २२ हे महाराज कर्ण के इन वचनों को सुनकर दुर्य्योधन अपने साथियों समेत अत्यन्त प्रसन्न

हुआ २३ इसके पीछे हे पुरुषोत्तम दुन्दुभी आदि मृदंगों के सब प्रकारके शब्द वा बाजों समेत सिंहनाद और हाथियों के शब्द २४ सेनाओंके मध्यमें प्रकट हुये इसी प्रकार अत्यन्त प्रसन्न चित्त शूरवीरों के अनेक शब्दहुये २५ तब तो सेनाके प्रसन्न होनेपर राजामद्र हँसकर उस शत्रुओं के विजय करनेवाले और अपनी प्रशंसा करतेहुये जानेवाले महारथी कर्णसे यह वचन बोला २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णावलेपेनवत्रिंशोऽध्यायः ३९ ॥

चालीसवां अध्याय ॥

शल्यबोले हे सूतपुत्र दान करनेसे वन्दहो तू सुवर्णमय हाथी के समान छः बैलोंसे संयुक्त रथको पुरुषके अर्थ अर्थात् ब्रह्मके अर्पणकरो तब तुम अर्जुनको देखोगे १ हे राधाके बेटे तुम यहां बालबुद्धिसे अज्ञानों के समान धनको देतेहो अब तुम विना उपायकेही अर्जुनको देखोगे २ तुम अज्ञानियों के समान जो निरर्थक धनको देतेहो सो अपात्रके दानदेने में जो दोषहैं उनकोभी अपने मोहसे नहीं जानतेहो ३ जो तुम बहुतसे धनको देतेहो उसधनकेद्वारा तुमको उचितहै कि यज्ञोंको करो ४ जो तुम अपनी अज्ञानतासे श्रीकृष्ण और अर्जुनको मारना चाहतेहो वह निरर्थकहै शृगालोंसे सिंहोंका मारना हमने कभी और कहींभी नहीं सुनाहै ५ तू अप्रियताको और अप्राप्तको चाहताहै तेरे शुभचिंतकमित्रहैं जो कि तुझको अग्निमें गिरतेहुये नहीं रोकतेहैं ६ तू शुभाशुभ कर्मकोभी नहींजानताहै और निस्सन्देह तू कालके गालमें फँसताहै जीवनका चाहनेवाला कौन पुरुष सर्वथा निष्प्रयोजन और सुनने के अयोग्य वार्त्ताओंको करे ७ जैसे कि गलेमें पत्थरकी शिलाको बांधकर समुद्रमें पैरना चाहै अथवा पर्व्वत के शिखरसे गिरनाहोय वैसेही प्रकारका तेरा ईप्सितकर्महै ८ जो अपना कल्याण चाहतेहो तो तुम सब योद्धाओंसे युक्त सजीहुई अपनी सेना समेत अर्जुनसे युद्धकरो ९ मैं दुर्योधनकी वृद्धिकेलिये तुझसे कहताहूं जो तू जीवनकी इच्छा रखताहै तो मेरे बचनोंको शत्रुता और ईर्षासंयुक्त न जान १० कर्ण बोला मैं अपनेही भुजबल के आश्रित होकर युद्धमें अर्जुनको चाहताहूं हे उत्तम मित्र तुम शत्रुरूप होकर मुझको भयभीत करातेहो ११ अब मुझको मेरे इस विचारसे कोई भी नहीं हटा सक्ता इन्द्रभी जो वज्र दिखाकर मुझको युद्धसे निवृत्त कियाचाहै तो नहीं निवृत्त

होसक्ता फिर मनुष्यकी क्या सामर्थ है १२ संजय बोले कि फिर कर्ण को क्रोध युक्त करनेकी इच्छासे मद्र देशके स्वामी शल्यने कर्ण के बोलने के पीछे इस उत्तररूप वचनको कहा १३ कि जब अर्जुनके वेगसे युक्त प्रत्यंचासे प्रेरित तीव्र हाथोंसे छोड़ेहुये कंकपक्षसे जटित तीक्ष्ण नोकवाले बाण तेरे सन्मुख आवेंगे तब तू अर्जुनके विषयमें ऐसे वचन कहनेको दुखी होगा १४ जब सेनाको संतप्त करता हुआ तुझको तीक्ष्णनोकवाले बाणों से मर्दन करना चाहनेवाला अर्जुन अपने दिव्य धनुषको लेकर तेरे सन्मुख आवेगा तब हे सूतपुत्र तू महादुखी होगा १५ जैसे कि माताकी गोदी में कोई सोताहुआ बालक चन्द्रमाके पकड़नेकी इच्छा करता है उसी प्रकार अब तुम इस रथपर सवार होकर प्रकाशमान अर्जुनको अपने मोहसे विजय किया चाहतेहो १६ हे कर्ण अब तुम अत्यन्त तीक्ष्णधार वाले त्रिशूल से चिपटकर अपने अंगोंको घसीटतेहो जो कि अत्यन्त तीक्ष्ण धारवाले त्रिशूल कर्मी अर्जुन के साथमें लड़ना चाहतेहो १७ जैसे कि अज्ञान बालक वा वेगवान नीचमृग क्रोधयुक्त बड़े केसरी सिंहको युद्धके निमित्त बुलावे हे सूत पुत्र इसीप्रकार से तू भी अर्जुनको बुलाता है १८ हे सूतके पुत्र तू राज-कुमार को मतबुलावे जैसे कि मान्ससे तृप्तहुआ शृगाल वनमें केसरी सिंहको नहीं बुलासक्ता उसीप्रकार तुम अर्जुन को प्राप्त होकर अपना नाशकरना चाहतेहो सो मतकरो १९ जैसे कि शृगाल ईशाके समान दांत रखनेवाले मुख और गंडस्थल से मद झाड़नेवाले बड़े हाथी को युद्धमें बुलावे हे कर्ण उसी प्रकार तुम पांडव अर्जुनको बुलातेहो २० तुम अपनी अज्ञानता और बल बुद्धिसे बिलमें बैठेहुये क्रोधयुक्त महाविषधर कालेसर्पको लकड़ीसे मारतेहो जो अर्जुनसे युद्धकरना चाहतेहो २१ हे कर्ण अब शृगाल रूप अज्ञानहोकर तुम केसरी सिंहरूप क्रोधयुक्त नरोत्तम पांडव अर्जुनको उल्लंघन करके गर्जते हो २२ और सर्प के समान तुम अपनी मृत्यु के लिये सुन्दर पक्षवाले अद्भुत प-राक्रमी गरुड़के समान वेगवान महाबली पांडव अर्जुन को बुलातेहो २३ सब जलोंके स्वामीभयानक मत्स्यादिक जीवों से व्याप्त चन्द्रोदय में प्रसन्नरूप वृद्धिपानेवाले मूर्तिमान समुद्रको भुजाओंसे तरनाचाहतेहो २४ हे कर्ण बछड़े के समान तुम दुन्दुभीरूप क्षुद्रघंटिकाओं के शब्दरखनेवाले होकर तीक्ष्ण शृंगसे घात करनेवाले बड़े बैलके समान पांडवअर्जुन को युद्धमें बुलातेहो २५ तुम

मेंढक के समान होकर लोकमें घोर जल बरसानेवाले नररूप बादल के समान अर्जुन के सन्मुख ऐसे गर्जते हो २६ जैसे कि अपने घरमें नियत कुत्ता बन में वर्त्तमान व्याघ्रको अपने स्थानसे भोंकताहै उसीप्रकार तुमभी कुत्ते के समान नररूपव्याघ्र अर्जुनकी ओर को भोंकतेहो २७ हेकर्ण खरगोशों से युक्त शृगाल भी बनमें निवास करताहुआ अपनेको उस समयतक सिंहरूप मानताहै जबतक कि सिंहको नहीं देखताहै २८ हे राधाकेपुत्र इसीप्रकार शत्रुओं के बिजय करने-वाले अर्जुनको न देखके तुमभी अपनेको सिंहरूप मानरहेहो २९ जबतक एकरथ पर सूर्य्य और चंद्रमाके समान नियत श्रीकृष्ण और अर्जुन को नहीं देखतेहो तबतक तुम अपनी आत्माको व्याघ्र मानतेहो ३० हे कर्ण जबतक कि तुम युद्धमें गांडीव धनुषके शब्दको नहीं सुनतेहो तभीतक तुम इन अस्तव्यस्त बचनोंको मुखसे बोलरहेहो रथ और धनुषों से दशोंदिशाओं को शब्दायमान करनेवाले और शार्दूलके समान गर्जनेवाले अर्ज्जुनको देखकर तू शृंगालरूप होजायगा। ३१ । ३२ तुम सदैव शृगालरूप हो और अर्ज्जुन सदैव सिंहरूप है हे अज्ञान इस कारण बीरलोगोंसे शत्रुता करनेमें तू शृगालके समान दिखाई देताहै ३३ जैसे कि चूहाबिलार और महाबन में कुत्ता और व्याघ्रहोय और जैसे शृगाल और सिंह होंय और जिसप्रकार खर्गोश और हाथी होंय ३४ अथवा मिथ्या और सत्य वा विष और अमृतहोंय उसीप्रकार तुम और अर्ज्जुन भी अपने २ कर्म से विख्यातहो ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसंवादेचत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि तेजस्वी शल्य से निन्दा कियाहुआ कर्ण अत्यन्त क्रोधयुक्तहोकर बचन रूपभालों को सहन करताहुआ बोला १ कि हे शल्य गुणवानों के गुणों को गुणवानही जानताहै गुणहीन मनुष्य नहीं जानताहै तुमगुणोंसे रहितहो इसीसे गुण और अवगुणों को क्याजानसक्ते हो २ हे शल्य मैं महात्मा अर्जुनके बड़े अस्त्रों को वा क्रोध बल पराक्रम धनुष औ बाणोंको अच्छे प्रकार से जानताहूं ३ और राजाओंमें वा यादवोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णजीकी भी महानता को जैसा कि मैं जानताहूं वैसा तुम नहीं जानतेहो ४ मैं अपने और पाण्डवों

के पराक्रमको अच्छेप्रकार से जानताहुआ युद्धमें उस गांडीव धनुषधारी को बुलाताहूं ५ हे शल्य यह सुन्दर पुंखवाला रुधिर पीनेवाला तरकस में अकेला ही रहनेवाला स्वच्छ अलंकृत ६ चन्दन से लिप्त वहुत वर्षों से पूजित सर्परूप विषधर उग्रमनुष्य घोड़े और हाथियों के समूहोंका मारनेवाला ७ घोररुद्ररूप कवच समेत अस्थियों का चूर्णकर्त्ता जिसके द्वारा मैं क्रोधयुक्तहोकर मेरुपर्व्वत सरीके वड़े २ पर्व्वतों को भी चीर डालताहूं ८ मैं अर्जुन और देवकीनन्दन श्रीकृष्ण के सिवाय उस वाणको कभी दूसरे पर नहीं चलाऊंगा इसहेतु से मैं सत्य २ वचन कहताहूं ९ कि मैं अत्यन्त क्रोधयुक्तहोकर उसबाणसे अर्जुन और वासुदेवजीसे लडूंगा यह कर्म मेरेही योग्यहै १० सव वृष्णवंशी वीरोंकी लक्ष्मी श्रीकृष्णजी में नियतहै और सव पांडवोंकी विजय अर्जुनमें नियतहै ११ इससे अव दोनों को पाकर कौन लौटसक्ताहै वह दोनों पुरुषोत्तम भागेहुये हैं वा रथ पर नियत हैं १२ मुझ अकेले के सन्मुखहोनेपर हे शल्य मेरे युद्धकी शोभा को देखना वुआ और मामा के बेटे अजेय दोनों भाइयों को १३ सूतमें पोही हुई दोमणियों के सदृश मेरे हाथसे मृतकही देखोगे अर्जुन के पास गांडीवधनुषहै श्रीकृष्णके पास सुदर्शनचक्रहै और गरुड़ वा हनूमानजी के रूप रखनेवाली दोनों ध्वजाहैं १४ हे शल्य भयभीतोंको भयके उत्पन्न करनेवाले और मेरी प्रसन्नताके वढ़ानेवाले वह दोनों हैं दुष्टप्रकृति अज्ञानी महायुद्धमें अनभिज्ञ भयसे विदीर्ण चित्त तुमभयभीतहोकर वहुत से भयकारी वचनोंको कहतेहो हे पापीदेश में उत्पन्न होनेवाले निर्बुद्धी नीच क्षत्रियोंके कुलको कलंकलगानेवाले अवयुद्ध में उनदोनों को मारकर तुझको भी वांधवों समेत मारूंगा १५।१७ तू मित्रहोकर शत्रुके समान शत्रुओंकी प्रशंसाकरताहै मुझको श्रीकृष्ण और अर्जुनसे क्या डराताहै कैतो वह दोनों मुझकोही मारेंगे वा मैंही उन दोनों को मारूंगा १८ मैं अपने पराक्रमको जानताहुआ श्रीकृष्ण और अर्जुनसे नहीं डरताहूं मैं अकेलाही हज़ारों वासुदेव और अर्जुनों को मारसक्ताहूं १९ हे दुर्देशमें उत्पन्नहोनेवाले मौनहो दुष्ट अन्तःकरणवाले मद्र देशियों के विषयमें क्रीड़ाके निमित्त इकट्ठे होनेवाले स्त्री वालक वृद्ध मनुष्य वहुधा जिन कथाओं को गान करके पढ़ा करते हैं हे शल्य उन गाथाओंको मुझसे सुनो २०।२१ और पूर्व समय में इन्हीं कथाओंको राजाओं के समक्षमें ब्राह्मणोंनेभी जिसप्रकारसे वर्णन करी हैं

हे अज्ञानी तुम उनको एकाग्रचित्तसे सुनकर क्षमाकरना वा उत्तरदेना २२ अर्थात् मद्रदेशी सदैव मित्रसे शत्रुता करनेवाले हैं जो हमसे शत्रुताकरता है हम उसको मद्रदेशीही जानते हैं मद्रदेशीमें मेल मिलाप नहींहोताहै और आपसमें क्षुद्रवचन बोलाकरतेहैं २३ हमने सुनाहै कि मद्रदेशीयलोग सदैव दुष्टात्मा मिथ्यावादी और कुटिलहोते हैं २४ पिता, माता, पुत्र, सास, ससुर, मामा, जामात्र, लड़की, भाई, पोते, बांधव और समान अवस्थावाले, अभ्यागत, और अन्यदासी दासआदि सब मिलेहुये हैं और बुद्धिमान होकरभी अज्ञानियों के समान अपनी इच्छासे पुरुषोंसे विषय भोगकरनेवालेहैं २५।२६ इसीप्रकार जिन नीच अचेतता में युक्त मत्स्यखादकोंके घरमें गौके मांससमेत मद्यकोपीकर पुकारते और हँसतेहैं २७ और अयोग्य गीतोंकोभी गातेहुये इच्छानुसार कर्मों को करते हैं और परस्परमें भी इच्छानुसार वार्त्तालाप करते हैं उनमें धर्म कैसे होसक्ता है २८ जो कि मद्रदेशी अहंकारी होकर दुष्टकर्मी विख्यातहैं इसहेतुसे मद्रदेशियोंसे मित्रता और शत्रुता दोनों न करे २९ मद्रदेशियों में स्नेह और प्रीति नहींहोती और वह सदैव अपवित्रहैं मद्रदेशी और गान्धार देशियोंमें पवित्रता नष्टहोगई है ३० राजा जिसमें याचकहै उस यज्ञमें जो दियाजाता है वह सब जैसे नष्टताको पाताहै और जिसप्रकार शूरोंका संस्कार करनेवाला तिरस्कारको पाताहै और जैसे इसलोकमें ब्राह्मणों के शत्रु सदैव नाशहोते हैं उसीप्रकार मद्रदेशियों से प्रीतिकरके मनुष्य नष्टताको पाता है ३१।३२ मद्रदेशी में मेलमिलाप नहीं है हे विषैले विच्छू मैंने तेरे विषको अथर्वणवेदके मन्त्रोंसे शांतकियाहै ३३ इसीप्रकार ज्ञानीलोग बिच्छूके काटेहुये विषके वेगसे घायल मनुष्यकी औषधीकरते हैं वहभी सत्य २ देखनेमें आते हैं ३४ हे बुद्धिमान् कैतो मौन होजाओ नहीं तो ऐसे २ वचनों को सुनोगे जिन वचनों को मद्यसे मदोन्मत्त स्त्रियां गाकर नाचती हैं ३५ उन स्वेच्छाचारी पतिवंचक भोगों में अनियम स्त्रियोंका पुत्र मद्रदेशी किसरीति से धर्म कहनेको योग्य होसक्ताहै ३६ जो स्त्रियां कि ऊंट और गधोंसमान खड़ीखड़ी पेशाब कियाकरती हैं उन बेधर्म और निर्लज्ज ३७ स्त्रियोंका पुत्रहोकर तू धर्म कहना चाहताहै जो स्त्रियां कांजी मांगनेपर कीचों को खींचती हैं ३८ और न देनेकी इच्छासे इन भयकारी असह्य वचनोंको कहती हैं कि कोई हमसे कांजी मतमांगो वह हमारी बड़ी प्रियहै ३९ बेटीको दें पतिको दें परन्तु कांजीको न

देंगे कन्या और वृद्ध स्त्री निर्लज्जहैं और कम्बलोंकी धारण करनेवाली होकर बहुधा दुराचारिणी और भ्रष्टहैं इसरीति से अन्यलोगभी शिरकी चोटीसे पैरके नखोंतक अयोग्य और अनुचित बातें मद्रदेशियोंके विषयमें कहाकरते हैं और यह भी हमने सुना है कि ४० । ४१ । ४२ पापिष्ठ देशमें उत्पन्न होनेवाले म्लेच्छ रूप धर्म्मों से रहित मद्र, सिन्ध, और सौवेर देशीलोग कैसे धर्म्मों को जानेंगे क्षत्रियोंका यह श्रेष्ठधर्म्म है ४३ कि युद्धभूमि में मृतकहोकर अथवा सत्पुरुषों से स्तूयमानहोकर पृथ्वीपर शयनकरें इसहेतुसे जो मैं युद्धभूमिमें जीवनको त्याग करूं ४४ तो मुझ स्वर्गाभिलाषी का यह प्रथमकल्प है ऐसा मैं बुद्धिमान दुर्योधनका प्यारामित्रहूं ४५ उसके लियेही मेरेप्राण और धनहैं हे पापी देशमें पैदा होनेवाले विदित होताहै कि तूभी पांडवोंसे भगायाहुआ है तुम शत्रुके समान जैसे कर्महमारे साथमें करतेहो वह सब तुम इच्छापूर्वक करो यह निश्चय समझो कि मैं तुझ सरीके सैकड़ों मनुष्योंसे भी युद्धमें अजेयहूं जैसे कि धर्मज्ञ मनुष्य नास्तिक के बचनों से धूपकेमारे सारंग पक्षी के समान विलापकरके शरीरको सुखाताहै ४६ । ४७ । ४८ उसीप्रकार क्षत्रीके व्यवहारमें नियतहोकर मैं डरानेके योग्य नहींहूं पूर्व्वसमयमें मेरेगुरू श्रीपरशुरामजीने युद्धमें मुख न मोड़नेवाले और शरीर त्यागनेवाले नरोत्तमलोगोंकी जो गति कही है उसको मैं स्मरण करता हूं और धृतराष्ट्र के पुत्रों की रक्षा और शत्रुओं के नाश करने में प्रवृत्त हूं ४९ । ५० मुझको उत्तम व्यवहारमें नियत पुरूरवावंशी जानों हे राजामद्र मैं तीनोंलोकों में ऐसा किसी जीवधारीको नहीं देखताहूं ५१ जो मुझको इस विचारसे हटावे यह मेरा सिद्धान्त है हे बुद्धिमान ऐसा जानकर मौनहो भयभीत होकर क्यों बहुत बकता है ५२ हे मद्रदेशियों में नीच मैं तुझको मारकर कच्चे मान्स भक्षियों को नहींदूंगा हे शल्य तुम मित्र और मित्रके पिता धृतराष्ट्र इन दोनों विचारों से और कठिन वचनोंकी सहनशीलता से अबतक जीवते बचेहो हे राजा मद्र जो तू फिर ऐसे वचनों को कहैगा ५३ । ५४ तो तेरे शिरको अपनी वज्रकी समान गदासे काटकर पृथ्वीपर गिराऊंगा हे दुष्टदेश में उत्पन्न होनेवाले अब यहां इस बातके देखने और सुननेवाले हैं ५५ कि श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन कर्णको मारें अथवा कर्ण उन दोनोंको मारे हे राजा इसप्रकार कहकर ५६ फिर कर्ण राजामद्रसे बोला कि निर्भय होकर तुम रक्षाकरो रक्षाकरो ५७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिशल्यकर्णपरस्परनिन्दाकरणेएकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि हे श्रेष्ठ फिर शल्य युद्ध के अभिलाषी अधिरथी कर्ण के वचनों को सुनकर उससे यह विश्वासरूप वचन बोला १ कि मैं अपने धर्म्म में नियत यज्ञकर्त्ता युद्ध में मुख न मोड़नेवाले मूर्द्धाभिषेक राजाओं के वंश में उत्पन्नहुआहूं २ हे कर्ण जैसे मदिरा से उन्मत्त मनुष्य होताहै वैसाही तू मुझको दिखाईदेताहै इससे अब मैं उसीप्रकारसे शुभचिंतकतासे तुझमतवालेकी चिकित्सा करताहूं ३ हे नीच कुलकलंकी कर्ण इस मेरी कहीहुई काकोपमा को समझो उसको सुनकर अपनी इच्छाके अनुसार कर्म करना ४ हे कर्ण मैं अपने विषय में उस दोषको स्मरण नहीं करताहूं अर्थात् नहीं जानताहूं जिसके हेतुसे हे महाबाहु तुम मुझ निरपराधीको मारना चाहतेहो ५ मुख्यकर राजाका अभ्युदय चाहनेवाले रथपर सवार होकर मैं तेरे हानिलाभ के कहने के योग्यहूं मेरे इन वचनों को समझो ६ कि टेढ़ा सीधा मार्ग रथके सवारों की बल निर्बलता रथकी सवारी में घोड़ोंका क्लेश और थकावट ७ शस्त्रोंकाज्ञान पशु पक्षियों के शब्द भार की न्यूनाधिकता बाणोंके भालोंकी चिकित्सा ८ अस्त्रोंका योग युद्ध और शकुन यह सब बातें मुझरथके रक्षकसे तुमको जानने के योग्य हैं ९ हे कर्ण इसहेतु से यह दृष्टान्त तुझसे कहताहूं ठेठ समुद्रके किनारेपर एक बड़ा धनी वैश्य अनाज रखनेवाला था १० वह वैश्य यज्ञोंका करनेवाला महादानी शांतचित्त होकर पवित्रतापूर्व्वक अपनेकर्म में नियत बहुतसेपुत्र पौत्रादि से युक्त प्रीतिमान और जीवमात्रोंपर दया करनेवाला था ११ वह धर्म्मपर चलनेवाले राजा के देश में निर्भयतासे निवासकरताथा उसके कुमार बालकोंकी जूठनका खानेवाला एक उच्छिष्टभूतनाम काक था उसको वैश्य के कुमार बालक सदैव मान्स उष्ण अन्न दही दूध खीर मधु घृत यह सब वस्तु खिलायाकरते थे उस बालकों के जूठन खानेवाले अहङ्कारी काक ने अपने बराबरवाले वा अपने से बड़ोंकी भी निन्दाकरी इसके पीछे किसीसमय दैवयोगसे समुद्रके तटपर चलने में गरुड़के समान मन के समान बड़े शीघ्रगामी प्रसन्नचित्त चक्रांग आदिक हंसआये तब वह वैश्यों के बालक उन हंसोंको देखकर अपने जूठन खानेवालेको ऐसे बोले१२।१६ हे आकाशचारी काक आप तो सब पक्षियों से उत्तमहो यह प्रशंसा सुनकर उस निर्बुद्धी

काकने अपने अहङ्कार और अज्ञानतासे उस वचनको सत्यहीजाना और उन दूरजानेवाले बहुत हंसों के पास जाकर उस दुर्बुद्धी ने कहा कि तुमलोगों में से जो श्रेष्ठहोय वह मेरे साथ उड़े यह सुनकर वह सब आयेहुये हंस हँसे १७।२० और उन आकाशचारी मनगामी और पक्षियों में श्रेष्ठ हंसोंमें से चक्रांग नाम हंसने उसअहंकारी काकसे कहा २१ कि हम हंसोंकी गति मनके समानहै और दूर जानेके कारण से हम सब पक्षियों में शिरोमणि गिनेजाते हैं हे निर्बुद्धी तू काकहोकर अपनेसाथ हमको उड़नेकेलिये कैसे बुलाताहै २२।२३ भला कहतो सही कि तू हमारे साथ किस प्रकारसे उड़ेगा यह सुनकर उस निकृष्ट जाति और अपनी प्रशंसा आप करनेवाले काकने हंसोंके कहेहुये वाक्योंको वारंवार निंदा करके उत्तर दिया २४ कि मैं निस्सन्देह सौ प्रकारकी गति से उड़सक्ताहूं और प्रत्येकगति शतयोजन लम्बी चित्र विचित्र और जुदे २ प्रकार की है २५ उन गतियों के यह नामहैं उड्डीन अर्थात् ऊपरको उड़ना अवड्डीन, नीचेको चलना प्रड्डीन, सबओर को जाना बिडीन, केवल उड़ना निड्डीन, धीरेचलना संडीन, चित्तरोचकगति तिरछीडीन गतिभी चारप्रकार कीहै २६ विडीन, वड़ी विस्तृत परिडीन, सबओरसे चलना पराडीन पीछेको उड़ना सुडीन, स्वर्गमार्गमें चलना अभिडीन, सन्मुख चलना महाडीन, पवित्र और ऊंचीगति खडीन, आकाश कोजाना परिडीन, चारोंओरको चलना अवडीन, चढ़ना प्रडीन, अद्भुतगति संडीन, डीन, डीनक, ऊपरकी ओरकीगतें विडीन, उड्डीन, संडीन, पुनडीन, बिडीन२७।२८ संपात, समुदीष, व्यतरिक्त, गतागत, प्रतिगत, वऱ्ही निकुलीन इत्यादि अनेक प्रकारकी गतिहैं २९ उन गतियों को मैं तुम्हारे सन्मुख करताहूं इसीसेमेरे पराक्रमको देखोगे मैं उन गतियों में से एक गतिके द्वारा आकाश में उड़ताहूं हे हंसलोगो आप जिस गतिसे कहो उसीगतिसे उड़ूं ३०।३१ हे पक्षियो निश्चयकरके इस निराश्रय आकाशमें इनगतियों से उड़सक्तेहो तो तुमभी अच्छे प्रकार से निश्चय करके मेरे साथउड़ो काकके इसबचनको सुनकर ३२ एक हंस ने हँसकर काकको उत्तर दियाहै हे कर्ण उस बचनको मुझ से समझो अर्थात हंसने कहा हे काक तुम निश्चयकरके सौ प्रकारकी गतिको उड़ोगे ३३ और मैं उसी गतिसे उड़ूंगा जिस गतिसे सब पक्षी उड़तेहैं क्योंकि मैं इस एक गति के सिवाय दूसरी गतिको नहीं जानताहूं ३४ हेताम्राक्ष अबतुमभी चाहै जिस गति

से उड़ो इसके पीछे जो वहां और काक इकट्ठे होगयेथे वह सब हँसे ३५ और कहनेलगे कि हंस एकही गतिवालाहोकर सौ गति जाननेवाले को कैसे परास्त करसक्ताहै ३६ इसके अनन्तर हंस और काक ईर्षा करके उड़े अर्थात् एक गति उड़नेवाला हंस सौ गतिवाले काक के साथ उड़ा ३७ काक उड़तेही वृक्षों पर बैठ२ अहंकारमें भराहुआ इधरउधर फिरता बोलनेलगा ३८ उसकी ऐसी गति को देखकर सब काक प्रसन्नहुये और सब हंस उसकी अभाग्यता देखकर हँसनेलगे ३९ इसरीतिसे एकमहूर्त्ततक उड़करहंसको पुकार२कर कहताथा कि ४०।४१ मेरी इनकलाओं को देखकर आपभी अपनी कलाओंको प्रकटकीजिये ४२ हंस उसके बचनको सुन बहुतसा हँसकर पश्चिम समुद्रकी ओरको चला ४३।४४ और उसके संगकाकभी अपनेपरों को चपल करताहुआ चला समुद्र के ऊपर चलते २ कुछदूरपर काक थकित होगया ४५ और कोई वृक्ष टापू न देखके धैर्यतासे रहित होकर उड़नेलगा ४६ जब उसके सब पक्ष शिथिलहोगये तब समुद्रमें गिर पड़ा४७ उसको गिराहुआ देखके वह हंसवहां स्थिरहोकर हँसकर कहनेलगा ४८ हे काक आप अपनाव्रत और स्नान शीघ्रकरके चलो क्योंकि अभी समुद्रका पाट सौ योजनहै कहो सौ गतियोंमेंसे यह कौनसी आपकी गतिहै कि जलमें मौनहोकर अपनेपक्ष और चोंचको डुबाते और निकालतेहो यह बचन सुनकर वह नीच बायस आरत बचनों से बोला हे हंस अब आप अपनीओरको देखकर मेरे ऊपर क्षमाकरो और जलसे निकालकर मुझको आनन्ददो और हमने अपनी कुमतिके बशीभूत होकर जो आपसे कुत्सित बचनकहे उनको अपने हृदयसे दूरकर दयाकरके मुझको जलसे निकालिये हे कर्ण यह काकके बचन सुनकर हंसने अपने पंजेसे उसको पकड़कर स्थलमें लाकर डालदिया सो जैसे कि वैश्यकेघरमें उच्छिष्ट खाखाकर काकपुष्टहुआ और हंससे प्रणकरके अपना हास्य कराया उसीप्रकार तुमभी धृतराष्ट्र के घरमेंखाके मोटे होकर बढ़ेहो अब तुमकाकके समानहो हंसरूपी पार्थसे लड़कर अपना हास्य कराया चाहतेहो अरे विराटनगर में द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य और भीष्मादिकसरीके शूरवीरों को पार्थने विजयकिया तब तुमने अकेले अर्जुन को क्योंनहीं मारा ४९।७३। उसस्थानपर पृथक् २ और संयुक्त तुमसब लोगोंको अर्जुनने ऐसे विजयकिया जैसे कि शृगालों को सिंह विजयकरताहै तब तेरा पराक्रम कहांथा ७४ युद्धमें

अर्जुनके हाथसे मारेहुये भाईको देखकर सबकौरवी वीरोंके देखतेहुये प्रथमतो तुम्हींभागे ७५ हे कर्ण इसीप्रकार द्वैतबनमें गन्धर्वों से सन्मुखता होनेमें प्रथम तुमहीं सब कौरवों को छोड़कर भागेथे ७६ वहां भी हे कर्ण अर्जुननेही युद्धमें गन्धर्वों को मारकर और चित्रसेनादिकों को बिजय करके स्त्री समेत तेरे मित्र व पालनकरनेवाले दुर्य्योधनको छुटायाथा ७७ हे कर्ण फिर परशुरामजीने राजाओंके मध्य सभा के बीच अर्जुन और केशवजीका प्राचीन प्रभाव वर्णन कियाथा ७८ तुमने राजालोगोंके समक्ष में श्रीकृष्ण और अर्जुन को अवध्य वर्णन करनेवाले भीष्म और द्रोणाचार्य्य के बारंबार कहेहुये बचनोंको सुना मैं उसको कहांतक तुमसे कहूं अर्जुन अनेक प्रकारसे तुमसे ऐसा अधिकहै जैसे कि सबजीवोंसे ब्राह्मण अधिक होताहै ७६ । ८० तू अभी रथपर चढ़ेहुये वसुदेवनन्दन और कुन्तीनन्दन श्रीकृष्ण और अर्जुनको देखेगा जैसे कि बुद्धिमें नियत होकर काक हंसके पास शरणागत हुआ उसी प्रकार तू भी वासुदेवजी और अर्जुनके पास जाकर शरणागतहो ८१ । ८२ हे कर्ण जब तुम युद्धमें पराक्रमी अर्जुन और वासुदेवजीको एक रथपर देखोगे तब ऐसी २ बातें न कहोगे ८३ जब अर्जुन सैकड़ों बाणोंसे तेरे अहंकारका नाश करेगा तभी तुम अपने और अर्जुनके बलाबल रूप अन्तरको देखोगे ८४ अरे जो नरोत्तम देव असुर और मनुष्योंमें प्रसिद्धहैं उनका अपमान तुम ऐसे मतकरो जैसे कि पटबीजना सूर्य्यका अपमान नहीं करसक्ता ८५ जैसे कि सूर्य्य और चन्द्रमाहैं उसी प्रकार अर्जुन और श्रीकृष्णजी अपने तेजसे विख्यातहैं तुम मनुष्यों में पटबीजनेके समानहो ८६ हे बुद्धिमान सूतके पुत्र कर्ण तू अर्जुन और केशवजीका अपमान मतकर वह दोनों नरोत्तम महात्माहैं मौनहोजा अपनी प्रशंसा मतकर ८७ ॥

दो० सूर्य्य चन्द्रसम विदित है पारथ कृष्ण अमान ।
तिनकी सरवरि जिनकरो तुम खद्योत समान १
बरप्रभाव हरिपार्थको पूर्व कह्यो बलिराम ।
सोभुलायकत मोहवश लरन चहत जयकाम २

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिशल्यसंवादेहंसकाकोपाख्यानेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

तैंतालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि महात्मा कर्ण शल्य के अप्रिय बचनों को सुनकर शल्य से बोला कि मैं ठीक २ जानताहूं जैसे कि अर्जुन और श्रीकृष्णजीहैं १ मैं अर्जुन के रथके हांकनेवाले केशवजी और अर्जुनके पराक्रम समेत बड़े अस्त्रों को भी अच्छी रीति से जानताहूं हे शत्रुरूप शल्य उसको तू नहीं जानताहै २ मैं उन शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ और निर्भयरूप श्रीकृष्ण और अर्जुनसे युद्ध करूंगा परंतु ब्राह्मणों में श्रेष्ठ परशुरामजीका दियाहुआ शाप अब मुझको अधिकतर दुःख दे रहाहै ३ हे शल्य शापका कारण यह था कि मैं पूर्व्व समय में दिव्य अस्त्रोंका अभिलाषी होकर ब्राह्मणका रूप बनाकर कपटसे परशुरामजी के पास ठहरनेको गयाथा वहांभी अर्जुनकीही उन्नति चाहनेवाले देवराज इन्द्रने ४ भयानकरूप कीटके शरीर में प्रवेश करके मेरी जंघामें चिपटकर काटने से बिघ्नकरदिया अर्थात् मेरी जंघापर शिर रखकर गुरू परशुरामजी के सोनेपर उस कीटने मेरीजंघा को काटा ५ और बड़े घाव होनेके कारण मेरी जंघामें से बहुतसा रुधिर प्रकट हुआ परन्तु मैंने गुरूजीके भयसे शरीरको जराभी न कंपाया इसके पीछे जब गुरूजी जागे और उस मेरी जंघाके रुधिरको देखा ६ उन्होंने उस घाव से भी मुझको धैर्य्यतामें नियतदेखा तब यह बचन कहा कि निश्चयकरके तू ब्राह्मण नहीं है कौनहै यह सत्य २ कहो हे शल्य तबतो मैंने सूतके समान समीप जाकर अपना यथार्थ वृत्तान्तकहा ७ उससमय क्रोधयुक्त होकर महा तपस्वी गुरूजीने मुझको देखकर शापदियाकि हे सूत तैंने अपनी ज्ञातिको गुप्तकरके जो इसअस्त्रको प्राप्त कियाहै वह युद्धकर्मके समय पर तुझको स्मरण न रहैगा ८ इसके सिवाय और कालमें इस अस्त्रसे तेरी मृत्युहोगी क्योंकि ब्राह्मणके विना मन्त्र और वेदरूप ब्रह्म अचल होकर स्थिर नहीं होताहै अब इस भयकारी कठिन युद्धमें उसबड़े अस्त्रका प्रयोग संहार स्मरण नहीं आताहै ९ हे शल्य जो यह सबका मारनेवाला महाघोर भयानकरूप प्रबलयुद्ध भरतवंशियों में उत्पन्न हुआहै यह कालरूप युद्ध बहुतसे बड़े २ क्षत्री शूरवीरों को निश्चय करके संतप्त करेगा परन्तु मैं उस उग्र धनुषधारी महावेगवान् भयानक कठिनता से सहने के योग्य सत्य पराक्रम और प्रतिज्ञावाले पाण्डव अर्ज्जुन को युद्ध में मृत्यु के मुख

में पहुँचाऊंगा १० । ११ वह मेरा अस्त्र वर्त्तमानहै उसी के द्वारा युद्ध में शत्रुओं के समूहों को और प्रतापी बलवान् अस्त्रज्ञ और महाउग्र धनुषधारी तेजस्वी निर्द्दयी शूर रुद्र शत्रुओं के नाशकरनेवाले अर्ज्जुन को युद्ध में ऐसे मारूंगा जैसे कि महावेगवान् अप्रमेय जलोंका स्वामी समुद्र अनेक जीवोंको अपने में मग्न करलेता है १२ । १३ जैसे समुद्र बड़ा वेगवान् बुद्धि से परे मर्य्यादा और किनारों समेत बड़े २ प्रभाववालों को धारणकरता है १४ इसीप्रकार अब मैं भी इस लोकके युद्ध में मर्मों के भेदी वीरों के मारनेवाले तीक्ष्णबाण समूहों के छोड़नेवाली प्रत्यञ्चा खैंचनेवालों में श्रेष्ठ अर्ज्जुनके साथ युद्धकरूंगा १५ इस रीति से बाणों के बलके प्रताप से उस बड़े पराक्रमी अस्त्रज्ञ समुद्रकी समान महादुर्जय बड़े २ शूरवीर राजाओं के नाशकरनेवाले अर्ज्जुन को ऐसे सहूंगा जैसे कि समुद्र को मर्य्यादा सहलेती है १६ अब युद्ध में जिसके समान दूसरे धनुषधारीको नहीं समझता और मानताहूं वह देवता और असुरोंको भी युद्ध में विजय करसक्ताहै उसके साथ अब मेरे महाघोर युद्धको देखो युद्धाभिलाषी महाअहङ्कारी अर्जुन दिव्य महाअस्त्रोंके द्वारा मेरे सन्मुख आवेगा १७ तब मैं युद्ध में उसके अस्त्रों को अपने अस्त्रों से हटाकर उत्तम बाणों से उस सूर्य्य के समान उग्रदिशाओं के तपानेवाले अर्ज्जुन को गिराऊंगा १८ जैसे कि बड़ाबादल सूर्य्य को ढकदेताहै उसीप्रकार अग्निरूप क्रोध रखनेवाले महातेजस्वी इस लोकके भस्म करनेवाले अर्ज्जुनको अपने बाणोंसे आच्छादित करदूंगा १९ मैं बादलरूप अपने वर्षा रूप बाणों से युद्ध में उस अग्निरूप बल पराक्रम रखनेवाले प्रहारकर्त्ता वायुरूप उग्र अर्ज्जुन को शान्तकरूंगा २० हिमालय पर्व्वत के समान युद्ध में अग्निके समान क्रोधरूप पण्डित सत्यवक्ता अर्थ मार्गों में समर्थ महाबली अर्ज्जुन को देखूंगा २१ लोक में अद्वितीय धनुर्धर जिसके समान दूसरा नहीं देखता और जिसने सब पृथ्वीको विजयकिया मैं युद्धमें सन्मुखहोकर उस अर्ज्जुन से लड़ूंगा २२ जिस अर्ज्जुनने इन्द्रप्रस्थ के समीप खाण्डववन में देवताओं समेत सब जीवों को विजयकिया २३ उस वीरके सन्मुख मेरे सिवाय इच्छापूर्वक कौन युद्ध करसक्ताहै वह महाअहंकारी अस्त्रज्ञ हस्तलाघवका करनेवाला दिव्य अस्त्रोंके प्रयोग संहारोंका ज्ञाता प्रलयका मचानेवाला है २४ अब मैं तीक्ष्ण बाणों से उस अतिरथीके शिरको देहसे जुदाकरूंगा हे शल्य मैं युद्धमें विजयको और मृत्युको

आगे करके इस अर्जुनसे लडूंगा २५ ऐसा मेरे सिवाय दूसरा कोई मनुष्य नहीं है जोकि उस इन्द्रके समान पराक्रमी के साथ एकरथसे युद्धकरे मैं युद्धमें प्रसन्न चित्त होकर क्षत्रियोंके देखतेहुये उस पांडव अर्जुनकी बीरता बर्णन करताहूं २६ तुम महामूर्ख और अज्ञानचित्त होकर हठसे उस अर्जुनकी बीरताको क्या कहतेहो जो पुरुष सबका अप्रिय कठोर चित्त नीच और अशान्तचित्त होताहै वह शान्तचित्तवालों की निन्दाकरता है २७ मैं इस प्रकारके सैकड़ों पुरुषों को मार सक्ताहूं परन्तु मैं क्षमा करने के समय आनेपर क्षमाकर देताहूं हे पापात्मा शल्य तू अज्ञानी के समान मुझको डराकर अर्जुनके लिये प्रियबचनोंको कहताहै २८ हे सत्यताके समय मित्रसे शत्रुता करनेवाले कुटिलबुद्धी निश्चय करके मित्रता सात पदोंसे संबंध रखनेवाली है वह भयकारी समय सन्मुख आता है जिससे कि दुर्य्योधनने युद्धको प्राप्त कियाहै २९ और मैं भी उसीके अभीष्ट सिद्धीका चाहनेवालाहूं परन्तु तुम उसी बातको मानतेहो जिसमें कि प्रीति नहीं है अर्थात् हमारा पक्षवाला होकर भी अन्यके साथ प्रीति करताहै मित्रशब्द मिदधातु से संबंध रखताहै जिसका अर्थ मोदहै वा मिदिधातुसे जिसका अर्थ प्रसन्न करना तृप्त करना रक्षाकरना और अन्तमें कुशल करनाहै अथवा सुखसे संपन्न करना कहाहै इनलक्षणोंसे मित्र कहाजाताहै ३० मैं तुझसे सत्य २ कहताहूं कि यह सब गुणमुझमें प्राप्तहैं राजा दुर्य्योधन मेरे इनसब गुणोंको जानताहै और मारना शासनकरना स्वाधीन करना दंडदेना लम्बेश्वासलेने में पकड़लेना और पीड़ित करना इनगुणोंके होनेसे शत्रुकहाजाताहै ३१ यह सब गुण बहुधा तुझमें नियत हैं इसनिमित्त अब मैं दुर्य्योधनकी वा तेरीइच्छा अथवा अपनी शुभकीर्त्ति और ईश्वरकी प्रसन्नताके लिये अर्ज्जुन और बासुदेवजीसे लडूंगा अब उस कर्मको वा ब्रह्मास्त्र आदि महा उत्तम और दिव्य अस्त्रों को और मानुषी शस्त्रों को देखो ३२ । ३३ मैं उस उग्रपराक्रमीको ऐसे प्राप्तकरूंगा जैसे कि बड़ा मतवाला हाथी दूसरे मतवाले हाथीको और विजयके हेतु उस अजेय ब्राह्मअस्त्रको मन से अर्ज्जुनके ऊपर चलाऊंगा ३४ उस मेरे अस्त्रसे भी युद्धमें कोई शत्रु नहीं बचसक्ताहै जो कदाचित् यह रथकाचक्र किसीगढ़ेमें नहीगिरे ३५ तो हेशल्य मैं दण्डधारी यमराज पासभृत् वरुण गदाधारी कुवेर वज्रधारीइन्द्र और युद्धाभिलाषी शस्त्रोंसे मारनेवाले किसीप्रकारके भी शत्रुसे ३६ नहींडरताहूं इसीहेतुसे मुझको

अर्ज्जुन और श्रीकृष्णजीसे जराभी भय नहीं है ३७ मेरायुद्ध उन दोनोंके साथ परलोकके निमित्तहोगा हे राजा इसकाहेतु यहहै कि एकसमय अस्त्रोंके सीखनेमें मैंने घोररूप अस्त्रोंको फेंकाथा ३८ वहां अज्ञानतासे एक ब्राह्मणकी होमसाधन करनेवाली गौकाबछड़ा जो निर्जन वनमें चररहाथा वह मेरे वाणसे मारागया उसके मरजानेसे उस ब्राह्मणने कहा कि ३९ जोतुझ वड़े मतवालेने मेरीहोम की गौके बछड़ेको माराहै इस हेतुसे तुझ युद्धमें लड़नेवाले को रथका पहिया पृथ्वीमें घुसजायगा यह ब्राह्मणने मुझको शापदियाहै ४० । ४१ इस हेतुसे मैं ब्राह्मणके शापसे बहुत डरताहूं इन ब्राह्मणोंका राजा चन्द्रमा है इसीसे यह सब ब्राह्मण सुख दुःखके स्वामी हैं ४२ हे मद्रदेशाधिपति मैंने हजारों गौ और बैल देनेसे भी उसको प्रसन्न करनाचाहा परन्तु वह किसी प्रकारसे भी प्रसन्न नहीं हुआ ४३ वह उत्तम ब्राह्मण सातसौ हाथी और सैकड़ों दास दासी देनेपरभी मुझपर प्रसन्न नहींहुआ ४४ श्वेतबत्सा चौदह हजार कृष्णागौवोंकेभी भेटकर-नेसे उसकाचित्त मुझसे प्रसन्न नहींहुआ इसके सिवास सब पदार्थोंसे युक्त मैंने अपने स्थान धनआदि जो २ मेरीवस्तु थीं ४५ उनसबको भी वारम्वार उसको भेट किया तबभी उसने इच्छानहींकरी ४६ और मुझ अपराध क्षमाकरानेवाले से कहा कि हे सूत जो मैंने कहाहै वह वैसेहीहोगा मिथ्या कभी नहीं होसक्ता ४७ मिथ्या बोलना सन्तानका नाशकरनेवाला होताहै पापकाभागी होता है इस कारण धर्मकी रक्षाके निमित्त मैं मिथ्या नहीं बोलसक्ताहूं ४८ तू ब्राह्मणकी गतिको नाशमतकर तुमने बड़ा अपराध कियाहै इसलोकमें मेरे बचनको कोई मिथ्या नहीं करसक्ता इससे मेरेशापको अंगीकार कर ४९ हे अनम्र होनेवाले मैंने शुभचिन्तकतासे यह कहा है मैं तुझ निरादर करनेवाले को जानताहूं तू मौनहोकर उत्तरको सुन ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसंवादेत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

संजयबोले हे महाराज इसके पीछे शत्रुविजयी कर्ण राजामद्रको सम्बोधन करके यह वचन बोला १ हे शल्य जो तुमने निदर्शनके निमित्त अर्थात् दृष्टा-न्तार्थ मुझसे कहाहै सो मैं युद्धमें तेरे वचनोंसे भयभीत नहीं होसक्ता जो देव-

ताओं समेत इन्द्रभी मुझसे युद्धकरें तौभी मैं भयभीत नहीं होसक्ता फिर श्रीकृष्ण जीको साथरखनेवाले अर्ज्जुनसे क्या भय करसक्ताहूं वह क्या करसक्ते हैं २। ३ मैं केवल बातोंहीसे किसी दशामें भी भयभीत होनेको योग्य नहींहूं हे शल्य वह कोई दूसरेही मनुष्यहोंगे जो युद्धमें अर्ज्जुनसे डरें ४ नीच मनुष्यकी इतनीही सामर्थ्य है जो तुमने मुझको कठोर बचन कहे हे दुर्बुद्धी मेरी प्रशंसा करनेको असमर्थ होकर तुम बहुतसीबातें करतेहो ५ हे मद्रदेशी इसलोक में कर्ण भयके लिये नहीं उत्पन्नहुआहै किन्तु यशकीर्त्ति और पराक्रमके हेतु मैंने जन्मलिया है हे राजाशल्य तुम इनतीन कारणोंसे जीवतेबचेहो एक तो सारथ्यकर्म्म करनेसे उत्पन्नहुई मित्रता दूसरे मेरी क्षमायुक्त प्रकृति तीसरे अपने परममित्र दुर्य्योधनके कार्य्य सिद्धकेलिये ६। ७ हे शल्य राजा दुर्य्योधनका बड़ा भारी कार्य्य बर्त्तमान होकर मुझमें नियत है इसहेतुसे अल्पकाल तक मेरे हाथसे जीवतेहो क्योंकि प्रथम मैं नियम करचुकाहूं कि तेरेअप्रिय बचनोंको सहूंगा मैं शल्यके बिनाभी शत्रुओंको बिजयकर सक्ताहूं क्योंकि मैं अकेलाही हजार शल्यके बराबरहूं ८। ९ और मित्रसे शत्रुता करना पापकर्म कहा है इसी कारण से तुम जीवते हो १० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसम्वादेचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

शल्यबोला हे कर्ण निश्चय करके ये सब निष्फल बातें हैं जिनको तुम शत्रुओं के विषयमें कहतेहो युद्धमें हजार कर्णके बिनाभी मेरे हाथसे शत्रु विजय होनेके योग्यहैं अर्थात् मैं हजार कर्णके समान हूं १ संजय बोले कि इस पीछे कर्णने इसप्रकार के कठोर बचन कहनेवाले शल्यसे फिर प्रथमसेभी द्विगुणित ऐसे कठोर बचन कहे जो देखने और सुननेके अयोग्यथे २ कर्णबोला हे राजा मद्र तुम चित्तकोस्थिर करके उनवचनोंको सुनो जोदुर्य्योधन के समक्षमें ३ ब्राह्मणोंने धृतराष्ट्रकी सभाकेमध्य नानाप्रकारके अद्भुतदेशों के भूत भविष्य वृत्तान्तों को राजाओं से वर्णन कियाथा वहां एक वृद्धब्राह्मणोत्तम भूतकालीन वृत्तान्त विषयक कथाओं को कहता वाहीक और मद्रदेशों की निन्दा करता हुआ यह बचन बोला ४। ५ कि जो लोग हिमाचल पर्व्वत श्रीगंगाजी सरस्वती यमुना

और कुरुक्षेत्रसे अलग कियेगयेहैं और जो लोग पंजाव और सिन्धके मध्यमें निवास करनेवालेहैं उन धर्महीन अपवित्र वाहीक नामवालोंको त्यागकरें ६।७ वहांपर गोवर्धन अर्थात् गौओं के मारनेको स्थान और मद्य पीनेवालोंके चौतरे यही दोनों राजकुल के द्वारहैं मैं बालकसे लेकर वृद्धोंतक के मुखसे सुनाहुआ स्मरण करताहूं ८ मैंने बड़ेकार्य्य के कारणसे वाहीक देशियोंमें सातरात्रि निवास करके वहांका सब चरित्र जाना ९ उनमें शाकल नाम नगर और आपगानाम नदी वा ज़रत्का नाम वाहीक इन तीनोंका चरित्र महा निन्दितहै १० यहलोग जौ और गुड़की मद्यको पानकर लहसनके साथ गोमांस को खाके मांसके पूप्र आदि बाजारके सम्पूर्ण भोजनोंकी करनेवालीं शीलतासे रहित नङ्ग शरीर और दिखाने को माला चन्दन आदि धारण करनेवाली स्त्रियां नगर के स्थानोंमें अथवा नगरके व प्रागारमें गाती और नाचती हैं ११।१२ और गधे वा ऊंटोंके समान शब्दोंसे नानाप्रकारके निर्लज्ज गीतोंसे मतवाली विषय भोगोंमें अपने और पराये जाति कुजातिका विवेक न रखनेवाली सब प्रकारसे स्वैरिणी अर्थात् स्वेच्छाचारिणी कुत्सित कर्म करनेवाली हैं १३ उन मदोन्मत्त असभ्य वार्त्ता करनेवालियों ने बड़े बिनोद पूर्व्वक इन गीतोंको गाया कि हे घायलभग हे घायलभग हे पति और स्वामीसे ताड़ितभग १४ वह संस्कार रहित अजितेन्द्री स्त्रियां इसरीतिसे पुकारतीहुई उत्सवोंके दिनों में यथेच्छ नृत्यकरती हैं फिर ब्राह्मणने कहा कि वाहीक बासियोंसे भ्रष्ट कुरु जांगलदेशोंमें निवास करनेवालीं १५ अप्रसन्नचित्त स्त्रियोंने यह गीतगाया कि निश्चय करके कुरुजांगल देशोंमें वृहतीगौरी और सूक्ष्म कंबलोंकी धारणकरनेवाली स्त्रियां शाक लहसनके मिलनेपर काकके समान हर्षित होती हैं १६ और मद्यपानकर हँसती और नाचती हैं ऊंट वा गधे के समान स्वर से हरसमय गान कियाकरती हैं सदैव मैथुन में ऐसी रतहैं कि कभी नहीं अघातीहैं १७ और पुरुषों को बुला २ कर अपने आप प्रसन्नतासे मिलती हैं और अपने वा पराये पुरुषके वर्णका भी जहां विचार नहीं वह स्त्रियां कलह हास्य और बिहारमें परस्पर गालियोंसे वातें करती हैं १८ वहां स्त्री पुरुष रात्रि दिन इसीप्रकार से वकते रहतेहैं और अपनी पराई स्त्री वा अपना पराया पुरुष इन वातों का जो विचार करे वह कुत्सित गिना जाता है १९ और जहां वाराह कुक्कुट गौ गधा इनके मांस को जो न खाय

अथवा मद्यका जो पान न करे उसका जन्म निष्फल गिना जाता है २० इस प्रकार से कहकर वह ब्राह्मण पञ्चनदों के नाम राजासे कहनेलगा कि २१ चन्द्रभागा शतद्रू बिपाशा इरावती वितस्ता और छठवां सिन्ध इननदों के मध्यमें वह पुरुष बसतेहैं जिनके पूर्व्वजन्मके पाप संचितहोते हैं २२ उनका दियाहुआ देव पितर और ब्राह्मण ग्रहण नहीं करतेहैं कुत्सितकर्म्म करनेवाले अशुभ भेष भक्ष्याभक्ष्य और गम्यागम्यका बिचाररहित जिस देशमें धर्मका लवलेशभी नहींहोताहै २३ इस वृत्तान्तको अन्यब्राह्मणोंनेभी कौरवों की सभामें हमसे कहा कि यह पांचों नदियां जहांबहती हैं २४ वहां पीलूनाम वृक्षों के बनहैं वह धर्म्म हीनदेश आरट्टनामसे प्रसिद्धहैं २५ यज्ञोपवीत आदि संस्कारोंसे रहित दासीपुत्र कुचाली यज्ञोंके न करनेवाले वाहीकों के इनदेशोंमें नहींजाना उचितहै २६ देव पितर और ब्राह्मणभी उनके हव्यकव्य और दानोंको नहीं ग्रहण करते कष्ट कुण्ड नाम मृत्तिका विशेष और मट्टीके पात्रों में भोजन करतेहैं २७। २८ सत्तू वा मद्यसे अहङ्कारी उच्छिष्ट भोजी कुत्तेभेड़ी ऊंट गधे इनकादूध और मांसखाते पीते हैं पुत्रों के मारनेवाले महामूर्ख सबअन्न और दूधके खानेवाले हैं २९।३० यह आरट्टवाहीक पण्डितलोगोंसे त्यागनेके योग्यहैं हे शल्य इसको समझकर फिर उस दूसरी बातको तुझसे कहताहूं ३१।३२ जिसको अन्यब्राह्मणों ने कौरवों की सभामें वर्णनकियाहै कि युगंधरदेश जहां भक्ष्याभक्ष्यका बिचार नहींहै उस में दूधपीकर और अच्युतस्थल नाम नगरमें निवास करके ३३। ३४ और भूतल तड़ाग जिसमें चांडाल और ब्राह्मण सब संग स्नान करते हैं उसमें स्नान करके कैसे स्वर्गको जायगा जहां यह पांचों नदी पर्व्वत से निकलकर बहती हैं ३५। ३६ उस आरट्ट नाम वाहीक देशमें श्रेष्ठ मनुष्य दो दिन भी न बासकरें विपाशानदी में वहि और हीकनाम दो पिशाच हैं ३७। ३८ उन दोनोंकी सन्तान वाहीक लोगहैं यह ब्रह्माजीकी सृष्टिमें नहीं हैं वह नीचयोनि में उत्पन्न होनेवाले नानाप्रकारके धर्म्मों को कैसे जानसक्ते हैं ३९। ४० कारस्कर माहिष कलिंग केटल कर्कोटक और वीरक इन भ्रष्ट धर्मियों को त्याग करना योग्यहै ४१। ४२ बड़े उलूखलके समान मेखला रखनेवाली किसी राक्षसी ने तीर्थयात्रा करनेवाले एकरात्रि घर में निवास करनेवाले ब्राह्मणसे यह वचनकहा ४३। ४४ कि वह आरट्ट देश और वाहीक नाम जल ब्राह्मणोंके निमित्त सदैव ब्रह्माजी

के कालके समानहैं ४५ उन जाति वेद रहित यज्ञहीन पूजनादिके अकर्त्तादासी-पुत्र कुटिलबुद्धि संस्कार से हीन लोगों के अन्न को देवता पितर भोजन नहीं करते हैं ४६ प्रस्थल मद्र गान्धार आट्टनाम पखश व साति सिन्धु और सौवीर नाम देशों के रहनेवाले वहुधा निन्दितहैं ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिपञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

कर्ण वोला हे शल्य समझो मैं फिर भी तुमसे कहताहूं तुम चित्तको स्थिर करके अच्छे प्रकारसे मेरे वचनोंको सुनो १ निश्चय करके पूर्व्व समय में एक अतिथि ब्राह्मण हमारे घरमें आया और हमारे आचारको देखकर प्रसन्नचित्त होके कहनेलगा २ कि मुझ अकेलेने वहुतकाल पर्य्यंत हिमाचल के शिखरपर निवास कियाथा तव वहां मैंने नानाप्रकार के धर्म्मों से युक्त देशोंको देखा ३ जहां प्रजालोग किसी अधर्म्म से भी शास्त्रके विरोधी नहीं होते हैं वहांके वेद-पारग ब्राह्मणोंके कहेहुये सव धर्मोंको तुमसे कहताहूं ४ हे महाराज नानाप्रकार के धर्म्मोंसेयुक्त देशोंमें घूमताहुआ वाहीक देशों में आने के समय मैंने सुना ५ निश्चय करके उसदेशमें ब्राह्मण होकर फिर क्षत्री होताहै वैश्य शूद्र और वाहीक होकर फिर नाई होताहै ६ नाई होजाने के पीछे ब्राह्मण होताहै फिर वह द्विज होकर दास होजाताहै ७ सव कुलभरे में एकही वेदपाठी होताहै और अन्य सव भाईलोग वर्णसंकर स्वेच्छाचारी कर्म्मों के करनेवाले होते हैं ८ गान्धार मद्रदेशी और वाहीक यह निर्व्वुद्धी होते हैं मैंने सम्पूर्ण पृथ्वी को घूमकर उस वाहीक देश में धर्म्मों का संकर करनेवाला यह विपर्य्यय सुनाहै उसको मैं फिर कहता हूं ९ तुम चित्तसे सुनो इस वाहीकों के निन्दित वृत्तान्तोंको एक अन्य ब्राह्मण ने कहाहै १० वह भी मैंने सुनाहै कि पूर्व्वकाल में किसी पतिव्रता स्त्री को उस आरट्टदेश से चोरोंने हरलिया तव वह अधर्म युक्त होगई तव उसस्त्री ने उनको शापदिया ११ कि जो मुझवाला और भाइयोंवालीको तुमने अधर्म से प्राप्तकिया इस कारण से तुम्हारे कुलकी सव स्त्रियां वेश्या होजायंगी १२ हे नीच मनुष्यो तुम इस घोरपाप से कभी न छूटोगे इस हेतु से उनके पापभागी भानजे हैं पुत्र नहीं हैं अर्थात् माता के धनकी लेनेवाली वेटीही होती है और पिता के धनका

लेने वाला पुत्र होताहै यद्यपि वह दोनों कुकर्म से उत्पन्नहैं तौभी पुत्र तो पिता का नहीं कहलाताहै परन्तु बेटी माता कीही कहलाती है इस हेतु से भानजाही अंशका भागीहोता है १३ कौरव, पांचाल, शाल्व, मत्स्य, नैमिष, कोशल, काश, पांड्र, कलिंग, मागध १४ और चंदेरी देशी यह महाभाग सनातन धर्मको जानते हैं वाह्लीक देश में केवल असन्त लोग रहतेहैं १५ मत्स्य देशियों से लेकर कौरव पांचाल देशी और नैमिष देशियों से लेकर चंदेरी देशियों तक जो उत्तम और संतलोगहैं वह सब प्राचीन धर्मों से अपना कर्म धर्म और निर्वाह करतेहैं इन कुटिल पांचाल और मद्रदेशियों के सिवाय १६ हे बुद्धिमान राजा शल्य इसरीति से धर्म कथाओं में मौन औरजड़के समान होकर तुम उन मनुष्यों के रक्षक होकर उनके पाप पुण्य के छठे भाग के लेनेवालेहो १७ अथवा तुम उनकी रक्षा न करनेवाले पाप भागी हो क्योंकि प्रजाकी रक्षा करनेवाला राजा पुण्यका भागी है परन्तु तुम पुण्यभागीनहींहो १८ पूर्व समयमें सबदेशों के बीच सनातन धर्मके पूजित होनेपर ब्रह्माजीने पंजाब देशके धर्मको देखकर कहा कि धिकारहै १९ सतयुग में भी संस्कार से रहित अशुभकर्मी दासीपुत्रों का धर्म ब्रह्माजी से निन्दित होनेपर तुम वाह्लीक लोक में क्या कहा करतेहो २० जिनब्रह्माजीने पंजाब के धर्म को नष्टकहाहै उनब्रह्माजीने सब वर्णोंको अपने २ धर्म में नियत होने परभी उनकी प्रशंसा नहींकी २१ हे शल्य इसको तुम समझो और दूसरा वृत्तान्त कहताहूं जो कल्माषपाद के सरोवरमें डूबनेवाले राक्षसने कहाहै २२ क्षत्री का मल भिक्षाहै और ब्राह्मण का मल व्रतका न करनाहै और संपूर्ण पृथ्वी भरेका मल वाह्लीक लोग हैं और स्त्रियोंका मल मद्रदेशकी स्त्रियां हैं २३ किसी राजाने उस डूबनेवाले राक्षस को डूबने से निकालकर उससे जो २ पूछा और उसने जो २ उत्तर दिये उन सबको मुझसे सुनों २४ मनुष्यों का मल वह म्लेच्छहैं जो पापमें प्रवृत्त होकर अपशब्द बोलते हैं और म्लेच्छों का मल औष्ट्रिकाहैं औष्ट्रिकों का मल नपुंसक हैंऔर नपुंसकोंका मल राजपुरोहित अथवा राजा के यज्ञ करानेवाले होतेहैं २५ राजा से विनयकरके याचना करनेवाले वा उसके याज्ञिक लोगोंका और मद्रदेशियों का जो मलहै वह तुझकोप्राप्त होय जो हमको नहीं त्याग करताहै २६ राक्षससे वा भूतादिकके आवेश से व्याकुल और पीड़ित मनुष्योंकी चिकित्सा कौलकरार करके पीछे स्वाधीन

होनेवाला राक्षसहोताहै २७ पांचालदेशी वेदों का संचय रखनेवाले हैं कौरव लोग धर्म संयुक्त कर्मके करनेवाले हैं मत्स्यदेशी सत्यवक्ता हैं सूरसेनदेशी यज्ञ को करते हैं और पूर्व के वासी दासहैं अर्थात् शूद्र धर्मवाले हैं और मत्स्यों के खानेवाले हैं दाक्षिणात्य लोग धर्म्माभ्यासी हैं परन्तु वाह्लीक और सुराष्ट्रदेशी चोर और बर्णसंकर हैं २८ कृतघ्नता दूसरे का धनहरना मद्यपीना गुरुकी स्त्री से संभोग करना कठोर बचन कहना गौको मारना और घरसे वाहर रात्रिमें अन्य की स्त्री से भोग करना अन्य पुरुषों के बस्त्रोंका धारण करना यह अवगुणही २६ जिनलोगोंका धर्म है उनमें कहो कि अधर्म नहीं है नहीं अवश्यहै परन्तु अरट्ट और पंजाब देशियों को धिक्कारहै पांचाल देशियों से लेकर कुरव देशियोंतक और नैमिष देशियों से लेकर मत्स्य देशियोंतकके लोगभी धर्म को जानते हैं फिर उत्तरमें रहनेवाले अंग और मगधदेशी वृद्ध मनुष्य उत्तम धर्मों से अपना बर्त्तावकरके निर्वाह करते हैं ३० जिनमें मुख्य अग्नि है वह देवता पूर्व्वदिशामें रहते हैं और शुभकर्म करनेवाले यमराजसे रक्षित होकर दक्षिणदिशा में पितर लोग निवास करते हैं ३१ और पराक्रमी बरुण देवता सब देवताओं समेत प- श्चिमदिशाकी रक्षाकरताहै और भगवान् चन्द्रमा ब्राह्मणों समेत उत्तरदिशाकी रक्षाकरताहै ३२ हे महाराज इसीप्रकार राक्षस और पिशाच हिमालयनाम श्रेष्ठ पर्व्वत को गुह्यक गन्धमादन शैलको रक्षाकरतेहैं ३३ और सब जीव मात्रोंकी भगवान् विष्णुजी रक्षाकरते हैं मगधदेशीलोग अंगचेष्टाओं से उत्पन्न होनेवाले वृत्तान्तों के जाननेवाले हैं और कौशल देशी प्रत्यक्ष और प्रकटहुये वृत्तान्तों के ज्ञाताहैं ३४ कौरव पांचाल देशी आधीवात केही कहनेसे पूरीवातके जान- नेवालेहैं शाल्वदेशी सव आज्ञाओं के पूरे करनेवाले हैं औ पर्व्वती विषमहैं इस से कठिनतासे आधीन होनेवाले हैं ३५ हे राजा मुख्यकरके सब वातों के जान- नेवाले सुरयुवन अर्थात् यूनानीम्लेच्छ वनावटके धर्मपरचलते हैं अर्थात् वैदि- क धर्मको नहीं मानते हैं और अन्य लोग विना समझायेहुये मंगलपूर्व्वक पूर्ण होनेवाले वचनों को नहीं समझते हैं ३६ वाह्लीकलोग अपने शुभचिन्त- कोंके विरोधी हैं और मद्रदेशी कुछ भी नहीं हैं हे शल्य इसनिमित्त तुम ऐसे उत्तरदेनेको योग्यनहीं हो इसपृथ्वीपर सब देशोंका मल मद्र देश कहाताहै ३७ मद्यका पान गुरुकी स्त्रीसे संभोग कुस्तीलड़ना पराये धनकाहरना यही जिन

लोगोंका धर्म है उनमें धर्म अवश्यहै उन अरट्टदेशी और पंजाबदेशियों को धिक्कारहै ३८ इसबातको जानकर मौनहोकर विरुद्धता मतकर नहीं तो मैं प्रथम तुझको मारूँगा फिर अर्जुन और केशवजी को मारूँगा कर्णकी इनसबबातों को सुनकर शल्यबोला हे कर्ण अंगदेशमें रोगी दुखिया लोगोंका त्याग और अपनी स्त्री पुत्रका बेचडालना वर्त्तमानहै उन देशोंका तू अधिपतिहै ३९।४० भीष्मजीने जो तुमको रथी अतिरथीकी संख्यामें कहा उन अपने दोषोंको जानकर क्रोधरहित होकर क्रोधयुक्त मतहो ४१ हे कर्ण सर्वस्थानों में ब्राह्मण क्षत्री बैश्य और शूद्र हैं और सुन्दर ब्रतवाली पतिब्रता स्त्रियां हैं ४२ मनुष्य मनुष्यके साथमें हास्य विनोद पूर्व्वक क्रीड़ा करते हैं और विषय भोग करनेवाले मनुष्य प्रत्येक देशमें परस्पर रक्षा करनेवाले होते हैं ४३ हरएक मनुष्य सदैव दूसरे की बुराइयों में कुशल होताहै और अपने दोषोंको नहीं जानता वा जानताहुआ भी अज्ञान होकर मोहित होजाताहै ४४ अपने २ धर्मपर कर्म करनेवाले राजा सब स्थानों में हैं दुराचारियों को दण्ड देते हैं और सर्व्वत्र धर्म्म के रखनेवाले मनुष्यहैं ४५ हे कर्ण देश के सामान्य होने से सब मनुष्य पापको सेवन नहीं करते हैं वह अपने स्वभावसे जैसे होते हैं वैसे देवता भी नहीं होते संजय बोले कि इसके पीछे राजा दुर्य्योधन ने मित्रता की रीति से कर्णको और हाथ जोड़कर शल्य को निषेध किया ४६।४७ इसकेपीछे हे श्रेष्ठ दुर्य्योधनके निषेध करने से कर्ण ने उत्तर नहीं दिया और शल्य भी शत्रुओं के सन्मुख हुआ ४८ फिर कर्ण ने शल्यको प्रेरणा करी कि शत्रुके सन्मुख चलो ४९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसंवादेषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसकेपीछे धृष्टद्युम्न से रक्षित पाण्डवों की सेनाको देखकर कर्णने शत्रुकी सेनाके सहनेवाले अपूर्ब ब्यूहको अलंकृतकिया १ और रथशंख और अन्य २ बाजों के द्वारा पृथ्वी को कंपायमान करताहुआ चला २ हे भरतर्षभ बड़े तेजस्वी युद्धमें कुशल शत्रुसंतापी क्रोधयुक्त कर्णने बुद्धिके अनुसार ब्यूह को शोभित करके ३ पाण्डवों की सेनाको ऐसे छिन्न भिन्न करदिया जैसे कि आसुरी सेनाको इन्द्र छिन्न भिन्न करदेता है वहां युधिष्ठिर को घायलकरके

वाम अंगमें करदिया ४ धृतराष्ट्र बोले हे संजय कर्णने भीमसेनसे रक्षित उन सब पाण्डवों के सन्मुख जिन में अग्रगामी धृष्टद्युम्न था कैसे व्यूहको अलंकृत किया ५ और देवताओं सेभी अजेय बड़े धनुषधारी सब युद्धकर्त्ताओं को किस किस रीति से रोका और हे संजय मेरी सेनाके पक्ष और प्रपक्ष कौन २ हुये ६ और न्याय के अनुसार सेना का विभागकरके किस रीति से नियत हुये और पाण्डवों ने भी मेरे पुत्रों के सन्मुख कैसे २ व्यूहको रचा ७ और वह महाभयानक युद्ध कैसे जारीहुआ और उस समय अर्ज्जुन कहांथा जबकि कर्ण युधिष्ठिर के सन्मुख गयाथा ८ क्योंकि अर्ज्जुन के समक्ष में युधिष्ठिरके सन्मुख जाने को कौन समर्थ होसक्ता है कि जिस अकेले ने पूर्वकाल में खाण्डव वन के सब जीव मात्रों को बिजय किया उसके सन्मुख कर्ण के सिवाय कौनसा पुरुष जीवनकी आशाकरके युद्धको करे ९ संजयबोले कि व्यूहकी रचनाको सुनिये और जैसे अर्ज्जुन वहां से गया और जिसरीति से अपने २ राजाको घेरेहुये युद्ध जारीहुआ १० हे राजा सारद्वत कृपाचार्य्य वेगवान् मगध देशीय यादव कृतबर्मा यह तो दाहिने पक्षपर नियतहुये ११ और उनके प्रपक्षपर महारथी शकुनि और महारथी उलूकने स्वच्छप्रास रखनेवाले सवारोंसमेत आपकी सेनाको रक्षितकिया १२ भयसे उत्पन्न होनेवाले व्याकुलतासेरहित गान्धारदेशी लोग और कठिनतासे बिजय होनेवाले उन पहाड़ियों समेत जो कि टीड़ीदल के समान पिशाचोंके तुल्य कठिनतासे देखनेके योग्यथे १३ मुख न मोड़नेवाले चौबीस हजाररथी युद्धमें कुशल संसप्तकोंने बायें पक्षको रक्षितकिया १४ वह स आपके पुत्रोंसेयुक्त श्रीकृष्ण अर्ज्जुनके मारनेके अभिलाषी थे और पाण्डवों प्रपक्षमें यवनों समेत कांबोज देशीय शकजातिके लोगहुये १५ और कर्णकी आज्ञासे रथ घोड़े और पतियोंसमेत सबलोग श्रीकृष्णजी और अर्ज्जुनको पुकारतेहुये नियतहुये १६ वह अपूर्व्व कवच बाजूबन्द और मालाधारण करनेवाला कर्णभी सेनामुख को रक्षित करताहुआ सेनाके मुखपर नियतहुआ १७ वह अत्यन्त क्रोधित आपके पुत्रोंसे व्याप्त शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ शूरवीर कर्ण सेना संहार कर्त्ता मध्य सेना मुखपर शोभायमान हुआ १८ और सूर्य्य और अग्नि समान प्रकाशित अपूर्व्व दर्शन पिंगलवर्ण नेत्रवाले बड़े हाथीपर सवारसे समेत व्यूहके पृष्ठभागपर दुश्शासन नियतहुआ हे राजा उसके पीछे अद्भुत अ

और कवचधारी निज भाइयों से और एकत्रहुये बड़े शूरबीर मद्र और कैकेय देशियों से चारों ओरसे रक्षित आप राजा दुर्य्योधन ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि देवताओंके मध्यमें रक्षा कियाहुआ इन्द्र शोभित होताहै और अश्वत्थामा वा कौरवोंके बड़े२ महारथी शूर म्लेच्छों से युक्त सदैव मतवाले बादलोंके समान मदरूप जलके डालनेवाले हाथी उस रथोंकी सेनाके पीछे २ चले १६। २०। २१। २२। २३ वह ध्वजा पताका वा प्रकाशित उत्तम शस्त्र और सवारों समेत नियत होकर ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि वृक्षधारी पर्वत होतेहैं २४ उन पदाती और हाथियों के पाद रक्षकभी पट्टिश और खड्गके धारण करनेवाले मुख न मोड़नेवाले हजारों शूरबीर वर्त्तमानथे २५ वह देवासुरोंकी सेनाके समान व्यूहराज सवार रथ और हाथियों समेत अलंकृत महा शोभायमान हुआ २६ उस बुद्धिमान सेनापतिने इसरीतिसे वार्हस्पत्य व्यूहकोरचा उस नाचतेहुये महा व्यूहको देखकर शत्रुओंको भय उत्पन्नहुआ २७ उसके पक्ष और प्रपक्षों से पती घोड़े रथ और हाथी सबके सब युद्धाभिलाषी होकर ऐसे निकलतेथे जैसे कि वर्षा ऋतु में बादल निकलते हैं २८ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर कर्ण को सेना मुखपर देखकर शत्रुओं के मारनेवाले अकेले अर्ज्जुन से बोले २६ हे अर्ज्जुन युद्ध में कर्णके रचेहुये उस महा व्यूहको देखो जो पक्ष और प्रपक्षों से संयुक्त शत्रुकी सेनाको प्रकाशित करताहै ३० सो तुम इसशत्रुकी वृहत्सेनाको अच्छे प्रकारसे देखकर ऐसी नीति बिचारो जिससे कि यह हमको भयभीत न करे ३१ राजा के इसरीति के बचनको सुनकर अर्ज्जुन हाथ जोड़कर राजा से कहनेलगा कि जैसा आप कहते हैं वैसाही है मिथ्या नहीं है ३२ हे भरतर्षभ जिस रीतिसे इसका मारना बिचार कियाहै उसको मैं करूंगा इसकामारना बहुत श्रेष्ठहै इससे मैं इसका नाशकरताहूं ३३ युधिष्ठिर बोले कि तुम तो कर्णसे लड़ो भीमसेन सुयोधनसे नकुल वृषसेनसे सहदेव सौबलसे ३४ शतानीक दुश्शासन से सात्विकी कृतबर्मा से पाण्ड्य अश्वत्थामा से सन्मुख होकर लड़ो और मैं आप कृपाचार्य्य से युद्ध करूंगा ३५ और शिखण्डी समेत द्रौपदी के सब पुत्र उन शेषबचेहुये धृतराष्ट्र के पुत्रों से सन्मुख होकर लड़नेको जाओ और सब हमारे शूरबीर उनके शूरबीरोंको मारो ३६ संजय बोले कि इसरीतिसे धर्मराजके बचनोंको सुनकर अर्ज्जुनने कहा कि ऐसाही होगा यह कहकर अपनी सेना-

ओंको आज्ञादी और आप सेनामुख परगया ३७ जो कि यह वैश्वानर अग्नि बिश्वका प्रभुहै वह प्रथम ब्रह्माजी के मुखसे उत्पन्न चन्द्रमारूपसे प्रकट होनेवाला है उसीने घोड़ेके रूपको पाया उसघोड़ेको देवता और ब्राह्मणों ने जानलिया कि यह ब्रह्माजी के मुखसे उत्पन्नहै वही अकेला एकदेवता अपने चाररूप बनाकर अर्ज्जुनके रथको ले चलताहै ३८ जिसने पूर्वसमयमें ब्रह्मा रुद्र इन्द्र और वरुणको क्रम पूर्वक सवारकिया है इसहेतुसे प्रथम तो रथपर सवारहोकर केशवजी और अर्ज्जुनचले ३९ तदनन्तर शल्य उसअपूर्व दर्शनीय आतेहुये रथको देखकर उस युद्धदुर्मद अधिरथी कर्णसे बोला ४० यह श्वेत घोड़ों से युक्त सारथी श्रीकृष्णजीसमेत सब सेनाओंसे भी कठिनतासे रोकनेके योग्य अर्ज्जुनका रथ आया यह रथ ऐसे कठिनतासे रोकनेके योग्यहै जैसे कि कर्मोंका फल रोकने के योग्य नहीं होताहै ४१ हे कर्ण जिसको तुम पूछतेथे वह शत्रुओं को मारता हुआ अर्ज्जुनचला आताहै उसका ऐसा कठोर शब्द सुनाई देताहै जैसा कि बादलका घोर शब्द होताहै ४२ निश्चयकरके यह दोनों महात्मा श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनहैं देखो यह उठीहुई धूलि आकाशको व्याप्तकरके नियत है ४३ हे कर्ण रथके पहियेके नीचेसे चलायमान पृथ्वी कंपायमान है और महावेगवान् वायु आपकी सेनाके सन्मुख चलरही है ४४ यह कच्चे मांसखानेवाले राक्षस आदि भी बोलरहे हैं यह मृग भयानक शब्दोंको करते हैं हे कर्ण इसघोर भयदायक रोमहर्षण करनेवाले सूर्यको आच्छादित कियेहुये बादलकी सूरत केतुनक्षत्रको देखो और सब दिशाओंमें नानाप्रकारके पशुओंके झुंड और पराक्रमी शार्दूल सूर्यको देखते हैं हजारों भागनेवाले और सन्मुख नियतहोनेवाले परस्परमें घोर शब्द करनेवाले कंक और गृद्धोंको देखो और हे कर्ण तेरे रथपरलगेहुये अति उत्तम चामरभी अग्निकेसमान होगये हैं ४५।४६।४७।४८ और ध्वजाकांपती है बड़े वेगवान् उन्नत बलिष्ट शरीरवाले घोड़ोंके कंपको देखो ४९ जैसे दर्शन करनेके योग्य आकाशमें उड़नेवाले गरुड़ोंको देखते हैं उसीप्रकार निश्चय करके युद्धोंमें हजारों मरेहुये राजालोग पृथ्वीपर आश्रयलेकर ५० शयनकरेंगे और शंखों के कठोर शब्द रोमांच खड़े करनेवाले सुनाई देते हैं ५१ हे कर्ण ढोल और मृदंगोंके शब्दोंको सुनों हे राधाकेपुत्र बाणोंके मनुष्यों के और घोड़े हाथियोंके शब्द ५२ महात्माके प्रत्यंचा के तलत्रोंके शब्दोंको और कारीगरोंके हाथसे सुवर्ण

और चांदीसे निर्मित वस्त्रोंके वनायेहुये ५३ नानाप्रकारकी वर्णवाली ध्वजाओं
से कंपायमान पृथ्वी चन्द्रमा सूर्य्य और नक्षत्र रखनेवाली क्षुद्रघंटिका युक्त पताका
रथपर महा शोभायमान फर्राहरही हैं ५४ हे कर्ण देखो कि अर्ज्जुन की ध्वजा
वायुसे चलायमान ऐसी कणकणारही हैं जैसे कि आकाशमें बिजिलियां कण-
कणाया करती हैं ५५ और महात्मा पांचालोंके यह पताकाधारी रथकैसे शोभा-
यमानहैं ५६ वानराधीशको धारण करनेवाली अति उत्तम विजयकारिणी ध्वजा
संयुक्त आनेवाले अजेय कुन्तीनन्दन अर्ज्जुन को देखो ५७ यह चारोंओर से
देखने के योग्य महाभयानक शत्रुओंका भयकारी वानर अर्ज्जुन की ध्वजाकी
नोकपर दिखाई देरहाहै ५८ और बुद्धिमान श्रीकृष्णजीका यह शंख चक्र गदा
और शार्ङ्ग धनुषहै जिसमें श्रीकृष्ण जी का कौस्तुभमणि न्यारीही शोभा देरहा
है ५९ यह शार्ङ्ग धनुष और गदा हाथमें रखनेवाले पराक्रमी बासुदेवजी बायुके
समान शीघ्रगामी श्वेतघोड़ोंको चलातेहुये चलेआते हैं ६० अर्ज्जुनसे खैंचा-
हुआ यह गांडीव धनुष कैसे शब्दोंको करताहै उस हस्तलाघवीके छोड़ेहुये यह
तीक्ष्णबाण शत्रुओंको माररहे हैं ६१ और मुख न मोड़नेवाले बड़ेलंबे रक्तनेत्र-
धारी पूर्णचन्द्रमाके समान मुखवाले शूरवीरों के शिरोंसे यह पृथ्वी आच्छादित
होती चलीआती है ६२ उठायेहुये शस्त्रोंमें कुशल युद्धकर्त्ताओं के परिघकी
समान पवित्र चन्दनादि से चर्चित भुजदंड शस्त्रोंके द्वारा गिरायेजाते हैं ६३
जिनके नेत्र और जिह्वा निकल पड़ीं वह सवारोंसमेत घोड़े पृथ्वीपर मरकरगिरे-
हुये सोरहे हैं ६४ पर्व्वतके शिखरकी समान रूपवाले यह हाथी मारेगये और
अर्ज्जुन के हाथसे घायल वा चूर्णीभूत अंगवाले हाथी पर्व्वतों के समान घूमते
हैं ६५ यह गंधर्वनगरके समान रूपवाले रथ जिनके कि राजा मरगये वह स्वर्ग-
बासियों के पवित्र बिमानोंके समान पृथ्वीपर गिरते हैं ६६ अर्ज्जुनके हाथ से
अत्यन्त ब्याकुलसेना ऐसी दिखाई देती है जैसे कि नानाप्रकारके हजारों पशु-
ओंके समूह केशरीसिंहसे ब्याकुल होते हैं ६७ आपके हाथी घोड़े रथ और पति-
योंके समूहों को मारनेवाले सन्मुख दौड़नेवाले यह वीर पाण्डवलोग राजाओं
को मारते हैं ६८ जैसे कि वादलोंसे सूर्य्य ढकजाता है उसीप्रकार यह अर्ज्जुन
ढकाहुआ दिखाई नहीं देताहै उसकी ध्वजाकी नोकही दिखाई देती है और
प्रत्यंचाका शब्द भी सुनाजाताहै अब उस श्वेत घोड़ेवाले श्रीकृष्णजीको सा-

रथी रखनेवाले युद्धमें शत्रुओंके मारनेवाले वीर अर्ज्जुनको देखोगे ६९ जिसको कि तुम पूछतेथे हे कर्ण अब तुम इन पुरुषोत्तम लालनेत्र शत्रुओं के संतप्तकरने वाले एक रथ पर नियत अर्ज्जुन और बासुदेवजी को देखोगे ७० जिसके सारथी श्रीकृष्णजी हैं और धनुष जिसका गांडीव है हे कर्ण उसको जो तुम मारोगे तो हमारे राजाहोगे ७१ संसप्तकों का बुलाया हुआ यह अर्ज्जुन उनके समीप सन्मुख होकर उन महापराक्रमियों का युद्धमें नाशकररहा है ७२ ऐसे शल्यके बचनोंको सुनकर कर्ण महाक्रोध युक्त होकर वड़े अहंकारसे बोला कि हे शल्य तुम महाक्रोध युक्त संसप्तकोंसे सब ओरसे घिरेहुये अर्ज्जुनको देखो ७३ जैसे कि सूर्य्य बादलों से ढकजाय उसीप्रकार ढकाहुआ यह अर्ज्जुन दिखाई नहीं पड़ताहै हे शल्य अर्ज्जुन ऐसेही अन्तका करनेवालाहै जो कि युद्धकर्त्ताओंके समुद्रमें डूबरहाहै ७४ शल्यबोला कि कौन पुरुष बरुणको जलसेमारे और कौन मनुष्य इंधनसे अग्निको बुझावे और कौन हवाको पकड़े अथवा कौन पुरुष महासमुद्रको पानकरे ७५ मैं युद्धमें अर्ज्जुनका मरना असंभव मानताहूं इन्द्रसमेत देवतालोग भी युद्धमें अस्त्रोंसे अर्ज्जुन को विजय नहीं करसक्ते ७६ अब तेरी प्रसन्नताहै तो अपने बचनको कहकर चित्तको प्रसन्नकर वह तो युद्धमें किसी से विजय करनेके योग्य नही है अब तू दूसरे मनोरथको कर ७७ जो भुजाओंसे पृथ्वीको उठासके और क्रोधयुक्त होकर इन सब जड़ चैतन्योंका नाश करे स्वर्गसे देवताओं को गिरासके उस अर्ज्जुनको युद्धमें कौन विजय करसक्ताहै ७८ साधारण कर्म्मी महाप्रकाशमान द्वितीय मेरुपर्व्वतके समान नियत महाबाहु कुन्तीके पुत्र शूरबीर भीमसेनको देखो ७९ कि सदैव क्रोधयुक्त असहिष्णु विजयाभिलाषी यह पराक्रमी भीमसेन चिरकालकी शत्रुताको स्मरण करता युद्धमें नियतहै ८० यह धर्मधारियों में श्रेष्ठ युद्धमें शत्रुओंके साथ कठिन कर्म करनेवाला शत्रुओं के पुरोंका विजय करनेवाला धर्मराज युधिष्ठिर नियत है ८१ यह कठिनता से विजय होनेवाले दोनों पुरुषोत्तम अश्विनीकुमारों के समान निज सहोदर नकुल सहदेव दोनों भाई युद्धमें नियत हैं ८२ यह पांच पर्व्वतोंके समान पांचो द्रौपदीके पुत्र नियतहैं यह सब अर्ज्जुनके समान युद्धाभिलाषी युद्धमें वर्त्तमानहैं ८३ बलकी वृद्धिवाले बड़ेतेजस्वी सत्यवक्ता द्रुपदके शूरबीर पुत्र जिनमें मुख्य धृष्टद्युम्नहै वह भी नियतहैं ८४ इन्द्रके समानअसह्य

पूर्व समयमें क्रोधयुक्त मृत्युके समान यादवोंमें श्रेष्ठ युद्धाभिलाषी यह सात्विकी हमारे सन्मुख आताहै ८५ उन दोनों पुरुषोत्तमों के इसरीतिसे वार्त्तालाप करते करते वह दोनों सेना श्रीगंगा और यमुनाके समान बड़े वेगसे भिड़गईं ८६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसंवादेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७॥

अड़तालीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि इसरीति से सेनाओंके तैयारहोने पर और अच्छी रीति से भिड़जानेपर अर्जुन किसरीतिसे संसप्तकोंके सन्मुखगया और कर्ण कैसे पांडवों के सन्मुख गया १ इस युद्ध को ब्यौरे समेत कहो क्योंकि तुम बड़े चतुरहो मैं युद्ध में शत्रुओंके पराक्रमोंके सुनने से तृप्तनहीं होताहूं २ संजयबोले कि आपके पुत्र के हेतु अन्याय होने पर अर्जुन ने शत्रुओं की बड़ी सेना को नियत जानकर ब्यूह को रचा वह अश्व सवार हाथियों समेत रथ और पदातियों से आवृत बड़ी सेनावाला व्यूह जिसमें मुख्यधृष्टद्युम्नथा शोभायमानहुआ ३।४ चन्द्रमा और सूर्य्य के समान तेजस्वी धनुषधारी मूर्त्तिमान काल के समान धृष्टद्युम्न कपोतवर्ण घोड़ों समेत शोभित हुआ ५ दिव्य कवच और धनुष रखनेवाले शार्दूलके समान पराक्रमी शरीरसे प्रकाशमान युद्धाभिलाषी द्रौपदी के पुत्रोंने अपने साथियों समेत धृष्टद्युम्न को ऐसा रक्षितकिया जैसेकि तारागण चन्द्रमाको रक्षित करते हैं तदनन्तर सेनाओं के सन्नद्ध होनेपर युद्धमें संसप्तकों को देखकर ६।७ क्रोधयुक्त अर्जुन अपने गांडीव धनुष को टंकारता हुआ सन्मुखगया इसकेपीछे मारनेके अभिलाषी संसप्तकलोग अर्जुनके सन्मुख दौड़े ८ वह विजय में संकल्प करनेवाले मृत्युको तिरस्कार करके सन्मुख गये मनुष्य हाथी घोड़ों के समूहों से युक्त मतवाले हाथी और रथों से व्याप्त ९ पत्तियों से युक्त शूरवीरों के उस समूहको अर्जुन ने बड़ी शीघ्रता से पीड़ितकिया अर्जुन के साथमें उनलोगों का ऐसा कठिन युद्ध हुआ १० जैसा कि उसका युद्ध निवात कवचियों के साथ हमने सुनाथा रथ घोड़े ध्वजा हाथी इन युद्धमें वर्त्तमानों को भी ११ बाण धनुष खड्ग चक्र फरसे आदि नानाप्रकार के शस्त्रोंको उठाये हुये भुजाओं वा नानाप्रकारके शस्त्रों १२ को और शत्रुओं के हजारों शिरोंको अर्जुनने काटा तब पाताल तलके समान उस सेनारूपी सागरमें १३ इसप्रकार

मग्नहुये उसरथ को देखकर संसप्तकलोग गरजे तदनन्तर उसने उन शत्रुओं को मारकर फिरभी उत्तरकी ओरसे मारा १४ दक्षिण और पश्चिम ओर सेभी ऐसा मारा जैसे कि क्रोध युक्त रुद्र पशुओं को मारते हैं उसके पीछे हे श्रेष्ठ पांचाल चंदेरी और सृंजयदेशियों के युद्ध १५ आपके युद्धकर्त्ताओंसे बड़ेभारी कठिन हुये युद्धमें दुर्म्मद अत्यन्त क्रोधयुक्त रथसमेत सेनाको मारनेवाले प्रसन्न चित्त कृपाचार्य्य कृतवर्मा और सौबल के पुत्र शकुनी ने कोशल काशी मत्स्य कारूष कैकय १६। १७ और शूरसेनदेशी उत्तमशूरों समेत युद्धकिया यह तीनों उनके युद्धका अन्त करनेवाले शरीर पाप और प्राणों के नाशकरनेवाले १८ क्षत्री वैश्य और शूद्रवीरों के धर्म स्वर्ग और यशके उत्पन्न करनेवालेहुये हे भरतर्षभ इसकेपीछे बड़े बीर कौरव और महारथी मद्रदेशियों से रक्षित बीर दुर्योधन ने भाइयों समेत युद्धमें आकर पाण्डव पांचाल और चंदेरी देशियों समेत सात्विकीकेसाथ १६। २० युद्ध करनेवाले कर्णको चारों ओरसे रक्षित किया फिर कर्णने भी तीक्ष्णधारवाले बाणों से बड़ीभारी सेनाको मारकर २१ उत्तम उत्तम रथियोंको मर्द्दन करके युधिष्ठिरको पीड़ामानकिया हजारों शत्रुओंको वस्त्रशस्त्र शरीर और प्राणों से पृथक्कर २२ स्वर्ग और यश को स्पर्श करके अपने शूरवीरोंको प्रसन्नकिया हे श्रेष्ठ इसरीति से मनुष्य हाथी और घोड़ोंका नाश करनेवाला युद्ध कौरव और सृञ्जियों में देवासुरों के युद्ध के समान हुआ २३॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिपरस्परयुद्धेअष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८॥

उनचासवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मनुष्यों का नाश करनेवाले कर्णने पांडवों की उस सेनामें जाकर राजा युधिष्ठिरको जैसे अचेत किया वह सब मुझसे वर्णनकरो १ युद्धमें पाण्डवों के कौन २ से बड़े बीरों ने कर्णको रोंका और अधिरथी कर्ण ने कौन २ से वीरोंको मथकर युधिष्ठिरको पीड़ितकिया २ संजयबोले कि शत्रुओंका विजय करनेवाला कर्ण सन्मुख वर्त्तमान पाण्डवोंको जिनमें मुख्य धृष्टद्युम्नथा देखकर शीघ्रही पांचालके सन्मुख दौड़ा ३ विजयसे शोभायमान पांचाल शीघ्र ही उससन्मुख दौड़नेवाले महात्माके सन्मुख ऐसेगये जैसे कि हंस सन्मुखजाते हैं ४ इसकेपीछे दोनों ओरसे हजारों शंखों के चित्तरोचक शब्द प्रकटहुये और

भेरियोंके भयानक शब्द होनेलगे ५ तब नानाप्रकारके बाणोंका गिरना और हाथीघोड़े वा रथोंके शब्द और भयकारी वीरोंके सिंहनाद उत्पन्नहुये ६ पर्वत वृक्ष और समुद्रसमेत पृथ्वी वायु और बादलोंसमेत आकाश अथवा सूर्य्य, चन्द्रमा ग्रह नक्षत्रादिक समेत स्वर्ग यहसब प्रत्यक्षमें घूमनेलगे ७ सब जीवमात्र उस शब्दको इसप्रकारका मानकर घातकरनेसे बन्दहुये और छोटे २ जीव तो भयभीत होकर मरगये ८ इसकेपीछे अत्यंत क्रोधयुक्त कर्णने शीघ्रही अस्त्रको प्रकटकरके पाण्डवीसेनाको ऐसे मारा जिसप्रकार आसुरी सेनाको इन्द्रमारता है ९ बाणों को छोड़तेहुये उसकर्णने पांडवी सेनामें घुसकर प्रभद्रकोंके बड़े २ सतहत्तर बीरों को मारा १० इसके पीछे उस महारथी कर्णने सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्णधार पच्चीस उत्तम बाणों से पच्चीसही पांचालों को मारा ११ फिर उसबीरने सुनहरी पुंखवाले शत्रुओं के चीरनेवाले नाराचों से हजारों चंदेरी देशियों को भी मारा १२ हे महाराज इसके पीछे पांचालों के रथसमूहों ने इसरीति के बुद्धिसे बाहर कर्म करनेवाले कर्णको चारों ओरसे घेरलिया १३ फिर तो सूर्य के पुत्र महात्मा कर्ण ने दुस्सह पांचविशिखों को धनुषपर चढ़ाकर पांच पांचालोंको मारा १४ अर्थात् हे भरतर्षभ युद्धमें भानुदेव, चित्रसेन सेनाबिन्दु, तपन, शूरसेन इनपांचालोंको मारा १५ उस युद्धमें शूरबीर पांचालों के मरनेपर पांचालों में बड़ा हाहाकारहुआ १६ हे महाराज तबतो पांचालों के दश महारथियों ने कर्ण को चारोंओरसे घेर लिया उससमय भी कर्णने शीघ्रही बाणोंसे उनको मारा १७ इसके पीछे चक्र के रक्षक दुर्जय कर्णकेपुत्र सुखेन और सत्यसेनने कर्णको त्यागकर युद्ध किया १८ फिर कर्णके पुत्र पृष्ठरक्षक वृषसेनने कर्णको पीछेकी ओरसे रक्षितकिया १९ कवच और शस्त्रों के धारण करनेवाले धृष्टद्युम्न, सात्विकी, द्रौपदी के पुत्र, भीमसेन, जन्मेजय, शिखण्डी और बड़े बीर प्रभद्रक २० चन्देरी, केकय, पांचालदेशी, नकुल, सहदेव और मत्स्यदेशी शूरबीर यह सब मारने के इ उस प्रहार करनेवाले कर्ण के सन्मुख दौड़े २१ और नानाप्रकारकी व इस कर्णको ऐसा मर्द्दन किया जैसे कि वर्षाऋतुमें बादल पर्व्वतको हैं २२ इसके पीछे पिताके चाहनेवाले प्रहारकर्त्ता कर्ण के पुत्रोंने अन्य २ वीरोंने उन सब वीरोंको रोका २३ सुसेन भल्लसे भी काटकर और सात नाराचों से भीमसेन को छातीपर घायल

इसकेपीछे भयानक पराक्रमी भीमसेन ने बड़े दृढ़ दूसरे धनुषको लेकर अपने बाणसे सुसेनके धनुष को २५ काटकर क्रोधसे युक्त नाचते हुये भीमसेनने दश बाणों से उसको घायल किया और बड़ी शीघ्रतासे कर्णको भी तिहत्तर बाणों से घायल किया २६ और देखनेवाले मित्रोंके मध्यमें कर्णके पुत्र भानुसेनको घोड़े सारथी रथ शस्त्र और ध्वजासमेत दशबाणोंसे गिरादिया २७ फिर क्षुरप्रसे कटाहुआ उसका वह प्रकाशमान शिर ऐसा शोभित मालूमहुआ जैसे कि नालसे जुदाहुआ कमल होताहै २८ भीमसेनने कर्णके पुत्रको मारकर आपके शूरवीरोंको फिर पीड़ामान करके कृपाचार्य्य और कृतवर्मा के धनुषोंको काटकर उनकोभी व्याकुलकिया फिर दुश्शासनको तीनबाणसे और शकुनीको छः लोहे के बाणों से घायलकरके उलूक और पत्री इनदोनों को विरथकिया हाय सुसेन को माराहै ऐसा कहतेहुये भीमसेनने शायकको लिया तबकर्णने उसके उसबाण को काटकर तीन बाणों से उसको भी घायल किया २९ । ३१ इसकेपीछे भीमसेनने सुन्दर पर्व्ववाले बाणको लेकर सुसेनके ऊपरछोड़ा फिर कर्णने उसबाण को भी काटा ३२ इसके पीछे पुत्रको चाहते निर्दय कर्ण ने मारने की इच्छासे तिहत्तर बाणों से निर्दय होकर भीमसेन को फिर घायलकिया ३३ फिर सुसेनने बड़े भारवाहक उत्तम धनुष को लेकर पांच बाणों से नकुलको दोनोंभुजा और छातीपर घायलकिया ३४ तब नकुलभी भारसहनेवाले बीसबाणोंसे उसकोघायल करके बड़े शब्दको गर्जा और कर्णकेभयको उत्पन्नकिया ३५ फिर महारथी सुसेननें शीघ्रगामी तीक्ष्ण दशबाणोंसे उसको घायलकरके शीघ्रही क्षुरप्रसे उस के धनुषको काटा ३६ इसके पीछे क्रोधसे भरेहुये नकुलने दूसरे धनुषको लेकर युद्धमें नौबाणोंसे सुसेनको रोंककर ३७ उस शत्रुहन्ताने बाणोंसे दिशाओंको ढककर इसके सारथीको घायलकिया फिर सुसेनको तीनबाणसे ३८ और तीन भल्लों से उसके बड़े दृढ़ धनुषके तीनखण्ड करदिये इसकेपीछे क्रोधयुक्त सुसेनने दूसरे धनुषको लेकर ३९ साठबाणोंसे नकुलको घायलकरके सातबाणोंसे सहदेव को छेदा परस्परके युद्धमें शीघ्रतापूर्वक शायक मारनेवाले वीरोंका युद्ध देवासुरों के युद्धके समानहुआ फिर सात्विकी तीन बाणों से वृषसेन के सारथीको मारकर ४० । ४१ भल्लसे उसके धनुषको काट घोड़ों को भी सातबाणों से मारा एकबाणसे ध्वजाको काटकर तीनबाणोंसे उसको भी हृदयपर घायलकिया ४२

इसके पीछे एकमुहूर्त्त अपने रथपर अचेतहोकर फिर उठखड़ाहुआ युद्ध में सात्विकीके हाथसे सारथी घोड़े रथ और ध्वजासे रहित कियाहुआ वह वृषसेन ४३ सात्विकी के मारनेकी इच्छासे ढाल तलवार बांधकर सात्विकी के सन्मुख गया उस शीघ्रतासे आनेवालेवृषसेनकी ढाल तलवारको सात्विकी ने ४४ वाराहकर्णनाम दशबाणोंसे काटा और दुश्शासनने उस रथ और शस्त्रसेहीन वृषसेनको देखकर ४५ अपने रथपर सवारकरके शीघ्रही दूसरे रथपर सवारकिया इसके पीछे महारथी वृषसेन ने दूसरे रथपर सवार होकर ४६ तिहत्तरबाणोंसे द्रुपदके पुत्रोंको और पांचबाणोंसे सात्विकीको चौंसठ बाणोंसे भीमसेनको पांचसे सहदेवको ४७ तीनबाणोंसे नकुलको सातबाणोंसे शतानीकको दशबाणसे शिखण्डीको और सौ बाणोंसे धर्म्मराजको घायलकिया ४८ हे राजा उस धनुषधारी कर्ण के पुत्रने इन और अन्य २ शूरवीरों को पीड़ामानकिया ४९ इसकेपीछे उस अजेयने युद्ध में कर्णके पृष्ठभागको रक्षितकिया फिर सात्विकी ने नवीन लोहे के नौ बाणों से दुश्शासनको ५० सारथी घोड़े और रथसे विहीनकरके तीनबाणसे उसके ललाट को घायलकिया फिर वह दुश्शासन बुद्धिके अनुसार अलंकृत दूसरे रथपर सवार होकर ५१ कर्णके बलको बढ़ाताहुआ पाण्डवोंके साथ युद्ध करनेलगा इसीप्रकार धृष्टद्युम्नने दश बाणों से कर्णको घायलकिया ५२ द्रौपदीके पुत्रोंने तिहत्तर बाणोंसे सात्विकीने सात बाणों से भीमसेनने चौंसठ बाणोंसे सहदेवने सात बाणों से नकुलने तीन सौ बाणसे शतानीकने सातबाणसे ५३ शिखण्डीने दशबाणों से और बीर धर्म्मराज ने सौ बाणों से घायल किया ५४ हे राजेन्द्र विजयाभिलाषी इन बीरों ने और अन्यबीरोंने उस महायुद्धमें बड़ेभारी धनुषधारीको पीड़ामानकिया ५५ फिररथसे घूमकर उसशत्रुविजयी बीर कर्ण ने विशिखनाम दश २ बाणोंसे प्रत्येक को घायलकिया ५६ हे महाबाहो हमने महात्मा कर्ण के अस्त्रबल और हस्तलाघवताको देखकर बड़ा आश्चर्य्य किया ५७ क्रोधसे बाणों को लेते चढ़ाते और मारतेहुये कर्णको नहीं देखा परन्तु शत्रुओं को मृतकहुआ देखा ५८ उससमय तीक्ष्णधारवाले बाणों से पृथ्वी स्वर्ग दिशा और आकाश भर व्याप्त होगया उस स्थानपर आकाश लालबादलों से व्याप्त होनेके समान परिपूर्ण होगया ५९ उससमय धनुष हाथमें लिये नाचताहुआ प्रतापवान् कर्ण जिन २ के हाथ से घायलहुआथा उन उन को एकएक करके तिगुने बाणों से

घायलकिया ६० फिर हज़ारबाणों से उनको घायलकरके बड़े वेगसे गर्जा इसके पीछे घोड़े रथ सारथी समेत वह सबलोग घायल हो होकर हटगये ६१ शत्रुओं का घायल करनेवाला कर्ण बाणोंकी वर्षा से उनबड़े २ धनुषधारियों को मथकर परस्पर मर्द्दनरूप पीड़ासे रहितहोकर हाथियों की सेनाओंमें आया ६२ वहां उस कर्णने मुख न मोड़नेवाले चन्देरी देशियों के तीनसौ रथों को मारकर तीक्ष्ण धारवाले बाणों से युधिष्ठिरको घायलकिया ६३ इसकेपीछे हे राजा सब पाण्डव सात्विकी और शिखण्डी जोकि राजाको कर्णसे रक्षा कररहेथे उन सबनेआकर युधिष्ठिरको चारोंओरसे रक्षित किया ६४ उसीप्रकार सावधान शूरवीर महाधनुषधारी आप के सब युद्धकर्त्ताओं ने युद्धमें दुर्ज्जय कर्णको चारोंओर से रक्षित किया ६५ हे राजा फिर नानाप्रकारके बाजों के शब्द प्रकटहुये और सन्मुख गर्जनेवाले वीरों के सिंहनाद उत्पन्न हुये ६६ इसकेपीछे निर्भय पाण्डव और कौरव फिर सन्मुख हुये पाण्डवों का मुख्य युधिष्ठिर था और हमारा मुख्य अग्रगामी कर्ण था ६७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेनवचत्वारिंशोऽध्यायः ४९ ॥

पचासवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके पीछे हजारों रथ घोड़े हाथी और पत्तियों समेत कर्ण उससेनाको चीरकर युधिष्ठिरके सन्मुखगया १ वहां कर्ण निर्भयता पूर्व्वक शत्रुओं से संतप्त होकर नानाप्रकारके हजारों शस्त्रोंको काटकर सैकड़ों महाउग्र बाणों से शत्रुओंको घायल किया २ कर्णने उनके शिर जंघा और भुजाओंको काटा तब वह घायल और मृतक होकर पृथ्वीपरपड़े और बहुतसे भागगये ३ फिर सात्विकीके कहनेपर द्राविड़ निषाद और शूरवीर पत्तीलोग युद्धमें मारनेकी इच्छासे कर्णके सन्मुखगये ४ वह लोगभी कर्णके हाथसे शायक और भुजाओंसे रहित होकर मारेगये और एकसाथही पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि टूटाहुआ तालका वन गिरपड़ताहै ५ इसरीति से युद्धभूमिमें दिशाओंको व्याप्तकरते सैकड़ों और हजारों शूरवीर मृतक होकर पृथ्वीपर वर्त्तमानहुये इसके पीछे पांडव और पांचालोंने मृत्युके समान सूर्य्यके पुत्र कर्णको ऐसे रोका जैसे कि मन्त्र और औषधियोंके द्वारा रोगको रोकते हैं ६ । ७ वहकर्ण उनको भी मर्द्दनकरके फिर युधिष्ठिर

केपास ऐसे पहुँचा जैसे कि मंत्र वा औषधियोंके कर्मको उल्लंघन करनेवाला महा कठिन रोगहोता है ८ राज्य के अभिलाषी पाण्डव पांचाल और केकयलोगों से रोकाहुआ वह कर्ण उल्लंघन करनेको ऐसे समर्थ नहींहुआ जैसे कि काल ब्रह्मज्ञानीको नहीं उल्लंघन करसक्ता है ९ इसके पीछे समीप वर्त्तमान शत्रुविजयी रोकेहुये कर्ण से वह क्रोधसे रक्तनेत्र युधिष्ठिरबोले १० हे वृथा दीखनेवाले सूत पुत्र कर्ण मेरे बचनको सुन तू सदैव युद्धमें महाबेगवान् अर्ज्जुन से ईर्षा करताहै ११ और दुर्य्योधन के मतमें होकर सदैव हमलोगों को पीड़ादेता है तेरा तेज बल पराक्रम और पाण्डवोंके साथमें जो शत्रुताहै १२ उस सबको तू बड़ी वीरता में नियत होकर दिखला अब मैं बड़े युद्धमें तेरे युद्धके निश्चयका नाश करूंगा १३ हे महाराज पाण्डव युधिष्ठिरने कर्णसे ऐसे बचन कहके सुनहरी पुंख वाले दशबाणों से उसको घायलकिया १४ हे भरतबंशी शत्रुओंके विजयी कर्ण ने हँसकर विषदन्तनाम दशबाणों से उसको घायलकिया १५ हे श्रेष्ठ कर्ण के हाथसे घायल वह युधिष्ठिर उसको तुच्छ करके ऐसा क्रोधयुक्त हुआ जैसे कि हव्यके कारणसे अग्नि प्रज्वलित होती है १६ प्रलयकाल करनेकी इच्छावाली ज्वालाओंकी मालाओंसे व्याप्त युधिष्ठिर का शरीर ऐसा दिखाई दिया जैसे कि प्रलयकाल में कामनाओंका भस्मकरनेवाला दूसरा संबर्त्तक अग्नि होताहै १७ हे राजेन्द्र इसके पीछे वह सेनाके मनुष्य जो कि अत्यन्त प्रकाशित शस्त्रों के धारण करनेवाले थे और जिनके प्रकाशमान वस्त्र और माला गिरपड़ी थीं वे दशोदिशाओं को भागे १८ उसकेपीछे सुवर्णसे जटित बहुत बड़ेधनुषको टंकार कर पर्व्वतोंके भी विदीर्ण करनेवाले बहुत तीक्ष्णबाणोंको चढ़ाया १९ इसकेपीछे राजाने कर्णके मारने की इच्छासे शीघ्र कर्णतक खींचेहुये यमराजके दण्डकी समान बाणको छोड़ा २० फिर वह उस वेगवान्के हाथसे छूटाहुआ बिजली के समान शब्दायमान बाण अकस्मात् उस महारथी कर्णके बाईंकोख में नियत हुआ २१ तब वह महाबाहु उसबाण से पीड़ितहोकर रथपर धनुषको छोड़कर अचेत होगया २२ इसके पीछे दुर्य्योधनकी बड़ीसेनाने कर्णको उसदशामें विपरीत चेष्टायुक्त देखकर बड़ा हाहाकार किया २३ हे राजा युधिष्ठिरके पराक्रमको देखकर पाण्डवोंका सिंहनाद और क्रीड़ापूर्व्वक किलकिला शब्द प्रकटहुआ २४ फिर बड़े पराक्रमी कर्णने थोड़ेही काल में सचेतहोकर राजा के मारने का म-

नोरथकिया २५ और उस साहसी ने सुवर्णजटित विजयनाम धनुषको टंकारकर तीक्ष्ण धारवाले बाणों से पाण्डवों को घायल किया २६ इसके पीछे युद्ध में महात्मा राजाके चक्रकेरक्षक पांचालदेशी चंद्रदेव और दण्डधार को दो क्षुरप्रों से घायल किया २७ धर्म्मराजके वह दोनों बड़ेवीर दोनों पहियोंकीओर रथके समीप ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि चन्द्रमाकेपास पुनर्वसु नक्षत्र शोभायमान होते हैं २८ युधिष्ठिरने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से कर्णको फिरछेदा और सुसेन वा सत्यसेन को तीनबाणों से घायल किया २९ शल्यको नब्बेबाणों से और कर्ण को तिहत्तर बाणों से पीड़ामान किया और उनके उन रक्षकों को सीधे चलनेवाले तीन २ बाणों से घायल किया ३० इसकेपीछे धनुषको चलायमान करताहुआ वह कर्ण बहुतहँसा और भल्लसे राजाको व्यथितकर साठबाणों से घायल करके गर्जा ३१ इसके पीछे युधिष्ठिर पाण्डवके बड़े २ वीर क्रोधयुक्त होकर युधिष्ठिर की रक्षाकरने को कर्ण के सन्मुख दौड़े और बाणों से उसको पीड़ामान किया ३२ सात्विकी, चेकितान, युयुत्सु, पाण्ड्य, धृष्टद्युम्न, द्रौपदीके पुत्र, प्रभद्रक ३३ नकुल, सहदेव, भीमसेन, शिशुपालकेपुत्र, कारुष्य, मत्स्य, कैकय, काशी, कोशिल इनदेशों के शेषशूरवीरों ने ३४ सुसेनको घायलकिया और पांचालदेशी जनमेजयने शायकों से कर्ण को पीड़ित किया ३५ बाराह, कर्ण, नाराच, नालीक, वत्सदन्त, विपाट, क्षुरप्र, चुटका, मुख ३६ और नाना प्रकारके उग्रशस्त्रों से और रथ हाथी घोड़े और अश्व सवारों से कर्णको घेरकर मारने की इच्छासे सन्मुखदौड़े ३७ सबप्रकार करके पाण्डवों के उत्तम शूरवीरों से घिराहुआ होकर ब्रह्मास्त्रको प्रकट करतेहुये उस कर्ण ने बाणों से दिशाओं को व्याप्त करदिया ३८ इसकेपीछे बाणरूप बड़ी अग्नि और पराक्रमरूप बड़ी उष्णता रखनेवाला अग्निरूप कर्ण पाण्डवरूपी वनको भस्मकरताहुआ इधर उधर भ्रमणकरने लगा ३९ फिर बड़े धनुषधारी वीरकर्णने हँसकर महाअस्त्रोंको चढ़ाकर बाणों से महाराजा युधिष्ठिर के धनुषको काटा ४० इसके पीछे कर्णने एक पलभरमेंही नब्बे बाणों को चढ़ाकर युद्ध में राजा के कवच को छेदा ४१ उससमय वह रत्नजटित सुवर्ण से खचित कवच पृथ्वीपर गिरताहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसा कि बिजलीका रखनेवाला बादल वायुसे ताड़ित होकर सूर्य्य से चिपटाहुआ होताहै ४२ उस महाराज के शरीरसे गिराहुआ अपूर्व्व

रत्नों से अलंकृत वह कवच ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि रात्रिके समय बादलों से रहित आकाश होता है ४३ इसके पीछे बाणों से टूटे कवच रुधिरसेभरेहुये उसराजाने केवल लोहेकी बनीहुई शक्तिको कर्णके ऊपरफेंका४४ कर्णने उस अग्निरूपी शक्तिको आकाशमेंही सात बाणों से काटा और वह शक्ति पृथ्वीपर गिरपड़ी ४५ इसके पीछे पीछे पाण्डव युधिष्ठिर चार तोमरों से कर्णको दोनोंभुजा ललाट और हृदयपर घायलकरके बड़ीप्रसन्नतासे गर्जा ४६ फिर रुधिरभरे क्रोधयुक्त सर्प के समान श्वास लेनेवाले कर्णने भल्लसे ध्वजाको काटकर तीन बाणों से पाण्डव युधिष्ठिरको घायलकिया ४७ और उसकेदोनों तूणीरोंको काटकर रथको तिल तिलके समान चूर्ण करडाला जिन कृष्णवर्ण बालरखनेवाले दत्तवर्ण घोड़ों ने युधिष्ठिरको सवार किया ४८ राजा उनघोड़ों के रथपर चढ़कर मुखमोड़कर घरको चलदिया इसरीतिसे वह युधिष्ठिर जिसका सारथी और पीछे रहनेवाला मरगया था वह हटगया ४९ फिर वह महाखेदित चित्तहोकर कर्ण के सन्मुख होनेको समर्थ नहींहुआ फिर कर्ण ने पाण्डव युधिष्ठिरके पासजाकर ५० वज्र अंकुश मत्स्य ध्वजा कच्छप और कमल आदिके चिह्नवाले हाथसे उसको पकड़ना चाहा ५१ और अपने पवित्र होनेको हाथसे कन्धेको छूकर बलसे पकड़ना चाहाही था कि कुन्ती का वचन उसको स्मरण होआया ५२ तब शल्यने कहा कि हे कर्ण इस उत्तम राजाको मतपकड़ो वह पकड़तेही तुझको भस्म न करडाले ५३ हे राजा इस बातके सुनतेही वह कर्ण हँसा और पाण्डवों की निन्दाकरता हुआ बोला बड़ेकुलमें उत्पन्न क्षत्रीधर्म में नियत होकर ५४ इसबड़े युद्धमें भयभीतता से प्राणोंकी रक्षाकरते युद्धकोत्यागकर कैसे जातेहो इससे मेरे मतसे आपक्षत्रीधर्म में कुशल नहीं हो ५५ आप ब्राह्मणों के समूहों में वेदपाठ और यज्ञ करने में योग्यहो हे कुन्ती के पुत्र युद्ध मतकरो और वीरों के सन्मुख मतहो ५६ इनको अप्रिय मतकहो बड़े युद्धमें मत जाओ उस बड़े वीरने इसरीतिसे कहकर पाण्डवको छोड़ ५७ पाण्डवीसेना को ऐसेमारा जैसे वज्रधारी इन्द्र आसुरी सेनाको मारताहै हे राजा इसके पीछे लज्जा युक्त राजा युधिष्ठिर शीघ्रही हटगया ५८ तदनन्तर उसअजेय राजा को हटा हुआ मानकर आगे लिखे हुये वीर इसके पीछे २ चले चंदेरी देशवाले पांडव पांचाल महारथी सात्विकी ५९ शूर द्रौपदी के पुत्र नकुल सहदेव इत्यादि त-

दनन्तर युधिष्ठिरकी सेनाको फिराहुआ देख कर ६० अत्यन्त प्रसन्न चित्त कर्ण कौरवों समेत पीछेकी ओरसेचला और धृतराष्ट्रके पुत्रोंके भेरीशंख मृदंग धनुष ६१ और सिंहनादों के शब्दहुये हे कौरव्य महाराज फिरयुधिष्ठिरने शीघ्रही ६२ श्रुतकीर्त्तिके रथपर चढ़कर कर्णके पराक्रमको देखा फिर धर्मराज अपनी सेना को छिन्न भिन्न देखकर ६३ महाक्रोधितहो अपने शूरवीरोंसे बोला कि तुम कैसे खड़ेहो इनको क्योंनहींमारते तबवह राजाकी आज्ञापाकर पांडवोंके सब महारथी ६४ जिनमें अग्रगामी भीमसेनथा आपके पुत्रों के सन्मुख दौड़े तब वहां शूरवीरोंके बड़े कठोर शब्द हुये ६५ रथ हाथी घोड़े और पत्तियों के जहां तहां शब्द होनेलगे फिर उठो घायलकरो सन्मुख होजाओ दौड़ो ६६ इसप्रकारकी परस्पर में वार्त्ता करतेहुये शूरवीरोंने उस बड़े युद्धमें एकने एकको मारा और आकाश में बाणोंके कारण घटासी छागई ६७ परस्पर में मारनेवाले लौटे हुये उत्तम पुरुषोंके हाथसे युद्धमें ध्वजापताकाओंसे खंडित घोड़े सारथी और शस्त्रोंसे रहित एक २ शरीरके अंगोंसे चूर्णित राजालोग मृतकहोकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े ६८ जैसे कि टूट२ कर पहाड़ों के शिखर गिरपड़ते हैं इसी प्रकार सवारों समेत ६९ उत्तम २ हाथी मृतक होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि वज्र से टूटेहुये सारोह भूषण और कवचों से संयुक्त पर्व्वत गिरते हैं ७० हजारों सवारों समेत घोड़े जिनके बहुत से शूरवीर मारेगये वहभी पृथ्वीपर गिरपड़े और जिनके शस्त्र अत्यन्त टूटगये वह रथहीन होकर रथोंसेही मारेगये ७१ और युद्धमें सन्मुख युद्धकरनेवाले वीरोंसे पत्तियों के हजारों समूह मारेगये बड़ी लंबी लाल आंख और चन्द्रसा कमलके समान मुख रखनेवाले ७२ युद्ध कुशल पुरुषों के उत्तम शिरोंसे सब ओरमें पृथ्वी आच्छादित होगई और जो २ काम पृथ्वीपर हुआ उसका शब्द मनुष्योंने आकाशमें भी सुना ७३ उत्तमगीत और बाजों समेत अप्सराओंके समूह हजारों वीरलोगों को ७४ विमानों में बैठाकर लियेजातेथे उस बड़े आश्चर्य को प्रत्यक्षमें देखकर स्वर्गकीअभिलाषासे ७५ अत्यन्तप्रसन्न चित्त शूरवीरोंने बड़ी शीघ्रतासे परस्परमें मारा और रथियों ने रथों समेत बड़ी वीरतासे अद्भुत युद्धकिया ७६ पत्तियोंने पत्तियोंके साथ हाथियोंने हाथियों के साथ घोड़ोंने घोड़ोंके साथमनुष्य और हाथियोंका नाशकारक युद्धकिया ७७ इस रीति के युद्ध जारीहोने और धूलसे सेनाके ढकजाने पर कचाकच युद्ध

हुआ और एकने एकको वा अपनोंने अपनेको मारा और अन्योन्यमें बालों का पकड़ना दांतोंसे काटना नखोंसे विदीर्णकरना ७८ मुष्टि प्रहारकरना भुजा से भुजाको तोड़ना यह सब युद्ध पाप और प्राणों के नाशकारीहुये इस रीतिसे हाथी घोड़े और मनुष्योंका नाशकारक युद्ध जारीहोनेपर ७९ मनुष्य हाथी और घोड़ों के शरीरों से रुधिरकी ऐसी नदी बह निकली जिसने हाथी घोड़े और मनुष्योंके कटेगिरे शरीरोंको पृथ्वीपर बहाया ८० मनुष्य हाथी और हाथियोंके परस्पर जुटजाने पर घोड़े हाथी और सवारोंका रुधिर रूप जलरखनेवाली ८१ महाघोर मांस रुधिर मज्जारूप कीचसे संयुक्त नदी मनुष्य घोड़े और हाथियोंके शरीरों की बहानेवाली और भयभीतोंको भयकी करानेवालीथी बिजयाभिलाषी वीरों ने उसअपार नदीके पारको पाया ८२ और कोई २ उछलते डूबतेहुये स्नान करने के अभिलाषीहुये हे भरतर्षभ उन भयभीत युक्त शरीरवाले उत्तम रक्तवर्ण कवच और शस्त्रों के धारण करनेवालोंने ८३ उस नदी में स्नान किया और पानकरतेही कुम्भलाकर लज्जित हुये हमनेरथ घोड़े मनुष्य हाथी भूषण ८४ कपड़े और टूटेहुये कवचोंको पृथ्वी दिशा और आकाश समेत बहुधा रक्तवर्णही देखा ८५ हे भरतबंशी रुधिरके गंधस्पर्शरस और कठिनतारूप समेत शब्दोंसे ८६ बहुतसी सेनामें व्याकुलता प्राप्तहुई तब भीमसेन औरसात्विकी जिनमें मुख्यथे वह वीर उसअत्यन्त घायल और मृतकसेनाके सन्मुख फिरगये ८७ उससमय उनचढ़ाई करने वाले वीरोंका वेग असह्य हुआ ८८ हे राजा आपके पुत्रों के समेत बड़ी सेनाके मुख मुड़गये और मनुष्य घोड़ोंसे व्याकुल वह आपकी सेना रथ घोड़े और हाथियोंसे रहित होकर ८९ टूटीढाल टूटेकवच और खंडितशस्त्र धनुषवाली चारों ओरसे ऐसे तिर्र बिर्र होकरभागी ९० जैसे कि वनमें सिंहसे पीड़ित हाथियों के समूह व्याकुल होकर भागते हैं ९१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेपंचाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

संजयबोले कि हेमहाराज आपकी सेना के सन्मुख दौड़नेवाले पांडवों को देखकर दुर्योधनने सेनाको हरप्रकारसे रोका १ हे भरतर्षभ उस दुर्योधनने बड़े२ शूरवीरों को और सेना को अनेक प्रकारसे रोका परन्तु आपके पुत्रकेभी पुका-

रनेसे वहलोग नहीं लौटे २ तबउसके पीछे पक्ष प्रपक्ष समेत सौबलका पुत्रशकुनी और शस्त्रधारी कौरव युद्धमें भीमसेनके सन्मुख गये ३ कर्णभी राजाओं समेत धृतराष्ट्रके पुत्रोंको देखकर मद्रके राजासे यहबोला कि तुम भीमसेनके रथके समीप चलो ४ कर्णके इस वचन को सुनकर राजा मद्रने हंसवर्णके उत्तम घोड़ों को वहां पहुंचाया जहांकि भीमसेनथा ५ हेमहाराज युद्धको शोभा देने वाले कर्णके प्रेरित थोड़े भीमसेन के रथको पाकर अच्छे प्रकारसेभिड़े ६ हे भरतर्षभ क्रोधयुक्त भीमसेनने कर्णको आताहुआ देखकर उसके मारनेका उपाय विचारा ७ और बीरसात्यिकी और धृष्टद्युम्नसे बोला कि तुम धर्मात्मा राजा युधिष्ठिरकी रक्षाकरो ८ क्योंकि वह मुझको देखकर बड़े सन्देहको न करे और मुझपर कर्ण चला आताहै ९ सोमैं आज उसको युद्ध में बधकरके अपने जय के होने की बिधिकरताहूं १० मैं तुमसे सत्यसत्य कहताहूं कि घोर युद्ध के द्वारा किलो मैंही कर्ण को मारूंगा अथवा कर्ण मुझको मारेगा ११ अब मैं राजाको आपलोगों के सुपुर्द करताहूं तुम सबलोग अनेक प्रकारसे उसकी रक्षाके उपाय को करो १२ वह महाबाहु भीमसेन इसप्रकार धृष्टद्युम्न से कहकर बड़े शब्द से सिंहनाद को करके दिशाओं को शब्दायमान करताहुआ कर्ण के रथकी ओर गया १३ इसके पीछे मद्रदेशियों का स्वामी समर्थ शल्य युद्ध के चाहनेवाले शीघ्रतापूर्वक आनेवाले भीमसेन को देखकर कर्ण से बोला १४ हे कर्ण इस अत्यन्त क्रोधयुक्त बहुतकाल से दबेहुये क्रोधको तेरेऊपर निकालने की इच्छा वाले पांडुनन्दन भीमसेन को देखो १५ हे कर्ण पूर्व्व में मैंने अभिमन्यु और घटोत्कच के मरनेपर भी इसका इसप्रकार का रूप नहीं देखाथा जैसा कि अब देखने में आताहै १६ यह क्रोधयुक्त तीनों लोकों के भी हटाने में समर्थ है इससमय इसने प्रलयकालकी अग्नि के समान देदीप्यमान अपने रूप को धारण कियाहै १७ संजय बोले हे राजा शल्यके इसप्रकारके कहतेही कहते में महाविकरालरूप भीमसेन कर्ण के सन्मुख वर्त्तमानहुआ इसके पीछे हँसताहुआ कर्ण उस सन्मुख आयेहुये भीमसेन को देखकर शल्य से यह बचन बोला १८ । १९ हे मद्रदेश के स्वामी अब तुमने भीमसेनके विषय में जो वचन मुझसे कहा वह सत्यहै इसमें सन्देह नहीं है २० यह भीमसेन बड़ा शूरवीर क्रोधमें भरा शरीरसे असादृश्य पराक्रमियों में भी अधिक पराक्रमी है २१ विराट नगर में गुप्त रहने

वाली द्रौपदी के अभीष्ट चाहनेवाले ने केवल भुजबलकेही द्वारा २२ गुप्त उपाय में आश्रित और प्रवृत्त होकर कीचक को उसके सब समूहों समेत मारा अब कवचधारी क्रोध से ब्याकुल यह भीमसेन दण्डधारी मृत्यु के संगभी युद्धकरने को समर्थहै फिर यह मेरे मनका अभिलाष बहुत कालसे होरहाहै कि मैं युद्ध में अर्जुन को मारूं अथवा अर्जुन मुझेमारे वह मेरा प्रयोजन भीमसेनके लड़ने से कदाचित् अभी होजांय क्योंकि भीमसेन के मरनेपर अथवा बिरथ करनेपर अर्जुन मेरे सन्मुख आवेगा यही मुझको श्रेष्ठ लाभहोगा २३। २४। २५। २६ अब यहां जो उचित समझतेहो उसको शीघ्रतासे करो बड़े तेजस्वी कर्ण के इस बचनको सुनकर २७ शल्य कर्ण से बोला कि हे महाबाहो तुम बड़े पराक्रमी भीमसेनके सन्मुखचलो २८ तुम भीमसेनको बिजयकरके अर्जुनको पाओगे जो तेरे चित्तका अभीष्ट बहुत कालसे हृदयमें बर्त्तमानहै २९ हेकर्ण वह अभीष्ट तेरा तुझको प्राप्तहोगा इसमें मिथ्या न होगा ऐसा कहनेपर फिर कर्ण शल्यसेबोला३० कि मैं युद्ध में अर्ज्जुन को मारूंगा वा अर्ज्जुन मुझको मारेगा तुम युद्ध में मनलगाकर वहांचलो जहां भीमसेनहै ३१ तबसंजयनेकहा हे राजा फिर शल्य रथ के द्वारा वहां गया जहांपर बड़े धनुषधारी भीमसेन ने आपकी सेना को भगायाथा ३२ हे राजेन्द्र इसके पीछे कर्ण और भीमसेन की सन्मुखता में तूरी और भेरी आदि बाजों के शब्द होनेलगे ३३ तदनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त पराक्रमी भीमसेन ने उसकी महाद्दुर्ज्जेय सेना को साफ और तीक्ष्ण नाराचों से दिशाओं में भगादिया ३४ हे महाराज धृतराष्ट्र इसकेपीछे भीमसेन और कर्ण का महाभयकारी कठिन रोमहर्षण युद्ध हुआ ३५ इसके पीछे एक क्षण-मात्र में ही भीमसेन कर्ण की ओर दौड़ा फिर सूर्य्य के पुत्र धर्म्मात्मा कर्ण ने उस आतेहुये भीमसेनको देखकर ३६ अत्यन्त क्रोधित होकर छातीपर घायल किया और बाणोंकी वर्षा से ढकदिया ३७ कर्ण के हाथसे छिदेहुये भीमसेनने भी कर्णको बाणों से ढककर टेढ़े पर्व्ववाले नौ बाणोंसे देहमें घायल किया ३८ फिर कर्णने बाणों से उसके धनुषको दो स्थानों से काटकर अत्यन्त तीक्ष्ण सब प्रकार के कवचों के काटनेवाले नाराच से उसकी छाती को घायल किया ३९ फिर मर्मों के जाननेवाले उस भीमसेन ने दूसरे धनुषको लेकर तीक्ष्ण बाणोंसे कर्णको ४० मर्म स्थलों में घायलकिया और पृथ्वी वा आकाश को कंपायमान

करताहुआ महा घोर शब्दको गर्जा ४१ फिर कर्णने उसको पच्चीस नाराचोंसे ऐसे घायल किया जैसे कि बनमें मतवाले हाथीको उल्काओं से घायल करते हैं ४२ इसकेपीछे शायकों से घायल शरीर क्रोधसे व्याकुल क्रोध और ईर्षा से लाल नेत्र करके उसके मारनेकी इच्छासे भीमसेन ने ४३ बड़े भारवाही पर्व्वतों के भी छेदनेवाने उग्रवाणको धनुषमें चढ़ाया ४४ और बड़े धनुषधारी वेगवान् वायुपुत्र भीमसेनने कर्णके मारने की अभिलाषा से कर्ण पर्य्यन्त धनुषको खैंच कर वह बाण चलाया ४५ पराक्रमी भीमसेन के हाथसे छूटेहुये बज्र और बिजली के समान शब्दायमान उस प्रबल वाणसे युद्धमें कर्णको ऐसे घायलकिया जैसे कि बज्रकावेग पर्व्वतको व्याकुल करके घायल करताहै ४६ हे कौरव्य वह सेनापति कर्ण भीमसेनके हाथसे घायल और अचेत होकर रथके बैठनेकेस्थान पर गिरपड़ा ४७ तबतो राजा मद्रकर्णको अचेत देखकर युद्धमें शोभादेनेवाले कर्ण को युद्धभूमि से दूरलेगया ४८ इसके पीछे कर्ण के विजय होनेपर भीमसेन ने दुर्य्योधनकी बड़ी सेनाको ऐसा भगाया जैसे कि पूर्व्वकाल में इन्द्र ने दानवों को भगाया था ४९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णोपयानोनामैकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

बावनवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय भीमसेन ने यह अत्यन्त कठिन कर्मकिया जिसने अपने हाथसे कर्णको रथके स्थानमें अचेत करके गिराया १ अकेला कर्णयुद्ध में सृंजियों समेत सब पाण्डवों को मारेगा हे संजय यहबात वारम्बार मुझसे दुर्य्योधन ने कही है २ युद्धमें भीमसेन के हाथसे बिजय कियेहुये कर्ण को देख कर मेरे पुत्र दुर्य्योधनने क्या किया ३ हे महाराज युद्धमें आपका पुत्र कर्णको मुखमोड़नेवाला देखकर अपने निज भाइयों से बोला कि ४ तुम्हारा भलाहो तुम शीघ्रजाकर कर्णको भीमसेन के महाकष्टरूपी अथाह समुद्र में डूबेहुयेकर्ण की सबओर से रक्षाकरो ५ राजाकी आज्ञापातेही वह सबलोग महाक्रोध युक्त होकर भीमसेन के सन्मुख ऐसेहुये जैसे कि अग्नि के सन्मुख पतङ्ग होते हैं ६ श्रुतवान्, दुर्द्धर, क्राथ, विवित्सु, विकट, सम, निषंगी, कवची, पाशी, नन्द, उपनन्द ७ दुष्प्रधर्ष सुबाहु, वाणवेग, सुवर्चस, धनुर्ग्राह्य, दुर्मद, जलसंध, शल,

सह, इनमहापराक्रमी रथोंसे रक्षित धृतराष्ट्रके पुत्रों ने भीमसेनको पाकर चारों ओर से घेरलिया ८ । ९ और नानाप्रकार के रूपवाले बाण समूहों को चारों ओरसे फेंका फिर वह महाबली भीमसेन ने उन्हों के हाथसे पीड़ामानहोकर१० उन आतेहुये आपके पुत्रों के पन्द्रह रथों समेत पचास रथियोंको मारा ११ इसके पीछे फिर क्रोधयुक्त भीमसेन ने भल्लसे विवित्सु के शिरको देहसे जुदाकिया और वह मरकर पृथ्वीपर गिरपड़ा १२ पूर्णचन्द्रमा के समान कुण्डलभी उसके शिरके साथही गिरा हे राजा तबतो उसके सबभाई उस शूरवीर अपने भाईको मराहुआ देखकर १३ युद्धमें भयानक पराक्रमी भीमसेन के सन्मुख गये इसके अनन्तर उस भयानक भीमसेनने उस महायुद्धमें दूसरे दो भल्लों से १४ आपके दोपुत्रोंके प्राणोंका हरणकिया हे राजा हवासे टूटेहुये वृक्षोंकेसमान देवकुमारों के समान वह विकट और सहनाम दोनोंभाई भी मरकर पृथ्वीपरगिरपड़े इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले भीमसेनने क्राथकोभी यमलोकमें पहुँचाया १५ । १६ अत्यन्त तीक्ष्ण नाराचका माराहुआ वह क्राथ पृथ्वीपर गिरपड़ा तब तो महा कठिन हाहाकार उत्पन्न हुआ १७ आपके धनुषधारी बीर बेटों के मरने और उनकी सेनाके चलायमान होनेपर फिर महाबली भीमसेनने १८ युद्ध में नन्द उपनन्द को यमलोक में पहुँचाया उसके पीछे वह आपके पुत्र भयभीत और व्याकुल १९ युद्धमें कालरूप भीमसेन को देखकर भागे फिर बड़ेदुःखी कर्ण ने आपके पुत्रों को मराहुआ देखकर २० फिर हंसबर्ण घोड़ों को वहांहीं चलाया जहांपर पांडव भीमसेनथा हे महाराज राजामद्रके चलायेहुये वह बेगवान् घोड़े २१ भीमसेन के रथको पाकर अच्छीरीति से भिड़े हे राजा धृतराष्ट्र युद्धमें कर्ण और पांडव भीमसेनका वह युद्धमहाकठिन घोररूप रुधिरका उत्पन्न करनेवाला हुआ फिर उन भिड़े हुये महारथियों को देखकर २२ । २३ मैंने बिचार किया कि यह युद्ध कैसे होगा इसके पीछे युद्धमें प्रशंसनीय भीमसेनने बाणों से २४ कर्ण को आपके पुत्रों के देखतेहुये ढक दिया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अस्त्रों के जाननेवाले कर्ण ने भी भीमसेनको २५ टेढ़े पर्व्ववाले नौभल्लों से पीड़ामान किया तब उस घायल महाबाहु भयानक पराक्रमी भीमसेनने २६ कानतक खैंचे हुये सात विशिखों से कर्णको पीड़ामान किया हे महाराज इसके पीछे विषैले सर्पकी समान श्वास लेनेवाले कर्ण ने २७ बाणोंकी बड़ी वर्षा से भीमसेन को

ढकदिया फिर महाबली भीमसेनने भी अपने बाणोंकी वृष्टिसे उस कर्णको ढक दिया २८ और कौरवों के देखतेहुयेगर्जा इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्णने दृढ़धनुष को लेकर तीक्ष्णधारवाले दशबाणों से भीमसेन को पीड़ामान करके तीक्ष्णधारवाले भल्लसे उसके धनुषको काटा इसके पीछे बड़े पराक्रमी महाबाहु कर्णके मारनेकी इच्छासे गर्जना करतेहुये भीमसेनने सुवर्ण वस्त्रों से अलंकृत कालदण्ड के समान घोर परिघ को लेकर फेंका कर्ण ने उस वज्र और बिजली के समान आते हुये परिघ को २९ । ३० । ३१ । ३२ विषैले सर्पों की समान बाणोंसे टुकड़े २ करदिया तबतो शत्रुसंतापी भीमसेन ने बहुत बड़े दृढ़ धनुष को लेकर ३३ कर्ण को मारे बाणों के आच्छादित करदिया उसके पीछे कर्ण और भीमसेनका ऐसा घोरयुद्ध हुआ ३४ जैसे कि परस्पर मारनेकी इच्छाकरने वाले महाबली बन्दरोंके राजाओंका युद्ध कटकटकर बारंबार होताहै हे महाराज इसके पीछे कर्ण ने दृढ़ धनुप को चढ़ाकर तीन बाण से ३५ भीमसेन को कर्ण मूलपर घायलकिया कर्ण के हाथसे अत्यन्त घायल महाबली भीमसेनने कर्ण के शरीरको छेदनेवाले घोर विशिखको हाथमें लेकर फेंका वह बाण उस कर्णके कवचमें घुस शरीरको छेदकर ३६।३७ पृथ्वीमें ऐसा समागया जैसे कि सर्प बामी में समाजाताहै उस कठिनघातसे महापीड़ित व्याकुल और अचेतके समान ३८ वह कर्ण रथपर ऐसा कंपितहुआ जैसे कि पृथ्वी के भूकम्पमें पर्व्वत हिलताहै हे महाराज इसकेपीछे क्रोध और व्याकुलता से कर्ण ने ३९ भीमसेन को पच्चीस नाराचों से घायलकिया और अनेक बाणों से देहको घायल करके एक बाणसे ध्वजाकोकाटा ४० और भल्लसे उसके सारथीको कालके वशकिया और शीघ्रही तीक्ष्णबाणोंसे उसके धनुषको काटकर ४१ हँसतेहुये कर्ण ने एकमुहूर्त्तमें सावधानीसे भयकारी कर्म करनेवाले भीमसेन को रथसे बिरथ करदिया ४२ हे भरतर्षभ वह वायुके समान रथसे विहीन हँसताहुआ महाबाहु भीमसेन गदाकोलेकर उस उत्तम रथसेकूदा ४३ और बड़े वेगसे दौड़कर भीमसेनने आपकी सेनाको उस गदासे ऐसा तिरबिर करदिया जैसे कि बादलोंको वायु छिन्नभिन्न करदेताहै ४४ फिर उस भयानकरूप शत्रुसंतापी सर्वज्ञ भीमसेनने ईर्षाके समान दांतरखनेवाले घातक सातसौ हाथियोंको भी छिन्नभिन्न करके ४५ बड़े पराक्रमसे उन हाथियों के जाबड़े आंख मस्तक कमर और मर्मस्थलों को घायलकिया ४६ इसके पीछे

सब हाथी भयभीत होकरभागे और फिर शत्रुओंकी ओरसे भेजेहुये अन्य सवारों समेत हाथियोंने उसको ऐसा घेरलिया जैसे कि सूर्य्यको बादल घेरलेताहै ४७ फिर उस पृथ्वीपर नियतने उन सातसौ हाथियोंको भी सवारशस्त्र और ध्वजाओं समेत ऐसा मारा जैसे कि इन्द्र बज्रसे पहाड़ोंको मारताहै ४८ इसके पीछे शत्रुओंके विजयी भीमसेन ने शकुनी के बड़े पराक्रमी बावन हाथियों को फिर मारा ४९ इसीप्रकार आपकी सेनाको कंपायमान करतेहुये पाण्डव भीमसेनने एकसौसे अधिक रथ और हजारों पत्तियोंको मारा ५० तब आपकी सेना महात्मा भीमसेनरूपी सूर्य्यसे संतप्तहोकर छिन्नभिन्न होगई ५१ हे भरतर्षभ भीमसेन के भयसे आपके शूरवीर भयभीत होकर युद्ध में भीमसेन को छोड़कर दशों दिशाओं को भागे ५२ तब शब्द करनेवाले चर्म के कवचधारी अन्य पांचसौ रथ रथियोंसमेत भीमसेनपर चारों ओरसे बाणोंकी वर्षाकरतेहुये सन्मुख आये ५३ भीमसेनने उन पांचसौ रथसमेत वीरोंको भी ध्वजा पताकाओं समेत अपनी गदासे ऐसा मारा जैसे कि असुरोंको विष्णु भगवान् मारते हैं ५४ इसके पीछे शकुनीके आज्ञावर्त्ती शूरोंके अंगीकृत शक्ति दुधारे खड्ग और प्रासोंके हाथमें रखनेवाले तीनहजार अश्वसवार भीमसेनके सन्मुखगये ५५ तब शत्रुहन्ता भीमसेनने नानाप्रकार के मार्गोंमें घूमघूमकर शीघ्रही सन्मुख जाकर बड़े वेग पूर्व्वक गदासे उन अश्वसवारोंको भी मारा ५६ हे भरतबंशी तब तो उन सब घायलों के ऐसे शब्द प्रकटहुये जैसे कि पत्थरों से घायलहुये हाथियों के शब्द होते हैं ५७ इसरीति से शकुनीके तीनोंहजार अश्वारूढ़ोंको मारकर दूसरे रथमें सवार हो क्रोधयुक्त भीमसेन कर्णके सन्मुखगया ५८ वहां उस कर्णने भी शत्रुविजयी धर्मपुत्र युधिष्ठिर को बाणों से ढककर सारथी को रथसे गिराया ५९ इसके पीछे वह महारथी युद्धमें सारथीसे रहित रथको देखकर भागा और कर्ण कंकपक्षोंसे जटित सीधे बाणोंको मारताहुआ उसके पीछेचला ६० वायुके पुत्र भीमसेन ने राजाकी ओर जानेवाले कर्ण को देखकर अपने बाणजालों से ढकदिया फिर बाणोंसे पृथ्वी आकाश को ढककर शत्रुओं का विजय करनेवाला कर्ण बहुत शीघ्रलौटा और तीक्ष्णबाणों से भीमसेनको सब ओरसे ढकदिया ६१ । ६२ इस के पीछे हे राजा बड़े धनुषधारी सात्यकीने पीछे होनेके कारण भीमसेन के रथसे व्याकुल कर्णको पीड़ामान किया ६३ बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित कर्णभी उसके

सन्मुख वर्त्तमानहुआ फिर सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ वह दोनों बीर सन्मुखहोकर युद्ध करनेलगे और हरएकने परस्पर में चौंसठ २ बाण छोड़े उन बाणों के छोड़ते में वह दोनों बीर अत्यन्त शोभित हुये हे राजा उन दोनों का फैलाया हुआ भयकारी मर्द्दनकरनेवाला ६४ । ६५ रुद्ध बाणजाल क्रौंचकी पुच्छके समान रक्त बर्ण दिखाई दिया फिर छोड़ेहुये हजारों बाणों के कारणसे हमने और उन सब लोगों ने न सूर्य्य को देखा और न दिशाओं को ऐसे नहीं पहिचाना जैसे कि मध्याह्न के समय तेजस्वी सूर्य्य के कारण दिशाओंका ज्ञान नहीं होता है ६६ । ६७ उससमय कर्ण और भीमसेनके बाण समूहों से हटायेहुये शकुनी अश्वत्थामा कृतवर्मा और अधिरथी कृपाचार्य्य ६८ यह सब कर्णको पाण्डवों से भिड़ाहुआ देखकर फिर लौटे हे राजा उन आनेवाले वीरों के ऐसे बड़े कठोर शब्दहुये ६९ जैसे कि चन्द्रके उदयसे उठेहुये महासमुद्रों के शब्द होते हैं वह दोनों सेना उस महायुद्ध में परस्पर अच्छेप्रकार से देखकर खूबलड़ी ७० और परस्परमें एक एकको घेरकर बड़ी प्रसन्नहुई इसके पीछे मध्याह्न के समय सूर्य्य के वर्त्तमान होनेपर युद्ध जारीहुआ ७१ ऐसा युद्ध पूर्व्वमें कभी देखाथा न सुना था फिर सेनाके समूह दूसरी सेनाके समूहोंको पाकर ७२ तीव्रतासे ऐसे सन्मुख गये जैसे कि जलों के समूह समुद्रके सन्मुख होते हैं उससमय परस्पर बाणोंकी वर्षा के ऐसे बड़े २ शब्दहुये जैसे कि गर्जनेवाले समुद्रों के जलके बेगकी बड़ी ध्वनि होती है फिर उन दोनों बेगवान् सेनाओंने परस्परमें एक एकको पाकर ७३।७४ एकताको ऐसेपाया जैसे कि दो नदियां परस्पर मिलकर एक होजाती हैं हे राजा इसकेपीछे यशके चाहनेवाले कौरव और पांडवोंका घोररूप युद्ध जारी हुआ उससमय वहां गर्जनेवाले शूरवीरोंकी वार्त्तालाप जो कि निरंतर नानाप्रकार कीथी ७५।७६ और नामोंको लेलेकर होरहीथीं सुनीगई जिस२ के पिता माता के अवगुण स्वाभाविक दोषथे वह युद्धमें परस्पर एकएकको सुनाते थे हे राजा युद्धमें परस्पर घुड़कनेवाले उन शूरों को देखकर ७७।७८ मैंने समझा कि अब इनका जीवन नहीं है और उनक्रोधयुक्त बड़ेतेजस्वियोंके शरीरोंको देखकर ७९ मुझको अत्यन्त भयहुआ कि यह कैसे होगा इसकेपीछे उनमहारथी पांडव और कौरवोंने परस्परमें मारते२ प्रत्येकको अपने२ तीक्ष्णशायकोंसे घायलकिया ८०॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिशकुनयुद्धेद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

तिरपनवां अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज परस्पर में मारने के अभिलाषी और शत्रुता करने वाले उन क्षत्रियों ने परस्पर में घायलकिया और रथ घोड़े और मनुष्यों समेत राजाओं के समूह चारोंओरसे आपस में खूब जुटे १ । २ फेंकेहुये परिघ, गदा, कुणप, प्रास, भिन्दिपाल और भुशुंडियों के सबप्रकार के प्रहारों को ३ युद्धमें महाभयकारी देखा और बाणों की बर्षा टीड़ी के समान हजारों प्रकारसे होने लगी ४ हाथियों ने हाथियों को परस्परमें पाकर छिन्नभिन्न किया तब घोड़ों ने घोड़ोंको रथियों ने रथियों को ५ पतियों ने पतियों के समूहों को वा घोड़ों के यूथोंको अथवा रथ और हाथियों और रथ वा हाथियों ने घोड़ोंको ६ और शीघ्रगामी हाथियों ने सेनाको अंगों से बिहीन करके छिन्नभिन्न करदिया ७ वहां शूरबीरों के समूह परस्परमें घायल होते और पुकारतेथे इसहेतुसे युद्धभूमि ऐसी अत्यन्त भयानक होगई जैसी कि पशुओं को संहारस्थानकी भूमि होती है ८ हे भरतबंशी उससमय रुधिर से भरीहुई पृथ्वी ऐसी दिखाई देतीथी जैसे कि बर्षाऋतुमें बीरबहूटियों के समूहों से पृथ्वी रक्त दिखाई देती है अथवा जैसे कुसुम के रंगेहुये श्वेत बस्त्रों को श्यामा स्त्री धारणकरे वह पृथ्वी ऐसे प्रकार की होगई मानों मांस रुधिरसे ब्याप्त स्वर्णमयी कुंभोंसेही ब्याप्त है ९ । १० हे राजा कटे वा टूटेहुये शिर जंघा भुजा बहुत बड़े कुंडल आभूषण ढाल पताकाओं के समूह बिशिख और धनुषधारी शूरों के शरीर पृथ्वीपर गिरपड़े ११ । १२ हे राजा हाथियों ने हाथियों को पाकर दांतों से पीड़ामान किया उससमय दांतों से कटे रुधिर से भरेहुये हाथी ऐसे शोभायमान हुये १३ जैसे कि सुवर्ण केसे रंगवाले भिरनों के गिरानेवाले और पहाड़ी धातुओं से शोभित जलों के गेरनेवाले पर्व्वत शोभित होते हैं १४ फिर वह हाथी भ्रमण करनेवाले हुये और इसीप्रकार अन्य हाथियों ने भुजासे छोड़ेहुये तोमरों समेत सन्मुख खड़ेहुये अनेक शत्रुओं को बिध्वंस किया १५ फिर नाराचों से घायल टूटे कवचवाले उत्तमहाथी ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि मार्गशिर और पौषके महीने में बादलों से रहित पर्व्वत होते हैं १६ सुनहरी पुंखवाले बाणों से छिदेहुये हाथी ऐसे शोभितहुये जैसे कि उल्काओं से पर्व्वतों के शिखर प्रकाशमान होते हैं १७ कितनेही पर्व्वताकार

हाथी अन्य हाथियों से घायल और पक्षधारी पर्व्वतों के समान उस युद्ध में नाश को प्राप्तहुये १८ और बहुत से शल्यों से पीड़ित घावों से खेदित हाथी युद्ध में भागगये और घोर युद्धमें अपने कुंभों समेत पृथ्वीपर गिरपड़े १९ और बहुतेरे सिंहों के समान शब्दोंको गर्जे बहुतसे घूमने लगे २० और बहुतसे हाथी पुकारे और सुनहरी सामानों से अलंकृत घोड़े बाणों से मारेहुये बैठगये और मृतक प्राय होकर दशोंदिशाओं में घूमने लगे २१ बाण वा तोमरों से घायल चेष्टाओं को करतेहुये बहुतसे हाथी घूमने लगे और अनेक हाथियों ने नाना प्रकार की चेष्टाओं को किया २२ हे श्रेष्ठ भरतवंशी वहां मनुष्य घायल हो२कर पृथ्वी पर शब्द करनेलगे और बहुतसे लोग भाई बन्धु पिता और पितामहादिकों को देखकर २३ किसी ने दौड़तेहुये शत्रुओंको देखकर गोत्रनामोंसमेत अपनीजातों को वर्णन किया २४ हे महाराज उनलोगों के स्वर्णमयी भूषणोंसे अलंकृत भुजदण्ड टूटेहुये हाथ पैरों में चेष्टा करकर लिपटते थे और उछलते थे इसीप्रकार बहुतसी भुजा उछल२ कर अनेक चेष्टा करतीथीं और हजारों ऊपर नीचे होकर अपूर्व्व चेष्टा करती थीं और किसी २ भुजाओं ने पांचमुख रखने वाले सर्पकी समान युद्धमें बहुतसा वेगकिया २५ । २६ हे राजा सर्पों के फणों के समान चन्दनसे लिप्त रुधिर से भरीहुई वह सबभुजा स्वर्णमयी ध्वजाके समान बहुत शोभायमान हुई २७ इसरीति से दशोंदिशाओं में घोषसंकुलनाम घोरयुद्ध होनेपर अज्ञातरूप परस्पर में युद्ध करनेवाले हुये २८ और धूलसे संयुक्त शस्त्रोंके आघातोंसे व्याकुल युद्धमें अँधेरे होनेके कारण अपने और पराये नहीं जानेगये २९ इसरीतिसे वह युद्ध महाघोर रूप और भयानक हुआ वहां पर रुधिररूप जल रखनेवाली बड़ी २ नदियां बहनिकलीं ३० वह नदियांबाण रूप पत्थरों से युक्त केशरूप शैवल और शाद्वलरखनेवाली अस्थिरूप मछलियों से पूर्ण धनुषबाण और गदारूपी नौका रखनेवाली ३१ मांस रुधिररूपी कीच से भरी हुई घोररूप बड़ी भयानक रुधिररूप जल के वेगकी बढ़ानेवाली होकर बहने लगीं ३२ भयभीतों के भयकी बढ़ानेवाली शूरबीरों की प्रसन्नता बढ़ाने वाली घोररूप वह नदियां यमलोक को पहुँचानेवाली होगईं ३३ हे नरोत्तम वह नदियां भीतर जानेवालों को डुबानेवाली क्षत्रियों का भय बढ़ानेवालीहुईं जहां तहां मांसभक्षी जीवोंकी गर्जना करने से ३४ वह युद्धभूमि घोररूप यम-

राजपुरी के समान होगया और चारोंओर से असंख्यों रुण्ड उठ खड़ेहुये ३५ मांस और रुधिर से तृप्त हो होकर जीवों के समूह नाचते थे हे भरतबंशी वहां रुधिर और मज्जाका भोजन करके ३६ मांस मज्जा और भेजों के खानेसे मतवाले सिंह काक गृध्र और बगलेभी दौड़तेहुये दिखाई दिये ३७ शूरबीरों ने त्यागने के अयोग्य भयकोभी त्यागकरके युद्धाभिलाषी होकर निर्भयलोगोंके समान युद्धमें कर्मोंको किया ३८ उस युद्ध में वह शूरलोग अपनी बीरता को प्रसिद्ध करतेहुये भ्रमण करनेलगे जो कि बाण और शक्तियोंसे युक्तहोकर मांस भक्षियों से ब्याकुलथे ३९ हे समर्थ भरतबंशी उनलोगोंने परस्परमें गोत्रनामों समेत अपने २ पिताओंका भी नाम लिया ४० हजारों ने तौ अपने गोत्रादि और नामों को सुनाया और बहुत से युद्धकर्त्ता ४१ इधर उधर से तोमर शक्ति और पट्टिशों के द्वारा परस्पर में मर्दन करनेलगे इसरीति से घोररूप महाभयानक युद्ध जारी होनेपर कौरवीसेना ऐसी पीड़ित हुई जैसे कि समुद्रमें टूटीहुई नौका डामाडोल होकर पीड़ित होती है ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

चौवनवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे श्रेष्ठ इसरीति से क्षत्रियों के नाशकारी युद्ध के जारी होनेपर युद्धमें गाण्डीव धनुषके बड़ेशब्द सुनाईदिये हे राजा जहांपर कि पांडव अर्ज्जुन ने संसप्तकों का वा कोशिल देशियोंका और नारायण नाम सेनाका नाशकिया वहां क्रोधयुक्त संसप्तकों ने युद्धमें चारोंओर से अर्ज्जुनके शिरपर बाणों की बर्षा करी हे राजा रथियों में श्रेष्ठ वेगसे अकस्मात् उन बाणवर्षा को सहते और मारतेहुये प्रभु अर्जुनने सेनाको बिलोडन किया १।२।३।४ और अपने तीक्ष्ण धारवाले बाणों के द्वारा उस रथवाली सेनाके पारहोकर उत्तम शस्त्रधारी सुशर्माको सन्मुख पाया ५ तब उस श्रेष्ठरथी ने बाणोंकी वर्षा से उस को आच्छादित किया और संसप्तकों ने भी बाणों की वर्षा से अर्ज्जुनको ढका ६ इसके पीछे सुशर्मा ने शीघ्रगामी दश बाणोंसे अर्ज्जुन को और तीन उत्तम बाणों से श्रीकृष्णचन्द्रजी को दाहिनी भुजापर छेदकर ७ दूसरे भल्ल से ध्वजा कोभी विदीर्ण किया हे राजा विश्वकर्माजी का उत्पन्न किया हुआ वानरों में

श्रेष्ठ वह बड़ा वानर ८ सबको भयभीत करके बड़े शब्दको गर्जा इस हनुमान् जीके शब्दको सुनकर आपकी सेना महाभयभीत हुई ९ और अत्यन्त भय- भीत होकर चेष्टारहित होगई इसके पीछे हे राजा वह सेना निश्चेष्ट होकर ऐसी शोभायमान हुई १० जैसे कि नानाप्रकार के फूलोंसे युक्त चैत्ररथ वनहोता है हे कौरव्य इसके पीछे उन युद्धकर्त्ताओं ने सावधान होकर ११ अर्ज्जुनको बाणों से ऐसा आच्छादित करदिया जैसे कि पर्व्वतको बादल आच्छादित करलेते हैं इसके पीछे सबने अर्ज्जुन के बड़े रथको घेरलिया १२ उसको घेरके तीक्ष्ण बाणोंसे घायल करके पुकारनेलगे हे श्रेष्ठ इसके पीछे वह सब क्रोधयुक्त रथके चारों ओर होकर रथके चक्र और ईशाके भी पकड़ने को पासगये वह हजारों शूरवीर उसके उसरथको पकड़कर १३।१४ और बड़े बलसे उसके सब साथियोंको पकड़कर सिंहनाद करनेलगे और कितनोहीने केशवजीकी भी भुजाको पकड़ लिया १५ और बहुतोंने रथमें सवार अर्ज्जुनको पकड़लिया इसके पीछे दोनों भुजाओंको कंपायमान करतेहुये केशवजीने उन सबको ऐसे गिरादिया जैसे कि मतवाला हाथी हाथी के सवारोंको गिरादेता है इसके पीछे उन महारथियों से घिरेहुये क्रोधयुक्त अर्ज्जुनने युद्धमें १६।१७ उस पकड़ेहुये रथको देख और श्रीकृष्णजीको भी गिराहुआ जानकर बहुतसे रथ सवारोंसमेत पदातियों को गिराया उसीप्रकार समीप वर्त्तमान शूरवीरोंको समीपहीसे मारे बाणोंके ढकदिया और केशवजीसे कहनेलगा १८। १९ हे महाराज श्रीकृष्णजी भयकारीकर्म करनेवाले शरीरसे घायल हजारों संसप्तकोंको देखो २० यह रथोंकी बँधावट महा- घोरहैं और पृथ्वीपर मेरे सिवाय ऐसा कोई नहीं है जो नरलोकमें इसबंधनको सहै अर्ज्जुनने ऐसा कहकर अपने देवदत्त शङ्खको बजाया और पृथ्वी आका- शादिको व्याप्तकरके श्रीकृष्णजीने भी पांचजन्य शङ्खको बजाया २१। २२ हे महाराज उस शङ्खके शब्दको सुनकर संसप्तकों की सेना महाकंपितहुई और भयभीत होकर भागी २३ इसके पीछे शत्रुविजयी अर्ज्जुनने बारम्बार नागास्त्र को प्रकट करके उनके चरणोंको बांधदिया २४ हे राजा महात्मा अर्ज्जुनके बंध- नसे चरणों में बँधेहुये वह लोग लोहेकी मूर्त्तिके समान निश्चेष्ट खड़ेरहगये २५ इसके पीछे उन निश्चेष्ट मनुष्योंको पाण्डुनन्दनने ऐसे मारा जैसे कि पूर्व्वसमय में तारक असुरके मारनेवाले युद्धमें इन्द्रने दैत्योंको माराथा २६ युद्धमें घायल

होकर उनलोगों ने अर्ज्जुनके उत्तम रथको छोड़दिया और शस्त्रोंका मारना प्रारंभकिया २७ हे राजा चरण बंधनके कारणसे वह लोग हिलचलभी न सके इसके पीछे अर्ज्जुनने टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे उनको मारा २८ युद्धमें वह सब शूरवीरलोग सर्पोंसे बँधेहुये खड़ेरहगये जिनको कि अर्ज्जुनने लक्षकरके चरणोंका बन्धनकिया २९ हे राजा इसके पीछे महारथी सुशर्माने बँधीहुई सेनाको देखकर शीघ्रही गरुड़ास्त्रको प्रकटकिया ३० तब तो बहुतसे गरुड़ सर्पोंको भक्षण करनेको दौड़े और वह सर्प उन गरुड़ोंको देखकर भागे ३१ फिर चरण बंधनोंसे छूटीहुई वह सेना ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि सब सृष्टिके संतप्त करनेवाले सूर्य्य बादलोंसे रहित होकर शोभित होतेहैं ३२ इसके पीछे उनबंधनोंसे छूटेहुये शूरवीरोंने अर्ज्जुन के रथपर बाण और शस्त्रोंके समूहोंको छोड़ा ३३ और सबने नानाप्रकार के अस्त्रोंको चलाया तब तो इन्द्रकेपुत्र महावीर अर्ज्जुनने उनलोगोंको बाणोंकी वर्षासे ढककर ३४ युद्धकर्त्ताओं को मारा इसके पीछे सुशर्माने टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे अर्ज्जुनको हृदयमें घायलकरके दूसरे तीन बाणोंसे पीड़ित किया तब वह अत्यन्त घायल और पीड़ामान न होकर रथके बैठनेके स्थानपर बैठगया ३५ । ३६ इसके पीछे सबोंने पुकारकरी कि अर्ज्जुन मारागया इसके पीछे शङ्ख भेरी आदि बाजोंके शब्द ३७ और सिंहनाद उत्पन्न हुये फिर श्वेतघोड़ों से युक्त श्रीकृष्णजी को सारथी रखनेवाले बड़े साहसी शीघ्रतासे युक्त अर्ज्जुन ने सचेतहोकर ३८ ऐन्द्रास्त्रको प्रकटकिया हे श्रेष्ठ उस ऐन्द्रास्त्र से हजारों बाण उत्पन्न हुये ३९ और सब दिशाओं में दिखाईदिये और युद्ध में आपके हजारों रथ घोड़े और हाथियों को शस्त्रोंसे मारा ४० हे भरतबंशी इसके पीछे सेना के मरनेपर संसप्तक और गोपालों के समूहों को बड़ा भय उत्पन्न हुआ ४१ ऐसा कोई मनुष्य न था और न रहा जो अर्ज्जुन को मारता सब वीरों के देखतेहुये आपकी सेना मारीगई ४२ वहां पाण्डव अर्ज्जुन सेना को घायल और पराक्रम से थकित देखता हुआ युद्धमें दशहजार शूरबीरों को मारकर ४३ निर्द्धूम अग्नि के समान प्रकाशित होकर शोभायमान हुआ हे भरतवंशी महाराज परीक्षा करी हुई चौदह सहस्र सेना और तीन हजार हाथियों समेत दश हजार रथों से संसप्तकों ने फिर अर्ज्जुन को आ घेरा और यह विचार ठानलिया कि चाहे विजयहोय वा पराजयहोय युद्ध में लड़कर मरना योग्यहै ऐसा निचारकर

आपके शूरवीरों का और अर्जुनका महाघोर युद्धहुआ ४४ । ४५ । ४६ । ४७ ।

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

पचपनवां अध्याय ॥

संजयबोले हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र कृतवर्मा, कृपाचार्य्य अश्वत्थामा, कर्ण, उलूक, शकुनि, और अपने निजभाइयों समेत राजा दुर्य्योधनने १ अर्जुन के भयसे पीड़ामान सेनाको देखकर बड़ेवेग से उनको ऐसे छुटाया जैसे समुद्रमें से टूटीहुई नौका को निकालतेहैं २ हे भरतवंशी इसके अनन्तर एक मुहूर्त्त तक वह कठिन युद्ध रहा जो भयभीतोंको भय और शूरवीरों की प्रसन्नता का बढ़ाने वाला था ३ युद्धमें कृपाचार्य्य के छोड़े हुये टीड़ियों के समूहों के समान बाणों ने सृंजियों को ढकदिया ४ इसके पीछे बहुत शीघ्रतासे शिखंडी कृपाचार्य्यके सन्मुखगया और चारोंओर से उन श्रेष्ठब्राह्मण कृपाचार्य्य के ऊपरबाणों को बरसाया ५ फिर महाअस्त्रों के ज्ञाता कृपाचार्य्य ने क्रोधयुक्त होकर उन बाणोंके समूहों को हटाकर युद्धमें शिखंडी को दशबाणों से पीड़ितकिया ६ फिर शिखंडी ने भी क्रोधयुक्त होकर कंकपक्षसे जड़ित शीघ्रगामी सातबाणों से उन क्रोधरूप कृपाचार्य्य को पीड़ामानकिया ७ उसके पीछे उनमहारथी कृपाचार्य्यजी ने तीक्ष्णबाणोंसे शिखंडी को घोड़े रथ और सारथी से रहित करदिया ८ इसके पीछे महारथी शिखंडी मृतक घोड़ोंके रथसे कूदकर अच्छे प्रकारसे ढाल तलवारको लेकर शीघ्र आचार्य्यजी के सन्मुखगया ९ तब आचार्य्यजी ने उस आतेहुये को टेढ़ेपर्ववाले बाणों से ढकदिया यह देखकर सबको आश्चर्य्यसा हुआ १० वहां हमने शस्त्रों के अपूर्व्व आघातों को ऐसा देखा जैसेकि शिलाओंका उछलना होताहै जब हे राजा शिखंडी निश्चेष्ट होकर युद्धमें नियतहुआ ११ तब श्रेष्ठ महारथी धृष्टद्युम्न उस कृपाचार्य्य के बाणोंसे ढकेहुये शिखंडी को देखकर शीघ्रही कृपाचार्य्य के सन्मुख गया १२ इसके पीछे महारथी कृतवर्मा ने कृपाचार्य्य के रथकी ओर जानेवाले धृष्टद्युम्न को बड़े वेगसे रोका १३ पीछे से कृपाचार्य्य के रथकी ओर पुत्र और सेना समेत आनेवाले युधिष्ठिरको अश्वत्थामा ने रोका १४ और बाणों की वर्षा करनेवाले आप के पुत्रों ने शीघ्रता करनेवाले महारथी नकुल और सहदेव को रोका १५ हे भरतवंशी सूर्य्य के पुत्र कर्णने युद्धमें भीमसेन कारुष

कैकय और सृंजयदेशियों को रोका इसके पीछे शीघ्रता से युक्त भस्म करने के अभिलापी सारद्वत कृपाचार्य्यने युद्धमें शिखंडीके ऊपरबाणों कोचलाया १६।१७ फिर बारंबार खड्गको फिराते हुये शिखंडी ने उन कृपाचार्य्य के स्वर्णमयी चारों ओरसे फेंकेहुये बाणों को काटा १८ हे भरतवंशी फिर गौतम कृपाचार्य्यजी ने उसकी सौ चन्द्रमा रखनेवाली ढालको बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक शायकों से तोड़ा इसहेतु से सब मनुष्य पुकारे १६ फिर वह ढालसे रहित हाथमें खड्गलिये जैसे कि मृत्यु के मुखपर रोगी बर्त्तमान होताहै वैसेही कृपाचार्य्य के स्वाधीनता में बर्त्तमान शिखण्डी उनके पासगया हे राजा चित्रकेतुका पुत्र बड़ापराक्रमी सुकेत कृपाचार्य्य के बाणोंसे ढकेहुये महादुखी शिखंडी को देखकर शीघ्रही सन्मुख गया २० । २१ युद्धमें बड़े तीक्ष्ण बाणों से ढकताहुआ महासाहसी सुकेत कृपाचार्य्य के रथके समीपपहुँचा २२ हे राजाओंमें श्रेष्ठ इसके पीछे शिखंडी युद्ध में प्रवृत्त उस ब्रतकरनेवाले ब्राह्मण को देखकर शीघ्रही हटगया तदनन्तर सुकेतने कृपाचार्य्यको नौ बाणों से ब्यथितकर सत्तरबाणों से पीड़ामानकिया फिर दूसरी बारभी तीनबाणों से घायल किया २३ । २४ और उनके धनुषको बाणसमेत काटकर एक बाणसे उनके सारथी कोभी मर्मस्थल में कठिन घायल किया २५ इसके पीछे क्रोधयुक्त कृपाचार्य्य ने दृढ़ नवीन धनुष लेकर तीसबाणों से सुकेत के सब मर्मस्थलों को घायल किया २६ तब वह अत्यन्त कम्पायमान और व्याकुल सुकेत अपने उत्तम रथपर ऐसे चेष्टा करनेवालाहुआ जैसे कि भूकम्प होने में वृक्ष कांपताहै २७ तब उस कम्पायमान के शरीरसे प्रकाशित कुंडलों समेत शिरको पगड़ी समेत क्षुरप्र से गिराया उससमय उसका शिर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बाजपक्षी का लायाहुआ मांसपिंड गिरपड़ता है शिर कटतेही उसका शरीरभी पृथ्वीपर गिरपड़ा २८ । २६ इसके मरनेके पीछे उसके अग्रगामी लोग क्रोधयुक्त हुये और युद्धमें कृपाचार्य्यको त्यागकरके दशोदिशाओं में भागगये ३० हे भरतवंशी प्रसन्नचित्त महारथी कृतवर्मा युद्ध में धृष्टद्युम्नको रोककर बोला कि खड़ाहो यह कहकर कृतवर्मा और धृष्टद्युम्नका वह महाभयकारी युद्धहुआ जैसे कि मांस के निमित्त लड़नेवाले दो बाज पक्षियों का अत्यन्त युद्ध होताहै ३१ । ३२ हार्दिक्य के पुत्र कृतवर्माको पीड़ित करनेवाले क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने युद्ध में नौ बाणों से कृतवर्मा को छाती पर घायल

आपके शूरवीरों का और अर्जुनका महाघोर युद्धहुआ ४४ । ४५ । ४६ । ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

पञ्चपनवां अध्याय ॥

संजयबोले हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र कृतवर्मा, कृपाचार्य्य अश्वत्थामा, कर्ण, उलूक, शकुनि, और अपने निजभाइयों समेत राजा दुर्य्योधनने १ अर्जुन के भयसे पीड़ामान सेनाको देखकर बड़ेवेग से उनको ऐसे छुटाया जैसे समुद्रमें से टूटीहुई नौकाको निकालतेहैं २ हे भरतवंशी इसके अनन्तर एक मुहूर्त्त तक वह कठिन युद्ध रहा जो भयभीतोंको भय और शूरवीरों की प्रसन्नता का बढ़ाने वाला था ३ युद्धमें कृपाचार्य्य के छोड़े हुये टीड़ियों के समूहों के समान बाणों ने सृंजियों को ढकदिया ४ इसके पीछे बहुत शीघ्रतासे शिखंडी कृपाचार्य्यके सन्मुखगया और चारोंओर से उन श्रेष्ठब्राह्मण कृपाचार्य्य के ऊपरबाणों को बरसाया ५ फिर महाअस्त्रों के ज्ञाता कृपाचार्य्य ने क्रोधयुक्त होकर उन बाणोंके समूहों को हटाकर युद्धमें शिखंडी को दशबाणों से पीड़ितकिया ६ फिर शिखंडी ने भी क्रोध युक्त होकर कंकपक्षसे जड़ित शीघ्रगामी सातबाणों से उन क्रोधरूप कृपाचार्य्य को पीड़ामानकिया ७ उसके पीछे उनमहारथी कृपाचार्य्यजी ने तीक्ष्णबाणोंसे शिखंडी को घोड़े रथ और सारथी से रहित करदिया ८ इसके पीछे महारथी शिखंडी मृतक घोड़ोंके रथसे कूदकर अच्छे प्रकारसे ढाल तलवारको लेकर शीघ्र आचार्य्यजी के सन्मुखगया ९ तब आचार्य्यजी ने उस आतेहुये को टेढ़ेपर्ववाले बाणों से ढकदिया यह देखकर सबको आश्चर्य्यसा हुआ १० वहां हमने शस्त्रों के अपूर्व्व आघातों को ऐसा देखा जैसेकि शिलाओंका उछलना होताहै जब हे राजा शिखंडी निश्चेष्ट होकर युद्धमें नियतहुआ ११ तब श्रेष्ठ महारथी धृष्टद्युम्न उस कृपाचार्य्य के बाणोंसे ढकेहुये शिखंडी को देखकर शीघ्रही कृपाचार्य्य के सन्मुख गया १२ इसके पीछे महारथी कृतवर्मा ने कृपाचार्य्य के रथकी ओर जानेवाले धृष्टद्युम्न को बड़े वेगसे रोका १३ पीछे से कृपाचार्य्य के रथकी ओर पुत्र और सेना समेत आनेवाले युधिष्ठिरको अश्वत्थामा ने रोका १४ और बाणों की वर्षा करनेवाले आप के पुत्रों ने शीघ्रता करनेवाले महारथी नकुल और सहदेव को रोका १५ हे भरतवंशी सूर्य्य के पुत्र कर्णने युद्धमें भीमसेन कारुष्य

कैकय और सृंजयदेशियों को रोका इसके पीछे शीघ्रता से युक्त भसम करने के अभिलाषी सारद्वत कृपाचार्य्यने युद्धमें शिखंडीके ऊपरबाणों कोचलाया १६।१७ फिर बारंबार खड्गको फिराते हुये शिखंडी ने उन कृपाचार्य्य के स्वर्णमयी चारों ओरसे फेंकेहुये बाणों को काटा १८ हे भरतवंशी फिर गौतम कृपाचार्य्यजी ने उसकी सौ चन्द्रमा रखनेवाली ढालको बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक शायकों से तोड़ा इसहेतु से सब मनुष्य पुकारे १६ फिर वह ढालसे रहित हाथमें खड्गलिये जैसे कि मृत्यु के मुखपर रोगी बर्त्तमान होताहै वैसेही कृपाचार्य्य के स्वाधीनता में बर्त्तमान शिखण्डी उनके पासगया हे राजा चित्रकेतुका पुत्र बड़ापराक्रमी सुकेत कृपाचार्य्य के बाणोंसे ढकेहुये महादुखी शिखंडी को देखकर शीघ्रही सन्मुख गया २०।२१ युद्धमें बड़े तीक्ष्ण बाणों से ढकताहुआ महासाहसी सुकेत कृपाचार्य्य के रथके समीपपहुँचा २२ हे राजाओंमें श्रेष्ठ इसके पीछे शिखंडी युद्ध में प्रवृत्त उस ब्रतकरनेवाले ब्राह्मण को देखकर शीघ्रही हटगया तदनन्तर सुकेतने कृपाचार्य्यको नौ बाणों से ब्यथितकर सत्तरबाणों से पीड़ामानकिया फिर दूसरी बारभी तीनबाणों से घायल किया २३।२४ और उनके धनुषको बाणसमेत काटकर एक बाणसे उनके सारथी कोभी मर्मस्थल में कठिन घायल किया २५ इसके पीछे क्रोधयुक्त कृपाचार्य्य ने दृढ़ नवीन धनुष लेकर तीसबाणों से सुकेत के सब मर्मस्थलों को घायल किया २६ तब वह अत्यन्त कम्पायमान और व्याकुल सुकेत अपने उत्तम रथपर ऐसे चेष्टा करनेवालाहुआ जैसे कि भूकम्प होने में वृक्ष कांपताहै २७ तब उस कम्पायमान के शरीरसे प्रकाशित कुंडलों समेत शिरको पगड़ी समेत क्षुरप्र से गिराया उससमय उसका शिर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बाजपक्षी का लायाहुआ मांसपिंड गिरपड़ता है शिर कटतेही उसका शरीरभी पृथ्वीपर गिरपड़ा २८।२६ इसके मरनेके पीछे उसके अग्रगामी लोग क्रोधयुक्त हुये और युद्धमें कृपाचार्य्यको त्यागकरके दशोदिशाओं में भागगये ३० हे भरतवंशी प्रसन्नचित्त महारथी कृतवर्मा युद्ध में धृष्टद्युम्नको रोककर बोला कि खड़ाहो यह कहकर कृतवर्मा और धृष्टद्युम्नका वह महाभयकारी युद्धहुआ जैसे कि मांस के निमित्त लड़नेवाले दो बाज पक्षियों का अत्यन्त युद्ध होताहै ३१।३२ हार्दिक्य के पुत्र कृतवर्माको पीड़ित करनेवाले क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने युद्ध में नौ बाणों से कृतवर्मा को छाती पर घायल

किया ३३ फिर धृष्टद्युम्न के हाथसे अत्यन्त घायल कृतवर्मा ने युद्ध में बाणों से धृष्टद्युम्नको रथ और घोड़ों समेत ढकादिया ३४ हे राजा रथसमेत ढकाहुआ धृष्टद्युम्न ऐसा दिखाई दिया जैसे कि जलधारावाले बादलों से ढकाहुआ सूर्य्य होताहै ३५ अर्थात् वह घायलहुआ धृष्टद्युम्न युद्धमें स्वर्णमयी बाणोंसे उनबाण समूहों को हटाकर महा शोभायमान हुआ इसके पीछे क्रोधयुक्त सेनापतिधृष्टद्युम्नने कृतवर्मापर बड़ी बाणोंकी बरषाकरी ३६।३७ कृतवर्माने भी उस एकाएकी गिरनेवाले बाण समूहों को हजारों बाणों से हटाया ३८ फिर उस असह्य हटाये हुये बाणसमूहों को देखकर युद्धमें कृतवर्माको रोका ३९ और तीक्ष्णधारवाले भल्लसे उसकेसारथीको बड़े वेगसे यमलोकको भेजा और वह मृतक होकर रथ पर गिरपड़ा ४० फिर पराक्रमी धृष्टद्युम्न ने बड़े बली शत्रुको विजय करके युद्धमें शायकोंके द्वारा कौरवोंको शीघ्रतासे रोका ४१ उसके पीछे आपके शूरवीर सिंहनादोंको करके शीघ्रही धृष्टद्युम्नके सन्मुखगये और युद्धजारीहुआ४२॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५॥

छप्पनवां अध्याय॥

संजय बोले कि सात्विकी और शूरवीर द्रौपदी के पुत्रोंसे रक्षित युधिष्ठिरको देखकर अश्वत्थामा जी प्रसन्न चित्तके समान सन्मुख वर्त्तमान हुये १ अर्थात् हस्तलाघवता के समान सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्ण घोर बाणोंको फेंकते और नाना प्रकारके मार्गों समेत अपने अभ्यासों को दिखलातेहुये सन्मुख आये २ उसके पीछे बड़े अस्त्रज्ञ अश्वत्थामा ने युद्धमें युधिष्ठिर को घेरकर दिव्य अस्त्रों से अभिमंत्रित बाणोंकी बर्षा के द्वारा आकाश को व्याप्तकिया ३ अश्वत्थामा के बाणोंसे आच्छादित आकाशमें कुछनहीं जानागया और बड़ी युद्धभूमि का शिर बाणरूप होगया ४ हे भरतर्षभ आकाशमें सुवर्णजालों से अलंकृत और ढकाहुआ बाणजाल ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि नियत हुआ यज्ञ शोभित होताहै ५ उन प्रकाशित बाणजालों से जब आकाश ढकगया और बाणों केयुद्धमें आकाश मंडल में बादलों की छाया होगई ६ ऐसे बाणरूप जालोंके होनेपर हमने एक आश्चर्य्य को देखा कि अन्तरिक्ष का उड़नेवाला कोईजीव नहींउड़ा ७ उपाय करनेवाले सात्विकी और पाण्डव धर्मराज समेत अन्यसेनाके

शूरवीर लोग पराक्रम नहीं करसके ८ हे महाराज वहां महारथी अश्वत्थामाकी हस्तलाघवता को देखकर आश्चर्य्य युक्त होकर वह सब राजालोग उसके सन्मुख देखनेको भी ऐसे समर्थ न हुये ९ जैसे कि संतप्त करनेवाले सूर्य्यको कोई नहीं देखसक्ता है इसके पीछे सेनाके घायल होने पर महारथी द्रौपदी के पुत्र १० सात्विकी धर्मराज और सब पांचालदेशी इकट्ठेहुये और घोर मृत्युके भयको त्यागकर अश्वत्थामाके सन्मुख गये ११ सात्विकी ने शिलीमुखनाम सत्ताईस बाणोंसे अश्वत्थामा को छेदकर सुवर्ण से अलंकृत सातनाराचों से पीड़ामान किया १२ युधिष्ठिरने तिहत्तर बाणों से प्रतिविन्ध्यने सातबाणों से श्रुतकर्मा ने तीनबाणों से श्रुतिकीर्त्ति ने सातबाणों से १३ सुतसोमने नौ बाणों से सतानीक ने सात बाणों से और अन्य २ शूरों ने भी चारों ओरसे घायलकिया १४ हे राजा इसके पीछे उस क्रोधयुक्त विषैले सर्पके समान श्वासलेनेवाले अश्वत्थामाने शिलीमुखनाम पच्चीसबाणों से सात्विकीको घायलकिया १५ श्रुतिकीर्त्तिको नौबाणों से सुतसोमको पांचबाणों से श्रुतकर्माको आठबाणों से प्रतिविन्ध्यको तीनबाणों से १६ सतानीकको नौबाणों से युधिष्ठिरको पांचबाण से और इसीप्रकार अन्य शूरोंको भी दो २ बाणों से घायलकिया १७ और तीक्ष्णधारवाले बाणसे श्रुतिकीर्त्तिके धनुषकोकाटा इसके पीछे महारथी श्रुतिकीर्त्ति ने दूसरे धनुषको लेकर१८ अश्वत्थामा को तीनबाणों से छेदकर दूसरे तीक्ष्णबाणों से पीड़ामान किया हे भरतर्षभ महाराज धृतराष्ट्र इसके पीछे अश्वत्थामा ने बाणों की बर्षा से १९ उस सेनाको चारोंओरसे ढकदिया तबतो महासाहसी हँसतेहुये अश्वत्थामा ने धर्मराजके धनुषको फिर काटा २० और तीनबाणों से पीड़ामान किया हे राजा उसके पीछे धर्मपुत्रने दूसरे बड़े धनुष को लेकर २१ अश्वत्थामाको सत्तरबाणों से पीड़ितकिया और छाती समेत भुजाओं को घायलकिया तब सात्विकी युद्ध में प्रहारकरनेवाले अश्वत्थामा के २२ धनुपको अपने तीक्ष्ण अर्द्धचन्द्र बाण से काटकर महाध्वनि से गर्जा इसके पीछे उस टूटे धनुषधारी शक्ति रखनेवाले अश्वत्थामाने शक्तिसे सात्विकी के रथसे बड़ी शीघ्रतापूर्व्वक सारथीको गिराया २३। २४ तदनन्तर प्रतापवान् अश्वत्थामाने दूसरे धनुप को लेकर सात्विकीको बाणोंकी वर्षा से ढकदिया रथसे सारथी के गिरनेपर युद्ध में उसके घोड़े भागने लगे २५ और जहां तहां भागतेहुये दिखाईदिये २६ फिर युधिष्ठिर के साथी शूर-

बीर तीक्ष्ण बाणोंको छोड़ते वेगसे उस महाशस्त्रधारी अश्वत्थामाके ऊपर बाणों की वृष्टि करनेलगे उन क्रोधरूप आनेवालों को देखकर शत्रुसंतापी २७ हँसते हुये द्रोणपुत्रने उस महायुद्धमें उनको रोका इसके पीछे सैकड़ों बाणरूप ज्वाला रखनेवाले महारथी २८ अश्वत्थामाने युद्ध में सेनारूपी सूखे बनको ऐसे भस्म करदिया जैसे कि बनमें सूखे तृणों को अग्नि भस्म करदेताहै हे भरतबंशी अश्वत्थामासे संतप्त करीहुई वह पांडवी सेना २९ ऐसे व्याकुल होगई जैसे कि तिमिना जीव करके नदीकामुख व्याकुल कियाजाताहै हे महाराज अश्वत्थामा के ऐसे पराक्रम को देखकर ३० उसके हाथसे सब पांडवों को मृतकरूप माना फिर क्रोध और शीघ्रता से युक्त द्रोणाचार्य्य का शिष्य महारथी युधिष्ठिर ३१ अश्वत्थामासे कहनेलगा कि ठीक २ तुममें न तो स्नेह है और न उपकारको स्मरण करतेहो ३२ हे पुरुषोत्तम तुम मुझीको मारना चाहतेहो तुम ब्राह्मण होकर तपस्या दान और वेदपाठ करनेके योग्य हो ३३ क्योंकि लिखा है कि ब्राह्मण तप दान और वेदपाठके योग्य हैं क्षत्री धनुष नवाने के योग्य हैं सो आप नाम मात्रकेही ब्राह्मणहैं हे महाबाहो तेरे देखतेही देखते कौरवों को युद्ध में विजय करूंगा ३४ तुम युद्धमें कर्मकरो निश्चय करके ब्राह्मणबन्धु हो हे महाराज इस प्रकारके वचनों को सुनकर हँसते और मंद मुसकान करतेहुये अश्वत्थामाने ३५ योग्य और मुख्यबात को विचारकर कुछ उत्तर नहीं दिया और उत्तर न देकर बाणोंकी वर्षा से पांडवों को ऐसे ढकदिया ३६ जैसे कि क्रोधरूप मृत्यु सब संसारको व्याप्त करदेती है हे श्रेष्ठ तब अश्वत्थामा के हाथसे ढकाहुआ पांडव युधिष्ठिर ३७ शीघ्रही अपनी बड़ी सेना को छोड़कर दूर हटगया हे राजा उस युधिष्ठिरके हटजानेपर ३८ बड़े साहसी अश्वत्थामाजी पश्चिममुख हुये और युधिष्ठिर युद्धमें अश्वत्थामाको छोड़कर कठोर कर्म में चित्तको करके आपकी सेनाके सन्मुखगया ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिपार्थापयानेपट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

संजय बोले कि चंदेरी और कैकय देशियों से युक्त धृष्टद्युम्न और भीमसेन को आप कर्ण ने रोककर शायकों से हटाया १ इसके पीछे कर्ण ने भीमसेनके

देखते हुये युद्ध में चंदेरी कारुष्य और सृंजय देशी महारथियों को मारा २ तब भीमसेन रथियों में श्रेष्ठ कर्णको छोड़कर कौरवी सेनाके सन्मुखगया ३ कर्णने भी युद्ध में हजारों पांचाल कैकय और बड़े धनुषधारी सृंजियों को मारा ४ अर्ज्जुन ने संसप्तकों में भीमसेन ने कौरवों में और कर्णने महारथी पांचालों में प्रलयकरदी ५ हे राजा आपके कुबिचार में अग्नि के समान उन तीनों वीरों के हाथसे युद्धमें मरनेवाले असंख्य क्षत्रियों ने नाशको पाया ६ हे भरतर्षभ और क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने नौबाणोंसे चारों घोड़ोंसमेत नकुलको घायलकिया ७ इस के पीछे बड़े साहसी आपके पुत्रने क्षुरप्रसे सहदेवकी स्वर्णमयी ध्वजाको काटा ८ फिर क्रोधयुक्त नकुलने सातबाणोंसे सहदेवने पांचबाणोंसे आपके पुत्रको घायलकिया ९ उससमय अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने पांच २ बाणोंसे उन भरतबंशियोंमें और सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ नकुल सहदेवको घायल करके दूसरे दोभल्लोंसे उन दोनोंके धनुषोंको भी अकस्मात् काटडाला और इक्कीस बाणोंसे घायलकिया १० । ११ युद्धमें देवकुमारों के समान वह शूरवीर दूसरे इन्द्रधनुषके समान शुभधनुषोंको लेकर शोभायमानहुये १२ इसके पीछे युद्धमें वेगवान् वह दोनों भाई युद्धमें घोरबाणोंकी वर्षाभाई के ऊपर ऐसे करनेलगे जैसे कि दो बादल पर्व्वतपर वर्षाकरते हैं १३ हे महाराज तब तौ आपके क्रोधयुक्त पुत्रने बड़े धनुषधारी दोनों पाण्डवों को अपने बाणोंसे रोका १४ उससमय दुर्य्योधन का धनुष युद्धमें मण्डलाकार दिखलाई देताथा और चारोंओरसे दौड़तेहुये शायक दृष्टपड़ते थे १५ सब दिशाओंको ऐसे ढकदिया जैसे कि सूर्य्यकी किरणें संसार को व्याप्तकर देती हैं इसके अनन्तर आकाशमण्डल को बाणरूपी जालोंसे ढकजानेपर १६ नकुल और सहदेवके निमित्त उसकारूपकाल और मृत्युरूप यमराज के समान दिखाईपड़ा महारथियों ने आपके पुत्रके उस पराक्रमको देखकर १७ नकुल और सहदेवको मृत्युके गालमें फँसाहुआ माना इसके पीछे पाण्डवोंका महारथी सेनापति धृष्टद्युम्न १८ वहांगया जहांपर कि राजा दुर्य्योधनथा वहां जाकर महारथी शूरवीर नकुल और सहदेवको उल्लंघनकर धृष्टद्युम्नने आपके पुत्रको शायकों से रोका तब आपके साहसी क्रोधयुक्त पुत्रने हँसकर १९ । २० धृष्टद्युम्न को पचीस बाणोंसे छेदकर पैंसठबाणों से घायल बड़े शब्दसे गर्जनाकरी और फिर उसके बाण और हस्तत्राण समेत धनुषको २१ । २२ अपने तीक्ष्णक्षुरप्र से

काटडाला तब शत्रुविजयी धृष्टद्युम्नने उसटूटे धनुषको डालकर २३ बड़े वेगसे बड़े भारबाहक नवीन धनुषको हाथमें लिया और वेगसे लालनेत्र क्रोधयुक्त २४ घायलहुआ धृष्टद्युम्न महाशोभायमान हुआ फिर सर्पोंके समान श्वास लेने-वाले पन्द्रह नाराचों को मारनेके इच्छावान् धृष्टद्युम्नने राजादुर्य्योधनके ऊपर छोड़े २५ वह तीक्ष्णधार कंक और मोरपक्षीके परोंसे जटितबाण राजाके स्वर्ण-मयी कवचको काटकर पृथ्वीमें २६ बड़े वेगसे समागये फिर वह आपका पुत्र अत्यन्त घायलहोकर ऐसा शोभायमानहुआ २७ जैसे कि वसन्तऋतुमें अच्छा प्रफुल्लित किंशुकवृक्ष होताहै नाराचोंसे टूटाकवच और प्रहारोंसे घायल शरीर २८ क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने भल्लसे धृष्टद्युम्नके धनुषको काटा और बड़ी शीघ्रतासे टूटे धनुषवाले धृष्टद्युम्नको २९ दश शायकोंसे दोनों भृकुटियों में घायलकिया बड़े कारीगरके स्वच्छ कियेहुये उनबाणों ने उसके मुखको ऐसा शोभायमान किया ३० जैसे कि मधुकेलोभी भ्रमर अच्छे फूलेहुये कमलको शोभित करते हैं फिर उस महासाहसी धृष्टद्युम्नने उस टूटेहुये धनुप को डालकर ३१ बड़े वेगसे सोलह भल्लों समेत दूसरे धनुषको लिया इसके पीछे पांचबाणों से दुर्य्योधन के सारथी समेत घोड़ों को मारकर ३२ एक भल्लसे सुनहरी धनुष को काटा फिर धृष्टद्युम्न ने आपके पुत्र के रथ, उपस्कर, छत्र, शक्ति, खड्ग, गदा और ध्वजा को दश भल्लों से काटा ३३ सब राजाओं ने दुर्य्योधन की उस टूटीहुई ध्वजा को जो कि सुवर्ण के बाजूबन्द रखनेवाली अपूर्व्व मणियों से जटित नाग चिह्नवाली अति शुभरूप की थी देखा हे भरतर्षभ फिर उस रथसे विहीन टूटे कवच और ध्वजावाले दुर्य्योधन को ३४ । ३५ उसके निज भाइयों ने चारों ओरसे रक्षित किया हे राजा भय से उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित राजा दण्डधारी [दु]र्य्योधन को रथपर बैठाकर ३६ धृष्टद्युम्न के देखतेहुये दूरलेगया फिर राज्यका [ल]ोभी महाबली कर्ण सात्यिकीको विजयकरके ३७ युद्धमें द्रोणाचार्य्यके मारने[व]ाले उग्रबाणधारी धृष्टद्युम्नके सन्मुखगया फिर बाणोंको मारताहुआ सात्यिकी [उ]सके पीछे ऐसा शीघ्रचला ३८ जैसे कि हाथीको हाथी दांतों से जंघास्थानमें पीड़ामान करताहुआ जाताहै ३९ हे भरतवंशी बड़े महात्मा आपके शूरवीरों का वह महाघोर युद्ध कर्ण और धृष्टद्युम्न के मध्यमें ऐसा उत्तम युद्धहुआ कि जिसमें पाण्डवों के और हमारी ओरके किसी पुरुषने भी मुखको न मोड़ा ४०

इसके पीछे बड़ी शीघ्रता से कर्ण पांचालों से युद्ध करनेलगा हे नरोत्तम राजा धृतराष्ट्र मध्याह्न के समय घोड़े हाथी और मनुष्यों का विध्वंसन दोनोंओरमें हुआ फिर विजयाभिलाषी वह सब पांचाल ४१। ४२ शीघ्रतासे कर्णके सन्मुख ऐसे गये जैसे कि वृक्षकी ओर पक्षी जाते हैं इसरीति से क्रोधयुक्त बाणसमूहों से रोकतेहुये अधिरथी कर्ण ने उन उपाय करनेवाले साहसी सेनापति से मिले हुये ४३ व्याघ्रकेतु सुशर्मा, चित्र, उग्रायुध, जय, शुक्ल, रोचमान, सिंहसेन और दुर्जयको सन्मुखपाया उनवीरों ने उस नरोत्तमको रथमार्गसे घेरलिया ४४।४५ जोकि बाणोंका छोड़नेवाला क्रोधयुक्त होकर युद्ध में शोभा देनेवाला था उस प्रतापी कर्ण ने उन दूरसे युद्धकरनेवाले ४६ आठोंवीरोंको तीक्ष्णधारवाले आठ बाणोंसे पीड़ामानकिया हे महाराज उनको पीड़ितकरके महाप्रतापी कर्ण ने ४७ उन अन्य हजारों शूरवीरों को भी जो कि युद्धमें बड़े कुशलसे मारा इसकेपीछे उस अत्यन्त क्रोधयुक्त ने जिष्णु, जिष्णुकर्मा, देवापी, भद्र ४८ दण्ड, चित्र, चित्रायुध, हरि, सिंहकेतु, रोचमान, महारथी शलभ ४९ इन चंदेरी देशों के महारथियों को मारा उस समय उनके प्राण हरनेवाले कर्णका शरीर ऐसा हो-गया ५० जैसे कि रुधिर से लिप्त शिवजी का बड़ा शरीर होताहै हे भरतवंशी इसके सिवाय युद्ध में कर्ण के बाणों से अनेक हाथी भी घायलहुये ५१ बड़ी व्याकुलता उत्पन्न करनेवाले भयकारी वह हाथी युद्धमें कर्ण के बाणों से चारों ओरको भागभागकर पृथ्वीपर गिरपड़े ५२ बज्रसे ताड़ित पर्व्वतों के समान घोरशब्द करतेहुये गिरनेवाले हाथी घोड़े मनुष्य और रथों से कर्ण के मार्ग्ग की पृथ्वी आच्छादित होगई ५३ युद्धमें भीष्म, द्रोणाचार्य्य और अन्य आपके बीरोंने भी ऐसाकर्म नहीं किया जैसा कि युद्धभूमिमें कर्ण ने किया ५४। ५५ हे महाराज हाथी घोड़े रथ और मनुष्यों का कर्णके हाथसे नाशहुआ जैसे कि मृगों के मध्य में घूसनेवाला निर्भय सिंह पशुओं का नाशकरता है ५६ उसी प्रकार कर्णभी भयभीत मृगों के समान पांचालों में निर्भयता पूर्व्वक विचरता हुआ नाशकरताथा जैसे कि सिंह भयभीत मृगोंको दिशाओं में भगादेताहै ५७ उसीप्रकार कर्णने पांचालों के रथसमूहोंको भगादिया जैसे कि सिंहके मुखको पाकर कोई पशु नहीं जीता है ५८ उसी प्रकार महारथी कर्ण को पाकर कोई जीवता नहींरहा निश्चय करके जिसप्रकार सब जीवमात्र वैश्वानर अग्नि को

पाकर भस्महोते हैं ५९ उसीप्रकार हे भरतबंशी सृंजीरूपी वनभी कर्णरूपी अ-
ग्निसे भस्म होगये हे भारत कर्णने चंदेरी कैकय और पांचाल देशियों के मध्य
में नामों को सुना २ कर वीरों के अंगीकृत अनेक युद्धकर्त्ताओं को मारा इस
कर्ण के पराक्रमको देखकर मैंने विचार किया ६०।६१ कि कर्ण के हाथसे एकभी
पांचालदेशी जीवता न बचेगा कर्ण ने युद्धमें पांचालों को बारम्बार छिन्नभिन्न
करदिया ६२ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त धर्मराज युधिष्ठिर उस महायुद्ध में
पांचालों के मारनेवाले कर्ण को देखकर सन्मुख दौड़े ६३ हे श्रेष्ठ धृष्टद्युम्न, द्रौ-
पदी के पुत्र, और अन्य हजारों मनुष्यों ने शत्रु के मारनेवाले कर्ण को घेर-
लिया ६४ शिखण्डी, सहदेव, नकुल, नकुलका पुत्र, जन्मेजय, सात्विकी, बहव,
प्रभद्रक ६५ और धृष्टद्युम्न, यह सब बड़े तेजस्वी युद्धमें सन्मुख होकर धनुषधारी
बाण फेंकनेवाले कर्ण के सन्मुख होकर बाण और अस्त्रों समेत शोभायमान
हुये ६६ वहां अकेला कर्ण युद्धमें उन चंदेरी पांचालदेशी और अन्य शूरवीरों
समेत पाण्डवों के सन्मुख ऐसे हुआ जैसे कि सर्पों के सन्मुख अकेला गरुड़
होताहै ६७ हे राजा उन सबके साथ कर्ण के ऐसे घोररूप युद्धहुये जैसे कि पूर्व्व
समयमें देवताओं का युद्ध दानवों से हुआथा ६८ फिर उस क्रोधरूपने यमदण्ड
के समान अपने बाणों से बाहीक कैकय मत्स्य वा सत्य मद्र सिन्ध इन देशियों
को सबओर से मारा ६९ वह बड़ा धनुषधारी अकेलाही युद्धमें लड़ताहुआ
बहुत शोभित हुआ और भीमसेन के नाराचों से हाथी मर्मस्थलों में घायलहुये
७० जिनके सवार मारेगये उन गिरतेहुये हाथी घोड़े और निर्जीव पत्तियों ने
पृथ्वी को कम्पायमान करदिया ७१ युद्ध में घायल रुधिर को वमन करतेहुये
और जिनके कि शस्त्र गिरपड़े वह हजारों रथी मारेगये ७२ रथी अश्वसवार
सारथी पदाती घोड़े यह सब हाथियों समेत घायल होकर भीमसेनसे भयभीत
और मरेहुये दृष्टपड़े ७३ भीमसेनके तोड़ेहुये अस्त्र शस्त्रादिकों से पृथ्वीभरगई
दुर्योधनकी वह सब सेना भीमसेन के भयसे पीड़ित अचेष्टितों के समान नि-
यतथी ७४ उत्साहसे रहित घायल और अंगचेष्टा बिना अत्यन्त दुःखीरूप युद्ध
में दिखाईपड़ी ७५ हे राजा जैसे कि प्रसन्न कालमें स्वच्छ जलवाला समुद्र स्थिर
नियतहोताहै उसीप्रकार आपकी सेना भी निश्चल होगई ७६ अर्थात् क्रोध
पराक्रम से युक्त आपके पुत्रकी वह सेना अहंकार से पराजित होकर शोभासे

रहित होगई ७७ हे भरतर्षभ वह सेना परस्पर घायलहोकर रुधिरों से लिप्तहोकर भागी ७८ फिर युद्धमें क्रोधयुक्त पराक्रमी कर्ण पाण्डवों समेत सेनाको ७९ और भीमसेन भी कौरवों समेत कौरवी सेनाको भगातेहुये शोभायमानहुये इस रीतिसे महाघोर भयंकर युद्धजारी होनेपर ८० महाविजयी अर्ज्जुन सेनामें संसप्तकों के बहुतसे समूहों को मारकर फिर वासुदेवजी से बोला ८१ कि हे जनार्द्दनजी यह युद्धाभिलाषी सेना छिन्नभिन्नहोकर पराजितहुई यह संसप्तक महारथी अपने समूहों समेत मेरे बाणों से ऐसे भागते हैं ८२ जैसे कि सिंहके शब्दको सुनकर मृग भागते हैं और बड़े युद्धमें सृञ्जियोंकी बड़ीसेना पृथक् २ हुईजाती है ८३ हे श्रीकृष्णजी राजाओंकी सेनाके मध्यमें प्रसन्नतापूर्व्वक घूमनेवाले बुद्धिमान् कर्णकी यह ध्वजा दिखाईदेती है जिसमें कि हाथी की कक्षाकाचिह्न है ८४ और कोई महारथी कर्ण के विजय करनेको समर्थ नहीं है आपभी कर्ण को बड़ा पराक्रमी जानते हैं ८५ अब आप वहां चलिये जहांपर कि वह कर्ण हमारी सेनाको भगारहाहै आप इन सबको त्यागकर युद्ध में महारथी कर्ण के सन्मुख चलिये ८६ हे श्रीकृष्णजी मुझको यह उचित मालूम होताहै अथवा जैसी आपकी इच्छा हो वही करना योग्य है उसके इसबचनको सुनकर गोविन्दजी हँसकर बोले ८७ हे पांडव तुम शीघ्रही कौरवोंको मारो इसके पीछे गोविन्दजी की आज्ञानुसार अपने सारथी रूप श्रीकृष्णजी समेत श्वेत हंसबर्ण घोड़ोंकी सवारी से अर्ज्जुन आपकी सेनामें आपहुँचा केशवजी का आज्ञाकारी सुवर्ण के भूषणों से युक्त ८८।८९ श्वेत घोड़ों के रथके पहुँचतेही आपकी सेना चारों दिशाओं में हटगई बादलके समान शब्दायमान हनुमानजीकी ध्वजासे संयुक्त चेष्टावान् पताकावाला ९० वह रथ उससेनामें ऐसे पहुँचा जैसे कि स्वर्ग में बिमान पहुँचता है वहां वह अर्ज्जुन और केशवजी दोनों सेनाको चीरतेहुये प्रविष्टहुये ९१ और क्रोध से भरे लालनेत्र कियेहुये वह दोनों श्रीकृष्ण अर्ज्जुन शोभायमानहुये युद्धमें कुशल और बुलायेहुये वह दोनों युद्धरूपी यज्ञभूमि में ऐसे आपहुँचे ९२ जिसप्रकार बिधिपूर्व्वक यज्ञ करनेवालों से आह्वापन किये हुये अश्विनी कुमार होतेहैं फिर क्रोधयुक्त वह दोनों नरोत्तम ऐसे युद्धमें प्रवृत्त हुये ९३ जैसे कि महावन में तल शब्द से क्रोधित महाबली हाथी होते हैं फिर अर्ज्जुन रथों की सेना और घोड़ों के समूहों को मझाकर ९४ पाशधारी यम-

राज के समान सेना में घूमने लगा हे भरतवंशी युद्धमें आपकी सेना के मध्य में पराक्रम करनेवाले उस अर्ज्जुनको देखकर ९५ आपके पुत्रने संसप्तकों के समूहोंको फिर प्रेरणाकरी तब हजाररथ तीनसौहाथी ९६ चौदहहजार घोड़े और दोलाख धनुषधारी ९७ शूरवीर लक्षोंके बेधनेवाले चारोंओरसे घिरेहुये पदातियों समेत महारथी अर्ज्जुनको बाणोंसे आच्छादित करतेहुये सन्मुख वर्त्तमान हुये ९८ हे महाराज उन सबलोगोंने चारोंओरसे बाणोंकी वर्षाकरके अर्ज्जुनको ढकदिया फिर शत्रुकी सेनाका पीड़ामान करनेवाला युद्धमें बाणोंसे ढकाहुआ वह अर्ज्जुन पाशधारी यमराजके समान अपना रुद्ररूप दिखलाताहुआ और संसप्तकों को मारताहुआ अपूर्व्व दर्शन के योग्यहुआ ९९ । १०० इसके पीछे बिजली के समान प्रकाशमान सुवर्णसे अलंकृत अर्ज्जुनके चलायेहुये बाणोंसे सब आकाशढकगया १०१ वहां अर्ज्जुनके छोड़ेहुये बड़े २ बाणोंके गिरनेसे सब आकाश आच्छादित होकर ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि कद्रूके बेटे सर्पोंसे व्याप्त होकर शोभितहोता है १०२ बड़े साहसी पाण्डवने सुनहरी पुंखयुक्त तीक्ष्णनोक केसे टेढ़े पर्ववाले बाणोंको सब दिशाओं में छोड़ा १०३ मनुष्योंने अर्ज्जुनकी प्रत्यंचाके शब्दसे यह अनुमान किया कि पृथ्वी आकाश सब दिशा समुद्र और पर्वत टूटते हैं १०४ महारथी अर्ज्जुन दशहजार क्षत्री महारथियों को मारकर शीघ्रही संसप्तकों के सन्मुखगया १०५ वहां अर्ज्जुनने काम्बोजके राजासे रक्षित सेनाको नेत्रोंके सन्मुख पाकर अपने बाणोंके बलसे उसको ऐसे मारा जैसे कि दानवलोगों को इन्द्र मारता है और बड़ी शीघ्रता से मारने के इच्छावान् शत्रु लोगोंके शस्त्र भुजा हाथ और शिरोंको भी काटा १०६ । १०७ वह शस्त्रोंसे रहित टूटेअंग होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि संसारी वायुसे टूटे बहुत शाखावाले वृक्ष गिरते हैं १०८ हाथी घोड़े रथ वा पत्तियोंके समूहोंके मारनेवाले अर्जुनके ऊपर सुदक्षिणके छोटे भाईने बाणोंकी वर्षाकरी १०९ तब अर्ज्जुनने उस बाणवर्षा करनेवालेकी परिघके समान दोनों भुजाओंको दो अर्द्धचन्द्रोंसे और पूर्णचन्द्रमाके समान मुखवाले शिरको क्षुरप्रसे जुदाकिया ११० उसके पीछे बड़े रुधिरको गिरानेवाला वह राजा रथसे ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वज्रसे फटाहुआ मनशिल पर्व्वतका शिखर गिरताहै सुदक्षिणके छोटेभाई कांबोजदेशी कमलपत्र के समान नेत्रधारी उन्नत बड़े तेजस्वी अपूर्व दर्शन को इसरीति से मा-

। १११।११२ वह कांचनके स्तंभसमान टूटे हेमगिरिके समान वर्त्तमानथा इसके अनन्तर फिर महाघोर युद्ध जारीहुआ ११३ उस युद्धमें लड़नेवाले शूरवीरोंकी नानाप्रकार की अपूर्व्वदशा वर्त्तमानहुई अर्थात् एक बाणसे मरेहुये काम्बोज देशी यवनदेशी और शकदेशी घोड़ोंसे ११४ और रुधिरसेलिप्त शूरवीरोंसे सब रुधिरमयी भूमि होगई मृतक घोड़े और सारथीवाले रथ वा मृतक सवारोंके घोड़े वा मृतक हाथीवान और सवारोंवाले हाथियों से परस्परमें मनुष्योंका बड़ा नाश हुआ ११५।११६ अर्ज्जुन के हाथ से उस पक्ष और प्रपक्षके मरनेपर बड़ी शीघ्रतापूर्व्वक अश्वत्थामाजी उस महाविजयी अर्ज्जुन के सन्मुखगये ११७ सुवर्ण जटित बड़े धनुषको कम्पायमान करता सूर्य्यकी किरणोंके समान घोरबाणोंको लेता ११८ क्रोध और अशान्ती से फैलाहुआ मुख रक्तनेत्र वह पराक्रमी ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि प्रलयकालमें किंकरनाम दण्डधारी क्रोधरूप अग्नि होताहै ११९ इसके पीछे उग्रबाणों की वर्षाओं को बरषाया हे महाराज उनछोड़े हुये बाणों से पांडवी सेनाको भगाया १२० हे श्रेष्ठराजा उसने रथपर सवार श्रीकृष्ण जीको देखतेही फिर उदग्र बाणों की वर्षा करी १२१ तब हे महाराज अश्वत्थामा के छोड़े हुये और चारोंओर से गिरते हुये उनबाणों से वह रथपर चढ़े हुये दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन ढक गये १२२ इसके पीछे तदनन्तर प्रतापी अश्वत्थामा ने युद्ध में हजारों तीक्ष्ण बाणों से उन श्रीकृष्ण अर्जुनको स्तब्ध करदिया १२३ इसरीतिसे युद्धके रक्षक उनदोनोंको बाणोंसे आच्छादित देखकर सब जड़ चैतन्य हाहाकार करनेलगे १२४ सिद्ध चारणों के वह समूह चारों ओर से यह चिन्ताकरते हुये दौड़े कि अब लोकोंकी कुशलहोगी वा न होगी १२५ हे राजा ऐसायुद्ध और पराक्रम हमने प्रथम कभी न देखाथा जैसा कि दोनों श्रीकृष्ण अर्जुनको बाणों से ढकनेवाले अश्वत्थामा ने किया १२६ वहां मैंने शत्रुओंके भयकारी अश्वत्थामाके धनुषका शब्द बारम्बार सुना १२७ इस युद्ध में वाम दक्षिण दोनों ओर को घूमनेवाले सव्यसाची अश्वत्थामाकी प्रत्यंचा ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि बादलों के मध्य में बिजली चमकती है १२८ फिर शीघ्रकर्मी दृढ़हस्तवाले अर्जुन ने अश्वत्थामा को देख बड़े मोह को प्राप्तहोकर १२९ अपने बल पराक्रम को हतमाना और युद्धमें दोनोंका शरीर दुर्दर्शहुआ १३० हे राजेन्द्र इस प्रकारसे अश्वत्थामा और अर्जुन के महा

घोर युद्ध होने और पराक्रमी अश्वत्थामा के प्रबल होने १३१ और अर्जुन के निर्बल होने पर श्रीकृष्णजी में महाक्रोध उत्पन्न हुआ क्रोध से श्वासलेते और नेत्रोंसे भस्म करतेहुये उन श्रीकृष्णजीने १३२ युद्धमें अश्वत्थामा और अर्जुन को बारम्बार देखा और क्रोधरूपहोकर श्रीकृष्णजी अर्जुनसे प्रीतिपूर्व्वक बोले १३३ हे भरतबंशी अर्जुन युद्ध में इस तेरे कर्म को अपूर्व्व मानताहूं कि जहां अश्वत्थामा सरीखा तुझको उल्लंघन करके वर्त्तमानहै १३४ क्या तेरा पराक्रम और भुजबल पूर्व्व के समान है क्या तेरा गांडीवधनुष रथ में हस्तगत नियतहै १३५ क्या तेरे दोनोंभुज कुशलहैं और मुट्ठी तो निर्बल नहींहोगई हैं हे अर्जुन मैं युद्धमें अश्वत्थामाकोही प्रबल विजयी देखताहूं १३६ हे भरतर्षभ अर्जुन यह गुरूका पुत्रहै ऐसा मानकर छोड़ना न चाहिये यहसमय त्यागने के योग्य नहीं है १३७ इसरीति के श्रीकृष्णजी के वचनों को सुनकर शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने चौदह भल्लों को लेकर बड़ी शीघ्रता से अश्वत्थामा के धनुष को काटा १३८ इसीप्रकार से ध्वजा, पताका, रथ, छत्र, शक्ति और गदा को तोड़कर वत्सदन्त नाम बाणों से ठोढ़ी के स्थानपर अत्यन्त घायलकिया १३९ तबतो अश्वत्थामा बड़ा मूर्च्छित होकर ध्वजा की यष्टी के आश्रय हुआ हे राजा फिर अर्जुन से बचाता हुआ उसका सारथी उस शत्रुओं के भयभीत करनेवाले अचेतरूप अश्वत्थामा को युद्ध से दूरलेगया फिर उससमय शत्रुसंतापी अर्जुन ने १४० । १४१ आपकी हजारों सेनाको मारा यह सब कर्म्म अर्जुन ने उस आपके वीर पुत्रके देखतेहुये किया १४२ इस रीतिसे आपके कुमन्त्रों के कारण शत्रुओं के साथ आपके शूरवीरोंका यह महा घोर नाश वर्त्तमान हुआ १४३ अर्जुनने संसप्तकों को भीमसेनने कौरवोंको वा सुषेणने पांचालोंको क्षणमात्रमेंही युद्धभूमिमें छिन्न भिन्न करदिया १४४ हे राजा इस रीतिसे उत्तम वीरों के सन्मुख नाशकारी युद्ध के होनेपर चारोंओर से असंख्य रुण्ड उठखड़े हुये १४५ हे भरतर्षभ आघातोंसे कठिन पीड़ामान युधिष्ठिरभी युद्धमें एक कोस हटकर नियतहुआ १४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

संजय बोले हे भरतर्षभ इसके पीछे दुर्योधनने शल्य आदि अन्य राजाओं

समेत कर्णसे कहा कि १ दैवइच्छासे यह स्वर्गकाद्वार खुलाहुआहै ऐसे युद्धको स्वर्ग और मोक्षके पानेवाले क्षत्री लोगपाते हैं २ हे कर्ण तू युद्धमें अपने समान युद्ध करनेवाले शूरवीर क्षत्रियों के चित्तका जो प्यारा होता है वह दिन आज वर्त्तमान होकर नियतहुआहै ३ युद्धमें पांडवों को मारकर वृद्धियुक्त पृथ्वी को पावोगे अथवा युद्धमें शत्रुओं के हाथसे मरकर वीरों के लोकों को पावोगे ४ वह सब श्रेष्ठ क्षत्री लोग दुर्य्योधनके इस बचनको सुनकर बड़े प्रसन्न होकर अत्यन्त उच्चस्वरसे गर्जे और बाजोंको बजाया ५ इसकेपीछे दुर्योधनकी उससेनाके अति प्रसन्न होनेपर अश्वत्थामाजी आपके शूरवीरोंको प्रसन्न करतेहुये यहबचनबोले कि सब सेनाके मनुष्यों के समक्षमें शस्त्रोंका त्यागनेवाला मेरापिता इस धृष्ट-द्युम्न के हाथसे मारागया ६। ७ हे राजालोगो इसहेतुसे मैं उस क्रोधसे मित्रके लिये भी तुमसे सत्यप्रतिज्ञा करताहूं उसको आपसब समझो ८ मैं धृष्टद्युम्नको जबतक न मारलूंगा तब तक कवचको नहीं उतारूंगा जो मेरी प्रतिज्ञा पूरी न होगी तो स्वर्गको भी मैं नहीं पासक्ता ९ युद्धमें भीमसेन अर्ज्जुनको आदि ले जो कोई शूरवीर धृष्टद्युम्नका रक्षकहोगा उसकोभी मैं युद्धमें बाणोंसे मारूंगा १० इसवचन के सुनतेही भरतवंशियों की सबसेना एक साथही पांडवों के सन्मुख गई और इसीप्रकार वह पांडवलोगभी कौरवों के सन्मुख दौड़े ११ हे राजा वह महारथियों का संग्राम बड़ा भयकारी हुआ और कौरव वा सृंजियों के आगे मनुष्यों का नाश कुछ कम प्रलयहीके समान हुआ १२ इसके पीछे युद्धमें उन कठिन प्रहारों के वर्त्तमान होनेपर अप्सराओं समेत देवता और सब जीवमात्र उन नरवीरों के देखने के अभिलाषी इकट्ठे हुये १३ अत्यन्त प्रसन्न चित्त अप्स-राओं ने युद्धमें अपने कर्म्मसे स्वर्ग में पहुँचने के योग्य बड़े बड़े नरोत्तम वीरों को दिव्य माला वा नानाप्रकारकी गंधि और रत्न जटित उत्तम २ अद्भुत भूष-णों से बरसा करके ढकदिया १४ फिर वायुने उनसब गंधादिकोंको लेकर उन सब श्रेष्ठ युद्ध करनेवाले शूरवीरोंको सेवन किया वायुसे सेवित होकर परस्परमें मारे हुये शूरवीर पृथ्वीपर गिरपड़े १५ दिव्यमाला वा सुनहरी पुंखवाले वि-चित्र बाणों से व्याप्त उत्तम शूरवीरों से विचित्र वह पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि नक्षत्र मण्डल से अलंकृत आकाश होता है १६ इसके पीछे वह युद्धभूमि अन्तरिक्ष के प्रशंसायुक्त वचन बाजों के शब्दों से शब्दायमान धनुष

और रथचक्रोंके अपूर्व्व शब्दों से अद्भुत रूप होकर व्याकुल रूप होगई १७॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिभूमिअद्भुतरूपवर्णनेअष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ५८॥

उनसठवां अध्याय॥

संजय बोले कि अर्ज्जुन कर्ण और भीमसेनके क्रोधयुक्त होनेपर इसरीतिसे राजाओं का यह अद्भुत युद्ध हुआ १ हे राजा अर्ज्जुन अश्वत्थामा को पराजित करके और दूसरे महारथियों को भी विजय करके वासुदेवजी से यहवचन बोला २ हे महाबाहु श्रीकृष्ण जी भागती हुई पाण्डवी सेनाको और युद्ध में महारथियों को भगातेहुये कर्णको देखो ३ हे श्रीकृष्णजी मैं धर्मराज युधिष्ठिर को नहीं देखताहूं हे बड़े शूरवीर मुझको युधिष्ठिरकी बड़ी ध्वजाभी नहीं दिखाई देती ४ हे जनार्द्दनजी जिनका तीसरा भाग शेष है उन धृतराष्ट्र के पुत्रों में से युद्धमें मेरे सन्मुख कोई नहीं आताहै ५ इस हेतु से आप मेरे हितको करते हुये वहां चलो जहांपर युधिष्ठिर है हे माधवजी मैं युद्ध में अपने छोटे भाइयों समेत युधिष्ठिरको कुशल देखकर फिर आनकर शत्रुओं से लडूंगा यहसुनकर श्रीकृष्णजी शीघ्रही रथके द्वाराचले ६। ७ जहां राजा युधिष्ठिर और महारथी सृञ्जय अपनी२ सेनासमेत मृत्युको हाथ में लिये परस्परमें युद्ध करतेथे इसके पीछे मनुष्यों के नाशकाल वर्त्तमान होनेपर युद्धभूमिको देखतेहुये गोविन्दजी अर्जुनसे बोले ८।९ हे अर्जुन देखो कि दुर्योधनके कारणसे पृथ्वीपर क्षत्रियोंका और भरतवंशियोंका महाघोर रुद्ररूप नाश वर्त्तमानहै १० हे धनुषधारी मरेहुये धनुषधारियों के सुवर्णपृष्ठ वाले धनुष और बहुमूल्य टूटेहुये तूणीरोंको देखो ११ और सुनहरी पुंख युक्त टेढ़े पर्व्ववाले बाणोंको तेलसे सफा कियेहुये कांचली से रहित सर्पोंकी समान नाराचों को देखो १२ हाथीदांत का बेंटा रखनेवाले सुवर्ण जटित खड्गोंको और टूटेहुये स्वर्णमयी कवचोंको देखो १३ सुवर्ण जटित प्रास और सुवर्ण भूषणों से अलंकृत शक्ति अथवा स्वर्णसूत्रों से खचित बड़ी २ गदाओंको देखो १४ सुवर्ण से जटित दुधारे खड्ग और पट्टिश और फरसोंको देखो १५ गिरे हुये भारी२ मुशल चित्रितशतघ्नी और बड़े२ परिघोंको देखो १६ इसमहायुद्धमें टूटे चक्र और तोमरोंको देखो विजयाभिलाषी वेगवान् युद्धकर्त्तालोग नानाप्रकारके शस्त्रों समेत मरेहुये भी जीवते हुये से विदित होते हैं गदाओं से अंग

अंग मुशलों से टूटे मस्तक १७ । १८ हाथी घोड़े और रथों से घायल हजारों शूरवीरोंकोदेखो हे शत्रुहन्ता अर्जुन मनुष्य घोड़े और हाथियोंके शरीर बाण, शक्ति, दुधारा, खड्ग, पट्टिश १९ घोर रूप लोहे की परिघ असिकान्त, फरसा इत्यादि शस्त्रों से छिन्नरूप और बहुतसे मृतकरूप शरीरों से २० आच्छादित होकर चन्दन से लिप्त सुबर्ण के बाजुओं से अलंकृत २१ हस्तत्राण वा केयूर रखनेवाली भुजाओं से पृथ्वी प्रकाशमानहुई हे भरतबंशी हस्तत्राण रखनेवाले अत्यन्त अलंकृत औ छिदीहुई उत्तम भुजा २२ और हाथीकी सूंड़के समान महावेगवानोंकी टूटीजंघा और उत्तम चूड़ामणि समेत कुण्डलधारी २३ उत्तम नेत्रवाले वीरोंसमेत पड़ेहुये शिरोंसे पृथ्वी महा शोभायमान होगई है हे भरतर्षभ रुधिरसे लिप्त अंग जिनकी ग्रीवा टूटीहुई २४ इनसब नानाअंगों से पृथ्वी ऐसी प्रकाशित हुई जैसे कि शांतज्योतिवाली अग्नियों से बनशोभित होताहै और सुनहरी घण्टे रखनेवाले बहुत प्रकारसे टूटेहुये शुभरथों से व्याप्त २५ बाणों से घायल मृतक वा व्याकुलपड़ेहुये आनर्त्तवाले घोड़ोंको देखो अनुकर्ष उपासंग पताका और नाना प्रकारकी ध्वजाओं को देखो २६ रथी लोगों के बड़े२ शंख श्वेत चामर और जिनकी जिह्वा बाहर निकल पड़ीं उन पर्व्वताकार सोतेहुये हाथियोंको देखो २७ बैजयन्तीमाला वा रथके बिचित्र मृतक घोड़े वा हाथियों के परिस्तोम मृगचर्म और कम्बलोंको देखो २८ फैलनेसे बिचित्र चांदी से जड़े हुये अंकुश और बड़े २ हाथियों समेत गिरकर टूटे घंटोंको देखो २९ बैडूर्य्य म-णियोंसे जटित सुन्दर दण्ड युक्त गिरेहुये शुभ अंकुश और सवारोंकी भुजाओं में बंधेहुये सुवर्ण जटित चाबुकोंको देखो ३० विचित्र मणियों से जटित सुवर्ण से अलंकृत रांकवान मृगचर्म से बनेहुये पृथ्वीपर पड़ेहुये घोड़ोंके स्तर परिस्तो-मों को देखो ३१ राजाओंकी चूड़ामणि वा बिचित्र स्वर्णमयीमाला वा टूटेहुये छत्र चामर और व्यजनोंको देखो ३२ चन्द्रमा और नक्षत्रों के समान प्रकाशमान सुन्दर कुंडलधारी डाढ़ी मूछोंसे अलंकृत भयसंयुक्त वीरोंके मुखोंसे ३३ ढकीहुई रुधिररूप कीचवाली पृथ्वीको देखो और चारोंओरसे शब्द करनेवाले अन्य स-जीव जीवोंको देखो ३४ हे राजा शस्त्रोंको त्यागकर बारंबार रोनेवाले जातवालों से घिरेहुये बहुतसे मनुष्यों को देखो ३५ वेगवान् वा विजयाभिलाषी क्रोधभरे शूरवीर दूसरे मृतक शूरवीरोंको ढककर फिर युद्धके लिये जाते हैं ३६ इसीप्रकार

पड़े हुये शूरवीरों ने जिन जातवालों से जलको मांगा वह मनुष्य जहां तहां दौड़रहेहैं ३७ हे अर्ज्जुन कोईतो जलके निमित्तगये और अनेक मृतकहुये वह शूर उनको अचेत देखकर लौटे ३८ जलको त्यागकर परस्पर पुकारतेहुये दौड़ते हैं हे श्रेष्ठ जल पीपीकर मरनेवालोंको वा जलके पीनेवालोंको भी देखो ३९ कितनेही बांधवों के प्यारे मनुष्य अपने प्रिय बांधवोंको त्यागकर जहांतहां इस महायुद्धमें युद्ध करतेहुये दृष्टपड़ते हैं ४० हे नरोत्तम इसी प्रकार दोनों ओष्ठों को काटनेवाले टेढ़ी भृकुटीवाले मुखों से चारोंओरको देखनेवाले अन्य मनुष्यों को देखो ४१ तब इस रीतिसे बातें करतेहुये श्री कृष्णजी वहांगये जहांपर कि युधिष्ठिर थे और अर्ज्जुनने भी राजाके देखने के निमित्त ४२ वारम्बार गोविन्द जी को प्रेरणाकरी कि शीघ्रचलो २ ऐसी शीघ्रता करनेवाले माधव श्रीकृष्णजी ने वह युद्धभूमि अर्ज्जुनको दिखाकर ४३ बड़ी धैर्य्यता से अर्ज्जुनसे यह बचन कहा कि हे अर्ज्जुन राजा युधिष्ठिर को और सन्मुख जानेवाले राजाओं को देखो ४४ और महा युद्ध में अग्नि के समान क्रोधरूप कर्ण को भी देखो यह बड़ाधनुषधारी भीमसेन युद्धमें लौटाहै ४५ पांचाल सृञ्जी और जो २ पांडवों के उत्तम गिनेजाते हैं जिनका अग्रगामी धृष्टद्युम्न है वह सब उस भीमसेन के संग में लड़ते हैं ४६ और उस लौटनेवाले पांडव भीमसेन से शत्रुओं की बड़ी सेना फिर पराजयहुई हे अर्जुन यह कर्ण भागनेवाले कौरवोंको रोकताहै ४७ हे कौरव्य वेगमें यमराज के समान और इन्द्रके सदृश पराक्रमी शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ यह अश्वत्थामा भी जाता है ४८ महारथी धृष्टद्युम्न युद्ध में उस भागनेवाले के पीछे जाताहै और युद्धमें मरेहुये सृंजियोंको देखो ४९ महा अजेय बासुदेवजी ने इस रीतिसे इस सब वृत्तान्तको अर्जुन से कहा हे राजा इसके पीछे महाघोर युद्ध जारीहुआ ५० तब मृत्युको निवृत्त करके दोनों सेनाओं के समागम होनेमें दोनों ओरको सिंहनादों के महान् शब्द होनेलगे ५१ हे पृथ्वीपति राजा धृतराष्ट्र आपके दुर्मन्त्रों से पृथ्वीपर आपके और अन्यों के शूरवीरों का इसरीति से नाश जारी हुआ ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिमहायुद्धेनवपंचाशत्तमोऽध्यायः ५९ ॥

साठवां अध्याय॥

संजय बोले कि इसके पीछे निर्भय कौरव सृञ्जी और युधिष्ठिरको अग्रगामी करनेवाले पाण्डव और कर्णको अग्रगामी करनेवाले हमलोग फिर भिड़ गये १ उस समय कर्ण और पाण्डवोंका वह युद्ध फिर जारीहुआ जो भयकारी रोमहर्षण करनेवाला यमराज के देशकी वृद्धि करनेवाला था २ हे भरतवंशी उस कठिन रुधिर रूप जल रखनेवाले युद्ध के जारीहोने पर और शूरवीर संसप्तकों के कुछ बाकीरहने पर ३ धृष्टद्युम्न और महारथी पाण्डव सब राजाओं समेत कर्ण के सन्मुख गये तब अकेले कर्ण ने युद्ध में आनेवाले प्रसन्नचित्त विजयाभिलाषी उन वीरोंको ऐसे धारणकिया जैसे कि जलके समूहोंको पर्व्वत धारण करताहै ४। ५ वह सब महारथी कर्णको पाकर ऐसे भिन्न २ होगये जैसे कि जलके समूह पर्व्वतको पाकर इधर उधर दिशाओं को चलेजाते हैं ६ हे महाराज इसके पीछे रोमहर्षण करनेवाला युद्ध होनेलगा तब धृष्टद्युम्नने कर्णको टेढ़ेपर्ववाले बाणोंसे ७ घायल किया उससमय तिष्ठ२ कहकर विजयनाम उत्तम धनुषको खैंच कर महारथी कर्ण ने ८ धृष्टद्युम्न के धनुषको और बिषैले सर्पों के समान बाणोंको काटकर अत्यन्त क्रोधयुक्तहोकर नौबाणोंसे धृष्टद्युम्नको घायल किया ९ हे निष्पाप वह कर्ण के बाण उस महात्माके सुनहरी कवचको छेदकर रुधिरमें भरेहुये वीरबहूटी के समान शोभायमान हुये १० महारथी धृष्टद्युम्न ने उस टूटे हुये धनुषको डालकर दूसरे धनुष और बिषैले सर्पकी समान बाणोंको लेकर ११ टेढ़े पर्व्ववाले सत्तरबाणोंसे कर्णको पीड़ामानकिया और उसीप्रकार कर्ण नेभी युद्धमें शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्नको १२ बिषैले सर्पके समान बाणोंसेढक दिया फिर द्रोणाचार्य्य के शत्रु बड़े धनुषधारी धृष्टद्युम्नने तीक्ष्ण धारवालेबाणों से पीड़ामान किया १३ हे राजा फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्ण ने सुनहरी भूषण युक्त द्वितीय यमदण्डके समान बाणको उसके ऊपरफेंका १४ हस्तलाघवकरनेवाले सात्यकीने उस अकस्मात् आनेवाले घोररूप बाणको सौप्रकारसेकाटा १५ तब कर्णने बाणको कटाहुआ देखकर सात्यकीको बाणोंकी वर्षाकरके चारोंओर से ढकदिया १६ और सात नाराचों से पीड़ामानभी किया इसकेपीछे सात्यकी ने भी सुवर्णजटित बाणों से उसको छेदा १७ हे महाराज इसके पीछे घोरयुद्ध

हुआ वह युद्ध नेत्र और कर्णोंको भयभीत करनेवाला महाअद्भुत चारोंओरसे देखनेकेही योग्य था १८ हे राजा वहां कर्ण और सात्यकी के उस कर्मको देखकर सब जीवों के रोमांच खड़ेहोगये १९ इसी अन्तरमें अश्वत्थामाजी बड़ेपराक्रमी उस धृष्टद्युम्न के सन्मुख गये जोकि शत्रुओं का विजय करनेवाला और पराक्रम समेत प्राणोंका हरनेवाला था २० शत्रुके पुरके विजय करनेवाले और अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामा जी बोले कि हे ब्राह्मणके मारनेवाले ठहरोठहरो अब मुझसे बचकर जीतानहीं बचसक्ता २१ यह कहकर शीघ्रता करनेवाले अश्वत्थामा ने तीक्ष्णधार घोररूप सुन्दर बेंतवाले बाणों से वीर धृष्टद्युम्न को अत्यन्त वेगसे ढकदिया २२ हे श्रेष्ठ जैसे कि महारथी द्रोणाचार्य्य जी युद्ध में उपाय करनेवाले धृष्टद्युम्नको देखकर बड़ेपरिश्रमसे उपाय करनेवालेहुये २३ उसी प्रकार शत्रुओंके वीरों के मारनेवाले धृष्टद्युम्न युद्धमें अश्वत्थामाको देखकर कुछ अप्रसन्नहोकर अपनी मृत्युकोमाना २४ फिर वह युद्धमें अपनेको शस्त्रसे अवध्य जानकर बड़ी तीव्रतासे अश्वत्थामाके सन्मुख ऐसेगया जैसे कि प्रलयकाल में काल कालके सन्मुख जाता है २५ हे महाराजेन्द्र फिर वीर अश्वत्थामा अपने सन्मुख धृष्टद्युम्नको देखकर क्रोधसे श्वासलेताहुआ उसके सन्मुखगया २६ और उनदोनों ने परस्पर देखकर बड़ा क्रोध किया हे महाराज राजा धृतराष्ट्र इसके पीछे शीघ्रता करनेवाला प्रतापवान् अश्वत्थामा २७ सन्मुख होनेवाले धृष्टद्युम्न से बोले हे पांचालदेशियों में नीच अब मैं तुझको मृत्युके समीप भेजूंगा २८ जो कि पूर्व्वसमय में तुमने द्रोणाचार्य्य को मारकर पापकर्म्म किया है अब वह पापका फल तुझको ऐसा मिलैगा जिसमें तेराकल्याण न होगा २९ हे अज्ञान जो तू अर्जुनसे अरक्षितहोकर युद्धमें नियतहोताहै या नहीं हटताहै इसीसे सत्य२ तेरा कल्याण नहीं है ३० यह बचन सुनकर प्रतापवान् धृष्टद्युम्नने उत्तर दिया कि मेरा वहीखड्ग तेरे उत्तरकोदेगा ३१ जिसने कि युद्धमें उपाय करनेवाले तेरे पिताको उत्तर दियाथा नाममात्र अपनेको ब्राह्मण कहनेवाले द्रोणाचार्यजी मेरे हाथसे मारेगये ३२ अब युद्ध में अपने पराक्रमसे तुझको भी क्यों न मारूंगा हे महाराज क्रोधयुक्त सेनापति धृष्टद्युम्नने ऐसाकहकर ३३ अत्यन्त तीक्ष्णबाण से अश्वत्थामाको घायलकिया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने टेढ़पर्व वाले बाणोंसे युद्धमें धृष्टद्युम्नकी दिशाओंको ढकदिया ३४ उससमय चारों ओर

से वाणोंसे ढकेहुये न शूरवीर दिखाई दिये न दिशा विदिशा समेत अन्तरिक्ष दिखाई दिया हेराजा इसीप्रकार धृष्टद्युम्नने भी युद्धमें शोभादेनेवाले अश्वत्थामाको ३५। ३६ कर्णके देखतेहुये बाणोंसे ढकदिया फिर चारों ओरसे देखनेके योग्य अकेले कर्णनेभी पांचाल पांडव ३७ द्रौपदीके पुत्र युधामन्यु और महारथी सात्यकीको रोका ३८ फिर धृष्टद्युम्नने युद्धमें अश्वत्थामाके धनुषको काटा तब बेगवान् अश्वत्थामाने उसको डाल दूसरे धनुषको लेकर घोरजंग में बिषैले सर्पोंकी समान बाणोंको फेंका फिर उसने धृष्टद्युम्नकी गदा शक्ति धनुष ध्वजा ३९। ४० रथ सारथी और घोड़ोंको बाणोंसे एक क्षणमात्र में मारा तब उसधनुष रथ गदा शक्ति रथ ध्वजा टूटेहुये धृष्टद्युम्नने ४१ बड़ेखड्ग और सौ चन्द्रमा रखनेवाली ढालको लिया हे राजेन्द्र तब हस्तलाघवी बीर अश्वत्थामा ने शीघ्रही अपने भल्लों से रथसे न उतरनेवाले धृष्टद्युम्नके उसखड्गको भी काटा यह बड़ा आश्चर्यसा हुआ ४२। ४३ हे भरतर्षभ फिर उपाय करनेवाला महारथी उस रथ गदा शक्ति खड्ग आदि से रहित बाणों से अत्यन्त घायल धृष्टद्युम्न को न मारसका हेराजा जब अश्वत्थामा वाणोंसे उसको न मारसका ४४। ४५ तब वहबीर धनुष को त्यागकर धृष्टद्युम्नकी ओरको चला और उससमय हेमहाराज उसमहात्मा भ्रमरहित अश्वत्थामाका बेग इसप्रकारका हुआ ४६ जैसे कि उत्तम सर्पके भक्षण करनेवाले गरुड़का बेगहोताहै उसीसमय श्रीकृष्णजी अर्जुनसे बोले ४७ हेअर्जुन देखो जैसे कि अश्वत्थामा धृष्टद्युम्नके रथपर बड़े उपायों को करता है वह निस्सन्देह इसको मारेगा ४८ हे शत्रुओं के बिजय करनेवाले महावाहु जैसे हो सके वैसे अश्वत्थामारूप मृत्युके मुखमें फँसेहुये धृष्टद्युम्नको निश्चयकरके छुटाओ ४९ हेमहाराज ऐसाकहकर प्रतापवान् वासुदेवजीने घोड़ोंको वहांपहुँचाया जहां कि अश्वत्थामा नियतथे ५० केशवजीके हांकेहुये वह चन्द्रवर्ण घोड़े आकाशगामी होकर अश्वत्थामाके रथपरपहुँचे ५१ हे राजा महापराक्रमी अश्वत्थामाने उन बड़े पराक्रमी श्रीकृष्ण और अर्जुनको देखकर धृष्टद्युम्नके मारनेमें उपाय किया ५२ तब बड़े पराक्रमी अर्जुनने खिंचेहुये धृष्टद्युम्नको देखकर बाणों को अश्वत्थामाके ऊपर फेंका ५३ गांडीवधनुषसे चलायेहुये वह स्वर्णमयीवाण अश्वत्थामाको पाकर उसके शरीर में ऐसे प्रवेशकरगये जैसे कि सर्प वामी में घुसते हैं हेराजा उनवाणोंसे घायल और पीड़ावान् वीर अश्वत्थामा युद्धमें बड़े

तेजस्वी धृष्टद्युम्नको छोड़कर रथपर सवारहुये ५४ । ५५ और अर्जुनके वाणसे पीड़ितहोकर उत्तमधनुषको लेकर शायकों से अर्जुनको घायल किया ५६ इसी अन्तरमें वीरसहदेव युद्धभूमि में शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्नको रथ में बैठाकर दूर ले गया ५७ हेमहाराज फिरतो अर्जुनने भी अश्वत्थामाको वाणोंसे पीड़ितकिया फिर वड़े क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने अर्जुनको दोनों भुजा और छातीपर घायल किया ५८ फिर क्रोधयुक्त अर्जुन ने युद्ध में कालके समान दूसरे कालदण्ड के समान नाराचनाम वाणको अश्वत्थामाके ऊपरफेंका ५९ वह वड़ातेजस्वी वाण उसब्राह्मण अश्वत्थामाके कन्धेपर गिरा तब वाणके वेगसे व्याकुलहोकर अश्वत्थामा रथके बैठनेके स्थानपर वैठगये और महाव्याकुलताको पाया हे महाराज इसके पीछे कर्णने अपने विजयनाम धनुषको टंकारा ६० । ६१ युद्धमें क्रोधयुक्त होकर वारम्वार अर्जुनको देखनेवाले और अर्जुनसे युद्धमें द्वैरथ युद्ध करने के अभिलाषी कर्ण ने धनुष को टंकारकर ६२ युद्धभूमि में शीघ्रता करनेवाले अश्वत्थामाको व्याकुल देखके रथकेद्वारा युद्धभूमिसे दूर लेगया ६३ हे महाराज धृष्टद्युम्नको छूटाहुआ और अश्वत्थामा को अचेतता पूर्व्वक व्याकुल देखकर विजय से शोभायमान पांचालों ने वड़े शब्दकिये ६४ हजारों दिव्य वाजेवजे और युद्धमें उस अद्भुतपनेको देखकर शूरवीरों ने सिंहनाद किये ६५ पाण्डव अर्जुन ऐसा कर्मकरके वासुदेवजी से वोला कि हे श्रीकृष्णजी आप संसप्तकों के सन्मुखचलो यहमेरा वड़ा कामहै ६६ अर्जुन के वचनको सुनकर श्रीकृष्णजी वड़ी पताकावाले मन और वायुकेसमान शीघ्रगामी रथकी सवारीसे चलदिये ६७

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअश्वत्थामाअचेतोनामषष्टितमोऽध्यायः ६० ॥

इकसठिवां अध्याय ॥

संजय वोले कि इसी अन्तरमें कुन्तीकेपुत्र धर्मराज युधिष्ठिरको दिखातेहुये श्रीकृष्णजीने अर्जुनसे यह वचन कहा हे पाण्डव वड़े पराक्रमी मारनेके इच्छावान् महाधनुषधारी धृतराष्ट्र के पुत्रों से यह तेराभाई राजायुधिष्ठिर वड़ी शीघ्रता से पीछाकिया जाताहै १ । २ वहां महाउन्मद क्रोधयुक्त पांचाल महात्मा युधिष्ठिर को चाहतेहुये पीछे चलेजाते हैं ३ और पृथ्वी का राजा रथसमेत सेनाओं से अलंकृत दुर्य्योधन राजायुधिष्ठिर के पीछे दौड़ताहै ४ हे पुरुषोत्तम यह पराक्रमी

विषैले सर्पकेसमान स्पर्शवाले सबयुद्धों में कुशल भाइयों समेत मारने का अभिलाषी हैं ५ युधिष्ठिरके पकड़ने की इच्छा करनेवाले यह धृतराष्ट्र के पुत्र हाथी घोड़े रथ और पतियों समेत ऐसे जाते हैं कि जैसे कि इच्छावान् पुरुष उत्तम मनुष्य के पास जाते हैं ६ यादव सात्यकी वा भीमसेन से रोकेहुये युधिष्ठिर को पकड़ने के इच्छावान् यहलोग फिर ऐसे नियतहैं जैसे कि इन्द्र और अग्नि से बारंबार रुकेहुये अमृत के चाहनेवाले दैत्यहोते हैं ७ यह शीघ्रता करनेवाले महारथी बहुत होनेके कारण पाण्डव युधिष्ठिरकी ओर फिर ऐसे जातेहैं जैसे कि वर्षा ऋतुमें जलके प्रवाह समुद्रकी ओर जाते हैं ८ बड़े २ पराक्रमी बड़े धनुषधारी सिंहनादों को करते शंखोंको बजाते और शत्रुओं को चलायमान करतेहुये चले जाते हैं ९ मैं कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिरको मृत्युके मुखमें वर्त्तमान मानताहूं और उस कुन्तीके पुत्रको दुर्योधनकी आधीनतामें वर्त्तमानहोकर अग्निमें होमाहुआ बिचार करताहूं १० हे अर्जुन फिर दुर्योधनकी सेना इसप्रकार की है कि इसके बाण लक्षमें वर्त्तमान होकर समर्थ भी नहीं बचसक्ता है ११ युद्धमें बाणों के समूहों को शीघ्र छोड़नेवाले यमराज के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त बीर दुर्योधन के वेगको कौन सहसक्ताहै १२ बीर दुर्योधन अश्वत्थामा कृपाचार्य्य और कर्णके बाणोंका वेग पर्व्वतोंका भी तोड़नेवाला है १३ शत्रुओं का संतप्त करनेवाला पराक्रमी हस्तलाघवी कर्मकर्त्ता युद्धमें कुशल राजायुधिष्ठिर कर्णके हाथसे मुखमोड़नेवालाहो चुकाहै और बड़े शूरबीर धृतराष्ट्रकेपुत्रों समेत कर्ण युद्धमें युधिष्ठिरको पीड़ामान करने को समर्थ है १४।१५ युद्धमें लड़नेवाले प्रशंसनीय बुद्धि उस युधिष्ठिर के पराजय होनेका गुमान इन और अन्य महारथियोंको भी प्राप्तहै १६ क्योंकि यह भरतबंशियों में श्रेष्ठ व्रत करनेवाला समर्थ राजायुधिष्ठिर ब्राह्मणोंके क्षमा आदि पराक्रमोंमें नियतहै यह क्षत्री धर्म्मरूप पराक्रम में अर्थात् कठोर प्रकृति आदिमें नियतनहीं है १७ निश्चय करके कर्णकेसाथ भिड़ेहुये शत्रुहन्ता युधिष्ठिर बड़े संशयमें प्राप्तहुआहै १८ हे अर्जुन जो कि असहन शील भीमसेन शत्रुओंके सिंहनादों को सहरहाहै इससे मैं अनुमान करताहूं कि महाराज युधिष्ठिर जीवतेहुये नहीं हैं १९ हे भरतर्षभ युद्धमें विजयसे शोभायमान वारंवार गर्जते और शंखोंको बजातेहुये २० यह कर्ण बड़े पराक्रमी उन धृतराष्ट्रके पुत्रोंको प्रेरणा करताहै कि तुम पांडव युधिष्ठिरको मारो २१ हे अर्जुन महारथी लोग इंद्रजालरूप स्थूणा कर्ण

नाम गांधर्वअस्त्र वा पाशुपतिअस्त्र और वाणोंकेजालोंसे राजाको ढकरहे हैं २२ हे भरतवंशी अर्जुन राजायुधिष्ठिर ऐसा व्याकुल करदिया है जैसा कि यह पांचालदेशी अश्वत्थामाने कियाथा पांडवों समेत सब शूरवीर इसके पीछे हुये हैं इसीप्रकार तुमसे भी यह राजा रक्षाकरनेके योग्यहै २३ सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ पराक्रमी शीघ्रता के समय शीघ्रता करनेवाले शूरवीर उस पातालमें डूबेहुये के समान युधिष्ठिरको निकालने की इच्छा कररहे हैं२४ राजाकी ध्वजानहीं दिखाई देती है हे अर्जुन वह राजा नकुल, सहदेव, सात्यकी और शिखण्डी के देखते हुये कर्ण के बाणों से मारागया २५ हे भरतवंशी समर्थ अर्जुन वह राजाधृष्टद्युम्न भीमसेन, शतानीक और सब पांचाल वा चंदेरीदेशियोंके देखतेहुये मारागया २६ हे अर्जुन यह कर्ण बाणों से पाण्डवोंकी सेनाको ऐसे माररहाहै जैसे कि कमल के बनोंको हाथी मारताहै २७ हे पांडुनन्दन यह आपके रथी भागते हैं हे अर्जुन देखो २ यह महारथी जाते हैं २८ हे भरतवंशी यह हाथी कर्ण के बाणों से घायल और पीड़ित होकर शब्दोंको करतेहुये दशों दिशाओंको भागते हैं २९ हे अर्जुन शत्रुओंके पराजय करनेवाले कर्ण से युद्धमें भगायेहुये यह रथों के समूह चारों ओरसे भागते चलेजातेहैं ३० हे ध्वजाधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन कर्णके रथपर नियत हाथीकी कक्षाका चिह्न रखनेवाली और जहां तहां युद्धमें घूमने वाली ध्वजाको देखो ३१ यह कर्ण हजारों बाणों को बरसाता तुम्हारी सेना को मारता हुआ भीमसेनके रथपर दौड़ताहै ३२ इन भगायेहुये महारथी पांचालों को ऐसा देखो जैसे कि महायुद्धमें इन्द्रसे भगायेहुये दैत्य होते हैं ३३ यह कर्ण युद्ध में पांचाल पांडव और सृञ्जियों को विजय करके तेरे निमित्त सब दिशाओं को देखताहै यहमेरा पक्काअनुमानहै ३४ हे अर्जुन यहकर्ण उत्तम धनुषको खैंचता हुआ ऐसा शोभायमानहै जैसे कि देवगणोंसे व्याप्त शत्रुओं को विजयकरके इन्द्र शोभायमान होताहै ३५ यह सब कौरव कर्ण के पराक्रमको देखकर गर्जते हुये शब्दोंको करते हैं और युद्धमें चारोंओर से पांडव और सृंजियों को डरते हैं ३६ हे प्रशंसा देनेवाले यह कर्ण युद्धमें सब आत्मासे पांडवोंको भयभीतकरके सब सेनाके मनुष्यों से बोला ३७ हे कौरव्य तुम्हारा कल्याणहो तुम शीघ्र चलकर सन्मुखताकरो जिससे कि कोई सृंजी युद्धमें तुम्हारे हाथसे जीवता बच कर न जावे तुम शस्त्रोंको धारणकिये सावधानीसे युद्धकरो और हम पीछे की

ओर से चलते हैं यह कर्ण इसरीति से कहकर पीछेकी ओरसे बाणों को मारता हुआ चलागया ३८। ३६ हे अर्जुन श्वेतछत्रसे शोभायमान कर्णको देखो वह ऐसा मालूमहोताहै जैसे कि चन्द्रमासे शोभायमान उदयाचल पर्व्वतहोताहै ४० हे भरतवंशी अर्जुन पूर्ण चन्द्रमाके समान शोभायमान सौ शलाका रखनेवाले मस्तकपर धारण किये हुये छत्रसमेत ४१ यह कर्ण तुझको सकटाक्ष देखता है निश्चय करके यह बड़ी तीव्रतामें नियतहोकर युद्धमें आवेगा ४२ हेमहाबाहु बड़े युद्ध में बृहत् धनुषको चढ़ानेवाले बिषैले सर्पोंके समान बाणोंके छोड़नेवाले इस कर्णको देखो ४३ हे शत्रुसंतापी अर्जुन यह कर्ण तुझ से युद्ध करनेकी इच्छा करताहुआ तेरी बानरीध्वजाको देखकर लौटा ४४ यह अपने मरनेके लिये ऐसे आताहै जैसे कि शलभनाम पक्षी प्रकाशमान अग्निके मुखमें जाताहै हे भरत-बंशी रथकी सेनासमेत रक्षाकरनेका अभिलाषी दुर्योधन अकेले कर्णकोही देख कर लड़ताहै इन सबसमेत इसदुष्ट अन्तःकरणवाले दुर्योधनको बड़े बिचारपूर्वक उपायोंसे मारनाचाहिये ४५। ४६ हे उच्चाभिलाषी शस्त्रोंको अच्छीरीतिसे जानने वाले युद्धाभिलाषी यश राज्य और उत्तमसुखको चाहनेवाले तेरे हाथसे मारनेके योग्यहै ४७ हे राजा जैसे कि देवासुरोंके युद्धमें देवता और दानवोंके युद्ध होते हैं इसीप्रकार हे भरतर्षभ अत्यन्त क्रोधयुक्त तुझको और कर्णको देखकर ४८ यह क्रोधयुक्त दुर्य्योधन अपनेको बुद्धिमान् बिचारकर उत्तरको नहीं पाताहै ४६ हे कुंतीकेपुत्र तुम धर्मात्मा युधिष्ठिरकेसाथ अपराध करनेवाले आसन्नमृत्यु कर्ण के सन्मुख शीघ्रहीजाओ ५० और बुद्धिको प्रबल करके इस महारथी के सन्मुख चलो हे रथियोंमें श्रेष्ठ यह पांच महापराक्रमी और तेजस्वी उत्तम रथी ५१ पांच हजारहाथी और दशहजार घोड़ों समेत हजारोंशूरबीरोंको साथलिये ५२ प्रयुतों पदातियोंसे युक्तहोकर आतेहैं हेवीर परस्परमें रक्षित सेना तेरे सन्मुख आती है ५३ हे भरतर्षभ तुम आप चलकर इस बड़े धनुषधारी कर्ण को दर्शन दो और बड़ी तीव्रता में नियत होकर सन्मुख जाओ ५४ यह अत्यन्त क्रोध युक्त होकर कर्ण पांचालोंके सन्मुख दौड़ताहै मैं इसकी ध्वजाको धृष्टद्युम्नके रथपर देखताहूं ५५ हे शत्रुसंतापी मैं मानताहूं अर्थात् अनुमान करताहूं कि यह पांचालों के सन्मुख जाताहै हे अर्जुन अब मैं उस तेरी अभीष्ट प्रियवार्त्ता को कहताहूं ५६ कि यह श्रीमान् धर्मका पुत्र राजा युधिष्ठिर आनन्दपूर्व्वक कुशल से है और यह महा-

बाहु भीमसेन सेनाके मुखसे निवृत्तहुआ लौटाहै ५७ और वह भरतवंशी संजियों की सेना सात्विकी से युक्तहै यह कौरव युद्धमें तीक्ष्णधार बाणों से मररहेहैं ५८ हे अर्जुन महात्मा पांचालों से और भीमसेन के हाथसे दुर्योधनकी सेना युद्ध में मुखोंको मोड़मोड़कर ५९ भीमसेन के बाणोंसे घायल होकर बड़ी शीघ्रतासे भागतीहै और टूटे कवच रुधिर से लिप्त शरीरवाली ६० महादुखी भरतवंशियों कीसेना दिखाईदेती है हे भरतर्षभ अर्जुन इस शूरवीरों के स्वामी फैलेहुये भीमसेनको देखो कि यह विषैले सर्पकी समान क्रोधयुक्त सेनाका भगानेवालाहै हे राजन् यह लालपीले काले और श्वेत सूर्य्य चन्द्रमा और नक्षत्रों से शोभायमान ६१ । ६२ अलंकृत पताका और छत्र गिरते हैं मुख न मोड़नेवाले और नानाप्रकार के वर्णवाले पांचालों के बाणों से घायल और निर्जीव होकर यह रथी अपने २ रथोंसे गिरतेहैं ६३ । ६४ हे अर्जुन वेगवान् पांचाल मनुष्य हाथी घोड़े और रथों से जुदे धृतराष्ट्रके पुत्रोंके सन्मुख जाते हैं और नरोत्तम भीमसेन से रक्षित होकर ६५ । ६६ वह अजेय पांचाललोग अपने २ प्राणोंकी आशा छोड़ २ शत्रुओं को मर्द्दनकरते हैं हेशत्रुविजयी यह सब पांचाल प्रसन्नहो होकर शंखों को बजाते हैं ६७ और युद्धमें बाणों से शत्रुओंको मर्द्दन करतेहुये दौड़ते हैं इन अपने शूरवीरों के साहसको देखो कि पांचालदेशी शूर अपने पराक्रमों से धृतराष्ट्र के पुत्रों को ऐसे मारतेहैं ६८ जैसे कि क्रोधयुक्त सिंह हाथियों को मारते हैं शस्त्रोंसे रहित शूरवीर शस्त्रधारी शत्रुओं के शस्त्रको काटकर ६९ उसीसे इन फलयुक्त शस्त्रधारियों को मारतेहुये गर्जनाओं को करतेहैं शत्रुओं के शिर और भुजाभी गिरायी जाती हैं ७० रथ हाथी घोड़े और युद्ध के सब वीरलोग शूरता के उत्पन्न करने वाले शब्दों को कररहे हैं और यह दुर्योधन की बड़ीसेना सब ओर को पांचालों के सन्मुख ऐसे वर्त्तमानहै ७१ जैसेकि वेगवान् हंसों से चारोंओर को व्याप्त श्री गंगाजी होती हैं श्रेष्ठों में भी अतिश्रेष्ठ वीर कृपाचार्य्य और कर्ण आदि यह सब पांचालों के रोकने में कठिन पराक्रम करनेवाले हुये और भीमसेन के अस्त्रों से पराजित महारथी धृतराष्ट्र के पुत्रों को देखो ७२ । ७३ और शत्रुओं के हाथ से पांचालों के पराजय होनेपर निर्भय होकर गर्जनेवाले धृष्टद्युम्न आदि वीरहजारों शत्रुओंको मारतेहैं ७४ वायुका पुत्र भीमसेन शत्रुओं के पक्षोंको मझाकर बाणों की वर्षाकरताहै और धृतराष्ट्रकी बड़ी सेना महाव्याकुलहै ७५ और यह रथीभी

भीमसेन के भयसे अत्यन्त पीड़ामान होकर भयभीतहैं देखो भीमसेन के नाराचों से घायल होकर यह हाथी ऐसे गिरते हैं ७६ जैसे कि इन्द्रके बज्रसे टूटेहुये पर्व्वतों के शिखर गिरते हैं भीमसेन के गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से घायल यह बड़े २ हाथी अपनी सेनाओंको कुचलते दबातेहुये इधर उधरको भागते हैं भीमसेन का सिंह बड़े दुःख से सहनेके योग्यजानो ७७।७८ हे राजन् दण्डधारी यमराजके समान क्रोधयुक्त तोमरों से भीमसेन के मारनेकी इच्छा से यह निषादकापुत्र इस युद्धमें गर्जनेवाले और बिजयसे शोभायमान बीर भीमसेन के सन्मुख आताहै इसकी दोनों भुजाओं को उस गर्जनेवाले भीमसेन ने तोमर से काटडाला ७६।८० और देदीप्य अग्नि और सूर्य्यके समान प्रकाशित दशबाणों से मारडाला इसको मारकर अब प्रहार करनेवाले दूसरे हाथियों के सन्मुख आताहै ८१ सवारों समेत सवारियों को और नीले बादलों के समान हाथियों को शक्ति और तोमरों से मारनेवाले भीमसेन को देखो ८२ हे राजन् तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे उन सात २ हाथियों की बैजयन्ती ध्वजाओं को काटकर तेरे बड़े भाई भीमसेनने मारडाला ८३ दश २ नाराचों से एक २ हाथी मारागया इसीसे धृतराष्ट्रके पुत्रों के शब्द नहीं सुनेजाते हैं हे भरतर्षभ इसीप्रकार युद्धमें इन्द्रके समान भीमसेन के लौटने पर क्रोधयुक्त नरोत्तम भीमसेनके हाथसे दुर्य्योधनकी तीनअक्षौहिणी सेना घायल और रोकीगई संजय बोले कि भीमसेन के उन कठिनकर्मों को देखकर ८४।८५।८६ अर्ज्जुनने शेष बचेहुये शत्रुओं को तीक्ष्णधार बाणों से छिन्न भिन्न करदिया हे प्रभु वह संसप्तकों के समूह युद्धमें घायल और भयभीतहोकर दशों दिशाओं में विभागित होकर भागे और इन्द्रके आतिथ्यको पाकर शोक से रहित हुये ८७।८८ पुरुषोत्तम अर्ज्जुनने टेढ़े पर्व्ववाले बाणों से दुर्य्योधन की चतुरंगिणी सेनाको मारा ८९॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेएकषष्टितमोऽध्यायः ६१॥

बासठवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि पाण्डव भीमसेन और युधिष्ठिरके लौटने और पांडव वा सृंजियों के हाथसे मेरी सेनाके मरने १ अथवा अप्रसन्नता पूर्व्वक सेनाकेसमूहों के वारम्वार भागनेपर हे संजय मुझको समझाकर कहौ कि कौरवों ने क्या २

किया संजय बोले कि हे राजन् क्रोधसे रक्त नेत्रवाला प्रतापवान् कर्ण महाबाहु भीमसेन को देखकर उसके सन्मुखगया ३ और उस पराक्रमी भीमसेन से मुख फेरीहुई आपके पुत्रकी सेनाको देखकर बड़ीयुक्ति और उपायसे नियतकिया ४ वह महाबाहु कर्ण आपके पुत्रकी सेनाको नियत करके युद्धमें दुर्मद पाण्डवों के सन्मुख गया ५ फिर युद्धभूमि में धनुषों को चढ़ाकर शायकों को छोड़ते पाण्डवों के महारथी लोग कर्ण के सन्मुख गये ६ उनके नाम यह हैं भीमसेन सात्विकी, शिखण्डी, जनमेजय, पराक्रमी धृष्टद्युम्न और सब प्रभद्रकनाम नरोत्तमक्षत्री ७ मारनेकी इच्छासे अत्यन्त क्रोधयुक्त युद्धके शोभादेनेवाले आपकी सेनाके सन्मुख गये ८ हे राजा इसीप्रकार मारने के इच्छावान् शीघ्रता करने वाले आपके भी महारथी पाण्डवों की सेनाके सन्मुखगये ६ हे पुरुषोत्तम रथ हाथी घोड़े पति और ध्वजाओं से युक्त वह सेना अपूर्व देखने में आई १० हे महाराज शिखण्डी कर्ण के सन्मुख गया धृष्टद्युम्न उस आपके पुत्र दुश्शासन के सन्मुखगया जो कि बड़ी सेनाको साथलिये हुयेथा ११ हे राजन् नकुल वृषसेन के युधिष्ठिर चित्रसेन के और सहदेव उलूक के सन्मुख गया १२ सात्विकी शकुनि के द्रौपदी के पुत्र कौरवों के और युद्धमें कुशल अश्वत्थामा अर्ज्जुन के सन्मुख गया १३ कृपाचार्य्य युद्धमें बड़े धनुषधारी युधामन्युके और पराक्रमी कृतवर्मा उत्तमौजाके सन्मुख गया १४ हे श्रेष्ठ फिर महाबाहु अकेले भीमसेनने सब कौरवों समेत सेनाकोसाथ रखनेवाले आपके पुत्रोंको रोका १५ हे महाराज इसके अनन्तर भीष्मजी के मारनेवाले शिखण्डी ने उस निर्भय के समानघूमने वाले कर्णको रोका १६ उसके पीछे रुकेहुये और क्रोधसे चलायमान ओष्ठवाले कर्णने शिखण्डी को तीन बाणोंसे दोनों भृकुटियों के मध्यमें घायलकिया वह शिखण्डी उन बाणोंको धारण कियेहुये ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि तीन शिखरों से उठे हुये सुवर्ण के पर्व्वत होते हैं १७ । १८ युद्धमें कर्ण के हाथ से अत्यन्तघायल बड़े धनुषधारी शिखण्डी ने तीक्ष्णधारवाले नव्वे बाणों से कर्ण को पीड़ामान किया १६ फिर महारथी कर्णने तीनबाणों से सारथीको मारकर क्षुरप्रसे उसकी ध्वजाको काटा २० शत्रुओंके संतप्त करनेवाले महारथी शिखंडी ने मृतक घोड़ोंके रथसे उतरकर अपनी शक्तिको कर्णके ऊपर फेंका २१ हेभरतवंशी फिर कर्णने तीनशायकोंसे उस शक्तिको काटकर तीक्ष्ण बाणोंसे शिख-

ण्डीको घायल किया २२ इसकेपीछे अत्यन्त व्याकुल शिखण्डी कर्णके धनुष से निकलेहुये बाणोंको रोकताहुआ शीघ्रही हटगया २३ हेमहाराज इसकेपीछे कर्णने पांडवीसेनाको ऐसा भिन्न२ करदिया जैसे कि बड़ा पराक्रमी वायु रुई के ढेरों को तिर्र बिर्र करदेताहै २४ फिर आपके पुत्रके हाथ से पीड़ामान धृष्टद्युम्नने तीनबाणोंसे दुश्शासनको छातीपरछेदा २५ फिर दुश्शासनने उसकी बाईंभुजा को छेदा हे भरतबंशी सुनहरीपुंख टेढ़ेपर्ववाले भल्लसे घायल २६ क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्नने घोरबाणको दुश्शासनके ऊपर फेंका २७ हे राजन् आपकेपुत्रने धृष्टद्युम्नके चलायेहुये बड़ेवेगवान् बाणको तीनबाणोंसे काटकर २८ सुनहरे अंगवाले सत्रह भल्लों से धृष्टद्युम्नको दोनोंभुजा और छातीपर घायलकिया २९ इसकेपीछे उस क्रोधभरे धृष्टद्युम्नने अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्रसे दुश्शासनके धनुष को काटा तब तो मनुष्य पुकारे ३० इसकेपीछे हँसतेहुये आपके पुत्रने दूसरे धनुषको लेकर बाणों के समूहों से धृष्टद्युम्न को चारों ओर से रोका ३१ वह सब शूरबीर और सिद्धों समेत अप्सराओं के समूह आपके पुत्रके पराक्रमको देखकर युद्धमें आश्चर्य्य सा करनेलगे ३२ उपाय करनेवाले बड़े पराक्रमी दुश्शासन से रुकेहुये धृष्टद्युम्न को ऐसे नहीं देखा जैसे कि सिंहसे रुकेहुये बड़े हाथीको नहीं देखते ३३ हे पांडु के बड़ेभाई इसके पीछे सेनापतिके चाहनेवाले पांचालों ने रथ हाथी और घोड़ों समेत आपके पुत्रको रोका ३४ हे शत्रुसन्तापी इसकेपीछे आपके शूरबीरों का युद्ध दूसरोंकेसाथ होनेलगा वहयुद्ध महाघोर भयानकरूप और समयपर प्राणों का हरनेवाला था ३५ पिताके सन्मुख नियत वृषसेन ने पांच लोहे के बाणों से और तीन अन्यबाणों से नकुलको छेदा ३६ इसके पीछे हँसतेहुये शूरबीर नकुल ने अत्यंत तीक्ष्ण नाराच से वृषसेनको हृदय पर कठिन पीड़ामान किया ३७ पराक्रमी शत्रुके हाथसे अत्यन्त घायल उस शत्रुओंके पराजय करनेवाले ने बीसबाणों से शत्रुको पीड़ामानकिया और उसने भी उसको पांचबाणोंसे व्यथितकिया ३८ उसके पीछे उनदोनों पुरुषोत्तमों ने हज़ारों बाणों से परस्पर ढक दिया तदनन्तर सेना छिन्नभिन्न होगई ३९ हे राजन् कर्ण ने दुर्योधनकी भागी हुई सेनाको देखकर उनको पीछे से जाकर रोका ४० इसके पीछे कर्ण के लौटने पर नकुल कौरवोंकी ओरचला फिर कर्ण के पुत्रने युद्धमें नकुलको छोड़कर ४१ फिर शीघ्रतासे कर्णकीही सेनाको रक्षित किया वहांक्रोधयुक्त उलूकको युद्धमें

प्रतापवान् सहदेवने रोककर ४२ उसके चारों घोड़ोंको मार सारथीको यमलोक में पहुंचाया हे राजन् इसके पीछे पिताको प्रसन्नकरनेवाला उलूक रथसे उतरकर शीघ्रही त्रिगर्त्तदेशियों की सेनामें गया ४३ और हँसतेहुये सात्विकी ने तेज धारवाले बीसबाणों से शकुनिको छेदकर एकबाणसे उसकी ध्वजाको काटा ४४ हे राजन् फिर क्रोधयुक्त प्रतापवान् शकुनी ने युद्ध में उसके कवच को चीरकर उसकी सुनहरी ध्वजाको काटा ४५ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले सात्विकी ने बाणों से उसके घोड़ोंको यमलोकमें पहुंचाया हे भरतर्पभ फिर शकुनी अकस्मात् रथसे कूदकर शीघ्रही ४६। ४७ महात्मा उलूकके रथपर सवारहुआ तब युद्धको शोभा देनेवाले सात्विकी ने उसको शीघ्रही हटाया ४८ हे राजन् फिर सात्विकी आपकी सेनाके सन्मुखगया और सेना भिन्नभिन्न होगई ४९ सात्विकी के बाणों से ढकीहुई आपकी सेनाके लोग शीघ्रही दशों दिशाओं में भागकर निर्जीवों के समान गिरपड़े ५० फिर आपके पुत्रने युद्धमें भीमसेन को रोका तब भीमसेनने एकमुहूर्त्त भरमेंही वहां उस पृथ्वी के राजा दुर्य्योधनको घोड़े रथ सारथी और ध्वजासे रहित करदिया ५१ उस कर्म से सब मनुष्य प्रसन्नहुये इसके पीछे राजा दुर्य्योधन भीमसेनके आगे हटगया ५२ फिर सब कौरवी सेनाने भीमसेन को घेरा वहां भीमसेनके मारनेके इच्छावान् शूरवीरोंके बड़े शब्दहुये ५३ युधामन्युने कृपाचार्यको छेदकर शीघ्रही उनके धनुषको काटा इसकेपीछे शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ कृपाचार्यने दूसरे धनुषको लेकर ५४ युधामन्युकी ध्वजा सारथी और छत्रको पृथ्वीपर गिराया इसकेपीछे महारथी युधामन्यु रथकी सवारी से हटगया ५५ उत्तमौजाने भयानकरूप और भयानक पराक्रमवाले कृतबर्मा को बाणों से अकस्मात् ऐसा ढकदिया जैसे कि बादल पानीकी वर्षासे पर्व्वतको ढकदेता है ५६ हे शत्रुसंतापी राजा धृतराष्ट्र वह महाघोर युद्ध ऐसा बहुत बढ़ाहुआ जैसाकि मैंने पहले कभी न देखाथा ५७ इसकेपीछे कृतवर्माने युद्धमें उत्तमौजस को हृदयपर पीड़ामानकिया तव वह अकस्मात् रथके अंगपर बैठगया ५८ फिर सारथी रथके द्वारा उस महारथीको दूरलेगया इसकेपीछे सब कौरवी सेना भीमसेनके ऊपरचढ़आई ५९ दुश्शासन और शकुनीने हाथियोंकी बड़ीसेना समेत भीमसेनको घेरकर क्षुरप्र नाम बाणोंसे घायल किया ६० तब क्रोधयुक्त भीमसेन सैकड़ों बाणों से क्रोधयुक्त दुर्य्योधनको विमुख करके बड़ी तीव्रतासे हाथियोंकी

सेनापर आटूटा ६१ वहां अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन ने उस अकस्मात् आने वाली हाथियोंकी सेनाको देखकर दिव्यअस्त्रको प्रकट किया ६२ हाथियों को हाथियों से ऐसे मारा जैसे कि बज्रसे इन्द्र असुरों को मारताहै ६३ इसके पीछे युद्धके बीच हाथियों को मारतेहुये भीमसेन ने बाणों के समूहों से आकाशको ऐसा ढकदिया जैसे कि टीड़ियों से वृक्ष ढकजाताहै इसकेपीछे भीमसेनने मिले हुये हाथियों के हजारों झुण्डों को बड़े वेगसे ऐसे छिन्नभिन्न करदिया जैसे कि बादलों के समूहों को बायु तिर्रे बिर्रे करदेताहै सुवर्ण और मणियों के जालों से ढकेहुयेहाथी ६४।६५ युद्धमें ऐसे अधिक शोभायमान हुये जैसे कि बिजली रखनेवाले बादल हे राजन् भीमसेनके हाथसे घायलहोकर सबहाथी शब्द करतेहुयेभागे ६६ कितनेही हाथी हृदयमें घायलहोकर पृथ्वीपर गिरपड़े उन गिरे हुयेसुवर्ण भूषणों से अलंकृत हाथियों से ६७ वहां पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि फैलेहुये पर्वतोंसे प्रकाशित मुखवाले रत्नोंसे अलंकृत गिरनेवाले हाथियों के सवारों से होतीहै ६८ अथवा पृथ्वी ऐसी मालूमदेतीथी जैसे कि क्षीणपुण्य वाले ग्रहों के गिरने से शोभायमान होतीहै इसके पीछे मदझाड़नेवाले टूटेहुये मुखवाले सैकड़ों हाथी भीमसेनके बाणोंसे घायलहोकर युद्धसेभागे भयसे पीड़ित बाणों से घायल अंग रुधिरको बमनकरनेवाले पर्व्वताकार अनेक हाथी ६९।७० धातुयुक्त पर्व्वतों के समान भागे हमने भीमसेन की दोनों धनुष खैंचनेवाली भुजाओं को बड़ेसर्पकी समान चन्दन अगरसे अलंकृत देखा और उसके बज्र के समान शब्दवाले ज्या शब्दको सुनकर ७१।७२ मूत्र बिष्ठाको करतेहुये हाथी बड़े कठिनशब्दोंको करतेहुये भागे हे राजन् उस अकेले बुद्धिमान् भीमसेनका वहकर्म ७३ इसरीति का शोभितहुआ जैसे कि सब जीवोंके मारनेवाले रुद्रजी का होताहै ७४ ॥ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

तिरसठवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके अनन्तर श्वेतघोड़ों से युक्त और श्रीनारायणजी के थांबेहुये उत्तम रथपर नियत श्रीमान् अर्जुन आकर सन्मुखहुआ १ हे भरतर्षभ अर्जुनने युद्धमें आपकी उसबड़ी घोड़ोंवाली सेनाको ऐसे छिन्नभिन्न करदिया

जैसे कि वायुबड़े समुद्रको उथल पुथल करदेताहै २ अर्ज्जुन के प्रमत्त होनेपर आधी सेना को साथ लियेहुये आपके पुत्र दुर्य्योधन ने अकस्मात् सन्मुख आ कर ३ आतेहुये क्रोधयुक्त युधिष्ठिरको रोककर तिहत्तरबाणों से घायलकिया ४ तबतो कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर बड़े क्रोधयुक्तहुये और शीघ्रही उसने बीस भल्लोंको आपके पुत्रके शरीरमें प्रविष्ट किया ५ इसके पीछे युधिष्ठिरके पकड़नेकी इच्छासे कौरव दौड़े तब महारथी लोग शत्रुओं का दुष्ट विचार जानकर ६ उसकुन्ती के पुत्र युधिष्ठिरको चाहतेहुये सब आनकर इकट्ठेहोगये नकुल सहदेव और पर्षतका पौत्र धृष्टद्युम्न एकअक्षौहिणी सेना समेत युधिष्ठिर के पास दौड़े ७ और युद्धमें आपके महारथियों को मर्द्दन करताहुआ भीमसेनभी शत्रुओं से घिराहुआ ८ राजाको चाहताहुआ दौड़ा हे राजन् सूर्य्यके पुत्र कर्णने उन आनेवाले सब बड़े धनुषधारियों को ९ बाणोंकी बर्षासे रोका और बाणोंकी वर्षाकरते तोमरोंको च-लाते १० वह उपायकरनेवाले लोगभी कर्णकी ओर देखनेको समर्थ नहींहुये फिर कर्णने उन सब शस्त्रकुशल बड़े २ धनुषधारियों को ११ बड़ीबाणोंकी वर्षा करके रोका और शीघ्र अस्त्रके प्रकट करनेवाले प्रतापी सहदेव ने दुर्य्योधनके सन्मुख होकर शीघ्रही बीसबाणोंसे छेदा सहदेवके हाथसे घायल पर्व्वतके समान राजा दुर्योधन १२। १३ मदोन्मत्त हाथीके समान रुधिरसे लिप्तहुआ फिर वहां बाणोंसे घायलहुये आपके पुत्रको देखकर १४ रथियोंमें श्रेष्ठ कर्ण क्रोधित होकर दौड़ा तब दुर्योधनको देखकर शीघ्रही अस्त्रको प्रकटकिया १५ उस अस्त्रसे युधिष्ठिरकी सेनासमेत धृष्टद्युम्न को घायल किया इसके पीछे महात्मा कर्ण के हाथ से घा-यल और पीड़ामान युधिष्ठिरकी सेना अकस्मात् भागी १६ हे राजन् वहां नाना प्रकारके बाण परस्पर में फेंकेगये १७ कर्ण के धनुष से निकले हुये बाणों ने भल्लोंसे पुंखोंको काटा हे राजन् अन्तरिक्षमें परस्पर गिरनेवाले बाण समूहोंकी १८ घिसावट से अग्नि उत्पन्न हुई इसके पीछे कर्णने चलनेवाली टीड़ियोंके समान शत्रुके शरीरमें प्रवेश कर जानेवाले बाणों से बड़े वेगयुक्त होकर दशों दिशा-ओंको आच्छादित कर दिया लालचन्दन से चर्चित सुवर्ण और मणियों से अलंकृत १९। २० भुजाओं को उत्तम अस्त्र के दिखाने वाले कर्ण ने चेष्टावान् किया इसके अनन्तर अपने शायकों से सब दिशाओंको व्याप्त करके २१ कर्ण ने धर्मराज युधिष्ठिर को बहुत पीड़ित किया इसके पीछे क्रोधयुक्त धर्म के पुत्र

युधिष्ठिर ने २२ तीक्ष्ण पचास बाणों से कर्ण को घायल किया वह युद्धभूमि बाणों से अन्धकार युक्त होकर महाभयकारी दिखाईदी २३ हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र तब धर्म्मपुत्र के हाथ से सेना के घायल होजाने पर आपके शूरवीरों ने बड़ा हाहाकार किया २४ फिर कंकपक्ष वाले अनेक शायक तीक्ष्ण धारवाले बहुतसे भल्ल नानाशक्ति दुधारे खड्ग और मुशलों से उस धर्मात्मा ने जहां जहां अपने क्रोधको प्रकटकिया हेभरतर्षभ तहांतहां आपके शूरवीर छिन्नभिन्नहोगये २५।२६ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्णने भी धर्मराज युधिष्ठिर को नाराच अर्द्धचन्द्र और बत्सदन्तनाम बाणों से घायल किया २७ वह अशान्तचित्त क्रोधयुक्त महासाहसी कर्ण क्रोधसे ओठोंको चबाताहुआ शायकों को लेकर युधिष्ठिर के पास गया २८ तब युधिष्ठिरने उसको सुनहरी पुंखवाले सौ बाणोंसे घायलकिया फिर हँसतेहुये कर्ण ने तीक्ष्ण कंकपक्षसे जटित २९ तीनभल्लों से उस युधिष्ठिर को छातीपर घायलकिया उससे अत्यन्त पीड़ामान राजायुधिष्ठिर ३० रथके अंगपर बैठकर सारथी से कहनेलगा कि चल तदनन्तर सब धृतराष्ट्रके पुत्र और राजा लोग पुकारे ३१ कि राजाको पकड़ो यह कहकर सब दौड़े उसके पीछे प्रहार करनेवाले केकय देशियों के एकहजार सातसौ रथियों ने ३२ पांचालों समेत धृतराष्ट्रके पुत्रों को रोका और ३३ मनुष्यों के नाशकारी उस कठिन युद्ध के जारीहोनेपर बड़े पराक्रमी भीमसेन और दुर्य्योधन परस्परमें सन्मुखहुये ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

चौंसठवां अध्याय ॥

संजय बोले कि कर्ण ने आगे नियत होनेवाले महारथी केकयदेशियों को अपने बाणजालों से छिन्नभिन्न करदिया रोकनेमेंही उन केकयदेशियों के पांचसौ रथोंको कर्ण ने यमलोकको भेजा १ । २ इसके पीछे शूरवीरलोग नियत हुये कर्णको रोकनेको समर्थ होकर उसके बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर भीमसेन के पासगये ३ फिर कर्ण एकही रथकेद्वारा बाणोंके बलसे रथकी सेनाओं को चीरताहुआ युधिष्ठिरके पासगया ४ अपने डेरेको जानेवाले बाणोंसे घायल शरीर धीरे २ चलनेवाले अचेतहुये नकुल और सहदेवके मध्यवर्त्तीवीर ५ राजा को पाकर दुर्य्योधनकी प्रसन्नताकी इच्छासे कर्णने तीक्ष्ण धारवाले तीन उत्तम

बाणों से पीड़ामानकिया और इसीप्रकार युधिष्ठिरनेभी कर्णको छातीपर घायल करके तीन बाणों से सारथीको और चारबाणों से घोड़ोंको पीड़ामानकिया ६।७ फिर शत्रुसंतापी नकुल सहदेव और जो लोग कि अर्ज्जुन की सेना के रक्षक थे वह सब कर्ण की ओर इस निमित्त दौड़े कि यह कहीं राजा को न मारे ८ उन दोनों नकुल और सहदेव ने कर्ण के ऊपर बाणों की वर्षाकरी और बड़ेउपाय में प्रवृत्तहुये ९ इसीप्रकार प्रतापवान् कर्ण ने भी उन शत्रुओं के विजयी महात्मा दोनों नकुल और सहदेवको बड़े तीक्ष्ण भल्लोंसे घायल किया १० फिर कर्णने धर्मराजके दन्तबर्ण कालेबाल और चित्तके समान शीघ्रगामी घोड़ोंको भी मारा ११ इसके पीछे बड़े धनुषधारी हँसतेहुये कर्णने दूसरे भल्लसे युधिष्ठिर के छत्रको गिराया १२ इसीप्रकार प्रतापी बुद्धिमान् कर्णने नकुलकेभी घोड़ोंको मारकर उसके रथके ईशा और धनुषको काटा १३ तब मृतक घोड़े और टूटे रथ वाले अत्यन्त घायल वह दोनों भाई सहदेव के रथपर सवार हुये वहां शत्रुओं के वीरोंका मारनेवाला मामा शल्य उनदोनोंको विरथ देखकर १४ करुणाकरके कर्ण से बोला कि हे कर्ण तुझको पाण्डव अर्ज्जुन से लड़ना चाहिये १५ तू अत्यन्त क्रोधरूप होकर धर्मराजके साथ क्यों लड़ताहै शस्त्र अस्त्र कवच बाण और तूणीर से रहित १६ रथके सारथी और घोड़ेवाला होकर यह शत्रुओं के अस्त्रों से टूटे अंगहैं तुम अर्जुनको पाकर हास्य के योग्य होगे १७ इसरीति के शल्यके वचनको सुनकर क्रोधयुक्त कर्ण ने वैसी दशामें भी युधिष्ठिरको घायल किया १८ और पाण्डव नकुल और सहदेवको तीक्ष्णबाणों से छेदा फिर कर्ण ने हँसकर बाणों से उनका मुख फेरदिया १९ इसके पीछे उस क्रोधयुक्त युधिष्ठिर के मारने में प्रवृत्त कर्ण को शल्य ने हँसकर फिर यह बचन कहा कि हे कर्ण आपको दुर्य्योधनने जिस प्रयोजनकेलिये प्रतिष्ठित कियाहै २० उस अर्जुनको मारो युधिष्ठिरके मारने से तेरा क्या लाभहोगा २१ श्रीकृष्ण और अर्जुनके बड़े शंखों के यह बड़े शब्द और धनुष का यह शब्द ऐसा सुना जाताहै जैसे कि वर्षाऋतुमें बादलों के शब्द होते हैं २२ यह अर्जुन बाणोंकी बर्षा से महारथियों को मारताहुआ हमारी सब सेनाको निगले जाताहै हे कर्ण इसको तुम युद्धमें देखो २३ उस शूरके पृष्ठके रक्षक युधामन्यु और उत्तमौजसहैं और इसकी उत्तरीय सेनाका सात्विकी रक्षकहै २४ इसीप्रकार धृष्टद्युम्न उसकी दक्षिणी सेनाका

रक्षकहै और भीमसेन धृतराष्ट्रके पुत्रों से युद्ध करताहै २५ सो अब हम सबके देखतेहुये वह भीमसेन जैसे उस दुर्य्योधन को नहीं मारे और जिसप्रकार से वह छूटजाय हे कर्ण उसीप्रकार तुमको करना चाहिये २६ युद्धको शोभा देनेवाले और भीमसेन से निगलेहुये इस दुर्य्योधनको देखो जो कदाचित् तुमको पाकर यह छूटजाय तो बड़ा आश्चर्य्य होय २७ इस बड़े संशय में पड़ेहुये दुर्य्योधन को बचाओ माद्री के पुत्र नकुल सहदेव और राजा युधिष्ठिर के मारने से क्या लाभहै २८ हे राजा कर्ण ने शल्य के इन बचनों को सुनकर और महायुद्धमें भीमसेन से पराजित दुर्य्योधन को देखकर २९ राजा का अत्यन्त चाहनेवाला और शल्यके बचनसे चलायमान बड़ा पराक्रमी कर्ण अजातशत्रु युधिष्ठिर और पाण्डव नकुल सहदेव को छोड़कर ३० आपके पुत्रकी रक्षा करने को दौड़ा हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र राजा मद्रकी प्रेरणासे और मानों आकाशगामी घोड़ों के द्वारा ३१ कर्णके चलेजाने पर कुन्तीका पुत्र युधिष्ठिर और पाण्डव नकुल सहदेव शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा दूर चलेगये ३२ वह लज्जायुक्त राजायुधिष्ठिर बाणोंसेघायल उन दोनों भाइयों समेत शीघ्रही डेरेको पाकर ३३ बहुतशीघ्र रथसेउतरा वहां जिसके भल्ल निकाले गये वह राजा युधिष्ठिर हृदयके भालों से महापीड़ामान होकर अपने शुभ शयन पर जाकर लेटगया ३४ और लेटकर अपने महारथी दोनों भाई नकुल और सहदेवसे बोला हे पाण्डव तुम दोनों बहुतशीघ्र भीमसेनकी सेनामेंजाओ ३५ वह भीमसेन बादल के समान गर्जताहुआ लड़ताहै इसके अनन्तर बड़े भाईकी आज्ञापाकर शत्रुओंके पीड़ा देनेवाले महातेजस्वी रथियों में श्रेष्ठ पराक्रमी दोनों भाई नकुल और सहदेव दूसरे रथपर सवारहोकर उत्तम बेगवाले घोड़ों के द्वारा भीमसेनकी सेनाको पाकर ३६ । ३७ दोनोंभाई अपनी सेनाओं समेत वहां नियत हुये ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेचतुष्षष्टितमोऽध्यायः ६४ ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा इसके पीछे रथकी सेना के बड़े समूहों समेत अश्वत्थामा जी अकस्मात् वहां पहुँचे जहां पर अर्जुन नियत था १ श्रीकृष्णजी को साथ रखनेवाले शूरवीर अर्जुन ने अकस्मात् आनेवाले अश्वत्थामा को

तत्क्षण ऐसे रोका जैसे कि मर्य्यादा समुद्र को रोकती है २ हे महाराज इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापवान् अश्वत्थामाने शायकों से श्रीकृष्णजी समेत अर्जुन को ढकदिया ३ इसके पीछे वहांपर महारथी कौरवों ने श्रीकृष्ण अर्जुनको ढका हुआ देखकर वड़ा आश्चर्य्यकिया ४ इसके अनन्तर हे भरतर्षभ हँसते हुये अर्जुनने दिव्य अस्त्रों को प्रकटकिया तब अश्वत्थामा ने उस अस्त्र को रोका ५ फिर अर्जुन ने मारनेकी इच्छासे जिस २ अस्त्रको चलाया उस २ अस्त्रको वड़े धनुषधारी अश्वत्थामा ने नाशकरदिया ६ इसके पीछे वड़े भयकारी अस्त्रोंको युद्ध वर्त्तमान होनेपर युद्धमें हमने अश्वत्थामा को मुख फाड़ेहुये काल के समान देखा ७ उसने बाणोंसे दिशा बिदिशाओं को आच्छादित करके तीनबाणों से वासुदेव जीको दाहिनी भुजापर छेदा ८ इसके पीछेअर्जुनने उस महात्मा के सब घोड़ों को मारकर युद्धभूमिपर रुधिरों के प्रवाहवाली नदी को बहाया ९ वह भयानक नदी सबलोक को परलोकमें प्राप्त करनेवाली महाघोर रूपीथी युद्ध में अर्जुन के धनुष से निकले हुये बाणों से रथों समेत सब रथियों को १० और अश्वत्थामा के घोड़ों को मृतक देखा और उस महाघोर शत्रुओंको परलोकमें पहुँचानेवाली नदी को इसरीति से जारीकिया ११ कि उन दोनों अश्वत्थामा और अर्जुन के महाघोर संग्राम होने पर अमर्य्यादा से युद्ध करनेवाले शूरवीर पीछे की ओरसे दौड़े १२ हे राजा अर्जुन ने युद्ध में घोड़े सारथी समेत रथ वा मृतक सवारवाले घोड़े और हाथियों के हजारों यूथोंको मारकर मनुष्यों का घोर नाश करदिया अर्जुनके धनुषसे निकलेहुये बाणों से हजारों रथी मरकर गिरपड़े १३ । १४ और जिन घोड़ों के योक्त्र छूटगये वह घोड़े जहांतहां चारोंओर को दौड़े युद्धमें शोभायमान पराक्रमी अश्वत्थामा अर्जुन के उस कर्म को देखकर १५ उस विजयी अर्जुनके पास शीघ्रही जाकर स्वर्णमयी वड़े धनुपको टंकारता हुआ १६ तीक्ष्ण बाणों से उसको चारोंओरसे ढकने लगा हे महाराज अश्वत्थामा ने बाणों से अर्जुनको फिर आच्छादित करके १७ बड़ी निर्द्दयता पूर्व्वक उसको छातीपर अत्यन्त घायल किया हे भरतबंशी उस अश्वत्थामा के हाथ से युद्धमें अत्यन्त घायल १८ गांडीव धनुषधारी वड़े बुद्धिमान् अर्जुन ने बाणोंकी वर्षा से अश्वत्थामा को ढककर उसके धनुप को काटा १९ तब उस टूटे धनुषवाले अश्वत्थामाने युद्धमें वज्रके समान स्पर्शवाली परिघको लेकर अर्जुन के ऊपर

फेंका २० हे राजा उस स्वर्णमयी आतेहुये परिघ को हँसतेहुये पांडुनन्दन अ-र्जुनने अकस्मात् काटडाला २१ फिर अर्जुनके शायकों से वह टूटा हुआ परिघ पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वज्रसे घायल टूटेहुये पहाड़ गिरते हैं २२ हे महा-राज इसके पीछे क्रोधयुक्त महारथी अश्वत्थामाने इंद्रास्त्र के बेगसे अर्जुनको ढक दिया २३ तब उस बेगवान् पांडव अर्जुनने उसके फैलेहुये इन्द्रजालको देखकर अपने गांडीव धनुषको लिया २४ और महाइन्द्रके उत्पन्न कियेहुये उत्तम अस्त्र को लेकर इन्द्रजालको दूरकरके अर्जुन ने महाइन्द्र की शक्ति से युक्त उस जाल को फाड़कर एक क्षणभर मेंही अश्वत्थामा के रथको ढकदिया इसके अनन्तर अर्जुन के बाणों से दबेहुये अश्वत्थामा ने समीप में आकर २५ अर्जुनकी उस बाण वृष्टिको सहके और अपने बाणों से शत्रुको दृष्टिके सन्मुख करके सौबाणों से अकस्मात् श्रीकृष्णजीको घायल करताहुआ तीन क्षुद्रकनाम बाणोंसे अर्जुन को घायलकिया २६ इसके पीछे अर्जुनने सौशायकों से गुरूके पुत्रको मर्मस्थलों पर छेदा और आपके शूरबीरों के देखते हुये घोड़े सारथी कवच और धनुषको काटा २७ फिर उस शत्रुओंके मारनेवाले अर्जुनने मर्मस्थलों में छेद कर भल्ले से उसके सारथीको रथकी नीड़से गिरादिया २८ फिर उसने आप घोड़ोंको थांभकर बाणोंसे श्रीकृष्ण और अर्जुन को ढकदिया वहां हमने अश्वत्थामाके इस शीघ्र पराक्रमको देखा २९ कि जिसने घोड़ोंको भी थांभा और अर्जुन से भी युद्धकिया हे राजा युद्ध में सब शूरबीरों ने उसके उसकर्मकी बड़ी प्रशंसाकरी ३० इसके पीछे अर्जुनने हँसकर अपने क्षुरप्रनाम बाणों से शीघ्रही अश्वत्थामाके घोड़ों की बागको काटा ३१ फिर बाणके वेगसे पीड़ामान होकर वह घोड़े भागे हे भर-तवंशी इसकेपीछे आपकी सेनाका घोर शब्दहुआ ३२ फिर चारोंओर से ती-क्ष्ण बाणों को छोड़ते बिजयाभिलाषी पाण्डव बिजयको पाकर आपकी सेना पर दौड़े ३३ हे महाराज युद्धमें बिजयसे शोभायमान बीर पाण्डवों के हाथ से दुर्योधनकी बड़ी सेना वारंबार छिन्नभिन्न हुई ३४ तब अपूर्व युद्ध करनेवाले आपके पुत्र और सौबलके पुत्र शकुनी और कर्ण के देखतेहुये सब भागे ३५ उससमय चारोंओरसे पीड़ामान आपके पुत्रोंसे रोकीहुई बड़ी सेना युद्धमें नि-यतहुई ३६ हे महाराज उसके पीछे आपके पुत्रों की बड़ी सेना चारों ओर से भागनेवाले शूरबीरों के कारण व्याकुल और भयभीत होगई ३७ तदनन्तर

ठहरो ठहरो इसप्रकार से कर्ण के कहने पर भी महात्माओं के हाथ से घायल हुई वह सेना नियत नहीं हुई ३८ हे महाराज इसके पीछे दुर्य्योधन की सेना को चारों ओर से भागी हुई देखकर विजय से शोभायमान पाण्डवों ने बड़े शब्द किये ३९ तब दुर्य्योधन बड़ी नम्रता पूर्व्वक कर्ण से बोला हे कर्ण देखो पांचालों के हाथसे बड़ी सेना अत्यन्त पीड़ित होगई है ४० तेरे नियत होनेपर भी भागी हे शत्रुविजयी महाबाहो इसबातको समझकर उचित कर्म करो ४१ हे पुरुषोत्तम वीर पाण्डवों के हाथ से भगाये हुये हजारों शूरवीर युद्ध में तुम्ही को पुकारतेहैं ४२ दुर्य्योधनके इस बड़े वचनको सुनकर हँसताहुआ कर्णभी मद्र देशके राजासे यह वचनबोला ४३ हे राजा अस्त्रोंसमेत मेरी दोनों भुजाओंके पराक्रमको देखो अबमैं युद्धमें पाण्डवों समेत सब पांचालोंको मारताहूँ ४४ हे नरोत्तम अब तुम कल्याणके निमित्त घोड़ोंको निस्सन्देह चलाओ हे महाराज प्रतापी कर्णने इसबचनको कहकर ४५ बिजयनाम उत्तम और प्राचीन धनुषको लेकर प्रत्यंचा समेत बड़ी दृढ़तासे पकड़कर ४६ सबप्रकारसे शूरवीरों को रोक कर उसशूर पराक्रमी और साहसीने भार्गव अस्त्रको धनुषपर चढ़ाया इसके पीछे उस महायुद्धमें लाखों प्रयुतों और अर्बुदों तीक्ष्णबाण धनुषसे निकले ४७।४८ उन अग्निरूप घोरकंक और मोरके पंखोंसे जटित बाणों से पाण्डवी सेना ऐसी ढकगई कि कुछ भी नहीं जानपड़ताथा ४९ हे राजा युद्ध में भार्गव अस्त्र से पीड़ामान पराक्रमी पांचालोंका बड़ाहाहाकार हुआ ५० हे नरोत्तम राजा धृत-राष्ट्र चारोंओरसे गिरतेहुये हज़ारों हाथी घोड़े रथ और चारोंओर से मृतक हुये मनुष्यों से पृथ्वी कम्पायमान हुई और सब पाण्डवी सेना व्याकुलहुई ५१।५२ हे नरोत्तम शत्रुओंका तपानेवाला अकेला कर्ण शत्रुओं को भस्म करताहुआ निर्धूम अग्नि के समान शोभायमान हुआ ५३ कर्ण के हाथ से घायल वह पाञ्चाल चन्देरी देशियों समेत जहां तहां ऐसे अचेत होगये जैसे कि बन के भस्महोनेमें हाथी अचेत होजाते हैं ५४ हे नरोत्तम वह उत्तम पुरुष व्याघ्रों के समान पुकारे इसकेपीछे युद्धमें उन भयभीत पुकारनेवाले ५५ और चारोंओरसे दौड़नेवालों के ऐसे बड़े शब्द उत्पन्नहुये जैसे कि महाप्रलयमें जीवों के शब्द होतेहैं ५६ हे श्रेष्ठ फिर कर्ण के हाथसे घायल उन जीवों को देखकर पशु पक्षी जीवभी भयभीत होगये ५७ युद्धमें कर्णके हाथसे घायल वह संजय अर्जुन और

बासुदेवजी को बारंबार ऐसे पुकारतेथे ५८ जैसे कि यमपुरी में दुःखीजीव यम-राजको पुकारतेहैं कर्णके शायकोंसे घायल होनेवालोंके शब्दोंको सुनकर ५९ कुंतीकापुत्र अर्जुन वहांपर छोड़ेहुये भार्गवास्त्रको देखकर बासुदेवजीसेबोला ६० हे महाबाहो श्रीकृष्णजी भार्गवास्त्रके पराक्रमको देखो यह अस्त्र युद्धमें कैसे नाश करनेके योग्य नहींहै ६१ हे श्रीकृष्णजी युद्धमें भयकारी कर्म करनेवाले पराक्रम में यमराजकेसमान क्रोधरूप कर्णको देखो ६२ यह कर्ण घोड़ोंको चलाचलाकर प्रतिपद बारंबार मुझको देखताहै मैं युद्धमें कर्णसे भागनेवाला नहीं हूँ ६३ मनु-ष्य युद्धमें विजय और पराजय दोनों पाताहै हे शत्रुसंहारी श्रीकृष्णजी मृतक मनुष्यकी तो पराजयही होती है विजय कैसे होसक्ती है ६४ अर्जुनके इस बचन को सुनकर श्रीकृष्णजी ने बुद्धिमानों में श्रेष्ठ अर्जुन से समय के अनुसार यह बचन कहा ६५ कि कर्ण के हाथ से राजा युधिष्ठिर अत्यन्त घायल हुआ है हे अर्जुन तुम उसको देखकर और भरोसा देकर फिर कर्णको मारोगे ६६ हे राजा ऐसा कहकर युधिष्ठिरको देखना चाहते और युद्धमें कर्णको थकावटमें पकड़ना चाहते श्रीकृष्णजी चले ६७ इसके पीछे केशवजीकी आज्ञासे अर्जुन बाणों से पीड़ामान राजा युधिष्ठिरके देखनेको रथकी सवारी के द्वारा युद्धभूमि से शीघ्रही अपने डेरोंकोगया ६८ तब चलतेहुये अर्ज्जुनने धर्मराजके दर्शनकी अभिलाषा से सेनाको देखा और उसमें अपने बड़ेभाई को नहीं देखा ६९ हे भरतबंशी वह अर्ज्जुन अश्वत्थामा से युद्धकरके और उस बज्रधारी इन्द्रसे भी न रुकनेवाले अपने गुरूके पुत्रको पराजय करके चलदिया ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेपंचषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥

छासठवां अध्याय ॥

संजयबोले कि इसके पीछे उग्रधनुषधारी शत्रुओं से अजेय अर्ज्जुन ने अ-श्वत्थामाको पराजय कर बड़े कठिन शूरों के कर्मों को करके फिर अपनी सेना को देखा १ महात्मा अर्ज्जुन शूरों के साथ युद्ध न करनेवाली सेना के मुखपर नियत शूरवीरोंको प्रसन्नकरता और पहले प्रहारों से घायल और नियतहुये बहुत रथियोंकी प्रशंसा करताहुआ २ और अजमीढ़वंशी अपने भाई युधिष्ठिरको न देखकर भीमसेन के पास जाकर यह बचन बोला कि राजा कहां हैं और किस

रीति से उसने युद्ध किया ३ भीमसेन ने कहा कि कर्ण के बाणों से पीड़ामान धर्मपुत्र युधिष्ठिर यहां से हटगयाहै और किसीप्रकारसे जीवता है ४ अर्ज्जुन ने कहा कि हे भीमसेन आप शीघ्रतासे उस कौरवों में श्रेष्ठ राजाकी खबर लेनेको यहांसे चलो निश्चय करके वह राजा युधिष्ठिर कर्ण के बाणों से अत्यन्त घायल होकर अपने डेरे को गया है ५ द्रोणाचार्य्य के तीक्ष्णधार बाणों के प्रहारों से अत्यन्त घायल होकर भी वेगवान् राजा युधिष्ठिर विजय की अभिलाषा करके जबतक वहां नियत नही हुआथा तबतक द्रोणाचार्यजी भी नहीं मरे थे ६ वह महानुभाव बड़ा पाण्डव अब युद्धमें कर्ण के हाथसे संशय संयुक्त हुआहै हे भीमसेन अब तुम बड़ी शीघ्रतासे उनके निश्चय करनेको जाओ और मैं शत्रुओं को रोककर नियतहूंगा ७ भीमसेन बोले हे महानुभाव तुम भी उस भरतर्षभ युधिष्ठिर के वृत्तान्तको जानोहो और हे अर्ज्जुन जो मैं यहांसे चलाजाऊंगा तो बड़े शूरवीर शत्रु मुझको अपने से भयभीतहुआ कहैंगे ८ तब अर्जुनने भीमसेनसे कहा कि संसप्तक मेरी सेनाके सन्मुख नियतहैं अब उनको विनामारे इन शत्रु समूहों के स्थानसे जाना योग्य नहीं है ९ हे कौरवों में बड़े वीर तब भीमसेन अपने पराक्रमको पाकर अर्ज्जुन से बोले कि मैं संसप्तकों के सन्मुख युद्ध करने को जाऊंगा हे अर्जुन तुम चलेजाओ १० शत्रुओं के मध्यमें भाई भीमसेन के कठिनतासे होने के योग्य इस वचन को कि हे अर्जुन मैं अकेला बड़ी कठिनता से विजय होनेवाले महा असहनशील संसप्तकों की सेना को रोकूंगा सुनकर ११ महापराक्रमी सत्यवक्ता वानरध्वज अर्ज्जुन महात्मा कौरवों में श्रेष्ठ सत्य पराक्रमी भाई युधिष्ठिर के देखने को चलनेवाला होकर उन वृष्णिवंशियों में श्रेष्ठ श्रीनारायणजी से बोला कि हे इन्द्रियों के स्वामी इस समुद्ररूप सेनाको त्यागकर घोड़ोंको चलाइये हे केशवजी अजात शत्रु राजा युधिष्ठिरको मैं देखना चाहताहूं १२।१३ संजय बोला कि तदनन्तर घोड़ोंको चलायमान करतेहुये सब यादवोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी भीमसेनसे यहबात बोले कि हे भीमसेन अब यहतेरा कर्म कुछ अपूर्व नहीं है मैं जाताहूं तुम बाणों के समूहों से शत्रुओं के समूहोंको मारो १४ हे राजा इसके पीछे श्रीकृष्णजी गरुड़के समान शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा बड़ीशीघ्रतासे जहां राजायुधिष्ठिरथा १५ वहांगये हे राजेंद्र उस शत्रुविजयी भीमसेनको युद्धके विषयमें समझाकर सेनाके सन्मुख नियतकरके १६ फिर

पुरुषों में बड़े वीर दोनों श्रीकृष्ण अर्ज्जुन युधिष्ठिर के समीप गये और वहां अकेलेही सोतेहुये राजा को पाकर दोनोंने रथसे उतरकर धर्मराज के चरणोंको नमस्कार किया श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन उस पुरुषोत्तमको कुशलपूर्व्वक देखकर ऐसे प्रसन्न हुये जैसे कि इन्द्रको देखकर अश्विनीकुमार प्रसन्न होते हैं १७।१८ फिर राजा ने भी उनको ऐसा प्रसन्न किया जैसे कि इन्द्र अश्विनीकुमारों को और जैसे महाअसुर जम्भ के मरने पर बृहस्पतिजी ने इन्द्र और विष्णु को कियाथा १९ संजय बोले कि इसके पीछे शत्रुसन्तापी राजा युधिष्ठिर कर्ण को मृतक मानताहुआ बड़ी प्रसन्नता पूर्व्वक बाणों से भिदेहुये रुधिरसे लिप्तशरीर महाप्रतापी लालनेत्रवाले उन बड़े पराक्रमी साथआनेवाले अर्ज्जुन और केशवजीको देखकर युद्धमें गांडीव धनुषधारीके हाथसे कर्णको मृतकमाना २०।२२ हे भरतर्षभ मन्द मुसकान पूर्व्वक दोनोंकी प्रशंसा करते युधिष्ठिर ने उन शत्रुसंहारी श्रीकृष्ण अर्ज्जुनको बड़ी मृदुता और मिष्टवाणी से प्रसन्न किया २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेषट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥

सरसठवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे श्रीकृष्णजी आपका आगमन शुभकारीहो तुमदोनों श्रीकृष्णजी और अर्ज्जुनका दर्शन मुझको अत्यन्त अपूर्व्व है १ अक्षत और निर्विघ्न आप दोनोंके हाथोंसे वह महारथी कर्ण मारागयाही जानो जो युद्धमें विषधर सर्प की समान सब शस्त्रों में कुशल २ धृतराष्ट्र के पुत्रों का सहायक और सब कौरवी सेनाका रक्षक और वृद्धिकर्त्ता धनुषधारी वृषेण वा सुषेण से रक्षित श्री परशुरामजी से अस्त्रों का सीखनेवाला बड़ा पराक्रमी दुर्जय संसार में अद्वितीय महारथी धृतराष्ट्रके पुत्रोंका रक्षक सेनाके मुखपर जानेवाले शत्रुओं का मारनेवाला वा मर्दन करनेवाला है ३।५ दुर्य्योधन के हितमें युक्त हमारे पीड़ादेने के निमित्त युद्धमें देवताओं समेत इन्द्रसेभी अजेय तेजबलमें अग्नि वायुके समान पातालके समान गम्भीर मित्रोंकी प्रसन्नताका बढ़ानेवालाहै ६।७ उस मेरे मित्रोंके मारनेवाले कर्णको युद्धमेंमारकर प्रारब्धसे तुम दोनों ऐसेआये हो जैसे कि असुरको मारकर दो देवता आते हैं ८ सब सृष्टिके मारने के अभिलाषी यमराजके समान अपनेको बड़ामाननेवाले उस कर्णने हे श्रीकृष्ण और

अर्ज्जुन मेरे साथ बड़ाघोरयुद्ध किया ९ उसने मेरी ध्वजा काटकर दोनों आगे पीछेवाले सारथियोंको भी मारा तदनन्तर मैं सात्विकी के देखतेहुये मृतकघोड़े वालाहोगया १० धृष्टद्युम्न नकुल सहदेव वीर शिखण्डी वा द्रौपदी के पुत्र और सब पांचालों के देखते हुये उसने ऐसा कर्म किया ११ हे महाबाहो उस उपाय करनेवाले महापराक्रमी कर्णने शत्रुओं के बहुतसे समूहों को मारकर मुझको विजयकिया १२ हे शूरोंमें श्रेष्ठ अर्ज्जुन उस कर्णने जहांतहां मुझको पराजय को करके निस्सन्देह पूर्व्वक बहुतकठोर असभ्य वचन कहे १३ हे अर्ज्जुन मैं भीमसेन के प्रभावसे अवतक जीवताहूं बहुतसी वातों के कहनेसे क्या प्रयोजन है मैं उस कर्णको अबनही सहसक्ताहूं १४ हे अर्ज्जुन मैंने तेरह वर्षतक जिससे भयभीत होकर न रात्रिको निद्राली न दिनको कहीं सुखचैनपाया १५ हे अर्जुन उसकी शत्रुतासे युक्त होकर भस्म होरहाहूं और अपने मरणको प्राप्त होकर वाध्रीनस मेढ़ेके समान भागाहूं १६ बहुतकालसे मुझचिन्तासे युक्त होनेवालेका अब यहसमय वर्त्तमानहुआहै वह कर्ण युद्धमें मेरे हाथसे कैसे पराजय होनेको योग्य होय १७ हे अर्ज्जुन मैं जागते सोते उठते वैठते चलते फिरते जहांतहां हर-समय कर्णहीको देखताहूं अर्थात् सब संसार मुझको कर्णहीरूप दीखताहै १८ हे अर्ज्जुन मैं कर्णसे ऐसा भयभीत होरहाहूं कि जहांजहां जाताहूं वहां वहां कर्ण कोही नियत देखताहूं १९ हे श्रीकृष्ण अर्ज्जुन उस युद्धसे कभी न हटनेवाले वीर कर्णने मुझको घोड़े और रथ समेत विजय करके जीवता त्यागकियाहै २० अब मुझ कर्ण के हाथसे पराजय पानेवालेका इस संसार में जीवना व्यर्थहै २१ पूर्व्व में भीष्मजी द्रोणाचार्य्य वा कृपाचार्य्य से भी ऐसा दुःख मैंने नहीं पायाथा जैसा कि अबयुद्ध में इसमहारथी कर्ण से पायाहै २२ हे अर्ज्जुन अब मैं तुझसे यह पूछताहूं कि किसरीति से निर्विघ्नता पूर्व्वक तेरे हाथ से कर्ण मारागया उस सब वृत्तान्तको यथावस्थित व्यौरे समेत मुझसे वर्णन करो २३ पराक्रम में यमराज और पुरुषार्थमें इंद्रकेसमान और अस्त्रोंमें परशुरामजीके समान वह कर्ण युद्धमें कैसे मारागया २४ महारथी और सब युद्धोंमें कुशल धनुर्द्धारियों में अत्यन्त श्रेष्ठ और सब में अकेला पुरुषार्थी २५ वह कर्ण तेरेही निमित्त पुत्रों समेत धृतराष्ट्र से स्तुति कियागयाथा वह तेरे हाथसे कैसे मारागया २६ हे पुरुषोत्तम अर्ज्जुन वह दुर्य्योधन सदैव सब शूरों के मध्य में कर्णही को तेरा मारनेवाला मानताथा

वह कर्ण तेरे हाथ से कैसे मारागया २७ । २८ और तुमने उसके शुभचिन्तकों के देखते हुये उस युद्ध करनेवाले का शिर ऐसे काटडाला जैसे कि रुरु नाम मृग का शिर सिंह काटता है २६ छः हाथी दान करने का इच्छावान् युद्ध में तुझ को चाहनेवाले जिस कर्ण ने दिशा और विदिशाओं को सेवन किया वह दुरात्मा कर्ण क्या अब तेरे अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से ३० युद्ध में मरा-हुआ पृथ्वी पर सोताहै युद्ध में तैंने कर्ण को मारकर मेरा बड़ा भारी अभीष्ट किया ३१ जो कर्ण सदैव पूजित और अहंकारयुक्त होकर तेरे निमित्त सबओर को दौड़ा वह अपने को शूर माननेवाला तुझको युद्धमें पाकर अब क्या मारा गया ३२ हे तात जोकि तेरे निमित्त हाथी घोड़ों समेत उत्तम सुनहरी रथोंको दूसरे लोगों को देने की इच्छा कररहाथा और सदैव युद्ध में ईर्षा करनेवालाथा वह पापात्मा क्या युद्ध में तेरे हाथ से मारागया ३३ जो बल पुरुषार्थ में दुर्मद सदैव कौरवों की सभा में निरर्थक वार्त्तालाप करताथा और उस दुर्य्योधन का अत्यन्त प्रियथा अब वह दुष्टात्मा क्या तेरे हाथसे मारागया ३४ सन्मुख होकर तेरे चलाये हुये रक्तांगवाले आकाशचारी बाणों से शरीर में अत्यन्त घायलथा वह पापीकर्ण क्या अब सोताहै दुर्य्योधन की भुजा ढीली और निर्बल हुई ३५ जो यह कर्ण अपने अज्ञान से राजाओं के मध्य में दुर्य्योधन को प्रसन्न करता हुआ अहंकार में भराहुआ सदैव अपनी यह प्रशंसा करताथा कि मैं अर्ज्जुन का मारनेवालाहूं क्या उसका वह बचन ठीक नहीं हुआ ३६ कि मैं तबतक कभी पदाती रूप से नहीं दौड़ूंगा जबतक कि अर्ज्जुन नियत होकर बर्त्तमानहै उस निर्बुद्धी का सदैव यही व्रतथा हे इन्द्रके पुत्र अर्ज्जुन वह कर्ण क्या अब तेरे हाथसे मारागया ३७ जिस दुष्टबुद्धी कर्ण ने सभा में कौरवी वीरों के मध्य में द्रौपदी से यह कहाथा कि हे कृष्णा तू इन अत्यन्त निर्बल और नाशयुक्त पुरुषार्थ रहित पांडवोंको क्योंनहीं त्यागकरती है ३८ और उसी कर्ण ने तेरे विषय में प्रतिज्ञा करीथी कि मैं श्रीकृष्ण समेत अर्ज्जुन को बिना मारेहुये यहां नहीं आऊंगा वह पापबुद्धी तेरे बाणोंसे घायलहुआ अब क्या सोरहाहै ३६ सृञ्जियों और कौरवों के इस युद्धको क्या तुम जानतेहो जिस में कि मेरी यहदशा होगई है अब वह दुरात्मा क्या तेरे हाथसे मारागया ४० हे अर्जुन तुमने युद्धमें अपने गाण्डीव धनुष से छोड़ेहुये अग्निरूप बाणों से उस अत्यन्त निर्बुद्धी कर्ण

का कुण्डलों समेत देदीप्यमान शिर क्या शरीरसे काटडाला है ४१ हे वीर जो मुझ बाणों से घायल ने तुमको कर्ण के मारने के निमित्त ध्यान कियाहै अब तुमने कर्ण के मारने से क्या वह मेरा ध्यान सफल किया ४२ जो दुर्य्योधन कर्ण के आश्रित होकर हमको देखता है अब तुमने उस दुर्य्योधन के रक्षक को क्या पराजय किया ४३ पूर्व्व समय में जिसने सभा के मध्यवर्त्ती होकर कौरवों के सन्मुख हमको थोथेतिल और नपुंसक कहा वह दुर्ब्बुद्धी और क्रोधसे भरा हुआ कर्ण सन्मुख होकर क्या युद्ध में तेरे हाथ से मारा गया ४४ पूर्व्वकाल में जिस हँसते हुये दुरात्मा कर्ण ने शकुनी से जीती हुई द्रौपदी को वड़ी हठता से कहाथा कि इस द्रौपदीको यहां लावो वह कर्ण क्या अब तेरे हाथ से मारागया ४५ और जिस निर्बुद्धी ने विख्यात शस्त्रधारी महात्मा पितामहकी निन्दा करी हे अर्जुन वह अर्द्धरथी क्या तेरे हाथसे अब मारागया ४६ हे अर्जुन अब तुम इसबातको कहकर कि वह कर्ण युद्धमें मेरे हाथसे मारागयाहै मेरे हृदयकी जलती हुई अग्नि को बुझावो क्योंकि वह अग्नि अमर्ष जनित वायु से प्रेरित मेरे हृदय में प्रदीप्त होकर सदैव नियत रहती है ४७ सो हे अर्जुन तेरे हाथ से कर्ण कैसे मारागया है उस मेरे दुष्प्राप्य मनोरथ को वर्णन करो हे वड़े वीर मैं तुझको सदैव ऐसे ध्यान करता हूं जैसे कि वृत्रासुर के मरने पर भगवान् इन्द्र ध्यान किये गयेथे ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसहस्रसंहितायांवय्यासिक्यांकर्णपर्व्वणियुधिष्ठिरवाक्येसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७॥

अड़सठवां अध्याय ॥

संजय बोले कि वह अत्यन्त पराक्रमी महात्मा अतिरथी अर्जुन उस क्रोध युक्त धर्म के अभ्यासी राजाके उस वचन को सुनकर उस निर्भय और महापराक्रमी युधिष्ठिरसे बोला १ हे राजा अब कौरवीसेनामें आगे चलनेवाला अश्वत्थामा विषैले सर्परूप बाणों को छोड़ता मुझ संसप्तकों से भिड़े हुये के सन्मुख आकर अकस्मात् नियत हुआ २ हे श्रेष्ठ वह अश्वत्थामा बादल के समान शब्दायमान मेरे रथको देखकर सब सेनाके मध्यमें आकर नियतहुआ तब मैंने उसके पांचसौ वीरों को मारकर फिर अश्वत्थामा को पाया हे महाराज वह वड़ा सावधान मुझको पाकर ऐसे मेरे सन्मुख हुआ जैसे कि सिंह के सन्मुख गजराज आताहै

हे महाराज उसने मरनेवाले कौरवी रथों के बचाने का उपाय किया ३। ४ तद-नन्तर दुःख से कंपायमान कौरवोंके अत्यन्त श्रेष्ठ शूरवीर उस आचार्य्यके पुत्रने युद्धमें श्वेतरंगवाले कुछ कम बिष और अग्नि के समान बाणों से श्रीकृष्णजी समेत मुझको अत्यन्त पीड़ामान किया ५ उस मुझसे लड़नेवाले अश्वत्थामा के बाणों को आठ बैल रखनेवाले आठसौ छकड़े लेचलते हैं मैंने उसके छोड़े हुये उन बाणों को अपने बाणों सेही ऐसे नाश करदिया जैसे कि बादलों के जाल समूहों को वायु नाश करदेती है इसके पीछे सुशिक्षित अस्त्रोंके बलसे बड़े प्रयास से कर्ण पर्य्यंत खैंचे हुये अनेक बाण समूहों को ऐसे छोड़ताहुआ जैसे कि वर्षा ऋतुमें कालमेघ नाम बादल जलको बरसाताहै ६। ७ हमने उस बाणलेते और चढ़ाते हुये को नहीं जाना कि वह बायें हाथ से वा दक्षिण हाथ से बाणों को फेंकताहै वह अश्वत्थामा युद्धमें सन्मुख बर्त्तमान हुआ ८ जिस अश्वत्थामाका प्रत्यंचासे युक्त धनुष मंडल के समान दिखाई देताथा उस अश्वत्थामा ने पांच बाणों से मुझको और पांचही बाणों से बासुदेवजी को छेदा ९ तबतो मैंने एक पलमात्रमेंही वज्रके समान तीसबाणों से उसको पीड़ामान किया फिर मेरे पृष-त्क नाम बाणों से पीड़ित होकर वह अश्वत्थामा क्षणमेंही स्त्रावित के समान रूपवाला होगया १० सब अंगों से रुधिर को डालता हुआ वह अश्वत्थामा मुझसे पराजित होकर सेनाके बड़े २ श्रेष्ठ मनुष्यों को अपने रुधिर भरेहुये श-रीर से देखता हुआ कर्ण के रथों की सेनामेंचलागया ११ उसके पीछे मारनेवाला कर्ण युद्धमें अपनी सेना को भयभीत और हाथी घोड़े और रथों को भगाता हुआ देखकर पचास उत्तम रथियों को साथमें लियेहुये बड़ी शीघ्रता करता हुआ मेरे सन्मुख आया १२ मैं उनको मारकर युद्धका भार भीमसेन के सिपुर्द कर और कर्ण को छोड़करके आपके देखने को बड़े वेग से शीघ्रता करके आयाहूं सब पांचाल लोग कर्ण को देखकर ऐसे भयभीत हुये जैसे कि केशरी सिंहको देखकर गौवें भयभीत होतीहैं १३ हे राजा प्रभद्रक नाम क्षत्री मृत्यु के फैले हुये मुखको प्राप्तकरके और कर्ण को पाकर युद्ध करनेवालेहुये तब कर्णने मृत्युरूपी नदीमें डूबेहुये उन सातसौ रथियों को मृत्युलोक में भेजा १४ हे राजा वह कर्णभी तबतक चित्त से पीड़ामान और क्लांत चित्तहीरहा जबतक कि उसने हमलोगों को नहींदेखा फिर तुमको उससे भिड़ाहुआ और अश्वत्थामा से पहिले बहुत

घायलहुआ सुनकर १५ मैं कर्ण से हटजानेका आपका समय मानताहूं हे ध्यान से वीरोंके कर्म करनेवाले राजायुधिष्ठिर मैंने पूर्व्वही कर्णका यह अपूर्वरूपवाला अस्त्र देखा १६ सृञ्जियों में कोई ऐसा शूरवीर नहीं वर्त्तमान है जो अव उस महारथी कर्णका सामना करसके हे राजा मेरी सेनाका रक्षक धृष्टद्युम्न, सात्यकी १७ और युधामन्यु, उत्तमौजस यह दोनों राजकुमार भी पीछेकी ओरसे मेरी रक्षा करें हे महानुभाव मैं कठिनतासे पारहोने के योग्य महावीर और रक्षापूर्वक शत्रुकी सेना में वर्त्तमान उस सूतपुत्र कर्ण से अपने सहायकों समेत सन्मुख होकर युद्ध में ऐसे युद्ध करूँगा जैसे कि वज्रधारी अपने वज्रसे युद्धकरताहै हे राजाओं में श्रेष्ठ भरतवंशी अव जो वह इस युद्धमें दिखाईदेताहै १८।१९ उस सूतपुत्रका और मेरा युद्ध जयके निमित्त आप ऐसे देखोगे जैसे कि नन्दी के मुखके आश्रयी प्रभद्रक कर्ण के सन्मुख जातेहैं २० हे भरतवंशी वह राजकुमार बांधे मारे और युद्धमें सबलोक के अर्थ डूवे इस से हे राजा अव जो मैं हठकरके बांधवों सहित उस लड़नेवाले कर्णको नहीं मारूँ तो प्रतिज्ञाके न करनेवालेकी जो घोरगतिहै उसको मैं पाऊँ मैं आपसे पूँछताहूँ आप युद्ध में मेरी विजयको कहिये और मेरे आगे २ भीमसेन धृतराष्ट्रके पुत्रोंको ग्रसे २१।२२ तव हे राजाओं में श्रेष्ठ मैं कर्ण समेत सेनाको और शत्रुओं के सव समूहों को मारूँगा २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअर्जुनप्रतिज्ञायांअष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥

उनहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि वड़ातेजस्वी कर्ण के बाणोंसे पीड़ामान युधिष्ठिर कर्णको समर्थ और वड़ापराक्रमी सुनकर अर्जुनसे महाक्रोधयुक्तहोकर यहबचन कहनेलगा १ कि हे भाई तेरी सेना भागी और जैसी रीतिसे अव पराजितहुई वह श्रेष्ठ नहींहै तुम कर्ण के मारनेको समर्थ नहीं होसकेहो इसीहेतुसे तुम भीमसेनको वहां छोड़कर भयभीतहोकर यहां चले आयेहो २ हे अर्जुन तुमने कुंतीकेगर्भ से उत्पन्नहोकर जैसी प्रीतिकरी वह श्रेष्ठ नहीहै कि कर्ण के मारने में समर्थ न होकर भीमसेनको त्यागकरके हटआया ३ द्वैतवनमें जो तुमने सत्यप्रतिज्ञा करीथी किमैं एकरथसे कर्णको मारूँगा उस वचनको कहकर अव कैसे कर्णसे भयभीत होकर भीमसेनको छोड़कर हटआयाहै ४ जो तू द्वैतबनहीमें यह कहदेता कि हे राजा

मैं कर्ण से लड़नेको समर्थ न होऊँगा तो हे अर्जुन हम अपने समयके अनुसार सब कामों को करते ५ हे वीर तैंने मेरे साम्हने उसके मारने की प्रतिज्ञा करके उस प्रतिज्ञाको पूरा नहीं किया उसी प्रतिज्ञाने हमसबको शत्रुओं के मध्य में लाकर युद्धभूमिरूपी शिलापर छोड़कर किसहेतु से पीसा है ६ इसके विशेष हे अर्जुन बन जाने के अभिलाषी हमलोगों ने तेरे बिषय में बिश्वास करके बहुतसे अपने अभिमत कल्याणोंकी आशाकरीथी हे राजपुत्र हम सबफल चाहनेवालोंकी वह सब आशा ऐसे निष्फल होगई जैसे कि बहुतसे फलरखनेवाला वृक्ष निष्फल होय ७ अथवा जैसे कि मांससे ढकीहुई बंशी और भोजनसे ढकाहुआ बिष होताहै इसीप्रकार तुमने भी मुझ राज्याभिलाषीके नाशके अर्थ राज्यरूपी अनर्थ को दिखलाया है ८ हे अर्जुन हम उन तेरह बर्षों तक सदैव आशाकरके तेरेहीपीछे ऐसे जीवतेरहे जैसे कि बोयाहुआबीज समयपर देवता इन्द्रकी कृपासे बर्षाकी आशाकरताहै सो तुमने हमसबको नरकमें डुबाया ९ तुझ निर्बुद्धी के उत्पन्न होनेके सातदिन पीछे अन्तरिक्षसे यह आकाशबाणी हुईथी कि यहपुत्र इन्द्रके समान पराक्रमी उत्पन्नहुआहै यह शत्रुरूप शूरवीर मनुष्यों को बिजय करेगा १० और मद्र कलिंग और केकयदेशियोंको भी बिजयकरके राजाओंके मध्यमें सबकौरवोंको मारेगा ११ इससे उत्तम कोई धनुषधारी नहीं होगा कोई जीवधारी इसको कभी बिजय नहीं करसकेगा यह जितेंद्री और सबविद्याओं में पूर्ण होकर अपनी इच्छा से सब जीवमात्रों को अपने आधीन करेगा १२ हे कुन्ती यह तेरापुत्र कांति और शोभामें चन्द्रमाकेसमान तीव्रता और शीघ्रतामें वायुके सदृश और स्थिरतामें मेरु पर्व्वतके समान क्षमा करने में पृथ्वी के तुल्य तेजमें सूर्यके समान लक्ष्मी में कुबेरके शूरतामें इन्द्रके पराक्रममें विष्णुके समान यह महात्मा ऐसा उत्पन्न हुआ है १३ जैसे कि शत्रुओं के मारनेवाले दिति के पुत्र विष्णुजी अपने लोगों के विजय और शत्रुओं के मारने के निमित्त सब जगत् में विख्यात महातेजस्वी धनुष चलानेवाले उत्पन्नहुये हैं १४ शतशृंगके मस्तकपर अन्तरिक्ष में यह सब तपस्वी लोगों के सुनते हुये आकाशवाणी ने कहाहै सो वह जैसा कहाथा वैसा नहीं हुआ इससे निश्चय करके देवताभी मिथ्या बोलते हैं १५ और इसीप्रकार सदैव तेरी प्रशंसा करनेवाले अन्य अन्य उत्तम ऋषियों के वचनों को सुनकर दुर्य्योधनके शिष्टाचार को अंगीकार नहीं

करताहूं और कर्ण के भयसे पीड़ामान तुझको नहीं जानताहूं १६ हे अर्ज्जुन त्वष्टा देवता के बनाये हुये निश्शब्द पहियेवाले हनुमान्‌जी की ध्वजा रखने वाले उस शुभरथ पर सवार होकर और स्वर्णमयी वेष्टन से अलंकृत खड्गको और ताल वृक्षके समान इस गांडीवधनुषको लेकर १७ केशवजी के साथ रथपर सवार होकर तुम कर्णसे भयभीत होकर कैसे हटआये अब उस धनुषको केशव जीको दो और तुम युद्धमें केशवजी के सारथी बनो १८ तब केशवजी उस उग्र कर्णको ऐसे मारेंगे जैसे कि बज्रधारी इन्द्रने वृत्रासुरको माराहै जो तू अब इस घूमनेवाले उग्रकर्णके मारनेमें समर्थ नहीं है १६ तो जो राजा अस्त्रविद्यामें तुझसे अधिकहो उसको यह गाण्डीव धनुष देदो हे पाण्डव अब यह लोकपुत्र स्त्रियोंसे रहित और राज्यके नाशकरनेके हेतुसे आनन्द और कुशलतासे रहित हमलोगों को २० उस पापियों से सेवित अगाध और घोर नरक में पड़ाहुआ देखेगा जो तू कुन्तीके गर्भमें न पैदाहोता तो इस दुःखमें काहेको पड़ता २१ हे राजपुत्र निर्बुद्धी वहीं तेरा कल्याण होजाता जो तू युद्ध से हटकर न आता गाण्डीव धनुषको और तेरे भुजबलको २२ धिक्कारहै और तेरे असंख्य बाणों को भी धिक्कारहै और हनुमान्‌रूप धारण करनेवाली तेरी ध्वजाको भी धिक्कार और अग्नि के दियेहुये तेरे रथ को धिक्कारहै २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णप्रतियुधिष्ठिरक्रोधवाक्येएकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥

सत्तरवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि हे भरतर्षभ युधिष्ठिर के इन बाणरूप निन्दित वाक्यों को सुनकर महाक्रोधरूप होकर कुन्ती के पुत्र अर्जुनने मारनेकी इच्छा करके हाथमें खड्गको लिया १ तब अन्तर्य्यामी सब के मनके जाननेवाले श्रीकृष्णजी ने उसके क्रोधको देखकर कहा कि हे अर्ज्जुन यह क्या बातहै जो तैंने खड्गको हाथमें लिया २ हे अर्ज्जुन तुझसे लड़ने के योग्य मैं किसी को नहीं देखताहूं बुद्धिमान् भीमसेन ने उन धृतराष्ट्र के पुत्रोंको घेरलियाहै ३ वह राजा देखने के योग्यहै इसहेतु से हटआयाहै हे अर्ज्जुन उस राजाको तुमने कुशल पूर्व्वक देखा ४ सो तुम उस राजाओं में श्रेष्ठ शार्दूलके समान पराक्रमी अपनेभाई राजा युधिष्ठिरको देखकर और प्रसन्नताका समय वर्त्तमान होनेपर जो भूलसे यहकर्म

होगया तो क्या हुआ ५ हे कुन्ती के पुत्र मैं ऐसा किसी को नहीं देखताहूं जो तुझको मारने के योग्यहोय किस हेतु से तू प्रहारकरना चाहताहै तेरे चित्तकी भ्रान्ति क्याहै ६ तुम किस कारण शीघ्रतासे बड़े खड्ग को पकड़तेहो हे कुन्ती के पुत्र अब मैं तुझ से पूछताहूं कि तेरी कौनसे कर्म्म करने की इच्छाहै ७ जो महाक्रोधित होकर इस बड़ेभारी खड्गको पकड़ताहै फिर श्रीकृष्णजी के बचनों को सुनकर युधिष्ठिरको देखताहुआ ८ सर्प के समान श्वासलेता क्रोध युक्त होकर अर्ज्जुन श्रीगोविन्दजी से बोला कि आप इस गाण्डीव धनुष को किसी दूसरे को देदो जो मुझको इस रीतिसे प्रेरणा करे मैं उसके शिरको काटूंगा ९ यह मेरा अपांशुब्रतहै अर्थात् गुप्तब्रत है हे अतुलबल पराक्रमवाले गोबिन्दजी जैसा कि इस राजाने आपके सन्मुख मुझसे कहा १० उसके सहने को मैं उत्साह नहीं करसक्ताहूं इस हेतुसे उस धर्म्म से भयभीत राजाको मारूंगा ११ इस नरोत्तम को मारकर अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करूंगा हे यदुनन्दन मैंने इसी निमित्त खड्गको पकड़ाहै १२ हे जनार्द्दनजी सो मैं युधिष्ठिरको मारकर सत्यसंकल्प होकर शोक और ज्वरसे निवृत्त होऊंगा १३ अथवा ऐसे समयके बर्त्तमान होनेपर आप क्या उचित आज्ञा देते हैं जिसको मैं योग्य समझ कर करूं १४ मैं आपकी जो आज्ञा होगी उसीको करूंगा संजय बोले कि इस बातको सुनकर गोविन्दजी ने बड़ी धिक्कारियां देकर अर्जुन से कहा १५ हे अर्ज्जुन मैं निश्चय जानताहूं कि तुमने वृद्धलोगों का सेवन नहीं कियाहै पुरुषोत्तम जो तुम को क्रोधहुआ है यह क्रोध समय के समान नहीं है १६ हे अर्ज्जुन धर्म्म के प्रकारों का ज्ञातापुरुष ऐसा नहीं करसक्ताहै जैसे कि अब यहां तुम धर्म्म से भयभीतहोकर निर्बुद्धी से होरहेहो १७ जो मनुष्य करने के अयोग्य कर्मों को और योग्य कर्मों को एककरताहै हे अर्जुन वह अधमपुरुष कहाजाताहै १८ पण्डित लोग जिस धर्मपर आरूढ़ होकर ईश्वर का उपस्थान करते हैं उसी के अनुसार इतरलोग भी आचरण करते हैं १९ हे अर्जुन योग्यायोग्य कर्मों के निश्चय में दृढ़ता रखनेवाला मनुष्य विवशहोकर ऐसाही अज्ञानी होजाताहै जैसे कि तुम होगयेहो २० उचित और अनुचित कर्म किसीप्रकारसे भी आनन्द पूर्व्वक जानने के अयोग्य नहींहै यह सब शास्त्र कहते हैं तुम उसका विचार नहीं करतेहो २१ तुम पूरे बुद्धिमान् नहींहो जिस बुद्धिके द्वारा धर्मज्ञ होकर धर्मकी रक्षा क-

रताहै हेअर्जुन जो धर्मके अभ्यासी होकर भी पाप पुण्यकारी कर्म नहीं जानते हो २२ हे तात जीवों का न मारनाही उत्तम धर्महै यह मेरा मतहै चाहै मिथ्या वचन किसी समय कहदे परन्तु हिंसा कभी न करे २३ सो हे नरोत्तम तुम इस धर्ममें पण्डित होकर अपने बड़े भाई राजा युधिष्ठिर को कैसे मारने को प्रवृत्तहो जैसे कि कोई साधारण मनुष्य होताहै २४ हे प्रशंसा देनेवाले सुन कि युद्ध न करनेवाले वा युद्धसे मुखमोड़नेवाले वा भागनेवाले और घरमें आश्रय लेनेवाले शत्रु अथवा हाथजोड़नेवाले वा शरणागत और मदोन्मत्तों के मारनेको उत्तम लोग नहीं प्रशंसा करते हैं वह सब गुण तेरे गुरुरूप बड़ेभाई युधिष्ठिरमें हैं २५। २६ हे अर्जुन पूर्वसमय में तुमने बाल्यावस्था से ऐसा व्रत कियाथा इसी हेतुसे अपनी अज्ञानता करके अधर्म युक्त कर्म को निश्चय करते हो २७ हे अर्जुन धर्म्मोंकी कठिनतासे मिलनेवाली सूक्ष्मगति को अच्छे प्रकारसे धारण न करके तू किसहेतु से अपने गूरूरूप बड़े के मारने की इच्छासे दौड़ताहै २८ हे पांडव धर्मकी इस गुप्तबार्त्ता को भीष्मजी के अथवा पांडव युधिष्ठिर के द्वारा मैं तुझसे कहूंगा २९ वा बिदुरजी और यशश्विनी कुन्ती तुमसे कहैगी हे अर्जुन इसको मैं मूल समेत कहूंगा तुम चित्तसे सुनना सत्य बोलनेवाला साधुहै ३० गृहस्था-श्रमी से कोई आश्रमी श्रेष्ठ नहीं है बड़े दुःख से जानने के योग्य अभ्यास करी हुई सत्यता को मूल समेत देखो ३१ सत्यता कहने के योग्यनहीं होतीहै अर्थात् सत्यतामें कोई दोषनहीं कहसक्ता परन्तु जब सत्यता में मिथ्यापन होता है तब वह सत्यसा भी मिथ्या कहने के योग्य होतीहै ३२ अर्थात् किसी किसी स्थानपर सत्यता से अधर्म भी होताहै जैसे कि बिवाहके समय वा बिषयभोग करने के समय वा प्राणोंके नाशमें वा सबधन के चोरीहोने में और ब्राह्मण के मनोरथ सिद्ध होने में मिथ्या बोलना इन पांचों स्थानों में मिथ्या बोलने का कोई पाप नहीं होताहै ३३ सबधनके चुरायेजाने में मिथ्याबोलना योग्यहोताहै ऐसे स्थान में सत्य भी मिथ्या होताहै ३४ बुद्धिमान् सावधान पुरुष इस रीति से देखताहै अभ्यास करीहुई सत्यताको देखो कि सत्यता दोषलगाने के योग्यनहीं है और अभ्यास करीहुई कहने के योग्य नहीं प्रथम सत्य और मिथ्याको अच्छीरीति से जानकर निश्चय धर्म का ज्ञाताहोता है ३५ क्या अद्भुत कर्म देखने में आताहै कि बड़ाज्ञानी वा बड़ा भयकारी मनुष्य भी बहुत बड़े पुण्य को ऐसे प्राप्त करता

है ३६ जैसे कि बलाक नाम बधिकने व्याघ्र के मारडालने से पुण्यप्राप्त किया फिर क्या आश्चर्य्य है कि अज्ञानी और मूर्ख धर्म का अभिलाषी पुरुष बहुत बड़े पापको प्राप्तकरे जैसे कि नदियों के समीप कौशिकने प्राप्तकियाथा ३७ अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी इस बलाकनदी और कौशिक संबंधी कथाको ऐसे बिचार से कहिये जिस में मैं समझूं ३८ बासुदेवजी बोले हे भरतवंशी पूर्व्व समय में बलाकनाम एक बधिक हुआ वह सदैव अपने स्त्री पुत्रादिकोंको पोषणके अर्थ मृगों को माराकरताथा अपनी इच्छासे नहीं मारताथा अपने वृद्ध माता पिता और अन्य आश्रित लोगों की पालना करताथा ३९ और अपने धर्म में प्रीतिवान् होकर सत्यवक्ता और किसीके गुण में दोषनहीं लगाताथा एक समय उस मृगाकांक्षीको कोई मृग नहीं मिला तव बहुत खोज करते२ एक जल पीताहुआ नाकही जिसकी नेत्र रूप थी ४० ऐसे श्वापद व्याघ्र को उसने देखा ऐसे रूप का जीव उसने पहले नहीं देखाथा इसी हेतुसे उसकोभी अपूर्वदर्शन जानकर मारा उस अन्धे स्वापद के मारने पर आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई ४१ और उत्तम गीत वाद्योंसमेत अप्सरा नाचीं और उस बधिकके लेजानेके लिये स्वर्ग से बिमानआया ४२ हे अर्जुन निश्चय करके उस स्वापदजीव ने सब जीवों के नाशके लिये तपस्याकरके वरदानपायाथा इसीसे ब्रह्माजीने उसको अंधा करदिया ४३ सबजीवों के नाशमें निश्चय करनेवाले उस जीवको मारकर पीछे से वह बलाक स्वर्गको गया इसरीतिसे धर्मकी बड़ी सूक्ष्मगति है बड़ी कठिनता से जाननेके योग्यहै ४४ और कौशिक ब्राह्मणभी एक बड़ा तपस्वी और शास्त्रोंका जाननेवालाथा वह गांवसे दूर नदियोंके संगमपर निवास करताथा ४५ सत्यबोलने का सदैव ब्रत रखताथा इसीसे हे अर्ज्जुन वह सत्यवक्ता विख्यात हुआ ४६ इसके पीछे कितनेही मनुष्य चोरों के भयसे उसवनमें रहनेलगे वहां भी क्रोधयुक्त चोरों ने बड़े उपायों से उनको ढूंढ़ा ४७।४८ इसके अनन्तर उन्हों ने सत्यबोलनेवाले कौशिकके पास आकरकहा कि हे भगवन् बहुत से मनुष्यों का समूह किस मार्ग से गयाहै हम सत्य २ पूछते हैं जो आप जानते होयँ तो कहिये सत्यता से पूछेहुये उस कौशिकने उनसे कहा ४९ कि बहुत वृक्ष लता वल्लीवाले उसवनमें रहते हैं उस कौशिकने उनको प्रकटकरके मूल वृत्तान्त को भी प्रकटकिया ५० इसकेपीछे उन्होंने उन क्रूर मनुष्योंको पाकर मारडाला यह

सुनाजाताहै सूक्ष्म धर्मों से अनभिज्ञ वह कौशिक उनबड़े अधर्म रूप कहेहुये दुष्ट वचनसे महादुःखरूप नरकको ऐसे गया जैसे कि थोड़ेशास्त्रका जाननेवाला अज्ञानी धर्म्मों के प्रकारोंको न जानकर जाताहै ५१।५२ अपने सन्देहों को वृद्ध लोगों से न पूछनेवाला बड़े नरकके योग्य होताहै उस धर्म और अधर्मका मूल निश्चय करनेके लिये तेरा योग्यताका कोईतो वचनहोगा ५३ कठिनतासे प्राप्त करनेके योग्य उत्तम ज्ञानको तर्कसे निश्चय करते हैं और बहुतसे लोग कहते हैं कि धर्म वेदसे होताहै ५४ इसहेतुसे तुझको दोष नहीं लगाताहूं सब नहीं किया जाताहै क्योंकि जीवधारियों की उत्पत्तिके लिये धर्मका वर्णन किया गया ५५ जो अहिंसासे युक्त होता है वही धर्म है और धर्मरूप वचनभी हिंसा न करने-वालोंकी अहिंसाके निमित्त वर्णन कियागयाहै ५६ धारण करने से धर्म कहाग-याहै क्योंकि वह सृष्टिको धारणकरताहै अर्थात् उत्पत्ति और पोषणकरताहै जिस हेतुसे कि वह धारणनाम गुणसेयुक्तहै इसी कारणसे वह निश्चयकरके धर्म कहा जाताहै ५७ जो किसीसमयपर अन्यायसे चोरीकरतेहुये धर्मको चाहतेहैं अथवा वेद के विरुद्ध मोक्षपद को चाहते हैं उनके साथ कभी वार्त्तालाप भी न करना चाहिये ५८ अथवा अवश्यक बोलने के समयपर भी वेद वा लौकिक बचनका संदेहहोय अर्थात् इसविषयके विचार करनेकेसमय कि यह ब्राह्मण चोरहै वा नहीं ऐसे समयमें वहां मौनहोना अवश्यहै और जो कदाचित् मौन होनेसेभी काम न होसके तो वहां मिथ्या बोलनाभी योग्य गिनाजाताहै वह बिना विचारे से भी सत्यही के तुल्यहै ५९ जो किसी कामके विषयमें व्रत करके कर्म से उसको पूरा न करे अर्थात् विरुद्धकर्म करे उसके विषयमें बुद्धिमान् लोगोंका वचनहै कि वह उसके फलको नहींपाताहै ६० किसीके प्राणजानेमें विवाहमें सबजाति के नाशमें और जारी होनेवाले कर्म में कहाहुआ वचन मिथ्या नहीं कहलाता है ६१ धर्मतत्वके जाननेवाले वा देखनेवाले इसबातमें अधर्मको न देखते हैं न जानते हैं जो शपथों के खानेमें भी चोरों से मिलाहुआनही है ६२ वहां मिथ्या कहनाही श्रेष्ठ होताहै वह भी विना विचारके सत्यहै और समर्थ होनेपर उनको किसी दशामें भी धनदेनेके योग्य नहींहै ६३ पापियोंको दियाहुआ धन दाता कोभी पीड़ित करताहै अर्थात् नरकमें डालताहै इसीकारण धर्म के निमित्त मि-थ्या कहने से मिथ्याके फलको भोगनेवाला नही होताहै मैंने बुद्धिके अनुसार

यह लक्षणोद्देश तुझसे बिधिपूर्व्वक कहा ६४ यह सब मुझ शुभचिन्तकने धर्म और बुद्धिके अनुसार कहाहै हे अर्जुन इसको सुनकर अबतुमकहो कि यह युधिष्ठिर तेरे मारनेके योग्यहै वा नहीं ६५ अर्जुन बोले बड़ाज्ञानी और बुद्धिमान् जिस रीतिसे कहै और जिसरीतिसे हमाराभलाहोय उसीप्रकारका यह आपका वचनहै ६६ हे श्रीकृष्णजी आप हमारे माता और पिता के समान होकर परम गति और परमस्थानहो ६७ तीनों लोकोंमें आपसे कोई बातछिपी नहीं है इसी से आप सबप्रकारके उत्तम धर्मोंको ठीक २ जानतेहो ६८ मैं धर्मराज पांडव युधिष्ठिरको अवध्य अर्थात् मारनेके अयोग्य मानताहूं आप इस मेरे संकल्पमें प्रतिज्ञा के रक्षाका कोई उपाय बर्णनकीजिये ६९ अथवा इसस्थानपर मेरे हृदयमें वर्त्तमान कहनेके योग्य उत्तमबातोंको सुनिये हे श्रीकृष्णजी आपमेरेब्रतको जानते हैं जो कोई मनुष्य सब मनुष्यों के आगे मुझसे ऐसा वचनकहै कि ७० हे अर्जुन तुम इस गाण्डीव धनुषको ऐसे मनुष्य को देदो जो बलपराक्रम और शस्त्र विद्यामें तुमसे अधिकहो हे श्रीकृष्णजी मैं ऐसे कहनेवाले मनुष्यको हठकरके ऐसे मारूं जैसे कि मिथ्या शब्दके कहने से भीमसेन मारताहै ७१ हे वृष्णियों में बीर श्रीकृष्णजी आपके सन्मुख राजा युधिष्ठिरने इसी शब्दको बारम्बार मुझसे कहा कि धनुषको दूसरेको दे हे केशवजी जो मैं उसको मारडालूं तो मैं थोड़े समयतक भी इस जीवलोकमें नियत नहीं रहूंगा ७२ इससे निश्चय करके मैं निष्पाप राजा के मारनेको ध्यान करके पराक्रम से हीन अचेत होकर अपने शरीरको त्याग करूंगा हे धर्मधारियों में श्रेष्ठ जिससे कि मेरीप्रतिज्ञा संसारकी बुद्धिमें सत्यसमझीजाय ७३ और जिसप्रकार पाण्डव युधिष्ठिर और मैं जीवतारहूं हे श्रीकृष्णजी वैसेही आपभी अपना सम्मत मुझको दीजिये बासुदेवजी बोले हे बीर युद्ध में कर्णके तीक्ष्ण धारवाले बाणों के समूहों से राजा युधिष्ठिर महा घायल दुःखी थकावटसे युक्त बारम्बार युद्ध करने में कर्ण के बाणों से विदीर्ण होगया है ७४ इस हेतुसे इसने महादुखी होकर ऐसे अयोग्य वचन तुमसे कहे जिससे कि तुम क्रोधयुक्त होकर युद्धमें कर्णको मारो इसी कारणसे बारम्बार तुझमें क्रोध बढ़ाने के लिये कहाहै कि तू युद्धमें क्रोधरूप होकर कर्णको मारे ७५ यह युधिष्ठिर भी इस लोक में उस पापी कर्ण के समान अथवा उससे सन्मुखता करनेवाला तेरे सिवाय किसी दूसरेको नहीं समझताहै हे अर्जुन इसी हेतुसे मेरे सन्मुख अत्यन्त

क्रोधयुक्त होकर राजाने तुमसे यह कठोर वचन कहे हैं ७६ युद्ध में सदैव सन्नद्ध दूसरेके सहनेको अयोग्य कर्णमेंही अब युद्ध रूपी द्यूत बांधागयाहै उसीके मरनेपर कौरव लोग विजय होंगे ऐसी बुद्धि राजा युधिष्ठिर में है ७७ इस कारण से धर्मपुत्र युधिष्ठिर मारने के योग्य नहीं है हे अर्ज्जुन तुझ को अपने प्रणको पूरा करना योग्य है और अपने योग्य उस बात को तू मुझ से समझ जिस से कि यह जीवता हुआ भी मृतक के समान होजाय ७८ जब प्रतिष्ठा के योग्य मनुष्य को प्रतिष्ठा प्राप्त होती है तभी वह इस जीव लोक में जीवता रहताहै और जब प्रतिष्ठित पुरुष अपमान को पाता है तब वह जीवता हुआ भी मृतक के समान कहाजाता है ७९ यह राजा युधिष्ठिर सदैव से भीमसेन नकुल सहदेव और तुझ से अच्छी रीति से प्रतिष्ठा किया गयाहै और लोक में वृद्ध वा शूर वीर लोगोंने भी इसकी प्रतिष्ठाकी है इसीप्रकार तुमभी बातों केही द्वारा इसका अपमान करो ८० हे कुन्तीके बेटे उसके साथ ऐसा कर्म करके अधर्मयुक्त कर्म को कर ८१।८२ यह अथर्वाङ्गिरसी नाम श्रुति है कल्याणके चाहनेवाले पुरुषों को सदैव इस श्रुतिको काममें लाना योग्यहै ८३ यही विनामारेहुये मारना कहा जाताहै और यही समर्थ गुरुतम कहाजाताहै हे धर्मज्ञ तुम इस मेरे कहेहुये वचनको धर्मराजसे कहो ८४ हे पाण्डव यह धर्मराज तेरे हाथसे इसरीतिपर मरनेको अयोग्यजानताहै इसके पीछे इस के चरणों को दण्डवत् करके बड़े मीठे वचनों से इससे शुभचिन्तकता की बातें कहो ८५ बुद्धिमान् तेराभाई राजा युधिष्ठिरभी धर्म को विचारकर फिर कभी तुझपर क्रोध न करेगा हे अर्जुन भाई के मिथ्या मारनेसे अलग होकर तुम बड़ेहर्षसे युक्तहोके इससूतके पुत्र कर्णको मारो ८६॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिश्रीकृष्णअर्ज्जुनसंवादेसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि श्रीकृष्णजीके इसरीतिके वचनको सुनकर अपने मित्र श्री कृष्णजी की प्रशंसा करनेलगा और बड़े हठको करके धर्मराजसे ऐसे कठोर वचनबोला जैसे पूर्व्व कभी नहीं बोलाथा १ हे राजा तुम तो युद्धसे एककोश दूर नियतहो तुमऐसा मुझसे कभी मतकहो जो चाहै तो भीमसेन मेरी निन्दाकरने को योग्यहै कि सब लोकके शूरबीरों से लड़ता है २ वह कालरूप भीमसेन युद्ध

में शत्रुओं को पीड़ामान करके बड़े२ शूरवीर राजाओं को उत्तम रथों को श्रेष्ठ-
तर हाथियों को उत्तम अश्वारूढ़ों को और असंख्य वीरों को ३ हाथियोंसमेत
मारकर बड़े कठोर सिंहनाद को गर्जना करताहै और जैसे कि मृगों को सिंह
मारताहै उसीप्रकार युद्धभूमिमें दशहज़ार कांबोज देशी और पहाड़ी शूरवीरों
को मारकर वहवीर बड़े २ ऐसे कठिन कर्मों को करताहै जिनको तुम कभी करने
को समर्थ नहींहोसक्के और रथसे कूद गदाको हाथमेंलेकर उसके प्रहारोंसे युद्धमें
घोड़े रथ और हाथियों को मारकर सिंहके समान दहाड़ताहै ४।५ इसके विशे-
ष खड्गसे भी घोड़े रथ और हाथियों को अथवा रथांग और धनुषसे शत्रुओं
को मारकर फिर बड़े क्रोध और पराक्रमका रखनेवाला दोनों भुजाओं से पकड़-
कर चरणोंसेही शत्रुओं को मारडालताहै ६ वह कुबेर और यमराज के समान
महापराक्रमी बड़े हठकरके शत्रुओंकी सेनाका मारनेवालाहै वह भीमसेन मेरी
निन्दा करने के योग्यहै न कि तुम जो कि सदैव शुभचिन्तकों से रक्षा किये जा-
तेहो ७ अकेला भीमसेनही बड़े २ रथ हाथी घोड़े और असंख्यों पदातियों को
मथकर धृतराष्ट्रके पुत्रों में मग्नहै वह शत्रुओं का विजयी मेरी निन्दा करनेके
योग्यहै ८ जो कि कलिंग बंग अंग निषाद और मगध देशियोंको और नीले
बादलके समान मतवाले हाथियोंको और शत्रुओं के मनुष्योंको सदैव मारताहै
वह शत्रुसंहारी भीम मेरी निन्दाके योग्यहै ९ वह बड़ावीर महा युद्धमें समयपर
उचित रथपर सवार होकर धनुष को चलायमान करताहुआ बाणों से पूर्ण ऐसी
बाणों की बर्षा करताहै जैसे जलधाराओं की वर्षा बादल करताहै १० जिस भी-
मसेनने अभी मुखकी नोंक सूंड़ और अङ्गों समेत घायल करके आठसौ बड़े२
हाथी युद्धभूमिमें मारडाले वह शत्रुओंका मारनेवाला मुझसे कठोर बचन कहने
के योग्यहै ११ बुद्धिमान् मनुष्य उत्तम ब्राह्मणों के वचनमें पराक्रमको और बहुत
से क्षत्रियों में पराक्रमको कहते हैं हे भरतवंशी तुम वचन में बली और कठोरहो
और तुम्हीं मुझको जानतेहो जैसा कि मैं पराक्रमीहूं १२ जो कि मैं स्त्री पुत्र जीवन
और आत्माके साथ तेरे चित्तका प्रियकरनेको सदैव प्रवृत्त रहताहूं इसपरभी जो
तू मुझको वचनरूपी बाणों से भेदकर मारताहै हम तुझसे उस सुखको नहीं
जानते १३ तू द्रौपदी की शय्यापर नियत होकर मेरा अपमान मतकर मैं तेरेही
निमित्त महारथियोंको मारताहूं हे भरतवंशी इसहेतुसे तुम शंकाकरनेवाले होकर

महानिष्ठुर प्रकृतिहो मैंने तुझसे कभी सुखको नहींपाया १४ हेनरदेव युद्धमें सत्य संकल्प भीष्मजी ने अपनेआप तेरेही अभीष्टकेलिये अपनी मृत्युको तुझसे कहा द्रुपदका पुत्र शिखंडीबीर महात्माहै उसीने मेरे आश्रयमें होकर उनको मारा १५ जो कि तुम पांशोंकी बाजीमें कार्य्यों के बिगाड़ने में प्रवृत्तहुये इस हेतुसे मैं तेरे राज्यकी प्रशंसा नहींकरताहूं तुम नीचों से सेवित अपने आप पापोंकोकरके हमारे द्वारा शत्रुओंको बिजयकरना चाहतेहो १६ तुमने पांशोंकी बाजीमें धर्मके बिपरीत बहुतसे दोषोंको जिनको कि सहदेवने वर्णनकिया तुम नीचोंसे सेवित उन दोषों के त्याग करनेकी इच्छानहीं करतेहो इसीकारणसे हम सब दुःखोंमें पड़ेहुये हैं १७ किसी प्रकारकाभी सुख तुम से हमको नहीं हुआ क्योंकि तुम पांशों के खेल में बड़े मतवाले हो हे पाण्डव तुम आप दुःखको उत्पन्न करके अब हमको कठोर वचन सुनातेहो १८ हमारे हाथसे अंगभंगमारी हुई शत्रुओंकी सेना पृथ्वी पर सोतीहुई पुकारती है तुमने ऐसा निर्द्दयकर्म किया जिसके दोषसे कौरवोंका मरण उत्पन्नहुआ १९ उत्तरके रहनेवाले मारे पश्चिमी लोगोंका नाश किया और पूर्व्वी वा दक्षिणी मारेगये युद्धमें हमारे और उनके शूरबीरों ने वह अपूर्व और अद्भुत कर्म किया २० तुम द्यूतके खेलनेवाले हो तुम्हारेही कारण से राज्यका नाशहुआ हे नरेन्द्र हमारा दुःख तुझ से पैदा होनेवालाहै हे राजा हम लोगों को वचनरूपी चाबुकों से पीड़ा देनेवाले तुम दुर्भागी फिर हमको क्रोधयुक्त मत करना २१ संजय बोले कि वह स्थिरबुद्धी धर्म से भयभीत महाज्ञानी अर्ज्जुन इन कठोर अप्रतिष्ठित वचनों को सुनाकर कुछ पाप किया हुआ समझ कर उदास होगया अर्थात् वह इन्द्रकापुत्र बारंबार श्वासलेताहुआ पीछे से महादुखी हुआ और फिर खड्गको निकाल लिया तब श्रीकृष्णजी बोले आप इस आकाशरूप खड्ग को फिर किस निमित्त म्यान से अलग करते हो २२।२३ इसका हमको उत्तर दोगे तब मैं तुम्हारे कल्याण और प्रयोजन के सिद्ध होनेको कुछ कहूंगा पुरुषोत्तमजी के इस वचनको सुनकर अर्जुन बड़ा दुखी होकर केशवजी से बोला कि जो मैंने अप्रियरूपी पापकर्म्म किया है इससे अपने शरीर को नाश करूंगा धर्मधारियों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी अर्जुनके इसवचनको सुनकर यह वचन बोले कि २४।२५ हे अर्जुन तुम इस राजासे ऐसे वचन कहकर घोर दुःख में क्यों प्रवृत्तहुये हे शत्रुओं के मारनेवाले अर्जुन जोतुम अपघात करना चा-

हतेहो यह कर्म सत्पुरुषों का नहीं है २६ हे नरबीर जो तुम अब इस धर्मात्मा बड़े भाईको खड्ग से मारोगे तो तुझ धर्म से डरने वालेकी कीर्त्ति किस प्रकारकी होगी इसका तुम क्या उत्तर दोगे २७ हे अर्जुन धर्म बड़ा सूक्ष्म होकर कठिनता से जानने के योग्यहै तुम बड़े २ बुद्धिमानों के कहेहुये धर्मको समझो तुम आप अपना अपघात करके वा भाई के मारने से महाघोर नरक में पड़ोगे २८ हे अर्जुन अब तुम यहां अपने बचनसे अपनेही गुणोंको वर्णन न करो जिससे कि तुम हतात्मा होजाओ इस बचनको इन्द्रके पुत्र अर्जुन ने पसन्द किया कि हे श्रीकृष्णजी ऐसाहीहो २९ फिर धनुष को लचाकर धर्मधारियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर से बोला कि हे राजा सुनो कि महादेवजी के सिवाय मुझसा धनुषधारी कोई नहीं है ३० मैं तुझ महात्माकी आज्ञासे एकक्षणभरमेंही सब स्थावर जंगमजीवों समेत संसारभरेको मारसक्ताहूं हे राजा मैंने दिग्पालों समेत सब दिशाओं को विजय करके तेरे अधीनकर दीन्हीं ३१ वह पूर्ण दक्षिणायुक्त राजसूययज्ञ और आपकी वह दिव्यसभा मेरेही पराक्रम से हुई और मेरेहाथों में तीक्ष्णधारवाले बाणहैं और बाणों से युक्त प्रत्यंचावाला लम्बायमान धनुषहै ३२ और मेरेचरण रथ और ध्वजासमेत हैं और युद्धमें वर्त्तमान होकर मुझको कोई शूरबीर बिजय नहीं करसक्ताहै मैंने पूर्बीय पश्चिमीय उत्तरीय और दक्षिणीय राजालोगों को मारा ३३ संसप्तकों का कुछ शेष बाकी है इसरीतिसे सब सेनाका आधाभाग मार डाला हे राजा देवसेना के समान यह भरतवंशियों की सेना मेरे हाथसेही मारी हुई पृथ्वीपर सोरही है ३४ जो अस्त्रोंके जाननेवालेहैं उनको मैं अस्त्रोंही से मारता हूं इसी हेतुसे यह अस्त्र लोकोंके भस्म करनेवालेहैं हे श्रीकृष्णजी भयके उत्पन्न करने वाले इस विजयी रथपर सवार होकर कर्ण के मारने को चलें ३५ अब यह राजा युधिष्ठिर सुखी होजाय मैं युद्धमें अपने बाणोंसे कर्णको मारूंगा ऐसा कहकर अर्जुन ने धर्मधारियोंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिरसे यह वचनकहा ३६ कि अब कर्णकी माता अपने पुत्रसे रहित होगी अथवा कुंती मुझ से पृथक्होगी मैं सत्य २ कहताहूं कि अब युद्धभूमि में कर्ण को बाणों से मारे बिना मैं अपने कवचको नहीं उतारूंगा ३७ संजय बोले कि अर्जुनने युधिष्ठिर से ऐसा कहकर फिरभी शस्त्रों को उतार धनुष छोड़ बड़ी शीघ्रतासे खड्ग को म्यान में रखकर ३८ बड़ी लज्जा से नीचा शिर किये हाथ जोड़कर युधिष्ठिर से कहा कि हे राजा प्रसन्न हूजिये

और मेरे कहेहुये को क्षमा करिये आप समय पाकर जानेंगे अब आपको नमस्कार है ३९ इस रीति से अप्रसन्न राजा को प्रसन्नकरके फिर यह वचन बोला कि इस कार्य्य में विलम्ब न होगी बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक यह कार्य्य होगा मैं इस लौटते हुये के सन्मुख जाता हूं ४० अब मैं सर्वात्मभाव से भीमसेन को युद्ध से छुटाने और कर्ण को मारने को जाताहूं मेरा जीवन केवल आपके अभीष्ट केही निमित्त है हे राजा मैं आपसे सत्य २ कहताहूं आप मुझको आज्ञा दीजिये ४१ यह कहकर बड़ा तेजस्वी अर्जुन चलने के समय भाई के चरणों को पकड़कर उठा फिर पांडव धर्मराजने अपने भाई अर्जुन के इस कठोर वचन को सुनकर ४२ महादुखीहो अपने उस शयनस्थान से उठकर अर्ज्जुन से कहा हे अर्ज्जुन मैंने वह महादुष्ट कर्म किया जिसके कारण तुमको ऐसा महाघोर दुःखप्राप्तहुआ ४३ इसकारणसे मुझकुलके नाशक महापापी दुःखों से युक्त अज्ञानबुद्धी आलसी भयभीत वृद्धों के अपमान करनेवाले इस नीच पुरुषके शिरको काटडालो तेरे रूखे२ वचनोंके सुननेसे मेरा कोई प्रयोजननहींहै अब मैं महापापी बनकेही जाने के योग्यहूं मैं अवश्य बनहीकोजाऊंगा और आप मुझसे पृथक् होकर सुख से राज्यको करो ४४।४५ महात्मा भीमसेन राजाहोनेके योग्यहै मुझ नपुंसकका राज्यमें क्याकामहै और तुझक्रोधयुक्तके इनकठोरवचनोंके सहनेकोभी मैं समर्थ नहीं हूं ४६ हे वीर मुझ अपमानवाले के जीवन के कारण से फिर भीमसेन राजाकरनेके योग्य न होगा इसरीतिके वचनोंको कहकर राजा युधिष्ठिर अपने शयन स्थान को छोड़कर उछला ४७ और वनके जानेकी इच्छा करी तब तो वासुदेवजी ने बड़े नम्रहोकर युधिष्ठिरसे कहा हे राजा यह आप समझिये ४८ कि जैसे सत्यप्रतिज्ञ गांडीव धनुषधारी की प्रतिज्ञा सुनी गई अर्थात् जो कोई कि ऐसा कहै कि गांडीव धनुष दूसरेके देने के योग्यहै वह पुरुषलोक में उसके हाथ से मारने के योग्यहै और यह तुमने उससे कहा इस हेतु से अर्जुनने उस अपनी सत्य प्रतिज्ञाकी रक्षाकरी है ४९।५० हे राजा यह तेरा अपमान मेरी इच्छा से कियागया क्योंकि गुरुओं का अपमानही मारने के समान कहाजाताहै ५१ हे महाबाहो राजा युधिष्ठिर इस हेतुसे सत्यकी रक्षा के निमित्त मेरी और अर्जुन की अनम्रताको आप क्षमा करिये ५२ हे महाराज हम दोनों आपकी शरण में वर्त्तमानहैं हे राजा मुझ प्रणतरूप प्रार्थना करनेवालेका अपराध क्षमाकरिये ५३

अब यहपृथ्वी उस पापात्मा कर्णके रुधिरको पानकरेगी यह मैं तुमसे सत्यप्रतिज्ञा करताहूं कि अब तुम कर्णको मराहुआही जानो ५४ जिसका तू मरनाचाहताहै अब उसकी अवस्था जीवन की भी समाप्त हुई तब श्रीकृष्णजी के बचन को सुनकर धर्मराज युधिष्ठिरने ५५ भ्रान्तीसे युक्त झुकेहुये श्रीकृष्णजी को उठाकर हाथजोड़कर श्रीकृष्णजीसे यह बचनकहा ५६ कि हे श्रीकृष्णजी जैसा आपने कहाहै वैसाही है कि इसमें मेरी अमर्य्यादा होय हेमाधव गोविन्दजी मैं आपके समझाने से समझगयाहूं ५७ हेअबिनाशी अब हम तुम्हारे कारणसे घोर दुःख से छूटे और अपनी अज्ञानता से अचेत हम दोनों आप रूप स्वामीको पाकर इस घोररूप दुःख समुद्र से पारहुये ५८ हम सब अपने मन्त्रियों समेत आपकी बुद्धिरूपी नौकाको पाकरदुःख और शोकरूपी नदी से पारहुये हे अबिनाशी हम तुमसे सनाथहैं ५९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणियुधिष्ठिरप्रबोधनेएकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसकेपीछे धर्मात्मा यदुनन्दन गोविन्दजी धर्मराज के इस प्रीति युक्त बचनों को सुनकर अर्जुनसे बोले १ और अर्जुन इसरीतिसे श्रीकृष्ण जी के बचन से युधिष्ठिर को कठोर बचन कहकर उदास हुआ जैसे कि कुछ पापको करके उदास होतेहैं २ तव हँसतेहुये बासुदेवजी उस पाण्डवसे बोले कि हे अर्जुन यह कैसे होसक्ताहै जो उस धर्मनिष्ठ धर्मके पुत्र को तीक्ष्णधारवाले खड्गसे मारे तुमराजासे यह कहकर एक पापमें पड़े ३।४ हे अर्जुन राजाको मार कर पीछेसे तुम क्या करते इस रीति से अल्प बुद्धियों से बड़ी कठिनता पूर्व्वक धर्मजानने के योग्यहै ५ सो आपधर्मके भयसे बड़े भाईके मारने के द्वारा बहुत बड़े घोर नरकमें अवश्य पड़े ६ सो तुम धर्मधारियोंमें श्रेष्ठ धर्मकेसमूह कौरवोंमें श्रेष्ठ राजायुधिष्ठिरको प्रसन्नकरो यहीमेरा मतहै ७ अपनी भक्तिसे राजाको प्रसन्नकरो फिर उस युधिष्ठिरके प्रसन्नहोनेपर शीघ्रही युद्धके निमित्त कर्णके रथके समीप चलेंगे ८ हे बड़ाई देनेवाले अब तुम युद्धमें अपने तीक्ष्णधारवाले बाणों से कर्णको मारकर धर्मराजकी बड़ी प्रसन्नताको प्राप्त करो ९ हे महाबाहो यहां पर यह वार्त्तासमयके अनुसारहै यहमेरामतहै ऐसा करनेपर तेराकियाहुआ कार्य

सिद्धहोगा १० हे महाराज इसके पीछे लज्जायुक्त अर्जुन धर्मराज के दोनों चरणोंको पकड़कर शिरसे झुकगया ११ और उस भरतर्षभ से बारंबार विनयकरने लगा कि हेराजा जो मुझसबकामों से डरेहुये ने आपके सन्मुख असभ्य वचन कहे उनको आप क्षमाकरिये १२ हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र तब तो धर्मराज युधिष्ठिर ने उस शत्रुसंहारी रोतेहुये और गिरेहुये अर्जुन को देखकर १३ उस संसारकी लक्ष्मी के विजय करनेवाले भाईको उठाकर बड़ी प्रीति से हृदयसे लगाकर अति रोदन किया १४ हे महाराज वह महातेजस्वी शुद्ध अंतःकरणवाले दोनों भाई बहुत विलंबतक रोदन करके प्रसन्नहुये १५ फिर पाण्डव धर्मराज बड़ेप्रेमसे मिल कर उसके मस्तक को सूंघ के बड़ी प्रीतियुक्त मन्दमुसकान करते हुये उस बड़े धनुषधारी से बोले १६ हे महाबाहो बड़े धनुषधारी कर्ण ने युद्ध में सब सेना के देखतेहुये मुझ उपाय करनेवाले को कवच, ध्वजा, धनुष, शक्ति घोड़े और बाणों को १७ अपने बाणों से काटकर पराजयकिया हे अर्जुन सो मैं युद्धमें उसको जानके और उसके कर्मको देखकर १८ महादुःखी होताहूं और जो तू युद्धमें उस वीर शत्रुको नहीं मारेगा तो मुझको जीवन प्यारा न होगा १९ अर्थात् अपने प्राणोंको त्यागकरूंगा फिर जीने से मेरा कोई प्रयोजन नहीं है हे भरतर्षभ इस प्रकार के युधिष्ठिरके वचनों को सुनकर अर्जुनने उत्तरदिया २० हे नरोत्तम महाराज मैं आपकी सत्यता वा प्रसन्नता वा भीमसेन नकुल और सहदेवकी शपथ करताहूं २१ मैं जिसप्रकारसे अब कर्णको मारूंगा वा आप मरकर पृथ्वीपर गिरूंगा मैं सत्यतासे उस शस्त्रको प्राप्त करताहूं २२ ऐसा राजासे कहकर फिर माधवजी से बोला कि हे श्रीकृष्णजी अब मैं निस्संदेह युद्धमें कर्णको मारूंगा २३ आपका कल्याणहोय यह सब आपही के विचारसे है उस दुरात्माका मरण होगा हे राजाओं में श्रेष्ठ यहवचन सुनकर केशवजी अर्जुन से बोले २४ हे भरतर्षभ तुम बड़े पराक्रमी होकर कर्ण के मारने को समर्थ हो हे महारथी मेरी भी सदैव से यही इच्छाहै २५ तुम युद्धमें कैसे कर्णको मारोगे यह कहकर वह श्रेष्ठ पुरुषोत्तम माधवजी फिर युधिष्ठिर से बोले २६ हे युधिष्ठिर तुम अब दुरात्मा कर्ण के मारने के निमित्त अर्जुनको विश्वास पूर्वक आज्ञादेने को योग्यहो २७ हेपांडुनन्दन आपको कर्ण के बाणों से पीड़ामान सुनकर मैं और अर्जुन वृत्तान्त निश्चय करने को यहां आयेथे सो २८ हे राजा आप प्रारब्धसे जीवतेहुये और

उसके पकड़ने से बचेहुयेहो हे निष्पाप अब तुम इस अर्जुनको विश्वास पूर्वक विजयका आशीर्वाददो २९ युधिष्ठिर बोले हे पांडव अर्जुन आओ आओ मुझ से मिलो कहने के योग्य और चित्तके अभीष्टको प्राप्त करनेवाला बचन कहागया है जो तुमने मुझसे कहा वह मैंने सब क्षमाकिया ३० हे अर्जुन अब मैं तुझको आज्ञादेताहूं कि तुम कर्णको मारो हे अर्जुन और जो २ मैंने कठोर बचन कहे हैं उनसे क्रोधयुक्त मतहो ३१ संजय बोले हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र तब तो कमर से झुकेहुये अर्जुनने हाथों से अपने अपने बड़े भाई के दोनों चरणोंको पकड़लिया ३२ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर उसको उठाके अच्छीरीतिसे मिलकर मस्तकको सूंघ फिर उससे कहनेलगे ३३ हे महाबाहो अर्जुन मेरी तैंने बड़ी प्रतिष्ठाकरी है तुम फिर महत्त्वता और अबिनाशी विजय को प्राप्त करोगे ३४ अर्जुन बोले कि अब मैं उसपापी और बलसे अहंकारी कर्ण को युद्ध में पाकर बाणों से उसके भाई बेटों समेत मारूंगा ३५ जिसके खिंचेहुये धनुषके बाणों से तुम महापीड़ा-मान हुये हो वह कर्ण अब बहुत शीघ्रही उसके फलको पावेगा ३६ हे राजा अब मैं कर्णको मारकरही आपको सेवन करने के निमित्त देखूंगा मैं उच्चस्वर से यह तुमसे सत्य २ कहताहूं ३७ हे पृथ्वी के स्वामी अब मैं कर्णको मारेबिना युद्धभूमि से नहीं लौटूंगा सत्यतासे आपके दोनों चरणोंको छूताहूं ३८ संजय बोले कि तबतो प्रसन्न चित्त युधिष्ठिर ने इसप्रकारकी बातें करनेवाले अर्जुन से बहुत बड़ा यह बचन कहा कि तेरी अबिनाशी कीर्त्ति वा मनोभीष्ट जीवन वा विजय वा सदैव पराक्रम वा शत्रुओंका नाश ३९ और वृद्धि को देवता लोग कृपा करकेदें और जैसा मैं चाहताहूं वैसाही तेरा अभीष्ट सिद्धहोय शीघ्रजाओ और युद्धमें कर्णको ऐसे मारो जैसे कि इन्द्रने अपनी वृद्धिके निमित्त वृत्रासुर को माराथा ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणियुधिष्ठिरवरप्रदानोद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि कर्ण के मारने को उपस्थित अर्ज्जुन अत्यन्त प्रसन्न चित्त होकर धर्मराजको प्रसन्न करके गोविन्दजी से बोला १ कि मेरारथ फिर तैयार करिये और उत्तम घोड़ोंको पूजो और उसी मेरे कल्याणरूपी रथपर सब अस्

शस्त्रोंकोधरो २ अश्वसवारों से शिक्षित और पृथ्वी के लोटनेसे गत परिश्रम और रथके सब सामानों से अलंकृत शीघ्रता युक्त चंचल घोड़े वहुत शीघ्र सन्मुखलायेजायँ ३ हे गोविन्दजी कर्ण के मारने की इच्छा से अव शीघ्रचलो हे महाराज महात्मा अर्जुन के इस वचनको सुनकर ४ श्रीकृष्णजी दारुक सारथी से बोले कि वह सबकरो जिसप्रकार इस भरतर्षभ और सव धनुषधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन ने कहाहै ५ हे राजाओं में श्रेष्ठ इसके पीछे श्रीकृष्णजीकी आज्ञापातेही उस दारुकने शत्रुसंतापी व्याघ्रचर्म से मढ़ेहुये उत्तम रथको जोड़ा और ६ रथ को तैयार करके महात्मा पांडव अर्जुन के आगे निवेदन किया कि रथ तैयारहै तब महात्मा दारुक के तैयार किये हुये रथको देखकर ७ धर्मराज से आज्ञाले ब्राह्मणों से स्वस्ति वाचन कराके वड़े मंगल और स्वस्त्ययन के साथ रथपर सवार हुआ उस समय वड़ेज्ञानी धर्मराज राजायुधिष्ठिर ने उसको आशीर्वाद दिया इसके पीछे वह कर्ण के रथके पीछेचला ८ । ६ हे भरतवंशी सव जीवों ने उस वड़े धनुषधारी अर्जुन को आता देखकर महात्मा पांडव के हाथसे कर्णको मराहुआ माना १० हे राजा सवदिशा चारोंओर से निर्मलहुई उस समय चाष शतपत्र और क्रौंचनाम पक्षियों ने ११ । १२ पांडुनन्दन अर्जुनको दक्षिणकिया हे राजा मंगल वा कल्याणरूप और प्रसन्न रूप अर्जुन को युद्ध में प्रेरणा करते वहुत से नर पक्षी भी शब्द करनेलगे १३ और हे राजा भयानकरूप कंक गिद्ध वक बाज और काक यह सव मांसखाने के लिये उसके आगे २ चले उन्होंने अर्जुन के मंगलकारी शकुनों को इसरीतिसे वर्णन किया १४ कि शत्रुओं की सेना का और कर्णको नाश होगा इसके पीछे यात्रा करनेवाले अर्जुन को वड़ा खेद उत्पन्न हुआ १५ और वड़ी चिन्ता उत्पन्नहुई कि यह कैसेहोगा इसके अनन्तर मधुसूदनजी गांडीव धनुषधारी से बोले १६ हे गांडीव धनुषधारी युद्धमें जो२ तेरे धनुषसे विजयकियेगये उनका विजयकरनेवाला दूसरामनुष्य इसपृथ्वी पर नहींहै १७ इन्द्रके समान भी अनेक पराक्रमी देखे उन शूरोंने भी तुझको पाकर युद्धमें परमगतिको प्राप्तकिया १८ इन द्रोणाचार्य्य भीष्म, भगदत्त, विन्द, अनुविन्द, अवन्तिदेश के राजालोग, कांवोज, सुदक्षण १६ वड़ेपराक्रमी श्रुतायुश और अश्रुतायुश के सन्मुख जाकर जो तेरे पास दिव्य अस्त्र वा हस्तलाघवता वा पराक्रम वा युद्धोंमें मोहन होता वा विज्ञानरूपी नम्रता न होती तो तेरे

सिवाय किस दूसरे की सामर्थ्यथी जो इनके आगे कुशल रहता २०। २१ और बेधचिह्न युक्त योगभी तुझ को प्राप्त है आप गंधर्व और संसार के जड़ चैतन्यों समेत देवताओंको भी मारसक्तेहो हे अर्जुन इस पृथ्वी पर तेरे समान कोई शूर-बीर पुरुष नहीं है और जो कोई क्षत्री युद्ध में दुर्मद बड़े धनुषधारी हैं २२। २३ उनके मध्यमें तेरे समान देवताओं तकमें किसी को नहीं देखताहूं न सुनताहूं ब्रह्माजीने सृष्टिकी उत्पत्ति करके गांडीव धनुषको उत्पन्न कियाहै २४ हे अर्जुन जो कि तुम उस धनुष के द्वारा लड़तेहो इसीकारण से तुम्हारे समान कोई नहीं है हे पांडव मैं उस बात को अवश्य कहूंगा जिसमें तेरा कल्याण होगा २५ हे महाबाहो युद्ध के शोभा देनेवाले कर्ण को तू मत अपमानकर यह महारथी कर्ण पराक्रमी अहंकारी अस्त्रज्ञ २६ कर्मकर्त्ता वा अपूर्व युद्धकर्त्ता होकर देशकाल का जाननेवालाहै यहां अब बहुत कहनेसे क्या लाभहै हे पांडव अब इसका संक्षेप सुनो २७ मैं महारथी कर्णको तेरे समान वा तुझ से अधिक मानताहूं वह तुझसे बड़े उपाय पूर्वक युद्धमें स्थिर होकर मरने के योग्यहै २८ तेज में अग्नि के सदृश बेगमें बायु के समान क्रोध में यमराज की सूरत सिंह के समान दृढ़ शरीर महा पराक्रमी २९ और शरीर की लम्बाई में आठहाथ बड़ी भुजाओं से युक्त वृहद्वक्षस्स्थलवाला बड़ी कठिनता से बिजय होने वाला महा अभिमानी शूर और बड़ा वीरहै अपूर्व दर्शन ३० सब शूरवीरों के समूहों से युक्त मित्रों को निर्भय करनेवाला सदैव पांडवों का शत्रु दुर्य्योधन के मनोरथ सिद्ध करने में तत्पर ३१ तेरे सिवाय इन्द्र समेत सब देवताओं से भी मारने के अयोग्य है यह मेरा मत है कि तुम उस सूतपुत्र को मारो ३२ सावधान रुधिर मांस के धारण करनेवाले मनुष्यों समेत युद्धाभिलाषी सब देवताओं से भी वह महारथी कर्ण विजय करने के योग्य नहीं है ३३ उस दुरात्मा पापसे अहंकारी निर्द्दयी सदैव पांडवों से दुष्टबुद्धि रखनेवाले और पाण्डवों से निरर्थक विरोध करनेवाले कर्ण को मारकर अब तुम अपने अभीष्ट को सिद्धकरो ३४ अर्थात् अब तुम उस रथियों में श्रेष्ठ अजेय सूतपुत्र को कालके वशमें करो और रथियों में श्रेष्ठ सूत पुत्रको मारकर धर्मराज में प्रीतिकरो ३५ हे अर्जुन देवता और असुरोंसे अजेय तेरे पराक्रम को मैं ठीक २ जानताहूं यह दुरात्मा सूतपुत्र अहंकारसे सदैव पांडवों का अपमान करता चला आताहै ३६ और जिसके द्वारा पापी दुर्य्योधन

अपने को वीर मानता है हे अर्जुन अब उस पापों के मूल रूप सूतपुत्र को मारो ३७ हे अर्जुन खड्गके समान जिह्वा धनुष के समान मुख और बाणरूप डाढ़ रखने वाले उस वेगवान् अहङ्कारी पुरुषोत्तम कर्ण को मारो ३८ मैं तुझ को आज्ञादेता हूं कि युद्धमें उस शूरवीर कर्णको ऐसे मारो जिस प्रकार केसरी सिंह हाथी को मारताहै ३९ दुर्योधन जिसके पराक्रम से तेरे पराक्रम को अपमान करताहै हे अर्जुन उस कवच और कुण्डल के उखाड़ देनेवाले कर्ण को अब युद्ध में मारो ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णवधार्थअर्जुनगमनेत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

चौहत्तरवां अध्याय ॥

हे भरतबंशी इसके पीछे बड़े बुद्धिमान् केशवजी कर्ण के मारने में संकल्प करके यात्रा करनेवाले अर्जुन से फिर बोले १ हे भरतबंशी अब मनुष्य घोड़हाथी आदिके घोर नाशके होने को सत्रह दिन व्यतीत हुये २ हे राजा शत्रुओं के समूहों से आपके शूरवीरोंकी सेना बड़ीहोकर परस्पर युद्ध करतीहुई कुछ बाकी रहगई है ३ हे अर्जुन निश्चय करके कौरव लोग बहुत हाथी घोड़ेवाले होकर तुझ शत्रुको पाकर सेनाके मुखपर नाशवान् होगये ४ वह राजालोग और संजय इकट्ठे हैं और सब पांडव लोगभी तुझ अजेयको पाकर वर्त्तमानहैं ५ तुझ से रक्षित शत्रुओं के मारनेवाले पांचाल पांडव मत्स्य और कारुष्य देशियों ने चंदेरी देशियों समेत शत्रुओं के समूहों का नाशकिया ६ हे तात युद्धमें तुझसे रक्षित महारथी पांडवों के सिवाय कौन मनुष्य युद्धमें कौरवों के विजय करने को समर्थ होसक्ताहै ७ तुम युद्धमें देवता असुर और मनुष्यों समेत युद्धमें तत्पर होकर तीनोंलोकों के विजय करनेको समर्थहो फिर कौरवी सेनाके विजय करने को क्यों न होगे ८ हे पुरुषोत्तम तेरे बिना दूसरा कौन मनुष्य इन्द्र के समान बल पराक्रमी भी राजाभगदत्तके विजय करनेको समर्थ है ९ हे निष्पाप अर्जुन इसीप्रकार सब राजालोग भी तुझसे रक्षित इस बड़ी सेनाके देखने को भी समर्थ नहीं हैं १० हे अर्जुन इसीप्रकार युद्धमें तुझसे सदैव रक्षित धृष्टद्युम्न और शिखण्डीके हाथोंसे द्रोणाचार्य्य और भीष्म मारेगये ११ हे अर्जुन कौन मनुष्य युद्ध में इन्द्रके समान पराक्रमी और भरतवंशियों के महारथी भीष्म और द्रोणाचार्य्य

को लड़ाई में विजय करने को समर्थ था १२ हे पुरुषोत्तम इसलोक में तेरे सि-
वाय कौन पुरुष युद्ध में मुख न मोड़नेवाले महाअस्त्रज्ञ अक्षौहिणी सेनाओं के
स्वामी अतिउग्र परस्पर मिलेहुये युद्ध में दुर्मद इन भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य
सोमदत्त अश्वत्थामा कृतबर्म्मा जयद्रथ शल्य और राजा दुर्य्योधन के विजय
करने को समर्थ है १३।१५ बहुत से सेनाओं के समूह तो नाशहुये घोड़े रथ वा
हाथी पराजित और मारेगये हे भरतवंशी क्रोधयुक्त नानादेशों के क्षत्री और
गोपालदास,मीयान,वशाती पूर्व्वीय राजालोग,वाढ़धान, अभिमानी भोजबंशी
और ब्राह्मण क्षत्रियों की बड़ी सेना घोड़े हाथी और नानादेशों के वासी यह
सब महा उग्ररूप तुमको और भीमसेन को पाकर नाशहोगये १६।१८ महाउग्र
भयकारी कर्म करनेवाले तुषार, यवन, खश, दार्व, अभिसार, दरद बड़ेसमर्थ मोठर
तंगण, आंध्रक, पुलिन्द और उग्र पराक्रमी किरात म्लेच्छ, पहाड़ी, सागर और
अनूप देशके रहनेवाले १६।२० यह सब वेगवान् युद्धमें कुशल पराक्रमी हाथमें
दंड रखनेवाले कौरवों समेत दुर्य्योधन के साथ क्रोधयुक्त २१ युद्धमें तेरे सिवाय
दूसरेसे विजय करने के योग्यनहीं है शत्रुओंके तपानेवाले जिसके तुम रक्षक न हो
वैसा कौनसा मनुष्य दुर्य्योधनकी उस बड़ी अलंकृत सेनाको देखकर सन्मुख हो
सक्ताहै २२ हे समर्थ वह समुद्रके समान उठीहुई धूलसेयुक्त सेना २३ तुझसे रक्षित
क्रोधयुक्त पाण्डवों से चीरकर मारीगई अब सात दिन हुये कि मगधदेशियों का
राजा बड़ापराक्रमी जयत्सेन २४ युद्धमें अभिमन्युके हाथसे माराग़या उसकेपीछे
भीमसेन ने भयभीत कर्म करनेवाले दश हजार हाथियों को अपनी गदासेही
मारडाला २५ और जो कुछ राजाके घोड़े आदि थे उनको भी मारडाला इसके
पीछे अपने पराक्रम सेही अन्य सैकड़ों हाथी और रथियों को मारा २६ हे पाण्डव
अर्जुन इसरीति से उस बड़े भयकारी युद्धके वर्त्तमान होने पर कौरव लोग भी-
मसेन और तुझको पाकर २७ घोड़े रथ और हाथियों समेत यहां से मर मरकर
यमपुरको गये हे अर्जुन इसी प्रकार वहां पांडव के हाथसे सेना मुखके मरनेपर
२८ परम अस्त्रज्ञने बाणों से ढकक्कर सबका नाशकरदिया उसके धनुषसे निकले
हुये शत्रुओं के शरीरों के चीरनेवाले २६। ३० सुनहरी पुंखयुक्त सीधेजानेवाले
बाणों से आकाश व्याप्त होगया वह भीमसेन एक २ घूंसे से हजारों रथियोंको
मारताथा ३१ उसने बड़े पराक्रमी इकट्ठेहुये एकलाख मनुष्य और हाथियों को

मारकर दशवीं गति से उन हाथी घोड़े और रथों को पाकर मारा ३२ दोषों से पूर्ण नवगतियों को त्यागकरते उसने युद्धमें बाणोंको छोड़ा और आपकी सेना को मारते हुये भीष्मजी ने दशदिन तक ३३। ३४ रथके आसन खाली करके घोड़े वा हाथियों को मारा इसने युद्ध में रुद्र और विष्णु के समान अपने रूप को दिखाकर और पांडवों की सेनाको आधीन करके मारा फिर चंदेरी पांचाल और कैकय देशीय राजाओं को मारतेहुये ३५ विना नौका के नदीमें डूबनेवाले अभागे दुर्य्योधन के निकालने के इच्छावान् भीष्म ने रथ हाथी और घोड़ों से व्याकुल पांडवीसेना को भस्मकिया ३६ युद्ध में उत्तम शस्त्र रखनेवाले हजारों कोटि पदाती वा सृंजय वा अन्य राजालोग चलते हुये सूर्य्य के समान घूमने वाले युद्धमें विजय से शोभायमान जिस भीष्मजीके देखने को भी समर्थ नहीं हुये ३७। ३८ ऐसा प्रतापी भीष्म भी बड़े उपाय से पांडवों के सन्मुखगया वहां अकेले भीष्मने पांडव और सृंजियों को भगाकर ३९ सब वीरों में प्रतिष्ठाकोपाया फिर तुझसे रक्षित शिखण्डी ने उस महाव्रतनाम भीष्म को पाकर ४० गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से मारा वह भीष्मपितामह तुझ पुरुषोत्तम को पाकर गिराहुआ शर शय्यापर ऐसे सोताहै जैसे कि इन्द्रको पाकर वृत्रासुर सोयाथा उग्ररूप भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने पांचदिन तक शत्रुओं की सेनाको छिन्नभिन्न करके ४१। ४२ अ भेद्यव्यूह को अलंकृत करके बड़े बड़े महारथियों को गिराते हुये युद्धमें जयद्र की रक्षा करके उस उग्ररूप ने यमराज के समान रूप धारण करके रात्रिके यु में प्रजाका नाशकर दिया फिर शूरवीरों को बाणोंसे मारकर ४३। ४४ धृष्टद्युम को पाकर परमगति को पाया अब जो तुम कर्णआदि रथियों को ४५ न हटा तो द्रोणाचार्य्य युद्धमें न मारेजाते तुमने दुर्य्योधन की सब सेना रोकी उसक रणसे द्रोणाचार्य्य युद्धमें धृष्टद्युम्नके हाथसे मारेगये हे अर्जुन तेरे सिवाय दूस कौन सा क्षत्री ऐसे कर्मको करसक्ताहै ४६। ४७ जैसा कि तुमने जयद्रथके मार में कियाथा अर्थात् बड़ीभारी सेना को रोककर बड़े बड़े शूरवीरों को मारके ४ राजा जयद्रथ को तैंने अपने तेज और बल से मारा सब राजालोग जयद्रथ मारने को आश्चर्य्य और अद्भुत मानते हैं ४९ हे अर्ज्जुन तुम महारथी इससे उसका मरना आश्चर्य्य युक्त नहीं है हे भरतवंशी मैं तुझको युद्ध में प कर एकही दिन में क्षत्रियों के समूहों का नाशहोना मानता हूं ५० यह मे

पूर्ण बिश्वास है सो हे अर्ज्जुन यह दुर्य्योधन की घोर सेना युद्ध में ५१ सब शूरबीरों समेत मृतक रूपहै जब कि भीष्म और द्रोणाचार्य्य सरीखे मारेगये वह भरतबंशियोंकी सेना जिसके अत्यन्त शूरवीर मारेगये और घोड़े रथ और हाथी भी मारेगये ५२ अब ऐसी दिखाई देती है जैसे कि सूर्य्य चन्द्रमा और नक्षत्रों से रहित आकाश होताहै हे भयानक पराक्रमी अर्ज्जुन यह सेना युद्ध में ऐसे नष्टहोगई ५३ जैसे कि पूर्व्व समयमें इन्द्रके पराक्रमसे असुरों की सेना नाश होगई थी इससेनामें मरनेसे बाकी बचेहुये पांचमहारथी हैं ५४ अश्वत्थामा कृत-बर्मा, कर्ण, शल्य, कृपाचार्य्य हे नरोत्तम अब तुम इनपांचों महारथियोंको मा-रकर ५५ शत्रुओं से रहित जानकर द्वीप, नगर, आकाश तल, पाताल, पर्व्वत और महाबनों समेत पृथ्वीको अपनी करके राजा को सुपुर्द करो ५६ अब अ-संख्यलक्ष्मी और पराक्रमका रखनेवाला युधिष्ठिर इसपृथ्वीको पावे जैसे कि पूर्व्व समयमें विष्णुजी ने दैत्य और दानवों को मारकर पृथ्वी को इन्द्रके अर्थ दीथी उसीप्रकार तुमभी इनसब कौरवादि क्षत्रियोंको मारकर राजाकोदो ५७ अब तेरे हाथसे शत्रुओं को मारने से पांचालदेशी ऐसे प्रसन्नहोयँ जैसे कि विष्णुजी के हाथसे दैत्योंके मरनेपर देवतालोग प्रसन्नहुये थे ५८ अथवा जो गुरूकी महत्त्व-तासे द्विपादों में श्रेष्ठ गुरू द्रोणाचार्य्य के तुझ मारनेवालेकी दया और करुणा अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य परहै ५९ वह अत्यन्त पूजित भाई माताके बांध-वोंको मानताहुआ कृतबर्माको पाकर यमलोकमें नहीं पहुँचावेगा ६० और हे कमलनयन अब जो तुम दया करके माता के भाई मद्रदेशियों के राजा शल्य को मारना नहीं चाहतेहो ६१ तो हे नरोत्तम अब पाण्डवों के ऊपर पाप बुद्धि रखनेवाले अत्यन्तनीच इस कर्णको तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे मारो ६२ यहतेरा श्रेष्ठ और शुभकर्महै इसमें किसीप्रकारका तुझको दोष नहीं होसक्ताहै और हम भी ठीक २ जानते हैं कि इसमें कोई दोप नहीं है ६३ हे निष्पाप रात्रिके समय पुत्रोंसमेत तेरी माताके शोककरनेमें और द्यूतके निमित्त दुर्य्योधनने तुमलोगों को जो २ कष्टदिये ६४ इनसब बातोंका मूलरूप यह दुष्टात्मा कर्णहीहै दुर्य्योधन सदैवसेही कर्ण से अपनी रक्षा मानताहै ६५ और इसी कर्णके कारणसे उसने मेरेभी पकड़नेका विचारकिया हे बड़ाई देनेवाले इसराजा दुर्य्योधनको बुद्धिसे दृढ़विश्वासहै कि ६६ कर्णही युद्धमें निस्सन्देह सबपाण्डवोंको बिजय करेगा हे

अर्जुन तेरे पराक्रमके जाननेवाले दुर्य्योधनने कर्ण का आश्रय लेकर तुमलोगोंसे शत्रुता अंगीकारकरी वह कर्ण सदैव यही कहता है कि मैं सन्मुख आने वाले पाण्डवों को ६७। ६८ और महारथी यादव वासुदेवको विजयकरूंगा वह अत्यन्त दुष्टात्मा दुर्य्योधनको उत्साह दिलादिलाकर यहकहा करताहै ६९ वह कर्ण जो युद्धमें गर्जरहाहै हे भरतवंशी अब उसको मारो निश्चयकरके दुर्य्योधन ने जो २ तुम्हारे साथ पाप किये ७० उनसबमें यही दुष्टात्मा कर्णही कारणथा और जो उस दुर्य्योधनके रखतेहुये उसके निर्द्दयी इन छः महारथियों ने ७१ अधर्म युद्ध करके अभिमन्युको मारडाला द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा इनतीनोंने नरोत्तम वीरोंके पीड़ामान करनेवाले हाथियों को मनुष्यों से रहित करनेवाले और महारथियोंको रथसे बिरथ करनेवाले घोड़ों को उनके सवारों से रहित करनेवाले पत्तियों को शस्त्र और जीवन से रहित करनेवाले ७२ कौरव वृष्णियों के यशके बढ़ानेवाले सेनाओं के छिन्नभिन्न करनेवाले महारथियों को पीड़ामान करनेवाले ७३। ७४ मनुष्य घोड़े और हाथियों को यमलोकमें पहुँचानेवाले बाणोंसे सेनाको भस्मकरनेवाले आतेहुये अभिमन्युको जो मारा ७५ वह दुःख मेरे अंगों को भस्म कियेडालता है हे मित्र मैं तेरी सत्यता की शपथ खाताहूं हे प्रभु जो दुष्टात्मा कर्ण ने वहां भी शत्रुता करी ७६ वह कर्ण युद्ध में अभिमन्युके आगे सन्मुखता करने को असमर्थ अभिमन्यु के बाणोंसे छिदा हुआ अचेत रुधिरमें डूबा शरीर ७७ क्रोधसे प्रकाशित श्वास लेता मुख फिरा शायकों से पीड़ामान भागने को चाहता जीवनसे निराश ७८ अत्यन्त व्याकुल युद्धमें प्रहारों से थकाहुआ नियतहुआ तदनन्तर समयके अनुसार युद्धमें द्रोणाचार्य्य के ७९ निर्द्दय वचनको सुनकर फिर कर्ण ने धनुषको काटा इसके पीछे उसके हाथसे टूटेशस्त्रवाले अभिमन्युको छली बुद्धिवाले पांच महारथियों ने ८० युद्धमें बाणोंकी वर्षा से घायलकिया उसवीरके मरनेपर सब लोगों में दुःख प्रवृत्तहुआ अर्थात् सबको तो बड़ा खेदहुआ परन्तु वह दुष्टात्मा कर्ण और दुर्योधन बहुत हँसे कर्ण ने निर्द्दय मनुष्यके समान पाण्डव और कौरवों के सन्मुख सभाके मध्यमें द्रौपदी से जो यह कठोर शब्द कहे कि हे कृष्णा पाण्डव नाशमान होकर सनातन नरक को गये ८१। ८२। ८३ हे पृथुश्रोणि मृदुभाषिणी द्रौपदी तुम दूसरे पतिको बरो अथवा दासीरूप होकर दुर्य्योधन के महलमें ८४

प्रवेशकरो तेरे पति नहीं हैं हे भरतबंशी उससमय महादुर्बुद्धी पापात्मा कर्ण ने तेरे सुनतेहुये धर्मराजसे यहपाप बचन कहाहै अब पापी के उस बचन को सुवर्ण से जटित दश ८५। ८६ महातीक्ष्ण मृत्युकारी तेरे चलायेहुये बाण शान्त करो उस दुष्टात्माने जो २ और पाप तुझपर किये अब उसके कियेहुये पाप और तेरे चलायेहुये बाण उसके जीवन को नाशकरो अब वह दुष्टात्मा कर्ण गांडीव से निकलेहुये घोर बाणों को अपने अंगों से स्पर्श करेगा और द्रोणाचार्य्य और भीष्मजी के बचनों को स्मरणकरते सुनहरी पुंख शत्रुओं के मारनेवाले बिजली से प्रकाशित ८७। ८८। ८९ तेरे चलायेहुये बाण उसके कवच को काटकर रुधिरको पानकरेंगे अब तेरी भुजाओं से छोड़ेहुये महाउग्र वेगवान् बाण उसके बड़े कवचको काटकर ९० कर्णको यमलोकमें पहुंचावेंगे अब हाहाकार करनेवाले महादुःखी तेरे बाणों से पीड़ित होकर राजा लोग रथसे गिरतेहुये कर्णको देखें और दुःखीहुये बांधव रुधिरमें भरे पृथ्वीपर पड़े सोतेहुये ९१। ९२ टूटे शस्त्रवाले कर्णको देखो तेरे भल्लसे घायल हाथीकी कक्षाका चिह्न रखनेवाली इसके रथकी बड़ी लंबी ध्वजा महा कंपित होकर पृथ्वीपर गिरे ९३ और भयभीत शल्य तेरे असंख्यों बाणों से टूटा सुवर्ण से जटित मृतकरथीवाले रथको छोड़कर भागो ९४ इसके पीछे तेरा शत्रु दुर्योधन तेरे हाथसे कर्ण को मराहुआ देखकर अपने जीवन और पृथ्वी के राज्य से निराश होजाय ९५ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ कर्ण के तीक्ष्णबाणों से घायल पांडवों की रक्षा चाहनेवाले यह पांचालदेशी जाते हैं ९६ सब पांचाल और द्रौपदी के पुत्र, धृष्टद्युम्न, शिखंडी धृष्टद्युम्न के पुत्र, शतानीक नकुल के पुत्र ९७ नकुल, सहदेव, दुर्मुख, जनमेजय, सुधर्मा और सात्यकी को कर्ण के स्वाधीनही वर्त्तमान जानो ९८ हे शत्रुओं के तपानेवाले युद्धमें कर्ण के हाथसे घायल तेरे बांधव पांचालों के यह घोर शब्द सुने जाते हैं ९९ बड़े धनुषधारी पांचालदेशी किसी दशामें भी भयभीत होकर पीठ नहीं मोड़ते और बड़े युद्धमें मृत्युको भी नहीं गिनते हैं १०० जिस अकेले ने बाणों के समूहों से पांडवी सेनाको ढकदिया ऐसे भीष्मजी को भी पाकर वह पांचाल देशी नहीं मुड़े १०१ हे शत्रुओं के विजय करनेवाले इसीप्रकार युद्ध में सदैव अग्निके समान प्रकाशित अस्त्ररूपी अग्नि रखनेवाले सब धनुषधारियों के गुरू युद्ध में अपने तेजसेही भस्म करनेवाले अजेय द्रोणाचार्य्य को १०२ और सब

शत्रुओं के विजय करने में प्रवृत्तहुये पांचालदेशी कभी कर्ण से भयभीत और मुख मोड़नेवाले नहीं हुये हैं १०३ उन शूरवीर पांचालों के प्राणों को कर्ण ने बाणों के द्वारा ऐसे हरलिया जैसे कि पतंगों के प्राणोंको अग्नि हरलेताहै १०४ युद्धमें इसरीति से सन्मुख अपने मित्रके निमित्त जीवन का त्यागनेवाला कर्ण उन हजारों शूरवीर पांचालों को नाश कररहाहै १०५ सो तुम हे भरतवंशी नौकारूप होकर उस कर्ण रूपी नौका रहित अथाह समुद्र में डूबतेहुये बड़े धनुपधारी पांचालों की रक्षा करने के योग्यहो १०६ कर्ण ने जो महाघोर अस्त्र महात्मा भार्गव परशुरामजी से लियाहै उसका रूप वृद्धियुक्तहै १०७ वह सबसेनाओं का तपानेवाला घोररूप बड़ा भयानक बड़ी सेनाको ढककर अपने तेजसे प्रकाशमानहै १०८ कर्ण के धनुषसे निकलेहुये यह बाण युद्धमें घूमते हैं और भ्रमरों के समूहों के समान उन बाणों ने आपके पुत्रों को तपायाहै १०९ हे भरतवंशी यह पाञ्चाल युद्ध में अज्ञानी मनुष्यों से कष्ट से हटाने के योग्य कर्ण के अस्त्र को पाकर सब दिशाओंको भागते हैं ११० हे अर्ज्जुन कठिन क्रोध में भरा चारों ओरको राजा और सृञ्जियों से घिराहुआ यह भीमसेन कर्णसे युद्धकर्त्ताहुआ उसके तीक्ष्णधारवाले बाणों से पीड़ामान होता है १११ हे भरतबंशी विचार न किया हुआ कर्ण पाण्डव सृञ्जी और पाञ्चालों को ऐसे माररहाहै जैसे कि उत्पन्नहुआ रोग शरीरको मारडालता है ११२ मैं युधिष्ठिर की सेना भरे में तेरे सिवाय किसी दूसरे शूरबीर को नहीं देखता हूं जो कर्णके सन्मुख होकर जीता हुआ अपने घरको आवे ११३ हे नरोत्तम अर्ज्जुन अब तुम अपने तीक्ष्णबाणों से उसको मारकर अपनी प्रतिज्ञा के समान कर्मको करके कीर्तिको पावो ११४ हे शूरवीरों में श्रेष्ठ तुमहीं युद्धमें कर्णसमेत कौरवोंके विजय करनेको समर्थ हो दूसरा कोई नहीं है यह तुमसे मैं सत्यसत्य कहताहूं ११५ हे नरोत्तम अर्जुन उस बड़े कर्म को करके और उस महारथी कर्णको मारकर सफलअस्त्रयुक्तहोकर प्रसन्नहो ११६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअर्ज्जुनउपदेशेचतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

पचहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले हे भरतबंशी केशवजी के वचन सुनकर वह अर्ज्जुन एकक्षण मात्रमें ही शोकसे रहित होकर प्रसन्न हुआ १ इसके पीछे प्रत्यंचा को चढ़ाकर

गाण्डीव धनुष को टंकारा और कर्ण के मारने में चित्तको लगाकर केशवजी से बोला २ हे गोविन्द जी तुझ नाथके द्वारा मेरी अवश्य विजय होगी अब सब भूत भविष्य वर्त्तमान के उत्पन्न होनेवाले सबजीव मुझपर प्रसन्न होजावो हे कृष्णजी आपके संगहोकर मैं सन्मुख आनेवाले तीनों लोकोंको भी परलोक में पहुंचा सक्ता हूं फिर इस बड़े युद्धमें कर्णको क्यों नहीं यमपुर पहुंचाऊंगा ३।४ हे जनार्द्दन जी पांचालों की सेनाको भगाहुआ देखताहूं और कर्णको युद्ध में निर्भय के समान देखता हूं ५ हे बार्ष्णेय श्रीकृष्णजी कर्ण के छोड़ेहुये सब प्रकारसे प्रकाशमान भार्गवास्त्र को ऐसे देखता हूं जैसे कि इन्द्र का छोंड़ाहुआ अशनि होता है ६ निश्चय करके यह वह युद्ध है जिसमें मेरे हाथसे मारेहुये कर्ण को सब संसारके लोग तबतक कहेंगे जबतक कि यह पृथ्वी रहेगी ७ हे श्रीकृष्णजी अब गाण्डीव धनुषसे छोड़े हुये मेरे हाथसे प्रेरित नाशकारी विकर्णनाम बाण कर्णको मृत्युके समीप पहुँचावेंगे ८ अब राजा धृतराष्ट्र अपनी बुद्धिकी निन्दाकरेगा और दुर्य्योधनको राज्यके अयोग्य जानेगा हे महाबाहो अब राजाधृतराष्ट्र राज्य, सुख, लक्ष्मी, देश, पुर और पुत्रोंसे पृथक् होगा९।१० हे श्रीकृष्णजी अब कर्णके मरने पर दुर्य्योधन राज्य और जीवनसे निराशहोगा यह आपसे सत्यसत्य कहताहूं ११ अब राजा धृतराष्ट्र मेरे बाणोंसे कर्णको खंड खण्डहुआ देखकर संधि सम्बन्धी आपके बचनों को स्मरण करेगा १२ हे श्री कृष्णजी अब यह बाणों के और गाण्डीव धनुष के दांवघात से मेरे रथको मण्डलाकार जानो १३ हे गोविन्दजी अब मैं तीक्ष्ण बाणों से कर्णको मारकर राजा युधिष्ठिरके कठिन जागरणको दूरकरूंगा १४ अब मेरे हाथसे कर्णकेमरने पर राजा युधिष्ठिर प्रसन्न चित्त होकर बहुत कालतक आनन्दों को पावेगा १५ हे केशवजी अब मैं ऐसे अजेय और अनुपम बाणोंको छोड़ूंगा जोकि कर्णको जीवन से नष्टकरके गिरावेंगे १६ निश्चय करके जिस दुरात्माका यह व्रत मेरे मारने में है कि जबतक अर्जुनको न मारलूंगा तबतक अपने चरणोंको भी न धोऊंगा १७ हे मधुसूदनजी उस पापी के व्रतको मिथ्या करके गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे उसको रथसे गिराऊंगा १८ जो यह पृथ्वीपर अपने समान दूसरेको नहीं मानताहै इसीसे इस सूतपुत्रके रुधिरको पृथ्वी पानकरेगी १९ हे कृष्णा तू विना पतिकी है इस प्रकारसे अपनी प्रशंसा करते हुये कर्णने जो धृतराष्ट्र के मत से

अपने बड़े भाईको दूंगा ४० अथवा हे केशवजी आप अर्जुनसे रहित पृथ्वीपर घूमोगे हे यदुनाथ अबमैं धनुषधारियोंका ४१ वा कौरवोंके क्रोध वा गांडीव धनुषके बाणों से अऋणहूंगा अबमैं तेरहवर्ष के इकट्ठे कियेहुये दुःखों को त्यागूंगा ४२ युद्धमेंकर्णको मारकर जैसे कि इन्द्रने संबर दैत्यको माराथा उसीप्रकार हे केशवजी अब युद्धमें कर्ण के मरनेपर युद्धमें अभीष्ट चाहनेवाले मित्र सोमकोंके महारथीकारको प्राप्तहुआ मानो हे माधवजी अबमेरी और सात्यकी की कैसी प्रीति ४३।४४ होगी और कर्णके मरने वा मेरी बिजय होनेपर कैसी प्रसन्नताहोगी मैं युद्धमें उसके महारथी पुत्रसमेत कर्णको मारकर ४५ भीमसेन, नकुल, सहदेव और सात्यकी को प्रसन्नकरूंगा हे माधवजी अबमैं युद्धमें कर्ण को मारकर धृष्टद्युम्न शिखण्डी और पांचालोंकी अऋणताको पाऊंगा ४६।४७ अव युद्धमें क्रोधयुक्त कौरवों से युद्धकरनेवाले और युद्धमें कर्ण के मारनेवाले अर्जुनको देखो इसके पीछे मैं अपनी प्रशंसा आपके सन्मुख करूंगा ४८ इस पृथ्वीपर धनुर्वेद विद्यामें आजमेरे समान कोई नहीं है और पराक्रम में भी मेरे समान कौन होसक्ता है न मेरे समान कोई क्षमावान्है और इसीप्रकार क्रोधमें भी मेरे समान मैंहीं हूं ४९ मैं धनुषधारी अपने भुजाओंके बलसे इकट्ठेहोनेवाले देवता असुर और मनुष्यों आदिजीवोंको पराजय करसक्ताहूं मेरे पराक्रम और पुरुषार्थको अद्वितीयजानो ५० मैं अकेलाही बाणरूप अग्नि रखनेवाले गांडीव धनुषसे सब कौरव और बाह्लीकों को बिजयकरके बड़े हठसे समूहोंसमेत इसरीति से भस्मकरसक्ताहूं जैसे कि हिम ऋतुके अन्त होनेपर सूखे वनको अग्नि भस्म करदेताहै ५१ मेरे हाथसे पृषत्कनाम बाण वर्त्तमानहैं और अब यह धनुषभी बाणों समेत मण्डलाकारहै और मेरेदोनों चरणरथ और ध्वजासे युक्तहैं ऐसीदशामें मुझ युद्धमें वर्त्तमान से युद्धकरके कौन विजयपासक्ता है ५२ वह शत्रुओं का मारनेवाला रक्तनेत्र अद्वितीयवीर अर्जुन ऐसा कहकर भीमसेनके छुटानेका अभिलाषी और कर्णके शरीरसे उसके शिरके काटनेका उत्सुक शीघ्रही युद्धभूमिमेंगया ५३॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअर्जुनयुद्धोत्सुकेपंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

छिहत्तरवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे तात इसकेपीछे युद्धके निमित्त अर्जुनके जानेपर वहां पांडव

कहाहै उसको विषैले सर्पकी समान तीक्ष्णधारवाले मेरे बाण मिथ्याकरके उसके रुधिरको पियेंगे २०।२१ मुझ हस्तलाघवी से छोड़े गाण्डीवधनुषसे निकलेहुये बिजलीके समान प्रकाशमान नाराच कर्णको परमगति देंगे २२ अब वह कर्ण महादुःखी होगा जिसने पांडवोंके निन्दक कौरवोंकी सभामें कुत्सित वचनोंको कहाहै २३ निश्चय करके जो वहां मिथ्यावादी और हास्य करनेवालेथे वह सब लोगभी अब इस सूतपुत्रके मरनेपर शोक युक्त होंगे अपनी प्रशंसा करनेवाले कर्णने धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे जो यह बचन कहाहै कि मैं तुमको पाण्डवों से बचाऊंगा २४।२५ उसके उसबचनको भी मेरे तीक्ष्णधारवालेबाण मिथ्या करेंगे और जिसने यहभी कहाहै कि मैं बेटों समेत सब पांडवोंको मारूंगा २६ उस कर्णको अब मैं सब धनुषधारियोंके देखतेहुयेही मारूंगा बड़ेसाहसी दुरात्मा २७ दुर्बुद्धी दुर्य्योधन ने जिसके पराक्रमका आश्रय लेकर सदैव हमारा अपमान किया हे श्रीकृष्णजी अब कर्णके मरनेपर भयभीत धृतराष्ट्रके पुत्र राजाओं समेत दिशाओंको ऐसे भागो जैसे कि सिंह से भयभीत होकर मृगभागते हैं २८ अब युद्ध में मेरे हाथसे पुत्र मित्र आदि समेत कर्ण के मरनेपर राजा दुर्य्योधन अपनेको शोचो २९ हे श्रीकृष्णजी अब अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्य्योधन कर्णको मृतक देख कर ३० मुझको सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ जानेगा मैं राजाधृतराष्ट्र को पुत्र पौत्र सुहृद मंत्री और सेवकों से निराश करके राज्यपर नियतकरूंगा हे केशव जी अब अनेकप्रकारके मांसभक्षी चक्रांगनामजीवमेरे बाणों से टूटेहुये कर्णके ३१। ३२ अंगों को भक्षण करेंगे हे मधुसूदनजी अबमैं युद्धमें राधाके बेटे कर्णके ३३ शिरको सब धनुषधारियों के देखतेहुयेही काटूंगा और अब तीक्ष्ण बिपाट क्षुरप्रनामबाणों से ३४ दुरात्मा राधेय के गात्रों को रणमें छेदूंगा तबराजा युधिष्ठिर बड़े दुःखको त्यागकरेगा ३५ अर्थात् बड़ावीर युधिष्ठिर बहुत कालसे धारणकिये हुये अपने चित्तके शोकको दूरकरेगा हे केशव अब मैं बांधवोंसमेत राधाकेपुत्र को मारकर ३६ धर्म्मपुत्र राजायुधिष्ठिरको अत्यन्त प्रसन्न करूंगा और कर्ण के दुःखी सब सहायकोंको अग्निके समान प्रकाशमान सर्पके समानबाणों से मार कर सुवर्ण जटित गृध्रपक्षयुक्त सीधेचलनेवाले बाणोंसे ३७। ३८ पृथ्वीको राजाओं समेत तरूंगा और अभिमन्युके सबशत्रुओं के ३९ अंग और शिरोंको अपने तीक्ष्णबाणों से मथन करूंगा और धृतराष्ट्रके पुत्रों से रहित इसपृथ्वी को

सृंजी और मेरे शूरबीरों का महाभयकारी कर्ण के सन्मुख होनेवाला वह युद्ध कैसाहुआ १ संजय बोले कि बड़ेध्वजाधारी बहुमूल्य सामानों से अलंकृत भेरी के शब्दसे ऊंचामुख रखनेवाली सन्मुख आईहुई उनकी सेना ऐसीगर्जी कि जैसे बर्षाऋतु में बादलोंके समूह गर्जनाकरतेहैं बड़े हाथी रूप बादलों से व्याप्त अस्त्ररूपी जलसे पूर्ण बाजे वा रथ की नेमी और क्षुद्रघंटिकाओं से शब्दायमान सुवर्णजटित अस्त्ररूप बिजली रखनेवाला बाण खड्ग नाराच आदि अस्त्रों की धारों से युक्त २। ३ भयानक वेगवान् रुधिर प्रवाहसे बहनेवाला खड्गों से व्याकुल क्षत्रियों का मारनेवाला निर्दय और ऋतु के बिनाही अप्रियवर्षा का करनेवाला प्रजानाशक बादल उत्पन्नहुआ ४ फिर बहुत से मिले हुये रथ उस अकेले रथी को घेरकर मृत्युके पास पहुंचातेथे उसी प्रकार एक उत्तमरथी एक २ अकेले रथी को और कोई २ अकेला रथीभी बहुत से रथियों को मारताथा ५ और किसी रथीने कितनेही सारथी घोड़ोंसमेत रथोंको मृत्युबशकिया और कितनेहीने एक२ हाथी के द्वारा बहुत से रथ और घोड़ों को मृत्यु के मुख में डाला ६ अर्जुन ने बाणों के समूहों से सब शत्रुओं को घोड़े रथ और सारथियों समेत यमपुर को भेजा और सवारों समेत घोड़े और पदातियों के समूहों को भी मारा ७ कृपाचार्य्य और शिखण्डी युद्धमें सन्मुख हुये सात्यकी दुर्य्योधन के सन्मुखगया श्रुत अश्वत्थामा के साथ और युधामन्यु चित्रसेन के साथमें युद्ध करनेलगा ८ फिर रथी संजय और उत्तमौजा कर्ण के पुत्र सुषेण के सन्मुख हुआ और सहदेव राजागांधार के सन्मुख ऐसे दौड़ा जैसे कि क्षुधासे पीड़ित सिंहबड़े बैलकी ओर दौड़ताहै नकुलके पुत्र शतानीकने कर्ण के पुत्रको सात्यकीने वृषसेन को बाणोंके समूहों से घायलकिया और बड़े शूरबीर कर्ण के पुत्रने बाणोंकी अतिवर्षा से पांचाल देशी को घायलकिया ६। १० रथियों में श्रेष्ठ युद्ध करनेवाले माद्रीनन्दन नकुलने कृतबर्मा को मोहितकिया और पांचाल देशियों का राजा सेनापति धृष्टद्युम्नने सब सेना समेत कर्ण को घायल किया हे भरतबंशी दुश्शासन और भरतवंशियोंकी सेना और संसप्तकोंकी वृद्धिमान् सेनाने युद्धमें शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ असह्य बेगवाले भयकारी रूपवाले भीमसेनको मोहितकिया ११।१२ वहां इस प्रकार से घायल शूरबीर उत्तमौजाने बड़े हठकरके कर्ण के पुत्रको मारा और उसका शिर पृथ्वी और आकाशको शब्दायमान करता पृथ्वीपर गिरपड़ा १३

तब पीड़ामानरूप कर्ण ने सुषेण के शिर को पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखकर क्रोधयुक्त हो पृथ्वी पर उसके घोड़े रथ और ध्वजा को अपने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से काटा १४ फिर उस उत्तमौजाने भी अपने प्रकाशित खड्ग से कर्ण को पीड़ामान किया तदनन्तर वह कृपाचार्य्य के पीछे चलनेवालों को मारकर शिखण्डी के रथपर सवारहुआ १५ फिर रथारूढ़ शिखण्डी ने रथसे रहित कृपाचार्य्य को देख कर बाणों से घायल करना नहीं चाहा फिर अश्वत्थामाने कृपाचार्य्य को चारों ओर से आड़में करके ऐसे छुटाया जैसे कि कीच में फँसीहुई गौको निकालते हैं १६ वायु के पुत्र सुवर्णमयी कवचवाले भीमसेन ने आपके पुत्रोंकी सब सेना को अपने तीक्ष्ण बाणों से ऐसे संतप्त किया जैसे कि उष्णऋतु में आकाशमें वर्त्तमान सूर्य्य सबको संतप्त करदेताहै १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेषट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥

सतहत्तरवां अध्याय ॥

संजयबोले कि इसके पीछे कठिन युद्धमें बहुतसे शत्रुओंसे घिराहुआ अकेला भीमसेन उस युद्धमें अपने सारथी से यह बचन बोला कि अब तुम दुर्य्योधनकी सेना में चलो १ हेसारथी तुम घोड़ोंके द्वारा बड़ीशीघ्रतासेचलो मैं इन धृतराष्ट्रके पुत्रोंको यमपुर पहुंचाऊंगा उसकी आज्ञापातेही वह बड़ावेगवान् सारथी आपके पुत्रकी सेनामें भीमसेनको ले पहुँचा २ जिधरसे कि भीमसेनने उस सेनामें जाना चाहा वहां दूसरे कौरव रथ हाथी घोड़े औरपतियोंसमेत उसके सन्मुखगये ३ और चारों ओरसे भीमसेन के बड़े दृढ़रथको अपने बाणों के समूहों से घायल किया तब भीमसेन ने अपने सुनहरी पुंखवाले बाणों से उन सबके छोड़ेहुये आतेहुये बाणों को काटा ४ भीमसेन के बाणों से टूटेहुये वह सुनहरी पुंखवाले बाण दोदो चार २ खण्ड होकर गिरपड़े हे राजा इसके पीछे उत्तम २ राजाओं के मध्य में भीमसेन के हाथसे मारेहुये हाथी घोड़े रथ और शूरलोगों के ५ घोर शब्द ऐसे प्रकटहुये जैसे कि वज्रसे टूटेहुये पर्व्वतों के शब्दहोते हैं भीमसेनके उत्तम बाण जालों से घायलहुये उत्तम२ राजाओंने ६ युद्धमें भीमसेन के ऊपर चारोंओर से ऐसे चढ़ाई करी जैसे कि फूलके निमित्त पक्षीलोग वृक्षपर चढ़ाई करते हैं इसके पीछे आपकी सेनाके सन्मुख जानेपर उस अत्यन्त वेगवान् भीमसेन ने अपने

वेगको ऐसा प्रकट किया ७ जैसे कि प्रलयकालमें सबके मारनेका अभिलाषी दण्डधारी जीवोंका नाशककाल जीवोंको मारताहै तब आपके सब शूरवीर युद्ध में उस वेगवान् के वेगके सहनेको ऐसे समर्थ नहीं हुये ८ जैसे कि समय पर सबके भक्षण करनेवाले कालके वेगको सब सृष्टिके जीव नहीं सहसक्ते हैं हे भरतवंशी इसके पीछे भरतवंशियों की सेना युद्धमें उस महात्मा भीमसेनके हाथ से भस्मीभूत ९ भयभीत और महाघायल होकर चारों दिशाओं में ऐसे विह्वल होकर भागी जैसे कि वायुसे बादलों के समूह पलायमान होते हैं इसके पीछे बुद्धिमान् भीमसेन प्रसन्न होकर सारथी से फिर बोले १० हे सारथी तुम अपने और दूसरों के शूरबीरों के भिड़े और गिरते हुये रथ और ध्वजाओं को जानो मैं युद्ध करताहुआ कुछभी नहीं जानताहूं क्योंकि मैं भ्रांतिसे कहीं अपनी सेनाको ही पृषत्क नाम बाणों से नहीं छांडूं ११ हे विशोक सब ओरसे शत्रुओं को देख कर मेरारथ ध्वजाकी नोकको अधिक कंपायमान करताहै विदित होताहै कि राजा रोगमें ग्रसित होगयाहै जो अबतक अर्जुन नहीं आया हे सूत मैंने बड़े २ कष्टोंको पायाहै हे सारथी यहबड़ा दुःखहै जो धर्मराज मुझको शत्रुओं के मध्यमें छोड़कर चलागया अब मैं उसको वा अर्जुनको जीवतानहीं जानताहूं मुझको यही बड़ाकष्टहै १२ । १३ सो मैं प्रसन्न चित्त उस बड़ी साहसी शत्रुओं की सेनाको नाश करूंगा इससे अब मैं युद्धभूमि में संन्मुख आनेवाली सेनाको मार कर तुझ समेत प्रसन्न होऊंगा १४ हे सूत रथ में शायकों के सब तूणीरोंको देख कर और यह जानकर कहो कि शायक कितने बचे हैं और जो २ शायक बचे हैं वह किसकिस प्रकारके और संख्यामें कितने २ हैं १५ विशोक बोला हे वीर मार्गणनाम बाणोंकी संख्या तो साठ हजारहै और क्षुर वा भल्लोंकी संख्या दश हजारहै और हे वीर पाण्डव नाराचोंकी संख्या दो हजारहै और प्रवर नाम बाणों की संख्या तीन हजारहै १६ इतने शस्त्र वर्त्तमानहैं जिनको छः बैलों से युक्तछकड़ाभी न लेचले हे बुद्धिमान् शस्त्रों को छोड़ो और हजारों गदा खड्ग वा भुजारूपी धन आपके पास वर्त्तमान है १७ प्रास, मुद्गर, शक्ति और तोमर भीहैं तुम शस्त्रोंकी न्यूनता और खर्चहोने का भयमतकरो १८ फिर भीमसेनके चलाये हुये राजाओं के छेदनेवाले बड़े वेगवान् बाणों से गुप्त होनेवाले युद्धमें घोररूप छिपीहुई सूर्य्यवाली संसारकी मृत्युके समान इसयुद्धभूमि को देखो १९

हे सूत अब राजाओं के बालकों तककोभी यह मालूम होगा कि अकेला भीमसेन युद्धमें डूबगया या उसने कौरवोंको विजय किया २० अब सब कौरवलोग मेरे ऊपर चढ़ाईकरो और वृद्धोंसे बालक पर्य्यन्त सब लोग मेरा यश बखानकरो मैं अकेलाही उन सबको मारूंगा अथवा वह सब मिलकर मुझ भीमसेन को पीड़ित करो २१ जो देवता कि मेरे उत्तम कर्म्म के उपदेश करनेवाले हैं वह सब केवल मेरी इतनी साधना करें कि वह शत्रुओं का मारनेवाला अर्ज्जुन मेरे ध्यानसे शीघ्र ऐसे आजाय जैसे कि यज्ञमें बुलायाहुआ इन्द्र आताहै २२ भरतबंशियों की इस सेनाको छिन्न भिन्न देखो यह राजालोग किस हेतुसे भागते हैं मुझे विदित होताहै कि वह बुद्धिमान् नरोत्तम अर्ज्जुन शीघ्रता से इस सेनाको ढकता चलाआता है २३ हे विशोक युद्धमें ध्वजाओं को और भागते हुये हाथी घोड़े और पत्तियों के समूहोंको देखो हे सूत बाण और शक्ती से घायल उन रथियों को और फैलेहुये रथों को देखो २४ यह कौरवी सेना भी महा घायल और वज्र के समान वेगयुक्त सुनहरी परवाले अर्जुन के बाणों से बराबर गुप्त २५ यह रथ घोड़े और हाथी पदातियों के समूहोंको मर्द्दन करतेहुये भागते हैं और सब कौरवलोग भी महा मोहितहुये ऐसे भागे जाते हैं जैसे कि बन दाह से भयभीत होकर हाथी भागते हैं २६ हे विशोक युद्ध में हाहाकार करनेवाले गजराज बड़े २ भयानक शब्दोंको करते हैं २७ विशोक बोला कि हे भीमसेन क्रोधयुद्ध अर्जुन के हाथसे खैंचेहुये गांडीव धनुषके घोर शब्दों को क्या आप नहीं सुनतेहो क्या आपके दोनों कर्णों में बधिरता तो नहीं आगई २८ हे पांडव अब आपके सब मनोरथ वृद्धियुक्तहैं यह वानर हनुमान्जी हाथियों की सेनामें दिखाई देते हैं और धनुष की प्रत्यंचा को ऐसे चेष्टाकरती देखो जैसे कि नीले बादलसे निकलतीहुई प्रकाशमान बिजली चमकती है २९ यह वानर अर्जुनकी ध्वजाके नोकपर चढ़ाहुआ शत्रुओं के समूहोंको भयभीत करताहुआ सब ओर से दीखताहै मैं आप उसको युद्धमें देखकर भयभीत होताहूं ३० और यह अर्जुन का विचित्र मुकुटभी अत्यन्त शोभा दे रहाहै ३१ उसके पार्श्व में महाभयानक श्वेत बादल के रूप महाशब्दायमान देवदत्तनाम शंखको देखो और हे वीर बागडोर हाथमें लिये ३२ उन श्रीकृष्णजी के पार्श्ववर्ती सूर्य्य के समान प्रकाशमान वज्रनाभ चारोंओर छुराओं से जटित बड़े यशके बढ़ानेवाले सदैव या-

दवों से पूजित केशवजी के चक्रको देखो ३३ सीधे वृक्षों के समान बड़े२ हाथियों की यह सूंड़ें क्षुरों से कटीहुई पृथ्वीपर गिरती हैं और उस अर्जुन के हाथके बाणों से सवारों समेत हाथी ऐसे मारेगये जैसे कि वज्रों से पर्व्वत चूर्ण कियेजाते हैं ३४ इसीप्रकार श्रीकृष्णजी के उस महा उत्तम चन्द्रमा के समान वर्णवाले बड़ों के योग्य पांचजन्य शंखको देखो और हृदय में शोभायमान कौस्तुभमणि और बैजयन्तीमालाको भी देखो ३५ निश्चयकरके रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन शत्रुओंकी सेनाको भगाता श्वेत बादलों के रंग श्रीकृष्णजी से युक्त बड़ों के योग्य घोड़ों के द्वारा सन्मुख आताहै ३६ देवराज के समान तेजस्वी आपके छोटे भाई के शायकों से फटेहुये रथ घोड़े और पतियों के समूहों को देखो कि यह ऐसे गिर रहे हैं जैसे कि गरुड़जी के परोंकी वायुसे महावन गिरते हैं ३७ युद्धमें अर्जुन के हाथसे घोड़े और सारथियों समेत मारेहुये इन चारसौ रथोंको देखो और बड़े बाणोंसे मरेहुये इन सातसौ हाथी पदाती अश्वसवार और अनेक रथियों को देखो ३८ यह महाबली अर्जुन कौरवों को मारताहुआ तेरे समक्षमें ऐसे आता है जैसे कि बड़ा चित्रग्रह आताहै तुम अभीष्टसिद्ध हो आपके सब शत्रु मारेगये आपका बल पराक्रम और आयुर्दा चिरकाल पर्य्यन्त वृद्धि को पावे ३९ भीमसेन बोले हे विशोक सारथी मैं अत्यन्त प्रसन्नहोकर तुझको चौदह गांव सौ दासी और बीसरथदेताहूं जो अर्जुनके विषयकी प्रसन्नतावाली बातें मुझसे कहताहै ४०॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिभीमसेनविशोकसंवादेसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि युद्धमें सिंहनाद और रथके शब्दको सुनकर अर्जुन गोविंद जीसे बोला कि हे गोविन्दजी शीघ्रही आप घोड़ों को हांकिये १ गोविन्दजी अर्जुनके वचनको सुनकर कहनेलगे कि अब मैं वहींपर शीघ्र पहुंचाताहूं जहां पर कि भीमसेन नियतहै २ तुषार और शंखके रंगवाले सुवर्ण मोती और मणि जटित जालों से अलंकृत घोड़ों के द्वारा जंभ के मारने के इच्छावान् वज्रधारी क्रोधयुक्त इन्द्र जैसे जाताहै उसीप्रकार जानेवाले उस अर्जुनको ३ रथ घोड़े हाथी पदातियों के समूह और बाणनेमी वा घोड़ों के शब्दों से पृथ्वी और दिशाओंको शब्दायमान करतेहुये क्रोधरूप नरोत्तमने सन्मुख पाया ४ हे श्रेष्ठ उन्होंका और

अर्ज्जुन का युद्ध शरीर और प्राणों के पापोंका हरनेवाला ऐसा हुआ जैसे कि त्रिलोकी के निमित्त महाविजयी विष्णुजी और असुरों का हुआथा ५ अकेले अर्जुनने उन्होंके चलायेहुये सबछोटेबड़े शस्त्रोंकोकाटकर क्षुरअर्द्धचंद्र और तीक्ष्ण भल्लोंसे उनके शिर और भुजाओंको अनेक प्रकारसे काटा ६ चित्र बिचित्रवाले व्यजन ध्वजा घोड़े रथ हाथी और पतियोंके समूहोंको भी काटा इसके पीछे वह अनेक प्रकारके रूपांतरहोकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि वायुके वेगसे बन गिरपड़ते हैं ७ फिर सुनहरी जाल युक्त वैजयन्ती ध्वजाओं समेत शूरवीरों से अलंकृत बड़े हाथी सुनहरी पुंखबाणों से चित्रित प्रकाशमान पर्वतों के समान प्रकाशमानहुये ८ अर्जुन इन्द्रके वज्रकी समान उत्तम बाणों से हाथी घोड़े और रथों को मारकर कर्ण के मारनेकी इच्छासे इसरीति से शीघ्र चला जैसे कि पूर्व समय में राजाबलि के मारने में इन्द्र चलाथा ९ हे शत्रुसंहारी उसके पीछे वह महाबाहु पुरुषोत्तम ऐसे आपहुंचा जैसे कि समुद्र में मगर घुस आताहै १० हे राजा रथ और पतियों से संयुक्त अनेक हाथी घोड़े और सवारों समेत बड़े प्रसन्नचित्त आपके शूरवीर इसपांडवके सन्मुख गये अर्जुन की ओर दौड़नेवाले उनलोगोंके ऐसे बड़े शब्दहुये जैसे कि अपनी उन्मत्ततामें आनेवाले समुद्रके शब्द होते हैं ११ । १२ फिर व्याघ्रों के समान वह सब महारथी युद्ध में अपने प्राणोंकी आशाको त्यागकर उसपुरुषोत्तम के सन्मुख गये वहां अर्जुनने उन बाणोंकी वर्षा करते हुये आनेवाले शूरवीरों की सेनाका ऐसा छिन्न भिन्न कर दिया जैसे कि बड़ा वायु बादलोंको तिर्र बिर्र करदेताहै १३ । १४ उनप्रहार करने वाले बड़े धनुषधारियोंने रथ समूहों समेत उसके सन्मुख जाकर तीक्ष्णबाणों से अर्जुनको घायलकिया १५ इसके पीछे अर्जुनने विशिखों से हजारों रथ हाथी और घोड़ोंको यमलोकमें भेजा १६ युद्धमें अर्जुनके धनुषके निकलेहुये बाणों से घायल वह महारथी भयके उत्पन्नहोनेपर जहां तहां छिपगये १७ अर्जुनने उनके मध्य में उपाय करनेवाले चार सौ बड़े २ महारथी शूरवीरों को बाणों के द्वारा यमलोकमें पहुंचाया १८ नानाप्रकारके रूपवाले युद्धमें तीक्ष्णबाणोंसे घायल होकर वह शूरवीर अर्जुनके सन्मुख जाकर दशोंदिशाओं को भागे १९ युद्धमें से भागनेवाले उनलोगों के ऐसे महाशब्दहुये जैसे कि पर्व्वतको पाकर फटनेवाले बड़े नदीके प्रवाहके शब्दहोते हैं २० हे श्रेष्ठ फिर अर्जुन बाणों से उस

सेनाको खूब छेदकर और भगाकर कर्ण के सन्मुखगया २१ वहां उसशत्रुजेता अर्जुनका ऐसा महाशब्दहुआ जैसे कि पूर्व्वसमयमें सर्पके खानेको आनेवाले गरुड़का शब्दहोताहै २२ अर्जुन के देखने का अभिलापी महावली भीमसेन उस अर्जुनके शब्दको सुनकर वहुत प्रसन्नहुआ २३ हे महाराज उसप्रतापवान् भीमसेनने आतेहुये अर्जुनको सुनकर अपने प्राणोंकी आशा छोड़कर आप की सेनाका मर्द्दनकिया २४ पराक्रम में वायु के समान शीघ्रचलने में वायुकी तीव्रताके सदृश वायुका पुत्र प्रतापी भीमसेन वायु के समान घूमने लगा २५ हे महाराज राजा धृतराष्ट्र उससे घायल और पीड़ितहोकर आपकी सेना ऐसे गिरपड़ी जैसे कि टूटीहुई नौका सागरमें गिरती हैं २६ फिर अपनी हस्तला-घवताको दिखाते सबको यमलोक में पहुंचाते हुये उसभीमसेनने वारम्वार उग्र बाणोंकी वर्षाकरके उससेनाको काटा २७ हे भरतवंशी उसयुद्धमें महावली भी-मसेनके अद्भुत आश्चर्य्यकारी पराक्रमको देखकर सब लोग ऐसे चक्कर मारने लगे जैसे कि प्रलयकालमें कालके पराक्रमको देखकर सब भयभीतहोकर फिरते हैं २८ हे भरतवंशी इसप्रकार भीमसेन के हाथ से पीड़ामान भयानक पराक्रम वाले बड़े २ शूरवीरों को देखकर राजा दुर्य्योधन इसवचनको बोला २९ कि हे महावली शूरवीर लोगो तुम भीमसेन को मारो ३० इसी भीमसेनके मरनेपर मैं सब पांडवोंकी सेनाकोभी मृतकरूपही मानताहूं तब तो सब राजाओंने आपके वेटेकी आज्ञाको अंगीकार किया ३१ और भीमसेन को चारोंओरसे वाणोंकी वर्षासे आच्छादित करदिया हे राजा वहुतसे हाथी घोड़े और बिजयाभिलापी रथारूढ़ मनुष्यों ने ३२ भीमसेनको घेरलिया तब उनशूरोंसे चारोंओर को घिरा हुआ वह पराक्रमी भीमसेन ३३ महाशोभायमानहुआ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ जैसे कि नक्षत्रोंमें शोभायमान चन्द्रमा पूर्णमासीके दिन अपने मण्डलसे युक्त होकर शोभितहोताहै ३४ उसीप्रकार वह दर्शनीय नरोत्तम भीमसेन भी युद्ध में शोभायमानहुआ हेमहाराज जैसा अर्जुनहै वैसाही यहभीहै इसमें भेदनहीं है ३५ क्रोधसे रक्तनेत्र भीमसेनके मारनेके उत्सुक उनसब शूरवीर राजाओंने बाणोंकीवर्षा उसके ऊपरकरी ३६ भीमसेन टेढ़े पर्व्ववाले वाणों से उस बड़ी सेनाको चीरकर युद्धभूमि से ऐसे निकलगया जैसे कि जलकी मछली जलके जालमें से निकल जाती हैं ३७। ३८ हे भरतवंशी भीमसेन ने मुख न मोड़नेवाले दशहजार हाथी

दोलाखदोसौ मनुष्य पांचहजार घोड़े और सौ रथियों को मारकर रुधिरके प्रवाह वाली नदीको जारीकिया ३९ जिसमें रुधिररूप जल रथरूप भ्रमर चक्र हाथीरूप ग्राहों से भयानक मनुष्य रूप मछली घोड़ेरूप नक्र और बालरूप शैवल और साड्वलथे ४० और बहुतरत्नोंकीहरनेवाली सूंड़कटे हाथियोंसे व्याप्त जंघारूपग्राहों से भयानक मज्जारूपी पंक और शिररूप पत्थरों से संयुक्त थी ४१ धनुष, चावक, तूणीर, गदा, परिघ, ध्वजा, छत्ररूपी हंसों से युक्त और उष्णीष अर्थात् पगड़ी रूप झागवाली ४२ हाररूपी कमलों के बन रखनेवाली और पृथ्वी की धूली रूप तरंगों की रखनेवाली युद्धमें उत्तम पुरुषों के चलन रखनेवाले पुरुषोंसे सुगमतासे पार होनेके योग्य भयभीतोंको दुर्गम ४३ शूरवीर रूप ग्राहोंसे पूर्ण युद्ध में पितृलोक की ओरको बहनेवालीथी ऐसी उग्र अद्भुत नदीको इस पुरुषोत्तम भीमसेनने एक क्षणमात्रही में जारी करदिया ४४ जैसे कि अशुद्ध अन्तःकरणवाले पुरुषों से महादुस्तर रूप बैतरणी कहाती है उसीप्रकार इसको भी महाघोर दुःख और भयकी करनेवाली कहा ४५ वह रथियोंमें श्रेष्ठ पाण्डव जिस जिस ओर होकर निकला उस २ ओरके लाखोंही शूरवीरोंको मारा ४६ हे महाराज इसरीति से युद्धमें भीमसेनके कियेहुये कर्मको देखकर दुर्य्योधन शकुनीसे यह वचन बोला ४७ कि हे मामाजी इस बड़े पराक्रमी भीमसेन को युद्धमें तुम बिजयकरो इसके बिजय होजानेपर मैं सब पाण्डवी सेनाको बिजय कियाहुआ ही मानताहूं ४८ हे महाराज इसके अनन्तर भाइयों समेत बड़ेभारी युद्ध करने को उत्सुक प्रतापवान् शकुनी चला ४९ उस वीरने युद्धमें भयानक पराक्रमी भीमसेन को पाकर उसको ऐसे रोका जैसे कि समुद्रकी मर्य्यादा समुद्रको रोक लेती है ५० तीक्ष्णबाणों से रोकाहुआ भीमसेन उसकी ओर को लौटा और शकुनीने उसके हाथ और छातीपर ५१ सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्णधार नाराचोंको चलाया फिर वह कंकपक्षसे जटित घोर बाण महात्मा पांडव भीमसेन के कवच को काटकर ५२ शरीर में घुसगये फिर युद्धमें अत्यन्त घायल उस भीमसेन ने क्रोधयुक्त होकर सुवर्ण जटित बाण को ५३ शकुनी के ऊपर चलाया हे राजा शत्रुसंतापी हस्तलाघवी महाबली शकुनीने उस आतेहुये घोर बाण को सात खण्ड करदिया ५४ हे राजा उस बाण के पृथ्वी में गिरनेपर क्रोधयुक्त हँसतेहुये भीमसेनने भल्लसे शकुनीके धनुषको काटा फिर प्रतापवान् शकुनीने उस धनुष

को डालकर ५५। ५६ वेगसे दूसरे धनुष और सोलह भल्लोंको लेकर उन टेढ़े भल्लों में से दो भल्लों से उसके सारथी को और सात भल्लों से भीमसेन को घायल किया फिर एकसे ध्वजा को और दो भल्लों से छत्रको काटकर ५७। ५८ सौ-बलके पुत्र शकुनी ने चार वाणों से चारों घोड़ों को घायल किया इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापी भीमसेनने युद्धमें सुनहरी दण्डवाली शक्ति को फेंका ५६ भी-मसेन की भुजासे छोड़ी हुई वह सर्पकी जिह्वा के समान चंचल शक्ति युद्ध में शीघ्रही महात्मा शकुनीके ऊपर गिरी ६० इसके पीछे क्रोधरूप शकुनी ने उस सुवर्ण से अलंकृत शक्ति को लेकर ६१ भीमसेन के ऊपरफेंका तव वह महात्मा पाण्डवकी वामभुजा को छेदकर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ी ६२ जैसे कि आका-श से गिरी हुई विजली होती है इसके पीछे धृतराष्ट्र के लड़कों ने चारों ओर से वड़ा शब्द किया ६३ फिर उन वीरों के सिंहनाद को न सहकर वड़े भारी अलंकृत धनुष को लेकर ६४ अपने जीवन की आशा को त्यागकरके युद्ध में एक मुहूर्त्त मेंही शकुनी की सेना को शायकों से ढक दिया ६५ हे राजा फिर शीघ्रता करनेवाले पराक्रमी भीमसेन ने उसको चारों घोड़ों समेत सार-थी को मारकर भल्ल से उसकी ध्वजा को भी काटा ६६ फिर यह नरोत्तम भी शीघ्रताकरके मृतक घोड़ों के रथको त्यागकर धनुषको टंकार क्रोधसे लालनेत्र करके सन्मुख नियत हुआ ६७ और भीमसेन को चारोंओर से वाणों के द्वारा मोहित किया फिर अत्यन्त प्रतापवान् भीमसेन ने वड़ेवेग से उनको निष्फल करके ६८ धनुषको काटकर तीक्ष्णधारवाले वाणोंसे महापीड़ितकिया पराक्रमी शत्रु से अत्यन्त घायलहुआ वह शत्रुविजयी शकुनी ६६ कुछ प्राणशेष होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा हे राजा इसके पीछेसे आपका पुत्र उसको अचेत जानकर ७० भीमसेन के देखतेहुये युद्धभूमि से रथकी सवारीमें वैठाकर हटालेगया फिर उस नरोत्तम के रथपर सवार होने और भीमसेन को वड़ाभय उत्पन्न होनेपर और धनुषधारी भीमसेन के हाथसे शकुनी के विजय होनेपर धृतराष्ट्र के पुत्र मुखमोड़ मोड़कर भयभीत होकर दशों दिशाओं को भागे, ७१। ७२ वड़े भय से पूर्ण अपने मामा का चाहनेवाला आपका पुत्र दुर्य्योधन शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा हटगया। ७३ हे भरतवंशी सेनाके सवलोग राजाको मुखफेरकर हटाहुआ देख कर चारोंओर से द्वैरथियों को छोड़कर भागे ७४ तव भीमसेन उन घायल भय-

भीत मुख मोड़कर भागनेवाले धृतराष्ट्र के पुत्रों को देखकर सैकड़ों बाणों की वर्षा करताहुआ वेगसे उन सबके सन्मुख दौड़ा ७५ हे राजा भीमसेन के हाथ से घायल चारोंओर से मुख मोड़नेवाले वह धृतराष्ट्रकेपुत्र कर्णको पाकर युद्ध में नियत हुये ७६ वह बड़ा पराक्रमी बलवान् कर्ण उनका ऐसे रक्षकहुआ जैसे कि टूटीहुई नौका टापू को पाकर नियत होजाती है ७७ हे पुरुषोत्तम समयके लौट पौट होनेपर जैसी दशावाली पतवार होती है वैसेही आपके शूरवीर लोगभी पुरुषोत्तम कर्णको पाकर उसी दशावाले हुये ७८ हे राजा वह परस्परमें विश्वासयुक्त अत्यन्तप्रसन्न नियतहुये और मृत्युको हथेलीपररखकर युद्धकेनिमित्तगये ७९॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिभीमसेनयुद्धेअष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८॥

उन्नासीवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय तब युद्धमें भीमसेन के हाथसे सेनाके पराजय होने पर दुर्य्योधन ने वा शकुनी ने क्या कहा १ विजय करनेवालों में श्रेष्ठ कर्ण वा मेरे शूरवीर कृपाचार्य्य कृतवर्मा अश्वत्थामा और दुश्शासन इन सबने युद्ध में क्याक्या कहा २ मैं पांडव भीमसेन के पराक्रम को अत्यन्त अद्भुत और अपूर्व्व मानता हूं कि उस अकेलेनेही युद्ध में मेरे सब शूरवीरों से युद्धकिया ३ और राधा के पुत्र शत्रुहन्ता कर्ण ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार सब शूरवीरों समेत कौरवों को कल्याण रक्षास्थिरता वा जीवन की आशा को नियत किया ४ हे सञ्जय बड़े तेजस्वी भीमसेन के हाथ से छिन्नभिन्न होजानेवाली उस सेनाको देखकर ५ अधिरथी कर्ण मेरे पराजित पुत्र और बड़े महारथी राजाओं ने युद्ध में क्या२ किया यह सब मुझसे कहो क्योंकि तुम बड़े चतुर और सावधानहो ६ संजय बोले हे महाराज प्रतापवान् कर्ण ने तीसरे पाशमें भीमसेन के देखतेहुये सब सोमकों को मारा ७ और भीमसेनने भी दुर्य्योधन की बड़ी पराक्रमी सेना को सबके देखतेहुये मारा इसके पीछे कर्ण ने शल्यसे कहा कि मुझको पांचालों के समीप पहुँचाओ ८ अर्थात् बुद्धिमान् पराक्रमी भीमसेन के हाथसे सेनाको भागाहुआ देखकर कर्णने अपने सारथी शल्यसे कहा कि मुझको पांचालों के सन्मुख लेचलो ९ इसके पीछे बड़े बलवान् मद्रदेश के राजा शल्यने बड़े शीघ्रगामी श्वेतघोड़ों को चंदेरी पांचाल और कारुष्य देशियों के सन्मुख पहुँचा

या १० शत्रु की सेना के मर्द्दन करनेवाले शल्यने उस बड़ी सेनामें प्रवेश करके घोड़ों को वहां २ पर चलाया जहां २ उस सेनापति कर्ण ने चाहाथा ११ हे राजा पांडव और पाञ्चाल उस बादल के रूप ब्याघ्रचर्म से मढ़ेहुये रथको देखकर भयभीत हुये १२ इसके अनन्तर उस बड़े युद्ध में उस रथ का शब्द बादल के गर्जने के समान ऐसा प्रकट हुआ जैसे कि फटतेहुये पर्व्वत का शब्द होता है १३ इसके पीछे कर्ण ने कानतक खैंचेहुये धनुष के छोड़े हुये बाण समूहों से पाण्डवी सेनाके हजारों मनुष्यों को मारा १४ पाण्डवों के महारथी बड़े २ धनुषधारियों ने युद्ध में ऐसे कर्म्म करनेवाले उस अजेय कर्ण को घेरलिया १५ शिखण्डी भीमसेन धृष्टद्युम्न नकुल सहदेव द्रौपदी के पुत्र और सात्विकी १६ बाणोंकी वर्षा से कर्ण के मारने के अभिलाषी इन सब शूरवीरों ने जब कर्ण को घेरलिया तब नरोत्तम शूर सात्विकी ने तीक्ष्णधारवाले बीस बाणों से कर्ण को युद्धमें जत्रुस्थान पर घायल किया १७। १८ शिखण्डी ने पच्चीस बाणोंसे धृष्टद्युम्न ने सात बाणोंसे द्रौपदी के पुत्रों ने चौंसठ बाणों से सहदेवने सात बाणों से नकुल ने सौ बाणोंसे उस कर्ण को पीड़ामान किया १६ और बड़े पराक्रमी क्रोधयुक्त भीमसेन ने युद्धमें टेढ़े पर्व्ववाले नब्बे बाणोंसे कर्णको जत्रुआदि अंगोंपर पीड़ित किया २० इसके पीछे बड़े बली कर्णने बहुत हँसकर अपने धनुष को टंकारकर बाणोंको छोड़ा २१ हे भरतर्षभ कर्णने उन सबको पांच २ बाणोंसे व्यथित किया २२ और सात्विकी के धनुष ध्वजाको काटकर नौ बाणोंसे उसको छातीपर घायल किया फिर उस क्रोधयुक्तने तीनसौ बाणों से भीमसेनको पीड़ामान किया २३ और भल्ल से सहदेव की ध्वजाको काट उस शत्रुसंतापी ने तीन बाणोंसे उसके सारथीको मारा २४ और एकपलमात्रमेंही द्रौपदी के पुत्रों को विरथ कर दिया यह बड़ा आश्चर्य्यसा हुआ २५ टेढ़े पर्व्ववाले बाणों से उन सबका मुख मोड़कर पांचाल और चंदेरीदेशके बड़े २ महारथी शूरवीरों को मारा २६ हे राजा युद्धमें घायल उन चंदेरी देशियों ने अकेले कर्णके सन्मुख जाकर उसको बाणोंके समूहों से घायल किया २७ हे महाराज जो अकेले प्रतापी कर्णने युद्धमें बड़ी सामर्थ्य से उपाय करनेवाले धनुषधारी शूर युद्धकर्त्ता पाण्डवों को बाणोंसे रोका वहां महात्मा कर्ण की हस्तलाघवता से २८। २६ सिद्ध चारणों समेत सब देवता प्रसन्न हुये और बड़े धनुषधारी धृतराष्ट्रके पुत्रों

ने उस महारथियों में श्रेष्ठ नरोत्तम सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ कर्णकी प्रशंसाकरी हे महाराज इसके पीछे कर्णने शत्रुओंकी सेनाका ऐसा नाशकरदिया ३०।३१ जैसे कि ऊष्म ऋतुमें बड़ा वृद्धिमान् प्रचण्डअग्नि वनको जलाता है उस प्रचण्डअग्नि के समान कर्ण से घायल हुये वह सब पाण्डव महारथी कर्ण को देखकर इधर उधर भयभीत होकर भागे ३२। ३३ वहां उस बड़े युद्धमें कर्ण के उत्तम धनुषसे निकले हुये तीक्ष्ण शायकों से घायल पांचाल लोगोंके बड़ेभारी शब्दहुये उन शब्दों से पाण्डवों की बड़ी सेना अत्यन्त भयभीत हुई ३४।३५ वहां शत्रुओं के मनुष्यों ने युद्धमें अकेले कर्णकोही शूरवीर युद्धकर्त्ता माना तब शत्रुओं के पीड़ा करनेवाले कर्णने फिरभी अद्भुत कर्म्मकिया कि ३६ कोई पाण्डव उसकी ओर देखने को भी समर्थ नहीं हुआ जैसे कि जलका प्रवाह उत्तम पर्व्व को पाकर रुकजाता है ३७ उसीप्रकार वह पाण्डवी सेना कर्ण को पाकर छिन्नभिन्न होगई हे राजा युद्धमें महाबाहु कर्णभी निर्धूम अग्निकेसमान प्रकाशमान ३८ पाण्डवों की बड़ी सेनाको भस्मकरताहुआ नियत होकर उस शूरवीर ने युद्ध करनेवाले वीरों के कुण्डल धारण कियेहुये ३९ शिरोंको और भुजाओं को बड़ी तीव्रतासे अपने बाणों के द्वारा काटडाला हे राजा युद्ध व्रतधारी कर्णने हाथीदांत के कब्जा रखनेवाले खड्ग ध्वजा और शक्तियोंको घोड़े हाथी ४० वा अनेक प्रकारके रथ पताका, व्यजन अक्षयुग योक्त्र और बहुत रूपके चक्रोंको ४१ बहुत प्रकारों से काटा हे भरतवंशी वहां कर्णके हाथसे मारेहुये हाथी घोड़ों के कारण से ४२ वह पृथ्वी रुधिर मांसकी पंकवाली होकर महाअगम्य होगई मृतक घोड़े पदाती रथ और हाथियों के हेतु से पृथ्वी की समता और असमता नहीं जानीगई अपने और दूसरों के शूरवीरभी परस्पर में नहीं जानेगये ४३। ४४ हे महाराज कर्णके अस्त्र और बाणोंसे घोर अन्धकार होजानेपर उसके धनुषसे छूटेहुये सुवर्ण जटित बाणों से ४५ पाण्डवों के महारथी ढकगये और वह सब कर्णसे लड़नेवाले पाण्डवों के महारथी बारम्बार कर्ण से पराजित हुये और जैसे कि वनमें मृगोंके समूहों को सिंह भगाताहै ४६।४७ उसीप्रकार पाञ्चालों के उत्तमरथी और शत्रुओं के मनुष्यों को भगाते और युद्धमें शूरवीरोंको डराते बड़ेयशस्वी कर्णने ४८ उस सेनाको ऐसे भगाया जैसे कि भेड़िया पशुओं के समूहों को भगाता है फिर बड़े धनुषधारी धृतराष्ट्र के

पुत्र पांडवी सेनाको मुख मुड़ाहुआ देखकर ४६ भयानक शब्दों को करतेहुये वहां आये और अत्यन्त प्रसन्नचित्त दुर्य्योधनने ५० अनेकप्रकार के सब बाजों को बजवाया वहांपर पराजितहुये नरोत्तम पांचालदेशी भी ५१ शरीरकी आशा छोड़कर शूरों के समान लौटे हे महाराज फिर कर्ण ने उन लौटेहुये शूरवीरों को ५२ बहुतप्रकारसे पराजयकिया उस युद्धमें क्रोधयुक्त कर्ण के बाणों से पांचालों के बीस रथी ५३ और सैकड़ों चंदेरी के बासी मारेगये फिर वह शत्रुसंतापी कर्ण रथोंको रथकी बैठक और उत्तम घोड़ों से रहितकरके ५४ हाथियों के कन्धों को सवारों से रहितकर पदातियों को भगाता मध्याह्न के सूर्य्य के समान कठिनता से दर्शनके योग्य ५५ मृत्यु वा कालके समान शरीरको धारणकिये शोभायमान हुआ हे महाराज इसरीति से शत्रुओं के समूहों को मारनेवाला बड़ा धनुषधारी कर्ण मनुष्य घोड़े रथ और हाथियों को मारकर ऐसे नियतहुआ जैसे कि बड़ा पराक्रमी काल जीवों के समूहों को मारकर नियत होता है ५६ । ५७ इसीप्रकार वह अकेला महारथी सोमकोंको मारकर नियतहुआ वहांपर हमने पांचालों के अद्भुत पराक्रमको देखा ५८ कि सेना मुखपर घायल होनेवालों ने भी कर्ण से मुख न मोड़कर सन्मुखताकरी राजा दुर्य्योधन दुश्शासन वा शार्दूल कृपाचार्य ५९ अश्वत्थामा कृतवर्म्मा और महाबली शकुनी ने पांडवों के हजारों मनुष्यों को मारा ६० हे राजेन्द्र फिर सत्य पराक्रमी और क्रोधयुक्त दोनों भाई कर्ण के पुत्रों ने इधर उधरसे पांडवोंकी सेनाको मारा ६१ वहां बड़ाभारी नाशकारी घोर युद्ध हुआ इसीप्रकार शूरवीर पांडव, धृष्टद्युम्न ६२ और अत्यन्त रोषभरे द्रौपदी के पुत्रों ने आपकी सेनाको मारा इसप्रकार से जहां तहां स्थानों में पांडवी सेना का बहुत नाशहुआ ६३ और युद्ध में बड़े पराक्रमी भीमसेनको पाकर आपके भी शूरोंका नाशहुआ ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेएकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥

अस्सीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे महाराज फिर अर्जुन ने चारों प्रकारकी सेनाको मारके युद्धमें महाक्रोधरूप कर्णको देखकर १ पृथ्वीको मांस रुधिर मज्जा हाड़से भया-नकर नदी के रूप बनाया जिसमें रुधिर जल वा मांस मज्जा हाड़रूप कीच और

मनुष्यों के शिररूप पत्थर और हाथी और घोड़ेरूप किनारे २ शूरवीरों के अस्थि समूहों से पूर्ण काक और गिद्धों से शब्दायमान छत्ररूप धनुष और नौका से युक्त वीररूप वृक्षों की बहानेवाली ३ धाररूप कमलनी वा हस्तघ्राणरूप उत्तम फेनोंकी रखनेवाली धनुषबाण और ध्वजा से संयुक्त मनुष्यों के घुटेहुये कपालों से व्याप्त ४ ढाल वा कवचरूप भ्रमणों से युक्त रथरूप नौकासे व्याकुल विजयाभिलाषी शूरवीर लोगोंको सुखपूर्व्वक तरने के योग्य और भयभीतों को अत्यन्त अगम्य ५ ऐसी नदीको जारीकरके फिर शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले अर्जुन ने वासुदेवजी से यह वचन कहा ६ कि हे श्रीकृष्णजी युद्धमें यह कर्णकी ध्वजा दिखाई देती है और यह भीमसेन आदि महारथी कर्ण से लड़रहे हैं ७ हे जनार्द्दनजी कर्ण से भयभीत हो होकर यह पांचाललोग भागते हैं और श्वेत छत्र धारी यह राजा दुर्य्योधन ८ कर्ण से पराजितहुये पांचालों को भगाताहुआ बड़ा शोभित होरहाहै महारथी अश्वत्थामा, कृतवर्म्मा, कृपाचार्य्य ९ यह सबभी कर्ण से रक्षितहोकर राजाकी रक्षाकरते हैं वह हम सबसे अवध्य सोमकों को मारेंगे १० और हे श्रीकृष्ण जी रथवानों में कुशल यह शल्य रथके ऊपर बैठाहुआ कर्ण के रथको अत्यन्त शोभित कररहाहै ११ वहां मैं चाहताहूं कि आप मेरे रथको ले चलो मैं युद्धमें कर्णको मारे बिना किसीप्रकारसे नहीं लौटूंगा १२ हे जनार्द्दन जी दूसरी दशामें यह कर्ण हमारे देखतेहुये महारथी पाण्डव और सृंजियों का नाशकरेगा १३ इसके पीछे केशवजी अर्ज्जुन समेत रथ की सवारी के द्वारा शीघ्रही द्वैरथ युद्ध में बड़े धनुषधारी कर्ण और आपकी सेना के सन्मुख गये १४ महाबाहु श्रीकृष्णजी अर्ज्जुन के कहने से सब पांडवी सेनाको रथपरसेही विश्वासयुक्त करतेहुये चले १५ उस शुभकारी युद्ध में अर्ज्जुन के रथका शब्द ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि इन्द्र वज्रके समान बड़े जलके वेगका शब्द होता है १६ सत्य पराक्रमी महासाहसी पांडव अर्जुन रथके बड़े शब्द समेत आपकी सेनाको विजय करताहुआ सन्मुख गया १७ मद्रका राजा शल्य श्वेत घोड़ोंसमेत श्रीकृष्णजीके साथ आतेहुये अर्जुनको और उस महात्माकी ध्वजा को देखकर कर्णसे बोला १८ हे कर्ण श्वेत घोड़े और श्रीकृष्णको सारथी रखने वाला यह वै रथ जिसको कि तुम पूछतेहो युद्ध में सबको मारताहुआ आताहै १९ यह अर्जुन गांडीव धनुषको लियेहुये वर्त्तमानहै जो तू इसको मारेगा तब

हमारा कल्याण होगा २० हे राधा के पुत्र कर्ण यह अकेला भरतवंशी अर्जुन उत्तम रथियों को मारताहुआ तुमको चाहता चला आता है अब तुम इसके सन्मुख जाओ २१ देखो यह दुर्य्योधनकी सेना शीघ्रतासे शत्रुओंके मारनेवाले अर्जुनके भयसे चारोंओर अलग २ हुई जाती है २२ अर्जुन सब सेनाओं को छोड़ताहुआ तेरेही निमित्त शीघ्रता करता है मैं यह मानता और जानता हूं और उसके शरीर से भी विदित होता है २३ वह अर्जुन तेरे सिवाय किसी के साथ युद्धकरनेका अभिलाषी होकर स्थिर नहीं होताहै जो कि भीमसेनके पीड़ितहोनेसे क्रोध में भराहुआ है २४ अत्यन्त घायल और विरथ धर्मराजको वा शिखण्डी सात्विकी धृष्टद्युम्न २५ द्रौपदीके पुत्र युधामन्यु, उत्तमौजा और नकुल सहदेव इन दोनों वीर भाइयोंको घायल देखकर शत्रुओंका तपानेवाला अकेला रथी अर्जुन अकस्मात् तेरे सन्मुख आताहै वह क्रोध से रक्तनेत्र रोषमें भरा सब राजाओंके मारनेका अभिलाषी शीघ्रतासे सेनाओंको त्यागताहुआ निस्सन्देह हमारे सन्मुख आताहै २६ । २७ हे कर्ण तुम शीघ्रही उसके सन्मुख चलो तेरे सिवाय इसलोक में दूसरे ऐसे धनुषधारी को नहीं देखताहूं २८ जो कि युद्धमें क्रोधयुक्त अर्जुन को मर्य्यादा के समान रोककर धारणकरे मैं पीछे और दोनों दाहें बायें उसकी रक्षाको नहीं देखताहूं वह अकेलाही तेरे सन्मुख आताहै तुम अपने स्थानको देखो २९ । ३० हे राधा के पुत्र तुम्हीं युद्ध में श्रीकृष्ण और अर्जुन को अपने स्वाधीन करने को समर्थ हो यह तेराही भाररूप कार्य्य है तू अर्जुनके सन्मुख चल ३१ तुम भीष्म द्रोणाचार्य्य और अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य के समानहो इसहेतु से महायुद्ध में इस आतेहुये अर्जुनको रोको ३२ हे कर्ण सर्प की समान होठों के चाबनेवाले वृषभके समान गर्जनेवाले बनवासी व्याघ्रके समान अर्जुन को मारो ३३ यह महारथी धृतराष्ट्र के पुत्र और अन्य राजालोग युद्धमें अर्जुनके भय से बड़ी शीघ्रता से भागते हैं ३४ हे सूतनन्दन वीर कर्ण तेरे सिवाय अब दूसरा कोई ऐसा मनुष्य नहींहै जोकि उन भागेहुओं के भयको निवृत्तकरे हे पुरुषोत्तम यह सब कौरव युद्धमें तुझ रक्षकको पाकर ३५ तेरी रक्षा में आश्रित होनेकी इच्छा से नियत हैं वैदेह काम्बोज अम्बष्ट नग्नजित ३६ और युद्धमें बड़ी कठिनतासे विजयहोनेवाले गान्धारदेशी जिस तेरे धैर्य्यसे विजय कियेगये हे राधाके पुत्र उस धैर्य्यको करके फिर पाण्डवोंके सन्मुख

चल ३७ हे महाबाहो बड़ीशूरतामें नियतहोकर उन यादव बासुदेवजीके सन्मुख चलो जोकि अर्जुनके साथ अत्यन्त प्रीति रखनेवाले हैं ३८ कर्ण बोला हे शल्य तुम अपने स्वभाव में नियत होजाओ हे महाबाहो अब तुम मुझको अंगीकृत विदितहोतेहो तुम अर्जुन से भयभीत मतहो ३९ अब मेरे भुजाओं के बलको और पाईहुई शिक्षाको देखो मैं अकेलाही इस पाण्डवोंकी बड़ी सेनाको मारूंगा ४० इसके अनन्तर पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण और अर्जुनको मारूंगा यह तुमसे सत्यही सत्य कहताहूं कि इनदोनों वीरोंको बिना मारेहुये कभी न हटूंगा अथवा चाहे उन्हींके हाथसे मरकर शयन करूंगा क्योंकि युद्धमें सदैवही विजय नहीं हुआ करती है ४१ अब मैं उनको मारकर वा उनके हाथसे मरकर अपने मनोरथ को सिद्ध करूंगा शल्य बोला हे कर्ण महारथी लोग युद्ध में इसरथियों में बड़े वीर अर्जुनको सबसे अजेय कहतेहैं फिर हे कर्ण ऐसा कौनसा मनुष्य है जो इस श्रीकृष्णसे रक्षित अर्जुनको विजय करनेका उत्साहकरे ४२ कर्ण बोला कि लोकमें ऐसा उत्तम रथी जहांतक हमनेसुना कभी कोई नहीं हुआ ऐसे प्रतापी प्रसिद्ध कीर्त्तिवाले अर्जुनके सन्मुखहोकर युद्धको करूंगा उस महायुद्धमें मेरी वीरताको देखो ४३ यह रथियों में बड़ावीर कौरवराज का पुत्र युद्धभूमिमें श्वेत घोड़ों के द्वारा घूमताहै अब वह मुझको बड़ेदुःख से मिलताहै और कहताहै कि कर्णकेही विजयमें मेरीविजय और कर्णकेही नाशमें मेराभी नाशहै ४४ राजकुमारके प्रस्वेद और कंपसेरहित दोनों हाथ चिह्नों से युक्त होकर बुद्धिमान हैं वह दृढ़शस्त्र अर्ज्जुन बड़ा कर्मी और हस्त लाघवी है इस पाण्डव के समान कोई युद्धकर्त्ता नहीं है ४५ बहुत बाणों को भी लेताहै और उनसबको एकही बाण के समान धनुषपर चढ़ाकर छोड़ताहै फिर सकल बाण एक कोशपर गिरते हैं उसके समान इस पृथ्वीपर कौन शूरवीरहै ४६ श्रीकृष्णको साथ रखनेवाले जिस वेगवान् अधिरथी अर्जुनने खाण्डव वनमें अग्निको तृप्तकिया वहांही महात्मा श्रीकृष्णजी ने चक्रको और पाण्डव अर्जुन ने गांडीव धनुषको पाया ४७ अर्थात् बड़े पराक्रमी महाबाहुने अग्निसेही महा शब्दायमान श्वेतघोड़ोंसे युक्त रथको वा दो अक्षय तूणीरों को और दिव्य शस्त्रोंको पाया ४८ इसीप्रकार इन्द्र लोकमें युद्धकरके असंख्य कालकेयनाम दैत्योंको मारा और देवदत्तनाम शंख को पाया इसपृथ्वीपर उससे अधिक कौनहोसक्ताहै ४९ इस महानुभावने उत्तम

युद्धसे अस्त्रों के द्वारा साक्षात् महादेवजीको प्रसन्न किया और उनसे तीनोंलो- कोंका नाश करनेवाला बड़ाघोर पाशुपतनाम महा अद्भुत अस्त्रपाया ५० सब लोकपालों ने इकट्ठे होकर युद्धमें पृथक् २ बड़े २ अस्त्रों को दिया जिन अस्त्रों के द्वारा इस नरोत्तम ने युद्धमें इकट्ठे होनेवाले कालकेय नाम असुरों को बड़ी शीघ्रतासे मारा ५१ इसीप्रकार इस अकेले अर्जुनने राजा विराटके पुरमें कौरवों समेत हम सब मिलेहुओं को एकही रथके द्वारा विजय कर युद्धभूमि में उस गोधनको हरण करके उनसब महारथियोंके वस्त्रोंको भी छीन लिया ५२ हेशल्य इस प्रकारके पराक्रमी और गुणवाले श्रीकृष्णको साथमें रखनेवाले सब लोक और राजाओं में श्रेष्ठ इस अर्जुनको अपने साहससे बुलाताहूं ५३ वह महापराक्रमी ब्रह्मा विष्णु और महेशजीके भी कंपानेवाले नारायणसे रक्षितहै सब संसार इकट्ठा होकर हजारों वर्षतक भी जिसके गुणों का वर्णन न करसके ५४ ऐसे शंखचक्र गदा पद्मधारी बसुदेवजीके पुत्र महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुनके गुणों के कह- ने को कोई समर्थ नहीं है एक रथपर बैठेहुये श्रीकृष्ण और अर्जुनको देखकर मुझको महाभय उत्पन्न होताहै ५५ अर्जुन युद्धमें सब धनुषधारियों से श्रेष्ठतर है और नारायणजीभी युद्धमें अद्वितीय हैं ऐसे अर्जुन और बासुदेवजी हैं हे शल्य चाहै हिमाचल अपने स्थानसे चलायमान होजाय परन्तु अर्जुन और श्रीकृष्ण चलायमान नहीं होसक्के ५६ यह दोनों दृढ़ शस्त्रधारी शूरवीर महारथी बड़े कठोर शरीरवाले हैं हे शल्य ऐसे दोनों अर्जुन और वासुदेवजीके सन्मुख मेरे सिवाय दूसरा कौन जासक्ताहै यह अत्यन्त अद्भुत वा अद्वितीय उनका और मेरायुद्ध शीघ्रही होगा ५७। ५८ मैं युद्धमें इनदोनों को गिराऊँगा वा श्रीकृष्ण समेत अर्जुनही मुझको गिरावेंगे शत्रुओंका मारनेवाला कर्ण युद्धमें शल्यसे ऐसे २ वचनोंको कहताहुआ बादल के समानगर्जा ५९ फिर आपके पुत्रके पास जा- कर बड़े प्रेम से मिला उसने भी इसको अनेकप्रकार से प्रसन्नकिया फिर वहां प्रसन्न होकर कौरवों में बड़ेवीर दुर्य्योधन कृपाचार्य्य कृतवर्मा राजा गान्धार समेत उसके छोटेभाई इनसब से ६० वा अश्वत्थामा वा अपने पुत्र और उन पदाती हाथी और अश्व सवारों से बोला कि श्रीकृष्ण और अर्जुनको रोको प्रथम उन- के सन्मुख जाकर शीघ्रही उनको सब प्रकारसे थकाओ ६१ जिससे कि हे राजा लोगो आपलोगों से अत्यन्त घायलहुये इनदोनों को मैं सुखपूर्व्वक मारूं वह

बड़े २ सब महावीर बहुत अच्छा ऐसा कहकर अर्जुन के मारने के अभिलाषी होकर बड़ी शीघ्रता से उनके सन्मुख गये ६२ कर्ण के आज्ञाकारी महारथियों ने बाणों से उस अर्ज्जुन को घायल किया फिर अर्ज्जुन ने युद्ध में उनको ऐसा निगला जैसे कि बड़ा जल समूह रखनेवाला समुद्र नद नदियोंको निगलजाता है ६३ वह अर्ज्जुन अपने उत्तम बाणों को चढ़ाता और छोड़ता हुआ शत्रुओं को दिखाई भी नहीं पड़ा फिर अर्ज्जुन के चलायेहुये बाणों से घायल और मृतक हुये सब मनुष्य हाथी और घोड़े पृथ्वीपर गिरपड़े ६४ सब कौरव उस बाण रूप अग्नि और गांडीव रूप सुन्दर मण्डल रखनेवाले प्रलयकालीने सूर्य्य के समान महातेजस्वी अर्ज्जुन की ओर देखने को ऐसे समर्थ नहीं हुये जैसे कि नेत्ररोगी मनुष्य सूर्य्य के दर्शन करने को असमर्थ होताहै ६५ हँसते हुये गांडीव धनुष रूप पूर्ण मंडलवाले अर्जुन ने उन महारथियों के चलायेहुये बाणजालों को ऐसे काटा जैसे कि ज्येष्ठ आषाढ़में उग्रकिरण रखनेवाला सूर्य्य जलसमूहों को सुखपूर्वक सोखलेताहै हे महाराज फिर अर्जुन ने बाणों के समूहों को छोड़ कर आपकी सेनाको भस्म करदिया ६६ । ६७ फिर कृपाचार्य्यजी बाणोंको छोड़तेहुये उसके सन्मुख गये उसी प्रकार कृतवर्मा और आपका पुत्र दुर्योधन भी दौड़ा और महारथी अश्वत्थामा ने शायकों से ऐसे ढकदिया जैसे कि बादल पहाड़ को ढकदेताहै ६८ उस समय कुशलबुद्धी शीघ्रता करनेवाले पांडव अर्जुनने उस बड़े युद्धमें बड़े उपाय से मारने के इच्छावान् वीरों के चलायेहुये उत्तम बाणों को अपने बाणों से काटकर तीन २ बाणों करके उनको छातीपर घायल किया ६९ गांडीव रूप बड़े पूर्ण मंडलवाला बाणरूपी उग्र किरणों से युक्त अर्जुन रूपी सूर्य्य शत्रुओं को संतप्त करताहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि ज्येष्ठ आषाढ़में पार्श्व मंडल से युक्त सूर्य्य वर्त्तमान होताहै ७० इसके पीछे अश्वत्थामा ने दश उत्तम बाणों से अर्जुन को तीनबाणों से श्रीकृष्णजी को चार बाणों से चारों घोड़ों को घायल करके नाराचनाम उत्तम बाणों से ध्वजास्थ हनुमान्‌जी को ढकदिया ७१ तौभी अर्जुन ने उस धनुषधारी अश्वत्थामा को तीनही बाणों से कंपायमान करके क्षुरसे सारथी के शिरको चारबाणों से घोड़ों को और तीन बाणोंसे अश्वत्थामा की ध्वजा को रथसे गिराया ७२ फिर क्रोध युक्त अश्वत्थामा ने हीरे मणि और सुवर्ण से जटित तक्षक के फणके समान प्र-

काशित बड़े मूल्यके दूसरे धनुषको ऐसे उठाया जैसे कि अत्यन्त उत्तम बड़े सर्प को पर्व्वत के किनारे से कोई उठालेवे ७३ उस बड़ेगुणी अश्वत्थामाने अपने शस्त्रको निकालकर घोड़े और सारथी से रहित पृथ्वी के समान रथपर अपने धनुषको प्रत्यंचा समेत करके समीप से आकर उनदोनों अजेय नरोत्तमों को उत्तम बाणों के द्वारा पीड़ामान किया ७४ युद्धके शिरपर नियत वह महारथी कृपाचार्य्य कृतवर्मा और आपका पुत्र दुर्य्योधन युद्धमें अनेक बाणों समेत अर्जुन के ऊपर ऐसे आनकर गिरे जैसे कि बादल सूर्य्यको घेरलेते हैं ७५ फिर सहस्राबाहु के समान पराक्रमी अर्जुन ने कृपाचार्य्य के धनुषबाण घोड़े ध्वजा और सारथीको बाणोंसे ऐसे घायल करदिया जैसे कि पूर्व समयमें राजा बलिको बज्रधारी इन्द्रने घायल कियाथा ७६ वह कृपाचार्य्य अर्जुन के बाणों से अस्त्रों से रहित होगये और उस बड़े युद्धमें ध्वजाके टूटने पर हजारों बाणों से ऐसे छेदेगये जैसे कि पूर्व्व में अर्जुन के हाथसे भीष्मजी छेदे गयेथे ७७ इसके पीछे प्रतापवान् अर्जुनने गर्जते हुये आपके पुत्रकीध्वजा और धनुषको बाणोंसे काटकर कृतवर्मा के उत्तम घोड़ोंको मार ध्वजा को भी काटडाला फिर शीघ्रता करने वाले उस अर्जुन ने घोड़े हाथी रथ ध्वजा और धनुषको विध्वंसन करदिया इसके पीछे आपकी बड़ी सेना पृथक् २ होकर ऐसे छिन्नभिन्न होगई जैसे कि जलके वेगसे टूटाहुआ पुल छिन्नभिन्न होकर बहजाताहै ७८।७९ तदनन्तर केशवजी ने शीघ्रही रथके द्वारा अर्जुन के महादुखी शत्रुओं को दक्षिणकिया और जैसे इन्द्र के मारनेकी इच्छासे वृत्रासुर आदि दैत्यचलेथे उसीप्रकार दूसरे युद्धाभिलाषी ऊंची ध्वजाधारी सुन्दररत्न जटित रथोंके द्वारा शीघ्र जानेवाले अर्जुनके ऊपर दौड़े इसके पीछे महारथी शिखण्डी सात्यकी नकुल और सहदेव समीप जाके उन अर्जुन के सन्मुख आनेवाले शत्रुओं को रोककर ८०।८१ तीक्ष्ण बाणोंसे घायल करके बड़े भयानक शब्दों से गर्जे और सृञ्जियों समेत क्रोध युक्त कौरवी वीरोंने सीधे चलनेवाले सुन्दर वेतयुक्त बाणोंसे परस्परमें ऐसे मारा जैसे कि पूर्व्व समयमें असुरों ने देवताओं के गणों समेत युद्धमें परस्पर मारा था हे शत्रुसंतापी धृतराष्ट्र वह विजयाभिलाषी स्वर्गजानेके उत्सुक हाथी घोड़े औररथ गिरतेथे ८२।८३ और ऊंचे स्वरोंसे गर्जतेथे फिर अच्छी रीति से छोड़े हुये बाणों से पृथक् २ होकर परस्पर में अत्यन्त घायल किया हे राजा उस महा

युद्धमें शूरवीरों में श्रेष्ठ महात्माओं के कर्म से परस्पर बाणों का अन्धकार उत्पन्न करनेपर ८४ चारोंदिशा विदिशा और सूर्य्य की किरणें भी अन्धकार होजाने से गुप्त होगई ८५॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेअशीतितमोऽध्यायः ८०॥

इक्यासीवां अध्याय॥

संजय बोले हे राजा कौरवोंकी अत्यन्त उत्तम सेनाओं से घिरेहुये और डूबे हुये पाण्डव भीमसेनको निकालने के अभिलाषी अर्जुन ने १ शायकों से कर्ण की सेना को मर्दनकरके शत्रुओं के वीरों को मृत्युलोक में भेजा २ इसके पीछे इसके बाण जाल क्रम २ से आकाशमें जाकर दिखाईदिये इसरीति से औरों ने भी आपकी सेनाको मारा ३ वह महाबाहु अर्जुन पक्षीगणों से सेवित आकाश को अपने बाणों से पूर्णकरता कौरवोंका नाश करनेवाला हुआ ४ फिर अर्जुन ने निर्मलभल्ल क्षुरप्र और नाराचों से अंगों को छेदछेदकर शिरोंको काटा ५ कटे हुये अंग और कवचों से रहित वह शिर चारोंओर से गिरे उन गिरनेवाले शूरवीरों से पृथ्वी आच्छादित होगई ६ अर्जुनके बाणों से मृतक अंगभंग चूर्ण २ नाशहुये अंगों से रहित हाथी घोड़े रथी और रथों से पृथ्वी व्याप्तहोगई ७ हे राजा युद्धभूमि बड़ीदुर्गम विषय महाघोर दुःख से देखने के योग्य वैतरणीनदी के समान होगई ८ शूरवीरों के घोर सारथी रखनेवाले मृतक घोड़े वा सारथी समेत रथों से और ईशा रथ चक्र अक्ष और भल्लों से पृथ्वी महाचित्रितसी होगई ९ कवचों से अलंकृत सेना के सेनाधिप सुनहरी कवच सुनहरी भूषण रखनेवाले शूरवीरों समेत नियतहुये १० कठोर प्रकृतिवाले सवारों की एँड़ी और अंगुष्ठों से प्रेरित क्रोधयुक्त चारसौहाथी अर्जुनके बाणों से ऐसे गिरपड़े ११ जैसे कि बज्रसे बड़े पर्व्वतों के शिखर गिरपड़ते हैं रत्नों से पूर्ण पृथ्वीपर अर्जुनके बाणों से नाश होकर गिरेहुये उत्तम हाथियों से पृथ्वी आच्छादित होगई १२ अर्जुन के रथ ने बादलके रूप मद डालनेवाले हाथियों को चारोंओर से ऐसे ग्रासकिया जैसे कि सूर्य्य बादलों को ग्रास करताहै १३ मृतक हाथी घोड़े मनुष्य अनेक प्रकारके टूटे रथ शस्त्र सारथी वा कवचों से रहित युद्धमें मतवाले मृतक मनुष्यों से १४ और बड़े भयानक शब्दवाले गांडीव धनुषको टंकारते अर्जुनके हाथसे टूटेहुये शस्त्रों

से युद्धभूमि का मार्ग आच्छादित होगया १५ जैसे कि आकाशमें घोर वज्र से विनिष्पेष स्तनयित्नु होताहै उसी प्रकारवाला धनुष का शब्दथा उसके पीछे अर्ज्जुन के बाणों से घायल होकर सेना ऐसे पृथक्होकर छिन्नभिन्न होगई १६ जैसे कि समुद्र में बड़े वायुके वेग से चलायमान नौका होती है नानाप्रकार के रूपवाले प्राणों के हरनेवाले गांडीव धनुषसे छोड़ेहुये १७ उल्का और बिजली के रूपवाले बाणों ने आपकी सेनाको ऐसे भस्म करदिया जैसे कि सायंकाल के समय बड़े पर्व्वतपर प्रचण्ड अग्नि बांसों के वनको भस्म करदेताहै १८ इसी प्रकार बाणोंसे पीड़ित आपकी बड़ी सेना भी महा व्याकुल होकर चलायमान हुई और अर्ज्जुन के हाथसे मर्दित और भस्मीभूत करीहुई सेना नाशको प्राप्त हुई १९ बाणों से कटीहुई वा घायलहोकर वह सेना सब ओरको ऐसे भागी जैसे कि दावानल अग्निसे भयभीत होकर बड़े मृगों के समूह भागते हैं २० इसीप्रकार अर्जुन के हाथसे भस्महुये कौरव उस महाबाहु भीमसेन को छोड़कर चारों ओरको भागे २१ इस रीतिसे कौरवों की सब सेना व्याकुल होकर मुख मोड़ २ कर भागी इसके पीछे कौरवों के छिन्नभिन्न होनेपर वह अजेय अर्जुन भीमसेन को पाकर २२ एक मुहूर्त्त पर्य्यन्त समीप वर्त्तमान रहा वहां भीमसेनसे युधिष्ठिर का सब वृत्तान्त और आनन्दसे होने का समाचार कहकर भीमसेन से आज्ञा लेकर अर्ज्जुन फिर चलागया २३ । २४ हे भरतवंशी वह रथके शब्दसे पृथ्वी और आकाश को शब्दायमान करताहुआ गया इसके पीछे शूरवीरों में श्रेष्ठ प्रतापी अर्जुन २५ दुश्शासनसे छोटे आपके दश पुत्रों से घेरागया उन्होंने भी उसको बाणोंसे ऐसे पीड़ामान किया जैसे कि उल्काओं से हाथीको पीड़ित करते हैं २६ हे भरतवंशी धनुषको मण्डलाकार करनेवाले शूरवीर नर्तकों के समान दिखाई दिये उनको मधुसूदनजी ने अपने रथके द्वारा दक्षिण किया २७ और अर्जुन के हाथसे मरकर उनको यमराजके पास जानेवाला अनुमान किया उसकेपीछे अर्ज्जुनके रथके मुड़ने पर उन शूरों ने चढ़ाई करी २८ अर्ज्जुनने उन सन्मुख आनेवालों के घोड़े रथ सारथी और ध्वजा समेत धनुष और शायकों को शीघ्रही अपने नाराच और अर्द्धचन्द्र नाम बाणोंसे गिराया २९ पीछेसे दूसरे दश भल्लोंसे उनके उन शिरोंको पृथ्वीपर गिराया जोकि बहुत कालसे रक्त नेत्रकर कर ओठोंको काटते थे ३० वह बहुत से कमलरूपी मुखों समेत शिर बड़े शोभा-

यमान हुये फिर वह शत्रुओंका मारनेवाला सुनहरी बाजूबन्द रखनेवाला सुनहरी पुंखवाले दशभल्लोंसे बड़े वेगवान् दशों कौरवों को मारकर चलदिया २१॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेएकाशीतितमोऽध्यायः ८१॥

बयासीवां अध्याय॥

संजय बोले कि कौरवों के बड़े वेगवान् नब्बे रथी घोड़ों के द्वारा उस आनेवाले कपिध्वज अर्जुन के सन्मुख गये १ और नरोत्तम संसप्तकों ने परलोक सम्बन्धी घोर शपथको खाकर युद्ध में पुरुषोत्तम अर्ज्जुन को घेरलिया २ और श्रीकृष्णजी ने बड़े वेगवान् सुवर्ण भूषणों से अलंकृत मोतियों के जालोंसे ढकेहुये श्वेत घोड़ोंको कर्णके रथपर हांका ३ इसके पीछे संसप्तकों के रथ बाणों की वर्षासे प्रहार करते कर्णकी ओरको जानेवाले उस अर्ज्जुनके सन्मुखगये ४ अर्ज्जुन ने अपने तीक्ष्ण बाणों से शीघ्रता करनेवाले उन सब नब्बे वीरों को सारथी धनुष और ध्वजा समेत मारा ५ अर्ज्जुन के नानारूप के बाणोंसे घायलहोकर वह शूरवीर ऐसे गिरपड़े जैसे कि तपके क्षीण होनेपर सिद्धलोगअपने विमान समेत स्वर्गसे गिरते हैं इसके पीछे कौरवलोग बड़ी निर्भयतासे रथ हाथी और घोड़ों समेत उस वीर अर्ज्जुन के सन्मुख आये ६। ७ तीव्रता युक्त मनुष्य घोड़े और उत्तमहाथी वाली उस आपकी बड़ी सेनाने अर्ज्जुन को घेर लिया ८ वहां बड़े धनुषधारी कौरवों ने शक्ति, दुधारा खड्ग, तोमर, प्रास, गदा, खड्ग और शायकों से कौरवनन्दन अर्ज्जुन को ढकदिया ९ फिर अर्ज्जुनने चारों ओरसे अन्तरिक्ष में फैलीहुई उस बाणोंकी बर्षाको अपने बाणों से ऐसा छिन्न भिन्न करदिया जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों से अँधेरे को तिर्रे बिर्रे करदेताहै १० इसकेपीछे मतवाले तेरहसौ हाथियोंसमेत नियतहुये म्लेच्छोंने आपके पुत्रोंकी आज्ञा से अर्ज्जुन को पार्श्वभागकी ओरसे घायल किया ११और कर्ण, नालीक, नाराच, तोमर, प्रास, शक्ति, मुशल और भिन्दिपालों से रथ में सवार अर्ज्जुनको पीड़ामान किया १२ अर्ज्जुन ने उन हाथीके सवारोंसे छोड़े हुये बड़े बाण जालोंको अपने तीक्ष्णधार भल्ल और अर्द्धचन्द्रबाणों से काटा १३ इसके पीछे नानारूपके उत्तम बाणोंसे उन सब हाथियोंको पताका ध्वजा और सवारों समेत ऐसे मारा जैसे कि बज्रोंसे पर्व्वतों को मारते हैं १४ वह स्वर्णमय

मालाधारी बड़े २ हाथी सुनहरी पुंखवाले बाणों से पीड़ित और मृतक होकर ऐसे गिरपड़े जैसे कि ज्वालामुखी पर्व्वत गिरपड़ते हैं १५ हे राजा इसके पीछे हाथी घोड़े समेत मनुष्योंको पुकारते और चिंघाड़तेहुये गाण्डीव धनुषका बड़ाशब्द हुआ १६ और वह घायल हाथी चारोंओर मृतक सवारों समेत भागे १७ हे महाराज रथियों और घोड़ों से रहित हजारोंरथ गन्धर्वनगरके रूप दिखाईपड़े १८ और इधर उधरसे दौड़नेवाले अश्व सवार जहां तहां अर्ज्जुनके शायकों से मृतक दिखाई दिये १९ उस युद्धमें पाण्डव अर्ज्जुनकी भुजाओंका पराक्रम देखा गया जो अकेलेनेही युद्धमें अश्वसवार हाथी और रथोंको विजय किया २० हे भरतर्षभ राजा धृतराष्ट्र इसके पीछे भीमसेन तीन अंगरखनेवाली बड़ीसेना से घिराहुआ अर्ज्जुनको देखकर २१ मरने से शेष बचेहुये आपके थोड़े रथियोंको छोड़कर वेगसे अर्ज्जुन के रथकी ओरको दौड़ा २२ इसके पीछे बहुतमृतक और दुखीसेना भागी तब भीमसेन अपने भाईअर्ज्जुनके पासगये बड़े युद्धमें थकावट से रहित गदाको लियेहुये भीमसेनने अर्ज्जुनसे बचेहुये शेषपराक्रमी घोड़ोंको मारा २३ । २४ इसके पीछे भीमसेन ने कालरात्रिके समान बड़े उग्र हाथी घोड़े और मनुष्यों की खानेवाली नगरके कोटों की तोड़नेवाली महाभयानक गदा को २५ मनुष्य हाथी और घोड़ोंपर छोड़ा हे राजा उस गदा ने बहुतसे हाथी घोड़े और अश्वसवारों को मारकर लोहे के कवचधारी मनुष्य और घोड़ों को मारा और वह मनुष्य मृतकहोकर शब्द करतेहुये पृथ्वीपर गिरपड़े २६ । २७ दांतोंसे पृथ्वीको काटते रुधिरमें भरे टूटे मस्तक हाड़ और चरणहोकर मांसभक्षी जीवोंको भक्षणार्थ मृत्यु वशहुये २८ तव गदानेभी रुधिर मांस और मज्जा से तृप्तहोकर शीतलताको पाया कालरात्रिके समान दुःखसे देखनेके योग्य हाड़ों कोभी खाती हुई नियत हुई २९ अत्यन्त क्रोधयुक्त गदा हाथ में लिये भीमसेन दशहजार घोड़े और अनेक पत्तियों को मारकर इधर उधरको दौड़ा ३० हे भरतवंशी इसके पीछे आपके शूरवीरोंने गदाधारी भीमसेनको देखकर कालदण्ड के उठानेवाले यमराज को ही सन्मुख आयाहुआ माना ३१ मतवाले हाथी के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त वह पाण्डुनन्दन हाथियों की सेना में ऐसे पहुँचा जैसे कि समुद्र में मगर पहुँचता है ३२ वहां अत्यन्त क्रोधभरे भीमसेन ने बड़ी गदाको लेकर हाथियोंकी सेनाको मझाकर वा मथकर क्षणमात्रमेंही यमलोक

में पहुँचाया ३३ घण्टोंसमेत वा ध्वजा पताकाधारी सवारोंसे युक्त मतवालेहाथियोंको ऐसे गिरताहुआ देखा जैसे कि पक्षधारी पर्व्वत गिरतेहैं ३४ बड़े पराक्रमी भीमसेन उस हाथियों की सेनाको मारकर अपने रथपर सवार होकर अर्जुन के पीछे चले ३५ हे महाराज शत्रुओंकी वृहुतसी सेनामारी गई और वहुधा सेना के लोग मुखफेरेहुये निरुत्साह और वहुतेरे शस्त्रोंसे ढकेहुये शरणमें आये ३६ अर्जुनने उसशरणमें आईहुई अचेतसेनाको देखकर प्राणोंके तपानेवाले बाणों से ढकदिया ३७ उसयुद्धमें गांडीव धनुषधारी के वाणोंसे छिदेहुये मनुष्य घोड़े रथ और हाथी ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि केशरों करके कदम्ब का वृक्ष शोभित होताहै ३८ हे राजा इसके पीछे मनुष्य घोड़े और हाथियोंके प्राणोंके हरने वाले अर्जुनके वाणों से घायलहुये कौरवोंके वड़े पीड़ावान् शब्दहुये ३९ तवहाय हाय करनेवाली आपकी सेना अत्यन्त भयभीत होकर परस्पर में गुप्तहोनेवाले अलातचक्र अर्थात् बनेटी के समान भ्रमण करनेलगी ४० इसके अनन्तर वह कौरवों का युद्ध बड़े पराक्रमियों के साथहुआ जहां रथ अश्वसवार घोड़े और हाथियों में कोई भी विना घायलहुये नहीं रहा ४१ वह सेना चारोंओरसे अग्नि रूप बाणों से विदीर्ण रुधिर और चर्म से भरे शरीर फूलेहुये अशोक वृक्षके वनके समान होगई ४२ वहां सब कौरव इस पराक्रमी अर्जुनको देखकर कर्ण के जीवन में निराशा युक्तहुये ४३ गांडीव धनुषधारी से मारेहुये कौरव युद्ध में अर्जुन के बाणोंकी वर्षा को असह्य मानकर लौटे ४४ शायकों से घायलहुये वह कौरव कर्णको त्यागकर भयभीत होकर चारोंओरको भागे और कर्ण को भी पुकारे ४५ उससमय अर्जुन हजारों बाणोंको छोड़ताहुआ और भीमसेन आदि युद्धकर्त्ता पांडवों को प्रसन्न करताहुआ उनके सन्मुख गया ४६ हे महाराज फिर आपके पुत्र कर्ण के रथके पासगये तव उन अथाह समुद्र में डूबेहुये आपके पुत्रादिकों को आश्रयरूप टापू होगया ४७ हे राजा निर्विष सर्प के समान सब कौरव अर्ज्जुन के भयसे कर्ण के पास गुप्तहोकर छिपगये ४८ जैसे कि कर्मकरता लोग मृत्युसे भयभीत होकर अपनेही धर्म में आश्रित होते हैं उसीप्रकार आपके पुत्र भी महात्मा पांडव अर्जुनके भयसे बड़े धनुषधारी कर्ण के पास शरणागत रूप हुये ४९। ५० उन रुधिर से भरे बाणों से पीड़ामान वड़ी आपत्ति में फँसेहुये लोगोंको देखकर कर्ण ने कहा कि भय मतकरो और मेरेहीपास नियत रहो ५१

फिर अर्जुनके पराक्रम से अत्यन्त छिन्नभिन्न और व्याकुल आपकी सेना को देखकर वह कर्ण शत्रुओं के मारनेकी इच्छासे धनुष टंकारताहुआ नियतहुआ ५२ उस शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ श्वास लेनेवाले कर्ण ने उन भागेहुये कौरवों को देखकर चिन्तापूर्व्वक अर्जुनके मारने में चित्त किया ५३ इसके पीछे अधिरथी कर्ण बहुत बड़ेभारी धनुषको टंकारकर अर्जुन के देखतेहुये फिर पांचालों की ओरको दौड़ा ५४ उससमय रक्तनेत्र राजाओं ने एक क्षणभरमेंही कर्ण के ऊपर ऐसी बाण वर्षा करी जैसे कि पर्व्वतपर बादल वर्षा करते हैं ५५ हे जीवधारियों में श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछे कर्ण के छोड़ेहुये हजारों बाणों ने पांचालोंको प्राणों से रहित करदिया ५६ हे बड़े ज्ञानी वहां मित्रको चाहनेवाले कर्ण के हाथ से मित्रोंकेही निमित्त घायल होनेवाले पांचालों के बड़े शब्दहुये ५७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥

तिरासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा इसके अनन्तर कवच और श्वेत घोड़ेवाले अर्जुन के हाथसे कौरवों के भागजानेपर सूतके पुत्र कर्ण ने बड़े बाणों से राजा पांचाल के पुत्रों को ऐसे छिन्नभिन्न करदिया जैसे कि बादलों के समूहों को वायु तिर्रे विर्रे करदेताहै १ अंजलिक नाम बाणों के द्वारा रथसे सारथीको गिराकर घायल कियेहुये घोड़ों को मारा और शतानीक वा श्रुतसोमको भल्लोंसे ढककर उनके धनुषोंको भी काटा २ इसके पीछे छःबाणों से धृष्टद्युम्न को छेदके बड़े वेगसे उसके घोड़ोंको भी मारा फिर सूतपुत्रने सात्यकी के घोड़ों को मारकर कैकेय के विशोकनाम पुत्रको मारा ३ कुमार के मरनेपर कैकेय का सेनापति जो कि महा भयानक कर्म करनेवाला था वह अपने उग्रबाणों से सेना को छिन्नभिन्न करता हुआ उसके सन्मुख दौड़ा और कर्ण के पुत्र प्रसेनको घायल किया ४ कर्ण ने हँसकर तीन अर्द्धचन्द्र बाणोंसे उसकी भुजा और शिरको काटा तब वह मृतक होकर रथसे पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि फरसे से काटाहुआ सालका वृक्ष होताहै ५ कर्णका पुत्र प्रसेन मृतक घोड़ेवाले सात्यकी को अपने कानतक खैंचे हुये पृषत्क नाम बाणोंसे ढककर नाचताहुआ सात्यकी के हाथसे घायल होकर गिरपड़ा ६ पुत्रके मरने से क्रोधयुक्त चित्त करके सात्यकी के मरने की इच्छा

करतेहुये माराहै इस प्रकार बोलतेहुये कर्णने सात्यकी के ऊपर शत्रुघाती बाण को छोड़ा ७ उसके उस बाणको शिखण्डीने काटकर तीनबाणों से कर्णको पीड़ितकिया फिर शिखण्डी के बाण कर्णकी ध्वजा और धनुषको काटकर पृथ्वी में गिरपड़े ८ तब उग्ररूप महात्मा अधिरथी कर्णने शिखण्डी को छः बाणों से घायल करके धृष्टद्युम्न के लड़के के शिरको काटा और इसी प्रकार बड़े तीक्ष्ण बाणों से श्रुतसोम को घायल किया ९ हे राजाओं में श्रेष्ठ वहां प्रबल शूरवीरके वर्त्तमान होने और धृष्टद्युम्नके पुत्रके मरनेपर श्रीकृष्णजी ने अर्जुन से कहा कि यह कर्ण इस लोकको पांचालों से रहित किये देताहै हे अर्जुन अब से चलकर कर्णको मार १० उसके पीछे नरोंमें बड़े वीर सुन्दर भुजावाले भयके स्थानमें महारथीसे घायल इनलोगों की रक्षा करने के इच्छावान् अर्जुनने हँसकर शीघ्रही रथके द्वारा कर्णके रथको पाया ११ और महाकठोर उग्र गांडीव धनुषको चढ़ाकर हथेलीपर प्रत्यंचाका शब्द करके अकस्मात् बाणोंका अन्धकार उत्पन्न करके ध्वजारथ घोड़े और हाथियों को मारा अन्तरिक्ष में बहुतसे शब्द घूमने लगे और पक्षीलोग पर्व्वतों की गुफाओं में गिरे जो कि जीवाके मंडल से जँभाईलेता अर्जुन रुद्र मुहूर्त्त में सन्मुखगया १२। १३ और एक वीर भीमसेन रथके द्वारा अर्जुन को पीछेकी ओरसे रक्षाकरता हुआ चला शत्रुओं से घिरेहुये वह दोनों राजकुमार रथोंके द्वारा ...ही कर्ण के सन्मुखगये १४ वहांपर अन्तरिक्षमें कर्णके सोमकलोगों को घेरकर उस महायुद्धके नियत रथ घोड़े और हाथियों के समूहों को मारा और बाणों से सब दिशाओं को ढकदिया १५ उत्तमौजा, जनमेजय, क्रोधयुक्त युधामन्यु, शिखंडी और धृष्टद्युम्न इन सबने अपने २ पृषत्कों से कर्णको छेदा वह पांचाल देशी रथियों में बड़े वीर पांचों कर्ण के सन्मुख दौड़े धैर्य्य से बड़े सावधान कर्णको यह सबलोग रथसे गिरानेको ऐसे समर्थ नहींहुये जैसे कि शान्त और जितेन्द्री पुरुष को इन्द्रियों के विषय नहीं गिरासक्के १६। १७ कर्ण ने बाणों से उन्होंके धनुष ध्वजा घोड़े सारथी और पताकाओंको शीघ्रतासे काटकर पांच पृषत्कों से उनको घायलकरके सिंहनादकिया १८ उन बाणोंको छोड़ते और चारोंओरसे मारते उस प्रत्यंचा और बाण रखनेवाले कर्ण के धनुषके घोरशब्द से पर्व्वत वा वृक्षादिससेत पृथ्वी कंपायमानहोगी ऐसाजानकर मनुष्योंके समूह पीड़ामानहुये १९ वह कर्ण इन्द्रधनुषके समान अपने बड़े धनुषसे बाणों को छोड़ता

युद्ध में ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि प्रकाशित ज्योतियों का मण्डल और किरणों के समूहोंका रखनेवाला पार्श्व मण्डलसे घिराहुआ सूर्य्य होताहै २० शिखंडीको तीक्ष्णबारह बाणों से उत्तमौजसको छः बाणोंसे युधामन्युको शीघ्रगामी तीनबाणों से और सोमकधृष्टद्युम्नके पुत्रोंको तीन२ बाणोंसे छेदा २१ हे श्रेष्ठ फिर युद्धमें कर्णके हाथसे पराजित शत्रुओं के प्रसन्न करनेवाले पांचों महारथी कर्म रहित होकर ऐसे नियतहुये जैसे कि ज्ञानी से जीतेहुये इन्द्रियों के विषय होते हैं २२ जैसे कि नौकासे रहित व्यापारी लोग समुद्रमें डूबतेहैं इसीप्रकार कर्णरूपी समुद्रमें डूबनेवाले उन अपने मामाओं को द्रौपदीके पुत्रोंने अच्छे अलंकृत रथरूप नौकाओं के द्वारा उस समुद्रसे निकाला २३ उसकेपीछे सात्यकी ने कर्ण के चलायेहुये बहुत बाणों को अपने तीक्ष्णबाणों से काटकर और तीक्ष्णलोहे के बाणों से कर्ण को घायल करके आठ बाणों से आपके बड़े बेटे को छेदा २४ इसकेपीछे कृपाचार्य कृतवर्मा दुर्य्योधन और आप कर्णने तीक्ष्णबाणोंसे घायल किया वह श्रेष्ठ यादव इनचारों के साथ ऐसे युद्ध करनेलगा जैसे कि दैत्योंका स्वामी दिग्पालोंके साथ लड़ताहै २५ बड़े उच्च शब्दवाले बहुत लम्बे असंख्यबाण वर्षानेवाले बड़े धनुषसे वह सात्यकी उनपर ऐसा प्रबलहुआ जैसे कि शरदऋतु में आकाशमें वर्त्तमान सूर्य प्रबल होताहै २६ शत्रुसंतापी बड़े अलंकृत शस्त्रधारी पांचाल देशी महारथियोंने फिर रथोंपर सवारहोके सात्यकीको ऐसे रक्षितकिया जैसे कि शत्रुओं के मारने में मरुद्गणलोग इन्द्रको रक्षित करतेहैं २७ इसकेपीछे आपकी सेनाओंके साथ शत्रुओंका वहयुद्ध महाभयकारी हुआ जो कि उनरथ घोड़े और हाथियोंका विनाशकारीथा जैसे कि पूर्वसमयमें देवताओंका युद्ध दैत्योंके साथहुआ २८ उसीप्रकार रथ हाथी घोड़े और पदातियों समेत सब सेना शस्त्रोंसे ढकगई और परस्पर शब्दों को करतेहुये मृतकहोकर गिरपड़े २९ उस दशामें राजा दुर्य्योधनसे छोटा आपका पुत्र दुश्शासन बाणोंसे भीमसेनको ढकता सन्मुखगया भीमसेनभी बड़ीशीघ्रतासे उसके सन्मुखगया और उसको ऐसे सन्मुखपाया जैसे कि सिंह बड़े रुरुको सन्मुख पाताहै ३० इसकेपीछे प्राणोंका द्यूतखेलनेवाले परस्पर क्रोधभरेहुये उन दोनोंका ऐसा महाभारी युद्धहुआ जैसे कि बड़े साहसी संबरदैत्य और इन्द्रकाहुआथा ३१ उनदोनोंने शरीरको पीड़ित करनेवाले सुन्दर बेतवाले बाणों से परस्परमें ऐसाकठिन घायल किया जैसे कि

हथिनियोंके मध्यमें कामदेवसे प्रवृत्तचित्त वारंवार घायलहुये दो बड़े हाथी लड़ते हैं ३२ इसकेपीछे शीघ्रता करनेवाले भीमसेन ने आपके पुत्रके ध्वजा और धनुष को दो क्षुरप्रों से काटा और उसके ललाटको बाणसे छेदकर सारथी के शिरको शरीरसे पृथक् करदिया ३३ उस राजकुमारने दूसरे धनुषको लेकर भीमसेनको बारहबाणसे छेदा और आपही घोड़ोंको चलाताहुआ भीमसेनपर बाणोंकीवर्षा करनेलगा ३४ इसकेपीछे सूर्य्यकी किरणकेसमान प्रकाशमान सुवर्ण हीरेआदि उत्तम रत्नोंसे अलंकृत महाइन्द्रके वज्ररूप बिजली के गिरने के समान कठिनतासे सहनेके योग्य भीमसेनके अंगोंके चीरनेवाले बाणको छोड़ा ३५ उसबाणसे घायल शरीर व्यथितरूप भीमसेन निर्जीवके समान गिरा और दोनों भुजाओंको फैलाकर उत्तम रथपर आश्रितहुआ और थोड़ेही कालमें सचेतहोकर गर्जा ३६॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिदुश्शासनभीमसेनयुद्धेत्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥

चौरासीवां अध्याय॥

संजय बोले कि उसयुद्धमें कठिन युद्धकरनेवाले राजकुमार दुश्शासनने ऐसा कठिन कर्मकिया कि एकबाणसे तो भीमसेनके धनुषको काटा और सातबाणोंसे सारथीको छेदा १ उस वेगवान् राजकुमारने उसकर्म को करके भीमसेनको नब्बे पृषत्कोंसे पीड़ितकिया इसके पीछे बड़ीशीघ्रता करके उत्तम बाणोंसे फिर भीमसेनको छेदा २ फिर महाक्रोधरूप भीमसेनने आपके पुत्रपर उग्रशक्तिको चलाया तब आपके पुत्रने उसजलतीहुई उग्र शक्तिको अकस्मात् आते हुये देखकर ३ कानतक खैंचेहुये दश पृषत्क बाणोंसेकाटा उससमय सब शूरवीरोंने प्रसन्न चित्त होकर उसकी प्रशंसाकरी ४ इसके अनन्तर शीघ्रही आपके पुत्रने भीमसेन को फिर कठिन पीड़ितकिया तब भीमसेन उसपर अत्यन्त क्रोधितहुआ और उसको देखकर क्रोधसे अत्यन्त कोपयुक्त होकर ५ कहनेलगा कि हे वीर मैं तेरे बाणसे घायलहूं अब तुम मेरी गदाको सहौ तब क्रोधयुक्त भीमसेन ने बड़े शब्दसे यह कहकर उस भयानक रूप गदाको मारनेके निमित्त लिया ६ और कहाकि अरे दुरात्मा अब मैं इस युद्धभूमिमेंही तेरे रुधिर को पानकरूंगा यह वचन सुनकर आपके पुत्रने मृत्युरूप उग्रशक्ति को अकस्मात् फेंका तब क्रोधमें पूर्ण भीमसेन नेभी बड़ी उग्ररूपगदाको घुमाकर फेंका उसगदाने उसकी शक्तिको अकस्मात्

तोड़कर आपके पुत्रको मस्तकपर घायलकिया ७। ८ मदझाड़नेवाले हाथी के समान रुधिरको गिरातेहुये उस दुश्शासनपर फिर भीमसेन ने उस कठिनगदा को चलाया उस गदाके द्वारा भीमसेन ने बड़े हठपूर्व्वक दुश्शासन को दश धनुष की दूरीपरडाला ९ अर्थात् उस वेगवान् गदासे घायल और कंपितहोकर दुश्शासन गिरपड़ा हे महाराज गिरतीहुई गदासे सारथी समेत घोड़े मारेगये और उसका रथभी चूर्ण २ होगया १० टूटे कवच भूषण और पोशाकवाला फड़कताहुआ दुश्शासन कठिन पीड़ासे दुःखीहुआ और सब पाण्डव और पांचालोंने दुश्शासन को देखकर बड़ी प्रसन्नता पूर्व्वक सिंहनादों को किया इसके पीछे भीमसेन इसको गिराकर बड़ी खुशीसे दिशाओं को शब्दायमान करता हुआ गर्जा हे अजमीढ़वंशी सब पार्श्ववर्त्ती नियत मनुष्य भी उस शब्दसे मूर्च्छितहोकर गिरपड़े वेगवान् भीमसेनभी बड़े वेगपूर्व्वक रथसे उतरकर दुश्शासन की ओर दौड़ा और वह शत्रुता जो ११। १२। १३ आपके पुत्रोंकी ओर से कीगईथी उसको स्मरण करके हे राजा चारों ओरसे उत्तम पुरुषों समेत उस घोर और कठिन युद्धके वर्त्तमान होनेपर वहांबुद्धिसे बाहर कर्मवाला महाबाहु भीमसेन दुश्शासन को देखकर १४ देवी द्रौपदी के केशका पकड़ना और उसी रजस्वलाके वस्त्रोंका पृथक् करना इनदोनों बातोंको स्मरण करताहुआ उस निरपराधिनी पतियों से जुदीहुईको दुःखोंके देनेको शोचकर १५ फिर भीमसेन क्रोधसे ऐसा अग्निरूप होगया जैसे कि घृत सींचाहुआ अग्नि प्रज्वलित होताहै ऐसा होकर उसने उस स्थानपर खड़ाहोकर कर्ण दुर्य्योधन, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और कृतवर्मासे कहा १६ कि अब मैं इसपापी दुश्शासनको मारता हूं अब सब युद्ध करनेवाले शूरवीर इसकी रक्षाकरनेको आवो ऐसाकहकर मारनेको उत्सुक महापराक्रमी और वेगवान् भीमसेन सन्मुख दौड़ा १७ इसरीति से भीमसेन ने युद्ध में पराक्रम करके जैसे कि केशरी सिंह हाथी को पकड़ना चाहताहै उसीप्रकार वह अकेला भीमसेन वीर दुर्य्योधन और कर्णके समक्ष में दुश्शासनको पड़नेकी इच्छाकरके १८ बड़े उपायसे उसमें दृष्टीको लगा रथसे कूद पृथ्वीपर गया और सुन्दर धारवाले उत्तम खड्गको उठाकर उस कँपते हुये पृथ्वीपर पड़ेहुये कंठको दबाय छातीको और जंघाको काटकर थोड़ासा गरम २ रुधिर पिया उसके पीछे गिराकर उसके शिरको भी काटने की इच्छासे अपनी

प्रतिज्ञा पूरी करने के लिये उस बुद्धिमान् भीमसेन ने फिर थोड़ासा गरमलोहू पिया और उस रुधिरके स्वादुको लेकर महा क्रोधित होकर सबके सन्मुख यह वचन कहा १६ । २० । २१ कि माता के स्तन्य मधु घृत अच्छी बनीहुई दिव्य माध्वी मदिरा अथवा दुग्ध दधि व दुग्ध दधिको मथकर जो तक्रहोता है इनके सिवाय जो इस संसारमें सुधा और अमृतके स्वादुयुक्त पानकरनेवाले रसहैं उन सब पदार्थों से अब इस शत्रुके रुधिरमें मुझको अधिक स्वाद आताहै २२।२३ तदनन्तर उसको कुछेक सचेतदेखकर भीमसेनने कहा कि हे दुष्ट सभाके मध्यमें जो हमने तेरे रुधिर पीनेकी प्रतिज्ञाकरीथी उसको हमने सत्यकिया अब तुमको कौनसा शूरवीर बचासक्ताहै हे राजा भीमसेन के इस वचनको सुनकर आपके पुत्र दुश्शासन ने उत्तर दिया कि ॥

चौ० येममकर करि कुंभबिदारन । देनहार गो बाजि हजारन ॥
इनके बल तुम सर्वस हारे । वर्षत्रयोदश विपिन विहारे ॥
शरपंजर विरचन बलभारे । पीन पयोधर मर्दनहारे ॥
अति सुकुमार सुगन्धन भीजे । राजसूयके जलसों भीजे ॥
केश द्रौपदीको त्यहि कर्षण । करणहारमम भुजअरिधर्षण ॥
तुमसबलखत रहे त्यहि क्षनमें । तबनरह्यो कछु विक्रमतनमें ॥
अबहम परे समर में ऐसे । मन में रुचै करो सो तैसे ॥
शोणित पानकियो ममसोऊ । यामें ममनहिं अमरष कोऊ ॥
क्षात्रधर्म पालनकरि रण में । हमइमि परे मरे भटगणमें ॥
काकशृगाल पियेंमम शोणित । कैतुमपियो करनिकर द्रोणित ॥
यहसुनि भीमक्रोधअतिगाहिकै । फिरवहि भांति भटनसों कहिकै ॥
गहितो सुतकी भुजा उपारी । सोई तासु गात में मारी ॥
लागो पियन रुधिर पुनितातो । वीर विभित्स रौद्र रसरातो ॥
पिये वारिग्रीषम को प्यासो । तिमिसो रुधिर पियततहँ भासो ॥

दो० भरिअंजलि पीवत रुधिर उमँगि गात पै जात ।
गिराधार धर शिलासम लसै भीमको गात ॥
कुंभकरण सम गराजिकै फिर सब भटन प्रचारि ।
कंठकादि पीवनलगो शोणित कर्म विचारि ॥

कहि कहि कहि ताके किये कर्म आदि ते सर्व।
डकरि डकरि पीवत भयो शोणित भीमसगर्व॥

इसके पीछे महाघोर कर्मी क्रोधमें भराहुआ भीमसेन बड़े.शब्दसे हँसा और दुश्शासन को निर्जीव देखकर यह वचन बोला कि मैं क्या करूं तू मृत्युसे रक्षितहै २४ उससमय जिन जिन लोगोंने इसप्रकार से बोलनेवाले वा दौड़नेवाले स्वादुलेनेवाले अत्यंत प्रसन्न होनेवाले उस भीमसेनको देखा वह सब महाभयभीत होकरभागे २५ और जो लोग कि दृढ़तासे नहीं भागे उनके हाथों से शस्त्र गिरपड़े और बहुतेरे आंखोंको बन्द करके भयके कारण धीरेसे पुकारे और चारों ओरको देखकर २६। २७ कहनेलगे कि यह मनुष्य नहीं है कोई उग्रराक्षसहै इसप्रकार कहकर भयभीत होकरभागे २८ और राजपुत्र युधामन्यु अपनी सेना समेत उस भागेहुये चित्रसेन के सन्मुखगया और बड़ी निर्भयतासे तीक्ष्ण धारवाले साठ पृपत्कों से उसको पीड़ामान किया २९ ऊंचाफल करनेवाले जिह्वा के चाटनेवाले क्रोधरूप विषके छोड़ने को अभिलाषी बड़े सर्पके समान चित्रसेनने लौटकर उस युधामन्युको तीन बाणोंसे और उसके सारथी को छःबाणों से छेदा ३० इसके पीछे शूरवीर युधामन्युने सुन्दर पुंख और नोकवाले अच्छे प्रकार धनुषपर चढ़ायेहुये कानतक खैंचेहुये बाणसे उसके शिरको काटा ३१ उसभाई चित्रसेन के मरनेपर बड़े तेजस्वी शूरताको दिखलाते क्रोधयुक्त कर्णने पाण्डवीसेना को भगाया और नकुलके सन्मुखगया ३२ वहां पर भीमसेन भी दुश्शासनको मारकर बड़ा क्रोधयुक्त कठोर शब्द करता अपनी रुधिरकी अंजलीको पूजकर ३३ सब लोकोंके वीरोंको सुनाकर यह वचन बोला कि हे नीच पुरुष मैं इस तेरे रुधिरको कण्ठसे पीताहूं ३४ अब तुम अत्यन्त प्रसन्नहोकर फिर कहौ कि हे गौ हे गौ उससमय जो जो लोग हमको देखकर नाचतेथे वह हे गौ हे गौ इस शब्दको फिर कहें ३५ हम उनके सन्मुख नाचते हैं वह फिर कहैं कि हे गौ हे गौ प्रमाणकोटीनाम स्थानमें सोना कालकूटनाम विषका भोजन काले सर्पोंसे काटना लाक्षागृहमें भस्महोना द्यूतविद्या से राज्यका हरना वनमें निवास ३६। ३७ द्रौपदीके केशोंका भयानक पकड़ना और युद्धमें बाण अस्त्र और स्थानपर अत्यन्त दुःख ३८ विराट भवनमें नवीन प्रकारके दुःख जो हमकोहुये और जो दुःख कि शकुनि दुर्य्योधन और कर्णके मतसेहुये ३९ उन सब कारणों

का हेतुरूप तुही है हमने इन दुःखों के सिवाय कभी सुख को नहीं पाया ४० पुत्रसमेत धृतराष्ट्रकी दुर्बुद्धी से हमलोग सदैव दुःखीहुये हे महाराज राजाधृत-राष्ट्र यह कहकर विजयको पाकर ४१ फिर मन्द मुसकान करता वेगवान् रुधिर में भरा लालमुख और क्रोधमें भराहुआ भीमसेन अर्ज्जुन और केशवजी से बोला कि हे वीरो युद्धमें दुश्शासन के साथ जो प्रतिज्ञाकरी थी वह यहां अब मैं सत्य२करके पूरीकरी इस स्थानपर यज्ञ पशुरूप दुर्य्योधन को मारकर मैं अपनी दूसरी प्रतिज्ञाको भी पूरीकरूंगा ४२।४३ जब कौरवों के समक्षमें इसके शिरको काटूंगा तभी मैं शान्तीको पाऊंगा फिर वह रुधिर में डूबाहुआ अत्यन्त प्रसन्न चित्त भीमसेन इस वचनको कहकर बड़े शब्दसे ऐसा गर्जा जैसे कि सहस्राक्ष इन्द्र वृत्रासुर को मारकर प्रसन्नतासे गर्जाथा ४४।४५॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिदुश्शासनवधेचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४॥

पचासीवां अध्याय॥

संजय बोले कि हे राजा फिर दुश्शासन के मरनेपर क्रोधरूपी बड़े विष के रखनेवाले युद्धोंमें मुख न फेरनेवाले महापराक्रमी आपके शूरवीर दश पुत्रों ने बाणों से भीमसेन को ढकदिया उनके नाम यहहैं निषंगी कवची, प्राशी, दण्ड-धार, धनुर्द्धर १।२ अलोलुप, सहखण्ड, वातवेग सुवर्चस भाई के दुःखसे पीड़ा-मान इन दशों ने मिलकर ३ महाबाहु भीमसेनको रोका फिर चारोंओरसे उन महारथियों के बाणों से रोकाहुआ ४ क्रोधअग्नि से रक्तनेत्र वह भीमसेन क्रोध भराहुआ कालके समान शोभायमानहुआ उस समय पाण्डव भीमसेन ने सु-नहरी पुंखवाले दशभल्लों से उन सुनहरी बाजूबन्द रखनेवाले दशों भाई भरत-वंशियों को यमलोक में पहुँचाया उन वीरोंके मरनेपर ५।६ भीमसेनके भयसे पीड़ित आपकी सेना कर्णके देखतेहुये भागी हे महाराज इसके अनन्तर कर्ण७ प्रजाओंपर पराक्रम करनेवाले काल मृत्युके समान भीमसेनके पराक्रमको देख-कर बड़ा भयभीत हुआ उसके रूपान्तर सूरतसे वृत्तान्त के जाननेवाले युद्ध में शोभायमान राजा शल्य ने ८ उस शत्रुविजयी कर्ण से समय के अनुसार यह वचन कहा कि हे राधाके पुत्र पीड़ा मतकर तुझको ऐसी पीड़ा करना उचित नहीं है ६ भीमसेन के भय से पीड़ामान होकर यह राजालोग भागते हैं और

भाईके दुःखसे पीड़ामान दुर्य्योधन अचेत होरहाहै १० बड़े साहसीसे दुश्शासन का रुधिर पीनेपर अचेत और शोकसे घायल चित्त ११ कृपाचार्य्य आदि यह मरनेसे बाकी बचेहुये सगे भाई चारों ओरसे दुर्य्योधन के पास बैठे नियतहैं १२ और लक्षभेदी शूरवीर पाण्डव जिनमें अग्रगामी अर्ज्जुनहै वह युद्धके लिये तेरे सन्मुख वर्त्तमानहै १३ हे पुरुषोत्तम इससे अब तुम शूरवीरतासे नियत होकर क्षत्री धर्म को आगे करके अर्ज्जुन के सन्मुख जावो १४ राजा दुर्य्योधनने सब युद्धका भार तुम्हीपर नियत कियाहै हे महाबाहो उस भारको तुम अपने बल और पराक्रमसे उठावो १५ विजय करनेमें तो अतुल्य कीर्त्ति होगी और पराजयमें निश्चय स्वर्ग है हे राधाके पुत्र अत्यन्त क्रोधयुक्त तेरा पुत्र १६ तेरे मोहित होनेपर पांडवों के सन्मुख दौड़ताहै बड़े तेजस्वी शल्य के इस वचनको सुनकर १७ कर्णने युद्ध करनेका दृढ़ विचार अपने हृदयमें नियत किया उसके पीछे क्रोधयुक्त वृषसेन उस सन्मुख वर्त्तमान भीमसेन के सन्मुख दौड़ा १८ जोकि दण्डधारी काल के समान गदा धारण करनेवाला आपके शूरों से युद्धकर रहाथा और बड़ा भारी नकुल पृषत्कोंसे शत्रुओंको पीड़ामान करता दौड़ा १९ युद्धमें प्रसन्नचित्त उस कर्ण के पुत्र वृषसेनके सन्मुख ऐसे गया जैसे कि पूर्व्वसमय में जम्भ के मारनेकी इच्छा से इन्द्र उसके सन्मुख गयाथा वहां पहुँचकर वीर नकुलने क्षुरप्रसे उसकी उस ध्वजाको काटा जोकि श्वेतरंगके अपूर्व्व कवचवालीथी २० और सुनहरी चित्रोंसे चित्रित अत्यन्त अद्भुत वृषसेनके धनुषको काटा तब तो कर्णके पुत्र ने शीघ्रही दूसरे धनुषको लेकर नकुलको छेदा २१ दुश्शासन का बदला लेने के अभिलाषी कर्णके पुत्र वृषसेनने दिव्य महा अस्त्रोंसे नकुलको घायल किया उस के पीछे क्रोधयुक्त महात्मा नकुलने बड़ी उल्काके समान बाणोंसे उसको छेदा २२ फिर अस्त्रज्ञ कर्णका पुत्र दिव्य अस्त्रों से नकुलपर वर्षा करनेलगा हे राजा वह कर्णका पुत्र बाणोंके प्रहार वा क्रोध वा अपने तेज अथवा अस्त्रोंके चलानेसे ऐसा अत्यन्त क्रोधरूप हुआ जैसे कि घृतकी आहुतियों से बढ़ीहुई अग्निहोती है हे राजा कर्ण के पुत्रने अपने उत्तम अस्त्रोंसे नकुलके उन सब घोड़ोंकोमारा २३।२४ जो कि श्वेतरूप बड़े ऊंचे सुनहरी जालों से अलंकृत वनायुज नाम प्रकार के थे उसके पीछे मृतक घोड़ेवाले रथसे उतरकर सुवर्णमयी चन्द्रमावाली निर्म्मल ढालको लेकर २५ आकाशरूप खड्गको पकड़कर चलायमान पक्षीके समान

घूमा उस समय अपूर्व्व युद्ध करनेवाले नकुलने शीघ्रतासे अन्तरिक्षमें रथ घोड़े और हाथियों को मारा २६-खड्गसे कटकर वह सब पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि अश्वमेध यज्ञ में मारनेवाले के हाथसे यज्ञपशु गिरपड़ताहै नानादेशों में उत्पन्न होनेवाले अच्छी जीविका पानेवाले सत्यसंकल्पी दोहज़ार शूरवीर गिर पड़े २७ युद्ध में विजयाभिलाषी चन्दनसे युक्तशरीर उत्तम शूरवीरलोग अकेले नकुलके हाथसे मारेगये फिर उसने सन्मुख जाकर उस आतेहुये नकुलको शायकों के द्वारा चारोंओरसे घायलकिया २८ पृषत्कों से पीड़ामान उस नकुलने भी उस वीर को व्यथितकिया फिर वहभी व्यथित होकर महा क्रोधयुक्तहुआ बड़े भारी घोरभयमेंभी भाई भीमसेन से रक्षित नकुलने यहांभयको नहींकिया २६ फिर क्रोधयुक्त कर्णके पुत्रने बहुतसे मनुष्य घोड़े हाथी और रथों के मर्द्दन करने वाले पीड़ामान अकेले वीर नकुलको अठारह पृषत्कोंसे पीड़ामानकिया ३० हे राजा उस महायुद्धमें वृषसेनसे महाघायल वह बड़ावेगवान् नरवीर नकुल कर्ण के पुत्रको मारनेको युद्धमें दौड़ा ३१ जैसे कि मांसका चाहनेवाला पक्षोंको फैलाकर आनेवाले बाज पक्षी को घायलकरताहै उसीप्रकार उसक्रोधयुक्त बड़ेपराक्रमी आनेवाले नकुल को अपने तीक्ष्णबाणों से वृषसेनने ढकदिया ३२ वह नकुल उसके बाणों को निष्फल करताहुआ अपूर्व्व रूपके मार्गों में घूमा हे महाराज इसके पीछे कर्णके पुत्रने खड्गसमेत उस घूमनेवाले नकुलकी उसहजारों नक्षत्रों से चित्रित अपने बड़े बाणों से टुकड़े २ करके उस खड्गको भी काटा जो कि लोहे से निर्मित तीक्ष्णधारवाला मियानसे जुदा महाभयानक बड़ेभार का सहनेवाला ३३।३४ शत्रुओं के शरीरों का नाशकरनेवाला महाघोर सर्प के समान उग्ररूपथा उसको उस कर्णके पुत्रने तीक्ष्णधारवाले उत्तम छः बाणों से शीघ्रही काटडाला और नकुलको छातीपर बड़ेतीव्र पृषत्कों से छेदा हे राजा युद्धमें अन्यमनुष्यसे कठिनतासे करनेके योग्य श्रेष्ठ मनुष्यों से सेवितकर्म को करके फिर बाणों से दुःखित महात्मा ३५।३६ शीघ्रताकरनेवाला नकुल भीमसेनके रथके पासगया वह मृतकघोड़ेवाला कर्ण पुत्रके बाणों से व्यथित माद्रीनन्दन नकुल अर्जुनके देखते भीमसेनके रथपर ऐसेगया जैसे कि सिंह पर्व्वत की नोकपर चढ़जाताहै उसके पीछे बड़ासाहसी क्रोधयुक्त वृषसेन अपने बाणों को दोनों के ऊपर बरसानेलगा ३७।३८ तब एकरथपर मिलेहुये दोनों महारथी

पाण्डवों ने उसको भी बाणों से छेदा फिर शीघ्रही विशिखों से रथ और खड्गके खण्डित होनेपर ३९ बड़े वीर मिलेहुये कौरवोंने सन्मुख आकर पूजीहुई अग्नि के समान उन दोनों पाण्डवों को चारोंओरसे बाणों के द्वारा घायलकिया फिर क्रोधयुक्त भीमसेन और अर्जुनने बड़े घोर बाणोंकी वर्षा वृषसेनपर करी इसके अनन्तर भीमसेन अर्जुनसे बोले कि इस पीड़ामान नकुलकोदेखो ४०।४१ और यह कर्णका पुत्र हमको पीड़ा देताहै इससे अबतुम उस कर्णके पुत्रके सन्मुख जावो इसवचनको सुनकर वह अर्ज्जुन भीमसेनके रथकोपाकर नियतहुआ४२ इसकेपीछे नकुल उस वीरको देखकर बोला कि शीघ्रही इस सन्मुख आनेवाले को मारो इसप्रकार भाईके वचनको सुनकर अर्जुन ४३ कपिध्वजवाले केशव जी को सारथी रखनेवाले अपने रथको वृषसेनके घोड़ोंके समीपलाया ४४॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिवृषसेनयुद्धेनकुलपराजयोनामपंचाशीतितमोऽध्यायः ८५॥

छियासीवां अध्याय॥

इसके पीछे नकुलको टूटा धनुष खड्ग वाला रथसेरहित शत्रुओं के बाणोंसे घायल कर्णके पुत्रके अस्त्र से पराजित जानकर वह वीर जिन की पताका वायु से कंपित और घोड़े शब्दों को करते अच्छे शीघ्रगामीथे अपने सेनापति की आज्ञासे रथोंकी सवारीसे शीघ्रचले आये १ अर्थात् उनके नाम वरिष्ठद्रुपदके पांचोपुत्र जिनमें छठा सात्यकी है और पांचों द्रौपदीके पुत्र यह सब शस्त्रधारी सर्पराज के समान बाणों से आपके हाथी रथ मनुष्य और घोड़ोंको मारते चढ़ आये २ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले कृपाचार्य्य, कृतवर्मा, अश्वत्थामा और दुर्य्योधन यह सब आपके उत्तम रथी उनके सन्मुख गये३ हे राजा शकुनि, सुतवृप, क्राथ, देवावृद्ध यह आपके वीर रथी हाथी और बादलके समान शब्दायमान रथ और धनुषों समेत उन ग्यारह वीरों के रोकनेवाले हुये अत्यन्त उत्तम बाणों से घायल करते ४ कलिन्ददेशी बादल और पर्व्वतके शिखरों के समान भयानक वेगवाले हाथियों समेत उनके सन्मुख गये और अच्छे प्रकारसे अलंकृत मदसे मतवाले युद्धाभिलापी कर्मकर्त्ता पुरुषों से युक्त ५ सुनहरी जालों से अलंकृत हाथी ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि आकाश में बिजली रखनेवाले बादल होतेहैं वहां कलिन्दके पुत्रने दशलोहे के बाणों से कृपाचार्य्यको सारथी

और घोड़ों समेत अत्यन्त घायल किया ६ इसके पीछे कृपाचार्य्य के बाणों से वह मराहुआ कलिन्दका पुत्र हाथी समेत पृथ्वीपर गिरपड़ा तब उसका छोटा भाई सूर्य्यकी किरणके समान प्रकाशित लोहेके तोमरोंसे ७ रथको कंपायमान करके गर्जा इसके पीछे राजा गान्धार ने इस गर्जनेवाले के शिरको काटा तदनन्तर उन कलिंग देशियों के मरने पर अत्यन्त प्रसन्न रूप आपके उन महारथियों ने ८ शंखोंको बड़ी ध्वनियों से बजाया और धनुषको हाथमें रखनेवाले होके शत्रुओं के सन्मुखगये इसके पीछे सृञ्जियों समेत पाण्डव और कौरवों का महाघोर भयकारी वह युद्ध फिर हुआ ९ जोकि बाण खड्ग शक्ति दुधारे खड्ग गदा और फ़रसों से मनुष्य हाथी और घोड़ों के प्राणोंका हरनेवाला था इसके अनन्तर हजारों रथ घोड़े और हाथी पदातियोंसे परस्पर में घायल होकर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़े १० जैसे कि बिजली और गर्जना रखनेवाले धुवेंसेयुक्त बादल दिशाओं से गिरे उसके पीछे सैकड़ों सेना रखनेवाले हाथी रथी और पतियोंके समूहों को ११ और घोड़ोंको भोजवंशी कृतवर्मा ने मारा वह सब उसके बाणों से मृतक होकर एक क्षणमेंही गिरपड़े उसके पीछे अश्वत्थामा के बाणसे सब शस्त्र और ध्वजाओं समेत घायल शूरवीर १२ और निर्जीव अन्य बड़े २ हाथी ऐसे पृथ्वी पर गिरपड़े जैसे कि वज्रसे ताड़ित बड़े २ पर्व्वत गिरते हैं १३ राजा कलिन्द के छोटे भाईने उत्तम बाणों से आपके पुत्रको छातीपर घायल किया फिर आपके पुत्रोंनेभी अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उसके शरीरसमेत हाथीको मारा १४ तब वह गजराज उस राजकुमार समेत सब ओरको रुधिर को गेरता ऐसे गिर पड़ा जैसे कि बादलों के आनेमें इन्द्रके वज्रसे टूटा धातुवान पर्व्वत जलको गिराता गिरपड़े १५ फ़िर कलिन्द के पुत्रके भेजेहुये दूसरे हाथीने किरात को सारथी घोड़े और रथके समेत मारा तदनन्तर बाणोंसे घायल हाथी अपने स्वामी समेत ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वज्रका माराहुआ पर्व्वत होताहै १६ वह रथमें सवार कठिनतासे विजय होनेवाला राजा किरात हाथी सारथी धनुप और ध्वजा समेत उस हाथीपर सवार पर्व्वतीके बाणोंसे घायल ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बड़ी वायुसे ताड़ित और कम्पित होकर बड़ा वृक्षहोताहै १७ वृकने गिरिराजके रहने वाले हाथी के सवार को बारह बाणों से अत्यन्त घायलकिया उसके पीछे उस बड़े हाथी ने बड़ी शीघ्रतासे चारों पैरों से घोड़े और रथ समेत वृकको मारा १८

फिर उस बभ्रू के पुत्रके वाणों से कठिन घायल वह गजभी अपने हाथी सवार समेत गिरपड़ा सहदेवके पुत्रके हाथसे घायल और पीड़ामान वह देववृद्ध का पुत्रभी गिरपड़ा १६ उत्तम युद्धकर्त्ताओं के ऊपर गिरनेवाले हाथीकी सवारी से राजा कलिन्दका विषाणगात्र नाम पुत्रभी बड़े वेगसे शकुनि को बहुत कठिन पीड़ित करताहुआ उसके मारने को गया उसके पीछे गांधारके राजा शकुनी ने उसके शिरको काटा २० उससमय उन कलिन्द देशियों के मरनेपर अत्यन्त प्रसन्नमूर्त्ति आपके अन्य महारथियों ने शंखों को अच्छीरीति से बजाया और धनुष हाथों में लिये शत्रुओं के सन्मुख गये २१ इसके पीछे कौरवों का युद्ध पाण्डव और सृञ्जियों के साथ ऐसा हुआ जो अत्यन्त भयकारी वाण खड्ग शक्ति दुधारे खड्ग गदा और फरसों से रथ हाथी और घोड़ों के प्राणों का हरने वाला घोर रूप था २२ फिर परस्पर में घायल रथ घोड़े हाथी और पदाती पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़े जैसे कि प्रचण्ड वायु से ताड़ित बिजली और गर्जना रखने वाले वादल दिशाओं से गिरते हैं २३ इसके पीछे आपके बड़े हाथी घोड़े रथ और पतियों के समूह शतानीक के हाथ से मारेगये और अचेततासे चूर्णचूर्ण होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि गरुड़जी के पंखों की वायु से घायल सर्प्प गिरते हैं २४ उसके पीछे मन्दमुसकान करतेहुये कलिन्दके पुत्रने बड़े तीक्ष्ण वाणों से नकुल के बेटों को छेदा फिर नकुल के पुत्रने भी क्षुरप्र से कमलरूपी मुख रखनेवाले उसके शिरको शरीरसे काटा २५ तब कर्ण के पुत्रने तीन लोहे के वाणोंसे शतानीक को और तीनबाणों से अर्जुन को तीनसे भीमसेन को सात से नकुल को और बारहसे श्रीकृष्णजी को घायलकिया २६ तदनन्तर प्रसन्न चित्त कौरवों ने बुद्धिसे बाहर कर्म करनेवाले कर्ण के पुत्रके उस कर्म को देखकर बड़ी प्रशंसाकरी परन्तु जो अर्जुनके पराक्रम के जाननेवाले थे उन्होंने यहमाना कि अब यह अग्निमें होमागया २७ इसके पीछे नरों में बड़ा शूरवीर शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला अर्जुन माद्री के पुत्र नकुल को मृतक घोड़ेवाला देखकर और लोक में श्रीकृष्णजी को अत्यन्त घायल विचारकर २८ युद्धमें वृषसेन के सन्मुख दौड़ा तब कर्ण का पुत्र उस आनेवाले नरवीर गुरुरूप महा युद्ध में हजारों वाणधारण करनेवाले महारथी अर्जुन के सन्मुख ऐसेगया जैसे कि पूर्व्व समयमें नमुचि महाइन्द्र के सन्मुख गयाथा उसके पीछे कर्ण का पुत्र शीघ्रता

पूर्व्वक बड़ेतीव्र और स्वच्छ बाणोंसे अर्जुन को छेदकर युद्ध में ऐसे महाशब्द से गर्जा जैसे कि वह महानुभाव वीर नमुचि इन्द्रको छेदकर गर्जाथा फिर उस वृषसेन ने उग्रबाणों से अर्जुन की वाम भुजा की जड़ में छेदा २९ । ३० । ३१ और इसीप्रकार नौबाणों से श्रीकृष्णजी को पीड़ामान किया इसके पीछे फिर भी अर्जुन को दशबाणों से घायल किया जैसे कि वृषसेन के पहले बाणों से अर्जुन घायलहुआ ३२ और कुछ क्रोधयुक्त हुआ फिर दूसरी बारके बाणों से उसके मारने का मनमें विचार किया फिर अर्जुन ने युद्धमुखपर अपने क्रोधसे ललाटपर भृकुटी को तीनरेखावाली करके ३३ शीघ्रही विशिखों को छोड़ा तब युद्धमें कर्ण के पुत्रके मारने में चित्तको प्रवृत्त करके बड़ासाहसी नेत्रों के कोणों को लाल करके अर्ज्जुन बहुत हँसकर कर्ण दुर्य्योधन और अश्वत्थामा आदि शूरवीरों से बोला ३४ हे कर्ण अब मैं तेरे देखतेहुये तीक्ष्णधारवाले पृषत्कों से इस उग्ररूप वृषसेन को परलोकमें पहुँचाताहूं ३५ निश्चय करके तबतक मनुष्य कहैंगे जो मुझसे पृथक् अकेला यह मेरा रथी वेगवान् पुत्र आप सबके हाथसे मारागया इसीसे मैं आप सब लोगों के समक्षमें इसको मारूंगा ३६ रथों में सवार तुम सब मिलकर इसकी अच्छी रीतिसे रक्षाकरो यह उग्ररूप आपका वृषसेन पुत्रहै इसको मैं मारूंगा इसके पीछे इसी युद्धभूमिमें जो मेरा नाम अर्जुन जो तुझ महा अज्ञानी को भी इसीप्रकार से न मारूं ३७ अब मैं युद्धमें तुझ उपद्रव के मूल दुर्य्योधन की आश्रयता से अहंकारी होनेवाले को बड़ी हठता से मारूंगा और इसनीच दुर्य्योधन का मारनेवाला भीमसेनहै ३८ जिसके कि अन्यायसे यह बड़ाभारी वीरों का नाशहुआ ऐसा कहकर उसने अपने धनुष को तैयार करके और युद्धभूमिमें वृषसेन को लक्षबनाकर ३९ उस बड़े साहसीने कर्ण के पुत्रके मारने के लिये विशिखनाम बाणों को छोड़ा हे राजा हँसतेहुये अर्जुन ने दश पृषत्कों से वृषसेन को मर्म्मस्थलों में वेधा ४० और क्षुरप्रनाम तीक्ष्ण चार बाणों से धनुष समेत उसकी दोनों भुजाओं समेत शिरको काटा अर्जुन के बाणों से घायल और वेशिर होकर वह कर्ण का पुत्र रथसे पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा ४१ जैसे कि बहुत लम्बा और फूलाहुआ शालका वृक्ष वायुके वेगसे पर्व्वत के शिखरसे गिरपड़े फिर शीघ्रता करनेवाले कर्ण ने बाणों से मरे हुये रथसे गिरतेहुये पुत्रको देखकर ४२ शीघ्रही पुत्रके मारने से अर्जुनपर क्रो-

धयुक्त होकर अपने रथको उसके सन्मुख किया अर्थात् युद्ध में अपने नेत्रों के सन्मुख पुत्रको माराहुआ देखकर ४३ वह महासाहसी अत्यन्त क्रोध में मूर्च्छित होकर अकस्मात् श्रीकृष्ण और अर्जुन के सन्मुख दौड़ा ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिवृषसेनवधोनामषडशीतितमोऽध्यायः ८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि मर्य्यादाके उल्लंघन करनेवाले समुद्र के समान डीलडौल युक्त उस गर्जनेवाले आयेहुये कर्णको देखकर १ पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी हँसकर अर्जुनसे बोले कि यह श्वेत घोड़ेवाला शल्यको सारथी बनानेवाला अधिरथी आताहै २ इसकेसाथ तुझको लड़ना चाहिये हे अर्जुन अब दृढ़ होकर नियतहो हे पाण्डव इसरथको देखो जोकि अच्छे प्रकारसे बनाहुआ ३ श्वेत घोड़ों से युक्त राधाके बेटे की सवारी से शोभित नानाप्रकार की ध्वजा पताका और क्षुद्र घण्टिकाओं के जालोंका रखनेवाला ४ और श्वेत घोड़ेरूप आकाशमें चलने वाला चित्रविचित्ररूप आकाशके विमानके समानहै और महात्मा कर्णके नाग की कक्षाका चिह्न रखनेवाली ध्वजाको देखो ५ और इन्द्र धनुष के समान धनुष से मानो आकाशमें लिखनेवाले दुर्य्योधनका अभीष्ट चाहनेवाले बाणोंकी वर्षा से युक्त आतेहुये कर्ण को ऐसे देखो जैसे कि जलकी धाराओं के छोड़नेवाले बादलको देखते हैं रथके आगे नियत यह मद्रदेशकाराजा ६ । ७ उस बड़े तेजस्वी कर्ण के घोड़ों को हांकताहै दुंदुभियों और शंखों के भयानक शब्द ८ और नानाप्रकार के सिंहनादों का सबओरसे सुनो हे पाण्डव बड़े तेजस्वी कर्ण के द्वारा बड़े २ शब्दों को गुप्तकरके ९ कठोर कंपायमान धनुष के शब्दको सुनो यह पांचालों के महारथी अपने सेना समूहों समेत छिन्नभिन्न होकर ऐसे पृथक् होते हैं जैसे कि महावन में क्रोधयुक्त केशरी सिंहको देखकर छिन्नभिन्न होकर मृग पृथक् होते हैं हे अर्जुन तुम सब उपायों से कर्ण के मारने के योग्यहो १० । ११ तुम्हारे सिवाय दूसरा मनुष्य कर्ण के बाण सहनेकी सामर्थ्य नहीं रखताहै देवता असुरगंधर्व और जड़ चैतन्य जीवों समेत तीनोंलोक के १२ विजय करने को तुम्हीं समर्थहो यह मैं निश्चय जानताहूं कि उस भीम उग्ररूप महात्मा त्रिनेत्र धारी कपर्द्दी प्रभु शिवजी के १३ देखने को भी कोई समर्थ नहीं होसक्ता है फिर

युद्ध करनेकी किसको सामर्थ्य होसक्ती है तुमने सब जीवमात्रके कल्याण रूप साक्षात् महादेवजीकी युद्धकेही द्वारा आराधनाकरी १४ और देवता भी तुझ को वर देनेवाले हैं हे महाबाहो अर्ज्जुन उस देवताओं के भी देवता शूलधारी शिवजीकी कृपासे १५ तुम कर्ण को ऐसे मारो जैसे कि इन्द्रने नमुचिको मारा था हे अर्जुन सदैव तेरा कल्याण होय तू युद्धमें विजयको पावेगा १६ अर्जुन ने कहा हे कृष्णजी जो सब लोकके गुरु और स्वामी आप मेरेऊपर प्रसन्नहैं तो निश्चय करके मेरी अवश्य विजयहै इसमें किसीप्रकार का सन्देह नहीं है १७ हे महारथी श्रीकृष्णजी मेरे रथ और घोड़ों को चलायमान करो अब अर्ज्जुन कर्ण को विना मारेहुये युद्धसे नहीं लौटेगा १८ हे गोविन्दजी अब मेरे बाणों से कर्ण को मृतक और खंड २ देखोगे अथवा कर्ण के बाणों से मुझको मृतक और खंड खंड देखोगे १९ यह तीनोंलोकों का मोहनेवाला घोर युद्ध अब वर्त्त-मानहुआ जिसको पृथ्वी जबतक रहैगी तबतक मनुष्य वर्णनकरेंगे २० तब सु-गमकर्मी श्रीकृष्णजी से ऐसा कहताहुआ अर्ज्जुन रथकी सवारी के द्वारा ऐसी शीघ्रतासे सन्मुखगया जैसे कि हाथी हाथी के सन्मुख जाताहै २१ तेजस्वी अ-र्ज्जुन फिर भी शत्रुसंहारी श्रीकृष्णजी से बोला कि हे हृषीकेशजी आप शीघ्र घोड़ों को तीव्रकरो यह समय व्यतीत हुआ जाताहै २२ उस महात्मा अर्ज्जुन के इसवचनके कहतेही श्रीकृष्णजी ने उसको विजयका आशीर्वाद देकर चित्त के समान शीघ्रगामी घोड़ों को तीक्ष्ण किया २३ चित्त के समान शीघ्रगामी वह अर्जुनका रथ क्षणमात्रमेंही कर्ण के रथसे आगे होगया २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णवधायअर्जुनप्रस्थानेसप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७॥

अट्ठासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि वृषसेनको मृतक देखकर शोक संतापसे युक्त कर्ण ने पुत्रके शोकसे उत्पन्न होनेवाले जलको नेत्रों से छोड़ा १ फिर क्रोधसे रक्तनेत्र तेजस्वी कर्ण युद्धके निमित्त अर्जुन को बुलाता रथकी सवारी के द्वारा शत्रु के सन्मुख गया २ सूर्य्य के समान प्रकाशमान व्याघ्रचर्मसे मढ़ेहुये वह दोनों और दोनोंके रथ मिलेहुये ऐसे दिखाईदिये जैसे कि आकाशमें वर्त्तमान दो सूर्य्य होयँ ३ वह शत्रुओं के मर्द्दन करनेवाले दिव्यपुरुष श्वेत घोड़ेवाले दोनों महात्मा युद्धभूमि

में नियत होकर ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि स्वर्ग में चन्द्रमा और सूर्य्य शोभा देते हैं ४ हे श्रेष्ठ तीनोंलोक के विजय करने में उपाय करनेवाले इन्द्र और वैरोचन असुरके समान उनदोनोंको देखकर सबसेनाके मनुष्यों को बड़ा आश्चर्य साहुआ ५ रथ कवच प्रत्यंचा और बाणों के शब्द और इसी प्रकार सिंहनादों समेत सन्मुख दौड़नेवाले उन रथियों को देखकर ६ और मिलीहुई ध्वजाओंको भी देखकर राजाओं को आश्चर्य्य उत्पन्न हुआ गजकी कक्षाके चिह्न वाली कर्णकी ध्वजा और हनुमान्जी के रूपकी धारण करनेवाली अर्जुन की ध्वजा थी ७ हे भरतवंशी फिर सब राजाओं ने उन मिलेहुये रथियों को देखकर सिंहनाद पूर्व्वक बड़ी प्रशंसाकरी ८ वहांपर हजारों शूरवीरों ने उन दोनों के साथ में द्वैरथ युद्धको देखकर भुजाके शब्द अर्थात् खम्भोंको फटकार कर दुपट्टों को घुमाया ९ और कर्णके प्रसन्न करने को कौरव लोगों ने चारोंओर से बाजों को बजाकर सबने शंखों को बजाया १० इसी प्रकार अर्ज्जुन की प्रसन्नता के लिये सब पाण्डवों ने तूरी और शङ्ख के शब्दों से सब दिशाओं को शब्दायमान किया ११ सिंहनाद तालोंका ठोकना शूरोंका पुकारना और शूरोंकी भुजाओंके महाकठोर शब्द अर्जुन और कर्णकी सन्मुखता में सब ओरको हुये १२ हे राजा उन रथपर नियत रथियों में श्रेष्ठ बड़े धनुषधारी बाण शक्ति ध्वजा से युक्त १३ कवच खड्गधारी श्वेत घोड़ों समेत मुखोंसे शोभायमान उत्तम तूणीर बांधे सुन्दर दर्शन १४ लालचन्दन से अलंकृत सुन्दर शरीर उत्तम मतवाले बैलों के समान धनुष और ध्वजारूपी बिजुली से युक्त घनरूपी शस्त्रोंसे युद्धकरनेवाले १५ चमर और व्यजनों से युक्त श्वेत छत्रोंसे शोभित श्रीकृष्ण और शल्यको सारथी रखनेवाले एकसे रूप महारथी १६ सिंहके समान स्कन्ध लम्बी भुजा रक्तनेत्र सुवर्ण की मालाओं से भूषित सिंहके समान शरीर बड़ेहृदय और पराक्रमवालेपरस्पर एक दूसरे का मरण चाहनेवाला दोनों परस्पर विजयाभिलाषी, गोशाला में उत्तमबली बधों के तुल्य परस्पर सन्मुख दौड़नेवाले मतवाले हाथियों के और पर्व्वतों के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त १७।१८ विषैले सर्प के बच्चोंके समान यमराज काल और मृत्युके समान इन्द्रवज्रके समान क्रोधी सूर्य्य चन्द्रमाके समान तेजस्वी १९ प्रलयकालके लिये उठेहुये महाग्रहोंके समान क्रोधमेंभरे देवकुमार देवताके समान पराक्रमी रूपमें भी देवरूप दैवकी इच्छासे सूर्य्य चन्द्रमाके स-

मान सन्मुख आनेवाले पराक्रमी युद्ध में अभिमानी लड़ने में नानाप्रकार के शस्त्रोंके रखनेवाले २० । २१ शार्दूलों के समान नियत उनदोनों पुरुषोत्तमों को देखकर आपके शूरवीरों को बड़ा आनन्दहुआ २२ भिड़े हुये पुरुषोत्तम कर्ण और अर्जुनको देखकर पूरी विजय में सब जीवोंको सन्देह वर्त्तमान हुआ २३ दोनों उत्तम शस्त्रधारी और युद्धमें परिश्रम करनेवालों ने भुजाओं के शब्दोंसे आकाश मण्डलको शब्दायमान किया २४ दोनों वीरता और पराक्रमसे प्रसिद्धकर्मी और समरमें देवराज और सम्बरकेसमान थे २५ फिर दोनों सहस्राबाहु के समान वा श्रीरामचन्द्रजीके तुल्य पराक्रमी और उसीप्रकार युद्धमें शिवजी के समान पराक्रमी थे २६ हे राजा दोनों श्वेत घोड़ेवाले उत्तम रथोंकी सवारी रखनेवाले थे और उस बड़े युद्धमें दोनोंके श्रेष्ठतर सारथी थे २७ हे महाराजइस के अनन्तर उन शोभायमान महारथियों को देखकर सिद्ध चारण लोगों के समूहों को भी आश्चर्य्य उत्पन्न हुआ २८ हे भरतर्षभ इसके पीछे सेना समेत आपके पुत्रोंने युद्धको शोभा देनेवाले महात्मा कर्णको शीघ्रही चारों ओरसे घेरकर रक्षित किया २९ इसी प्रकार प्रसन्न रूप पाण्डवोंने भी जिनके अग्रगामी धृष्टद्युम्नथा उस युद्धमें अनुपम महात्मा अर्ज्जुन को चारोंओर से रक्षित किया ३० हे राजा तब युद्ध में आपके पुत्रोंका रक्षक कर्ण हुआ और पाण्डवों का रक्षक अर्ज्जुन हुआ ३१ वहांपर वही सब वर्त्तमान शूर सभासद हुये और वही देखनेवाले हुये वहां इनरक्षा करनेवालों की विजय और पराजय निश्चय हुई युद्धके अग्रभाग में वर्त्तमान पाण्डव और हमलोगों का विजय और पराजयवाला द्यूत उन दोनों शूरवीरों के द्वारा जारी हुआ ३२ । ३३ हे महाराज वह युद्धभूमि में युद्ध में प्रशंसनीय परस्पर क्रोधभरे परस्पर के मारनेकी इच्छा से नियतहुये ३४ हे प्रभु वह दोनों क्रोधरूप इन्द्र और वृत्रासुर के समान प्रहार करने के उत्सुक हुये और बड़े धूम्रकेतु उपग्रहों के समान भयानक रूपधारी हुये ३५ हे भरतर्षभ इसके पीछे कर्ण और अर्ज्जुन के विषय में अन्तरिक्ष में जीवों के परस्पर में निन्दा स्तुतिकरने के शास्त्रार्थरूप वादहुये ३६ पिशाच सर्प और राक्षस दोनों ओरको परस्परमें सुनेगये ३७ उनसबोंने कर्ण और अर्जुन केपक्षपातोंमें चित्तको प्रवृत्तकिया स्वर्ग उसकर्णकी ओरके पक्षमें नियतहुआ ३८ और पृथ्वी माताके समान अर्जुनकी विजय चाहनेवालीहुई इसीप्रकार पर्व्वत

समुद्र नदीभी जलों समेत अर्जुनके पक्षपातीहुये वृक्ष और औषधियांभी अर्जुन केही पक्षमेंहुये यहसब परस्पर दोनों ओरों को सुनेगये हे शत्रुसंतापी धृतराष्ट्र असुर, यातुधान और गुह्यक ३९।४० इन स्वरूपवानों ने चारोंओरसे कर्णको प्राप्तकिया मुनि, चारण, सिद्ध, गरुड़, पक्षी ४१ रत्न सब खाने, चारोंवेद जिनमें पांचवां इतिहासहै उपवेद, उपनिषद, रहस्य और संग्रहसमेत वासुकी, चित्रसेन, तक्षक, पन्नग, सब कद्रूके पुत्र सर्प ४२।४३ और विषैले सर्प यहसब अर्जुनकी ओरहुये ऐरावतवंशी, सुरभीवंशी, वैशाली, भोगीनाम, सर्प ४४ यहसब अर्जुन की ओरहुये और नीच सर्प कर्ण की ओरहुये ईहामृग, व्यालमृग और मंगली पशुपक्षी यहसब ४५ अर्जुनकी विजयमें प्रवृत्त चित्तहुये आठोंवसु, ग्यारहोंरुद्र, साध्यगण, मरुद्गण, विश्वेदेवा, दोनों अश्विनीकुमार ४६ अग्नि, इन्द्र, चन्द्रमा, दशोंदिशा, वायु यहसब अर्जुनकी ओरहुये और बारहसूर्य्य कर्णकीओरहुये ४७ हे महाराज तब वैश्य शूद्र सूत और जोजो कि संकर जातिवाले हैं इन सबने कर्णको सेवनकिया ४८ पीछे चलनेवाले समूहों समेत पितरों से युक्त देवता यमराज और कुबेर अर्जुनकीओरहुये ४९ ब्राह्मण क्षत्री यज्ञ दक्षिणा अर्जुनकी ओरहुये प्रेत पिशाच मांसभक्षी राक्षस आदि पशुपक्षी ५० और जलके जीव, श्वान शृगाल कर्णकी ओरहुये देवर्षि ब्रह्मर्षि और राजऋषियोंके समूह पांडवोंकी ओरहुये ५१ हे राजा और तुम्बुरु आदि गन्धर्व भी अर्जुन की ओरहुये मनुके पुत्र गन्धर्व और अप्सराओं के समूह कर्णकी ओरहुये ५२ भेड़ियेआदि पशु और पक्षियों के समूह हाथी घोड़े रथ और पत्ति इसीप्रकार मेघ वायुपर आरूढ़ ऋषिलोग ५३ कर्ण और अर्जुनके युद्धके देखनेकी इच्छासे आये देवता दानव गन्धर्व नाग यक्ष गरुड़ आदि ५४ और वेदज्ञ महर्षी लोग स्वधाके भोजन करनेवाले पितर और अनेक प्रकारके रूप पराक्रमों से युक्त तप विद्या औषधी ५५ हे महाराज यह सब शब्दों को करतेहुये आकाश में नियतहुये ब्रह्मर्षि और प्रजापतियोंसमेत ब्रह्माजी ५६ और विमानपर विराजमान शिवजी उस दिव्य देशको आये तब उन भिड़ेहुये महात्मा कर्ण और अर्जुनको देखकर ५७ इन्द्र देवता बोले कि अर्जुन कर्णको मारकर विजयकरो और सूर्य्य देवताने कहा कि कर्ण अर्जुनको विजयकरो ५८ मेरा पुत्र कर्ण युद्धमें अर्जुनको मारकर विजयकरे और इन्द्रने कहा कि मेरा पुत्र अर्जुन कर्ण को मारकर विजय

करे ५६ वहां देवताओं में श्रेष्ठ पक्षपातमें युक्त इनदोनों सूर्य्य और इन्द्रका परस्पर वादहुआ ६० हे भरतवंशी देवता और असुरोंके दो पक्ष हुये भिड़हुये उन दोनों महात्मा कर्ण और अर्जुनको देखकर देवता सिद्ध चारण आदिक समेत तीनोंलोक कंपायमानहुये ६१ सब देवताओं के गण और जीवमात्र जितने हैं उनमें देवता अर्जुनकी ओरहुये और असुर कर्ण की ओर हुये ६२ देवताओंने कौरव और पाण्डवों के वीर महारथियों के दोनों पक्षों को देखकर स्वयंभू ब्रह्मा जी से कहा कि हे ब्रह्माजी महाराज इन कौरव और पाण्डवों के दोनों युद्ध कर्त्ताओंमें किसकी विजय होगी हे देव इनदोनों नरोत्तमों की बारंबार विजय होय ६३।६४ हे प्रभू ब्रह्माजी कर्ण और अर्जुनके विवाद युद्ध से सबजगत् संदेह युक्तहै इनदोनोंकी विजयको सत्यसत्य हमसे कहिये हे ब्रह्माजी आप इसीवचन को कहिये जिस में इनदोनों की विजय समानहो इनवचनों को सुनकर पितामहजीको प्रणामकरके ६५।६६ बड़े ज्ञानी इन्द्रने देवताओं के ईश्वर ब्रह्माजी को यह जतलाया कि प्रथम आप भगवान् ने श्रीकृष्ण और अर्जुनकी पूर्ण विजय वर्णन करी वह जैसा आपने कहाहै वैसेही होय मैं आपको नमस्कार करताहूं आप मुझपर प्रसन्न हूजिये इसके पीछे ब्रह्माजी और शिवजी इन्द्र से यह वचन बोले ६७।६८ कि इस महात्मा अर्जुनकीही निश्चय विजय होगी जिस अर्जुन ने कि खाण्डव वनमें अग्निको प्रसन्न किया और हे इन्द्र उसने स्वर्ग में आकर तेरी सहायताकरी और कर्ण दानवों के पक्ष में है इस हेतुसे वह पराजय होने के योग्यहै ६९।७० ऐसा करने से देवताओं का कार्य्य निश्चय होताहै हे देवराज सबका निजकार्य्य बड़ाहै ७१ महात्मा अर्जुन भी सदैव सच्चे धर्म्म में प्रीति रखनेवालाहै इसी की अवश्य विजयहोगी इसमें किसी प्रकारका सन्देह नहींहै ७२ और जिसने भगवान् महात्मा शिवजी को प्रसन्न किया हे इन्द्र उसकी विजय कैसे न होगी अर्थात् अवश्य होगी ७३ जगत् के प्रभु विष्णु भगवान् ने जिसकी आप रथवानी करी और जो साहसी पराक्रमी अस्त्रज्ञ तपोधन ७४ बड़ा तेजस्वी सब गुणों से युक्त अर्जुन सम्पूर्ण धनुर्वेद को धारण करताहै इसीसे यह देवताओं का कामहोगा ७५ पांडव सदैवसे वनवास आदि से दुःखपाते हैं तपसे युक्त वह योग्य पुरुष अर्जुन ७६ अपनी प्रतिष्ठा से वांछित मनोरथों की अमर्य्यादाओं को उल्लंघन करे उसके उल्लंघन करने पर

लोकोंका अवश्य नाश होजाय ७७ क्रोधयुक्त श्रीकृष्ण और अर्जुनकी पराजय कहीं नहीं वर्त्तमानहै यह दोनों पुरुषोत्तम सदैव से संसार के स्वामीहैं अर्थात् इन दोनों परमात्मा और आत्माके तेजसे सब जगत् प्रकट होताहै ७८ यह दोनों नरनारायण पुराण पुरुष ऋषियों में श्रेष्ठ अजय सबके ऊपर मुख्य हैं इसी हेतु से यह दोनों शत्रुओं के संतप्त करनेवाले हैं ७९ स्वर्ग मर्त्य पाताल इन तीनों लोकोंमें इन दोनोंके समान कोई नहीं है ८० सब देवगण और जीवों के गण जितने हैं इन सब समेत सब संसार इन दोनों से मिलकर उन्हीं के प्रभावसे प्रकट होताहै ८१ यह पुरुषोत्तम कर्ण उत्तम लोकों को पावे क्योंकि यह सूर्य्यका पुत्र और बड़ा शूरवीरहै परन्तु श्रीकृष्ण और अर्जुन की विजय होय ८२ यह कर्ण वसुओं की सालोक्यता को और मरुद्गणों के स्थानों को पावे और द्रोण वा भीष्मपितामह के साथ स्वर्गलोक को पावे ८३ देवताओं के देवता ब्रह्माजी और शिवजी के इस वचनको सुनकर इन्द्रने सब जीवमात्रों को समझाकर ब्रह्माजी और शिवजी के आज्ञारूप इस वचनको कहा ८४ कि हे सब जीवमात्रो आप सब लोगों ने सुना जो जगत् के हितकारी भगवान् ब्रह्माजी और शिवजी ने कहाहै वह वैसाही होगा इसमें अन्यथा कभी न होगा तुम निस्संदेहरहो ८५ हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र सब जीव इन्द्रके इस वचनको सुनकर आश्चर्य्य युक्त हुये और इन्द्रका पूजन किया और देवताओं ने प्रसन्न चित्त होकर सुगन्धित पुष्पों की वर्षाकरी और नानारूपके देवताओं के बाजों को बजाया ८६। ८७ इन दोनों नरोत्तमों को अनूपम द्वैरथ युद्धके देखने की इच्छा से देवता दानव और गन्धर्व सब नियतहुये ८८ उन दोनों महात्माओं के वह दोनों दिव्य रथ श्वेतघोड़ों से युक्तथे जिनपर यह दोनों महात्मा सवारथे ८९ सन्मुखआये हुये लोकों के वीरों ने अपने २ शंखोंको पृथक् २ बजाया हे भरतवंशी फिर वासुदेवजी अर्जुन कर्ण और शल्यने भी शंखों को बजाया ९० तब परस्पर ईर्षा करनेवाले दोनों वीरों का युद्ध भयानकों का भी भयकारी ऐसा कठिन हुआ जैसे कि इन्द्र और संबर दैत्यका युद्ध हुआथा ९१ उन दोनोंकी निर्मल भुजा रथपर नियत होकर ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि संसारकी प्रलय होने के समय में आकाश में उदय होनेवाले राहु और केतु होतेहैं ९२ विषवाले सर्पकी समान रत्नसार से जटित बड़ी दृढ़ इन्द्रधनुष के समान हाथी की कक्षा के चिह्नवाली कर्ण की ध्वजा

शोभा देरही थीं ९३ और खुले मुखवाले यमराज के समान विकराल दंष्ट्रावाले हनुमान्जी से शोभित अर्जुनकी ध्वजा ऐसी भयकारी देखने में आती थी जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों से दुःख से देखनेके योग्य होताहै ९४ गांडीव धनुषधारी की ध्वजा में से युद्धाभिलाषी हनुमान् जी अपने स्थान से उछलकर कर्ण की ध्वजापर नियतहुये ९५ बड़ेवेगवान् हनुमानजीने उछलकर कर्णके ध्वजाकी नाग-कक्षाको अपने दांत और नखोंसे ऐसे घायल किया जैसे कि सर्प को गरुड़ कर-ताहै ९६ इस के पीछे क्षुद्रघंटिका और भूषण रखनेवाली कालपाश के समान अत्यन्त क्रोधरूप वह नागकी कक्षा हनुमान् जी की ओर दौड़ी ९७ तब उन दोनों का अत्यन्त घोररूप द्वैरथ युद्ध होनेपर उन दोनों ध्वजाओं ने प्रथम वा उत्तम युद्धके ९८ परस्पर ईर्षा करनेवाले घोड़ों से घोड़ों को हिंसन किया और कमललोचन श्रीकृष्णजी ने नेत्ररूप बाणों से शल्य को छेदा ९९ इसी प्रकार शल्यने भी, श्रीकृष्णजी को देखा वहां वासुदेवजी ने नेत्ररूपी बाणों से शल्य को विजय किया १०० और कुंती के पुत्र अर्जुनने भी कर्ण को देखकर विजय किया इसके पीछे सूतपुत्र कर्ण ने शल्य से समक्ष होकर मन्दमुसकान समेत यह वचनकहा १०१ कि अब युद्ध में किसी समयपर जो कदाचित् अर्जुन मुझ को मारडाले तब हे शल्य तुम क्या करोगे यह सत्य सत्य हमसे कहो १०२ शल्यने कहा कि जो श्वेतघोड़े वाला अर्जुन तुझ को युद्ध में मारडालेगा तो मैं एकही रथके द्वारा उनदोनों श्रीकृष्ण और अर्जुनको मारूंगा १०३ संजय बोले कि इसी प्रकार अर्जुनने गोविन्दजी से कहा तब श्री कृष्ण जीने भी हँसकर उस अर्जुनसे यह सत्य २ वचनकहा १०४ कि हे अर्जुन चाहै सूर्य्य अपने स्थानसे गिरपड़े और समुद्र भी सूखजाय और अग्नि शीत-लताको पावै परन्तु कर्ण तुझको नहीं मारसक्ता है १०५ जो यह किसी प्रकार से होजाय और इन लोगोंका निवास होय तो मैं कर्ण और शल्यको युद्ध में अपनी भुजाओंसे ही मारडालूंगा १०६ श्रीकृष्ण जी के इसवचन को सुनकर हँसते हुये कपिध्वज अर्जुन ने उन सुगमकर्मी श्रीकृष्णजी को यह उत्तरदिया कि १०७ हे जनार्दन जी जब आपकी मेरेऊपर ऐसी कृपाहै तो कर्ण और श-ल्य मुझको युद्धमें विजय करने को असमर्थहैं हे श्रीकृष्ण जी अब युद्धमें मेरे हाथ के बाणोंसे पताका ध्वजा शल्य रथ घोड़े छत्र कवच शक्ति बाण और धनुष

सहित बहुत प्रकार से घायल हुये कर्णको देखोगे १०८ । १०९ अबहीं रथ घोड़े शक्ति कवच और शस्त्रों समेत ऐसे अच्छीरीति से चूर्ण होगा जैसे कि वनमें हाथी से वृक्षोंका चूर्ण होता है ११० अब कर्ण की स्त्रियों को वैधव्यता अर्थात् विधवापना प्राप्त हुआ हे माधव जी निश्चय करके उन स्त्रियों ने सोते हुये अशुभ स्वप्नोंको देखाहोगा १११ अभी आप कर्ण की स्त्रियों को विधवा देखेंगे क्योंकि वह मेरा क्रोध शान्त नही होताहै जो इस प्रकार से हमको हँसकर और वारम्बार हमारी निन्दा करके इस अज्ञानी अदीर्घदर्शी ने पूर्व समयमें सभा में वर्त्तमान द्रौपदीको देखकर कर्म कियाथा ११२ । ११३ हे गोविन्द जी अब मेरे हाथसे मथनकिये हुये कर्ण को ऐसे देखोगे जैसे कि मतवाले हाथी से मर्द्दन कियाहुआ पुष्पित वृक्ष होताहै हे मधुसूदन जी अब कर्ण के पछाड़ने पर उन मधुर वचनों को आप सुनेंगे कि हे श्रीकृष्ण जी आप प्रारब्धसे विजय करते हो ११४ । ११५ हे जनार्द्दन जी अब आप अत्यन्त प्रसन्न होकर अभिमन्यु की माता को और अपनी फूफी कुन्तीको विश्वास युक्तकरोगे ११६ हे माधव जी अब तुम अमृत के समान वचनोंसे अश्रुओंसे पूरित मुखवाली द्रौपदीको और धर्मराज युधिष्ठिर को विश्वास युक्त करके शान्तकरोगे ११७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकृष्णअर्जुनसम्वादेद्वैरथयुद्धेअष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

नवासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि आकाश देवता, नाग, असुर, सिद्ध, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व और अप्सराओंके समूहोंसे और राजऋषि ब्रह्मऋषि और गरुड़से सेवितहोकर अपूर्व शोभितहुआ १ और सब मनुष्य और पक्षियोंने नानाप्रकार के बाजे गान प्रशंसा नृत्य हास और अनेक चित्तरोचक शब्दोंसे अन्तरिक्ष को अपूर्वरूपका शब्दायमान देखा २ तदनन्तर बाजेशंख और सिंहनादों के शब्दों से पृथ्वी और दिशाओं को शब्दायमान करते अत्यन्त प्रसन्नचित्त कौरवी और पाण्डवी सेना के शूरवीरोंने सब शत्रुओंको मारा ३ तब युद्धभूमि मनुष्य घोड़े हाथी और रथों से व्याप्त बाण खड्ग शक्ति और दुधारे खड्गोंके प्रहारों से महाअसह्य और निर्भय शूरवीरों से सेवित वा मृतक योद्धाओंसे पूरित होकर रक्तवर्ण को धारण किये अत्यन्त शोभायमानहुई ४ इसरीति से कौरव और पाण्डवोंका ऐसा युद्धहुआ जैसे कि असुरों का और देवताओं का हुआथा इसप्रकार महा भयकारी घोर

युद्धके जारी होनेपर अर्ज्जुन और कर्ण के महातीक्ष्ण सीधे चलनेवाले अच्छे अलंकृत उत्तम शायकों से दिशाओं समेत सम्पूर्ण सेना ढकगई तदनन्तर अंधकार होजानेपर आपके और पांडवोंके युद्धकर्त्ताओं ने कुछभी नहीं देखा ५।६ रथियों में श्रेष्ठ वह दोनों कर्ण और अर्जुन भयसे दुःखी होकर सन्मुखहुये फिर सबओरसे अपूर्व्व युद्धहुआ अर्थात् पूर्वीय पश्चिमीय वायुके समान परस्पर में अस्त्रों से अस्त्रोंको हटाकर ७ ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि बादलों से अंधकार होजानेपर उदय होनेवाले सूर्य्य और चन्द्रमा हटना नहीं चाहते इस नियम से प्रेरित आपके और पांडवों के शूरवीर लोग सन्मुख नियतहुये ८ वह दोनों महारथी नरोत्तम सबओरसे घेरकर मृदंग भेरी पणव और आनकनाम बाजों के और सिंहनादों के शब्दों के द्वारा ऐसे शब्दवालेहुये जैसे कि देवता असुर संबर और इन्द्रहुयेथे ९ तब वह दोनों पुरुषोत्तम बड़े धनुष मण्डलमें वर्त्तमान बड़े तेजस्वी बाणरूप हजारों किरणों के रखनेवाले होकर ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि बादलों के शब्दों से चन्द्रमा और सूर्य्य होते हैं १० वह दोनों प्रलयकालके सूर्य्य के समान युद्धमें कठिनता पूर्व्वक सहने के योग्य जड़ चैतन्यों समेत संसार के भस्म करने के इच्छावान् महा अजेय शत्रुओं का नाश करनेवाले परस्पर में मारनेके अभिलाषी ११ कर्ण और अर्जुन निर्भयता पूर्व्वक उस बड़े युद्धमें ऐसे सन्मुखहुये जैसे कि महाइन्द्र और जंभ सन्मुखहुयेथे उसकेपीछे बड़े धनुषधारी भयके उत्पन्न करनेवाले बाणों के द्वारा बड़े अस्त्रोंको छोड़तेहुये १२ दोनों महारथियों ने बहुत से मनुष्य घोड़े और हाथियों समेत परस्पर में एकने दूसरे को घायलकिया हे राजन् इसकेपीछे उनदोनों नरोत्तमों से पीड़ामान कौरवीय और पांडवीय मनुष्य हाथी पति घोड़े और रथों से युक्त ऐसे दशोंदिशाओं में भागे जैसे कि सिंहसे घायलहुये वनवासी जीव भागते हैं इसके पीछे दुर्य्योधन, कृतवर्मा, शकुनि, कृपाचार्य्य और शारद्वतका पुत्र इन पांचों महारथियों ने शरीर के छेदनेवाले बाणोंसे अर्जुन और श्रीकृष्णजी को पीड़ितकिया तब अर्जुनने उनके धनुष, तूणीर, ध्वजा, घोड़े, रथ और सारथियों समेत १३।१४।१५ चारों ओरसे इन शत्रुओंको मथनकरके शीघ्रही उत्तम बारहबाणों से कर्णको घायल किया इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले मारने के अभिलाषी लोग सन्मुख दौड़े और अर्ज्जुन के मारने के उत्सुक सौ रथ सौ हाथी १६ और अश्व सवार शक,

तुषार, यवन, कांबोजदेशियों समेत इन सबों ने हाथों में क्षुरप्र लेकर सब शस्त्रों को काटकर शिरोंको भी काटा उससमय वहां अनेक शिर पृथ्वीपर गिरपड़े १७ तब उस युद्ध करनेवाले अर्जुन ने घोड़े हाथी और रथों समेत उन शत्रुओं के समूहोंको काटा इसके पीछे अन्तरिक्ष में देवताओं ने इन दोनोंकी कीर्त्तिसमेत बाजों से स्तुति करी १८ और आकाशसे सुगन्धित पुष्पोंकी वर्षा होनेलगी तब उस आश्चर्य्य को देखकर देवता और मनुष्यों के समक्षमें सब जीवमात्र अचं-भासा करनेलगे फिर उत्तम निश्चय रखनेवाले आपके पुत्र और कर्णने न पी-ड़ाकरी न आश्चर्य्य को पाया इसके पीछे मधुरभाषी अश्वत्थामाजी हाथसे हाथ को मलकर आपके पुत्रसे बोले १९।२० हे दुर्य्योधन अब तू प्रसन्नहोकर पांडवों से सन्धिकर लड़नात्यागो और युद्धको धिक्कार हो बड़े अस्त्रज्ञ ब्रह्माजी के समान गुरूजी और वैसेही भीष्म सरीखे प्रतापी वीर मारेगये २१ मैं और मेरा मामा चिरं-जीवी हैं पाण्डवों समेत तुम बहुतकाल तक राज्यकरो मुझसे निषेध कियाहुआ अर्जुन सन्धिको करता है और श्रीकृष्णजी भी शत्रुताको नहीं चाहते हैं २२ युधिष्ठिर सदैव जीवधारियों के मनोरथों में प्रवृत्त है और इसी प्रकार भीमसेन समेत नकुल और सहदेव भी मेरे स्वाधीन हैं तेरी इच्छा से पाण्डवों से और तुझसे सन्धि होनेपर प्रजालोगों का कल्याण होगा और सुखको पावेंगे बाकी बचेहुये बांधवलोग अपने २ पुरोंको जायँ और सेनाके मनुष्यभी युद्ध करना छोड़ें हे राजन् जो मेरे वचन को नहीं सुनोगे तो निश्चय जानो कि अवश्य तुम शत्रुओं से घायल और पीड़ित होकर दुःखोंको पावोगे २३ । २४ तेरेसाथ सब जगत् ने देखा जो अकेले अर्ज्जुन ने किया ऐसा कर्म न यमराज न इन्द्र न भगवान् ब्रह्मा और यक्षोंका राजा कुवेरभी नहीं करसक्ताहै २५ अर्जुन अपने गुणोंसे इन सबसेभी अधिकहै परन्तु वह मेरे किसी वचनको भी उल्लंघन नहीं करेगा अर्थात् मेरे कहनेको अवश्य करेगा और सदैव तेरे पीछे चलेगा हे रा-जेन्द्र तुम प्रसन्नहोकर शांतता में युक्तहोजावो तुझमें मेरा सदैव बड़ामनहै इसी हेतुसे मैं बड़ी शुभचिन्तकता से अर्थात् तेरे भलेके लिये तुझसे कहताहूं जब आप मृदु होगे तब मैं कर्ण को भी निषेधकरूंगा २६। २७ पण्डित लोग साथ उत्पन्न होनेवाले को मित्र कहते हैं इसीप्रकार प्रीति और धनके द्वारा प्राप्त होने वाला और अपने प्रताप से नम्रीभूत होनेवाले को मित्र कहते हैं यह चार प्र-

कारकी मित्रता है वह तेरी चारोंप्रकारकी मित्रता पाण्डवों में है २८ हे प्रभु तेरी उत्पत्ति से तो तेरे बांधव हैं प्रीति समेत उनको प्राप्तकरो और तेरी प्रसन्नता से अर्थात् आधाराज्य देने से जो मित्रहोजायँ उस दशामें तेरे कारणसे जगत्का बड़ाहित होगा उस शुभचिन्तकके ऐसे हितकारी वचनों को सुनकर वह दुःखी चित्त दुर्य्योधन बहुत शोचसे श्वासों को लेकरबोला हे मित्र जैसा आपनेकहा वहसब इसीप्रकारहै परन्तु मुझ्जतानेवाले के भी वचनों को सुनो कि २९। ३० इस दुर्बुद्धी भीमसेन ने शार्दूलके समान अपना हठकरके दुश्शासनको मारकर जो वचनकहा है वह मेरे हृदयमें नियतहै यह सब आपके समक्षमें ही हुआहै कैसे शान्ती होसक्तीहै ३१ अर्जुनभी युद्धमें कर्णको ऐसे नहीं सहसकेगा जैसे कि कठोर पवन मेरुनाम पर्व्वत को नहीं सहसक्ताहै कुन्तीकेपुत्र हठकरके और बहुधा शत्रुताको शोचकर मेरा विश्वासनहीं करेंगे हे गुरूजीके पुत्र तुम अजेय होकर इसबातको कर्णसे कभी न कहिये कि तुम युद्धको त्यागदो अब अर्जुन बहुत थकावटसे युक्तहै इसीसे यह कर्ण बड़े हठसे उसको मारेगा ३२। ३३ आपके पुत्रने उससे ऐसाकहकर और वारंवार समझाकर अपने सेनाके लोगोंको आज्ञादी कि तुम हाथों में बाणों को लेलेकर मेरे शत्रुओं के सन्मुख जावो क्या मौन होकर नियतहो ३४॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअश्वत्थामाहितवर्णनेनवाशीतितमोऽध्यायः ८९॥

नब्बेका अध्याय॥

संजय बोले कि हे राजन् आपके पुत्रके दुर्मन्त्रित होनेवा शंख और भेरीके शब्दोंकी आधिक्यतासे श्वेत घोड़े रखनेवाला नरोत्तम अर्जुन और सूर्य्यका पुत्र कर्ण दोनों ऐसे सन्मुखहुये जैसे कि मदझाड़नेवाले दीर्घदन्ती हिमालय पर्व्वतके उत्पन्न बड़े दोहाथी हथिनीके निमित्त भिड़तेहैं १। २ अथवा जैसे कि दैवइच्छासे महाबलाहक नाम बादल बलाहक बादलसे और पर्व्वत पर्व्वतसे भिड़जायँ उसीप्रकार बाणरूपी वर्षाके करनेवाले धनुषरोदा और प्रत्यंचाके शब्दों समेत सन्मुखहुये ३ और परस्परमें ऐसेघायलहुये जैसे कि बड़े वृक्ष औषधी और शिखरवाले नाना झिरनों से युक्त बड़े-पराक्रमी दोपर्व्वत आपसमें घायलहोते हैं उसीप्रकार वह दोनों महाअस्त्रोंसे परस्परमें घायलहुये ४ फिर बाणों से घायल

शरीर सारथी और घोड़े वाले उनदोनोंकी वहचढ़ाई वहुत वड़ीहुई जो अन्यसे दुःखपूर्वक सहनेके योग्य कठोर रुधिर रूप जलकी ऐसी रखनेवालीथी जैसे कि पूर्व्व समय में देव इन्द्र और विरोचनके पुत्र बलिकी चढ़ाई हुई थी जैसे कि बहुतसे पद्म वा उत्पल कमल मछली कछुये रखनेवाले पक्षियों के समूहों से वेष्टित अत्यन्त समीप वायुके वेगसे दोह्रद परस्परमें भिड़जायँ उसीप्रकार वह दोनों ध्वजाधारी रथ आपसमें सन्मुख हुये ५ । ६ महेन्द्रके समान पराक्रमी और रूप वाले उनदोनों महारथियों ने उसी महेंद्रके वज्रके समान शायकों से परस्पर में ऐसे घायलकिया जैसे कि महेन्द्र और वृत्रासुरने परस्पर घायलकियाथा ७ हाथी पति घोड़े रथ और चित्रविचित्र कवच भूषण वस्त्र और शस्त्रों की धारण करने वाली वह अपूर्व रूपवाली दोनों विस्मित सेना कंपायमानहुई उस अर्जुन और कर्णके युद्धमें वस्त्र और अँगुलियों से युक्त ऊंची २ भुजा आकाशमें वर्त्त-मानहुई मतवाले हाथीके समान प्रसन्नचित्त अर्जुन तमाशा देखने वालों के सिंहनादों समेत मारनेकी इच्छासे कर्णके सन्मुख ऐसे गया जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथी के सन्मुख जाताहै ८ । ९ वहां आगे चलनेवाले सोमक लोग अर्जुन को पुकारे कि हेअर्जुन कर्ण को छेदकर इसके मस्तक को काटो और धृतराष्ट्र के पुत्रकी श्रद्धाको राज्यसे पृथक्करो इसमें विलम्ब मतकरो १० इसीप्रकार हमारे भी बहुत से शूरवीरों ने कर्ण को प्रेरणाकरी कि चलो चलो हे कर्ण अत्यंत तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को मारो और पांडव फिर बहुत कालके लिये वनको जायँ ११ इसके पीछे प्रथम तो कर्णने उत्तम दशबाणों से अर्जुन को छेदा और अर्जुनने हँसकर तीक्ष्ण दशबाणोंसे कर्णको कुक्षमें वेधा १२ फिर उन दोनों कर्ण और अर्जुन ने सुन्दर पुंखवाले बाणों से परस्पर घायल किया और वड़ी प्रसन्नता से एकने दूसरे को छेदा और भयकारी रूपों से सन्मुखगये १३ इसके पीछे उग्र धनुषधारी अर्जुन ने दोनों भुजाओं से गांडीव धनुषको ठीक करके नाराच, नालीक, वाराहकर्ण, क्षुरप्र, आंजुलिक, अर्द्धचन्द्र इन बाणों को छोड़ा १४ हे राजन् वह अर्जुन के छोड़े हुये बाणके रथमें प्रवेशकर गये और सब ओरसे ऐसे फैलगये जैसे कि सायंकालके समीप नीचा शिर करनेवाले प-क्षियों के समूह निवासके लिये शीघ्र वृक्षपर प्रवेशकरतेहैं १५ शत्रुओं के विजय करनेवाले अर्जुन ने जिन बाणों को भृकुटी के कटाक्षसे युक्त कर्ण के निमित्त

छोड़ाथा उन बाणोंको कर्ण ने अपने शायकों से दूरकिया १६ इसके पीछे इन्द्र के पुत्र अर्जुन ने शत्रुके वशीभूत करनेवाले अग्न्यास्त्रको कर्ण के ऊपर छोड़ा तब पृथ्वी अन्तरिक्ष और दिशाओं के मार्गों को ढककर उसका शरीर प्रकाशमानहुआ १७ और अग्नि से जलतीहुई पोशाकवाले वा पोशाकों से अत्यन्त रहित होजानेवाले शूरवीर बड़े व्याकुल होकर भागे और ऐसा बड़ा घोर शब्द हुआ जैसे कि बांसों के वनमें जलते हुये बांसों के शब्द होते हैं १८ फिर उस प्रतापवान् कर्णने युद्धमें उठे हुये उस अग्न्यास्त्र को देखकर उसके शांतहोने के निमित्त वारुणास्त्र को छोड़ा और उसी से वह अग्नि शान्तहुई १९ फिर उस वेगवान्‌ने बादलों के समूहों से सब दिशाओं में अन्धकार करदिया तब पर्व्वत के समान किनारा रखनेवाले कर्ण ने चारोंओर को जलकी परिधि करके २० उस अत्यन्त भयानक अग्निको शांतकरदिया परन्तु दिशाओं के सब स्थान जो कि बादलों से युक्तथे २१ इससे कुछ दिखाई नहीं दिया तदनन्तर अर्जुन ने वायुअस्त्र से कर्ण के उन अस्त्रों के समूहों को दूरकिया २२ फिर शत्रुओं से अजेय अर्जुन ने गांडीव धनुष प्रत्यंचा और विशिखों पर मंत्रों को पढ़कर बड़े प्रभाववाले देवेन्द्रके प्यारे वज्रास्त्रको भी प्रकट किया २३ इसके पीछे क्षुरप्र, आंजलिक, अर्द्धचन्द्र, नालीक, नाराच, वराह कर्ण नाम अत्यन्त तीक्ष्ण वज्रके समान वेगवान् हजारों बाण गांडीव धनुषसे प्रकटहुये २४ वह बड़े प्रभाव युक्त सुन्दर वेत गृध्रपक्षों से जटित अच्छे वेगवान् बाण कर्ण को पाकर उसके सब अंग घोड़े, धनुष, जुयेचक्र से होकर पृथ्वी में प्रवेश करगये तब बाणों से युक्त रुधिरसे लिप्तअंग क्रोधसे खुले नेत्रवाले महात्मा कर्ण ने २५ । २६ दृढ़प्रत्यंचा वाले समुद्रके समान शब्दायमान धनुष को दबाकर भार्गवअस्त्र को प्रकटकिया और महेन्द्रास्त्र के सन्मुख छोड़ेहुये अर्जुन के बाणों के समूहों को काट २७ अपने अस्त्रसे उसके अस्त्रको हटाके युद्ध में रथ हाथी और पत्तियों को मारा महेन्द्र के समान कर्मकरनेवाले कर्ण ने भार्गवअस्त्रके प्रतापसे ऐसा कर्मकिया २८ इसको करके फिर क्रोधयुक्त सूतके पुत्र कर्ण ने युद्धमें पांचालों के अत्यन्त उत्तम शूरवीरों को रोककर अच्छी रीतिसे छोड़ेहुये तीक्ष्णधार सुनहरी पुंखवाले बाणों से पीड़ामान किया २९ हे राजन् युद्धभूमि में कर्णके बाण समूहों से पीड़ित पांचाल और सोमकों ने भी हठ करके प्रसन्नता से कर्णको बाणों से छेदकर [illegible]

किया ३० फिर कर्णने बाणों से पांचालों के उन रथ हाथी और घोड़ों के समूहों को मारा और मारे बाणों के सबको पीड़ित करडाला ३१ वह कर्ण के बाणों से निर्जीव होकर शब्दों को करतेहुये ऐसे गिरपड़े जैसे कि महावन में क्रोधयुक्त भयानक सिंह से हाथियों के समूह गिरपड़तेहैं ३२ हे राजन् इसके पीछे वह बड़ा साहसी और बड़े उत्साहका करनेवाला कर्ण अत्यन्त उत्तम २ शूरवीरों को मार कर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि आकाशमें तीक्ष्ण किरणों का रखने वाला सूर्य्य होताहै ३३ हे कौरवेन्द्र फिर आपके शूरवीरों ने कर्ण की विजय को मानकर बड़ी प्रसन्नता मनाकर सिंहनादों को किया और सबने कर्णके हाथ से श्रीकृष्ण और अर्जुन को निहायत घायल माना ३४ फिर वह महारथी कर्ण अपने उस पराक्रम को दूसरोंसे असह्यवाला जानकर और इसरीति से अर्जुनके उस अस्त्रको अपने से निष्फल हुआ देखकर ३५ क्रोधसे रक्तनेत्र असह्य क्रोधयुक्त वायु के पुत्र भीमसेन श्वासों को लेताहुआ हाथसे हाथको मलकर सत्यसंकल्प अर्जुनसे बोला ३६ अब युद्धमें तेरे और विष्णुजी के सन्मुख किस प्रकारसे उस पापी अधर्मी सूतके पुत्र कर्णने प्रबल होकर पांचालोंके उत्तम शूरवीरोंको मारा ३७ हे अर्जुन साक्षात् शिवजीकी भुजा के स्पर्श को पाकर कालकेय नाम असुरों से अजेय रूप तुझको इस कर्ण ने प्रथम दशबाणों से कैसे छेदा ३८ और तेरे चलायेहुये बाणसमूहों को सहगया इससे यह कर्ण मुझको अपूर्व्व दिखाई देताहै तुम द्रौपदी के उन दुःखोंको स्मरणकरो कि इसने कैसे २ वचन कहेथे ३९ हे अर्जुन इस पाप बुद्धी दुर्मति दुष्टहृदय सूतपुत्र ने रूखे २ अत्यन्त तीव्रवचन कहे अब तुम उन सब वचनों को स्मरण करके उस पापी कर्ण को युद्धमें शीघ्रमारो ४० हे अर्जुन उसको कैसे छोड़ रक्खाहै अब यहां यह समय तेरे त्याग करने का नहीं है खांडव वनमें जिस धैर्य्यतासे तैंने सबजीवों को विजय किया उसी धैर्य्यतासे इस दुर्मति सूतपुत्रको मारो मैं उसको गदासे मारूंगा उसके पीछे वासुदेवजी भी बाणों से व्यथित देखकर अर्जुन से बोले ४१ । ४२ कि अब इस कर्ण ने तेरे अस्त्रको अपने अस्त्रों से सबप्रकार मर्दन कियाहै हे अर्जुन यह क्या बातहै हे वीर तुम क्यों मोहित होरहेहो क्यों नहीं सचेत होतेहो देखो यह कौरव लोग अत्यन्त प्रसन्न होकर गर्जते हैं ४३ सबने कर्णको आगे करके तेरे अस्त्र को अस्त्रों से गिरायाहुआ जानाहै जिस धैर्य्यतासे तैंने तामस अस्त्रको दूरकिया

और युग २ में भी ४४ दंभोद्भवनाम घोर राक्षसों को युद्धों में मारा उसी धैर्य्य से अब तुम कर्ण को मारो अब हठकरके मेरे दियेहुये नेमियोंपर छूरेवाले सुदर्शन चक्रसे इसशत्रुके शिरको ऐसेकाटो जैसे कि इन्द्रने अपने शत्रु नमुचि के शिरको काटा था किरातरूपी भगवान् शिवजी भी तेरे धैर्य्य से प्रसन्नहुये ४५। हे वीर तुम फिर उसी धैर्य्य को धारण करके कर्ण को उसके सब साथियों समेत मारो इसके पीछे तुम सागर रूप मेखला, रखनेवाली नगर ग्रामों से युक्त और धन रत्नों से पूर्ण उस पृथ्वी को ४७ जिसमें कि शत्रुओं के समूह मारेगये अपने राजा युधिष्ठिरके सुपुर्दकरो यहवचन सुनकर उस बड़े बुद्धिमान् महा पराक्रमी महात्मा अर्ज्जुन ने कर्ण के मारने के निमित्त बुद्धिकरी ४८ भीमसेन और श्रीकृष्णजी से प्रेरणा कियेहुये उस अर्जुन ने आपको ध्यान करके और सब बातों को विचारकर इसलोकके इन्द्र अपने आने में प्रयोजन को जानकर केशवजी से यह वचन कहा ४९ कि हे केशवजी मैं लोकके आनन्द और कर्ण के मारने के निमित्त इस उग्र महाअस्त्रको प्रकट करताहूं सो आप ब्रह्माजी शिवजी देवता और वेदों के सब जाननेवाले ऋषिलोग मुझको आज्ञादो ५० उस महासाहसी अर्जुन ने इसप्रकारसे कहके और ब्राह्मणों को नमस्कारकरके उस उग्र महाअस्त्रको प्रकटकिया जो कि असह्य और चित्त से प्रकट करने के योग्य था ५१ जैसे कि बादल शीघ्र जलधाराओं को छोड़ताहै उसीप्रकार कर्ण बाणों से इसके उस अस्त्रको दूरकरके शोभायमान हुआ तब क्रोधयुक्त पराक्रमी भीमसेनने इस रीतिसे युद्धभूमि में कर्ण के हाथसे अर्जुनके उस अस्त्रको दूरकिया हुआ देखकर सत्यसंकल्प अर्जुन से कहा कि निश्चयकरके मनुष्यों ने तुमको बड़ा उत्तम और ब्रह्मास्त्रनाम बड़े अस्त्रका जाननेवाला कहाहै ५२। ५३ हे अर्ज्जुन इस हेतुसे अब तुम दूसरे अस्त्रको चलाओ ऐसे कहेहुये अर्ज्जुनने अस्त्र का प्रयोगकिया तदनन्तर बड़े तेजस्वी अर्ज्जुन ने गांडीवधनुष और भुजाओं से छोड़ेहुये भयकारी सूर्य्य की किरणों के समान प्रकाशित बाणों से सबदिशा और विदिशाओं को ढक दिया उस भरतर्षभ अर्ज्जुन के छोड़ेहुये सुवर्ण पुंख वाले हजारों बाणों ने ५४। ५५ क्षणभरही में कर्ण के रथ को ढकदिया वह बाण प्रलयकालके सूर्य्यकी किरणों के समान थे इसके पीछे सैकड़ों शूल फरसे चक्र और नाराच ५६ भी महा भयकारी निकले उससे बहुत से शूरवीर चारों

ओर से मारेगये युद्धभूमि में किसी का शिर धड़ से कटकर गिरा ५७ और कितनेही उन गिरेहुओं को देखकर भयभीत होकर जल्दी से पृथ्वीपर गिरपड़े और किसी शूरवीर की हाथीकी सूंड़के समान भुजा टूटकर खड्ग समेत पृथ्वी पर गिरपड़ी ५८ किसीकी बाईंभुजा क्षुरप्रसे कटकर ढालसमेत गिरी अर्ज्जुनने इसरीति के शरीरों के नाश करनेवाले भयकारी बाणों से उन सब उत्तम २ शूरवीरों समेत दुर्य्योधन की सम्पूर्ण सेनाको मारा और घायल किया इसी प्रकार कर्णने भी युद्धभूमि में अपने धनुष से हजारों बाणों को छोड़ा ५९।६० वह शब्दायमान बाण अर्जुन के सन्मुख ऐसे गये जैसे कि पर्ज्जन्य मेघसे छोड़ीहुई जलकी धारा होती है इसके पीछे वह अनुपम प्रभाव और भयानकरूपवाला कर्ण श्रीकृष्ण अर्जुन और भीमसेन को ६१ तीन २ बाणोंसे घायल करके बड़े स्वरसे घोर शब्दको गर्जा फिर अर्जुन ने उस असह्य कर्णके बाणोंसे व्यथित भीमसेन और श्रीकृष्णको देखकर ६२ अठारह बाणोंको उठाया एकबाणसे तो उसकी ध्वजाको चारबाण से शल्यको और तीनबाणों से कर्णको घायलकिया ६३ फिर अच्छीरीति से छोड़ेहुये दश बाणोंसे सुवर्णकवचसे अलंकृत सभापति को मारा वह राजकुमार शिर भुजा घोड़े सारथी धनुष और ध्वजासे रहित ६४ मृतकहोकर रथसे ऐसे गिरपड़ा जैसे कि फरसोंका काटाहुआ और उखड़ाहुआ शालका वृक्ष गिरताहै फिर कर्णको तीन आठ बारह चार और दशबाणों से छेद ६५ चारसौ घोड़ोंको मारकर आठसौ शस्त्रधारी रथियोंकोभी मारा तब सवारों समेत हजारों घोड़ोंको वा आठहजार वीर पतियों को ६६ मारकर सारथी घोड़े रथ और ध्वजा समेत कर्णको सीधेचलनेवाले बाणवृष्टिसे अलक्षकरदिया इसके पीछे अर्जुनके हाथसे घायल होकर कौरव चारोंओरसे कर्णको पुकारे ६७ हे कर्ण तुम शीघ्रही अर्जुनको छेदकर हमको छुड़ावो वह समीपसे बाणोंकेही द्वारा सब कौरवों को मारताहै उनके वचनोंको सुनकर कर्णने भी बहुत उपायों से बहुतसे बाणोंको बारम्बार छोड़ा ६८ उन मर्मभेदी रुधिर धूलसे लिप्त बाणोंने पाण्डव और पाञ्चालों के समूहों को व्यथित किया सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ बड़े पराक्रमी सब शत्रुओं के पराजय करनेवाले महा अस्त्रज्ञ उन दोनों ने ६९ महा अस्त्रोंसे शत्रुकी उग्रसेनाको और एकने दूसरेको घायलकिया इसके पीछे शीघ्रता करनेवाला युद्धके देखनेका अभिलाषी वह युधिष्ठिर पासगया जो कि

अत्रिकुल में उत्पन्न होनेवाले अष्टांगविद्या के आसनपर बैठनेवाले अश्विनी कुमार सुरवैद्यों के मन्त्र औषधियों के द्वारा पीड़ासेरहित भालों से पृथक् शुभ-चिन्तक चिकित्सा करनेवाले उत्तम पुरुषों से मर्हम पट्टी बांधाहुआ सुवर्ण के कवचको पहिरेहुयेथा इसीसे वह सावधान ऐसा न था जैसे कि दैत्यों के हाथसे घायल शरीर देवराज इन्द्रथा इस प्रकार के रूपवाले धर्मराजको युद्धमें समीप आयाहुआ देखकर सब जीवमात्र बड़े प्रसन्नहुये ७० । ७१ । ७२ जिस प्रकार राहुसे छूटेहुये निर्मल और पूर्णचन्द्रमाको देखते हैं उसी प्रकार उदय होनेवाले उन युद्धकर्त्ता उत्तम श्रेष्ठ शत्रुओं के मारनेवाले दोनों पुरुषोत्तमों को देखकर देखने के इच्छावान् ७३ आकाश के देवता और पृथ्वी के मनुष्य कर्ण और अर्जुनको देखतेहुये नियतहुये वहां बाणोंके जालोंसे परस्पर मारनेवाले अर्जुन और कर्णकेछोड़ेहुये बाणोंसे उस धनुष रोदा और प्रत्यंचाका गिरना कठिनहुआ इसकेपीछे अच्छी खिंचीहुई अर्जुनके धनुषकी जीवा अकस्मात् शब्द करकेटूटी ७४ । ७५ उसीसमय सूतके पुत्रने सौ क्षुद्रक बाणों से अर्जुनको छेदा और सर्प रूप तैलसेसाफ गृध्रपक्षसे जटित वरावर छोड़ेहुये ७६ साठबाणोंसे शीघ्रताकरके वासुदेवजी को छेदा इसके पीछे फिर आठ बाणों से अर्जुनको छेदा तदनन्तर सूतपुत्र कर्णने हजार बाणोंसे भीमसेनको मर्मस्थलोंपर छेदा ७७ और सोमकों को गिरातेहुये उन शूरवीरोंने विशिख वा पृषत्कनाम बाणोंसे श्रीकृष्ण अर्जुन की ध्वजा और उनके छोटे भाइयोंको बाणों से ऐसे ढकदिया जैसे कि बादलों के समूह सूर्य्यको ढकदेते हैं ७८ फिर उस अस्त्रज्ञ कर्णने उन सबको विशिखनाम बाणोंसेरोककर अपने अस्त्रोंसे सबअस्त्रोंको हटाकर उनके रथ घोड़े और हाथियों कोभी मारा ७९ हे राजा इसी रीतिसे सूतपुत्रने बाणोंसे सेनाके उत्तम२शूरवीरों को पीड़ितकिया फिर कर्णके बाणों से घायल और मृतकहोकर शब्दोंको करते हुये पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े ८० जैसे कि बड़ेपराक्रमी कुत्तोंके समूह क्रोधभरे बड़े पराक्रमी सिंहसे गिरते हैं फिर पांचालदेशियों के उत्तम २ लोग और अन्य २ शूरवीर इसस्थानपर कर्ण और अर्जुन के लिये ८१ चेष्टाकरनेवाले उसपराक्रमी कर्णके अच्छीरीति के छोड़ेहुये बाणों से मारेगये और आपके शूरोंने बड़ी विजयको मानकर तालियां वजाईं और वारंवार सिंहनादको किया उनसबोंने युद्धमें श्रीकृष्ण और अर्जुन को कर्णकी स्वाधीनतामें माना फिर तो कर्ण के

वाणों से अत्यन्त घायल शरीरवाले क्रोधयुक्त अर्जुन ने धनुषकी प्रत्यञ्चाको नवाकर शीघ्रतासे कर्णके उनवाणों को हटाके कौरवोंको रोका ८२।८३ प्रत्यंचा को ठीककरके तलको तरमें दबाया और अकस्मात् बाणोंका अन्धकार उत्पन्न किया उससमय वड़े हठसे अर्जुनने वाणों के द्वारा कर्ण शल्य और सबकौरवों को छेदा ८४ तब महाअस्त्रसे अन्धकार उत्पन्न होजानेपर अन्तरिक्षमें पक्षीभी नहीं घूमे और आकाशवर्ती जीवों के समूहों से प्रेरितवायुने दिव्य सुगन्धियों को फैलाया ८५ फिर हँसतेहुये अर्जुनने दशपृषत्कोंसे शल्यके कवचको छेदा इसकेपीछे अच्छेप्रकारसे छोड़ेहुये ८६ बारह बाणोंसे कर्णको छेदकर दुवारीभी सात बाणों से छेदा अर्जुनके धनुषसे छूटेहुये महावेगवाले बाणों से अत्यन्त घायल ८७ विदीर्ण और रुधिरसे भराअंग वह कर्ण जिसके कि वाण फैलरहेथे रुद्रजीके समान शोभायमानहुआ इसकेपीछे श्मशान भूमिमें रुद्रमुहूर्त्तमें क्रीड़ा करनेवाले रुधिरसे लिप्तशरीर अधिरथी कर्णने उस देवराजके समान रूपवाले अर्जुनको तीनवाणों से छेदा ८८। ८९ फिर मारनेकी इच्छासे सर्पों के समान अग्निरूप पांचवाणोंको श्रीकृष्णजीके शरीरमें प्रविष्टकिया ९० वह सुवर्णजटित अच्छीरीतिसे छोड़ेहुये वाण पुरुषोत्तमजी के कवचको छेदकर गिरपड़े ९१ और वड़े वेगसे पृथ्वीमें प्रवेश करगये और पातालगंगा में स्नान करके फिर कर्णसे मुखफेरकर चलेगये इसके पीछे अर्जुन ने उनबाणोंको अच्छीरीति से छोड़ेहुये पन्द्रह भल्लोंसे तीन२ खंडकरदिया ९२ उनवाणोंसे घायल तक्षकके पुत्रके साथी वड़े सर्प पृथ्वीपर आये फिर तो अर्जुन ऐसा क्रोधयुक्तहुआ जैसे कि सूखे वन को जलाताहुआ अग्नि होताहै ९३ उस अर्ज्जुन ने कर्णकी भुजा से छोड़ेहुये वाणोंसे इसप्रकार घायल शरीर श्रीकृष्णजीको देखकर कानतक खैंचकरशरीर के नाश करनेवाले अग्निरूप वाणों से कर्ण को ९४ मर्म्मस्थलों में छेदा वह दुःख से तो कम्पितहुआ परन्तु वड़ी बुद्धिसे धैर्य्य युक्तहोकर दैवयोगसे नियत रहा हे राजा इसकेपीछे अर्जुनके क्रोधरूप होनेपर ९५ ॥

दो० तजि कर्णहिं तेहि क्षण भगे तो सुत भट समुदाय ।
जिमि व्याधहि लखि सुतरुतजि भगत विहग भयपाय ॥
पार्थ अधिरथी के वधन को प्रण पूरण धारि ।
पार्थ लसौ जिमि त्रिपुरदल मध्य लसो त्रिपुरारि ॥

सो० तिमि सूतज रणधीर प्रलयभस्यो परसेन मधि ।
दोऊ तुल बलवीर कीन्हें अद्भुत युद्ध तहँ ॥

भुजंगप्रयातछन्द ॥

महावीर दोऊ धनुर्वेद चारी । दुहूंओर कै बाणकी वृष्टिभारी ॥
किये घोर संग्राम ता ठौर दोऊ । नहीं सामुहे भे दुहूंओर कोऊ ॥
गये दूरिजेते भये मौन ऐसे । गये सामने सिंहपशुभीत जैसे ॥
दुहूं ओरके यों कहैं जाचिबेको । नहीं आजुतो योगहै बाचिबे को ॥

दो० कर्णहि वधिदल कौरवी वधिहि पार्थ वल ऐन ।
कै पार्थहि वधिकै करण वधत पाण्डवी सैन ॥

दोऊ गगन शरनभरि दीन्हे । अन्धकार आरोपित कीन्हे ॥
दोउन के अति विक्रम देखी । विस्मित भे सुरगण अवरेखी ॥
दोऊ क्षात्रधर्म अवतंसे । इमि कहि कहिकै दुहुनप्रशंसे ॥
दोउनकेकर करिकर भारी । रहे जात लखि काननवारी ॥
कबहुँ पार्थबढ़ि विक्रमकीन्हों । कबहुँ सूतसुत गुरुतालीन्हों ॥
रह्यो न थिरि घटिबढ़ि पदकोऊ । अतिशय प्रबलधनुर्द्धर दोऊ ॥
भूपहुई तहँ तुमुललराई । पृथक पृथक सबकही न जाई ॥
९६।९७।९८।९९।१००॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिद्वैरथकर्णार्जुनयुद्धेनवतितमोऽध्यायः ९० ॥

इक्यानवे का अध्याय ॥

संजय बोले इसके पीछे पृथक् २ सेनावाले एकवीरके अन्तर पर जाननेवाले कौरव नियतहुये और अर्जुन के प्रकट कियेहुये अस्त्रको चारोंओर से विजली के समान प्रकाशमान देखा १ तव कर्ण ने उस अर्जुन के आकाशमें वर्त्तमान महाअस्त्र को बड़े घोर बाणों से दूरकिया जो कि बड़े युद्धमें अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन ने कर्ण के मारने को छोड़ाथा २ उस कौरवों के भस्म करनेवाले उदय रूप अस्त्रको सुनहरी पुंखवाले विशिखों से मर्द्दनकिया फिर दृढ़ प्रत्यंचायुक्त सफल धनुप को उठाकर बाणों के समूहों को छोड़तेहुये कर्ण ने ३ परशुरामजी से पायेहुये शत्रुओंके नाश करनेवाले अथर्ववेदसम्बन्धी मन्त्रसे अभिमंत्रित किये

हुये तीक्ष्णधारवाले बाणसे उस भस्म करनेवाले अर्जुनके अस्त्रको दूरकरदिया ४ हे राजा इसके पीछे वहां पृषत्कों से परस्पर युद्ध करनेवाले कर्ण और अर्जुन का ऐसा घोर युद्धहुआ जैसे कि दांतों के कठिन प्रहारों से दो हाथी युद्ध करते होयँ ५ उस समय वहां सब ओरसे अस्त्रों के प्रहारों से बड़ा कठिन युद्धहुआ और दोनोंने अपने अपने बाण समूहों से आकाशको पूर्णकर दिया ६ इसके पीछे सब कौरव और सोमकों ने वड़े बाणजालों को देखा और बाणों से अन्धकार होनेपर अन्तरिक्ष में किसी जीवमात्र को भी नहीं देखा हे राजा तब उन अनेक बाणों के छोड़ने और चढ़ानेवाले दोनों धनुषधारियों ने अनेक प्रकारकी अपनी अस्त्रज्ञताओं के साथ युद्धमें विचित्रमार्गों को दिखलाया ७।८ इस रीति से कभी अर्जुन कभी कर्ण प्रबलहोते हुये देखके ६ अन्य सब शूरवीरों ने युद्धभूमि में परस्पर घात ढूंढ़नेवाले उन दोनों के असह्य और घोरयुद्ध को देखकर बड़ाही आश्चर्य्य किया हे नरेन्द्र इसके पीछे अन्तरिक्षवर्त्ती जीवों ने उन कर्ण और अर्जुन दोनों की प्रशंसाकरी कि हे कर्ण धन्यहै हे अर्जुन धन्यहै धन्य है यह शब्द सब ओरसे सुनेजातेथे १०।११ तब उस युद्धमें रथ घोड़े और हाथियों के प्रहारोंसे पृथ्वीके धसकने पर पातालतल में बिश्राम करनेवाला अर्जुनका शत्रु अश्वसेनसर्प १२ जो कि खाण्डवबनकी अग्निसे निकलकर क्रोधयुक्त होकर पृथ्वी में घुसगयाथा वह फिर ऊर्द्ध्वगामी होकर कर्ण और अर्जुनका युद्ध देख कर ऊपरको आया १३ हे राजा उसने शोचा कि इस दुष्ट अर्जुनसे अपना ब-दला लेनेका यही समय है इसीहेतु से बाणरूप बनकर कर्णके तूणीर में आया इसकेपीछे अस्त्रों के प्रहारों से संयुक्त फैलेहुये बाणों के समूह रूपी किरणों से पूर्णहुआ तबउन दोनों कर्ण और अर्जुनने बाणों के समूहों की वर्षा से आ-काशके अन्तर को निरन्तर कर दिया उससमय वह आकाश बड़ी दूरतक बा-णसमूहों से एकसेही रूपकाथा उसको देखकर सब कौरव और सोमक भयभीत हुये १४।१५।१६ उसबाणों के बड़े अन्धकार में दूसराकोई जीव आताहुआ नहीं देखा तदनन्तर सब लोकके धनुपधारी महावीर वह दोनों पुरुषोत्तम युद्ध में प्राणों के त्यागनेवाले युद्धके परिश्रम में प्रवृत्त १७ निन्दित वचनों को पर-स्पर कहनेवालेहुये फिर वह देखनेवालों से व्याप्त जल चन्दनसे सींचेहुये दिव्य बाल व्यजनोंकी रखनेवाली स्वर्गवासिनी अप्सराओं के समूहोंसमेत इन्द्र और

सूर्य के करकमलों से स्वच्छ मुखवाले हुये १८ जब अर्जुनके बाणों से अत्यन्त पीड़ामान कर्ण अर्जुन को न मारसका तब बाणों से अत्यन्त घायल शरीर वाले उसवीरने उसअकेले तरकसमें रहनेवाले सर्परूप बाणके चलानेको चित्त किया १९ और बड़े क्रोधपूर्वक उस अच्छीरीतिसे प्राप्तहोनेवाले बहुतकालसे गुप्तरूप सर्प मुखबाणको अर्जुनके वास्ते धनुषपर चढ़ाया अर्थात् बड़े तेजस्वी कर्णने उस सदैव से पूजित चन्दनचूरे में रहनेवाले सुवर्णके तूणीर में नियत बड़ेप्रकाशित बाणको कानतक खैंच अर्जुनके मुखकीओर धनुषपरचढ़ाया २०।२१ अर्जुनके शिरकाटनेको अभिलाषी उसऐरावतकेवंश में उत्पन्नहोनेवाले अत्यंत प्रकाशमान बाणकोचढ़ातेही सबदिशा और आकाशमें अग्निज्वलितहुई और आकाश से सैकड़ों घोररूप उल्कापातहुये २२ धनुषमें उस सर्परूपबाणके चढ़ाने पर इन्द्रसमेत सब लोकपाल हाहाकार करनेलगे और सूतपुत्र कर्णने योगबलसे उस बाणमें प्रवेश करनेवाले सर्पको न जाना परन्तु सहस्राक्ष इन्द्र उस कर्णके तूणीर में प्रवेश करनेवाले सर्पको देखकर अपने पुत्रके मारेजाने के सन्देह और शोचमें शिथिल अंग हुआ उसको शोच ग्रस्त देखकर बड़ेमहात्मा कमलयोनि ब्रह्माजी इन्द्रसे बोले कि शोचमत करो अर्जुनही में लक्ष्मी और विजय दोनों हैं २३।२४ इसके पीछे मद्रके राजा महात्मा शल्यने उस उग्रबाण के चलाने वाले कर्णसे कहा कि हे कर्ण यहबाण अर्जुनको नहीं पावेगा इस शिरकाटने वाले बाणको तुम अच्छीरीति से देखकर चढ़ाओ २५इसके पीछे क्रोधसे रक्तनेत्र बड़ावेगवान् कर्ण राजामद्रसे बोला कि हे शल्य कर्ण दूसरी बार बाणको नहीं चढ़ाता है मुझसे मनुष्य छलसे युद्धनहीं करते हैं २६ हे राजा उस शीघ्रताक-रनेवाले उद्युक्त कर्णने यह कहकर विजय के निमित्त बड़े उपायसे उस बाणको छोड़ा और कहने लगा कि हे अर्जुन अब तुझको माराहै २७ कर्णकी भुजासे धनुषके द्वारा छूटा हुआ वह घोर बाण प्रत्यंचासे पृथक् हो उग्रसूर्य्य के समान आकाशमें जाके अग्नि के समान होगया २८ तबतो बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक माधवजीने उस अग्निरूप बाणको देखकर बड़ी शीघ्रतासे अपने चरणोंसे रथको दबाकर थोड़ासा पृथ्वी में घुसाया तब वह सुवर्ण भूषणों से अलंकृत वह घोड़े भी घुटनोंसे पृथ्वीपर बैठगये २९ महा पराक्रमी माधवजी ने कर्णके हाथसेधनुप पर चढ़ाये हुये सर्पको देखकर पहियों पर बलकरके उस उत्तम रथको पृथ्वी में

गड़ादिया ३० तभी वह घोड़े पृथ्वीपर बैठगये इसके पीछे मधुसूदनके पूजनके निमित्त अन्तरिक्ष में बड़ाभारी शब्दहोकर अकस्मात् आकाशवाणी हुई और दिव्य पुष्पोंकी वर्षा होकर सिंहनाद हुये ३१ उस समय मधुसूदनजी के बड़े उपाय से पृथ्वी में रथके घुसनेपर उस बाणने उस बुद्धिमान् अर्जुनके बड़े दद रूप इन्द्रके दियेहुये किरीटको घायलकिया इसके पीछे सूत पुत्रने सर्प अस्त्रके छोड़ने और क्रोधयुक्त उत्तम उपाय पूर्वक बाणके द्वारासे अर्जुनके शिरसे मुकुट को हरणकिया वह मुकुट आकाश स्वर्ग और जलों में प्रसिद्ध सूर्य्य चन्द्र और अग्निके समान प्रकाशित सुवर्ण मोती हीरे मणियों से जटित था जिसको वि आप समर्थ ब्रह्माजी ने तपके द्वारा बड़े उपाय से इन्द्रके लिये उत्पन्न कियाथा और बड़ा सुन्दर रूप शत्रुओं को भयकारी शिरपर धारण करनेवाले को महा आनन्ददायक होकर श्रेष्ठ गंधियोंसे युक्तथा ३२ । ३३ उसीको प्रसन्न चित्त होकर आप इन्द्रने असुरों के मारनेके अभिलाषी अर्जुन को दियाथा वह मुकुट ऐसे प्रभाववाला था कि इन्द्र वरुण कुवेर वज्र पाश और उत्तम बाणोंसे अथवा शिव जीके पिनाक धनुषसे भी ३४ मर्द्दनके योग्य न था ऐसे मुकुटको कर्णने अपनी हठसे सर्परूप बाणके द्वारा हरणकरलिया अर्थात् दुरात्मा दुष्टभाव असत्यप्रतिज्ञावाले ३५ वेगवान् सर्पने अर्जुनके उस किरीटको शिरपरसे हरलिया वहकिरीट अत्यन्त अद्भुत बड़ोंकेयोग्य सुवर्णके जालोंसे मण्डित प्रकाशित शब्दायमान होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा ३६ अर्थात् उत्तम बाणसे मथित विषकी अग्नि से प्रकाशित वह अर्जुन का मुकुट पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि रक्त मण्डल वालासूर्य्य अस्ताचलसे गिरताहै ३७ उस सर्पने बलकेद्वारा रत्नोंसे जटित और अलंकृत मुकुटको अर्जुन के शिरसे ऐसे जुदा किया जैसे कि पर्वत के अंकुर और पुष्पित वृक्षों से जटित श्रेष्ठ शिखर को इन्द्रकावज्र गिरादेता है ३८ । ३९ अथवा जैसे कि वायु से पृथ्वी आकाश स्वर्ग और जलों के समुद्र उत्पातयुक्त होकर कम्पित होते हैं उसीप्रकार वह उग्रमुकुट हटकरके अत्यन्त चूर्ण हुआ उस समय तीनोंलोकोंके बड़ेशब्दोंको मनुष्योंने सुना और सुनकर सब पीड़ितहोके गिरपड़े ४० बिना किरीटके भी वहपार्थ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि श्याम रंगवाला नवीन उत्पन्नहुआ पर्व्वतका ऊंचा शिखर होताहै इसके अनन्तर पीड़ा से रहित अर्जुन अपने शिरके बालोंको श्वेतवस्त्रसे बांधकर ऐसा प्रकाशमानहुआ

जैसे कि शिरपर वर्त्तमान सूर्य्यकी किरणवाला उदयाचल पर्व्वतहोताहै सूर्य्यके पुत्र कर्णके भेजेहुये नेत्र रूप कान रखनेवाले दुःखसेरक्षा करनेवाले सर्प के पुत्र अश्वसेन सर्पने प्रत्यक्षमें बड़ेतेजस्वी बागडोरोंके समीप शिर रखनेवाले अर्जुन को देखकरभी बड़ीतीव्रता से नीचेको झुकने से असामर्थ होकर उस इन्द्रके पुत्र अर्जुनके मुकुटको जो कि अच्छीरीतिसे अलंकृत सूर्य्यकेसमान प्रकाशमानथा हरणकिया और बाणकेछोड़नेसे सर्पको मर्दनकरनेवाला अर्जुन सर्पको न पाकर मृत्युके आधीन नहीं हुआ ४१ । ४२ । ४३ कर्णकी भुजासे छोड़ाहुआ अग्नि सूर्य्यरूप बड़े शूरवीर के योग्य वह शायक और उसमें प्रवेश करनेवाला अर्जुन का शत्रु मुकुट को घायल करके चलागया तब अर्ज्जुन के उस सुवर्ण जटित मुकुटको खैंचकर भस्म करके उसने फिर तूणीरमें जानाचाहा और कर्ण से बोला कि हे कर्ण मैं बिना विचार कियेहुये तेरे हाथसे छोड़ागया था इसीसे अर्जुनके शिरको न काटसका अब तू युद्धमें अर्जुनको अच्छेप्रकारसे लक्षकरके शीघ्रता से मुझको छोड़ मैं अपने और तेरे शत्रु अर्जुन को अभी मारूंगा यह वचन सुनतेही कर्ण उससे बोला हे श्रेष्ठ तुम कौनहो ४४ । ४५ सर्पने कहा माता के मारने से मुझ शत्रुता करनेवाले को अर्जुन का शत्रु जानो चाहै उसका रक्षक यमराज भी होजाय तौ भी मैं उसको यमलोकमें पहुंचाऊंगा ४६ कर्ण बोला हे सर्प अब कर्ण युद्धमें दूसरे के बलसे अपनी विजयको नहीं चाहताहै और एक बार बाणको चढ़ाकर उसको फिर दूसरी बार नहीं चढ़ाऊंगा मैं अकेलाही एक अर्जुन नहीं जो ऐसे २ सौ अर्जुन भी होयँ उनको भी मारसक्ताहूं यहकहकर ४७ सूर्य्य के पुत्रों में श्रेष्ठ कर्ण युद्धभूमि में फिर भी उस सर्प से बोला कि हे सर्प मैं अस्त्रके वा क्रोधयुक्त किसीउत्तम उपाय के द्वारा अर्जुनको मारूंगा तुम खुशी से चलेजाओ कर्ण के इस वचनको उस सर्प ने क्रोधयुक्त होकर नहीं सुना और अर्जुन के मारने की इच्छा से वह सर्पराज अपने निज स्वरूपको धारणकरके आपही अर्जुनके मारनेकोचला ४८।४९ तदनन्तर श्रीकृष्णजी उस युद्धभूमि में अर्जुन से बोले कि तुम इस शत्रुता करनेवाले बड़े सर्पको मारो श्रीकृष्णजी के इस वचनको सुनतेही शत्रुके बलका न सहनेवाला वह गांडीवधनुषधारी अर्जुन यह वचन बोला कि यह सर्प मेरा कौनहै जो आपने आप गरुड़के मुखमें आया है श्रीकृष्णजी ने कहा कि खांडववनमें अग्निके तृप्तकरनेवाले तुझ धनुषधारी

ने ५०।५१ इस आकाशमें वर्त्तमान अपनी मातासे गुप्त शरीरवालेको एकरूप जानकर इसकी माताको मारा था उसी के कारणसे उस शत्रुताको स्मरणकरता निश्चयकरके अपने मरने के लिये तुझको चाहताहै ५२ हे शत्रुके हँसनेवाले तुम आकाशसे प्रज्वलित उल्कापातके समान उस आनेवाले सर्पको देखो संजय बोले कि इसके पीछे उस अर्जुनने महा क्रोधयुक्त होकर बड़े तीक्ष्ण उत्तम छः वाणों से उस सर्पको जो आकाशसे तिरछा होकर आ रहाथा काटडाला ५३ फिर वह अंगों से कटाहुआ पृथ्वीपर गिरपड़ा अर्जुन के हाथसे उस सर्प के मरनेपर आप समर्थरूप पुरुषोत्तमजी ने ५४ उस गिरे और घुसेहुये रथको शीघ्रही अपनी दोनों भुजाओं से ऊपरको उठाया उसी मुहूर्त्त में अर्जुनको तिरछा देखनेवाले पुरुषों में बड़ेवीर कर्ण ने उग्रपक्षधारी दशपृपत्कों से फिर अर्जुन को व्यथितकिया तब अर्जुन ने भी अच्छेप्रकार से छोड़ेहुये वराह कर्णनाम वारह तीक्ष्णबाणों से कर्ण को घायलकरके ५५ विषवाले सर्प की समान शीघ्रगामी कानतक खैंचेहुये नाराचनाम बाणको छोड़ा वह अच्छीरीतिसे छोड़ाहुआ उत्तम वाण कर्ण के जड़ाऊ कवचको चीरकर मानो प्राणोंको घायलकरताहुआ ५६ कर्ण के रुधिर को पीकर रुधिर में लिप्तहोके पृथ्वी में समागया इसके पीछे वाणके आघातसे कर्ण ऐसा क्रोधयुक्तहुआ जैसे कि दण्डसे प्रेरित होकर महा सर्प क्रोधरूप होताहै ५७ तबतो शीघ्रता करनेवाले कर्ण ने उत्तम वाणोंको ऐसे छोड़ा जैसे कि बड़ा विषधर सर्प अपने विषको छोड़ताहै उससमय कर्ण ने वारह बाणसे तो श्रीकृष्णजी को और निन्नानबे बाणों से अर्जुन को छेदा ५८ फिर कर्ण घोर बाणों से अर्जुन को घायलकरके गर्जना पूर्व्वक हँसा तब उसके उस हास्यको न सहकर उस मर्मज्ञ अर्जुन ने उसके मर्मों को छेदा ५९ इस इन्द्र के समान पराक्रमी अर्जुन ने सैकड़ों बाणों से ऐसे वेगसे छेदा जैसे कि इन्द्र ने राजा बलिको छेदाथा इसके अनन्तर अर्जुन ने यमराजके दण्डकी समान नब्बेबाणों को कर्ण के ऊपर छोड़ा ६० इन अर्जुन के वाणों से विदीर्ण शरीर वह कर्ण ऐसा पीड़ामानहुआ जैसे कि वज्रसे कटाहुआ पर्व्वत पीड़ित होता है और अर्जुन के वाणों से टूटाहुआ इसका सुवर्ण हीरों से जटित प्रकाशमान मुकुट ६१ वा दोनों कुण्डल और बड़े मूल्यवाला बड़े उपायों से अच्छे कारीगरों का वनाया हुआ कवच यह तीनों कटकर पृथ्वी पर गिरे इसके पीछे फिर

क्रोधभरे अर्जुन ने उस कवच रहित खाली शरीरवाले कर्णको चार तीक्ष्णबाणों से छेदा ६२। ६३ फिर शत्रु के हाथसे अत्यन्त घायल वह कर्ण ऐसा अत्यन्त पीड़ामान हुआ जैसे कि वात पित्त कफसे ग्रसित रोगीपीड़ित होताहै उस समय शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने बड़े धनुष मंडलसे निकलेहुये और बड़ेउपाय पूर्व्वक कर्मसे चलाये हुये ६४ बहुतसे उत्तम बाणों से घायल करके मर्मस्थलों को भी छेदा अर्जुन के बड़े वेगवान तीक्ष्ण नोकवाले नानाप्रकार के बाणों से अत्यन्त घायल कर्ण ६५ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पहाड़ी धातुओं से लालवर्ण का पर्व्वत वज्रों के प्रहारों से रक्तजलों को छोड़ताहुआ शोभित होता है इसके पीछे अर्जुनने सीधे चलनेवाले बड़े दृढ़रूप सुन्दररीतिसे छोड़ेहुये लोहे के यमराज और अग्निके दण्डके समान नौबाणोंसे कर्णको ऐसे छातीपर छेदा जैसे कि अग्नि के पुत्र स्वामिकार्त्तिजी ने क्रौंचपर्व्वत को छेदा था उस समय सूतपुत्र तूणीर को और इन्द्रधनुष के समान उस धनुषको त्यागकर ६६। ६७ रथ के ऊपर अचेत होकर गिरताहुआ नियतहुआ हे प्रभु जिसकी मुट्ठी फैलगईथी और अत्यन्त घायल था तब उत्तम पुरुषों के व्रतमें नियत अर्जुन ने उस आपत्ति में पड़ेहुये कर्ण के मारने को इच्छानहीं की ६८ इसके पीछे इन्द्रके छोटे भाई विष्णुरूप श्रीकृष्णजी भ्रान्तीसे आश्चर्य्य पूर्व्वक उससे बोले कि हे अर्जुन क्या भूलकरताहै पंडितलोग अपने से कमपराक्रमी शत्रुको भी कभी नहीं त्याग करतेहैं मुख्यकर पण्डित लोग भी आपत्तियोंमें शत्रुको मारकर धर्म और यश को पातेहैं सो तुम बिनाविचार कियेही इस अपने प्राचीन शत्रु वीर कर्ण के मारने का उपाय करो ६९। ७० यह समर्थ कर्ण जो आगे आताहै इसको तुम ऐसे छेदो जैसे कि इन्द्रने नमुचि को छेदाथा इसके पीछे सब कौरवों में श्रेष्ठ शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने शीघ्रही श्रीकृष्णजी को मिलकर और पूजन करके कर्ण को ७१ उत्तम बाणों से ऐसा छेदा जैसे कि पूर्व्व समय में सम्बर के मारनेवाले इन्द्रने राजाबलि को छेदाथा हे भरतवंशी फिर अर्जुन ने दन्तवक्रनाम बाणों से कर्ण को घोड़े और रथके समेत ढकदिया ७२ सब उपायों से सुनहरी पुंखवाले बाणों के द्वारा दिशाओं को भी ढकदिया फिर वह बड़े दीर्घ और उन्नत वक्षस्थलवाला कर्ण वत्सदन्त नाम बाणों से छिदाहुआ ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि अच्छे २ पुष्पवाले अशोक पलाश शाल्मलि और रक्तचन्दन के वनसे युक्त

पर्व्वत शोभायमान होताहै हे राजा वह कर्ण शरीर में लगेहुये वहुत वाणों से ऐसा शोभायमान हुआ ७३ । ७४ जैसे कि वृक्षोंसे पूर्ण वन अथवा कन्दरा और प्रफुल्लित कर्णिकार के वृक्षोंसे युक्त गिरिराज शोभित होताहै वह वाण जालरूप किरणों का रखनेवाला कर्ण बाणों के समूहों को छोड़ताहुआ ऐसा प्रकाशमान था ७५ जैसे कि अस्ताचल के सन्मुख रक्तमंडलवाला सूर्य्य होताहै अर्जुन की भुजाओंसे छोड़ेहुये तीक्ष्ण नोकवाले बाणोंने दिशाओंको पाकर कर्ण की भुजाओं से छुटेहुये सर्परूप प्रकाशित बाणों को पराजय किया इसके पीछे क्रोध युक्त सर्पों के समान बाणों को छोड़तेहुये उस कर्णने धैर्य्यको पाकर ७६ । ७७ क्रोधयुक्त सर्पकी समान दशबाणों से अर्जुन को और छः बाणों से श्रीकृष्णजी को पीड़ित किया इसके पीछे बड़ा बुद्धिमान अर्जुन कठोर शब्द युक्त सर्प विष और अग्नि के समान लोहे के भयंकर बाणों के फेंकने में प्रवृत्तहुआ हे राजा फिर तो अदृष्टगुप्तरूपकाल ब्राह्मण के क्रोधसे कर्णके मरने को कहनेवाला हुआ ७८ । ७६ कर्णके मरने का समय आनेपर यह वचन बोला कि पृथ्वी रथकेपहिये को निगलती है इसकेपीछे वह महात्मा परशुरामजी के उस दियेहुये अस्त्रकोभी चित्तसे भूलगया ८० हे वीर धृतराष्ट्र उसके मरणका समय आनेपर उसके रथके पहियेको पृथ्वीने पकड़ा तब उस उत्तम ब्राह्मणके शापसे उसका रथ घूमगया ८१ और रथका पहिया पृथ्वीपर गिरपड़ा तब तो वह कर्ण युद्धमें ऐसा व्याकुल चित्त हुआ जैसे कि अच्छेपुष्पवाला वेदिकासमेत चैत्यनाम वृक्ष भूमिमें डूबजाताहै ८२ ब्राह्मणके शापसे रथके घूमने और परशुरामजी से पायेहुये अस्त्रके विस्मरण होनेपर ८३ और अर्जुन के हाथसे सर्प मुख प्रकाशित घोर बाण के गिरने पर उन दुःखों को न सहनेवाला कर्ण दोनों हाथों को कंपायमान करके इसबातकी निन्दा करनेलगा कि धर्मज्ञ लोग सदैव इसबातको कहाकरते हैं कि धर्मकरने वाले का धर्म उस धार्मिक पुरुषकी सदैव रक्षाकरताहै और हम पराक्रमी लोग उनके कहनेके अनुसार विश्वास पूर्व्वक धर्मकरनेमें उपायोंको करते हैं ८४ । ८५ सो मेरी बुद्धिसे वह कियाहुआ धर्म रक्षानहीं करता है किन्तु अवश्यमारताहै भक्तोंकी रक्षा कभी नहींकरताहै यह मैं मानताहूं कि धर्म सदैव रक्षा नहीं करता है इसरीतिसे घोड़े और सारथी से पृथक् और अर्जुनके बाणोंसे अत्यन्त चेष्टावान ८६ और मर्मस्थलों में अत्यन्त घायल होने से कर्मकरने में शिथिलहो-

कर बारम्बार धर्मकी निन्दाकरी इसकेपीछे अत्यन्त भयकारी तीनबाणोंसे युद्ध में श्रीकृष्ण जी को हाथपर छेदा और अर्जुनको भी सातबाणों से ८७ इसके पीछे अर्जुनने कठिन वेगयुक्त सीधे चलनेवाले इन्द्र वज्रके समान घोर अग्निके समान सत्तर बाणोंको छोड़ा वह भयानक वेगवाले बाण उसको छेदकर पृथ्वी पर गिरपड़े ८८ तदनन्तर अपने शरीरको कम्पायमान करतेहुये कर्णने अपनी सामर्थ्यसे चेष्टाको दिखाया फिर बलसे अपनेको साधकर ब्रह्मास्त्रको प्रकटकिया फिर अर्जुनने भी उस अस्त्रको देखकर ऐन्द्रास्त्रके मन्त्रको पढ़ा ८९ फिर उस शत्रुके तपानेवाले ने गांडीवधनुष प्रत्यंचा और बाणपर मन्त्रको पढ़कर बाणों की ऐसी वर्षाकरी जैसे कि इन्द्र जलकी वृष्टिको करताहै ९० इसकेपीछे अर्जुन के रथसे निकले हुये तेजरूपी पराक्रमी बाण कर्णके रथके समीपजाकर प्रकट हुये ९१ फिर महारथी कर्णने अपने छोड़े हुये बाणों से उन बाणों को निष्फ-ल करदिया इस पीछे उस अस्त्रके दूरहोनेपर वह वृष्णी वीर श्रीकृष्णजी बोले ९२ हे अर्जुन तू परमअस्त्र को छोड़ क्योंकि कर्ण बाणोंको निष्फल करदेता है इस केपीछे ब्रह्मास्त्रके उग्रमन्त्रकोपढ़कर बाणको धनुषपर चढ़ाया ९३ और कर्णको बाणों से ढककर उसपर फिर बाणों को फेंका तबकर्णने सुन्दर वेतवाले तीक्ष्ण बाणों से उसकी प्रत्यञ्चाको काटकर पहली दूसरी तीसरी चौथी पांचवीं छठी सातवीं आठवीं नौमी दशवीं ग्यारहवीं प्रत्यंचाको काटा परन्तु वह कर्ण उसह-जारों प्रत्यंचा चढ़ानेवाले को नहीं जानताथा ९४। ९५ तदनन्तर अर्जुन ने दूसरी प्रत्यंचाको धनुषपर चढ़ाकर मन्त्रों से अभिमन्त्रितकर सर्पों की समान प्रकाशित बाणों से कर्णको ढकदिया ९६ कर्णने उसकी प्रत्यंचाके टूटने और चढ़ाने को हस्तलाघवता के कारण नहीं जाना यहभी आश्चर्य सा हुआ ९७ फिर कर्णने अपने अस्त्रोंसे अर्जुनके अस्त्रोंको रोककर घायलकिया और अप-ने पराक्रमको अच्छा दिखाकर उसने अर्जुनसेभी अधिककर्मकिया ९८ इसके पीछे श्रीकृष्णजी कर्णके अस्त्रसे अर्जुन को पीड़ामान देखकर बोले कि चलो अन्यबाणों को प्रेरित करके चलाओ ९९ इसकेपीछे शत्रुसन्तापी अर्जुन अ-ग्नि की समान घोर सर्पके विषके समान लोहेके दिव्य बाणोंको अभिमन्त्रित करके १०० रुद्रअस्त्रको चढ़ाकर छोड़ने को उपस्थित हुआ हे राजा उसीसमय पृथ्वी ने कर्णके रथ चक्रको निगला १०१ इसकेपीछे उस सावधानकर्णने शीघ्र

रथसे उतरकर दोनों भुजाओंसे चक्रको पकड़कर पृथ्वीसे निकालनाचाहा १०२ वह सप्तद्वीपा वसुन्धरा रथचक्रको निगलने वाली पृथ्वी पर्व्वत वन नदी और समुद्रों समेत कर्णके हाथसे चार अंगुल ऊंचीउठआई परन्तु पहिया न छूटा तव तो कर्णने क्रोधकर के अश्रुपातों को डाला और अर्जुन को क्रोधयुक्त देखकर यह वचन बोला १०३ । १०४ हे बड़े धनुषधारी अर्जुन मैं जबतक इस पृथ्वी में गड़ेहुये चक्रको न निकाललूं तबतक क्षणभरके लिये शस्त्रफेंकनेको रोको १०५ हे अर्जुन दैवयोगसे इसमेरे वामरथके चक्रको पृथ्वी में गड़ाहुआ देखकर नपुंसकों के युद्ध को त्यागकरो १०६ हे कुन्तीनन्दन तुम नपुंसकों के समान अथवा नपुंसकों के मतपर चलनेके योग्य नहीं हो क्योंकि युद्धकर्म में बड़ेनामी प्रसिद्धहो १०७ हे पाण्डव तुम गुणोंसे भरेहुये कर्म करनेकेयोग्य हो जो शूरवीर लोग कि साधुओं के व्रतमें नियतहैं वह केशों के फैलानेवाले १०८ शरणागत होनेवाले अस्त्रों के त्यागनेवाले अथवा प्रार्थना करनेवाले वा वाण न रखनेवाले कवच से रहित और टूटे शस्त्रवाले पर १०९ अपने शस्त्रों को नहीं छोड़ते हैं हे पांडव तुम लोकमें बड़े शूरवीर साधुव्रतवाले ११० युद्धके धर्म्मोंको उत्तम रीतिसे जाननेवाले यज्ञान्तमें अमृत स्नान करनेवाले दिव्यअस्त्रों के ज्ञाता महासाहसी युद्ध में सहस्राबाहुके समान हो १११ हे महाबाहो जबतक मैं इस गड़ेहुये पाये को न निकाललूं तबतक तुम रथपर सवार होकर पृथ्वीपर नियत मुझ व्याकुल चित्त के मारनेको योग्य नहीं हो ११२ हे अर्ज्जुन मैं तुझसे और वासुदेवजी से नहीं डरताहूं और तुम क्षत्री के पुत्र और बड़े वंशके बढ़ानेवाले हो ११३ इस हेतु से तुमसे मैं कहताहूं हे पांडव एकमुहूर्त्त तक ठहरजाओ ११४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णरथचक्रग्रसनंनामएकनवतितमोऽध्यायः ९१ ॥

बानबेका अध्याय ॥

चौ० समय देखि है व्याकुल मनमें । रथ बिनुचले कर्ण तेहि क्षनमें ॥
धनुरथ पै धरि वीर उतरिकै । चारु चक्रयुत करसों धरिकै ॥
लगो उठावन सुनु महिसाईं । अचरज कियो कर्ण तेहिठाईं ॥
गिरि सागर कानन सह धरनी । रथ के संग उठाई अवनी ॥
अंगुलचारि प्रमाण उठायो । सुरगणके मन विस्मय छायो ॥

छुटो न रथ तब कर्ण विलखिकै । सजलनयन भोइत उतलखिकै ॥
करि शरवृष्टि पार्थ तेहि क्षनमें । बहु शर हने कर्ण के तनमें ॥
तिनसों कर्ण महा दुखपायो । पारथ को इमि टेरि सुनायो ॥
हे हे पार्थ कहा अघ धारो । बाण वृष्टि क्षण एक निवारो ॥
ग्रसित चक्र धरणी ते जबलौं । मैं काढ़ौं तू थिर रहु तबलौं ॥
बिना शस्त्र पहँ तजिबो शायक । उचितनतुम्हैंविदितभटनायक ॥

दो० नहिं कृष्णहिं नहिं तुमहिं हम भीति कहत ये बैन ।
तुमसे क्षत्रिहि धर्म को तजिबो सोहत हैन ॥
जौलगि चक्र छुड़ाइ हम नहिं पकरैं धनुबान ।
पारथ तौ लगि करिक्षमा बहुरि करो मनमान ॥

जयकरीछन्द ॥

तहां कर्ण के सुनि यह बैन । कहत भये केशव मतिऐन ॥
तुम दुर्य्योधन शकुनि कराल । कबकीन्हे सुधरम प्रतिपाल ॥
भीमसेन कहँ जहर खवाय । सांपनसों दीन्हों कटवाय ॥
करिकै मंत्र नाश अभिलाखि । इन कहँ लाक्षागृहमें राखि ॥
निशिमें दाह करायो पूर्व्व । तब कित रह्यो धर्मव्रत गूर्व्व ॥
किये सभामें कुकरम जौन । अबनहिंकहतबनतसबतौन ॥
तेरहें वर्ष बांटि महि लेन । किये करार न चाहे देन ॥
तब कितगयो धरमको काम । अबलखिपरा धरम अभिराम ॥
विरथ विधनुष अकेलो बार । पार्थसुतहि वधि पट्धनुधार ॥
अति अनन्द लहिभये अभर्म । अब चाहत करवावो धर्म ॥
अब तो वध करिबो यहियाम । है पारथको धर्म ललाम ॥
केशवके यह वचन अनूप । सुनि सूतज है लज्जित रूप ॥
फिरि रथपरचढ़ि गहि कोदण्ड । वर्षन लागो बाण उदण्ड ॥
भरो क्रोध लाघव दरशाय । दये पार्थ पहँ शायक छाय ॥
सो लखिके केशव अनुमानि । कहे पार्थ सों अवसर जानि ॥
दिव्य शरन सों बेधि सडौर । अबयहि शीघ्रवधौ करिगौर ॥
दो० केशव के यह वचन सुनि पारथ धनुटंकारि ।

वर्षन लागो कर्ण पहँ दिव्य अस्त्र पण धारि ॥
करतभयो ब्रह्मास्त्रको तेहि क्षण कर्ण प्रयोग ।
पारथतजिब्रह्मास्त्र तेहि शमितकियो करियोग ॥
ताहि क्षमित करि तजतभो दइत अस्त्रसो वीर ।
वारुणास्त्रसों तेहि शमित कियो कर्ण रणधीर ॥
घनतमसों छादित दिशा देखि पार्थ करिकोप ।
कियो अस्त्र वायव्य सों वारुणास्त्रको लोप ॥
सो० सो लखिकर्ण अमान परम दिव्य शरगहतभो ।
करि अद्भुत संधान तज्यो देखि,डरपे सुमन ॥
वज्र सरिससो बान तासुभुजा तर मधि लगो ।
भिदितासों बलवान मोहितभो अर्जुन सुभट ॥
चौ० महाराज सुनिये तेहि क्षनमें । रथ ते उतरि कर्ण गुनिमनमें ॥
हर्ष विषाद क्रोधसों पागो । वलकरिसुरथ उठावन लागो ॥
कृष्णचन्द्र सो समय निरेषी । पारथ सों बोले अवरेषी ॥
रथचढ़ि गहै धनुष शर जौलौं । कर्णहिं पार्थवधौ तुम तौलों ॥
कृष्णचन्द्र की वाणी सुनिकै । पारथ मन्त्र यथारथ गुनिकै ॥
तीक्षण शर क्षुरप्र करलीन्हो । तासों केतु काटि द्वै कीन्हो ॥
फिरिअमोघआञ्जलिकसुशायक । गह्योपार्थ भटधनुधरनायक ॥
चक्र त्रिशूल वज्र सम घोरा । कालदण्ड सम कठिन कठोरा ॥
प्रलयकाल के भानु समाना । वायुअग्निसम दुसहअमाना ॥
भरि आंगिरस मंत्रकी पुरता । करिअतिअगणितगौरवगुरता ॥
सबदिशि हेरि क्रोधसों राता । बोलो पार्थ वीर रस माता ॥
अव हनि यह शर गौरवभेखो । कर्णहिं वधि डारत शर देखो ॥
इमिकहि पारथ तेहि शर वर सों । काट्यो शीश कर्ण के धरसों ॥
मार्त्तण्ड सम परम प्रभाको । महिपर गिरो शीश कटिताको ॥
तदनु गिरो धरतजि वल गारो । सरस सुखोचित सुखमाभारो ॥
मणिमय भूरि भूषणनि छाजित । महिपर भयो कर्ण भट राजित ॥
दो० सबके देखत तहँभयो अद्भुत अति अमलीन ।

तेज कर्णकी देहसों कढ़िभो रवि में लीन॥
इहिविधि कर्णको वध निरखि केशव पाण्डव सर्व।
लगे बजावन शङ्ख अति आनँद भरे सगर्व॥
गरजि गरजि सोमक सकल अरु पांचाल समस्त।
सानँद बजवावन लगे जय दुन्दुभी प्रशस्त॥
नृप तहँ ममदल मधिवढ़ो हाहा धुनि गम्भीर।
भागिचले भट विकल ह्वै तजिबल गौरव धीर॥

इन पद्योंके गद्य आशय में॥

संजय बोले कि रथ पर चढ़ेहुये वासुदेवजी उससे बोले हे कर्ण अब यहां तू धर्मको याद करताहै आपत्तिमें डूबेहुये नीचलोग बहुधा ईश्वरकी निन्दाकिया करतेहैं परन्तु अपने दुष्ट कर्म को नहीं कहते १ हे कर्ण जब दुश्शासन शकुनि दुर्य्योधन और तुमने एक वस्त्र रखनेवाली द्रौपदी को सभामें बुलाया तब वहां तुमको धर्म नहीं दिखाई दिया २ जब शकुनी ने विद्याके द्वारा द्यूतकर्म न जाननेवाले राजा युधिष्ठिर को अधर्म से सभामें विजयकिया तब तेरा धर्मकहां गया था ३ हे कर्ण वनवास के व्यतीत होनेपर तेरहवें वर्षको भी पाकर आधा राज्य नहीं दिया तब तेरा धर्म कहांगयाथा ४ जब राजा दुर्य्योधन ने तेरे मतसे भीमसेन को सर्पों से और विषमिले अन्नखवाने से मारना चाहा तब तेरा धर्म कहां गयाथा ५ जब कि वारणावत नगर में लाचागृह में सोतेहुये पाण्डवों को अग्निसे जलाया तब तेराधर्म कहांगयाथा हेकर्ण जब सभामें बैठकर दुश्शासनके आधीन हुई द्रौपदी को हँसा तब तेरा धर्म कहां गयाथा ६। ७ हेकर्ण जबपूर्व्व कालमें नीचों से दुखित निरपराधिनी द्रौपदी को त्याग करताथा तब तेरा धर्म कहां गयाथा ८ जब द्रौपदीसे तैंने यह कुत्सित अभद्र वचनकहे थे कि हे कृष्णा पाण्डवोंका नाश होगया और सनातन नरकमेंगये तुम दूसरे पतिको वरो उस हाथीके समान चलनेवाली को ऐसे दुर्वाक्य कह २ कर त्यागताथा ९ तबतेरा धर्म कहां गयाथा हेकर्ण फिर जब तैंने शकुनी से मिलकर राज्यका लोभीहोकर पाण्डवों को बुलाते बालक अभिमन्यु को मारा तब तेराधर्म कहांगयाथा १०। ११ जो यह धर्म तैंने धारण नहीं किया था तो अब गालबजाने से क्या लाभ है हे सूत अब चाहै जितना तू धर्म वर्णनकर परन्तु जीते नहीं बचसक्ता जैसे कि द्यूतमें

अपने भाई पुष्करसे हारेहुये पराक्रमी नलने भाईको विजय करके फिर राज्यको पाया १२ । १३ उसीप्रकार निर्लोभ होकर सबको जीतकर पाण्डवोंने भी अपनी भुजाओं के बलसे राज्यको पाया इन पाण्डवों ने युद्धमें बड़े बड़े वृद्धियुक्त शत्रुओंको सोमकों समेत अनेक पराक्रमोंसे मारकर राज्यको पाया और धर्मधारी नरोत्तमों समेत दुष्टात्मा धृतराष्ट्र के पुत्रोंने पराजयको पाया १४ संजय बोले कि हे भरतवंशी वासुदेवजी के ऐसे ऐसे वचनों को सुनकर कर्ण ने १५ लज्जा से नीचा शिर करके कुछ उत्तर नहीं दिया और क्रोधसे होठोंको चाट हाथमें धनुष लेकर १६ उस पराक्रमी वेगवान ने फिर अर्जुन से युद्धकिया इसके पीछे वासुदेव जी पुरुषोत्तम अर्जुन से बोले १७ कि हे महाबली अब इसको दिव्य अस्त्र से छेदकर गिराओ श्रीकृष्णजी के इस वचनको सुनतेही अर्जुन क्रोधयुक्त हुआ अर्थात् अर्ज्जुन उन पूर्व्व बातों को स्मरण करके महाक्रोधित हुआ हे राजा तब तो उस क्रोधभरे अर्जुनके सब शरीरके छिद्रों से तेजकी अग्नियां प्रकटहुईं १८ । १९ यह बड़ा आश्चर्य्य सा हुआ इसके पीछे कर्ण उसको देखकर २० ब्रह्मास्त्र से बाणों की वर्षा करनेलगा फिर रथको पृथ्वी से निकालने का उपाय किया तब अर्जुन भी ब्रह्मास्त्र से उसपर बाणों की वर्षा करनेलगा २१ फिर पाण्डवने कर्ण के अस्त्र को अपने अस्त्रसे रोककर दूरकिया तब कुन्तीनन्दनने अग्निके अति प्रिय दूसरे अस्त्रको २२ कर्ण को लक्ष बनाकर छोड़ा वह अस्त्र तेज से देदीप्य हुआ फिर कर्ण ने वारुणास्त्र से उसकी अग्नि को शान्त किया २३ और बादलों से सब दिशाओं को अंधकार युक्त करके दिन को अशुभरूप करदिया फिर बड़ी सावधानीसे अर्ज्जुनने वायव्यास्त्रसे २४ बादलों को कर्णके देखतेहुये दूर करदिया इसके पीछे सूतके पुत्रने पाण्डवके मारनेकी इच्छासे अग्नि के समान महा प्रज्वलित उग्रबाणको अपने हाथमें लिया तदनन्तर अपने पूजित धनुषमें उसबाणके योजितकरने पर २५ । २६ पर्वत वन समुद्रोंसमेत पृथ्वी कम्पायमानहुई और कंकड़ पत्थरोंसे मिलेहुये पवन बड़े वेगसेचले सब दिशा विदिशा धूलीसे मंडित होगई २७ और हे भरतवंशी स्वर्गमें देवताओं का हाहाकार उत्पन्नहुआ हे श्रेष्ठ कर्णके हाथ में चढ़ायेहुये उस बाणको देखकर २८ अर्ज्जुन ने चित्तमें दुखपाकर बड़ी व्याकुलता को पाया कर्णकी भुजासे छोड़ाहुआ वह इन्द्रवज्रकी समान तीक्ष्ण नोकवाला बाण अर्ज्जुन की भुजा में आकर ऐसे

शित होगया जैसे कि सर्प अपनी उत्तमबामी में प्रवेशकरजाताहै २९ युद्धमें
शत्रुओंका मारनेवाला अर्ज्जुन अत्यन्त घायलहोकर बड़ा सुस्तहोकर ऐसे
म्पायमानहुआ जैसे कि बड़े भूकम्प होनेसे उत्तम पर्व्वत कम्पायमान होताहै
स अवकाश को पाकर पृथ्वी में गड़ेहुये अपने रथके पहियेको निकालने की
च्छासे महारथी कर्ण ने ३० । ३१ रथसे कूदकर अपने दोनों हाथों से पहियेको
कड़कर खेंचा परन्तु वह महा पराक्रमी भी उसके निकालने को समर्थ नहीं
हुआ उसके पीछे अर्जुन ने सचेत होकर यमराजके दंडकी समान बाणको हाथ
में लिया ३२ अर्थात् महात्मा अर्जुन ने आञ्जुलिकनाम बाणको हाथमेंलिया
इसके पीछे वासुदेवजी अर्जुनसे बोले कि जबतक यह कर्ण रथपर सवार न होने
पावे तबतक तुम इस अपने बाणसे अपने शत्रुके शिरको काटो ३३ इसके पीछे
अर्जुन ने अपने प्रभुकी आज्ञापाकर महातीव्र प्रज्वलित उग्रक्षुरप्रको लेकर प्रथम
तो सूर्य के समान निर्मल अत्यन्त उत्तम हाथीकी कक्षा रखनेवाली सुवर्ण हीरे
मोतियों से जटित अच्छे कारीगरोंकी बनाईहुई सुन्दररूप स्वर्णमयी ३४ । ३५
सदैव आप की सेना के विजय का स्थान शत्रुओं को भयभीत करनेवाली
स्तुतिमान लोक में सूर्य्य के समान प्रसिद्ध और क्रान्ति में सूर्य्य चन्द्रमा और
अग्निके समान ३६ लक्ष्मी से ज्वालामान महारथी कर्णकी ध्वजाको अर्ज्जुन
ने अत्यन्त तीक्ष्ण सुनहरी पुंखवाले अग्निके समान प्रकाशमान क्षुरप्रसेकाटा३७
और उस ध्वजाके कटने से कौरवों के यश अभिमान और सब मनके मनोरथों
सहित हृदय टूटगये और महा हाहाकार शब्दहुआ ३८ हे भरतवंशी उससमय
जो २ आपके युद्धकर्त्ता शूरवीरथे उनसबोंने और कौरवोंके बड़े २ वीरोंने अर्जुन
के हाथ से काटी और गिराई ध्वजाको देखकर कर्ण के विजयी होने की आशा
छोड़दी ३९ फिर कर्णके मारने में शीघ्रता करनेवाले पाण्डव अर्ज्जुन ने महा
इन्द्रके वज्र वा अग्निके दण्ड की समान हजार किरण रखनेवाले सूर्य्यकी उत्तम
किरणके समान आञ्जुलिक नाम बाणको अपने तूणीर से निकाला ४० वह
मर्मभेदी रुधिर मांस से लिप्त अग्नि सूर्य्य के रूप बड़ोंके योग्य मनुष्य घोड़े और
हाथियों के प्राणों का हरनेवाला तीन अर्त्तिनी लम्बा (अर्त्तिनी किसी नपाने
की संज्ञाहै) छःपक्ष रखनेवाला सीधा चलनेवाला महा वेगयुक्त ४१ इन्द्रवज्र के
समान पराक्रमी कालकाभी काल अग्नि की समान बड़ा घोर पिनाक धनुष

और नारायणजी के सुदर्शन चक्र की समान भयकारी और जीवमात्र का नाश करनेवाला था ४२ जो देवगणों से भी हटाने के अयोग्य महात्माओं से सदैव पूजित देवासुरों का भी विजय करनेवाला था उसको अर्जुन ने अपने हाथमें लिया ४३ युद्धमें उस अर्जुनसे पकड़ेहुये उस वाणको देखकर सब जड़ चैतन्य स्थावर जंगम जीवों समेत सब जगत् कंपायमान हुआ अर्जुन को उस बाण को उठाये हुये देखकर ऋषि लोग पुकारे कि संसारका कल्याण हो ४४ इसके पीछे उस गांडीव धनुषधारी ने उस अचिन्त्य प्रभाववाले वाणको धनुष में लगाया और उत्तम महाअस्त्रसे संयुक्त कर गांडीव धनुष को खेंचकर शीघ्र तासे बोला ४५ यह महाअस्त्र से संयुक्त बड़ावाण शत्रुके शरीर और प्राणोंक हरनेवालाहो जो मैंने तपस्या करी है वा गुरुओंको प्रसन्न करके यज्ञोंको किय है और शुभचिन्तक मित्रों की आज्ञा को मानाहै ४६ इससत्यता से सेवित यह कठिन और उग्र बाण मेरे बड़े शत्रु कर्ण के शिरको काटो यह कहकर अर्जुनने उसघोर उग्रवाणको कर्णके मारने को छोड़ा ४७ और अत्यन्त प्रसन्न मन अर्जुन यह कहता हुआ कि यह अथर्व नगरसे कृत्याके समान उग्रप्रकाशित और युद्धमें मृत्युसे भी असह्यरूप बाण मेरी विजय का करनेवाला हो ४८ कर्ण के मारने का अभिलाषी सूर्य्य चन्द्रमाके समान प्रभाववाला अर्जुन यह बोला कि मेरा चलायाहुआ बाण कर्णकोमारकर यमपुरको भेजे यहकहकर मारनेके इच्छावान शस्त्रधारी अत्यन्त प्रसन्नचित्त अर्जुन ने उस उत्तम विजय करनेवाले ४६ सूर्य्य चन्द्रमाके समान प्रकाशित बाणसे चक्रके उठाने में प्रवृत्त शत्रुको मारना चाहा तब उस छोड़ेहुये सूर्य्यकी समान प्रकाशमान वाणने आकाश और दिशाओंको अग्निरूपकिया ५० फिर इन्द्रके पुत्र अर्जुनने दिनके समाप्त होनेपर उसवाण से उसके शिरको ऐसे काटा जैसे कि महाइन्द्रने अपने वज्रसे वृत्रासुर के शिरको काटाथा ५१ इसके पीछे आञ्जुलिकसे कटाहुआ उसका शिर गिरपड़ा तदनन्तर उसका धड़ भी गिरपड़ा वह उदयमान सूर्य्य के समान तेजस्वी आकाशस्थ ऐसे सूर्य्यके समानथा ५२ उसका शिरकटकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि रक्त मण्डलवाला सूर्य्य अस्ताचल से गिरताहै तदनन्तर इसमहाकर्मी के सदैव सुखके योग्य सुन्दर शिरने अपने शरीर के रूपको बड़े कष्टसे ऐसे त्याग किया जैसे कि बड़ा धनवान अपने धन से पूर्ण घर को बड़े दुःखों से

यागता है उस बड़े तेजस्वी कर्ण का उन्नतशरीर बाणों से भिदाहुआ निर्जीव होकर बाणों के घावोंसे रुधिर गिराताहुआ ऐसे गिरपड़ा ५३ । ५४ जैसे कि वज्र से घायलहोकर पर्व्वतका बड़ाशिर रक्तधातु से युक्तजल को छोड़ता गिरताहै उसगिरेहुये कर्णके शरीरसे निकलाहुआ तेज आकाशको व्याप्तकरके सूर्य्यमें प्रवेशकरगया ५५ कर्णके मरनेपर सब शूरवीर युद्धकर्त्ता मनुष्यों ने इस आश्चर्य्यको देखा इसकेपीछे अर्जुनके हाथसे गिरायेहुये कर्णको देखकर पाण्डवों ने ऊंचेस्वरों से शंखों को बजाया ५६ इसीप्रकार प्रसन्नचित्त श्रीकृष्ण और अर्जुन नकुल और सहदेवने भी शंखों को बजाया फिर सोमकोंने उस मरेहुये कर्णको पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखकर सेनाओं समेत शंखोंके नादकिये ५७ और अत्यन्त प्रसन्नहोकर तूरीआदि अनेक बाजों को भी बजवाया और वस्त्रों को हला २ कर अपनी भुजाओं को ठोका और अत्यन्त प्रसन्न आशीर्वादों को देतेहुये अर्जुनके पासगये ५८ और अन्य२ शूरवीर लोग भी अर्जुन के हाथसे मराहुआ रथसे पृथ्वीमें पड़ा हुआ कर्णको देखकर ५९ नृत्य करनेलगे और परस्पर में गर्जना पूर्व्वक ऐसी वार्त्तालापें करनेलगे जैसे कि कठिन वायुके वेग से घायल पर्व्वत होतेहैं उस समय वह कर्णका पृथ्वीपर पड़ाहुआ शिर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि यज्ञके अन्तमें शान्तहुई अग्नि अथवा जैसे कि अस्ताचलपर पहुँचाहुआ सूर्य्यका बिम्बहोताहै ६० वह सूर्य्यके समान तेजस्वी युद्धमें पाण्डवों की सेनाको अपनी बाणरूपी किरणोंसे अच्छी रीति से तपाकर अन्तको अर्जुनरूपी कालके द्वारा अस्त होगया ६१ सब अंगों में बाणों से छिदा रुधिर में भराहुआ कर्ण का शरीर ऐसा प्रकाशित था जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों से शोभित होताहै ६२ वह कर्णरूपी सूर्य्य किरणों से शत्रुओं की सेनाको संतप्त करके महा पराक्रमी अर्ज्जुनरूपी कालके वशीभूत होगया ६३ जैसे कि सूर्य्य अस्त होताहुआ प्रकाश को लेकर जाताहै इसीप्रकार वह बाण कर्ण के जीवन को लेकरगया ६४ हे श्रेष्ठ दिवस के अन्तभागमें कर्ण के मरने के दिन कर्ण का शिर शरीर समेत आञ्जलिक बाण से जब युद्धभूमिमें गिरा तब उस बाणने भी सेनाओं से पृथक् अर्जुन के शत्रु का वह शिर शरीर समेत शीघ्रता पूर्व्वक अपने वेगसे हरलिया ६५ फिर उस शूर वा बाणों से छिदेहुये रुधिरसेलिप्त पृथ्वीपर गिरकर शयन करनेवाले कर्ण को देखकर राजा

युधिष्ठिर ध्वजावाले रथकी सवारी से चला ६६ और कर्ण के मरनेपर भयसे पी ड़ित युद्धमें अत्यन्त घायलहुये कौरव वारम्बार अर्जुन के क्रोधरूपी मुख के देखतेहुये अचेत हो होकर भागे ६७ इन्द्रके समान कर्म करनेवाले कर्णका शि जो कि इन्द्रकेही शुभ मुखके समानथा वह ऐसे पृथ्वीपर गिरपड़ा जैसे कि दिन के अन्तमें सहस्रांशु सूर्य्य अस्त होजाताहै ६८ ॥

सो० कर्ण अग्निकी शान्ति युद्धयज्ञके अन्तलखि ।
आवत भयो अकान्ति सरथशल्य अध्वजविकल ॥
दुर्य्योधन क्षितिपाल कर्ण सखा को वध निरखि ।
तजत नयन जलधार महाराज अति विकल भो ॥
पूरित मोद महान करिकरि धनु टंकार अति ।
भीमसेन बलवान गरजिगरजि निरतत भयो ॥
शल्य नृपति पहँ आय सकल व्यवस्था कहत भो ।
सुनि तो सुत क्षितिराय रुदन कियो अति दीनह्वै ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णवधेद्विनवतितमोऽध्यायः ९२ ॥

तिरानबेका अध्याय ॥

संजय बोले कि अर्जुन के हाथसे कर्ण के मरनेपर राजा शल्य सेनाको भ यभीत और पीड़ामानरूप देखकर अपने साथी अधिरथी कर्ण के मरनेपर टूटे सामानवाले रथकी सवारी के द्वारा चलदिया १ अर्थात् राजाशल्य कर्ण औ अर्जुनके युद्धमें वाणोंसे घायल और म्लानचित्त सेनाओंको देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर टूटे सामानवाले रथकी सवारी से चला २ जिसके रथ घोड़े और हाथी गिराये गये वह सेनापति कर्ण भी मारागया उस सेनाको देखकर अश्रु- पातों से पूर्ण महादुःखित पीड़ामानरूप दुर्य्योधन ने वरावर श्वासों को लिया ३ फिर पृथ्वीपर गिरे वाणों से छिदेहुये रुधिरमें भरे दैवइच्छासे सूर्य्य के समान प्रतापी पृथ्वीपर नियत कर्ण के देखने के अभिलाषी मनुष्य कर्ण को चारोंओर से घेरे हुये ४ अत्यन्त भयभीत व्याकुल चित्त आश्चर्य्य युक्त होकर शोकसे पीड़ामान हुये इनके सिवाय आपके और सब शूरवीर भी परस्पर में वैसीही दशाको प्राप्तहुये जैसे प्रकार का कि उनका स्वभावथा ५ कौरवलोग बड़े तेजस्वी

कर्ण को अर्जुन के हाथसे टूटे कवच भूषण वस्त्र और शस्त्रों से रहित देखकर और मृतक सुनकर ऐसे भागे जैसे कि निर्जनवनमें मृतक बैलवाली गौवें भागती हैं ६ तब भीमसेन भयानक शब्दों से गर्जना करके पृथ्वी और आकाश को कम्पायमान करता भुजाओंको ठोकताहुआ गर्ज २ कर उछला और कर्ण के मरनेपर धृतराष्ट्रके पुत्रोंको भयभीत करता नृत्य करनेलगा ७ हे राजा इसी प्रकार सब सोमक और सृञ्जियों ने शंखोंको बजाकर एक एकसे प्रीतिपूर्वक मेल न किया और अन्य क्षत्रीलोग भी कर्ण के मरनेपर परस्परमें प्रसन्नरूप हुये ८ सूतपुत्र कर्ण अर्जुनसे महाघोर युद्ध करके ऐसे मारागया जैसे कि केसरी सिंहके हाथसे हाथी माराजाताहै पुरुषोत्तम अर्जुनने अपनी प्रतिज्ञाको पूर्णकरके शत्रुता के अन्तको पाया ९ हे राजा फिर व्याकुलचित्त मद्रदेशके राजाशल्यनेभी शीघ्र ही ध्वजारहित रथकी सवारी के द्वारा दुर्य्योधन के पास जाकर अश्रुपात डालकर यह वचन कहा १० कि आपकी सेना परस्परमें सन्मुख होकर गिरेहुये हाथी रथ घोड़े वा बड़े २ शूरवीरोंवाली यमराज के देशकी समान और बड़े २ मनुष्य और घोड़े पर्व्वत के शिखरके समान हाथियों से मारेगये ११ हे भरतवंशी यह सबतो लड़े और मरे परन्तु ऐसायुद्ध कोई नहीं हुआ जैसा कि कर्ण और अर्जुनका हुआहै कर्णने सन्मुख होकर श्रीकृष्ण अर्जुन को और अन्य बड़े बड़े तेरे शत्रुओंको अपने स्वाधीन किया १२ निश्चय करके पाण्डवों की रक्षाकरने वाला दैवही अर्जुन के आधीन होकर कर्मकर्त्ता है जो पाण्डवों को बचा २ कर हमलोगों को मारताहै तेरे मनोरथ सिद्ध करनेवाले सब शूरवीर युद्धकरके शत्रुओं के हाथसे मारेगये १३ हे राजा वह उत्तमवीर कुबेर यमराज और इन्द्रके समान प्रभाववाले और पराक्रम बल और तेजमें भी इन्हीं देवताओं के समान नानाप्रकारों के गुणोंसे युक्त होकर अवध्यों के समान तेरे अभीष्टों के चाहनेवाले राजालोग युद्धमें पाण्डवों के हाथसे मारेगये १४ हे भरतवंशी सो तुम अब शोच मतकरो यह होनहारहै निश्चय समझो कि सदैव किसीकी विजय नहीं होती राजा शल्यके इस वचनको सुनके और अपने अन्यायको विचार १५ महा दुखीचित अचेत और पीड़ितरूप दुर्य्योधनने वारम्बार श्वासाओंको लिया १६ ॥

इति ॥

चौ० नृप धृतराष्ट्र वचनयहसुनिकै । संजय सों बूझै शिर धुनिकै ॥

संजय कहौ दशालहि ऐसी । ममसुत भूपगही गति कैसी ॥
संजय कह्यो सुनो नरनायक । तेहिपल तो भटभयेअचायक ॥
पार्थ धनुर्द्धर कर्णहि वधिकै । अवहमसबकहँ वधववरधिकै ॥
भीमसेन बिनु वधे न छांड़िहि ।कोअससुभटताहिजोआड़िहि॥
यह विचार अतिशय भय पागे । साहस छोड़ि भूरि भटभागे ॥
नृप तेहिक्षण मम भटभे तैसे । बूड़े नाव बणिक जन जैसे ॥
लखि यह दशा भूप दुर्य्योधन ।निजचखजलकोकरिअवरोधन॥
गुणि दुखगहे हारि यहि क्षनमें । तो सुत भूप धीर धरि मनमें ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णवधेत्रिनवतितमोऽध्यायः ९३ ॥

चौरानबेका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि रुद्ररूप कर्णऔर अर्जुन के युद्धमें दग्धरूप बाणों से मथित और भागेहुये कौरव और सृंजियों की सेनाके लोगोंका रूप कैसा हो गया १ संजय बोले कि हे राजा सावधान होकर सुनों जैसे कि युद्धभूमि में मनुष्योंके शरीरोंका अत्यन्त घोर नाश वा राजाओंकी हानि होजाने और कर्ण के मरनेपर पाण्डवों ने सिंहनाद किये तब आपके पुत्रों में बड़ाभारीभय उत्पन्न हुआ २ । ३ कर्णके मरनेपर आपके किसी शूरवीरकी भी सेनाओं की चढ़ाई और शीघ्र पराक्रम करनेके साहस की बुद्धि नहीं हुई ४ जैसे कि नौका रहित अथाह जल में नौकाके टूटनेपर व्यापारीलोग अपार जलके पारहोनेकीइच्छा रखनेवाले होते हैं उसीप्रकार अर्जुनके हाथसे सेनापति कर्णके मरनेपर आपके लोग रक्षाके चाहनेवाले हुये ५ हे राजा सूतपुत्र के मरनेपर भयभीत शस्त्रों से घायल आपके अनाथ लोग नाथके ऐसे चाहनेवाले हुये जैसे कि सिंहों से पीड़ामान मृग टूटी शाखावाली बेल और टूटी डाढ़वाला सर्प रक्षाको चाहतेहैं६ सायङ्काल के समय अर्जुन से पराजित मृतकवीरवाले तीक्ष्ण बाणोंसे घायल होकर लोग हटआये ७ हे राजा कर्ण के मरतेही यंत्र वा कवचों से रहित अचेत भयभीत ८ और परस्पर में मर्द्दन करनेवाले और भयसे व्याकुल होकर देखने वाले आपके पुत्र महाभयातुर होकर भागे और यह निश्चय जानकर कि अ-र्जुन हमारे ही सन्मुख आताहै वा भीमसेन हमारेही मारने को सूलाहै ९ यह

मानते हुये महा व्याकुलतासे गिरकर मृतक प्रायहोगये किसीमहारथी ने घोड़ों पर किसीने हाथियोंपर किसीने रथोंपर १० चढ़कर बड़े वेग से भयभीत होकर अपने २ पदातियोंको त्यागकिया हाथियोंसे रथ महारथियोंसे अश्व सवार ११ और भयसे व्याकुल भागनेवाले घोड़ों से पदातियों के समूह मारेगये जैसे कि सर्प और चोरोंसे भरेहुये वनमें अपने संगके लोगों से पृथक्होकर मनुष्यों की जो दशा होती है १२ हेराजा उसीप्रकार कर्णके मरनेपर आपके शूरवीरोंकी भी वही दशाहुई अथवा जैसे कि मृतक सवारवाले हाथी और टूटे हाथवाले मनुष्य होते हैं १३ इसी प्रकार आपके सब मनुष्य संसार भरेकोही अर्जुन रूप देखतेहुये भयसे पीड़ामान हुये भीमसेन के भयसे पीड़ित होकर भागताहुआ सबको देखकर १४ और उन हजारों शूरोंको भी भागते देखकर दुर्योधनने बड़ा हाहाकारकरके फिर अपने सारथी से यह वचनकहा १५ कि अर्जुन सबसेनाके मारने को मुझ धनुषधारी के होतेहुये नहीं आसक्ताहै इससे तुमलोग अपने २ घोड़ोंको रोको १६ मैं निस्सन्देह उस युद्धकरनेवाले अर्जुनको अवश्य मारूंगा वह मुझको ऐसे उल्लंघन नही करसक्ता है जैसे कि महासमुद्र अपनी मर्य्याद नहीं उल्लंघन करसक्ता है १७ अब मैं श्रीकृष्ण जी समेत अर्जुन को वा बड़े अहङ्कारी भीमसेनको और इसी प्रकार सब बाकी बचेहुये शत्रुओं को मारकर कर्ण के ऋण से उद्धार हूंगा १८ सारथी ने कौरवों के राजा दुर्य्योधन के उस वचनको जो कि शूर और श्रेष्ठ लोगोंके कहने के समानथा सुनकर सुवर्ण के सामानों से आच्छादित घोड़ोंको बड़े धीरेपने से चलायमान किया १९ हे श्रेष्ठ फिर रथघोड़े और हाथियोंसे रहित आपके पच्चीस हजार पदाती युद्धकेनिमित्त नियतहुये २० फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन और धृष्टद्युम्नने चतुरङ्गिणीसेना समेत उन पदातियों को घेरकर मारा २१ वह सब भीमसेन और धृष्टद्युम्नके सन्मुख होकर युद्ध करनेलगे और किसी २ ने पाण्डव और धृष्टद्युम्नके नामोंको लेकर पुकारा २२ तब उन सन्मुखआये हुये पदातियोंसे युद्धमें भीमसेन क्रोधरूप हुये और बड़ी शीघ्रतासे अपने रथसे उतर हाथमें गदा लेकर युद्ध करने लगा २३ अपने भुजबलमें दृढ़रूप धर्मको चाहनेवाले रथमें सवार कुन्तीकेपुत्र भीमसेन ने रथपर चढ़कर उन पदातियों से युद्ध नहीं किया २४ हाथमें दण्डधारी यमराज के समान भीमसेन ने सुवर्ण से मण्डित अपनी गदाको हाथमें

लेकर पदाती होकर आपके सब पदातियों को मारा फिर वह सब पदाती भी अपने प्यारे जीवनको त्यागकरके २५ युद्धमें भीमसेनके सन्मुख ऐसेगये जैसेकि अग्नि में पतङ्ग जाते हैं वह सबलोग युद्धमें क्रोधयुक्त युद्धदुर्मद भीमसेन को पाकर २६ अकस्मात ऐसे नाशहोगये जैसे कि जीवोंके समूह मृत्युको देखकर नाशहोजाते हैं फिर बाजकी समान गदा हाथमेंलिये घूमनेवाले भीमसेनने२७ आपके पच्चीस हजार पदातियों को मारा फिर वह महापराक्रमी अतुलबलभीमसेन उस पदातियों की सेनाको मारकर २८ धृष्टद्युम्नको आगे करके वहांपर नियत हुआ २९ और महारथी नकुल सहदेव और सात्यकी शकुनीके सन्मुख हुये और बड़े प्रसन्न चित्त होकर दुर्योधनकी सेनाको मारते हुये बड़ी शीघ्रता से सन्मुख दौड़े ३० अर्थात् वह अपने तीक्ष्ण बाणोंसे बहुतसे सवारों को मारकर शीघ्रता से उसके सन्मुख दौड़े और बड़ा युद्धहुआ ३१ हेप्रभु फिर अर्जुन ने भी आपकी रथवाली सेनाके सन्मुख जाकर तीनों लोकों में प्रसिद्ध अपने गाण्डीव धनुष को टंकारा आप के युद्धकर्त्ता शूरवीर उस रथ को जिस में कि श्रीकृष्णजी सारथी और श्वेत घोड़ों से युक्त था देखकर और युद्ध करनेवाले अर्जुनकोभी देखकर भागे ३२।३३ रथोंसे रहित और बाणों से पीड़ामान पच्चीस हजार पदातियों ने कालको पाया ३४ पांचालों का महारथी अत्यन्त साहसी पुरुषोत्तम श्रीमान् धृष्टद्युम्न उनको मारकर ३५ थोड़ेही काल में भीमसेन को आगे करके दिखाई दिया ३६ तब आपके शूरवीर उस कपोत वर्ण घोड़े और कोविदार रूपी ध्वजाधारी धृष्टद्युम्न को युद्धमें देखकर भयभीत होकर भागे ३७ और यशस्वी नकुल और सहदेव उस शीघ्र अस्त्रोंके चलानेवाले गान्धारपतिको स्मरण करके सात्यकी समेत थोड़ीही देर में दृष्टिपड़े ३८ हे श्रेष्ठ इसी प्रकार चेकितान शिखण्डी और द्रौपदी के पुत्रोंने आपकी बड़ी सेनाको मारकर बड़े शंखोंको बजाया ३९ फिर वह आपके शूरवीरोंको मुख मोड़कर भागतेहुये देखकर ऐसे सन्मुख आकर वर्त्तमानहुये जैसे कि बैलोंको विजयकरके क्रोधयुक्त बैल वर्त्तमान होते हैं ४० हे राजा इसके पीछे महा पराक्रमी पाण्डव अर्जुन आपकी बाकी बचीहुई सेनाको देखकर क्रोधयुक्त हुआ ४१ और आपकी रथकी सेना के सन्मुख वर्त्तमान हुआ और अपने विख्यात गांडीव धनुषको सन्नद्ध किया ४२ बाणों की वर्षा करके उससेना को ढकदिया फिर अन्धकार होजाने पर कुछ-

ताई नहींदिया ४३ हे महाराज लोकके हत तेज होने और पृथ्वीको धूलयुक्त होनेपर आपके सब शूरवीर भयभीत होकरभागे ४४ हे राजा सेनाके छिन्नभिन्न होनेपर आपका पुत्र दुर्य्योधन सन्मुख आनेवाले शत्रुओंकी ओरको दौड़ा ४५ इसके पीछे दुर्य्योधन ने सब पाण्डवों को युद्धके लिये ऐसे बुलाया जैसे कि हे भरतर्षभ पूर्व्व समय में राजा बलिने देवताओं को बुलाया था ४६ नानाप्रकार के शस्त्रों से युक्त क्रोधयुक्त बारम्बार घुड़की देते और गर्जना करतेहुये एकसाथही उसके सन्मुखगये ४७ इसके पीछे वहां भयसे अव्याकुल चित्त क्रोधयुक्त दुर्य्योधन ने युद्धमें अपने तीक्ष्ण बाणों से हजारों सेनाके लोगों को मारा ४८ और सब ओरको पाण्डवोंकी सेनासे युद्धकरने लगा उस स्थानपर हमने आपके पुत्र की अपूर्व्व वीरताको देखा ४९ कि अकेलाही उनसब इकट्ठे होनेवाले पाण्डवोंसे युद्धकरने लगा इसके पीछे उस महात्माने अपनी सेनाको अत्यन्त दुखीदेखा ५० हे राजा उससमय आपका बुद्धिमान पुत्र उन दुखी शूरवीरों को खड़ा करके उनको प्रसन्न करताहुआ यह वचन बोला ५१ कि मैं उसदेशको नहीं देखताहूं जहांपर तुम भयसे पीड़ित होकर जाओ और वहां पाण्डवों के हाथसे बचने पाओ तुमको भागने से क्यालाभहै ५२ उनकी सेना बहुत कम रहगई है और श्रीकृष्ण अर्ज्जुन अत्यन्त घायलहैं इससे मैं उन सबको निश्चय मारूंगा अब मेरी पूरीविजयहै ५३ जो तुम भागोगे या पृथक्होगे तो पांडवलोग अपराधी जानकर तुमलोगों को पीछाकरके मारेंगे इससे हमारा और तुम्हारा युद्धमेंही मरना श्रेष्ठहै ५४ क्षत्री धर्म से युद्धमें लड़नेवालों की मृत्युका होना सुखरूपहै क्योंकि मरने के दुःखों को नहीं भोगता है शीघ्रही मरकर अविनाशी गति को पाताहै ५५ तुमजितने क्षत्री अब इकट्ठे हुयेहो सब चित्तलगाकर सुनों कि जब नाश करनेवाला महाबली यमराजही भयभीत लोगों को मारता है ५६ तो फिर मेरे समान क्षत्री व्रतका रखनेवाला कौन अज्ञानी युद्धको नहीं करेगा देखो भागनेसे एकतो क्रोधरूप हमारेशत्रु भीमसेनके आधीनहोगे दूसरे इस संसार में अपकीर्त्तिपाकर स्वर्गवासी न होगे इस हेतुसे तुमलोगों को अपने पूर्वजों के कियेहुये धर्मका त्यागना उचित नहीं है भागने से अधिक और कोई पापरूप क्षत्रीका धर्म नहीं है ५७।५८ हे कौरव लोगो युद्धसे बढ़कर क्षत्रियों का कोई उत्तम धर्म नहींहै हे शूरवीरो जो मरभी जाओगे तो थोड़ेही दिनोंमें

शीघ्रलोकों को भोगोगे ५६ आपके पुत्रके इसरीति के वचनों को सुनकर भी सेनाके लोग उसवचनका विचार न करसके सब दिशाओंको भागे ६० ॥

चौ० बिचले भटन टेरि अनखायो। क्षात्रि धर्म बहुभाँति सुनायो ॥
सो सुनिते सब फिरे न कैसे। रुकै न बहुत सरित जल जैसे ॥
सो लखितोसुत सुभटअतोलो। सुहित सारथी सों इमि बोलो ॥
संशय त्यागि चपल करि घोरे। सादर चलो पार्थ के ओरे ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकौरवसेनपलायिनेचतुर्नवतितमोऽध्यायः ९४ ॥

पंचानबेका अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके पीछे आपके पुत्रसे युद्धहुआ और सेनाको देखकर अज्ञानचित्त रूपान्तर चेष्टाकिये मद्रदेश के राजा शल्यने दुर्य्योधन से यह वचन कहा १ कि मनुष्य हाथी घोड़े और हजारों पर्व्वताकार शूरवीर बारम्बार बाणों से घायलहोकर पराजित टूटेअंग पृथ्वीपर गिरेहुओं से और मरेहुये हाथियोंसे व्याप्त इस घोर उग्ररूप युद्धभूमि को देखो २ इन व्याकुल निर्जीव टूटे कवच शस्त्र ढाल खड्ग वाले शूरवीरों से व्याप्त पृथ्वी ऐसी दिखाई देती है जैसे कि अत्यन्त टूटे पत्थर बड़े बड़े वृक्ष और औषधीवाले वज्र से ताड़ित पहाड़ों से व्याप्त होकर दीखती है ३ टूटे घण्टे अंकुश तोमर ध्वजा और सुवर्ण के जालों से अलंकृत रुधिर से लिप्तबाणों से टूटे अंग श्वासा लेनेवाले रुधिर को वमन करनेवाले पीड़ामान पड़ेहुये घोड़ों सेभी भरीहुई पृथ्वी को देखो कष्टित शब्दों को करते भग्न नेत्र पृथ्वी को काटनेवाले महादुखी गर्ज्जते हुये हाथी घोड़े शूरवीर मनुष्य और सेनाही से घायल वीरों के समूहों से युक्त इस युद्धभूमि को देखो ४।५ निश्चय करके इस घोर युद्ध में यह पृथ्वी मन्द प्राणवाले युद्धा- कर्त्ताओं से बैतरनीनदी के समान शोभायमान होरहीहै ६ कटेहुये हाथी कम्पा- यमान और टूटेहुये दांत रुधिर के वमन करनेवाले फड़कते पीड़ित शब्दों से दुखभोगते पृथ्वीपर पड़ेहुये मनुष्य वा हाथियों के शरीरों से पृथ्वी पूर्ण होरही है ७ टूटे पहिये, बान, जुये, योक्तर, वा छिदेहुये तूणीर पताका ध्वजा अथवा सुवर्ण के जालों से युक्त अत्यन्त टूटेहुये बड़े २ रथों के समूहों से ऐसी भरीहुई है जैसे कि बादलों से भरीहुई होतीहै ८ जिनके कवच स्वर्ण भूषण और शस्त्र टूटे

कर गिरपड़े उन सन्मुख होकर शत्रुओं को हाथसे मरे उत्तमनामी हाथी घोड़े और शूरवीर लड़नेवालों से पृथ्वी ऐसी व्याप्तहै जैसे कि शान्तरूप अग्नियों से व्याप्तहोती है ९ बाणों के प्रहारों से घायल देखनेवाले और गिरेहुये हजारों पराक्रमियों से ऐसी संयुक्तहै जैसे कि रात्रिके समय स्वर्ग से गिरेहुये अत्यन्त प्रकाशित स्वच्छ और देदीप्यमान ग्रहोंसेसंयुक्त पृथ्वी और आकाश होते हैं १० कर्ण और अर्जुन के बाणों से टूटे अंग अचेतरूप बारम्बार श्वासें लेनेवाले मृतक हुये कौरव और सृञ्जयी वीरों से पृथ्वी उस प्रकारकी होगई जैसे कि समीपवर्त्ती प्रज्वलित अग्नियों के समूहों से व्याप्त होतीहै ११ कर्ण और अर्जुन की भुजाओं से छोड़ेहुये बाण हाथी घोड़े और मनुष्यों के शरीरों को चीर प्राणों को निकालकर शीघ्रता से ऐसे पृथ्वीपर गये जैसे कि झुकेहुये बड़े २सर्प बिवरों में घुसते हैं १२ हे नरेन्द्र अर्जुन और कर्ण के बाणों से युद्धमें घायल और मरेहुये मनुष्य और हाथियों से पृथ्वी अगम्य होगई १३ शूरवीर वा उत्तम धनुष आदि शस्त्रों से भुजबल करके अच्छे मथेहुये सुन्दर अलंकृत रथ और पड़े हुये योक्तर टूटे बंधन चूर्णित रथ चक्र अंकुश त्रिवेणु और जिनसे शस्त्र निषंग बंधन जुदेहोगये वा अनुकर्ष टूटे उन मणि सुवर्ण से अलंकृत खंडित नीड़वाले रथोंसे ऐसी आच्छादित होगई जैसे कि शरदऋतु के बादलों से आकाश व्याप्त होताहै १४।१५ जिनके स्वामी मारे गये और शीघ्रगामी घोड़े जिनको खैंचते थे उन सुन्दर अलंकृत राजरथ हाथी घोड़े और मनुष्यों के समूहों से शीघ्र चलनेवाले लोग अनेक प्रकारसे चूर्ण होगये १६ स्वर्ण निर्मित वस्त्रधारी परिघ फरसे तीक्ष्णशूल मुद्गर मियान से निकलेहुये सुन्दर खड्ग और स्वर्णमयी वस्त्रों से मढ़ीहुई गदा गिरपड़ीं १७ सुवर्ण के बाजूबंदों से अलंकृत धनुष स्वर्णपुंखी बाण पीतरंग के निर्मल मियान से जुदे दुधारा खड्ग उत्तम दण्डवाले प्रास १८ छत्र बाल व्यजन शंख टूटी और बिखरीहुई माला कुथा पताका वस्त्र आभूषण किरीट माला और उत्तम मुकुट १९ हे राजा बहुतसे गिरे और बिनागिरे हुये मूंगे मोतीवाले हार आपीड़ केयूर उत्तम बाजूबन्द और स्वर्ण सूत्रों से पुहेहुये गुलूबन्द और निष्कनाम आभूषण थे २० उत्तम मणि हीरा सुवर्ण मोती छोटे बड़े रत्न और मंगलीक वस्तु बड़ेसुख भोगने के योग्य शरीर चन्द्रमाके समान मुख रखनेवाले शिर २१ शरीर के भोगनेवाले सामान और यथेप्सित सुखों-

को त्याग करके अपने धर्मकी बड़ी निष्ठाको पाकर लोकों को कीर्तिसे व्याप्त करके वह सब युद्धकर्ता शूरवीर चलेगये २२ हे बड़ाई देनेवाले राजा दुर्य्योधन लौटजाओ सेना के मनुष्य भी अपने २ डेरों में जायँ हे प्रभु अब सूर्य्य भी अस्त होता है अब चलनाही योग्य है हे नरेन्द्र दुर्य्योधन इस स्थान में तुम्हीं कारणरूपहो २३ शोक से दुखीमन राजाशल्य हायकर्ण हायकर्ण इस रीति से कहनेवाले पीड़ामान अत्यन्त अचेत अश्रुपात युक्त दुर्य्योधन से यह वचन कहकर मौन होगया २४ फिर अश्वत्थामा आदिक वह सब राजा लोग अर्जुन की यश कीर्तिवाली प्रज्वलित ध्वजा को बारम्बार देखते और दुर्य्योधन को आश्वसन करतेहुये चले २५ हेराजा इसीप्रकार मनुष्य घोड़े हाथी और मनुष्यों के शरीरों से उत्पन्न हुये रुधिर से सींचीहुई लाल पोशाक माला आदि स्वर्ण भूषणधारी निर्लज्ज वेश्याओं के समान रुधिर से आच्छादित भूमिको देखकर देवलोक के निमित्त सन्यास धारण करनेवाले सब कौरव उस अत्यन्त शोभायमान रुद्र मुहूर्त्त में नियत नहीं हुये २६।२७ हे राजा वह मारने से दुःखी हाय कर्ण हायकर्ण यही उच्चारण करतेहुये शीघ्रही अपने डेरोंमें गये २८ और युद्ध में गाण्डीव धनुषसे छोड़े सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्ण धारवाले रुधिर भरे पैनेबाणों से युक्त शरीरवाला मृतक कर्णभी किरण मण्डल रखनेवाले सूर्य्य के समान प्रकाशमान था २९ भक्तोंपर दया करनेवाले रक्तवर्ण भगवान् सूर्य्य कर्णकेरुधिर भरे शरीर को अपनी किरणों से स्पर्शकरके स्नान करने के निमित्त पश्चिमीय समुद्रको जाते हैं ३० और देवता ऋषियों के समूहभी इसका शोचकरते हुये यात्रायुक्त होकर अपने २ स्थानों को जाते हैं जीवोंके समूह भी विचार करते सुख पूर्व्वक आकाश और पृथ्वी को गये ३१ तब कौरवीय वीरों में श्रेष्ठ अर्जुन और कर्ण के सबजीवों के महा भयकारी घोरयुद्धको देखकर बड़े आश्चर्य्य युक्त होकर उनकी प्रशंसाओं को करते हुये मनुष्य भी चले ३२ बाणों से टूटे कवच रुधिरसे सींचेहुये वस्त्रोंसेयुक्त निर्जीव कर्णको भी शोभा नहीं छोड़ती है संतप्त सुवर्ण अग्नि और सूर्य्य के समान प्रकाशमान ३३ उस शूरवीर को सब जीवों ने जीवतेहुये के समानही माना हे महाराज युद्धमें उस मरेहुये कर्ण से भी ३४ युद्धकर्त्ता लोग सब ओरसे ऐसे भयभीत हुये जैसे कि दूसरे मृग सिंहसे भयभीत होते हैं क्योंकि वह मृतकहुआ भी पुरुषोत्तम जीवते के समान

दिखाई देताथा ३५ इसनिमित्त कि मरने परभी उसमहात्माके रूपमें अन्तर नहीं हुआ इसीसे उस सुन्दर पोशाक मुकुट और ग्रीवा धारण करनेवाले वीर पुरुष को जीवतेकेही समान माना ३६ कर्ण का वह मुख पूर्ण चन्द्रमा के समान प्रकाशमान नाना भूषण तप्तकांचनमयी बाजूबन्द धारण किये महा प्रकाशित होकर शोभासे युक्त ३७। ३८ वह सूर्य्यका पुत्र ऐसे मृतक होकर सोता है जैसे कि अंकुर रखनेवाला वृक्ष उत्तम सूर्य्य के समान प्रकाशमानहो ३९ वह पुरुषोत्तम कर्ण अर्ज्जुन के शायकरूपी जलसे ऐसे शान्त होगया जैसे कि प्रकाशमान देदीप्य अग्नि जलको पाकर शान्त होजाता है ४० इसीप्रकार कर्ण रूप अग्नि युद्धमें अर्जुन रूप बादलसे शान्त कीहुई पृथ्वीपर उत्तम युद्धमें अपने प्रकाशित यशको प्राप्त करके ४१ बाणों की वर्षा को छोड़ दशों दिशाओं को तपाती हुई अर्जुन के तेजसे शान्तहुई ४२ वह सूर्य्य का पुत्र कर्ण अस्त्रों के तेजसे सब पाण्डव और पांचालोंको तपाकर बाणोंकी वर्षासे शत्रुओं की सेना को व्यथितकर ४३ श्रीमान् सूर्य्य के समान सब संसार को तपाताहुआ पुत्र और सवारी समेत मारागया ४४ यह कर्ण आकांक्षा करनेवाले मनुष्य और पक्षियों का कल्पवृक्ष था जो कि आकांक्षा करनेवाले सत्पुरुषों को सदैव यथेप्सित दानदिया करताथा कभी किसीप्रकारकेभी याचना करनेवाले से यह वस्तु नहीं है इस वचनको नहींकहा ४५ ऐसासत्पुरुष कर्ण द्वैरथ युद्धमें मारागया जिस महात्माका सबधन ब्राह्मणों केही देनेके योग्य हुआ जिसका सबजीवन ब्राह्मणों को किसी वस्तुका अदेयरूप नहींहुआ ४६ सदैव स्त्रियोंके प्यारे दानी अर्जुनके अस्त्रसे मरेहुये उस महारथीने परमगतिको पाया जिसके आश्रयमें होकर आपके पुत्रने शत्रुताकरीथी ४७ वह आपके पुत्रोंकी विजयकी आशा प्रसन्नता और रक्षाको साथ लेकर स्वर्ग कोगया कर्णके मरनेपर नदियों ने चलना बन्द किया और सब संसार का प्रकाशक सूर्य्य भी अस्त होगया ४८ तिर्य्यग ग्रह और अग्नि सूर्य्यके वर्ण समानहुये और चन्द्रमाका पुत्र बुध उदयहोने के निमित्त तिरछा होगया आकाश चलायमान हुआ पृथ्वी शब्दायमान हुई सूक्ष्म महाभयकारी वायु चली दिशा ज्वलित रूपहुई और महा समुद्र धूम और शब्द से युक्त होकर चलायमानहुआ ४९ काननों समेत सब पर्व्वतों के समूह कंपायमानहुये और सबजीवों के समूह पीड़ामानहुये और हे राजा बृहस्पतिजी

रोहिणीको घेरकर चन्द्रमा और सूर्य्य के समानहुये ५० कर्णके मरनेपर विदिशा भी प्रज्वलितहोगई आकाश अन्धकारसेयुक्त हुआ अग्निकेसमान प्रकाशमान उल्कापातहुये राक्षसभी अत्यन्त प्रसन्नहुये ५१ जब अर्जुनने चन्द्रमुखवाले प्रकाशमान कर्ण के शिर को अपने क्षुरसे काटा तब आकाशमें देवतालोग अकस्मात् हाय हाय ऐसाशब्द करनेलगे ५२ वह अर्जुन देव गन्धर्व और मनुष्यों से पूजित अपने शत्रु कर्णको युद्ध में मारकर बड़े तेजसे ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पूर्व्वसमयमें वृत्रासुर को मारकर इन्द्र शोभायमान हुआथा ५३ इसके पीछे महाइन्द्रके समान पराक्रम करनेवाले वह दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन वादलों के समूह के समान शब्दायमान आकाशस्थ मध्याह्न के सूर्य्यके समान प्रकाशित पताका और भयानक शब्दवाली ध्वजा रखनेवाले हिमचन्द्रमा और शङ्खके समान श्वेत उज्ज्वल महाइन्द्र रथके तुल्य अनुपम सवारी में बैठेहुये युद्ध में विष्णु और इन्द्रके समान शोभायमानहुये अर्थात् सुवर्ण मणि हीरे मोती और मूंगोंसे अलंकृत अग्नि और सूर्य्यके समान तेजस्वी दोनों नरोत्तम केशवजी और पाण्डव अर्जुनथे इसकेपीछे उन गरुड़ध्वज और वानरध्वज श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन ने हठ करके धनुष प्रत्यंचा और बाणों के शब्दों से शत्रुओं को प्रभा रहित करके ५४ । ५५ । ५६ । ५७ कौरवोंको उत्तम बाणोंसे ढककर उन प्रसन्नचित्त अतुल प्रभाववाले शत्रुओंके मनको संदेह करनेवाले नरोत्तमोंने ५८ सुवर्ण जालसे युक्त बड़े शब्दवाले उत्तम शङ्खोंको हाथ में लेकर मुखसे चुम्बन कर ५९ अकस्मात् अपने मुखों से बजाया उन पांचजन्य और देवदत्तनाम दोनों शंखोंके शब्दोंने ६० पृथ्वी दिशा विदिशाओं समेत आकाशको शब्दायमान किया हे राजाओं में श्रेष्ठ अर्ज्जुन और माधवजी के उन शंखोंके शब्दों से सब कौरव लोग भयभीतहुये ६१ शंखोंके शब्दों से वन पर्व्वत नदी और पर्व्वतोंकी कन्दराओं को शब्दायमान करनेवाले उन दोनों पुरुषोत्तमों ने आपके बेटेकी सेनाको भयभीत करके राजा युधिष्ठिर को प्रसन्नकिया ६२ हे भरतवंशी इसके अनन्तर उनके शंखोंके शब्दों को सुनकर सब कौरवलोग भरतवंशियों के राजा दुर्य्योधन को और राजामद्रको छोड़कर बड़े वेगसे भागे ६३ तब जीवों के भागनेवाले बड़े समूहोंने उस बड़े युद्धमें बड़ेतेजस्वी श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन को ऐसे प्रसन्न किया जैसे कि उदय होनेवाले दो सूर्य्यको सब प्रसन्न करते

है ६४ उस युद्धमें कर्णके बाणों से चितेहुये शत्रुओं के संतप्त करनेवाले दोनों श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन ऐसे प्रकाशमानहुये जैसे कि किरण समूहों के रखनेवाले निर्मल चन्द्रमा और सूर्य्य उदयहोकर अंधकार को दूर करके प्रकाशमान होते हैं वह अनुपम पराक्रमी दोनों ईश्वर उन बाण समूहों को छोड़कर मित्रों को साथमें लियेहुये सुख पूर्व्वक अपने डेरों में ऐसे पहुँचे जैसे कि सदस्यों के बुलायेहुये विष्णु और इन्द्रजाते हैं ६५। ६६ तब कर्णके मरनेपर उस बड़े युद्ध में वह दोनों श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन देवता गन्धर्व मनुष्य चारण महर्षि यक्ष राक्षस और महासर्पोंके भी अपूर्व्व उत्तम विजयके आशीर्वादों से पूजितहुये ६७ फिर वह योग्य आशीर्वादों स युक्त दोनों अपने गुणोंसे स्तुतिमान होकर अपने मित्रोंसमेत ऐसे प्रसन्नहुये जैसे कि राजा बलिको विजय करके देवगणों समेत इन्द्र और विष्णु प्रसन्नहुये थे ६८॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णवधानन्तरसर्वैस्तूयमानश्रीकृष्णार्जुनपंचनवतितमोऽध्यायः ९५॥

छानबेका अध्याय॥

सञ्जय बोले कि हे राजा कर्ण के मरनेपर भय से पीड़ितहो सब दिशाओं को देखतेहुये कौरवलोग भागे १ अर्थात् घोर युद्धमें अर्ज्जुनके हाथसे कर्ण को मराहुआ देखकर आपके सब शूरवीर घायल और भयभीत होकर दिशाओं में छिन्नभिन्न हुये २ इसके पीछे चारोंओर से रोकेहुये व्याकुल और महादुःखी होकर आपके उन सब शूरोंने विश्राम किया हे राजा इसके पीछे आप के पुत्र दुर्य्योधनने उन सबके उसमतको जानकर शल्यके मत से विश्रामकिया ३। ४ हे भरतवंशी आपके शीघ्रगामी रथ और शेषबचीहुई नारायणी सेना से युक्त कृतवर्मा डेरेकी ओरकोचला ५ और हजारों गांधार देशियोंसे व्याप्तशकुनि भी कर्ण को मृतक देखकर डेरेकी ओरचला ६ हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र शारद्वत कृपाचार्य्यजी भी बड़े २ बादलों के समान हाथियों की सेनाको साथलिये डेरे की ओरको चले ७ फिर बड़े शूरवीर अश्वत्थामा बारम्बार श्वासलेले पाण्डवों की विजय को देखकर डेरेकी ओरको चले ८ हे राजा शेष बचीहुई संसप्तकों की सेना को साथ लियेहुये सुशर्मा भी भय से पीड़ित चारोंओर को देखता हुआ चलदिया ९ फिर जिस के सब बांधव मारे गये वह शोक में डूबाहुआ

अप्रसन्नचित्त राजा दुर्य्योधन भी बड़ी२ चिन्ताओंको करताहुआ चलदिया १०
रथियोंमें श्रेष्ठशल्य भी दशों दिशाओं को देखता टूटी ध्वजावाले रथकी सवारी
से डेरे की ओर को चला ११ इसके पीछे भरतवंशियों के बहुत से अन्य महारथी
भी भयसे पीड़ित लज्जा से युक्त उदास चित्त होकर भागे १२ इसीप्रकार रुधिर
पटकते व्याकुल कंपित महादुःखी सब कौरव कर्णको गिराहुआ देखकरभागे १३
हे कौरव्य कोई कौरव तो महारथी अर्जुनकी और कोई कर्णकी प्रशंसा करतेहुये
दिशाओं को भागे १४ फिर वहां बड़े युद्धमें आपके हजारों शूरवीरों के मध्यमें
कोई ऐसा मनुष्य नहीं रहा जिसने कि फिर युद्धके निमित्त चित्त किया हो १५
हे महाराज कर्ण के मरने से कौरवलोग जीवन राज्य और स्त्रीकी आशा से भी
निराश होगये १६ दुःख शोक से युक्त आपके समर्थ पुत्रने बड़े२ उपायों से उन
को इकट्ठाकरके निवास के लिये चित्तकिया फिर वह रूपांतर दशावाले महारथी
शूरवीर उसकी आज्ञाको शिर से अंगीकार करके ठहरे १७। १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकौरवपलायिनेषण्णवतितमोऽध्यायः ९६ ॥

सत्तानवेका अध्याय ॥

संजय बोले कि इसप्रकार से कर्ण के गिराने और शत्रुओं की सेनाके भागने
पर श्रीकृष्णजी अर्जुन से प्रीति पूर्व्वक मिलकर बड़े आनन्द से इस वचन को
बोले १ हे अर्जुन जैसे इन्द्रके हाथ से वृत्रासुर मारागया वैसेही तेरे हाथसे कर्ण
मारागया सब मनुष्य कर्ण और वृत्रासुर के घोर मरण को सदैव कहैंगे २ युद्ध
में बड़ा तेजस्वी वृत्रासुर जैसे वज्रसे मारागया उसीप्रकार तुम्हारे धनुष से छू-
टेहुये तीक्ष्णबाणों से कर्ण मारागया ३ हे कुन्ती के पुत्र लोक में विख्यात यश
करनेवाले अर्जुन तेरे इस पराक्रम को उस बुद्धिमान् राजा युधिष्ठिर से वर्णन
करें ४ युद्धमें कर्ण के मारने को बहुत दिन से कहनेवाले धर्मराज राजायुधिष्ठिर
से यह वचन कहकर तुम उसके ऋणसे अऋण होगे ५ तेरे और कर्ण के बड़े
घोर और अपूर्व्व युद्ध होनेपर धर्मनन्दन राजायुधिष्ठिर पूर्व्वही युद्धभूमि देखने
को आये ६ फिर अत्यन्त घायल होने से युद्धमें नियत होनेको समर्थ न होकर
वह पुरुषोत्तम अपने डेरे में पहुँचकर नियतहुये ७ अर्जुन से बहुत अच्छा कहे
हुये बड़े सावधान यादवेन्द्र केशवजी ने उस उत्तम रथीके श्रेष्ठ रथको लौटाया ८

श्रीकृष्णजी अर्जुन सें इसप्रकार की बात कहकर सेना के मनुष्यों से बोले कि हे उत्तम शूरवीर लोगो तुम सावधान होकर शत्रुओं के सन्मुख होकर लड़ो तुम्हारा कल्याण होगा ९ गोविन्दजी, धृष्टद्युम्न, युधामन्यु, नकुल, सहदेव, भीमसेन और युयुधानसे यह वचन बोले कि हम जबतक अर्जुनके हाथसे कर्ण का वध राजा युधिष्ठिर से वर्णन करें १०। ११ तबतक आप सब लोगों को राजाओं समेत निवास करना योग्यहै तब उन शूरों की आज्ञा पाकर गोविन्द जी अर्जुन को साथलेकर डेरे को गये १२ और राजेन्द्र राजा युधिष्ठिर को सुवर्ण रचित अच्छे शयन स्थानमें सोताहुआ देखा १३ तब उन दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन ने राजा के दोनों चरणों को स्पर्शकिया उस समय युधिष्ठिर ने उन दोनों को प्रसन्न देखकर बड़ी प्रसन्नता के अश्रुपातों को डाला १४ और कर्ण को मृतक मानकर महाबाहु शत्रुंजय राजा युधिष्ठिर उठकर बारम्बार १५ दोनों अर्जुन और वासुदेवजी को अत्यन्त प्रेमसे मिले फिर यादवों में श्रेष्ठ वासुदेव जीने जैसे कि अर्जुन ने युद्ध करके उस कर्णका बध किया वह सब वृत्तांत उस से वर्णनकिया फिर मन्द मुसकान करते अविनाशी श्रीकृष्णजी हाथ जोड़कर अजात शत्रु राजायुधिष्ठिर से यह वचन बोले हे राजा प्रारब्ध से गांडीव धनुषधारी अर्जुन भीमसेन १६। १७ नकुल सहदेव और तुम कुशल पूर्वक हो अब तुम इन वीरों के नाश करनेवाले और रोमांच खड़े करनेवाले महा घोर युद्धसे निवृत्तहुये १८। १९ हे पाण्डव अब तू बड़ी शीघ्रता से आगे करनेवाले कर्मों को करो हे राजा सूतका पुत्र महारथी कर्ण मारागया २० हे राजेन्द्र तुम अपने प्रारब्धसे विजय करतेहो और भाग्यसेही वृद्धि पातेहो और जो नीच पापात्मा पुरुष द्यूत में हारीहुई द्रौपदी को हँसाथा २१ उस सूतके पुत्र के रुधिरको अब पृथ्वीपान कररही है हे कौरवों में श्रेष्ठ यह तेरा शत्रु बाणों से भरेहुये शरीर से पृथ्वीपर पड़ाहुआ सोताहै २२ हे पुरुषोत्तम उस बहुत बाणों से टूटे अंगवाले कर्णको देखो हे मृतक शत्रुवाले महाबाहो तुम इस पृथ्वीपर राज्यकरो और हम समेत सावधान होकर उत्तम भोगों को भोगो २३ संजय बोले कि तब अत्यन्त प्रसन्न चित्त धर्म पुत्र राजा युधिष्ठिर ने इन वचनोंको सुनकर उन महात्मा केशवजी से कहा २४ हे महाबाहु आपने जो प्रारब्धसे हुआ यह वचन कहासो हे महाबाहो देवकीनन्दन यह बात आपमें कुछ अपूर्व नहीं है आपकी यह

योग्यता सदैव से चली आई है २५ उपाय करनेवाले अर्जुनने तुम सारथीके साथहोकर उसको मारा हे महाबाहो तुम्हारी स्वच्छ बुद्धिसे उत्पन्नहुई यह बात आश्चर्य्यकी नहीं है यहकहकर वह धर्मधारी कौरवोंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर बाजूबन्द रखनेवाली दक्षिणभुजाको पकड़कर २६।२७ उनदोनों अर्जुन और केशवजी से बोले कि नारदजीने तुमदोनोंको धर्मात्मा महात्मा और प्राचीन ऋषियोंमें श्रेष्ठ नरनारायणरूप देवता मुझसे वर्णन कियाहै और बुद्धिमान् सिद्धान्तोंके ज्ञाता व्यासदेवजी ने भी इसमहाभाग कथाको बारंबार मुझसे कहाहै हे कृष्णजी इस पाण्डव अर्जुनने आपकी कृपासे २८।२९ सन्मुख होकर शत्रुओं को विजय किया और किसी स्थानपर मुख नहीं फेरा निश्चय हमारीही विजयहै हमारीपराजय नहींहोगी ३० जबआपने अर्जुनकी रथवानी अंगीकार करी हे गोविन्दजी आपकी बुद्धि से कर्ण के मरनेपर भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कर्ण, महात्मा गौतम, कृपाचार्य्य, ३१ और अन्य२ बड़े२ शूरवीर जो उनके साथमें आगे पीछे थे वह सब हर प्रकारसे मारेगये ३२ तब पुरुषोत्तम महाराज धर्मराज यह कहकर श्वेत वर्ण काले बाल चित्तके अनुसार शीघ्रगामी घोड़ों से युक्त सुवर्ण सूत्रसे निर्मित रथपर ३३ सवारहो अपनी सेना को साथलेकर युद्धभूमि के देखने को प्रवृत्त हुये ३४ वीर श्रीकृष्ण और अर्जुन से पूछकर और दोनों से प्यारे २ मिष्ट वचनों को कहते हुये चलदिये ३५ वहांजाकर उस राजा युधिष्ठिरने युद्धभूमि में शयन करतेहुये कर्णको ऐसा देखा जैसे कि सब ओरसे केसरों से युक्त कदम्बका फूलहोताहै ३६ उस धर्मराजने हजारों बाणों से चितेहुये कर्ण वा सुगन्धित तेलों से सिंचेहुये और हजारों सुनहरी मशालों से ३७ प्रकाशमान जिसका कवच टूट २ कर चूर्ण होगया वा बाणों से छिदाहुआ था उसकर्ण को देखा ३८ पुत्र समेत मरेहुये कर्णको बारंवार देखकर निश्चय करनेवाले राजा युधिष्ठिरने ३९ उनदोनों नरोत्तम पाण्डव अर्जुन और माधवजीकी प्रशंसाकरी कि हे गोविन्दजी अब तुमनाथ शूरवीर और महाज्ञानीसे पोषण कियाहुआ मैं बड़े अहंकारी कर्णको मृतक देखकर भाइयों समेत पृथ्वीपर राजाहूं ४०।४१ राजा धृतराष्ट्र राधाकेपुत्र कर्णके मरनेपर अपने जीवन और राज्यसे निराशहोंगे ४२ हे पुरुषोत्तम हम आपकी कृपाओं से अभीष्ट मनोरथों के सिद्ध करनेवाले हैं हे गोविन्दजी आपने प्रारब्धसे शत्रुओंको विजयकिया और भागही से यह महा

शत्रु भी मारागया ४३ और पाण्डुनन्दन अर्जुन प्रारब्धसे विजय करनेवाला है हम लोगों ने बड़े दुःखदायी तेरह वर्ष जाग २ कर वनों में व्यतीत किये ४४ हे महाबाहो अब आपकी कृपासे रात्रिमें नींद भरके बेखटके होकर सोवेंगे इस रीतिसे उस धर्मराज राजा युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णजी और कौरव्य अर्जुनकी प्रशंसा करी संजय बोले कि अर्जुन के शायकों से पुत्र समेत कर्णको मृतक देखकर ४५।४६ उस राजा युधिष्ठिर ने अपना पुनर्जन्ममाना हे महाराज फिर बड़ी प्रसन्नता भरेहुये महारथियों ने कुन्ती के पुत्र राजा युधिष्ठिरको मिलकर बड़ा प्रसन्नकिया और पाण्डव नकुल सहदेव भीमसेन और वृष्णियोंमें बड़े श्रेष्ठरथी सात्यकी, धृष्टद्युम्न,शिखण्डी पांचाल और सृञ्जियोंने ४७।४८।४९ कर्णके मरने पर युधिष्ठिरकी स्तुतिकी फिर वह सब धर्मात्मा राजा युधिष्ठिरकी स्तुतिकरके ५० महा विजयसे शोभायमान लक्षभेदी युद्धमें कुशल सावधानी से युद्ध करनेवाले प्रशंसायुक्त उन श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन की कीर्त्तिगानेवाले ५१ प्रसन्नता में डूबेहुये सब महारथी अपने २ डेरोंको गये हे राजा आपके दुर्विचारोंसे यह बड़ा भारी घोर रोमहर्षण करनेवाला विनाशकाल जारीहुआ ५२ अब तुम किस निमित्त शोचकरतेहो वैशम्पायन बोले कि अम्बिकाके पुत्र राजा धृतराष्ट्र इसशोक और दुःखदायी वृत्तान्तको सुनकर ५३ अचेत और निश्चेष्टहोकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि जड़समेत टूटाहुआ वृक्ष गिरपड़ताहै उसीप्रकार वह दूरदर्शिनीदेवी गांधारी भी गिरपड़ी ५४ और युद्धमें कर्णके मरने को बहुत विलाप करकरके शोचा तब विदुरजी और संजयने उस राजाको पकड़लिया ५५ और दोनों ने राजाको विश्वासयुक्त किया और इसीप्रकार कौरवीय स्त्रियोंने गांधारीको भी उठाया फिर वह बड़ातपस्वी राजा धृतराष्ट्र ईश्वर और होतव्यताको मुख्य मानकर ५६ महा पीड़ितहोकर अचेतहोगया चिन्ता शोकसे पूर्णचित्त मोहसे पीड़ित राजाने कुछ नहीं जाना और विश्वास देनेपर भी अचेतहोकर मौनहोगया ५७ हे भरतवंशी जो पुरुष महात्मा कर्ण और अर्ज्जुनके इस महा घोर युद्धरूपी यज्ञको पढ़ेगा वह उस फलको पावेगा जो अच्छे प्रकारसे किये हुये यज्ञकाफल होताहै और सुननेवालोंको भी यही फलहोगा ५८ अग्नि वायु और चन्द्रमाके उत्पन्न करनेवाले सनातन भगवान् विष्णुहैं उन्हींको यज्ञ कहते हैं इसकारण जो पुरुष दूसरे के गुणोंमें दोष न लगाकर पढ़ेगा वा सुनेगा वह

सुखीहोगा ५९ भक्तलोग सदैव धर्मकी वृद्धिके हेतुसे इस उत्तम संहिता को पढ़-
तेहैं वह मनुष्य उसके पढ़नेसे धन धान्य और कीर्त्तिमान् होकर आनन्द करते
हैं ६० इस हेतुसे जो दूसरेके गुणों में दोष न लगानेवाला मनुष्य सदैवही सुनेगा
वह सब सुखोंको पावेगा और भगवान् ब्रह्माजी विष्णुजी और शिवजी भी उस
नरोत्तम के ऊपर प्रसन्न होतेहैं ६१ इस संहितामें ब्राह्मण को वेदों की प्राप्ति
और युद्धमें क्षत्रियों को पराक्रम वा विजयकीप्राप्ति वैश्यों को धनकीप्राप्ति और
शूद्रों को नीरोगताकी प्राप्ति होतीहै ६२ जो कि इसमें भगवान् सनातन देवता
विष्णुजी का वर्णनहै इस हेतुसे वह मनुष्य सुखी होकर मनोभीष्टों को पातेहैं
यह उस महामुनिने वचन कहाहै कि जो इसकर्णपर्व्वको सुनताहै वह एक वर्ष
तक सवत्सा कपिला गौ के प्रतिदिन दान करनेके समान फलको पाताहै ॥

महिखरीछंद ॥

सुनि प्रबल अरि भट करण को बध धरम अति आनँदभरे । बहुभांति हरिहि
प्रशंसि प्रभुता कृपा की वर्णन करे ॥ फिर कृष्ण पारथ भटनसह चढ़ि सुरथ पै
मोदित महा । गेधर्म भूपति कर्ण भटमणि परोहो जेहि थल तहा ॥ तहँ सहित
सुत मरिपरो कर्णहिं देखि आनँद को गहे । तुव कृपा सों मम सुजय सब थर
इविधि केशव सों कहे ॥ बहु जरत चारु मशाल संग उमंग सों सब देखि कै ।
नृप धर्म डेरन गये फिरिनिज सुजय ध्रुव अवरेखि कै ॥

दो० करत प्रशंसा कृष्ण अरु पारथ की सब वीर ।
गे निजनिज डेरन लहत आनँद सिंधुगँभीर ॥
भूपति कियो कुमंत्र तुम करता इतो अनर्थ ।
प्रलयकाल आरोपि अब शोचकरत हौ व्यर्थ ॥

वैशंपायन उवाच ॥

दो० इविधि कर्णको मरण सुनि दम्पति वृद्ध नरेश ।
मोहित ह्वै गिरिपरत भे त्यागि चेत को लेश ॥
भूपति गहि संजय विदुर गंधारिहि कुरुनारि ।

चेतित कीन्हे यतनकरि धीरजधरो पुकारि ॥
कर्णपर्व में होत भो यहि विधि युद्ध विनोद ।
रामकृष्ण कहँ जपत सो लहतसदा जयमोद ॥

सो॰ रामभक्त कपिवीर विलसो जासु ध्वजस्थहै ।
कृष्ण बसे जातीर किमि न लहै जय पार्थ सो ॥

श्लो॰ वर्षेब्धिवेदांकशशांक १६४४ संख्येविद्वान्सकालीचरणाभिधानः ।
श्च्योतद्रसंमंजुलकर्णपर्वभाषानुवादंमधुरंव्यधत्त १ ॥

तेश्रीभाषामहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांकर्णपर्वणिसप्तनवतितमोऽध्यायः ९७ ॥

इतिकर्णपर्वसमाप्तः ॥